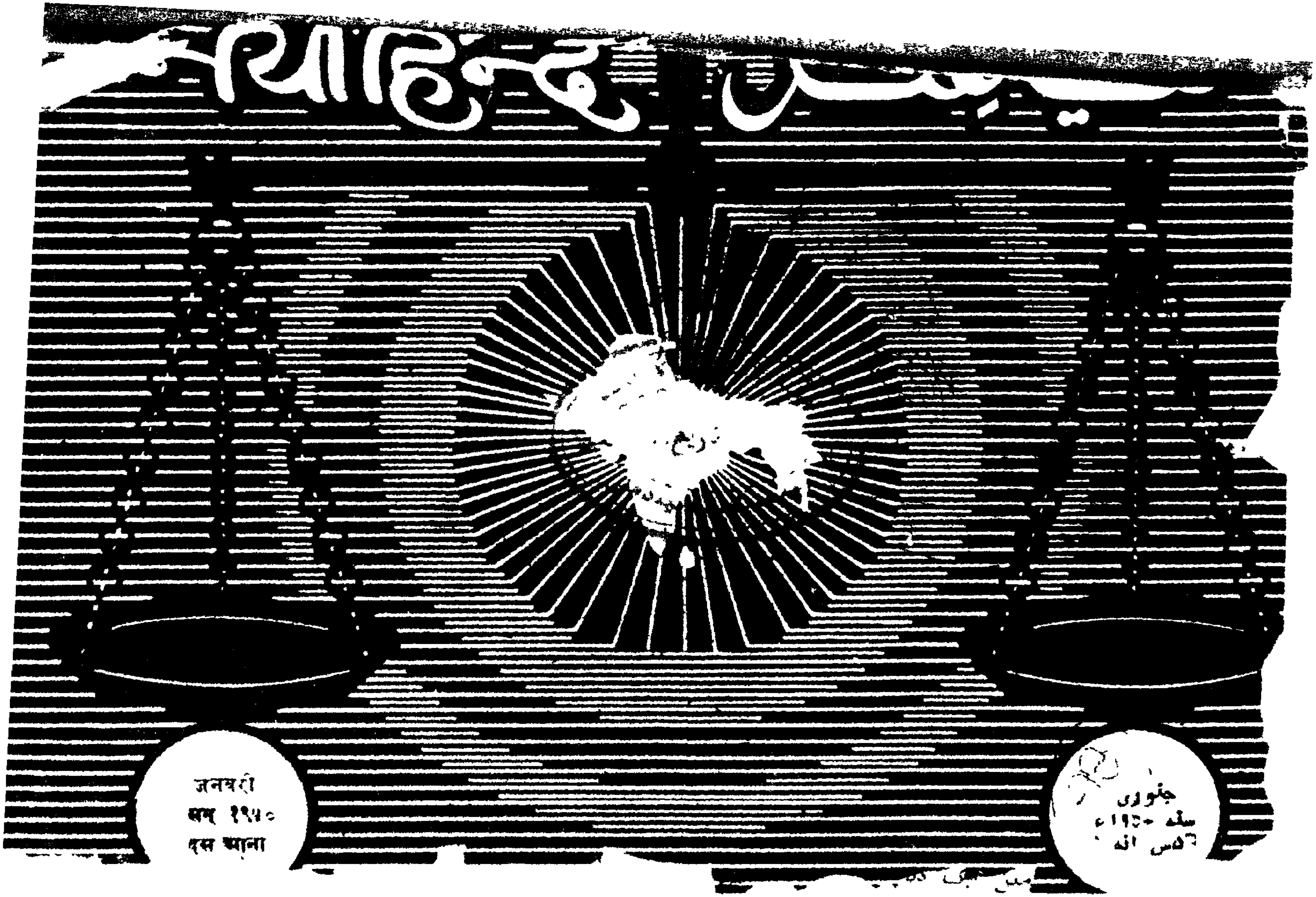

नया हिन्द
जनवरी
सन् १९५०
दस आना
جنوری
سنہ ۱۹۵۰ء
دس آنہ

नया हिन्द | نیا ہند

जिल्द ८ जनवरी '५० नम्बर १ | نمبر ۱ جنوری ۵۰ جلد ۸

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली.	جات آدمی' پریم دھرم ہے' ہندستانی بولی
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.	'نیا ہند' پہنچیگا گھر گھر لئے پریم کی جھولی

एक कहानी

(भाई चरनसरन 'नाज़')

सुन लो एक कहानी !

सारी धरती कांप रही थी
मानवता भी हांप रही थी.
ओर मैं भी था घोर अंधेरा
दूर हो जैसे नाज़ सवेरा
ऐसे में इक दीप जलाये

ایک کہانی

(بھائی چرن سرن 'ناز')

سن لو ایک کہانی

ساری دھرتی کانپ رہی تھی
مانوتا بھی ہانپ رہی تھی
ہور میں بھی تھا گھور اندھیرا
دور ہو جیسے ناز سویرا
ایسے میں ایک دیپ جلائے

आया था इक ज्ञानी
सुन लो एक कहानी !
जब अंधियारे में टकराते
भाई भाई भी लड़ जाते,
ऐसे में वह दीप जलाता.
सब को सीधी राह बताता.
सीधी राह बताने वाली
उसकी सच्ची बानी
सुन लो एक कहानी !
दीप को सूरज बनजाना था,
सारे जग को चमकाना था.
अंधियारे से होड़ ली उसने,
यह धरती भी छोड़ दी उसने.
सत्यका उसने मार्ग दिखाकर,
स्वर्ग लोक की ठानी.
सुन लो एक कहानी !
फैली वह बानी कुल जग में,
उस का दीप जला हर मग में.
सत्य है भगवत् सत्य खुदा है,
सत्य का पालन ही पूजा है.
उस से सीखो दुनिया वालो
एका और कुर्बानी,
सुन लो एक कहानी !

آیا تھا اک گیانی
سن لو ایک کہانی
جب اندھیارے میں ٹکراتے
بھائی بھائی بھی لڑجاتے
ایسے میں وہ دیپ جلاتا
سب کو سیدھی راہ بتاتا
سیدھی راہ بتانے والی
اُس کی سچی بانی
سن لو ایک کہانی
دیپ کو سورج بن جانا تھا
سارے جگ کو چمکانا تھا
اندھیارے سے ہوڑ لی اُس نے
یہ دھرتی بھی چھوڑدی اس نے
ستیہ کا اس نے مارگ دکھاکر
سورگ لوک کی ٹھانی
سن لو ایک کہانی
پھیلی وہ بانی کل جگ میں
اُس کا دیپ جلا ہر مگ میں
ستیہ ہے بھگون ستیہ خدا ہے
ستیہ کا پالن ہی پوجا ہے
اُس سے سیکھو دنیا والو
ایکا اور قربانی
سن لو ایک کہانی

सत्याग्रह

सत्याग्रह अब हिन्दुस्तानी शब्द नहीं रहगया. सारी दुनिया इसे जानती है, बोलती है और यह समझती है कि इसका क्या मतलब है. इस्तेमाल से इस शब्द में इतना बल आगया है कि अब इसके दो टुकड़े 'सत्य' और 'आग्रह' पर विचार करने की ज़रूरत ही नहीं रहगई. 'आग्रह' शब्द 'सत्य' के लिये कितना भारी पड़ता है इसे 'सत्य' को स्वयं सोचने का खयाल नहीं आता. सत्य आग्रह को अपने तन पर लादे हुए घूम रहा है और किसी तरह का भारीपन महसूस नहीं करता. जिस तरह प्रकाश अंधेरे को दूर करने में ज़रा भी जोर नहीं लगाता और दूर कर देता है, न अन्धेरे को जमने के आग्रह की सूझती है और न प्रकाश को उसका सामना करने के आग्रह की. बस प्रकाश आया, अंधेरा चल दिया. उसी तरह सत्य को झूट और अन्याय भगाने में जोर लगाने की जरूरत नहीं होनी चाहिये. उन दोनों को देखते ही चल देना चाहिये. अगर झूट और अन्याय सत्य के आगे जमने की सोचें तो इसमें न उनका दोष है और न वह आग्रही हैं. इसमें तो दोष सत्य का ही है. वह सत्य सत्य ही नहीं है जिसके आते ही झूट और अन्याय चलते नजर न आयें, अगर वह डटते हैं तो झूट को अझूट में और अन्याय को न्याय में बदलना ही पड़ेगा. अगर ऐसा नहीं होता तो सत्य सत्य नहीं, जरूर असत्य सत्य का बाना पहन कर आया है. सत्य को झूट और अन्याय दूर करने में जोर लगाने की जरूरत कैसी ? सत्य और अन्याय में प्रकाश और अन्धेरे का रिश्ता है. दिया तले अंधेरे

ستیاگرہ

ستیاگرہ اب ہندستانی شبد نہیں رہ گیا - ساری دنیا اسے جانتی ہے، بولتی ہے اور یہ سمجھتی ہے کہ اس کا کیا مطلب ہے- استعمال سے، اس شبد میں اتنا بل آ گیا ہے کہ اب اس کے دو ٹکڑے 'ستیہ' اور 'آگرہ' پر وچار کرنے کی ضرورت ہی نہیں رہ گئی- 'آگرہ' شبد 'ستیہ' کے لئے کتنا بھاری پڑتا ہے اسے ستیہ کو سویم سوچنے کا خیال نہیں آتا. ستیہ آگرہ کو اپنے تن پر لادے ہوئے گھوم رہا ہے اور کسی طرح کا بھاری پن محسوس نہیں کرتا - جس طرح پرکاش اندھیرے کو دور کرنے میں ذرا بھی زور نہیں لگاتا اور دور کر دیتا ہے، نہ اندھیرے کو جمنے کے آگرہ کی سوجھتی ہے اور نہ پرکاش کو اس کا سامنا کرنے کے آگرہ کی. بس پرکاش آیا اندھیرا چل دیا. اسی طرح ستیہ کو جھوٹ اور انیائے بھگانے میں زور لگانے کی ضرورت نہیں ہونی چاہئے. ان دونوں کو دیکھتے ہی چل دینا چاہئے. اگر جھوٹ اور انیائے ستیہ کے آگے جمنے کی سوچیں تو اس میں نہ ان کا دوش ہے اور نہ وہ اگرہی ہیں - اس میں تو دوش ستیہ کا ہی ہے. وہ ستیہ ستیہ ہی نہیں ہے جسکے آتے ہی جھوٹ اور انیائے چلتے نظر نہ آئیں - اگر وہ ڈٹتے ہیں تو جھوٹ کو اجھوٹ میں اور انیائے کو نیائے میں بدلنا ہی پڑے گا. اگر ایسا نہیں ہوتا تو ستیہ ستیہ نہیں' ضرور استیہ ستیہ کا بانا پہن کر آیا ہے. ستیہ کو جھوٹ اور انیائے دور کرنے میں زور لگانے کی ضرورت کیسی ؟ ستیہ اور انیائے میں پرکاش اور اندھیرے کا رشتہ ہے - دیا تلے اندھیرے

की बात का जवाब यही है कि अंधेरे को प्रकाश से डर कर या कहीं छिपकर ही रहना पड़ता है या प्रकाश के सगे सहोदर दीप बरतन की आड़ लेनी पड़ती है. उसी तरह झूट और अन्याय को भी कहीं छिपकर रहना पड़ेगा या सत्य वादी के किसी सगे सहोदर की आड़ लेनी पड़ेगी, पर इस बीसवीं सदी में तो प्रकाश की ऐसी कुप्पियां बन गई हैं जिनकी वजह से अंधेरे को कहीं छिपने की जगह नहीं मिलती यानी प्रकाश के सगे सहोदर भी इतने प्रकाशवान हो गये हैं कि उन की शरन लेते हुए भी अंधेरा थर थर कांपता है. उसी तरह सत्य वादी के सगे सहोदर भी कम से कम इतने सत्य वादी होने जरूरी हैं कि झूट और अन्याय उन को शरन न ले सकें और उनके पास जाते हुए ऐसे ही थर थर कांपें जैसे अंधेरा लालटेन की चिमनी के पास जाते हुए काँपता है. असलमें हम यह कहना चाहते हैं कि सत्य के साथ आग्रह शब्द कुछ ढीला सा ही जचता है.

सत्य, अहिंसा, अचौर्य, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य इन पांच गुनों में तीन नकारात्मक क्यों? क्या हमारे रिषियों के पास इनके लिये सत्य, ब्रह्मचर्य जैसे शब्द न थे? तो क्या फिर उन्होंने जान बूझ कर इनको नकारत्मक बनाया? कुछ विद्वान् पिछली बात से सहमत हैं. उनका कहना है कि 'अहिंसा की जगह 'प्रेम' ले सकता था पर हमारे रिषि अहिंसा को अलग और प्रेम को अलग समझते थे. दुनिया में जितने प्रेमी हैं उनमें से शायद ही कोई ऐसा मिले। जो हिंसा से परहेज करता हो प्रेम और हिंसा इन दोनों का राग और द्वेष जैसा सम्बन्ध है. जैसे राग के लिये द्वेष जरूरी है वैसे ही जीव

کي بات کا جواب یہی ھے کہ اندھیرے کو پرکاش سے ڈر کر یا کہیں چھپکر ھي رھنا پڑتا ھے یا پرکاش کے سگے، سہودر دیپ برتن کی آڑ لینی پڑتي ھے. اُسي طرح جھوٹ اور انیائے کو بھی کہیں چھپکر رھنا پڑے گا یا ستیہ وادي کے کسي سگے سہودر کی آڑ لیني پڑے گي' پر اس بیسویں صدي میں تو پرکاش کی ایسی کپپیاں بن گئی ھیں جن کی وجہ سے اندھیرے کو کہیں چھپنے کی جگہ نہیں ملتی یعنی پرکاش کے سگے سہودر بھی اتنے پرکاش وان ھوگئے ھیں کہ اُن کي شرن لیتے ھوئے بھي اندھیرا تھر تھر کانپتا ھے. اُسي طرح ستیہ وادي کے سگے سہودر بھي کم سے کم اتنے ستیہ وادي ھونے ضروري ھیں کہ جھوٹ اور انیائے اُن کی شرن نہ لے سکیں اور اُن کے پاس جاتے ھوئے ایسے ھی تھرتھر کانپیں جیسے اِندھیرا لالٹین کي چمني کے پاس جاتے ھوئے کانپتا ھے. اصل میں ھم یہ کہنا چاھتے ھیں کہ ستیہ کے ساتھ آگرہ شبد کچھ ڈھیلا سا ھي جچتا ھے.

ستیہ' اهنسا' اچوریہ' اپریگرہ اور برھمچریہ ان پانچ مول گنوں میں تین نکارآتمک کیوں ؟ کیا ھمارے رشیوں کے پاس اِن کے لئے ستیہ' برھمچریہ جیسے شبد نہ تھے ؟ تو کیا پھر اُنھوں نے جان بوجھکر ان کو نکارآتمک بنایا ؟ کچھ ودوان پچھلي بات سے سہمت ھیں۔ اُن کا کہنا ھے کہ 'اھنسا' کي جگہ 'پریم' لے سکتا تھا پر ھمارے رشي اھنسا کو الگ اور پریم کو الگ سمجھتے تھے. دنیا میں جتنے پریمي ھیں اُن میں سے شاید ھي کوئي ایسا ملے جو ھنسا سے پرھیز کرتا ھو. پریم اور ھنسا اِن دونوں کا راگ اور دویش جیسا سمبندھ ھے. جیسے راگ کے لئے دویش ضروری ھے ویسے ھي جیو

रुपी सिक्के के प्रेम और हिंसा दो पहलू हैं. इसलिये अहिंसा का बदल प्रेम किसी तरह नहीं हो सकता. जो ऐसा मानते हैं उन्हीं का यह कहना है कि अहिंसा का मतलब है हिंसा न करना. इस अहिंसा गुन के जरिये वह जीव रूपी सिक्के के दोनों पहलुओं को एक साथ घिसना चाहते हैं और जीव को हलका बनाना चाहते हैं. हिंसा न करने से प्रेम आपों आप घटेगा. यह उड़ा देने की बात नहीं है. सचमुच गहरी बात है. हिंसा की जड़ में प्रेम रहता ही है. बलिदान और क़ुरबानी की बुनियाद ईश्वर के प्रेम पर नहीं है तो किस पर है ? बक़रीद की क़ुरबानी की कथा में प्रेम की परीक्षा लिये जाने का ज़िक्र है. काली पर बलिदान करने वालों को देखिये, वह कितने प्रेम से भरे हुए मिलेंगे. उन में उस देवी के लिये ही प्रेम उमड़ता नहीं मिलेगा जिसको बलि दी जा रही है, उनमें उसके लिये भी प्रेम की बहुत बड़ी मात्रा मिलेगी जिसकी बलि दी जा रही है. जीव-रक्षिणी सभा के मेम्बरों को बलि का सिर कटता ही देखने को मिलता है. उन सब के सामने वह श्रम (मेहनत और प्यार कहाँ होता है जिस श्रम और प्यार से उस बलि को पाला गया होता है.. बलि देने वाले न पशु को मारते हैं और न उसकी जान लेते हैं ; वह तो बलि देते हैं. वह आयेदिन अपने बच्चों के साथ बड़े प्रेम से यह कहते मिलेंगे 'मैं तुझ पर बलि जाऊँ,' ,अब कहिये कि क्या बलि की हिंसा प्रेम का ही दूसरा रूप नहीं है ? किसान अपनी खेती से प्रेम करता है तभी तो उस हिरन की जान लेता है जो निकलती हुई कोंपल को कुतर कुतर कर खाता है. माली अपने फलों को प्यार करता है और क्यों न प्यार करे ? वह उसकी रोज़ी है. तभी तो

روپی سکے کے پریم اور ہنسا دو پہلو ہیں۔ اس لئے اہنسا کا بدل پریم کسی طرح نہیں ہوسکتا۔ جو ایسا مانتے ہیں انہیں کا یہ کہنا ہے کہ اہنسا کا مطلب ہے ہنسا نہ کرنا۔ اس اہنسا گن کے ذریعے وہ جیو روپی سکے کے دونوں پہلوؤں کو ایک ساتھ گھسنا چاہتے ہیں اور جیو کو ہلکا بنانا چاہتے ہیں۔ ہنسا نہ کرنے سے پریم آپوں آپ گھٹیگا۔ یہ اڑادینے کی بات نہیں ہے۔ سچ مچ گہری بات ہے۔ ہنسا کی جڑ میں پریم رہتا ہی ہے۔ بلیدان اور قربانی کی بنیاد ایشور کے پریم پر نہیں ہے تو کس پر ہے ؟ بقرعید کی قربانی کی کتھا میں پریم کی پریکشا لئے جانے کا ذکر ہے۔ کالی پر بلیدان کرنے والوں کو دیکھئے۔ وہ کتنے پریم سے بھرے ہوئے ملیں گے۔ ان میں اس دیوی کے لئے ہی پریم امڑتا نہیں ملے گا جسکو بلی دی جارہی ہے۔ ان میں اسکے لئے بھی پریم کی بہت بڑی ماترا ملے گی جسکی بلی دی جارہی ہے۔ جیورکشنی سبھا کے ممبروں کو بلی کا سر کٹتا ہی دیکھنے کو ملتا ہے۔ ان سب کے سامنے وہ شرم (محنت) اور پیار کہاں جس شرم اور پیار سے اس بلی کو پالا گیا ہوتا ہے۔ بلی دینے والے نہ پشو کو مارتے ہیں اور نہ اسکی جان لیتے ہیں وہ بلی دیتے ہیں۔ وہ آئے دن اپنے بچوں کے ساتھ بڑے پریم سے یہ کہتے ہوئے ملیں گے۔ میں تجھ پر بلی جاؤں : اب کہئے کہ کیا بلی کی ہنسا پریم کا ہی دوسرا روپ نہیں ہے ؟ کسان اپنی کھیتی سے پریم کرتا ہے تبھی تو اس ہرن کی جان لیتا ہے جو نکلتی ہوئی کونپل کو کتر کتر کر کھاتا ہے۔ مالی اپنے پھلوں کو پیار کرتا ہے اور کیوں نہ پیار کرے ؟ وہ اس کی روزی ہے اسی لئے تو

वह तोतों को गोपन से मार गिराता है. यह ठीक है कि हिरन और तोतों के मारने में इतना प्रेम नहीं चमकता जितना बलि देने में. वह जरूर चमकता अगर हिरन और तोते उसके पालतू पशु, पक्षी होते. हां पौदे को उखाड़ते हुए देख कर वह अपने प्यारे बेटे को धमकाता है और उखाड़ने पर चपतियाता है. अपने पालतू जानवरों को खेत का नुक़सान करने पर काफ़ी सज़ा देता है. इसलिये हिंसा प्रेम का एक पहलू-मात्र हो रह जाती है. फिर कहिये, 'प्रेम करो' कहने से हिंसा कैसे छुड़ाई जा सकती है. प्रेम करने की बात कहना हिंसा का उपदेश देना है. देश-प्रेम में आकर हिंसा का कौनसा काम है जिस के लिये मनुष्य तैयार नहीं हो सकता ? धन. धरती और धर्म-पत्नी की खातिर ही तो सारी लड़ाइयाँ रची जाती हैं. फिर प्रेम को अहिंसा की जगह देकर रिषी किस तरह हिंसा न करने का सबक़ दे सकते थे ? अहिंसा अपनाने के सिवा कोई दूसरी राह ही न थी. अहिंसा के माने हैं हिंसा न करना. जब भी कोई रिषी यह कहता है कि हिंसा न करो तब वह यह कहता ही है कि दुनिया से प्रेम कम करो. प्रेम कम किये बग़ैर हिंसा करने में कमी हो ही नहीं सकती. हिंसा छोड़ने की तो बात ही क्या ? देह रहते हुए और देह से लगावमात्र का प्रेम रहते हुए हिंसा पूरी तरह कभी नहीं छुट सकती. क्यों कि देह के लिये खाने का सामान जुटाना ही पड़ेगा और खाने का सामान हिंसा किये बिना जुटाया नहीं जा सकता. अब जब प्रेम और हिंसा का जोड़ा है तब अहिंसा का ही उपदेश दिया जा सकता है. अहिंसा की जगह प्रेम न करने का भी उपदेश दिया जा सकता था, पर वह दुनियादारों को खटकता और धर्म के

وہ طوطوں کو گوپن سے مار گراتا ھے ۔ یہہ ٹھیک ھے کہ ھرن اور طوطوں کے مارنے میں اِتنا پریم نہیں چمکتا جتنا بلی دینے میں ۔ وہ ضرور چمکتا اگر ھرن اور طوطے اُسکے پالتو پشو پکشی ھوتے ۔ ھاں پودے کو اُکھاڑتے ھوئے دیکھکر وہ اپنے پیارے بیٹے کو دھمکاتا ھے اور اُکھاڑنے پر چپتیاتا ھے۔ اپنے پالتو جانوروں کو کھیت کا نقصان کرنے پر کافی سزا دیتا ھے۔ اسلئے ھنسا پریم کا ایک پہلو ماتر ھي رہ جاتی ھے ۔ پھر کہئے پریم کرو کہنے سے ھنسا کیسے چھڑائي جاسکتي ھے پریم کرنے کي بات کہنا ھنسا کا اُپدیش دینا ھے ۔ دیش پریم میں آکر ھنسا کا کون سا کام ھے جس کے لئے منشیہ تیار نہیں ھوسکتا ؟ دھن ، دھرتي اور دھرم پتني کي خاطر ھي تو ساری لڑائیاں رچی جاتي ھیں۔ پھر پریم کو اھنسا کي جگہ دے کر رشي کس طرح ھنسا نہ کرنے کا سبق دے سکتے تھے ؟ اھنسا اپنانے کے سوا کوئی دوسري راہ ھي نہ تھي۔ اھنسا کے معني ھیں ھنسا نہ کرنا۔ جب بھي کوئی رشی یہہ کہتا ھے کہ ھنسا نہ کرو تب وہ یہہ کہتا ھے کہ دنیا سے پریم کم کرو۔ پریم کم کئے بغیر ھنسا کرنے میں کمي ھو ھی نہیں سکتی۔ ھنسا چھوڑنے کی تو بات ھی کیا ؟ دیہہ رھتے ھوئے اور دیہہ سے لگاؤ ماتر کا پریم رھتے ھوئے ھنسا پوري طرح کبھي نہیں چھٹ سکتی۔ کیونکہ دیہہ کے لئے کھانے کا سامان جٹانا ھی پڑے گا اور کھانے کا سامان ھنسا کئے بنا جٹایا نہیں جاسکتا۔ اب جب پریم اور ھنسا کا جوڑا ھے تب اھنسا کا ھي اُپدیش دیا جاسکتا ھے - اھنسا کی جگہہ پریم نہ کرنے کا بھي اُپدیش دیا جاسکتا تھا ، پر وہ دنیا داروں کو کھٹکتا اور دھرم کے

ख्याल से नामुनासिब उपदेश समझाजाता. यही हाल अचौर्य और अपरिग्रह का है. जीवन-रक्षा का दूसरा पहलू है चोरी और ममता का दूसरा पहलू है परिग्रह. चोरी और परिग्रह हिंसा की तरह जीवन के लिये बेहद जरूरी हैं. इसलिये जब जब गुरुजन या महापुरुष चोरी न करने की बात करते हैं तब तब जीवन-रक्षा को कम करने का उपदेश देते हैं और परिग्रह कम करने में ममता घटाने का पाठ छिपा रहता है. यों अचौर्य और अपरिग्रह नकारात्मक ही हो सकते थे और सत्य और ब्रह्मचर्य ही ऐसे थे जिनके नकारात्मक होने की जरूरत नहीं थी. उन दोनों में से भी ब्रह्मचर्य अपने माने वह नहीं रखता जो आम दुनिया ने समझ रक्खे हैं. असल में वह सत्य यानी परमेश्वर की व्याख्या-मात्र है. उसे सत्य का अंगही समझना चाहिये. यह सब हम इस लिये लिख रहे हैं कि हम यह कहना चाहते हैं कि जो सत्य का भक्त है उस का जीवन कर्ममय मिलेगा. उसें सूरज की तरह पल-पल और पग-पग पर अंधेरे से भिड़ना होगा और उसे दूर करना होगा. सूरज हमारी नजरमें निकलने के बाद भलेही बारह घंटे में डूबता हो पर असलमें तो वह पल-पल पर निकलता और पल-पल पर डूबता है. यह किस को नहीं मालूम कि जब वह हिन्दुस्तानियों के लिये निकलता है तब वह अमरीका वालों के लिये डूबता है यानी जब वह हिन्दुस्तान के अन्धेरे को भगाता है तब अन्धेरा भागकर अमरीका पर धावा बोल देता है. सूरज हम सब को सबक़ दे रहा है कि प्रकाशवान् आत्मा को वाली सत्य भक्त को हमेशा सत्याग्रह करते रहना पड़ेगा. क्योंकि अन्धेरा और अन्याय। यह दुनिया से कभी जाने वाले नहीं हैं. सिर्फ़

خیال سے نامناسب اپدیش سمجھا جاتا. یہی حال اچوریہ اور اپریگرہ کا ہے. جیون رکشا کا دوسرا پہلو ہے چوری اور ممتا کا دوسرا پہلو ہے پریگرہ. چوری اور پریگرہ ہنسا کی طرح جیون کے لئے بے حد ضروری ہیں. اسلئے جب جب گروجن یا مہا پرش چوری نہ کرنے کی بات کہتے ہیں' تب تب جیون رکشا کو کم کرنے کا اُپدیش دیتے ہیں اور پری گرہ کم کرنے میں ممتا گھٹانے کا پاٹھ چھپا رہتا ہے. یوں اچوریہ اور اپریگرہ نکار اتمک ہی ہو سکتے تھے اور ستیہ اور برہمچریہ ہی ایسے تھے جن کے نکار اتمک ہونے کی ضرورت نہیں تھی. اُن دونوں میں سے بھی برہمچریہ اپنے معنے وہ نہیں رکھتا جو عام دنیا نے سمجھ رکھے ہیں. اصل میں وہ ستیہ یعنی پرمیشور کی ویاکھیا ماتر ہے. اُسے ستیہ کا انگ ہی سمجھنا چاہئے. یہ سب ہم اِس لئے لکھ رہے ہیں کہ ہم یہ کہنا چاہتے ہیں کہ جو ستیہ کا بھکت ہے اُسکا جیون کرم سے ملے گا. اُسے سورج کی طرح پل پل اور پگ پگ پر اندھیرے سے بھڑنا ہوگا اور اُسے دور کرنا ہوگا. سورج ہماری نظر میں نکلنے کے بعد بھلے ہی بارہ گھنٹے بعد ڈوبتا ہو پر اصل میں تو وہ پل پل پر نکلتا اور پل پل پر ڈوبتا ہے. یہ کس کو نہیں معلوم کہ جب وہ ہندستانیوں کے لئے نکلتا ہے تب وہ امریکہ والوں کے لئے ڈوبتا ہے یعنی جب وہ ہندستان کے اندھیرے کو بھگاتا ہے تب اندھیرا بھاگ کر امریکہ پر دھاوا بول دیتا ہے. سورج ہم سب کو سبق دے رہا ہے کہ پرکاش وان آتما کو یعنی ستیہ کو ہمیشہ ستیہ بھکت گرہ کرتے رہنا پڑے گا کیونکہ اندھیرا اور انیائے یہ دنیا سے کبھی جانے والے نہیں ہیں. صرف

जगह बदलते रहते हैं. फिर सत्य भक्त का काम कैसे खतम होसकता है और फिर किसी देश में कोई एकदिन भी कैसे ऐसा होसकता है जब सत्याग्रही को सत्याग्रह की जरूरत न रहे ?

छोटे मोटे रूप में हिन्दुस्तान में ही नहीं हर देश में हमेशा से सत्याग्रह होते आये हैं. राज-सत्ता के ख़िलाफ़ सामुहिक (इजतमाई) सत्याग्रह की बात पहले पहल हिन्दुस्तान को ही सूझी. वह शुरू किया गया. लोगों की शक्ति के अनुसार वह समय समय पर कम ज्यादा किया गया. यहाँ तक कि कभी कभी वह इतना कम कर दिया गया कि घटकर सिर्फ़ एक के लिये रह गया. यहाँ यह याद रहे कि वह एक का सत्याग्रह भी प्रह्लाद और मीरा के सत्याग्रह से कई गुना ज्यादा जोरदार था क्योंकि उस एक की पीठ पर हिन्दुस्तान का सारा समाज था. इस वास्ते हिन्दुस्तान की बेहद मजबूत विदेशी सरकार उस एक के साथ भी सख्ती करने में ऊँच नीच का ध्यान रखती थी जबकि प्रह्लाद और मीरा की सरकार को इतना ज्यादा सोचने और समझने का जरूरत नहीं थी. हिन्दुस्तान में सत्याग्रह शुरू होने के दिन से भली-बुरी आज़ादी मिलने के दिन तक किसी न किसी रूप में जरूर बना रहा. और यह बना रहा सरकार के अन्यायों के ख़िलाफ़, सरकार के ख़िलाफ़ नहीं. अगर वह सरकार के ख़िलाफ़ था तो केवल इसलिये कि सरकार विदेशी थी और विदेशी सरकार का हमारे देशपर हुकूमत करना अन्याय था. इसलिये वह सरकार के ख़िलाफ़ होते हुए भी अन्याय के ख़िलाफ़ ही था। यहाँ यह याद रहे कि सत्याग्रह के हिन्दुस्तान में दीप जलाने

جبکہ بدلتے رہتے ہیں، پھر ستیہ بھکت کا کام کیسے ختم ہو سکتا ہے اور پھر کسی دیش میں کوئی ایک دن بھی کیسے ایسا ہو سکتا ہے جب ستیا گرہ کی ضرورت نہ رہے ؟

چھوٹے موٹے روپ میں ہندستان میں ہی نہیں ہر دیش میں ہمیشہ سے ستیا گرہ ہوتے آئے ہیں۔ راج ستا کے خلاف سامُوہک (اجتماعی) ستیا گرہ کی بات پہلے پہل ہندستان کو ہی سوجھی اور وہ شروع کیا گیا لوگوں کی شکتی کے انوسار وہ سمے سمے پر کم یا زیادہ کیا گیا. یہاں تک کہ کبھی کبھی وہ اتنا کم کردیا گیا کہ گھٹکر صرف ایک کے لئے رہ گیا. یہاں یہ یاد رہے کہ وہ ایک کا ستیا گرہ بھی پرہلاد اور میرا کے ستیا گرہ سے کئی گنا زیادہ زور دار تھا کیونکہ اُس ایک کی پیٹھ پر ہندستان کا سارا سماج تھا. اس واسطے ہندستان کی بیحد مضبوط ودیشی سرکار اُس ایک کے ساتھ بھی سختی کرنے میں اونچ نیچ کا دھیان رکھتی تھی جبکہ پرہلاد اور میرا کی سرکار کو اتنا زیادہ سوچنے اور سمجھنے کی ضرورت نہیں تھی. ہندستان میں ستیاگرہ شروع ہونے کے دن سے بھلی بری آزادی ملنے کے دن تک کسی نہ کسی روپ میں ضرور بنا رہا. اور یہ بنا رہا سرکار کے انیایوں کے خلاف سرکار کے خلاف نہیں. اگر وہ سرکار کے خلاف تھا تو کیول اس لئے کہ سرکار ودیشی تھی اور ودیشی سرکار کا ہمارے دیش پر حکومت کرنا انیائے تھا. اسلئے وہ سرکار کے خلاف ہوتے ہوئے بھی انیائے کے خلاف ہی تھا. یہاں یہ یاد رہے کہ ستیا گرہ کے ہندستان میں دیپ جلانے

वाले की मन्शा सभी तरह के अन्यायों के खिलाफ़ सत्याग्रह करने की थी. यह दूसरी बात है कि उसकी पहली नजर सरकार के अन्यायों पर पड़ी क्योंकि उसके अन्यायों से हिन्दुस्तान का बच्चा बच्चा दुखी था. असलमें सत्याग्रही सरकार, समाज और व्यक्ति के अन्याय में कोई भेद नहीं करता तभी तो हिन्दुस्तान में जब सरकार के खिलाफ़ सत्याग्रह ढीला पड़ जाता था तो वह दूसरी तरफ़ जोरदार हो जाता था यानी पूँजी पतियों के अन्यायों की तरफ़ और पुरोहितों के अन्यायों की तरफ़ उसका जोर बढ़ जाता था. और आज़ादी मिलने पर वही सत्याग्रह धर्मान्धों से जा भिड़ा. कुछ भी सही, उसने शुरू होने के दिन से उस दिन तक कभी चैन नहीं लिया जब तक हिन्दुस्तान से वही नहीं चल बसा जिसने सत्याग्रह-दीप जलाया था. अब या तो यह समझिये कि सत्याग्रह-दीप बुझ गया और बुझा इस वजह से कि जिसने इसे जलाया था वही इस दीप का तेल था और हम सब उस के साथी निरी बत्ती और मिट्टी के दिये थे या अगर हम यह समझें कि हम तेल हैं तो फिर वही मिट्टी का दिया, रूई की बत्ती और जलती हुई ज्योति था. कुछ भी मानिये, सत्याग्रह-दीप जलाने वाला वह कुछ ऐसी चीज़ ज़रूर था जिसकी वजह से सत्याग्रह-दीप जलता और प्रकाश देता था. उस के उठ जाने से वह एकदम बुझ गया. हो सकता है आज का सर्वोदय-समाज यह दावा करे कि वह तेल है, बत्ती है, दिया है और सब कुछ है. वह सब कुछ सही पर जलती हुई 'ज्योति' हरगिज़ नहीं है. क्यों नहीं है ? क्या कमी है ? इसका जवाब हम देने के ख़ातिर दिये देते हैं कि उस दीप

والے کی منشا سبھی طرح کے انیایوں کے خلاف ستیاگرہ کرنے کی تھی. یہ دوسری بات ہے کہ اُس کی پہلی نظر سرکار کے انیایوں پر پڑی کیونکہ اُس کے انیایوں سے ہندستان کا بچہ بچہ دکھی تھا. اصل میں ستیاگرہی سرکار، سماج اور ویکتی کے انیائے میں کوئی بھید نہیں کرتا تبھی تو ہندستان میں جب سرکار کے خلاف ستیاگرہ ڈھیلا پڑ جاتا تھا تو وہ دوسری طرف زور دار ہو جاتا تھا یعنی پونجی پتیوں کے انیایوں کی طرف اور پروہتوں کے انیایوں کی طرف اُسکا زور بڑھ جاتا تھا. اور آزادی ملنے پر وہی ستیاگرہ دھرماندھوں سے جا بھڑا. کچھ بھی سہی، اُس نے شروع ہونے کے دن سے اُس دن تک کبھی چین نہیں لیا جب تک ہندستان سے وہی نہیں چل بسا جس نے ستیاگرہ دیپ جلایا تھا. اب یا تو یہ سمجھئے کہ ستیاگرہ دیپ بجھ گیا اور بجھا اِس وجہ سے کہ جس نے اسے جلایا تھا وہی اس دیپ کا تیل تھا اور ہم سب اُس کے ساتھی نری بتی اور متی کے دیئے تھے یا اگر ہم یہ سمجھیں کہ ہم تیل ہیں تو وہی متی کا دیا روئی کی بتی اور جلتی ہوئی جیوتی تھا. کچھ بھی مانئے، ستیاگرہ دیپ جلانے والا وہ کچھ ایسی چیز ضرور تھی جسکی وجہ سے ستیاگرہ دیپ جلتا اور پرکاش دیتا تھا اُس کے اُٹھ جانے سے وہ ایک دم بجھ گیا. ہو سکتا ہے آج کا سروودے سماج یہ دعوا کرے کہ وہ تیل ہے، بتی ہے، دیا ہے اور سب کچھ ہے. وہ سب کچھ سہی پر جلتی ہوئی جیوتی، ہرگز نہیں ہے. کیوں نہیں ہے؟ کیا کمی ہے؟ اسکا جواب ہم دینے کے خاطر دیئے دیتے ہیں کہ اُس دیپ

जलाने वाले के उठ जाने से हिन्दुस्तान के वातावरण में इतना आक्सिजन ही नहीं रह गया जितने की समाज-सत्याग्रह-दीप जलने के लिये जरूरत होती है. भले ही कुछ सत्याग्रह-दर्शन के महापंडित उपदेशों की दियासलाई रगड़ रगड़ कर उस दीप की बत्ती को जलाने की कोशिश करें पर आक्सिजन के बिना वह भड़क कर रह जायगी न खुद जलेगी, न बत्ती को मिलका सकेगी.

कुछ लोग यह कह सकते हैं कि अब सत्यग्रह की जरूरत नहीं. पर ऐसा कहने वाले यह नहीं सोचते कि यह साबित करने की ज़िम्मेवारी उनके सर आजायगी कि अब हिन्दुस्तान में कोई अन्याय नहीं रहा और क्या वह ऐसा साबित कर सकेंगे ? सत्याग्रह की पहलेसे अब ज्यादा जरूरत है और अब सत्याग्रह जनता के लिये ज्यादा आसान है. सत्याग्रह की सबसे पहली शर्त है उसको प्यार करना जिसके खिलाफ़ सत्याग्रह किया जाय. विदेशी सरकार के रहते यह गिने चुने समझदारों का काम था क्योंकि विदेशियों को प्यार करना और फिर उन विदेशियों को प्यार करना जिन्होंने हमारी धन-धरती हरली हो, हरेक का काम नहीं. पर आज तो सरकार अपने भाइयों की है और सैकड़ों के गुरुभाइयों की है. फिर उनसे जो थोड़ा बहुत प्यार है उसे और बढ़ा कर सत्याग्रह करने में पहले से कहीं ज्यादा आसानी हो सकती है. इस समय सवाल प्यार के न होने या प्यार की कमी का नहीं है पर सवाल है सत्याग्रह की दूसरी शर्त पूरी करने का और वह है अपना सुख त्यागने का.

جلانے والے کے اُٹھ جانے سے هندستان کے واتاورن میں اتنا آکسیجن هي نہیں رہ گیا جتنے کی سماج ستیاگره دیپ جلنے کے لئے ضرورت هوتی هے. بھلے هي کچھ ستیاگره درشن کے مہا پنڈت اُپدیشوں کي دیاسلائي رگڑ رگڑ کر اُس دیپ کی بتی کو جلانے کي کوشش کریں پر آکسیجن کے بنا وہ بھڑک کر رہ جائیگي' نہ خود جلے گی نہ یہ بتي کو ملکا سکے گي.

کچھ لوگ یہ کہہ سکتے هیں کہ اب ستیاگره کی ضرورت نہیں. پر ایسا کہنے والے یہ نہیں سوچتے کہ یہ ثابت کرنے کي ذمہداري اُن کے سر آجائیگي کہ اب هندستان میں کوئی انیائے نہیں رها اور کیا وہ ایسا ثابت کر سکیں گے ؟ ستیاگره کی پہلے سے اب زیادہ ضرورت هے' اور اب ستیاگره جنتا کے لئے زیادہ آسان هے. ستیاگره کي سب سے پہلي شرط هے اُس کو پیار کرنا جسکے خلاف ستیاگره کیا جاے. ودیشي سرکار کے رهتے یہ گنے چنے سمجھداروں کا کام تھا کیونکہ ودیشیوں کو پیار کرنا اور اُن ودیشیوں کو پیار کرنا جنھوں نے همارے دھن دھرتي هرلي هو' هر ایک کا کام نہیں. پر آج تو سرکار اپنے بھائیوں کي هے اور سیکڑوں کے گرو بھائیوں کي هے. پھر ان سے جو تھوڑا بہت پیار هے اُسے اور بڑھا کر ستیاگره کرنے میں پہلے سے کہیں زیادہ آسانی هوسکتی هے. اس سمے سوال پیار کے نہ هونے یا پیار کی کمی کا نہیں هے' پر سوال هے ستیاگره کی دوسری شرط پوری کرنے کا اور وہ هے اپنا سکھ تیاگنے کا. اپنے تن' دھن' جن کو جوکھم میں ڈالنے کا. کیونکہ ستیاگره

की यह दूसरी शर्त निभाये बिना उसपर असर ही नहीं पड़ता जिस के खिलाफ़ सत्याग्रह किया जाय. अंगरेज़ों के खिलाफ़ हिन्दुस्तान ने सत्याग्रह करके उनका ज़रा भी बाल बांका नहीं होने दिया और अच्छी तरह से उन्हें घर पहुँचा दिया और सैकड़ों आफ़तों से बचा दिया. यहाँ तक कि हिन्दुस्तान के आख़िरी वाइसराय माउन्टबेटेन को ' माउन्टबेटेन की जय ' के साथ बम्बई के बाज़ारों से जलूस निकाल कर आराम के साथ जहाज़ में बैठा दिया और घर पहुँचा दिया. सत्याग्रही में जब ऐसी भावनाएँ नहीं होतीं तभी वह सत्याग्रह करने की हिम्मत नहीं करता. इस समय जो अन्याय फैले हुए हैं और उन अन्यायों के जो कारण हैं उनके खिलाफ़ सत्याग्रह करना उनकी जान जोखम में डालना है. उस आदमी की कहानी से कौन वाक़िफ़ नहीं है जिसने फांसी चढ़ते समय आख़िरी मुलाक़ात के वक़्त अपनी मां का कान इस लिए कुतर लिया था कि उसने उसको पहली चोरी करते हुए न डांटा डपटा था, न उस चोरी के माल को घर में रखने के खिलाफ़ सत्याग्रह ही किया था. ठीक इसी तरह वह लोग जो आज के अन्यायों के सीधे नासीधे कारन बने हुए हैं कभी न कभी आफ़त में पड़ने पर उन सच्चे दोस्तों और रिश्तेदारों के कान कुतरने के हर तरह हक़दार हो जायेंगे जो आज अन्यायों के खिलाफ़ सत्याग्रह करने को किसी झिझक के कारन उस मुद्दत तक टालने की सोचते हैं जब इस कहावत का वक़्त आ जायगा कि ' अब पछताये होत क्या, जब चिड़ियां चुग गईं खेत '.

सूरज की तरह सत्याग्रही जमात के लिए कभी ऐसा वक़्त नहीं आ सकता जब सत्याग्रह करने की ज़रूरत भी न रह जाय. और

کی یہ دوسری شرط نبھائے بنا اُس پر اثر ہی نہیں پڑتا جس کے خلاف ستیاگرہ کیا جائے. انگریزوں کے خلاف ہندستان نے ستیاگرہ کرکے اُن کا ذرا بھی بال بانکا نہیں ہونے دیا اور اچھی طرح سے انہیں گھر پہنچا دیا اور سیکڑوں آفتوں سے بچا دیا. یہاں تک کہ ہندستان کے آخری وائسرائے ماؤنٹ بیٹن کو ' ماؤنٹ بیٹن کی جے ' کے ساتھ بمبئی کے بازاروں سے جلوس نکال کر آرام کے ساتھ جہاز میں بٹھا دیا اور گھر پہنچا دیا. ستیاگرہی میں جب ایسی بھاؤنائیں نہیں ہوتیں تبھی وہ ستیاگرہ کرنے کی ہمت نہیں کرتا. اس سمے جو انیائے پھیلے ہوئے ہیں اور اُن انیایوں کے جو کارن ہیں اُن کے خلاف ستیاگرہ کرنا اُن کی جان جوکھم میں ڈالنا ہے. اُس آدمی کی کہانی سے کون واقف نہیں ہے جس نے پھانسی چڑھتے سمے آخری ملاقات کے وقت اپنی ماں کا کان اس لئے کتر لیا تھا کہ اُس نے اُس کو پہلی چوری کرتے ہوئے نہ ڈانٹا ڈپٹا تھا، نہ اُس چوری کے مال کو گھر میں رکھنے کے خلاف ستیاگرہ ہی کیا تھا. ٹھیک اسی طرح وہ لوگ جو آج کے انیایوں کے سیدھے نا سیدھے کارن بنے ہوئے ہیں، کبھی نہ کبھی آفت میں پڑنے پر اُن سچے دوستوں اور رشتہ داروں کے کان کترنے کے ہر طرح حقدار ہوجائیں گے. جو آج انیایوں کے خلاف ستیاگرہ کرنے کو کسی جھجھک کے کارن اُس مدت تک ٹالنے کی سوچتے ہیں جب اس کہاوت کا وقت آ جائیگا کہ 'اب پچھتائے ہوت کیا جب چڑیاں چگ گئیں کھیت.'

سورج کی طرح ستیاگرہی جماعت کے لئے کبھی ایسا وقت نہیں آ سکتا جب ستیاگرہ کی ضرورت نہ رہ جائے اور

आज तो वह वक़्त कैसे भी नहीं है. अन्याय जड़ तो पकड़े हुए है कई सदियों से, पर आज तो वह इतना फल फूल रहा है कि दस बीस और सौ दो सौ आदमी ही नहीं, क़रीब क़रीब सब अख़बार वाले, यहाँ तक कि सरकार के ज़िम्मेदार अफ़सर और वह तक जिनके हाथ में आज हुकूमत की बागडोर है, खुले खुले प्लेट-फ़ार्मों और रेडियो से सीधे नासीधे उसकी बढ़वारी को क़ुबूल कर रहे हैं. अगर इस व़क्त अन्याय के ख़िलाफ़ अहिंसा का हथियार, सत्याग्रह काम में न लाया गया तो हिंसा का हथियार, ख़ूनी क्रांति आपों-आप जगह ले-लेगी. अगर अन्याय को अधर्म भी कहा जा सकता है तो गीता के अनुसार हमारी राय में भगवान के अवतार लेने का यही व़क्त है. खुल्लम खुल्ला इतने बड़े पैमाने पर सरकार को चुनौती देने वाले अन्याय ने कभी जन्म लिया हो, हमें याद नहीं पड़ता.

आज़ादी से पहले के अन्याय के साथ इस अन्याय की तुलना नहीं की जा सकती. वह अपने क़िस्म का अलग अन्याय था. उसमें कभी अन्यायी भी अन्याय का शिकार होता था. उस व़क्त तो एक तरह की अराजकता फैली हुई थी. अराजकता में जनता अन्याय का बदला लेने के लिए खुली रहती है इसलिए वह अन्याय अखरता नहीं है. उससे बचने के लिए ईश्वर से बहुत कम मदद मांगी जाती है. उस व़क्त तो हथियारों की पूजा होती है और गुण्डा देव की मन्नतें मानी जाती हैं. ईश्वर की ज़रूरत न होने से ईश्वर के अव-तार का वह व़क्त नहीं हो सकता. और फिर हिन्दुस्तान के उस तमाशे के पीछे एक ताक़त थी और वह ताक़त खड़ी खड़ी उस तमाशे को।

آج تو وہ وقت کیسے بھی نہیں ہے. انیائے جڑ تو پکڑے ہوئے ہے کئی صدیوں سے، پر آج تو وہ اتنا پھل پھول رہا ہے کہ دس بیس اور سو دوسو آدمی ہی نہیں، قریب قریب سب اخبار والے، یہاں تک کہ سرکار کے ذمہ‌دار آفیسر اور وہ تک، جنکے ہاتھ میں آج حکومت کی باگ ڈور ہے، کھلے کھلے پلیٹ فارموں اور ریڈیو سے سیدھے نا سیدھے اسکی بڑھواری کو قبول کرا رہے ہیں. اگر اس وقت انیائے کے خلاف اہنسا کا ہتھیار، ستیاگرہ کام میں نہ لایا گیا تو ہنسا کا ہتھیار، خونی کرانتی آپوں آپ جگہ لے لیگی. اگر انیائے کو ادھرم بھی کہا جا سکتا ہے تو گیتا کے انوسار ہماری رائے میں بھگوان کے اوتار لینے کا یہی وقت ہے. کھلم کھلا اتنے بڑے پیمانے پر سرکار کو چنوتی دینے والے انیائے نے کبھی جنم لیا ہو، ہمیں یاد نہیں پڑتا.

آزادی سے پہلے کے انیائے کے ساتھ اس انیائے کی تلنا نہیں کی جا سکتی. وہ اپنے قسم کا الگ انیائے تھا. اُس میں کبھی انیائی بھی انیائے کا شکار ہوتا تھا. اُس وقت تو ایک طرح کی اراجکتا پھیلی ہوئی تھی. اراجکتا میں جنتا انیائے کا بدلہ لینے کے لئے کھلی رہتی ہے. اس لئے وہ انیائے اکھرتا نہیں ہے. اُس سے بچنے کے لئے ایشور سے بہت کم مدد مانگی جاتی ہے. اُس وقت تو ہتھیاروں کی پوجا ہوتی ہے اور گنڈا دیو کی منتیں مانی جاتی ہیں. ایشور کی ضرورت نہ ہونے سے ایشور کے اوتار کا وہ وقت نہیں ہو سکتا. اور پھر ہندستان کے اُس تماشے کے پیچھے ایک [illegible] کھی اُس تماشے کو

देखती थी, आनन्द लेती थी, रोकती थी तो तमाशे मे जोर लाने के लिए रोकती थी. जिस अन्याय में जनता आनंद ले वह फिर न्याय की कोटि को पहुंच जाता है. फ़ारसी की एक कहावत है "बहुतों का एक साथ मरना तमाशे का रूप ले लेता है". और उस कहावत पर हम बिहार के भूकम्प के तजरबे के बल पर सचाई की मुहर लगाने को तैयार हैं. ऐसे मौक़ों पर आदमी अपने एक का रोना क्या उसके सामने रोये जो पहले ही से पांच का रोना रो रहा है ? और वह पांच वाला क्या उस एक वाले के सामने रोये जिसको रोते अभी एक मिनट नहीं हुआ कि वह एक वाला दस का रोना रोने लगता है ? ऐसे मौक़ों पर हँसना ही ठीक होता है और लोग हँसते ही देखे गये हैं. पर आज तो न बिहार का भूकम्प है और न अराजकता है जिसमें जनता खुले हाथों बदला लेने के लिए आज़ाद होती है. इस वक़्त तो उसकी तसल्ली सत्य, अहिंसा से जन्मा सत्याग्रह कर सकता है या न्याय और सरकार से जन्मी तलवार कर सकती है. इन दोनों में से अगर कोई भी उसकी तसल्ली न कर सका तो फिर अन्याय और भड़क से उठी तलवार बहुत जल्दी उसकी मदद के लिए मैदान में आ कूदेगी. प्रकृति ऐसे मामलों में ज़्यादा इन्तज़ार नहीं किया करती. इस वक़्त सब के लिए मौक़ा है, अहिंसा के लिए, हिंसा-अहिंसा-मिले न्याय के लिए और अन्याय-भड़क-मिले अन्धबल के लिए. जो इस मौक़े से फ़ायदा उठायेगा वही आगे बढ़ जायगा. हाँ, सत्याग्रह में जनता के लिए कम जोखम है, सरकार के लिए कोई जोखम नहीं, सत्याग्रहियों के लिये बहुत बड़ी जोखम है और जान जोखम भी है. यह ठीक है कि उसमें गन्ने पेले जायेंगे पर थोड़े

دیکھتی تھی٬ آنند لیتي تھی٬ روکتي تھی تو تماشے میں زور لانے کے لئے روکتي تھی. جس انیائے میں جنتا آنند لے وہ پھر نیائے کی کوٹي کو پہنچ جاتا ہے. فارسي کی ایک کہاوت ہے—" بہتوں کا ایک ساتھ مرنا تماشے کا روپ لے لیتا ہے." اور اُس کہاوت پر ہم بہار کے بھوکمپ کے تجربے کے بل پر سچائي کي مہر لگانے کو تیار ہیں. ایسے موقعوں پر آدمي اپنے ایک رونا کیا اُسکے سامنے روئے جو پہلے ہی سے پانچ کا رونا رو رہا ہے؟ اور وہ پانچ والا کیا اُس ایک والے کے سامنے روئے جسکو روتے ابھی ایک منٹ نہیں ہوا کہ وہ ایک والا دس کا رونا رونے لگتا ہے؟ ایسے موقعوں پر ہنسنا ہی ٹھیک ہوتا ہے اور لوگ ہنستے ہي دیکھے گئے ہیں. پر آج تو نہ بہار کا بھوکمپ ہے اور نہ اراجکتا ہے٬ جسمیں جنتا کھلے ہاتھوں بدلہ لینے کے لئے آزاد ہوتي ہے. اُس وقت تو اُسکي تسلي ستیہ اہنسا سے جنما ستیاگرہ کرسکتا ہے یا نیائے اور سرکار سے جنمي تلوار کرسکتی ہے. اِن دونوں میں سے اگر کوئی بھي اُسکی تسلی نہ کرسکا تو پھر انیائے اور بھڑک سے اُٹھی تلوار بہت جلدی اُسکی مدد کے لئے میدان میں آ کودیگي. پرکرتي ایسے معاملوں میں زیادہ انتظار نہیں کیا کرتي. اس وقت سب کے لئے موقعہ ہے٬ اہنسا کے لئے٬ ہنسا اہنسا ملے نیائے کے لئے اور انیائے بھڑک ملے اندہ بل کے لئے. جو اِس موقعہ سے فائدہ اُٹھائیگا وہي آگے بڑہ جائیگا. ہاں٬ ستیاگرہ میں جنتا کے لئے کم جوکھم ہے٬ سرکار کے لئے کوئي جوکھم نہیں٬ ستیاگرہیوں کے لئے بہت بڑی جوکھم ہے٬ اور جان جوکھم بھي ہے. یہ ٹھیک ہے کہ اُس میں گنّے پیلے جائینگے پر تھوڑے

गन्नों में ही बहुत रस निकल आयगा और जल्दी शान्ति क़ायम हो जायगी. इस तरह देश का नुक़सान कम से कम होगा और जीत सत्य की होगी. इसलिये शान्ति बहुत दिनों तक टिकी रहेगी. हिंसा-अहिंसा-मिले न्याय में जनता की जान पर आ बनेगी. बहुतों की जान जोखम में रहेगी, सरकार को कम जोखम तो न होगा पर सत्याग्राहियों के मुक़ाबले में बहुत कम जोखम होगी. इस आन्दोलन में ज्वार के फटेरे ज्यादा पिलेंगे, भूल से कुछ गन्ने भी पिल जायेंगे. आखिर में शान्ति की स्थापना होगी जो बहुत थोड़ी देर टिक पायेगी. इसमें देश पहले से ज्यादा टोटे में रहेगा. अन्याय-भड़क-मिले अन्धबल के-उठ खड़े होने पर सारा देश जोखम में पड़ेगा. न जनता बचेगी न सरकार, न भले बचेंगे न बुरे. हाँ, इस हुल्लड़ के बाद बहुत जल्दी शान्ति की स्थापना होगी. पर हो सकता है कि उस शान्ति के पांव जमते जमते फिर अशान्ति आ कूदे. क्योंकि शान्ति हमेशा भलों का सहारा चाहती है और भले इतनी जल्दी हाथ नहीं लगते. इसलिये हुल्लड़ के बाद की शान्ति कभी भी टिकाऊ नहीं होती.

अब हम सीधे और साफ़ साफ़ उन लोगों से पूछना चाहते हैं जो अपने आप को सत्य और अहिंसा का ठेकेदार समझते हैं (यहाँ हम ठेकेदार लफ़्ज़ न चिढ़ कर कह रहे हैं, न चिढ़ाने के लिये कह रहे हैं. हां, ठेकेदार लफ़्ज़ बेशक भारी और खटकने वाला है पर उन ठेकेदारों के प्रति हमारा प्रेम कहाँ कम है ? और वह भी तो हमारे मन को बुरी तरह खसोट रहा है. उस कसक से भारी और चुभता शब्द तो निकलेगा ही) और जिन्होंने सत्य और अहिंसा के

گنوں میں هی بہت رس نکل آئیگا اور جلدی شانتی قائم هو جائیگی. اِس طرح دیش کا نقصان کم سے کم هوگا اور جیت ستیه کی هوگی. اِس لئے شانتی بہت دنوں تک ٹکی رهے گی هنسا اهنسا ملے نیاے میں جنتا کی جان پر آبنے گی' بہتوں کی جان جوکھم میں رهے گی سرکار کو کم جوکھم تو نہ هوگی پر ستیاگرهیوں کے مقابلے میں بہت کم جوکھم هوگی. اِس آندولن میں جوار کے پھٹیرے زیادہ پلیں گے بھول سے کچھ گنّے بھی پِل جائیں گے. آخر میں شانتی کی استھاپنا هوگی جو بہت تھوڑی دیر تک ٹِک پائے گی. اِس میں دیش پہلے سے زیادہ ٹوٹے میں رهے گا انیائے بھڑک ملے اندھ بل کے اُٹھ کھڑے هونے پر سارا دیس جوکھم میں پڑے گا' نہ جنتا بچے گی نہ سرکار' نہ بھلے بچیں گے نہ برے. هاں' اُس هلڑ کے بعد بہت جلدی شانتی کی استھاپنا هوگی. پر هو سکتا هے کہ اُس شانتی کے پاؤں جمتے جمتے پھر اشانتی آ کودے. کیونکہ شانتی همیشہ بھلوں کا سہارا چاهتی هے اور بھلے اتنی جلدی هاتھ نہیں لگتے. اسلئے هلڑ سے بعد کی شانتی کبھی بھی ٹکاؤ نہیں هوتی.

اب هم سیدھے اور صاف صاف اُن لوگوں سے پوچھنا چاهتے هیں جو اپنے آپکو ستیه اور اهنسا کا ٹھیکیدار سمجھتے هیں. (یہاں هم ٹھیکیدار لفظ نہ چڑھکر کہہ رهے هیں نہ چڑھانے کے لئے کہہ رهے هیں. هاں' ٹھیکیدار لفظ بیشک بھاری اور کھٹکنے والا هے پر اُن ٹھیکیداروں کے پرتی همارا پریم کہاں کم هے ؟ اور وہ بھی تو همارے من کو بری طرح کھسوٹ رها هے. اُس کسک سے بھاری اور چبھتا شبد تو نکلے گا هی.) اور جنھوں نے ستیه اور اهنسا

सीरिया, ईराक़ सभी जगह मजदूर आन्दोलन को दबाने का बहाना मिल गया और इस तरह साम्राजशाही की 'फिरक़ावाराना नीति कामयाब हुई इन सभी बातों में साम्राजशाही को स्टालिनवादी भूटी कम्यूनिस्ट पार्टियों की ग़लत नीति से बड़ी मदद मिली. इसका ज़िक्र मैं 'नया हिन्द' में पिछले साल एक मजमून में कर चुका हूँ.

अगर यहूदी या अरब अब भी यह नहीं समझते कि क़ौमी तहरीक से ताल्लुक़ रखने वाले किसी मसले का हल देसी सरमाया-दारों की मदद से नहीं निकल सकता. और इस के लिये मजदूर इनक़लाब और दुनिया भर का मजदूर इनक़लाब जरूरी है तो उन्हें कामयाबी नहीं हो सकती. और जहाँ तक यहूदी तहरीक का ताल्लुक है, उस का तो 'फ़िलिस्तीन चलो' का नारा भी क़ौमी तहरीक के अन्दर नहीं आता.

سیریا ' عراق سبهي جگه مزدور آندولن دبانے کا بہانه مل گیا اور اس طرح سامراج شاهی کی فرقه وارانه نیتی کامیاب هوئی . ان سبهی باتوں، میں سامراج شاهی کو استالن وادي جهوتي کمیونسٹ پارٹیوں کي غلط نیتی سے بڑی مدد ملی . اس کا ذکر میں 'نیا هند' میں پچھلے سال ایک مضمون میں کرچکا هوں .

اگر یهودي یا عرب اب بهي یه نهیں سمجهتے که قومی تحریک سے تعلق رکھنے والے کسی مسئلے کا حل دیسی سرمایهداروں کي مدد سے نهیں نکل سکتا . اور اس کے لئے مزدور انقلاب اور دنیا بهر کا مزدور انقلاب ضروري هے تو انهیں کامیابی نهیں هو سکتی. اور جهانتک یهودی تحریک کا تعلق هے ' اس کا تو 'فلسطین چلو' کا نعره بهی قومی تحریک کے اندر نهیں آتا

आक़बत का सुधार

(भाई ज़हूर बख्श)

बात उन दिनों की है, जब हज़रत मुहम्मद साहब मक्का छोड़ कर यसरब चले गए थे और कोबा पहाड़ पर रहने लगे थे. यसरब के लोग उनको बहुत चाहते और उनकी नसीहत से फ़ायदा उठाने के लिए अक्सर कोबा पहाड़ पर जाया करते थे.

एक दिन हज़रत ने फ़रमाया—' दुनिया में ग़ुलामी सब से बड़ा गुनाह है. जो इस गुनाह से बचता है वह अपने अल्लाह को ख़ुश रखता है. जो इन्सान ग़ुलामों को आज़ादी देता है. वह अपने अल्लाह का सब से प्यारा काम करता है. कोई भी ग़ुलाम अपनी कमाई हुई दौलत से आज़ाद हो सकता है. मगर जो ग़ुलाम पैसा कमाने से मजबूर हो, उसे बैतुल-माल के ज़रिये आज़ादी मिलना चाहिए.'

सुनने वालों में उतरती उम्र का एक ऐसा भी आदमी था. जो हज़रत की यह बात सुनते ही मारे ख़ुशी के पागल सा हो उठा. उसकी बुझी हुई आँखों में आँसू छलछला आए. मगर मन की बात ज़ाहिर करने के लिए शायद ठीक मौक़ा नहीं था. इस लिए वह शहर की तरफ़ लौटती हुई भीड़ में मिलकर धीरे धीरे ग़ायब हो गया.

عاقبت کا سدھار

(بھائی ظہور بخش)

بات اُن دنوں کي ھے ' جب حضرت محمد صاحب مکہ چھوڑ کر یثرب چلے گئے تھے اور کوبا پہاڑ پر رھنے لگے تھے . یثرب کے لوگ اُن کو بہت چاھتے اور اُن کي نصیحت سے فائدہ اُٹھانے کے لئے اکثر کوبا پہاڑ پر جایا کرتے تھے .

ایک دن حضرت نے فرمایا—'دنیا میں غلامي سب سے بڑا گناہ ھے . جو اس گناہ سے بچتا ھے وہ اپنے اللہ کو خوش رکھتا ھے . جو انسان غلاموں کو آزادي دیتا ھے وہ اپنے اللہ کا سب سے پیارا کام کرتا ھے . کوئی بھي غلام اپنی کمائی ھوئی دولت سے آزاد ھوسکتا ھے . مگر جو غلام پیسہ کمانے سے مجبور ھو اُسے بیت‌المال کے ذریعے آزادی ملنی چاھئے .'

سننے والوں میں اُترتی عمر کا ایک ایسا بھی آدمی تھا جو حضرت کی یہ بات سنتے ھی مارے خوشي کے پاگل سا ھو اُٹھا . اُس کي بجھی ھوئی آنکھوں میں آنسو چھلچھلا آئے . مگر من کي بات ظاھر کرنے کے لئے شاید ٹھیک موقع نہیں تھا اس لئے وہ شہر کي طرف لوٹتي ھوئی بھیڑ میں ملکر دھیرے دھیرے غائب ھو گیا .

दूसरे दिन की बात है. धुँधली शाम को निगलता हुआ रात का अँधेरा गहरा हो रहा था. मुहम्मद साहब मग़रिब की नमाज़ अदा कर चुके थे उनके सामने चराग़ का टिमटिमाता हुआ उजाला था और कितने ही प्रेमी आदमी मौजूद थे. सवाल जवाब चालू थे. प्रेमी लोग अपना अपना शक ज़ाहिर करते और मुहम्मद साहब बड़ी ख़ूबसूरती से उसका जवाब देते जाते थे. इतने में झिझकते सहमते दबे पैरों वही आदमी दाख़िल हुआ. आज वह एक छोटी सी पोटली भी साथ लाया था. उसने बैठते बैठते पोटली मुहम्मद साहब के सामने बढ़ा दी.

मुहम्मद साहब ने दोनों हाथों से वह पोटली ले ल और अल्लाह का शुक्र अदा किया. फिर पोटली खोली तो उसमें कुछ सूखे हुए छुहारे नि ले. मुहम्मद साहब ने फ़ौरन तमाम छुहारे आस पास बैठे हुए लोगों को बाँट दिए—अपने लिए एक भी छुहारा न रक्खा. इसके बाद अपनी ख़ुशी भरी नज़रें उस आदमी पर डालीं. जिसके उदास चेहरे पर उम्मीद का धीमा सा उजाला झलक रहा था.

मुहम्मद साहब के होंठों पर मुसकान की हलकी हलकी लकीरें उभर आईं और इसके साथ ही सुरीले गले से मीठी मीठी आवाज़ फूट निकली—'कहिए, मेरे लायक़ कोई ख़िदमत है ?'

'ऐ हज़रत, मैं एक बदनसीब ग़ुलाम हूं. ग़ुलामी से छुटकारा चाहता हूँ.'

دوسرے دن کی بات ہے ۔ دھندھلی شام کو نگلتی ہوئی رات کا اندھیرا گہرا ہو رہا تھا ۔ محمد صاحب مغرب کی نماز ادا کر چکے تھے اُن کے سامنے چراغ کا ٹمٹماتا ہوا اُجالا تھا اور کتنے ہی پریمی آدمی موجود تھے ۔ سوال جواب چالو تھے پریمی لوگ اپنا اپنا شک ظاہر کرتے اور محمد صاحب بڑی خوبصورتی سے اُس کا جواب دیتے جاتے تھے اتنے میں جھجھکتے سہمتے دبے پیروں؟ وہی آدمی داخل ہوا ۔ آج وہ ایک چھوٹی سی پوٹلی بھی ساتھ لایا تھا ۔ اُس نے بیٹھتے بیٹھتے پوٹلی محمد صاحب کے سامنے بڑھادی ۔

محمد صاحب نے دونوں ہاتھوں سے وہ پوٹلی لے لی اور اللہ کا شکر ادا کیا ۔ پھر پوٹلی کھولی تو اُس میں کچھ سوکھے ہوئے چھوہارے نکلے ۔ محمد صاحب نے فوراً تمام چھوہارے آس پاس بیٹھے ہوئے لوگوں کو بانٹ دئیے۔۔۔اپنے لئے ایک بھی چھوہارا نہ رکھا ۔ اس کے بعد اپنی خوشی بھری نظریں اُس آدمی پر ڈالیں ' جسکے اُداس چہرے پر، اُمید کا، دھیما سا اُجالا جھلک رہا تھا ۔

محمد صاحب کے ہونٹھوں پر مسکان کی ہلکی ہلکی لکیریں اُبھر آئیں اور اسکے ساتھ ہی سریلے گلے سے میٹھی میٹھی آواز پھوٹ نکلی۔۔۔' کہئے ' میرے لائق کوئی خدمت ہے ؟'

' اے حضرت ' میں ایک بدنصیب غلام ہوں ۔ غلامی سے چھٹکارا چاھتا ہوں ۔'

‘बड़ी ख़ुशी की बात है. बतलाइए, मैं आप के लिए क्या कर सकता हूँ ?’

‘मगर मैं आप को धोके में नहीं डालना चाहता. साफ़ साफ़ बतलाए देता हूँ कि मैं पारसी हूं—आग की पूजा करने वाला. आप के अल्लाह वाले असूल पर मेरा ज़रा भी यक़ीन नहीं है.’

‘अल्लाह पर यक़ीन करें, चाहे न करें—यह तो आप की तबीयत का मामला है. मैं तो इतना ही जानता हूं कि आज़ादी हर इन्सान का पैदायशी हक़ है, फिर वह चाहे मुस्लिम हो, चाहे ईसाई, चाहे मूसाई, चाहे बुत परस्त या चाहे और कोई. मुझे आप अपना नाचीज़ ख़ादिम समझिए. अगर मेरी कोशिश से आप की ज़रा भी भलाई हो सके, तो मैं हमेशा तैयार रहूंगा—यह इतमीनान रखिए.’

पारसी की आँखों से झरझर आँसू बहने लगे. मुहम्मद साहब बोले—‘सब्र से काम लो मेरे भाई! सब्र बेकसों और मोहताजों का सब से बड़ा सहारा है. सब्र ही बड़ी बड़ी मुश्किलों पर फ़तह पाता है. बात चीत से मालूम होता है कि आप क़ाबिल हैं, बड़ी साफ़ तबीयत रखते हैं. फिर इस नापाक ग़ुलामी की क़ैद में क्यों कर फँस गए ?’

पारसी ने कहना शुरू किया—‘अपनी बदक़िस्मती से. मुसीबत कहकर थोड़े ही आती है. वह तो इन्सान पर अचानक बिजली की तरह टूट पड़ती है. हज़रत मैं ईरान का रहने वाला हूँ. सुलेमान मेरा नाम है. मुझे मज़हबी बातों का शौक़ बचपन से ही रहा है. होश

’ بڑی خوشی کی بات ہے ۔ بتلائیے ‘ میں آپ کے لئے کیا کر سکتا ہوں ؟‘

’ مگر میں آپ کو دھوکے میں نہیں ڈالنا چاہتا ۔ صاف صاف بتلائے دیتا ہوں کہ میں پارسی ہوں—آگ کی پوجا کرنے والا ۔ آپ کے اللہ والے اصول پر میرا ذرا بھی یقین نہیں ہے ۔‘

’ اللہ پر یقین کریں ‘ چاہے نہ کریں—یہ تو آپ کی طبیعت کا معاملہ ہے ۔ میں تو اِتنا ہی جانتا ہوں کہ آزادی ہر انسان کا پیدائشی حق ہے ۔ پھر وہ چاہے مسلم ہو ‘ چاہے عیسائی ‘ چاہے موسائی ‘ چاہے بت پرست یا چاہے اور کوئی ۔ مجھے آپ اپنا ناچیز خادم سمجھئے ۔ اگر میری کوشش سے آپ کی ذرا بھی بھلائی ہو سکے تو میں ہمیشہ تیار رہونگا—یہ اطمینان رکھئے ۔‘

پارسی کی آنکھوں سے جھر جھر آنسو بہنے لگے ۔ محمد صاحب بولے—’ صبر سے کام لو میرے بھائی ! صبر بے کسوں اور محتاجوں کا سب سے بڑا سہارا ہے ۔ صبر ہی بڑی بڑی مشکلوں پر فتح پاتا ہے ۔ بات چیت سے معلوم ہوتا ہے کہ آپ قابل ہیں ‘ بڑی صاف طبیعت رکھتے ہیں ۔ پھر اس ناپاک غلامی کی قید میں کیوں کر پھنس گئے ؟ ‘

پارسی نے کہنا شروع کیا—’ اپنی بدقسمتی سے ! مصیبت کہکر تھوڑے ہی آتی ہے ۔ وہ تو انسان پر اچانک بجلی کی طرح ٹوٹ پڑتی ہے ۔ حضرت میں ایران کا رہنے والا ہوں ۔ سلیمان میرا نام ہے ۔ مجھے مذہبی باتوں کا شوق بچپن سے ہی رہا ہے ۔ ہوش

सँभालते ही मैंने बरसों ज़रतुश्त के कलाम पर ग़ौर किया मगर मेरी तसल्ली नहीं हुई. आख़िर मैं सौदागरों के एक क़ाफ़ले के साथ अरब की तरफ़ चल पड़ा. इरादा यह था कि यहाँ मूसाई और ईसाई मज़हब में दिलचस्पी लूंगा. मगर हुआ कुछ और ही. सौदागरों ने मेरे साथ दग़ा की और मुझे यहाँ—यसरब के रहने वाले याक़ूब नाम के एक धनी यहूदी के हाथों बेच दिया. तब से इसी दोज़ख़ में पड़ा हुआ हूँ और ख़ून के आँसू बहा बहा कर जिन्दगी की घड़ियाँ काट रहा हूं. क्या कहूं, मौत भी मुझसे दूर भागती है.'

'कैसा आदमी है याक़ूब ?'—मुहम्मद साहब ने सवाल किया.

'बहुत ही कमीना ! दिल तो जैसे उसका पत्थर है. ग़ुलामों को ज़ुल्म की चक्की में पीसने वाला. दुनिया भर की बुराई करने वाला, आप को तो वह हमेशा गालियाँ दिया करता है.'—सुलेमान ने जवाब दिया.

'आप ने ग़ुलामी से छुटकारा पाने के लिये उससे दरख़्वास्त नहीं की ?'

'की क्यों नहीं—बीसों बार की ! मगर पत्थर पसीजना क्या जाने.'

'आख़िर वह कहता क्या है ?'

'कहता है कि हमारे बाग़ में छुहारों के साढ़े तीन सौ पौधे लगा दो और चालीस अशर्फ़ियाँ दो. साथ ही एक शर्त और है, जब तक पौधों में फल न उतरेंगे, तब तक आज़ादी हासिल

سنبهالتے هي میں نے زرتشت کے کلام پر غور کیا مگر میري تسلی نہیں هوئی . آخر میں سوداگروں کے ایک قافلے کے ساتھ عرب کي طرف چل پڑا . اراده یه تها که یہاں موسائی اور عیسائي مذهب میں دلچسپی لوں گا . مگر هوا کچھ اور هي . سوداگروں نے میرے ساتھ دغا کی اور مجھے یہاں—یثرب کے رهنے والے یعقوب نام کے ایک دهني یهودی کے هاتهوں بیچ دیا تب سے اسی دوزخ میں پڑا هوا هوں اور خون کے آنسو بہا بہا کر زندگي کی گهڑیاں کاٹ رها هوں . کیا کہوں ' موت بهی مجھسے دور بهاگتی هے .'

' کیسا آدمی هے یعقوب ؟ ' محمد صاحب نے سوال کیا '

' بہت هي کمینه ! دل تو جیسے اُس کا پتهر هے . غلاموں کو ظلم کي چکی میں پیسنے والا ' دنیا بهر کي برائی کرنے والا ' آپ کو تو وہ همیشه گالیاں دیا کرتا هے '—سلیمان نے جواب دیا .

' آپنے غلامی سے چهٹکارا پانے کے لئے اُس سے درخواست نہیں کی ؟'

' کی کیوں نہیں—بیسوں بار کی ! مگر پتهر پسیجنا کیا جانے .'

' آخر وہ کہتا کیا هے .'

' کہتا هے که همارے باغ میں چهوهاروں کے ساڑهے تین سو پودے لگادو اور چالیس اشرفیاں دو . ساتھ هی ایک شرط اور هے ' جب تک پودوں میں پهل نه اُتریں گے ' تب تک آزادي حاصل

न होगी. मतलब यह कि मैं न साढ़े तीन सौ पौधे लगा सकूंगा. न चालीस अशर्फ़ियाँ ला सकूंगा और न आज़ादी का हक़दार हो सकूंगा. अब तो आप ही का भरोसा है. अगर मुमकिन हो, तो मेरे लिए कुछ कीजिए नहीं तो इसी तरह घुट-घुट कर मर जाऊँगा.'

सुलेमान की उदासी और भी बढ़ गई और उसकी आँखों से टप-टप आँसू बरसने लगे.

मुहम्मद साहब ने कहा—'यह क्या करते हैं आप! पोंछिए—पोंछिए, आँसू पोंछिए! आँसू बहाना मर्द का काम नहीं, मर्द का काम है क़िस्मत से लड़ना, मर्द का काम है कोशिश करना. आप कल से ही याक़ूब के बाग़ में पौधे लगाना शुरू कर दीजिए.'

सुलेमान रंजीदा होकर बोला—'या हज़रत, यह क्या फ़रमाते हैं आप! भला मैं साढ़े तीन सौ पौधे कैसे लगा सकूंगा? यह काम तो मेरी क़ूवत और हिम्मत से बाहर है—क़तई बाहर! और फिर चालीस अशर्फ़ियाँ? इतना धन तो मैं तमाम ज़िंदगी में न कमा सकूंगा.'

मुहम्मद साहब ने उसे तसल्ली दी और बड़े मीठे ढंग से कहा—'कोशिश कीजिए. कोशिश बहुत बड़ी चीज़ है. अभी आप नहीं जानते कि अल्लाह कितना रहीम है—कितना कारसाज़ है! अगर इन्सान नेक नीयत से कोई काम करे, तो अल्लाह उसे उसका फल ज़रूर देता है. बस मेरा कहना मानिये कल सुबह से ही अपने काम में लग जाइए. नतीजा अल्लाह की मर्ज़ी पर छोड़ दीजिये. वह चाहेगा, तो

نہ ہوگی . مطلب یہ کہ میں نہ ساڑھے تین سو پودے لگا سکوں گا ‘
نہ چالیس اشرفیاں لا سکوں گا . اور نہ آزادی کا حقدار ہو سکونگا .
اب تو آپ ہی کا بھروسہ ہے اگر ممکن ہو تو میرے لئے کچھ
کیجئے نہیں تو اسی طرح گھٹ گھٹ کر مر جاؤں گا .‘
سلیمان کی اُداسی اور بھی بڑھ گئی اور اُسکی آنکھوں سے
ٹپ ٹپ آنسو برسنے لگے .
محمد صاحب نے کہا—’ یہ کیا کرتے ہیں آپ ! پونچھئے
پونچھئے ‘ آنسو پونچھئے ! آنسو بہانا مرد کا کام نہیں . مرد کا
کام ہے قسمت سے لڑنا ‘ مرد کا کام ہے کوشش کرنا . آپ کل سے ہی
یعقوب کے باغ میں پودے لگانا شروع کر دیجئے .‘
سلیمان رنجیدہ ہوکر بولا—’ یا حضرت ‘ یہ کیا فرماتے ہیں
آپ ! بھلا میں ساڑھے تین سو پودے کیسے لگا سکوں گا ؟ یہ کام تو
میری قوت اور ہمت سے باہر ہے—قطعی باہر ! اور پھر چالیس
اشرفیاں ؟ اتنا دھن تو میں تمام زندگی میں نہ کما سکوں گا .‘
محمد صاحب نے اُسے تسلی دی اور بڑے میٹھے ڈھنگ سے
کہا—’ کوشش کیجئے . کوشش بہت بڑی چیز ہے . ابھی آپ
نہیں جانتے کہ اللہ کتنا رحیم ہے—کتنا کار ساز ہے ! اگر انسان
نیک نیت سے کوئی کام کرے تو اللہ اُسے اُس کا پھل ضرور دیتا ہے .
بس میرا کہنا مانئے . کل صبح سے ہی اپنے کام میں لگ جائیے .
نتیجہ اللہ کی مرضی پر چھوڑ دیجئے . وہ چاہے گا تو

सँभालते ही मैंने बरक्खा देने लगेंगे और अशर्फ़ियों की भी कमी मगर मेरी तसल्ली

के साथ मद साहब की बातों में कुछ ऐसा असर था कि वह सुलेमान के हृदय मे उतर गया. उसके चेहरे से उदासी की छाया जाती रही, वह पक्का इरादा लेकर उठा और मुहम्मद साहब के सामने सर झुका कर चला गया.

सबेरा हुआ, तो मुहम्मद साहब हवा ख़ोरी के लिए निकले और घूमते फिरते याक़ूब के बाग़ की तरफ़ जा पहुंचे. देखते क्या हैं कि सुलेमान अपने काम में जुटा हुआ है. जिस्म पर पसीने की बूँदें झलझला आई हैं, मगर वह बराबर ज़मीन खोदे और पौधे रोपे जा रहा है. मुहम्मद साहब की आँखें भर आईं. वह भी उसके साथ ज़मीन खोदने और पौधे रोपने लगे.

सुलेमान घबरा कर बोला—' या हज़रत, यह क्या ग़ज़ब करते हैं आप. मुझे काँटों में क्यों घसीटते हैं. रहने दीजिए, यह तकलीफ़ न कीजिए? आप की दुआ भर चाहिए. मैं ख़ुद ही कुल काम निबटा लूँगा.'

मुहम्मद साहब ने सुलेमान [illegible] र हाथ रख कर जवाब दिया—' नहीं [illegible] आप ग़ुलाम हैं, ग़ुलामी से छूट [illegible] श करें. मेरा फ़र्ज़ है कि उस में [illegible] है तो आप जानते ही हैं कि एक [illegible] अगर हम दोनों मिल कर अपनी कोशिश [illegible] का काम एक दिन में निबट जायगा.'

پودے بھی لگ جائیں گے ' پھل بھی دینے لگیں گے اور اشرفیوں کی بھی کمی نہ رہے گی "

محمد صاحب کی باتوں میں کچھ ایسا اثر تھا کہ وہ سلیمان کے هردے میں اتر گیا . اس کے چہرے سے اداسی کی چھایا جاتی رہی . وہ پکا ارادہ لیکر اٹھا اور محمد صاحب کے سامنے سر جھکا کر چلا گیا .

سویرا ہوا تو محمد صاحب ہوا خوری کے لئے نکلے اور گھومتے پھرتے یعقوب کے باغ کی طرف جا پہونچے . دیکھتے کیا ہیں کہ سلیمان اپنے کام میں جتا ہوا ہے . جسم پر پسینے کی بوندیں جھلجھلا آئی ہیں مگر وہ برابر زمین کھودے اور پودے روپے جا رہا ہے . محمد صاحب کی آنکھیں بھر آئیں . وہ بھی اس کے ساتھ زمین کھودنے اور پودے روپنے لگے .

سلیمان گھبرا کر بولا ' یا حضرت ' یہ کیا غضب کرتے ہیں آپ ! مجھے کانٹوں میں کیوں گھسیٹتے ہیں . رہنے دیجئے . یہ تکلیف نہ کیجئے . آپ کی دعا بھر چاہئے . میں خود ہی کل کام نپٹا لوں گا . '

محمد صاحب نے سلیمان کے کندھے پر ہاتھ رکھکر جواب دیا — ' نہیں بھائی ' یہ نہیں ہو سکتا . آپ غلام ہیں ' غلامی سے چھٹکارا پانے کے لئے جو بھی کوشش کریں ' میرا فرض ہے کہ اس میں دل سے آپ کا ہاتھ بٹاؤں . یہ تو آپ جانتے ہی ہیں کہ ایک اور ایک گیارہ ہو جاتے ہیں . اگر ہم دونوں ملکر اپنی کوشش چالو رکھیں گے تو دو دن کا کام ایک دن میں نبٹ جائیگا . '

'भला यह कैसे हो सकता था कि मुहम्मद साहब ज़मीन खोदते या पौधे रोपते रहते और उनके प्रेमी चुपचाप हाथ पर हाथ रक्खे बैठे-बैठे देखा करते. वह सब मुहम्मद साहब के हज़ार मना करने पर भी न माने, खुरपी, फावड़े वग़ैरह लेकर बाग़ में जापहुंचे. नतीजा यह हुआ कि महीनों का काम दिनों मे खत्म हो गया.

नेक इरादों का नतीजा भी हमेशा नेक होता है. जब सुलेमान के साथ इतने प्रेमियों की नेक नियती के साथ मेहनत थी तो उसकी तमन्ना क्योंकर नाकाम रह सकती थी? देखते ही देखते पौधे लहलहा उठे. उनमें पत्ते निकले, फूल खिले और फल भी उतर आए. सुलेमान खुशी से मतवाला हो गया. दौड़ा-दौड़ा मुहम्मद साहब के पास पहुंचा और हाथ बाँध कर बोला—' हुज़ूर, तमाम दरख्त फलों से लद रहे हैं. आप को तकलीफ़ तो ज़रूर होगी, मगर ज़रा चलिए और मुलाहिज़ा कर लीजिए. मैंने तो ख्वाब में भी न सोचा था कि मेरी आज़ादी इतने क़रीब है'.

मुहम्मद साहब के होठों पर फिर मुसकान की वही लकीरें खिच गई. उन्हों ने दोनों हाथ सामने फैलाकर बार बार अल्लाह का शुक्रिया अदा किया. इसके बाद सुलेमान को बैतुलमाल से चालीस अशर्फ़ियाँ दिलवा दीं और कहा—' जाइए, आज़ादी हासिल कीजिए. मेरी दुआ है कि अल्लाह करे, आप को यह आज़ादी मुबारक हो और आप की बाक़ी ज़िन्दगी हँसते-हँसते बीते. आमीन!'

सुलेमान खिल उठा, नई ज़िन्दगी के उजाले ने उसके चेहरे को चमका दिया. मारे खुशी के वह पागल की तरह भागा, याक़ूब के

' بھلا یہ کیسے ہو سکتا تھا کہ محمد صاحب زمین کھودتے یا پودے روپتے رہتے اور اُن کے پریمی چپ چاپ پر ہاتھ رکھے بیٹھے بیٹھے دیکھا کرتے . وہ سب محمد صاحب کے ہزار منع کرنے پر بھی نہ مانے . کھرپی' پھاوڑے وغیرہ لے کر باغ میں جا پہونچے . نتیجہ یہ ہوا کہ مہینوں کا کام دنوں میں ختم ہو گیا .

نیک ارادوں کا نتیجہ بھی ہمیشہ نیک ہوتا ہے . جب سلیمان ساتھ اتنے پریموں کی نیک نیتی کے ساتھ محنت تھی تو اُس کی تمنا کیونکر نا کام رہ سکتی تھی ؟ دیکھتے ہی دیکھتے پودے لہلہا اُٹھے اُن میں پتے نکلے ' پھول کھلے اور پھل بھی اُتر آئے . سلیمان خوشی سے متوالا ہوگیا . دوڑا دوڑا محمد صاحب کے پاس پہنچا اور ہاتھ باندھکر بولا—'حضور ! تمام درخت پھلوں سے لد رہے ہیں . آپ کو تکلیف تو ضرور ہوگی ' مگر ذرا چلئے اور ملاحظہ کرلیجئے . میں نے تو خواب میں بھی نہ سوچا تھا . کہ میری آزادی اتنے قریب ہے .'

محمد صاحب ہونٹوں پر پھر مسکان کی وہی لکیریں کھنچ گئیں . اُنہوں نے دونوں ہاتھ سامنے پھیلاکر بار بار اللہ کا شکریہ ادا کیا . اسکے بعد سلیمان کو بیت المال سے چالیس اشرفیاں دلوادیں اور کہا—'جائیے' آزادی حاصل کیجئے . میری دعا ہے کہ اللہ کرے آپ کو یہ آزادی مبارک ہو اور آپ کی باقی زندگی ہنستے ہنسے بیتے . آمین!'

سلیمان کھل اُٹھا' نئی زندگی کے اُجالے نے اُسکے چہرے کو چمکا دیا . مارے خوشی کے وہ پاگل کی طرح بھاگا ' یعقوب کے

सामने पहुंचा और बोला—' आज मेरी आज़ादी का दिन है. ज़रा बाग़ तक चलिए और देखिए कि साढ़े तीन सौ दरख़्त मय फलों के खुली हुई हवा में कितनी मस्ती से झूम रहे हैं.'

याक़ूब की आँखों में ताज्जुब उतर आया. वह हक्का बक्का सा होकर सुलेमान का मुंह ताकने लगा और बोला—' क्या कह रहे हो सुलेमान ?

सुलेमान ने ख़ुशी में झूमते झूमते जवाब दिया—' बाग़ में चलकर साढ़े तीन सौ पौधे देख लीजिए और मुझे इस ग़ुलामी की क़ैद से छुटकारा दीजिए.'

याक़ूब उसी वक़्त बाग़ में पहुँचा. उसने दरख़्तो पर नज़र डालते-डालते ताज्जुब में डूब कर कहा—' क्या तुम जादू जानते हो सुलेमान ? '.

सुलेमान हँस कर बोला—' जादू ? क्या आपकी समझ में यह दरख़्त जादू की करामात है ? जी नहीं, इन दरख़्तों में उस जादूगर की नज़रे इनायत मुसकुरा रही है, जो इस वक़्त आप में और मुझ में बोल रहा है.' इसके साथ ही उसने अशर्फ़ियों की थैली याक़ूब की तरफ़ बढ़ा दी और कहा—' लीजिए, यह अशर्फ़ियाँ ! आप की शर्तें पूरी हो गईं, अब मैं आज़ाद हूं.'

याक़ूब सन्नाटे में आ गया. ज़रा ठहर कर बोला—' ताज्जुब है ! तुमने इतना धन कहाँ पाया सुलेमान ?'

सुलेमान ने जवाब दिया—' सच बतलाऊँ ? आप जिन हज़रत मुहम्मद साहब को हमेशा गालियाँ दिया करते हैं. उन्हीं की बदौलत

سامنے پہونچا اور بولا—' آج میری آزادی کا دن ہے . ذرا باغ تک چلئے اور دیکھئے کہ ساڑھے تین سو درخت مع پھلوں کے کھلی ہوئی ہوا میں کتنی مستی سے جھوم رہے ہیں .'

یعقوب کی آنکھوں میں تعجب اُتر آیا . وہ ھکا بکا سا ہوکر سلیمان کا منہ تاکنے لگا اور بولا—' کیا کہہ رہے ہو سلیمان ؟ '

سلیمان نے خوشی میں جھومتے جھومتے جواب دیا—' باغ میں چلکر ساڑھے تین سو پودے دیکھ لیجئے اور مجھے اِس غلامی کی قید سے چھٹکارا دیجئے .'

یعقوب اُسی وقت باغ میں پہونچا . اُس نے درختوں پر نظر ڈالتے ڈالتے تعجب میں ڈوب کر کہا—' کیا تم جادو جانتے ہو سلیمان ؟'

سلیمان ھنسکر بولا—' جادو ؟ کیا آپ کی سمجھ میں یہ درخت جادو کی کرامات ہیں ؟ جی نہیں . اِن درختوں میں اس جادوگر کی نظر عنایت مسکرا رہی ہے . جو اس وقت آپ میں اور مجھ میں بول رہا ہے !' اس کے ساتھ ہی اس نے اشرفیوں کی تھیلی یعقوب کی طرف بڑھا دی اور کہا—' لیجئے ' یہ اشرفیاں ! آپ کی شرطیں پوری ہو گئیں . اب میں آزاد ہوں .'

یعقوب سناٹے میں آگیا . ذرا ٹھہرکر بولا—' تعجب ہے ! تم نے اتنا دھن کہاں پایا سلیمان ؟'

سلیمان نے جواب دیا—' سچ بتلاؤں ؟ آپ جن حضرت محمد صاحب کو ہمیشہ گالیاں دیا کرتے ہیں ' انہیں کی بدولت

आप का यह बाग गुलज़ार हुआ है और उन्हीं की बदौलत मुझे यह अशर्फ़ियाँ मिली हैं.'

'एं ! तब तो मैं बड़े अँधेरे में रहा अब तक ! अफ़सोस ! अब आज़ाद होकर कहाँ जाओगे मेरे भाई ?'

'जिनकी बदौलत यह दिन देखना नसीब हुआ है, अब उनके क़दम मुबारक छोड़कर और कहाँ जाऊँगा !'

'मुझे भी अपने साथ ले चलो भाई ! गुनाहों का बोझ ढोते ढोते, गुलामों को सताते सताते मैंने अपनी इतनी ज़िन्दगी बिता दी. अब उनकी पनाह लूँगा, तौबा करूँगा. मुमकिन है, मेरी भी आक़बत सुधर जाए.'

पंजाब हमें क्या सिखाता है

लेखक-पंडित सुन्दरलाल

पंडित सुन्दरलाल जी ने, महात्मा गांधी की सलाह से, अक्तूबर १९४७ में पच्छिमी और पूरबी पंजाब का दौरा किया था. इस छोटे से बयान में उन्होंने वहाँ की भयंकर बरबादी और आपसी मारकाट की वजह से जो जो नतीजे लोगों को भुगतने पड़ रहे हैं उनका बहुत ही दर्दनाक वर्नन किया है. आख़ीर में, आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिये, कुछ सुझाव भी पेश किये हैं. हमें बिश्वास है कि पंजाब की मौजूदा हालत को ठीक तरह से समझने में इस बयान से बड़ी मदद मिलेगी.

किताब उर्दू और नागरी दोनों लिखावटों में मिल सकती है. क़ीमत चार आने.

मैनेजर 'नया हिन्द' ४८, बाई का बाग़, इलाहाबाद

آپ کا یہ باغ گلزار ھوا ھے اور انھی کی بدولت مجھے یہ اشرفیاں ملی ھیں.'

'ایں! تب تو میں بڑے اندھیرے میں رھا اب تک! افسوس! اب آزاد ھوکر کہاں جاؤ گے میرے بھائی؟'

'جنکی بدولت یہ دن دیکھنا نصیب ھوا ھے' اب انکے قدم مبارک چھوڑ کر اور کہاں جاؤں گا!'

'مجھے بھی اپنے ساتھ لے چلو بھائی! گناھوں کا بوجھ ڈھوتے ڈھوتے غلاموں کو ستاتے ستاتے میں نے اپنی اتنی زندگی بتادی. اب ان کی پناہ لونگا' توبہ کروں گا. ممکن ھے' میری بھی عاقبت سدھر جائے.'

پنجاب ھمیں کیا سکھاتا ھے

لیکھک پنڈت سندر لال

پنڈت سندر لال جی نے' مہاتما گاندھی کی صلاح سے' اکتوبر سن ۱۹۴۷ میں پچھمی اور پوربی پنجاب کا دورا کیا تھا. اِس چھوٹے سے بیان میں اُنھوں نے وھاں کی بھینکر بربادی اور آپسی مارکاٹ کی وجہ سے جو جو نتیجے لوگوں کو بھگتنے پڑ رھے ھیں اُن کا بہت ھی دردناک ورنن کیا ھے. آخیر میں' آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کیلئے' کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے ھیں. ھمیں وشواس ھے کہ پنجاب کی موجودہ حالت کو ٹھیک طرح سے سمجھنے میں اِس بیان سے بڑی مدد ملے گی.

کتاب اُردو اور ناگری دونوں لکھاوٹوں میں مل سکتی ھے. قیمت چار آنے.

مینیجر 'نیا ھند' ۴۸' بائی کا باغ' اِلہ آباد.

दावा करता है. और दावा करके ही नहीं रह जाना चाहता. सब की भलाई में लगने की तैयारी कर रहा है और अपनी शक्ति के माफ़िक़ भलाई कर भी रहा है. क्या वह यह नहीं समझता कि अन्याय उस सीमा को लांघ चुका है जब या तो उसे सत्याग्रही अपनी सीमा के अन्दर कर सकता है या फिर अन्धबली उसे शिव जी का नाच नचा सकता है ? यों तो सत्याग्रही को कभी ठाली बैठने का हक़ नहीं है पर अगर सत्याग्रही ऐसे नाज़ुक मौक़े को भी हाथ से खोदे तब तो हम यही कहेंगे कि वह किसी भारी मोह में फंस गया है और उसे अब किसी कृष्ण भगवान के उपदेश की ज़रूरत है.

अकेले सत्याग्रह किया जा सकता है. और हो सकता है कहीं कहीं हो भी रहा हो. पर उस सत्याग्रह का मोल इतना ही है जितना अन्धेरी कोठरी में एक दियासलाई के जल उठने का. वही दियासलाई अगर किसी तेल भरे दिये की बत्ती जलादे तो उस बत्ती का मोल बहुत ज्यादा होता है. और अगर वही दियासलाई किसी गेस-प्लाँट से जुड़ी बत्ती को जलादे तो उस गैस बत्ती का मोल तो बेहद होता है. ठीक इसी तरह किसी मामूली संगठन मे हुक्म पाकर एक सत्याग्रही भी बहुत देर तक अन्याय का मुक़ाबला कर सकता है और किसी बड़े संगठन से हुक्म पाकर तो वह इतना काम कर जायगा जिसका अन्दाज़ा नहीं लगाया जा सकता.

सत्य और अहिंसा के पुजारियों को चाहिये कि इस समय हिन्दुस्तान को बुरे दिनों से बचाने की कोशिश करें. फिर वह सत्य और अहिंसा के पुजारी कहीं भी किसी रूप में भी संगठित क्यों न हों. क्या वह यह चाहते हैं कि उन जैनों की तरह से बदनाम हों जो अपने आपको

دعوا کرتا ھے. اور دعوا کرکے ھی نہیں رہ جانا چاھتا، سبکی بھلائی میں لگنے کی تیاری کر رھا ھے اور اپنی شکتی کے موافق بھلائی کر بھی رھا ھے. کیا وہ یہ نہیں سمجھتا کہ انیاے اُس سیما کو لانگھ چکا ھے جب یا تو اُسے ستیا گرھی اپنی سیما کے اندر کرسکتا ھے یا پھر اندھ بلی اُسے شیو جی کا ناچ نچا سکتا ھے ؟ یوں تو ستیا گرھی کو کبھی ٹھالی بیٹھنے کا حق نہیں ھے پر ستیا گرھی ایسے نازک موقع کو بھی ھاتھہ سے کھودے تب تو ھم یہی کہیں گے کہ وہ کسی بھاری موہ میں پھنس گیا ھے اور اُسے اب کسی کرشن بھگوان کے اُپدیش کی ضرورت ھے .

اکیلے ستیاگرہ کیا جا سکتا ھے کہیں کہیں ھو بھی رھا ھو. پر اُس ستیاگرہ کا مول اتنا ھی ھے جتنا اندھیری کوٹھری میں ایک دیا سلائی کے جل اُٹھنے کا. وھی دیا سلائی اگر کسی تیل بھرے دیئے کی بتی جلادے تو اُس بتی کا مول بہت زیادہ ھوتا ھے. اور اگر وھی دیا سلائی کسی گیس پلانٹ سے جڑی بتی کو جلادے تو اُس گیس بتی کا مول تو بے حد ھوتا ھے. ٹھیک اسی طرح کسی معمولی سنگٹھن سے حکم پاکر ایک ستیا گرھی بھی بہت دیر تک انیاے کا مقابلہ کر سکتا ھے اور کسی بڑے سنگٹھن سے حکم پاکر تو وہ اتنا کام کرجائیگا جسکا اندازہ نہیں لگایا جاسکتا.

ستیہ اور اھنسا کے پجاریوں کو چاھئے کہ اس سمے ھندستان کو برے دنوں سے بچانے کی کوشش کریں. پھر وہ ستیہ اور اھنسا کے پجاری کہیں بھی کسی روپ میں بھی سنگٹھت کیوں نہ ھوں. کیا وہ یہ چاھتے ھیں کہ اُن جینوں کی طرح سے بدنام ھوں جو اپنے آپکو

नया हिन्द

सामने ७०

संस्कृत ज़बान

(भाई मदन गोपाल)

सितम्बर १९४९ के 'नया हिन्द' में मेरा एक लेख 'संस्कृत ज़बान' पर छपा था जिसका निचोड़ यह था कि बौद्ध धर्म के प्रचार को रोकने और ब्राह्मन राज क़ायम रखने के लिए ब्राह्मनों ने संस्कृत गढ़ी थी. उसपर एडीटर साहब ने यह नोट दिया था कि " पानिनी का ज़माना आम तौर पर बुद्ध से लगभग ५०० बरस पहले का माना जाता है और यह भी माना जाता है कि पानिनी से पहले संस्कृत रूप ले चुकी थी और संस्कृत व्याकरन बन चुका था. लेखक ने अपनी राय के लिए कुछ प्रमान दे दिये होते तो अच्छा होता. हम इस लेख को केवल एक राय के तौर पर छाप रहे हैं." अचरज की बात यह है कि एडीटर साहब ख़ुद तो कोई प्रमान नहीं देते, सिर्फ़ इतना ही कहना काफ़ी समझते हैं कि आम तौर पर यह माना जाता है. इसमें शक नहीं कि आम तौर पर बहुत सी ग़लत बातें सच्ची मानी जाती हैं, जैसे ब्राह्मन ब्रह्मा के सर से पैदा हुए और सूरज दुनिया के इर्द गिर्द फिरता है. यह भी मुमकिन है कि किसी पुरानी संस्कृत किताब में किसी ब्राह्मन ने संस्कृत की बड़ाई जताने के लिए यह गप्प कहीं ठूँस दी हो. मुश्किल यह है कि आज कल किसी ऐतिहासिक बात के मामले में पुरानी संस्कृत किताबों पर विश्वास नहीं रहा. क्योंकि आज कल के सब विद्वान जानते हैं कि दूसरी

سنسکرت زبان

(بھائی مدن گوپال)

ستمبر ۱۹۴۹ کے ' نیا ہند ' میں میرا ایک لیکھ سنسکرت زبان پر چھپا تھا جس کا نچوڑ یہ تھا کہ بودھ دھرم کے پرچار کو روکنے اور براہمن راج قائم رکھنے کے لئے براہمنوں نے سنسکرت گھڑی تھی . اسپر ایڈیٹر صاحب نے یہ نوٹ دیا تھا کہ '' پانِنی کا زمانہ عام پر بدھ سے لگ بھگ پانچسو برس پہلے کا مانا جاتا ہے اور یہ بھی مانا جاتا ہے کہ پانِنی سے پہلے سنسکرت روپ لے چکی تھی اور سنسکرت ویاکرن بن چکا تھا . لیکھک نے اپنی رائے کے لئے کچھ پرمان دیدئے ہوتے تو اچھا ہوتا . ہم اس لیکھ کو کیول ایک رائے کے طور پر چھاپ رہے ہیں " اچرج کی بات یہ ہے کہ ایڈیٹر صاحب خود تو کوئی پرمان نہیں دیتے ' صرف اتنا ہی کہنا کافی سمجھتے ہیں کہ عام طور پر یہ مانا جاتا ہے . اس میں شک نہیں کہ عام طور پر بہت سی غلط باتیں سچی مانی جاتی ہیں ' جیسے براہمن برھما کے سر سے پیدا ہوئے اور سورج دنیا کے آس پاس گرد پھرتا ہے . یہ بھی ممکن ہے کہ کسی پرانی سنسکرت کتاب میں کسی براہمن نے سنسکرت کی بڑائی جتانے کے لئے یہ گپ کہیں ٹھونس دی ہو . مشکل یہ ہے کہ آجکل کسی اِتہاسک بات کے معاملے میں پرانی سنسکرت کتابوں پر وشواس نہیں رہا . کیونکہ آجکل کے سب ودوان جانتے ہیں کہ دوسری

और पाँचवीं सदी ईस्वी के बीच ब्राह्मनों ने जितनी पुरानी संस्कृत की किताबें थीं उन्हें उलट पुलट दिया और उनमें बहुत सी मनगढ़न्त बातें जोड़ दीं.

जिन किताबों के आधार पर मैंने यह लेख लिखा था उनका प्रमान तो मैं अब दे नहीं सकता क्योंकि वह किताबें थीं इल्म ज़बान यानी भाषा शास्त्र पर और सारे देहली में ऐसी कोई लायब्रेरी नहीं जहां इस मज़मून पर कोई ताज़ा किताब मिल सके अच्छा हुआ कि प्रमान ढूँढने के लिए सिर्फ़ तीन चार ही किताबें देखनी पड़ीं. (१) इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका १९४६, (२) पानीकर की सर्वे आफ़ इंडियन हिस्ट्री, (३) मजूमदार राय चौधरी की एडवान्स्ड हिस्ट्री आफ़ इंडिया. मजूमदार की हिस्ट्री के अनुसार बुद्ध सन् ५६६ (ईसा से पहले) में पैदा हुए और पानिनी और उसके चेले तीसरी सदी (ईसा से पहले) मे हुए. पानीकर की हिस्ट्री बुद्ध का जन्म सन् ६२३ (ईसा से पहले) यानी सातवीं सदी (ईसा से पहले) और पानिनी की छठी सदी (ईसा से पहले) यानी लगभग एक सौ बरस बाद का बताती है. इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका कहती है कि बौद्ध मत का प्रचार छठी सदी (ईसा से पहले) में हुआ (जिल्द ४ सफ़ा ३२५) और जिल्द १९ और सफ़ा ९७० में लिखा है कि पानिनी की तारीख़ की बाबत बहुत मतभेद रहा है लेकिन अब है. ... से कहा जा सकता है कि वह सन ४०० (ईसा से पहले)

दीवारें
किताबों की

اور پانچویں صدی عیسوی کے بیچ براهمنوں نے جتنی پرانی سنسکرت کی کتابیں تهیں انہیں اُلٹ پلٹ دیا اور ان میں بہت سی من گھڑت باتیں جوڑ دیں .

جن کتابوں کے آدهار پر میں نے یہ لیکھ لکھا تها ان کا پرمان میں اب دے نہیں سکتا کیونکہ وہ کتابیں تهیں علم زبان یعنی بهاشا شاستر پر اور سارے دهلی میں ایسی کوئی لائبریری نہیں جہاں اس مضمون پر کوئی تازہ کتاب مل سکے . اچها هوا کہ پرمان ڈهونڈنے کے لئے صرف تین چار هی کتابیں دیکهنی پڑیں . (۱) انسائیکلوپیڈیا برٹانیکا ۱۹۴۶ · (۲) پانیکر کی سروے آف انڈین هسٹری · (۳) موجمدار رائے چودهری کی ایڈوانسڈ هسٹری آف انڈیا . موجمدار کی هسٹری کے انوسار بدھ سن ۵۶۶ (عیسیٰ سے پہلے) میں پیدا هوئے اور پانِنی اور اسکے چیلے تیسری صدی (عیسیٰ سے پہلے) میں هوئے . پانیکر کی هسٹری بدھ کا جنم سن ۶۲۳ (عیسیٰ سے پہلے) یعنی ساتویں صدی (عیسیٰ سے پہلے) اور پانِنی کو چھٹی صدی (عیسیٰ سے پہلے) یعنی لگ بھگ ایکسو برس بعد کا بتاتی ہے . انسائکلو پیڈیا برٹانیکا کہتی ہے کہ بدھ مت کا پرچار چھٹی صدی (عیسیٰ سے پہلے) میں هوا (جلد ۴ صفحہ ۳۲۵) اور جلد ۱۹ صفحہ ۹۷۰ میں لکھا ہے کہ پانِنی کی تاریخ کی بابت بہت مت بھید رہا ہے لیکن اب سہی طور سے کہا جا سکتا ہے کہ وہ سن ۴۰۰ (عیسیٰ سے پہلے) میں هوا .

सामने ... से यह तो साफ़ है कि पानिनी बुद्ध के बाद हुआ ... डीटर साहब का यह नोट कि पानिनी का जमाना बुद्ध से लगभग ५०० बरस पहले का आम तौर पर माना जाता है. ठीक नहीं है. असल सवाल जो है वह यह है कि संस्कृत जबान जो खुद कहती है कि वह बनावटी है और क्यों और कब बनाई गई थी और वह क्यों फली फूली ? हमारे पंडित इस सवाल से कन्नी कतराते हैं. वजह साफ़ है. वह हिन्दी के बहाने संस्कृत का फिर प्रचार करने पर तुले हुए हैं ताकि फिर किसी तरह ब्राह्मन राज क़ायम किया जा सके.

इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका जिल्द १९ सफ़ा ६६२ में यों लिखा है " गो जबान की खोज हिन्दुस्तान में सदियों से हो रही है, संस्कृत का व्याकरन उसी जमाने में बना जब बौद्ध धर्म फैला और इस में शक नहीं कि इस मत ने हिन्दुस्तान की जबानों के फैलने में बहुत मदद दी. सफ़ा ६५४ में लिखा है, " संस्कृत जबान में जो सब से पहला पत्थर मिला है वह १५० ईस्वी का है. पत्थरों पर खोदे जाने की सरकारी जबान संस्कृत चौथी सदी ईसवी मे बनी. लेकिन इससे बहुत अर्सा पहले व्याकरनियो ने (जिन में सबसे ज्यादा मशहूर पानिनी चौथी सदी (ईसा से पहले) में हुआ है) संस्कृत को इल्मी जबान बना लिया था.

इस में शक नहीं कि पानिनी से पहले बहुत से व्याकरनी हुए हैं. चौंसठ का नाम तो पानिनी में दर्ज है लेकिन व्याकरनी व्याकरनी में बहुत अन्तर है. एक तो व्याकरनी वह थे जिन्हों ने वैदिक ग्रामर

ان پرمانوں سے یه تو صاف هے که پانلی بدھ کے بعد هوا اور ایدیٹر صاحب کا یه نوٹ که پانلی کا زمانه بدھ سے لگ بھگ پانچسو برس پہلے کا عام طور پر مانا جاتا هے ٹھیک نہیں هے . اصل سوال جو هے وه یه هے که سنسکرت زبان جو خود کہتی هے که وه بناوٹی هے اور کیوں اور کب بنائی گئی تھی اور وه کیوں پھلی پھولی ؟ همارے پنڈت اس سوال سے کنی کتراتے هیں . وجه صاف هے . وه هندی کے بہانے سنسکرت کا پھر پرچار کرنے پر تلے هوئے هیں تاکه پھر کسی طرح براهمن راج قائم کیا جا سکے .

انسائیکلو پیڈیا برٹانیکا جلد ١٩ صفحه ٦٦٢ میں یوں لکھا هے " گو زبان کی کھوج هندستان میں صدیوں سے هو رهی هے سنسکرت کا ویاکرن اسی زمانه میں بنا جب بودھ دھرم پھیلا اور اس میں شک نہیں که اس مت نے هندستان کی زبانوں کے پھیلنے میں بہت مدد دی" صفحه ٦٥٤ میں لکھا هے "سنسکرت بولی میں جو سب سے پہلا پتھر ملا هے وه ١٥٠ عیسوی کا هے . پتھروں پر کھودے جانیکی سرکاری زبان سنسکرت چوتھی صدی عیسوی میں بنی لیکن اس سے بہت عرصه پہلے ویاکرنیوں نے (جن میں سب سے زیاده مشهور پانلی چوتھی صدی (عیسی سے پہلے) میں هوا هے) سنسکرت کو علمی زبان بنا لیا تھا .

اس میں شک نہیں که پانلی سے پہلے بہت سے ویاکرنی هوئے هیں . ٦٤ کا نام تو پانلی میں درج هے . لیکن ویاکرنی ویاکرنی میں بہت انتر هے . ایک ویاکرنی وه تھے جنھوں نے ویدک گرامر

बनाई और उन्हें भी व्याकरनी कहा जाता है जिन्होंने शब्दों के मूल (जड़) की खोज की. इन दो क़िस्मों के व्याकरनी तो पानिनी से सौ दो सौ बरस और शायद इससे भी कुछ और पहले हुए हों. लेकिन जो नई ज़बान संस्कृत गढ़ी गई उसके व्याकरनी पानिनी से पहले दो तीन ही हुए, और उनमें से कोई भी पानिनी से ५० बरस से ज़्यादा पहले नहीं हुआ.

मैंने सिर्फ़ ता[illegible] का हवाला दिया है. वजह यह है कि प[illegible] में भाषा शास्त्र और ख़ासकर [illegible] हुई है. जिसकी बाबत हमारी [illegible] नहीं हुआ. अगर उन्हें इल्म होता तो उम्मीद है कि हमारी एसेम्बली ज़बान पर यह फ़ैसला न करती. देखना तो यह है कि देश को कब तक धोका दिया जा सकता है.

بنائی اور انہیں بھی ویاکرنی کہا جاتا ہے جنہوں نے شبدوں کے مول (جڑ) کی کھوج کی . ان دو قسموں کے ویاکرنی تو پانِنی سے سو دو سو برس اور شاید اس سے بھی کچھ اور پہلے ہوئے ہوں . لیکن جو نئی زبان سنسکرت گڑھی گئی اس کے ویاکرنی پانِنی سے پہلے دو تین ہی ہوئے اور ان میں سے کوئی بھی پانِنی سے پچاس برس سے زیادہ پہلے نہیں ہوا .

میں نے صرف تازہ ترین کتابوں کا حوالہ دیا ہے . وجہ یہ ہے کہ ان پچھلے دس بیس برسوں میں بھاشا شاستر اور خاصکر سنسکرت کی بہت کھوج تاپ ہوئی ہے جس کی بابت ہماری یونیورسٹیوں کو ابھی تک علم نہیں ہوا . اگر انہیں علم ہوتا تو اُمید ہے کہ ہماری اسمبلی زبان پر یہ فیصلہ نہ کرتی . دیکھنا تو یہ ہے کہ دیش کو کب تک دھوکا دیا جا سکتا ہے .

सामने

शेरशाह

(सेठ गोविन्द दास)

पांचवाँ अंक

दूसरा दृश्य*

[लाड लौट कर अंगीठी के निकट आती है और अपने आगरे वाले चित्र को जलता देख कर कुछ स्तब्ध सी रह जाती है.]

लाड (कुछ देर पश्चात) धीरे धीरे जल रही है!...इसे भी जला कर गये हो...यह...यह तस्वीर जो तुम्हारी और मेरी मुहब्बत की पहली निशानी थी; पाक से पाक मुहब्बत की पाक से पाक निशानी! (कुछ रुक कर) पर...पर फिर तेज़ी से ही क्यों न जले! (चिमटे को उठा कर आग इस तरह तेज़ करती है कि अब अंगीठी से ज्वाला सी निकलने लगती है. और एकाएक वह ज्वाला एक परदे में लगती है. आग फैलने लगती है, पर वह उस ओर कोई ध्यान न देकर चुपचाप अंगीठी की ओर ही देखती है. एकाएक अट्टहास कर) पगले!......दीवाने! (आग शीघ्रता से बढ़ती है. कुछ

* जनवरी के 'नया हिन्द' में शेरशाह नाटक जहाँ खतम हुआ है वहाँ भूल से लघु यवनिका छप गया है. दूसरा सीन खतम नहीं हुआ है. इस परचे में भी वही सीन चल रहा है. 'हुनर' वास्ते कौसर.

شیرشاہ

(سیٹھ گووند داس)

پانچواں انک

دوسرا درشیہ *

[لاڈ لوٹ کر انگیٹھی کے نکٹ آتی ہے اور اپنے آگرے والے چتر کو جلتا دیکھ کر کچھ استبدھ سی رہ جاتی ہے]

لاڈ — (کچھ دیر پشچات) دھیرے دھیرے جل رہی ہے !........ اسے بھی جلاکر گئے ہو.......یہ........یہ تصویر جو تمہاری اور میری محبت کی پہلی نشانی تھی ' پاک سے پاک محبت کی پاک سے پاک نشانی ! (کچھ رک کر) پر.......پر پھر تیزی سے ہی کیوں نہ جلے (چمٹے کو اٹھا کر آگ اس طرح تیز کرتی ہے کہ اب انگیٹھی سے جوالا سی نکلنے لگتی ہے اور یکایک یہ جوالا ایک پردے میں لگتی ہے . آگ پھیلنے لگتی ہے پر وہ اس اور کوئی دھیان نہ دیکر چپ چاپ انگیٹھی کی اور ہی دیکھتی ہے . یکایک (اٹہاس کر) پگلے !...دیوانے ! (آگ شیگھرتا سے بڑھتی ہے ' کچھ

* جنوری کے ' نیا ہند ' میں شیر شاہ ناٹک جہاں ختم ہوا ہے وہاں بھول سے لگھو یونیکا چھپ گیا ہے . دوسرا سین ختم نہیں ہوا ہے . اس پرچے میں بھی وہی سین چل رہا ہے . ' ہنر ' واسطے کوثر .

रुक कर गम्भीर हो) तस्वीर मुहब्बत को पैदा कर सकती है, पर तस्वीर का जलना मुहब्बत को फ़ना नहीं कर सकता. (आग बहुत बढ़ जाती है, कुछ रुक कर) पागल!...दीवाने!...पागल! (अट्टहास कर मूर्छित हो गिरती है.)

[रहमान का तेज़ी से प्रवेश]

रहमान—(चारों ओर की आग को देख कर चिल्लाकर) छोटे मियाँ! छोटे मियाँ!...अरे!...अरे! आग!...आग लग गई है. (लाड़ को देख कर) हैं....मलका भी यहाँ! (अत्यधिक घबराकर ज़ोर ज़ोर से चिल्लाते हुए) दौड़ो!...दौड़ो!...आग!...आग!... बचाओ!......

[नेपथ्य से कई मनुष्यों के दौड़ कर आने की आहट सुन पड़ती है. आग और बढ़ती है]

लघु-यवनिका

तीसरा दृश्य

स्थान—गौड़ के राजमहल में शेरशाह का कमरा.

समय—दोपहर.

[कमरा यद्यपि उन दिनों के कमरों के सदृश ही बना है तथापि अब तक के सभी कमरों से कहीं बड़ा और कहीं अधिक सजा हुआ है. इस कमरे की दीवारों और छत की चित्रकारी बहुत बढ़िया है. दीवारों पर कई बड़े बड़े शीशे भी लगे हैं. दरवाज़ों की चौखटों और किवाड़ों की लकड़ी में खुदाव का काम है. दरवाज़ों पर ढाके की

رک کر گمبھیر ہو) تصویر محبت کو پیدا کر سکتی ہے، پر تصویر کا جلنا محبت کو فنا نہیں کر سکتا. (آگ بہت بڑھ جاتی ہے. کچھ رک کر) پاگل! دیوانے!......پاگل! (اٹہاس کر مورچھت ہو گرتی ہے)

[رحمان کا تیزی سے پرویش]

رحمان—(چاروں اور کی آگ کو دیکھ کر، چلاکر) چھوٹے میاں! چھوٹے میاں!......ارے! آگ!......آگ لگ گئی ہے. (لاڑ کو دیکھ کر) ہیں......ملکہ بھی یہاں! (اتیادھک گھبرا کر زور زور سے چلاتے ہوئے) دوڑو!......دوڑو!......آگ!...... آگ!......بچاؤ......

[نیپتھیہ سے کئی منشیوں کے دوڑ کر آنے کی آہٹ سن پڑتی ہے. آگ اور بڑھتی ہے]

لگھو یونیکا

تیسرا درشیہ

استھان—گوڑ کے راج محل میں شیر شاہ کا کمرہ

سمے—دو پہر

[کمرہ یدیپی ان دنوں کے کمروں کے سدرش ہی بنا ہے تتھاپی اب تک کے سبھی کمروں سے کہیں بڑا اور کہیں ادھک سجا ہوا ہے. اس کمرے کی دیواروں اور چھت کی چترکاری بہت بڑھیا ہے. دیواروں پر کئی بڑے بڑے شیشے بھی لگے ہیں. دروازوں کی چوکھٹوں اور کواڑوں کی لکڑی میں کھداو کا کام ہے. دروازوں پر ڈھاکے کی

मलमल के पतले रंगीन परदे पड़े हैं. छत से लटकने वाले झाड़ बहुत बड़े हैं. ज़मीन पर का क़ालीन भी अत्यधिक मूल्यवान है गद्दी और तकियों की चादर और खोलियाँ ढाके की इतनी महीन मलमल की हैं कि उनके नीचे का कमख़ाब चादर और खोलियों के रहते हुए भी खूब जगमगा रहा है. गद्दी के सामने चाँदी की चौकियों पर सोने का हुक़्क़ा, पानदान इत्यादि अनेक बहुमूल्य वस्तुएँ रखी और सजी हुई है. गद्दी पर शेरशाह और उसके सामने क़ालीन पर ब्रह्मादित्य बैठा हुआ है. सुलतान होने पर भी न शेरशाह की मुद्रा पर कोई अन्तर पड़ा है और न उसकी पोशाक में ही. ब्रह्मादित्य भी वैसा ही है. शेरशाह हुक़्क़ा पी रहा है.]

शेरशाह—लेकिन, पंडित, जो बादशाहत, दो जिगरी दोस्तों के आपसी ताल्लुक़ात में भी फ़र्क़ होना चाहिये, इसके लिए मजबूर करती है, वह...वह क्या...कहूं मैं ?

ब्रह्मादित्य—जहाँपनाह, हृदयों में अन्तर नहीं पड़ना चाहिये, बाहरी व्योहार के यह फ़र्क़ तो पदों की प्रतिष्ठा के लिए आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य हैं.

शेरशाह—तो अकेले में भी तुम्हारे मुझे जहाँपनाह न कहने, गद्दी पर बैठकर ज़मीन पर न बैठने से ओहदों की इज़्ज़त चली जायगी. ?

ब्रह्मादित्य—(मुसकुराते हुए) एकान्त मे भी जहाँपनाह तो मैं इसलिए कहता हूं कि सबके सामने जहाँपनाह कहने का

ململ کے پتلے رنگین پردے پڑے ہیں. چھت سے لٹکنے والے جھاڑ بہت بڑے ہیں. زمین پر کا قالین بھی اتیادھک مولیہ والی ہے. گدی اور تکیوں کی چادر اور خولیاں ڈھاکے کی اتنی مہین ململ کی ہیں کہ اُن کے نیچے کا کمخواب چادر اور خولیوں کے رہتے ہوئے بھی خوب جگمگا رہا ہے. گدی کے سامنے چاندی کی چوکیوں پر سونے کا حقہ، پاندان اتیادی انیک بہو مولیہ وستوئیں رکھی اور سجی ہوئی ہیں. گدی پر شیرشاہ اور اُس کے سامنے قالین پر برہما دتیہ بیٹھا ہوا ہے. سلطان ہونے پر بھی نہ شیر شاہ کی مدرا پر کوئی انتر پڑا ہے اور نہ اُس کی پوشاک میں ہی. برہما دتیہ بھی ویسا ہی ہے شیرشاہ حقہ پی رہا ہے.]

شیر شاہ—لیکن، پنڈت، جو بادشاہت، دو جگری دوستوں کے آپسی تعلقات میں بھی فرق ہونا چاہئے، اِسکے لئے مجبور کرتی ہے، وہ...وہ کیا...کہوں میں ؟

برہما دتیہ—جہاں پناہ، ہردیوں میں انتر نہیں پڑنا چاہئے، باہری بیوہار کے یہ فرق تو پدوں کی پرتشٹھا کے لئے آوشیک ہی نہیں انی واریہ ہیں.

شیر شاہ—تو اکیلے میں بھی تمہارے مجھے جہاں پناہ نہ کہنے، گدی پر بیٹھکر زمین پر نہ بیٹھنے سے عہدوں کی عزت چلی جائیگی ؟

برہما دتیہ—(مسکراتے ہوئے) ایکانت میں بھی جہاں پناہ تو میں اِسی لئے کہتا ہوں کہ سب کے سامنے جہاں پناہ کہنے کا

अभ्यास हो जाय. गद्दी पर इसलिए नहीं बैठता कि कम से कम दरबान तो किसी के आने की सूचना देने. अथवा अन्य किसी कार्य के लिए आ ही सकता है......नौकरों के सामने पदप्रतिष्ठा की रक्षा जितनी आवश्यक है, उतनी अन्य किसी के सन्मुख नही.

शेरशाह—लेकिन, पंडित, फरीद से शेर खाँ होने पर मुझे जितनी तकलीफ हुई उससे कहीं ज्यादा शेर खाँ से शेरशाह होने में हो रही है.

महादित्य—देश के लिए आपने तकलीफों का सामना किया है, अब आराम के कष्ट भी भोगिये.

शेरशाह—दुनिया में मामूली मकान से महल कहीं आरामदेह चीज समझी जाती है, और महल के साथ जो दूसरी चीजें मिलती हैं, वह उससे भी ज्यादा. (हुक्का गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए) पर...पर पंडित, खुदा जानता है कि मुझे यह महल, जहाँ का यह आरामदेह सामान. सब के सब, न जाने कैसे अटपटे मालूम होते हैं.

महादित्य—यही...यही तो आप की विशेषता है. मैं जानता हूं कि बिहार शरीफ में उस दिन हिन्दू मुसलमानों का एक मत से आपको बादशाह बनाने का प्रस्ताव, तथा जनाब ईसा खाँ शेरवानी, जिनके पिता के यहाँ आपके पिता नौकर रह चुके थे, उनके द्वारा किया गया प्रस्ताव, आपने दिखावे के लिए अस्वीकृत नहीं किया था. बंगाल विजय के पश्चात् जब फिर वही बात उठी तब भी आपने कितनी हिचकिचाहट और कठिनाई से यह पद स्वीकार किया, यह

ابھیاس ہو جائے . گدی پر اِس لئے نہیں بیٹھتا کہ کم سے کم دربان تو کسی کے آنے کی سوچنا دیئے ' اتھوا انیہ کسی کاریہ کے لئے آ ہی سکتا ہے...نوکروں کے سامنے پد پرتشٹھا کی رکشا جتنی آوشیک ہے ' اُتنی انیہ کسی کے سنمکھ نہیں .

شیر شاہ—لیکن پنڈت ' فرید سے شیر خاں ہونے پر مجھے جتنی تکلیف ہوئی اُس سے کہیں زیادہ شیر خاں سے شیر شاہ ہونے میں ہو رہی ہے .

برھما دتیہ—دیش کے لئے آپ نے تکلیفوں کا سامنا کیا ہے ' اب آرام کے کشٹ بھی بھوگئے .

شیر شاہ—دنیا میں معمولی مکان سے محل کہیں آرام دہ چیز سمجھی جاتی ہے ' اور محل کے ساتھ جو دوسری چیزیں ملتی ہیں ' وہ اُس سے بھی زیادہ . (حقہ گڑ گڑا کر دھواں چھوڑتے ہوئے) پر...پر پنڈت ' خدا جانتا ہے کہ مجھے یہ محل ' یہاں کا یہ آرام دہ سامان ' سب کے سب ' نہ جانے کیسے اٹ پٹے معلوم ہوتے ہیں .

برھما دتیہ—یہی...یہی تو آپکی وشیشتا ہے . میں جانتا ہوں کہ بہار شریف میں اُس دن ہندو مسلمانوں کا ایک مت سے آپکو بادشاہ بنانے کا پرستاو ' تتھا جناب عیسیٰ خاں شیروانی ' جنکے پتا کے یہاں آپکے پتا نوکر رہ چکے تھے ' اُن کے دوارا کیا گیا پرستاو آپ نے دکھاوے کے لئے اسویکرت نہیں کیا تھا ' بنگال وجے کے پشچات جب پھر وہی بات اُٹھی تب بھی آپ نے کتنی ہچکچاہٹ اور کٹھنائی سے یہ پد سویکار کیا ' یہ

भी मुझसे छिपा नहीं है. आपके हृदय को मुझसे अधिक और कौन जानता है, साथ ही आपके गुणों के कारण आपके भविष्य को भी सब से ज्यादा मैं ही जानता हूँ. चरणों पर लोटते हुए पदों को अनिच्छा, सच्चे विराग से जो ग्रहण करता है, वही उन पदों से प्राप्त अधिकार का सदुपयोग कर सकता है. यदि वह आपके सदृश प्रतिभावान हो, साथ ही दूरदर्शी, शूर, साहसी, त्यागी और धैर्यवान, तब तो पूछना ही क्या है ! बंगाल क्या, वह समय समीप है जब आप समूचे हिन्दुस्तान के सिंहासन पर बैठेंगे. आपके सिंहासनासीन होने के पश्चात् इस देश में हिन्दू मुसलमानों का संयुक्त राज होगा. आर्य, अनार्यों के संयुक्त राम-राज्य के समान सुखी और समृद्धिशाली. मेरी पुरानी भविष्य वाणियाँ सच निकली हैं, वह भी सच होकर रहेगी.

शेरशाह—लेकिन, पंडित, हुमायूँ बहुत बड़ी फ़ौज जमा कर रहा है. सुना नहीं, उसके भाइयों के मदद न देने पर भी उसने काफ़ी फ़ौज जमा कर ली है. उसके मुक़ाबले में हमारी फ़ौज तो अभी नहीं के बराबर है. (धीरे धीरे धुआँ नाक से छोड़ता है).

ब्रह्मादित्य—इसकी अब मुझे अधिक चिन्ता नहीं है. एक तो उसके सैनिक किराये के टट्टू हैं, और हमारे सैनिक देशभक्त. दूसरे अब जो सेना वह इकट्ठी कर रहा है, उसमें मुग़ल कम और इस देश के निवासी अधिक होंगे. चौसा युद्ध के पूर्व आप की आज्ञा से मैं कुछ दिन हुमायूँ की सेना में रह कर वहाँ की स्थिति से परिचित हो आया हूं. हुमायूँ की इस सेना में से

بھی مجھ سے چھپا نہیں ہے . آپ کے ہردے کو مجھ سے ادھک اور کون جانتا ہے ' ساتھ ہی آپکے گنوں کے کارن آپکے بھوشیہ کو بھی سب سے زیادہ میں ہی جانتا ہوں . چرنوں پر لوٹتے ہوئے پدوں کو آن اچھا ' سچے وراگ سے جو گرہن کرتا ہے ' وہی اُن پدوں سے پراپت ادھیکار کا سدوپیوگ کر سکتا ہے . یدی وہ آپکے سدرش پرتی بھاوان ہو ' ساتھ ہی دور درشی ' شور ' ساہسی ' تیاگی اور دھیریہ وان ' تب تو پوچھنا ہی کیا ہے ؟ بنگال کیا ' وہ سمے سمیپ ہے جب آپ سموچے ہندستان کے سنگھاسن پر بیٹھیں گے . آپکے سنگھاسنا سین ہونے کے پشچات اِس دیش میں ہندو مسلمانوں کا سنیکت راج ہوگا . آریہ ' ان آریہ کے سنیکت رام راجیہ کے سمان سکھی اور سمردھ شالی . میری پرانی بھوشیہ بانیاں سچ نکلی ہیں یہ بھی سچ ہوکر رہے گی .

شیر شاہ—لیکن ' پنڈت ' ہمایوں بہت بڑی فوج جمع کر رہا ہے . سنا نہیں ' اُس کے بھائیوں کے مدد نہ دینے پر بھی اُس نے کافی فوج جمع کرلی ہے . اُس کے مقابلے میں ہماری فوج تو ابھی نہیں کے برابر ہے . (دھیرے دھیرے دھواں ناک سے چھوڑتا ہے)

برہما دتیہ—اِسکی اب مجھے ادھک چنتا نہیں ہے . ایک تو اُس کے سینک کرائے کے ٹٹو ہیں اور ہمارے سینک دیش بھکت دوسرے اب جو سینا وہ اکٹھی کر رہا ہے ' اُس میں مغل کم اور اس دیش کے نواسی ادھک ہونگے . چوسا یدھ کے پورو آپکی آگیا سے میں کچھ دن ہمایوں کی سینا میں رہ کر وہاں کی استھتی سے پرچت ہو آیا ہوں . ہمایوں کی اِس سینا میں سے

अधिकांश को मैं भड़का सकता हूं. फिर चौसा युद्ध में उसकी हार और आप की जीत ने हमारी ऐसी धाक जमा दी है कि मेरा विश्वास है कि जीत फिर भी अपनी ही होगी.

[बहुमूल्य वर्दी पहने हुए दरबान का प्रवेश. वह आकर अदब से सलाम करता है.]

दरबान—जहाँपनाह, एक साहब आए हैं, अपना नाम निज़ाम बताते हैं, कहते हैं—हुज़ूर के बिरादर हैं. जहाँपनाह से मुलाक़ात चाहते हैं.

शेरशाह—हाँ, हाँ, फ़ौरन...फ़ौरन उन्हें ले आओ.

[दरबान का सलाम कर प्रस्थान.]

शेरशाह—पंडित, हम लोग तख़्त नशीनी के वक़्त इन लोगों को बिहार शरीफ़ से न बुलाकर ग़लती कर बैठे.

ब्रह्मादित्य—परन्तु युद्ध के पश्चात् राजतिलक इतने शीघ्र हुआ कि इन्हें बुलाना सम्भव ही न था.

शेरशाह—तुम जानते हो, पंडित, निज़ाम मुझे कितना चाहता है, फिर हम यह जंग लाड मलिका के दौलत से ही जीत सके. (हुक़्क़ा गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए) तख़्त नशीनी कुछ वक़्त के लिए मुल्तवी करना चाहिये थी. इन्हें बुलाकर. इनके आने पर ही तख़्त नशीनी होनी थी.

ब्रह्मादित्य—व्यक्तिगत कारणों से देश के कार्यों को इस प्रकार आगे नहीं बढ़ाया जा सकता, जहाँपनाह.

ادھیکانش کو میں بھڑکا سکتا ہوں . پھر چوسا یدھ میں اُسکی ہار اور آپکی جیت نے ہماری ایسی دھاک جمادی ہے کہ میرا وشواس ہے کہ جیت پھر بھی اپنی ہی ہوگی .

[بہو مولیہ وردی پہنے دربان کا پرویش . وہ آکر ادب سے سلام کرتا ہے]

دربان — جہاں پناہ ، ایک صاحب آئے ہیں ، اپنا نام نظام بتاتے ہیں ، کہتے ہیں حضور کے برادر ہیں ، جہاں پناہ سے ملاقات کرنا چاہتے ہیں .

شیرشاہ — ہاں ، ہاں ، فوراً ..... فوراً انہیں لے آؤ .

[دربان کا سلام کر پرستھان]

شیر شاہ — پنڈت ، ہم لوگ تخت نشینی کے وقت ان لوگوں کو بہار شریف سے نہ بلا کر غلطی کر بیٹھے .

برہما دتیہ — پرنتو یدھ کے پشچات راج تلک اتنے شیگھر ہوا کہ انہیں بلانا سمبھو ہی نہ تھا .

شیر شاہ — تم جانتے ہو ، پنڈت ، نظام مجھے کتنا چاہتا ہے ، پھر ہم یہ جنگ لاڈ ملکہ کی دولت سے ہی جیت سکے . (حقہ گڑگڑا کر دھواں چھوڑتے ہوئے) تخت نشینی کچھ وقت کے لئے ملتوی کرنا چاہئے تھی . انہیں بلاکر . ان کے آنے پر ہی تخت نشینی ہونی تھی .

برہما دتیہ — ویکتی گت کارنوں سے دیش کے کاریوں کو اس پرکار آگے نہیں بڑھایا جا سکتا ، جہاں پناہ .

सत्य और अहिंसा का सबसे बड़ा पुजारी मानते हैं पर क़ायम हो होते हुए देख कर या तो आंख बचा कर निकल जाते हैं और जीत कोशिश में रहते हैं कि कोई अन्याय उनकी आंखों के सामने हिंसा- न आने पाये और फिर प्रकृति उसी अन्याय को उनकी गर्दन पर सवार करा देती है और उनका स्वभाव बना देती है. और फिर वही उस अन्याय में रस लेने लगते हैं और उन्हें फिर इतना रस आने लगता है कि वह यह पुकार उठते हैं कि अन्याय का बेमतलब ही अन्याय नाम रख छोड़ा है. वह न किसी को सताता है न किसी को दुख देता है. वह तो सब की भलाई के लिए है. हां. यह ठीक है कि उनका कहना उस नासमझ मा जैसा ही होता है जो पहले अफ़ीम की बेहद बुराई करती थी और फिर अपने बच्चे को अफ़ीम की आदत डाल कर यह कहने लगी कि लोगों ने अफ़ीम को यों ही बदनाम कर रक्खा है. वह तो किसी का भी नुक़सान नहीं करती. बच्चे का भला करती है क्योंकि उसे आराम के साथ सुलाती है. मां का भला करती है क्योंकि उसको आराम के साथ काम में लगने का मौक़ा देती है. बस सत्याग्रही यह सोच लें कि वह अब उस मंज़िल तक आ पहुँचे हैं जहाँ अन्याय देख कर कतराने का काम होता है. और अब वह मंज़िल दूर नहीं है जब अन्याय में सत्य और अहिंसा के उपदेशों का रस मिलने लगेगा.

दीपक रोज़ बुझते हैं. पर आम तौर से ऐसे वक़्त बुझते हैं कि फिर दस बारह घंटे उनके जलने की ज़रूरत नहीं रहती. क्या हिन्दुस्तान का सत्याग्रह-दीप शाम को ही बुझ गया था ? या रात के बारह बजे बुझा था ? मगर तो हरगिज़ नहीं बुझा था. नहीं तो क्या

ستیہ آور اھنسا کا سب سے بڑا پجاری مانتے ہے کا اور جلدی ہوئے دیکھکر یا تو آنکھ بچاکر نکل جاتے ھیں یا اِس دیھں کا نقصان ھیں کہ کوئی انیاے اُن کي آنکھوں کے سامنے ھي دلئے شانتی پرکرتي اُسی انیاے کو اُن کي گردن پر سوار کرادیتي ھے , حتیٰ کا سوبھاؤ بنا دیتی ھے آور پھر وھی اُس انیاے میں رس لینے لگتے ھیں اور اُنھیں پھر اتنا رس آنے لگتا ھے کہ وہ یہ پکار اُٹھتے ھیں کہ انیاے کا بے مطلب ھي انیاے نام رکھ چھوڑا ھے. وہ نہ کسی کو ستاتا ھے نہ کسي کو دکھ دیتا ھے وہ تو سبکی بھلائي کے لئے ھے. ھاں یہ ٹھیک ھے کہ اُن کا کھنا اُس نا سمجھہ ماں جیسا ھي ھوتا ھے جو پہلے افیم کی بے حد برائي کرتي تھی آور پھر اپنے بچے کي افیم کی عادت ڈالکر یہ کھنے لگی کہ لوگوں نے افیم کو یوں ھي بدنام کر رکھا ھے. وہ تو کسی کا بھی نقصان ھی نہیں کرتی، بچے کا بھلا کرتي ھے کیونکہ اُسے آرام کے ساتھ سلاتی ھے. ماں کا بھلا کرتی ھے کیونکہ اُس کو آرام کے ساتھ کام میں لگنے کا موقعہ دیتي ھے. بس ستیاگرھي یہ سوچ لیں کہ وہ اب اُس منزل تک آپہنچے ھیں جہاں انیاے دیکھکر کترانے کا کام ھوتا ھے. اور اب وہ منزل دور نہیں ھے .جب انیاے میں ستیہ آور اھنسا سے اُپدیشوں کا رس ملنے لگے گا.

دیپک روز بجھتے ھیں. پر عام طور سے ایسے وقت بجھتے ھیں کہ پھر دس بارہ گھنٹے اُنکے جلنے کي ضرورت نہیں رھتی. کیا کیا ھندستان کا ستیا گرہ دیپ شام کو ھي بجھ گیا تھا؟ یا رات کے

[दरबान के साथ निजाम का प्रवेश. वह बहुत दुर्बल और उद्विग्न दिखाई पड़ता है. दरबान का सलाम कर प्रस्थान. निजाम आगे बढ़ कर सिजदा करता है. शेरशाह भी उठ कर, आगे बढ़, उसे हृदय से लगाता है. निजाम के नेत्रों से आँसू निकल आते हैं. दोनों अलग अलग होते हैं. ब्रह्मादित्य भी खड़ा हो गया है. ब्रह्मादित्य और निजाम भी एक दूसरे का अभिवादन करते हैं. सब बैठ जाते हैं. निजाम भी ब्रह्मादित्य के साथ गद्दी के नीचे ही बैठता है]

निजाम—माफ़ कीजियेगा, भाईजान, चुनार के मानिन्द यहाँ भी बिना बुलाए ही चला आया. वहाँ शादी की मुबारकबाद देनी थी, यहाँ तख़्तनशीनी की. फिर इस दफ़ा तो मुग़लों के साथ होने वाली जंग में मैं भी शरीक होना चाहता हूं. आपने सुना होगा कि हुमायूँ फ़ौज के साथ रवाना हो चुका है.

शेरशाह—(ऐसी मुद्रा से, मानो अन्तिम बात सुनकर शेष सब बातें विस्मृत हो गई हों)अच्छा, हुमायूँ रवाना हो गया ?

निजाम—जी हाँ, मैंने आज ही रास्ते में सुना. आपके पास शाही ख़ुफ़िया भी इत्तला लाते ही होंगे.

शेरशाह—(उठते हुए ब्रह्मादित्य से) अच्छा, पंडित, तो हमें भी फ़ौरन दीवाने ख़ास में चलकर, जंग की तमाम तैयारी के बारे में सलाह करके एकदम रवाना होना चाहिये.

[शेरशाह के उठते ही निजाम और ब्रह्मादित्य भी खड़े हो जाते हैं, परन्तु निजाम का मुख और उतर जाता है.]

[دربان کے ساتھ نظام کا پرویش ' وہ بہت دربل اور اُدوگن دکھائی پڑتا ہے ۔ دربان کا سلام کر پرستان ۔ نظام آگے بڑھ سجدہ کرتا ہے ۔ شیر شاہ بھی اُٹھ کر آگے بڑھ ' اُسے ھردے سے لگاتا ہے ۔ نظام کے نیتروں سے آنسو نکل آتے ہیں ۔ دونوں الگ الگ ہوتے ہیں ۔ برھما دتیہ بھی کھڑا ہو گیا ہے ۔ برھما دتیہ اور نظام بھی ایک دوسرے کا ابھی وادن کرتے ہیں ۔ سب بیٹھ جاتے ہیں ۔ نظام بھی برھما دتیہ کے ساتھ گدی کے نیچے ہی بیٹھتا ہے ۔]

نظام—معاف کیجئے گا ' بھائی جان ' چنار کے مانند یہاں بھی بنا بلائے ہی چلا آیا ۔ وہاں شادی کی مبارکباد دینی تھی ' یہاں تخت نشینی کی ۔ پھر اِس دفعہ تو مغلوں کے ساتھ ہونے والی جنگ میں میں بھی شریک ہونا چاہتا ہوں ۔ آپ نے سنا ہوگا کہ ھمایوں فوج کے ساتھ روانہ ہو چکا ہے ۔

شیر شاہ—(ایسی مدرا سے ' مانو انتم بات سنکر شیش سب باتیں وسمرت ہوگئیں ہوں) اچھا ' ھمایوں روانہ ہو گیا ؟

نظام—جی ہاں ' میں نے آج ہی راستے میں سنا ۔ آپکے پاس شاہی خفیہ بھی اطلاع لاتے ہی ہوں گے ۔

شیر شاہ—(اُٹھتے ہوئے ' برھما دتیہ سے) اچھا ' پنڈت ' تو ہمیں بھی فوراً دیوان خاص میں چلکر ' جنگ کی تمام تیاری کے بارے میں صلح کرکے ایک دم روانہ ہونا چاہئے ۔

[شیر شاہ کے اُٹھتے ہی نظام اور برھما دتیہ بھی کھڑے ہو جاتے ہیں ' پرنتو نظام کا مکھ اور اُتر جاتا ہے]

ब्रह्मादित्य—आप तशरीफ़ ले चलें. जहाँ पनाह, मैं (निज़ाम की ओर संकेत कर) शाहज़ादे साहब के ठहरने आदि का प्रबन्ध कर अभी आता हूँ.

शेरशाह—(चलते हुए) हाँ. हाँ, तुम पहले उनके ठहरने का इन्तज़ाम कर दो, लेकिन बहुत जल्द आना. (कुछ रुक कर, निज़ाम की ओर घूम, जैसे कोई बात याद आ गई हो) हाँ, अच्छे तो हो निज़ाम ? कुछ दुबले नज़र आते हो.

निज़ाम—(भर्राये हुए स्वर में) बहुत अच्छा हूँ, जहाँपनाह, (कुछ रुक कर) दुबला तो सफ़र के सबब से दिखता......

[निज़ाम के अंतिम शब्द के पूरे होने के पहले ही शेरशाह का प्रस्थान. निज़ाम के मुख से एक दीर्घ निश्वास निकल जाती है. ब्रह्मादित्य उसकी ओर देखता है.]

लघु-यवनिका

برہما دتیہ—آپ تشریف لے چلیں جہاں پناہ ' میں (نظام کی اور سنکیت کر) شہزادے صاحب کے ٹھہرنے آدی کا پربندھ کر ابھی آتا ہوں .

شیر شاہ—(چلتے ہوئے) ہاں . ہاں ' تم پہلے ان کے ٹھہرنے کا انتظام کر دو ' لیکن بہت جلد آنا . (کچھ رک کر ' نظام کی اور گھوم ' جیسے کوئی بات یاد آگئی ہو) ہاں اچھے تو ہو نظام ؟ کچھ دبلے نظر آتے ہو .

نظام—(بھرائے ہوئے سور میں) بہت اچھا ہوں ' جہاں پناہ (کچھ رک کر) دبلا تو سفر کے سبب سے دیکھتا......

[نظام کے انتم شبد کے پورے ہونے کے پہلے ہی شیر شاہ کا پرستھان . نظام کے مکھ سے ایک دیرگھ نشواس نکل جاتی ہے . برہما دتیہ اس کی اور دیکھتا ہے]

لگھو یونکا

کچھ کتابیں

بابو نہ کو بچا سکا

لیکھک — ڈاکٹر جگدیش چندر جین ایم ۔ اے ۔ پی ایچ ۔ ڈی ۔
چھاپنے والے — جاگرن ساھتیہ مندر، بنارس، پرشٹھ ۱۲۸ ۔ دام دو روپیہ ۔

اس کتاب کے لیکھک ڈاکٹر جگدیش چندر جین گاندھی ھتیا کانڈ کے ایک خاص گواہ تھے ۔ اُنھوں نے اِس کتاب میں کچھ ایسی سنسنی خیز باتوں پر روشنی ڈالی ھے جو ابھی تک جنتا کے سامنے نہیں آئی تھیں ۔ کتاب پڑھنے سے معلوم ھوتا ھے کہ کس طرح مدن لال اُن سے سڑینتر کا بھید پرکٹ کرتا ھے، کیسے اُسے وہ بمبئی سرکار کے ادھیکاریوں تک پہونچانے کی کوشش کرتے ھیں، کس طرح اُنھیں ادھیکاریوں کی ڈانٹ، پھٹکار کا شکار ھونا پڑتا ھے، کس طرح عدالت میں بچاؤ پکش کے وکیل اُن سے دلیل کرتے ھیں ۔ اِن سب باتوں کا رومانچکاری برنن اِس کتاب میں کیا گیا ھے ۔ لیکھک نے جیسا کہ لکھا ھے اُس سے گاندھی جی کی رکھشا کے سمبندھ میں ادھیکاری ورگ کی لاپرواھی کو پڑھ کر بڑا دکھ ھوتا ھے اور یہ سوچ کر ھمارا سر شرم سے جھک جاتا ھے کہ ھم باپو کو نہ بچا سکے ۔

اِس کتاب میں لیکھک نے سامپردائکتا کی آلوچنا کرتے ھوئے یہ ثابت کرنے کی سپھل کوشش کی ھے کہ اِس آگ کی بھینکر جوالا دیش اور راشٹر کو بھسم کر سکتی ھے ۔

कुछ किताबें

बापू को न बचा सका

लेखक—डाकूर जगदीशचन्द्र जैन, एम.ए., पी.एच.डी.
छापनेवाले—जागरण साहित्य मंदिर, बनारस, पृष्ठ १२८; दाम २).

इस किताब के लेखक डाकूर जगदीशचन्द्र जैन गांधी हत्या-काण्ड के एक खास गवाह थे. उनहोंने इस किताब में कुछ ऐसी सनसनी खेज बातों पर रोशनी डाली है जो अभी तक जनता के सामने नहीं आई थी. किताब पढ़ने से मालूम होता है कि किस तरह मदन लाल उनसे षड़यंत्र का भेद प्रकट करता है, कैसे उसे वह बम्बई सरकार के अधिकारियों तक पहुँचाने की कोशिश करते हैं, किस तरह उन्हें अधिकारियों की डाँट-फटकार का शिकार होना पड़ता है, किस तरह अदालत में बचाव पक्ष के वकील उनसे दलील करते हैं. इन सब बातों का रोमांचकारी वर्णन इस किताब में किया गया है. लेखक ने जैसा कि लिखा है उससे गांधी जी की रक्षा के संबंध में अधिकारी वर्ग की लापरवाही को पढ़ कर बड़ा दुख होता है और यह सोचकर हमारा सर शर्म से झुक जाता है कि हम बापू को न बचा सके.

इस किताब में लेखक ने साम्प्रदायिकता की आलोचना करते हुए यह साबित करने की सफल कोशिश की है कि इस आग की भयंकर ज्वाला देश और राष्ट्र को भस्म कर सकती है.

बापू की क़ुर्बानी के बाद थोड़े दिन के लिए ऐसी फ़िज़ा बन गई थी कि जैसे फ़िरक़ावारी ज़ेहनियत सदा के लिए देश से चली गई हो लेकिन हम आज फिर उसे धीरे धीरे उभरते हुए देख रहे हैं.

यह किताब शायद भटकने वालों को चौकन्ना कर सके इसलिए हम अपने पाठकों को इसके पढ़ने की सलाह देते हैं.

मुस्लिम देश भक्त

[लेखक श्री० रतन लाल बंसल]

इस किताब में कुछ ऐसे मुसलमान देश भक्तों के जीवन का हाल और उनके कारनामे बयान किये गये हैं जिन्होंने अंगरेज़ों के मनहूस क़दम यहां जमने के पहले ही उनके राज की बुराइयों का अन्दाज़ा कर लिया था और उनको हिन्दुस्तान से निकाल भगाने में ही हिन्द की भलाई देखी थी.

इस किताब को पढ़कर आपको मालूम होगा कि किस तरह मुसलमान आलिमों ने सन् १८५७ से भी पहले से आज़ादी की लड़ाई शुरू कर रक्खी थी. अपनी जान हथेली पर रखकर उन्होंने हिन्दुस्तान और विदेशों में रहते हुए भी अंगरेज़ी हकूमत का मुक़ाबला किया. यह सब हाल पढ़कर आप दंग रह जायँगे किताब दोनों लिखावटों में छपी है. क़ीमत १ रुपया १२ आने.

मैनेजर, 'नया हिन्द,'
५८ बाई का बाग़, इलाहाबाद.

باپو کی قربانی کے بعد تھوڑے دن کے لئے ایسی فضا بن گئی تھی کہ جیسے فرقہ واری ذہنیت سدا کے لئے دیش سے چلی گئی ہو لیکن ہم آج پھر اُسے دھیرے دھیرے اُبھرتے ہوئے دیکھ رہے ہیں.

یہ کتاب شاید بھٹکنے والوں کو چوکنا کر سکے. اِس لئے ہم اپنے پاٹھکوں کو اِس کے پڑھنے کی صلح دیتے ہیں.

مسلم دیش بھکت

[لیکھک — شری رتن لال بنسل]

اِس کتاب میں کچھ ایسے مسلمان دیش بھکتوں کے جیون کا حال اور اُنکے کارنامے بیان کئے گئے ہیں جنھوں نے انگریزوں کے منحوس قدم یہاں جمنے کے پہلے ہی انکے راج کی برائیوں کا اندازہ کر لیا تھا اور اِن کو ہندستان سے نکال بھگانے میں ہند کی بھلائی دیکھی تھی.

اِس کتاب کو پڑھ کر آپ کو معلوم ہوگا کہ کس طرح مسلمان عالموں نے سنہ ۱۸۵۷ سے بھی پہلے سے آزادی کی لڑائی شروع کر رکھی تھی. اپنی جان ہتھیلی پر رکھ کر اُنہوں نے ہندستان اور ودیشوں میں رہتے ہوئے بھی انگریزی حکومت کا مقابلہ کیا. یہ سب حال پڑھ کر آپ دنگ رہ جائیں گے.

کتاب دونوں لکھاوٹوں میں چھپی ہے. قیمت ۱ روپیہ ۱۲ آنے

منیجر 'نیا ہند'
۴۸ بائی کا باغ – الہ آباد

बापू को न क

लेख

दुनिया का हाल

(भाई इशरत अली सिद्दीक़ी)

चीन के कम्युनिस्ट प्रधान माउ-त्से-तुंग लगभग दो महीने तक रूस में रहकर अपने देश वापस आ गये हैं और दूसरी तरफ़ अमरीका के दूर पूरब वाले मुल्कों के राजदूत, जो स्याम की राजधानी बंकाक में सलाह मशविरे के लिए जमा हुए थे, अपने अपने ठिकानों पर चले गए. इसके अलावा अमरीका की ज़मीन, हवा और समुन्दर की फ़ौजों के बड़े अफ़सरों ने दूर पूरब का दौरा करने के बाद अपने प्रधान ट्रूमेन के सामने कुछ सुझाव पेश कर दिये हैं. यह सुझाव, बंकाक कानफ्रेंस के फ़ैसले और माउ और स्टालिन के समझौते अभी पूरी तरह से सामने नहीं आये हैं और शायद लड़ाई के नक़्शों की तरह कभी साफ़ साफ़ बयान न किये जायें फिर भी उन्होंने उनके बारे में जो कुछ कहा है उससे दो बातों का पता चलता है.

एक यह कि अब अंतरराष्ट्री राजनीति की धारा पूरब की तरफ़ बह रही है और दूसरे यह कि अमरीका और रूस की तनातनी कुछ और बढ़ गई है. दोनों तरफ़ लड़ाई की तैयारियां, साथियों की खोज और विरोधी राष्ट्रों की चालों का तोड़ तेज़ी के साथ शुरू हो गया है.

دنیا کا حال

(بھائی عشرت علی صدیقی)

چین کے کمیونسٹ پردھان ماؤزے تنگ لگ بھگ دو مہینے تک روس میں رہ کر اپنے دیش واپس آگئے ہیں اور دوسری طرف امریکہ کے دور پورب والے ملکوں کے راج دوت' جو سیام کی راجدھانی بنکاک میں صلاح مشورے کے لئے جمع ہوئے تھے' اپنے اپنے ٹھکانوں پر چلے گئے . اس کے علاوہ امریکہ کی زمین' ہوا اور سمندر کی فوجوں کے بڑے افسروں نے دور پورب کا دورہ کرنے کے بعد اپنے پردھان ترومین کے سامنے کچھ سجھاؤ پیش کردئے ہیں . یہ سجھاؤ بنکاک کانفرنس کے فیصلے اور ماؤ اور اسٹالن کے سمجھوتے ابھی پوری طرح سے سامنے نہیں آئے ہیں اور شاید لڑائی کے نقشوں کی طرح کبھی صاف صاف بیان نہ کئے جائیں . پھر بھی اُنھوں نے ان کے بارے میں جو کچھ کہا ہے اس سے دو باتوں کا پتہ چلتا ہے .

ایک یہ کہ اب انتر راشٹری راج نیتی کی دھارا پورب کی طرف بہہ رہی ہے اور دوسرے یہ کہ امریکہ اور روس کی تناتنی کچھ اور بڑھ گئی ہے . دونوں طرف لڑائی کی تیاریاں' ساتھیوں کی کھوج اور ورودھی راشٹروں کی چالوں کا توڑ تیزی کے ساتھ شروع ہو گیا ہے .

माओ-त्से-तुंग के मास्को जाने में अचरज की कोई बात नहीं थी इसलिए कि चीन की कम्युनिस्ट सरकार को वहीं से सहायता मिल सकती है. और पिछले पचीस बरस में घरेलू मारकाट और जापान की लड़ाई में चीन की आर्थिक हालत इतनी ख़राब हो चुकी है कि वह बाहरी मदद के बिना पनप नहीं सकता. मगर यह ताज्जुब की बात ज़रूर है कि अपने देश को इस हालत में छोड़ कर चीन के प्रधान दो महीने तक बाहर रहे और यह ताज्जुब चीन और रूस के समझौते से कम नहीं होता. इस समझौते में रूस ने चीन को पांच [illegible] बीस करोड़ डालर का क़र्ज़ा देना मंज़ूर किया है [illegible] बहुत कम है. इसके अलावा चीन [illegible] और डायरीन और मंचूरिया के आर पार [illegible] में १९४५ के समझौते से रूस को जो साझा मिल [illegible] उसके बारे में यह तय हुआ है कि जब जापान से सुलह का समझौता हो जायगा तो रूस यह साझा छोड़ देगा. हां, अगर जापान या उसके किसी साथी की तरफ़ से इन दोनों में से किसी देश पर कोई धावा हुआ तो दोनों एक साथ मिल कर इस धावे का मुक़ाबिला करेंगे और इन गोदियों को जो इस मुक़ाबले में बड़ी अहमियत रखती हैं, मिलजुल कर इस्तेमाल करेंगे. वैसे भी रूस और चीन साम्राज की रोक थाम की कोशिश करेंगे.

समझौते के बारे में रूसी रेडियो ने इतना ही बतलाया है और इससे यह सवाल हल नहीं होता कि माओ अपने कई सलाहकारों

ماؤ زے تنگ کے ماسکو جانے میں اچرج کی کوئی بات نہیں تھی اس لئے کہ چین کی کمیونسٹ سرکار کو وہیں سے سہایتا مل سکتی ہے۔ اور پچھلے پچیس برس میں گھریلو مارکاٹ اور جاپان کی لڑائی میں چین کی آرتھک حالت اتنی خراب ہو چکی ہے کہ وہ باہری مدد کے بنا پنپ نہیں سکتا۔ مگر یہ تعجب کی بات ضرور ہے کہ اپنے دیش کو اس حالت میں چھوڑ کر چین کے پردھان دو مہینے تک باہر رہے۔ اور یہ تعجب چین اور روس کے سمجھوتے سے کم نہیں ہوتا۔ اس سمجھوتے میں روس نے چین کو پانچ سال کے اندر تیس کروڑ ڈالر کا قرضہ دینا منظور کیا ہے جو اس کی ضرورت کو دیکھتے ہوئے بہت کم ہے۔ اس کے علاوہ چین کی دو بندرگاہیں آرتھر اور ڈائرین اور منچوریا کے آرپار جانے والی ریلوے میں ۱۹۴۵ کے سمجھوتے سے روس کو جو ساجھا مل گیا تھا اس کے بارے میں یہ طے ہوا ہے کہ جب جاپان سے صلح کا سمجھوتا ہوجائے گا تو روس یہ ساجھا چھوڑ دے گا۔ ہاں اگر جاپان یا اس کے کسی ساتھی کی طرف سے ان دونوں میں سے کسی دیش پر کوئی دھاوا ہوا تو دونوں ایک ساتھ ملکر اس دھاوے کا مقابلہ کریں گے اور ان گودیوں کو جو اس مقابلہ میں بڑی اہمیت رکھتی ہیں مل جلکر استعمال کریں گے۔ ویسے بھی روس اور چین سامراج کی روک تھام کی کوشش کریں گے۔

سمجھوتے کے بارے میں روسی ریڈیو نے بس اتنا ہی بتلایا ہے اور اس سے یہ سوال حل نہیں ہوتا کہ ماؤ اپنے کئی صلاح کاروں

के साथ इतने दिनों तक मास्को में क्यों ठहरे रहे और चीन के कश्मीर और तिब्बत से मिले हुए प्रान्त सिंक्याँग के गवरनर को वहाँ क्यों बुलाया गया. इसी कारन अमरीका के सरकारी और ग़ैर सरकारी आदमी और अख़बार यह कह रहे हैं कि माउ और स्टालिन में बहुत सी दूसरी बातें भी तय हुई हैं जिनको अभी छिपा दिया गया है. कहा जाता है कि इन दोनों ने पूरब के देशों में कम्युनिज्म को फैलाने, रूस के असर को बढ़ाने और अमरीका की काट करने के लिए कुछ तरकीबें सोची हैं.

टक्कर की सम्भावना

इन्हीं तरकीबों का तोड़ करने के लिए पूरब के देशों के अमरीकी राजदूत पिछले महीने बंकाक में जमा हुए थे, जहाँ उन्होंने इन देशों की आर्थिक ज़रूरतों और इनकी मदद के तरीक़ों पर सोच विचार किया और इन्हीं तरकीबों का तोड़ करने के लिए अमरीकी फ़ौजी अफ़सरों ने पैसीफ़िक सागर में लड़ाई के अड्डों को मज़बूत करने और समुन्दरी फ़ौज को बढ़ाने की सिफ़ारिश की है. इसका कारन उन्होंने यह बताया है कि रूसी और अमरीकी गरोहों में टक्कर की सम्भावना योरप में उतनी नहीं है जितनी कि एशिया में. और मालूम होता है कि अमरीकी सरकार को टक्कर की यह सम्भावना आर्थिक मदद की ज़रूरत से ज़्यादा जल्दी सूझ गई. इसलिए वह पैसीफ़िक सागर में अपनी शक्ति बड़ी तेज़ी से बढ़ा रही है और अमरीका के एटलान्टिक बेड़े के कुछ जहाज़ वहाँ से पैसिफ़िक बेड़े के लिए भेज दिये गये हैं जबकि आर्थिक मदद अभी तक केवल दक्खिनी कोरिया

کے ساتھ اتنے دنوں تک ماسکو میں کیوں ٹھہرے رہے اور چین کے کشمیر اور تبت سے ملے ہوئے پرانت سنکیانگ کے گورنر کو وہاں کیوں بلایا گیا. اسی کارن امریکہ کے سرکاری اور غیر سرکاری آدمی اور اخبار یہ کہہ رہے ہیں کہ ماؤ اور استالن میں بہت سی دوسری باتیں بھی طے ہوئی ہیں جن کو ابھی چھپا دیا گیا ہے. کہا جاتا ہے کہ اُن دونوں نے پورب کے دیشوں میں کمیونزم کو پھیلانے، روس کے اثر کو بڑھانے اور امریکہ کی کاٹ کرنے کے لئے کچھ ترکیبیں سوچی ہیں.

ٹکر کی سمبھاونا

انہی ترکیبوں کا توڑ کرنے کے لئے پورب کے دیشوں کے امریکی راج دوت پچھلے مہینے بنکاک میں جمع ہوئے تھے. جہاں انہوں نے ان دیشوں کی آرتھک ضرورتوں اور اُن کی مدد کے طریقوں پر سوچ وچار کیا. اور انہیں ترکیبوں کا توڑ کرنے کے لئے امریکی فوجی افسروں نے پیسفک ساگر میں لڑائی کے اڈوں کو مضبوط کرنے اور سمندری فوج کو بڑھانے کی سفارش کی ہے. اسکا کارن انہوں نے یہ بتایا ہے کہ روسی اور امریکی گروہوں میں ٹکر کی سمبھاونا یورپ میں اُتنی نہیں ہے جتنی کہ ایشیا میں. اور معلوم ہوتا ہے کہ امریکی سرکار کو ٹکر کی یہ سمبھاونا آرتھک مدد کی ضرورت سے زیادہ جلدی سوجھ گئی. اس لئے وہ پیسفک ساگر میں اپنی شکتی بڑی تیزی سے بڑھا رہی ہے اور امریکہ کے اٹلانٹک بیڑے کے کچھ جہاز وہاں سے پیسفک بیڑے کے لئے بھیج دئے گئے ہیں. جبکہ آرتھک مدد ابھی تک کیول دکھنی کوریا

और च्यांगकाईशेक की चीनी सरकार के आख़िरी ठिकाने फ़ार्मोसा के लिए मंज़ूर की गई है. हालांकि एशिया के दूसरे देशों के सामने उनकी हैसियत वैसी ही है जैसी एक बड़े सागर के सामने दो छोटी छोटी नदियों की. इन नदियों का पाट बहुत छोटा और पानी बहुत ही कम है और इनमें से दूसरी नदी तो थोड़े ही दिनों में सूखनेवाली है. इसलिए कि फ़ार्मोसा में च्यांगकाईशेक की सरकार चीन की कम्यूनिस्ट फ़ौजों के धावे के सामने अधिक दिनों तक टिक नहीं सकती.

अमरीका की पालिसी.

अमरीका की यह कारवाइयाँ रूस के बारे में उसकी इस पालिसी का कुदरती नतीजा है जो उसके विदेश मन्त्री डीन एचसन ने पिछले महीने बहुत साफ़ तौर से बयान कर दी है. उन्होंने कहा है कि रूस अपने मक़सदों के लिए उसूलों और साम्राजी इरादों को मिला कर अपनी पालिसी बनाता और उसे हालात के अनुसार बदलता रहता है. इसलिए उसके साथ समझौते की सूरत सिर्फ़ यह है कि अमरीका ऐसे हालात पैदा करदे जिनको बदलना रूस के बस के बाहर हो नहीं तो जहाँ कहीं उसने हालात को कमज़ोर पाया वहाँ वह उनसे लाभ उठाने लगेगा. इसीलिए अमरीका न तो ऐटम शक्ति कन्ट्रोल के बारे में अपनी नीति बदलने के लिए तैयार है और न च्यांगकाईशेक की मदद से हाथ उठाने के लिए तैयार है. वह रूस से कोई बातचीत करने के लिए भी नहीं तैयार है जब तक कि यह बातचीत वाशिंगटन में न हो और इसमें रूस और अमरीका के

اور چیانگ کائی شیک کی چینی سرکار کے آخری ٹھکانے فارموسا کے لئے منظور کی گئی ہے۔ حالانکہ ایشیا کے دوسرے دیشوں کے سامنے اُن کی حیثیت ویسی ہی ہے جیسی ایک بڑے ساگر کے سامنے دو چھوٹی چھوٹی ندیوں کی۔ ان ندیوں کا پاٹ بہت چھوٹا اور پانی بہت ہی کم ہے اور انمیں سے دوسری ندی تو تھوڑے ہی دنوں میں سوکھنے والی ہے۔ اس لئے کہ فارموسا میں چیانگ کائی شیک کی سرکار چین کی کمیونسٹ فوجوں کے دھاوے کے سامنے ادھک دنوں تک ٹک نہیں سکتی۔

امریکہ کی پالیسی

امریکہ کی یہ کاروائیاں روس کے بارے میں اس کی اس پالیسی کا قدرتی نتیجہ ہے جو اس کے ودیش منتری ڈین ایچسن نے پچھلے مہینے بہت صاف طور سے بیان کردی ہے۔ انہوں نے کہا ہے کہ روس اپنے مقصدوں کے لئے اُصولوں اور سامراجی ارادوں کو ملاکر اپنی پالیسی بناتا اور اسے حالات کے انوسار بدلتا رہتا ہے اس لئے اس کے ساتھ سمجھوتے کی صورت صرف یہ ہے کہ امریکہ ایسے حالات پیدا کردے جن کو بدلنا روس کے بس سے باہر ہو۔ نہیں تو جہاں کہیں اس نے حالات کو کمزور پایا وہاں وہ ان سے لابھ اُٹھانے لگے گا۔ اسی لئے امریکہ نہ تو ایٹم شکتی کے کنٹرول کے بارے میں اپنی نیتی بدلنے کے لئے تیار ہے اور نہ چیانگ کائی شیک کی مدد سے ہاتھ اُٹھانے کے لئے تیار ہے۔ وہ روس سے کوئی بات چیت کرنے کے لئے بھی نہیں تیار ہے جبتک کہ یہ بات چیت واشنگٹن میں نہ ہوا اور اس میں روس اور امریکہ کے

अलावा उन दूसरे देशों के प्रतिनिधि भी शरीक न हों जो बातचीत वाले सवालों से सम्बन्ध रखते हैं. इस बारे में अमरीका के प्रधान और विदेश मन्त्री ने एक और बात यह कही है कि वह रूस के साथ किसी दबाव के होते हुए समझौते की कोई बातचीत नहीं करेंगे. लेकिन उन्होंने खुद "ताक़तवर हालात" पैदा करने का जो एलान किया है वह भी एक तरह का दबाव है और इसलिए सम्भावना की तराज़ू में टक्कर का पल्ला समझौते के पल्ले से भारी है.

हिन्द चीन में लागडाट

यह टक्कर कब कहाँ और कैसे होगी इसके बारे में अभी कुछ नहीं कहा जा सकता. फिर भी पिछले महीने एक ऐसा मामला उठ खड़ा हुआ है जो रूस और अमरीका के बीच टक्कर का कारन बन सकता है. वह मामला हिन्द चीन का है. वहाँ की जनता फ़्रान्स के साम्राजी चंगुल से आज़ादी हासिल करने के लिए पिछले चार बरस से लड़ रही है. इस लड़ाई के सरदार डाक्टर होचीमिंह हैं. जब फ़्रान्स अपनी फ़ौजों के ज़रिये उनके आन्दोलन को ख़तम नहीं कर सका तो उसने वहाँ पिछले शहन्शाह बावडाई को होचीमिंह के मुक़ाबिले पर लाकर खड़ा कर दिया और बावडाई से एक समझौता कर लिया. इस समझौते को आज़ादी का समझौता कहा जाता है और इसी के आधार पर बरतानिया और अमरीका और उनके कुछ साथियों ने बावडाई की सरकार को हिन्द चीन का अधिकारी मान लिया है. दूसरी तरफ़ चीन, रूस और उसके कुछ साथियों ने होचीमिंह की सरकार को स्वीकार कर लिया है

علاوہ اُن دوسرے دیشوں کے پرتی ندھی بھی شریک نہ ہوں جو بات چیت والے سوالوں سے سمبندھ رکھتے ہیں ۔ اس بارے میں امریکہ کے پردھان اور ودیش منتری نے ایک اور بات یہ کہی ہے کہ وہ روس کے ساتھ کسی دباؤ کے ہوتے ہوئے سمجھوتے کی کوئی بات چیت نہیں کریں گے. لیکن انہوں نے خود '' طاقتور حالات '' پیدا کرنے کا اعلان کیا ہے وہ بھی ایک طرح کا دباؤ ہے اور اس لئے سمبھاؤنا کی ترازو میں ٹکر کا پلا سمجھوتے کے پلہ سے بھاری ہے ۔

ہند چین میں لاگ ڈاٹ

یہ ٹکر کب ' کہاں اور کیسی ہوگی اس کے بارے میں ابھی کچھ نہیں کہا جا سکتا پھر بھی پچھلے مہینے ایک ایسا معاملہ اٹھ کھڑا ہوا ہے جو روس اور امریکہ کے بیچ ٹکر کا کارن بن سکتا ہے ۔ یہ معاملہ ہند چین کا ہے ۔ وہاں کی جنتا فرانس کے سامراجی چنگل سے آزادی حاصل کرنے کے لئے پچھلے چار برس سے لڑ رہی ہے ۔ اس لڑائی کے سردار ڈاکٹر ہوچی منہ ہیں ۔ جب فرانس اپنی فوجوں کے ذریعے اُن کے آندولن کو ختم نہیں کر سکا تو اُس نے وہاں سابق شہنشاہ باؤڈائی کو ہوچی منہ کے مقابلہ پر لاکر کھڑا کردیا اور باؤڈائی سے ایک سمجھوتا کرلیا ۔ اس سمجھوتے کو آزادی کا سمجھوتا کہا جاتا ہے اور اسی کے آدھار پر برطانیہ اور امریکہ اور ان کے کچھ دوسرے ساتھیوں نے باؤ ڈائی کی سرکار کو ہند چین کا ادھیکاری مان لیا ہے ۔ دوسری طرف چین روس اور اس کے کچھ ساتھیوں نے ہوچی منہ کی سرکار کو سویکار

यह दोनों कारवाइयाँ लागडाट पर हुई हैं. चीन और रूस ने यह देखकर कि बरतानिया और अमरीका हिन्द-चीन में, जिसकी सरहद चीन से मिली हुई है, अपने मतलब की सरकार क़ायम करके उसके मुक़ाबले पर एक मोर्चा बनाने वाले हैं, हो चो मॅह की सरकार को मान लिया और बरतानिया और अमरीका ने यह सोचकर कि अगर हो चो मॅह का आन्दोलन सफल हो गया तो कम्युनिज़्म के नाते रूस का असर एक मंज़िल और आगे बढ़ आयगा, बावडाई की मदद करने का फ़ैसला कर लिया. इस मामले में उनकी नीति उससे बहुत कुछ हटी हुई है जो इन्डोनेशिया के बारे में थी. वहाँ हालैन्ड ने जिन नेताओं से बातचीत की थी, उनको जनता का विश्वास प्राप्त था और जो समझौता हुआ था उसकी बुनियाद सच्ची आज़ादी पर थी. लेकिन हिन्द चीन और फ़्रान्स के समझौते में आज़ादी सिर्फ़ नाम की है और बावडाई की हैसियत एक पुराने पापी की है. फ़्रान्स की कठपुतली होने के कारन, उनको न तो पहले हिन्द चीनी जनता की ताईद हासिल थी और न आज हासिल है. रूस ने भी यूनान की कम्युनिस्ट विरोधी सरकार को आख़ीर तक नहीं माना और चीन की कम्युनिस्ट सरकार को उस वक़्त माना जब क़रीब क़रीब पूरे देश पर उसका अधिकार हो गया, जबकि डाक्टर हो ची मॅह की सरकार को उसने बहुत जल्दी मान लिया. शायद उसे यह डर था कि अगर उसने देर लगाई तो फ़्रान्स, बरतानिया और अमरीका बावडाई की सरकार को हिन्द चीनी जनता के सर मंढ देंगे और फिर उसको राजसिंहासन से हटाना बहुत कठिन होगा.

१२

یه دونوں کاروائیاں لاگ ڈاٹ پر هوئی هیں . چین اور روس نے یه دیکھ کر که برطانیه اور امریکه هند چین میں ' جس کی سرحد چین سے ملی هوئی هے ' اپنے مطلب کی سرکار قائم کرکے ان کے مقابلے پر ایک مورچه بنانے والے هیں ' هوچی منه کی سرکار کو مان لیا اور برطانیه اور امریکه نے یه سوچ کر که اگر هو چی منه کا آندولن سپهل هو گیا تو کمیونزم کے ناتے روس کا اثر ایک منزل اور آگے بڑھ آئے گا ' باؤ ڈائی کی مدد کرنے کا فیصله کرلیا . اس معاملے میں ان کی نیتی اس سے بہت کچھ هٹی هوئی هے جو انڈونیشیا کے بارے میں تھی . وهاں هالینڈ نے جن نیتاؤں سے بات چیت کی تھی ' ان کو جنتا کا وشواس پراپت تھا اور جو سمجھوته هوا تھا اس کی بنیاد سچی آزادی پر تھی . لیکن هند چین اور فرانس کے سمجھوتے میں آزادی صرف نام کی هے اور باؤ ڈائی کی حیثیت ایک پرانے پاپی کی هے . فرانس کی کٹھ پتلی هونے کے کارن ان کو نه تو پہلے هند چینی جنتا کی تائید حاصل تھی اور نه آج حاصل هے . روس نے بھی یونان کی کمیونسٹ ورودھی سرکار کو آخر تک نہیں مانا اور چین کی کمیونسٹ سرکار کو اس وقت مانا جب قریب قریب پورے دیش پر اسکا ادھیکار هوگیا جب که ڈاکٹر هوچی منه کی سرکار کو اس نے بہت جلدی مان لیا . شاید اسے یه ڈر تھا که اگر اس نے دیر لگائی تو فرانس ' برطانیه اورامریکه باؤ ڈائی کی سرکار کو هند چینی جنتا کے سر منڈھ دیں گے . اور پھر اس کو راج سنگھاسن سے هٹانا بہت کٹھن هوگا .

अंधेरा इस बुरी तरह से छाया रहता और इतनी देर तक छाया रहता ?

ईश्वर करे हमारी यह धारणा झूटी साबित हो या कोई झूटी साबित करदे.

हे सत्याग्रह-दीप, किसी तरह जल न पड़ो !

—भगवान दीन

اندھیرا اِس بری طرح سے چھایا رھتا اور اتـنـي دیـر تک چھایا رھتا ؟

ایشور کرے ھماري یہ دھارنا جھوٹي ثابت ھو یا کوئی جھوٹي ثابت کردے۔

ھے ستیا گرہ دیپ، کسي طرح جل پڑو !

بھگوان دین

अगर वह डाक्टर हो की सरकार को माने बिना उनकी सहायता करता तो उसपर दूसरे देश के घरेलू मामलों में दखल देने का इलज़ाम लगाया जा सकता था. लेकिन अब वह इस इलज़ाम से बच सकता है और अगर पच्छिमी राष्ट्र यह कहें कि बावडाई की सरकार हिन्द चीन में फ़्रान्सीसी सरकार की सची जानशीन यानी उत्तराधिकारिनी है तो इसके जवाब में वह यह कह सकता है कि बाव को जो आज़ादी दी गई है वह सच्ची नहीं है और हो की जनता की बाव से कहीं अधिक ताईद हासिल है. अपने इस जवाब का जोर बढ़ाने के लिए रूस ने इन्डोनेशी सरकार को (जिसे उसने यू. एन. ओ. में हालैन्ड की कठपुतली कहा था) इन्डोनेशिया का अधिकारी मान लिया है.

हो की मदद

डाक्टर हो की सरकार को मान लेने के लिए रूस और चीन उसे मदद देने में अपने हिसाब से कोई ग़लती नहीं करेंगे और अगर यह खबर ठीक है कि हो को मास्को बुलाया गया है तो शायद वहां इस मदद का नक़्शा तैयार हो जायेगा. हिन्द चीन की सरहद चीन से और चीन की सरहद रूस से मिली होने के कारन डाक्टर हो की सरकार को चीन और रूस की मदद उतनी ही आसानी से मिल सकेगी जितनी आसानी से यूनानी सरकार के कम्युनिस्ट बाग़ियों को हंगरी, रूमानिया और बल्ग़ारिया से मिलती थी. और यह मदद यूनानी कम्युनिस्टों को मिलने वाली मदद से अधिक कारगर होगी. इसलिए कि बाव की सरकार यूनानी सरकार की बनिस्बत बहुत ही

اگر وہ ڈاکٹر هو کی سرکار کو مانے بنا اُن کی سہایتا کرتا تو اسپر دوسرے دیش کے گھریلو معاملوں میں دخل دینے کا الزام لگیا جا سکتا تھا لیکن اب وہ اس الزام سے بچ سکتا ہے اور اگر پچھمی راشٹر یہ کہیں کہ باؤ ڈائي کي سرکار هند چین میں فرانسیسي سرکار کی سچي جانشین؟ یعني اُترادھیکارني ہے تو اس کے جواب میں وہ یہ کہہ سکتا ہے کہ باؤ کو جو آزادي دی گئی ہے وہ سچی نہیں ہے اور هو کو جنتا کی باؤ سے کہیں ادھک تائید حاصل ہے. اپنے اِس جواب کا زور بڑھانے کے لئے روس نے انڈونیشی سرکار کو (جسے اس نے یو. این. او. میں هالینڈ کی کٹھ پتلي کہا تھا) انڈونیشیا کا ادھیکاري مان لیا ہے.

هو کی مدد

ڈاکٹر هو کی سرکار کو مان لینے کے لئے روس اور چین اسے مدد دینے میں اپنے حساب سے کوئي غلطی نہیں کرینگے اور اگر یہ خبر ٹھیک ہے کہ هو کو ماسکو بلایا گیا ہے تو شاید وهاں اس مدد کا نقشہ تیار ہوجائے گا. هند چین کی سرحد چین سے اور چین کی سرحد روس سے ملی ہونے کے کارن ڈاکٹر هو کی سرکار کو چین اور روس کی مدد اتني ہی آسانی سے مل سکے گي جتنی آسانی سے یونانی سرکار کے کمیونسٹ باغیوں کو هنگری، رومانیہ اور بلغاریہ سے ملتی تھی. اور یہ مدد یونانی کمیونسٹوں کو ملنے والی مدد سے ادھک کارگر ہوگي. اس لئے کہ باؤ ڈائی سرکار یونانی سرکار کی بہ نسبت بہت ہی

कमजोर है. हो सकता है कि डाक्टर हो को मदद देने के लिए रूस और चीन उनकी सरकार से कोई समझौता करलें और यह भी हो सकता है कि इसके लिए रूस और चीन के समझौते की उस दफ़ा की आड़ ली जाय जिसमें उन दोनों ने साम्राज की रोकथाम करने का एलान किया है. इसलिए कि उनकी राय में बाव की सरकार की स्थापना फ्रान्स की एक सामराजी चाल है.

बाव की सरपरस्ती

दूसरी तरफ़ अमरीका ने बाव की सरकार को मानने के साथ साथ यह भी किया है कि वह हिन्द चीन की तरक़्क़ी को बाहर के इशारों पर उभरने वाले झगड़ों से बचाने की कोशिश करेगा. यह डाक्टर हो और उनके चीनी और रूसी साथियों के लिए एक आगाही है जिससे पता चलता है कि अमरीका हिन्द चीन में वही नीति अपनायेगा जिसके अनुसार वह चीन में च्यांगकाई शेक को मदद देता रहा है. लेकिन इस नीति में उसे सफलता की आशा तब ही हो सकती है जब वह बाव की सरकार को अधिक से अधिक आर्थिक और फ़ौजी मदद दे क्योंकि बावडाई में खुद कोई ज़्यादा दम नहीं है. और हो ची मींह के दम का अन्दाज़ा इसी बात से होता है कि उन्होंने पिछले चार बरस की लड़ाई में फ़्रान्स के दांत खट्टे कर दिये हैं. इसके अलावा रूस और चीन की मदद मिल जाने से डाक्टर हो की ताक़त और बढ़ जायगी. यही सोचकर अमरीका पैसिफ़िक सागर में अपनी फ़ौज बढ़ा रहा है. शायद उसे आशा है कि रूस उसकी शक्ति से डरकर हो की मदद, से हाथ उठा लेगा. लेकिन रूस आसानी

کمزور ہے. ہو سکتا ہے کہ ڈاکٹر ہو کو مدد دینے کے لئے روس اور چین اُن کی سرکار سے کوئی سمجھوتہ کرلیں اور یہ بھی ہو سکتا ہے کہ اس کے لئے روس اور چین کے سمجھوتے کی اس دفعہ کی آڑ لی جائے جس میں ان دونوں نے سامراج کی روک تھام کرنے کا اعلان کیا ہے. اس لئے کہ اُن کی رائے میں باؤ کی سرکار کی استھاپنا فرانس کی ایک سامراجی چال ہے.

باؤ کی سرپرستی

دوسری طرف امریکہ نے باؤ کی سرکار کو ماننے کے ساتھ ساتھ یہ بھی کیا ہے کہ وہ ہند چین کی ترقی کو باہر کے اشاروں پر ابھرنے والے جھگڑوں سے بچانے کی کوشش کرے گا. یہ ڈاکٹر ہو اور اُن کے چینی اور روسی ساتھیوں کے لئے ایک آگاہی ہے جس سے پتہ چلتا ہے کہ امریکہ ہند چین میں وہی نیتی اپنائے گا جس کے انوسار وہ چین میں چیانگ کائی شیک کو مدد دیتا رہا ہے. مگر اس نیتی میں اسے سپھلتا کی آشا تب ہی ہو سکتی ہے جب وہ باؤ کی سرکار کو ادھک سے ادھک آرتھک اور فوجی مدد دے کیونکہ باؤ ڈائی میں خود کوئی زیادہ دم نہیں ہے. اور ہو چی منہ کے دم کا اندازہ اسی بات سے ہوتا ہے کہ انہوں نے پچھلے چار برس کی لڑائی میں فرانس کے دانت کھٹے کردئے ہیں. اس کے علاوہ روس اور چین کی مدد مل جانے سے ڈاکٹر ہو کی طاقت اور بڑھ جائے گی. یہی سوچ کر امریکہ پیسفک ساگر میں اپنی فوج بڑھا رہا ہے. شاید اسے یہ اُمید ہے کہ روس اس کی شکتی سے ڈر کر ہو کی مدد سے ہاتھ اُٹھا لے گا. لیکن روس آسانی

से दबने वाला नहीं है. ख़ासकर ऐसी हालत में कि जब चीन जैसा बड़ा देश उसके साथ आ गया है, दक्खिनी पूरबी एशिया के देशों में आर्थिक संकट ने कम्युनिज़्म के लिए मैदान तैयार कर दिया है और हर जगह की जनता पच्छिमी राष्ट्रों की साम्राजी चालों के कारन उनके ख़िलाफ़ हो गई है. रूस की नीति अमरीका की नीति से अलग है. उसका वार बाहर से नहीं बल्कि अन्दर से होता है. वह हथियारों से नहीं बल्कि हालात से फ़ायदा उठाता है. उसकी इस कारवाई को हथियारों के ज़रिये रोका नहीं जा सकता और इसी कारन तीसरी लड़ाई क़रीब आजाने पर भी अच्छी ख़ासी दूर है और उसके छिड़ने में अभी बहुत देर है.

नाज़ीवाद का नवजीवन.

यह दूर और देर और बढ़ाई जा सकती है अगर बड़े राष्ट्र एक दूसरे के क़रीब आने की कोशिश करें. मगर इस तरफ़ कोई ध्यान नहीं देता और इसी कारन पुराने झगड़े चुकने के बजाय पुराने फ़ितने जाग रहे हैं, जैसा कि जर्मन पार्लिमेन्ट में 'हिटलर ज़िन्दाबाद' के नारों से ज़ाहिर होता है. यह नारे एक ऐसी संस्था के स्वागत में लगाये गये हैं जो नाज़ी पार्टी से बहुत कुछ मिलती जुलती है और हालाँ कि पच्छिमी जर्मनी के अमरीकी हाई कमिश्नर ने कहा है कि नाज़ीवाद को किसी तरह उभरने नहीं दिया जायगा लेकिन नाज़ी विचार वाले जर्मन अमरीका और रूस की तनातनी से फ़ायदा उठा रहे हैं. वह जानते हैं कि जर्मनों का जो इलाक़ा लड़ाई के बाद पोलैन्ड को दे दिया गया था उसकी वापसी की मांग रूसी गरोह के ख़िलाफ़

سے دبنے والا نہیں ہے . خاص کر ایسی حالت میں کہ جب چین جیسا بڑا دیش اس کے ساتھ آگیا ہے' دکھنی پوربی ایشیا کے دیشوں میں آرتھک سنکٹ نے کمیونزم کے لئے میدان تیار کر دیا ہے اور ہر جگہ کی جنتا پچھمی راشٹروں کی سامراجی چالوں کے کارن ان کے خلاف ہو گئی ہے . روس کی نیتی امریکہ کی نیتی سے الگ ہے . اسکا وار باہر سے نہیں بلکہ اندر سے ہوتا ہے . وہ ہتھیاروں سے نہیں بلکہ حالات سے فائدہ اٹھاتا ہے . اس کی اس کارروائی کو ہتھیاروں کے ذریعہ روکا نہیں جا سکتا اور اسی کارن تیسری بڑی لڑائی قریب آجانے پر بھی اچھی خاصی دور ہے اور اس کے چھڑنے میں ابھی بہت دیر ہے .

نازی واد کا نو جیون

یہ دوری اور دیر اور بڑھائی جا سکتی اگر بڑے راشٹر ایک دوسرے کے قریب آنے کی کوشش کریں . مگر اس طرف کوئی دھیان نہیں دیتا . اور اسی کارن پرانے جھگڑے چکنے کے بجائے پرانے فتنے جاگ رہے ہیں' جیسا کہ جرمن پارلیمنٹ میں 'ہٹلر زندہ باد' کے نعروں سے ظاہر ہوتا ہے . یہ نعرے ایک ایسی سنستھا کے سواگت میں لگائے گئے ہیں جو نازی پارٹی سے بہت کچھ ملتی جلتی ہے . اور حالانکہ پچھمی جرمنی کے امریکی ہائی کمشنر نے کہا ہے کہ نازی واد کو کسی طرح ابھرنے نہیں دیا جائے گا' لیکن نازی وچار والے جرمن امریکہ اور روس کی تنا تنی سے فائدہ اٹھا رہے ہیں . وہ جانتے ہیں کہ جرمنی کا جو علاقہ لڑائی کے بعد پولینڈ کو دے دیا گیا تھا اس کی واپسی کی مانگ روسی گروہ کے خلاف

होने के कारन अमरीका अगर उसका समर्थन नहीं करेगा तो उसका विरोध भी नहीं करेगा. वह यह भी देखते हैं कि रूस के खिलाफ़ मोर्चाबन्दी में अमरीका को उनकी मदद की ज़रूरत है और उनको उम्मीद है कि जब इस मोर्चाबन्दी के लिए अमरीका स्पेन में फ्रांको की फ़ासिस्ट सरकार से, जिसे यू. एन. ओ. से, बाहर रखा गया है, मेल जोल बढ़ाने की बातें कर रहा है तो वह जर्मनी में नाज़ीवाद के नये जनम से भी अधिक नाराज़ नहीं होगा.

कश्मीर का झगड़ा

बड़े राष्ट्रों के आपसी झगड़ों के कारन छोटे राष्ट्रों के झगड़े भी चुकने को नहीं आते. इसकी सबसे बड़ी मिसाल कश्मीर का झगड़ा है और इस सिलसिले में पिछले महीने की सब से अहम घटना यू. एन. ओ. की सुरक्षा कौंसिल की बहस नहीं बल्कि हिन्दुस्तान के प्रधान मन्त्री का वह बयान है जिसमें उन्होंने कहा है कि हिन्दुस्तान के खिलाफ़ बाहर के देशों में प्रोपैगन्डा किया जा रहा है और हमारे ऊपर कश्मीर के मामले में दबाव डालने की कोशिश की जा रही है. उन्होंने इस दबाव का कोई हाल नहीं बताया और अमरीका के घूमते हुए राजदूत फ़िल्प जेसप ने कहा है कि उनके देश पर यह दोष नहीं लगाया जा सकता. फिर भी सुरक्षा कौंसिल ने जिस तरह हिन्दुस्तान की असल शिकायत यानी कश्मीर पर हमले में पाकिस्तान के हाथ को टाला है और पाकिस्तान और आज़ाद कश्मीर फ़ौज को जिस तरह हिन्दुस्तानी और रियासती फ़ौज के बराबर का दर्जा दे दिया है उससे पता चलता है कि कौंसिल में बहुमत रखने वाले

ہونے کے کارن امریکہ اگر اس کا سمرتھن نہیں کرے گا تو اس کا ورودھ بھی نہیں کرے گا. وہ یہ بھی دیکھتے ہیں کہ روس کے خلاف مورچہ بندی میں امریکہ کو اُن کی مدد کی ضرورت ہے اور اُن کو اُمید ہے کہ جب اِس مورچہ بندی کے لئے امریکہ اسپین میں فرانکو کی فاشسٹ سرکار سے' جسے یو. این. او. سے باہر رکھا گیا ہے' میل جول بڑھانے کی باتیں کر رہا ہے تو وہ جرمنی میں نازی واد کے نئے جنم سے بھی ادھک ناراض نہیں ہوگا.

کشمیر کا جھگڑا

بڑے راشٹروں کے آپسی جھگڑوں کے کارن چھوٹے راشٹروں کے جھگڑے بھی چکنے کو نہیں آتے. اس کی سب سے بڑی مثال کشمیر کا جھگڑا ہے اور اس سلسلہ میں پچھلے مہینے کی سب سے اہم گھٹنا یو. این. او. کی سرکشا کونسل کی بحث نہیں بلکہ ہندستان کے پردھان منتری کا وہ بیان ہے جس میں انہوں نے کہا ہے کہ ہندستان کے خلاف باہر کے ملکوں میں پروپگنڈا کیا جا رہا ہے اور ہمارے اوپر کشمیر کے معاملے میں دباؤ ڈالنے کی کوشش کی جارہی ہے. انہوں نے اس دباؤ کا کوئی حال نہیں بتایا اور امریکہ کے گھومتے ہوئے راج دوت فلپ جیسپ نے کہا ہے کہ ان کے دیش پر یہ دوش نہیں لگایا جا سکتا. پھر بھی سرکشا کونسل نے جس طرح ہندستان کی اصل شکایت یعنی کشمیر پر حملے میں پاکستان کے ہاتھ کو ٹالا ہے اور پاکستان اور آزاد کشمیر فوج کو جس طرح ہندستانی اور ریاستی فوج کے برابر کا درجہ دیدیا ہے اس سے پتہ چلتا ہے کہ کونسل میں بہومت رکھنے والے

पच्छिमी राष्ट्रों को झगड़ा चुकाने की उतनी चिन्ता नहीं है जितनी कि अपना उल्लू सीधा करने की. कश्मीर की सरहद चीन और रूस से मिलती है और यहाँ लड़ाई के बड़े अच्छे अड्डे बन सकते हैं. इसीलिए वह उसे किसी ऐसे देश के साथ नहीं रहने देना चाहते जो पूरी तरह और पहले से उनका साथी न बन जाय. हिन्दुस्तान कामनवेल्थ में रहते हुए भी रिपब्लिक बन चुका है. इन्डोनेशिया की आज़ादी के लिये लड़ने, उत्तरी अफ़्रीक़ा के मुस्लिम देशों की आज़ादी के लिए आवाज़ उठाने, हिन्द चीन में बावडाई की कठपुतली सरकार को न मानने, पैसिफ़िक सागर की जथाबन्दी से अलग रहने और अपनी विदेशी नीति को पूरी तरह आज़ाद रखने के कारन इस तराज़ू में पूरा नहीं उतरता और इसीलिए उसकी बात सच्ची होने पर भी अमरीका और बरतानिया के गले से नहीं उतरती. इन दोनों ने नार्वे और क्यूबा के साथ पिछले महीने के आख़ीर में सुरक्षा कौंसिल के सामने जो प्रस्ताव रखा है उससे मालूम होता है कि वह झगड़े की जड़ तक जाना नहीं चाहते बल्कि उसकी डाल पर अपना घोंसला बना लेना चाहते हैं. इस राह में एक रुकावट यह थी कि कश्मीर कमीशन में जेकोसलावेकिया का नुमाइन्दा शामिल था और अगर कोइ दूसरा कमीशन बनता तो उसमें भी रूस का कोई न कोई आदमी आ जाता. इसीलिए प्रस्ताव में कहा गया है कि कमीशन का काम एक आदमी के सुपुर्द कर दिया जाय. यह आदमी पच्छिमी राष्ट्रों की पसन्द का होगा और जैसा वह चाहेंगे वैसा ही करेगा. [illegible]

پچھمی راشٹروں کو جھگڑا چکانے کی اتنی چنتا نہیں ہے جتنی کہ اپنا الو سیدھا کرنے کی. کشمیر کی سرحد چین اور روس سے ملی ہے اور یہاں لڑائی کے اچھے اڈے بن سکتے ہیں. اسی لئے وہ اسے کسی ایسے دیش کے ساتھ نہیں رہنے دینا چاہتے جو پوری طرح اور پہلے سے ان کا ساتھی نہ بن جائے. ھندستان کامن ویلتھ میں رہتے ہوئے بھی ری پبلک بن چکا انڈونیشیا کی آزادی کے لئے لڑنے' اتری افریقہ کے مسلم دیشوں کی آزادی کے لئے آواز اٹھانے' ھند چین میں باؤ ڈائی کی کٹھ پتلی سرکار کو نہ ماننے' پیسفک ساگر کی جتھہ بندی سے الگ رہنے اور اپنی ودیشی نیتی کو پوری طرح آزاد رکھنے کے کارن اس ترازو میں پورا نہیں اترتا اور اسی لئے اس کی بات سچی ہونے پر بھی امریکہ اور برطانیہ کے گلے سے نہیں اترتی. ان دونوں نے ناروے اور کیوبا کے ساتھ پچھلے مہینے کے آخر میں سرکشا کونسل کے سامنے جو پرستاؤ رکھا ہے اس سے معلوم ہوتا ہے کہ وہ جھگڑے کی جڑ تک جانا نہیں چاہتے بلکہ اس کی ڈال پر اپنا گھونسلا بنا لینا چاہتے ہیں. اس راہ میں ایک رکاوٹ یہ تھی کہ کشمیر کمیشن میں زیکوسلاویکیہ کا نمایندہ شامل تھا اور اگر کوئی دوسرا کمیشن بنتا تو اس میں بھی روس یا اس کا کوئی نہ کوئی آدمی آ جاتا اسی لئے پرستاؤ میں کہا گیا ہے کہ کمیشن کا کام ایک آدمی کے سپرد کر دیا جائے. یہ آدمی پچھمی راشٹروں کی پسند کا ہوگا اور جیسا وہ چاہیں گے ویسا

की बातें और पंडित नेहरू की तारीफ़ें की है पर उनकी निगाहें शान्ति पर नहीं बल्कि आने वाली लड़ाई पर लगी हैं. और जब तक इस लड़ाई के बादल नहीं छँटते या हिन्दुस्तान से पच्छिमी राष्ट्रों की कोई ग़रज़ नहीं अटकती उस समय तक कश्मीर के मामले में उनसे इन्साफ़ की कोई उम्मीद नहीं की जा सकती.

हिन्द के विधान

की

अंगरेज़ी हिन्दुस्तानी शब्दावली

(अंगरेज़ी नागरी लिखावट में)

जिसमें

हिन्द का जो नया विधान पास हुआ है उसके
लगभग चौदह सौ ख़ास ख़ास अंगरेज़ी
शब्द के लिए आसान हिन्दुस्तानी
शब्द महात्मा भगवान दीन
और कुछ दूसरे विद्वानों ने सुझाए हैं.

शुरू में 'दो शब्द' लिखे हैं—काका कालेलकर,
श्रीमती रामेश्वरी नेहरू, श्री मो० सत्यनारायण
और पंडित सुन्दर लाल ने.

निकाली है—हिन्दुस्तानी प्रचार सभा वर्धा ने.

क़ीमत दो रुपे.

मिलने का पता—मैनेजर "नया हिन्द"
४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद

کی باتیں اور پنڈت نہرو کی تعریفیں کی ہیں مگر ان کی نگاہیں شانتی پر نہیں بلکہ آنے والی لڑائی پر لگی ہیں اور جب تک اس لڑائی کے بادل نہیں چھٹتے یا ہندستان سے پچھمی راشٹروں کی کوئی بڑی غرض نہیں اٹکتی اس سمے تک کشمیر کے معاملے میں ان سے انصاف کی کوئی اُمید نہیں کی جا سکتی ۔

ہند کے ودھان

کی

انگریزی ہندستانی شبداولی

(انگریزی ناگری لکھاوٹ میں)

جس میں ہندی کا جو نیا ودھان پاس ہوا ہے اس کے
لگ بھگ چودہ سو خاص خاص انگریزی
شبدوں کے لئے آسان ہندستانی شبد
مہاتما بھگوان دین اور کچھ دوسرے
ودوانوں نے سجھائے ہیں۔

شروع میں 'دو شبد' لکھے ہیں—کاکا کالیلکر ' شریمتی
رامیشوری نہرو ' شری م. ستیہ نارائن
اور پنڈت سندر لال نے .

نکلی ہے—ہندستانی پرچار سبھا وردھا نے۔

قیمت ۲ روپے

ملنے کا پتہ—منیجر 'نیا ہند'
۴۸ بائی کا باغ' الہ آباد

हमारी राय

<u>प्लेटफ़ार्म टिकट</u>

प्लेटफ़ार्म टिकट का रिवाज क्यों चला, कब से चला इसके। इतिहास में न जाकर हम इससे संबंध रखती हुई एक सच्ची बात सुना देना जरूरी समझते है.

बीस पचीस बरस पहले जब यहाँ विदेशी हकूमत थी तब एक बार देहली के एक मशहूर वकील (और बाद में जस्टिस) मोती सागर जी को यह बात सूझी थी कि रेलवे कम्पनी को प्लेट-फ़ार्म टिकट लगाने का कोई अधिकार नहीं होना चाहिए. अपनी सूझी हुई बात उनको इतनी ठीक जंची कि वह प्लेटफ़ार्म टिकट के दाम लेने के काम को रेलवे कम्पनी का जुल्म समझने लगे. अब दिल में तड़प होनी क़ुदरती थी. और तड़प रंग लाये बग़ैर कैसे रह सकती थी. वह न गांधी भक्त थे और न गांधी अभक्त. और फिर सत्याग्रह (यानी अत्याचार के खिलाफ़ सच्ची नियत से डट कर खड़े हो जाना) किसी एक आदमी की बपौती नहीं. फिर वह चाहे कितना ही बड़ा सन्त या महन्त क्यों न हो. सत्याग्रह तो एक ईश्वरी शक्ति है और वह उतनी हद तक हर एक में जागती रहती है जितनी हद तक उसमें सचाई जागी हुई है. और उतनी ही हद तक वह अपना चमत्कार दिखाती रहती है जितनी हद तक उस

ھماری رائے

پلیٹ فارم ٹکٹ

پلیٹ فارم ٹکٹ کا رواج کیوں چلا ، کب سے چلا اسکے اِتہاس میں نہ جاکر ہم اِس سے سمبندھ رکھتی ہوئی ایک سچی بات سنا دینا ضروری سمجھتے ھیں۔

بیس پچیس برس پہلے جب یہاں بدیشی حکومت تھی تب ایک بار دھلی کے ایک مشہور وکیل (اور بعد میں جسٹس) موتی ساگر جی کو یہ بات سوجھی کہ ریلوے کمپنی کو پلیٹ فارم ٹکٹ لگانے کا کوئی ادھیکار نہیں ہونا چاھئے . اپنی سوجھی ہوئی بات اُن کو اتنی ٹھیک جنچی کہ وہ پلیٹ فارم ٹکٹ کے دام لینے کے کام کو ریلوے کمپنی کا ظلم سمجھنے لگے . اب دل میں تڑپ ہونی قدرتی تھی اور تڑپ رنگ لائے بغیر کیسے رہ سکتی تھی . وہ نہ گاندھی بھکت تھے اور نہ گاندھی ابھکت. اور پھر ستیا گرہ (یعنی اتیا چار کے خلاف سچی نیت سے ڈٹ کر کھڑے ہو جانا) کسی ایک آدمی کی بپوتی نہیں . پھر وہ چاھے کتنا ھی بڑا سنت یا مہنت کیوں نہو . ستیا گرہ تو ایک ایشوری شکتی ھے اور وہ اتنی ھی حد تک ھر ایک میں جاگتی رھتی ھے ' جتنی حد تک اسمیں سچائی جاگی ہوئی ھے. اور اُتنی ھی حد تک وہ اپنا چمتکار دکھاتی رھتی ھے جتنی حد تک اُس آدمی میں

कि मोती सागर जी सत्याग्रह कर बैठे. वह देहली के स्टेशन पर प्लेटफ़ार्म टिकट लिए बिना गये और वापस आने पर टिकट कलेक्टर से रोके गये. सत्याग्रही के नाते उन्होंने सच सच बात कह दी. मोती सागर जी देहली के मशहूर वकीलों में थे और स्टेशन का क़रीब क़रीब सारा अमला उनको अच्छी तरह से जानता और पहचानता था. टिकट कलेक्टर भी उनको अच्छी तरह पहचानता था. उसने उनसे कोई किराया या जुर्माना लिए बग़ैर चले जाने की इजाज़त दे दी. इसपर मोती सागर जी ने उस टिकट कलेक्टर से पूछा कि क्या वह उनको रेल के क़ायदों के अनुसार बाहर जाने दे रहा है, या जान पहचान का सूद चुकाने की वजह से कोई रिआयत दिखा रहा है. टिकट कलेक्टर ने जवाब में कहा कि वह कर तो रिआयत ही रहा है. क़ायदे में तो उसको किराया और जुर्माना दोनों ही लेने चाहिए. मोती सागर जी ने जवाब में कहा. "मैं रिआयत नहीं चाहता. मुझसे किराया और जुर्माना दोनों वसूल कीजिए और रसीद दीजिये." टिकट कलेक्टर ने फ़ौरन किराया और जुर्माना लेकर रसीद काट दी.

मोती सागर जी ने अदालत का दरवाज़ा खटखटाया और रेलवे कम्पनी के एड़ी चोटी के ज़ोर लगाने पर भी देहली की अदालत से मोती सागर जी के हक़ में फ़ैसला हुआ. हाँ. यह ठीक है कि वह लाहौर की हाई कोर्ट में मुक़दमा हार गये और उसकी वजह जो थी उसकी तह में न जाना ही ठीक है.

हमारे पढ़ने वाले यहाँ यह और सुन रखें कि तलवार सत्याग्रह

که موتی ساگر جی ستیا گرہ کر بیٹھے وہ دھلي کے استیشن پر پلیت فارم تکت لئے بنا گئے اور واپس آنے پر تکت کلکٹر سے روکے گئے. ستیا گرھی کے ناتے اُنھوں نے سچ سچ بات کھه دي. موتی ساگر جي دھلی کے مشھور وکیلوں میں تھے اور استیشن کا قریب قریب سارا عمله اُن کو اچھي طرح سے جانتا اور پھچانتا تھا. تکت کلکٹر بھي اُن کو اچھي طرح پھچانتا تھا. اُس نے اُن کو کوئی کرایه یا جرمانه لئے بغیر چلے جانے کي اجازت دے دی اِس پر موتی ساگر جی نے اُس تکت کلکٹر سے پوچھا که کیا وہ اُن کو ریل کے قاعدوں کے انوسار باھر جانے دے رھا ھے' یا جان پھچان کا سود چکانے کی وجه سے کوئی رعائت دکھا رھا ھے. تکت کلکٹر نے جواب میں کھا که وہ کر تو رعائت ھی رھا ھے قاعدے سے تو اُس کو کرایه اور جرمانه دونوں ھی لینے چاھئے. موتي ساگر جي نے جواب میں کھا. "میں رعائت نھیں چاھتا مجھ سے کرایه اور جرمانه دونوں وصول کیجئے اور رسید دیجئے. تکت کلکٹر نے فوراً کرایه اور جرمانه لیکر رسید کات دی.

موتي ساگر جي نے عدالت کا دروازہ کھتکتھایا اور ریلوے کمپني کے ایڑی چوتی کے زور لگانے پر بھی دھلي کي عدالت سے موتي ساگر جي کے حق میں فیصله ھوا. ھاں' یه تھیک ھے که وہ لاھور کی ھائیکورت سے مقدمه ھار گئے اور اُس کی وجه جو تھي اُس کی تھه میں نه جانا ھی تھیک ھے.

ھمارے پڑھنے والے یھاں یه اور سن رکھیں که تلوار ستیا گرہ

शोहरत के मशहूर जनरल अपारी ने भी नागपुर के स्टेशन पर प्लेटफ़ार्म टिकट-सत्याग्रह किया था और स्टेशन मास्टर के यह पूछने पर कि अपारी साहब, आप ही बताइये कि अगर रेलवे कम्पनी प्लेटफ़ार्म टिकट का इन्तज़ाम न रखे तो बेटिकट वालों की जांच पड़ताल किस तरह कर सकें? के जवाब में जनरल अपारी का यह कहना था कि खद्दर के कपड़े से ज़्यादा अच्छा प्लेटफ़ार्म टिकट और क्या हो सकता है ? और इसमे शक नहीं कि उन दिनों खद्दर पहनने वाले बहुत ज़्यादा ऐसे थे जो अपने मतलब के लिए कभी झूट बोलना पसन्द नहीं करते थे. आखिर अपारी जी के साथ यही हुआ कि उनसे कुछ लिए बग़ैर उन्हें जाने दिया गया और नागपुर के स्टेशन के अमले ने सब खद्दरधारियों के साथ तो नहीं जनरल अपारी के साथ यह बर्ताव करना शुरू कर दिया कि वह कभी उनसे टिकट नहीं मांगता था. जनरल अपारी बेहद सच्चे आदमी हैं. उन्होंने कभी इस रिआयत का ग़लत फ़ायदा नहीं उठाया. इसी सिलसिले में यहाँ उनके चरित्र के बारे में इतना और कह देना चाहते हैं कि अगर वह तीसरे दर्जे का टिकट लेकर सफ़र कर रहे हों और तीसरे दर्जे मामूली से ज़्यादा भरे हुए हों तो वह बिना झिझक उसी तीसरे दर्जे के टिकट से सेकण्ड क्लास में बैठ जाते हैं और चोरी छिपे नहीं, खुले दिल से बैठते हैं. रेल के अमले के उतारे उतरते भी नहीं और किराया भी नहीं देते. यह उनका अपने ढंग का अलग सत्याग्रह है. इस ख़याल से हमारे बहुत से पढ़ने वाले सहमत भी हो सकते हैं और असहमत भी.

شهرت کے مشهور جنرل- اپاری نے بهی ناگپور کے استیشن پر پلیت فارم ٹکٹ ستیا گرہ کیا تها اور استیشن ماستر کے یه پوچهنے پر که اپاری صاحب ' آپ هی بتائیے که اگر ریلوے کمپني پلیت فارم ٹکٹ کا انتظام نه رکھے تو بے ٹکٹ والوں کی جانچ پڑتال کس طرح کر سکے ؟ کے جواب میں جنرل اپاری کا یه کهنا تها که کهدر کے کپڑے سے زیادہ اچها پلیت فارم ٹکٹ اور کیا هو سکتا هے ؟ اور اِس میں شک نهیں که اُن دنوں کهدر پهننے والے بهت زیادہ ایسے تهے جو اپنے مطلب کیلئے کبهي جهوٹ بولنا پسند نهیں کرتے تهے . آخر اپاري جی کے ساته یهی هوا که اُن سے کچھ لئے بغیر اُنهیں جانے دیا گیا اور ناگ پور کے استیشن کے عملے نے سب کهدر دهاریوں کے ساته تو نهیں ' جنرل اپاري کے ساته یه برتاؤ کرنا شروع کر دیا که وہ کبهي اُن سے ٹکٹ نهیں مانگتا تها . جنرل اپاری بے حد سچے آدمی هیں . اُنهوں نے کبهي اِس رعایت کا غلط فائدہ نهیں اُٹهایا . اِسی سلسلے میں یهاں اُن کے چرتر کے بارے میں اتنا اور کهه دینا چاهتے هیں که اگر وہ تیسرے درجے کا ٹکٹ لیکر سفر کر رهے هوں اور تیسرے درجے معمولی سے زیادہ بهرے هوئے هوں تو وہ بنا جهجهک اُسی تیسرے درجے کے ٹکٹ سے سکنڈ کلاس میں بیٹھ جاتے هیں اور چوري چهپے نهیں ' کهلے دل سے بیٹهتے هیں . ریل کے عملے کے اُتارے اُترتے بهی نهیں اور کرایه بهی نهیں دیتے . یه اُن کا اپنے ڈهنگ کا الگ ستیا گرہ هے . اِس خیال سے همارے بهت سے پڑهنے والے سهمت بهی هو سکتے هیں اور اسهمت بهی .

हम भी यही समझते हैं कि रेलवे को प्लेट फार्म टिकट का पैसा लेने का कोई हक़ नहीं होना चाहिए. इन्तज़ाम के सुभीते के लिए वह ज्यादा से ज्यादा उतने दाम ले सकती है जितने उन टिकटों की लागत पर खर्च हों. लेकिन अगर किसी वजह से रेलवे उन टिकटों की लागत पर एक आने से ज्यादा खर्च कर दे तब भी उसको एक आने से ज्यादा दाम हरगिज़ नहीं लेना चाहिए. ज्यादा लगी हुई रक़म को प्रचार खाते में डाल देना चाहिए.

प्लेट फ़ार्म टिकटों के दाम बढ़ाये जाना न अच्छे बनियापने का ही सबूत है और न सरकारी दूरन्देशी का.

हमें उम्मीद है कि जिम्मेदार आदमी इस ओर ध्यान देंगे और जल्दी ही प्लेट फ़ार्म टिकटों का दाम एक पैसा या ज्यादा से ज्यादा दो पैसा कर देंगे।

—भगवानदीन

धुन बिखराव यानी ब्राड कास्टिंग

धुन बिखराव दिनों दिन बढ़ता जाय यह हमें कुछ ज्यादा पसन्द नहीं है . पर सरकार की हैसियत में जाकर हमें बहुत सी अपनी पसन्दों को कुचल डालना ही चाहिये . और जन पसन्दों को ध्यान में रख कर ही हुकूमत का काम करना चाहिये. जिस तरह बाढ़ को रोकना असम्भव होता है पर उसके नुकसानों से बचना ज़रूरी होता है और उनसे बचने की कोई न कोई तरकीब भी निकाली जाती है उसी तरह इस धुन बिखराव यानी ब्राडकास्टिंग की बाढ़ से बचना असम्भव है . हां, इस के कुछ नुकसानों से बचना ज़रूरी है . जिस तरह नदी में आई बाढ़ से नहरें तैयार रख कर उसके

هم بهی یهی سمجهتے هیں که ریلوے کو پلیٹ فارم ٹکٹ کا پیسه لینے کا کوئي حق نهیں هونا چاهئے . انتطام کے سبهیتے کے لئے وہ زیادہ سے زیادہ اُتنے دام لے سکتی هے جتنا اُن ٹکٹوں کي لاگت پر خرچ هو . لیکن اگر کسی وجه سے ریلوے اُن ٹکٹوں کي لاگت پر ایک آنے سے زیادہ خرچ کردے تب بهی اُس کو ایک آنه سے زیادہ دام هرگز نهیں لینا چاهئے . زیادہ لگی هوئی رقم کو پرچار کهاتے میں ڈال دینا چاهئے ۔

پلیٹ فارم ٹکٹوں کے دام بڑهائے جانا نه اچهے بنیا پے کا هی ثبوت هے اور نه سرکاری دور اندیشی کا .

همیں اُمید هے که ذمه دار آدمي اِس اُور دهیان دیں گے اور جلد هي پلیٹ فارم ٹکٹوں کا دام ایک پیسه یا زیادہ سے زیادہ دو پیسه کر دینگے .

— بهگوان دین

دهن بکهراو یعنی براڈ کاسٹنگ

دهن بکهراو دنوں دن بڑهتا جائے یہ همیں کچهه زیادہ پسند نهیں هے . پر سرکار کی حیثیت میں جا کر همیں بهت سی اپنی پسندوں کو کچل ڈالنا هی چاهئے' اور جن پسندوں کو دهیان میں رکهکر هی حکومت کا کام کرنا چاهئے . جس طرح باڑه کا روکنا اسمبهو هوتا هے پر اُس کے نقصانوں سے بچنا ضروري هوتا هے اور اُن سے بچنے کی کوئي نه کوئی ترکیب بهی نکالی جاتي هے اُسي طرح اِس دهن بکهراو یعنی براڈ کاسٹنگ کی باڑه سے بچنا اسمبهو هے . هاں ' اِس کے نقصانوں سے بچنا ضروری هے . جس طرح ندی میں آئی باڑه سے نهریں تیار رکھ کر اُس کے

३० जनवरी की वह डरावनी साँझ

(बहिन सरोजनी दास)

३० जनवरी १९४८ की वह भयानक साँझ ! हम लोगों ने सोचा कुछ दूर टहल आवें. ज्यों हीं फाटक के बाहर हुए कि एक दोस्त घबराये हुए आये और भर्राई हुई आवाज़ में बोले—"गाँधी जी का स्वर्गवास हो गया." हम लोग सुन कर सन्न रह गये. आपस में एक दूसरे का मुँह देखने लगे. फिर उन्हीं मित्र ने कहा—"बापू की हत्या हो गई" हालाँ कि हम लोगों को कभी भी बापू के साथ रहने का अवसर नहीं मिला था. फिर भी हम लोगों के हृदय को कितनी चोट पहुंची थी. दूसरे सब लोग तो अखबार के दफ़्तर की ओर भागे मगर मैं उसी फाटक पर खड़ी रही. सड़क बिलकुल सूनी हो गई थी. ऊपर आकाश में मुसीबत के काले-काले बादल मंडला रहे थे. जैसे लग रहा था, संसार सूना हो गया है. हिन्दुस्तान अनाथ हो गया है. प्रकृति अंधेरे में मुंह ढाँपे बापू के लिये रो रही है. जैसे लग रहा था, पेड़ रो रहे हैं, रोते-रोते उनकी पत्तियाँ झड़ गई हैं. हरा भरा खेत रो रहा है, खलिहान रो रहा है. नदियाँ भी अपना आँचल फैलाये हुए पागलों की भाँति बड़े-बड़े पत्थरों से टकराती हुई, ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों और कन्दराओं से होती हुई, बापू को ढँकने के लिये दौड़ी आ रही हैं. बड़ी भयावनी लग रही थी वह रात. चाँदनी रहते हुए भी जैसे

۳۰ جنوری کی وہ ڈراونی سانجھ

(بہن سروجنی داس)

۳۰ جنوری ۱۹۴۸ع کی وہ بھیانک سانجھ ! ہم لوگوں نے سوچا کچھ دور ٹہل آویں ۔ جیوں ہی پھاٹک کے باہر ہوے کہ ایک دوست گھبرائے ہوے آئے اور بھرائی ہوئی آواز میں بولے—" گاندھی جی کا سورگواس ہو گیا ۔ " ہم لوگ سنکر سن رہ گئے ۔ آپس میں ایک دوسرے کا منھہ دیکھنے لگے ۔ پھر انہیں متر نے کہا—" باپو کی ھتیا ہو گئی ." حالانکہ ہم لوگوں کو کبھی بھی باپو کے ساتھ رہنے کا اوسر نہیں ملا تھا، پھر بھی ہم لوگوں کے ہردے کو کتنی چوٹ پہونچی تھی ۔ دوسرے سب لوگ تو اخبار کے دفتر کی اور بھاگے مگر میں اسی پھاٹک پر کھڑی رہی ۔ سڑک بالکل سونی ہو گئی تھی ۔ اوپر آکاش میں مصیبت کے کالے کالے بادل منڈلا رہے تھے ۔ جیسے لگ رہا تھا ' سنسار سونا ہوگیا ہے ۔ ہندستان اناتھ ہو گیا ہے ۔ پرکرتی اندھیرے میں منھہ ڈھانپے باپو کے لئے رو رہی ہے. جیسے لگ رہا تھا ' پیڑ رو رہے ہیں، روتے روتے انکی پتیاں جھڑ گئی ہیں ، ہرا بھرا کھیت رو رہا ہے، کھلیہان رو رہا ہے. ندیاں بھی اپنا آنچل پھیلائے ہوے پاگلوں کی بھانتی بڑے بڑے پتھروں سے ٹکراتی ہوئی، اونچے اونچے پہاڑوں اور کندراؤں سے ہوتی ہوئی باپو کو ڈھکنے کے لئے دوڑی آرہی ہیں ۔ بڑی بھیاونی لگ رہی تھی وہ رات ! چاندنی رہتے ہوے بھی جیسے اماوس کی کالی رات کھانے

नुक़सान से ही हम नहीं बच जाते, कुछ फ़ायदा भी उठा लेते हैं ठीक उसी तरह से धुन बिखराव की बाढ़ से होने वाले पैसे के नुकसान को बहुत कुछ बचाया जा सकता है. इतना ही नहीं उससे बहुत कुछ कमाया भी जा सकता है. हमारी सरकार पैसे की कमी की वजह से एक ओर धुनबिखराव पड़ावों यानी ब्राडकास्टिंग स्टेशनों का खर्च कम करती जा रही है और दूसरी तरफ़ अमरीका से रेडियो सुनिये यानी रेडियो रिसीवर आने देकर और इस तरह आयासी यानी इम्पोर्ट बढ़ा कर देश की डालर शक्ति को कम करती जा रही है और साथ ही साथ डालर का रोना भी रोती जा रही है. सरकार अगर आज इस बात की छूट दे दे कि लोग अपने "रेडियो सुनिये" आप तैयार कर सकते हैं तो बहुत जल्दी हिन्द में "रेडियो सुनिये" बनने की बाढ़ सी आ जायगी. स्थानी धुन बिखराव यानी लोकल ब्राडकास्टिंग सुनने के लिए "रेडियो सुनिये" तीस रुपये से पचास रुपये तक में आसानी से तैयार हो सकते हैं. जिन छोटी छोटी चीज़ों से ऐसे सुनिये तैयार होते हैं उनमें से कुछ तो बहुत आसानी से हिन्द में ही तैयार हो सकती हैं. और कुछ ऐसी जगह से मंगाई जा सकती हैं जहाँ डालर का चलन नहीं है. इस ओर ध्यान देने से कुछ ही दिन में यह नतीजा निकलेगा कि गांव गांव रेडियो सुनिये दिखाई देने लगेंगे. और क़सबों और शहरों में तो उनकी भरमार हो जायगी. उनके लैसंस की आमदनी इतनी काफ़ी हो सकती है कि जिसकी मदद से "स्थानी भेजिये पड़ाव" यानी लोकल ट्रांसीमिटिंग स्टेशन बहुत ज्यादा ताक़तवर बनाये जा सकते हैं.

نقصان سے هی هم نهیں بچ جاتے ' کچھ فائدہ بهي اُٹها لیتے هیں' ٹهیک اُسي طرح سے دهن بکهراؤ کی باڑھ سے هونے والے پیسے کے نقصان کو بهت کچھ بچایا جا سکتا هے. اتنا هی نهیں اُس سے بهت کچھ کمایا بهی جا سکتا هے. هماری سرکار پیسے کی کمي کي وجه سے ایک اور دهن بکهراؤ پڑاؤں یعنی براڈ کاسٹنگ اسٹیشنوں کا خرچ کم کرتی جارهی هے اور دوسری طرف امریکه سے ریڈیو سنئے یعنی ریڈیو رسیور آنے دیکر اور اِس طرح آیا سي یعني امپورٹ بڑھاکر دیش کی ڈالر شکتی کو کم کرتی جا رهي هے اور ساتھ هی ساتھ ڈالر کا رونا بهي روتی جا رهی هے. سرکار اگر آج اس بات کی چھوٹ دیدے که لوگ اپنے "ریڈیو سنئے" آپ تیار کر سکتے هیں تو بهت جلدي هند میں "ریڈیو سنئے" بننے کی باڑھ سی آجائے گی. استهانی دهن بکهراؤ یعنی لوکل براڈ کاسٹنگ سننے کے لئے "ریڈیو سنئے" تیس روپیه سے پچاس روپیه تک میں آساني سے تیار هو سکتے هیں. جن چهوٹی چهوٹی چیزوں سے ایسے سنئے تیار هوتے هیں اُن میں سے کچھ تو بهت آسانی سے هند میں هي تیار هو سکتی هیں اور کچھ ایسي جگه سے منگائی جاسکتی هیں جهاں ڈالر کا چلن نهیں هے. اِس اور دهیان دینے سے کچھ هی دن میں یه نتیجه نکلے گا که گاؤں گاؤں میں ریڈیو سنئے دکھائی دینے لگیں گے اور قصبوں اور شهروں میں تو اُن کی بهرمار هوجائے گی. اُن کے لیسنس کی آمدني اِتني کافی هو سکتی هے که جس کی مدد سے "استهاني بهیجئے پڑاؤ" یعنی لوکل ٹرانسمیٹنگ اسٹیشن بهت زیادہ طاقتور بنائے جا سکتے هیں.

ऐसा करने से देश-वासियों और देश की काम करने की शक्ति बढ़ने के साथ साथ बहुत सा रुपया विदेश जाने से बच जायगा, और यही है बाढ़ से पहले नहर बना रखने की बात . और यही हो सकता है धुन बिखराव की तरक़्क़ी का भेद. —भगवानदीन

सुनते सुनते कान पक गये .

आये दिन कहीं न कहीं से गोली चलने की ख़बर आही जाती है. यह ठीक है कि आज़ाद होने से नहीं, आज़ाद होने की बात सुनने के दिन से न जाने किस देवता ने हिन्दुस्तानी रैयत के हाथ में बन्दूक़ें थमा दीं और जेबों में कारतूस भर दिये थे और वही अपनों पर गोलियां दाग़ने लगे और उन्हीं की गोलियों की आवाज़ बहुत दिनों तक आती रही पर अब कुछ दिनों से तो सरकारी सिपाहियों की गोली की आवाज़ की ख़बरों से अख़बारों के कालम रंगे रहते हैं और अहिंसात्मक जम्हूरियत की नींव जिस दिन से तोपों की सलामी के साथ रखी गई उस दिन से तो गोली की आवाज़ घटने के बजाय कुछ बढ़ ही है . यह लिख कर हम सरकार को यह सलाह देने की बात नहीं सोच रहे हैं कि सरकार गोलियां चलाना छोड़ दे . हम तो उलटी यह सलाह देने को तैयार हैं कि वह दस गोली की जगह बीस गोली चलाये मगर बीस गोली तभी चलाये जब वह अपने मुक़ाबले में आने वाले की सौ गोलियां ख़राब करा ले . यही है अच्छे लड़ने वालों का असूल. निहत्थों पर गोली चलाना, फिर वह तादाद में कितने ही ज़्यादा क्यों न हों, न दूरन्देशी है, न बुद्धिमानी, न बहादुरी. पैसे की बचत तो उसमें हरगिज़ है ही नहीं . उस

ایسا کرنے سے دیش واسیوں اور دیش کی کام کرنے کی شکتی بڑھنے کے ساتھ ساتھ بہت سا روپیہ ودیش جانے سے بچ جائیگا . اور یہی ہے باڑھ سے پہلے نہر بنا رکھنے کی بات . اور یہی ہو سکتا ہے دھن بکھراؤ کی ترقی کا بھید .

— بھگوان دین

سنتے سنتے کان پک گئے .

آئے دن کہیں نہ کہیں سے گولی چلنے کی خبر آ ہی جاتی ہے. یہ ٹھیک ہے کہ آزاد ہونے سے نہیں ' آزاد ہونے کی بات سننے کے دن سے نہ جانے کس دیوتا نے هندستانی رعیت کے ہاتھ میں بندوقیں تھما دیں اور جیبوں میں کارتوس بھر دئے تھے اور وہی اپنوں پر گولیاں داغنے لگے اور اُنہیں کی گولیوں کی آواز بہت دنوں تک آتی رہی پر اب کچھ دنوں سے تو سرکاری سپاہیوں کی گولی کی آواز کی خبروں سے اخباروں کے کالم رنگے رہتے ہیں اور اہنساتمک جمہوریت کی نیو جس دن سے توپوں کی سلامی کے ساتھ رکھی گئی اُس دن سے تو گولی کی آواز گھٹنے کے بجائے کچھ بڑھی ہی ہے . یہ لکھ کر ہم سرکار کو یہ صلاح دینے کی بات نہیں سوچ رہے ہیں کہ سرکار گولیاں چلانا چھوڑ دے . ہم تو اُلٹی یہ صلاح دینے کو تیار ہیں کہ وہ دس گولی کی جگہ بیس گولی چلائے مگر بیس گولی تبھی چلائے جب وہ اپنے مقابلے میں آنے والے کی سو گولیاں خراب کرالے . یہی ہے اچھے لڑنے والوں کا اُصول . نہتوں پر گولی چلانا پھر وہ تعداد میں کتنے ہی زیادہ کیوں نہوں' نہ دور اندیشی ہے' نہ بدھی مانی' نہ بہادری . پیسے کی بچت تو اُس میں ہرگز ہے ہی نہیں . اُس

लिहाज़ से तो वह उतनी ही हंसी की बात है जैसे कोई पैसे बचाने की ग़रज़ से मोटर में बैठ कर चार पैसे का पालक का साग ख़रीदने बड़ी मंडी जाय, या वक़्त बचाने के लिए हवाई जहाज़ से दिल्ली से शहादरा जाने की सोचे .

हम तो अब तक यही सुनते आये हैं कि एक एक लाठी फिकैत सौ सौ लाठी वालों का अकेला मुक़ाबला कर लिया करता था . हां, सौ सौ का नहीं तो दस दस का हमने भी मुक़ाबला करते देखा है . फिर समझ में नही आता कि इन पुलिस और जेल के सिपाहियों का आये दिन क्यों गोलियाॅ चलाने की ज़रूरत पड़ जाती है . सन् ३२ में हमारी इन्हीं आंखों ने, जिनका मदद से हम यह नोट लिख रहे हैं, अमरावती जेल में सौ क़ैदियों को पांच पांच वार्डरों को सिर्फ़ बैटून (छोटा सा डंडा) के ज़रिये क़ाबू में करते देखा था . हमें पता नहीं, आजकल किस चीज़ के बने हुए पुलिस और जेल के सिपाही नौकर रखे जाते हैं जो बग़ैर गोली चलाये कुछ कर ही नहीं सकते . कहीं नया नाइ बांस का नहन्ना' वाली बात तो नहीं है ?

यह मामूली बात नहीं है . इसे सूबे की सरकारों के साथ साथ बड़ी सरकार को भी सोचने की ज़रूरत है.—भगवान दीन

भूल सुधार

फ़रवरी के नया हिन्द में 'हमारी राय' के नोट 'हिन्दू महासभा और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ' के नीचे भाई किशोरी लाल मशरू वाला का नाम और हरिजन केवक का हवाला छपने से रह गया था

لحاظ سے تو وہ اتنی ھی ھنسي كي بات ھے جیسے کوئی پیسے بچانے کي غرض سے موٹر میں بیٹھ کر چار پیسے کا پالک کا ساگ خریدنے بڑي منڈی جائے ' یا وقت بچانے کے لئے ھوائی جہاز سے دلی سے شاھدرا جانے کی سوچے ۔

ھم تو اب تک یہی سنتے آئے ھیں کہ ایک ایک لاٹھی پھینکیت سو سو لاٹھي والوں کا اکیلا مقابلہ کر لیا کرتا تھا . ھاں ' سو سو کا نہیں تو دس دس کا ھم نے بھي مقابلہ کرتے دیکھا ھے . پھر سمجھ میں نہیں آتا کہ اِن پولیس اور جیل کے سپاھیوں کو آئے دن کیوں گولیاں چلانے کی ضرورت پڑ جاتي ھے . سن ٣٢ میں ھماري اِنھیں آنکھوں نے جنکی مدد سے ھم یہ نوٹ لکھ رھے ھیں ' امراؤتی جیل میں سو قیدیوں کو پانچ پانچ وارڈروں کو صرف بیٹون (چھوٹا سا ڈنڈا) کے ذریعے قابو میں کرتے دیکھا تھا . ھمیں پتہ نہیں ' آج کل کس چیز کے بنے ھوئے پولیس اور جیل کے سپاھی نوکر رکھے جاتے ھیں جو بغیر گولی چلائے کچھ کر ھی نہیں سکتے . کہیں ' نیا نائی بانس کا نہنّا ' والی بات تو نہیں ھے ؟

یہ معمولی بات نہیں ھے . اِسے صوبے کی سرکاروں کے ساتھ ساتھ بڑي سرکار کو بھي سوچنے کي ضرورت ھے .—بھگوان دین

بھول سدھار

فروري کے 'نیا ھند' میں 'ھماري رائے' کے نوٹ 'ھندو مہا سبھا اور راشٹریہ سویم سیوک سنگھ' کے نیچے بھائي کشوري لال ... گیا تھا

नया हिन्द के इस अंक में हम उर्दू के मशहूर शायर और लेखक भाई रघुपति सहाय 'फ़िराक़' की नई कविता 'धरती की करवट' आपको भेंट कर रहे हैं. 'फ़िराक़' साहब शायरी की दुनिया में ही नहीं अदब की दुनिया में भी अपनी ख़ास जगह रखते हैं. ज़बान पर उन्हें कितना अधिकार है, अपने विचारों को वह कितने ज़ोरदार तरीक़े से, कितनी सफ़ाई और ख़ूबी के साथ, कितने लोच और बाँक पन के साथ, चलते-फिरते, हल्के-फुल्के शब्दों में कह जाते हैं. कैसी चोट कर जाते हैं, किसतरह तड़पा देते हैं और किसतरह बेसाख़्ता वाह वाह करने पर मजबूर कर देते हैं इसका अन्दाज़ा उनकी अकेली इसी कविता को। पढ़ कर लगाया जा सकता है.

'फ़िराक़' साहब शायर और अदीब ही नहीं, ऊंचे दरजे के और सुलझे हुए विचारक भी हैं. हिन्दुस्तानी के बारे में उनके विचार 'नया हिन्द' के पढ़ने वालों को मालूम हैं. 'धरती की करवट' में उन्हों ने नई आज़ादी, नई ज़िन्दगी और नई जंग की जो तस्वीर हमारे सामने रखी है, जिन शब्दों और मुहावरों और टुकड़ों में रखी है वह सबूत है उस नई करवट का जो फ़िराक़ साहब की शायरी में आरही है. यह करवट हर मानी में अच्छी, ज़रूरी और बहुत ज़रूरी है. समाजी हालतों ने अदब की दुनिया पर भी एक काली चादर डालदी है. उस काली चादर के नीचे दबी हुई जनता आशा और

' نیا ھند ' کے اس انک میں ھم اُردو کے مشھور شاعر اَور لیکھک بھائي رگھوپتی سہائے ' فراق ' کی نئی کویتا و دھرتی کی کروٹ ' آپ کو بھینٹ کر رھے ھیں . فراق صاحب شاعري کی دنیا میں ھی نہیں ادب کي دنیا میں بھی اپنی خاص جگہ رکھتے ھیں . زبان پر اُنھیں کتنا ادھیکار ھے ' اپنے وچاروں کو وہ کتنے زور دار طریقے سے ' کتنی صفائی اَور خوبی کے ساتھ ' کتنے لوچ اَور بانکپن کے ساتھ چلتے پھرتے ' ھلکے پھلکے شبدوں میں کہہ جاتے ھیں ' کیسی چوٹ کر جاتے ھیں ' کس طرح پڑھنے والوں کو تڑپا دیتے ھیں اَور کس طرح بےساختہ واہ واہ کرنے پر مجبور کردیتے ھیں ' اسکا اندازہ اُن کی اکیلي اسی کویتا کو پڑھکر لگایا جاسکتا ھے.

' فراق ' صاحب شاعر اَور ادیب ھی نہیں ' اونچے درجے کے اور سلجھے ھوئے وچارک بھی ھیں . ھندستانی کے بارے میں اُن کے وچار ' نیا ھند ' کے پڑھنے والوں کو معلوم ھیں . ' دھرتی کی کروٹ ' میں اُنھوں نے نئی آزادی ' نئی زندگی اَور نئی جنگ کی جو تصویر ھمارے سامنے رکھی ھے اَور جس طرح رکھی ھے ' جن شبدوں ' محاوروں اَور ٹکڑوں میں رکھی ھے وہ ثبوت ھے اُس نئی کروٹ کا جو فراق صاحب کی شاعری میں آرھی ھے . یہ کروٹ ھر معنی میں اچھی ' ضروری اَور بہت ضروری ھے . سماجي حالتوں نے ادب کي دنیا پر بھی ایک کالی چادر ڈال دی ھے . اُس کالی چادر کے نیچے دبی ھوئي جنتا آشا اَور

ज़िन्दगी की सुनहरी किरनें देखने के लिये बेताब है. आज का शायर और कलाकार जनता की इस मांग को ठुकरा कर ख़ुद अपनी अदबी मौत को अपने नज़दीक बुलाता है. 'धरती की करवट' सरमायादारी निज़ाम और अन्याय के भरोसे राज करने वाले तबक़ों के लिये ही चुनौती नहीं है बल्कि वह उन अदीबों, शायरों और कलाकारों को भी ललकारती है जो भाषा और कला की रत्ता के नाम पर दिन पर दिन जनता से दूर होते जा रहे हैं.

बच्चों की दुनिया

'नया हिन्द' के अगले नम्बर से हम 'बच्चों की दुनिया' नाम का नया कालम खोल रहे हैं. इस कालम में बच्चों को ख़ुश करने वाले, उन्हें देश विदेश के बच्चों से मिलाने वाले, उन की जानकारी बढ़ाने वाले, दिलचस्प लेख, कवितायें, नाटक, कहानियाँ, चुटकुले वग़ैरह छपा करेंगे. उर्दू टाइप के कारन अब हम आसानी से तस्वीरें भी छाप सकेंगे, आशा है कि हमारी यह कोशिश बच्चों और बड़ों दोनों मे पसन्द की जायगी

अगले महीने से हम आये हुए ख़त और उन्के जवाब भी बराबर छापने की कोशिश करेंगे. हम चाहते हैं कि 'नया हिन्द' के पढ़ने वाले हमें अपनी राय लिखें कि 'नया हिन्द' में और क्या क्या सुधार किये जायें. हम हर मुनासिब सुझाव का स्वागत करें गे.

'हुनर' वास्ते एडीटर

زندگی کی سنہری کرنیں دیکھنے کے لئے بیتاب ھے. آج کا شاعر اور کلاکار جنتا کی اس مانگ کو ٹھکرا کر خود اپنی ادبی موت کو اپنے نزدیک بلاتا ھے. 'دھرتی کی کروٹ' سرمایہ داری نظام اور انیاے کے بھروسے راج کرنے والے طبقوں کے لئے ھی چنوتی نہیں ھے بلکہ وہ اُن ادیبوں ' شاعروں اور کلاکاروں کو بھی للکارتی ھے جو بھاشا اور کلا کی رکشا کے نام پر دن پر دن جنتا سے دور ھوتے جا رھے ھیں ۔

بچوں کی دنیا

' نیا ھند ' کے اگلے نمبر سے ھم ' بچوں کی دنیا ' کے نام کا نیا کالم کھول رھے ھیں ۔ اس کالم میں بچوں کو خوش کرنے والے ' انھیں دیس بدیش کے بچوں سے ملانے والے ' اُن کی جان کاری بڑھانے والے ' دلچسپ لیکھ ' کویتائیں ' ناٹک ' کہانیاں ' چٹکلے وغیرہ چھپا کریں گے ۔ اُردو ٹائپ کے کارن اب ھم آسانی سے تصویریں بھی چھاپ سکیں گے ۔ آشا ھے کہ ھماری یہ کوشش بچوں اور بڑوں دونوں میں پسند کی جائیگی ۔

اگلے مہینے سے ھم آئے ھوئے خط اور اُن کے جواب بھی برابر چھاپنے کی کوشش کریں گے ۔ ھم چاھتے ھیں کہ ' نیا ھند ' کے پڑھنے والے ھمیں اپنی رائے لکھیں کہ ' نیا ھند ' میں اور کیا کیا سدھار کئے جائیں ۔ ھم ھر مناسب سمجھاؤ کا سواگت کریں گے ۔

' ھنر ' واسطے اڈیٹر

(१) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(२) एकता फैलाने के लिये किताबों, अखबारों, रिसालों वग़ैरह का छापना.

(३) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस में मेल बढ़ाना.

—०—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा, वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़; गवर्निंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; सेक्रेटरी पं० सुन्दरलाल; —

गवर्निंग बाडी के और मेम्बर

डा० सय्यद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सय्यद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० खेर, मि० एस० के० रुद्रा, पं० विशम्भर नाथ, महात्मा भगवान दीन, सेठ पूनम चन्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम प्रकाश पालीवाल.

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिए.

सुन्दर लाल

सेक्रेटरी हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी
४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद

नोट—सोसाइटी के नये क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" के जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायगा. अलग से मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ज़्यादा दाम की किताबें लेने पर एक रुपया कम [illegible] सकेंगे.

(۱) ایک ایسی هندوستانی کلچر کا بڑھانا، پھیلانا اور
چار کرنا جس میں سب هندستانی شامل هوں -

(۲) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں
رہ کا چھاپنا -

(۳) پڑھائی گھروں، کتب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں،
روں سے سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں
آپس کا میل بڑھانا -

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ— مسٹر عبد المجید خواجہ، وائس
سیڈنٹ— ڈاکٹر بھگوان داس- اور ڈاکٹر عبدالحق گور-
باڈی کے پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس، سکریٹری
ڈت سندلال،

گورننگ باڈی کے اور ممبر —

ڈاکٹر سید محمود، ڈاکٹر تارا چند- مولی سید سلیمان
ی، مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی- جی- کھیر، مسٹر
- کے- رودرا، پنڈت بشمبھر ناتھ، مہاتما بھگوان دین، سیٹھ
م چند رانکا، قاضی محمد عبدالغفار اور شري اوم پرکاش
وال،

ممبري کے قاعدے کے لئے لکھئے -

سندر لال

سکریٹری هندستانی کلچر سوسائٹی،
۴۸ بائی کا باغ، الہآباد

نوٹ—سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس
ف ایک روپیہ کردی گئی ہے - "نیا هند" کے جو گاهک
ر بننا چاهیں اُن کو صرف چھه روپیه چنده دینے پر هی
نا لیا جائیگا- الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی
ہوئی کوئی کتاب جو ایک روپیه دام کی ہوگی مفت لے

…गीता और .कुरान''

…खक—पंडित सुन्दरलाल

… के शुरू में दुनिया के सब बड़े बड़े धर्मों की एकता … ाया गया है और सब धर्मों की किताबों से हवाले दे देकर मिलती जुलती बुनियादी सचाइयों का बयान किया गया है।

उसके बाद गीता के लिखे जाने के वक्त की इस देश की हालत, गीता के बड़प्पन और एक एक अध्याय को लेकर गीता की तालीम को बतलाया गया है.

आखिर में .कुरान से पहले की अरब की हालत, .कुरान के बड़प्पन और एक एक बात पर .कुरान की तालीम का बयान किया गया है. इस में .कुरान की पांच सौ से ऊपर आयतों का लफ़्ज़ी तरजुमा दिया गया है. यह भी बताया गया है कि .कुरान में जेहाद, आक़बत, आखिरत, जन्नत, जहन्नम, काफ़िर वग़ैरा किसे कहा गया है.

जो लोग सब धर्मों की एकता को समझना चाहें या हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों की इन दो अमर पुस्तकों की सच्ची जानकारी हासिल करना चाहें उन्हें इस किताब को ज़रूर पढ़ना चाहिये.

किताब आसान हिन्दुस्तानी ज़बान में, नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में अलग अलग मिल सकती है. पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपये, डाक खर्च अलग.

मैनेजर “नया हिन्द”
४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद

"گیتا اور قرآن"

لیکھک پنڈت سندر لال

اس کتاب کے شروع میں دنیا کے سب بڑے بڑے دھرموں کی ایکتا کو دکھایا گیا ہے اور سب دھرموں کی کتابوں سے حوالے دے دے کر ملتی جلتی بنیادی سچائیوں کو بیان کیا گیا ہے۔ اسکے بعد گیتا کے لکھے جانے کے وقت کی اس دیس کی حالت، گیتا کے بڑپن اور ایک ایک ادھیائے کو لیکر گیتا کی تعلیم کو بتلایا گیا ہے۔

آخر میں قرآن سے پہلے عرب کی حالت، قرآن کے بڑپن اور ایک ایک بات پر قرآن کی تعلیم کو بیان کیا گیا ہے۔ اسمیں قرآن کی پانچ سو سے اوپر آیتوں کا لفظی ترجمہ دیا گیا ہے یہ بھی بتایا گیا ہے کہ قرآن میں جہاد، عاقبت، آخرت، جنت، جہنم، کافر وغیرہ کسے کہا گیا ہے

جو لوگ سب دھرموں کی ایکتا کو سمجھنا چاہیں یا ہندو دھرم اور اسلام دونوں کی ان دو امر پستکوں کی سچی جانکاری حاصل کرنا چاہیں انہیں اس کتاب کو ضرور پڑھنا چاہئے

کتاب ہندستانی زبان میں ناگری اور اردو دونوں لکھاوٹوں میں الگ الگ مل سکتی ہے۔ پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ - ڈاک خرچ الگ -

منیجر 'نیا ہند'
۴۸ - بائی کا باغ، الہ آباد

Bishambhar Nath, Vishwavani Press, South Malaka, Allahabad.

नया हिन्द نیا ہند



एडीटर—

तारा चन्द, भगवानदीन, मुज़फ़्फ़र हसन, विश्वम्भरनाथ, सुन्दरलाल

अप्रैल १९५०

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल
एक परचा दस आने .

४८, बाई का बाग, इलाहाबाद .

मनीजर
'नया हिन्द'

ایڈیٹر—

تارا چند، بھگوان دین، مظفر حسن، بشمبھر ناتھ، سندر لال

اپریل ۱۹۵۰

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال- باہر دس روپیہ سال
ایک پرچہ دس آنے

مینیجر
'نیا ہند'

۴۸ بائی کا باغ، الہ آباد -

नया हिन्द — نیا ہند

जल्द ८ | अप्रैल '५० | नम्बर ४

نمبر ۴ | اپریل ۵۰ | جلد ۸

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली.
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिए प्रेम की झोली.

جات آدمی ' پریم دھرم ہے ' ہندستانی بولی '
' نیا ہند ' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی

हिन्दुस्तान

(भाई नज्म आफन्दी)

फूलों का देश है एक दक्खिन में एशिया के
घायल जो आज कल है कांटों से घाव खा के
देहलीज जिसकी देहली नगरी बड़ी पुरानी
परजा का सुख सहारा, राजा की राजधानी
हर सूरमा ने जिसकी चौखट पे बाज रक्खा
मुग़लों ने जिसके सर पर अनमोल ताज रक्खा

ہندستان

(بھائی نجم آفندی)

پھولوں کا دیس ہے ایک دکھن میں ایشیا کے
گھائل جو آجکل ہے کانٹوں سے گھاؤ کھا کے
دہلیز جسکی دہلی نگری بڑی پرانی
پرجا کا سکھ سہارا راجا کی راجدھانی
ہر سورما نے جسکی چوکھٹ پہ باج رکھا
مغلوں نے جسکے سر پر انمول تاج رکھا

अमावस की काली रात खाने के लिए दौड़ी आरहा था !

संसार का कुछ खोया-खोया सा लग रहा था. हिन्दुस्तान का सब कुछ लुटा-लुटा सा मालूम पड़ रहा था.

मैंने सोचा, क्या सच मुच बापू की हत्या हुई ? क्या सच मुच बापू मार दिये गये ? क्या सच-मुच मानवता की हत्या हुई ? क्या सच-मुच सत्य की हत्या, अहिंसा की हत्या, एकता की हत्या, हिन्दुस्तान की हत्या और आजादी की हत्या हुई ? और जिसने हमें आजादी दिलाई, जिसने हमें एकता का पाठ पढ़ाया, जिसने हमें सत्य और अहिंसा का रास्ता दिखाया, उसकी हत्या हुई. निपूती नारियों, विधवा ललनाओं, ग़रीब हड्डी के ढांचों, लुटी लाज वाली बहनों, भूखे नंगे मासूम बच्चों के बाप की हत्या हुई ? भारत माता के लाडले लाल की हत्या हुई ?

वह आजादी जो अभी १५ अगस्त को मिली है, वह टिमटिमाता दीपक जो अभी-अभी जला था बुझ गया ! उसे एक क्रूर हत्यारे ने बुझाया. वह बुझ गया लेकिन उस दीपक की लौ की ज्योति हम लोगों के हृदय के अन्दर और आंखों में वैसे ही जगमगा रही है. वह दीप अमर है वह ज्योति अमर है. उसे कौन बुझा सकता है ?

कभी-कभी उस उदास खामोशी को भंग करने वाली मोटरों से आवाजें आतीं—हिन्दुस्तान को एक बहुत बड़े संकट का सामना करना होगा. कभी सायकिलों से आवाज आती—हिन्दुस्तान पर बहुत बड़ी आफ़त आने वाली है. किसी के मुँह से हाय निकलती, कोई कहता हम लोग अनाथ हो गये.

लाइट जला कर जब हम लोग बैठे-तो मालूम हो रहा था कि जलते हुये बल्ब को अंधकार का पर्दा चारों ओर से घेर रहा है

سنسار کا کچھ کھویا کھویا سا لگ رہا تھا . ہندستان کا سب کچھ لٹا لٹا سا معلوم پڑ رہا تھا .

میں نے سوچا کیا سچ مچ باپو کی ھتیا ہوئی ؟ کیا سچ مچ باپو مار دئے گئے ؟ کیا سچ مچ مانوتا کی ھتیا ہوئی ؟ کیا سچ مچ ستیہ کی ھتیا ' اہنسا کی ھتیا ' ایکتا کی ھتیا ' ہندستان کی ھتیا اور آزادي کی ھتیا ہوئی ؟ اور جس نے ہمیں آزادي دلائی ' جس نے ہمیں ایکتا کا پاٹھ پڑھایا ' جس نے ہمیں ستیہ اور اہنسا کا راستہ دکھایا ' اُسکی ھتیا ہوئی . نپوتی ناریوں ' ودھوا للناؤں ' غریب ہڈي کے ڈھانچوں ' لٹی لاج والی بہنوں ' بھوکے ننگے معصوم بچوں کے باپ کی ھتیا ہوئی ؟ بھارت ماتا کے لاڈلے لال کی ھتیا ہوئی ؟

وہ آزادي جو ابھی ۱۵ اگست کو ملی ہے ' وہ ٹمٹماتا دیپک جو ابھی ابھی جلا تھا بجھ گیا ! اُسے ایک کرور ھتھارے نے بجھایا . وہ بجھ گیا لیکن اس دیپک کی لو کی جیوتي ہم لوگوں کے ہردے کے اندر اور آنکھوں میں ویسے ہی جگمگا رہی ہے . وہ دیپ امر ہے وہ جیوتی امر ہے . اسے کون بجھا سکتا ہے ؟

کبھی کبھی اس اُداس خاموشی کو بھنگ کرنے والی موٹروں سے آوازیں آتیں - ہندستان کو ایک بہت بڑے سنکٹ کا سامنا کرنا ہوگا . کبھی سائکلوں سے آواز آتی . ہندوستان پر بہت بڑي آفت آنے والي ہے . کسي کے منھہ سے ہائے نکلتي ' کوئي کہتا ہم لوگ اناتھ ہو گئے .

لائٹ جلا کر جب ہم لوگ بیٹھے تو معلوم ہو رہا تھا کہ جلتے ہوئے بلب کو اندھکار کا پردہ چاروں اُور سے گھیر رہا ہے

चलता रहा है जिसका बेरोक टोक चक्कर
है आज उस वतन का झंडा अशोक चक्कर

गंगा है जिसमें बहती. रावी है. ताप्ती है
मीठे सुरों में जिसकी धरती अलापती है

चरनों में सर झुकाये ऊँचा हिमालिया है
आकाश का भी दामन जिसने दबा लिया है

पंजाब के नशीले पानी मे मस्तियाँ हैं
सरहद की घाटियों में शेरों की बस्तियाँ हैं

यू. पी. प्रेम रूपी आँखें लड़ाने वाला
बंगाल जिन्दगी का जादू जगाने वाला

सीने में जैसे दिल हो यों बीच बीच सी. पी.
चुप चाप देखता है सब ऊँच नीच सी. पी.

गुजरात की वह सज धज और वह दखिन की शोभा
आँखों में खुबने वाली तन मन की धन की शोभा

मथुरा वह गोपिनों की प्रेमी हैं जिसके बस में
डूबी हुई है अब तक बंसी के रंग रस में

जमना के तीर धरती अकबर के राज वाली
वह आगरा की बस्ती दुनिया में ताज वाली

उस देस की न पूछो जिस देस में अवध हो
माथे पे जैसे टीका नैनों में जैसे मध हो

چلتا رہا ہے جس کا بے روک توک چکر
ہے آج اُس وطن کا جھنڈا آشوک چکر

گنگا ہے جس میں بہتی، راوی ہے، تاپتی ہے
میٹھے سروں میں جسکی دھرتی آلاپتی ہے

چرنوں میں سر جھکائے اونچا ہمالیا ہے
آکاش کا بھی جس نے دامن دبا لیا ہے

پنجاب کے نشیلے پانی میں مستیاں ہیں
سرحد کی گھاٹیوں میں شیروں کی بستیاں ہیں

یو۔ پی پریم روپی آنکھیں لڑانے والا
بنگال زندگی کا جادو جگانے والا

سینے میں جیسے دل ہو یوں بیچ بیچ سی پی
چپ چاپ دیکھتا ہے سب اونچ نیچ سی پی

گجرات کی وہ سج دھج اور وہ دکھن کی شوبھا
آنکھوں میں کھچنے والی تن من کی دھن کی شوبھا

متھرا وہ گوپیوں کی پریمی ہیں جسکے بس میں
ڈوبی ہوئی ہے اب تک بنسی کے رنگ رس میں

جمنا کے تیر دھرتی اکبر کے راج والی
وہ آگرہ کی بستی دنیا میں تاج والی

اُس دیس کی نہ پوچھو جس دیس میں اودھ ہو
ماتھے پہ جیسے ٹیکا نینوں میں جیسے مدھ ہو

[redacted]

उस देस की कहानी क्यों होगी रूखी फीकी
वह देस जिसमें नहरें बहती थीं दूध घी की
हलचल जहाँ मचा दे कोयल की कूक दिल में
बरखा जहाँ बढ़ादे चाहत की भूक दिल में
बाग़ों में डाली डाली डोले जहाँ पपीहा
बिरहन का रूप भर कर बोले जहाँ पपीहा
वहदत की लय बढ़ायें तुलसी कबीर जिसमें
नानक जहाँ बिराजे, पैदा हों सूर जिस में
सरहिन्द को बसाये नासिर अली सा शायर
बाबाय शायरी हो जिसका वली सा शायर
ख़ुसरो जहाँ जनम ले जिस में नज़ीर भी हो
जिसका रहीम जैसा शायर महा कवि हो
चकबस्त शायरी में उर्दू का ले सहारा
एक़बाल की हो बानी हिन्दोस्ताँ हमारा
मन के भजन सुनावे मीरा के पीत जिस में
झूला झुला रहे हों रूपा के गीत जिस में
वह रानियाँ कि जिनकी मर्दों में है कहानी
दक्खिन की चाँद बीबी झाँसी की राज रानी
सुख जिस में पत्ते पत्ते आराम डाली डाली
हर दिन हो ईद जिसका हर रात हो दिवाली
हिन्दू जहाँ हजारों ईदें मना चुके हैं
मुस्लिम सपूत जिसके राखी बँधा चुके हैं

اُس دیس کی کہانی کیوں ہوئی روکھی پھیکی
وہ دیس جس میں نہریں بہتی تھیں دودھ گھی کی
ہلچل جہاں مچادے کوئل کی کوک دل میں
برکھا جہاں بڑھا دے چاہت کی بھوک دل میں
باغوں میں ڈالی ڈالی ڈولے جہاں پپیہا
برہن کا روپ بھر کر بولے جہاں پپیہا
وحدت کی لے بڑھائیں تلسی کبیر جس میں
نانک جہاں براجے پیدا ہوں سور جس میں
سر ہند کو بسائے ناصر علی سا شاعر
بابائے شاعری ہو جس کا ولی سا شاعر
خسرو جہاں جنم لے جس میں نظیر بھی ہو
جس کا رحیم جیسا شاعر مہا کوی ہو
چکبست شاعری میں اُردو کا لے سہارا
اقبال کی ہو بانی ہندوستاں ہمارا
من کے بھجن سناوے میرا کے پیت جس میں
جھولا جھلا رہے ہوں روپا کے گیت جس میں
وہ رانیاں کہ جنکی مردوں میں ہے کہانی
دکھن کی چاند بی بی جھانسی کی راج رانی
سکھ جس میں پتے پتے آرام ڈالی ڈالی
ہر دن ہو عید جس کا ہر رات ہو دوالی
ہندو جہاں ہزاروں عیدیں منا چکے ہیں

दोनों ने एक माँ की गोदी में आँख खोली
मिल जुल के जिसमें बरसों खेली है सबने होली
वह जिसने आर्यों को बेटा बना के रक्खा
तुर्क आ बसे तो उनको अपना बना के रक्खा
परनाम करके जिसने चिश्ती को ला बसाया
प्रजा ने पाँव पूजे राजा ने सर झुकाया
अकबर ने जिस जमीं में चाहत के बीज बोये
वह राज जिसके होते सब सुख की नींद सोये
हर बस्ती दोस्ती की शाहिद* बनी हुई है
झुमट में मन्दिरों के मसजिद बनी हुई है
गौतम जहाँ अहिन्सा की धुन सुना चुका हो
बन्दानवाज जिस में दर्शन दिखा चुका हो
वह देश करबला के स्वामी का जो भगत हो
जिसको हुसैन चाहें‡ जिसमें हुसैनियत हो

---

* शाहिद = गवाह.

دونوں نے ایک ماں کی گودی میں آنکھ کھولی
مل جل کے جس میں برسوں کھیلی ھے سب نے ھولی
وہ جس نے آریوں کو بیٹا بنا کے رکھا
ترک آ بسے تو اُن کو اپنا بنا کے رکھا
پرنام کرکے جس نے چشتی کو لا بسایا
پرجا نے پاؤں پوجے راجا نے سر جھکایا
اکبر نے جس زمیں میں چاھت کے بیج بوئے
وہ راج جس کے ھوتے سب سکھ کی نیند سوئے
ھر بستی دوستی کی شاھد* بنی ھوئی ھے
جھرمٹ میں مندروں کے مسجد بنی ھوئی ھے
گوتم جہاں اھنسا کی دھن سنا چکا ھو
بندہ نواز جس میں درشن دکھا چکا ھو
وہ دیش کربلا کے سوامی کا جو بھکت ھو
جسکو حسین چاھیں‡ جس میں حسینیت ھو

---

* شاھد = گواہ

विष के बीज

अंगरेज़ का रोना रोना हम बहुत बुरा समझते हैं. और जहाँ तक बन पड़ता है 'नया हिन्द' को इससे पाक रखते हैं. पर जब तक लाचारगी से, बेबसी से, नादूरन्देशी से या कुछ हिन्दुस्तानियों की करतूतों से हिन्दुस्तान ब्रिटिश न सही किसी बेतुकी कामन वेल्थ का हिस्सा बना हुआ है तब तक हम भी कभी कभी अंगरेज़ों का रोना न रोने के अहद से भटक जायँ तो हमारे पढ़ने वाले हमें माफ़ करें.

अंगरेज़ बिल्ली की तरह से दूध खिड़ा कर ही नहीं गया, दुटप्पिये की हैसियत से फूट और बैर के बीज बोकर ही नहीं गया वह तो पूर्बी बंगाल और पच्छिमी बंगाल में. और पच्छिमी पंजाब और पूर्बी पंजाब में ज्वाला मुखियों की गहरी जड़ जमा कर गया है. यह कब भड़क कर लावा उगलने लगे इस का क्या भरोसा? यह ज्वालामुखी किसी तरह जड़ से नापैद किये जा सकते हैं या नहीं, या हमेशा के लिए मुरदा बनाये जा सकते हैं या नहीं, यह ऐसे सवाल नहीं हैं जिनके जवाब ही नहों. 'जहाँ चाह है वहाँ राह होती है' यह कहावत सोलहो आना सच है. इसकी सच्चाई का सबसे बड़ा सुबूत यह है कि इस से उलटी कहावत यानी 'जहाँ चाह है वहाँ राह नहीं' इतनी झूट है कि अपढ़ से अपढ़ भी उसे झूट कहते हुए

وش کے بیج

انگریز کا رونا رونا ہم بہت برا سمجھتے ہیں ، اور جہاں تک بن پڑتا ہے ' نیا ہند ' کو اس سے پاک رکھتے ہیں . پر جب تک لاچارگی سے ' بے بسی سے ' نا دور اندیشی سے یا کچھ ہندستانیوں کی کرتوتوں سے ہندستان برٹش نہ سہی کسی بے تکی کامن ویلتھ کا حصہ بنا ہوا ہے تب تک ہم بھی کبھی نبھی انگریزوں کا رونا نہ رونے کے عہد سے بھٹک جائیں تو ہمارے پڑھنے والے ہمیں معاف کریں .

انگریز بلی کی طرح سے دودھ کھڑا کر ہی نہیں گیا ' دو تپیئے کی حیثیت سے پھوٹ اور بیر کے بیج بو کر ہی نہیں گیا وہ تو پوربی بنگال اور پچھمی بنگال میں ' اور پچھمی پنجاب اور پوربی پنجاب میں جوالا مکھیوں کی گہری جڑ جما کر گیا ہے . یہ کب بھڑک کر لاوا اُگلنے لگے اِسکا کیا بھروسہ ؟ یہ جوالا مکھی کسی طرح جڑ سے ناپید کئے جا سکتے ہیں یا نہیں ' یا ہمیشہ کے لئے مردا بنائے جا سکتے ہیں یا نہیں ' یہ ایسے سوال نہیں ہیں جنکے جواب ہی نہ ہوں . ' جہاں چاہ ہے وہاں راہ ہوتی ہے ' یہ کہاوت سولھوں آنا سچ ہے . اسکی سچائی کا سب سے بڑا ثبوت یہ ہے کہ اِس سے اُلٹی کہاوت یعنی ' جہاں چاہ ہے وہاں راہ نہیں ' اتنی جھوٹ ہے کہ اپڑھ سے اپڑھ بھی اُسے جھوٹ کہتے ہوئے ذرا بھی

तरह पाकिस्तानी सरकार को क्या यह चाह नहीं कि यह आग उगलने वाले पहाड़ यानी कोह आतिश फ़िशाँ हमेशा के लिए ठंडे कर दिये जायँ ? अगर है तो कोई राह क्यों नहीं निकलती ? अगर नहीं है तो क्यों नहीं ? किस वजह से नहीं ? और अगर होते हुए भी नहीं का जामा पहने हुए है तो क्यों पहने हुए है ? हिन्दुस्तानी और पाकिस्तानी सरकारे इस ज्वाला मुखी को उखाड़ फेंकना नहीं चाहतीं, यह ऐसी बात है कि किसी समझदार के गले नहीं उतर सकती. इस लिए हर समझदार को यही मानना पड़ता है कि दोनों सरकारें सच्चे जी से इस तरह की भड़क को सख़्त नापसन्द करती है. पर कोई ठीक राह न निकलने की वजह से हर समझदार को यह कहकर तसल्ली करनी पड़ती है कि चाह तो है पर दबी हुई है. यानी नहीं का जामा पहने हुए है.

इस मामले में ज़्यादा गहरे जाने से पहले हम ज़रा ऐसे आदमियो की बात अपने पढ़ने वालों के सामने पहले रख देना चाहते हैं जो तड़प कर. जल भुनकर, तंग आकर वक़्त के लिहाज़ से इतनी बेतुकी सोचते और कह डालते है कि जिसकी वजह से नासमझों मे दुगुनी भड़क पैदा होकर जो नतीजे निकलते है उनका असर उस बेतुकी बात कह डालने वाले पर उलट कर इतनी ज़ोर का होता है कि फिर वह भी जिस ढंग की बेतुकी बात कह रहा था उससे उल्टी बेतुकी हाँकने लगता है.

मिसाल के लिए ऐसे आदमियों को लेलीजिए जो इस समय सच्चे जी से हिन्द के जनराज को फला फूला देखना चाहिते हैं और छत छात [illegible]

طرح پاکستانی سرکار کو کیا یہ چاہ نہیں کہ یہ آگ اُگلنے والے پہاڑ یعنی کوہ آتش فشاں ہمیشہ کے لئے ٹھنڈے کر دئے جائیں ؟ اگر ھے تو کوئی راہ کیوں نہیں نکلتی ؟ اگر نہیں ھے تو کیوں نہیں ؟ کس وجہ سے نہیں ؟ اور اگر ھوتے ھوئے بھی نہیں کا جامہ پہنے ھوئے ھے تو کیوں پہنے ھوئے ھے ؟ ھندستانی اور پاکستانی سرکاریں اِس جوالا مکھی کو اُکھاڑ پھینکنا نہیں چاھتیں' یہ ایسی بات ھے کہ کسی سمجھدار کے گلے نہیں اُتر سکتی . اِس لئے ھر سمجھدار کو یہی ماننا پڑتا ھے کہ دونوں سرکاریں سچے جی سے اِس طرح کی بھڑک کو سخت ناپسند کرتی ھیں پر کوئی ٹھیک راہ نہ نکلنے کی وجہ سے ھر سمجھدار کو یہ کہکر تسلی کرنی پڑتی ھے کہ چاہ تو ھے پر دبی ھوئی ھے . یعنی نہیں کا جامہ پہنے ھوئے ھے .

اِس معاملے میں زیادہ گہرے جانے سے پہلے ھم ذرا ایسے آدمیوں کی بات اپنے پڑھنے والوں کے سامنے پہلے رکھ دینا چاھتے ھیں جو تڑپ کر ' جل بھن کر ' تنگ آکر وقت کے لحاظ سے اتنی بے تکی سوچتے اور کہہ ڈالتے ھیں کہ جسکی وجہ سے نا سمجھوں میں دوگنی بھڑک پیدا ھوکر جو نتیجے نکلتے ھیں اُن کا اثر اُس بے تکی بات کہہ ڈالنے والے پر اُلٹ کر اِتنی زور کا ھوتا ھے کہ پھر وہ بھی جس ڈھنگ کی بے تکی بات کہہ رھا تھا اُس سے اُلٹی بے تکی ھانکنے لگتا ھے .

مثال کے لئے ایسے آدمیوں کو لے لیجئے جو اِس سمے سچے [illegible] کو پھلا پھولا دیکھنا چاھتے ھیں اور

डाह स्वार्थ से इतने साफ है कि उनके दिल के किसी कोने में नाम को भी यह चीजें न मिलेंगी. पर अपने जोश में इतने जल्दबाज बन बैठते हैं कि कह बैठते हैं कि क्यों नहीं पाकिस्तान के सब हिन्दू मुसलमान होकर उस कमबख्त ज्वालामुखी को हमेशा के लिए ठंडा कर देते? और क्यों हिन्द के सब मुसलमान हिन्दू बनकर हिन्द के ज्वालामुखी को जड़ से उखाड़ नहीं फेंकते? इस जोश में वह यह जरा भी नहीं सोचते कि वह यह नुस्खा बता कर दो जन्मनी सिद्धान्त यानी दो नेशन थियुरी की झाड़ी को पानी दे रहे हैं. भलेही वह अपने जोश में एक ग़लत और बहुतसों के मन को न लगती बात कहते जरूर हैं पर मन के इतने साफ है कि उनसे यह हरगिज उम्मीद नहीं की जासकती कि वह दो नेशन थियुरी जैसी कंटीली और विषभरी झाड़ी को पानी देने की सोचेंगे. आखिर वह कौनसा बीज है जो उनके मुँह से ऐसी बात कहलवा देता है? वह बीज है हिन्दुस्तान में मुसलमानों की करोड़ों में गिनती. यह करोड़ों मुसलमान न अरब से जहाज़ों में लदकर आये थे, न फारस की खाड़ी में होकर नावों में बैठ कर हिन्दुस्तान के किनारे लगे थे और न हिमालय की घाटियों में होकर अफ़ग़ानिस्तान से भागते हुए पंजाब में आ धमके थे. यह तो सब के सब न भी सही. पर बहुत के बहुत हिन्दुस्तान के हिन्दू ही हैं जो धीरे धीरे मुसलमान बन गये थे. दिल में छिपी हुई यही बात उन्हें यह कहने के लिए मजबूर कर देती है कि भलेमानसो, जब तुम पांच पांच दस दस मुसलमान बने तो आज

اوچ نیچ اور ڈاہ سوارتھ سے اتنے صاف هیں کہ اُن کے دل کے کسی کونے میں نام کو بھی یہ چیزیں نہ ملیں گی. پر اپنے جوش میں اتنے جلد باز بن بیٹھتے هیں کہ کہہ بیٹھتے هیں کہ کیوں نہیں پاکستان کے سب هندو مسلمان هو کر اُس کمبخت جوالا مکھی کو همیشہ کے لئے ٹھنڈا کردیتے ؟ اور کیوں هند کے سب مسلمان هندو بن کر هند کے جوالا مکھي کو جڑ سے اُکھاڑ نہیں پھینکتے ؟ اس جوش میں وہ یہ ذرا بھی نہیں سوچتے کہ وہ یہ نسخہ بتاکر دو جنمني سدھانت یعنی دو نیشن تھیوری کي جھاڑی کو پانی دے رہے هیں. بھلے هی وہ اپنے جوش میں ایک غلط اور بہت سوں کے من کو نہ لگتی بات کہتے ضرور هیں پر من کے اتنے صاف هیں کہ اُن سے یہ هرگز اُمید نہیں کی جا سکتی کہ وہ دو نیشن تھیوری جیسی کنٹیلي اور وش بھری جھاڑي کو پاني دینے کی سوچیں گے. آخر وہ کون سا بیج هے جو اُن کے منہ سے ایسي بات کہلوا دیتا هے ؟ وہ بیج هے هندستان میں مسلمانوں کي کروڑوں میں گنتی. یہ کروڑوں مسلمان نہ عرب سے جہازوں میں لد کر آئے تھے ' نہ فارس کي کھاڑی میں هو کر ناؤ میں بیٹھ کر هندستان کے کنارے لگے تھے اور نہ همالیہ کی گھاٹیوں میں هو کر افغانستان سے بھاگتے هوئے پنجاب میں آدھمکے تھے. یہ تو سب کے سب نہ بھي سہی ' پر بہت کے بہت هندستان کے هندو هي هیں جو دھیرے دھیرے مسلمان بن گئے تھے. دل میں چھپي هوئی یہی بات اُنھیں یہ کہنے کے لئے مجبور کر دیتی کہ بھلے مانسو ' جب تم پانچ پانچ دس دس مسلمان بنے

इसी तरह से ईसाई राज आने पर कितने ही मुसलमान ईसाई बनगये और हिन्दू फाटक की आर्य समाजी खिड़की खुल जाने से कभी कभी दो चार मुसलमान अपने बाप दादों का धरम अपनाने लगे और मौका मिलने पर उसी खिड़की की राह कभी कभी सैकड़ों घुस कर मुसलमान से हिन्दू हो गये तो फिर आज करोड़ों मुसलमानों की हिन्दू बन जाने में क्यो जान निकर्ती है ? हो सकता है ऐसे जल्द बाजों को यह पता भी न हो कि उनका इस तरह का उफान इसी विचार की गरमी का फल है. खैर, उनको जाने दीजिए. उनकी बात पर अमल करने के क़ाबिल न अभी पाकिस्तान के हिन्दू हो पाये हैं और न हिन्द के मुसलमान.

कुछ लोग एक दूसरी ही तरह सोचते हैं. उनका कहना है कि आखिर एक तारीख ऐसी क्यों नहीं तय कर दी जाती कि उस तारीख के बाद पाकिस्तान का कोई हिन्दू किसी तरह भी हिन्दुस्तान का जन्मना यानी हिन्द का नेशनल नहीं माना जायगा. ठीक उसी तरह पाकिस्तान यह क्यों नहीं तय कर देता कि इस महीने की इस तारीख के बाद से हिन्द का कोई मुसलमान पाकिस्तान का जन्मना यानी पाकिस्तान का नेशनल किसी तरह नहीं समझा जा सकता. और क्यों नहीं दोनों मुल्क कुछ दिनों के लिए इस तरह की कड़ी पाबन्दियाँ लगा देते जिससे कोई पाकिस्तानी फिर चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान हिन्द में नहीं घुस सकता और कोई हिन्दी चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान पाकिस्तान में नहीं घुस सकता.

इस तरह के सोचने वाले न अपने भाइयों का दिल टटोलना

اسی طرح سے عیسائی راج آنے پر کتنے هی مسلمان عیسائی بن گئے اور هندو پهاتک کی آریہ سماجي کهڑکی کهل جانے سے کبهی کبهي دو چار مسلمان اپنے باپ دادوں کا دهرم اپنانے لگے. اور موقع ملنے پر اُسي کهڑکی کي راہ کبهی کبهی سیکڑوں گهس کر مسلمان سے هندو هوگئے تو پهر آج کروڑوں مسلمانوں کي هندو بن جانے میں کیوں جان نکلتی هے؟ هو سکتا هے ایسے جلد بازوں کو یہ پته بهي نہ هو کہ اُن کا اس طرح کا ابهان اسی وچار کي گرمی کا پهل هے. خیر، اُن کو جانے دیجئے. اُن کي بات پر عمل کرنے کے قابل نہ ابهی پاکستان کے هندو هو پائے هیں اور نہ هند کے مسلمان.

کچهه لوگ ایک دوسری هی طرح سوچتے هیں. اُن کا کهنا هے کہ آخر ایک تاریخ ایسي کیوں نهیں طے کر دیجاتی کہ اُس تاریخ کے بعد پاکستان کا کوئی هندو کسی طرح بهی هندستان کا جنمنا یعنی هند کا نیشنل نهیں مانا جائیگا. ٹهیک اُسي طرح پاکستان یہ کیوں نهیں طے کردیتا کہ اس مهینے کی اس تاریخ کے بعد سے هند کا کوئی مسلمان پاکستان کا جنمنا یعنی پاکستان کا نیشنل کسی طرح نهیں سمجها جا سکتا. اور کیوں نهیں دونوں ملک کچهه دنوں کے لئے اس طرح کی پابندی لگادیتے جس سے کوئي پاکستانی، پهر چاهے وہ هندو هو یا مسلمان، هند میں نهیں گهس سکتا اور کوئی هندی، چاهے وہ هندو هو یا مسلمان، پاکستان میں نهیں گهس سکتا.

[illegible] ٹٹولنا چاهتے

चाहते है. उन्हे चाहिए कि वह पंडित जवाहर लाल जी को थर्मामीटर मान कर उनकी हाल ही की तक़रीर के बल पर समझ लें कि जब पाकिस्तान की छूट गिनतियों यानी हिन्दुओं पर कोई ज़ुल्म होता है तो उनका दिल उन हिन्दुओं की तरफ़ खिंचे बिना नहीं रहता. ऐसा होना क़ुदरती है क्योंकि अभी हिन्दुस्तान के टुकड़े हुए दिन ही कितने हुए. और बँटवारा हो जाने से मुहब्बत का रिश्ता टूट भी कैसे सकता है ? हिन्दुओं की बात छोड़िये. हिन्द का हर हिन्दू और मुसलमान पाकिस्तानी अब्दुल ग़फ़्फ़ार खां की तकलीफ़ की बात सुन कर दुख मानता है. और अगर कांग्रेसी हुआ तो तड़प उठता है, भड़क उठता है, फुनफुना कर रह जाता है और ऐसा मालूम होता है कि कहीं उसके हाथ में हकूमत की बाग डोर होती तो उसने पाकिस्तान के ख़िलाफ़ लड़ाई का ऐलान करके फ़ौजों के कूच का डंका ही बजा दिया होता. हिन्द को पाकिस्तान के हिन्दुओं से ही नहीं, बहुत से मुसलमानों से भी भाइयों से ज़्यादा मुहब्बत है. बताइये, इस मुहब्बत के रिश्ते को किस हथियार से तोड़ा जाय ? क्या कोई ऐसा हथियार, आदमी की बुद्धि अब तक ईजाद कर सकी है ? जो बात हिन्द की तरफ़ से कही गई है वही कम ज़्यादा पाकिस्तान की तरफ़ से कही जा सकती है. हमारा ही जैसा उनकी छातियों में भी दिल है. उनका भी नाते का डोरा अब तक नहीं टूटा है और न टूट सकता है. वह भी यहाँ के मुसलमानों का दुख अपना ही दुख मानते हैं. अब बताइये कि हिन्द जन्मनी और पाकिस्तान जन्मनी यानी हिन्दी और पाकिस्तानी नेशन बनें तो कैसे बनें ? और यह नहीं बनतीं हैं तो यह दंगे का ज्वालामुखी जब चाहे रंग [illegible]

چاھتے ھیں. اُنھیں چاھئے کہ وہ پنڈت جواھر لال جی کو تھرما میٹر مان کر اُن کی حال ھی کی تقریر کے بل پر سمجھ لیں کہ جب پاکستان کی چھوٹی گنتیوں یعنی ھندوؤں پر کوئی ظلم ھوتا ھے تو اُن کا دل اُن ھندوؤں کی طرف کھنچے بنا نہیں رھتا. ایسا ھونا قدرتی ھے کیونکہ ابھی ھندستان کے ٹکڑے ھوئے دن ھی کتنے ھوئے. اور بٹوارہ ھو جانے سے محبت کا رشتہ ٹوٹ بھی کیسے سکتا ھے؟ ھندوؤں کی بات چھوڑئے. ھند کا ھر ھندو اور مسلمان پاکستانی عبدالغفار خاں کی تکلیف کی بات سن کر دکھ مانتا ھے اور اگر کانگریسی ھوا تو تڑپ اُٹھتا ھے، بھڑک اُٹھتا ھے، پھن پھنا کر رہ جاتا ھے اور ایسا معلوم ھوتا ھے کہ کہیں اِس کے ھاتھ میں حکومت کی باگ ڈور ھوتی تو اُسنے پاکستان کے خلاف لڑائی کا اعلان کر کے فوجوں کے کوچ کا ڈنکا ھی بجا دیا ھوتا. ھند کو پاکستان کے ھندوؤں سے ھی نہیں، بہت سے مسلمانوں سے بھی بھائیوں سے زیادہ محبت ھے. بتائیے، اس محبت کے رشتے کو کس ھتھیار سے توڑا جائے؟ کیا کوئی ایسا ھتھیار، آدمی کی بدھی اب تک ایجاد کر سکی ھے؟ جو بات ھند کی طرف سے کہی گئی ھے وھی کم زیادہ پاکستان کی طرف سے کہی جا سکتی ھے. ھمارا ھی جیسا اُن کی چھاتیوں میں بھی دل ھے. اُن کا بھی ناتے کا ڈورا اب تک نہیں ٹوٹا ھے اور نہ ٹوٹ سکتا ھے. وہ بھی یہاں کے مسلمانوں کا دکھ اپنا ھی دکھ مانتے ھیں. اب بتائیے کہ ھند جنمنی اور پاکستان جنمنی یعنی ھندی اور پاکستانی نیشن بنے تو کیسے بنے؟ اور یہ نہیں بنتی ھیں تو یہ دنگے کا جوالا مکھی

हम कहना यह चाहते हैं कि यह हालत अपने आप पैदा नहीं हो गई और यह भी कहना चाहते हैं कि इस हालत का न उन हिन्दुओं को पता था और न उन पाकिस्तानियों को पता था जिनके हाथ में आज हिन्द और पाकिस्तान की हकूमतों की बाग डोर है. पर अभी हमने कहा है कि यह हालत अपने आप पैदा नहीं हुई, यह पैदा की गई है और सोच समझ कर पैदा की गई है. और इस की पैदाइश के अंगरेज़ ही बाप और वह ही मां हैं. अब सवाल यह पैदा होता है कि इस रोने धोने से फ़ायदा ? इस सांप की घसीटन को पीटने से लाभ ? इस चिड़ियों के चुगे खेत पर पछताने का मतलब ? मतलब साफ़ है. कोई मरज़ कभी दूर नहीं होता जब तक कि उसकी असली वजह समझ में न आ जाय. अगर हमारा यह निदान यानी हमारी यह तशख़ीस, हमारी यह डायग्नोसिस, हर छोटे बड़े के दिल में उतार दी जाय और ज़ेहन नशीन करा दी जाय तो हमारे माने हुए लीडरों की मामूली तक़रीरों के नुस्ख़े भी काफ़ी से ज़्यादा असर कर सकते हैं और हम बहुत जल्दी इस ज्वालामुखी को हमेशा के लिए नहीं तो उस मुद्दत तक के लिए ज़रूर ठंडा कर सकते हैं जिस वक़्त हम इस क़ाबिल हो सकेंगे कि उसे हमेशा के लिए ठंडा कर दें.

—भगवान दीन

(७०)

ہم کہنا یہ چاہتے ہیں کہ یہ حالت اپنے آپ پیدا نہیں ہوگئی اور یہ کہنا چاہتے ہیں کہ اِس حالت کا نہ اُن ہندیوں کو پتہ تھا اور نہ اُن پاکستانیوں کو پتہ تھا جن کے ہاتھ میں آج ہند اور پاکستان کی حکومتوں کی باگ ڈور ہے. پر ابھی ہمنے کہا ہے کہ یہ حالت اپنے آپ پیدا نہیں ہوئی ' یہ پیدا کی گئی ہے اور سوچ سمجھ کر پیدا کی گئی ہے. اور اُسکی پیدایش کے انگریز ہی باپ اور وہ ہی ماں ہیں. اب سوال یہ پیدا ہوتا ہے کہ اِس رونے دھونے سے فایدہ؟ اس سانپ کی گھسیٹن کو پیٹنے سے لابھ؟ اِس چڑیوں کے چگے کھیت پر پچھتانے کا مطلب؟ مطلب صاف ہے. کوئی مرض کبھی دور نہیں ہوتا جب تک کہ اُسکی اصلی وجہ سمجھ میں نہ آ جاے. اگر ہمارا یہ ندان یعنی ہماری یہ تشخیص ' ہماری یہ ڈایگنوسس ہر چھوٹے بڑے کے دل میں اُتار دیجاے اور ذہن نشین کرا دیجاے تو ہمارے مانے ہوئے لیڈروں کی معمولی تقریروں کے نسخے بھی کافی سے زیادہ اثر کر سکتے ہیں. اور ہم بہت جلدی اِس جوالا مکھی کو ہمیشہ کے لئے نہیں تو اُس مدت تک کے لئے ضرور ٹھنڈا کرسکتے ہیں جس وقت ہم اِس قابل ہو سکینگے کہ اُسے ہم ہمیشہ کے لئے ٹھنڈا کردیں.

— بھگوان دین

(٧٠)

गिरानी, मँहगाई या क़हत—दक्खिन का तजरबा

(भाई सैयद ख्वाजा साहब, वकील, हैदराबाद, दक्खिन)

महँगाई शब्द हिन्दुस्तानी महँगा और मरहठी माघ से निकला है. इसी मतलब का फ़ारसी लफ्ज़ गिरानी है. क़हत शब्द अरबी है. संसार के जन्म से लेकर बारिश की कमी या ज़्यादती क़हत का कारन हुआ करती थी पर अब इस तरह के क़ुदरती कारनों से क़हत नहीं होता. अब नये ज़माने के क़हतों का होना न होना बहुत दरजे तक सौदागरों पर निर्भर है. आज के व्योपारी का ध्यान ज़्यादा से ज़्यादा दाम लेने की तरफ़ है. यह भी याद रखना चाहिये कि बहुत से मुल्कों की सरकारें भी ख़ुद व्योपारी बन गई हैं और बनती चली जा रही हैं. यह व्योपारी बहुत से हथकंडे चलते हैं—जैसे ग़ल्ले को जला देना, बाज़ार में माल न भेजना वग़ैरा वग़ैरा. इन दो बड़ी और भयानक लड़ाइयों की महँगाई का कारन क़ुदरत नहीं बल्कि आदमी ख़ुद है.

दक्खिन में शम्सुद्दीन बहमनी के समय से लेकर १९४८ तक बीस क़हत पड़े, जिनमें से १८ का कारन तो क़ुदरती है बाक़ी दो आदमी के लाये हुए हैं—एक क़हत सन् १४ ई० की लड़ाई के बाद लाया गया और दूसरा हाल में ख़तम हुई लड़ाई के बाद, जिसके असर से

گرانی، منہگائي یا قحط دکھن کا تجربہ

(بھائي سید خواجہ صاحب وکیل' حیدرآباد' دکھن)

مہنگائی شبد ھندستانی مہنگا اور مرھٹی ماگھ سے نکلا ھے. اسی مطلب کا فارسي لفظ گراني ھے . قحط شبد عربی ھے. سنسار کے جنم سے لیکر بارش کي کمی یا زیادتی قحط کا کارن ھوا کرتي تھي پر اب اس طرح کے قدرتي کارنوں سے قحط نہیں ھوتا. اب نئے زمانے کے قحطوں کا ھونا نہ ھونا بہت درجے تک سوداگروں پر نربھر ھے. آج کے بیوپاری کا دھیان زیادہ سے زیادہ دام لینے کی طرف ھے. یہ بھی یاد رکھنا چاھئے کہ بہت سے ملکوں کی سرکاریں بھی خود بیوپاري بن گئی ھیں اور بنتی چلی جا رھی ھیں. یہ بیوپاري بہت سے ھتھ کنڈے چلتے ھیں. جیسے غلہ کو جلا دینا' بازار میں مال نہ بھیجنا وغیرہ وغیرہ. اِن دو بڑي اور بھیانک لڑائیوں کی منہگائی کا کارن قدرت نہیں بلکہ آدمي خود ھے.

دکھن میں شمس‌الدین بہمني کے سمے سے لے کر ۱۹۴۸ تک بیس قحط پڑے' جن میں سے اٹھارہ کا کارن تو قدرتی ھے باقی دو آدمی کے لائے ھوئے ھیں—ایک قحط سن ۱۴ع کی لڑائی کے بعد لایا گیا اور دوسرا حال میں ختم ھوئی لڑائی کے بعد' جس

और दबोचे जा रहा है.

हम लोग लाइट बुझा कर चारपाई पर लेट गये और नींद की राह देखने लगे, लेकिन नींद नहीं आई. सारी रात आँखों ही आँखों में बीती. रह रह के यही याद आता कि बापू मनु और आभा के कन्धे पर हाथ रखे भीड़ के अन्दर से प्रार्थना सभा में जा रहे हैं. उसी दम उस जालिम हत्यारे की गोली की आवाज आती है. मैं चौंक पड़ती, क्या सच मुच बापू मार दिये गये ? क्या सचमुच उसने गोली चलाई ? विश्वास नहीं हो रहा था लेकिन विशवास करना ही पड़ा. मुझे सपने में भी ध्यान नहीं था कि बापू को कोई मारेगा. अभी-अभी बापू के मरने के चार रोज पहले जन नाट्य संघ का प्रदर्शन हुआ था, उसमें यही दिखाया गया था कि बापू को मारने एक गुण्डा जाता है लेकिन मार नहीं पाता. वह बापू के पास जाता है मगर छुरा नहीं उठा पाता. फिर बापू का यह हत्यारा कितना बड़ा गुण्डा था !

बापू को उस आदमी ने मारा जो उनके सम्पर्क में रह चुका था. लेकिन बापू को वही अकेला नहीं मार सकता था. उसके पीछे बहुतों का हाथ था. बड़े-बड़े सेठ साहुकारों, राजाओं, महाराजाओं का हाथ था. बापू को अगर चाहते तो अंग्रेज भी मार सकते थे. नवाखाली में जब बापू गये तो वहाँ भी मुसलमान मार सकते थे. लेकिन नहीं बापू को कोई नहीं मार सका. बापू सबको इतने प्यारे थे कि उनपर कोई भी हाथ नहीं उठा सकता था. बापू भी सबको उसी

اور دبوچے جا رہا ہے ۔

ہم لوگ لائٹ بجھاکر چارپائی پر لیٹ گئے اور نیند کی راہ دیکھنے لگے ۔ لیکن نیند نہیں آئی ۔ ساری رات آنکھوں ہی آنکھوں میں بیتی ۔ رہ رہ کے یہی یاد آتا کہ باپو منو اور آبھا کے کندھے پر ہاتھ رکھے بھیڑ کے اندر سے پرارتھنا سبھا میں جارہے ہیں ۔ اُسی دم اُس ظالم ہتیارے کی گولی کی آواز آتی ہے ۔ میں چونک پڑتی ، کیا سچ مچ باپو مار دئے گئے ؟ کیا سچ مچ اس نے گولی چلائی ؟ وشواس نہیں ہو رہا تھا لیکن وشواس کرنا ہی پڑا ۔ مجھے سپنے میں بھی دھیان نہیں تھا کہ باپو کو کوئی ماریگا ۔ ابھی ابھی باپو کے مرنے کے چار روز پہلے جن ناتیہ سنگھ کا پردرشن ہوا تھا ، اس میں یہی دکھایا گیا تھا کہ باپو کو مارنے ایک گنڈہ جاتا ہے لیکن مار نہیں پاتا ۔ وہ باپو کے پاس جاتا ہے مگر چھرا نہیں اُٹھا پاتا ۔ پھر باپو کا یہ ہتیارا کتنا بڑا گنڈا تھا !

باپو کو اُس آدمی نے مارا جو ان کے سمپرک میں رہ چکا تھا ۔ لیکن باپو کو وہی اکیلا نہیں مار سکتا تھا ۔ اُسکے پیچھے بہتوں کا ہاتھ تھا ۔ بڑے بڑے سیٹھ ساہوکاروں ، راجاؤں ، مہاراجاؤں کا ہاتھ تھا ۔ باپو کو اگر چاہتے تو انگریز بھی مار سکتے تھے ۔ نوا کھالی میں جب باپو گئے تو وہاں بھی مسلمان مار سکتے تھے ۔ لیکن نہیں ، باپو کو کوئی نہیں مار سکا ۔ باپو سبکو اتنے پیارے تھے کہ اُن پر کوئی بھی ہاتھ نہیں اُٹھا سکتا تھا ۔ باپو بھی سب کو اسی طرح پیار کرتے تھے جیسے ماں اپنے بچوں کو پیار

शम्सुद्दीन बहमनी के समय में दक्खिन में पहला क़हत पड़ा यह काल दुर्गादेवी के नाम से मशहूर है. हज़ारों जानें इसमें काम आईं. उस समय के बादशाह ने उन इलाक़ों से, जहाँ से अनाज मिल सकता था, अनाज मँगाकर रिआया की मदद की.

दूसरा क़हत अब्दुल्ला क़ुतुबशाह के ज़माने में पड़ा. जो ग़ल्ला एक हुन (सोने का हैदराबादी सिक्का जिसकी क़ीमत चार रुपया आठ आना थी) में बारह मन बिका करता था वह एक हुन में तीन मन बिकने लगा. बादशाह ने हज़ारों लंगर खाने खोल दिये. तीन साल के बाद फ़सिल अच्छी होने पर इस क़हत से छुटकारा मिला. क़हत के तीन सालों में बारिश बहुत हुई. मूसा नदी बार बार उमड़ी, हज़ारों को बहा ले गई. इस क़हत को बारिश की ज़्यादती का नतीजा समझना चाहिये.

इसी बादशाह के ज़माने में तीसरा क़हत पड़ा. इसका कारन शाहजहाँ की लड़ाई थी.

तानाशाह के ज़माने में औरंगज़ेब ने लड़ाई छेड़ दी और दक्खिन में चौथा क़हत पड़ा.

सन् ११४५ फ़० और १२०२ फ़० में बारिश की ज़्यादती के कारन पाँचवीं और छठी मरतबा फिर दक्खिन को क़हत का सामना करना पड़ा.

सातवाँ क़हत 'डोगी बरा' का क़हत हिंदुस्तान में बहुत मशहूर

شمس الدین بہمنی کے سمے میں دکھن میں پہلا قحط پڑا. یہ کال درگا دیوی کے نام سے مشہور ھے . ھزاروں جانیں اِس میں کام آئیں. اُس سمے کے بادشاہ نے اُن علاقوں سے' جہاں سے اناج مل سکتا تھا' اناج منگا کر رعایا کی مدد کی .

دوسرا قحط عبداللہ قطب شاہ کے زمانے میں پڑا . جو غلہ ایک ھن (سونے کا حیدرآبادی سکہ جس کی قیمت چار روپیہ آٹھ آنہ تھی) میں بارہ من بکا کرتا تھا وہ ایک ھن میں تین من بکنے لگا . بادشاہ نے ھزاروں لنگر خانے کھول دئے . تین سال کے بعد فصل اچھی ھونے پر اِس قحط سے چھٹکارا ملا . قحط کے تین سالوں میں بارش بہت ھوئي . موسیٰ ندی بار بار اُمڈی' ھزاروں کو بہا لے گئي . اِس قحط کو بارش کی زیادتی کا نتیجہ سمجھنا چاھئے .

اِسی بادشاہ کے زمانے میں تیسرا قحط پڑا . اِس کارن شاہ جہاں کی لڑائي تھي .

تانا شاہ کے زمانے میں اورنگ زیب نے لڑائی چھیڑ دی اور دکھن میں چوتھا قحط پڑا .

سن ۱۱۴۵ ف اور سن ۱۲۰۲ف میں بارش کی زیادتی کے کارن پانچویں اور چھٹی مرتبہ پھر دکھن کو قحط کا سامنا کرنا پڑا .

ساتواں قحط 'ڈوگی برا' کا قحط ھندستان میں بہت مشہور

थी. कन्नड़ ज़बान मे इन्सान की खोपड़ी को 'डोगी' कहते हैं. इसीलिए इस क़हत का नाम 'डोगीबरा' पड़ गया.

सन् १२१९ फ़०, सन् १२२९ फ़० और सन् १२३९ फ़० में बारिश को कमो की वजह से दक्खिन में तीन और क़हत पड़े. यह ज़माना सिकंदर जाह का था.

नासिरुद्दौला के ज़माने में सन् १२४९ फ़० में और इसके बाद के बरसों में तीन क़हत बारिश की कमी के कारन पड़े.

दक्खिन का चौदहवाँ क़हत आला हज़रत अफ़ज़लुद्दौला के ज़माने में सन् १२७९ फ़० में पड़ा. नवाब सालार जंग हैदराबाद रियासत के बड़े वज़ीर थे. उन्होंने सवा पंद्रह लाख रुपये का ग़ल्ला तिलंगाना के ज़िलों से मंगाया. मगर ठीक समय पर न पहुंच सका. हज़ारों इन्सान और जानवर मौत के घाट उतर गये.

इसी बादशाह के समय में पंद्रहवाँ क़हत बारिश न होने की वजह से पड़ा और लाखों इन्सानों की जान गई.

नवाब मीर महबूब अली ख़ाँ के ज़माने में सन् १३१३ व १४ फ़० और १३१८ व १९ फ़० में दो दो साला महँगाइयाँ बारिश की कमी के कारन हुईं. हैदराबाद सरकार ने नवाब रशीदुद्दीन ख़ाँ और मिस्टर डनलप के इंतज़ाम से एक करोड़ तिरसठ लाख रुपया का अनाज मंगा कर रिआया को परवरिश की. बारह रुपया माहवारी तनख़्वाह पाने वाले नौकरों को एक रुपया माहवारी मंहगाई एलाउन्स छै बरस तक दिया जाता रहा और फिर उसके बाद तनख़्वाह में बढ़ोती कर दी

تھیں ۔ کنڑ زبان میں انسان کی کھوپڑی کو 'ڈوگی' کہتے ہیں اسی لئے اس قحط کا نام 'ڈوگی برا' پڑ گیا ۔

سن ۱۲۱۹ف، سن ۱۲۲۹ف اور سن ۱۲۳۹ف میں بارش کی کمی کی وجہ سے دکھن میں تین اور قحط پڑے ۔ یہ زمانہ سکندر جاہ کا تھا ۔

ناصرالدولہ کے زمانے میں سن ۱۲۴۹ ف میں اور اس کے بعد کے برسوں میں تین قحط بارش کی کمی کے کارن سے پڑے ۔

دکھن کا چودھواں قحط اعلیٰ حضرت افضل الدولہ کے زمانے میں سن ۱۲۷۹ ف میں پڑا ۔ نواب سالار جنگ حیدرآباد ریاست کے بڑے وزیر تھے ۔ انہوں نے سوا پندرہ لاکھ روپیہ کا غلہ تلنگانہ کے ضلعوں سے منگایا مگر ٹھیک سمے پر نہ پہونچ سکا ۔ ہزاروں انسان اور جانور موت کے گھاٹ اتر گئے ۔

اسی بادشاہ کے سمے میں پندرھواں قحط بارش نہ ہونے کی وجہ سے پڑا اور لاکھوں انسانوں کی جان گئی ۔

نواب میر محبوب علی خاں کے زمانے میں سن ۱۳۱۳ و ۱۴ف اور سن ۱۳۱۸ و ۱۹ف میں دو دو سالہ مہنگائیاں بارش کی کمی کے کارن ہوئیں ۔ حیدرآباد سرکار نے نواب رشیدالدین خاں اور مسٹر ڈنلپ کے انتظام سے ایک کروڑ ترسٹھ لاکھ روپیہ کا اناج منگا کر رعایا کی پرورش کی ۔ بارہ روپیہ ماہواری تنخواہ پانے والے نوکروں کو ایک روپیہ ماہواری مہنگائی الاؤنس چھ برس تک دیا جاتا رہا ۔ اور پھر اس کے بعد تنخواہ میں بڑھوتی کردی

शम्सुद्दीन बहमनी क़हत थे और वक़्ती सरकार की रिआया यह काल दुर्गादेवी ... अब हमारी और आप की देखी हुई लड़ाई की आई. उस ... क़ुदरती क़हत की गिरानियों का फ़रक़ सुनिये.

सकता था ... बहुत सी गिरानियाँ देखी हैं लेकिन किसी ... में एक ... का छै सेर ज्वार, चार सेर चावल और पाँच से ... बिकते हुए नहीं देखा. मजा यह कि हमारे यहाँ का ... का सवा सेर है. क़ुदरती क़हत की मुद्दत थोड़ी होती ... के लाए हुए क़हतों को जाने में बहुत ज्यादा मुद्दत ... १९१४ ई. का क़हत तो सन् २१ ई. में गया मगर सन् ... अभी तक बाक़ी है हालाँकि बारह बरस हो गये.

पहली जंग सन् १४ ई. में शुरू हुई. यह लड़ाई क़ौम ... दुनिया पर क़ब्ज़ा करने की ग़रज़ से छेड़ी थी. इंगलि... लड़ाई की एक पार्टी था. चूँकि लड़ाई में जान खपाने के लिए ... नहीं मिलते थे इस लिए अँगरेजों ने ग़ुलाम हिन्दुस्तान की ब... आबादी को फ़ौज में जबरिया भर्ती करना शुरू कर दिया. ... लिए उस समय के वाइसराय ने खाने की चीजों का एक ... मोहकमा क़ायम किया ताकि सस्ताई को मँहगाई से बदल दिया जाय. वाइसराय ने खुल्लमखुल्ला कह भी दिया कि—' अगर एक रुपये को चार सेर ज्वार कर दी जावे तो हिन्दुस्तान के भूके कैसे फ़ौज में भर्ती नहीं होते, देखता हूं !''

नाज की खरीद व बिक्री का मोहकमा खोला गया. उस वक़्त

یه سب قدرتي قحط تھے اور وقتی سرکار کی رعایا پروری کا چوتھا. اب هماری اور آپ کي دیکھی هوئی لڑائی کی گرانیوں اور قدرتی قحط کی گرانیوں کا فرق سنئے.

میں نے بہت سی گرانیاں دیکھي هیں لیکن کسي قحط میں ایک روپیے کا چھ سیر جوار ' چار سیر چاول اور پانچ سیر گیہوں سے کم بکتے هوئے نہیں دیکھا. مزه یه که همارے یہاں کا سیر بھی تول کا سوا سیر هے. قدرتی قحط کی مددت ... هوتي هے لیکن اِنسان کے لائے هوئے قحطوں کو جا... زیادہ مددت لگتی هے. سن ۱۹۱۴ع کا قحط تو سن ... گیا مگر سن ۱۹۳۹ع کا ابھي تک باقی هے حالانکه باره بر...

پہلي جنگ سن ۱۹۱۴ع میں شروع هوئی. یه لڑائي جرمني نے دنیا پر قبضه کرنے کي غرض سے چھیڑی تھی. اِنگلنڈ اِس لڑائي کي ایک پارٹي تھا. چونکه لڑائی میں جان کھپانے کے لئے آدمی نہیں ملتے تھے اِس لئے انگریزوں نے غلام هندستان کی بڑھتي هوئي آبادی کو فوج میں جبریه بھرتي کرنا شروع کردیا. اِس کے لئے اُس سمے کے وائسرائے نے کھانے کی چیزوں کا ایک نیا محکمه قائم کیا تاکه سستائي کو مہنگائي سے بدل دیا جائے. وائسرائے نے کھلم کھلا کہه بھی دیا که — '' اگر ایک روپیه کي چار سیر جوار کر دیجاوے تو هندستان کے بھوکے کیسے فوج میں بھرتی نہیں هوتے' دیکھتا هوں ''.

... کھولا گیا. اُس وقت کے

रिआया के आज़ाद व्योपार पर बंधन लग गये. हैदराबाद रियासत में सिकंदराबाद के सेठ सजन लाल को मनोपली (इजारह) दी गई कि वह जंग के ख़त्म तक एक रुपये की छै सेर ज्वार, चार सेर चावल और इसी भाव गेहूं बेचें. वह इसी भाव बेचते रहे. रिआया को ज्यादा परेशानी नहीं हुई. इसकी वजह यह थी कि बाहर देहात से और बरमा और दूसरी जगह से सस्ता नाज लाने की रिआया को इस रियासत में मनाही नहीं थी. जिसकी वजह से अनाज हर समय मिलता था. मैं ख़ुद महबूब नगर से घर के लिए चार चार छै छै थैले चावल जब ज़रूरत पड़ती लाता था. यहाँ बढ़िया 'सुलक पल्ली' का चावल पचास रुपये को एक 'पल्ला' मिलता था. (एक पल्ला में २०० सेर होता था.) और बरमा का भी चावल आम तरीक़े से एक रुपये का चार सेर मिलता था. सन् १८ ई. में जंग ख़त्म हुई. मनोपली (इजारह) भी ख़त्म हुई, और ग़ल्ला सस्ता होने लगा.

दूसरी बड़ी लड़ाई के आरभ तक नाज का भाव एक रुपये का दस सेर गेहूं, सात सेर बढ़िया खिचड़ी चावल और पंद्रह सोलह सेर ज्वार बिकने लगा.

सन ३९ ई. में लड़ाई शुरू हुई पर १९४१ ई. तक कम से कम हम लोगों को दक्खिन में मँहगाई मालूम नहीं हुई. सन ४२ ई. में ख़ुद हैदराबाद सरकार की तरफ़ से पौने चार सेर गेहूं एक रुपये का और छै या आठ सेर ज्वार का भाव मुक़र्रर हुआ. इस लिए सन् ४३ ई. के आख़िर तक लोग मँहगाई से बेख़बर रहे.

رعایا کے آزاد بیوپار پر بندھن لگ گئے. حیدرآباد ریاست میں سکندرآباد کے سیٹھ سجن لال کو منوپلی (اِجارہ) دی گئی کہ وہ جنگ کے ختم تک ایک روپئے کی چھے سیر جوار، چار سیر چاول اور اسی بھاؤ گیہوں بیچیں. وہ اسی بھاؤ بیچتے رہے. رعایا کو زیادہ پریشانی نہیں ہوئی. اسکی وجہ یہ تھی کہ باہر دیہات سے اور برما اور دوسری جگہ سے سستا ناج لانے کی رعایا کو اِس ریاست میں مناہی نہیں تھی جسکی وجہ سے اناج ہر سمے ملتا تھا. میں خود محبوب نگر سے گھر کے لئے چار چار چھہ چھہ تھیلے چاول جب ضرورت پڑتی لاتا تھا. یہاں بڑھیا 'سلک پلّی' کا چاول پچاس روپئے کو ایک 'پلّا' ملتا تھا. (ایک پلّا میں ۲۰۰ سیر ہوتا تھا.) اور برما کا بھی چاول عام طریقے سے ایک روپئے کا چار سیر ملتا تھا. سن ۱۸ع. میں جنگ ختم ہوئی. منوپلی (اِجارہ) بھی ختم ہوئی، اور غلّہ سستا ہونے لگا.

دوسری بڑی لڑائی کے آرنبھ تک ناج کا بھاؤ ایک روپیہ کا دس سیر گیہوں، سات سیر بڑھیا کھچڑی چاول اور پندرہ سولہ سیر جوار بکنے لگی.

سن ۳۹ع میں لڑائی شروع ہوئی پر ۱۹۴۱ع. تک کم سے کم ہم لوگوں کو دکھن میں مہنگائی معلوم نہیں ہوئی. سن ۴۲ع. میں خود حیدرآباد سرکار کی طرف سے پونے چار سیر گیہوں ایک روپئے کا اور چھہ یا آٹھ سیر جوار کا بھاؤ مقرر ہوا. اس لئے سن ۴۳ع. کے آخر تک لوگ مہنگائی سے بیخبر رہے.

हुआ. आज़ाद व्योपार पर बंधन लग गये. पटापट हर चीज़ मँहगी होने लगी. यह एक माना हुआ असूल है कि अगर जीवन के लिए ज़रूरी चीज़ें ज़्यादा हों तो दूसरी सब चीज़ें सस्ती होती हैं और अगर इसके ख़िलाफ़ हो तो हर चीज़ मँहगी होती है. जब नाज मँहगा हुआ तो दूसरी चीज़ों का दाम भी बढ़ने लग

हैदराबाद रियासत नाज के मामले में अपनी ज़ कर सकती है. मेरा सालहा साल का तजरबा यह देहात के सिवा किसी और जगह से ग़ल्ला नहीं आ हमेशा देहात से हर क़िस्म के अनाज की बंडियाँ (गा गंज (मंडी) को आती थीं. इन मंडियों में कई कई आढ़ उनके नाज लाने के असामी मुक़र्रर होते थे जिसका लाता था वह आढ़ती फुटकर बेचने वालों को इकट्ठा करके देता था. दाम की बोली बोली जाती थी और ज़्यादा बोले वाले को नाज मिल जाता था आढ़ती केवल सैकड़े पर सवा कमीशन लेता था और ज़रूरत के समय किसानों को पेशगी भी देता था. इस तरह किसानों को सरकारी लगान और दू ज़रूरतों के लिए रुपया मिल जाता था. और व्योपारी फ़सल पर नाज तौला लिया करता था. साहूकार हैदराबाद या सिकंदराबाद आकर नाज के बाज़ार भाव से किसान को दाम देता था. इसमें शक नहीं कि आढ़ती अपनी पुरानी आदत के अनुसार अनपढ़ किसानों से ज़रूरत से अधिक सूद लेता था जिससे किसानों को नुक़सान होता था—मगर यह सब बीती बातें हैं. अब तो सरकार ...

ھوا. آزاد بیوپار پر بندھن لگ گئے. پٹاپٹ ھر چیز ملھنگی ھونے لگی یہ ایک مانا ھوا اصول ھے کہ اگر جیون کے لئے ضروری چیزیں زیادہ ھوں تو دوسري سب چیزیں سستی ھوتی ھیں اور اگر اِس کے خلاف ھو تو ھر چیز ملھنگی ھوتی ھے. جب ناج ملھنگا ھوا تو دوسری چیزون کا دام بھی بڑھنے لگا.

حیدرآباد ریاست ناج کے معاملے میں اپني ضرورت خود پ کر سکتي ھے. میرا سالھا سال کا تجربہ یہ ھے کہ دیہات کے سوا کسی اور جگہ سے غلہ نہیں آیا کرتا دیہات سے ھر قسم کے اناج کی بنڈیاں (گاڑیاں) شہ (منڈی) کو آتی تھیں. اِن منڈیون میں کئی کئی آڑھ تیے. اُن کے ناج لانے کے اسامی مقرر ھوتے تھے. جس کا اس ناج لاتا تھا وہ آڑھتی پھٹکر بیچنے والوں کو اکٹھا کرکے ناج بیچ دیتا تھا. دام کی بولی بولی جاتی تھي اور زیادہ بولي بولنے والے کو ناج مل جاتا تھا. آڑھتي کیول سیکڑے پر سوا روپیہ کمیشن لیتا تھا اور ضرورت کے سمے کسانوں کو پیشگی روپیہ بھی دیتا تھا. اِس طرح کسانوں کو سرکاری لگان اور دوسري ضرورتوں کے لئے روپیہ مل جاتا تھا. اور بیوپاری فصل پر ناج تولا لیا کرتا تھا. ساھوکار حیدرآباد یا سکندرآباد آکرناج کےبازار بھاو سےکسان‌کو دام‌دیتا تھا. اِسمیں‌شک نہیں‌کہ آڑھتی اپنی پراني عادت کے انوسار اَن پڑھ کسانوں سے ضرورت سےادھک سود لیتا تھا جسسے کسانوں‌کو نقصان‌ھوتا

कोआपरेटिव कारपोरेशन भी क़ायम हैं. सैकड़ो तन्ख़्वाह पाने वाले नौकर काम कर रहे है मगर दस साल बीत गये कि मंहगाई टलाये नहीं टलती. भाव का जो नया क़दम उठता है वही बढ़ी हुई मंहगाई का ह् सन्देश लाता है.

आज़ाद तिज़ारत पर बंधन की सभी पैदावार चोर बाज़ारी है. चोर बाज़ार वाले सरकारी भाव से दुगने तिगुने दाम पर इन्सानी ज़रूरत की चीज़ों को बेचते हैं. ख़ुद कारपोरेशन के गोदामों में चोरी होती है. सरकार का हुक्म है कि लोग चोर बाज़ारी के ख़त्म करने में उसकी सहायता करें. भला बताइये आदमी अपना पेट देखे या चोर बाज़ार और सरकार के हुक्म को ! लोगों को पेट की आग बुझाना ज़रूरी है. प्रकृति कभी कभी उनको मजबूर करती है कि चोर बाज़ार से नाज ख़रीद कर वह अपने को ज़िन्दा रक्खें. अगर कोई हिम्मत भी करे चोर बाज़ारी को पकड़ाने की तो सरकारी दफ्तरों में उलटे मारे मारे फिरने की मुसीबत कौन उठाये ?

महात्मा गांधी, जो हिन्दुस्तान के आम लोगों की नब्ज़ को पहचानते थे और उनके सच्चे हित चिंतक थे, कंट्रोल के सख्त ख़िलाफ़ थे. हमारा तजरबा भी हमें यही बता रहा है कि जब तक कंट्रोल और राशनिंग के मुहकमे ख़त्म नहीं होते तब तक यह आजकल की मंहगाई और जनता की मुसीबत भी दूर नहीं हो सकती.

کوآپریٹو کارپوریشن بھی قائم ہیں۔ سیکڑوں تنخواہ پانے والے نوکر کام کر رہے ہیں مگر دس سال بیت گئے کہ منہگائی ٹلائے نہیں ٹلتی۔ بھاؤ کا جو نیا قدم اُٹھتا ہے وہی بڑھی ہوئی منہگائی کا ہی سندیش لاتا ہے۔

آزاد تجارت پر بندھن کی سب ہی پیداوار چور بازاری ہے چور بازار والے سرکاری بھاؤ سے دگنے تگنے دام پر انسانی ضرورت کی چیزوں کو بیچتے ہیں۔ خود کارپوریشن کے گوداموں میں چوری ہوتی ہے۔ سرکار کا حکم ہے کہ لوگ چور بازاری کے ختم کرنے میں اُسکی سہایتا کریں بھلا بتائیے آدمی اپنا پیٹ دیکھے یا چور بازار اور سرکار کے حکم کو! لوگوں کو پیٹ کی آگ بجھانا ضروری ہے۔ پرکرتی کبھی کبھی اُن کو مجبور کرتی ہے کہ چور بازاری سے ناج خرید کر وہ اپنے کو زندہ رکھیں۔ اگر کوئی ہمت بھی کرے چور بازاری کو پکڑانے کی تو سرکاری دفتروں میں اُلٹے مارے مارے پھرنے کی مصیبت کون اُٹھائے

مہاتما گاندھی جو ہندستان کے عام لوگوں کی کو نبض پہچانتے تھے اور اُن کے سچے ہت چنتک تھے کنٹرول کے سخت خلاف تھے۔ ہمارا تجربہ بھی ہمیں یہی بتا رہا ہے کہ جب تک کنٹرول اور راشننگ کے محکمے ختم نہیں ہوتے تب تک یہ آج کل کی منہگائی اور جنتا کی مصیبت بھی دور نہیں ہو سکتی۔

जनता राज या समता राज

(भाई अब्दुल हलीम अन्सारी)

यह जनता राज है, यानी हमारा तुम्हारा राज !

यह समता राज है, यानी बराबरी बराबरी का रा

——बराबरी का राज, यानी न्याय राज !

यह 'लोक राज' है, यानी लोगों का राज !

यह 'सब राज' है, यानी सभों का राज !

——सभों का राज, यानी समाज राज, अवाम राज !

यह राज, जन समाज की संस्था है. यह संस्था जनता की का केन्द्र है. इस केन्द्र से जमहूरियत की पुकार है. जमहूरी स जनता की आवाज़ की मशीन है और यह मशीन अवाम के हाथ आधीन है, जो अवाम के हाथ से चलती है.

लोक राज या जन राज—राज होता है राय का, राय का राज हुकूमत होती है बहुमत की, जो उसके चुने वज़ीरों के हाथों में दे दी जाती है, जिनको जनता अपने वोट की क़ीमत पर ख़रीदती है. इसलिए यह कहना ठीक कि यह चुने हुए वज़ीर जनता के "वोट ख़रीद" गुलाम होते हैं. दास और सेवक होते हैं. कारिन्दे और गुमाशते होते

جنتا راج یا سمتا راج

(بھائی عبدالحلیم انصاری)

یہ جنتا راج ہے' یعنی ہمارا تمہارا راج !

یہ سمتا راج ہے' یعنی برابری برابری کا راج !

——برابری کا راج ' یعنی نیائے راج !

یہ ' لوک راج' ہے ' یعنی لوگوں کا راج !

یہ ' سب راج ' ہے ' یعنی سبھوں کا راج !

——سبھوں کا راج یعنی سماج راج ' عوام راج !

یہ راج ' جن سماج کی سنستھا ہے. یہ سنستھا جنتا کا کیندر ہے . اس کیندر سے جمہوریت کی پکار ہے. جمہوری سرکار جنتا کی آواز کی مشین ہے اور یہ مشین عوام کے ہاتھ ادھین ہے' جو عوام کے ہاتھ سے چلتی ہے.

لوک راج یا جن راج——راج ہوتا ہے رائے کا' رائے کا راج حکومت ہوتی ہے بہو مت کی' جو اُس کے چنے وزیروں کے ہاتھوں میں دے دی جاتی ہے' جن کو جنتا اپنے ووٹ کی قیمت پر خریدتی ہے. اِس لئے یہ کہنا ٹھیک کہ وہ چنے ہوئے وزیر جنتا کے "ووٹ خرید" غلام ہوتے ہیں. داس اور سیوک ہوتے ہیں. کارندے اور گماشتے ہوتے ہیں. یعنی دوسرے شبدوں میں جنتا

यही मंत्री जनराज का नियम निज़ाम चलाते हैं. जनता उन पर विश्वास करके सारे काम उनको सौंप देती है, सारे अख्तियार उनको दे देती है. यहाँ तक कि अपनी जान भी उनके हवाले कर देती है और अपनी क़िस्मत भी !

जमहूरी हुकूमत राज होता है विश्वास का, अमानत होती है अवाम की—

जनता राज या समता राज आपसी व्यवहार से बनता है और सेवा व सदाचार से, सच्चाई और इन्साफ़ से, रवादारी और त्याग से. जिसमें कोई अंतर मंतर न हो और किसी प्रकार का भेद-भाव न हो. भेद-भाव की जगह भाई चारा हो और राज काज में भाई भाई का हक़ और इजारा हो. ख़ून के रिश्ते से नहीं...इन्सानियत के नाते से !

मिली जुली बात और मिली जुली आवाज़ से ज़बरदस्त ताक़त और शक्ति मिलती है, जिसको हम सामाजिक शक्ति भी कहते हैं और जन का धन भी.

× × × ×

लेकिन जब मसावात और इन्सानियत ही नहीं तो फिर जमहूरियत का नाम क्यों ?

आज की जमहूरियत में इंसानियत की जो गत बन रही है और इन्साफ़ का जो ख़ून हो रहा है वह खुला अत्याचार है. इस अधिक अत्याचार से यह बात सामने आती है कि ज़िम्मेदार लीडरों, नेताओं, सेवकों और राजनीतिकारों ने कितनी बुरी तरह जनता और समता के शब्दों, अर्थों और आदर्शों को पूरा करने के बारे में अपनी कमज़ोरी दिखलाई और ग़ैर ज़िम्मेदारी ज़ाहिर की है.

یہی منتری جن راج کا نیم نظام چلاتے ہیں۔ جنتا اُن پر وشواس کرکے سارے کام اُن کو سونپ دیتی ہے۔ سارے اختیار اُن کو دے دیتی ہے۔ یہانتک کہ اپنی جان بھی اُن کے حوالے کر دیتی ہے اور اپنی قسمت بھی!

جمہوری حکومت راج ہوتا ہے وشواس کا ' امانت ہوتی ہے عوام کی—

جنتا راج یا سمتا راج آپسی ویوہار سے بنتا ہے اور سیوا و سداچار سے ' سچائی اور انصاف سے ' روا داری اور تیاگ سے۔ جس میں کوئی انتر منتر نہ ہو اور کسی پرکار کا بھید بھاؤ نہ ہو۔ بھید بھاؤ کی جگہ بھائی چارا ہو اور راج کاج میں بھائی بھائی کا حق اور اجارا ہو۔ خون کے رشتے سے نہیں...... انسانیت کے ناتے سے!

ملی جلی بات اور ملی جلی آواز سے زبردست طاقت اور شکتی ملتی ہے ' جس کو ہم سماجک شکتی بھی کہتے ہیں اور جن کا دھن بھی۔

× × × ×

لیکن جب مساوات اور انسانیت ہی نہیں تو پھر جمہوریت کا نام کیوں؟

آج کی جمہوریت میں انسانیت کی جو گت بن رہی ہے اور انصاف کا جو خون ہو رہا ہے وہ کھلا اتیاچار ہے۔ اس ادھک اتیاچار سے یہ بات سامنے آتی ہے کہ ذمے دار لیڈروں ' نیتاؤں ' سیوکوں اور راج نیتی کاروں نے کتنی بری طرح جنتا اور سمتا کے شبدوں ' ارتھوں اور آدرشوں کو پورا کرنے کے بارے میں اپنی کمزوری دکھلائی

पात की फूट पड़ जाय तो इन्सानियत के बंधन टूट

.र आवाज़ आवाज़ में टूट पड़ जाय तो समता का नाता कट . है.

जमहूर राज और समता काल में हमें सोसायटी को इन्साफ़ की तराज़ू में तोलना होगा, उसका हक़ नाप का हिस्सा बाँटना होगा, चाहे वह किसी भी जात पात, रंग रूप और क़ौम या नस्ल का क्यों न हों, उससे हाथ। उसको पास बिठाना होगा. दिल से छूत छात का भाव मिटे दिमाग़ से बड़प्पन का ख़याल निकाल कर.

× × × ×

मालूम है जनता क्या है ?

जनता नाम है सब रंग रूप के मिले जुले भारी संगठन का।

वक़्त आज इन्साफ़ के झूटे नाम लेवाओं के ख़िलाफ़ अ निर्णय और फ़ैसला देना चाह रहा है, जिसके डर से इन्साफ़ के दो देवता जनता से मुंह छिपाये अपने अपने मन्दिरों में छिपे बैठे हैं. सामने आने से हिचकिचा रहे हैं. उनकी ख़ुदाई पर वहशत छा रही है.

जन राज या लोक राज का पहला काम यह है कि मसावात और इंसाफ़ का दर्शन सुंदर और सच्चे रूप में करे. जनता को शक्ति और संतोष पहुंचाये और आदर्श उसका ऊँचा उठाये

اگر جات پات کی پھوٹ پڑ جائے تو انسانیت کے بندھن ٹوٹ جاتے ہیں۔

اگر آواز آواز میں ٹوٹ پڑ جائے تو سمتا کا ناتا کٹ جاتا ہے .

جمہور راج اور سمتا کال میں ہمیں سوسائٹی کے ہر ممبر کو انصاف کی ترازو میں تولنا ہوگا' اُس کا حق ناپنا ہوگا ' اُس کا حصہ بانٹنا ہوگا ' چاہے وہ کسی بھی جات پات' خیال وچار' روپ اور قوم یا نسل کا کیوں نہ ہو' اُس سے ہاتھ ملا' کرپاس بٹھانا ہوگا . دل سے چھوت چھات کا بر دماغ سے بڑپن کا خیال نکال کر .

× × × ×

معلوم ہے جنتا کیا ہے ؟

جنتا نام ہے سب رنگ روپ کے ملے جلے بھاری سنگٹھن کا.

وقت آج انصاف کے جھوٹے نام لیواؤں کے خلاف اپنا نرنے اور فیصلہ دینا چاہ رہا ہے ' جس کے خوف سے انصاف کے دوشی دیوتا جنتا سے منہ چھپائے اپنے اپنے مندروں میں چھپے بیٹھے ہیں. سامنے آنے سے ہچکچا رہے ہیں. اُن کی خدائی پر وحشت چھا رہی ہے.

جن راج یا لوک راج کا پہلا کام یہ ہے کہ مساوات اور انصاف کا درشن سندر اور سچے روپ میں کرے. جنتا کو شکتی اور سنتوش

की खूबसूरती समता से है और समता मे सुन्दरता इन्साफ़से—समता और इन्साफ़ से ही लोक राज या तंत्र राज है. इसलिए जब तक समता और इंसाफ़ साथ साथ नहीं चलेगा——राजकाज नहीं चलेगा. और जब तक बराबरी बराबरी का संबंध और सुखशांति का प्रबंध न हो तो वह जमहूर या न्याय राज नहीं और वह जनता और समता राज नहीं.

× × × ×

प्रेम प्यार, मेल मिलाप, सदाचार एखलाक़, इन्साफ़ न्याय—यह तमाम के तमाम इन्सानियत के खूबसरत गुन हैं. इन्सान के शरीफ़ स्वभाव का भेद भाव इन्हीं से उठता और खुलता है.

ग़रीबों के साथ दोस्ती, हमदर्दी, रहन सहन और मिलनसारी—इसी से रवादारी जागती है और मसावात की महफ़िल सजती है और महफ़िल में शान्ति आकर रचती है—इसलाम ने इन गुनों का अधिकता के साथ शिक्षा दी है और सुंदरता के साथ उनका नाम रोशन रक्खा है. महात्मा गांधी ने इन गुनों को अपने जीवन पर बरत कर अधिक तर इनका प्रचार किया है. रूसी आन्दोलन भी ग़रीब परवरी और मज़दूर नवाज़ी के अन्दाज़में मसावात का प्रचार कर रहा है और इसी नाम पर वह मुल्क मुल्क चल रहा है और फ़ैल रहा है. इसके अलावा आज दुनिया की हर आज़ाद और नाम की मुहज़्ज़ब (सभ्य) हुकूमत इंसाफ़, मसावात और भाई चारे के राग अपने अपने बीन पर गा बजा रही है.

सच यह है कि [illegible]

کي خوبصورتی سمتا سے هے اور سمتا میں سندرتا انصاف سے—سمتا اور انصاف سے هی لوک راج یا تنتر راج هے. اِس لئے جب تک سمتا اور انصاف ساتھ ساتھ نہیں چلے گا——راج کاج نہیں چلے گا. اور جب تک برابری برابری کا سمبندھ اور سکھ شانتی کا پربندھ نہو تو وہ جمہوریا نیائے راج نہیں اور وہ جنتا اور سمتا راج نہیں.

× × × ×

پریم پیار ' میل ملاپ ' سداچار اخلق ' انصاف نیائے——یہ تمام کے تمام اِنسانیت کے خوبصورت گن هیں. اِنسان کے شریف سبھاؤ کا بھید بھاؤ اِنہیں سے اُٹھتا اور کھلتا ہے.

غریبوں کے ساتھ دوستی ' همدردی ' رهن سهن اور ملنساری—اسی سے رواداری جاگتی هے اور مساوات کی محفل سجتی هے اور محفل میں شانتی آکر رچتی هے—اِسلام نے اِن گنوں کی ادھکتا کے ساتھ شکشا دی هے اور سندرتا کے ساتھ اُن کا نام روشن رکھا هے. مہاتما گاندھی نے اِن گنوں کو اپنے جیون پر برت کر ادھک تر اِن کا پرچار کیا هے. روسی آندولن بھی غریب پروری اور مزدور نوازی کے انداز میں مساوات کا پرچار کر رها هے اور اِسی نام پر وہ ملک ملک چل رها اور پھیل رها هے. اِس کے علاوہ آج دنیا کی هر آزاد اور نام کی مہذب (سبھیہ) حکومت اِنصاف، مساوات اور بھائی چارے کے راگ اپنے اپنے بین پر گا بجا رهی هے.

[illegible] انسانیت کی

[illegible] (नमूना) थे. गांधी, [illegible] के प्राण थे. गांधी, ग़रीब हड्डी के ढाचों वाले किसानों की आँखों की रोशनी थे. गांधी निपूती नारियों के पुत्र थे. गांधी लुटी लाज वाली बहनों की लाज थे. गांधी विधवा ललनाओं के सुहाग थे. गांधी भूके नंगे मासूम बच्चों की पवित्र आत्मा थे. तभी तो उनके लिये सारा देश रो रहा था.

भारत माता ने मोहन को जन्म दिया. भारत माता ने मोहन को बनाया. भारतमाता ने मोहन को शक्ति दी. वही मोहन हमारी जनता के, राष्ट्र के पिता हुए, और इसी भारत के एक अभागे कायर ने अपने बाप को क़त्ल किया.

* * * *

बापू की हत्या को पूरे दो बरस हो गये. लोगों ने बापू की यादगारें बनवाईं, उनके नाम पर पैसे इकट्ठे किये और उनकी क़समें भी खाईं. मगर ३० जनवरी १९४८ की शाम को जो भयानक हालत थी, जो ना उम्मीदी, उदासी और बे बसी चारों ओर छाई हुई थी, वही आज भी ज्यों की त्यों बनी हुई है. वही भयानक मंज़र, वही क़ब्रिस्तानी सन्नाटा, वही मुर्दनी. बापू न रहे, बापू का हत्यारा भी न रहा, मगर बापू की पाक यादगार भी जैसे हल्की और कमज़ोर पड़ती जा रही है. क्या इसी मुर्दनी और निराशा के लिये बापू ने सारी ज़िन्दगी कोशिश की थी. क्या यही बापू का आख़िरी पयाम था ? नहीं, नहीं बिलकुल नहीं.

बापू को याद करके, बापू के आशीर्वाद पर भरोसा करके, बापू की हत्या के लिए ज़िम्मेदार ताक़तों से हमें जंग करनी ही होगी.

گاندھی آزادی کی لڑائی کے پرتیک (نمونہ) تھے . گاندھی کانگریس کے پران تھے . گاندھی ' غریب ہڈی کے ڈھانچوں والے کسانوں کی آنکھوں کی روشنی تھے . گاندھی نپوتی ناریوں کے پتر تھے . گاندھی لٹی لاج والی بہنوں کی لاج تھے . گاندھی ودھوا للناؤں کے سہاگ تھے . گاندھی بھوکے ' ننگے ' معصوم بچوں کی پوتر آتما تھے . تبھی تو انکے لئے سارا دیش رو رہا تھا -

بھارت ماتا نے موہن کو جنم دیا . بھارت ماتا نے موہن کو بنایا - بھارت ماتا نے موہن کو شکتی دی . وہی موہن ہماری جنتا کے ' راشٹر کے پتا ہوئے ' اور اسی بھارت کے ایک ابھاگے کایر نے اپنے باپ کو قتل کیا .

* * * *

باپو کی ہتیا کو پورے دو برس ہوگئے . لوگوں نے باپو کی یادگاریں بنوائیں' انکے نام پر پیسے اکٹھے کئے اور انکی قسمیں بھی کھائیں . مگر ۳۰ جنوری سنہ ۱۹۴۸ع. کی شام کو جو بھیانک حالت تھی ' جو ناامیدی' اداسی اور بیبسی چاروں اور' چھائی ہوئی تھی ' وہی آج بھی جیوں کی تیوں بنی ہوئی ہے - وہی بھیانک منظر' وہی قبرستانی سناٹا ' وہی مردنی . باپو نہ رہے ' باپو کا ہتیارا بھی نہ رہا ' مگر باپو کی پاک یادگار بھی جیسے ہلکی اور کمزور پڑتی جارہی ہے . کیا اسی مردنی اور نراشا کے لئے باپو نے ساری زندگی کوشش کی تھی . کیا یہی باپو کا آخری پیام تھا ؟ نہیں ' نہیں ' بالکل نہیں .

باپو کو یاد کرکے ' باپو کے آشیرواد پر بھروسہ کرکے ' باپو کی ہتیا کے لئے ذمے دار طاقتوں سے ہمیں جنگ کرنی ہی ہوگی .

सेवा और मसावात का विश्वास दिलाने वालों के काम कुछ हैं, एलान कुछ, प्रचार कुछ हैं, किरदार कुछ.

जमहूर राज ! शब्दों की खूबसूरती से नहीं चलता, सियासी चालों से नहीं चलता और न इस साधन से जमहूरियत … बीस या पच्चास घोड़ों की बग्घी ज्यादा दूर तक चलाई जा … न वह अपनी शान ज्यादा देर तक बाक़ी रख सकती है.

जमहूरियत ! खुलूसे नीयत और बेलौस खिद… फलती और परवान चढ़ती है. वह ईसार, त्याग और रूह… चलती है. वह प्रेम, मिलाप और मुहब्बत की आग से चल… इन्सानियत का गला घूंट कर नहीं चलती. वह इंसाफ़ का ख़ू… नहीं चलती. वह आँखों पर पट्टी बाँध कर नहीं चलती. वह … बंद करके नहीं चलती. वह जनता से मुंह मोड़ कर नहीं … जनसेवा का रास्ता छोड़ कर नहीं चलती—वह सच का दामन … कर और सेवा का हलफ़ उठा कर चलती है. प्रेम का जाम पी… चलती है—अवाम की ख़िदमत और बेलौस ख़िदमत, जनता … सेवा और निस्स्वार्थ सेवा से ही जमहूरियत अपने असल लक्ष की तरफ़ पहुंचती है.

अंधेरा ही अंधेरा

नेता खाये मक्खन अंडा, जनता खाये सर पर डंडा,
लीडर खाये पुलाव ज़र्दा, जनता खाये ग़म और गुस्सा,

سیوا اور مساوات کا وشواس دلانے والوں کے کام کچھ ہیں، اعلان کچھ، پرچار کچھ ہیں، کردار کچھ.

جمہور راج! شبدوں کی خوبصورتی سے نہیں چلتا، سیاسی چالوں سے نہیں چلتا، اور نہ اس سادھن سے جمہوریت ای کی دس بیس یا پچاس گھوڑوں کی بگھی زیادہ دور تک چلائی جاسکتی ہے اور نہ وہ اپنی شان زیادہ دیر تک باقی رکھ سکتی ہے.

جمہوریت! خلوص نیت اور بے لوث خدمت سے پھ… اور پروان چڑھتی ہے. وہ ایثار، تیاگ اور روح کی … ہے. وہ پریم، ملاپ اور محبت کی آگ سے چلتی ہے. … کا گلا گھونٹ کر نہیں چلتی. وہ انصاف کا خون کر … چلتی. وہ آنکھوں پر پٹی باندھ کر نہیں چلتی. وہ کا… بند کرکے نہیں چلتی. وہ جنتا سے منہ موڑ کر نہیں چ… وہ سیوا کا راستہ چھوڑ کر نہیں چلتی—وہ سچ کا دامن تھام اور سیوا کا حلف اٹھا کر چلتی ہے. پریم کا جام پی کر چلتی ہے —عوام کی خدمت اور بے لوث خدمت، جنتا کی سیوا اور نسوارتھ سیوا سے ہی جمہوریت اپنے اصل لکش کی طرف پہونچتی ہے.

اندھیرا ہی اندھیرا

نیتا کھائے مکھن انڈا، جنتا کھائے سر پر ڈنڈا
لیڈر کھائے پلاؤ زردہ، جنتا کھائے غم اور غصہ

वह खायें दूध मलाई और घी, इनको न मिले बनस्पति भी
वह खायें तर माल, यह खायें सिर्फ़ दाल उबाल
—यह न्याय कब ?

बहुत से इनमें ऐसे भी,
दाल साग भी जिनके भाग में नहीं
नमक की कंकरी से वह रोटी खायँ
और ऊपर से ख़ून के घूंट पीकर रह जायँ
—यह भाई चारा कब ?

वह ऐश पे ऐश उठायें और ऐश में इनको भूल जायें
—यह प्रेम राज कब !

उनको चार चार बार खाना पीना शोभा
इनको चार चार टुक के फ़ाक़े करना और बस सो रहना
—यह समता कब !

उनकी ज़िन्दगी कितनी स्वादिष्ट और मीठी मीठी
इनकी ज़िन्दगी कितनी बेचैन और फीकी सीठी
—यह इन्साफ़ कब !

उनके पास गर्म गर्म और नर्म नर्म बिस्तर
इनके पास धूप दूब और पत्थर
वह सोयें गर्म गर्म कमरों में
वह रातें काटें ठंडी ठंडी सड़कों पर
—यह मसावात कब !

यह नंगे भूके थर थर कांपें
और ज़िंदगी के दिन मुश्किल से काटें

وہ کھائیں دودھ ملائی اور گھی' اِن کو نہ ملے بناسپتی بھی
وہ کھائیں تر مال' یہ کھائیں صرف دال اُبال
— یہ نیائے کب ؟

بہت سے اِن میں ایسے بھی'
دال ساگ بھی جن کے بھاگ میں نہیں
نمک کی کنکری سے وہ روٹی کھائیں
اور اوپر سے خون کے گھونٹ پی کر رہ جائیں
— یہ بھائی چارا کب ؟

وہ عیش پہ عیش اُٹھائیں اور عیش میں اِن کو بھول جائیں
— یہ پریم راج کب ؟

اُن کو چار چار بار کھانا پینا شوبھا
اِن کو چار چار تک کے فاقے کرنا اور بس سو رہنا
— یہ سمتا کب ؟

اُن کی زندگی کتنی سوادشٹ اور میٹھی میٹھی
اِن کی زندگی کتنی بے چین اور پھیکی سیٹھی
— یہ اِنصاف کب

اُن کے پاس گرم گرم اور نرم نرم بستر
اِن کے بستر دھوپ' دوب پتھر
وہ سوئیں گرم گرم کمروں میں
یہ راتیں کاٹیں ٹھنڈی ٹھنڈی سڑکوں پر
— یہ مساوات کب ؟

یہ ننگے بھوکے تھر تھر کانپیں

और उन्हें दूसरे सब लोगों की तरह एक ही से हक़ पाने का अधिकार है. मैं जानता हूँ कि हमारे प्रधान मन्त्री और उप प्रधान मन्त्री इस बात को कितनी तेज़ी से महसूस करते हैं. हमने कम गिनत जातियों के लिये अपने विधान में जो गारन्टियां रखी हैं, अगर हम उन पर अमल न करेंगे तो हम अपने विधान से बेवफ़ाई करेंगे.

जो बात भारत के रहने वालों पर लागू होती है, वह पूरबी बंगाल से आने वाले शरणार्थियों पर तो और भी ज़्यादा लागू होती है. उन्हें अपने पीछे छोड़े हुए अभागे भाई बहनों का ख़याल करना चाहिये जो, अगर उन्होंने यहाँ बदला लेना शुरू किया तो, ख़तरे में पड़ जायंगे. भारती मुसलमानों ने उनका कुछ नहीं बिगाड़ा है. क़ानून को अपने हाथ में लेकर, वह उस हमदर्दी को भी खो बैठेंगे जो उन्हें बिना किसी क़सूर के तकलीफ़ में पड़ने के कारन मिल रही है, और साथ ही इस मसले को पाकिस्तान सरकार के साथ हल करने में वह अपनी सरकार के रास्ते में भी रुकावट बनेंगे. मैं तो अपने आप को पाकिस्तान का सच्चा दोस्त मानता हूँ. क्योंकि मैंने क़रीब दो साल तक उसकी—पूरबी बंगाल की—प्रजा की सेवा करने की कोशिश की है. क्या उस नाते मैं पाकिस्तान सरकार को भी यह सलाह दे सकता हूं ? मैं पूरबी और पच्छिमी दोनों पाकिस्तान के ऐसे लोगों को जानता हूं जिन्हें पूरबी बंगाल की घटनाओं से बेचैनी और बेइज़्ज़ती सी महसूस हो रही होगी. कितना अच्छा होता अगर वह अपनी आवाज़ बुलन्द कर पाते !

اور انهیں دوسرے سب لوگوں کی طرح ایک هی سے حق پانے کا ادهیکار هے . میں جانتا هوں که همارے پردهان منتری اور اُپ پردهان منتری اس بات کو کتنی تیزی سے محسوس کرتے هیں . هم نے کم گنت جاتیوں کے لئے اپنے ودهان میں جو گارنٹیاں رکهی هیں' اگر هم ان پر عمل نه کریں گے تو هم اپنے ودهان سے بیوفائی کرینگے .

جو بات بهارت کے رهنے والوں پر لاگو هوتی هے' وه پوربی بنگال سے آنے والے شرنارتهیوں پر تو اور بهی زیاده لاگو هوتی هے . انهیں اپنے پیچهے چهوڑے هوئے ابهاگے بهائی بهنوں کا خیال کرنا چاهئے جو' اگر انهوں نے یہاں بدله لینا شروع کیا تو' خطرے میں پڑ جائینگے . بهارتی مسلمانوں نے ان کا کچھ نهیں بگاڑا هے . قانون کو اپنے هاتھ میں لیکر وه اس همدردی کو بهی کهو بیٹهینگے جو انهیں بنا کسی قصور کے تکلیف میں پڑنے کے کارن مل رهی هے' اور ساتھ هی اس مسلے کو پاکستان سرکار کے ساتھ حل کرنے میں وه اپنی سرکار کے راستے میں بهی رکاوٹ بنیں گے . میں تو اپنے آپ کو پاکستان کا سچا دوست مانتا هوں' کیونکه میں نے قریب دوسال تک اس کی — پوربی بنگال کی — پرجا کی سیوا کرنے کی کوشش کی هے . کیا اس ناتے میں پاکستان سرکار کو بهی یه صلاح دے سکتا هوں ؟ میں پوربی اور پچهمی دونوں پاکستان کے ایسے لوگوں کو جانتا هوں جنهیں پوربی بنگال کی گهٹناؤں سے بےچینی اور بے عزتی سی محسوس هورهی هوگی . کتنا اچها هوتا اگر وه اپنی آواز بلند کر پاتے !

हक़ीक़त को देखते हुए हमारे सामने तीन रास्ते हैं :

१—तूफ़ान के शिकारों को उनकी हिफ़ाज़त का पूरा वादा करके उनके अपने घरों में फिर से बसाया जाय. कुछ तो भारत में आ गये हैं कुछ पाकिस्तान में अपने लिये बने हुए कैम्पों में पड़े हैं और कुछ अपने अपने गाँवों में ही रह गये हैं. जहाँ उनके घर जबरदस्ती छीन लिये गये हों, वह उन्हें वापस दिलाये जायं. जहाँ उनके घरों को बरबाद कर दिया गया हो, वहाँ नुकसान के हरजाने के साथ नये घर बनवा दिये जायं. गुण्डों और बलवाइयों पर मुकदमा चलाया जाय जिसमें कि कम गिनत लोगों को यह विश्वास हो जाय कि आगे उनके साथ अच्छा बर्ताव होगा.

२—पूरबी बंगाल के कमगिनत लोगों को पूरी हिफ़ाज़त के साथ इकट्ठा रूप में निकाल लिया जाय और पूरबी बंगाल में उन्हें जो नुक़सान उठाना पड़े उसके लिये भारत सरकार मुआवज़ा दे और उन्हें भारत में बसा लेने के लिये ज़रूरत के मुताबिक़ सरहदें भी फिर से तय की जायं.

३—सारी आबादी की लाज़मी अदला बदली, जिस में कमगिनत लोग दोनों देशों में से किसी में भी जितनी जायदाद छोड़ जायँ. उनके दावों का सरकारों के बीच इन्साफ़ भरा निबटारा हो.

حقیقت کو دیکھتے ہوئے ہمارے سامنے تین راستے ہیں :

۱— وطنان کے شکاروں کو ان کی حفاظت کا پورا وعدہ کرکے ان کے اپنے گھروں میں پھر سے بسایا جائے . کچھ تو بھارت میں آگئے ہیں، کچھ پاکستان میں اپنے لئے بنے ہوئے کیمپوں میں پڑے ہیں اور کچھ اپنے اپنے گاؤں میں ہی رہ گئے ہیں . جہاں انکے گھر زبردستی چھین لئے گئے ہوں، وہ انہیں واپس دلائے جائیں۔ جہاں انکے گھروں کو برباد کردیا گیا ہو وہاں نقصان کے ہرجانے کے ساتھ نئے گھر بنوا دیئے جائیں . غنڈوں اور بلوائیوں پر مقدمہ چلایا جائے جس میں کہ کم گنت لوگوں کو یہ وشواس ہو جائے کہ آگے انکے ساتھ اچھا برتاؤ ہوگا .

۲—پوربی بنگال کے کم گنت لوگوں کو پوری حفاظت کے ساتھ اکٹھا روپ میں نکال لیا جائے اور پوربی بنگال میں انہیں جو نقصان اٹھانا پڑے اس کے لئے بھارت سرکار معاوضہ دے اور انہیں بھارت میں بسا لینے کے لئے ضرورت کے مطابق سرحدیں بھی پھر سے طے کی جائیں .

۳—ساری آبادی کی لازمی ادلا بدلی، جس میں کم گنت لوگ دونوں دیشوں میں سے کسی میں بھی جتنی جایداد چھوڑ جائیں، اُن کے دعووں کا سرکاروں کے بیچ انصاف بھرا نبٹارا ہو .

यह साफ़ ज़ाहिर है कि सरहदों को फिर से तय किये बिना निकासियों को मुआवजे का वादा करके बुलाना भारत सरकार की शक्ति के बाहर है. इससे तो वह बरसों के लिये कमज़ोर हो जायगी और अगर आम जनता पर उनका भार डालने की कोशिश की तो उससे जनता में यहाँ की कमगिनत जातियों के ख़िलाफ़ बुरे भाव पैदा हो सकते हैं जिसके कारन हमारे ग़ैर फ़िरक़ा वाराना (सेक्युलर) राज की बुनियाद ही ख़तरे में पड़ जायगी. यह भारत के लिये बड़ी ही बदनसीबी की बात होगी जिस की कल्पना तक नहीं की जा सकती.

तीसरा रास्ता तो दोनों देशों के बीच जंग का ही रास्ता होगा जिससे किसी को फ़ायदा होना तो दूर, उल्टे, जैसे गांधी जी हमें बार बार चेतावनी देते थे, हमारी नई मिली हुई आज़ादी ही हमारे हाथ से निकल जायगी. इससे विश्व युद्ध यानी आलमगीर जंग भी भड़क सकती है.

इसलिये हमारे सामने पहला ही रास्ता रहता है. और हमें साफ़ तौर से समझ लेना चाहिये कि अगर हम वक़्ती जोश में बहेंगे तो उससे हमें कुछ भी फ़ायदा न होगा.

अफ़सोस कि पाकिस्तान सरकार ने भारत और पाकिस्तान की मिली जुली जाँच पड़ताल और दोनों देशों के प्रधानमंत्रियों के दंगे के इलाक़ों के दौरे की तजवीज़ को नामंज़ूर कर दिया है. लोगों में विश्वास पैदा करने के लिये इससे बढ़कर कोई इलाज नहीं हो सकता था. हम आशा करें कि पाकिस्तान सरकार अब भी अपने फ़ैसले पर फिर

یه صاف ظاهر هے که سرحدوں کو پهر سے طے کئے بنا نکاسیوں کو معاوضے کا وعدہ کرکے بلانا بهارت سرکار کی شکتی کے باهر هے. اس سے تو وہ برسوں کے لئے کمزور هو جائیگی اور اگر عام جنتا پر انکا بهار ڈالنے کی کوشش کی تو اس سے جنتا میں یہاں کی کم گنت جاتیوں کے خلاف برے بهاؤ پیدا هو سکتے هیں جس کے کارن همارے غیر فرقه وارانه (سیکولر) راج کی بنیاد هی خطرے پڑجائیگی. یه بهارت کے لئے بڑی هی بد نصیبی کی بات هوگی جس کی کلپنا تک نہیں کی جا سکتی.

تیسرا راسته تو دونوں دیشوں کے بیچ جنگ کا هی راسته هوگا جس سے کسی کو فائدہ هونا تو دور' الٹے' جیسے گاندهي جی همیں بار بار چیتاوني دیتے تهے' هماري نئی ملی هوئي آزادي هي همارے هاتهه سے نکل جائیگی. اس سے وشو یدھ یعنی عالمگیر جنگ بهی بهڑک سکتي هے.

اسلئے همارے سامنے پہلا هی راسته رهتا هے. اور همیں صاف طور سے سمجهه لینا چاهئے که اگر هم وقتی جوش میں بہیں گے تو اس سے همیں کچهه بهی فائدہ نه هوگا

افسوس که پاکستان سرکار نے بهارت اور پاکستان کی ملی جلي جانچ پڑتال اور دونوں دیشوں کے پردهان منتریوں کے دنگے کے علاقوں کے دورے کی تجویز کو نامنظور کردیا هے. لوگوں میں وشواس پیدا کرنے کے لئے اس سے بڑھ کر کوئی علاج نہیں هو سکتا تها. هم آشا کریں که پاکستان سرکار اب اپنے فیصلے پر پهر سے غور

लेकिन वह हो या न हो, और दोनों सरकारें चाहे कुछ भी करें. जो शान्ति के तरीक़ों में विश्वास रखते हैं, और चूंकि उन्होंने तजरबे से समझ लिया है कि लड़ाई से कुछ भी फ़ायदा नहीं होता, उल्टा जिन बुराइयों को वह दूर करना चाहती है उन सारी बुराइयों से मिली खुद एक बुराई बनजाती है, इस लिये वह लड़ाई से नफ़रत करते हैं, ऐसे लोगों के सर भारी ज़िम्मेदारी आजाती है.

शान्ति सेवकों के लिये मौक़ा

भारत और पाकिस्तान दोनों देशोंमें फ्रेन्ड्सर्वीस युनिट के मेम्बरों जैसे पक्के शान्ति वादी काम कर रहे हैं. मुझे आशा है कि भारत और पाकिस्तान में यूरोपियनों में हिन्दुस्तान के सबसे बड़े पादरी मरहूम वेस्टकाट जैसे श्रद्धालु लोग हैं, जो आज की घटनाओं को अपने लिये चैलेन्ज मान रहे हैं मैं ऐसे भी लोगों को जानता हूं जो इस नतीजे पर पहुंच गये हैं कि जहाँ तक इस बड़े मुलक का सम्बन्ध है, गांधी जी के अहिंसा के रास्ते के सिवा इसके लिये कहीं मुक्ति नहीं है. फिर अन्तर राष्ट्रीय रेड क्रास संगठन है. भारती मुसलमानों को भी अपनी सरहद से बाहर के ग़ैर-मुस्लिम भाइयों की सेवा करने की प्रेरणा (तहरीक) हो सकती है.

इन सब टोलियों के लिये यही मुनासिब है कि वह दंगे के इलाक़ों में सही हालतों की जानकारी हासिल करने के लिये जायँ और वहां के बेक़सूर लोगों को आशा दिलायें और उनकी मदद करें. किसी भी देश की सरकार उन्हें अपने मिशन पर जाने से रोके तो उन्हें

لیکن وہ ہو یا نہ ہو، اور دونوں سرکاریں چاہے کچھ بھی کریں جو شانتی کے طریقوں میں وشواس رکھتے ہیں، اور چونکہ انہوں نے تجربہ سے سمجھ لیا ہے کہ لڑائی سے کچھ بھی فائدہ نہیں ہوتا، اُلٹا جن برائیوں کو وہ دور کرنا چاہتی ہے، ان ساری برائیوں سے ملی خود ایک برائی بن جاتی ہے، اسلئے وہ لڑائی سے نفرت کرتے ہیں، ایسے لوگوں کے سر بھاری ذمہداری آجاتی ہے۔

شانتی سیوکوں کے لئے موقع

بھارت اور پاکستان دونوں دیشوں میں فرینڈس سروس یونٹ کے ممبروں جیسے پکے شانتی وادی کام کر رہے ہیں۔ مجھے آشا ہے کہ بھارت اور پاکستان میں یورپینوں میں ہندستان کے سب سے بڑے پادری مرحوم ویسٹ کاٹ جیسے شردھالو لوگ ہیں، جو آج کی گھٹناؤں کو اپنے لئے چیلنج مان رہے ہیں۔ میں ایسے بھی لوگوں کو جانتا ہوں جو اس نتیجے پر پہنچ گئے ہیں کہ جہاں تک اس بڑے ملک کا سمبندھ ہے گاندھی جی کے اہنسا کے راستے کے سوا اس کے لئے کہیں مکتی نہیں ہے پھر انتر راشٹری ریڈ کراس سنگٹھن ہے۔ بھارتی مسلمانوں کو بھی اپنی سرحد سے باہر کے غیر مسلم بھائیوں کی سیوا کرنے کی پریرنا (تحریک) ہو سکتی ہے۔

ان سب ٹولیوں کے لئے یہی مناسب ہے کہ وہ دنگے کے علاقوں میں سہی حالتوں کی جانکاری حاصل کرنے کے لئے جائیں اور وہاں کے بیقصور لوگوں کو آشا دلائیں اور اُنکی مدد کریں۔ کسی بھی دیش کی سرکار انہیں اپنے مشن پر جانے سے روکے تو انہیں

…रा भी ख़याल किये बग़ैर बढ़ना चाहिये. अगर वह रुके तो ग़लत इरादों और मूर्ख शक्तियों के हाथों होती हुई विशुद्ध मानवता यानी ख़ालिस इन्सानियत की शहादत के बेबस तमाशाई बन जायंगे. कामयाबी तभी होगी जब हम सचाई और इन्सानियत को सबसे ऊपर रखेंगे. क्योंकि सत्य और मानवता के बग़ैर पाई हुई शान्ति क़ब्र की शान्ति होगी, जिसके लिये शान्ति नाम ही ग़लत है.

चार साल पहले जब इन्सान के हाथों इन्सान के साथ जो इन्सानी बर्ताव हुए और उससे जब कुछ समय के लिये सत्य परमेश्वर हमारे बीच से उठ गये थे तब गांधी जी ने अपना नोआखाली, बिहार, कलकत्ता और देहली की कड़ी तपस्या से हमें अपने आप ही उन्हें फिर से पाने और अपने बीच बैठाने में मदद दी थी. अगर कम से कम कुछ ही चुने हुए काम करने वाले इस मौक़े के लिये तैयार हो जायं और उनमें काम करने की लगन और हिम्मत हो तो इस संकट के वक़्त भी गांधी जी की आत्मा हमारा साथ नहीं छोड़ेगी.

('हरिजन सेवक' से)

اُسکا ذرا بھی خیال کئے بغیر بڑھنا چاهئے . اگر وہ رکے تو غلط ارادوں اور مورکھ شکتیوں کے هاتھوں هوتی هوئی وشدھ مانوتا یعنی خالص انسانیت کی شهادت کے بے بس تماشائی بن جائیں گے . کامیابی تبھی هوگی جب هم سچائی اور انسانیت کو سب سے اوپر رکھیں گے . کیونکہ ستیہ اور مانوتا کے بغیر پائی هوئی شانتی قبر کی شانتی هوگی، جس کے لئے شانتی نام هی غلط هے .

چار سال پہلے جب انسان کے هاتھوں انسان کے ساتھ جو غیر انسانی برتاؤ هوئے اور اُس سے جب کچھ سمے کے لئے ستیہ اور پرمیشور همارے بیچ سے اُٹھ گئے تھے تب گاندھی جی نے اپنی نواکھالی، بہار، کلکتہ اور دهلی کی کڑی تپسیا سے همیں اپنے آپ هی انهیں پھر سے پانے اور اپنے بیچ بیٹھانے میں مدد دی تھی . اگر کم سے کم کچھ هی چنے هوئے کام کرنے والے اس موقع کے لئے تیار هوجائیں اور ان میں کام کرنے کی لگن اور همت هو تو اس سنکٹ کے وقت بھی گاندھی جی کی آتما همارا ساتھ نہیں چھوڑے گی .

('هریجن سیوک' سے)

"पंच तन्त्र"

संस्कृत से अरबी तरजुमा
(भाई सैयद तमकीन काजिमी)

दुनिया की ज़बानों की माओं में संस्कृत ज़बान भी शामिल है जो न केवल हिन्दुओं की धर्म की भाषा है बल्कि उसमें ऊंचा साहित्य भी मौजूद है. यों तो संस्कृत में करोड़ों जवाहर पारे मौजूद हैं पर उनमें सब से अनमोल रत्न 'पंचतन्त्र' है जिसका दुनिया की तमाम ज़बानों में तरजुमा हो चुका है. यह किताब दूसरी सदी ईसा से पहले की यादगार है. इस को मशहूर विद्वान विष्णु शर्मा ने रचा था. विष्णु शर्मा का लक़ब (उपाधि) विद्यापति।था. इस किताब के लिखे जाने की वजह यह बयान की जाती है./ दक्खिन भारत में एक राजा महेला था. कुछ लोगों का कहना है कि वह दक्खिन भारत का नहीं बल्कि बिहार में पाटलीपुत्र का राजा था. जो हो. वह इस देश का एक राजा था. उसके तीन लड़के थे. यह तीनों बहुत खोटी अक़्ल के और कम समझ थे. राजा ने इन लड़कों को तालीम दिलाने की बहुत कोशिश की पर यह तीनों किसी जोग न हो सके. आखिर राजा ने अपने वज़ीरों को और मुल्क के पाँच सौ बड़े बड़े पंडितों को जमा करके पूछा—"ऐसी औलाद से क्या लाभ जो विद्या से कोरी हो और ऐसी गाय रखने से क्या फ़ायदा जो दूध न देती हो इससे तो अच्छा था कि औलाद ही न होती. आप लोग कोई ऐसा उपाय बतायें कि मैं अपनी औलाद को राज काज और शासन प्रबन्ध

"پنچ تنتر"

سنسکرت سے عربی ترجمہ
(بھائی سید تمکین کاظمی)

دنیا کی زبانوں کی ماؤں میں سنسکرت زبان بھی شامل ہے جو نہ کیول ہندوؤں کی دھرم کی بھاشا ہے بلکہ اُس میں اونچا ساہتیہ بھی موجود ہے یوں تو سنسکرت میں کروڑوں جواہر پارے موجود ہیں پر اُن میں سب سے اَن مول رتن 'پنچ تنتر' ہے جس کا دنیا کی تمام زبانوں میں ترجمہ ہوچکا ہے . یہ کتاب دوسری صدی عیسیٰ سے پہلے کی یادگار ہے. اس کو مشہور ودوان وشنو شرما نے رچا تھا. وشنو شرما کا لقب (اُپادھی) ودیا پتی تھا. اس کتاب کے لکھے جانے کی وجہ یہ بیان کی جاتی ہے . دکھن بھارت میں ایک راجا مہیلا تھا . کچھ لوگوں کا کہنا ہے کہ وہ دکھن بھارت کا نہیں بلکہ بہار میں پاٹلی پتر کا راجا تھا جو ہو، وہ اس دیش کا ایک راجا تھا. اس کے تین لڑکے تھے. یہ تینوں بہت کھوٹی عقل کے اور کم سمجھ تھے. راجا نے ان لڑکوں کو تعلیم دلانے کی بہت کوشش کی مگر یہ تینوں کسی جوگ نہ ہوسکے. آخر راجا نے اپنے وزیروں کو اور ملک کے پانچ سو بڑے بڑے پنڈتوں کو جمع کرکے پوچھا—" ایسی اولاد سے کیا لابھ جو ودیا سے کوری ہو اور ایسی گائے رکھنے سے کیا فائدہ جو دودھ نہ دیتی ہو. اس سے تو اچھا تھا کہ اولاد ہی نہ ہوتی. آپ لوگ کوئی ایسا اُپائے بتائیں کہ میں اپنی اولاد کو راج کاج اور شاشن پربندھ

को तालीम दिला सकूँ." एक पंडित ने कहा—"आप उन्हें बारह साल तक क़वायद यानी व्याकरण पढ़ाइये और उसके बाद मनु का धर्मशास्त्र और चाणक्य का अर्थशास्त्र और वात्स्यायन का कामशास्त्र पढ़ाये इससे उनको अर्थशास्त्र, नीतिशास्त्र, प्रजा पालन, प्रेम और सदाचार में महारत हासिल हो जायगी." दूसरे पंडित ने कहा—"जिन्दगी थोड़े दिन की है और इन विद्याओं के हासिल करने के लिये एक उमर की ज़रूरत है, इसलिये अच्छा है कि कोई नया ढंग निकाला जाय यानी हमको दूध बिलोना चाहिये और उसका मस्का और बालाई राज कुमारों को देनी चाहिये, बिलकुल उस तरह जिस तरह हंस दूध से पानी को अलग कर के सिर्फ़ दूध पी लेता है. हम में विष्णु शर्मा जैसा विद्वान मौजूद है जो अपने वक़्त का महा पंडित है. ए राजा! आप अपने लड़कों को उसके हवाले करदें तो वह बहुत ही कम समय में इन बच्चों को क़ाबिल बना देगा."

राजा ने विष्णु शर्मा को बुला कर कहा—"गुरू जी! मेरे बच्चों पर कृपा कीजिये और इन्हें तालीम दीजिये. मैं हमेशा के लिये आपके नाम एक सौ गाँव की जागीर कर देता हूँ." विष्णु शर्मा ने कहा—"राजा! मैं विद्या को नहीं बेचूंगा. आप के सौ गाँवों का मेरे यहाँ कोई मूल्य नहीं है. मैं एक ब्राह्मण हूँ और हर विद्यार्थी को सिखाना अपना फ़र्ज़ समझता हूँ. मैं विश्वास दिलाता हूँ कि छै महीने के अन्दर आपके बच्चे राज काज और दुनिया के कामों में माहिर हो जायेंगे. मैं क़सम खाता हूँ कि अपने काम में कमी न करूँगा." राजा ने बच्चों को पन्डित जी के हवाले करके इतमीनान का साँस लिया और यह महसूस

کی تعلیم دلا سکوں". ایک پنڈت نے کہا—" آپ انہیں بارہ سال تک قواعد یعنی ویاکرن پڑھائیے اور اس کے بعد منو کا دھرم شاستر اور چانکیہ کا ارتھ شاستر اور واتساین کا کام شاستر پڑھائیے. اس سے ان کو ارتھ شاستر، نیتی شاستر، پرجا پالن، پریم اور سداچار میں مہارت حاصل ہوجائے گی." دوسرے پنڈت نے کہا—"زندگی تھوڑے دن کی ہے اور ان ودیاؤں کے حاصل کرنے کے لئے ایک عمر کی ضرورت ہے، اس لئے اچھا ہے کہ کوئی نیا ڈھنگ نکالا جائے یعنی ہم کو دودھ بلونا چاہئے اور اس کا مسکہ اور بالائی راج کماروں کو دینی چاہئے. بالکل اس طرح جس طرح ہنس دودھ سے پانی کو الگ کرکے صرف دودھ پی لیتا ہے. ہم میں وشنو شرما جیسا ودوان موجود ہے جو اپنے وقت کا مہاپنڈت ہے. اے راجا! آپ اپنے لڑکوں کو اسکے حوالے کر دیں تو وہ بہت ہی کم سمے میں ان بچوں کو قابل بنا دے گا".

راجا نے وشنو شرما کو بلا کر کہا—" گرو جی! میرے بچوں پر کرپا کیجئے اور انہیں تعلیم دیجئے. میں ہمیشہ کے لئے آپ کے نام ایکسو گاؤں کی جاگیر کردیتا ہوں." وشنو شرما نے کہا—"راجا! میں ودیا کو نہیں بیچوں گا. آپکے سو گاؤں کا میرے یہاں کوئی مولیہ نہیں ہے. میں ایک براہمن ہوں اور ہر ودیارتھی کو سکھانا اپنا فرض سمجھتا ہوں. میں وشواس دلاتا ہوں کہ چھ مہینے کے اندر آپ کے بچے راج کاج اور دنیا کے کاموں میں ماہر ہو جائیں گے. میں قسم کھاتا ہوں کہ اپنے کام میں کمی نہ کروں گا". راجا نے بچوں کو پنڈت جی کے حوالے کرکے اطمینان کا سانس لیا اور یہ محسوس

बच्चों को अपने घर लाकर कहानियों की सूरत में तालीम देनी शुरू की. पन्डित जी ने अपनी तालीम को पाँच हिस्सों में बाँटा.

(१) मित्र-भेद यानी दोस्तों को किस तरह एक दूसरे से जुदा किया जाय.

(२) मित्र संप्राप्ति. यानी दोस्तों को कैसे हासिल किया जाय.

(३) काकुलूकीयम्, यानी कौवों और उल्लुओं की जंग.

(४) लब्ध प्रणाशम्. यानी अपनी कमाई का नुकसान.

(५) अपरीक्षित कारकम्. यानी जल्दी में जो काम किये जाते हैं उनके क्या नतीजे होते हैं.

यह कहानियाँ लोमड़ी, शेर भेड़, बैल, मगरमच्छ, कौवे, चूहे, बन्दर, उल्लू, औरतों और देवों की कहानियाँ हैं. इनको ऐसे दिलचस्प ढंग से बयान किया जाने लगा कि तीनों मोटी अक़ल के राजकुमार दिलचस्पी लेने लगे और उन्हें सच्ची बातें समझ कर उनसे सबक सीखने लगे. छै महीने भी न हुए थे कि राजकुमार राजनीति, शासन प्रबंध और दूसरे दुनिया के कामों में न केवल माहिर हो गये बल्कि खुद लिखने पढ़ने और कविता करने लगे.

यह कहानियाँ हिंदुस्तान में आम हो गईं और इनको तरह तरह से संस्कृत ज़बान में बयान करना और पढ़ाना शुरू हो गया. कुछ लोगों ने इसमें "हितोपदेश" को, जो नारायन की लिखी मशहूर कहानी है, शामिल कर दिया और कमंडका की नीतिशास्त्र से अच्छी अच्छी कवितायें भी इसमें शामिल कर दी गईं.

यह कहानियाँ ईसा से सौ बरस पहले से ही सारी दुनिया में मशहूर हो गईं छठवीं सदी ईसवी में जब यह ईरान पहुंचीं तो

بچوں کو اپنے گھر لاکر کہانیوں کی صورت میں تعلیم دینی شروع کی . پنڈت جی نے اپنی تعلیم کو پانچ حصوں میں بانٹا .

(۱) متر بھید' یعنی دوستوں کو کس طرح ایک دوسرے سے جدا کیا جائے .

(۲) متر سمپراپتی' یعنی دوستوں کو کیسے حاصل کیاجائے .

(۳) کاکولو کیم' یعنی کوؤں اور اُلوؤں کی جنگ .

(۴) لبدھ پرناشم' یعنی اپنی کمائی کا نقصان .

(۵) اپریکشت کارکم یعنی جلدی میں جو کام کئے جاتے ہیں ان کے کیا نتیجے ہوتے ہیں .

یہ کہانیاں لومڑی' شیر' بھیڑ' بیل' مگر مچھ' کوے' چوہے' بندر' اُلو' عورتوں اور دیوں کی کہانیاں ہیں . ان کو ایسے دلچسپ ڈھنگ سے بیان کیا جانے لگا کہ تینوں موٹی عقل کے راجکمار دلچسپی لینے لگے اور اُنھیں سچی باتیں سمجھکر ان سے سبق سیکھنے لگے . چھ مہینے بھی نہ ہوئے تھے کہ راج کمار راج نیتی' شاسن پربندھ اور دوسرے دنیا کے کاموں میں نہ کیول ماہر ہوگئے بلکہ خود لکھنے پڑھنے اور کویتا کرنے لگے .

یہ کہانیاں ہندستان میں عام ہوگئیں اور ان کو طرح طرح سے سنسکرت زبان میں بیان کرنا اور پڑھانا شروع ہوگیا کچھ لوگوں نے اس میں ''ہتو پدیش'' کو' جو نارائن کی لکھی مشہور کہانی ہے' شامل کردیا . اور کمنڈکا کی نیتی شاستر سے اچھی اچھی کویتائیں بھی اس میں شامل کردی گئیں .

یہ کہانیاں عیسیٰ سے سو برس پہلے سے ہی ساری دنیا میں مشہور ہوگئیں. چھٹویں صدی عیسوی میں جب یہ ایران پہونچیں تو

अपने देश वासियों से ललकार कर कहना ही होगा. आओ हम सब एक होकर सच्ची आजादी के लिए लड़ें! बापू के हत्यारे के सरपरस्तों को खत्म करें. बापू ने हम लोगों को सत्य और अहिंसा का जो रास्ता बतलाया है, आओ हम सब उस रास्ते पर चलें.

बापू का देश तभी सच्चे मानों में आज़ाद होगा जब बापू के देश वासी भाई भाई की तरह रहना सीखेंगे.

बापू की हत्या वाली सांझ हमें इसी के लिए आगाह कर रही है. बापू की हत्या का यही एक मात्र बदला है. बापू के मासूम खून की एक एक बूँद हमको चुनौती दे रही है.

महात्मा गांधी के बलिदान से सबक़

लेखक—पंडित सुन्दर लाल

साम्प्रदायिकता यानी फ़िरक़ा परस्ती की बीमारी पर राजकाजी, मज़हबी और इतिहासी पहलू से विचार और उसका इलाज, जिसने, आख़िर में देश-पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच में न रहने दिया! क़ीमत बारह आना.

किताब नागरी और उर्दू लिखावटों में अलग अलग मिल सकती है.

मैनेजर 'नया हिन्द'

اپنے دیش واسیوں سے للکارکر کہنا هي هوگا ' آؤ هم سب ایک هوکر سچي آزادي کے لئے لڑیں! باپو کے هتیارے کے سرپرستوں کو ختم کریں – باپو نے هم لوگوں کو ستیه اور اهنسا کا جو راسته بتلایا هے ' آؤ هم سب اس راستے پر چلیں.

باپو کا دیش تبهي سچے معنوں میں آزاد هوگا جب باپو کے دیش واسي بهائي بهائي کي طرح رهنا سیکهیں گے.

باپو کي هتیا والي شام همیں اسي کے لئے آگاہ کر رهي هے. باپو کي هتیا کا یهي ایک ماتر بدلا هے. باپو کے معصوم خون کي ایک ایک بوند هم کو چنوتي دے رهي هے.

مهاتما گاندهی کے بلیدان سے سبق

لیکهک — پنڈت سندر لال

سامپردایکتا یعنی فرقه پرستی کی بیماری پر راج کاجی ' مذهبی اور اتهاسی پہلو سے وچار اور اسکا علاج ' جس نے آخر میں دیش پتا مہاتما گاندهی تک کو همارے بیچ میں نه رهنے دیا! قیمت باره آنه

کتاب ناگری اور اردو لکها وٹوں میں الگ الگ مل سکتی هے.

منیجر "نیا هند"

नौशेरवाँ ने अपने एक मंत्री को हिन्दुस्तान भेजकर "पंचतंत्र" किताब मंगवाई और हकीम बरज़ोया से उसका पहलवी ज़बान में तरजुमा कराया. सन् ५७० ई० मे इसका पहलवी से शामी (सीरियाई) ज़बान में तरजुमा किया गया और सन ७५० ई० में पहलवी से ही अरबी में और उसके बाद अरबी से इबरानी (हेबरू), यूनानी (ग्रीक), लातीनी (लैटिन) ज़बानों में तरजुमे हुए. इसके बाद दुनिया की हर ज़बान में इसका तरजुमा किया गया. सिवाय अंजील के दुनिया की कोई किताब ऐसी नहीं है जिसका तरजुमा इतनी ज़बानों में किया गया हो.

अब्दुल्ला बिन अलमुक़फ़्फ़ा ने जो सन् १४० हिजरी में मरा, 'पंचतंत्र' के पहलवी तरजुमे से अरबी में तरजुमा किया और 'कलैलादमना' उसका नाम रखा. यह दोनों नाम उन दोनों लोमड़ियों के नाम हैं जिनकी कहानी से इस किताब का पहला बाब शुरू होता है. अब्दुल्ला बिन अलमुक़फ़्फ़ा एक ईरानी नसल का नवमुस्लिम विद्वान था जो अरबी साहित्य का भी बड़ा आलिम था. और अरबी अदब और अरबी ज़बान पर पूरी तरह हावी था. यह एक अनोखी बात है कि "पंचतन्त्र" के जितने तरजुमे अलग अलग ज़बानों में हुए वह या तो अब्दुल्ला बिन अलमुक़फ़्फ़ा की अरबी कलैला दमना से हुए या इसी कलैला दमना के किसी तरजुमे से तरजुमे किये गये. सीधे संस्कृत से किसी ने भी तरजुमा नहीं किया. सिर्फ एक आध जैसे मरहठी तरजुमा ऐसा मिलता है जो संस्कृत से किया गया. ख़ुद संस्कृत ज़बान में असली शुरू का "पंचतंत्र" नहीं मिलता. जो किताबें मिलती हैं उनमें [illegible] बाद में जोड़ी हुई हैं. इस तरह इब्नुलमुक़फ़्फ़ा

نوشیرواں نے اپنے ایک منتری کو ھندستان بھیجکر "پنچ تنتر' کتاب منگوائی اور حکیم برزویہ سے اس کا پہلوی زبان میں ترجمہ کرایا . سن ۵۷۰ع میں اس کا پہلوی سے شامی (سیریائی) زبان میں ترجمہ کیا گیا اور سن ۷۵۰ع میں پہلوی سے ھی عربی میں اور اُسکے بعد عربی سے عبرانی (ھبرو) یونانی (گریک) لاطینی (لیٹن) زبانوں میں ترجمے ھوئے . اسکے بعد دنیا کی ھر زبان میں اِسکا ترجمہ کیا گیا سوائے انجیل کے دنیا کی کوئی کتاب ایسی نہیں ھے جس کا ترجمہ اتنی زبانوں میں کیا گیا ھو .

عبدالله بن المقفع نے جو سن ۱۴۰ ھجری میں مرا " پنچ تنتر " کے پہلوی ترجمے سے عربی میں ترجمہ کیا اور 'کلیلہ دمنہ' اس کا نام رکھا . یہ دونوں نام اُن دونوں لومڑیوں کے نام ھیں جن کی کہانی سے اس کتاب کا پہلا باب شروع ھوتا ھے . عبدالله بن المقفع ایک ایرانی نسل کا نو مسلم ودوان تھا جو عربی ساھتیہ کا بھی بڑا عالم تھا اور عربی ادب اور عربی زبان پر پوری طرح حاوی تھا یہ ایک انوکھی بات ھے کہ "پنچ تنتر" کے جتنے ترجمے الگ الگ زبانوں میں ھوئے وہ یا تو عبدالله بن المقفع کی عربی کلیلہ دمنہ سے ھوئے یا اُسی کلیلہ دمنہ کے کسی ترجمے سے ترجمے کئے گئے سیدھے سنسکرت سے کسی نے بھی ترجمہ نہیں کیا . صرف ایک آدھہ جیسے مرھٹی ترجمہ ایسا ملتا ھے جو سنسکرت سے کیا گیا خود سنسکرت زبان میں اصلی شروع کا "پنچ تنتر" نہیں ملتا. جو کتابیں ملتی ھیں ان میں بہت سی کہانیاں بعد میں جوڑی ھوئی ھیں ۔ اس طرح ابن المقفع

ने संस्कृत की यह सेवा की कि उसके एक अनमोल रतन को अमर बनादिया और दूसरी तरफ़ अरबी अदब की यह सेवा की कि कलैला दमना जैसा शाहकार उसमें बढ़ा दिया. कलैला दमना की कहानियों का दोहराना फ़ज़ूल है. शायद ही कोई ऐसा आदमी हो जिसने उन्हें न पढ़ा या सुना हो. अलबत्ता कलैलादमना के लिखने वाले इब्नुलमुक़फ़्फ़ा को बहुत कम लोग जानते हैं.

अब्दुल्ला इब्नुलमुक़फ़्फ़ा ईरान के शहर जूर (जो अब फ़ीरोज़ाबाद कहलाता है) का रहने वाला था. वह पुराने मज़हब के ईरानियों में से था. इस्लाम क़बूल करनेके बाद लेखक की हैसियत से अब्बासी ख़लीफ़ाओं के दरबार में दाख़िल हुआ. इस ज़माने में लेखक यानी कातिब और मुंशी बड़े विद्वान और जानकार और अच्छे अदीब (साहित्यकार) होते थे. ज़ाहिर है कि अब्बासी ख़लीफ़ाओं का मुंशी और कातिब बड़ी क़ाबलियत और योग्यता का था.

अब्दुल्ला इब्नुलमुक़फ़्फ़ा के बाप हजाज बिन यूसुफ़ के ज़माने में सरदफ़्तर माल और तहसीलदार थे और इराक़ की मालगुज़ारी वसूल करते थे. वह कुछ सरकारी रक़म अपने ख़र्च में ले आये इसलिए हजाज ने उन्हें पिटवाया जिसकी वजह से उनके हाथ की उंगलियाँ टूट कर टेढ़ी हो गईं. टेढ़ी उंगलियों वाले को अरबी में क़ुफ़्फ़ा कहते हैं इसलिए यह उनका लक़ब बन गया और उनका बेटा अब्दुल्ला इब्नुलमुक़फ़्फ़ा कहलाने लगा. अब्दुल्ला का नाम पहले दाज़बा था. मुसलमान होने से पहले अपने बाप के साथ रहकर उन्होंने पहलवी ज़बान और ईरानी विद्यायें सीखीं. फिर अरबी सीखी

نے سنسکرت کی یہ سیوا کی کہ اس کے ایک اَن مول رتن کو امر بنا دیا اور دوسری طرف عربی ادب کی یہ سیوا کی کہ کلیلہ دمنہ جیسا شاہکار اس میں بڑھا دیا ۔ کلیلہ دمنہ کی کہانیوں کو دھرانا فضول ہے ۔ شاید ہی کوئی ایسا آدمی ہو جس نے انھیں نہ پڑھا یا سنا ہو ۔ البتہ کلیلہ دمنہ کے لکھنے والے ابن المقفع کو بہت کم لوگ جانتے ہیں

عبداللہ ابن‌المقفع ایران کے شہر جور (جو اب فیروزآباد کہلاتا ہے) کا رہنے والا تھا ۔ وہ پرانے مذہب کے ایرانیوں میں سے تھا ۔ اسلام قبول کرنے کے بعد لیکھک کی حیثیت سے عباسی خلیفاؤں کے دربار میں داخل ہوا ۔ اس زمانے میں لیکھک یعنی کاتب اور منشی بڑے ودوان اور جان‌کار اور اچھے ادیب (ساھتیہ کار) ہوتے تھے۔ ظاہر ہے کہ عباسی خلیفاؤں کا منشی اور کاتب بڑی قابلیت اور یوگیتا کا تھا ۔

عبداللہ ابن المقفع کے باپ حجاج بن یوسف کے زمانے میں سر دفتر مال اور تحصیل دار تھے اور عراق کی مالگذاری وصول کرتے تھے ۔ وہ کچھ سرکاری رقم اپنے خرچ میں لے آئے اس لئے حجاج نے انھیں پٹوایا جس کی وجہ سے ان کے ہاتھ کی انگلیاں ٹوٹ کر ٹیڑھی ہوگئیں ۔ ٹیڑھی انگلیوں والے کو عربی میں قفع کہتے ہیں ۔ اس لئے یہ ان کا لقب بن گیا اور اُن کا بیٹا عبداللہ ابن المقفع کہلانے لگا ۔ عبداللہ کا نام پہلے دا بہ تھا ۔ مسلمان ہونے سے پہلے اپنے باپ کے ساتھ رہ کر انہوں نے پہلوی زبان اور ایرانی ودیائیں سیکھیں پھر عربی سیکھی

ईरानी और अरबी तहज़ीब, कलचर और साहित्य पर पूरा ...बू हासिल किया.

इब्नुलमुक़फ़्फ़ा केवल पहलवी भाषा का ही अदीब नहीं था बल्कि अरबी अदब पर भी उसे पूरा अधिकार था. यह भी अजीब इत्तिफ़ाक़ है कि अरबी ज़बान का सबसे पहला डिक्शेनरी लिखने वाला साहिबे क़ामूस अजमी (ग़ैर अरब) था और सबसे पहला अमर साहित्यकार इब्नुलमुक़फ़्फ़ा भी अजमी था. इब्नुलमुक़फ़्फ़ा की कलैला दमना अरबी साहित्य में शाहकार मानी जाती है और बड़े बड़े साहित्यिकों ने उसकी तारीफ़ और नक़ल की है. अब तक अरबी ज़बान में हज़ारों किताबें अदब और इन्शा पर लिखी गईं और सैकड़ों अदीबों ने इससे बढ़ कर किताब पेश करने की कोशिश की मगर कोई कामयाब न हो सका.

इब्नुलमुक़फ़्फ़ा का चमत्कार तारीफ़ के क़ाबिल है. आज का अरबी विद्यार्थी और लेखक कलैला दमना में वही लोच और मनोहरता पाता है जो आजकल के ऊँचे से ऊँचे साहित्य मे मिलती है. पुराना और बासीपन उसमें बिलकुल नही. जिस तरह फ़ारसी का अदीब 'गुलिस्तां' को पढ़ता और उसमें पुराने और बासीपन की कोई झलक बिलकुल नही पाता है उसी तरह अरबी का अदीब भी इब्नुलमुक़फ़्फ़ा की कलैलादमना को पढ़ता और उसे अपने ही ज़माने की चीज़ समझता है. अरब के बड़े से बड़े लेखकों और विद्वानों ने इब्नुलमुक़फ़्फ़ा की तारीफ़ के गीत गाये है. तबक़ातुल अतिब्बा अलफ़ेहरिस्त. इब्नुलफ़कीह. माजमुलअदिबा. किताबुलमज़हरज ... की भाषा की तारीफ़ की है

اور ایرانی اور عربی تہذیب' کلچر اور ساھتیہ پر پورا قابو حاصل کیا.

ابن المقفع کیول پہلوی بھاشا کا ھي ادیب نہیں تھا بلکہ عربی ادب پر بھی اُسے پورا ادھیکار تھا. یہ بھي عجیب اتفاق ھے کہ عربی زبان کا سب سے پہلا ڈکشنری لکھنے والا صاحب قاموس عجمی (غیر عرب) تھا اور سب سے پہلا امر ساھتیک ابن المقفع بھی عجمی تھا. ابن المقفع کی کلیلہ دمنہ عربی ساھتیہ میں شاھکار مانی جاتی ھے اور بڑے بڑے ساھتیکوں نے اس کی تعریف اور نقل کی ھے. اب تک عربی زبان میں ھزاروں کتابیں ادب اور انشا پر لکھی گئیں اور سیکڑوں ادیبوں نے اس سے بڑھ کر کتاب پیش کرنے کي کوشش کي مگر کوئی کامیاب نہ ھو سکا.

ابن المقفع کا چمتکار تعریف کے قابل ھے. آج کا عربي ودیارتھی اور لیکھک کلیلہ دمنہ میں وھی لوچ اور منوھرتا پاتا ھے جو آج کل کے اُونچے سے اُونچے ساھتیہ میں ملتی ھے. پرانا اور باسي پن اُس میں بالکل نہیں. جس طرح فارسی کا ادیب 'گلستاں' کو پڑھتا اور اس میں پرانے اور باسی پن کی کوئی جھلک بالکل نہیں پاتا ھے. اُسی طرح عربی کا ادیب بھي ابن المقفع کی کلیلہ دمنہ کو پڑھتا اور اُسے اپنے ھی زمانے کی چیز سمجھتا ھے. عرب کے بڑے سے بڑے لیکھکوں اور ودوانوں نے ابن المقفع کی تعریف کے گیت گائے ھیں. طبقات الاطباء الفہرست' ابن الفقیہ' معجم الادبا' کتاب المزھرج وغیرہ نے ایک زبان سے ابن المقفع کی بھاشا کی تعریف کی ھے.

अल्लामा जलालुद्दीन सियोती ने अब्दुलवाहिद लग़वी से रवायत की है कि मुहम्मद बिन सलामअलजमई का बयान है कि मैंने अपने बुज़ुर्गों से सुना कि अरब में मुहम्मद साहब के साथियों के बाद ख़लील बिन अहमद और अजम (ग़ैर अरब) में इब्नुलमुक़फ़्फ़ा से बढ़कर कोई आदमी पैदा नहीं हुआ. यहया बिन खालिद बरमकी अब्बासी ख़लीफ़ाओं का वज़ीर और ख़ुद बहुत बड़ा अदीब और समालोचक था. वह कहता है—"ख़लील बिन अहमद, अब्दुल्ला बिन अलमुक़फ़्फ़ा और अबूहनीफ़ा यह तीन आदमी ऐसे हैं जो अपने फ़न में जवाब नहीं रखते.'

इब्नुलफ़क़ीह जाफ़र बिन यहया बरमकी का एक क़ौल नक़ल करते हैं कि—"अब्दुलमजीद जड़ है. सोहैल बिन हारून शाख़, इब्नुलमुक़फ़्फ़ा मेवा और अहमद बिन यूसुफ़ फूल." ग़रज़ अरब के सभी लेखकों ने इब्नुलमुक़फ़्फ़ा की तारीफ़ की है

(३३३)

इब्नुलमुक़फ़्फ़ा के नीचे लिखे तरजुमों और रचनाओं का अब तक पता लगा है—

(१) ख़ुदाई नामा.
(२) आईन नामा.
(३) कलैला दमना.
(४) किताब मुज़दक,
(५) किताब ताजदर सीरत नौशेरवां
(६) अल्‌आदाब-लकबीर
(७) किताबुलअदब अलसग़ीर
(८) किताबुलयतीमा

علامہ جلال الدین سیوطی نے عبدالواحد لغوی سے روایت کی ہے کہ محمد بن سلام الجمعی کا بیان ہے کہ میں نے اپنے بزرگوں سے سنا کہ عرب میں محمد صاحب کے ساتھیوں کے بعد خلیل بن احمد اور عجم (غیر عرب) میں ابن‌المقفع سے بڑھ کر کوئی آدمی پیدا نہیں ہوا. یحییٰ بن خالد برمکی عباسی خلیفاؤں کا وزیر اور خود بڑا ادیب اور سالوچک تھا. وہ کہتا ہے—"خلیل بن احمد عبداللہ بن‌المقفع' اور ابوحنیفہ یہ تین آدمی ایسے ہیں جو اپنے فن میں جواب نہیں رکھتے.''

ابن‌الفقیہ جعفر بن یحییٰ برمکی کا ایک قول نقل کرتے ہیں کہ—"عبدالمجید جڑ ہے' سہیل‌بن ہارون شاخ' ابن‌المقفع میوہ اور احمد بن‌یوسف پھول" غرض عرب کے سبھی لیکھکوں نے ابن‌المقفع کی تعریف کی ہے.

(۳۳۳)

ابن‌اسقفع کے نیچے لکھے ترجموں اور رچناؤں کا اب تک پتہ لگا ہے—

(۱) خدائی نامہ'
(۲) آئین نامہ'
(۳) کلیلہ دمنہ'
(۴) کتاب مزدک'
(۵) کتاب تاج‌در سیرت نوشیروار'
(۶) الادآب‌الکبیر'
(۷) کتاب الادب 'الصغیر'
(۸) کتاب الیتیمہ'

मशहूर फ़्रान्सीसी लेखक वालटेर को एक कहानी

भलाई का फल

(अनुवादक—शंकर स्वरूप भटनागर एम. ए.)

फीसा गोरस यूनान का एक फ़िलासफ़र था. वह हिन्दुस्तान पढ़ने आया था. जब वह हिन्दुस्तान में पढ़ता था तो उसने जंगली जानवरों और दरख़्तों की ज़बानें सीखली थी. एक दिन जब वह समुन्दर के किनारे टहल रहा था. उसने घास को यह कहते हुए सुना —

" मैं कितनी बदक़िस्मत हूँ कि मैं ने घास की ज़िन्दगी पाई—मैं मुशकिल से दो इंच ही बढ़ पाती हूँ कि कोई मुझे अपने भारी पैरों से कुचल दे। है. जो जानवर मुझे खाता है उसके दाँत तेज़ भालों की तरह होते हैं जिनसे वह मुझे काटता है, चबाता है और निगल जाता है. लोग उसे बकरी कहते हैं—मैं ख़याल करती हूँ कि इस से बढ़ कर नफ़रत की दूसरी कोई चीज़ नहीं है।"

फीसागोरस थोड़ी दूर ही गया होगा कि उसने एक मछली को चटान पर जँमाही लेते देखा. उसने मछली को पकड़ना चाहा मगर वह इन दर्दनाक शब्दों में बोली—

"ऐ भगवान—घास कितनी भागवान है. तूने ही घास को बनाया है और तूने ही मुझ को—घास काट दी जाती है फिर भी उग आती है. पर हम बिचारी मछलियाँ दर्जनों नाशता की जाती हैं और सदा के लिये समाप्त हो जाती हैं—मछलियों की भी कितनी बुरी तक़दीर है और आदमी भी कितने जंगली हैं।"

مشہور فرانسیسی لیکھک والٹیر کی ایک کہانی

بھلائی کا پھل

(انوادک—شنکر سروپ بھٹناگر ایم . اے.)

فیسا گورس یونان کا ایک فلاسفر تھا . وہ ہندستان پڑھنے آیا تھا . جب وہ ہندستان میں پڑھتا تھا تو اس نے جنگلی جانوروں اور درختوں کی زبانیں سیکھ لی تھیں . ایک دن جب وہ سمندر کے کنارے ٹہل رہا تھا' اسنے گھاس کو یہہ کہتے ہوئے سنا —

" میں کتنی بدقسمت ہوں کہ میں نے گھاس کی زندگی پائی. میں مشکل سے دو انچ ہی بڑھ پاتی ہوں کہ کوئی مجھے اپنے بھاری پیروں سے کچل دیتا ہے. جو جانور مجھے کھاتا ہے اسکے دانت تیز بھالو کی طرح ہوتے ہیں جن سے وہ مجھے کاٹتا ہے . چباتا ہے اور نگل جاتا ہے . لوگ اُسے بکری کہتے ہیں — میں خیال کرتی ہوں کہ اس سے بڑھ کر نفرت کی دوسری کوئی چیز نہیں ہے !"

فیسا گورس تھوڑی دور ہی گیا ہوگا کہ اس نے ایک مچھلی کو چٹان پر جماہی لیتے دیکھا . اسنے مچھلی کو پکڑنا چاہا مگر وہ ان دردناک شبدوں میں بولی --

"اے بھگوان—گھاس کتنی بھاگوان ہے تو نے ہی گھاس کو بنایا ہے اور تونے ہی مجھکو—گھاس کاٹ دی جاتی ہے پھر بھی اگ آتی ہے پر ہم بیچاری مچھلیاں درجنوں ناشتہ کی جاتی ہیں اور سدا کے لئے سماپت ہوجاتی ہیں . مچھلیوں کی بھی کتنی بری تقدیر ہے اور آدمی بھی کتنے جنگلی ہیں !"

यह सुनकर वह काँप गया . उसे ऐसा लगा कि वह बड़ा पाप करने वाला था. उसने आँखों में आँसू भर कर मछली से माफ़ी माँगी और उसको वहीं चट्टान पर छोड़ दिया. जैसे ही वह शहर वापस आ रहा था उसने मकड़ियों को मक्खी खाते देखा और अबाबीलों को मकड़ी खाते !!

फिर भी फ़ीसागोरस ने अपने आप को तसल्ली देते हुए कहा— " इनमें से एक भी फ़िलासफ़र नहीं है !!"

जैसे ही वह शहर में दाख़िल हुआ. आदमियों की भीड़ उसे मिली. लोग भाग इधर उधर चिल्लाते हुए दौड़ रहे थे—वह देखता रह गया. उसके चोट लग गई और वह गिर भी पड़ा.

" बहुत अच्छा हुआ. " एक ने कहा— ' वह इसी के लायक़ था. "

" कौन ?" फ़ीसागोरस ने पूछा.

आदमी इधर उधर बराबर दौड़ते रहे और चिल्लाते रहे—' इनको उबलते हुए देखना कितना अच्छा मालूम होगा !!"

फ़ीसागोरस ने ख़याल किया कि शायद इन लोगों का मतलब साग सब्ज़ी को उबलते देखने से है. मगर वह ग़लती पर था. उनका मतलब दो बदनसीब आदमियों से था .

'ओह !' फ़ीसागोरस ने कहा—'यह दोनों बहुत ऊंचे फ़िलासफ़र होंगे जो अपनी ज़िन्दगी से उकता कर दूसरे रूप में पैदा होना चाहते होंगे !!"

वह उस भीड़ के साथ उधर चल दिया जिधर सब लोग जारहे थे. वहाँ पहुँचकर उसने लकड़ियों का एक ढेर और उसके पास लकड़ी

(३३५)

یہ سنکر وہ کانپ گیا . اُسے ایسا لگا کہ وہ بڑا پاپ کرنے والا تھا . اسکے آنکھوں میں آنسو بھر کر مچھلی سے معافی مانگی اور اسکو وھیں چٹان پر چھوڑدیا . جیسے ھی وہ شہر واپس آرھا تھا اس نے مکڑیوں کو مکھی کھاتے دیکھا اور ابابیلوں کو مکڑی کھاتے !! .

پھر بھی فیساگورس نے اپنے آپ کو تسلی دیتے ہوے کہا' ان میں سے ایک بھی فلاسفر نہیں ھے ! '

جیسے ھی وہ شہر میں داخل ہوا آدمیوں کی بھیڑ اُسے ملی . لوگ بھاگ اِدھر اُدھر چلاتے ہوئے دوڑ رھے تھے — وہ دیکھتا رہ گیا . اسکے چوٹ لگ گئی اور وہ گر بھی پڑا .

" بہت اچھا ہوا ". ایک نے کہا — "وہ اسی کے لائق تھا ".

"کون ؟" فیساگورس نے پوچھا .

آدمی اِدھر اُدھر برابر دوڑتے رھے اور چلاتے رھے — "ان کو اُبلتے ہوئے دیکھنا کتنا اچھا معلوم ہوگا !!"

فیساگورس نے خیال کیا کہ شاید اِن کا مطلب ساگ سبزی کو اُبلتے دیکھنے سے ھے . مگر وہ غلطی پر تھا . ان کا مطلب دو بدنصیب آدمیوں سے تھا .

'اوہ !' فیساگورس نے کہا" — یہ دونوں بہت اونچے فلاسفر ہونگے جو اپنی زندگی سے اُکتا کر دوسرے روپ میں پیدا ہونا چاھتے ہونگے !! "

وہ اُس بھیڑ کے ساتھ اُدھر چلدیا جدھر سب جارھے تھے . وھاں پہونچ کر اسنے لکڑیوں کا ایک ڈھیر اور اسکے پاس لکڑی

(٣٣٥)

की एक बेन्च देखी. इस बेन्च पर जज बैठे हुए थे.

उन जजों में एक ईमानदार आदमी भी था जिस को फीसागोरस पहचानता था. उसने फीसागोरस को इस घटना की कथा सुनाई कि इन दो आदमियों की ज़रा भी यह इच्छा नहीं थी कि इनको आग की भेंट कर दिया जावे और यह फैसला दूसरे जजों ने किया था कि वह दोनों ज़िन्दा जला दिये जावे ! एक का कसूर यह था कि उसने झूटा बयान दिया था और दूसरे का खोट यह था कि उसने यह बताया था कि हर धर्म का आदमी मरन के बाद ही स्वर्ग पहुँच सकता है. गाँव की सीधी साधी स्त्रियाँ इन बातों से डर गईं और जब तक कि उन्हों ने जजों को उनको मरवा देने का फैसला देने पर मजबूर न कर दिया तब तक उन स्त्रियों ने जजों को चैन न लेने दिया.

फीसागोरस को विश्वास हो गया कि घास से लेकर आदमी तक हर एक गिरावट के मार्ग पर चल रहा है. फिर भी फीसागोरस ने उन दो आदमियों को छुड़ा लिया.

इसके बाद फीसागोरस क्रोटोना में वियाख्यान देने चला गया. फिर एक कट्टर आदमी ने उसके मकान में आग लगा दी और वह भी जल कर मर गया जिस ने दो आदमियों की जान बचाई थी.

کی ایک بلنچ دیکھی . اس بلنچ پر جج بیٹھے ہوئے تھے .

اُن ججوں میں ایک ایماندار آدمی بھی تھا جس کو فیساگورس پہچانتا تھا . اُس نے فیساگورس کو اس گھٹنا کی کتھا سنائی کہ ان دو آدمیوں کی ذرا بھی یہ اچھا نہیں تھی کہ ان کو آگ کی بھینٹ کردیا جاوے اور یہ فیصلہ دوسرے ججوں نے کیا تھا کہ وہ دونوں زندہ جلا دیئے جاویں ایک کا قصور یہ تھا کہ اس نے جھوٹا بیان دیا تھا اور دوسرے کا کھوٹ یہ تھا کہ اس نے یہ بتایا تھا کہ ہر دھرم کا آدمی مرنے کے بعد ہی سورگ پہونچ سکتا ہے . گاؤں کی سیدھی سادھی اِستریاں ان باتوں سے ڈر گئیں اور جب تک کہ انھوں نے ججوں کو ان کو مروا دینے کا فیصلہ دینے پر مجبور نہ کر دیا تب تک ان استریوں نے ججوں کو چین نہ لینے دیا.

فیساگورس کو وشواس ہوگیا کہ گھاس سے لے کر آدمی تک ہر ایک گراوٹ کے مارگ پر چل رہا ہے پھر بھی فیساگورس نے اُن دو آدمیوں کو چھڑا لیا .

اسکے بعد فیساگورس کروٹونا میں ویاکھیان دینے چلا گیا . ایک کٹر آدمی نے اسکے مکان میں آگ لگادی اور وہ بھی جل کر مرگیا جس نے دو آدمیوں کی جان بچائی تھی .

शरणार्थियों का सवाल

(भाई श्रीकृष्ण दास)

पिछले द'गों ने भारत सरकार और भारत की जनता के सामने जो सबसे बड़ा सवाल खड़ा किया वह था शरणार्थियों को बसाने उनको काम देने और उनको इज्ज़त के साथ ज़िन्दगी बसर करने की सहूलत देने का सवाल. इस सवाल का हल कितना कठिन था और इसमें क्या क्या दिक्क़तें पड़ीं यह तो सरकार और नेताओं के उन बयानों से ज़ाहिर है जो उन्होंने बार बार शाया किये है. प्रधान मंत्री जवाहरलाल और उनके सहयोगी श्री मोहनलाल सक्सेना ने भी इस सवाल की अहमियत की ओर जनता का ध्यान बार बार खींचा है. सरकार ने इस काम में करोड़ों रुपये खर्च किये और अफ़सरों और सेवकों की एक पूरी फ़ौज इस काम मे लग गई. मगर फिर भी, जैसा कि सरकारी बयानो से साफ़ ज़ाहिर है, इन मसलों को सुलझाने में उसे पूरी कामयाबी नहीं हुई. ऐसा क्यों? यह काम तो ऐसा था जिसमें सरकार को जनता का पूरा सहयोग मिला था. फिर भी सरकार की नाकामयाबी क्यों हुई और करोड़ों रुपये बरबाद करने पर भी वह शरणार्थियों के फिर से बसने का पूरा इन्तज़ाम क्यों नहीं कर पाई?

इस समय पूर्वी बंगाल से भागकर जो शरणार्थी आ रहे हैं और जिनको बीच में डालकर चारों ओर से लम्बी लम्बी बातें कही

شرنارتھیوں کا سوال

(بھائی شری کرشن داس)

پچھلے دنگوں نے بھارت سرکار اور بھارت کی جنتا کے سامنے جو سب سے بڑا سوال کھڑا کیا وہ تھا شرنارتھیوں کو بسانے، انکو کام دینے اور انکو عزت کے ساتھ زندگی بسر کرنے کی سہولت دینے کا سوال. اس سوال کا حل کتنا کٹھن تھا اور اس میں کیا کیا دقتیں پڑیں یہ تو سرکار اور نیتاؤں کے اُن بیانوں سے ظاہر ہے جو انہوں نے بار بار شائع کئے ہیں. پردھان منتری جواہر لال اور انکے سہیوگی شری موہن لال سکسینہ نے بھی اس سوال کی اہمیت کی اور جنتا کا دھیان باربار کھینچا ہے. سرکار نے اس کام میں کروڑوں روپئے خرچ کئے اور افسروں اور سیوکوں کی ایک پوری فوج اس کام میں لگ گئی. مگر پھر بھی جیسا کہ سرکاری بیانوں سے صاف ظاہر ہے، ان مسئلوں کو سلجھانے میں اسے پوری کامیابی نہیں ہوئی. ایسا کیوں؟ یہ کام تو ایسا تھا جس میں سرکار کو جنتا کا پورا سہیوگ ملا تھا. پھر بھی سرکار کو ناکامیابی کیوں ہوئی اور کروڑوں روپے برباد کرنے پر بھی وہ شرنارتھیوں کے پھر سے بسنے کا پورا انتظام کیوں نہیں کر پائی؟

اس سمے پوربی بنگال سے بھاگ کر جو شرنارتھی آرہے ہیں اور جن کو بیچ میں ڈال کر چاروں اور سے لمبی لمبی باتیں کہی

जारहीं हैं उनको भी भारत में आकर अपने रहने-बसने के सम्बन्ध में उन्हीं मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा जिनका सामना अभी तक पच्छिमी सूबों से आये शरणार्थियों को करना पड़ रहा है. दिल के जज़्बों को दबा कर दिमाग़ पर कुछ ज़ोर दिया जाय और शरणार्थियों की समस्याओं पर ग़ौर करके उनका कुछ हल निकाला जाय तो देश और राष्ट्र की बड़ी सेवा हो.

पिछले तीन बरस में शरणार्थियों की समस्याओं पर काफ़ी लिखा पढ़ा गया है. मगर अधिकतर या तो उस मसले पर जज़्बाती ढंग से ग़ौर किया गया है या ख़ाली दिमाग़ी तौर से. इस काम को करते समय (यानी शरणार्थियों की समस्याओं को हल करते समय) क्या क्या सवाल सचमुच सामने आते हैं और उनका हल किस तरह निकले इस पर सही ढंग से ग़ौर बहुत कम होता है.

शरणार्थियों की समस्याओं के कई पहलू हैं. (१) जज़्बाती पहलू जो कोई भी लुटा, पिटा, सताया आदमी हमारे सामने आता है उसकी हालत देखकर दिल में उसके लिए दर्द पैदा होना और उसकी इमदाद के लिए तैयार हो जाना स्वाभाविक है. यह दर्द बच्चों के यतीम होने पर या औरतों के बेइज़्ज़त होने पर गहरी सहानुभूति के कारण ग़ुस्से और बदले की भावना की शक्ल ले लेता है. इसी समय सही इमदाद की जगह ऐसी ग़लत कारवाई के लिए हम आमादा हो जाते हैं जिससे देश का नुक़सान तो होता ही है. साथ ही इन शरणार्थियों को भी बहुत नुक़सान पहुंचता है. जज़्बों का उभरना [illegible] हद से बाहर होना खतरनाक है. तब वह

جا رہي ہيں ان کو بھی بھارت میں آکر اپنے رہنے بسنے کے سمبندھ میں انھیں مشکلوں کا سامنا کرنا پڑے گا جن کا سامنا ابھي تک پچھمي صوبوں سے آئے شرنارتھیوں کو کرنا پڑ رہا ھے . دل کے جذبوں کو دبا کر دماغ پر کچھ زور دیا جائے اور شرنارتھیوں کي سمسیاؤں پر غور کرکے ان کا کچھہ حل نکالا جائے تو دیش اور راشٹر کی بڑی سیوا ھو .

پچھلے تین برس میں شرنارتھیوں کی سمسیاؤں پر کافی لکھا پڑھا گیا ھے . مگر ادھک تر یا تو اس مسئلے پر جذباتی ڈھنگ سے غور کیا گیا ھے یا خالی دماغی طور سے . اس کام کو کرتے سمے (یعنی شرنارتیوں کی سمسیاؤں کو حل کرتے سمے) کیا کیا سوال سچ مچ سامنے آتے ھیں اور انکا حل کس طرح نکلے اس پر سہی ڈھنگ سے غور بہت کم ھوتا ھے .

شرنارتھیں کی سمسیاؤں کے کئي پہلو ھیں . (۱) جذباتی پہلو . جو کوئی بھي لٹا پٹا ستایا آدمي ھمارے سامنے آتا ھے اس کی حالت دیکھکر دل میں اس کے لئے درد پیدا ھونا اور اس کی امداد کے لئے تیار ھو جانا سوا بھاوک ھے . یہ درد بچوں کے یتیم ھونے پر یا عورتوں کے بے عزت ھونے پر گہری سہانو بھوتي کے کارن غصے اور بدلے کی بھاؤنا کي شکل لے لیتا ھے . اسی سمے سہي امداد کي جگہ ایسي غلط کارروائی کے لئے ھم آمادہ ھوجاتے ھیں جس سے دیش کا نقصان تو ھوتا ھی ھے . ساتھ ھی ان شرنارتھیوں کو بھي بہت نقصان پہنچتا ھے. جذبوں کا ابھرنا سوا بھاوک ھے جذبوں کا حد سے باھر ھونا خطرناک ھے تب وہ

दोधारी तलवार बन कर दोनों ओर वार करने लगता है. (२) मनोवैज्ञानिक (नफ़िसयाती) पहलू जो लोग बाहर से आते हैं उनके साथ सहानुभूति का जज़्बाती दौर जब ख़त्म हो जाता है तब उन्हीं से ईर्ष्या घृणा, द्वेष, जलन, दुश्मनी तक पैदा होने लगती है. शरणार्थी जब आते हैं तो यह समझ कर कि उनकी हर तरह की सेवा और इमदाद करना यहाँ वालों का फ़र्ज़ है. जहाँ सेवा और इमदाद में ज़रा भी कमी हुई कि बर्दाश्त या इन्तज़ार करने की जगह वह यहाँ वालों को बुरा भला कहने लगते हैं. उन्हें रह रह कर 'अपने देश' की याद आती है, जहाँ की सही या झूट बखान करके वह यहाँ के लोगों को 'बेईमान' 'कमीना' स्वार्थी और जाने क्या क्या कहने लगते हैं. उनके मन की इस हालत के लिए सरकार की दफ़्तरशाही तो ज़िम्मेदार है ही, साथ ही जनता की उपेक्षा और ख़ुद उनकी ख़ुदगर्ज़ी भी (हालाँ कि लुटे-पिटे आदमी की ग़रज़मंदी को माफ़ किया जा सकता है) ज़िम्मेदार है. उद्योग धन्धों, नौकरियों, रहने की जगहों वग़ैरह में दिक़्क़त तो है ही, इन नये आने वाले लोगों के कारन दिक़्क़त, परेशानी और होड़ बहुत बढ़ जाती है. खेती, कारबार, रहने की जगहों, नौकरियों और आमदनी के ज़रियों में नये साझीदारों का आ जाना सबको खलता है. इससे जलन पैदा होती है, लड़ाई-झगड़ा और मनमुटाव के कारण आपस के सम्बन्ध बिगड़ने लगते हैं और कभी कभी हिंसा तक भी हो जाती है. ऐसी हालत में नये मेहमानों (शरणार्थियों) का स्वागत करना कठिन काम हो जाता है. ख़ासतौर से इस समय, जबकि शरणार्थियों के आने रहने का अनुभव लोगों को हो चुका है और उसके गन्दे पहलुओं का भी लोगों ने तजरबा कर लिया

دو دھاری تلوار بن کر دونوں اور وار کرنے لگتا ھے . (۲) منو ویگیانک (نفسیاتی) پہلو . جو لوگ باہر سے آتے ھیں ان کے ساتھ سہانو بھوتی کا جذباتی دور جب ختم ھوجاتا ھے تب انہیں سے ایرشیا گھرنا' دویش' جلن' دشمنی تک پیدا ھونے لگتی ھے . شرنارتھی جب آتے ھیں تو یہ سمجھکر کہ ان کی ھر طرح کی سیوا اور امداد کرنا یہاں والوں کا فرض ھے . جہاں سیوا اور امداد میں ذرا بھی کمی ھوئی کہ برداشت یا انتظار کرنے کی جگہ وہ یہاں والوں کو برا بھلا کہنے لگتے ھیں . انہیں رہ رھکر اپنے دیش کی یاد آتی ھے . جہاں کی سچی یا جھوٹ بکھان کرکے وہ یہاں کے لوگوں کو بے ایمان' کمینہ' سوارتھی' اور جانے کیا کیا کہنے لگتے ھیں . ان کے من کی اس حالت کے لئے سرکار کی دفتر شاھی تو ذمہدار ھے ھی ساتھ ھی جنتا کی اپیکچھا اور خود انکی خودغرض بھی (حالانکہ لٹے پٹے آدمی کی غرض مندی کو معاف کیا جاسکتا ھے) ذمہدار ھے . ادیوگ دھندوں' نوکریوں' رھنے کی جگہوں وغیرہ میں دقت تو ھے ھی' ان نئے آنے والے لوگوں کے کارن دقت' پریشانی اور ھوڑ بہت بڑھ جاتی ھے . کھیتی' کاربار' رھنے کی جگہوں' نوکریوں اور آمدنی کے ذریعوں میں نئے ساجھی داروں کا آجانا سب کو کھلتا ھے . اس سے جلن پیدا ھوتی ھے . لڑائی جھگڑا اور من مٹاؤ کے کارن آپس کے سمبندھ بگڑنے لگتے ھیں اور کبھی کبھی ھنسا تک بھی ھوجاتی ھے ایسی حالت میں نئے مہمانوں (شرنارتھیوں) کا سواگت کرنا کٹھن کام ھو جاتا ھے . خاص طور سے اس سمے جب کہ شرنارتھیوں کے آنے رھنے کا انوبھو لوگوں کو ھوچکا ھے اور اس کے گندے پہلوؤں کا بھی لوگوں نے تجربہ کرلیا

एक संदेश

[भाई रामजी दर]

अपने जीवन में मैं पहली बार तम्बाकू के खेत में सौभाग्य से चहल क़दमी के लिये गया. शुरू शुरू में तम्बाकू की पत्तियों की मंद गंध नागवार मालूम हुई पर उन हरे हरे छोटे पौदों की फैली हुई क़तारों में एक खिंचाव था.

उनकी बू मन में नफ़रत पैदा करती—उनका रूप भाता.

उसी वक़्त मुझे ख़याल आया कि तम्बाकू के इस्तेमाल से आदमी को कितना नुक़सान पहुँचा है.

'क्या इसमें तम्बाकू के पौदे का दोष है?' मैंने अपने आप सवाल किया.

पौदों ने मेरे मन के भाव को ताड़ कर कहा: "महानुभाव, इस में हमारा दोष नाम को भी नहीं है. अगर इजाज़त हो तो हम कुछ अर्ज़ करें."

"ज़रूर"—इतना कह कर, मैंने बड़े ध्यान से पौदों की कथा सुनी.

पौदे बोले—"सुनिये, आप मनुष्य के प्रतिनिधि हैं. आप अपने दिमाग़ और समझ बूझ की वजह से सब जीवों में श्रेष्ठ हैं. हम इन ख़ूबियों से महरूम हैं—लेकिन हमारे और आप के जीवन की आख़िरी मंज़िल एक है—और वह है आनन्द प्राप्त करना. आनन्द एक क़िस्म का नशा है. हमारा नशा तम्बाकू का आनन्द है. आदमी

ایک سندیسہ

[بھائی رام جی در]

اپنے جیون میں میں پہلی بار تمباکو کے کھیت میں سوبھاگیہ سے چہل قدمی کے لئے گیا. شروع شروع میں تمباکو کی پتیوں کی مند گندھ نا گوار معلوم ہوئي پر اُن ہرے ہرے چھوٹے پودوں کی پھیلی ہوئي قطاروں میں ایک کھینچاو تھا.

اُنکی بو من میں نفرت پیدا کرتی—اُنکا روپ بھاتا.

اُسی وقت مجھے خیال آیا کہ تمباکو کے استعمال سے آدمی کو کتنا نقصان پہنچا ہے.

'کیا اس میں تمباکو کے پودے کا دوش ہے؟' میں نے اپنے آپ سوال کیا.

پودوں نے میرے من کے بھاؤ کو تاڑ کر کہا : " مہانوبھاؤ ' اِس میں ہمارا دوش نام کو بھی نہیں ہے. اگر اِجازت ہو تو ہم کچھ عرض کریں."

"ضرور"—اِتنا کہکر ' میں نے بڑے دھیان سے پودوں کی کتھا سنی.

پودے بولے—" سنئے ' آپ منش کے پرتیندھی ہیں. اپنے دماغ اور سمجھ بوجھ کی وجہ سے سب جیووں میں شریشٹ ہیں. ہم اِن خوبیوں سے محروم ہیں—لیکن ہمارے اور آپ کے جیون کی آخری منزل ایک ہے—اور وہ ہے آنند پراپت کرنا. آنند ایک قسم کا نشہ ہے. ہمارا نشہ تمباکو کا آنند ہے. آدمی

है पूरब देश से आने वाले सताये हुए भाई-बहनों की समस्या पर ग़ौर करने और खुद देश और उसकी सरकार के पुराने कारनामों को याद करने पर दिल दहल उठता है. (३) नैतिक पहलू. यह सबसे कठिन, सबसे ज्यादा खतरनाक और सबसे गंभीर प्रश्न है. दंगों और लड़ाई-झगड़ों का आरम्भ तभी होता है जब आदमी आदमी न रह कर जानवर, वहशी, खूनी और जंगली जानवर बन चुका होता है. ऐसे समय वह बच्चों की मासूमियत, औरतों की लाज और बूढ़ों की ज़ईफ़ी का ख़याल न करके उन्हें क़त्ल कर डालता है, उनकी इज्जत लूट लेता है. औरतों के साथ, बच्चों के साथ, बूढ़ों के साथ यह वहशियाना बर्ताव किस मनोदशा में होता है, यह साफ़ है. इस मनोदशा के शिकार प्राणियों को अपना घर-बार छोड़कर सैकड़ों मील दूर दूसरों की दया पर निर्भर रहना पड़े तो उनका नैतिक पतन होना या एख़लाक़ी तौर पर गिरना कुदरती है. उनकी बेबसी से, उनकी ग़रीबी से और उनकी गिरी हुई हालत से बेजा फ़ायदा उठाने वालों की कमी भी नहीं होती. समाज का अंकुश ज़रा सा भी ढीला हो जाने पर अनाचारों, बदचलनी और पतन का रास्ता खुल जाता है. इसके नतीजे मे नैतिक बंधनों का ढीला होना, हर तरह के प्रेम और भाई चारे के सम्बन्धों का खत्म हो जाना, पैसे के बल पर इज्जत असमत की ख़रीदारी का आसान हो जाना. उसके नतीजे में तरह तरह की बीमारियों का फैलना, चोरी, जुआ, शराबख़ोरी वग़ैरह समाज दुश्मन प्रवृतियों का ज़ोर पकड़ जाना भी स्वाभाविक है. शरणार्थी समस्याका यह पहलू भी कितना ... देश की समाजी

(१४०)

ھے پورب دیش سے آنے والے ستائے ھوئے بھائی بہنوں کی سمسیا پر غور کرنے اور خود دیش اور اس کی سرکار کے پرانے کارناموں کو یاد کرنے پر دل دھل اُٹھتا ھے . (۳) نیتک پہلو. یہ سب سے کٹھن' سب سے زیادہ خطرناک اور سب سے گمبھیر پرشن ھے . دنگوں اور لڑائی جھگڑوں کا آرمبھ تبھی ھوتا ھے جب آدمی آدمی نہ رھکر جانور' وحشی' خونی اور جنگلی جانور بن چکا ھوتا ھے . ایسے سمے وہ بچوں کی معصومیت عورتوں کی لاج اور بوڑھوں کی ضعیفی کا خیال نہ کرکے انھیں قتل کرڈالتا ھے اور انکی عزت لوٹ لیتا ھے . عورتوں کے ساتھہ بچوں کے ساتھ' بوڑھوں کے ساتھ یہ وحشیانا برتاؤ کس منودشا میں ھوتا ھے' یہ صاف ھے . اس منودشا کے شکار پرانیوں کو اپنا گھر بار چھوڑ کر سیکڑوں میل دور دوسروں کی دیا پر نربھر رھنا پڑے تو انکا نیتک پتن ھونا یا اخلاقی طور پر گرنا قدرتی ھے . انکی بے بسی سے' انکی غریبی سے اور انکی گری ھوئی حالت سے بیجا فائدہ اُٹھانے والوں کی کمی بھی نہیں ھوتی . سماج کا انکش ذرا سا بھی ڈھیلا ھو جانے پر اناچاروں' بدچلنی اور پتن کا راستہ کھل جاتا ھے اس کے نتیجے میں نیتک بندھنوں کا ڈھیلا ھونا' ھر طرح کے پریم اور بھائی چارے کے سمبندھوں کا ختم ھوجانا' پیسوں کے بل پر عزت عصمت کی خریداری کا آسان ھو جانا' اس کے نتیجے میں طرح طرح کی بیماریوں کا پھیلنا' چوری جوا' شراب خوری وغیرہ سماج دشمن پرورتیوں کا زور پکڑجانا بھی سوابھاوک ھے . شرنارتھی سمسیا کا یہہ پہلو بھی کتنا گمبھیر ھے اور اس کا کتنا گھرا اثر دیش کی سماجی

(۱۴۰)

जिन्दगी पर, देश के रहने वालों की तन्दुरुस्ती पर, उनके नज़रिये पर और उनकी दिमाग़ी हालत पर पड़ता है. इसका तजरबा हमें हो ही चुका है.

इसलिए, इस समय जो लोग आबादी के तबादले और हिंसा प्रतिहिंसा, बदले और खूंरेज़ी की बात करते हैं उनकी नासमझी या समझकर भी समाज दुश्मनी पर दुख होता है. पूरबी बंगाल से आने वाले भाई बहनों की समस्या का हल करना सिर्फ सरकार के बूते की बात नहीं है. यह सिर्फ जनता के भी बूते की बात नहीं है. पिछले तजरबों के बाद हम जनता या सरकार की सिर्फ अपनी खुशी से की हुई सहायता का भरोसा भी नहीं कर सकते. सरकार अपनी दफ़तरशाही की शिकार है. जनता पहले भावुकता, फिर बाद में अपने स्वार्थों की शिकार है. जो खुद इन सर्वनाशी बुराइयों का शिकार हो वह दूसरों की मदद क्या करेगा ?

एक बात जो सबसे अधिक गम्भीर है वह यह है कि बापू के निधन के बाद सच्चे गांधीवादी कार्यकर्ता काम करने की अपनी स्वाभाविक लगन खो बैठे हैं. बिहार के भूचाल और पिछले दंगों के समय उन्होंने जितने ज़ोर के साथ काम किया था वह बात अब इतिहास के पन्नों पर लिखी बात होकर गई है. आम कांग्रेसी कार्य कर्ताओं का क्या कहना ! वह या तो इस समय हिन्दू मुसलमान रह गये हैं या चोर बाज़ारी, घूसखोरी और दूसरे समाज विरोधी कामों में लगे हुए सब का सब कुछ हड़पने वाले मानव वीर ! इनमें अधिक

(१४४)

زندگی پر دیش کے رہنے والوں کی تندرستی پر، اُنکے نظریئے پر اور اُنکی دماغی حالت پر پڑتا ہے ۔ اس کا تجربہ ہمیں ہوہی چکا ہے ۔

اِس لئے اِس سمے جو لوگ آبادی کے تبادلے اور ہنسا پرتی ہنسا ' بدلے اور خونریزی کی بات کرتے ہیں اُن کی ناسمجھی یا سمجھکر بھی سماج دشمنی پر دکھہ ہوتا ہے ۔ پوربی بنگال سے آنے والے بھائی بہنوں کی سمسیا کا حل کرنا صرف سرکار کے بوتے کی کی بات نہیں ہے ۔ یہہ صرف جنتا کے بھی بوتے کی بات نہیں ہے ۔ پچھلے تجربوں کے بعد ہم جنتا یا سرکار کی صرف اپنی خوشی سے کی ہوئی سہایتا کا بھروسہ بھی نہیں کرسکتے ۔ سرکار اپنی دفتر شاہی کی شکار ہے ۔ جنتا پہلے بھاوکتا پھر بعد میں اپنے سوارتھوں کی شکار ہے ۔ جو خود اِن سروناشی برائیوں کا شکار ہو وہ دوسروں کی مدد کیا کریگا ؟

ایک بات جو سب سے ادھک گمبھیر ہے وہ یہہ ہے کہ باپو کے ندھن کے بعد سچے گاندھی وادی کاریہ کرتا کام کرنے کی اپنی سوا بھاوک لگن کھو بیٹھے ہیں بہار کے بھوچال اور پچھلے دنگوں کے سمے اُنہوں نے جتنے زور کے ساتھہ کام کیا تھا وہ بات اب اتہاس کے پنوں پر لکھی بات ہوکر رہ گئی ہے عام کانگریسی کاریہ کرتاؤں کا کیا کہنا ! وہ یا تو اِس سمے ہندو یا مسلمان رہ گئے ہیں یا چوربازاری ' گھوس خوری اور دوسرے سماج وِرودھی کاموں میں لگے ہوئے سب کا سب کچھ ہڑپنے والے مانو ویر ! اِن میں ادھک

तर लोगों से इस कठिन समस्या के हल करने में मदद की आशा करना दुराशा मात्र है तब क्या होगा ? तब क्या होगा ?

वह लोग जिनमें अब भी देश प्रेम, मानव-प्रेम और बापू जी की परम्परा की रक्षा की इच्छा बाकी है, अब चेत जायं और शरणार्थियों की समस्या को हल करने में जुट जायं. अगर समय रहते वह ऐसा न करेंगे तो हमारा शरणार्थी समाज. समाज दुश्मनों के हाथों में, नैतिक दृष्टि से गिरे हुए लोगों के हाथों में, चोर बाजारी करने वालो के हाथो में, दंगे फसादों को बढ़ाकर अपना उल्लू सीधा करने वालों के हाथों में चला जायेगा. ऐसे लोगों के हाथों से हमारे अभागे शरणार्थी भाई बहनों का क्या उपकार होगा ? इसका असर हमारे समाज पर, हमारे देश पर, हमारी आजादी पर, देश की भीतरी शांति, सुरक्षा और व्यवस्था पर क्या होगा ?

शरणार्थी समस्या इस समय हमारी मानवीय भावनाओं, इन्सानी जज्बात को ही चुनौती नहीं दे रही है, वह हमारी देशभक्ति और स्वाधीनता प्रेम को भी झंझोड़ने के लिए सामने आ रही है.

تر لوگوں سے اس کٹهن سمسیا کے حل کرنے میں مدد کي آشا کرنا دراشا ماتر هے تب کیا هوگا ؟ تب کیا هو گا ؟

وہ لوگ جن میں اب بهی دیش پریم ' مانو پریم اور باپوجی کی پرمپرا کي رکشا کی اِچها باقی هے' اب چیت جائیں اور شرنارتهیوں کی سمسیا کو حل کرلے میں جٹ جائیں . اگر سمے رهتے وہ ایسا نہ کرینگے تو همارا شرنارتهی سماج ' سماج دشمنوں کے هاتهوں میں ' نیتک درشتي سے گرے هوئے لوگوں کے هاتهوں میں' چور بازاری کرنے والوں کے هاتهوں میں ' دنگے فسادوں کو بڑها کر اپنا اُلو سیدها کرنے والوں کے هاتهوں میں چلا جائیگا . ایسے لوگوں کے هاتهوں سے همارے ابهاگے شرنارتهی بهائی بهنوں کا کیا اُپکار هوگا ؟ اِس کا اثر همارے سماج پر ' همارے دیش پر اور هماری آزادي پر ' دیش کي بهیتری شانتی ' سرکشا اور ویوستها پر کیا هو گا ؟

شرنارتهي سمسیا اس سمے هماری مانوی بهاونائوں ' انسانی جذبات کو هي چنوتي نهیں دے رهی هے ' وہ هماري دیش بهکتي اور سوادهینتا پریم کو بهی جهنجهوڑنے کے لئے سامنے آرهی هے -

क्या ऐसा हो सकेगा ?

(हिन्दी का भविष्य)

भाई रघुपति सहाय फ़िराक़—

हिन्दी क्या है ? क्या हिन्दी वह है जो हमें श्री मैथिली शरण गुप्त, श्री जयशंकर प्रसाद. श्री निराला, श्री सुमित्रानन्दन पंत और हिन्दी के ९५ फ़ी सदी लेखकों की रचनाओं में नज़र आती है या हिन्दी वह है जो लगभग १५ करोड़ आदमी बोलते और समझते हैं ? अंगरेज़ी, फ़ारसी. और उर्दू लेखकों की रचनाओं की अंगरेज़ी, फ़ारसी और उर्दू इन भाषाओं के बोलने वालों की अंगरेज़ी, फ़ारसी और उर्दू से जितनी निकट है या जितनी मिलती जुलती है या दुनिया भर के साहित्यकारों का भाषा जनता की भाषा और शब्दावली से जितनी निकट है क्या हिंदी साहित्यकारों की भाषा हिंदी बोलने वालों की भाषा से उतनी ही मिलती जुलती और निकट है ? कोई दिन दहाड़े बेहयाई से झूट बोलना चाहे तो कह दे कि हाँ.

अंगरेज़ी साहित्य में कई लाख पन्नों में ऊंचे दरजे की ऐसी रचनायें हैं जिन्हें सुन कर अनपढ़ अंगरेज़ी बोलने वाले अच्छी तरह समझ सकते हैं और जिन्हें दरजा ३ या ४ तक पढ़े हुए अंगरेज़ बेखटके पढ़ सकते हैं. यही हाल उर्दू, फ़ारसी और दुनिया भर की साहित्य का है. यही हाल कबीर, सूर, तुलसी, मीरा बाई, रसखान,

کیا ایسا ہو سکے گا ؟

(ہندی کا بھوشیہ)

[بھائی رگھوپتی سہائے فراق]

ہندی کیا ہے ؟ کیا ہندی وہ ہے جو ہمیں شری میتھلی شرن گپت، شری جے شنکر پرساد شری نرالا، شری سمترانندن پنت اور ہندی کے ۹۵ فیصدی لیکھکوں کی رچناؤں میں نظر آتی ہے یا ہندی وہ ہے جو لگ بھگ ۱۵ کروڑ آدمی بولتے اور سمجھتے ہیں ؟ انگریزی، فارسی، اور اردو لیکھکوں کی رچناؤں کی انگریزی، فارسی اور اردو ان بھاشاؤں کے بولنے والوں کی انگریزی فارسی اور اردو سے جتنی نکٹ ہے یا جتنی ملتی جلتی ہے یا دنیا بھر کے ساہتیہ کاروں کی بھاشا جنتا کی بھاشا اور شبداولی سے جتنی نکٹ ہے کیا ہندی ساہتیہ کاروں کی بھاشا ہندی بولنے والوں کی بھاشا سے اتنی ہی ملتی جلتی اور نکٹ ہے ؟ کوئی دن دہاڑے بے حیائی سے جھوٹ بولنا چاہے تو کہہ دے کہ ہاں .

انگریزی ساہتیہ میں کئی لاکھ پنوں میں اونچے درجے کی ایسی رچنائیں ہیں جنھیں سن کر ان پڑھ انگریزی بولنے والے اچھی طرح سمجھ سکتے ہیں اور جنھیں درجہ ۳ یا ۴ تک پڑھے ہوئے انگریز بے کھٹکے پڑھ سکتے ہیں یہی حال اردو فارسی اور دنیا بھر کی ساہتیہ کا ہے. یہی حال کبیر، سور، تلسی، میرا بائی، رس کھان،

रहीम और मलिक मुहम्मद जायसी की हिन्दी रचनाओं ।का भी है. जनता की भाषा साहित्य बन कर चमक उठी है. ऐसा नहीं हो सका तो पचास बरस तक झक मार कर हिन्दी के उन साहित्यकारों से जिनके शुभ नाम इस लेख के शुरू में बता दिये गये हैं. ऐसा नहीं हो सका आजकल के ६५ फी सदी हिन्दी लेखकों से. " लिखे ईसा, पढ़ें मूसा " मैंने एक बार इस बारे में कहा था:-

कब तक भूला भूलेगी,
तत्सम शब्दों की थैली
किस भाँति फले फूलेगी
यह गड़बड़ सड़बड़ शैली

जनता या समाज की बोली पहले आती है. साहित्य बाद को आता है. जनता की बोली साहित्य की माँ है, माँ की कोख और गोद और हिंडोला है. हिंदी के जितने भी आपस में मिलते जुलते रूप रूपान्तर हैं उन पर आँख खोल कर नज़र डालिये. जीती जागती पूरे समाज में बोली जाने वाली हिंदी के दर्शन कीजिये. उसके नखशिख, उसकी नोक पलक देखिये. इस हिंदी में तत्सम संस्कृत शब्द हज़ारों में एक दो नज़र आयेंगे और वह भी इतने नरम और सहज कि अनपढ़ भी बोले और समझे. लेकिन फ़ारसी अरबी शब्द सौ फ़ीसदी हिन्दी बोलने वालों की बात बात में सुनाई देंगे. हिंदी बोलने वाला [illegible] जिसे हम हिन्दी साहित्य कहते हैं उससे कहीं अधिक

رحیم اور ملک محمد جایسی کی ھندي رچناؤں کا بھي ھے . جنتا کی بھاشا ساھتیہ بن کر چمک اُٹھي ھے . ایسا نہیں ھوسکا تو پچاس برس تک جھک مار کر ھندی کے ان ساھتیہ کاروں سے جن کے شبھ نام اس لیکھ کے شروع میں بتا دئے گئے ھیں ایسا نہیں ھوسکا آج کل کے ۹۵ فیصدی ھندی لیکھکوں سے 'لکھیں عیسیٰ پڑھیں موسیٰ' میں نے ایک بار اس بارے میں کہا تھا : —

کب تک جھولا جھولیگی'
تت سم شبدوں کی تھیلی
کس بھانت پھلے پھولیگی
یہ گڑ بڑ سر بڑ شیلی

جنتا یا سماج کی بولي پہلے آتی ھے' ساھتیہ بعد کو آتا ھے . جنتا کی بولي ساھتیہ کی ماں ھے' ماں کی کوکھ اور گود اور ھنڈولہ ھے . ھندی کے جتنے بھی آپس میں ملتے جلتے روپ رو پانتر ھیں ان پر آنکھہ کھولکر نظر ڈالئے . جیتی جاگتی پورے سماج میں بولي جانے والی ھندي کے درشن کیجئے . اس کے نکھ شکھ' اس کی نوک پلک دیکھئے . اس ھندی میں تت سم سنسکرت شبد ھزاروں میں ایک دو نظر آئینگے اور وہ بھی اتنے نرم اور سہج کہ اَن پڑھ بھی بولے او ر سمجھے . لیکن فارسی عربی شبد سو فیصدي ھندي بولنے والوں کی بات بات میں سنائی دینگے . ھندي بولنے والا ورات سماج جسے ھم ھندی ساھتیہ کہتے ھیں اس سے کہیں ادھک

प्रबल और सजीव शक्ति है. हां तो हिन्दी का असली रूप और उसके सजीव प्रमाण क्या हैं ? वह हैं:—

(१) लगभग ४०,००० तद्भव या देशज ठेठ हिन्दी शब्द.

(२) लगभग ४००० (चार हज़ार) अरबी, फ़ारसी शब्द.

(३) कई सौ अंगरेज़ी और बहुत से दूसरी भाषाओं के शब्द.

(४) थोड़े से तत्सम संस्कृत शब्द.

(५) हज़ारों टुकड़े, महावरे, टकसाली भाषा के नमूने जो

(अ) सौ फ़ीसदी तद्भवदेशज शब्दों से बने हैं.

(ब) अरबी फ़ारसी और तद्भव देशज शब्दों से मिलकर बने हैं.

यह है शब्द कोश उस सजीव हिन्दी का जिसे १५ करोड़ का सजीव समाज बोलता है. इस भाषा को नीचा दिखाने की कोशिश, इसे बिगाड़ कर लिखने की कोशिश, हिन्दी से और हिन्दी बोलने वाले समाज से घृणा करने के बराबर है. ऐसा करने की कोशिश का कारण कुछ गंवारपन है और कुछ शरारत. यह बताना मुश्किल है कि इस बेढंगे प्रयत्न में गंवारपन अधिक है या शरारत.

खड़ी बोली हिन्दी का असली और सच्चा रूप देखना हो तो देहली में बहुत दिनों से बसे हुए लोगों की बोली सुनिये. उस बोली को बहुत बिगाड़ कर, बहुत भद्दा, फूहड़ और सुन्दर से उसे कुरूप

(۳۶۶)

(۳۶۷)

(الف) سو فیصدی تدبھو دیشج شبدوں سے بنے ہیں .

(ب) عربي فارسی اور تدبھو دیشج شبدوں سے ملکر بنے ہیں .

یہ ہے شبد کوش اس سجیو ھندي کا جسے ۱۵ کروڑ کا سجیو سماج بولتا ہے . اس بھاشا کو نیچا دکھانے کي کوشش' اسے بگاڑ کر لکھنے کی کوشش' ھندي سے اور ھندی بولنے والے سماج سے گھرنا کرنے کے برابر ہے . ایسا کرنے کی کوشش کا کارن کچھ گنوار پن ہے' اور کچھ شرارت . یہ بتانا مشکل ہے کہ اس بے ڈھنگے پریتن میں گنوار پن ادھک ہے یا شرارت .

کھڑي بولی ھندی کا اصلی اور سچا روپ دیکھنا ھو تو دھلی میں بہت دنوں سے بسے ہوئے لوگوں کي بولی سنئے . اس بولي کو بہت بگاڑکر ' بہت بھدا' پھوھڑ اور سندر سے اسے کوروپ

बना कर ज्यादातर हिन्दी साहित्यकार पेश कर रहे हैं. यह किस तरह हो रहा है ? इस तरह :–

(१) जुमलों या वाक्यों को टेढ़े मेढ़े उलझे और फुसफुसे ढंग से लिखकर. शब्दों का ग़लत चुनाव करके और शब्दक्रम को उलटा पलटा कर के, सीधी बात को गड़बड़ झाला और गोरख धंदा बना के, कहीं का रोड़ा कहीं की ईंट. या मारे घुटना आँख

(२) चालू तद्भव शब्दों और तद्भव शब्दों के सुन्दर और सिजिल महावरों को तत्सम शब्दों से बदल कर.

(३) दुम कटी, अधूरी क्रियायें लिखकर. ज्यादा तर बल्कि लग-भग सभी हिन्दी लेखक खड़ी बोली की क्रियाओं के रूपों और उनकी शक्ति को जानते ही नहीं. हिन्दी के दूसरे रूपों में क्रियाओं का ऐसा विकास हुआ ही नहीं जैसा खड़ी बोली में हुआ है. क्रियायें खड़ी बोली की सब से महत्व पूर्ण विशेषता हैं. खड़ी बोली की पूरी शक्ति, उसका सारा कस बल उसकी क्रियाओं में है.

(४) सुन्दर तद्भव देशज यानी ठेठ हिन्दी शब्दों का देशनिकाला करने के साथ साथ उन तमाम अरबी फ़ारसी के सुगम सरल शब्दों को निकाल कर, जो पूरा हिन्दी समाज बोलता है, जो खड़ी बोली के जन्म-दिन से हिन्दी में शामिल रहे हैं. जो हिन्दी शब्दों की तरह हमारी भाषा में रस बस

بناکر زیادہ تر هندی ساهتیه کار پیش کر رهے هیں یه کس طرح هو رها هے ؟ اس طرح :—

(۱) جملوں یا واکیوں کو تیڑهے میڑهے الجھے اور پھس پھسے ڈھنگ سے لکھکر ' شبدوں کا غلط چناؤ کر کے اور شبد کرم کو الٹا پلٹا کرکے' سیدھی بات کو گڑ بڑ جھالا اور گورکھ دھندا بناکے کہیں کا روڑا کہیں کی اینٹ یا مارے گٹھنا پھوٹے آنکھ .

(۲) چالو تدبھو شبدوں اور تدبھو شبدوں کے سندر اور سجل محاورں کو تت سم شبدوں سے بدل کر .

(۳) دم کٹی' ادھوری کریائیں لکھکر . زیادہ تر بلکہ لگ بھگ سبھی هندی لیکھک کھڑی بولی کی کریاؤں کے روپوں اور انکی شکتی کو جانتے هی نہیں . هندی کے دوسرے روپوں میں کریاؤں کا ایسا وکاس هوا هی نہیں جیسا کھڑی بولی میں هوا هے کریائیں کھڑی بولی کی سب سے مہتو پورن و شیشتا هیں . کھڑی بولی کی پوری شکتی' اس کا سارا کس بل اس کی کریاؤں میں هے .

(۴) سندر تدبھو دیشج یعنی ٹھیٹھ هندی شبدوں کا دیس نکالا کرنے کے ساتھ ساتھ ان تمام عربی فارسی کے سگم سرل شبدوں کو نکال کر' جو پورا هندی سماج بولتا هے' جو کھڑی بولی کے جنم دن سے هندی میں شامل رهے هیں جو هندی شبدوں کی طرح هماری بھاشا میں رس بس گئے هیں اور جن کے بنا هم اپنے ...

और वचार जाहिर करहा नही सकत, जिनके बिना हम तुतले और गूंगे होजाते हैं.

(५) शब्दो के महवारे दार प्रयोग और महावरो से अनजान रह कर. एक उर्दू कवि की रचना मे जितने हिन्दी महवरे नगोनों की तरह जड़े हुए मिलते हैं. सौ बरस के हिन्दी लेखको का कुल पुस्तको में उनने महावरे नहीं मिलेंगे. बोल चाल का रस हिन्दी साहित्य में मिलता ही नहीं

(६) चालू भाषा के बदले रट्टू भाषा लिखकर. कोश में दिया हुआ हर तत्सम संस्कृत शब्द न टकसाली होता है न टकसाली भाषा में मिलाने के जोग होता है. संस्कृत शब्दों की अन्धाधुन्द भरमार करके ज्यादा तर हिन्दी लेखक भाषा को कुरूप और विकराल बना देते हैं. कोश से संस्कृत शब्दो के संकलन का सलीका होना चाहिये तभी भाषा और शैली में सुघड़ापा आ सकता है. इतनी सूझ बूझ मैं भी रखता हूं कि हिन्दी रचनाओं मे तत्सम संस्कृत शब्दों की जरूरत आ पड़ती है. लेकिन हर संस्कृत शब्द रत्न या नगीना नहीं है. पिछले कई बरसो मे हिन्दी मे जितने संस्कृत शब्द लाये गये हैं उनमें आधे से अधिक वर्जनीय (मतरूक) हैं. इसी लदाई से हिन्दी की चाल भैसा गाड़ी की चाल होकर रह गई है. मेरी बात बुरी लगे तो लगने

اور وچار ظاهر کر هی نهیں سکتے' جن کے بنا هم تتلے اور گونگے هو جاتے هیں .

(٥) شبدوں کے محاورے دار پریوگ اور محاوروں سے ان جان رہ کر . ایک اردو کوی کی رچنا میں جتنے هندی محاورے نگینوں کی طرح جڑے هوے ملتے هیں سو' برس کے هندی لیکهکوں کی کل پستکوں میں اتنے محاورے نهیں ملینگے . بول چال کا رس هندی ساهتیه میں ملتا هي نهیں .

(٦) چالو بهاشا کے بدلے رٹو بهاشا لکهکر کوش میں دیا هوا هر تت سم سنسکرت شبد نه ٹکسالی هوتا هے نه ٹکسالی بهاشا میں ملانے کے جوگ هوتا هے . سنسکرت شبدوں کي اندها دهند بهرمار کرکے زیاده تر هندي لیکهک بهاشا کو کوروپ اور وکرال بنا دیتے هیں . کوش سے سنسکرت شبدوں کے سنکلن کا سلیقه هونا چاهئے . تبهی بهاشا اور شیلی میں سگهڑاپا آسکتا هے . اتني سوجه بوجه میں بهي رکهتا هوں که هندي رچناؤں میں تتسم سنسکرت شبدوں کي ضرورت آ پڑتی هے . لیکن هر سنسکرت شبد رتن یا نگینه نهیں هے . پچهلے کئي برسوں سے هندی میں جتنے سنسکرت شبد لائے گئے هیں ان میں آدهے سے ادهک ورجنیه (متروک) هیں . اسی لدائی سے هندي کی چال بهینسا گاڑی کی چال هوکر رہ گئي هے میری بات بري لگے تو لگنے

दीजिये लेकिन इसे मान ज़रूर लीजिये. न जाने क्यों यहाँ मुझे अपना यह उर्दू शेर याद आगया—

दुबिधा पैदा करदे दिल में ईमानों* को दे टकराने
बात वह कह ऐ इश्क़ कि सुनकर सब क़ायल हों कोई न माने.

अब मैं फिर मतलब पर आता हूं. इस लेख का शीर्षक है, क्या ऐसा हो सकेगा ? आप पूछेंगे क्या कैसा हो सकेगा ? कुछ लोग कहते हैं कि दस, बीस, पचास साल तक हिन्दी में उन संस्कृत शब्दों की भरमार होने दीजिये जिन्हें आज कोई नहीं बोलता. कुछ दिनों बाद यही जटिल और अपरिचित शब्द, यही असाधारण शब्द करोड़ों आदमियों की ज़बानों पर चढ़ जांयगे. यह भी कहा जाता है कि उर्दू पढ़ना छोड़कर जब लोग हिन्दी पढ़ेंगे तो हिन्दी पुस्तकों में समाज व्यापी प्रचलित अरबी फ़ारसी शब्द जब न पायेंगे तो थोड़े दिनों में यह सुगम सरल टकसाली अरबी फ़ारसी शब्द लोग भूल जांयगे. बोलो हिन्दी की जय ! इस तरह सांप भी मर जायगा, लाठी भी न टूटेगी. मैं कहता हूँ ठीक, लेकिन क्या ऐसा हो सकेगा ?

भाषायें दस बीस पचास या सौ बरस में नहीं बदलती. हिन्दी पन्द्रह करोड़ के जीते जागते समाज की सजीव भाषा है. हिन्दी कोई खर पतवार नहीं कि उसे झाड़ बुहार कर फेंक दिया जाय. पूरे समाज की टकसाली बोली डेढ़ दो हज़ार बरसों में इतना बदलती है जितना मनमानी हिन्दी वाले, किताबी हिन्दी वाले, पंडिताऊ हिंदी वाले उस सजीव हिंदी को बदलने की सोच रहे हैं जो पंद्रह

* ईमानों = विश्वासों.

دیجئے لیکن اِسے مان جرور لیجئے . نہ جانے کیوں یہاں مجھے اپنا یہ اردو شعر یاد آگیا —

دوبدھا پیدا کردے دلوں میں ایمانوں * کو دے ٹکرانے
بات وہ کہہ اے عشق کہ سن کر سب قایل ہوں کوئی نہ مانے

اب میں پھر مطلب پر آتا ہوں . اس لیکھ کا شیرشک ہے کیا ایسا ہوسکیگا ؟ آپ پوچھیں گے کیا کیسا ہوسکیگا ؟ کچھہ لوگ کہتے ہیں کہ دس' بیس' پچاس سال تک ہندی میں ان سنسکرت شبدوں کی بھرمار ہونے دیجئے جنھیں آج کوئی نہیں بولتا . کچھ دنوں بعد یہی جٹل اور اپرچت شبد یہی اسا دھارن شبد کروڑوں آدمیوں کی زبانوں پر چڑھ جائینگے . یہ بھی کہا جاتا ہے کہ اردو پڑھنا چھوڑ کر جب لوگ ہندی پڑھینگے تو ہندی پستکوں میں سماج ویاپی پر چلت عربی فارسی شبد جب نہ پائینگے تو تھوڑے دنوں میں یہ سگم' سرل ٹکسالی عربی فارسی شبد لوگ بھول جائینگے . بولو ہندی کی جے ! اس طرح سانپ بھی مرجائیگا' لاٹھی بھی نہ ٹوٹے گی میں کہتا ہوں ٹھیک' لیکن کیا ایسا ہوسکیگا ؟

بھاشائیں دس بیس پچاس یا سو برس میں نہیں بدلتیں . ہندی پندرہ کروڑ کے جیتے جاگتے سماج کی سجیو بھاشا ہے . ہندی کوئی کھرپتوار نہیں کہ اُسے جھاڑ بہار کر پھینک دیا جائے پورے سماج کی ٹکسالی بولی ڈیڑھ دو ہزار برسوں میں اتنا بدلتی ہے جتنا من مانی ہندی والے' کتابی ہندی والے' پنڈتاؤ ہندی والے اُس سجیو ہندی کو بدلنے کی سوچ رہے ہیں جو پندرہ

ایمانوں = وشواسوں .

करोड़ कंठों मे बसी हुई और पंद्रह करोड़ जीभो पर चढ़ी हुई है. दस पांच भी प्रचलित शब्द पचासों बरस में बदलते या मिटते हैं. चाहे वह हिन्दी के हों चाहे फारसी अरबी के चालू शब्द हों. तत्सम संस्कृत शब्द (पारिभाषिक या टेकनिकल शब्दों के अलावा जो बोली तो दूर रही उच्चतम पुस्तकों में भी जरूरत के मुताबिक एक आध फीसदी प्रायः आते हैं) भी ऊंची तुली तादाद में ही हिन्दी में खपाये और पचाये जा सकते हैं. यह भी उसी हालत में जब हिन्दी या प्रचलित सुगम सरल अरबी फारसी शब्द वह भाव या अर्थ देने वाले न हों और जब इन तत्सम शब्दों की बनावट और उनका रूप हिन्दी के सांचे में ढल सकता हो. ऐसा न हो तो दस बीस पचास बरस बाद साहित्य की हर किताब रद्दी और बेकार हो जायगी और हर पीढ़ी की बोली या दो तीन पीढ़ियों के बाद की बोली ऐसी बदल जायगी कि उसे पहचानना मुश्किल हो जाय. समाजी जीवन और उस जीवन की अनमोल उपज साहित्य की शृंखला टूट जायगी और आए दिन के झटकों से हर दस बीस पचास बरस बाद टूटती रहेगी. किताबों की टाल से, कागज की चादरों से भाषा का गगन खेलता हुआ पानी, ठाठे मारता हुआ समुन्दर रोका नहीं जासकता. जनता की बोली साहित्य की भाषा बनाती है. किताबें जनता की भाषा नहीं बनातीं. हां, किताबें जनता की बोली और शब्द कोश मे बहुत थोड़े से नये लेकिन सुगम शब्दों की बढ़ती कर सकती हैं न कि जनता की बोली मे ऐसी तोड़ मरोड़ मचा देना जैसी हिन्दी किताबें ज्यादातर कर रही हैं, इस आशा मे कि यही एक दिन सब की बोली बन जायगी.

کروڑ کنٹھوں میں بسی ہوئی اور پندرہ کروڑ جیبھوں پر چڑھی ہوئی ہے. دس پانچ بھی پرچلت شبد پچاسوں برس میں بدلتے یا مٹتے ہیں . چاہے وہ ہندی کے ہوں چاہے فارسی عربی کے چالو شبد ہوں . تت سم سنسکرت شبد (پاریبھاشک یا ٹکنیکل شبدوں کے علاوہ جو بولی تو دور رہی اُچچ تم پستکوں میں بھی ضرورت کے مطابق ایک آدھ فیصدی پرایہ آتے ہیں) بھی جنچی تلی تعداد میں ہی ہندی میں کھپائے اور پچائے جاسکتے ہیں . یہ بھی اسی حالت میں جب ہندی یا پرچلت سگم سرل عربی فارسی شبد وہ بھاو یا ارتھ دینے والے نہ ہوں اور جب ان تت سم شبدوں کی بناوٹ اور اُن کا روپ ہندی کے سانچے میں ڈھل سکتا ہو . ایسا نہ ہو تو دس بیس پچاس برس بعد ساہتیہ کی ہر کتاب ردی اور بیکار ہو جائیگی اور ہر پیڑھی کی بولی یا دو تین پیڑھیوں کے بعد کی بولی ایسی بدل جائیگی کہ اُسے پہچاننا مشکل ہوجائے. سماجی جیون اور اُس جیون کی انمول اُپج ساہتیہ کی شرنکھلا ٹوٹ جائیگی اور آئے دن کے جھٹکوں سے ہر دس بیس پچاس برس بعد ٹوٹتی رہے گی . کتابوں کی ٹال سے' کاغذ کی چادروں سے بھاشا کا گگن کھیلتا ہوا پانی ' ٹھاٹھیں مارتا ہوا سمندر روکا نہیں جاسکتا . جنتا کی بولی ساہتیہ کی بھاشا بناتی ہے . کتابیں جنتا کی بھاشا نہیں بناتیں. ہاں کتابیں جنتا کی بولی اور شبد کوش میں بہت تھوڑے سے نئے لیکن سگم شبدوں کی بڑھتی کر سکتی ہیں نہ کہ جنتا کی بولی میں ایسی توڑ مروڑ مچا دینا جیسی ہندی کتابیں زیادہ تر کر رہی ہیں اس آشا میں کہ یہی ایک دن سب کی بولی بن جائیگی .

हम से हमारा नशा छीन कर, खुद आनन्द कभी नहीं पा सकता. उसे तो किसी और नशे की जरूरत है. हमें खा कर वह हमें नष्ट करता है और अपने आप को भी.''

तम्बाकू की पौदों के ज्ञान भरी और गहरी बात सुनकर मैं शर्मिन्दा हुआ, तम्बाकू की ओर मेरा मान बढ़ा.

बिदा होते वक़्त पौदों ने मुझसे बिन्ती की—''कृपा करके हमारा संदेसा अपनी बिरादरी में पहुँचा दीजियेगा.''

मैंने ऐसा करने की हामी भरली.

ہم سے ہمارا نشہ چھین کر، خود آنند کبھی نہیں پا سکتا. اُسے تو کسی اَور نشے کی ضرورت ہے. ہمیں کھاکر وہ ہمیں نشٹ کرتا ہے اَور اپنے آپ کو بھی.''

تمباکو کی پودوں کی گیان بھری اَور گہری بات سنکر میں شرمندہ ہوا، تمباکو کی اَور میرا مان بڑھا.

بدا ہوتے وقت پودوں نے مجھ سے بنتی کی—'' کرپا کرکے ہمارا سندیسہ اپنی برادری میں پہنچا دیجئیگا.''

میں نے ایسا کرنے کی حامی بھرلی.

लेकिन क्या ऐसा हो सकेगा कि जनता अपने कंठों और जीभों में रची और बसी हुई बोली को भुला के टेढ़ी मेढ़ी और अटपट किताबी भाषा बोलने लगे ? किताबी भाषा से पाला ९९ फीसदी लोगों का घन्टे आध घंटे रोजाना होगा. विराट समाज और उसकी बोली उनके जनम मरन के साथी होंगे. किताब के जटिल शब्द जै बार उनके कानों में गूंजेगे उन से हजार गुना सीधे सादे प्रचलित बोल चाल के शब्द उनके कानों में गूंजेंगे. किताबों द्वारा बोलियां नहीं बदला करतीं. बोली की शक्ति किताबों को मिटा देती है. संस्कृत बदल कर हिन्दी बन गई. संस्कृत में न कोई अब बात चीत करता है न लिखता पढ़ता है. हिन्दी संस्कृत प्रधान भाषा कभी न बन सकेगी. ऐसा कभी नहीं हो सकेगा. ऐसा होना भाषा विज्ञान, समाज शास्त्र, साहित्य और इतिहास के नियमो और शक्तियों के विरुद्ध होगा. उलटी गंगा बहाने का सपना, बालू की रस्सी बटने का सपना देखा कीजिये. यह सपना सपना ही रहेगा.

(३५०)

अंत में मुझे एक प्रबल सिद्धांत एक अटल असूल की तरफ सब का ध्यान खींचना है. जब तक लोग अनपढ़ हैं, जब तक हिन्दी को बनाने बिगाड़ने वाले एक हज़ार में एक आध लोग हैं, जब तक मुट्ठी भर क़लम के सूरमा साहित्य के मैदान में पैंतरे दिखा रहे हैं तभी तक हिन्दी को संस्कृत गर्भित और संस्कृत प्रधान भाषा बनाने का और जनता की हिन्दी के प्रचलित टकसाली तद्भव, देशज, अरबी फ़ारसी शब्दों से ठिनकने और उनसे छुआछूत करने की जड़ता मूढ़ता शरारत और प्रतिक्रिया चल सकती है.

لیکن کیا ایسا ہوسکیگا کہ جنتا اپنے کنٹھوں اور جیبھوں میں رچی اور بسی ہوئی بولی کو بھلا کے ٹیڑھی میڑھی اور اٹ پٹ کتابی بھاشا بولنے لگے ؟ کتابی بھاشاسے پالا ۹۹ فیصدی لوگوں کا گھنٹے آدھ گھنٹے روزانہ ہوگا ۔ ورات سماج اور اس کی بولی ان کے جنم مرن کے ساتھی ہونگے ۔ کتاب کے جٹل شبد جے بار ان کے کانوں میں گونجیں گے ان سے ہزار گنا سیدھے سادے پر چلت بول چال کے شبد اُن کے کانوں میں گونجیں گے کتابوں دوارا بولیاں نہیں بدلا کرتیں ۔ بولی کی شکتی کتابوں کو مٹا دیتی ہے سنسکرت بدل کر ہندی بن گئی ۔ سنسکرت میں نہ کوئی اب بات چیت کرتا ہے نہ لکھتا پڑھتا ہے ۔ ہندی سنسکرت پردھان بھاشاکبھی نہ بن سکیگی ایسا کبھی نہیں ہوسکے گا ۔ ایسا ہونا بھاشا وگیان، سماج شاستر، ساہتیہ اور اتہاس کے نیموں اور شکتیوں کے ورودھ ہوگا ۔ الٹی گنگا بہانے کا سپنا، بالو کی رسی بٹنے کا سپنا دیکھا کیجئے ۔ یہ سپنا سپنا ہی رہیگا

(٣٥٠)

انت میں مجھے ایک پربل سدھانت، ایک اٹل اصول کی طرف سب کا دھیان کھینچنا ہے جب تک لوگ ان پڑھ ہیں، جب تک ہندی کو بنانے بگاڑنے والے ایک ہزار میں ایک آدھ لوگ ہیں، جب تک مٹھی بھر قلم کے سورما ساہتیہ کے میدان میں پینترے دکھا رہے ہیں تبھی تک ہندی کو سنسکرت گربھت اور سنسکرت پردھان بھاشا بنانے کی اور جنتا کی ہندی کے پرچلت ٹکسالی تدبھو، دیشج عربی فارسی شبدوں سے ٹھنکنے اوران سے چھوا چھات کرنے کی جڑتا، موڑکھتا، شرارت اور پرتی کریا چل سکتی ہے

जब सब लोग या ४० फीसदी लोग भी किताबें पढ़ने लगेंगे उस दिन साहित्यकार मजबूर हो जायंगे कि बोली को मिटा या बिगाड़ या बदल कर उसे किताबी भाषा बनाने के बदले किताबी भाषा को मिटाकर, बना कर और बदलकर जनता की सजीव भाषा में साहित्य रचना करने लगें. हिन्दी साहित्यकारों को झकमार के तद्भव प्रधान भाषा और शैली सीखनी और बरतनी होगी. और इस तद्भव प्रधान भाषा और शैली से अरबी फ़ारसी के हज़ारों प्रचलित शब्द निकाले नहीं जा सकेंगे. भावी हिन्दी समाज की रूप रेखा बिलकुल बदली हुई चीज होगी. यह समाज पढ़ेलिखों का समाज होना हुआ भी "किताबी" समाज, मुन्शियों और पंडितों का समाज न होगा. यह समाज मजदूरों का समाज होगा और वह भी मशीन चलाने वाले मजदूरों का. वेदों के समय से या आदिकाल से आज तक इस समाज का कोई सम्बंध मिश्रित व्यंजन वाले, जटिल और कठिन उच्चारण वाले तत्सम तसंस्कृत शब्दों से नहीं रहा है. यह भी न भूलिये कि जब संस्कृत का यहाँ १०—२० फीसदी लोगों में भी प्रचार था उस समय संस्कृत में कुछ नरमी और सुगमता भी थी. हिन्दी साहित्यकार इतनी संस्कृत नहीं जान सकते कि सरल संस्कृत शब्दों को ही चुनें. वह तो कोश से भारी भरकम और जटिल संस्कृत शब्द ही पा सकते और उठा सकते हैं. तुलसीदास तक सुगम और नरम संस्कृत शब्द ला सके हैं. लेकिन पंत, निराला, गुप्त और प्रसाद जी के बस का यह काम नहीं. संस्कृत से हिन्दी को सुगम रखते हुए सुन्दर बनाया जा सकता है. लेकिन यह भी न भूलिये कि संस्कृत से हिन्दी को भद्देस भी बनाया जा सकता है. देव वाणी का

جب سب لوگ یا ۴۰ فیصدي لوگ بھي کتابیں پڑھنے لگیں گے اس دن ساھتیہ کار مجبور ھوجائینگے کہ بولی کو مٹا یا بگاڑ یا بدل کر اُسے کتابی بھاشا بنانے کے بدلے کتابی بھاشا کو مٹاکر، بناکر اور بدل کر جنتا کی سجیو بھاشا میں ساھتیہ رچنا کرنے لگیں. ھندي ساھتیہ کاروں کو جھک مارکے تدبھو پردھان بھاشا اور شیلی سیکھنی اور برتني ھوگي اور اس تدبھو پردھاں بھاشا اور شیلی سے عربی فارسی کے ھزاروں پر چلت شبد نکالے نہیں جاسکیں گے بھاوی ھندي سماج کی روپ ریکھا بالکل بدلي ھوئي چیز ھوگی. یہ سماج پڑھے لکھوں کا سماج ھوتا ھوا بھی "کتابی" سماج، منشیوں اور پنڈتوں کا سماج نہ ھوگا. یہ سماج مزدوروں کا سماج ھوگا اور وہ بھی مشین چلانے والے مزدوروں کا. ویدوں کے سمے سے یا آدی کال سے آج تک اس سماج کا کوئی سمبندھ مشرت وینجن والے، جٹل اور کٹھن اُچچارن والے تت سم سنسکرت شبدوں سے نہیں رھا ھے. یہ بھی نہ بھولئے کہ جب سنسکرت کا یہاں ۱۰–۲۰ فیصدی لوگوں میں بھی پرچار تھا اس سمے سنسکرت میں کچھ نرمی اور سگمتا بھي تھي. ھندی ساھتیہ کار اتني سنسکرت نہیں جان سکتے کہ سرل سنسکرت شبدوں کو ھی چنیں. وہ تو کوش سے بھاري بھرکم اور جٹل سنسکرت شبد ھي پاسکتے اور اٹھا سکتے ھیں. تلسی داس تک سگم اور نرم سنسکرت شبد لاسکتے ھیں. لیکن پنت نرالا، گپت اور پرساد جی کے بس کا یہ کام نہیں. سنسکرت سے ھندی کو سگم رکھتے ھوئے سندر بنایا جاسکتا ھے. لیکن یہ بھی نہ بھولئے کہ سنسکرت سے ھندی کو بھدیس بھی بنایا جاسکتا ھے. دیو واني کا

बेढंगा प्रयोग पिशाच वाणी या जिन्नाती भाषा है. जैसी संस्कृत गर्भित हिन्दी आज लिखी जा रही है वह पढ़े लिखे मजदूरों की जीवन-धारा, उनके जीवन संस्कार, उनकी मानसिक प्रेरणाओं, वृत्तियों, उनके कंठकी बनावट, उनकी जीभ और तालू, उनके सुन्ने और बोलने की शक्ति, उनके गुण, कर्म, स्वभाव सबके ख़िलाफ है. किताबी हिन्दी पढ़कर वह साक्षर हो जायँगे लेकिन किताबी हिन्दी को वह अपनाएँगे कभी नहीं. उनकी मांग हमें पूरी करनी पड़ेगी और वह मांग होगी तद्भव प्रधान बोल चाल के हिन्दी साहित्य की. किताबी हिन्दी का प्रचार ही किताबी हिन्दी को मिटादेगा.

इस घर को आग लग गई घर के चिराग़ से.

(१२४) रटे और घोखे हुए शब्द, रटी और घोखी हुई पुस्तकें. घोट घोट कर पिलाये हुए शब्द, जीभ मरोड़ और जबड़ा तोड़ शब्द, वह शब्द और शैली जो हिन्दी का सांचा ही तोड़ ताड़ कर रखदेते हैं वह १५ करोड़ की मजदूर जनता में चालू हो जायँगे, ऐसा सोचना पागल पन के सिवा और कुछ नहीं. ऐसा प्रलय काल तक नहीं हो सकेगा. सुना आपने ? नए शब्द हर भाषा में बराबर मिलते और खपते रहते हैं लेकिन प्रचलित और जीभों पर चढ़े हुए शब्दों मे ताल मेल खाने वाले, जनता की बोली के सांचे में ढले हुए नये शब्द हिन्दी जनता आजकल की हिन्दी देख और सुनकर कांप उठ ती है और उसको पढ़कर लोगों के मुंह दुखने लगते हैं

کا بے ڈھنگا پریوگ پشاچ وانی یا جناتی بھاشا ھے. جیسی سنسکرت گربھت ہندی آج لکھی جارھی ھے وہ پڑھے لکھے مزدوروں کی جیون دھارا ' ان کے جیون سنسکار' ان کی مانسک پرناؤں' ورتیوں' ان کے کنٹھ کی بناوٹ ان کی جیبھ اور تالو ان کے سننے اور بولنے کی شکتی' ان کے گن کرم سوبھاو سب کے خلاف ھے . کتابی ہندی پڑھکر وہ ساکچھر ہوجائینگے لیکن کتابی ہندی کو وہ اپنائیں گے کبھی نہیں . ان کی مانگ ہمیں پوری کرنی پڑیگی اور وہ مانگ ہوگی تدبھو پردھان بول چال کے ہندی . ساہتیہ کی . کتابی ہندی کا پرچار ہی کتابی ہندی کو مٹادیگا .

اس گھر کو آگ لگ گئی گھر کے چراغ سے

رٹے اور گھوکھے ہوئے شبد' رٹی اور گھوکھی ہوئی پستکیں' گھونٹ گھونٹ کر پلائے ہوئے شبد' جیبھ مروڑ اور جبڑا توڑ شبد' وہ شبد اور شیلی جو ہندی کا سانچا ھے توڑ تاڑ کر رکھ دیتے ہیں وہ پندرہ کروڑ کی مزدور جنتا میں چالو ہو جائیں گے . ایسا سوچنا پاگل پن کے سوا اور کچھ نہیں . ایسا پرلے کال تک نہیں ہوسکیگا . سنا آپ نے ؟ نئے شبد ہر بھاشا میں برابر ملتے اور کھپتے رہتے ہیں لیکن پر چلت اور جیبھوں پر چڑھے شبدوں سے تال میل کھانے والے' جنتا کی بولی کے سانچے میں ڈھلے ہوئے نئے شبد ! ہندی جنتا آج کل کی ہندی دیکھ اور سن کر کانپ اٹھتی ھے اور اس کو پڑھکر لوگوں کے منہ دکھنے لگتے ہیں . (۱۲۴)

शेर शाह

(सेठ गोविन्द दास)

चौथा दृश्य

स्थान—बिहार शरीफ़ में शेरशाह के मकान में लाड मलिका के कमरे का बरामदा.

समय—संध्या .

[यह बरामदा भी क़रीब क़रीब वैसा ही है, जैसा चुनार का था ; अन्तर है दीवार के रंग और खम्भों तथा दीवार की बनावट में. बरामदे के इस ओर लाड मलिका घुटने टेके हुए, आँखें बन्द किये है. उस ओर नसीम के पिंजरे का कुछ भाग दिखाई देता है परन्तु पूरा पिंजरा नहीं दिखता और नसीम भी नहीं.]

लाड—(कुछ देर बाद दोनों हाथ जोड़ कर आगे फैला कर, सामने की ओर देखते हुए) ए खुदा ! उन्हें जीत बख़्शना !......आज ईद के दिन यही मेरी इलतजा है ......वह मुल्क के लिए......अपनी जीत चाहते हैं, मैं मुल्क के लिए...निज़ाम की फ़तह चाहती हूँ (कुछ रुक कर) और...और यह भी मिन्नत करती हूँ कि क़न्नौज की यह जंग मुग़लों से आख़िरी जंग हो, निज़ाम का बाल बाँका न हो और वह जल्द से जल्द मेरे पास लौट आवे. (कुछ देर फिर आँखें बन्द कर, फिर खोल कर, खड़े हो) कभी कभी...दिमाग़ में कैसा कैसा फ़ितूर सा जान पड़ता है, अल्लाह ! (फिर आँख बन्द कर, कुछ देर पश्चात् आँखें बन्द ही किये हुए एकाएक) मालूम होता है

شیر شاہ

(سیٹھ گووندداس)

چوتھا درشیہ

استھان — بہار شریف میں شیر شاہ کے مکان میں لاڈ ملکہ کے کمرے کا برآمدہ۔

سمے — سندھیا

[یہ برآمدہ بھی قریب قریب ویسا ہی ہے' جیسا چنار کا تھا؛ انتر ہے دیوار کے رنگ اور کھمبھوں تتھا دیوار کی بناوٹ میں. برآمدے کے اِس اور لاڈ ملکہ گھٹنے ٹیکے ہوئے' آنکھیں بند کئے ہے. اُس اور نسیم کے پنجرے کا کچھ بھاگ دکھائی دیتا ہے' پرنتو پورا پنجرہ نہیں دکھتا اور نسیم بھی نہیں .]

لاڈ — (کچھ دیر بعد دونوں ھاتھ جوڑ کر آگے پھیلاکر' سامنے کی اور دیکھتے ہوئے) اے خدا ! اُنھیں جیت بخشنا ! ...... آج عید کے دن یہی میری التجا ہے ...... وہ ملک کے لئے .. اپنی جیت چاھتے ہیں' میں ملک کے لئے ... .. نظام کی فتح چاھتی ہوں (کچھ رک کر) اور ... . اور یہ بھی منت کرتی ہوں کہ قنوج کی یہ جنگ مغلوں سے آخری جنگ ہو' نظام کا بال بانکا نہ ہو اور وہ جلد سےجلد میرے پاس لوٹ آوے . (کچھ دیر پھر آنکھیں بند کر' پھر کھول کر' کھڑے ہو) کبھی کبھی...... دماغ میں کیسا کیسا فتور سا جان پڑتا ہے' اللہ ! (پھر آنکھ بند کر' کچھ دیر پشچات آنکھیں بند ہی کئےہوئے ایکا ایک) معلوم ہوتا ہے

दुआ तुझ तक पहुंच गई, मेरे ख़ुदा! ...और...और मेरी दरख्वास्त मंज़ूर भी हो गई! (अट्टहास कर आँखें खोलते हुए) होती कैसे नहीं? (फिर घुटने टेक कर) पाक दरख्वास्त थी. अल्लाह! (खड़े होकर) वह दरख्वास्त मंज़ूर न होना होती तो उस दिन उस जलते हुए महल में से लौडियाँ मुझे जीता हुआ कैसे निकाल लातीं? ...उसकी पाक मुहब्बत ने मुझे महल की आग से बचा लिया तो क्या मेरी पाक मुहब्बत उसे जंग की आग से न बचायेगी? (कुछ रुक कर) कैसे...कैसे निज़ाम कहता है कि हमारी मुहब्बत पाक नहीं, मेरे ख़ुदा?...शौहर बीवी की मुहब्बत पाक है! . . . क़ाज़ी के शादी करा देने के सबब! ...और शादी...शादी कैसी परवरदिगार? . . .शौहर उसे तलाक़ देकर तोड़ सकता है. . . .हिंदुओं का विवाह ...उनका पतिव्रत धर्म . . . उसका पाक होना, कुछ दूर तक मेरी समझ में भी आता है. पर जहाँ शादी टूट सकती है, टूटने के बाद दूसरी हो सकती है, वह पाक कैसी? ... अगर बीवी को भी तलाक़ का अख्तियार होता तो क्या अल्लाह, मैं अपनी पहली और इस शादी को क़ायम रखती? (कुछ रुक कर, फिर आँख बन्द कर) क्या . . . क्या हो रहा है फिर दिमाग़ में? (कुछ रुक कर, आँखें खोल, चिल्लाकर) ए ख़ुदा! ख़ुदग़र्ज़ों ने मेरे जिस्म का सौदा बिना मेरी मर्ज़ी के किया था! (धीमे स्वर में, किन्तु जल्दी जल्दी) मैंने जिस्म का सौदा नहीं, अपनी तमन्नाओं का सौदा, अपने दिल का सौदा, एक ही बार, एक ही लमहे में, एक ही शख्स, निज़ाम से किया था. (आँख बन्दकर) उस ने मेरी तस्वीर तख्ते पर खींची थी और मैंने

دعا تجھ تک پہنچ گئی، میرے خدا! .... اور .... اور میری درخواست منظور بھی ہوگئی! (اٹاھاس کر آنکھیں کھولتے ہوئے) ہوتی کیسے نہیں؟ (پھر گھٹنے ٹیک کر) پاک درخواست تھی، اللہ! (کھڑے ہوکر) وہ درخواست منظور نہ ہونا ہوتی تو اُس دن اُس جلتے ہوئے محل میں سے لونڈیاں مجھے جیتا ہوا کیسے نکال لائیں؟... اُس کی پاک محبت نے مجھے محل کی آگ سے بچالیا تو کیا میری پاک محبت اُسے جنگ کی آگ سے نہ بچائیگی؟ (کچھ رک کر) کیسے.. کیسے نظام کہتا ہے کہ ہماری محبت پاک نہیں، میرے خدا؟.. شوہر بیوی کی محبت پاک ہے! .... قاضی کے شادی کرا دینے کے سبب! ...... اور شادی ...... شادی کیسی پروردگار؟ ... شوہر اُسے طلاق دیکر توڑ سکتا ہے ..... ھندوؤں کا وواہ ...... ان کا پتی ورت دھرم .... اسکا پاک ہونا، کچھ دور تک میری سمجھ میں بھی آتا ہے، پر جہاں شادی ٹوٹ سکتی ہے، ٹوٹنے کے بعد دوسری ہوسکتی ہے، وہ پاک کیسی؟ ...... اگر بیوی کو بھی طلاق کا اختیار ہوتا تو کیا اللہ، میں اپنی پہلی اور اس شادی کو قائم رکھتی؟ (کچھ رک کر، پھر آنکھ بند کر) کیا .... کیا ہو رہا ہے پھر دماغ میں؟ (کچھ رک کر، آنکھیں کھول، چلاکر) اے خدا! خود غرضوں نے میرے جسم کا سودا بنا میری مرضی کے کیا تھا! (دھیمے سور میں، کنتو جلدی جلدی) میں نے جسم کا سودا نہیں، اپنی تمناؤں کا سودا، اپنے دل کا سودا، ایک ھی بار، ایک ھی لمحے میں، ایک ھی شخص، نظام سے کیا تھا۔ (آنکھیں بند کر) اُس نے میری تصویر تختے پر کھینچی تھی اور میں نے

नहीं सकती ! जिन्दगी रहते विट नहीं समर्की (आँखें खोल कर) परवर-दिगार ! किस दूसरे को चाहा है मैंने और किस दूसरे को चाहा है निज़ाम ने ?......फिर भी मैं उसे समझा न सकी कि दीवाने, तेरी मुहब्बत पाक है....वह चला गया...तस्वीरें जल रहीं थीं, मुसव्विर की ज़िन्दगी जल रही थी, उसकी आरज़ू जल रही थी और वह चला गया ! ...... वह चाला गया अपनी हसरतों को लेकर, वह चला गया मुहब्बत के शोलों को उछालता हुआ ...... काश मैं उस दिन ही जल जाती ! .... आँखें खोल कर मैंने पुकारा—निज़ाम ! ......सब चुप थे. तक़दीर बोली, पगली, अपने दामन को संभाल, वह चला गया, तेरे दामन को मोतियों से भर कर चला गया !

[नसीम की आवाज़ नेपथ्य से आती है — 'मुसव्विर ! मुसव्विर ! ']

लाड — (चौंक कर सामने देख) मुसव्विर ? मुसव्विर चला गया ! (सामने देखते हुए, आश्चर्य से) नसीम ! ...नसीम !...

[नसीम का खाली पिंजरा लिये हुए एक लौंडी का प्रवेश]

लौंडी—नसीम उड़ गई, मलिका !

लाड—नसीम उड़ गई ? नसीम भी चली गई ?

लौंडी—हाँ, मलिका, चली गई !

लाड—चली गई, अपनी सहेली से बिना कुछ कहे चली गई ! ... चली गई ... मुझे हमेशा के लिये तनहा छोड़ कर चली गई ! ... महल हँस रहा है, फूल हंस रहे हैं, अ ह ह हा ! मलिका हंस रही है, पर लाड की सहेली चली गई, बानू की सहेली चली गई, अ ह ह हा ! बानू की सहेली ईद के दिन चली गई. और वह भी चला गया !

نہیں سکتی ۔ زندگی رہتے مٹ نہیں سکتی ! (آنکھیں کھول کر) پروردگار ! کس دوسرے کو چاہا ہے میں نے اور کس دوسرے کو چاہا ہے نظام نے ؟ .... پھر بھی میں اسے سمجھا نہ سکی کہ دیوانے تیری محبت پاک ہے .. وہ چلا گیا... تصویریں جل رہی تھیں مصور کی زندگی جل رہی تھی، اس کی آرزو جل رہی تھی اور وہ چلا گیا ! ... وہ چلا گیا، اپنی حسرتوں کو لیکر، وہ چلا گیا محبت کے شعلوں کو اُچھالتا ہوا... کاش میں اس دن ہی جل جاتی! ... آنکھیں کھول کر میں نے پکارا — نظام ! ..... سب چپ ہے ۔ تقدیر بولی، پگلی، اپنے دامن کو سنبھال، وہ چلا گیا، تیرے دامن کو موتیوں سے بھر کر چلا گیا !

[نسیم کی آواز نیپھتیہ سے آتی ہے — 'مصور ! مصور !'

لاڈ — (چونک کر سامنے دیکھ) مصور ؟ مصور چلا گیا !

(سامنے دیکھتے ہوئے، آشچریہ سے) نسیم ! ... نسیم !...

[نسیم کا خالی پنجرہ لئے ہوئے ایک لونڈی کا پرویش]

لونڈی — نسیم اڑگئی، ملکہ !

لاڈ — نسیم اڑگئی ؟ نسیم بھی چلی گئی ؟

لونڈی — ہاں، ملکہ، چلی گئی !

لاڈ — چلی گئی، اپنی سہیلی سے بنا کچھ کہے چلی گئی ! ..... چلی گئی .. مجھے ہمیشہ کے لئے تنہا چھوڑ کر چلی گئی ! ..... محل ہنس رہا ہے، پھول ہنس رہے ہیں، اہا ہا ہا ! ملکہ ہنس رہی ہے، پر لاڈ کی سہیلی چلی گئی، بانو کی سہیلی چلی گئی، اہا ہا ہا ! بانو کی سہیلی عید کے دن چلی گئی اور وہ بھی چلا گیا !

लौंडी—कौन मलिका, कौन चला गया ?

लाड—(आँखें फाड़ कर सामने की ओर पागलों की तरह देखते और हाथ उठा कर उंगली से संकेत करते हुए) वह.....वह..... वह देखो, ... वह......वह जा रहा है ! नसीम ...... नसीम भी जा रही है ! ...... पुकारो, नसीम ! पुकारो, (कुछ रुक कर) नहीं....... नहीं लौटता ?

लौंडी—(कुछ घबरा कर) कौन नहीं लौटता मलिका ?

लाड—(अपनी ही धुन में) नसीम ! ..... नसीम ! कहो न उससे कि मैं पुकार रही हूँ........बानू पुकार रही है ... .. उसकी तस्वीरें पुकार रही हैं ...... तस्वीरें ! ...... आग ! .... आग ! ......

लौंडी—(घबराकर) मलिका ! मलिका ! आपको क्या हो गया है ? कहाँ है आग ?

लाड—(एक तस्वीर उतार उसे सामने की ओर फेंकते हुए) वह......वह देखो, तस्वीरें जल रही हैं.

लौंडी—(एक दम घबराकर ज़ोर से) मलिका ! मलिका !

लाड (आँखें फाड़ फाड़ कर सामने की ही ओर देखते हुए) हाँ, हाँ, तस्वीरें जल रही हैं, ... महल जल रहा है, ... सब कुछ जल रहा है ! ....यह.........यह देखो (अपने दामन को दोनो हाथों से पकड़ कर) यह देखो, मेरे दामन को भी लपटों ने

لونڈي ـــ کون ملکہ' کون چلا گیا ؟

لاڈ ـــ (آنکھیں پھاڑ کر سامنے کی اور پاگلوں کي طرح دیکھتے اور ھاتھ اُٹھا کر انگلی سے سنکیت کرتے ہوئے) وہ ......وہ ...... وہ دیکھو' ...... وہ ...... وہ جارھا ھے ! نسیم .... نسیم بھی جارھي ھے ! ... پکارو' نسیم ! پکارو' (کچھ رک کر) نہیں .. . نہیں لوٹتا ؟

لونڈی ـــ (کچھ گھبراکر) کون نہیں لوٹتا ملکہ ؟

لاڈ ـــ (اپنی ھي دھن میں) نسیم ! ..... نسیم ! کہو نہ اُس سے کہ میں پکار رھی ھوں' ...... بانو پکار رھی ھے ...... اس کی تصویریں پکار رھی ھیں ...... تصویریں ! .. . آگ ! ..... آگ ! ......

لونڈي ـــ (گھبراکر) ملکہ ! ملکہ ! آپ کو کیا ھوگیا ھے ؟ کہاں ھے آگ ؟

لاڈ ـــ(ایک تصویر اُتار اُسے سامنے کی اور پھینکتے ہوئے) وہ .. وہ دیکھو' تصویریں جل رھی ھیں .

لونڈي ـــ (ایک دم گھبراکر زور سے) ملکہ ! ملکہ !

لاڈ ـــ (آنکھیں پھاڑ پھاڑ کر سامنے کي ھی اور دیکھتے ہوئے) ھاں' ھاں' تصویریں جل رھی ھیں' ...... محل جل رھا ھے ' ...... سب کچھ جل رھا ھے ! .... یہ ... یہ دیکھو . (اپنے دامن کو دونوں ھاتھوں سے پکڑ کر) یہ دیکھو' میرے دامن کو بھي

लौंडी—(ज़ोर से) दौड़ा, दौड़ो, . कोई आओ. मलिका...... मलिका को क्या हो गया है !

[लाड का अट्टहास और लौंडी का शोर साथ साथ चलता है]

(लघु-यवनिका)

पाँचवाँ दृश्य

स्थान—क़न्नौज में गंगा तट पर शेरशाह का शिविर.

समय—रात्रि.

[दूर पर गंगा है. उसके किनारे शिविर के डेरों की पंक्तियां दिखाई देती हैं, परन्तु रात के कारण गंगा का प्रवाह और डेरे धुंधले धुंधले दिखाई पड़ते हैं. निकट ही शेर शाह के डेरे का कुछ भाग और उसकी परछी दिखाई देती है. परछी में गद्दी पर शेर शाह और उसके सामने क़ालीन पर निज़ाम और ब्रह्मादित्य बैठे हुए हैं. शेर शाह हुक़्क़ा पी रहा है. परछी के बाहर जो मशाल जल रही है, उसके कारण परछी का दृश्य स्पष्ट है.]

शेर शाह—तुमने सचमुच ही ग़ज़ब किया. पंडित ! (हुक़्क़ा गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए) हुमायूँ के इतने सिपाही 'चलो भाई, घर चलें' यह कह कह कर चल देंगे, इसे हुमायूँ ही ने क्या, मैंने भी न सोचा था. यह हाल देखकर मुझे तो यूनान के सिकन्दर के हमले की याद आती है.

ब्रह्मादित्य—मुझे दुख यही है, जहाँ पनाह, कि इन सैनिकों को मैं अपनी ओर न कर सका. इनमें घर भागने का तो साहस है, पर मुग़लों को छोड़ कर हमारी ओर से लड़ने का नहीं.

لونڈی — (زور سے) دوڑو دوڑو'... ..کوئی آو' ملکہ .... ملکہ کو کیا ھوگیا ھے !

[لاڈ کا اَٹہاس اور لونڈی کا شور ساتھ ساتھ چلتا ھے]

(لگھو ییونیکا)

پانچواں درشیہ

استھان — قنوج میں گنگاتٹ پر شیر شاہ کا شیور

سمے — راتری

[دور پر گنگا ھے . اُس کے کنارے شیور کے ڈیروں کی پنکتیاں دکھائی دیتی ھیں ' پرنتو رات کے کارن گنگا کا پرواہ اور ڈیرے دھندلے دھندلے دکھائی پڑتے ھیں . نکٹ ھی شیر شاہ کے ڈیرے کا کچھ بھاگ اور اس کی پرچھی دکھائی دیتی ھے . پرچھی میں گدی پر شیر شاہ اور اس کے سامنے قالین پر نظام اور برھما دتیہ بیٹھے ھوئے ھیں . شیر شاہ حقہ پی رھا ھے . پرچھی کے باھر جو مشعل جل رھی ھے' اس کے کارن پرچھی کا درشیہ سپشٹ ھے]

شیر شاہ — تم نے سچ مچ ھی غضب کیا' پنڈت ! (حقہ گڑگڑا کر دھواں چھوڑتے ھوئے) ھمایوں کے اتنے سپاھی 'چلو بھائی' گھر چلیں' یہ کہہ کہہ کر چل دیں گے' اسے ھمایوں ھی نے کیا' میں نے بھی نہ سوچا تھا . یہ حال دیکھ کر مجھے تو یونان کے سکندر کے حملے کی یاد آتی ھے .

برھما دتیہ — مجھے دکھ یہی ھے' جہاں پناہ' کہ اِن سینکوں کو میں اپنی اور نہ کرسکا . ان میں گھر بھاگنے کا تو ساھس ھے' پر مغلوں کو چھوڑ کر ھماری اور سے لڑنے کا نہیں .

निज़ाम—पर लड़ाई अब होगी कब ?

ब्रह्मादित्य—आप किसी दिन भी मुग़लों पर हमला कर सकते हैं, क्योंकि हुमायूं की रही हुई सेना में से भी अधिकांश युद्ध करने वाली नहीं है.

शेर शाह—अच्छा, बची हुई फौज भी नहीं लड़ेगी ?

ब्रह्मादित्य—अधिकतर नहीं. मुग़ल तो बहुत थोड़े हैं. क्योंकि हुमायूं को भाइयों से सहायता न मिलने के कारण सारे मुग़ल सैनिक तो आये ही नहीं. अधिकतर सैनिक इसी देश के हैं, जैसा मैंने कहा था किराये के टट्टू. मैंने क्या क्या किया है इसे अब पूरी पूरी सफलता मिलने पर आज आपको बताता हूं.

शेर शाह—(हुक़्क़ा गुड़गुड़ाकर धुआँ छोड़ते हुए) हाँ हाँ. ज़रूर ; वह बातें तो सुनने के क़ाबिल होंगी.

ब्रह्मादित्य—सुनिये—धीरे धीरे उनके कई मुसलमान सरदारों को मुसलमान नजूमी और इने गिने हिन्दू सरदारों को हिन्दू ज्योतिषी का वेष धारण कर मैंने समझाया है कि आप का भविष्य क्या है. आपकी जनम पत्री बनाकर आप के ग्रहों का फल कहा है.

शेर शाह—(आश्चर्य से) लेकिन मेरी तो कोई जनम पत्री है ही नहीं.

ब्रह्मादित्य—जनम पत्री नहीं न सही, कर्म पत्री तो है. आपने अब तक जो कुछ किया है, उससे मैंने आप की जनम पत्री में जो ग्रह रखे है उनका फल ठीक मिल जाता है.

शेर शाह—ग़ज़ब किया तुमने! (धीरे धीरे धुआँ नाक से निकालता है.)

نظام — پر لڑائی اب ھوگی کب ؟

برھما دتیہ — آپ کسی دن بھی مغلوں پر حملہ کرسکتے ھیں، کیونکہ ھمایوں کی رھی ھوئی سینا میں سے بھی ادھیکانش یدھ کرنے والی نہیں ھے .

شیر شاہ — اچھا بچی ھوئی فوج بھی نہیں لڑے گی ؟

برھما دتیہ — ادھک تر نہیں . مغل تو بہت تھوڑے ھیں، کیونکہ ھمایوں کو بھائیوں سے سہایتا نہ ملنے کے کارن سارے مغل سینک تو آئے ھی نہیں . ادھک تر سینک اسی دیش کے ھیں، جیسا میں نے کہا تھا کرائے کے ٹٹو میں نے کیا کیا کیا ھے اسے اب پوری پوری سپھلتا ملنے پر آج آپ کو بتاتا ھوں .

شیر شاہ — (حقہ گڑ گڑا کر دھواں چھوڑتے ھوئے) ھاں ھاں، ضرور، وہ باتیں تو سننے کے قابل ھونگی .

برھما دتیہ — سنئے - دھیرے دھیرے ان کے کئی مسلمان سرداروں کو مسلمان نجومی اور اِنے گنے ھندو سرداروں کو ھندو جیوتشی کا ویش دھارن کر میں نے سمجھایا ھے کہ آپ کا بھوشیہ کیا ھے . آپ کی جنم پتری بناکر آپ کے گرھوں کا پھل کہا ھے .

شیر شاہ — (آشچریہ سے) لیکن میری تو کوئی جنم پتری ھے ھی نہیں .

برھما دتیہ — جنم پتری نہیں نہ سہی، کرم پتری تو ھے. آپ نے اب تک جو کچھ کیا ھے، اس سے میں نے آپ کی جنم پتری میں جو گرہ رکھے ھیں، ان کا پھل ٹھیک مل جاتا ھے .

شیر شاہ — غضب کیا تم نے ! (دھیرے دھیرے دھواں ناک سے نکالتا ھے)

ब्रह्मादित्य—फिर जिनका ज्योतिष पर विश्वास नहीं है, उन्हें मुसलमान फ़क़ीर और हिन्दू साधु बनकर, और भी नजाने कैसे कैसे वेष बनाकर, तरह तरह से समझाया है. किसी को आपकी वीरता का दिग्दर्शन कराया है, किसी को आपकी सेवाओं का. भविष्य में आप क्या करने वाले हैं, उन कार्यों से सब के साथ सैनिकों का भी कितना लाभ होगा, यह भी कहा है. मुग़ल विदेशी हैं, उनसे देश का उपकार न होगा, यह भी सिद्ध किया है.

शेर शाह—तुम्हारी कोशिशों का ही यह नतीजा निकला है कि 'चलो भाई. घर चलें' कह कर बहुत से सिपाही चल गये और चले जा रहे हैं.

(१५६)

ब्रह्मादित्य—अकेले इस समझाने बुझाने का यह फल हुआ है, यह तो नहीं कहा जा सकता.

शेर शाह — (हुक़्क़ा गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए) तब ?

ब्रह्मादित्य — पहले से ही हुमायूँ को लोग विदेशी समझते थे, बाबर ने इस देश और यहाँ के लोगों के लिये जो बातें लिखी हैं, उन्हें भी कई लोग जानते थे. सुलतान महमूद लोदी की राज संस्था और सुलतान इब्राहीम लोदी की हारों को भी लोग भूले न थे और इनके कारण भी अब तक क्षोभ था. आपने जौनपुर, बिहार आदि में प्रजा की जो सेवाएँ की हैं तथा इधर आप को जो सफलताएँ मिली हैं, उनसे भी लोग अनभिज्ञ नहीं थे. वायुमंडल मेरे काम के लिये पहले से ही तैयार न होता तो मेरे काम का यह फल भी न निकलता. जो नतीजा आप देखते हैं यह हुआ है सब बातों के इकट्ठे सम्मिलन से.

برهما دتیه —— پهر جن کا جیوتش پروشو اس نهیں هے اُنهیں مسلمان فقیر اور هندو سادهو بن کر، اور بهی نه جانے کیسے کیسے ویش بناکر، طرح طرح سے سمجهایا هے . کسی کو آپ کی ویرتا کا دگ درشن کرایا، کسی کو آپ کی سیواؤں کا . بهوشیه میں آپ کیا کرنے والے هیں، اُن کاریوں سے سب کے ساته سینکوں کا بهی کتنا لابه هوگا، یه بهی کها هے . مغل ودیشی هیں، ان سے دیش کا اُپ کار نهوگا یه بهی سدھ کیا هے .

شیر شاه —— تمهاری کوششوں کا هی یه نتیجه نکلا هے که ' چلو بهائی، گهر چلیں ' کهه کر بهت سے سپاهی چلے گئے اور چلے جا رهے هیں .

(۱۵۶)

برهما دتیه —— اکیلے اس سمجهانے بجهانے کا یه پهل هوا هے، یه تو نهیں کها جاسکتا .

شیر شاه —— (حقه گڑ گڑا کر دهواں چهوڑتے هوئے) تب ؟

برهما دتیه —— پهلے سے هی همایوں کو لوگ ودیشی سمجهتے تهے، بابر نے اس دیش اور یهاں کے لوگوں کے لئے جو باتیں لکهی هیں، اُنهیں بهی کئی لوگ جانتے ته . سلطان محمود لودی کی راج سنستها اور سلطان ابراهیم لودی کی هاروں کو بهی لوگ بهولے نه تهے اور ان کے کارن بهی اب تک چهوبه تها . آپ نے جون پور، بهار آدی میں پرجا کی جو سیوائیں کی هیں تتها اِدهر آپ کو جو سپهلتائیں ملی هیں، ان سے بهی لوگ انبهگیه نهیں تهے وایو منڈل میرے کام کے لئے پهلے سے هی تیار نه هوتا تو میرے کام کا یه پهل بهی نه نکلتا . جو نتیجه آپ دیکهتے هیں، یه هوا هے سب باتوں کے اکٹهے سم ملن سے .

मैं हिन्दी प्रेमियों से पूछता हूँ

(भाई रघुपति सहाय 'फ़िराक़')

यह लेख मैं ज़रा समझदार आदमियों के लिये लिख रहा हूँ. इसका मतलब यह नहीं कि अगर आप हिन्दी प्रेमी हैं और यह लेख पढ़ रहे हैं तो आप समझदार आदमी नहीं. मेरा कहना यह है कि अगर मेरी या अपनी बदनसीबी से आपकी नज़र इस लेख पर पड़ जाय तो इसे ज़रा सूझ बूझ के साथ पढ़िये. कहने वाले से सुनने वाला सरेख होना चाहिये.

पढ़ने लिखने के मामले में अब हम पर अंग्रेज़ हुक्म नहीं लगा सकता, न अब यहां मुसलमानी राज है. अब हिन्दी उर्दू के सवाल को हम जिस तरह ग़ुलामी या मुसीबत के ज़माने में सोचते थे उस तरह इस सवाल पर अगर हम आज भी सोचेंगे या आइन्दा भी सोचेंगे तो हम बड़ा धोका खायेंगे. लड़ना झगड़ना इतनी बड़ी मुसीबत नहीं जितनी बड़ी मुसीबत है लड़ने झगड़ने की आदत पड़ जाना. लड़ झगड़ लेना और बात है. बैर और दुश्मनी, नफ़रत और कपट रखना दूसरी बात है और बड़ी घातक और भयानक बात है. अन्ध क्रोध की आग में हम कहीं ख़ुद न जल जायँ. आज़ाद होकर भी अगर हम ग़ुलामों की तरह सोचेंगे तो हमारा कहीं ठिकाना न लगेगा. सब कुछ पाकर अगर हम अब भी लाग डाट और पट्टीदारी के भाव के शिकार बने रहे तो हम सब कुछ खो बैठेंगे.

میں هندی پریمیوں سے پوچھتا هوں

(بھائی رگھوپتی سہائے ' فراق ')

یہ لیکھ میں ذرا سمجھدار آدمیوں کے لئے لکھ رہا ہوں - اس کا مطلب یہ نہیں کہ اگر آپ هندی پریمی هیں اور یہ لیکھ پڑھ رہے هیں تو آپ سمجھدار آدمی نہیں - میرا کہنا یہ هے کہ اگر میری یا اپنی بدنصیبی سے آپ کی نظر اس لیکھ پر پڑ جائے تو اسے ذرا سوجھ بوجھ کے ساتھ پڑھئے - کہنے والے سے سننے والا سریکھ هونا چاهئے -

پڑھنے لکھنے کے معاملے میں اب هم پر انگریز حکم نہیں لگا سکتا - نہ اب یہاں مسلمانی راج هے - اب هندی اُردو کے سوال کو هم جس طرح غلامی یا مصیبت کے زمانے میں سوچتے تھے اُس طرح اس سوال پر اگر هم آج بھی سوچیں گے یا آئندہ بھی سوچیں گے تو هم بڑا دھوکا کھائیں گے - لڑنا جھگڑنا اتنی بڑی مصیبت نہیں جتنی بڑی مصیبت هے لڑنے جھگڑنے کی عادت پڑ جانا - لڑ جھگڑ لینا اور بات هے - بیر اور دشمنی نفرت اور کپٹ رکھنا دوسری بات هے اور بڑی گھاتک اور بھیانک بات هے - اندھ کرودھ کی آگ میں هم کہیں خود نہ جل جائیں - آزاد هوکر بھی اگر هم غلاموں کی طرح سوچیں گے تو همارا کہیں ٹھکانا نہ لگے گا - سب کچھ پاکر اگر هم اب بھی لاگ ڈانٹ اور پٹی داری کے بھاو کے شکار بنے رهے تو هم سب کچھ کھو بیٹھیں گے -

निज़ाम — (चिन्ताकुल स्वर में) तो छोटी मोटी लड़ाई भी न होगी ?

ब्रह्मादित्य — यह कहना तो बहुत कठिन है, क्योंकि हुमायूँ भी बड़ा बहादुर आदमी है. कुछ मुग़ल सैनिक भी उस के साथ हैं, किन्तु उसकी बची हुई सेना के अधिकांश सैनिक चग़ताई हैं, चग़ताइयों में कोई युद्ध न करेंगे यह निश्चित बात है.

निज़ाम — तो, भाई साहब. हम लोगों को अब जल्दी से जल्दी मुग़लों पर हमला कर देना चाहिये. क्योंकि रहे हुए सिपाही भी 'चलो भाई, घर चलें' कहते हुए चल दिये तो......

ब्रह्मादित्य — (मुस्करा कर) शाहज़ादा साहब को देश के लिये युद्ध में भाग लेने की बड़ी चिन्ता है. जहाँ पनाह !

शेर शाह — पर क्यों. पंडित. हुमायूँ पर हमला क्यों नहीं करता ?

ब्रह्मादित्य — (सोचते हुए) यह कुछ आश्चर्य की बात अवश्य है, किन्तु चौसा में जो कुछ हुआ उसके कारण जल्दी कुछ भी करने का कदाचित उसका साहस नहीं हो रहा है. फिर भाइयों से उसे सहायता न मिली, इस लिये वह जानता है कि इस बार यदि उस की हार हुई तो या तो वह युद्ध में मारा जायगा. या उसे सदा के लिये यह देश ही छोड़ देना होगा.

[कुछ देर निस्तब्धता]

निज़ाम — (अधीर होकर) जो कुछ हो. जहाँ पनाह, हम को ही उसपर हमला करना चाहिये.

[कोई कुछ नहीं कहता. कुछ देर निस्तब्धता]

نظام — [چنتا کل سور میں) تو چھوٹی موٹی لڑائی بھی نہ ہوگی ؟

برھما دتیہ — یہ کہنا تو بہت کٹھن ہے' کیونکہ ھمایوں بھی بڑا بہادر آدمی ہے' کچھ مغل سینک بھی اس کے ساتھ ھیں' کنتو اس کی بچی ہوئی سینا کے ادھیکانش سینک چگھاتی ھیں' چگھاتیوں میں کوئی یدھ نہ کرینگے یہ نشچت بات ھے .

نظام — تو' بھائی صاحب' ہم لوگوں کو اب جلدی سے جلدی مغلوں پر حملہ کردینا چاھئے کیونکہ رھے ہوئے سپاھی بھی 'چلو بھائی' گھر چلیں ' کہتے ہوئے چل دیئے تو ......

برھما دتیہ — (مسکراکر) شاھزادہ صاحب کو دیش کے لئے یدھ میں بھاگ لینے کی بڑی چنتا ھے' جہاں پناہ !

شیر شاہ — پر کیوں' پنڈت' ھمایوں ھی ھم پر حملہ کیوں نہیں کرتا ؟

برھما دتیہ — (سوچتے ہوئے) یہ کچھ آشچریہ کی بات اوشیہ ھے' کنتو چوسا میں جو کچھ ہوا اُس کے کارن جلدی کچھ بھی کرنے کا کداچت اُس کا ساھس نہیں ھو رھا ھے . پھر بھائیوں سے اُسے سہائتا نہ ملی' اس لئے وہ جانتا ھے کہ اس بار یدی اس کی ھار ہوئی تو یا تو وہ یدھ میں مارا جائیگا یا اسے سدا کے لئے یہ دیش ھی چھوڑ دینا ہوگا .

[کچھ دیر نستبدھتا]

نظام — (ادھیر ہوکر) جو کچھ ہو' جہاں پناہ' ھم کو ھی اُس پر حملہ کرنا چاھئے .

[کوئی کچھ نہیں کہتا. کچھ دیر نستبدھتا]

ब्रह्मादित्य — अच्छा. तो मैं फिर अपने काम पर जाऊँ: आज्ञा है?

शेरशाह — (खड़े होते हुए) अच्छी बात है, पर रोज रात को सब हाल सुनाने आजाया करो.

ब्रह्मादित्य — प्रायः आ ही जाता हूँ. (शेरशाह और निजाम दोनों को अभिवादन कर के जाता है)

शेरशाह — (निजाम से) तो, चलो, निजाम, बहुत रात गई, हम लोग भी सो रहें.

[शेरशाह परछी के भीतर डेरे में जाता है. निजाम कुछ न कह, एक लम्बी साँस लेकर, धीरे धीरे उस के पीछे पीछे जाता है.]

लघु यवनिका

छठवाँ–दृश्य

स्थान–कन्नौज का गंगा तट.

समय–प्रातः काल.

[गंगा के दूसरे किनारे पर हुमायूं के डेरे दिखाई पड़ते हैं. गंगा का पानी, रेत और सारा दृश्य सूर्य के प्रकाश से आलोकित है. उस पार हुमायूं की सेना में ऐसी भगदड़ मची है कि न कोई किसी की ओर देखता है और न कोई किसी की बात सुनता है. ऐसा हो हल्ला हो रहा है कि कानों के परदे फट रहे हैं. बिना किसी भी प्रकार के युद्ध के ऐसी भगदड़ और हल्ला एक विचित्र प्रकार का दृश्य है. बहुत से सैनिक बड़ी जल्दी जल्दी गंगा पार करने का प्रयत्न कर रहे

برهما دتیه ــ اچھا' تو میں پھر اپنے کام پر جاؤں' آگیا ھے؟

شیر شاه ــ (کھڑے ھوتے ھوئے) اچھی بات ھے' پر روز رات کو سب حال سنانے آجایا کرو .

برهما دتیه ــ پرایه آهی جاتا هوں . (شیر شاه اور نظام دونوں کو ابھیوادن کرکے جاتا ھے .)

شیر شاه ــ (نظام سے) تو' چلو' نظام' بہت رات گئی' هملوگ بهی سو رهیں .

[شیر شاه پرچھی کے بھیتر ڈیرے میں جاتا ھے . نظام کچھ نه که' ایک لمبی سانس لیکر' دھیرے دھیرے اس کے پیچھے پیچھے جاتا ھے .]

لگھویونیکا

چھٹواں درشیه

استھان ــ قنوج کا گنگا تٹ .

سمے ــ پراته کال .

[گنگا کے دوسرے کنارے پر همایوں کے ڈیرے دکھائی پڑتے هیں . گنگا کا پانی' ریت اور سارا درشیه سوریه کے پرکاش سے آلوکت ھے . اس پار همایوں کی سینا میں ایسی بھگدڑ مچی ھے که نه کوئی کسی کی اور دیکھتا ھے اور نه کوئی کسی کی بات سنتا ھے . ایسا هو هلا هو رها ھے که کانوں کے پردے پھٹ رھے هیں . بنا کسی بھی پرکار کے یدھ کے ایسی بھگدڑ اور هلا ایک وچتر پرکار کا درشیه ھے . بہت سے سینک بڑی جلدی جلدی گنگا پار کرنے کا پریتن کر رھے

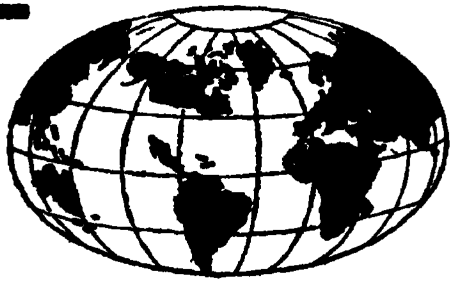
हैं. कुछ तैर कर इस पार आरहे हैं और कुछ तैरते तैरते डूब भी रहे हैं. जो इस पार उतर रहे हैं उन्हीं में हुमायूं भी उतरता है. उसकी परेशानी अवर्णनीय है. सारे वस्त्र भीग गये हैं. न सिरपर पगड़ी है और न पैरों में जूते.]

लघु–यवनिका

هیں . کچھ تیر کر اس پار آ رهے هیں آور کچھ تیرتے تیرتے ڈوب بھي رهے هیں . جو اس پار اُتر رهے هیں اُنهیں میں همایوں بھی اُترتا هے . اس کی پریشانی اورنلیه هے . سارے وستر بھیگ گئے هیں . نه سر پر پگڑی هے آور نه پیروں میں جوتے .]

لگھو یونیکا

दुनिया का हाल



دنیا کا حال

(भाई इशरत अली सिद्दीक़ी)

अमरीका और एशिया

अमरीकी सरकार ने अपने आर्थिक माहिरों और फौजी अफ़सरों की यह सलाह मान ली है कि रूस के साथ उसकी टक्कर की सम्भावना उतनी योरप में नहीं है जितनी कि एशिया में और इसी लिये जिस तरह उसके पिछले विदेश मंत्री जार्ज मार्शल ने योरपी राष्ट्रों की मदद के लिये एक प्रोग्राम बनाया था, जो मार्शल प्लान कहलाता है, इसी तरह उसके मौजूदा विदेश मंत्री डीन एचसन एशिया की मदद के लिये एक प्रोग्राम बना रहे हैं. योरप की तरह एशिया में भी इस मदद का मक़सद यह है कि कम्युनिज्म के फैलाव को रोका जाय.

पिछले महीने (मार्च में) मिस्टर एचसन ने इस के बारे में कई भाषन दिये. उन में उन्हों ने कहा कि कम्युनिज्म एक हथियार है जिस के ज़रिये रूस दुनिया के बड़े बड़े हिस्सों पर क़ब्ज़ा जमाने की कोशिश कर रहा है और एशियाई जनता की ग़रीबी एक तरह की खाद है जिस में कम्युनिज्म का पौदा परवान चढ़ता है. इस लिये

(بھائی عشرت علی صدیقی)

امریکہ اور ایشیا

امریکی سرکار نے اپنے آرتھک ماہروں اور فوجی افسروں کی یہ صلاح مان لی ہے کہ روس کے ساتھ اس کی ٹکر کی سمبھاؤنا اتنی یورپ میں نہیں ہے جتنی کہ ایشیا میں اور اسی لئے جسطرح اس کے پچھلے ودیش منتری جارج مارشل نے یورپی راشٹروں کی مدد کے لئے ایک پروگرام بنایا تھا، جو مارشل پلان کہلاتا ہے، اسی طرح اس کے موجودہ ودیش منتری ڈین ایچ سن ایشیا کی مدد کے لئے ایک پروگرام بنا رہے ہیں۔ یورپ کی طرح ایشیا میں بھی اس مدد کا مقصد یہ ہے کہ کمیونزم کے پھیلاؤ کو روکا جائے۔

پچھلے مہینے (مارچ میں) مسٹر ایچ سن نے اس کے بارے میں کئی بھاشن دئے۔ انمیں انہوں نے کہا کہ کمیونزم ایک ہتھیار ہے جس کے ذریعے روس دنیا کے بڑے بڑے حصوں پر قبضہ جمانے کی کوشش کر رہا ہے اور ایشیائی جنتا کی غریبی ایک طرح کی کھاد ہے جس میں کمیونزم کا پودا پروان چڑھتا ہے۔ اس لئے

अमरीका को यह ग़रीबी दूर करने की कोशिश करनी चाहिये. इस कोशिश को कामयाब बनाने के लिये अमरीकी सरकार अपनी पार्लिमेन्ट से एक बहुत बड़ी रक़म मंज़ूर करा रही है.

इस रास्ते में कुछ रुकावटें भी हैं. अमरीका में बहुत से लोग इस बात को भूल नहीं सकते कि चीन में जनरलिस्मो च्यांग काई शेक की सरकार को अरबों रूपये की मदद देने के बाद भी अमरीका उसको कम्युनिज्म के धावे से बचा नहीं सका. और इस की सफ़ाई में मिस्टर एचसन ने कहा है कि चीनी सरकार की नालायक़ी और अंधेपन के कारन वहाँ की जनता ने उसका साथ नहीं दिया और उसकी हार से यह साबित नहीं होता कि अमरीका को चीन या दूसरे देशों को कोई मदद न देना चाहिये. इस मदद से रूस की रोक होने के अलावा अमरीका को ख़ुद भी फ़ायदा होगा. इसलिये कि ग़रीब और कम पैदावार वाले देशों में वह सामान नहीं बन पाता जिसकी अमरीका को ज़रूरत है और लोगों के पास इतना पैसा नहीं होता जिससे वह अमरीकी कारखानों का माल ख़रीद सकें.

चीन को चेतावनी

मंडियों की यह खोज अमरीका को आने वाले आर्थिक संकट से बचाने के लिये बहुत ज़रूरी है और इसीलिये अमरीका कम्युनिस्ट चीन से व्योपार करने को भी तैयार है. उसके विदेश मंत्री ने जब यह बात कहा उससे पहले यह ख़बर आई थी कि चीन मे बड़ा सख्त

امری . یہ غریبي دور کرنے کی کوشش کرني چاھئے . اس کوشش کو کامیاب بنانے کے لئے امریکی سرکار اپنی پارلیمنٹ سے ایک بہت بڑ رقم منظور کرا رھي ھے .

اس راستے میں کچھ رکاوٹیں بھی ھیں . امریکہ میں بہت سے لوگ اسبات کو بھول نہیں سکتے کہ چین میں جنرلسمو چیانگ کائي شیک کی سرکار کو اربوں روپیہ کی مدد دینے کے بعد بھی امریکہ اس کو کمیونزم کے دھاوے سے بچا نہیں سکا . اور اس کی صفائی میں مسٹر ایچ سن نے کہا ھے کہ چینی سرکار کی نالائقی اور اندھے پن کے کارن وھاں کی جنتا نے اسکا ساتھ نہیں دیا . اور اس کی ھار سے یہ ثابت نہیں ھوتا کہ امریکہ کو چین یا دوسرے دیشوں کو کوئی مدد نہ دینا چاھئے . اس مدد سے روس کی روک ھونے کے علاوہ امریکہ کو خود بھي فائدہ ھوگا . اس لئے کہ غریب کم پیداوار والے دیشوں میں وہ سامان نہیں بن پاتا جس کي امریکہ کو ضرورت ھے اور لوگوں کے پاس اتنا پیسہ نہیں ھوتا جس سے وہ امریکی کارخانوں کا مال خرید سکیں .

چین کو چیتاونی

منڈیوں کي یہ کھوج امریکہ کو آنے والے آرتھک سنکٹ سے بچانے کے لئے بہت ضروري ھے اور اسي لئے امریکہ کمیونسٹ چین سے بیوپار کرنے کو بھی تیار ھے . اُس کے ودیش منتری نے جب یہ بات کھي' اس سے پہلے یہ خبر آئی تھی کہ چین میں بڑا سخت

खबर ठीक है. पचास बरस के लगातार लड़ाई दंगे और अराजकता के बाद अकाल का पड़ना कोई ताज्जुब की बात नहीं. मगर इस से यह न समझना चाहिये कि चीन की कम्युनिस्ट सरकार अमरीका के सामने घुटने टेक देगी. ऐसा ही अकाल रूसी इनक़लाब के बाद वहाँ भी पड़ा था और उसकी कहानी इतनी भयानक है कि रूस के इतिहास में आमतौर से बयान नहीं की जाती. इस अकाल ने हजारों लाखों जानें ले लीं मगर कम्युनिज्म के सैलाब को रोक नहीं सका. च.न में भी वह हालात के धारे को बदल नहीं सकेगा. इस का पता वहाँ की कम्युनिस्ट सरकार के विदेश-मन्त्री के उस बयान से चलता है जिस में उन्होंने अमरीका से कहा है कि वह एशिया को एशिया वालों के लिये छोड़ दे और इस मैदान में अपने साम्राजी घोड़े न दौड़ाये.

(१४५)

यह बयान अमरीका के विदेश मन्त्री की उस चेतावनी का जवाब है जिसमें उन्होंने चीनी जनता से कहा था कि अगर उसने अपने नये हुकमरानों (शासकों) की सरदारी में अपनी सरहद से बाहर क़दम निकाला तो इसका नतीजा बुरा होगा.

इस चेतावनी की अभी कोइ जरूरत नहीं थी. एक तो इस लिये कि अकाल की कड़ियाँ चीन को बहुत दिनों तक सरहद के पार जाने से रोके रहेंगी और दूसरे इसलिये कि चीन कोई क़दम रूस की सलाह और शिरकत के बिना नहीं उठायेगा. और रूस के बारे में पिछली लड़ाई के सब से बड़े अमरीकी सेनापति जनरल आइजन हावर का कहना है कि वह फ़िलहाल कोई लड़ाई नहीं शुरू करेगा जब

خبر ٹھیک ہے . پچیس برس کے لگاتار لڑائی دنگے اور اراجکتا کے بعد اکال کا پڑنا کوئی تعجب کی بات نہیں . مگر اس سے یہ نہ سمجھنا چاہئے کہ چین کی کمیونسٹ سرکار امریکہ کے سامنے گھٹنے ٹیک دے گی . ایسا ہی اکال روسی انقلاب کے بعد وہاں بھی پڑا تھا اور اُس کی کہانی اتنی بھیانک ہے کہ روس کے اتہاس میں عام طور سے بیان نہیں کی جاتی . اس اکال نے ہزاروں لاکھوں جانیں لے لیں مگر کمیونزم کے سیلاب کو روک نہیں سکا . چین میں بھی وہ حالات کے دھارے کو بدل نہیں سکے گا . اسکا پتہ وہاں کی کمیونسٹ سرکار کے ودیش منتری کے اُس بیان سے چلتا ہے جس میں انہوں نے امریکہ سے کہا ہے کہ وہ ایشیا کو ایشیاوالوں کے لئے چھوڑ دے اور اس میدان میں اپنے سامراجی گھوڑے نہ دوڑائے .

(۱۴۵)

یہ بیان امریکہ کے ودیش منتری کی اس چیتاونی کا جواب ہے جس میں اُنہوں نے چینی جنتا سے کہا تھا کہ اگر اس نے اپنے نئے حکمرانوں (شاسکوں) کی سرداری میں اپنی سرحد سے باہر قدم نکالا تو اس کا نتیجہ برا ہوگا .

اس چیتاونی کی ابھی کوئی ضرورت نہیں تھی . ایک تو اس لئے کہ اکال کی کڑیاں چین کو بہت دنوں تک سرحد کے پار جانے سے روکے رہیں گی اور دوسرے اس لئے کہ چین کوئی قدم روس کی صلاح اور شرکت کے بنا نہیں اُٹھائیگا . اور اس کے بارے میں پچھلی لڑائی کے سب سے بڑے امریکی سینا پتی جنرل آئزن ہاور کا کہنا ہے کہ وہ فی‌الحال کوئی لڑائی نہیں شروع کرے گا جب

तक कि उसके देश के हालात या सरहद के वाक़ेआत उसे इसके लिये बिलकुल ही मजबूर न कर दें.

इतमीनान और चिन्ता

रूस की तरफ़ से इस इतमीनान के होते हुए भी जनरल आइज़न हावर को इस बात की बड़ी चिन्ता है कि अमरीका की फ़ौजी ताक़त बहुत कम कर दी गई है और इसे बढ़ाना बहुत ज़रूरी है. यही खयाल अमरीका के दूसरे जिम्मेदार लोगों का भी है. और इसी लिये अमरीका के एटम-शक्ति कमीशन ने उस स्कीम को रोक कर, जिसके अनुसार कारखानों के लिये बिजली का बन्दोबस्त किया जाने वाला था, अपना पूरा ध्यान हाइड्रोजन बम बनाने पर लगा दिया है. अमरीका को इस चिन्ता का पता वाशिंगटन की उन खबरों से भी चलता है जिनमें कहा गया है कि दूर पूरब में कम्युनिज्म के फैलाव को रोकने के लिये अमरीका, बरतानिया और फ़्रान्स एक मिली जुली पालिसी बना लें. इस बात पर सोच विचार करने के लिये लन्दन में इन तीनों देशों के विदेश मन्त्रियों को एक कान्फ़्रेन्स बुलाई गई है जिसमें और बातों के साथ साथ जापान के साथ सुलह के समझौते पर भी बात चीत होगी. और अगर इस समझौते के लिये रूस ने बरतानिया और अमरीका की यह बात न मानी कि इस समझौते की तैयारी में जापान के खिलाफ़ लड़ने वाले दूसरे देशों को भी शरीक कर लिया जाय तो उसे छोड़ कर जापान से समझौता कर लिया जायगा.

जापान से समझौते की यह कोशिश इसलिये की जारही है कि वहाँ की जनता पर चीन के इनक़लाब का असर पड़ने से पहले उसे

تک کہ اس کے دیش کے حالات یا سرحد کے واقعات اسے اِس کے لئے بالکل ہی مجبور نہ کر دیں ۔

اطمینان اور چنتا

روس کی طرف سے اس اطمینان کے ہوتے ہوئے بھی جنرل آئزن ہاور کو اس بات کی بڑی چنتا ہے کہ امریکہ کی فوجی طاقت بہت کم کردی گئی ہے اور اسے بڑھانا بہت ضروری ہے ۔یہی خیال امریکہ کے دوسرے ذمہ دار لوگوں کا بھی ہے ۔ اور اسی لئے امریکہ کے ایٹم شکتی کمیشن نے اُس سکیم کو روک کر، جس کے انوسار کارخانوں کے لئے بجلی کا بندوبست کیا جانے والا تھا، اپنا پورا دھیان ہائیڈروجن بم بنانے پر لگا دیا ہے ۔ امریکہ کی اس چنتا کا پتہ واشنگٹن کی ان خبروں سے بھی چلتا ہے جن میں کہا گیا ہے کہ دور پورب میں کمیونزم کے پھیلاؤ کو روکنے کے لئے امریکہ، برطانیہ اور فرانس ایک ملی جلی پالیسی بنالیں ۔ اس بات پر سوچ وچار کرنے کے لئے لندن میں ان تینوں دیشوں کے ودیش منتریوں کی ایک کانفرنس بلائی گئی ہے جس میں اور باتوں کے ساتھ ساتھ جاپان کے ساتھ صلح کے سمجھوتے پر بھی بات چیت ہوگی ۔ اور اگر اس سمجھوتے کے لئے روس نے برطانیہ اور امریکہ کی یہ بات نہ مانی کہ اس سمجھوتے کی تیاری میں جاپان کے خلاف لڑنے والے دوسرے دیشوں کو بھی شریک کرلیا جائے تو اسے چھوڑ کر جاپان سے سمجھوتہ کر لیا جائیگا ۔

جاپان سے سمجھوتے کی یہ کوشش اس لئے کی جارہی ہے کہ وہاں کی جنتا پر چین کے انقلاب کا اثر ہونے سے پہلے اسے

अपने पैरों पर खड़ा कर दिया जाय और यह पैर वैसे ही हों जैसे अमरीका चाहता है जिसमें कि रूस और चीन को रोकने और धमकाने के लिये जापान में अड्डे बनाये जा सकें.

कामनवेल्थ और हिन्दुस्तान

यह मक़सद अमरीका और बरतनिया के अलावा कामनवेल्थ के कुछ मेम्बरों का भी है और उनमें अस्ट्रेलिया सबसे आगे आगे है. उस की राजधानी में अगले मई में कामनवेल्थ के देशों की एक कान्फ़्रेन्स बुलाई गई है जिसमें उन देशों की आर्थिक तरक़्क़ी पर सोच विचार किया जायगा. लेकिन राजनीतिक और फ़ौजी मसले इस बातचीत से अलग नहीं रह सकते. यह मसले अस्ट्रेलिया के विदेश मन्त्री के दिमाग़ पर छाये हुए हैं. वह आर्थिक तरक़्क़ी के लिये अमरीका की मदद को जरूरी समझते हैं और अमरीका राजनैतिक मुनाफ़े के बिना आर्थिक मदद देने के लिये तैयार नहीं होगा. अभी यह नहीं कहा जा सकता कि अमरीका कितना और कैसा मुनाफ़ा चाहेगा, लेकिन यह तय है कि इस मामले में हिन्दुस्तान उतनी दूर तक नहीं जायगा जितनी दूर तक आस्ट्रेलिया कामनवेल्थ को ले जाना चाहता है. क्योंकि नेहरू सरकार अमरीका के नाराज़ हो जाने के बावजूद अपने आप को रूस विरोधी जत्थाबन्दी से अलग रखना चाहती है.

एक देश की तरफ़ से दूसरे देश की मदद के बारे में हिन्दुस्तान का रवैया बरमा के लिये साठ करोड़ पौंड के उस क़र्ज़ से जाहिर होगया है जिस में हिन्दुस्तान भी शरीक है. इस मदद के साथ कोई राजनीतिक बन्धन नहीं हैं और इसकी बुनियाद सिर्फ़ इस

اپنے پیروں پر کھڑا کردیا جائے اور یہ پیر ویسے ہی ہوں جیسے کہ امریکہ چاہتا ہے، جس میں کہ روس اور چین کو روکنے اور دھمکانے کے لئے جاپان میں اڈے بنائے جاسکیں۔

کامن ویلتھ اور ہندستان

یہ مقصد امریکہ اور برطانیہ کے علاوہ کامن ویلتھ کے کچھ ممبروں کا بھی ہے اور ان میں آسٹریلیا سب سے آگے آگے ہے۔ اس کی راجدھانی میں اگلے مئی میں کامن ویلتھ کے دیشوں کی ایک کانفرنس بلائی گئی ہے جس میں ان دیشوں کی آرتھک ترقی پر سوچ وچار کیا جائیگا۔ لیکن راج نیتک اور فوجی مسئلے اس بات چیت سے الگ نہیں رہ سکتے۔ یہ مسئلے آسٹریلیا کے ودیش منتری کے دماغ پر چھائے ہوئے ہیں۔ وہ آرتھک ترقی کے لئے امریکہ کی مدد کو ضروری سمجھتے ہیں اور امریکہ راج نیتک منافع کے بنا آرتھک مدد دینے کے لئے تیار نہیں ہوگا۔ ابھی یہ نہیں کہا جاسکتا کہ امریکہ کتنا اور کیسا منافع چاہے گا، لیکن یہ طے ہے کہ اس معاملے میں ہندستان اُتنی دور تک نہیں جائے گا جتنی دور تک آسٹریلیا کامن ویلتھ کو لے جانا چاہتا ہے۔ کیونکہ نہرو سرکار امریکہ کے ناراض ہو جانے کے باوجود اپنے آپ کو روس ورودھی جتھ بندی سے الگ رکھنا چاہتی ہے

ایک دیش کی طرف سے دوسرے دیش کی مدد کے بارے میں ہندستان کا رویہ برما کے لئے ساٹھ کروڑ پونڈ کے اس قرض سے ظاہر ہوگیا ہے جس میں ہندستان بھی شریک ہے۔ اس مدد کے ساتھ کوئی راج نیتک بندھن نہیں ہیں۔ اور اس کی بنیاد صرف اس

उम्मीद पर है कि अगर बरमी सरकार ने, जो अब धीरे धीरे कम्युनिस्ट और करेन बाग़ियों से अपनी खोई हुई ज़मीन वापस लेती जारही है, अपने देश की आर्थिक हालत दुरुस्त कर लीं तो वहाँ क्रान्ति की वह आग बुझ जायगी जिस की लपट हिन्दुस्तान तक आ सकती है.

बरतानिया का चुनाव

अन्तराष्ट्री मामलों में आस्ट्रेलिया की कम्युनिस्ट दुश्मनी का एक कारन वहाँ की राष्ट्री सरकार की रंगत है. उस ने इसी बुनियाद पर चुनाव लड़ा और जीता है और इसी तरह बरतानिया की विदेशी पालिसी पर भी वहाँ के पिछले फ़रवरी वाले चुनाव का असर पड़ रहा है. इस चुनाव में लेबर पार्टी जीत तो गई है मगर बरतानी पार्लीमेन्ट में उस के मेम्बरों और दूसरी पार्टीयों के मेम्बरों की गिनती में सिर्फ़ छः का फ़रक़ था जो तीन जगहों के ख़ाली हो जाने के कारन अब और कम होगया है. चुनाव में विदेशी पालिसी का किसी तरफ़ से कोई ज्यादा चरचा नहीं किया गया फिर भी लेबर पार्टी और टोरी पार्टी की दृष्टि में थोड़ा बहुत फ़रक़ ज़रूर है. टोरी पार्टी वाले रूस और कम्युनिज्म की दुशमनी में लेबर पार्टी से बहुत आगे हैं. वह लेबर सरकार को उसी तरफ़ ढकेल रहे हैं. इस के अलावा अमरीका के रवैये से भी उनको मदद मिल रही है और लेबर सरकार में इतनी शक्ति नहीं कि वह इस दबाव का डट कर मुक़ाबला करे. इस कमजोरी के कारन वह न तो अपने देश में सोशलिज्म को आगे बढ़ा सकती है और न विदेशी मामलों में मुस्तैदी और हिम्मत के साथ कोई आज़ाद रास्ता अपना सकती है.

اُمید پر ہے کہ اگر برمی سرکار نے، جو اب دھیرے دھیرے کمیونسٹ اور کرین باغیوں سے اپنی کھوئی ہوئی زمین واپس لیتی جارہی ہے، اپنے دیش کی آرتھک حالت درست کرلی تو وہاں کرانتی کی وہ اگ بجھ جائیگی جس کی لپٹ ہندستان تک آسکتی ہے ۔

برطانیہ کا چناؤ ۔

انتر راشٹری معاملوں میں آسٹریلیا کی کمیونسٹ دشمنی کا ایک کارن وہاں کی راشٹری سرکار کی رنگت ہے ۔ اس نے اسی بنیاد پر چناؤ لڑا اور جیتا ہے ۔ اور اسی طرح برطانیہ کی ودیشی پالیسی پر بھی وہاں کے پچھلے فروری والے چناؤ کا اثر پڑ رہا ہے ۔ اس چناؤ میں لیبر پارٹی جیت تو گئی ہے مگر برطانی پارلیمنٹ میں اس کے ممبروں اور دوسری پارٹیوں ممبروں کی کے گنتی میں صرف چھ کا فرق تھا جو تین جگہوں کے خالی ہوجانے کے کارن اب اور کم ہو گیا ہے ۔ چناؤ میں ودیشی پالیسی کا کسی طرف سے کوئی زیادہ چرچا نہیں کیا گیا پھر بھی لیبر پارٹی اور توری پارٹی کی درشٹی میں تھوڑا بہت فرق ضرور ہے ۔ توری پارٹی والے روس اور کمیونزم کی دشمنی میں لیبر پارٹی سے بہت آگے ہیں ۔ وہ لیبر سرکار کو اسی طرف ڈھکیل رہیں ہیں ۔ اس کے علاوہ امریکہ کے رویہ سے بھی ان کو مدد مل رہی ہے اور لیبر سرکار میں اتنی شکتی نہیں کہ وہ اس دباؤ کا ڈٹ کر مقابلہ کرے ۔ اس کمزوری کے کارن وہ نہ تو اپنے دیش میں سوشلزم کو آگے بڑھا سکتی ہے اور نہ ودیشی معاملوں میں [illegible]

नतीजा यह है कि वह अमरीका की लटकन बनी हुई उसके पीछे पीछे घसिटती चली जा रही है. और अमरीका वाले उसकी इस मजबूरी को अच्छी तरह समझते हैं तभी तो अमरीकी पार्लिमेन्ट की एक कमेटी ने कहा है कि बरतानिया को उस वक़्त तक कोई मदद नहीं दी जायगी जब तक कि वह आयर्लैंड के बंटवारे को ख़तम न कर दे.

मुस्लिम देश

अमरीका के सामने बरतानिया की इस बेबसी को देखते हुए यह कोई ताज्जुब की बात नहीं है कि जो मुल्क पहले बरतानिया के असर में थे वह अब अमरीका की तरफ़ ताकने लगे हैं. और इसकी एक मिसाल यह है कि ईरान और अमरीका के बीच एक फ़ौजी समझौते का मसविदा तैयार हो गया है. दूसरी तरफ़ ईरान ने अमरीका को ख़ुश करने के लिए फ़िलस्तीन में यहूदी राज (इसराईल) को मान लिया है. बरतानिया के पुराने दोस्त अर्दन के बादशाह अब्दुल्ला भी उसी तरफ़ जा रहे हैं. हालाँकि इसका सबब उतना अमरीका को ख़ुश करना नहीं है जितना कि फ़िलस्तीन के अरब इलाक़े को, जिसे उन्होंने हड़प कर रखा है, हज़म कर लेना.

शाह अब्दुल्ला के इस रुख़ ने दूसरे अरब राजों को उनसे ख़फ़ा कर दिया है और उनको अरब लीग से निकाल देने की बातें सुनाई दे रही हैं. मिस्र और सऊदी अरब ख़ास तौर से उनका विरोध कर कर रहे हैं और इस विरोध में इराक़ भी शरीक है, जहाँ उनका सगा भतीजा राज करता है. लेकिन इस विरोध का नुक़सान उस फ़ायदे से बहुत कम है जो फ़िलस्तीन के अरब हिस्से के ट्रान्सजार्डन में

نتیجہ یہ ہے کہ وہ امریکہ کی لٹکن بنی ہوئی اس کے پیچھے پیچھے گھسٹتی چلی جارہی ہے . اور امریکہ والے اس کی اس مجبوری کو اچھی طرح سمجھتے ہیں تبھی تو امریکی پارلیمنٹ کی ایک کمیٹی نے کہا ہے کہ برطانیہ کو اس وقت تک کوئی مدد نہیں دی جائیگی جب تک کہ وہ آئر لینڈ کے بٹوارے کو ختم نہ کردے

مسلم دیش

امریکہ کے سامنے برطانیہ کی اس بے بسی کو دیکھتے ہوئے یہ کوئی تعجب کی بات نہیں ہے کہ جو ملک پہلے برطانیہ کے اثر میں تھے وہ اب امریکہ کی طرف تاکنے لگے ہیں . اور اس کی ایک مثال یہ ہے کہ ایران اور امریکہ کے بیچ ایک فوجی سمجھوتے کا مسودہ تیار ہوگیا ہے . دوسری طرف ایران نے امریکہ کو خوش کرنے کے لئے فلسطین میں یہودی راج (اسرائیل) کو مان لیا ہے . برطانیہ کے پرانے دوست اردن کے بادشاہ عبداللہ بھی اسی طرف جارہے ہیں . حالانکہ اس کا سبب اتنا امریکہ کو خوش کرنا نہیں ہے جتنا کہ فلسطین کے عرب علاقے کو' جسے انہوں نے ہڑپ کر رکھا ہے' ہضم کر لینا .

شاہ عبداللہ کے اس رخ نے دوسرے عرب راجوں کو ان سے خفا کردیا ہے . اور ان کو عرب لیگ سے نکال دینے کی باتیں سنائی دے رہی ہیں . مصر اور سعودی عرب خاص طور سے ان کا ورودھ کر رہے ہیں . اور اس ورودھ میں عراق بھی شریک ہے' جہاں ان کا سگا بھتیجا راج کرتا ہے . لیکن اس ورودھ کا نقصان اس فائدے سے بہت کم ہے جو فلسطین کے عرب حصے کے ٹرانس جارڈن میں

उर्दू के हाथों हिन्दी का हक़ मारे जाने का डर कभी नहीं था. एक भ्रम खड़ा करके हल्ला बोल दिया गया था. लोग 'भूत भूत' चिल्लाने लगे. भगदड़ मच गई. लेकिन बाबा अब तो वह डर नहीं रहा. फिर आप क्यों डरपोक बने हूए हैं ? अब ललकार पुकार क्यों मची हुई है ? बेकार और बे ज़रूरत डाट डपट या बचाव की तय्यारी इस बात की साफ़ चुग़ली खा रही है कि अभी डर नहीं निकला. सब से बड़ा दुशमन डर है. बे कारन के डरना घातक साबित होता है. ऐसा डर झींक झींक कर मरने का पैग़ाम है. ऐसा डर बहुत मनहूस लच्छन है.

हर भारतवासी को हिन्दी जानना चाहिये. वह हिन्दी जो प्रेमचन्द जानते और लिखते थे. जो हिन्दी गुप्त जी, निराला जी, प्रसाद जी, पन्त जी या महा देवी जी के यहां मिलती है उसे सीखने या न सीखने की आज़ादी हर आदमी को होनी चाहिये क्योंकि यह हिन्दी प्रेमचन्द भी नहीं जानते थे. राजपाट का सारा कारबार उसी हिन्दी से चलेगा जो प्रेमचन्द जानते थे. प्रेमचन्द की ही हिन्दी राजेन्द्र बाबू और ज्यादातर हमारे नेता और हमारी राजसभाओं के मेम्बर या निन्नानबे फ़ी सदी हिन्दी पढ़ने वाले जानते हैं. उपन्यासों, कहानियों, नाटकों और हिन्दी कविता के भी बहुत बड़े हिस्से की हिन्दी प्रेमचन्द ही की हिन्दी होगी. विज्ञान, दर्शन और तमाम विद्याओं की हिन्दी भी प्रेमचन्द ही की हिन्दी होगी. रही बात इस्तिलाहों (पारिभाषिक शब्दों) की सो उन्हें भी हम गुप्त जी से लेकर आज तक के हिन्दी कवियों से नहीं पा सकते और सुगम से सुगम शब्द ही हम इस्तिलाहों के लिये भी चलेंगे. हिन्दी का प्रेम हमें यह तो नहीं

توتي - يه تو ايسا هي هے كه كهانے كي آزادى هے مهى نهيں نهيں كهولنے ديا جاے گا - سوچئے هندي پريم كے نام بهوت بهوت بڑي نهچتا هے -؛ يه هندي كا پرچار كرتے هوئے اور نهيں رها يا نهيں ؟ سمجهے آپ ؟ ارے بابا سنسكرت سے لدى ہر كهوں مچى سب كو پڑهاؤ ' ايسى هندي ميں كوئي فيل هو تو تيارى اس (حالانكه ايسا كرنا هندوؤں اور هندى پريميوں كى بهي- سب سے بڑا كرے گا) ليكن اگر يه شرط پورى كركے كوئى اردو سا دہ جهوك چاهتا هے تو آپ كے چهرے پر هوائياں كيوں اڑنے لگتي هيں هے -

بهارت كي بهاشاؤں ميں جو بهاشا كهڑي بولي ' پريم چند كى هندي يا سهل اور نرم يا ٹكسالي هندي سے پريم چند زياده ملتي هے وه اردو هے - جتنے هندي شبد هندى بهاشا جي (لغت) ميں هيں ' جتنے محاورے يا ٹكسالى سيكهلے هندى ميں هيں وه ايك ايك كركے سب كے سب يهى نهيں بهى اردو ميں هيں بلكه وه اردو ميں پهلے آئے اور اتني بڑي تعداد ميں آئے كه آج تک هندي لكهكوں كے يهاں نهيں آئے نه اور خوبصورتى اور سكهڑاپے كے ساتهه آئے - كيا اندهير هے ؟ جانوے اردو ميں هندي ساهتيه سے دس گنا بيس گنا هندي شبد اور محاورے نگينے كى طرح جگمگا رهے هوں' جس اردو كو سهكرچند پريمچند اور بالمكند گپت نے هندي كي دهوى كو سولهوں سنگهى سے سجاديا' جس اردو ساهتيه كا بڑا حصه ناگرى ميں چهپتے اشک سبهى هندى جاننے والوں كى سمجهه ميں آجاتا هے اور سے كے سن كر ان پڑه هندو مسلمان سبهي جهوم اٹهتے هيں اسى لئے هي هم

शामिल हो जाने से हासिल होगा. इस के लिये शाह अब्दुल्ला को बरतानिया की मंजूरी पहले ही मिल चुकी है. और अमरीका की मन्जूरी इसलिये मिल जायगी कि अमरीकी सरकार शुरू से ही इसराईल की सरपरस्ती कर रही है. इस के अलावा इराक़ पर बरतानिया का जो असर है और सऊदी अरब अमरीका को तेल निकालने का पट्टा देकर उस से जो रक़म पा रहा है उसके कारन यह दोनों एक हद से आगे नहीं बढ़ेंगे और जिस तरह फ़िलस्तीन की तक़सीम एक सच्चाई बन गई उसी तरह इसराईल सरकार भी आमतौर पर तसलीम कर ली जायगी.

महात्मा गांधी के बलिदान से सबक़

लेखक—पंडित सुन्दर लाल

साम्प्रदायिकता यानी फ़िरक़ा परस्ती की बीमारी पर राजकाजी, मज़हबी और इतिहासी पहलू से विचार और उसका इलाज, जिसने आख़िर में देश-पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच में न रहने दिया ! क़ीमत बारह आना.

किताब नागरी और उर्दू लिखावटों में अलग अलग मिल सकती है.

मैनेजर "नया हिन्द"
४८ बाई का बाग, इलाहाबाद.

شامل هوجانے سے حاصل هوگا ۔ اس کے لئے شاہ عبداللہ کو برطانیہ کي منظوري پہلے هی مل چکی هے ۔ اور امریکہ کي منظوری اس لئے مل جائیگی کہ امریکی سرکار شروع سے هی اسرائیل کي سرپرستي کر رهي هے ۔ اس کے علاوہ عراق پر برطانیہ کا جو اثر هے اور سعودی عرب امریکہ کو تیل نکالنے کا پٹہ دے کر اس سے جو رقم پا رها هے ' اس کے کارن یہ دونوں ایک حد سے آگے نہیں بڑھینگے ۔ اور جس طرح فلسطین کی تقسیم ایک سچائي بن گئی اسي طرح اسرائیل سرکار بھي عام طور پر تسلیم کرلی جائیگی ۔

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

لیکھک — پنڈت سندر لال

سامپردایکتا یعنی فرقہ پرستی کی بیماری پر راج کاجی ' مذهبی اور اتہاسی پہلو سے وچار اور اُسکا علاج ' جس نے آخر میں دیش پتا مہاتما گاندھی تک کو همارے بیچ میں نہ رهنے دیا ! قیمت بارہ آنہ

کتاب ناگری اور اُردو لکھاوتوں میں الگ الگ مل سکتی هے ۔

منیجر "نیا هند"

कुछ किताबें



کچھ کتابیں

इस्लामी तालीमात

लेखक — मौलाना मीर विलायत अली, ३७५ सफ़े, उर्दू लिखावट, लिखाई और छपाई अच्छी, जिल्द बंधी हुई. क़ीमत चार रुपये चार आने. मिलने का पता—दफ़्तर 'नया हिन्द' ४८ बाई का बाग. इलाहाबाद.

सब मजहबों की एकता और सच्चाई और सब मजहब के मानने वालों में मेल मुहब्बत और रवादारी और सब आदमियों को नेकी और सदाचार (एख़लाक़) की क़ुरान ने जो तालीम दी है उसे लेखक ने इस किताब में बड़े सीधे सादे और दिलचस्प तरीक़े से बयान किया है. हर बात के सबूत में क़ुरान की आयतें दी गई हैं. मैंने क़ुरान को काफ़ी ध्यान से पढ़ा है, उस पर ग़ौर भी किया है और अपनी किताब "गीता और क़ुरान" में क़ुरान की असली तालीम को साफ़ साफ़ पेश करने की कोशिश की है. फिर भी "इस्लामी तालीमात" को देखने और मौलाना मीर विलायत अली से हैदराबाद में बात चीत करने से मुझे मालूम हुआ कि मौलाना का मुताला बहुत गहरा और निषपक्ष यानी ग़ैरजानिबदार है और अपनी

اسلامی تعلیمات

لیکھک — مولانا میر ولایت علی، ۳۷۵ صفحے، اردو لکھاوٹ لکھائی اور چھپائی اچھی جلد بندھی ہوئی، قیمت چار روپیہ چار آنے۔ ملنے کا پتہ—دفتر '' نیا ھند '' ۴۸ بائی کا باغ، الہ آباد۔

سب مذہبوں کی ایکتا اور سچائی اور سب مذہب کے ماننے والوں میں میل محبت اور رواداری اور سب آدمیوں کو نیکی اور سدا چار (اخلاق) کی قرآن نے جو تعلیم دی ہے اسے لیکھک نے اس کتاب میں بڑے سیدھے سادے اور دلچسپ طریقے سے بیان کیا ہے۔ ہر بات کے ثبوت میں قرآن کی آئتیں دی گئی ہیں۔ میں نے قرآن کو کافی دھیان سے پڑھا ہے۔ اس پر غور بھی کیا ہے اور اپنی کتاب " گیتا اور قرآن " میں قرآن کی اصلی تعلیم کو صاف صاف پیش کرنے کی کوشش کی ہے۔ پھر بھی '' اسلامی تعلیمات'' کو دیکھنے اور مولانا میر ولایت علی سے حیدرآباد میں بات چیت کرنے سے مجھے معلوم ہوا کہ مولانا کا مطالعہ بہت سچا اور نش پکش یعنی غیر جانب دار ہے اور اپنی

अलग क़ीमत रखता है. मैं खुले दिल से क़बूल करता हूँ कि मुझे इस किताब में कई ऐसी चीज़ें मिलीं जिनसे क़ुरान के बारे में मेरी जानकारी बढ़ी. हिन्दू हों या मुसलमान या कोई भी हों, मज़हब की दुनिया में ऐसे आदमी बहुत कम मिलते हैं जो अपने अपने तरीक़े की हठ से ऊपर उठ कर मुहब्बत की निगाह और बड़े दिल से सब तरीक़ों को देख सकें. हैदराबाद में मुझे कई ऐसे बुज़ुर्ग दिखाई दिये जिन में मीर विलायत अली साहब एक ख़ास हस्ती हैं. इस्लाम को ठीक ठीक समझने और क़ुरान के हवालों से दूसरों को समझाने की जो क़ाबलियत मैंने इन में देखी वह और बहुत कम में पाई. वह सचमुच सर्व-धर्म सम्भावी हैं.

किताब के शुरू में इस्लाम की तारीफ़ यह बतलाई गई है— "इस्लाम नस्ल और निस्बत (ख़ून और सम्बन्ध) की इजारादारी नहीं है बल्कि इनसानियत में तरक़्क़ी करने वाले लोगों का इस्मे सिफ़त (उनकी उपाधि) है."

किताब के उसी हिस्से में अपना हाल बताते हुए लेखक ने लिखा है—"मेरी सारी उम्र की खोज और कोशिशों में सिर्फ़ एक ही ख़याल काम करता रहा कि अक़ायदी तअस्सुब (मानताओं की कट्टरता) का लड़ाई झगड़ा मिटे और दिल की सफ़ाई और मुहब्बत से मिल कर काम करने की आदत पैदा हो. जिस से इन्सानियत तरक़्क़ी की सीढ़ियों पर चढ़ती जाय. एक ख़ुदा के करोड़ों बन्दे अलग अलग अक़ीदों (मानताओं) के होते हुए भी रवादारी (उदारता) के ज़रिये

الگ قیمت رکھتا ھے . میں کھلے دل سے قبول کرتا ھوں کہ مجھے اس کتاب میں کئی ایسی چیزیں ملیں جن سے قرآن کے بارے میں میری جانکاری بڑھی. ھندو ھوں یا مسلمان یا کوئی بھی ھوں' مذھب کی دنیا میں ایسے آدمی بہت کم ملتے ھیں جو اپنے اپنے طریقہ کی ھٹ سے اوپر اُٹھکر محبت کی نگاہ اور بڑے دل سے سب طریقوں کو دیکھ سکیں . حیدرآباد میں مجھے کئی ایسے بزرگ دکھائی دئے جن میں میر ولایت علی صاحب ایک خاص ھستی ھیں . اسلام کو ٹھیک ٹھیک سمجھنے اور قرآن کے حوالوں سے دوسروں کو سمجھانے کی جو قابلیت میں نے اُن میں دیکھی وہ اور بہت کم میں پائی . وہ سچ مچ سرو دھرم سم بھاوی ھیں .

کتاب کے شروع میں اسلام کی تعریف یہ بتلائی گئی ھے— " اسلام نسل اور نسبت (خون اور سمبندھ) کی اجارہ داری نہیں ھے بلکہ انسانیت میں ترقی کرنے والے لوگوں کا اسم صفت (ان کی اپادھی) ھے . "

کتاب کے اسی حصے میں اپنا حال بتاتے ھوئے لیکھک نے لکھا ھے — " میری ساری عمر کی کھوج اور کوششوں میں صرف ایک ھی خیال کام کرتا رھا کہ عقائدی تعصب (مانتاؤں کی کٹرتا) کا لڑائی جھگڑا مٹے اور دل کی صفائی اور محبت سے مل کر کام کرنے کی عادت پیدا ھو . جس سے انسانیت ترقی کی سیڑھیوں پر چڑھتی جائے . ایک خدا کے کروڑوں بندے الگ الگ عقیدوں (مانتاؤں) کے ھوتے ھوئے بھی رواداری (اُدارتا) کے ذریعے آپس

अलग रंग और नस्लों के होते हुए भी लोग किसी खास ग़रज़ के लिए मिलकर एक हो जाते हैं."

मुसलमानों की इस वक़्त की हालत को बयान करते हुए डाक्टर हाशिम अमीर अली ने किताब के तआरुफ़ (परिचय) में लिखा है—"इन्सानी बिरादरी में घुल मिल जाने के बजाय अपनी बनावटी और मन घड़न्त और ग़ैर ज़रूरी ख़ासियतों (विशेषताओं) को क़ायम रखने पर ज़िद करके मुसलमान ने अपने को इन्सानी ख़ानदान (मानव कुटुम्ब) में अजनबी बना लिया है. क़ुरान के असली पयाम और क़ानूने क़ुदरत के ख़िलाफ़ होने की वजह से क़ुदरत (प्रकृति) ख़ुद उसके इस अलग वजूद को गवारा नहीं कर सकती ...... हमको सिर्फ़ यह समझ लेने की ज़रूरत है कि अपने को सिर्फ़ मुसलमान कह कर अपने तरीक़े को सही समझ लेना ठीक नहीं है. महज़ मुसलमान कहलाये जाने या अब्दुल्ला नाम रख लेने से हम ख़ुदा के चहीते बन्दे नहीं हो जाते बल्कि बनी नौअ इनसान (मानव जाति) में से बिला फ़र्क़ नस्ल (जाति) व मज़हब व मिल्लत (सम्प्रदाय) उस आदमी या उस गरोह पर ख़ुदावन्दे आलम (जगदीश्वर) की नज़रे रहमत (दयादृष्टि) होती है जो बनी नौअ इन्सान की सच्ची सेवा करे."

सब धर्मों की एकता को बयान करते हुए किताब के लेखक ने मौलाना हाली का यह शेर नक़ल किया है—

मिल्लतें रस्तों के हैं सब हेर फेर
सब जहाज़ों का है लंगर एक घाट

الگ رنگ اور نسلوں کے هوتے هوئے بهي لوگ کسی خاص غرض کے لئے مل کر ایک هوجاتے هیں ."

مسلمانوں کی اس وقت کی حالت کو بیان کرتے هوئے ڈاکٹر هاشم امیر علي نے کتاب کے تعارف (پریچئے) میں لکھا هے — " انسانی برادری میں گهل مل جانے کے بجائے اپنی بناوٹی اور من گهڑنت اور غیر ضروري خاصیتوں (وشیشتاؤں) کوقائم رکھنے پر ضد کرکے مسلمان نے اپنے کوا نسانی خاندان (مانو کٹمب) میں اجنبی بنا لیا هے — قرآن کے اصلی پیام اور قانون قدرت کے خلاف هونے کی وجه سے قدرت (پرکرتی) خود اس کے اس الگ وجود کو گوارا نهیں کرسکي ...... هم کو صرف یه سمجھ لینے کی ضرورت هے که اپنے کو صرف مسلمان کہ کر اپنے طریقے کو صحیح سمجھ لینا ٹھیک نهیں هے . محض .مسلمان کهلائے جانے یا عبدالله نام رکھ لینے سے هم خدا کے چهیتے بندے نهیں هوجاتے بلکه بني نوع انسان (مانو جاتي) میں سے بلا فرق نسل (جاتي) و مذهب وملت (سمپردائے) اُس آدمي یا اس گروه پر خدا وند عالم (جگدیشور) کي نظر رحمت (دیا درشٹی) هوتی هے جو بنی نوع انسان کی سچي سیوا کرے ."

سب دهرموں کی ایکتا کو بیان کرتے هوے کتاب کے لیکهک نے مولانا حالی کا یه شعر نقل کیا هے —

ملتیں رستوں کے هیں سب هیر پهیر
سب جهازوں کا هے لنگر ایک گهاٹ

आगे चलकर उन्हों ने एक़बाल का यह शेर भी दिया है—

काबे में बुतकदे में है यकसाँ तेरी ज़िया (जोत)
मैं इम्तियाज़े दैरो हरम (मसजिद मन्दिर का फ़रक़) में फँसा रहा

उन्हों ने मुहम्मद साहब की यह हदीस भी नक़ल की है—तमाम मख़लूक़ अल्लाह का कुनबा है. अल्लाह का प्यारा वह है जो अल्लाह की मख़लूक़ को नफ़ा पहुंचाये.

किताब का एक मज़मून 'नार-ए-इत्तिहाद' है. वह इस तरह शुरू किया गया है :—

"ख़ुदा का दीन एक और वनी नौअ इनसान (मानव जाति) भी एक ही उम्मत (क़ौम) हैं. लेकिन अफ़सोस हमारी अनानियत (अहंकार) ने हमें एक रहने नहीं दिया. ख़ुदग़र्ज़ियों ने हमेशा फूट डाल दी और अल्लाह के दीन को जो असल में फूट मिटाने वाला था उसी को फ़िरक़ाबन्दी की बुनियाद बनाकर आपस में सरफुटव्वल करना और एक दूसरे को काफ़िर म्लेच्छ कहना शुरू कर दिया."

(१४८)

एक और मज़मून सलाये अमल (अमल की दावत) है जिसमें क़ुरान की आयतों का हवाला दे दे कर बताया गया है कि ईमान और कुफ़्, तौहीद और शिर्क वग़ैरह के असली मानी क्या हैं. इसी मज़मून में शैतान के पूजने वालों और आदमी के पूजने वालों को नेकी, किरदार और सदाचार का उपदेश देकर ख़ुदा के पूजनेवाले बनाने की सुन्दर कोशिश की गई है. इस मज़मून का एक टुकड़ा यह है :—

शिर्क (एक ईश्वर के साथ दूसरे को शरीक करना यानी ईश्वर की तरह किसी और को पूजना) मोमिन (अल्लाह को मानने वाले)

آگے چل کر انہوں نے اقبال کا یہ شعر بھی دیا ھے —

کعبہ میں بت کدے میں ھے یکساں تیری ضیا (جوتی)
میں امتیاز دیرو حرم (مسجد و مندر کا فرق) میں پھنسا رھا

اُنہوں نے محمد صاحب کی یہ حدیث بھی نقل کي ھے — — تمام مخلوق اللہ کا کنبہ ھے اللہ کا پیارا وہ ھے جو اللہ کی مخلوق کو نفع پہونچائے .

کتاب کا ایک مضمون ' نعرہ اتحاد ' ھے . وہ اس طرح شروع کیا گیا ھے :—

"خدا کا دین ایک ھے اور بني نوع انسان (مانو جاتی) بھی ایک ھي اُمت (قوم) ھیں . لیکن افسوس ھماری انانیت (اھنکار) نے ھمیں ایک رھنے نہیں دیا . خودغرضیوں نے ھمیشہ پھوٹ ڈال دی اور اللہ کے دین کو جو اصل میں پھوٹ مٹانے والا تھا اُسي کو فرقہ بندي کی بنیاد بناکر آپس میں سرپھٹول کرنا اور ایک دوسرے کو کافر ملیچھ' کہنا شروع کردیا . "

([illegible])

ایک اور مضمون ' صلاء عمل ' (عمل کی دعوت) ھے جس میں قرآن کي آئتوں کا حوالہ دے دے کر بتایا گیا ھے کہ ایمان اور کفر' توحید اور شرک وغیرہ کے اصلی معنی کیا ھیں . اِسي مضمون میں شیطان کے پوجنے والوں اور آدمي کے پوجنےوالوں کو نیکی' کردار اور سداچار کا اُپدیش دے کر خدا کے پوجنے والے بنانے کي سندر کوشش کی گئی ھے . اِس مضمون کا ایک ٹکڑا یہ ھے :—

" شرک (ایک ایشور کے ساتھ دوسرے کو شریک کرنا یعنی ایشور کي طرح کسی اور کو پوجنا) مومن (اللہ کو ماننے والے)

ही करते हैं. ग़ैर मोमिन के लिये तो यह लफ़्ज़ इस्तेमाल भी नहीं किया जा सकता. मुनकिरे ख़ुदा (नास्तिक) चाहे जितना भी गिरा हुआ हो मगर मुशरिक किसी तरह नहीं कहा जा सकता. पस शिर्क का डरावा सिर्फ़ मोमिनों के लिये है. चाहे वह मोमिन यानी अल्लाह को मानने वाले कृष्ण जी के ज़रिये मोमिन हुए हों या हज़रत मूसा के ज़रिये या हज़रत ईसा के ज़रिये या किसी भी और पैग़म्बर के ज़रिये......अफ़सोस है कि हर जगह खुला शिर्क हो रहा है मगर तरह तरह की खींचतान करके उसके जायज़ होने के फ़तवे दे दिये जाते हैं. दूसरों के अच्छे कामों पर रश्क करने के बजाय ऐब ढूंडना और लफ़्ज़ी झगड़े खड़े करना लोगों का ख़ास ढंग हो गया है. काश ऐसा होता कि अपनी ख़राबियों पर भी नज़र रहती जो आइन्दा तरक़्क़ी का कारन होती."

एक तीसरा मज़मून 'तनज़्ज़ुले इनसान' (मनुष्य का पतन) है जिसमें बहुत अच्छी तरह दिखलाया गया है कि किस तरह इन्सान, जो सब जानदारों में अशरफ़ यानी श्रेष्ट है, अपनी बदकिरदारी और दुराचार के कारन इन्सानियत से गिरकर जानवरों से भी बदतर हो जाता है.

इसी तरह के कई और मज़मून हैं. जैसे 'ख़िलाफ़त व बादशाहत' 'तक़दीर व तदबीर' 'जेहाद की हक़ीक़त' वग़ैरा.

जेहाद किसे कहते हैं इसपर मौलाना की राय जानने के क़ाबिल है. वह लिखते हैं :—

"अरबी ज़बान में जेहाद के मानी हैं पूरी ताक़त के साथ कोई काम करना. क़ुरान में यह लफ़्ज़ मक्की सूरतों में भी आया है और

کرتے هیں . غیر مومن کے لئے تو یہ لفظ استعمال بھی نہیں کہا جاسکتا . منکر خدا (ناستک) چاهے جتنا بھي گرا هوا هو مگر مشرک کسی طرح نہیں کہا جاسکتا . پس شرک کا ڈراوا صرف مومنوں کے لئے ہے . چاهے وہ مومن یعنی الله کو ماننے والے کرشن جی کے ذریعے مومن هوے هوں یا حضرت موسیٰ کے ذریعے یا حضرت عیسیٰ کے ذریعے یا کسی بھی اور پیغمبر کے ذریعے ...... افسوس هے که هر جگه کھلا شرک هو رها هے مگر طرح طرح کي کھینچ تان رکے اس کے جائز هونے کے فتوے دے دیئے جاتے هیں . دوسروں کے اچھے کاموں پر رشک کرنے کے بجائے عیب ڈھونڈنا اور لفظي جھگڑے کھڑے کرنا یہ لوگوں کا خاص ڈھنگ هوگیا هے . کاش ایسا هوتا که اپني خرابیوں پر بھی نظر رهتي جو آئندہ ترقی کا کارن هوتي ."

ایک تیسرا مضمون ' تنزل انسان ' (منش کاپتن) هے جس میں بہت اچھی طرح دکھلایا گیا هے که کس طرح انسان' جو سب جاندا روں میں اشرف یعنی شریشٹ هے' اپنی بدکرداري اور دراچار کے کارن انسانیت سے گر کر جانوروں سے بھی بدتر هو جاتا هے .

اسی طرح کے کئی اور مضمون هیں جیسے ' خلافت و بادشاهت ' ' تقدیر و تدبیر ' 'جہاد کی حقیقت' وغیرہ .

جہاد کسے کہتے هیں اس پر مولانا کي رائے جاننے کے قابل هے. وہ لکھتے هیں :—

" عربي زبان میں جہاد کے معنی هیں پوري طاقت کے ساتھ کوئی کام کرنا . قرآن میں یہ لفظ مکي سورتوں میں بھی آیا هے اور

मदनी सूरतों में भी. (मक्की सूरतें सब उस ज़माने की हैं कि जब तक मुसलमानों को हथियार उठाने की इजाज़त नहीं दी गई थी) .... और भली और बुरी हर तरह की कोशिशों के लिये जेहाद लफ़्ज़ काम में लाया गया है......मुख़ालिफ़ (विरोधी) से अपनी बात मनवाने के लिये अपनी शक्ति भर कोशिश करना भी जेहाद है. चाहे वह अच्छे काम के लिये हो चाहे बुरे काम के लिये. मज़हब के मैदान में यह लफ़्ज़ नेकी के प्रचार और बदी को रोकने की कोशिश के लिये भी इस्तेमाल किया जाता है." फिर जेहाद की क़िस्में बतलाई गई हैं. जैसे 'जेहनी जिहाद' यानी अपने अन्दर ध्यान ज्ञान की खोज करना, 'नफ़्सेजेहाद' यानी मन को बुरी तरफ़ जाने से रोकना, 'ज़बान से जेहाद' 'हाथ से, माल से और जान से जेहाद' 'औरतों का जेहाद' जैसे बीमारों की सेवा करना, घायलों की मरहम पट्टी करना, हज्ज करना वग़ैरह—इन सब किस्मों के लिये क़ुरान और हदीस के हवाले दिये गये हैं. फिर हर जेहाद की शर्तें और सब अमन पसन्द से दोस्ती और मेल मिलाप रखने के हुक्म दिये गये हैं. ज़ालिमों और हमला करने वालों से अपने बचाव के लिये जंग करना भी जेहाद है और क़ुरान में इसकी इजाज़त है. मज़मून के आख़ीर में यह दिखाया गया है कि इस्लाम में हर ग़ैरमुस्लिम से लड़ना या किसी भी ग़ैरमुस्लिम से मज़हब के मामले में ज़बरदस्ती करना जायज़ नहीं है......मौलाना ने लिखा है कि सबसे बड़ा जेहाद जो हर मुसलमान के लिये ज़िन्दगी भर फ़र्ज़ है नफ़्स का जेहाद है यानी अपनी इन्द्रियों और मन को जीतना. जब आदमी अपने नफ़्स को क़ाबू में करले तो फिर बाहर के शैतानों पर क़ाबू पाने की फ़िक्र करे

مدنی سورتوں میں بھی (مکی سورتیں سب اُس زمانے کی ہیں کہ جب تک مسلمانوں کو ہتھیار اُٹھانے کی اجازت نہیں دی گئی تھی) .... اور بھلی اور بری ہر طرح کی کوششوں کے لئے جہاد لفظ کام میں لیا گیا ہے . ... مخالف (وِرودھی) سے اپنی بات منوانے کے لئے اپنی شکتی بھر کوشش کرنا بھی جہاد ہے . چاہے وہ اچھے کام کے لئے ہو چاہے برے کام کے لئے . مذہب کے میدان میں یہ لفظ نیکی کے پرچار اور بدی کو روکنے کی کوشش کے لئے بھی استعمال کیا جاتا ہے . " پھر جہاد کی قسمیں بتلائی گئی ہیں . جیسے ' ذہنی جہاد ' یعنی اپنے اندر دھیان گیان کی کھوج ' کرنا ' نفس سے جہاد' یعنی من کو بری طرف جانے سے روکنا, 'زبان سے جہاد' ہاتھ سے' مال سے اور جان سے جہاد' عورتوں کا جہاد' جیسے بیماروں کی سیوا کرنا' گھائلوں کی مرہم پٹی کرنا' حج کرنا وغیرہ — ان سب قسموں کے لئے قرآن اور حدیث کے حوالے دیئے گئے ہیں . پھر ہر جہاد کی شرطیں اور سب امن پسندوں سے دوستی اور میل ملاپ رکھنے کے حکم دئے گئے ہیں . ظالموں اور حملہ کرنے والوں سے اپنے بچاؤ کے لئے جنگ کرنا بھی جہاد ہے اور قرآن میں اس کی اجازت ہے . مضمون کے آخیر میں یہ دکھایا گیا ہے کہ اسلام میں ہر غیر مسلم سے لڑنا یا کسی بھی غیر مسلم سے مذہب کے معاملہ میں زبردستی کرنا جائز نہیں ہے .... مولانا نے لکھا ہے کہ سب سے بڑا جہاد جو ہر مسلمان کے لئے زندگی بھر فرض ہے نفس کا جہاد ہے یعنی اپنی اندریوں اور من کو جیتنا . جب آدمی اپنے نفس کو قابو میں کرلے تو پھر باہر کے شیطانوں پر قابو پانے کی فکر کرے

सोचे और कोशिश करे कि उनकी बदकारियां किस तरह मुहब्बत और सुलह से दूर की जायं. जब इन नर्म हथियारों से काम न चले और बुरे लोग दुनियां के अमन को आग लगाते ही रहें तो इस दर्जे पर पहुंचकर क़ुरान में महज़ अपने बचाव के लिये सख़्त हथियारों से काम लेने की भी इजाज़त है. इस आख़िरी कोशिश का नाम तलवार से जेहाद' है. जो लड़ाई अपनी किसी ग़रज़ को पूरा करने के लिये या अपनी बहकी हुई क़ौम के फ़ायदे के लिये या लूट खसोट के लिये या अपनी बड़ाई के घमण्ड में दुनिया को जीतने के ख़याल से लड़ी जाय इस्लाम में उसका नाम जेहाद नहीं शैतानी जंग है. इस्लाम इसकी सख़्त बुराई करता है.

ऊपर मैंने जेहाद जैसे नाज़ुक मसले पर लेखक के पूरे ख़याल देने की कोशिश की है. मुझे अपने मुताले की बिना पर मालूम है कि क़ुरान के अन्दर दान देना, दूसरों की सेवा करना, अपने ग़ुस्से और मन को जीतना जैसे हर नेक काम को अल्लाह की राह में जेहाद कहा गया है. सच्चाई का प्रचार करना भी एक जेहाद है. क़ुरान में अपने दीन के बचाव के लिये (जबरदस्ती अपना मज़हब फैलाने के लिये नहीं) हथियार लेकर लड़ने की भी इजाज़त है. पर जहाँ तक क़ुरान और लफ़्ज़ जेहाद का सम्बन्ध है तीन बातें ध्यान में रखने की हैं. पहली यह कि जेहाद लफ़्ज़ क़ुरान की बहुत सी आयतों में ऐसी जगह आया है जहाँ हथियारों या लड़ाई का कोई ज़िक्र नहीं और जेहाद से मतलब वहाँ सिर्फ़ दूसरे नेक कामों से है. दूसरी बात यह है कि कुछ ऐसी आयतों में भी जेहाद शब्द आया है जिनमें अल्लाह की राह में हर तरह की कोशिश जैसे दान देना,

سوچے اور کوشش کرے کہ ان کی بدکاریاں کس طرح محبت اور صلح سے دور کی جائیں . جب ان نرم ہتھیاروں سے کام نہ چلے اور برے لوگ دنیا کے امن کو آگ لگاتے ہی رہیں تو اس درجہ پر پہنچ کر قرآن میں محض اپنے بچاؤ کے لئے سخت ہتھیاروں سے کام لینے کی بھی اجازت ہے اس آخری کوشش کا نام 'تلوار سے جہاد' ہے . جو لڑائی اپنی کسی غرض کو پورا کرنے کے لئے یا اپنی بہکی ہوئی قوم کے فائدے کے لئے یا لوٹ کھسوٹ کے لئے یا اپنی بڑائی کے گھمنڈ میں دنیا کو جیتنے کے خیال سے لڑی جائے اسلام میں اس کا نام جہاد نہیں شیطانی جنگ ہے . اسلام اس کی سخت برائی کرتا ہے .

اوپر میں نے جہاد جیسے نازک مسئلے پر لیکھک کے پورے خیال دینے کی کوشش کی ہے . مجھے اپنے مطالعہ کی بنا پر معلوم ہے کہ قرآن کے اندر دان دینا دوسروں کی سیوا کرنا' اپنے غصے اور من کو جیتنا جیسے ہر نیک کام کو اللہ کی راہ میں جہاد کہا گیا ہے . سچائی کا پرچار کرنا بھی ایک جہاد ہے . قرآن میں اپنے دین کے بچاؤ کے لئے (زبردستی اپنا مذہب پھیلانے کے لئے نہیں) ہتھیار لے کر لڑنے کی بھی اجازت ہے . پر جہاں تک قرآن اور لفظ جہاد کا سمبندھ ہے تین باتیں دھیان میں رکھنے کی ہیں . پہلی یہ کہ جہاد لفظ قرآن کی بہت سی آیتوں میں ایسی جگہ آیا ہے جہاں ہتھیاروں یا لڑائی کا کوئی ذکر نہیں اور جہاد سے مطلب وہاں صرف دوسرے نیک کاموں سے ہے . دوسری بات یہ ہے کہ کچھ ایسی آیتوں میں بھی جہاد شبد آیا ہے جن میں اللہ کی راہ میں ہر طرح کی کوشش؛ جیسے دان دینا'

नमाज पढ़ना, नफ़्स को जीतना और अपने बचाव के लिये हथियार लेकर लड़ना सब शामिल है. तीसरी बात यह कि जहाँ कहीं किसी आयत में साफ़ साफ़ और सिर्फ़ हथियार लेकर लड़ने का ज़िक्र है वहाँ क़ुरान भर में किसी एक जगह भी जेहाद लफ़्ज़ इस्तेमाल नहीं किया गया बल्कि 'क़ताल' लफ़्ज़ इस्तेमाल किया गया है जिसके मानी लड़ाई हैं. आम मुसलमानों में जेहाद के जो मानी लिये जाते हैं वह क़ुरान की ज़बान को ध्यान में रखते हुए बहुत ग़लत और धोका देने वाले हैं. मुझे ख़ुशी है कि मौलाना मीर विलायत अली साहब ने अपनी इस किताब में इस ग़लत समझ को बहुत दर्जे तक दूर किया है.

विद्वान लेखक ने क्या अच्छा लिखा है :—'इस्लाम क्या है? नेक कामों का मजमूआ और मुसलमान कौन हैं? दुनिया की हर क़ौम के समझदार इन्सान. वह लोग ग़लत में फँसे हुए हैं जो इस्लाम को नेकियों से अलग करके नस्ली पैदायशी या ख़ानदानी समझते हैं. मुस्लिम नाम......सब सच्चे लोगों पर लागू होता है."

किताब का एक मज़मून यह भी है :—

"मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना"

यह मज़मून बहुत ही दिलचस्प और काम का है. इसमें बड़े बड़े सूफ़ियों की सी आज़ाद और बड़ी निगाह पाई जाती है. इसमें और बातों के साथ साथ यह बातें भी समझाई गई हैं—दूसरी क़ौमों का मज़ाक़ उड़ाने की मनाही—दूसरे मज़हबों को झूठा कहने की मनाही—सब धर्मों की किताबों में हिदायत है—सब किताबों पर ईमान लाने का हुक्म है—सब रसूलों पर ईमान लाना ज़रूरी है—अलग अलग

نماز پڑھنا' نفس کو جیتنا اور اپنے بچاؤ کے لئے ہتھیار لے کر لڑنا سب شامل ہے ۔ تیسری بات یہ کہ جہاں کہیں کسی آیت میں صاف صاف اور صرف ہتھیار لے کر لڑنے کا ذکر ہے وہاں قرآن بھر میں کسی ایک جگہ بھی جہاد لفظ استعمال نہیں کیا گیا بلکہ 'قتال' لفظ استعمال کیا گیا ہے جس کے معنی لڑائی ہیں ۔ عام مسلمانوں میں جہاد کے جو معنی لئے جاتے ہیں وہ قرآن کی زبان کو دھیان میں رکھتے ہوئے بہت غلط اور دھوکہ دینے والے ہیں ۔ مجھے خوشی ہے کہ مولانا میر ولایت علی صاحب نے اپنی اس کتاب میں اس غلط سمجھ کو بہت درجے تک دور کیا ہے ۔

ودوان لیکھک نے کیا اچھا لکھا ہے :— '' اسلام کیا ہے ؟ نیک کاموں کا مجموعہ اور مسلمان کون ہیں ؟ دنیا کی ہر قوم کے سمجھدار انسان — وہ غلطی میں پھنسے ہوئے ہیں جو اسلام کو نیکیوں سے الگ کرکے نسلی' پیدائشی یا خاندانی سمجھتے ہیں مسلم .... نام سب سچے لوگوں پر لاگو ہوتا ہے ''

کتاب کا ایک مضمون یہ بھی ہے :—

'' مذہب نہیں سکھاتا آپس میں بیر رکھنا ''

یہ مضمون بہت ہی دلچسپ اور کام کا ہے ۔ اس میں بڑے بڑے صوفیوں کی سی آزاد اور بڑی نگاہ پائی جاتی ہے ۔ اس میں اور باتوں کے ساتھ ساتھ یہ باتیں بھی سمجھائی گئی ہیں—دوسری قوموں کا مذاق اڑانے کی مناہی—دوسرے مذہبوں کو جھوٹا کہنے کی مناہی—سب دھرموں کی کتابوں میں ہدایت ہے—سب کتابوں پر ایمان لانے کا حکم ہے—سب رسولوں پر ایمان لانا ضروری ہے—الگ الگ

शरीअतों (पूजा बंदगी के तरीकों) की सचाई—ग़ैर मुस्लिम नेकों की नेकी को मानना वग़ैरह—इन सब बातों पर ज़्यादातर क़ुरान की आयतें और कहीं कहीं हदीसों के हवाले भी दिये गये हैं.

इस किताब के पढ़ने वाले को मालूम होगा कि क़ुरान किस सफ़ाई के साथ इस बात को मानता है कि सब मज़हबों में मोमिन (आस्तिक), मुत्तक़ी (बुराई से बचने वाले) और सालहीन (नेक इन्सान) हैं—और फ़िरक़ा बन्दी को 'शर्क और गुनाह बताता है. मेरी राय में यह किताब हर उर्दूदां मुसलमान को और हर उस ग़ैर मुसलमान को जो उर्दू पढ़ सकता है और जो ईमानदारी के साथ क़ुरान और इस्लाम को ठीक ठीक समझना चाहता है, ज़रूर पढ़नी चाहिये. किताब अपने (७९) ढंग की बिलकुल एक नई और अनोखी चीज़ है और गहरी जानकारी, ग़ैर जानिबदारी और सचाई तीनों का नमूना है.

मुझे सिर्फ़ एक शिकायत है. ज़बान इससे कहीं ज़्यादा आसान हो सकती थी जिससे किताब से फ़ायदा उठाने वालों की गिनती बढ़ जाती. मैंने जो हिस्से किताब से दिये हैं उनमें कहीं कहीं ज़बान को ज़रा आसान कर लिया है.

हैदराबाद (दक्किन) सुन्दर लाल

شریعتوں (پوجا بندگی کے طریقوں) کی سچائی—غیر مسلم نیکوں کی نیکی کو ماننا وغیرہ—ان سب باتوں پر زیادہ تر قرآن کی آیتوں اور کہیں کہیں حدیثوں کے حوالے بھی دئے گئے ہیں ۔

اس کتاب کے پڑھنے والے کو معلوم ہوگا کہ قرآن کس صفائی کے ساتھ اس بات کو مانتا ہے کہ سب مذہبوں میں مومن (آستک)، متقی (برائی سے بچنے والے) اور صالحین (نیک انسان) ہیں — اور فرقہ بندی کو شرک اور گناہ بتاتا ہے ۔ میری رائے میں یہ کتاب ہر اردوداں مسلمان کو اور ہر اس غیر مسلمان کو جو اُردو پڑھ سکتا ہے اور جو ایما داری کے ساتھ قرآن اور اسلام کو ٹھیک ٹھیک سمجھنا چاہتا ہے ضرور پڑھنی چاہئے ۔ کتاب اپنے ڈھنگ (۷۹) کی بالکل ایک نئی اور انوکھی چیز ہے اور گہری جانکاری، غیر جانب داری اور سچائی تینوں کا نمونہ ہے ۔

مجھے صرف ایک شکایت ہے ۔ زبان اس سے کہیں زیادہ آسان ہوسکتی تھی جس سے کتاب سے فائدہ اُٹھانے والوں کی گنتی بڑھ جاتی ۔ میں نے جو حصے کتاب سے دئے ہیں اُن میں کہیں کہیں زبان کو ذرا آسان کرلیا ہے ۔

حیدرآباد (دکن) سندر لال

सिखाता कि हम मुशकिल हिन्दी, रट्टू हिन्दी या किताबी हिन्दी, जटिल और कठिन हिन्दी का प्रचार करें. किसी को कठिन हिन्दी लिखने पढ़ने का शौक़ हो तो हम आप उसे रोकेंगे भी नहीं. हमें हिन्दी भाषा और सहज और नर्म हिन्दी साहित्य का देश भर में प्रचार करना है न कि कठिन हिन्दी का. यहां हो सकता है और होना भी यही चाहिये. जिन लोगों में उर्दू का प्रचार है वह भी एक आध फ़ी सदी को छोड़ कर सहल और नर्म उर्दू ही लिखते पढ़ते हैं यह और बात है कि सहल और नर्म उर्दू में या यों कहिये कि प्रेम चन्द की उर्दू में बहुत ऊंचा साहित्य बन चुका है, बहुत ऊँचा, बहुत सिजिल, बहुत रचा हुआ साहित्य!

नर्म और मुहाविरेदार टकसाली हिन्दी का प्रेमी न उर्दू से डरता है न उसे उर्दू से डरने की जरूरत है. उर्दू से डरता है वह आदमी जो बीहड़ या रट्टू हिन्दी का सपना देख रहा है. आप पूछते क्यों नहीं कि हिन्दी प्रेमी उर्दू से कहां और कब डर रहे हैं? अगर आप स्कूलों में हर हिन्दू मुसलमान को हिन्दी पढ़ने पर मजबूर करते हैं तो मैं इसे उर्दू से डरना नहीं कहता. यह तो होना चाहिये. लेकिन हिन्दी पढ़ते और सीखते हुए हम और सब कुछ सीख सकते हैं उर्दू नहीं सीख सकते, ऐसा कायदा क़ानून या निसाब (पाठ क्रम) बना देना उर्दू से डरना नहीं तो क्या है? स्कूलों, कालिजों में उर्दू डिपार्टमेन्ट बन्द किये जा रहे हैं, उर्दू पढ़ाने वाले बीसों बरस नौकरी करने के बाद निकाले जा रहे हैं. छठे या सातवें दरजे में अगर कोई मुसीबत का मारा उर्दू लेना चाहे तो ले भी नहीं ले सकता. चलो सांप भी मरा लाठी भी नहीं

نیچے میں اردو شاعری سے کچھ مثالیں پیش کرتا
یہ نمونے دو سوا دوسو برس کی اردو شاعری سے لئے گئے تل اور
ہر طرح کی شاعری پیش کی گئی ہے۔ پچاس ہزار سے زیادہ لئے کا
شعر اردو شاعری میں ملیںگے۔ اردو شاعروں نے صرف پھٹکر ا اور
نرم بھاشا میں نہیں کہے ہیں، کتابیں کی کتابیں اسی بھاشا ہ کہ
لکھکر قلم ڈال دیا ہے۔ اگر کوئی پوچھے کہ اردو لپی میں ا —
نرم ہندی انہوں نے کیوں لکھی تو ملک محمد جایسی نے کو
رسکھان نے اردو لپی میں اپنی رچنائیں کیوں لکھیں۔ یہ تو ہے
کی بات ہے۔ آپ نے جیسے جایسی اور رس کھان کو ناگری میں
چھاپ لیا ویسے ہی ایک لاکھ پنّے اردو لپی میں چھپے بہت
کو ناگری لپی میں چھاپ لیجئے اور اس طرح ناگری پڑھنے
کے لئے سونے اور جواہرات کی کھان کھول دیجئے۔ میں ڈرتا ہے۔
حاضر کر رہا ہوں ان میں بہت تھوڑے ایسے فارسی عربی سی جو
ہیں جنہیں ہندی جاننے والے نہیں جانتے زیادہ‌تر تو ا پوچھتے
عربی شبد آے ہیں جو بچے اور ان‌پڑھ بھی بولتے ہیں ہے ہیں؟
ذرا ٹھہر ٹھہر کر ان نمونوں کو پڑھئے، دھیرے د پر مجبور
گن گنائیے۔ بھاشا کی سندرتا اور سگمتا کو دل میں ا ہونا چاہئے
انہیں پڑھ لیجئے بار بار پڑھ لیجئے۔ دھرم کے کچھ سیکھ
کبیر اور نانک نے جس طرح رام رحیم کو ملایا تھا کو ون یا نصاب
اردو شاعروں نے ہندی فارسی کو اس طرح کھلا، ہے - اسکولوں
ہندو مسلمان دونوں جھوم اٹھیں۔ ان نمونوں کو اردو پڑھانے
گن گنا لیجئے، گا لیجئے دل میں اتار لیجئے اس۔ چھٹے یا
سے کچھ باتیں پوچھوں گا پہلے سے کیوں پوچھوں - لنا چاہے تو
بھی نہیں



बालक संसार

एडीटर

प्रेम भाई

प्यारे बच्चो !

तुम्हें यह जानकर खुशी होगी कि "नया हिन्द" में तुम्हारे लिए हर महीने "बच्चों की दुनिया" के नाम से अच्छी अच्छी और प्यारी प्यारी बातें बतलाने की कोशिश की जायगी जिसमें तुम ऐसी ऐसी चीज़ें पाओगे जिनसे बड़े बन सकोगे.

एक बात सुनो, यह तो तुम जानते ही हो कि अब हमारे भारत पर दूसरों का राज नहीं रहा बल्कि अब हमारा देश बिलकुल आज़ाद है. तुम आज़ाद भारत के बढ़ने वाले बालक हो. तुमको कुछ बातों पर ध्यान देना और उन्हें पूरा करना ऐसा ही ज़रूरी है जैसा कि अगर तुम्हें कोई खिलौना दिलाया जाय तो तुम खुश खुश उसे ले तो लोगे पर अपने पिता से डांट की आवाज़ में यह भी कहते सुनोगे

بالک سنسار

اڈیٹر

پریم بھائي

پیارے بچو !

تمہیں یہ جان کر خوشی ہوگی کہ " نیا ہند " میں تمہارے لئے ہر مہینے " بچوں کی دنیا" کے نام سے اچھي اچھی اور پیاری پیاری باتیں بتلانے کی کوشش کي جائیگی جس میں تم ایسی ایسی چیزیں پاؤگے جن سے بڑے بن سکوگے .

ایک بات سنو' یہ تو تم جانتے ہی ہو کہ اب ہمارے بھارت پر دوسروں کا راج نہیں رہا بلکہ اب ہمارا دیش بالکل آزاد ہے . تم آزاد بھارت کے بڑھنے والے بالک ہو. تم کو کچھ باتوں پر دھیان دینا اور اُنہیں پورا کرنا ایسا ہي ضروری ہے جیسا کہ اگر تمہیں کوئی کھلونا دلایا جائے تو تم خوش خوش اُسے لے تو لوگے پر اپنے پتا سے ڈانٹ کي آواز میں یہ بھی کہتے سنوگے کہ '' اِس کو

याद रखो भूल न जाना यह. खिलौना बड़ी ही मुसीबतों के बाद हमें मिला है और हाँ. इसके लिये हमारे बापू जी ने जो कुछ किया उसे भुलाया नहीं जा सकता. अब हमें भारत और धरती के कोने कोने में बापू जी के उन अनमोल रत्नों को फैलाना है जिनके लिये उन्होंने अपना जीवन भेंट किया. बापू मर कर भी अमर हैं.

आओ ! इस बात का संकल्प करें कि भारत में लड़ाई झगड़ा न हो पाये. और बड़े छोटे, ग़रीब अमीर का फ़रक़ न रह पाये. इस बात की कोशिश करें कि भारत भर में प्रेम और मोहब्बत की गंगा अपनी बाढ़ से गांव गांव में प्रेम का गरजदार सुरों में चर्चा करे.

आओ ! एक बार हम फिर भारत में बापू के सन्देश "प्रेम व शान्ति" के चर्चा का बीड़ा उठायें. हर काम में मुसीबतें अपने भयानक मुह खोले काम करनेवाले को निराश करने की कोशिश में हैं पर इन मुसीबतों के कारन हिम्मत न हारना और डटकर अपना काम किये जाना.

अपने प्रेम भाई को इस पते पर लेख, कविता और कहानी भेजो. मगर सुन रखो लेख सरल भाषा में साफ़ हों. इस के साथ साथ एक लाइन छोड़कर काग़ज़ के एक ही तरफ़ लिखे जायें.

प्रेम भाई — एडीटर 'बच्चों की दुनिया' (नया हिन्द)

नं. १४५६ "मीना" मुग़ल पुरा, हैदराबाद (दकन)

یاد رکھو بھول نہ جانا . یہ کھلونا بڑی ھی مصیبتوں کے بعد ھمیں ملا ھے اور ھاں' اس کے لئے ھمارے باپو جی نے جو کچھ کیا اُسے بھلایا نہیں جاسکتا . اب ھمیں بھارت اور دھرتی کے کونے کونے میں باپو جی کے اُن آن مول رتنوں کو پھیلانا ھے جن کے لئے اُنھوں نے اپنا جیون بھینٹ کیا . باپو مرکر بھی امر ھیں .

آؤ ! اس بات کا سنکلپ کریں کہ بھارت میں لڑائی جھگڑا نہ ھو پائے . اور بڑے چھوٹے' غریب امیر کا فرق نہ رہ پائے . اس بات کی کوشش کریں کہ بھارت بھر میں پریم اور محبت کی گنگا اپنی باڑھ سے گاؤں گاؤں میں پریم کا گرجدار سروں میں چرچا کرے .

آؤ ! ایک بار ھم پھر بھارت میں باپو کے سندیش " پریم و شانتی " کے چرچا کا بیڑا اٹھائیں . ھر کام میں مصیبتیں اپنے بھیانک منھ کھولے کام کرنے والے کو نراش کرنے کی کوشش میں ھیں پر ان مصیبتوں کے کارن ھمت نہ ھارنا اور ڈٹ کر اپنا کام کئے جانا .

اپنے پریم بھائی کو اِس پتہ پر لیکھ' کویتا اور کہانی بھیجو . مگر سن رکھو لیکھ سرل بھاشا میں صاف ھوں . اس کے ساتھ ساتھ ایک لائن چھوڑکر کاغذ کے ایک ھی طرف لکھے جائیں .

پریم بھائی ـــ اڈیٹر " بچوں کی دنیا " (نیا ھند)

نمبر ۱۴۵۶ ـ " مینا " مغل پورہ' حیدرآباد (دکن .)

बालकों के नाम .....

आगे ही बढ़ते जाना पीछे कभी न हटना
भारत के काम आना सेवा सभी की करना
भारत के चाँद तारो
भारत के चाँद तारो
लड़ना न तुम झगड़ना मिलजुल के सब से रहना
आंसू न तुम बहाना हर वक्त हँसते रहना
भारत के चाँद तारो
भारत के चाँद तारो
नेकी के काम करना नेकों के काम आना
धरती में नाम करना जाने तुम्हें ज़माना
भारत के चाँद तारो
भारत के चाँद तारो
बापू की बात सुन लो हाँ सुन लो याद रखलो
मिल जुल के हँस लो खेलो हँस हँस के मोती रोलो
भारत के चाँद तारो
भारत के चाँद तारो

विक़ार ख़लील शाहपुरी

بالکوں کے نام.....

آگے ھی بڑھتے جانا پیچھے کبھی نہ ھٹنا
بھارت کام کے آنا سوا سبھی کی کرنا
بھارت کے چاند تارو
بھارت کے چاند تارو
لڑنا نہ تم جھگڑنا مل جل کے سب سے رھنا
آنسو نہ تم بہانا ھر وقت ھنستے رھنا
بھارت کے چاند تارو
بھارت کے چاند تارو
نیکی کے کام کرنا نیکوں کے کام آنا
دھرتی میں نام کرنا جانے تمھیں زمانہ
بھارت کے چاند تارو
بھارت کے چاند تارو
باپو کی بات سن لو ھاں سن لو یاد رکھ لو
مل جل کے ھنس لو کھیلو ھنس ھنس کے موتی رولو
بھارت کے چاند تارو
بھارت کے چاند تارو

وقار خلیل شاہ پوری

प्रेम और सेवा

मोहन एक ग़रीब लड़का था. वह बहादुर और धर्म का पक्का था हर वक़्त सच कहने में उसे शान्ति मिलती थी उसे दुखियों की सेवा जान से भी प्यारी थी वह अपने माता पिता की आंखों का तारा था. उसके पिता गाँव में मेहनत मजदूरी करते थे. जो कुछ भी कमाई होती उससे अपनी गुज़र बसर करते. मोहन उसी गाँव में पढ़ता था. आख़िर उसने सातवीं का इम्तहान पास कर लिया. अब आगे पढ़ने के लिये उसे किसी बड़े गाँव को जाना था. वह चाहता तो था कि और पढ़े पर ग़रीबी और थोड़ी कमाई पेट को ही बराबर न होती थी. इसलिये वह आगे न पढ़ सका. अब वह भी मेहनत मज़दूरी करने लगा और अपने बाप का हाथ बटाने लगा. उस के घर के पास ही उसका दोस्त रहमान रहता था जो खाते पीते घराने का था. पर उसका बाप बड़ा कंजूस था. उसके साथ "चमड़ी जाय दमड़ी न जाय" का मामला था. यह बाप का हाल था. इधर रहमान की यह आदत थी कि उसे किसी की सेवा किये बिना सुख न मिलता. वह चाहता कि अपने पड़ोसी ग़रीब मोहन की मदद करे, पर मोहन हमेशा इन्कार करता और कहता कि "जब तक इन हाथों में ताक़त है क्यों किसी के आगे हाथ फैलाऊँ. ऐसा करना धर्म में बहुत बड़ा पाप बताया गया है."

एक वक़्त आया कि मोहन का बाप बीमार पड़ गया और घर में सब दाने दाने को तरसने लगे. मोहन था तो नन्हा मुन्ना, पर जितना होता काम करने से पीछे न हटता. वह दवा के लिये गाँव के

پریم اور سیوا

موھن ایک غریب لڑکا تھا . وہ بہادر اور دھرم کا پکا تھا . ھر بات سچ کہنے میں اُسے شانتی ملتی تھی . اُسے دکھیوں کی سیوا جان سے بھی پیاری تھی . وہ اپنے ماتا پتا کی آنکھوں کا تارا تھا . اُس کے پتا گاؤں میں محنت مزدوری کرتے تھے . جو کچھ بھی کمائی ھوتی اس سے اپنی گذر بسر کرتے . موھن اُسی گاؤں میں پڑھتا تھا. آخر اس نے ساتویں کا امتحان پاس کرلیا. اب آگے پڑھنے کیلئے اُسے کسی بڑے گاؤں کو جانا تھا. وہ چاھتا تو تھا کہ اور پڑھے پر غریبی اور تھوڑی کمائی پیٹ کو ھی برابر نہ ھوتی تھی . اس لئے وہ آگے نہ پڑھ سکا . اب وہ بھی محنت مزدوری کرنے لگا اور اپنے باپ کا ھاتھ بٹانے لگا . اُس کے گھر کے پاس ھی اُس کا دوست رحمان رھتا تھا جو کھاتے پیتے گھرانے کا تھا پر اس کا باپ بڑا کنجوس تھا . اس کے ساتھ " چمڑی جائے دمڑی نہ جائے " کا معاملہ تھا . یہ باپ کا حال تھا. ادھر رحمان کی یہ عادت تھی کہ اُسے کسی کی سیوا کئے بنا سکھ نہ ملتا. وہ چاھتا کہ اپنے پڑوسی غریب موھن کی مدد کرے، پر موھن ھمیشہ انکار کرتا اور کہتا کہ " جب تک ان ھاتھوں میں طاقت ھے کیوں کسی کے آگے ھاتھ پھیلاؤں . ایسا کرنا دھرم میں بہت بڑا پاپ بتایا گیا ھے . "

ایک وقت آیا کہ موھن کا باپ بیمار پڑگیا اور گھر میں سب دانے دانے کو ترسنے لگے موھن تھا تو ننھا منا، پر جتنا ھوتا کام کرنے سے پیچھے نہ ھٹتا . وہ دوا کے لئے گاؤں کے

डाक्टर के पास गया. गाँव में कोई ख़ैराती दवाख़ाना न था जहाँ उसे मुफ़्त दवा मिलती. डाक्टर ने मोहन से कहा—"पांच रुपये दवा की क़ीमत होगी. दो तो दवा दी जाय और इलाज हो." डाक्टर की इन बातों से नन्हे मोहन का दिल भर आया और वह पाँच रुपये का बन्दोबस्त करने की बात सोचते हुए घर की ओर चल पड़ा. सोचते सोचते उसे यह बात याद आई कि जब वह मदरसा में पढ़ता था तब उसका एक दोस्त मुजीब फ़ीस लाना भूल गय था और वह फ़ीस के देने का आख़िरी दिन था. उसी दिन मोहन के बाप को मज़दूरी मिली थी. किसी काम के लिये उस के बाप ने उसे पाँच रुपये दिये थे जो उसके पास थे. उसने जब यह देखा कि मुजीब फ़ीस लाना भूल गया है तो इस वादे पर उसने उसे पाँच रुपये दिये कि दूसरे दिन वह उसे लौटा देगा. मगर दूसरे दिन ही से मोहन का मदरसा बन्द हो गया.

वह यही सोच रहा था कि आज वह पाँच रुपये होते तो बाप की दवा का बन्दोबस्त करता. इतने में लाल पगड़ी बाँधे डाकिया उसके पास आया और पूछने लगा—"क्या आप मोहन को जानते हैं?"

मोहन ने कहा—"हाँ कहो, क्या कहना है. मैं ही मोहन हूं." डाकिये ने कहा—"आप के नाम एक मनीआर्डर आया है!" यह सुनकर मोहन हैरान हो गया कि किसने उसे रुपए भेजे होंगे. उसने कहा—"मालूम होता है तुमसे भूल हुई है. मेरा कोई नहीं जो मनी-आर्डर कर सके."

ڈاکٹر کے پاس گیا. گاؤں میں کوئی خیراتی دواخانہ نہ تھا جہاں اُسے مفت دوا ملتی. ڈاکٹر نے موہن سے کہا—" پانچ روپیہ دوا کی قیمت ہوگی. دو تو دوا دی جائے اور علاج ہو." ڈاکٹر کی ان باتوں سے ننھے موہن کا دل بھر آیا اور وہ پانچ روپئے کا بندوبست کرنےکی بات سوچتے ہوئے گھرکی اور چل پڑا. سوچتے سوچتے اُسے یہ بات یاد آئی کہ جب وہ مدرسہ میں پڑھتا تھا تب اس کا ایک دوست مجیب فیس لانا بھول گیا تھا اور وہ فیس کے دینے کا آخری دن تھا. اُسی دن موہن کے باپ کو مزدوری ملی تھی. کسی کام کے لئے اُس کے باپ نے اسے پانچ روپئے دئے تھے جو اس کے پاس تھے. اس نے جب یہ دیکھا کہ مجیب فیس لانا بھول گیا ہے تو اس وعدہ پر اس نے اسے پانچ روپئے دیئے کہ دوسرے دن وہ اسے لوٹا دے گا مگر دوسرے دن ہی سے موہن کا مدرسہ بند ہوگیا.

وہ یہی سوچ رہا تھا کہ آج پانچ روپئے ہوتے تو باپ کی دوا کا بندوبست کرتا. اتنے میں لال پگڑی باندھے ڈاکیا اس کے پاس گیا اور پوچھنے لگا—" کیا آپ موہن کو جانتے ہیں ؟"

موہن نے کہا—" ہاں کہو کیا کہنا ہے میں ہی موہن ہوں." ڈاکیے نے کہا—"آپ کے نام ایک منی آرڈر آیا ہے!" یہ سن کر موہن حیران ہوگیا کہ کس نے اسے روپئے بھیجے ہونگے. اس نے کہا—" معلوم ہوتا ہے تم سے بھول ہوئی ہے. میرا کوئی نہیں جو منی آرڈر کرسکے"

"नही भाई ! देखो तो तुम्हारा पूरा पता साफ साफ लिखा है. भला ऐसी भी कहीं भूल चूक होती है और वह भी रुपयों के मामले में." यह कहते हुए डाकिये ने मनी आर्डर फ़ार्म मोहन के हाथों मे थमा दिया.

मोहन ने कूपन पढ़ा. लिखा था —

"भाई मोहन !

क्या तुम्हें याद है कि मैं ने मदरसा में तुमसे फ़ीस भूल आने की वजह से पाँच रुपये लिये थे. जब मैं घर आया तो मालूम हुआ कि आज सब भैया की शादी में बंगलौर जाने वाले हैं. माफ़ करना गड़ बड़ में तुम्हें वादे पर रुपया न दे सका. अब भेज रहा हूं. कबूल करो.

तुम्हारा साथी
मुजीब

मोहन ने भगवान को धन्यवाद दिया कि इस आड़े वक़्त में उसे रुपये मिल गये. वह ख़ुश था. ख़ुशी से उसका माथा दमक रहा था. वह दौड़ा दौड़ा अपने बाप के पास पहुंचा और कूपन व रुपये दिखाये. बाप ने कहा— 'बेटा ! याद रखो कोई भलाई बेकार नहीं जाती. तुमने मुजीब के आड़े वक़्त में काम दिया. आज वह तुम्हारे इस कठिन समय काम आया."

मोहन भागा भागा दवा लाने चला वह भूक से निढाल हो रहा था. उसने सुबह से कुछ खाया पिया न था. अब उसे न तो खाने की ही सुध रही और न भूक की परवा. बस वह भागा जा रहा था. [illegible] उसने देखा कि मुजीब भी तेज़ तेज़ कहीं जा रहा है.

"نہیں بھائی ! دیکھو تو تمہارا پورا پتہ صاف صاف لکھا ہے' بھلا ایسی بھی کہیں بھول چوک ہوتی ہے اور وہ بھی روپیوں کے معاملہ میں." یہ کہتے ہوئے ڈاکیے نے منی آرڈر فارم موہن کے ہاتھوں میں تھما دیا

موہن نے کوپن پڑھا لکھا تھا —

بھائی موہن !

کیا تمہیں یاد ہے کہ میں نے مدرسہ میں تم سے فیس بھول آنے کی وجہ سے پانچ روپئے لئے تھے . جب میں گھر آیا تو معلوم ہوا کہ آج سب بھیا کی شادی میں بنگلور جانے والے ہیں. معاف کرنا گڑ بڑ میں تمہیں وعدہ پر روپیہ نہ دے سکا' اب بھیج رہا ہوں . قبول کرو .

تمہارا ساتھی
مجیب

موہن نے بھگوان کو دھنیہ واد دیا کہ اس آڑے وقت میں اسے روپئے مل گئے . وہ خوش تھا' خوشی سے اس کا ماتھا دمک رہا تھا . وہ دوڑا دوڑا اپنے باپ کے پاس پہونچا اور کوپن و روپئے دکھائے باپ نے کہا — ' بیٹا یاد رکھو کوئی بھلائی بیکار نہیں جاتی . تمنے مجیب کے آڑے وقت میں کام دیا. آج وہ تمہارے اس کٹھن سمے کام آیا."

موہن بھاگا بھاگا دوا لانے چلا . وہ بھوک سے نڈھال ہو رہا تھا . اس نے صبح سے کچھ کھایا پیا نہ تھا . اب اسے نہ تو کھانے کی ہی سدھ رہی اور نہ بھوک کی پروا. بس وہ بھاگا جارہا تھا . راستہ چلتے اس نے دیکھا کہ مجیب بھی تیز تیز کہیں جا رہا ہے .

उसको बड़ा अचम्भा हुआ कि आज ही इस का मनी-आर्डर बंगलौर से आया और अब वह यहां कैसे? उसने आवाज़ दी "मुजीब, ओ मुजीब."

मुजीब आवाज़ सुनकर रुक गया और कहने लगा—"भई खूब! यार, तुम्हारे ही पास आ रहा था कि तुम मिल गये. मैंने उस दिन मदरसा में तुम से पाँच रुपये लिये थे और दूसरे ही दिन एलहाबाद गया था. कल ही आया हूँ. यह लो अपने रुपये." मुजीब ने पांच रुपये उसके हाथ में थमा दिये और यह कहकर चलता हुआ कि फिर फ़ुरसत में बात चीत होगी. अब मैं काम से जा रहा हूँ."

मोहन सोच में पड़ गया. गहरी सोच में. मुजीब के नाम से मनी-आर्डर किसने किया होगा? ग़रज़ समय पर रुपये मिलने से मोहन ने अपने बाप का इलाज किया और वह कुछ दिनों बाद ठीक होगया.

एक दिन उसकी भेंट रहमान से हुई. रहमान बातों बातों में उसे अपने घर लेगया. दोनों बैठे इधर उधर की बातें करने लगे.



इन बड़े मियां को पहचानो तो—इन्हें घुमा फिरा करके देखो तो इनकी दाढ़ी में मोर दिखाई देगा.

ان بڑے میاں کو پہچانو تو—انہیں گھما پھرا کرکے دیکھو تو ان کی داڑھی میں مور دکھائی دیگا ۔

اس کو بڑا اچنبھا ہوا کہ آج ہی اس کا منی آڈر بنگلور سے آیا اور اب وہ یہاں کیسے؟ اس نے آواز دی " مجیب او مجیب "

مجیب آواز سن کر رک گیا اور کہنے لگا — " بھئی خوب! یار! تمہارے ہی پاس آرہا تھا کہ تم مل گئے ۔ میں نے اس دن مدرسہ میں تم سے پانچ روپئے لئے تھے اور دوسرے ہی دن الہ آباد گیا تھا ۔ کل ہی آیا ہوں یہ لو اپنے روپئے " مجیب نے پانچ روپئے اسکے ہاتھ میں تھما دئے اور یہ کہکر چلتا ہوا کہ " پھر فرصت میں بات چیت ہوگی اب میں کام سے جارہا ہوں ۔"

موہن سوچ میں پڑگیا ہے ۔ گہری سوچ میں کہ مجیب کے نام سے منی آرڈر کس نے کیا ہوگا؟ غرض سمے پر روپئے ملنے سے موہن نے اپنے باپ کا علاج کرایا اور وہ کچھ دنوں بعد ٹھیک ہوگیا ۔

ایک دن اس کی بھینٹ رحمان سے ہوئی. رحمان باتوں باتوں میں اسے اپنے گھر لے گیا دونوں بیٹھے ادھر ادھر کی باتیں کرنے

गया. मोहन अकेला बैठे बैठे पास की किताबें उलटने लगा. उसने एक किताब जिसका नाम "गीता और क़ुरान" था उठाई और पढ़ना चाहा. उसने जब पन्ने उलटे तब उसे वही मनी आर्डर की रसीद नज़र पड़ी जो बंगलौर से लौट आई थी मोहन जान गया कि यह रुपये रहमान ही ने उसे भेजे थे. उस ने रहमान से पूछा भी कि यह रसीद कहाँ से मिली. पर रहमान ने जवाब देने के बजाय रसीद उससे लेकर फाड़ दी. फिर भी मोहन असल बात समझ गया. वह मनी आर्डर रहमान ने ही भेजा था.

प्रेम भाई

گیا . موھن اکیلا بیٹھے بیٹھے پاس کی کتابیں الٹنے لگا اُس نے ایک کتاب جسکا نام " گیتا اور قرآن " تھا اُٹھائی اور پڑھنا چاہا . اس نے جب پنے اُلٹے تب اسے وھی منی آڈر کی رسید نظر پڑی جو بنگلور سے لوٹ آئی تھی . موھن جان گیا کہ یہ روپئے رحمان ھی نے اُسے بھیجے تھے . اُس نے رحمان سے پوچھا بھی کہ یہ رسید کہاں سے ملی . پر رحمان نے جواب دینے کے بجائے رسید اُس سے لے کر پھاڑ دی پھر بھی موھن اصل بات سمجھ گیا . وہ منی آڈر رحمان نے ھی بھیجا تھا .

پریم بھائی

पंजाब हमें क्या सिखाता है

लेखक पंडित सुन्दरलाल

पंडित सुन्दरलाल जी ने, महात्मा गांधी की सलाह से अक्तूबर. सन १९४७ में पच्छिमी और पूरबी पंजाब का दौरा किया था. इस छोटे से बयान में उन्होंने वहाँ की भयंकर बरबादी और आपसी मारकाट की वजह से जो जो नतीजे लोगों को भुगतने पड़ रहे हैं उनका बहुत ही दर्दनाक वर्णन किया है. आख़ीर में आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिये, कुछ सुझाव भी पेश किये हैं. हमें विश्वास है कि पंजाब की मौजूदा हालत को ठीक तरह से समझने में इस बयान से बड़ी मदद मिलेगी.

किताब उर्दू और नागरी दोनों लिखावटों में मिल सकती है. क़ीमत चार आने.

मैनेजर 'नया हिन्द' ४८. बाई का बाग़, इलाहाबाद

پنجاب ھمیں کیا سکھاتا ھے

لیکھک ' پنڈت سندر لال

پنڈت سندر لال جی نے ' مہاتما گاندھی کی صلاح سے ' اکتوبر سن ۱۹۴۷ میں پچھمی اور پوربی پنجاب کا دورا کیا تھا اِس چھوٹے سے بیان میں اُنھوں نے وھاں کی بھینکر بربادی اور آپسی مارکاٹ کی وجہ سے جو جو نتیجے لوگوں کو بھگتنے پڑ رھے ھیں اُن کا بہت ھی دردناک ورنن کیا ھے آخیر میں آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کیلئے ' کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے ھیں ھمیں وشواس ھے کہ پنجاب کی موجودہ حالت کو ٹھیک طرح سے سمجھنے میں اِس بیان سے بڑی مدد ملے گی .

کتاب اُردو اور ناگری دونوں لکھاوٹوں میں مل سکتی ھے . قیمت چار آنے .

منیجر ـ ' نیا ھند ' ۴۸ بائی کا باغ اِلٰہ آباد .

हमारी राय　ہماری رائے

बंगाल और उससे सबक़

दिल्ली में पंडित जवाहर लाल नेहरू और मिस्टर लियाक़त अली ख़ाँ की बात चीत हो चुकी. सात दिन की बात चीत का नतीजा एक मुबारक राज़ी नामा के रूप मे देश के सामने आ चुका. उस राज़ी नामा के ख़ास ख़ास पहलुओं की तरफ़ पाठकों का ध्यान दिलाने से पहले हम इस समय बंगाल की घटनाओं पर एक सरसरी निगाह डालना चाहते हैं.

आज कल की दुनिया के छोटे बड़े राज काजी लाग कहीं भी बहुत सच बोलने के लिये बदनाम नहीं है. पिछली दोनो जंगो मे जितने बड़े बड़े मुल्कों ने हिस्सा लिया था उन सब मे अपने बैरी मुल्कों के ख़िलाफ़ नित नये झूट गढ़ने के लिये बाज़ाब्ता बड़े बड़े मुहकमे खोले गये थे जहाँ से आये दिन बड़ी बड़ी "ख़बरें" दुनिया में फैलाई जाती थीं. इन ख़बरों के गढ़ने में हर मुल्क दूसरे से बाज़ी ले जाने की कोशिश करता था. मिसालें देने की ज़रूरत नहीं है. यह बात मानी हुई है कि इस काम मे अमरीका

بنگال اور اس سے سبق

دلي ميں پنڈت جواھر لال نہرو اور مسٹر لیاقت‌علی خاں کي بات چیت ھوچکی . سات دن کی بات چیت کا نتیجہ ایک مبارک راضی نامہ کے روپ میں دیش کے سامنے آچکا . اس راضي نامہ کے خاص خاص پہلوؤں کی طرف پاٹھکوں کا دھیان دلانے سے پہلے ھم اس سمے بنگال کی گھٹناؤں پر ایک سر سری نگاہ ڈالنا چاھتے ھیں .

آج کل کی دنیا کے چھوٹے بڑے راج کاجی لوگ کہیں بھی بہت سچ بولنے کے لئے بدنام نہیں ھیں پچھلي دونوں جنگوں میں جتنے بڑے بڑے ملکوں نے حصہ لیا تھا اُن سب میں اپنے بیري ملکوں کے خلاف نت نئے جھوٹ گڑھنے کے لئے باضابطہ بڑے بڑے محکمے کھولے گئے تھے جہاں سے آئے دن بڑي بڑی "خبریں" دنیا میں پھیلائي جاتي تھیں . ان خبروں کے گڑھنے میں ھر ملک دوسرے سے بازي لے جانے کي کوشش کرتا تھا . مثالیں دینے کی ضرورت نہیں ھے یہ بات مانی ھوئی ھے کہ اِس کام میں امریکہ

सब से बाज़ी ले गया. हमारे मुल्क के राज काजी लोग, पार्टियाँ और अखबार भी इस हवा से बच न सकते थे.

बंगाल के इस मामले में दूर हैदराबाद (दकिन) में बैठे हुए फ़रवरी महीने तक हम ने जो ख़बरें सुनीं उन से हम यह न समझ पाये कि आख़िर बैठे बिठाये इतने दिनों की थोड़ी बहुत शान्ति के बाद पाकिस्तान को क्या सूझा कि उस ने पूरबी बंगाल के हिन्दुओं पर एकाएक इस तरह सितम ढाने शुरू कर दिये. हमें मालूम था कि दोनों बंगालों को फिर से एक करने का आन्दोलन कुछ दिनों से चल रहा है. हमें शक होने लगा कि कहीं इस तहरीक से डर कर इसे नाकाम करने के लिये ही तो पाकिस्तान की सरकार ने यह सब नहीं किया जिस से नफ़रतें बनी रहें. दो अलग अलग क़ौमों का विचार और पक्का होजाय और फिर अगर आग ज़्यादा भड़के तो अमरीका और यू० एन० ओ० की मदद से हिन्दुस्तान से आये हुए करोड़ों मुसलमानों के लिये नया इलाक़ा माँगा जा सके! यहाँ तक कि हमें पूरबी बंगाल के इन अत्याचारों के पीछे बाहर के मुल्कों की साज़िश का शक होने लगा.

दिल्ली आकर हमने ऐसे लोगों से बातें कीं जो बंगाल की हालत अपनी आँखों देख आये थे. दूसरे ज़िम्मेदार जानकारों से भी हम ने असलियत जानने की कोशिश की. हमारा वहम टूटा. हमने देखा और हमें यह देख कर दुख हुआ कि एक तरफ़ा और बढ़ा चढ़ा कर फैलाई हुई ख़बरों से सारे मुल्क के अन्दर सीधे और सच्चे लोगों के दिलों में ज़हर भर दिया गया और कई लाख बेगुनाहों की ज़िन्दगी बरबाद करदी गई.

سب سے بازی لے گیا . ہمارے ملک کے راج کاجی لوگ پارٹیاں اور اخبار بھی اس ہوا سے بچ نہ سکتے تھے .

بنگال کے اِس معاملے میں دور حیدرآباد (دکن) میں بیٹھے ہوئے فروری مہینے تک ہم نے جو خبریں سنیں ان سے ہم یہ نہ سمجھ پائے کہ آخر بیٹھے بٹھائے اتنے دنوں کی تھوڑی بہت شانتی کے بعد پاکستان کو کیا سوجھا کہ اس نے پوربی بنگال کے ہندوؤں پر ایکایک اس طرح ستم ڈھانے شروع کر دیئے . ہمیں معلوم تھا کہ دونوں بنگالوں کو پھر سے ایک کرنے کا آندولن کچھ دنوں سے چل رہا ہے. ہمیں شک ہونے لگا کہ کہیں اس تحریک سے ڈر کر اسے ناکام کرنے کے لئے ہی تو پاکستان کی سرکار نے یہ سب نہیں کیا جس سے نفرتیں بنی رہیں . دو الگ الگ قوموں کا وچار اور پکا ہوجائے اور پھر اگر آگ زیادہ بھڑکے تو امریکہ اور یو . ان . او . کی مدد سے ہندستان سے آئے ہوئے کروڑوں مسلمانوں کے لئے نیا علاقہ مانگا جاسکے ! یہاں تک کہ ہمیں پوربی بنگال کے اِن نیا چاروں کے پیچھے باہر کے ملکوں کی سازش کا شک ہونے لگا .

دلی آکر ہم نے ایسے لوگوں سے باتیں کیں جو بنگال کی حالت اپنی آنکھوں دیکھ آئے تھے . دوسرے ذمہ‌دار جانکاروں سے بھی ہم نے اصلیت جاننے کی کوشش کی . ہمارا وہم ٹوٹا . ہم نے دیکھا اور ہمیں یہ دیکھکر دکھ ہوا کہ ایک‌طرفہ اور بڑھا چڑھا کر پھیلائی ہوئی خبروں سے سارے ملک کے اندر سیدھے اور سچے لوگوں کے دلوں میں زہر بھر دیا گیا اور کئی لاکھ بے گناہوں کی زندگی برباد کردی گئی .

टूटी. यह तो ऐसाही है कि खाने की आजादी है लेकिन मुंह नहीं खोलने दिया जायेगा. सोचिये हिन्दी प्रेम के नाम पर यह कितनी बड़ी नीचता है. यह हिन्दी का प्रचार करते हुए उर्दू से डरना है या नहीं? समझे आप? अरे बाबा संस्कृत से लदी हुई हिन्दी सब को पढ़ाओ, ऐसी हिन्दी में कोई फेल हो तो दरजा न दो (हालाँकि ऐसा करना हिन्दुओं और हिन्दी प्रेमियों की भी मुसीबत करदेगा) लेकिन अगर यह शर्त पूरी करके कोई उर्दू भी पढ़ना चाहता है तो आप के चेहरे पर हवाइयाँ क्यों उड़ने लगती हैं ?

भारत की भाषाओं में जो भाषा खड़ी बोली हिन्दी या प्रेमचन्द की हिन्दी या सहल और मं नया टकसाली हिन्दी से सब से ज्यादा मिलती है वह उर्दू है. जितने हिन्दी शब्द हिन्दी कोश (लुग़त) में हैं, जितने मुहावरे या टकसाली टुकड़े हिन्दी में हैं वह एक एक करके सब के सब यही नहीं कि उर्दू में हैं बल्कि वह उर्दू में पहले आये और इतनी बड़ी तादाद में आये कि आज तक हिन्दी लेखकों के यहाँ नहीं आये न उस खूबसूरती और सुघड़ापे के साथ आये—क्या अन्धेर है ! जिस उर्दू में हिन्दी साहित्य से दस गुना बीस गुना हिन्दी शब्द और मुहावरे नगीने की तरह जगमगा रहे हों, जिस उर्दू को सीख कर प्रेमचन्द और बालमकुन्द गुप्त ने हिन्दी की देवी को सोलहों सिंगार से सजा दिया, जिस उर्दू साहित्य का बड़ा हिस्सा नागरी में छपते ही सभी हिन्दी जानने वालों की समझ में आजाता है और जिसे सुनकर अनपढ़ हिन्दू मुसलमान सभी झूम

توٹي - یہ تو ایسا ھي ھے کہ کھانے کي آزادی ھے لیکن منھ نہیں کھولنے دیا جائے گا - سوچئے ھندي پریم کے نام پر یہ کتني بڑي نیچتا ھے - یہ ھندي کا پرچار کرتے ھوئے اُردو سے ڈرنا ھے یا نہیں ؟ سمجھے آپ ؟ ارے بابا سنسکرت سے لدی ھوئي ھندی سب کو پڑھاؤ ' ایسی ھندي میں کوئي فیل ھو تو درجہ نہ دو (حالانکہ ایسا کرنا ھندوؤں اور ھندی پریمیوں کی بھی مصیبت کردے گا) لیکن اگر یہ شرط پوری کرکے کوئی اُردو بھی پڑھنا چاھتا ھے تو آپ کے چہرے پر ھوائیاں کیوں اُڑنے لگتی ھیں ؟

بھارت کي بھاشاؤں میں جو بھاشا کھڑي بولي ھندي یا پریم چند کی ھندي یا سہل اور نرم یا ٹکسالي ھندي سے سب سے زیادہ ملتي ھے وہ اُردو ھے - جتنے ھندي شبد ھندی کوش (لغت) میں ھیں ' جتنے محاورے یا ٹکسالی ٹکڑے ھندی میں ھیں وہ ایک ایک کرکے سب کے سب یہی نہیں کہ اردو میں ھیں بلکہ وہ اردو میں پہلے آئے اور اتنی بڑي تعداد میں آئے کہ آج تک ھندي لیکھکوں کے یہاں نہیں آئے نہ اس خوبصورتی اور سگھڑاپے کے ساتھہ آئے - کیا اندھیر ھے ؟ جس اُردو میں ھندي ساھتیہ سے دس گنا بیس گنا ھندي شبد اور محاورے نگینے کی طرح جگمگا رھے ھوں ' جس اردو کو سیکھکر پریم چند اور بالمکند گپت نے ھندي کي دیوی کو سولھوں سنگار سے سجادیا ' جس اردو ساھتیہ کا بڑا حصہ ناگری میں چھپتے ھی سبھی ھندی جاننے والوں کی سمجھہ میں آجاتا ھے اور جسے سن کر ان پڑھ ھندو مسلمان سبھي جھوم اُٹھتے ھیں اسی اردو کو

बंगाल की इन घटनाओं का असल रूप उस कमीशन की तहक़ीक़ात के बाद ही मालूम होगा जो दोनों सरकारों के राज़ी नामे के अनुसार बनेगा. इस बीच इन घटनाओं का जो रूप हमारे सामने आया है वह हम थोड़े से में नीचे देते हैं.

बंगाल के फ़साद की असलियत

जिसे कम्युनिस्ट ख़तरा कहा जाता है वह जगह जगह बढ़ रहा है. आसाम और बंगाल की सरहद बरमा से मिलती है. दोनों में कहा जाता है बड़े बड़े कम्युनिस्ट अड्डे हैं. पाकिस्तान और भारत दोनों की सरकारें कम्युनिस्टों को दबाने में लगी हैं. पूरबी बंगाल में खुलना कलकत्ता से मुशकिल से क़रीब पचास साठ मील की दूरी पर है खुलना में भी कम्युनिस्टों का ज़ोर था. २० दिसम्बर को या उस के आस पास पाकिस्तान की पुलिस कुछ कम्युनिस्टों को गिरफ़्तार करने खुलना गई. हथियार बन्द कम्युनिस्टों से पुलिस की मुटभेड़ हुई जिस में कम से कम एक पुलिस वाला मारा गया और कुछ ज़ख़्मी हुए. कम्युनिस्ट हाथ आ न सके. दोबारा और अधिक पुलिस और कुछ अन्सार. जो शायद पाकिस्तानी "स्वयंसेवक" कहे जाते हैं, खुलना पहुंचे. कई मकानों की तलाशी ली गई. कम्युनिस्ट शायद फिर भी हाथ आ न सके. पुलिस और अन्सार ने भीड़ पर गोलियाँ चलाईं. कहा जाता है लग भग तीस घायल हुए और मरा या तो कोई नहीं और या शायद दो चार. हो सकता है खुलना के वह कम्युनिस्ट सब या अधिक तर हिन्दू रहे हों. जो भी हो उस मामले का हिन्दू मुस्लिम झगड़े से कोई सम्बंध नहीं था. वह मामला था पाकिस्तानी सरकार और कम्युनिस्टों के बीच का.

بنگال کی ان گھٹناؤں کا اصل روپ اس کمیشن کی تحقیقات کے بعد هي معلوم هوگا جو دونوں سرکاروں کے راضی نامہ کے انوسار بنے گا۔ اس بیچ اِن گھٹناؤں کا جو روپ همارے سامنے آیا هے وہ هم تھوڑے سے میں نیچے دیتے هیں۔

بنگال کے فساد کی اصلیت

جسے کمیونسٹ خطرہ کہا جاتا هے وہ جگہ جگہ بڑھ رها هے۔ آسام اور بنگال کی سرحد برما سے ملتی هے۔ دونوں میں کہا جاتا هے بڑے بڑے کمیونسٹ اڈے هیں۔ پاکستان اور بھارت دونوں کی سرکاریں کمیونسٹوں کو دبانے میں لگی هیں۔ پوربی بنگال میں کھلنا کلکتہ سے مشکل سے قریب پچاس ساٹھ میل کی دوری پر هے۔ کھلنا میں بھي کمیونسٹوں کا زور تھا۔ ۲۰ دسمبر کو یا اُس کے آس پاس پاکستان کي پولیس کچھ کمیونسٹوں کو گرفتار کرنے کھلنا گئی۔ هتھیار بند کمیونسٹوں سے پولیس کی مٹ بھیڑ هوئی جس میں کم سے کم ایک پولیس والا مارا گیا اور کچھ زخمی هوے۔ کمیونسٹ هاتھ نہ آسکے۔ دوبارہ اور ادھک پولیس اور کچھ انصار جو شاید پاکستانی "سویم سیوک" کہے جاتے هیں' کھلنا پہونچے کئي مکانوں کی تلاشی لی گئي۔ کمیونسٹ شاید پھر بھی هاتھ نہ آسکے۔ پولیس اور انصار نے بھیڑ پر گولیاں چلائیں۔ کہا جاتا هے لگ بھگ تیس گھائل هوے اور مرا یا تو کوئی نہیں اور یا شاید دوچار۔ هوسکتا هے کھلنا کے وہ کمیونسٹ سب یا ادھک تر هندو رهے هیں۔ جو بھي هو اُس معاملے کا هندو مسلم جھگڑے سے کوئي سمبندھ نہیں تھا۔ وہ معاملہ تھا پاکستانی

खुलना की खबरें कलकत्ता पहुंचीं. दुर्भाग्य से एक गरोह मुल्क में ऐसा है जो किसी भी बहाने पाकिस्तान से लड़ने और डेढ़ करोड़ हिन्दुओं को उधर से निकाल लाने और साढ़े चार करोड़ मुसलमानों को इधर से निकाल देने में मुल्क की भलाई समझता है. कलकत्ते में भी खास कर डाक्टर खरे की तक़रीर के बाद से कहा जाता है कि यह गरोह अपना काम कर रहा था. खुलना की खबरें हिन्दू मुस्लिम रंग दे कर और बढ़ा बढ़ा कर सारे हिन्दुस्तान में फैलाई गईं. क़ुदरती तौर पर कलकत्ते में दंगे शुरू होगये. कलकत्ता की खबरें पूरबी बंगाल पहुंचीं. यह भी कहा जाता है कि इस बीच फ़ैज़ाबाद (यू० पी०) से बाबरी मसजिद में ज़बरदस्ती राम चन्द्र जी की मूर्ति रखे जाने की खबर ले कर कुछ लोग ढाका पहुंचे. इधर की खबरें उधर और उधर की खबरें इधर और वह भी खूब बढ़ा चढ़ा कर और एक तरफ़ा! एक शैतानी चक्कर शुरू होगया. यह आग यू० पी०. सी० पी० और कुछ दूसरे प्रान्तों तक भी पहुंची.

पंडित जवाहर लाल का कलकत्ता जाना

पंडित जवाहर लाल नेहरू खुद कलकत्ता पहुंचे. १७ मार्च को उन्हों ने अपने बयान में कहा कि उस दिन तक इन दंगों के कारन लग भग डेढ़ लाख हिन्दू पूरबी बंगाल से पच्छिमी बंगाल और लग भग एक लाख मुसलमान पच्छिमी बंगाल से पूरबी बंगाल जा चुके थे. यू० पी० से जो लोग पच्छिमी पाकिस्तान गये वह अलग. दोनों तरफ़ के अखबारों ने अपने यहाँ की खबरों को दबाया और दूसरी तरफ़ की खबरों को बढ़ा चढ़ा कर फैलाना शुरू किया. दोनों

کھلنا کی خبرس کلکتہ پہونچیں . دربھاگیہ سے ایک گروہ ملک میں ایسا ہے جو کسی بھی بہانے پاکستان سے لڑنے اور ڈیڑھ کروڑ ہندوؤں کو اُدھر سے نکال لانے اور ساڑھے چار کروڑ مسلمانوں کو اِدھر سے نکال دینے میں ملک کی بھلائی سمجھتا ہے . کلکتہ میں بھی خاص کر ڈاکٹر کھرے کی تقریر کے بعد سے کہا جاتا ہے کہ یہ گروہ اپنا کام کر رہا تھا . کھلنا کی خبریں ہندو مسلم رنگ دے کر اور بڑھا بڑھا کر سارے ہندستان میں پھیلائی گئیں . قدرتی طور پر کلکتہ میں دنگے شروع ہو گئے . کلکتہ کی خبریں پوربی بنگال پہونچیں . یہ بھی کہا جاتا ہے کہ اس بیچ فیض آباد (یو پی) سے بابری مسجد میں زبردستی رام چندر جی کی مورتی رکھے جانے کی خبر لے کر کچھ لوگ ڈھاکہ پہونچے . ادھر کی خبریں اُدھر اور اُدھر کی خبریں اِدھر اور وہ بھی خوب بڑھا چڑھا کر اور ایکطرفہ ! ایک شیطانی چکر شروع ہوگیا . یہ آگ یو پی سی پی اور کچھ دوسرے پرانتوں تک بھی پہونچی .

پنڈت جواہر لال کا کلکتہ جانا

پنڈت جواہر لال نہرو خود کلکتہ پہونچے ۱۷ مارچ کو اُنہوں نے اپنے بیان میں کہا کہ اُس دن تک ان دنگوں کے کارن لگ بھگ ڈیڑھ لاکھ ہندو پوربی بنگال سے پچھمی بنگال اور لگ بھگ ایک لاکھ مسلمان پچھمی بنگال سے پوربی بنگال جاچکے تھے . یوپی سے جو لوگ پچھمی پاکستان گئے وہ الگ . دونوں طرف کے اخباروں نے اپنے یہاں کی خبروں کو دبایا اور دوسری طرف کی خبروں کو بڑھا چڑھا کر پھیلانا شروع کیا . دونوں

तरफ़ आग बढ़ती गई और जहाँ तक मालूम होता है अभी तक पूरे रह तबुझी नहीं. इस तरह की कई घटनायें भी सामने आई हैं जिन से पता चलता है कि दोनों तरफ़ के कुछ स्वार्थी पूंजी पतियों और ज़मीनों के मालिकों ने अपने निजी फ़ायदे के लिये दोनों तरफ़ इस आग को खूब हवा दी.

दोनों बड़े वज़ीरों की मुलाक़ात

दोनों सरकारों का ध्यान इस तरफ़ गया. पंडित जवाहर लाल नेहरू की कोशिश से दोनों प्रधान मन्त्री दिल्ली में मिले. बंगाल की इस घटना ने और भी अच्छी तरह साबित कर दिया कि किसी संकट के समय इस मुल्क हिन्दुस्तान की नाव को — और हम यहाँ भारत और पाकिस्तान दोनों को मिला कर हिन्दुस्तान कह रहे हैं — पार लगाने की सब से अधिक ज़िम्मेदारी अगर किसी के कन्धों पर है और इस की सबसे ज़्यादा क़ाबिलीयत अगर किसी में है तो वह पंडित जवाहरलाल नेहरू में है. मुल्क के अन्दर नासमझी और तंग नज़री की यह हालत है कि बहुत से भाई पंडित जवाहरलाल और मिस्टर लियाक़त अली ख़ाँ की इस मुलाक़ात के भी ख़िलाफ़ आवाज़ें उठाने लगे थे. ज़िम्मेदार आदमी भी बिना नतीजा सोचे जंग, फ़ौजकशी और आबादी के तबादले की बातें करने लगे थे. सन् ४७ ई० की पंजाब की घटनाओं से सब से बड़ा सबक़ में हकोई मिलता है तो वह यही है कि दोनों तरफ़ के जिन नेताओं ने मुल्क के बटवारे के बाद आबादी के तबादले का फ़ैसला करके उस पर दस्तख़त किये उन्हों ने अनजाने इस देश की करोड़ो

طرف آگ بڑھتی گئی اور جہاں تک معلوم ہوتا ہے ابھی تک پوری طرح بجھی نہیں . اس طرح کی کئی گھٹنائیں بھی سامنے آئی ہیں جن سے پتہ چلتا ہے کہ دونوں طرف کے کچھ سوارتھی پونجی پتیوں اور زمینوں کے مالکوں نے اپنے نجی فائدے کے لئے دونوں طرف اِس آگ کو خوب ہوا دی .

دونوں بڑے وزیروں کی ملاقات

دونوں سرکاروں کا دھیان اِس طرف گیا . پنڈت جواہر لال نہرو کی کوشش سے دونوں پردھان منتری دلی میں ملے . بنگال کی اس گھٹنا نے اور بھی اچھی طرح ثابت کردیا کہ کسی سنکٹ کے سمے اِس ملک ھندستان کی ناؤ کو ـــــ اور ہم یہاں بھارت اور پاکستان دونوں کو ملاکر ھندستان کہہ رہے ہیں ـــــ پار لگانے کی سب سے ادھک ذمہداری اگر کسی کے کندھوں پر ہے اور اس کی سب سے زیادہ قابلیت اگر کسی میں ہے تو وہ پنڈت جواہر لال نہرو میں ہے . ملک کے اندر ناسمجھی اور تنگ نظری کی یہ حالت ہے کہ بہت سے بھائی پنڈت جواہر لال اور مسٹر لیاقت علی خاں کی اِس ملاقات کے بھی خلاف آوازیں اُٹھانے لگے تھے . ذمہدار آدمی بھی بنا نتیجہ سوچے جنگ فوج کشی اور آبادی کے تبادلے کی باتیں کرنے لگے تھے سن ۴۷ء کی پنجاب کی گھٹناؤں سے سب سے بڑا سبق ہمیں کوئی ملتا ہے تو وہ یہی ہے کہ دونوں طرف کے جن نیتاؤں نے ملک کے بٹوارے کے بعد آبادی کے تبادلے کا فیصلہ کرکے اُس پر دستخط کئے انہوں نے انجانے اِس دیش کی کروڑوں

का तबादला जो हुआ है वह दुनिया के इतिहास में शायद सब से बड़ा गुनाह हुआ है. उस के नतीजों को देखने के बाद किसी भी बड़े पैमाने पर आबादी के तबादले की बात करना केवल नासमझी, हठधर्मी और तंग नज़री है.

दिल्ली का राजीनामा

दोनों बड़े वज़ीरों में जो राज़ी नामा हुआ है उस से ज़ाहिर है कि दोनों मरकज़ी सरकारें इस बात को अच्छी तरह समझ रही हैं कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की जंग में दोनों की और सारे मुल्क की तबाही है. यह दोनों सरकारें एक दूसरे से सुलह से रहना चाहती हैं. राज़ी नामा की कुछ ख़ास ख़ास बातें यह हैं :—

(१) पाकिस्तान और हिन्दुस्तान दोनों में हिन्दुओं, मुसलमानों सिक्खों और सब धर्मों के लोगों को बिना किसी तरह के भेदभाव के बराबर के शहरी अधिकार होंगे. सब की जानमाल. कलचर और आबरू की बराबर की हिफ़ाज़त की जावेगी. राज काजी. सिविल और फ़ौजी सब तरह की नौकरियों में सब को बराबर के मौक़े मिलेंगे. हर मज़हब वालों को अपने तरीक़े से पूजा बन्दगी की और अपने रीत रिवाज पालने की पूरी आज़ादी होगी. दोनों सरकारें अपने इस वायदे पर पूरी तरह अमल करेंगी और करायेंगी.

(२) हिन्दुस्तान में रहने वाले मुसलमान और पाकिस्तान में रहने वाले हिन्दू या सिक्ख सब अपने अपने यहाँ की हुकूमतों के ही वफ़ादार होंगे और उन्हें जो जो शिकायतें या तकलीफ़ें होंगी, अपने अपने यहाँ की सरकारों से ही दूर करावेंगे.

کا تبادلہ جو ہوا ہے وہ دنیا کے اتہاس میں شاید سب سے بڑا گناہ ہوا ہے ۔ اُس کے نتیجوں کو دیکھنے کے بعد کسی بھی بڑے پیمانے پر آبادی کے تبادلے کی بات کرنا کیول ناسمجھی' ہٹ دھرمی اور تنگ نظری ہے ۔

دلی کا راضی نامہ

دونوں بڑے وزیروں میں جو راضی نامہ ہوا ہے اس سے ظاہر ہے کہ دونوں مرکزی سرکاریں اِس بات کو اچھی طرح سمجھ رہی ہیں کہ ہندستان اور پاکستان کی جنگ میں دونوں کی اور سارے ملک کی تباہی ہے ۔ یہ دونوں سرکاریں ایک دوسرے سے صلح سے رہنا چاہتی ہیں ۔ راضی نامہ کی کچھ خاص خاص باتیں یہ ہیں :—

(۱) پاکستان اور ہندستان دونوں میں ہندوؤں' مسلمانوں' سکھوں اور سب دھرموں کے لوگوں کو بنا کسی طرح کے بھید بھاؤ کے برابر کے شہری ادھیکار ہونگے ۔ سب کی جان مال' کلچر اور آبرو کی برابر کی حفاظت کی جائے گی ۔ راج کاجی' سول اور فوجی سب طرح کی نوکریوں میں سب کو برابر کے موقعے ملینگے ۔ ہر مذہب والوں کو اپنے طریقے سے پوجا بندگی کی اور اپنے ریت رواج پالنے کی پوری آزادی ہوگی ۔ دونوں سرکاریں اپنے اس وعدے پر پوری طرح عمل کریں گی اور کرائیں گی ۔

(۲) ہندستان میں رہنے والے مسلمان اور پاکستان میں رہنے والے ہندو یا سکھ سب اپنے اپنے یہاں کی حکومتوں کے ہی وفادار ہونگے اور انہیں جو جو شکایتیں یا تکلیفیں ہونگی' اپنے اپنے یہاں کی سرکاروں سے ہی دور کراوینگے ۔

(३) जो हिन्दू पूरबी बंगाल से आना चाहेंगे या मुसलमान पच्छिमी बंगाल, आसाम या त्रिपुरा से जाना चाहेंगे वह अपनी चल सम्पत्ति यानी घर बार के सामान और ज़ेवर जवाहरात वग़ैरा सब अपने साथ ला सकेंगे. केवल नक़्द रुपया हर मर्द या औरत डेढ़ सौ और हर बच्चा पछत्तर से ज्यादा साथ न ला सकेगा.

(४) अभी तक यह शिकायत थी कि इस तरह आने वाले लोगों को चुंगी (करोड़गीरी) की चौकियों पर दिक़ किया जाता है और उनका सब सामान धरा लिया जाता है. आइन्दा के लिये यह तय कर दिया गया है कि हिन्दुस्तान सरकार की तरफ से पूरबी बंगाल में और पाकिस्तान सरकार की तरफ से पच्छिमी बंगाल, आसाम और त्रिपुरा में अपने अपने "लीजान" अफ़सर रहेंगे जो यह देखेंगे कि किसी आने जाने वाले को इस तरह की किसी चौकी पर दिक़ न किया जावे और न उसका माल छीना जावे.

(५) जो अचल सम्पत्ति जैसे मकान, जमीन वग़ैरा कोई अपने पीछे छोड़ जावेगा वह उसी की मिलकीयत समझी जावेगी और रहेगी और अगर उस की ग़ैरहाज़िरी में कोई दूसरा उस पर क़ब्ज़ा कर लेगा तो असल मालिक के वापस जाने पर वह जमीन, मकान और जायदाद उसे दिलवादी जायँगी बशर्ते कि वह ३१ दिसम्बर सन् ५० ई० तक वापस चला जावे.

जो शख्स वापस न जाना चाहे उसे पूरा अधिकार होगा कि अपनी जमीन या जायदाद को जिस किसी के हाथ चाहे बेच डाले या तबादला करले या जिस तरह चाहे दूसरे को दे दे या सौंप दे.

(٣) جو هندو پوربی بنگال سے آنا چاهینگے یا مسلمان پچھمی بنگال' آسام یا تریپورا سے جانا چاهینگے وہ اپنی چل سمپتی یعنی گھر بار کے سامان اور زیور جواهرات وغیرہ سب اپنے ساتھ لاسکیں گے . کیول نقد روپیہ هر مرد یا عورت ڈیڑھ سو اور هر بچہ پچھتر سے زیادہ ساتھہ نہ لاسکے گا .

(٤) ابھی تک یہ شکایت تھي کہ اس طرح آنے والے لوگوں کو چنگی (کروڑ گیري) کی چوکیوں پر دق کیا جاتا ھے اور اُن کا سب سامان دھرا لیا جاتا ھے . آئندہ کے لئے یہ طے کردیا گیا ھے کہ هندستان سرکار کی طرف سے پوربی بنگال میں اور پاکستان سرکار کي طرف سے پچھمی بنگال' آسام اور تریپورہ میں اپنے اپنے " لیزان " افسر رهیں گے جو یہ دیکھینگے کہ کسی آنے جانے والے کو اس طرح کی کسی چوکي پر دق نہ کیا جاوے اور نہ اُس کا مال چھینا جاوے .

(٥) جو اچل سمپتی جیسے مکان' زمین وغیرہ کوئي اپنے پیچھے چھوڑ جاوے گا وہ اسي کی ملکیت سمجھی جاویگي اور رهے گی اور اگر اس کی غیر حاضری میں کوئی دوسرا اس پر قبضہ کرلے گا تو اصل مالک کے واپس جانے پر وہ زمین' مکان اور جائداد اُسے دلوادی جائیں گی بشرطیکہ وہ ٣١ دسمبر سن ٥٠ تک واپس چلا جاوے.

جو شخص واپس نہ جانا چاهے اسے پورا ادهیکار هوگا کہ اپنی زمین یا جائداد کو جس کسي کے هاتھ چاهے بیچ ڈالے یا تبادلہ کرلے یا جس طرح چاهے دوسرے کو دے دے یا سونپ دے

आसाम या त्रिपुरा में रह जायगी उस का प्रबन्ध एक एक कमेटी के सुपुर्द होगा जिस में पाकिस्तान में हिन्दुओं के और हिन्दुस्तान में मुसलमानों के नुमाइन्दे रहेंगे. यह कमेटियां जायदाद के ट्रस्टी का काम करेंगी. जायदाद की बाबत इस शर्त का फ़ायदा उन लोगों को भी दिया जायगा जो पन्द्रह अगस्त सन् ४७ ई० से अब तक पूरबी बंगाल से आकर हिन्दुस्तान के किसी हिस्से में या पच्छिमी बंगाल, आसाम या त्रिपुरा से जाकर पाकिस्तान के किसी हिस्से में बस गये हैं या जो बिहार से जाकर पूरबी बंगाल में बस गए हैं.

(६) दोनों सरकारें इस बात की पूरी पूरी कोशिश करेंगी कि दोनों तरफ़ जल्दी से जल्दी अमन क़ायम हो और फिर कभी इस तरह के दंगे न होने पायें.

(७) दोनों तरफ़ इन हाल के दंगों में जिन लोगों ने जुर्म किये हैं उन्हें तहक़ीक़ात कर के पूरी पूरी सजायें दी जावेंगी. मजमूई जुरमाने वसूल किये जावेंगे और लुटे हुए माल का पता लगाने और असिल मालिक को वापस दिलाने की पूरी पूरी कोशिश की जावेगी.

(८) मुसलमानों और हिन्दुओं दोनों की मदद से पूरी की जावेगी भगाई हुई औरतों को निकालने और वापस कराने को.

(९) जो लोग इन झगड़ों में इधर या उधर हिन्दू से मुसलमान या मुसलमान से हिन्दू बना लिये गये हैं उन के इस मजहब बदलने को नहीं माना जायगा. और उनका मजहब बदलने वालों को सजा दी जायगी.

آسام یا تریپورہ میں رہ جائیگی اس کا پربندھ ایک ایک کمیٹی کے سپرد ہوگا جس میں پاکستان میں ہندوؤں کے اور ہندستان میں مسلمانوں کے نمائندے رہینگے ۔ یہ کمیٹیاں جائیداد کے ترسٹی کا کام کریں گی ۔ جائداد کی بابت اِس شرط کا فائدہ اُن لوگوں کو بھی دیا جائیگا جو پندرہ اگست سن ۴۷ع سے اب تک پوربی بنگال سے ہندستان کے کسی حصے میں یا پچھمی بنگال، آسام یا تریپورا سے جاکر پاکستان کے کسی حصے میں بس گئے ہوں یا جو بہار سے جاکر پوربی بنگال میں بس گئے ہیں ۔

(۶) دونوں سرکاریں اس بات کی پوری پوری کوشش کرینگی کہ دونوں طرف جلدی سے جلدی امن قائم ہو اور پھر کبھی اِس طرح کے دنگے نہ ہونے پائیں ۔

(۷) دونوں طرف ان حال کے دنگوں میں جن لوگو نے جرم کئے ہیں اُنہیں تحقیقات کرکے پوری پوری سزائیں دی جاوینگی ۔ مجموعی جرمانے وصول کئے جاریں گے اور لٹے ہوئے مال کا پتہ لگانے اور اصل مالک کو واپس دلانے کی پوری پوری کوشش کی جاویگی ۔

(۸) مسلمانوں اور ہندوؤں دونوں کی مدد سے پوری کوشش کیجاویگی بھگائی ہوئی عورتوں کو نکالنے اور واپس کرانے کی ۔

(۹) جو لوگ ان جھگڑوں میں اِدھر یا اُدھر ہندو سے مسلمان یا مسلمان سے ہندو بنا لئے گئے ہیں ان کے اس مذہب بدلنے کو نہیں مانا جائیگا ۔ اور اُن کا مذہب بدلنے والوں کو سزادی جائیگی ۔

(१०) एक तहक़ीक़ाती कमीशन बिठाया जाय जो हाल के दंगों के कारनों वग़ैरा की जांच करे और दोनों सरकारों को सलाह दे कि आइन्दा यह दंगे कैसे रोके जायँ. कमीशन ऐसे आदमियों का होगा जिन पर इधर मुसलमानों को और उधर हिन्दुओं को भरोसा हो.

(११) इस तरह की ख़बरें या विचार फैलाने वालों को जिन से फ़िरक़ावाराना ज़हर बढ़े सख़्त सज़ायें दी जायँगी. ऐसे ही दोनों हुकूमतों में लड़ाई की बात करने वालों को भी कड़ाई से रोका जायगा.

(१२) इस बात की कोशिश की जायगी कि दोनों तरफ़ से जो लोग अपने अपने घरबार छोड़ कर चले आये हैं वह फिर वापस चले जायं और अपने अपने घरों में अमन से रह सकें. इसके लिये दोनों हुकूमतों के ख़ास वज़ीर मुक़र्रर किये जावेंगे जो उन इलाक़ों में रहकर लोगों के दिलों में भरोसा पैदा करें. पूरबी बंगाल में एक हिन्दू वज़ीर और पच्छिमी बंगाल में एक मुसलमान वज़ीर इसी ग़रज़ से बढ़ाया जायगा.

(१३) इस राज़ीनामा पर अमल करने कराने के लिये ख़ास कमीशन मुक़र्रर किये जायँगे.

ऊपर हमने राज़ी नामा की ख़ास ख़ास बातों को अपने शब्दों में देने की कोशिश की है.

पाकिस्तान लोकराज है

पंडित जवाहरलाल जी ने इस राज़ीनामा को दिल्ली की राज

(١٠) ایک تحقیقاتی کمیشن بٹھایا جائے جو حال کے دنگوں کے کارنوں وغیرہ کی جانچ کرے اور دونوں سرکاروں کو صلاح دے کہ آئندہ یہ دنگے کیسے روکے جائیں . کمیشن ایسے آدمیوں کا ہوگا جن پر اِدھر مسلمانوں کو اور اُدھر هندوؤں کو بھروسہ ہو .

(١١) اِس طرح کی خبریں یا وچار پھیلانے والوں کو جن سے فرقہ وارانہ زہر بڑھے' سخت سزائیں دی جائیں گی. ایسے ہی دونوں حکومتوں میں لڑائی کی بات کرنے والوں کو بھی کڑائی سے روکا جائے گا .

(١٢) اِس بات کی کوشش کی جائے گی کہ دونوں طرف سے جو لوگ اپنے اپنے گھربار چھوڑ کر چلے آئے ہیں وہ پھر واپس چلے جائیں اور اپنے اپنے گھروں میں امن سے رہ سکیں . اس کے لئے دونوں حکومتوں کے خاص وزیر مقرر کئے جاویں گے جو اُن علاقوں میں رہ کر لوگوں کے دلوں میں بھروسہ پیدا کریں . پوربی بنگال میں ایک هندو وزیر اور پچھمی بنگال میں ایک مسلمان وزیر اِسی غرض سے بڑھایا جائے گا .

(١٣) اِس راضی نامہ پر عمل کرنے کرانے کے لئے خاص کمیشن مقرر کئے جائیں گے .

اوپر ہم نے راضی نامہ کی خاص خاص باتوں کو اپنے شبدوں میں دینے کی کوشش کی ہے .

پاکستان لوک راج ہے

پنڈت جواہر لال جی نے اِس راضی نامہ کو دلی کی راج

अली खाँ ने मुझे विश्वास दिलया है कि पाकिस्तान की सरकार उसी तरह के राज में यक़ीन रखती है जिसे इस जमाने का लोक शाही राज (डिमोक्रेटिक स्टेट) कहा जाता है. वह मानती है कि सच मुच इस जमाने के हालात में किसी दूसरी तरह का राज नहीं चल सकता. यह विश्वास इस समझौते में क़लम बन्द है."

आने वाले समझौते

मिस्टर लियाक़त अली खाँ ने अपने यहाँ की राज पंचायत में इस राज़ीनामा को पेश करते हुए कहा कि — "मैं इस राज़ीनामे को हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बीच एक नये समझौते का पेशख़ीमा मानता हूँ. मुझे यक़ीन है और हिन्दुस्तान के बड़े वज़ीर को भी यक़ीन है कि इस राज़ीनामे पर अगर ठीक ठीक अमल हुआ तो इस से एक दूसरे के वह डर और वह शक मिट जायंगे जो आज शिकारी की तरह शिकार की तलाश में इस छोटे मोटे महाद्वीप में मंडला रहे हैं."

पंडित जवाहर लाल और मिस्टर लियाक़त अली खाँ दोनों ने यह भी बयान किया कि उनकी थोड़ी बहुत बात चीत बंगाल के अलावा उन सब मामलों पर भी हुई जो हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बीच अटके हुए हैं. दोनों का इरादा है कि वह फिर बार बार मिलेंगे और उन्हें उम्मीद है कि इन दोनों पड़ोसी हुकूमतों के बीच के सब झगड़े इसी तरह आपसी राज़ी नामे और समझौते से तय हो जायंगे. मिस्टर लियाक़त अली खाँ ने कहा कि — "हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों के भले के लिये और सच यह है कि जगत शांति के हित में यह जरूरी है कि हम अपने बीच के सब इस

(۳۵۷)

علي خاں نے مجھے وشواس دلایا ہے کہ پاکستان کی سرکار اسی طرح کے راج میں یقین رکھتي ہے جسے اِس زمانے کا لوک شاہي راج (ڈیموکریٹک اسٹیٹ) کہا جاتا ہے . وہ مانتی ہے کہ سچ مچ اِس زمانے کے حالات میں کسی دوسري طرح کا راج نہیں چل سکتا . یہ وشواس اِس سمجھوتے میں قلم بند ہے ."

آنے والے سمجھوتے

مسٹر لیاقت علی خاں نے اپنے یہاں کی راج پنچایت میں اِس راضی نامہ کو پیش کرتے ہوئے کہا — "میں اِس راضی نامے کو ہندستان اور پاکستان کے بیچ ایک نئے سمجھوتے کا پیش خیمہ مانتا ہوں . مجھے یقین ہے اور ہندستان کے بڑے وزیر کو بھی یقین ہے کہ اِس راضی نامے پر اگر ٹھیک ٹھیک عمل ہو تو اِس سے ایک دوسرے کے وہ ڈر اور وہ شک مٹ جائیں گے جو آج شکاری کی طرح شکار کی تلاش میں اِس چھوٹے موٹے مہادیپ میں منڈلا رہے ہیں ."

پنڈت جواہر لال اور مسٹر لیاقت علی خاں دونوں نے یہ بھی بیان کیا کہ اُن کی تھوڑي بہت بات چیت بنگال کے علاوہ اُن سب معاملوں پر بھي ہوئي جو ہندستان اور پاکستان کے بیچ اٹکے ہوے ہیں . دونوں کا اِرادہ ہے کہ وہ پھر بار بار ملیں گے اور اُنہیں اُمید ہے کہ اِن دونوں پڑوسی حکومتوں کے بیچ کے سب جھگڑے اِسی طرح آپسی راضی نامے اور سمجھوتے سے طے ہو جائیں گے . مسٹر لیاقت علی خاں نے کہا — "ہندستان اور پاکستان دونوں کے بھلے کے لئے اور سچ یہ ہے کہ جگت شانتي کے ہت میں یہ ضروري ہے کہ ہم اپنے بیچ کے سب اِس

समय के मामले शांति के साथ तय करलें और दोनों देशों के बीच दोस्ती और अच्छे पड़ोसियों के से प्रेम भाव बढ़ाने में मदद दें. "

आज कल की हवा में बहुत से लोगों को एक दूसरे की नियत पर भरोसा नहीं होता. लोगों को शक है कि इस राज़ीनामे पर ईमानदारी से अमल होगा या नहीं. यह शक कुछ लोगों के दिलों में दोनों तरफ़ है. लेकिन जैसा पंडित जवाहर लाल ने अपने धुन बिखराव (ब्राडकास्ट) में कहा है अव्वल तो किसी इस तरह के राज़ीनामे का होना ही कुछ कम बात नहीं है. दूसरे विश्वास से विश्वास और अविश्वास से अविश्वास हमेशा बढ़ता है. दोनों बड़े वज़ीरों को एक दूसरे पर पक्का विश्वास है. दुनिया के हालात और ख़ास कर बाहर की दुनिया की हालत और उस से हिन्दुस्तान को डर, पाकिस्तान और हिन्दुस्तान दोनों तरफ़ के समझदार लोगों से छिपा नहीं है. जिन लोगों की आँखें बन्द नहीं हैं वह इस बात को अच्छी तरह समझ रहे हैं कि पाकिस्तान और हिन्दुस्तान भले ही अलग अलग रहें या एक हो जायँ दोनों की और सारे मुल्क की सलामती इसी में है कि वह एक दूसरे पर चढ़ाई करने की या एक दूसरे को लड़ कर जीतने की बात तक अपने दिमाग़ में न लावें. जो लोग इधर या उधर इस तरह की लड़ाई की बातें करते रहते हैं वह कुएँ के मेंडक की तरह बाहर की दुनिया से बिलकुल अनजान हैं और अपनी केवल बेसबरी और हिमाक़त से ख़ुद अपनी और सारे मुल्क की बरबादी के सामान पैदा कर रहे हैं.

इस में ज़रा भी शक नहीं कि इस हुकूमत के बड़े वज़ीर की

سمے کے سب معاملے شانتی کے ساتھ طے کرلیں اور دونوں دیشوں کے بیچ دوستی اور اچھے پڑوسیوں کے سے پریم بھاؤ بڑھانے میں مدد دیں۔"

آج کل کی ہوا میں بہت سے لوگوں کو ایک دوسرے کی نیت پر بھروسہ نہیں ہوتا۔ لوگوں کو شک ہے کہ اِس راضی نامے پر ایمانداری سے عمل ہوگا یا نہیں۔ یہ شک کچھ لوگوں کے دلوں میں دونوں طرف ہے۔ لیکن جیسا پنڈت جواہر لال جی نے اپنے دھن بکھراؤ (براڈ کاسٹ) میں کہا ہے اول تو کسی اِس طرح کے راضی نامے کا ہونا ہی کچھ کم بات نہیں ہے۔ دوسرے وشواس سے وشواس اور اوشواس سے اوشواس ہمیشہ بڑھتا ہے۔ دونوں بڑے وزیروں کو ایک دوسرے پر پکا وشواس ہے۔ دنیا کے حالات اور خاص کر باہر کی دنیا کی حالت اور اُس سے ہندستان کا ڈر پاکستان اور ہندستان دونوں طرف کے سمجھ دار لوگوں سے چھپا نہیں ہے۔ جن لوگوں کی آنکھیں بند نہیں ہیں وہ اس بات کو اچھی طرح سمجھ رہے ہیں کہ پاکستان اور ہندستان بھلے ہی الگ الگ رہیں یا ایک ہوجائیں دونوں کی اور سارے ملک کی سلامتی اسی میں ہے کہ وہ ایک دوسرے پر چڑھائی کرنے کی یا ایک دوسرے کو لڑ کر جیتنے کی بات تک اپنے دماغ میں نہ لاویں۔ جو لوگ اِدھر یا اُدھر اس طرح کی لڑائی کی باتیں کرتے رہتے ہیں وہ کنویں کے مینڈک کی طرح باہر کی دنیا سے بالکل انجان ہیں اور اپنی کیول بے صبری اور حماقت سے خود اپنی اور سارے ملک کی بربادی کے سامان پیدا کر رہے ہیں۔

اس میں ذرا بھی شک نہیں کہ اس حکومت کے بڑے وزیر

के. इस मुल्क के और दोनों हुकूमतों के सरों को ऊँचा करने वाला है. इस राज़ीनामे ने साबित कर दिया कि महात्मा गांधी का अपने "क़ानूनी वारिस" का चुनाव और एलान कितना ठीक था. सरदार वल्लभ भाई पटेल ने भी इस मामले में पंडित जवाहर लाल का पूरा साथ दे कर यह साबित कर दिया कि भारत सरकार इस मामले में हर तरह की तंग नज़री से बहुत ऊपर है और फ़िरक़ा-परस्ती को मुल्क से निकालने के लिये कमर कसे हुए है. हम अधिक क्या कहें! सारे देश का और सब हिन्दू मुसलमानों का धर्म है, उन का पाक फ़र्ज़ है कि वह इस राज़ीनामे के सफल कराने में हर तरह और पूरी पूरी मदद दें. और देश में चारों तरफ़ वह हवा पैदा करें जिस से दोनों सरकारों को इस नेक काम में शक्ति मिले और उन की हिम्मत बढ़े.

देश की जनता का फ़र्ज़

पर बंगाल के इस झगड़े और सरकारी राज़ीनामे से हट कर हमें आगे के लिये अपने फ़र्ज़ पर ग़ौर कर लेना चाहिये. देश की इस हालत में इस तरह के राज़ीनामे होते हुए भी यह मनहूस झगड़े जब तब जगह जगह खड़े हो सकते हैं और हमें डर है कि होंगे. सोचना यह है कि इन्हें रोकने या इन के ज़हर को कम करने के लिये हमें क्या करना चाहिये.

सच्चे हिन्दू मुसलमान

बंगाल और यू० पी० ही की हाल की घटनाओं से हमें इस बारे में थोड़ी बहुत रोशनी मिलती है. दोनों जगह से इस तरह की

کے اِس ملک کے اور دونوں حکومتوں کے سروں کو اُونچا کرنے والا ھے . اس راضي نامے نے ثابت کردیا کہ مہاتما گاندھي کا اپنے " قانونی وارث " کا چناؤ اور اعلان کتنا ٹھیک تھا . سردار ولبھ بھائی پٹیل نے بھی اس معاملہ میں پنڈت جواھر لال کا پورا ساتھ دیکر یہ ثابت کردیا کہ بھارت سرکار اس معاملے میں ھر طرح کي تنگ نظري سے بہت دور ھے اور فرقہ پرستی کو ملک سے نکالنے کے لئےکمر کسے ھوئے ھے . ھم ادھک کیا کہیں ! سارے دیش کا اور سب ھندو مسلمانوں کا دھرم ھے' اُن کا پاک فرض ھے کہ وہ اس راضي نامے کے سپھل کرانے میں ھر طرح اور پوری پوری مدد دیں . اور دیش میں چاروں طرف وہ ھوا پیدا کریں جس سے دونوں سرکاروں کو اس نیک کام میں شکتي ملے اور ان کی ھمت بڑھے .

دیش کي جنتا کا فرض

پر بنگال کے اس جھگڑے اور سرکاری راضي نامے سے ھٹ کر ھمیں آگے کے لئے اپنے فرض پر غور کرلینا چاھئے . دیش کی اس حالت میں اِس طرح کے راضی نامے ھوتے ھوئے بھی یہ منحوس جھگڑے جب تب جگہ جگہ کھڑے ھوسکتے ھیں اور ھمیں ڈر ھے کہ ھونگے . سوچنا یہ ھے کہ انھیں روکنے یا ان کے زھر کو کم کرنے کے لئے ھمیں کیا کرنا چاھئے .

سچے ھندو مسلمان

بنگال اور یو پی ھي کي حال کی گھٹناؤں سے ھمیں اس بارے میں تھوڑي بہت روشني ملتی ھے . دونوں جگہ سے اس طرح کی

नीचे मैं उर्दू शायरी से कुछ मिसालें पेश करता हूँ. यह नमूने दो सवा दो सौ बरस की उर्दू शायरी से लिये गये हैं. हर तरह की शायरी पेश की गई है. पचास हजार से ज्यादा ऐसे शेर उर्दू शायरी में मिलेंगे. उर्दू शायरों ने सिर्फ़ फुटकर शेर नर्म भाषा में नहीं कहे हैं, किताबों की किताबें इसी भाषा में लिख कर क़लम डाल दिया है. अगर कोई पूछे कि उर्दू लिपि में इतनी नर्म हिन्दी उन्होंने क्यों लिखी तो मलिक मुहम्मद जायसी ने और रसखान ने उर्दू लिपि में अपनी रचनायें क्यों लिखीं? यह तो आदत की बात है. आपने जैसे जायसी और रसखान को नागरी में छाप लिया वैसे ही एक लाख पन्ने उर्दू लिपि में छपे साहित्य को नागरी लिपि में छाप लीजिये और इस तरह नागरी पढ़ने वालों के लिये सोने और जवाहरात की खान खोल दीजिये. मैं जो नमूने हाज़िर कर रहा हूँ उनमें बहुत थोड़े ऐसे फ़ारसी अरबी शब्द आये हैं जिन्हें हिन्दी जानने वाले नहीं जानते. ज्यादातर तो ऐसे फ़ारसी अरबी शब्द आये हैं जो बच्चे और अनपढ़ भी बोलते हैं.

ज़रा ठहर ठहर कर इन नमूनों को पढ़िये; धीरे धीरे इन्हें गुनगुनाइये. भाषा की सुन्दरता और सुगमता को दिल में उतरने दीजिये. इन्हें पढ़ लीजिये बार बार पढ़ लीजिये. धर्म के मैदान में कबीर और नानक ने जिस तरह राम रहीम को मिलाया था क्या इसी तरह उर्दू शायरों ने हिन्दी, फ़ारसी को इस तरह घुला मिला नहीं दिया कि हिन्दू मुसलमान दोनों झूम उठें. इन नमूनों को पढ़ लीजिये, गुनगुना लीजिये, गा लीजिये, दिल में उतार लीजिये इसके बाद आप से कुछ बातें पूछूंगा. पहले से क्यों पूछूं. लगे हाथों

نیچے میں اردو شاعری سے کچھ مثالیں پیش کرتا ہوں. یہ نمونے دو سوا دوسو برس کی اردو شاعری سے لئے گئے ہیں. ہر طرح کی شاعری پیش کی گئی ہے. پچاس ہزار سے زیادہ ایسے شعر اردو شاعری میں ملینگے. اردو شاعروں نے صرف پھٹکر شعر نرم بھاشا میں نہیں کہے ہیں' کتابوں کی کتابیں اسی بھاشا میں لکھکر قلم ڈال دیا ہے. اگر کوئی پوچھے کہ اردو لپی میں اتنی نرم ہندی انہوں نے کیوں لکھی تو ملک محمد جایسی نے اور رسکھان نے اردو لپی میں اپنی رچنائیں کیوں لکھیں. یہ تو عادت کی بات ہے. آپ نے جیسے جایسی اور رس کھان کو ناگری میں چھاپ لیا ویسے ہی ایک لاکھ پنّے اردو لپی میں چھپے ساہتیہ کو ناگری لپی میں چھاپ لیجئے اور اس طرح ناگری پڑھنے والوں کے لئے سونے اور جواہرات کی کھان کھول دیجئے. میں جو نمونے حاضر کر رہا ہوں ان میں بہت تھوڑے ایسے فارسی عربی شبد آئے ہیں جنہیں ہندی جاننے والے نہیں جانتے زیادہ‌تر تو ایسے فارسی عربی شبد آئے ہیں جو بچے اور ان‌پڑھ بھی بولتے ہیں.

ذرا ٹھہر ٹھہر کر ان نمونوں کو پڑھئے' دھیرے دھیرے انہیں گن گنائیے. بھاشا کی سندرتا اور سگمتا کو دل میں اترنے دیجئے انہیں پڑھ لیجئے بار بار پڑھ لیجئے. دھرم کے میدان میں کبیر اور نانک نے جس طرح رام رحیم کو ملایا تھا کیا اسی طرح اردو شاعروں نے ہندی فارسی کو اس طرح گھلا ملا نہیں دیا کہ ہندو مسلمان دونوں جھوم اٹھیں. ان نمونوں کو پڑھ لیجئے' گن گنا لیجئے' گا لیجئے دل میں اتار لیجئے اس کے بعد آپ سے کچھ باتیں پوچھوں گا پہلے سے کیوں پوچھوں. لگے ہاتھوں

खबरें आती रही हैं जिन से मालूम होता है कि पिछले बरसों की दुर्घटनाओं से देश की जनता ने धीरे धीरे थोड़ा बहुत सबक़ सीखा है. पूरबी बंगाल से खबरें आई हैं कि वहाँ बहुत से आम मुसलमानों ने हिन्दुओं की जान माल के बचाने में मदद दी और इसी कोशिश में अपनी जान तक खो दी. कलकत्ता में बहुत से सिक्खों ने अपनी जान पर खेल कर मुसलमानों की जान बचाई. कलकत्ता ही में उत्तरी प्रान्तों के हज़ारों ग़रीब हिंदुओं ने बहकाये जाने पर भी अपने को इस मार काट से अलग रखा और बहुत सों ने मुसलमानों की मदद की. इसी कोशिश में कई जानें भी गईं. कलकत्ता में यह चीज़ यहाँ तक बढ़ी कि कहा जाता है कुछ बंगाली हिन्दुओं की तरफ़ से पैम्फ़लेट बांटे गये जिन में लिखा था कि "हमें डाढ़ी वालों, चोटी वालों और कड़ा वालों" यानी मुसलमानों, उत्तरी प्रान्तों के हिन्दुओं और सिक्खों तीनों को बंगाल से निकाल देना है. कहा जाता है इन चीज़ों की जड़ में तिजारती लाग डाट भी काम कर रही थी. यू० पी० के उन ज़िलों से भी जो इस नापाक आग की लपटों से न बच सके, खबरें आ रही हैं कि जगह जगह आम हिन्दुओं ने हिन्दुओं ही के ज़ुल्मों से अपने मुसलमान पड़ोसियों को बचाया. शाहजहांपुर के किसी गांव से ठाकुर जंगी सिंह नामी एक आदमी के इसी तरह की कोशिश में हिन्दुओं के हाथों शहीद होने की खबर भी अखबारों में आ चुकी है. इसी तरह की और भी बहुत सी खबरें जहां तहां से आ रही हैं. कहीं कहीं से खास कर कटनी (सी. पी.) से यह भी सुनने में आया है कि वहाँ कुछ कांग्रेस वालों ने बड़ी

خبریں آتی رهی هیں جن سے معلوم هوتا هے که پچهلے برسوں کي درگهٹناؤں سے دیش کی جنتا نے دهیرے دهیرے تهوڑا بهت سبق سیکها هے . پوربی بنگال سے خبریں آئی هیں که وهاں بهت سے عام مسلمانوں نے هندؤں کی جان مال کے بچانے میں مدد دی اور اسي کوشش میں اپنی جان تک کهودی . کلکته میں بهت سے سکهوں نے اپنی جان پر کهیل کر مسلمانوں کی جان بچائی . کلکته هی میں اُتري پرانتوں کے هزاروں غریب هندؤں نے بهکائے جانے پر بهي اپنے کو اس مار کاٹ سے الگ رکها اور بهت سوں نے مسلمانوں کی مدد کی . اسی کوشش میں کئی جانیں بهي گئیں . کلکته میں یه چیز یهاں تک بڑهي که کها جاتا هے کچه بنگالي هندوؤں کي طرف سے پمفلٹ بانٹے گئے جن میں لکها تها که همیں " ڈاڑهی والوں' چوٹی والوں اور کڑا والوں " یعنی مسلمانوں' اتری پرانتوں کے هندوؤں اور سکهوں تینوں کو بنگال سے نکال دینا هے . کها جاتا هے که اِن چیزوں کي جڑ میں تجارتی لاگ ڈاٹ بهی کام کر رهی تهی . یوپی کے ان ضلعوں سے بهي جو اس ناپاک آگ کی لپٹوں سے نه بچ سکے' خبریں آرهی هیں که جگه جگه عام هندوؤں نے هندوؤں هي کے ظلموں سے اپنے مسلمان پڑوسیوں کو بچایا . شاهجهاں پور کے کسی گاؤں سے ٹهاکر جنگي سنگه نامی ایک آدمی کے اسي طرح کی کوشش میں هندؤں کے هاتهوں شهید هونے کی خبر بهی اخباروں میں آچکی هے . اسي طرح کي اور بهی بهت سي خبریں جهاں تهاں سے آرهی هیں . کهیں کهیں سے خاص کر کٹنی (سی پی) سے یه بهی سننے میں آیا هے که وهاں کچه

घंटे के अन्दर ही दंगे को ठण्डा कर दिया. जाहिर है कि देश में भले लोगों की इतनी कमी नहीं है भलाई की ताक़तें भी है लेकिन बुराई की ताक़तें संगठित होकर जब चाहे मैदान में उतर आती है. भलाई की ताक़तें बिखरी हुई और असंगठित रह जाती हैं. इन हालतों में जनता का फ़र्ज़ साफ़ है.

भले लोगों से अपील

(१) सब से पहली जरूरत यह है कि हर जिला, हर शहर और हर गांव में नेक, समझदार और अमन पसन्द लोग अपने को संगठित करें. अपने अपने इलाक़े के नासमझ और बहके हुए फ़साद करने वालों की खबर रखें और जब जहाँ जरूरत पड़े अपने को खतरे में डाल कर भी फ़साद को रोकने के लिये अपनी पूरी शक्ति से काम लें. इसी तरह के संगठन को महात्मा गांधी " शान्ति सेना " का नाम देते थे. इस काम के करने वालों में जहां एक तरफ़ अपनी जान की बाजी लगा देने की तैयारी होनी चाहिये वहां दूसरी तरफ़ उन्हें अपने दुशमनों से भी पूरे प्रेम और अहिन्सा से काम लेना चाहिये.

इसी तरह के संगठन दूसरी तरफ़ पाकिस्तान में भी होने चाहिये.

मुसलमानों को सलाह

(२) दूसरी बात हम अपने यहाँ के मुसलमान भाइयों से कहना चाहते हैं. इस नाजुक समय में भारत के मुसलमानों को बहुत ही सब्र और हिम्मत से काम लेना चाहिये. उन के लिये पहली जरूरी चीज यह है कि इस मामले में वह पूरे अदम तशद्दुद यानी अहिन्सा से काम लें. बदला लेने का ख़याल तो दूर रहा उन्हें चाहिये

گھنٹے کے اندر ھی دنگے کو ٹھنڈا کردیا . ظاہر ھے کہ دیش میں بھلے لوگوں کی اتنی کمی نہیں ھے بھلائي کي طاقتیں بھی ھیں لیکن برائي کی طاقتیں سنگٹھت ھوکر جب چاھے میدان میں اُتر آتي ھیں، بھلائي کی طاقتیں بکھري ھوئي اور اسنگٹھت رہ جاتي ھیں ان حالتوں میں جنتا کا فرض صاف ھے .

بھلے لوگوں سے اپیل

(۱) سب سے پہلی ضرورت یہ ھے کہ ھر ضلع، ھر شہر اور ھر گاؤں میں نیک، سمجھدار اور امن پسند لوگ اپنے کو سنگٹھت کریں۔ اپنے اپنے علاقے کے ناسمجھ اور بہکے ھوئے فساد کرنے والوں کی خبر رکھیں اور جب جہاں ضرورت پڑے اپنے کو خطرے میں ڈال کر بھی فساد کو روکنے کے لئے اپني پوري شکتي سے کام لیں . اسی طرح کے سنگٹھن کو مہاتما گاندھي " شانتی سینا " کا نام دیتے تھے . اس کام کے کرنے والوں میں جہاں ایک طرف اپني جان کی بازی لگادینے کي تیاری ھونی چاھئے وھاں دوسري طرف انھیں اپنے دشمنوں سے بھي پورے پریم اور اھنسا سے کام لینا چاھئے .

اِسی طرح کے سنگٹھن دوسري طرف پاکستان میں بھی ھونے چاھئیں .

مسلمانوں کو صلاح

(۲) دوسري بات ھم اپنے یہاں کے مسلمان بھائیوں سے کہنا چاھتے ھیں . اس نازک سمے میں بھارت کے مسلمانوں کو بہت ھی صبر اور ھمت سے کام لینا چاھئے . ان کے لئے پہلی ضروری چیز یہ ھے کہ اِس معاملے میں وہ پورے عدم تشدد یعنی اھنسا سے کام لیں . بدلہ لینے کا خیال تو دور رہا اُنھیں چاھئے

कि वह अपने क़ातिल पर भी हाथ न उठायें. ठीक जिस तरह इस्लाम के शुरू के दिनों में मुसलमानों पर तरह तरह के ज़ुल्म होते हुए भी उन्हें सब ज़ुल्मों को केवल "सब्र और सलात" यानी बर्दाश्त और प्रार्थना से मुक़ाबला करने का हुक्म था. और किसी तरह के बदले को या हथियार उठाने की इजाज़त नहीं थी. उसी तरह आज भारत में उन्हें अपने ऊपर ज़ुल्मों को कुछ मुसलमानों ही की पिछली ग़लतियों का कफ़्फ़ारा समझ कर बर्दाश्त करना चाहिये. उन के इस बरताव में ही इस समय उनका और मुल्क का सब से अधिक भला है.

अदम तशद्दुद के बाद दूसरी ज़रूरी चीज़ उन के लिये हिम्मत है. अदम तशद्दुद भी बहादुर को ही शोभा देता है. देश भर में अगर कोई बहका हुआ नासमझ हिन्दू उन से आकर कहे कि जान बचाने के लिये तुम हिन्दू हो जाओ या चोटी रख लो तो उन्हें साफ़ इन्कार कर देना चाहिये. अगर उन्हें नमाज़ में विश्वास है तो नमाज़ पढ़ते हुए उन्हें कोई मार भी डाले तब भी उन्हें होश रहते नमाज़ नहीं छोड़नी चाहिये.

तीसरी उतनी ही ज़रूरी चीज़ उन के लिये यह है कि किसी के भी समझाने बुझाने पर चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान और कितने भी ख़तरे के होते हुए उन्हें अपना घर या गांव छोड़ कर पाकिस्तान या कहीं और जाने का ख़याल तक मन में नहीं लाना चाहिये. उन्हें यह हमेशा के लिये समझ लेना चाहिये कि मुल्क के बटवारे से या दो क़ौमी नज़रिये से उन्हें या इस मुल्क को कोई ख़ास

کہ وہ اپنے قاتل پر بھی ہاتھ نہ اُٹھائیں. ٹھیک جس طرح اسلام کے شروع کے دنوں میں مسلمانوں پر طرح طرح کے ظلم ہوتے ہوئے بھی اُنھیں سب ظلموں کو کیول "صبر اور صلوٰۃ" یعنی برداشت اور پرارتھنا سے مقابلہ کرنے کا حکم تھا. اور کسی طرح کے بدلے کی یا ھتھیار اُٹھانے کی اجازت نہیں تھی. اُسی طرح آج بھارت میں اُنھیں اپنے اوپر ظلموں کو کچھ مسلمانوں ہی کی پچھلی غلطیوں کا کفارہ سمجھکر برداشت کرنا چاہئیے. ان کے اس برتاؤ میں ہی اس سمے ان کا اور ملک کا سب سے ادھک بھلا ہے.

عدم تشدد کے بعد دوسری ضروری چیز ان کے لئے ہمت ہے. عدم تشدد بھی بہادر ہی کو شوبھا دیتا ہے. دیش بھر میں اگر کوئي بہکا ہوا نا سمجھ ہندو ان سے آکر کہے کہ جان بچانے کے لئے تم ہندو ہو جاؤ یا چوٹي رکھ لو تو انھیں صاف انکار کردینا چاہئیے. اگر انھیں نماز میں وشواس ہے تو نماز پڑھتے ہوئے اُنھیں کوئی مار بھی ڈالے تب بھي انھیں ہوش رہتے نماز نہیں چھوڑنی چاہئیے.

تیسری اُتنی ہی ضروری چیز اُن کے لئے یہ ہے کہ کسی کے بھی سمجھانے بجھانے پر چاہے وہ ہندو ہو یا مسلمان اور کتنے بھی خطرے کے ہوتے ہوئے اُنھیں اپنا گھر یا گاؤں چھوڑ کر پاکستان یا کہیں اور جانے کا خیال تک من میں نہیں لانا چاہئیے. اُنھیں یہ ہمیشہ کے لئے سمجھ لینا چاہئیے کہ ملک کے بٹوارے سے یا دو قومي نظریہ سے اُنھیں یا اس ملک کو کوئی خاص فائدہ نہیں

मुसीबत को झेलते हुए भी उन्हें यहीं रहना है, यहीं मरना है और इसी मुल्क को अपना बनाना है. केवल इसी तरह इस मुल्क के मुसलमान अपने बहके हुए हिन्दू भाइयों की आत्माओं को जगा सकते हैं और धीरे धीरे उन के दिलों को जीत सकते हैं.

ठीक यही और इसी तरह की सलाह हम पाकिस्तान के हिन्दू भाइयों को देंगे. उन्हें बार बार पाकिस्तान से उखाड़ कर लाने की कोशिश का नतीजा उन की भलाई नहीं है बल्कि उन की हमेशा के लिये बरबादी है.

हिन्दुओं से

(३) तीसरी बात हमें भारत के हिन्दुओं से कहनी है. हमें मालूम है कि देश के बटवारे से उन के दिलों को बहुत बड़ी चोट लगी है. बटवारा आम तौर पर किसी को भी बहुत अच्छी लगने वाली चीज़ नहीं है. इस तरह का बटवारा हमेशा दोनों तरफ़ की कुछ न कुछ कमज़ोरियों और कमियों का नतीजा होता है. ऐसे मौक़ों पर दोनों को अपनी अपनी कमज़ोरियों और अपनी अपनी कमियों पर ही निगाह डालने और उन्हें दूर करने की कोशिश करनी चाहिये. अगर हम यह चाहते हैं कि मुल्क फिर से एक हो — और हमारे दिल में भी यह ख़्वाहिश है — तो इस का रास्ता पाकिस्तान पर चढ़ाई करना या अपने यहाँ के मुसलमान भाइयों पर सितम ढाना या उन्हें निकालने की कोशिश करना नहीं है. इस का रास्ता है पहले अपने यहाँ और पीछे दूसरे के यहाँ मेल मोहब्बत की राहें खोल कर अपने हर मुसलमान भाई को यह यक़ीन दिलाना कि यह मुल्क [illegible] है जितना किसी हिन्दू का और उस को जान

مصیبت کو جھیلتے ہوئے بھی انھیں یہیں رہنا ہے، یہیں مرنا ہے اور اسی ملک کو اپنا بنانا ہے . کیول اسی طرح اس ملک کے مسلمان اپنے بہکے ہوئے ہندو بھائیوں کی آتماؤں کو جگا سکتے ہیں اور دھیرے دھیرے اُن کے دلوں کو جیت سکتے ہیں

ٹھیک یہی اور اِسی طرح کی صلاح ہم پاکستان کے ہندو بھائیوں کو دیں گے . انھیں بار بار پاکستان سے اکھاڑ کر لانے کی کوشش کا نتیجہ ان کی بھلائی نہیں ہے بلکہ ان کی ہمیشہ کے لئے بربادی ہے .

ہندوؤں سے

(۳) تیسری بات ہمیں بھارت کے ہندوؤں سے کہنی ہے ہمیں معلوم ہے کہ دیش کے بٹوارے سے اُن کے دلوں کو بہت بڑی چوٹ لگی ہے . بٹوارا عام طور پر کسی کو بھی بہت اچھی لگنے والی چیز نہیں ہے . اِس طرح کا بٹوارا ہمیشہ دونوں طرف کی کچھ نہ کچھ کمزوریوں اور کمیوں کا نتیجہ ہوتا ہے . ایسے موقعوں پر دونوں کو اپنی اپنی کمزوریوں اور اپنی کمیوں پر ہی نگاہ ڈالنے اور اُنھیں دور کرنے کی کوشش کرنی چاہئے اگر ہم یہ چاہتے ہیں کہ ملک پھر سے ایک ہو — اور ہمارے دل میں بھی یہ خواہش ہے — تو اس کا راستہ پاکستان پر چڑھائی کرنا یا اپنے یہاں کے مسلمان بھائیوں پر ستم ڈھانا یا اُنھیں نکالنے کی کوشش کرنا نہیں ہے . اس کا راستہ ہے پہلے اپنے یہاں اور پیچھے دوسرے کے یہاں میل محبت کی راہیں کھول کر اپنے ہر مسلمان بھائی کو یہ یقین دلانا کہ یہ ملک اتنا ہی اُس کا ہے جتنا کسی ہندو کا اور اس کی جان

माल, आबरू और उस का मज़हब यहाँ उतना ही सुरक्षित है जितना हिन्दू या किसी और का. हमें इस बात को अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि जितना जितना कोई पाकिस्तान पर चढ़ाई करने या मुसलमानों को भारत से निकालने की बात करता है उतना उतना ही वह हिन्दुस्तान के फिर से एक होने के उस शुभ दिन को दूर फेंकता है और जितना जितना पाकिस्तान की अलग आज़ाद हुकूमत का भला चाहते हुए हम अपने यहां सच्ची ग़ैर जानिबदार मिली जुली हुकूमत क़ायम करने की कोशिश करते हैं उतना उतना ही उस शुभ दिन को नज़दीक लाते हैं. भारत और पाकिस्तान के किसी राज काज मानों में एक होने से पहले इस बात की ज़रूरत है कि दोनों तरफ़ के दिल साफ़ हों. दोनों तरफ़ सब के बराबर अधिकार हों. दोनों तरफ़ सब अमन से रह सकें और दोनों हुकूमतों में आना जाना, लेन देन, तिजारत और रिश्तेदारियाँ उसी तरह आज़ादी के साथ होने लगें जिस तरह सन् १९१४ ई० से पहले योरप के लग भग सब आज़ाद देशों में एक दूसरे के बीच होती थीं. निरपराध लोगों, बच्चों और औरतों के ऊपर जिस तरह के अत्याचार ख़ास कर हिन्दू धर्म, और हिन्दू संस्कृति के नाम पर पिछले तीन बरस के अन्दर देश के कई हिस्सों में हुए हैं उन से किसी भी देश या धर्म का माथा ऊंचा नहीं हो सकता और न किसी का भला हो सकता है. हर हिन्दू का ख़ास कर जिसे हिन्दू धर्म से और इस देश की पुरानी संस्कृति से ज़रा भी प्रेम है उस का यह फ़र्ज़ है कि वह भारत के रहने वाले हर मुसलमान बल्कि हर इनसान को अपना भाई समझे और उस के जान माल की रक्षा में जब

(४०४)

مال' آبرو اور اس کا مذہب یہاں اتنا ہی سرکھشت ہے جتنا ہندو یا کسی اور کا. ہمیں اس بات کو اچھی طرح سمجھ لینا چاہئے کہ جتنا جتنا کوئی پاکستان پر چڑھائی کرنے یا مسلمانوں کو بھارت سے نکالنے کی بات کرتا ہے اتنا اتنا ہی وہ ہندستان کے پھر سے ایک ہونے کے اس شبھ دن کو دور پھینکتا ہے اور جتنا جتنا پاکستان کی الگ آزاد حکومت کا بھلا چاہتے ہوئے ہم اپنے یہاں سچی غیرجانبدار ملی جلی حکومت قائم کرنے کی کوشش کرتے ہیں اتنا اتنا ہی اس شبھ دن کو نزدیک لاتے ہیں. بھارت اور پاکستان کے کسی راج کاجی معنوں میں ایک ہونے سے پہلے اس بات کی ضرورت ہے کہ دونوں طرف کے دل صاف ہوں. دونوں طرف سب کے برابر ادھیکار ہوں. دونوں طرف سب امن سے رہ سکیں اور دونوں حکومتوں میں آنا جانا لین دین' تجارت اور رشتہداریاں اسی طرح آزادی کے ساتھ ہونے لگیں جس طرح سن ۱۹۱۴ع سے پہلے یورپ کے لگ بھگ سب آزاد دیشوں میں ایک دوسرے کے بیچ ہوتی تھیں نرپرادھ لوگوں' بچوں اور عورتوں کے اوپر جس طرح کے اتیاچار' خاص کر ہندو دھرم اور ہندو سنسکرتی کے نام پر پچھلے تین برس کے اندر دیش کے کئی حصوں میں ہوئے ہیں ان سے کسی بھی دیش یا دھرم کا ماتھا اونچا نہیں ہوسکتا اور نہ کسی کا بھلا ہوسکتا ہے. ہر ہندو کا خاص کر جسے ہندو دھرم سے اور اس دیش کی پرانی سنسکرتی سے ذرا بھی پریم ہے اس کا یہ فرض ہے کہ وہ بھارت کے رہنے والے ہر مسلمان بلکہ ہر انسان کو اپنا بھائی سمجھے اور اس کے جان مال کی رکشا

मुसलमान मर्द, औरत और बच्चों को हम ने इन तीन महीने के अन्दर उन के घरों और खेतों से निकाल कर जंगलों में फेंक दिया है या जिन्हों ने खुद हम पर भरोसा न रख सकने के कारन अपने प्यारे घरों को छोड़ दिया है. उन की इस बरबादी का पाप अभी हमारा ताज़ा पाप है जो हिन्दू धर्म और हिन्दू जाति के कन्धों से आसानी से नहीं हटेगा. इसे धीरे धीरे धोने का रास्ता महात्मा गांधी, गनेश शंकर विद्यार्थी और ठाकुर जंगी सिंह का रास्ता है. इस संकट के समय हिन्दू धर्म, हिन्दू संस्कृति और इस देश को नाश से बचाने का केवल यही एक तरीक़ा है.

आर्थिक बायकाट गुनाह

एक और छोटी सी बात. पिछले सत्ताइस अट्ठाइस बरस से हिन्दुओं और मुसलमानों में एक दूसरे के तिजारती और रोज़गारी बायकाट का सिलसिला भी कहीं कहीं चल पड़ा है. यह सिलसिला बहुत नापाक और ख़तरनाक है. कुछ मुसलमान केवल इस लिये अपने घरबार छोड़ कर चले गये क्योंकि हिन्दू आबादी के अन्दर उन का अपनी रोज़ी कमा सकना कठिन हो गया था. हिन्दुओं का फ़र्ज़ है कि वह इस बात का ख़ास ख़याल रखें कि उन के गांव या शहर का कोई मुसलमान इस कठिनाई के कारन घर छोड़ने पर मजबूर न हो सके.

जो सलाह ऊपर हम ने भारत के हिन्दुओं को दी है ठीक वही हम पाकिस्तान के मुसलमान भाइयों को देंगे. हमें थोड़ी बहुत तसल्ली और ख़ुशी है कि कम से कम पूरबी बंगाल के कुछ मुसलमानों में इस तरह की तहरीकें चल पड़ी हैं.

مسلمان مرد، عورت اور بچوں کو ہم نے ان تین مہینے کے اندر اُن کے گھروں اور کھیتوں سے نکال کر جنگلوں میں پھینک دیا ہے یا جنہوں نے خود ہم پر بھروسہ نہ رکھ سکنے کے کارن اپنے پیارے گھروں کو چھوڑ دیا ہے ان کی اِس بربادی کا پاپ ابھی ہمارا تازہ پاپ ہے جو ہندو دھرم اور ہندو جاتی کے کندھوں سے آسانی سے نہیں ہٹے گا . اسے دھیرے دھیرے دھونے کا راستہ مہاتما گاندھی، گنیش شنکر ودیارتھی اور ٹھاکر جنگی سنگھ کا راستہ ہے . اِس سنکٹ کے سمے ہندو دھرم، ہندو سنسکرتی اور اس دیش کو ناش سے بچانے کا کیول یہی ایک طریقہ ہے .

آرتھک بائیکاٹ گناہ

ایک اور چھوٹی سی بات . پچھلے ستائیس اٹھائیس برس سے ہندوؤں اور مسلمانوں میں ایک دوسرے کے تجارتی اور روزگاری بائیکاٹ کا سلسلہ بھی کہیں کہیں چل پڑا ہے . یہ سلسلہ بہت ناپاک اور خطرناک ہے . کچھ مسلمان کیول اِس لئے اپنے گھربار چھوڑ کر چلے گئے کیونکہ ہندو آبادی کے اندر اُن کا اپنی روزی کما سکنا کٹھن ہو گیا تھا . ہندوؤں کا فرض ہے کہ وہ اِس بات کا خاص خیال رکھیں کہ اُن کے گاؤں یا شہر کا کوئی مسلمان اِس کٹھنائی کے کارن گھر چھوڑنے پر مجبور نہ ہو سکے .

جو صلاح اُوپر ہم نے بھارت کے ہندوؤں کو دی ہے ٹھیک وہی ہم پاکستان کے مسلمان بھائیوں کو دیں گے . ہمیں تھوڑی بہت تسلی اور خوشی ہے کہ کم سے کم پوربی بنگال کے کچھ مسلمانوں میں اس طرح کی تحریکیں چل پڑی ہیں .

सरकारी अफ़सरो से

(४) चौथी बात हमें अपनी सूबाई सरकारों और सरकारी कर्मचारियों से कहनी है. सरकारी अफ़सरों का फ़िरक़ापरस्ती के ज़हर से पाक रहना देश के भले के लिये सब से ज़्यादा ज़रूरी है. मगर इस बदक़िस्मत मुल्क में अंग्रेज़ी ज़माने से अब तक इस का अक्सर उल्टा देखने को मिला है. इन तीन महीनों के अन्दर कई ज़िलों से इस तरह की ख़बरें आती रही हैं जिन से मालूम होता है कि वहां के बड़े बड़े ज़िला अफ़सर या तो छोटे मोटे दंगों को भी रोकने के नाक़ाबिल थे और या रोकना चाहते न थे. अंग्रेज़ी ज़माने में हम इस का कारन समझ सकते थे पर अब हमें अधिक समझ और दूरन्देशी से काम लेना चाहिये. किसी भी ज़िला के ज़िला मजिस्ट्रेट और पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट अगर चाहें कि उस ज़िला में झगड़ा न हो तो अव्वल तो वहां झगड़ा हो ही नहीं सकता और अगर हो भी जाय तो देखते देखते बन्द हो सकता है. जो भी ज़िम्मेदार अफ़सर अपने इस फ़र्ज़ को पूरा करने के नाक़ाबिल साबित हो उसे तुरन्त वहां से अलग कर देना चाहिये. प्रान्ती सरकारों को इस बारे में जागरूकता और हिम्मत से काम लेना चाहिये. कई ज़िलों में सुना जाता है कि कुछ लोगों के इस तरह के गिरोह घर घर मुसलमानों के पास जाते थे जो उन्हें उन की भलाई और सलामती की दुहाई देकर समझाते थे कि तुम्हें पाकिस्तान चला जाना चाहिये. इस तरह की हरकतों को कड़ाई के साथ बन्द करना हर सरकार

سرکاری افسروں سے

(۴) چوتھی بات ھمیں اپنی صوبائی سرکاروں اور سرکاری کرم چاریوں سے کہنی ھے سرکاری افسروں کا فرقہ پرستی کے زھر سے پاک رھنا دیش کے بھلے کے لئے سب سے زیادہ ضروری ھے مگر اِس بدقسمت ملک میں انگریزی زمانے سے اب تک اِس کا اکثر اُلٹا دیکھنے کو ملا ھے . اِن تین مہینوں کے اندر کئی ضلعوں سے اِس طرح کی خبریں آتی رھی ھیں جن سے معلوم ھوتا ھے کہ وھاں کے بڑے بڑے ضلع افسر یا تو چھوٹے موٹے دنگوں کو بھی روکنے کے ناقابل تھے اور یا روکنا چاھتے نہ تھے . انگریزی زمانے میں ھم اِس کا کارن سمجھ سکتے تھے . پر اب ھمیں ادھک سمجھ اور دور اندیشی سے کام لینا چاھئے . کسی بھی ضلع کے ضلع مجسٹریٹ اور پولیس سپرنٹنڈنٹ اگر چاھیں کہ اُس ضلع میں جھگڑا نہ ھو تو اول تو وھاں جھگڑا ھو ھی نہیں سکتا اور اگر ھو بھی جائے تو دیکھتے دیکھتے بند ھو سکتا ھے . جو بھی ذمہ دار افسر اپنے اس فرض کو پورا کرنے کے ناقابل ثابت ھو اُسے ترنت وھاں سے الگ کر دینا چاھئے . پرانتی سرکاروں کو اِس بارے میں جاگروکتا اور ھمت سے کام لینا چاھئے کئی ضلعوں میں سنا جاتا ھے کہ کچھ لوگوں کے اِس طرح کے گروہ گھر گھر مسلمانوں کے پاس جاتے تھے جو اُنھیں ان کی بھلائی اور سلامتی کی دھائی دے کر سمجھاتے تھے . کہ تمھیں پاکستان چلا جانا چاھئے . اِس طرح کی حرکتوں کو کڑائی کے ساتھ

भारत पाकिस्तान मिशन

(५) पांचवीं और आखिरी चीज़ हमारी राय में यह है कि कुछ ग़ैर सरकारी हिन्दुओं और मुसलमानों के इस तरह के मिशन होने चाहियें जो पाकिस्तान और हिन्दुस्तान दोनों तरफ़ आ जा सकें और फ़िज़ा के दुरुस्त करने में दोनों तरफ़ की सरकारों को मदद दे सकें और दोनों तरफ़ मेल मोहब्बत फैला सकें. दिल्ली के राज़ीनामा की जो बात हमें सब से ज्यादा अच्छी लगी वह यह है कि दोनों सरकारें यह चाहती हैं कि दोनों तरफ़ से जो लाखों आदमी अपने अपने घर बार छोड़ कर दूसरी तरफ़ चले गये हैं वह फिर वापस आ कर अपने घरों में बस सकें और वहां ख़ुशी ख़ुशी और अमन से रह सकें. जिस तरह के ग़ैर सरकारी मिशनों की हम बात कर रहे हैं उस तरह के मिशन ही सब से ज्यादा इस काम में मददगार हो सकते हैं. दिल्ली में मिस्टर लियाक़त अली ख़ाँ से जिन लोगों की बातें हुई उन से मालूम हुआ कि पाकिस्तान की सरकार इस तरह के मिशनों को हर तरह की सहूलत देने को तैयार है. हमें यक़ीन है कि अन्त में इस तरह के मिले जुले मिशन ही उस बड़े हिन्दुस्तान को, जिस में भारत और पाकिस्तान दोनों शामिल हैं, आज कल की सारी मज़हबी, समाजी, कलचरी और सियासी ग़लतफ़हमियों और मुसीबतों को हमेशा के लिये ख़तम कर के इस मुल्क में सच्ची एकता, सच्ची ख़ुशहाली और सच्ची तरक़्क़ी की बुनियादें डाल सकते हैं.

१३-४-५० सुन्दर लाल

بھارت پاکستان مشن

(۵) پانچویں اور آخری چیز ہماری رائے میں یہ ہے کہ کچھ غیر سرکاری ہندؤں اور مسلمانوں کے اِس طرح کے مشن ہونے چاہئیں جو پاکستان اور ہندستان دونوں طرف آجا سکیں اور فضا کے درست کرنے میں دونوں طرف کی سرکاروں کو مدد دے سکیں اور دونوں طرف میل محبت پھیلا سکیں ۔ دلی کے راضی نامے کی جو بات ہمیں سب سے زیادہ اچھی لگی وہ یہ ہے کہ دونوں سرکاریں یہ چاہتی ہیں کہ دونوں طرف سے جو لاکھوں آدمی اپنے اپنے گھر بار چھوڑ کر دوسری طرف چلے گئے ہیں وہ پھر واپس آکر اپنے گھروں میں بس سکیں اور وہاں خوشی خوشی اور امن سے رہ سکیں ۔ جس طرح کے غیر سرکاری مشنوں کی ہم بات کر رہے ہیں اُس طرح کے مشن ہی سب سے زیادہ اِس کام میں مددگار ہو سکتے ہیں دلی میں مسٹر لیاقت علی خاں سے جن لوگوں کی باتیں ہوئیں اُن سے معلوم ہوا کہ پاکستان کی سرکار اِس طرح کے مشنوں کو ہر طرح کی سہولت دینے کو تیار ہے ۔ ہمیں یقین ہے کہ انت میں اِس طرح کے ملے جلے مشن ہی اُس بڑے ہندستان کی جس میں بھارت اور پاکستان دونوں شامل ہیں آج کل کی ساری مذہبی، سماجی، کلچری اور سیاسی غلط فہمیوں اور مصیبتوں کو ہمیشہ کے لئے ختم کرکے اس ملک میں سچی ایکتا، سچی خوشحالی اور سچی ترقی کی بنیادیں ڈال سکتے ہیں ۔

۱۳-۴-۵۰ سندر لال

करना जिसमें सब ... का मक़सद है

(२) एकता फैलाने के लिये किताबों, अख़बारों, रिसालों वग़ैरह का छापाना.

(३) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कान्फ़रेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस में मेल बढ़ाना.

—०—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा, वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़; गवर्निंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; सेक्रेटरी पं० सुन्दरलाल; —

गवर्निंग बाडी के और मेम्बर

डा० सय्यद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सय्यद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० खेर, मि० एस० के० रुद्रा, पं० विशम्भर नाथ, महात्मा भगवान दीन, सेठ पूनम चन्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम प्रकाश पालीवाल.

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिए.

सुन्दर लाल

सेक्रेटरी हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद

नोट—सोसाइटी के नये क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है "नया हिन्द" के जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायगा. अलग से मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ज़्यादा दाम की किताबें लेने पर एक रुपया कम करा सकेंगे.

پرچار کرنا جس میں سب ہندستانی شامل ہوں -

(۲) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں' اخباروں' رسالوں وغیرہ کا چھاپنا -

(۳) پڑھائی گھروں' کتب گھروں' سبھاؤں' کانفرنسوں' لکچروں سے سب دھرموں' جاتوں' برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا -

---

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ— مسٹر عبد المجید خواجہ' وائس پریسیڈنٹ— ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس' سکریٹری پنڈت سندلال'

گورننگ باڈی کے اور ممبر —

ڈاکٹر سید محمود' ڈاکٹر تارا چند - مولوی سید سلیمان ندوی' مسٹر منظر علی سوختہ' شری بی - جی - کھیر' مسٹر ایس- کے- رودرا' پنڈت بشمبھر ناتھ' مہاتما بھگوان دین' سیٹھ پونم چند رانکا' قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال'

ممبری کے قاعدے کے لئے لکھیئے -

سندر لال

سکریٹری ہندستانی کلچر سوسائٹی'

۴۸ بائی کا باغ' الہ آباد

نوٹ —سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کردی گئی ہے - " نیا ہند " کے جو گاہک ممبر بننا چاہیں اُن کو صرف چھہ روپیہ چندہ دینے پر ہی ممبر بنا لیا جائیگا - الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی ہوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ہوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ

आप से यह कह दूँ कि एक एक शेर में यह बात ध्यान से देखते जाइये कि शब्द किस तरह चुने गये हैं. जुमले (वाक्य) हमारी आप की बोल-चाल से कितना मिलते हैं. । भाव और विचार कैसे हैं. जीवन को संवारने में यह शेर कितनी मदद कर सकते हैं. इनमें गम्भीरता और रस कितना है ? बहुत शान्ति से पढ़िये.

(१) मर गया कोहकन यही कहकर
आँख ओझल पहाड़ ओझल है. — मीर

(२) ग़म के टहोके कुछ हों बला से आके जगा तो जाते हैं
हम हैं मगर वह नींद के माते जागते ही सो जाते हैं. — फ़ानी

(३) दिल का उजड़ना सहल सही बसना सहल नहीं ज़ालिम
बस्ती बसना सहल नहीं बस्ते बस्ते बस्ती है. — फ़ानी

(४) बात क्या आदमी की बन आई,
आस्माँ से ज़मीन नपवाई. — मीर

(५) यह सुहानी उदास तनहाई,
लेती है पिछली रात अंगड़ाई. — लेखक

(६) रात दिन चक्कर में हैं सात आसमाँ
हो रहेगा कुछ न कुछ घबरायें क्या,
लाग हो गर कुछ तो हम समझें लगाव
जब न हो कुछ भी तो धोका खायें क्या. — ग़ालिब

(७) इधर आँख झपकी उधर ढलगई वह
जवानी भी एक धूप थी दोपहर की. — इशरत

(८) बलबाज़ू के ज़ोर कमर के, माँ की उमंग घमंड पिदर के
सुख आँखों के नूर नज़र के, चैन हमारे सारे घर के

آپ سے یہ کہدوں.کہ ایک ایک شعر میں یہ بات دھیان سے دیکھتے جائیے کہ شبد ،کس طرح چنے گئے ہیں' جملے (واکیہ) ہماری آپ کی بول چال سے کتنا ملتے ہیں' بھاؤ اور وچار کیسے . ہیں جیون کو سنوارنے میں یہ شعر کتنی مدد کر سکتے ہیں. ان میں گمبھیرتا اور رس کتنا ہے ؟ بہت شانتی سے پڑھئے.

(۱) مرگیا کوہکن یہی!کہکر — آنکھ اوجھل پہاڑ اوجھل ہے — میر

(۲) غم کے ٹہو کے کچھہ ہوں بلا سے آکے جگا تو جاتے ہیں
ہم ہیں مگر وہ نیند کے ماتے جاگتے ہی سوجاتے ہیں — فانی

(۳) دل کا اجڑنا سہل سہی بسنا سہل نہیں ظالم
بستی بسنا سہل نہیں بستے بستے بستی ہے — فانی

(۴) بات کیا آدمی کی بن آئی
آسماں سے زمین نپوائی — میر

(۵) یہ سہانی اداس تنہائی
لیتی ہے پچھلی رات انگڑائی — (لیکھک)

(۶) رات دن چکر میں ہیں سات آسماں
ہو رہے گا کچھ نہ کچھ گھبرائیں کیا
لاگ ہو گر کچھ تو ہم سمجھیں لگاؤ
جب نہ ہو کچھ بھی تو دھوکا کھائیں کیا — غالب

(۷) ادھر آنکھ جھپکی ادھر ڈھل گئی وہ
جوانی بھی اک دھوپ تھی دوپہر کی — عشرت

(۸) بل بازو کے زور کمر کے ماں کی امنگ' گھمنڈ پدر کے
سکھ آنکھوں کے نور نظر کے چین ہمارے سارے گھر کے

नया हिन्द نیا ہند



हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का परचा

एडीटर—
ताराचन्द, भगवानदीन, मुज़फ़्फ़र हसन, विश्वम्भरनाथ, सुन्दरलाल

मई १९५०

क्या कस से

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल
एक परचा दस आने .

मनीजर
'नया हिन्द'
४८, बाई का बाग़, इलाहाबाद .

"نیا ہند"

ہندستانی کلچر سوسائٹی کا پرچا

ایڈیٹر—
تارا چند، بھگوان دین، مظفر حسن، بشمبھر ناتھ، سندر لال

مئی ۱۹۵۰

کس سے

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال- باہر دس روپیہ سال
ایک پرچہ دس آنے

منیجر
'نیا ہند'
۴۸ 'بائی کا باغ' الہ آباد -

नया हिन्द

जिल्द ८ मई सन् '५० नम्बर ५

आम आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुंचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

" क़ौम की पुकार बापू के नाम "

(भाई 'सबा' अफ़ग़ानी)

छाई चारों ओर निराशा,
टूट गई है मन की आशा
बापू क्यों मुंह मोड़ गये

डगर डगर पर ठोकरें खाती
फिरती है अब जनता, बापू !
इसको किसपर छोड़ गये

कैसा अत्याचार कि दुश्मन बने हैं भाई भाई
चारों तरफ़ से घिर घिर कर यह कैसी आंधी आई

نیا ہند

جلد ۸ مئی سن

جانت آدمي' پریم دھرم
' نیا ھند ' پہنچے گا گھر ؛

""قوم کي پکار باپو

(بھائی 'صبا '

چھائی چاروں
ٹوٹ گئی ہے م

ڈگر ڈگر پر ٹھو
پھرتي ہے اب

کیسا اتیاچار کہ دشمن
چاروں طرف سے گھر گھر

जिस आँधी के ज़ालिम झोंके
प्रेम के बन्धन तोड़ गए
बापू क्यों मुंह मोड़ गए

अपनी बिपता किसको सुनायें कौन है आज हमारा
तुम बिन जग में प्यारे बापू कोई नहीं है सहारा
दोष हुआ क्या हम से
जो तुम हमको अकेला छोड़ गये
बापू क्यों मुंह मोड़ गये

हम जो झगड़ें आपस में तो अब समझाये कौन ?
और अहिंसा के उपदेश अब सब को सुनाये कौन ?
हम दुखियारों से क्यों बापू
प्रीत का रिश्ता तोड़ गये
बापू क्यों मुंह मोड़ गये

جس آندھی کے ظالم جھونکے
پریم کے بندھن توڑ گئے
باپو کیوں منہ موڑ گئے

اپنی بپتا کس کو سنائیں کون ہے آج ہمارا
تم بن جگ میں پیارے باپو کوئی نہیں ہے سہارا
دوش ہوا کیا ہم سے
جو تم ہمکو اکیلا چھوڑ گئے
باپو کیوں منہ موڑ گئے

ہم جو جھگڑیں آپس میں تو اب سمجھائے کون ؟
اور اہنسا کے اُپدیش اب سب کو سنائے کون ؟
ہم دکھیاروں سے کیوں باپو
پریت کا رشتہ توڑ گئے
باپو کیوں منہ موڑ گئے

हिन्द पाकिस्तान समझौता

[पंडित सुन्दर लाल जी का वह भाषण जो उन्हों ने १६ अप्रैल सन् ५० ई० को आल इण्डिया रेडियो पटना से ब्राड कास्ट किया]

हमारा प्यारा मुल्क इस समय एक गहरे संकट में से निकल रहा है. देश में दो तरह की शक्तियाँ एक दूसरे पर क़ाबू पाने की कोशिश में लगी हुई हैं. एक तरफ़ वह शक्तियां हैं जो मुल्क भर में एका, प्रेम और मेल मोहब्बत पैदा करके उस की सदियों की कमज़ोरियों को दूर कर के उसे नया जीवन देना और दुनिया के बड़े से बड़े मुल्कों के साथ उन्नति की दौड़ में आगे ले जाना चाहती हैं. दूसरी तरफ़ फूट, नफ़रत और बरबादी की वह शक्तियाँ हैं जिन की बदौलत ही लगभग डेढ़ सौ बरस तक हम दूसरों के ग़ुलाम रहे. इन दूसरी तरह की शक्तियों को उभार कर और बढ़ावा दे कर ही हमारे उस वक़्त के विदेशी हाकिमों ने मुल्क में हिन्दुओं और मुसलमानों की अलग अलग फ़िरक़ेवाराना संस्थायें पैदा कीं जिन के ज़रिये वह बराबर भाई भाई को लड़ाते रहे और अपनी हुकूमत को मज़बूत करते रहे. इसी ज़हर का नतीजा था कि आज़ादी के साथ साथ लाखों जानें गईं, करोड़ों बरबाद हुए और आख़ीर में हमने महात्मा गांधी जैसी क़ीमती हस्ती को भी, जिस की बदौलत हमें आज़ादी नसीब हुई थी, हाथ से खो दिया.

इन दोनों तरह की शक्तियों में संघर्ष अभी तक जारी है और [illegible] ज़ोर पर है. ऐसी हालत में हमें जानना चाहिये

هندی پاکستان سمجھوتہ

[پنڈت سندر لال جی کا وہ بھاشن جو انہوں نے ۱۹ اپریل سن ۵۰ع کو آل انڈیا ریڈیو پٹنہ سے براڈ کاسٹ کیا]

ہمارا پیارا ملک اس سمے ایک گہرے سنکٹ میں سے نکل رہا ہے . دیش میں دو طرح کی شکتیاں ایک دوسرے پر قابو پانے کی کوشش میں لگی ہوئی ہیں . ایک طرف وہ شکتیاں ہیں جو ملک بھر میں ایکا' پریم اور میل محبت پیدا کرکے اس کی صدیوں کی کمزوریوں کو دور کرکے اسے نیا جیون دینا اور دنیا کے بڑے سے بڑے ملکوں کے ساتھ اُنتی کی دوڑ میں آگے لے جانا چاہتی ہیں . دوسری طرف پھوٹ' نفرت اور بربادی کی وہ شکتیاں ہیں جن کی بدولت ہی لگ بھگ ڈیڑھ سو برس تک ہم دوسروں کے غلام رہے . ان دوسری طرح کی شکتیوں کو اُبھار کر اور بڑھاوا دے کر ہی ہمارے اُس وقت کے بدیشی حاکموں نے ملک میں ہندوؤں اور مسلمانوں کی الگ الگ فرقہ وارانہ سنستھائیں پیدا کیں جن کے ذریعے وہ برابر بھائی بھائی کو لڑاتے رہے اور اپنی حکومت کو مضبوط کرتے رہے . اسی زہر کا نتیجہ تھا کہ آزادی کے ساتھ ساتھ لاکھوں جانیں گئیں' کروڑوں برباد ہوئے اور آخیر میں ہم نے مہاتما گاندھی جیسی قیمتی ہستی کو بھی' جس کی بدولت ہمیں آزادی نصیب ہوئی تھی' ہاتھوں سے کھودیا .

ان دونوں طرح کی شکتیوں میں سنگھرش ابھی تک جاری ہے اور ابھی کچھ زور پر ہے . ایسی حالت میں ہمیں جاننا چاہئے

कि हमारा फ़र्ज़ क्या है. सबसे पहली बात यह है कि हमें बहुत सोच समझ कर, फूंक फूंक कर क़दम रखना चाहिये. ऐसा न हो कि मुल्क को आगे बढ़ाने के बजाये हम अपनी इस प्यारी आज़ादी को, जिसे हम ने इतनी क़ुर्बानियां दे के हासिल किया है, अपनी किसी ग़लती से खो बैठें और मुल्क को फिर एक बार सदियों के लिये या शायद हमेशा के लिये बरबादी के गड्ढे में ढकेल दें.

कोई देश तबतक सभ्य नहीं कहला सकता न उन्नति कर सकता है और न आजकल की दुनिया में ज़िन्दा रह सकता है जब तक उसमें सब को अपना अपना धर्म पालने और अपने अपने विचार रखने की पूरी आज़ादी नहो, और उस में सब मज़हबों और सम्प्रदायों के लोग मिल कर मोहब्बत, रवादारी और बराबरी के साथ न रह सकें. सच्चा धर्म भी हमें यही सिखाता है. सच पूछिये तो धर्म नाम ही प्रेम, इन्साफ़ और रवादारी का है. इस के ख़िलाफ़ जो लोग कहीं पर भी राज की बाग किसी एक धर्म वालों के हाथ में देना चाहते हैं और इस माने में मज़हबी हुकूमत क़ायम करना चाहते हैं वह उलटी गंगा बहाने की कोशिश करते हैं. अनजाने अपने मुल्क को पीछे की तरफ़ घसीटते हैं और बरबादी की तरफ़ ले जाते हैं.

ख़ुश क़िस्मती से हमारे इस मुल्क में हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, पारसी, यहूदी, जैन, बौद्ध, सिक्ख वग़ैरा सब धर्मों, विचारों और सम्प्रदायों के लोग मौजूद हैं. इन सब में सच्चा मेल मोहब्बत हो, सब इस मुल्क को एक बराबर अपना मुल्क समझें, और देश की सरकार बिना किसी तरह के भेद भाव के सब के साथ एक सा इन्साफ़ का बरताव [illegible]

کہ ہمارا فرض کیا ہے ۔ سب سے پہلی بات یہ ہے کہ ہمیں بہت سوچ سمجھ کر، پھونک پھونک کر قدم رکھنا چاہئے. ایسا نہ ہو کہ ملک کو آگے بڑھانے کے بجائے ہم اپنی اس پیاری آزادی کو جسے ہم نے اتنی قربانیاں دے کے حاصل کیا ہے' اپنی کسی غلطی سے کھو بیٹھیں ۔ اور ملک کو پھر ایک بار صدیوں کے لئے یا شاید ہمیشہ کے لئے بربادی کے گڈھے میں ڈھکیل دیں ۔

کوئی دیش تب تک سبھیہ نہیں کہلا سکتا نہ اُنتی کرسکتا ہے اور نہ آج کل کی دنیا میں زندہ رہ سکتا ہے جب تک اس میں سب کو اپنا اپنا دھرم پالنے اور اپنے اپنے وچار کو رکھنے کی پوری آزادی نہ ہو' اور اُس میں سب مذہبوں اور سمپر دایوں کے لوگ مل کر محبت' رواداری اور برابری کے ساتھ نہ رہ سکیں. سچا دھرم بھی ہمیں یہی سکھاتا ہے ۔ سچ پوچھئے تو دھرم نام ہی پریم' انصاف اور رواداری کا ہے ۔ اس کے خلاف جو لوگ کہیں پر بھی راج کی باگ کسی ایک دھرم والوں کے ہاتھ میں دینا چاہتے ہیں اور اس معنی میں مذہبی حکومت قائم کرنا چاہتے ہیں وہ الٹی گنگا بہانے کی کوشش کرتے ہیں ۔ انجانے اپنے ملک کو پیچھے کی طرف گھسیٹتے ہیں اور بربادی کی طرف لے جاتے ہیں ۔

خوش قسمتی سے ہمارے اس ملک میں ہندو' مسلمان' عیسائی' پارسی' یہودی' جین' بودھ' سکھ وغیرہ سب دھرموں' وچاروں اور سمپر دایوں کے لوگ موجود ہیں ۔ اِن سب میں سچا میل محبت ہو' سب اس ملک کو ایک برابر اپنا ملک سمجھیں اور دیش کی سرکار بنا کسی طرح کے بھید بھاؤ کے سب

ग़ैरजानिबदार निष्पक्ष हुकूमत के माने हैं. यही सच्चा रामराज्य है. इसी में हमारा भला है. इसी ऊंचे आदर्श के लिये महात्मा गांधी ने जीवन भर काम किया और इसी के लिये उन्हों ने प्राण दिये. केवल इसी तरह हम अपने पड़ोसी राज पाकिस्तान के भाइयों और वहाँ की सरकार पर भी अपना असर डाल सकते हैं. और धीरे धीरे सारे हिन्दुस्तान को, जिस में भारत और पाकिस्तान दोनो शामिल हैं, सच्चे मानों में आज़ाद, खुशहाल और महान बना सकते हैं.

हमारी आज़ादी अभी चार दिन की आज़ादी है. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सैकड़ों पेचीदा सवाल अभी हमें हल करने हैं. हमारे क़दम धीरे धीरे उन के हल करने की तरफ़ बढ़ भी रहे थे पर हाल में बैठे बिठाये बंगाल के अन्दर कुछ झगड़े हो गये. मैं इस वक़्त इस चीज़ में नहीं जाना चाहता कि यह झगड़े कैसे शुरू हुए और क्यों, कर बढ़े या बढ़ाये गये. इन बदक़िस्मत झगड़ों से हमारे यहां की फूट की शक्तियों को फिर से चमकने और मैदान में आने का मौक़ा मिल गया. दोनों तरफ़ के अख़बारों में एक तरफ़ा और खूब बढ़ा चढ़ा कर ख़बरें छपीं और बहुत सी झूटी और बे बुनियाद अफ़वाहें भी मुल्क में फैलीं और फैलाई गईं. जनता का उन से जोश में आजाना एक क़ुदरती बात थी. नतीजा फिर वही हुआ. दोनों तरफ़ हज़ारों जानें गईं और लाखों बरबाद हुए. मुल्क के सौभाग्य से और भारत सरकार और पंडित जवाहर लाल जी की कोशिशों से दिल्ली में दोनों सरकारों में बात चीत हुई और एक राज़ी नामे पर दोनों बड़े वज़ीरों के दस्तख़त हो गये. वह राज़ीनामा देश के सामने आ चुका है. मोटे तौर पर राज़ीनामा यह है कि पाकिस्तान और भारत

غیرجانب دار نرپکش حکومت کے معنی ہیں۔ یہی سچا رام راج ہے، اسی میں ہمارا بھلا ہے۔ اسی اونچے ادرش کے لئے مہاتما گاندھی نے جیون بھر کام کیا اور اسی کے لئے انہوں نے پران دیئے۔ کیول اسی طرح ہم اپنے پڑوسی راج پاکستان کے بھائیوں اور وہاں کی سرکار پر بھی اپنا اثر ڈال سکتے ہیں۔ اور دھیرے دھیرے سارے ہندستان کو، جس میں بھارت اور پاکستان دونوں شامل ہیں، سچے معنوں میں آزاد، خوشحال اور مہان بنا سکتے ہیں۔

ہماری آزادی ابھی چار دن کی آزادی ہے۔ راشٹریہ اور انٹر راشٹریہ سیکڑوں پیچیدہ سوال ابھی ہمیں حل کرنے ہیں۔ ہمارے قدم دھیرے دھیرے ان کے حل کرنے کی طرف بڑھ بھی رہے تھے۔ پر حال میں بیٹھے بٹھائے بنگال کے اندر کچھ جھگڑے ہوئے۔ میں اس وقت اس چیز میں نہیں جانا چاہتا کہ جھگڑے کیسے شروع ہوئے اور کیونکر بڑھے یا بڑھائے گئے۔ ان بدقسمت جھگڑوں سے ہمارے یہاں کی پھوٹ کی شکتیوں کو پھر سے چمکنے اور میدان میں آنے کا موقع مل گیا۔ دونوں طرف کے اخباروں میں یک طرفہ اور خوب بڑھا چڑھا کر خبریں چھپیں اور بہت سی جھوٹی اور بے بنیاد افواہیں بھی ملک میں پھیلیں اور پھیلائی گئیں۔ جنتا کا ان سے جوش میں آجانا ایک قدرتی بات تھی۔ نتیجہ پھر وہی ہوا۔ دونوں طرف ہزاروں جانیں گئیں اور لاکھوں برباد ہوئے۔ ملک کے سوبھاگیہ سے اور بھارت سرکار اور پنڈت جواہر لال جی کی کوشش سے دلی میں دونوں سرکاروں میں بات چیت ہوئی اور ایک راضی نامے پر دونوں بڑے وزیروں کے دستخط ہوگئے۔ وہ راضی نامہ دیش کے سامنے آچکا ہے۔ موٹے طور پر راضی نامہ یہ ہے کہ پاکستان اور بھارت

दोनों में हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों के जानमाल, धर्म और आबरू की बराबर की हिफ़ाज़त की जायगी और अपने अपने यहाँ के राज में सब मामलों में दोनों के बराबर के अधिकार होंगे. यह भी तय हुआ है कि हाल में दोनों तरफ़ जो झगड़े हुए हैं उन की जांच के लिये एक निष्पक्ष कमीशन बिठाया जायगा. जिन्होंने ज़ुल्म किये हैं उन्हें दण्ड दिया जायगा और आगे के लिये इसकी तदबीरें की जायंगी कि जहां तक होसके फिर इस तरह के शर्मनाक झगड़े न होने पावें.

दिल्ली की बात चीत के दौरान में पाकिस्तान के बड़े वज़ीर ने यह भी क़बूल किया है कि आज कल के ज़माने में कहीं भी किसी एक मज़हब वालों की मज़हबी हुकूमत ना मुनासिब है और न चल सकती है. उन्हों ने अपना यह इरादा ज़ाहिर किया है कि पाकिस्तान की हुकूमत भी एक लोकशाही जम्हूरी हुकूमत या डिमोक्रेटिक स्टेट होगी जिस में सब धर्म वालों के हर तरह के बराबर के अधिकार होंगे. दोनों बड़े वज़ीरों ने यह भी तय किया है कि भारत और पाकिस्तान के बीच जितने मामले तय होने को रह गये हैं उन सब को वह धीरे धीरे बिना लड़ाई का नाम लिये अपास में मिलजुल कर बात चीत ही से तय कर लेंगे.

सच यह है कि भारत और पाकिस्तान के बीच का यह राज़ीनामा आज़ादी के बाद के हमारे इतिहास की सब से बड़ी घटना है. इस के सफल या असफल होने का असर भी सारे एशिया बल्कि सारी दुनिया के अमन पर पड़े बग़ैर नहीं रह सकता. हम सब का और

دونوں میں ہندوؤں اور مسلمانوں دونوں کے جان مال، دھرم اور آبرو کی برابر کی حفاظت کی جائے گی اور اپنے اپنے یہاں کے راج میں سب معاملوں میں دونوں کے برابر کے ادھیکار ہونگے۔ یہ بھی طے ہوا ہے کہ حال میں دونوں طرف جو جھگڑے ہوئے ہیں اُن کی جانچ کے لئے ایک نشپکش کمیشن بٹھایا جائے گا۔ جنہوں نے ظلم کئے ہیں اُنہیں دنڈ دیا جائے گا اور آگے کے لئے اِس کی تدبیریں کی جائیں گی کہ جہاں تک ہو سکے پھر اِس طرح کے شرمناک جھگڑے نہ ہونے پاویں۔

دلی کی بات چیت کے دوران میں پاکستان کے بڑے وزیر نے یہ بھی قبول کیا ہے کہ آج کل کے زمانے میں کہیں بھی کسی ایک مذہب والوں کی مذہبی حکومت نہ مناسب ہے اور نہ چل سکتی ہے۔ اُنھوں نے اپنا یہ اِرادہ ظاہر کیا ہے کہ پاکستان کی حکومت بھی ایک لوکشاہی جمہوری حکومت یا ڈیموکریٹک اسٹیٹ ہوگی جس میں سب دھرم والوں کے ہر طرح کے برابر کے ادھیکار ہونگے۔ دونوں بڑے وزیروں نے یہ بھی طے کیا ہے کہ بھارت اور پاکستان کے بیچ جتنے معاملے طے ہونے کو رہ گئے ہیں اُن سب کو وہ دھیرے دھیرے بنا لڑائی کا نام لئے آپس میں مل جل کر بات چیت ہی سے طے کرلیں گے۔

سچ یہ ہے کہ بھارت اور پاکستان کے بیچ کا یہ راضی نامہ آزادی کے بعد کے ہمارے اتہاس کی سب سے بڑی گھٹنا ہے۔ اِس کے سپھل یا اسپھل ہونے کا اثر بھی سارے ایشیا بلکہ ساری دنیا کے امن پر پڑے بغیر نہیں رہ سکتا۔ ہم سب کا

हमारी सलामती इसी में है कि हमारा आपस का यह समझौता पूरी तरह सफल हो. हम सब को इस की पूरा कोशिश करनी चाहिये.

दूसरी तरफ़ हमें बड़े दुख और लज्जा के साथ स्वीकार करना पड़ता है कि देश में एक दल ऐसा पैदा होगया है जो कोई भी बहाना या अवसर मिलने पर धार्मिक फ़र्क़ की बिना पर अपने पड़ोसियों को, निरपराध मर्दों, औरतों और बच्चों को मार डालना, लूट लेना, उन के घर जला देना और कहीं कहीं स्त्रियों पर अत्याचार करना जायज़ समझता है. सब से अधिक लज्जा की बात यह है कि यह सब पाप धर्म और संस्कृति के नाम पर किये जाते हैं. हम सब का फ़र्ज़ है कि हम जितनी जल्दी हो सके इस तरह के दल और इस तरह के विचारों को अपने देश से और अपने दिलों से मिटा डालें. इसी में हमारा और हमारे देश का कल्यान है.

हमारे लिये यह गहरी आज़मायश का वक़्त है. परीक्षा का समय है. ऐसे नाज़ुक मौक़े पर ज़रा सी नासमझी या ग़लती सदियों के लिये पछतावा छोड़ जाती है. हर हिन्दुस्तानी को इस समय अपने पाक फ़र्ज़ को समझना चाहिये और हिम्मत के साथ उसे पूरा करना चाहिए. हम अभी कह चुके हैं कि अगर हम अपने धर्म को ठीक ठीक समझें और उस पर अमल करें तो हमारी सारी मुसीबतें हल हो जायें. पर हमारे पतन की आज यह हालत हो गई है कि हम में से कुछ आज धर्म के नाम पर पक्षपात और घृना फैलाने और बुरे से बुरे पाप करने कराने से भी नहीं चूकते.

अगर हम अपने देश को बरबादी से बचाना चाहते हैं तो हमारा फ़र्ज़ है कि देश भर में जल्दी से जल्द इस समझौते की शर्तों को

ہماري سلامتی اِسی میں ہے کہ ہمارا آپس کا یہ سمجھوتہ پوري طرح سپھل ہو . ہم سب کو اِس کی پوری کوشش کرنی چاہئے .

دوسري طرف ہمیں بڑے دکھ اور لجا کے ساتھ سویکار کرنا پڑتا ہے کہ دیش میں ایک دل ایسا پیدا ہو گیا ہے جو کوئی بھي بہانا یا اوسر ملنے پر دھارمک فرق کی بنا پر اپنے پڑوسیوں کو، نرپرادھ مردوں، عورتوں اور بچوں کو مار ڈالنا، لوٹ لینا، اُن کے گھر جلا دینا اور کہیں کہیں استریوں پر اتیا چار کرنا جائز سمجھتا ہے . سب سے ادھک لجا کی بات یہ ہے کہ یہ سب پاپ دھرم اور سنسکرتی کے نام پر کئے جاتے ہیں . ہم سب کا فرض ہے کہ ہم جتنی جلدي ہو سکے اِس طرح کے دل اور اِس طرح کے وچاروں کو اپنے دیش سے اور اپنے دلوں سے مٹا ڈالیں. اِسی میں ہمارا اور ہمارے دیش کا کلیان ہے .

ہمارے لئے یہ گہري آزمائش کا وقت ہے . پریکشا کا سمے ہے . ایسے نازک موقعے پر ذراسی نا سمجھی یا غلطي صدیوں کے لئے پچھتاوا چھوڑ جاتي ہے . ہر ہندستانی کو اِس سمے اپنے پاک فرض کو سمجھنا چاہئے اور ہمت کے ساتھ اُسے پورا کرنا چاہئے . ہم ابھي کہہ چکے ہیں کہ اگر ہم اپنے دھرم کو ٹھیک ٹھیک سمجھیں اور اُس پر عمل کریں تو ہماری ساري مصیبتیں حل ہو جائیں . پر ہمارے پتن کي آج یہ حالت ہوگئی ہے کہ ہم میں سے کچھ آج دھرم کے نام پر پکش پات اور گھرنا پھیلانے اور برے سے برے پاپ کرنے کرانے سے بھی نہیں چوکتے .

اگر ہم اپنے دیش کو بربادی سے بچانا چاہتے ہیں تو ہمارا فرض ہے کہ دیش بھر میں جلدي سے جلدي اس سمجھوتے کی شرطوں کو

(९) ज़माने के हाथों से चारा नहीं है
ज़माना हमारा तुम्हारा नहीं है. — इबरत

(१०) बोले वह देखकर मुझे यों शबे माहताब में
देखो कहीं पकड़ न ले चाँदनी रात चोर को. — इबरत

(११) एक मोहब्बत थी मिट गई यारब
तेरी दुनिया में अब धरा क्या है. — अख्तर शीरानी

(१२) चाहिये अच्छों को जितना चाहिये
वह अगर चाहें तो फिर क्या चाहिये. — ग़ालिब

(१३) झूमती जब कभी मतवाली घटा आई है
याद क्या क्या तेरी मस्ताना अदा आई है. — जलील

(१४) 'ग़ालिब' बुरा न मान जो कोई बुरा कहे
ऐसा भी कोई है कि सब अच्छा कहें जिसे. — ग़ालिब

(१५) काबा सुन्ते हैं कि घर है बड़े दाता का 'रियाज़'
ज़िन्दगी है तो फ़क़ीरों का भी फेरा होगा. — रियाज़

(१६) तुम मेरे पास होते हो गोया
जब कोई दूसरा नहीं होता. — मोमिन

(१७) एक टीस जिगर में उठती है एक दर्द सा दिल में होता है
हम रातों को बैठ के रोते हैं जब सारा आलम सोता है. — मीर

(१८) बिगाड़ कर बनायेजा उभार कर मिटाये जा
कि मैं तेरा चिराग़ हूं जलाये जा बुझाये जा. — जोश मलीहाबादी

(१९) मुद्दतें होगई हैं चुप रहते
कोई सुनता तो हम भी कुछ कहते. — महशर

(۹) زمانے کے ہاتھوں سے چارا نہیں ہے
زمانہ ہمارا تمہارا نہیں ہے — عبرت

(۱۰) بولے وہ دیکھکر مجھے یوں شب ماہتاب میں
دیکھو کہیں پکڑ نہ لے چاندنی رات چور کو — عبرت

(۱۱) اک محبت تھی مٹ گئی یارب
تیری دنیا میں اب دھرا کیا ہے — اختر شیرانی

(۱۲) چاہئے اچھوں کو جتنا چاہئے
وہ اگر چاہیں تو پھر کیا چاہئے — غالب

(۱۳) جھومتی جب کبھی متوالی گھٹا آتی ہے
یاد کیا کیا تری مستانہ ادا آتی ہے — جلیل

(۱۴) 'غالب' برا نہ مان جو کوئی برا کہے
ایسا بھی کوئی ہے کہ سب اچھا کہیں جسے — غالب

(۱۵) کعبہ سنتے ہیں کہ گھر ہے بڑے داتا کا 'ریاض'
زندگی ہے تو فقیروں کا بھی پھیرا ہوگا — ریاض

(۱۶) تم مرے پاس ہوتے ہو گویا
جب کوئی دوسرا نہیں ہوتا — مومن

(۱۷) اک ٹیس جگر میں اٹھتی ہے اک درد سا دل میں ہوتا ہے
ہم راتوں کو بیٹھ کے روتے ہیں جب سارا عالم سوتا ہے — میر

(۱۸) بگاڑ کر بنائے جا ابھار کر مٹائے جا
کہ میں ترا چراغ ہوں جلائے جا بجھائے جا — جوش ملیح آبادی

(۱۹) مدتیں ہوگئی ہیں چپ رہتے
کوئی سنتا تو ہم بھی کچھ کہتے — محشر

दोनों में हिन्दुओं और मुसलमानो दोनों के जानमाल, धर्म और आबरू की बराबर की हिफ़ाज़त की जायगी और अपने अपने यहाँ के राज में सब मामलों में दोनों के बराबर के अधिकार होंगे. यह भी तय हुआ है कि हाल में दोनों तरफ़ जो झगड़े हुए हैं उन की जांच के लिये एक निष्पक्ष कमीशन बिठाया जायगा. जिन्होनें ज़ुल्म किये हैं उन्हें दण्ड दिया जायगा और आगे के लिये इसकी तदबीरें की जायंगी कि जहां तक होसके फिर इस तरह के शर्मनाक झगड़े न होने पावें.

दिल्ली की बात चीत के दौरान में पाकिस्तान के बड़े वज़ीर ने यह भी क़बूल किया है कि आज कल के ज़माने में कहीं भी किसी एक मज़हब वालों की मज़हबी हुकूमत ना मुनासिब है और न चल सकती है. उन्हों ने अपना यह इरादा ज़ाहिर किया है कि पाकिस्तान की हुकूमत भी एक लोकशाही जम्हूरी हुकूमत या डिमोक्रेटिक स्टेट होगी जिस में सब धर्म वालों के हर तरह के बराबर के अधिकार होंगे. दोनों बड़े वज़ीरों ने यह भी तय किया है कि भारत और पाकिस्तान के बीच जितने मामले तय होने को रह गये हैं उन सब को वह धीरे धीरे बिना लड़ाई का नाम लिये अपास में मिलजुल कर [illegible] ही से तय कर लेंगे.

[illegible] यह है कि भारत और पाकिस्तान के बीच का यह राज़ीनामा आज़ादी के बाद के हमारे इतिहास की सब मे बड़ी घटना है. इस के सफल या असफल होने का असर भी सारे एशिया बल्कि सारी दुनिया के अमन पर पड़े बग़ैर नहीं रह सकता. हम सब का और हमारे देश का यानी भारत और पाकिस्तान दोनों का भला और

دونوں میں ہندوؤں اور مسلمانوں دونوں کے جان مال، دھرم اور آبرو کی برابر کی حفاظت کی جائے گی اور اپنے اپنے یہاں کے راج میں سب معاملوں میں دونوں کے برابر کے ادھیکار ہونگے۔ یہ بھی طے ہوا ہے کہ حال میں دونوں طرف جو جھگڑے ہوئے ہیں اُن کی جانچ کے لئے ایک نشپکش کمیشن بٹھایا جائے گا۔ جنہوں نے ظلم کئے ہیں اُنہیں ڈنڈ دیا جائے گا اور آگے کے لئے اِس کی تدبیریں کی جائیں گی کہ جہاں تک ہو سکے پھر اِس طرح کے شرم ناک جھگڑے نہ ہونے پاویں۔

دلی کی بات چیت کے دوران میں پاکستان کے بڑے وزیر نے یہ بھی قبول کیا ہے کہ آج کل کے زمانے میں کہیں بھی کسی ایک مذہب والوں کی مذہبی حکومت نہ مناسب ہے اور نہ چل سکتی ہے۔ اُنہوں نے اپنا یہ اِرادہ ظاہر کیا ہے کہ پاکستان کی حکومت بھی ایک لوک شاہی جمہوری حکومت یا ڈیموکریٹک اسٹیٹ ہوگی جس میں سب دھرم والوں کے ہر طرح کے برابر کے ادھیکار ہونگے۔ دونوں بڑے وزیروں نے یہ بھی طے کیا ہے کہ بھارت اور پاکستان کے بیچ جتنے معاملے طے ہونے کو رہ گئے ہیں اُن سب کو وہ دھیرے دھیرے بنا لڑائی کا نام لئے آپس میں مل جل کر بات چیت ہی سے طے کرلیں گے۔

سچ یہ ہے کہ بھارت اور پاکستان کے بیچ کا یہ راضی نامہ آزادی کے بعد کے ہمارے اتہاس کی سب سے بڑی گھٹنا ہے۔ اِس کے سپھل یا اسپھل ہونے کا اثر بھی سارے ایشیا بلکہ ساری دنیا کے امن پر پڑے بغیر نہیں رہ سکتا۔ ہم سب کا اور ہمارے دیش کا یعنی بھارت اور پاکستان دونوں کا بھلا اور

हमारी सलामती इसी में है कि हमारा आपस का यह समझौता पूरी तरह सफल हो. हम सब को इस की पूरा कोशिश करनी चाहिये.

दूसरी तरफ़ हमें बड़े दुख और लज्जा के साथ स्वीकार करना पड़ता है कि देश में एक दल ऐसा पैदा होगया है जो कोई भी बहाना या अवसर मिलने पर धार्मिक फ़र्क़ की बिना पर अपने पड़ोसियों को, निरपराध मर्दों, औरतों और बच्चों को मार डालना, लूट लेना, उन के घर जला देना और कहीं कहीं स्त्रियों पर अत्याचार करना जायज़ समझता है. सब से अधिक लज्जा की बात यह है कि यह सब पाप धर्म और संस्कृति के नाम पर किये जाते हैं. हम सब का फ़र्ज़ है कि हम जितनी जल्दी हो सके इस तरह के दल और इस तरह के विचारों को अपने देश से और अपने दिलों से मिटा डालें. इसी में हमारा और हमारे देश का कल्यान है.

हमारे लिये यह गहरी आज़मायश का वक़्त है. परीक्षा का समय है. ऐसे नाज़ुक मौक़े पर ज़रा सी नासमझी या ग़लती सदियों के लिये पछतावा छोड़ जाती है. हर हिन्दुस्तानी को इस समय अपने पाक फ़र्ज़ को समझना चाहिये और हिम्मत के साथ उसे पूरा करना चाहिए. हम अभी कह चुके हैं कि अगर हम अपने धर्म को ठीक ठीक समझें और उस पर अमल करें तो हमारी सारी मुसीबतें हल हो जायँ. पर हमारे पतन की आज यह हालत हो गई है कि हम में से कुछ आज धर्म के नाम पर पक्षपात और घृना फैलाने और बुरे से बुरे पाप करने कराने से भी नहीं चूकते.

अगर हम अपने देश को बरबादी से बचाना चाते हैं तो हमारा फ़र्ज़ है कि देश भर में जल्दी से जल्द इस समझौते की शर्तों को

هماري سلامتی اِسی میں هے که همارا آپس کا یه سمجھوته پوري طرح سپھل هو . هم سب کو اِس کی پوری کوشش کرنی چاهئے .

دوسري طرف همیں بڑے دکھ اور لجا کے ساتھ سویکار کرنا پڑتا هے که دیش میں ایک دل ایسا پیدا هو گیا هے جو کوئی بھي بهانا یا اوسر ملنے پر دهارمک فرق کی بنا پر اپنے پڑوسیوں کو' نرپرادھ مردوں' عورتوں اور بچوں کو مار ڈالنا' لوٹ لینا' اُن کے گھر جلا دینا اور کہیں کہیں استریوں پر اتیا چار کرنا جائز سمجھتا هے . سب سے ادھک لجا کی بات یه هے که یه سب پاپ دهرم اور سنسکرتی کے نام پر کئے جاتے هیں . هم سب کا فرض هے که هم جتنی جلدي هو سکے اِس طرح کے دل اور اِس طرح کے وچاروں کو اپنے دیش سے اور اپنے دلوں سے مٹا ڈالیں. اِسی میں همارا اور همارے دیش کا کلیان هے .

همارے لئے یه گهري آزمائش کا وقت هے . پریکشا کاسمے هے . ایسے نازک موقعے پر ذراسی نا سمجھی یا غلطي صدیوں کے لئے پچھتاوا چھوڑ جاتي هے . هر هندستانی کو اِس سمے اپنے پاک فرض کو سمجھنا چاهئے اور همت کے ساتھ اُسے پورا کرنا چاهئے . هم ابھي کہه چکے هیں که اگر هم اپنے دهرم کو ٹھیک ٹھیک سمجھیں اور اُس پر عمل کریں تو هماری ساري مصیبتیں حل هو جائیں . پر همارے پتن کي آج یه حالت هوگئی هے که هم میں سے کچھ آج دهرم کے نام پر پکش پات اور گھرنا پھیلانے اور برے سے برے پاپ کرنے کرانے سے بھی نهیں چوکتے .

اگر هم اپنے دیش کو بربادی سے بچانا چاهتے هیں تو همارا فرض هے که دیش بھر میں جلدي سے جلدي اس سمجھوته کی شرطوں کو

पूरी करके दिखा दें. भारत भर में हर गाँव और हर गली में हिन्दुओं का फ़र्ज़ है कि वह अपने मुसलमान भाइयों को यह यक़ीन दिला दें कि इस देश में उन की जान माल, उन का धर्म और उनकी आबरू उतनी ही सुरक्षित है जितनी किसी और की. हिन्दुओं का धर्म है कि वह अपने मुसलमान भाइयों के जान माल की हिफ़ाज़त में ज़रूरत पड़े जो अपनी जान की बाज़ी तक लगादें. गांव गांव में इस तरह के सम्पर्क और संगठन हो जायें कि एक बार फिर यह देश प्रेम और मोहब्बत से लहलहा उठे. कहीं कहीं कोई कोई हिन्दू अपने मुसलमान पड़ोसियों से यह कहने लगे हैं कि अब पाकिस्तान बन गया, तुम पाकिस्तान चले जाओ. यह मुल्क हिन्दुओं का है. यह बात उन्हें शोभा नहीं देती. यह नापाक आदत उन्हें हमेशा के लिये छोड़ देनी चाहिए. हाल के दंगों में जो मुसलमान भाई अपने घर छोड़ कर चले गये हैं वह अगर वापस आयें तो हमें खुशी खुशी उन के घरों में उन्हें फिर से बसा लेना चाहिए और उनसे ऐसा वर्ताव करना चाहिए कि फिर वह जाने की न सोचें. पच्छिमी बंगाल में, यू. पी. के किसी ज़िले में या देश के किसी कोने में भी अगर कोई भाई ऐसे हैं जिनके घरों में किसी मुसलमान भाई की लूट का माल है तो उन्हें उसे जल्दी से जल्दी असली मालिक को या उसके नज़दीकी रिश्तेदारों को लौटा देना चाहिए या सरकार के हवाले कर देना चाहिए. अगर बदक़िस्मती से किसी घर में कोई मुसलमान बहन है तो उसे उसके वारिसों के या सरकार के हवाले कर देना चाहिए. अगर किसी मुसलमान भाई ने दंगे के दिनों में घबराकर अपने धर्म बदलने का एलान कर दिया है तो उसे हिम्मत दिलाकर

پوری کرکے دکھا دیں . بھارت بھر میں ہر گاؤں اور ہر گلی میں ہندوؤں کا فرض ہے کہ وہ اپنے مسلمان بھائیوں کو یہ یقین دلا دیں کہ اس دیش میں ان کی جان مال' ان کا دھرم اور ان کی آبرو اُتنی ہی سرکھشت ہے جتنی کسی اور کی . ہندوؤں کا دھرم ہے کہ وہ اپنے مسلمان بھائیوں کے جان مال کی حفاظت میں ضرورت پڑے تو اپنی جان کی بازی تک لگادیں . گاؤں گاؤں میں اس طرح کے سمپرک اور سنگٹھن ہوجائیں کہ ایک بار پھر یہ دیش پریم اور محبت سے لہلہا اُٹھے . کہیں کہیں کوئی کوئی ہندو اپنے مسلمان پڑوسیوں سے یہ کہنے لگے ہیں کہ اب پاکستان بن گیا' تم پاکستان چلے جاؤ . یہ ملک ہندوؤں' کا ہے . ایسی بات اُنہیں شوبھا نہیں دیتی . یہ ناپاک عادت اُنہیں ہمیشہ کے لئے چھوڑ دینی چاہئے . حال کے دنگوں میں جو مسلمان بھائی اپنے گھر چھوڑ کر چلے گئے ہیں وہ اگر واپس آئیں تو ہمیں خوشی خوشی ان کے گھروں میں انہیں پھر سے بسا لینا چاہئے اور ان سے ایسا برتاؤ کرنا چاہئے کہ پھر وہ جانے کی نہ سوچیں . پچھمی بنگال میں' یوپی کے کسی ضلع میں یا دیش کے کسی کونے میں بھی اگر کوئی بھائی ایسے ہیں جن کے گھروں میں کسی مسلمان بھائی کی لوٹ کا مال ہے تو انہیں اسے جلدی سے جلدی اصلی مالک کو یا اس کے نزدیکی رشتے داروں کو لوٹا دینا چاہئے یا سرکار کے حوالے کردینا چاہئے . اگر بدقسمتی سے کسی گھر میں کوئی مسلمان بہن ہے تو اُسے اس کے وارثوں کے یا سرکار کے حوالے کردینا چاہئے . اگر کسی مسلمان بھائی نے دنگے کے دنوں میں گھبراکر اپنے دھرم بدلنے کا اعلان کردیا ہے تو اُسے ہمت دلاکر

और समझा बुझाकर फिर से उसके अपने मजहब पर ले आना चाहिये और इस तरह के धर्म बदलवाने को गुनाह समझना चाहिये. किसी धर्म की इज्जत इन बुरे तरीक़ों से नहीं ब॰ सकती.

पाकिस्तान और भारत में फिर से मेल पैदा करने के लिये हमें चढ़ाई करने या लड़ाई लड़ने की बातें मुंह से निकालना बन्द कर देना चाहिये. कच्ची और नफ़रत बढ़ाने वाली ख़बरें भी हमें इधर उधर नहीं फैलानी चाहियें और न जल्दी से हर ख़बर पर विश्वास कर लेना चाहिये. सरकार पिछले दंगों की जो भी तहक़ीक़ात करे या मुल्क से फ़िरक़ापरस्ती को दूर करने के लिये जो भी क़दम उठाये हम सब को उसमें पूरी पूरी मदद करनी चाहिये.

(५१७)

भारत के मुसलमान भाइयों का भी फ़र्ज़ है कि वह वक्त की निज़ाकत को देखते हुए हिम्मत, सब्र और इस्तक़लाल से काम लें. कितनी भी कठिन आज़मायश हो अपना घर छोड़कर जाने का नाम न लें. मोहब्बत और बर्दाश्त से दूसरों के दिलों को जीतें और अपनी किसी भी तरह की शिकायतों या मुसीबतों को दूर कराने के लिये भारत सरकार को छोड़कर किसी भी बाहर की सरकार का मुंह न देखें. ठीक इसी तरह की सलाह हम पाकिस्तान के हिन्दुओं को देंगे. और जिस तरह का फ़र्ज़ भारत के हिन्दुओं का है ठीक वैसा तरह का पाकिस्तान के मुसलमानों का है.

यही महात्मा गांधी का बताया हुआ वह रास्ता है जिसपर चलकर हम सब पनप सकते हैं. हमें पूरा भरोसा है कि मुल्क इस रास्ते पर चलेगा और बहुत जल्दी आजकल की मुसीबतों से निकलकर

اور سمجھا بجھا کر پھر سے اس کے اپنے مذہب پر لے آنا چاہئے اور اس طرح کے دھرم بدلوانے کو گناہ سمجھنا چاہئے . کسی دھرم کی عزت ان برے طریقوں سے نہیں بڑھ سکتی .

پاکستان اور بھارت میں پھر سے میل پیدا کرنے کے لئے ہمیں چڑھائی کرنے یا لڑائی لڑنے کی باتیں منھ سے نکالنا بند کر دینا چاہئے . کچی اور نفرت بڑھانے والی خبریں بھی ہمیں ادھر ادھر نہیں پھیلانی چاہئیں اور نہ جلدی سے ہر خبر پر وشواس کرلینا چاہئے . سرکار پچھلے دنگوں کی جو بھی تحقیقات کرے یا ملک سے فرقہ پرستی کو دور کرنے کے لئے جو بھی قدم اٹھائے ہم سب کو اس میں پوری پوری مدد کرنی چاہئے .

بھارت کے مسلمان بھائیوں کا بھی فرض ہے کہ وہ وقت کی نزاکت کو دیکھتے ہوئے ہمت، صبر اور استقلال سے کام لیں . کتنی بھی کٹھن آزمائش ہو اپنا گھر چھوڑ کر جانے کا نام نہ لیں . محبت اور برداشت سے دوسروں کے دلوں کو جیتیں اور اپنی کسی بھی طرح کی شکایتوں یا مصیبتوں کو دور کرانے کے لئے بھارت سرکار کو چھوڑ کر کسی بھی باہر کی سرکار کا منھ نہ دیکھیں . ٹھیک اسی طرح کی صلاح ہم پاکستان کے ہندوؤں کو دیں گے اور جسطرح کا فرض بھارت کے ہندوؤں کا ہے ٹھیک اسی طرح کا پاکستان کے مسلمانوں کا ہے .

یہی مہاتما گاندھی کا بتایا ہوا وہ راستہ ہے جس پر چل کر ہم سب پنپ سکتے ہیں . ہمیں پورا بھروسہ ہے کہ ملک اس راستے پر چلے گا اور بہت جلدی آج کل کی مصیبتوں سے نکل کر

दुनिया के बड़े से बड़े उन्नति शील देशों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर तरक़्क़ी की राह में आगे बढ़ता दिखाई देगा. इस के लिये हममें से हर एक को अपना फ़र्ज़ पूरा करना चाहिये. जय हिन्द !

सुन्दर लाल

دنیا کے بڑے سے بڑے اُنتی شیل دیشوں کے ساتھ کندھے سے کندھا ملاکر ترقی کی راہ میں آگے بڑھتا دکھائی دیگا . اس کے لئے ہم میں سے ہر ایک کو اپنا فرض پورا کرنا چاہئے . جے ہند !

سندر لال

सर्वोदय और ईमान

(श्री सुरेश राम भाई)

इस बार जाड़ा खत्म होते होते बहुत ही जबरदस्त ठंडी पड़ी. गंगा के उस पार, कानपुर से खबर आई कि सर्दी से ठिठुर कर दो आदमी गुज़र गये. गुज़र गये — कोई बात नहीं. कानपुर शहर में बीसियों ऐसे मिल जायेंगे जिन का न कोई पुरसाने-हाल है न कोई सहारा. किसी तरह ज़िन्दगी बसर करते हैं, अचानक गुज़र गये और किसी ने रहम खाया तो ठिकाने से मिट्टी लग गई — न लगी न सही.

कानपुर में ही नहीं. दूसरी जगह भी. इस हिन्दुस्तान नाम की धरती पर जगह जगह और शायद दुनिया में दूसरी जगहों पर भी ऐसा होता होगा.

लेकिन इस वक़्त हमारा मतलब तो अपनी धरती, अपनी सरकार, अपने लोग और अपने मुल्क से है. यहाँ ऐसा होता है कि सर्दी से दो आदमी ठिठुर कर गुज़र गये — यहाँ कानपुर में — जहाँ पैसे की इतनी इफ़रात है कि सारे साधन मुहय्या किये जा सकते हैं और जहाँ के पैसे वाले यह दावा करते हैं कि हम जिस को चाहते हैं खरीद लेते हैं — हाँ, कानपुर में ऐसा हुआ कि दो आदमी जाड़े से ठिठुर कर गुज़र गये.

गुज़र गये — लेकिन किसी ने उफ़ तक न की. दो हट्टे कट्टे नौजवान — जिन के पास सर्दी से बचने को मकान था न कपड़ा — गुज़र गये. पढ़ने वालों ने अख़बार में पढ़ा कि दो आदमी गुज़र गये.

سرووںے اور ایمان

(شری سریش رام بھائی)

اس بار جاڑا ختم ہوتے ہوتے بہت ہی زبردست ٹھنڈی پڑی گنگا کے اس پار کانپور سے خبر آئی کہ سردی سے ٹھٹھر کر دو آدمی گذرگئے . گذرگئے — کوئی بات نہیں. کانپور شہر میں بیسوں ایسے مل جائینگے جلکا نہ کوئی پرسان حال ہے نہ کوئی سہارا' کسی طرح زندگی بسر کرتے ہیں' اچانک گذرگئے اور کسی نے رحم کھایا تو ٹھکانے سے مٹی لگ گئی — نہ لگی نہ سہی .

کانپور میں ہی نہیں' دوسری جگہ بھی' اس ہندستان نام کی دھرتی پر جگہ جگہ اور شاید دنیا میں دوسری جگہوں پر بھی' ایسا ہوتا ہوگا .

لیکن اس وقت ہمارا مطلب تو اپنی دھرتی' اپنی سرکار' اپنے لوگ اور اپنے ملک سے ہے . یہاں ایسا ہوتا ہے کہ سردی سے دو آدمی ٹھٹھر کر گذرگئے — یہاں کانپور میں — جہاں پیسے کی اتنی افراط ہے کہ سارے سا دھن مہیا کئے جاسکتے ہیں اور جہاں کے پیسے والے یہ دعوا کرتے ہیں کہ ہم جسکو چاہتے ہیں خرید لیتے ہیں — ہاں' کانپور میں ایسا ہوا کہ دو آدمی جاڑے سے ٹھٹھر کر گذرگئے .

گذرگئے — لیکن کسی نے اُف تک نہ کی . دو ہٹے کٹے نوجوان — جلکے پاس سردی سے بچنے کو مکان تھا نہ کپڑا — گذرگئے — پڑھنے والوں نے اخبار میں پڑھا کہ دو آدمی گذر گئے'

इतना पढ़ कर चाय का एक गरम प्याला चढ़ा लिया या अपने कपड़ों को कस लिया या ऊपर से एक-दो और कपड़े पहन लिये और जो मिला उस से — जहाँ और सच्ची-झूटी बाते कीं — यह भी कह दिया कि कानपुर में ठंड से दो आदमी मर गये. और फिर ज़िन्दगी की हलचलों में खोगये.

यह अखबार पढ़ने वाले कौन हैं?—पांच रंग के आदमी—

(१ सरकारी और ग़ैर सरकारी दफ़्तरों में काम करने वाले बाबू व मुन्शी,

(२) मामूली दूकानदार. मज़दूर , महाजन या व्योपारी.

(३) ऊँचे व्योपारी या पूंजी पति.

(४) ऊचे अफसर. जिन्हें गौर्मिन्ट कहा जाता है. और

(५) देश सेवक या नई बोली में. लोक सेवक.

मोटे तौर से इन को पाँच की जगह तीन हिस्सों मे बांट सकते हैं — एक हुकूमत वाले. दूसरे व्योपार वाले. तीसरे देश सेवक या लोक सेवक.

अब ज़रा फिर से देखिये — इन तीनों ने अख़बार मे पढ़ा या किसी से सुना कि कानपुर में दो आदमी ठंडी खाकर खतम होगये. हुकूमत वाला अपने दफ़्तर पहुंचा. उसे कहाँ किसी बात की फ़ुरसत ; व्योपार वाला अपने काम से जालगा. उसे तो दम मारने की फ़ुरसत नहीं ; देश सेवक—वह बेचारा तो हमेशा ही फॅसा रहता है, परेशान रहता है, उसे मरने तक की फ़ुरसत नहीं

किसी एक को फ़ुरसत नहीं — कौन खबर ले इस बात की कि

اتنا پڑھکر چاء کا ایک گرم پیالہ چڑھا لیا یا اپنے کپڑوں کو کس لیا یا اوپر سے ایک دو اور کپڑے پہن لئے اور جو ملا اس سے — جہاں اور سچی جھوٹی باتیں کیں — یہ بھی کہہ دیا کہ کانپور میں ٹھنڈ سے دو آدمی مرگئے . اور پھر زندگی کی ہلچلوں میں کھو گئے .

یہ اخبار پڑھنے والے کون ہیں ؟ — پانچ رنگ کے آدمی —

(۱) سرکاری اور غیر سرکاری دفتروں میں کام کرنے والے بابو و منشی'

(۲) معمولی دوکاندار' مزدور' مہاجن یا بیوپاری

(۳) اونچے بیوپاری یا پونجی پتی'

(۴) اونچے افسر' جنھیں گورمنٹ کہا جاتا ہے' اور

(۵) دیش سیوک یا نئی بولی میں' لوک سیوک

موٹے طور سے ان کو پانچ کی جگہ تین حصوں میں بانٹ سکتے ہیں — ایک حکومت والے' دوسرے بیوپار والے' تیسرے دیش سیوک یا لوک سیوک .

اب ذرا پھر سے دیکھئے — ان تینوں نے خبار میں پڑھا یا کسی سے سنا کہ کانپور میں دو آدمی ٹھنڈی کھا کر ختم ہوگئے . حکومت والا اپنے دفتر پہونچا' اسے کہاں کسی بات کی فرصت ; بیوپار والا اپنے کام سے جالگا' اسے تو دم مارنے کی فرصت نہیں ; دیش سیوک — وہ بیچارہ تو ہمیشہ ہی پھنسا رہتا ہے' پریشان رہتا ہے' اسے مرنے تک کی فرصت نہیں .

کسی ایک کو فرصت نہیں — کون خبر لے اس بات کی کہ

बस एक ऐसा था जो खबर लेता था, जिसे फ़ुरसत भी मिल जाती थी — मगर वह १९४८ की ३० जनवरी को चला गया — चला गया.

इस लिये आज न किसी को खबर रहती है किसी बात की, न फ़ुरसत है किसी काम के लिये.

× × × ×

आखिर, जब सब इतनी बुरी तरह जुटे पड़े हैं तो करते क्या हैं ? किसी बात की फ़ुरसत नहीं. दम मारने की फ़ुरसत नहीं, मरने तक की फ़ुरसत नहीं.

कुछ तो करते होगें. क्या करते हैं ?

हुकूमत लगी है मुल्क का दर्जा ऊंचा उठाने में, दुनिया के मुल्कों में अपने मुल्क की नाक ऊंची करने में.

व्योपारी — बड़े, छोटे, मंझले, सब —लगे हैं मुल्क की पैदावार बढ़ाने में — पक्के माल की, कच्चे माल की, मशीन की. ज़िन्दगी की ज़रूरत की हर चीज़ की — ताकि हुकूमत को मदद दे सके मुल्क का दर्जा ऊंचा उठाने में.

देश सेवक लगे हैं सर्वोदय में — यह सेवक किसी भी दल के क्यों न हों, कम्युनिस्ट, सोशलिस्ट, क्रान्तिकारी, असेम्बली वादी. कांग्रेसी, संघी, सभाई, रचनात्मक. गांधी वादी — सब राष्ट्रपिता के बताये सर्वोदय में लगे हैं —सर्वोदय में

सर्वोदय की बहार आई है.

कानपुर में दो आदमी ठंडी से गुज़र गये.

× × × ×

بس ایک ایسا تھا جو خبر لیتا تھا' جسے فرصت بھی مل جاتی تھی — مگر وہ ۱۹۴۸ کی ۳۰ جنوری کو چلا گیا — چلا گیا .

اس لئے آج نہ کسی کو خبر رہتی ہے کسی بات کی' نہ فرصت ہے کسی کام کے لئے .

× × × ×

آخر' جب سب اتنی بری طرح جٹے پڑے ہیں تو کرتے کیا ہیں ؟ کسی بات کی فرصت نہیں' دم مارنے کی فرصت نہیں' مرنے تک کی فرصت نہیں .

کچھ تو کرتے ہوں گے' کیا کرتے ہیں ؟

حکومت لگی ہے ملک کا درجہ اونچا اٹھانے میں ' دنیا کے ملکوں میں اپنے ملک کی ناک اونچی کرنے میں .

بیوپاری — بڑے' چھوٹے' منجھلے' سب — لگے ہیں ملک کی پیداوار بڑھانے میں — پکے مال کی 'کچے مال کی' مشین کی' زندگی کی ضرورت کی ہر چیز کی — تاکہ حکومت کو مدد دے سکے ملک کا درجہ اونچا اٹھانے میں .

دیش سیوک لگے ہیں سروودے میں — یہ سیوک کسی بھی دل کے کیوں نہ ہوں' کمیونسٹ' سوشلسٹ' کرانتکاری' اسمبلی وادی' کانگریسی' سنگھی' سبھائی' رچناتمک' گاندھی وادی — سب راشٹرپتا کے بتائے سروودے میں لگے ہیں — سروودے میں.

سروودے کی بہار آئی ہے .

کانپور میں دو آدمی ٹھنڈ سے گذر گئے —

× × × ×

सर्वोदय — जिन्दाबाद !

कानपुर में दो आदमी ठंडी से गुज़र गये ! !

या यूं :—

सर्वोदय वाला गुज़र गया ! सर्वोदय वाले जिन्दाबाद ! !

दो आदमी गुज़र गये ! दो आदमी जिन्दाबाद ! !

× × × ×

सर्वोदय की बहार आई है !

कानपुर में दो आदमी ठंडी से गुज़र गये ! !

इस तरह हम कब तक उन दो की हालत से बचे रहेंगे — उन्हें ठंडी ने खत्म किया, किसी को गोली ने खत्म किया—किसी को ठंडी ने. हम वह हैं जो अपने को खुद ही क़त्ल कर रहे हैं. किसी बात की फ़ुरसत नहीं, दम मारने की फ़ुरसत नहीं, मरने तक की फ़ुरसत नहीं. तो फिर कर क्या रहे हैं — सर्वोदय ! नतीजा क्या होता है— कानपुर में दो आदमी ठंडी से गुज़र गये ! !

(४४०)

लेकिन फिर वही बेचैनी — फिर वही हरकत — सर्वोदय.

नतीजा होगा — सर्वनाश !

एक तरफ़ से एटमबम, हाइड्रोजन बम, क्या क्या बम और दूसरी तरफ़ से सर्वोदय — दोनों कहां पहुंचे — सर्वनाश !

और फिर, सब — सब ही पूरब व पच्छिम — कर क्या रहे हैं — सर्वोदय. होता क्या है सर्वनाश.

सर्वोदय' और सर्वनाश एक ही सिक्के के दो रुख़ तो नहीं ? — हाँ, हैं ; यही सन्तोष की बात है.

मगर शायद हो शायद न हो.

سرووديے زندہ باد !

کانپور میں دو آدمی ٹھنڈی سے گذر گئے ! !

یا یوں :—

سرووديے والا گذر گیا ! سرووديے والے زندہ باد ! !

دو آدمی گذر گئے ! دو آدمی زندہ باد ! !

× × × ×

سرووديے کی بہار آئی ہے !

کانپور میں دو آدمی ٹھنڈی سے گذر گئے ! !

اس طرح ہم کب تک ان دو کی حالت سے بچے رہیں گے — انہیں ٹھنڈی نے ختم کیا کسی کو گولی نے ختم کیا — کسی کو ٹھنڈی نے . ہم وہ ہیں جو اپنے کو خود ہی قتل کر رہے ہیں . کسی بات کی فرصت نہیں دم مارنے کی فرصت نہیں' مرنے تک کی فرصت نہیں . تو پھر کر کیا رہے ہیں — سرووديے ! نتیجہ کیا ہوتا ہے — کانپور میں دو آدمی ٹھنڈی سے گذر گئے ! !

لیکن پھر وہی بے چینی — پھر وہی حرکت — سرووديے

نتیجہ ہوگا — سرونا‌ش !

ایک طرف سے ایٹم بم' ہائیڈروجن بم' کیا کیا بم اور دوسری طرف سرووديے — دونوں کہاں پہونچے — سروناش !

اور پھر' سب—سب ہی پورب و پچھم — کر کیا رہے ہیں— سرووديے . ہوتا کیا ہے — سرو ناش —

سرووديے اور سروناش' ایک ہی سکے کے دو رخ تو نہیں ؟ — ہاں' ہیں ؛ یہی سنتوش کی بات ہے .

مگر' شائد ہوں ؛ شائد نہ ہوں

लेकिन इस वक़्त—सर्वोदय की कोशिश से सर्वनाश ज़रूर हो रहा है. यही ख़तरे की घंटी है.

बस, हम सर्वोदय करना बंद कर दें. यह तमन्ना छोड़ दें कि दूसरों को सच्चा व नेक बनायें, दूसरों का दर्जा बढ़ायें.

बल्कि, हम ख़ुद रखने लग जायें, अपना — ईमान !

अपना ईमान रखें. अपना ' उदय ' होगा — सर्वोदय आप से आप होगा.

× × × ×

सर्वोदय नहीं चाहिये — अपना ईमान चाहिये.

(१९४)

हुकूमत क्या करे — दुनया के मुल्कों में अपने मुल्क की नाक ऊँची करने के चक्कर में न पड़े ; ईमान से रहे — ईमान का खाये — नमक हलाल बने. हुकूमत वाले दूसरों को न देखें — अपने ईमान को देखें. अगर इस के लिये ऊंची तनख़ाहों व कोठियों-बंगलों की सच्ची — ईमान से — ज़रूरत महसूस करें तो रखें. वरना छोड़ दें —ईमान से रहें. ईमान का खायें.

व्योपारी क्या करे ?— मुल्क की पैदावार बढ़ाने के चक्कर में न पड़े ; ईमान से रहे, ईमान का खाये — नमक हलाल बने. क्या किसान, क्या मज़दूर, क्या महाजन, क्या व्योपारी, क्या पूंजीपति— दूसरों को न देखें, अपने ईमान को देखें. जिस चीज़ की सच्ची— ईमान से — ज़रूरत हो उसे रखें, वरना छोड़ दें — ईमान से रहें. ईमान का खायें.

देश सेवक क्या करे ? —सर्वोदय के फेर में न पड़े, सेवा के फन्दे में न फंसे ; ईमान से रहे, ईमान का खाये.

لیکن اس وقت — سروودے کی کوشش سے سرووناش ضرور ھو رھا ھے . یہی خطرے کی گھنٹی ھے .

بس' ھم سروودے کرنا بند کردیں . یہ تمنا چھوڑ دیں کہ دوسروں کو سچا و نیک بنائیں' دوسروں کا درجہ بڑھائیں .

بلکہ' ھم خود رکھنے لگ جائیں اپنا — ایمان !

اپنا ایمان رکھیں' اپنا ' اودے ' ھوگا — سروودے آپ سے آپ ھوگا .

× × × ×

سروودے نہیں چاھئے — اپنا ایمان چاھئے .

(۱۹۴)

حکومت کیا کرے — دنیا کے ملکوں میں اپنے ملک کی ناک اونچی کرنے کے چکر میں نہ پڑے ؛ ایمان سے رھے — ایمان کا کھائے — نمک حلال بنے . حکومت والے دوسروں کو نہ دیکھیں — اپنے ایمان کو دیکھیں . اگر اس کے لئے اونچی تنخواھوں و کوٹھیوں بنگلوں کی سچی — ایمان سے — ضرورت محسوس کریں تو رکھیں' ورنہ چھوڑ دیں — ایمان سے رھیں' ایمان کا کھائیں .

بیوپاری کیا کرے ؟ — ملک کی پیداوار بڑھانے کے چکر میں نہ پڑے ؛ ایمان سے رھے' ایمان کا کھائے — نمک حلال بنے . کیا کسان' کیا مزدور' کیا مہاجن' کیا بیوپاری' کیا پونجی پتی — دوسروں کو نہ دیکھیں' اپنے ایمان کو دیکھیں . جس چیز کی سچی — ایمان سے — ضرورت ھو اُسے رکھیں' ورنہ چھوڑ دیں — ایمان سے رھیں' ایمان کا کھائیں .

دیش سیوک کیا کرے ؟ — سروودے کے پھیر میں نہ پڑے' سیوا کے پھندے میں نہ پھنسے ; ایمان سے رھے' ایمان کا کھائے .

आप से यह कह दूँ कि एक एक शेर में यह बात ध्यान से देखते जाइये कि शब्द किस तरह चुने गये हैं. जुमले (वाक्य) हमारी आप की बोल-चाल से कितना मिलते हैं. । भाव और विचार कैसे हैं. जीवन को संवारने में यह शेर कितनी मदद कर सकते हैं. इनमें गम्भीरता और रस कितना है ? बहुत शान्ति से पढ़िये.

(१) मर गया कोहकन यही कहकर
आँख ओभल पहाड़ ओभल है. मीर

(२) ग़म के टहोके कुछ हों बला से आके जगा तो जाते हैं
हम हैं मगर वह नींद के माते जागते ही सो जाते हैं. फ़ानी

(३) दिल का उजड़ना सहल सही बसना सहल नहीं ज़ालिम
बस्ती बसना सहल नहीं बस्ते बस्ते बस्ती है. फ़ानी

(४) बात क्या आदमी की बन आई,
आस्माँ से ज़मीन नपवाई. मीर

(५) यह सुहानी उदास तनहाई,
लेती है पिछली रात अंगड़ाई. लेखक

(६) रात दिन चक्कर में हैं सात'आसमाँ
हो रहेगा कुछ न कुछ घबरायें क्या,
लाग हो गर कुछ तो हम समझें लगाव
जब न हो कुछ भी तो धोका खायें क्या. ग़ालिब

(७) इधर आँख झपकी उधर ढलगई वह
जवानी भी एक धूप थी दोपहर की. इबरत

(८) बलबाज़ू के ज़ोर कमर के, माँ की उमंग घमंड पिदर के
सुख आँखों के नूर नज़र के, चैन हमारे सारे घर के

نیا هند میں هندی پریمیوں سے پوچھتا ہوں جنوری

آپ سے یہ کہدوں کہ ایک ایک شعر میں یہ بات دھیان سے دیکھتے جائیے کہ شبد کس طرح چنے گئے ہیں' جملے (واکیہ) ہماری آپ کی بول چال سے کتنا ملتے ہیں' بھاؤ اور وچار کیسے . ہیں جیون کو سنوارنے میں یہ شعر کتنی مدد کر سکتے ہیں. ان میں گمبھیرتا اور رس کتنا ہے ؟ بہت شانتی سے پڑھئیے

(۱) مرگیا کوہکن یہی کہکر آنکھہ اوجھل پہاڑ اوجھل ہے میر

(۲) غم کے ٹہوکے کچھہ ہوں بلا سے آکے جگا تو جاتے ہیں
هم ہیں مگر وہ نیند کے ماتے جاگتے ہی سوجاتے ہیں فانی

(۳) دل کا اجڑنا سہل سہی بسنا سہل نہیں ظالم
بستی بسنا سہل نہیں بستے بستے بستی ہے فانی

(۴) بات کیا آدمی کی بن آئی
آسماں سے زمین نپوائی میر

(۵) یہ سہانی اُداس تنہائی
لیتی ہے پچھلی رات انگڑائی (لیکھک)

(۶) رات دن چکر میں ہیں سات آسماں
ہو رہے گا کچھ نہ کچھ گھبرائیں کیا
لاگ ہو کر کچھ تو ہم سمجھیں لگاؤ
جب نہ ہو کچھ بھی تو دھوکا کھائیں کیا غالب

(۷) ادھر آنکھہ جھپکی ادھر ڈھل گئی وہ
جوانی بھی اک دھوپ تھی دوپہر کی عبرت

(۸) بل بازو کے زور کمر کے ماں کی اُمنگ' گھمنڈ پدر کے
سکھ آنکھوں کے نور نظر کے چین ہمارے سارے گھر کے

सब के सब हुकूमत करें. व्योपार करें. सेवा करें — अपने पर हुकूमत. अपने का व्योपार. अपने की सेवा. हम अपने हाकिम, हम अपनी पूंजी, हम अपने सेवक.

हमारी ही हुकूमत. हमारा ही व्योपार. हमारी ही सेवा — अगर हर चीज़ की जाय ईमान के साथ.

तो, हमारी हुकूमत. हमारा व्योपार, हमारी सेवा.

देश किसका ?— हमरा ! राज किसका?—हमारा ! और उदय किसका ? — हमारा. नहीं, सबका -- सर्वोदय ! ईमान रहा तो सर्वोदय ; ईमान गया तो सर्वनाश

× × × ×

सर्वोदय की बहार आई है.

कौनपुर में दो आदमी ठंडा से गुज़र गये.

ईमान रहा तो सर्वोदय. सर्वोदय से सर्वनाश. ईमान से सर्वोदय

ईमान कहो या सर्वोदय—मतलब तो उसी की चाह से है. मंशा तो उसी की राह से है — यही बापू, यही ईमान. यही सर्वोदय

سب کے سب حکومت کریں، بیوپار کریں، سیوا کریں — اپنے پر حکومت، اپنے کا بیوپار، اپنے کی سیوا ۔ ہم اپنے حاکم، ہم اپنی پونجی، ہم اپنے سیوک ۔

ہماری ہی حکومت، ہمارا ہی بیوپار، ہماری ہی سیوا — اگر ہر چیز کی جائے ایمان کے ساتھ ۔

تو، ہماری حکومت، ہمارا بیوپار، ہماری سیوا ۔

دیش کس کا ؟ — ہمارا ! راج کس کا ؟ —— ہمارا ! اور اودے کس کا ؟ — ہمارا نہیں، سب کا — سروودے ! ایمان رہا تو سروودے ؛ ایمان گیا تو سروناش ۔

× × × ×

سروودے کی بہار آئی ہے ۔ کانپور میں دو آدمی ٹھنڈی سے گذر گئے ۔

ایمان رہا تو سروودے ۔ سروودے سے سرو ناش ۔ ایمان سے سروودے ۔

ایمان کہو یا سروودے — مطلب تو اسی کی چاہ سے ہے، منشا تو اسی کی راہ سے ہے — یہی باپو، یہی ایمان، یہی سروودے ۔

पुराने हिन्द का इन्साफ़

(भाई फ़रहतुल्ला अन्सारी)

बहुत दिनों की बात है — इतने दिनों की बात कि सन् और साल का तय करना भी मुशकिल है, लेकिन बात पक्की है. आप कहेंगे ऐसी कौन बात है जिस की दिन तारीख़ भी नहीं बताई जासकती मगर है पक्की ! जी हाँ, हिन्द और अरब का मेल जोल, हिन्दुओं और मुसलमानों की जान पहचान इतनी ही पुरानी बात है.

जो तारीख़ हम आप आम तौर से पढ़ते रहे हैं बल्कि जो हमें पिछले सौ डेढ़ सौ साल से पढ़ाई जाती रही है उस के मुताबिक़ हिन्दुओं और मुसलमानों में सदा बैर ही रहा है. यह इतिहास ज़्यादा से ज़्यादा आठवीं सदी ईस्वी में मुहम्मद बिन क़ासिम के समुन्दरी हमले से नहीं तो आम तौर पर तेरहवीं सदी में महमूद ग़ज़नवी की लूट मार से शुरू होता है और हर पढ़ने वाले के मन पर यह असर डालता है कि हिन्द और उन मुल्कों में, जो आज इसलामी मुल्क कहलाते हैं, इसलाम से पहले तो कोई सम्बंध ही नहीं था और इसलाम के बाद हुआ भी तो वह सम्बन्ध जो राजा और प्रजा या ज़ालिम और ज़ुल्म सहने वाले में हुआ करता है.

लेकिन हमारी अपनी किताबें बताती हैं कि इन हमलों से पहले कम से कम तीन चार सदियाँ ऐसी बीती हैं जिनमें हिन्द, ईरान और अरब में ख़ालिस दोस्ती और प्रेम का सम्बंध रहा है. इसमें इसलाम

پرانے ھند کا انصاف

(بھائي فرحت اللہ انصاری)

بہت دنوں کي بات ھے — اتنے دنوں کی بات کہ سن اور سال کا طے کرنا بھی مشکل ھے' لیکن بات پکی ھے . آپ کہیں گے ایسی کون بات ھے جس کي دن تاریخ بھی نہیں بتائي جاسکتي مگر ھے پکي ! جی ھاں' ھند اور عرب کا میل جول' ھندوؤں اور مسلمانوں کی جان پہچان اتني ھی پرانی بات ھے .

جو تاریخ ھم آپ عام طور سے پڑھتے رھے ھیں بلکہ جو ھمیں پچھلے سو ڈیڑھ سو سال سے پڑھائي جاتی رھی ھے اس کے مطابق ھندوؤں اور مسلمانوں میں سدا بیر ھی رھا ھے. یہ اتہاس زیادہ سے زیادہ آٹھویں صدي عیسوی میں محمد بن قاسم کے سمندری حملہ سے نہیں تو عام طور پر تیرھویں صدی میں محمود غزنوي کی لوٹ مار سے شروع ھوتا ھے اور ھر پڑھنے والے کے من پر یہ اثر ڈالتا ھے کہ ھند اور اُن ملکوں میں جو آج اسلامی ملک کہلاتے ھیں' اسلام سے پہلے تو کوئی سمبندھ ھی نہیں تھا اور اسلام کے بعد ھوا بھی تو وہ سمبندھ جو راجا اور پرجا یا ظالم اور ظلم سہنے والے میں ھوا کرتا ھے .

لیکن ھماری اپنی کتابیں بتاتي ھیں کہ ان حملوں سے پہلے کم سے کم تین چار صدیاں ایسي بیتي ھیں جن میں ھند' ایران اور عرب میں خالص دوستي اور پریم کا سمبندھ رھا ھے . اس میں اسلام

से पहले का भी जमाना शामिल है और इसलाम के बाद का भी. डाक्टर तारा चन्द लिखते हैं कि, "जब ईरान का बादशाह दारा था उस समय से हिन्द का व्योपार ईरानियों के हाथ में था. पाँचवीं छटी सदी में तो यह व्योपारी सम्बंध अपनी इन्तहा को पहुंच चुके थे.

ईरानियों की तरह अरब भी इसलाम के बहुत पहले से हिन्द के पच्छिमी और पूरबी बन्दरगाहों पर आया करते थे और रहा करते थे. अरब और हिन्द में दोहरा रिश्ता था. एक तो सीधा यानी उस व्योपार की बिना पर जो अरब और हिन्द में होता था. दूसरा चीन की वजह से, यानी उस व्योपार के कारन जो अरब और चीन मे होता था और जिस के लिये हिन्द के बन्दरगाहों पर रुकना और ठहरना लाजिमी था.

चीन में सब से पहला मुसलमान, समुन्दरी रास्ते से, सन् ६२६ ई० में पहुंचा था. इस के मानी यह हुए कि हिन्द में अरब जहाजियों का आना जाना इस के पहले से जरूर था. जब हिन्द के समुन्दरी किनारों को वह अच्छी तरह जान गये होंगे तब-ही और आगे, चीन की तरफ, बढ़े होंगे. आज हम उन मुल्कों या जहाजियों को जो हमारे समुन्दरी किनारों पर अपने अड्डे बनाना चाहें, अच्छी नजर से नहीं देखते. कोई भी देश किसी दूसरे देश को यह रिआयत हँसी खुशी देने के लिये तैयार नहीं होता. इस लिये कि अब समुन्दरी जहाजों का चलना चलाना आम होगया है. पर उस जमाने में ऐसा न था. बल्कि इसके उलटा जिन मुल्कों के जहाज हिन्द के समुन्दरी किनारों पर अपने अड्डे बनाना चाहते थे उन्हें बड़ी बड़ी रिआयतें दी जाती थीं. राजा और प्रजा दोनों इन जहाजियों के साथ बड़ी

سے پہلے کا بھی زمانہ شامل ہے اور اسلام کے بعد کا بھی ۔ ڈاکٹر تارا چند لکھتے ہیں کہ ''جب ایران کا بادشاہ دارا تھا اس سمے سے ہند کا بیوپار ایرانیوں کے ہاتھ میں تھا ۔ پانچویں چھٹی صدی میں تو یہ بیوپاری سمبندھ اپنی انتہا کو پہونچ چکے تھے ۔

ایرانیوں کی طرح عرب بھی اسلام کے بہت پہلے سے ہند کے پچھمی اور پوربی بندرگاہوں پر آیا کرتے تھے اور رہا کرتے تھے ۔ عرب اور ہند میں دہرا رشتہ تھا ۔ ایک تو سیدھا یعنی اس بیوپار کی بنا پر جو عرب اور ہند میں ہوتا تھا' دوسرا چین کی وجہ سے یعنی اس بیوپار کے کارن جو عرب اور چین میں ہوتا تھا اور جس کے لئے ہند کے بندرگاہوں پر رکنا اور ٹھہرنا لازمی تھا ۔

چین میں سب سے پہلا مسلمان' سمندری راستے سے' سن ۶۲۹ع میں پہونچا تھا ۔ اس کے معنی یہ ہوئے کہ ہند میں عرب جہازیوں کا آنا جانا اس کے پہلے سے ضرور تھا ۔ جب ہند کے سمندری کناروں کو وہ اچھی طرح جان گئے ہوں گے تب ہی اور آگے چین کی طرف بڑھے ہوں گے ۔ آج ہم ان ملکوں یا جہازیوں کو جو ہمارے سمندری کناروں پر اپنے اڈے بنانا چاہیں اچھی نظر سے نہیں دیکھتے ۔ کوئی بھی دیش کسی دوسرے دیش کو یہ رعایت ہنسی خوشی دینے کے لئے تیار نہیں ہوتا ۔ اس لئے کہ اب سمندری جہازوں کا چلنا چلانا عام ہوگیا ہے ۔ پر اس زمانہ میں ایسا نہ تھا ۔ بلکہ اس کے الٹا جن ملکوں کے جہاز ہند کے سمندری کناروں پر اپنے اڈے بنانا چاہتے تھے انہیں بڑی بڑی رعایتیں دی جاتی تھیں راجا اور پرجا دونوں ان جہازیوں کے ساتھ بڑی

अच्छी तरह पेश आते थे, क्यों कि उन से सब को फ़ायदा पहुँचता था. इसी लिये अरब जहाज़ी भी तरह तरह की रिआयतों के साथ, जिन में ज़मीनें खरीदने और व्योपार करने के अलावा धर्म का प्रचार भी शामिल था. हिन्द के पच्छिमी और पूरबी किनारों पर आबाद होने लगे. इन में ट्रावनकोर और ज़मोरन की रियासतों के -ारे में, डाक्टर आबिद हुसैन साहब लिखते हैं कि यहां मुसलमानों की सब से ज़्यादा क़दर होती थी. ज़मोरन ने अरब जहाज़ियों को मदद देने और अपने यहाँ जहाज़ चलाने का शौक़ पैदा करने की भी कोशिश की. लेकिन धार्मिक बन्धनों के कारन हिन्दू मछेरे इसके लिये तैयार नहीं हुए. आखिर ज़मोरन ने अपने राज में यह हुक्म जारी किया कि, "मछेरों के हर खानदान में से कम से कम एक लड़के की तरबियत (शिक्षा दीक्षा) मुसलमान की हैसियत से की जाय."

पच्छिमी समुन्दरी किनारे की तरह पूरबी किनारे पर भी अरबों का आना जाना इसलाम के आने से पहले के समय से था. इसलाम के बाद यह सिलसिला जारी रहा. पूरबी किनारे पर अरबों की सब से बड़ी बस्ती ज़िला तनावली में कायल पट्टानम के मुक़ाम पर थी जहाँ सातवीं सदी ईसवी से लेकर तेरहवीं सदी ईसवी तक के इसलामी सिक्के पाये गये हैं."

("हिन्दुस्तानी क़ौमियत और क़ौमी तहज़ीब" सफ़ा २९२)

जब मालवीं मदी में इसलाम ने अरबों में एक नई रूह फूंक दी और उनके अलग अलग क़बीलों को आपस में एक कर दिया तो उन की सलतनत भी फैलना शुरू हुई और व्योपार भी बढ़ने लगा.

اچھی طرح پیش آتے تھے' کیونکہ ان سے سب کو فائدہ پہونچتا تھا. اسی لئے عرب جہازی بھی طرح طرح کی رعائتوں کے ساتھ' جن میں زمینیں خریدنے اور بیوپار کرنے کے علاوہ دھرم کا پرچار بھی شامل تھا' ھند کے پچھمی اور پوربی کناروں پر آباد ہونے لگے. اِن میں تراون کور اور زمورن کی ریاستوں کے بارے میں' ڈاکٹر عابد حسین صاحب لکھتے ھیں کہ یہاں مسلمانوں کی سب سے زیادہ قدر ہوتی تھی. زمورن نے عرب جہازیوں کو مدد دینے اور اپنے یہاں جہاز چلانے کا شوق پیدا کرنے کی بھی کوشش کی. لیکن دھارمک بندھنوں کے کارن' ھندو مچھیرے اس کے لئے تیار نہیں ہوئے. آخر زمورن نے اپنے راج میں یہ حکم جاری کیا کہ' "مچھیروں کے ہر خاندان میں سے کم سے کم ایک لڑکے کی تربیت (شکشا دیکشا) مسلمان کی حیثیت سے کی جائے."

پچھمی سمندری کنارے کی طرح پوربی کنارے پر بھی عربوں کا آنا جانا اسلام کے آنے سے پہلے کے سمے سے تھا اسلام کے بعد یہ سلسلہ جاری رہا. پوربی کنارے پر عربوں کی سب سے بڑی بستی ضلع تناولی میں کایل پٹانم کے مقام پر تھی. جہاں ساتویں صدی عیسوی سے لے کر تیرھویں صدی عیسوی تک کے اسلامی سکے پائے گئے ھیں."

("ھندستانی قومیت اور قومی تہذیب" صفحہ ۲۹۲)

جب ساتویں صدی میں اسلام نے عربوں میں ایک نئی روح پھونک دی اور ان کے الگ الگ قبیلوں کو آپس میں ایک کردیا تو ان کی سلطنت بھی پھیلنا شروع ہوئی اور بیوپار بھی بڑھنے لگا.

ईरान को जीतने से वह सारा समुन्दरी व्योपार जो ईरानियों के हाथ में था, अरबों के हाथ में आगया. कुछ लोगों का ख़याल था कि हिन्द में भी ईरान की तरह फ़ौज भेजी जाय लेकिन इसलाम के दूसरे ख़लीफ़ा हज़रत उमर ने सख़्ती के साथ मना कर दिया. ज़ाहिर है कि एक बड़ी जीत के बाद समझदारी की बात यही थी कि दूसरी जीतों के पीछे अरब फ़ौरन न दौड़ पड़ते. इसी लिये ख़लीफ़ा उमर के हुक्म से आगे की फ़ौजी कारवाइयाँ रुक गईं और अरब व हिन्द में सिर्फ़ व्योपारी सम्बंध रहगये जो बराबर बढ़ते गये. अरब मुसलमानों ने व्योपारियों की हैसियत से दक्खनी हिन्द और लंका के समुन्दरी किनारों पर अपनी बस्तियाँ बसा लीं. हिन्दुस्तानी औरतों से शादियाँ करलीं और इस तरह रहने लगे जैसे कोई तिजारती क़ाफ़ला एक सच्छी मंडी में बस जाता है.

हमारा मक़सद तारीख़ बयान करना नहीं बल्कि उसी समय की एक दिलचस्प घटना पर रोशनी डालना है जब कि मुसलमान बहुत ही थोड़ी गिनती में और सिर्फ़ व्योपार की ग़रज़ से यहाँ रहा करते थे. इस घटना को अरबी के इतिहास कार मुहम्मद औफ़ी ने बयान किया है और उर्दू के मशहूर लेखक मौलाना शरर लखनवी ने सन् १९१२ ई० में "एक हिन्दू राजा का इन्साफ़" के नाम से अपने मशहूर माहवार रिसाला "दिलगुदाज़" में छापा है.

मौलाना शरर लिखते हैं —"जब ईरान को मुसलमानों ने जीत लिया तो बहुत से ईरानी भी पच्छिमी हिन्द के समुन्दरी किनारों पर आ बसे. इन के दिल में मुसलमानों की तरफ़ से जो अनाद (द्वेष) होना चाहिये था उसका कारन ज़ाहिर है. वह अपने देश में तो जीत नहीं

ایران کو جیتنے سے وہ سارا سمندری بیوپار جو ایرانیوں کے هاتھ میں تھا، عربوں کے هاتھ میں آگیا . کچھ لوگوں کا خیال تھا کہ هند میں بھی ایران کی طرح فوج بھیجی جائے لیکن اسلام کے دوسرے خلیفہ حضرت عمر نے سختی کے ساتھ منع کردیا . ظاهر هے کہ ایک بڑی جیت کے بعد سمجھداری کی بات یہی تھی کہ دوسری جیتوں کے پیچھے عرب فوراً نہ دوڑ پڑتے . اسی لئے خلیفہ عمر کے حکم سے آگے کی فوجی کارروائیاں رک گئیں اور عرب هند میں صرف بیوپاری سمبندھ رہ گئے جو برابر بڑھتے گئے . عرب مسلمانوں نے بیوپاریوں کی حیثیت سے دکھنی هند اور لنکا کے سمندری کناروں پر اپنی بستیاں بسالیں . هندستانی عورتوں سے شادیاں کرلیں اور اس طرح رهنے لگے جیسے کوئی تجارتی قافلہ ایک اچھی منڈی میں بس جاتا هے .

همارا مقصد تاریخ بیان کرنا نہیں بلکہ اس سمے کی ایک دلچسپ گھٹنا پر روشنی ڈالنا هے جب کہ مسلمان بہت هی تھوڑی گنتی میں اور صرف بیوپار کی غرض سے یہاں رها کرتے تھے . اس گھٹنا کو عربی کے اتہاس کار محمد عوفی نے بیان کیا هے اور اُردو کے مشہور لیکھک مولاناشرر لکھنوی نے سن ۱۹۱۲ع میں "ایک هندو راجا کا انصاف" کے نام سے اپنے مشہور ماهوار رسالہ " دلگداز" میں چھاپا هے .

مولانا شرر لکھتے هیں — " جب ایران کو مسلمانوں نے جیت لیا تو بہت سے ایرانی بھی پچھمی هند کے سمندری کناروں پر آبسے. ان کے دل میں مسلمانوں کی طرف سے جو عناد (دویش) هونا [illegible] ظاهر هے . وہ اپنے دیش میں تو جیت نہیں

पाये थे इस लिये खार खाये बैठे थे. एक दिन इन ईरानियों ने खम्बात बन्दरगाह में अरब मुसलमानों के खिलाफ़ एक ज़बरदस्त हंगामा खड़ा कर दिया. उन्हों ने अज़ान के खिलाफ़ तरह तरह की बातें फैलाना शुरू कीं और आस पास के हिन्दुओं को भड़का कर मुसलमाना पर ऐसा हमला किया कि सिवाय खतीब अली के, जो खम्बात की मसजिद का इमाम था, जितने मुसलमान उसके आस पास रहते थे सब मार डाले गये.

खतीब अली वहाँ से भाग कर नहरवाला पहुंचा जो राय जयसिंह की राजधानी थी. यह राजा अपने न्याय और इन्साफ़ के लिये बहुत मशहूर था और इसकी अमलदारी इतनी बड़ी थी कि सारे गुजरात देश मे इसी का सिक्का चलता था. नहरवाला में खतीब अली ने बहुत से हाकिमो से फरियाद की पर किसी ने विश्वास ही न किया कि एक छोटी सी मुस्लिम आबदी पर बिला वजह हमला करदिया गया और उनकी मसजिद तोड़ डाली गई. आख़िर उस ने राजा तक पहुंचने की कोशिश की, पर इस के लिये भी कोई रास्ता न निकला. एक दिन उसे मालूम हुआ कि महाराज शिकार पर जारहे हैं. वह रास्ते मे छिप गया और जैसे ही महाराज का हाथी उस के पास से गुज़रा वह झाड़ियों से निकल कर बाहर आया और चीखा —" दुहाई है महाराज की ! "

राजा ने झट अपना हाथी रोक दिया और पूछा — " ऐ अजनबी, तू कौन है — और क्या चाहता है ? "

پائے تھے اسلئے خار کھائے بیٹھے تھے. ایکدن اِن ایرانیوں نے کھمبات بندرگاہ میں عرب مسلمانوں کے خلاف ایک زبردست ہنگامہ کھڑا کردیا . انھوں نے اذان کے خلاف طرح طرح کی باتیں پھیلانا شروع کیں اور آس پاس کے ہندوؤں کو بھڑکا کر مسلمانوں پر ایسا حملہ کیا کہ سوائے خطیب علی کے' جو کھمبات کی مسجد کا امام تھا' جتنے مسلمان اس کے آس پاس رہتے تھے سب مارڈالے گئے .

خطیب علی وہاں سے بھاگ کر نہروالا پہونچا جو رائے جے سنگھ کی راجدھانی تھی . یہ راجا اپنے نیائے اور انصاف کے لئے بہت مشہور تھا ،اور اس کی عمل داری اتنی بڑی تھی کہ سارے گجرات دیش میں اسی کا سکہ چلتا تھا . نہروالا میں خطیب علی نے بہت سے حاکموں سے فریاد کی پر کسی نے وشواس ہی نہ کیا کہ ایک چھوٹی سی مسلم آبادی پر بلا وجہ حملہ کردیا گیا اور ان کی مسجد توڑ ڈالی گئی٬ آخر اس نے راجا تک پہونچنے کی کوشش کی' پر اس کے لئے بھی کوئی راستہ نہ نکلا . ایک دن اسے معلوم ہوا کہ مہاراج شکار پر جارہے ہیں . وہ راستہ میں چھپ گیا اور جیسے ہی مہاراج کا ہاتھی اس کے پاس سے گذرا وہ جھاڑیوں سے نکل کر باہر آیا اور چیخا — " دوہائی ہے مہاراج کی ! "

راجا نے جھٹ اپنا ہاتھی روک دیا اور پوچھا— "اے اجنبی' تو کون ہے — اور کیا چاہتا ہے ؟ "

ख़तीब ने जवाब दिया — " मैं एक सताया हुआ मुसलमान हूँ और इन्साफ़ चाहता हूँ. "

यह कहते ही ख़तीब ने अपने लम्बे कुर्ते की जेब से एक काग़ज़ निकाला और उसे दोनों हाथों पर रखकर सर झुकाकर खड़ा होगया.

राजा ने कहा —" हम इन्साफ़ में एक मिनट की भी देर नहीं करते. तुम्हें जो कहना है फ़ौरन कहो. "

ख़तीब ने अपनी अरब परम्परा के अनुसार फ़ौरन एक क़सीदा पढ़ना शुरू कर दिया.

मौलना रर शलिखते हैं— " यह क़सीदा संस्कृत में था. " इस से ज़ाहिर है कि अरबों की वह बस्ती बहुत पुरानी बस्ती थी और जो अरब यहां रहते थे वह यहाँ के इल्म व फ़न में भी काफ़ी दख़ल रखते थे.

राजा पर ख़त.ब के क़सीदे का बहुत अच्छा असर पड़ा. उस ने अपने साथ के वज़ीरों से पूछा —" यह क्या माजरा है ?"

वज़ीरों ने कहा —" हम में से किसी के कान तक यह ख़बर नहीं पहुंची है. हम कैसे मान लें कि यह अजनबी सच कहता है !"

राजा ने कहा—" फ़रियादी ! हम अपना शिकार मुलतवी करते हैं और वापस होते हैं. मगर तुम्हारे बयान में ज़रा भी झूट निकला तो अच्छा न होगा."

वज़ीरों ने कहा—"महाराज ! इसमें कोई ऐसी बात तो नहीं है कि सरकार अपना शिकार मुलतवी करदें ."

राजा ने जवाब दिया--"इन्साफ़ में देर करना, इन्साफ़ का ख़ून करना है. फ़रियादी को साथ लो और वापस चलो.'

خطیب نے جواب دیا — " میں ایک ستایا ہوا مسلمان ھوں اور انصاف چاھتا ھوں ۔"

یہ کہتے ھی خطیب نے اپنے لمبے کرتے کی جیب سے ایک کاغذ نکالا اور اسے دونوں ھاتھوں پر رکھ کر سر جھکا کر کھڑا ھوگیا ۔

راجا نے کہا — " ھم انصاف میں ایک منٹ کی بھی دیر نہیں کرتے ۔ تمھیں جو کہنا ھے فوراً کہو ۔"

خطیب نے اپنی عرب پرمپرا کے انوسار فوراً ایک قصیدہ پڑھنا شروع کردیا ۔

مولانا شرر لکھتے ھیں — " یہ قصیدہ سنسکرت میں تھا ۔" اس سے ظاھر ھے کہ عربوں کی وہ بستی بہت پرانی بستی تھی اور جو عرب یہاں رھتے تھے وہ یہاں کے علم و فن میں بھی کافی دخل رکھتے تھے ۔

راجا پر خطیب کے قصیدے کا بہت اچھا اثر پڑا ۔ اس نے اپنے ساتھ کے وزیروں سے پوچھا — " یہ کیا ماجرا ھے ؟ "

وزیروں نے کہا — "ھم میں سے کسی کے کان تک یہ خبر نہیں پہونچی ھے ۔ ھم کیسے یقین کرلیں کہ یہ اجنبی سچ کہتا ھے ! "

راجا نے کہا — " فریادی ! ھم اپنا شکار ملتوی کرتے ھیں اور واپس ھوتے ھیں ۔ مگر تمھارے بیان میں ذرا بھی جھوٹ نکلا تو اچھا نہ ھوگا ۔ "

وزیروں نے کہا — " مہاراج ! اس میں کوئی ایسی بات تو نہیں ھے کہ سرکار اپنا شکار ملتوی کردیں ۔"

راجا نے جواب دیا — " انصاف میں دیر کرنا' انصاف کا خون کرنا ھے ۔ فریادی کو ساتھ لو اور واپس چلو ۔ "

सारा क़ाफ़ला वापस होगया. राजा ने नहरवाला पहुंचते ही दरबार लगाया और बड़े से छोटे तक हर एक को यह हुक्म दिया कि इस मामले की तहक़ीक़ात की जाय और तीन दिन के बाद मुझे ख़बर दी जाय. उस वक़्त तक मैं महल से बाहर नहीं आऊँगा.

चौथे दिन फिर दरबार हुआ तो बड़े वज़ीर ने यह रिपोर्ट दी कि कुछ न कुछ गड़बड़ी ज़रूर हुई है. मगर इतनी दूर की बात है कि पूरी तफ़सील नहीं मालूम हो सकी. बस इतना पता चला है कि पारसियों और मुसलमानों में किसी बात पर अन बन होगई थी. किसने पहल की और किसपर ज़ुल्म हुआ इसके बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता."

राजा ने ख़तीब को हुक्म दिया कि वह अपना सारा मुक़द्दमा दरबार में पेश करे. जब वह अपनी फ़रियाद सुना चुका तो हर वज़ीर ने अपनी अपनी राय दी. किसी ने कहा—"यह झूटा है." किसी ने कहा—"इसका एतबार ही क्या ?" अक्सर ने कहा—"यह कैसे मान लिया जाय कि खम्बात के लोग आप ही आप बिगड़ गये और ऐसी बेरहमी पर उतर आये कि जो मुसलमान उनकी अपनी पनाह में थे उन पर ही टूट पड़े !"

राजा ने कहा—"बेशक, यह बात समझ में नहीं आती कि खम्बात के हिन्दू आप ही आप मुसलमानों पर टूट पड़े. मगर यह भी समझ में नहीं आता कि वहाँ के मुसलमान रहे रहे पागल हो गये और उन ही हिन्दुओं से लड़ पड़े जो उन्हें पनाह दिये हुए हैं."

बड़े वज़ीर ने कहा—"जब तक कोई गवाही न हो, इसका फ़ैसला नहीं हो सकता."

سارا قافلہ واپس ہوگیا . راجا نے نہروالا پہونچتے ہی دربار لگایا اور بڑے سے چھوٹے تک ہر ایک کو یہ حکم دیا کہ اس معاملے کی تحقیقات کی جائے اور تین دن کے بعد مجھے خبر دی جائے. اس وقت تک میں محل سے باہر نہیں آؤنگا .

چوتھے دن پھر دربار ہوا تو بڑے وزیر نے یہ رپورٹ دی کہ کچھ نہ کچھ گڑبڑی ضرور ہوئی ہے . مگر اتنی دور کی بات ہے کہ پوری تفصیل نہیں معلوم ہوسکتی . بس اتنا پتہ چلا ہے کہ پارسیوں اور مسلمانوں میں کسی بات پر آن بن ہوگئی تھی. کس نے پہل کی اور کس پر ظلم ہوا اس کے بارے میں کچھ نہیں کہا جاسکتا ."

راجا نے خطیب کو حکم دیا کہ وہ اپنا سارا مقدمہ دربار میں پیش کرے. جب وہ اپنی فریاد سنا چکا تو ہر وزیر نےاپنی اپنی رائے دی . کسی نے کہا — " یہ جھوٹا ہے ." کسی نے کہا — " اس کا اعتبار ہی کیا." اکثر نے کہا —"یہ کیسے مان لیا جائے کہ کھمبات کے لوگ اپ ہی آپ بگڑ گئے اور ایسی بے رحمی پر اتر آئے کہ جو مسلمان ان کی اپنی پناہ میں تھے ان پر ہی ٹوٹ پڑے ! "

راجا نے کہا — " بیشک یہ بات سمجھ میں نہیں آتی کہ کھمبات کے ہندو آپ ہی آپ مسلمانوں پر ٹوٹ پڑے مگر یہ بھی سمجھ میں نہیں آتا کہ وہاں کے مسلمان رہے رہے پاگل ہوگئے اور ان ہی ہندوؤں سے لڑ پڑے جو انہیں پناہ دیئے ہوئے ہیں "

بڑے وزیر نے کہا — " جب تک کوئی گواہی نہ ہو اس کا فیصلہ نہیں ہوسکتا ."

राजा ने इशारा किया और एक सुराही उसके सामने लाकर रख दी गई.

राजा ने कहा—"बेशक. नामुमकिन है."

बड़े वज़ीर ने फ़रियादी से पूछा—"कोई गवाही पेश कर सकते हो ?"

राजा ने कहा—"ज़ुल्म के ख़िलाफ़ ज़र्रा ज़र्रा शहादत दे सकता है. यह आकाश गवाह है, यह धरती गवाह है और यह सुराही गवाह है. लो, इसका पानी पियो और बताओ कि यह क्या कहता है."

जिसने जिसने सुराही का पानी पिया वह मुंह बनाकर रह गया. और लोग तो नहीं समझे. किसी ने कहा—"कड़ुवा है." किसी ने कहा—"खारी है."

बड़ा वज़ीर समझ गया—उसने कहा—"महाराज सच कहते हैं. यह खम्बात का पानी है और इसकी गवाही बिलकुल सच्ची है"

दूसरे वज़ीर यह सुनकर हैरान रह गये

राजा ने कहा—"इसमें हैरानी की क्या बात है—सच मुच यह खम्बात का पानी है. मैं ख़ुद इसे समुन्दर से भरकर लाया हूं और अपनी आँखों से देखकर आया हूँ कि जो कुछ इस फ़रियादी ने कहा है उसका एक एक हर्फ़ सच है. मैंने यह तीन दिन इसीलिये दिये थे कि देखूं तुममें से कौन है जो खम्बात जाता है और ठीक ठीक पता लगाकर आता है मगर अफ़सोस, एक ने भी कष्ट नहीं किया. मुझे टूटी हुई मसजिद देखकर इतना दुख नहीं हुआ जितना यह सोचकर दुख हो रहा है कि मेरे वज़ीर कितने आराम तलब हैं और राजपाट की तरफ़ से कितने बेख़बर हैं."

راجا نے اشارہ کیا اور ایک صراحی اس کے سامنے لاکر رکھ دی گئی ۔

راجا نے کہا — "بیشک' نا ممکن ہے ۔ "

بڑے وزیر نے فریادی سے پوچھا — " کوئی گواہی پیش کرسکتے ہو ؟ "

راجا نے کہا — " ظلم کے خلاف ذرہ ذرہ شہادت دے سکتا ہے ۔ یہ آکاش گواہ ہے' یہ دھرتی گواہ ہے اور یہ صراحی گواہ ہے ۔ لو اس کا پانی پئو اور بتاؤ کہ یہ کیا کہتا ہے ۔ "

جس نے جس نے صراحی کا پانی پیا وہ منہ بناکر رہ گیا ۔ اور لوگ تو نہیں سمجھے کسی نے کہا — " کڑوا ہے ۔ " کسی نے کہا " کھاری ہے ۔ "

بڑا وزیر سمجھ گیا — اس نے کہا— "مہاراج سچ کہتے ہیں ۔ یہ کھمبات کا پانی ہے اور اس کی گواہی بالکل سچی ہے "

دوسرے وزیر یہ سن کر حیران رہ گئے ۔

راجا نے کہا —"اس میں حیرانی کی کیا بات ہے — سچ مچ یہ کھمبات کا پانی ہے ۔ میں خود اسے سمندر سے بھر کر لایا ہوں اور اپنی آنکھوں سے دیکھ کر آیا ہوں کہ جو کچھ اس فریادی نے کہا ہے اس کا ایک ایک حرف سچ ہے ۔ میں نے یہ تین دن اسی لئے دیئے تھے کہ دیکھوں تم میں سے کون ہے جو کھمبات جاتا ہے اور ٹھیک ٹھیک پتہ لگاکر آتا ہے ۔ مگر افسوس' ایک نے بھی کشٹ نہیں کیا ۔ مجھے ٹوٹی ہوئی مسجد دیکھ کر اتنا دکھ نہیں ہوا جتنا یہ سوچکر دکھ ہو رہا ہے کہ میرے وزیر کتنے آرام طلب ہیں

सारा दरबार यह सुनकर दंग रह गया कि राजा इन तीन दिनों में नहरवाला से खम्भात गया और वापस आगया. सबने अपनी अपनी गर्दनें शर्म से झुका लीं.

राजा ने कहा—"सारी शरारत पारसियों की है. वह वहाँ (ईरान) का बदला यहाँ के मुसलमानों से निकालना चाहते हैं. मगर यहाँ का मुसलमान मेरी रिआया है और मेरी रिआया पर हाथ उठाना मेरे राज के साथ गुस्ताखी करना है. हिन्दू भी खतावार हैं कि वह दूसरों के भड़काने में अपना अर्त्तव्य क्यों भूल गये. इसलिये हिन्दुओं और पारसियों दोनों के दो दो सरग़ना हाज़िर किये जायं. टूटी हुई मसजिद नये सिरे से बनाई जाय और फ़रियादी को ख़िलअत देकर सरकारी इन्तज़ाम में यहाँ से खम्भात पहुंचाया जाय."

(३३४)

मौलाना शरर लिखते हैं—"उस समय के एक लाख रुपये से वह मसजिद बहुत ही बड़े पैमाने पर और बहुत ही शानदार दोबारा तामीर हुई. उस में अज़ान के लिये बहुत ही खूबसूरत और मज़बूत मीनार क़ायम किया गया. और वह ख़िलअत जो राजा ने खतीब अली को दिया था मुसलमानों में पुराने तबर्रुक (प्रसाद) की हैसियत से रखा रहा जिसे वह ईद बक़रीद की सी खुशी के मौक़ों पर निकालते थे और ज़ियारत करने के बाद फिर हिफ़ाज़त से रख देते थे."

سارا دربار یہ سن کر دنگ رہ گیا کہ راجا ان تین دنوں میں نہروالا سے کھمبات گیا اور واپس آگیا . سب نے اپنی اپنی گردنیں شرم سے جھکا لیں .

راجا نے کہا — " ساری شرارت پارسیوں کی ہے . وہ وہاں (ایران) کا بدلہ یہاں کے مسلمانوں سے نکالنا چاہتے ہیں . مگر یہاں کا مسلمان میری رعایا ہے اور میری رعایا پر ہاتھ اُٹھانا میرے راج کے ساتھ گستاخی کرنا ہے. ہندو بھی خطاوار ہیں کہ وہ دوسروں کے بھڑکانے میں اپنا کرتویہ کیوں بھول گئے . اس لئے ہندوؤں اور پارسیوں دونوں کے دو دو سرغنہ حاضر کئے جائیں . ٹوٹی ہوئی مسجد نئے سرے سے بنائی جائے اور فریادی کو خلعت دے کر سرکاری انتظام میں یہاں سے کھمبات پہونچایا جائے . "

(٣٣٤)

مولانا شرر لکھتے ہیں — " اُس سمے کے ایک لاکھ روپیہ سے وہ مسجد بہت ہی بڑے پیمانہ پر اور بہت ہی شاندار دوبارہ تعمیر ہوئی . اس میں اذان کے لئے بہت ہی خوبصورت اور مضبوط مینار قائم کیا گیا . اور وہ خلعت جو راجا نے خطیب علی کو دیا تھا مسلمانوں میں پرانے تبرک (پرساد) کی حیثیت سے رکھا رہا جسے وہ عید بقرعید کی سی خوشی کے موقعوں پر نکالتے تھے اور زیارت کرنے کے بعد پھر حفاظت سے رکھ دیتے تھے "

(९) ज़माने के हाथों से चारा नहीं है
ज़माना हमारा तुमहारा नहीं है. — इबरत

(१०) बोले वह देखकर मुझे यों शबे माहताब में
देखो कहीं पकड़ न ले चाँदनी रात चोर को. — इबरत

(११) एक मोहब्बत थी मिट गई यारब
तेरी दुनिया में अब धरा क्या है. — अख़्तर शीरानी

(१२) चाहिये अच्छों को जितना चाहिये
वह अगर चाहें तो फिर क्या चाहिये. — ग़ालिब

(१३) झूमती जब कभी मतवाली घटा आई है
याद क्या क्या तेरी मस्ताना अदा आई है. — जलील

(१४) 'ग़ालिब' बुरा न मान जो कोई बुरा कहे
ऐसा भी कोई है कि सब अच्छा कहें जिसे. — ग़ालिब

(१५) काबा सुन्ते हैं कि घर है बड़े दाता का 'रियाज़'
ज़िन्दगी है तो फ़क़ीरों का भी फेरा होगा. — रियाज़

(१६) तुम मेरे पास होते हो गोया
जब कोई दूसरा नहीं होता. — मोमिन

(१७) एक टीस जिगर में उठती है एक दर्द सा दिल में होता है
हम रातों को बैठ के रोते हैं जब सारा आलम सोता है.
— मीर

(१८) बिगाड़ कर बनायेजा उभार कर मिटाये जा
कि मैं तेरा चिराग़ हूं जलाये जा बुझाये जा.
— जोश मलीहाबादी

(१९) मुद्दतें होगई हैं चुप रहते
कोई सुनता तो हम भी कुछ कहते. — महरार

(۹) زمانے کے ھاتھوں سے چارا نہیں ھے
زمانہ ھمارا تمہارا نہیں ھے — عبرت

(۱۰) بولے وہ دیکھکر مجھے یوں شب ماھتاب میں
دیکھو کہیں پکڑ نہ لے چاندنی رات چور کو — عبرت

(۱۱) اک محبت تھی مٹ گئی یارب
تیری دنیا میں اب دھرا کیا ھے — اختر شیرانی

(۱۲) چاھئے اچھوں کو جتنا چاھئے
وہ اگر چاھیں تو پھر کیا چاھئے — غالب

(۱۳) جھومتی جب کبھی متوالی گھٹا آتی ھے
یاد کیا کیا تری مستانہ ادا آتی ھے — جلیل

(۱۴) 'غالب' برا نہ مان جو کوئی برا کہے
ایسا بھی کوئی ھے کہ سب اچھا کہیں جسے — غالب

(۱۵) کعبہ سنتے ھیں کہ گھر ھے بڑے داتا کا 'ریاض'
زندگی ھے تو فقیروں کا بھی پھیرا ھوگا — ریاض

(۱۶) تم مرے پاس ھوتے ھو گویا
جب کوئی دوسرا نہیں ھوتا — مومن

(۱۷) اک ٹیس جگر میں اٹھتی ھے اک درد سا دل میں ھوتا ھے
ھم راتوں کو بیٹھ کے روتے ھیں جب سارا عالم سوتا ھے
— میر

(۱۸) بگاڑ کر بنائے جا ابھار کر مٹائے جا
کہ میں ترا چراغ ھوں جلائے جا بجھائے جا
— جوش ملیح آبادی

(۱۹) مدتیں ھوگئی ھیں چپ رہتے
کوئی سنتا تو ھم بھی کچھ کہتے — [illegible]

अब क्या करें ?

(भाई अब्दुल हलीम अंसारी)

पिछले गुनाहों से तोबा करें. आगे ज़ुल्मों से बाज़ आयें.
अपनी ग़लतियाँ आप मानें. अपनी शरमिंदगियाँ आप उठायें.
अपने दामन के धब्बे धोयें. अपने माथे के दाग़ मिटायें.
ग़ुस्से अपने ठंडे करें. ठंडी मीठी फ़िज़ा बनायें.
बदले की आग बुझायें.
फ़िरक़े वारी को, आग लगायें.
प्रेम के दिये जलायें.
कपट की लपट बुझायें.
हैवानियत से दूर भागें. इन्सानियत के पास आयें.
भाई बंदी का नाता जोड़ें. इंसानों में नाम लिखायें.
————समता का झंडा उड़ायें.
————अमन की हवायें चलायें.
रीत रवाज की दीवारें तोड़ें. मोहब्बत के फाटक खोलें.
शैतानों पर लानत भेजें. इन्सानों का स्वागत करें.
घमंड के बल काटें. ग़रूर के बुत तोड़ें.
हठ धरमी के जाले काटें. अदावत के भूत भगायें
मत भेद का नाम मिटायें झूठे स्वार्थ के पास न फटकें.
शिष्टाचार को काम में लायें. उदारता को अपने अन्दर जगायें

اب کیا کریں ؟

(بھائي عبدالحلیم انصاري)

پچھلے گناھوں سے توبہ کریں . آگے ظلموں سے باز آئیں .
اپنی غلطیاں آپ مانیں . اپني شرمندگیاں آپ اُتھائیں .
اپے دامن کے دھبے دھوئیں . اپے ماتھے کے داغ متائیں .
غصے اپے ٹھنڈے کریں . ٹھنڈي میٹھی فضا بنائیں .
بدلے کی آگ بجھائیں .
فرقے واري کو آگ لگائیں .
پریم کے دئے جلائیں .
کپٹ کی لپٹ بجھائیں .
حیوانیت سے دور بھاگیں . اِنسانیت کے پاس آئیں .
بھائی بندی کا ناتا جوڑیں . اِنسانوں میں نام لکھائیں .
———— سمتا کا جھنڈا اُتھائیں .
————آمن کی ھوائیں چلائیں .
ریت رواج کی دیواریں توڑیں . محبت کے پھاٹک کھولیں .
شیطانوں پر لعنت بھیجیں . اِنسانوں کا سواگت کریں .
گھمنڈ کے بل کاٹیں . غرور کے بت توڑیں
ھٹھ دھرمی کے جالے کاٹیں . عداوت کے بھوت بھگائیں -
مت بھید کا نام مٹائیں . جھوٹے سوارتھ کے پاس نہ پھٹکیں .
ششٹا چار کو کام میں لائیں . اُدارتا کو اپنے اندر جگائیں .

फ़साद के बीज दिल में न उगायें.
वैरभाव की खिचड़ी दिमाग़ में न पकायें.
प्रेम का न्योता नगर नगर फैलायें.
प्रेम का शरबत घर घर पिलायें.
दामन से दामन बाँधें दिल से दिल जोड़ें.
——————और त्याग से मुंह न मोड़ें.
सीने से कीने को निकालें.
दिलों मे मैल,
——————और सियासत को न बनायें ख़ूनी खेल !
जम्हूरियत का ढिंडोरा पीट कर जम्हूरियत का मज़ाक़ न उड़ाये.
जनता के सेवक बनकर सेवा से जान न चुरायें—मुंह न छिपाये—बात न बनायें.
नेता हो कर हलकी बात न करें.
हलके होकर आदर्श न गिरायें.
एख़लाक़ का दामन थामें, ज़बान को लगाम दें.
आदर्श अपना ऊँचा उठायें——————और क़ौम का भी.
क़ौम को ज़िल्लत के दिन न दिखायें.
फ़िरक़ेवारी की बलायें टालें. रवादारी को घर घर बुलायें.
बरबरता से नाता तोड़ें. मानवता से नाता जोड़ें—इन्सानियत से रिश्ता लगायें.
मेल मिलाप की महफ़िल रचायें.
मेल मिलाप से घर घर सजायें.
इन्सान इन्सान को गले लगाये.

فساد کے بیج دل میں نہ اُگائیں ۔
بیربھاؤ کی کھچڑی دماغ میں نہ پکائیں ۔
پریم کا نیوتا نگر نگر پھیلائیں ۔
پریم کا شربت گھر گھر پلائیں ۔
دامن سے دامن باندھیں ۔ دل سے دل جوڑیں ۔
——————اور تیاگ سے منہ نہ موڑیں ۔
سینے سے کینے کو نکالیں ۔
دلوں سے میل'
——————اور سیاست کو نہ بنائیں خونی کھیل !
جمہوریت کا ڈھنڈورا پیٹ کر جمہوریت کا مذا نہق اُڑائیں ۔
جنتا کے سیوک بن کر سیوا سے جان نہ چرائیں——منہ نہ چھپائیں—بات نہ بنائیں ۔
نیتا ہوکر ہلکی بات نہ کریں ۔
ہلکے ہوکر آدرش نہ گرائیں ۔
اخلاق کا دامن تھا میں' زبان کو لگام دیں ۔
آدرش اپنا اونچا اُٹھائیں ——————اور قوم کا بھی ۔
قوم کو ذلت کے دن نہ دکھائیں ۔
فرقے واری کی بلائیں ٹالیں ۔ رواداری کو گھر گھر بلائیں ۔
بر برتا سے ناتا توڑیں ۔ مانوتا سے ناتا جوڑیں —— انسانیت سے رشتہ لگائیں ۔
میل ملاپ کی محفل رچائیں ۔
میل ملاپ سے گھر گھر سجائیں ۔
انسان انسان کو گلے لگائے ۔

मुहब्बत मुहब्बत को हार पिन्हाये.
मुहब्बत के राग गायें.
मुहब्बत की लहरें दौड़ायें.
मुहब्बत की दुनिया बसायें.
मुहब्बत की धूम मचायें.
इत्तिहाद के डंके पीटें.
सुलह का बिगुल बजायें.
अमन का पैग़ाम सुनायें.
एकता का पाठ पढ़ायें.
गंगा जमुनी जाम पियें.
गंगा जमुनी संगम बनायें.
गंगा जमुनी गीत गायें.
गंगा जमुनी ईद मनायें.
प्रेम को धरम जानें. धरम को प्रेम मानें.
सुख शान्ती इसी तरह हासिल होसकती है— और
अमन की जिंदगी बिताने का यही यही ढंग है.

محبت محبت کو ہار پنہائے ۔
محبت کے راگ گائیں ۔
محبت کی لہریں دوڑائیں ۔
محبت کی دنیا بسائیں ۔
محبت کی دھوم مچائیں ۔
اتحاد کے ڈنکے پیٹیں ۔
صلح کا بگل بجائیں ۔
امن کا پیغام سنائیں
ایکتا کا پاٹھ پڑھائیں ۔
گنگا جمنی جام پیئیں ۔
گنگا جمنی سنگم بنائیں ۔
گنگا جمنی گیت گائیں ۔
گنگا جمنی عید منائیں ۔
پریم کو دھرم جانیں ۔ دھرم کو پریم مانیں ۔
سکھ شانتی اسی طرح حاصل ہو سکتی ہے—اور
امن کی زندگی بتانے کا یہی ڈھنگ ہے ۔

पूरबी योरप के मुल्कों की आर्थिक हालत

(भाई ओंकार नाथ शास्त्री)

जब पिछली बड़ी लड़ाई हो रही थी तब रूस के योरोपी पड़ोसी देशों में लाल फ़ौज ने घुसकर वहाँ के बाग़ी मजदूरों को यह आशा दिलाई थी कि रूसी फ़ौजें तुम्हारी हिफ़ाजत के लिये आई हैं. उस की इस बात पर विश्वास कर के इन्क़लाबी मजदूरों ने इस विजयी फ़ौज का स्वागत किया. रूसी सरकार, जो मजदूर इन्क़लाब से डरती है, उस के सामने अपने मुल्की असर को फैलाने का ही ख़ास मक़सद था. इस लिये क़ब्ज़ा करने के बाद उस ने जायदादों को इन्क़लाबी ढंग से क़ौमी जायदाद बनाने की जगह धीरे धीरे सुधार का रास्ता अख़तियार किया. मजदूरों को इतमीनान दिलाने के ज़रिये कुछ करना जरूरी था, इस लिये जो कुछ किया गया वह नाकाफ़ी है. इस नीति का नतीजा यह हुआ कि अब भी यह मुल्क आर्थिक एतबार से सोवियत रूस और सरमाया दार मुल्कों के बीच में ही हैं. इस मजमून में हम उन मुल्कों की मौजूदा हालत पर विचार करेंगे. हम यह बतला देना चाहते हैं कि हम ने जो आँकड़े दिये हैं वह ज्यादातर कम्युनिस्ट पार्टियों के अख़बारों से लिये गये हैं. क्योंकि इन मुल्कों की असली हालत जानने के लिये दूसरा कोई ज़रिया नहीं है.

सिक्के का फैलाव

इन सभी मुल्कों में लड़ाई के बाद आम तौर पर सिक्कों का

پوربی یورپ کے ملکوں کی آرتھک حالت

(بھائی اونکار ناتھ شاستری)

جب پچھلی بڑی لڑائی ھو رھی تھی تب روس کے یوروپی پڑوسی دیشوں میں لال فوج نے گھس کر وھاں کے باغی مزدوروں کو یہ آشا دلائی تھی کہ روسی فوجیں تمہاری حفاظت کے لئے آئی ھیں . اس کی اس بات پر وشواس کرکے اِنقلابی مزدوروں نے اس وجئی فوج کا سواگت کیا . روسی سرکار' جو مزدور اِنقلاب سے ڈرتی ھے' اُسکے سامنے اپنے ملکی اثر کو پھیلانے کا ھی خاص مقصد تھا . اسلئے قبضہ کرنے کے بعد اس نے جائیدادوں کو انقلابی ڈھنگ سے قومی جائیداد بنانے کی جگہ دھیرے دھیرے سدھار کا راستہ اختیار کیا . مزدوروں کو اطمینان دلانے کے لئے کچھ کرنا ضروری تھا' اس لئے جو کچھ کیا گیا وہ ناکافی ھے . اس نیتی کا نتیجہ یہ ھوا کہ اب بھی یہ ملک آرتھک اعتبار سے سوویت روس اور سرمایہ‌دار ملکوں کے بیچ میں ھی ھیں . اس مضمون میں ھم ان ملکوں کی موجودہ حالت پر وچار کریں گے . ھم یہ بتلا دینا چاھتے ھیں کہ ھم نے جو آنکڑے دیئے ھیں وہ زیادہ تر کمیونسٹ پارٹیوں کے اخباروں سے لئے گئے ھیں کیونکہ ان ملکوں کی اصلی حالت جاننے کے لئے دوسرا کوئی ذریعہ نہیں ھے .

سکے کا پھیلاو .

اِن سبھی ملکوں میں لڑائی کے بعد عام طور پر سکوں کا

फैलाव बढ़ गया है. लड़ाई जब हो रही थी तभी बलग़ारिया. हंग्री. पोलैंड, चेकोसलोवाकिया और योगोस्लाविया में लड़ाई के सामान के ख़र्च और लूट की वजह से सिक्के के फैलाव के लच्छन साफ़ नज़र आने लगे थे.

नीचे के आंकड़ों से साफ़ पता चलता है कि जून सन् १९३९ई० की निस्बत दिसम्बर सन् ४५ ई० में इन देशों के सिक्कों मे कितनी बढ़ती होगई थी. सब आंकड़े लाखों में दिये गये है.

बलग़ारिया में सन् ३९ ई० में २८९१० लीवास थे जो सन् १९४५ ई० में बढ़कर ६९९२१० लीवास होगये. और हंग्री में जहाँ सन्' ३९ ई० में ८८५० मंगोस थे वहाँ सन्' ४५ में ७६५४४६० मंगोस होगये. पोलैंड में सन ३९ में १८४८० जलोटस थे और सन् ४५ में ३६३१९० जलोटस होगये और रोमानिया के सिक्के की तादाद सन्' ४९ में ३८६४३० से बढ़कर १२१२९२५० ली होगई. इसी तरह चेकोसलोवाकिया में हुआ यानी सन्' ३९ में वहाँ १४७४०० क्राउन्स थे लेकिन सन् ४५ में १२०००००० क्राउन्स होगये और योगोस्लाविया के सन् ३९ के ६९२१० दीनार बढ़कर सन् ४५ में ३५०००००० दीनार होगये.

लड़ाई के बाद के ज़माने में सिक्के का यह फैलाव बढ़ता ही गया. पोलैंड में दिसम्बर सन् ४५ ई० में २६·३१९ अरब जलोटस दिसम्बर सन् ४६ ई० में बढ़कर ६० अरब ६·६ करोड़ जलोटस होगये और दिसम्बर सन १९४७ ई० में में ९१·४८३ अरब जलोटस

پھیلاؤ بڑھگیا ہے . لڑائي جب ہو رہی تھی تبھي بلغاریا' ھنگري' ا پولینڈ' چیکوسلوواکیا اور یوگوسلاویہ میں لڑائي کے سامان کے خرچ اور لوٹ کی وجہ سے سکے کے پھیلاؤ کے لچھن صاف نظر انے لگے تھے .

نیچے کے آنکڑوں سے صاف پتہ چلتا ہے کہ جون سن ۳۹ع کی نسبت دسمبر سن ۴۵ع میں ان دیشوں کے سکوں میں کتني بڑھتي ہوگئی تھی . سب آنکڑے لاکھوں میں دیئے گئے ہیں.

بلغاریا میں سن ۳۹ع میں ۲۸۹۱۰ لیواس تھے جو سن ۴۵ع میں بڑھکر ۶۹۹۲۱۰ لیواس ہوگئے اور ھنگري میں جہاں سن ۳۹ع میں ۸۸۵۰ ملنگوس تھے وہاں سن ۴۵ع میں ۷۶۵۴۴۶۰ ملنگوس ہوگئے . ولینڈ میں سن ۳۹ میں ۱۸۴۸۰ جلوٹس تھے اور سن ۴۵ میں ۳۶۳۱۹۰ جلوٹس ہوگئے اور رومانیہ کے سکے کي تعداد سن ۴۹ میں ۳۸۱۴۳۰ سے بڑھکر ۱۲۱۲۹۲۵۰ لی ہوگئي . اسی طرح چیکوسلوواکیا میں ہوا یعني سن ۳۹ میں وہاں ۱۰۷۴۰۰ کراؤنس تھے لیکن سن ۴۵ میں ۱۲۰۰۰۰۰۰ کراؤنس ہوگئے اور یوگوسلاویا کے سن ۳۹ کے ۶۹۲۱۰ دینار بڑھکر ۳۵۰۰۰۰۰۰ دینار ہوگئے .

لڑائی کے بعد کے زمانے میں سکے کا یہ پھیلاؤ بڑھتا ہی گیا . پولینڈ میں دسمبر سن ۴۵ع میں ۲۶٫۳۱۹ ارب جلوٹس دسمبر سن ۴۶ع میں بڑھکر ۶۰ ارب ۶٫۶ کروڑ جلوٹس ہوگئے اور دسمبر

हंग्री में सिक्के का फैलाव तो इतना तेज़ हुआ कि उस क सामने जर्मनी का सन् २३ ई० का सिक्के का फैलाव भी मांद पड़गया.

रोमानिया की सरकार की बहुत कोशिशों के बावजूद चालू सिक्के (ली) की तादाद दिसम्बर सन् ४५ ई० में १२१२ अरब साढ़े ९२ करोड़ थी. लेकिन दिसम्बर सन् ४६ ई० में यह तादाद बढ़कर ६११७६०३ अरब ली होगई. सन् ४६ ई० के शुरू में चोर बाज़ार में एक डालर की क़ीमत ३० हज़ार ली थी जो सन्' ४७ के बीच में २० लाख ली होगई. १५ अगस्त सन् ४७ ई० में सिक्के के सुधार की एक कोशिश हुई जिस के मुताबिक़ २० हज़ार पुराने ली की क़ीमत एक ली करदी गई. इस पर भी सिक्के की बढ़ती नहीं रुकी. सन् ४७ ई० के आख़िर तक चालू सिक्के की तादाद बढ़कर २४५२६०००००० नया ली, जो पुराने ४९०७२००००००० ली के बराबर थी, होगई.

दूसरे मुल्कों में सिक्के की बढ़ती का नतीजा

यह न भूलना चाहिये कि कोई भी पूंजीवादी आर्थिक संकट दर असल पैदावार से सम्बंध रखने वाला आर्थिक संकट है. फिर भी जब यह आर्थिक संकट सिक्के की बढ़ती की शकल में ज़ाहिर होता है तब इस सिक्के की बढ़ती की बिना पर माली संकट के दूसरे लच्छनों को भी समझा जा सकता है. सिक्के की बढ़ती की वजह से क़ीमतों का बढ़ना, तनख़्वाह का कम होना, पैदावार की कमी, रोज़मर्रा की ज़रूरत की चीज़ों का न मिलना, सट्टे बाज़ी वग़ैरा

هنگری میں سکے کا پھیلاؤ تو اتنا تیز ہوا کہ اُس کے سامنے جرمنی کا سن ۲۳ع کا سکے کا پھیلاؤ بھی ماند پڑگیا .

رومانیہ کی سرکار کی بہت کوششوں کے باوجود چالو سکے (لی) کی تعداد دسمبر سن ۴۵ع میں ۱۲۱۲ ارب ساڑھے ۹۲ کروڑ تھی لیکن دسمبر سن ۴۶ع میں یہ تعداد بڑھکر ۶۱۱۷۶۰۳ ارب لی ہوگئی . سن ۴۶ع کے شروع میں چور بازار میں ایک ڈالر کی قیمت ۳۰ ہزار لی تھی جو سن ۴۷ع کے بیچ میں ۲۰ لاکھ لی ہوگئی . ۱۵ اگست سن ۴۷ع میں سکے کے سدھار کی ایک کوشش ہوئی جسکے مطابق ۲۰ ہزار پرانے لی کی قیمت ایک لی کردی گئی . اس پر بھی سکے کی بڑھتی نہیں رکی . سن ۴۷ع کے آخر تک چالو سکے کی تعداد بڑھکر ۲۴۵۲۶۰۰۰۰۰۰ نیا لی' جو پرانے ۴۹۰۷۲۰۰۰۰۰۰۰ لی کے برابر تھی' ہوگئی .

دوسرے ملکوں میں سکے کی بڑھتی کا نتیجہ —

یہ نہ بھولنا چاہئے کہ کوئی بھی پونجی وادی آرتھک سنکٹ دراصل پیداوار سے سمبندھ رکھنے والا آرتھک سنکٹ ہے . پھر بھی جب یہ آرتھک سنکٹ سکے کی بڑھتی کی شکل میں ظاہر ہوتا ہے تب اس سکے کی بڑھتی کی بنا پر مالی سنکٹ کے دوسرے لچھنوں کو بھی سمجھا جا سکتا ہے سکے کی بڑھتی کی وجہ سے قیمتوں کا بڑھنا' تنخواہ کا کم ہونا' پیداوار کی کمی' روز مرہ کی ضرورت کی چیزوں کا نہ ملنا' سٹے بازی وغیرہ

बुराइयों का जनम और उनकी तरक़्क़ी हुई. ख़ास कर पैदावार की हालत देखने लायक़ है :—

गल्ले की औसत पैदावार (हज़ार टनों में)

बलगारिया	हंग्री	पोलैन्ड	रोमानिया	चेकोसलोवाकिया	योगोस्लाविया
सन् १९३४—३८ ई०					
१७८७	२९१७	८५३१	३७४९	३१४७	२६३६
सन् १९४६ ई०					
१६६२	१५५१	३३२८	१६७१	२६३७	१९७३
सन् १९४७ ई०					
१४१७	१६९०	३४७८	१७५५	१७३२	२३००

चारे की औसत पैदावार

बलगारिया	हंग्री	पोलैन्ड	रोमानिया	चेकोसलोवाकिया	योगोस्लाविया
सन् १९३४—३८ ई०					
१२१५	३१८४	४०७६	६७७८	२५३७	५४०७
सन् १९४६ ई०					
७७५	२०13	१७७४	१५७२	१८८५	१९४९
सन् १९४७ ई०					
११८४	३०५०	२१२७	५०००	१६०२	४५९५

इस आम माली संकट को दूर करने के लिये स्टालिन की हिमायती पार्टी के लोगों ने तीन ख़ास तरीक़े अपनाये. सिक्का–सुधार,

برائیوں کا جلم اور اُن کی ترقی ھوئی . خاص کر پیداوار کی حالت دیکھنے لائق ھے :—

غلے کی اوسط پیداوار (ھزار ٹنوں میں)

بلغاریہ	ھنگری	پولینڈ	رومانیہ	چیکو سلو واکیا	یوگو سلاویہ
سن ۱۹۳۴–۳۸ع					
۱۷ ۰	۲۹۱۷	۸۵۳۱	۳۷۴۹	۳۱۴۷	۲۶۳۶
سن ۱۹۴۶ع					
۱۶۶۲	۱۵۵۱	۳۳۲۸	۱۶۷۱	۲۴۳۷	۱۹۷۳
سن ۱۹۴۷ع					
۱۳۱۷	۱۶۹۰	۳۳۷۸	۱۷۵۵	۱۷۳۲	۲۳۰۰

چارے کی اوسط پیداوار

بلغاریہ	ھنگری	پولینڈ	رومانیہ	چیکو سلو واکیا	یوگو سلاویہ
سن ۱۹۳۴–۳۸ع					
۱۲۱۵	۳۱۸۴	۴۰۷۶	۹۷۷۸	۲۵۳۷	۵۴۰۷
سن ۱۹۴۶ع					
۷۷۵	۲۰۱۳	۱۷۷۴	۱۵۷۲	۱۸۸۵	۱۹۴۹
سن ۱۹۴۷ع					
۱۱۸۴	۳۰۵۰	۲۱۲۷	۵۰۰۰	۱۹۰۲	۴۵۹۵

اس عام مالی سنکٹ کو دور کرنے کے لئے اسٹالن کی حمائتی پارٹی کے لوگوں نے تین خاص طریقے اپنائے . سکہ سدھار،

सिक्के का राष्ट्रीकरन (क़ौमियाना) और तामीरी योजना. यहाँ हर एक की तशरीह यानी व्याख्या जरूरी है.

१. सिक्के की तबदीली (करन्सी कन्वर्शन)

सिक्के की तबदीली ने योगोस्लाविया मे अप्रैल १९४५ में चलने वाले ३५० अरब दीनारों को घटा कर अगस्त १९४५ ई० में ६ अरब दीनार कर दिया. पहली अगस्त १९४६ को पेंगू नाम के पुराने सिक्के को खतम कर दिया गया और उसकी जगह सोरेन्ट को चला दिया. हंग्री के सिक्के की बढ़ती जर्मनी की सन २३ की सिक्के की बढ़ती से भी बढ़ गई थी. जर्मनी में मार्क की मामूली क़ीमत बीस चालीस मार्क फ़ी पौन्ड थी. जनवरी १९२३ में वह कम होकर ३३५० फ़ी पौन्ड और जुलाई तक ५० लाख फ़ी पौन्ड होगई थी. २३-२४ बरस तक यह हद बहुत ही अचरज में डालने वाली थी. मगर देखिये कि लड़ाई के बाद हंग्री के सिक्के की बढ़ती की हद, जब पेंगू को सोरेन्ट में बदला गया, तब इसकी दर थी एक सोरेन्ट = ४ अरब १० संख. इसका नतीजा अच्छा हुआ और महँगी घटी, जो लड़ाई के पहले की निस्बत २ या ढाई गुना रह गई. नया सिक्का मुस्तक़िल होगया. फिर भी पैदावार की बढ़ती के साथ सोरेन्ट का चलन बढ़ता गया, जो अगस्त सन् ४६ ई० के आख़ीर तक ९६.८ करोड़ सोरेन्ट और दिसम्बर १९४७ के आख़ीर तक १९८ करोड़ सोरेन्ट होगया.

(४४)

बलग़ारिया ने ७ मार्च सन् ४७ ई० को २००, ५००, १००० और ५००० लिवास के सभी नोटों और सरकारी दस्तावेज़ों (ट्रेज़री बान्ड्स) को वापस लेना शुरू किया. नतीजा यह हुआ कि लिवास

سکے کا راشٹری کرن (قومیانہ)آور تعمیری یوجنا . یہاں ھر ایک کی تشریح یعنی ویاکھیا ضروری ھے .

۱ – سکے کی تبدیلی (کرنسی کنورشن)

سکے کی تبدیلی نے یوگوسلاویہ میں اپریل ۱۹۴۵ع میں چلنے والے ۳۵۰ ارب دیناروں کو گھٹا کر اگست ۱۹۴۵ع میں ۶ ارب دینار کر دیا . پہلی اگست ۱۹۴۶ کو پینگو نام کے پرانے سکے کو ختم کردیا آور اُسکی جگہ پلورنٹ کو چلا دیا . ھنگری کے سکے کی بڑھتی جرمنی کی سن ۲۳ کی سکے کی بڑھتی سے بھی بڑھگئی تھی . جرمنی میں مارک کی معمولی قیمت بیس چالیس مارک فی پونڈ تھی . جنوری ۱۹۲۳ میں وہ کم ھوکر ۳۳۵۰ فی پونڈ آور جولائی تک ۵۰ لاکھ فی پونڈ ھوگئی تھی . ۲۳ – ۲۴ برس تک یہ حد بہت ھی اچرج میں ڈالنے والی تھی . مگر دیکھئے کہ لڑائی بعد ھنگری کے سکے کی بڑھتی کی حد ' جب پینگو کو پلورنٹ میں بدلا گیا ' تب اس کی در تھی ایک پلورنٹ = ۴ ارب ۱۰ سنکھ . اس کا نتیجہ اچھا ھوا اور مہنگی گھٹی ' جو لڑائی کے پہلے کی نسبت دو یا ڈھائی گنا رہ گئی. نیا سکہ مستقل ھوگیا . پھر بھی پیداوار کی بڑھتی کے ساتھ پلورنٹ کا چلن بڑھتا گیا جو اگست سن ۴۶ع کے آخیر تک ۹۶.۸ کروڑ پلورنٹ آور دسمبر سن ۴۷ کے آخیر تک ۱۹۸ کروڑ پلورنٹ ھوگیا .

(۴۴)

بلغاریہ نے ۷ مارچ سن ۴۷ع کو ۲۰۰ , ۵۰۰ , ۱۰۰۰ آور ۵۰۰۰ لیواس کے سبھی نوٹوں آور سرکاری دستاویزوں (ٹریزری بانڈس) کو واپس لینا شروع کیا . نتیجہ یہ ھوا کہ لیواس

की तादाद जो सन् ४६ ई० तक ७४२० करोड़ ६० लाख थी, सन् ४७ ई० के आखीर तक कम होकर ७२६८ करोड़ रह गई इस क़दम से कुछ फ़ायदा जरूर हुआ. बैंकों पर सरकार का पूरा क़ब्ज़ा होगया फिर भी यह काफ़ी नहीं था, मजदूरों की बहुत सी दिक़्क़तें फिर भी बाक़ी रह गईं.

२—राष्ट्रीकरन

पोलैन्ड, चेकोस्लोवाकिया और योगोस्लाविया में और इन से कुछ कम बलग़ारिया में सन् ४५-४६ मे राष्ट्री करन शुरू होता है. इस वक़्त इन मुल्कों में मजदूरों की बग़ावत के नतीजे में सरकारों को राष्ट्रीकरन करने में बहुत बड़ी मदद मिली. राष्ट्री करन को एक बड़ी मदद इस बात से मिली कि जर्मन मिलकियतो के मालिक भाग गये या ख़त्म कर दिये गये. इस के अलावा लड़ाई के पहले भी इन मुल्कों के आर्थिक ढाँचे में राज का काफ़ी अधिकार था और निस्बतन निजी पूंजी कमज़ोर थी. फिर भी राष्ट्री करन की पहली लहर ने व्योपार और बैंकों व सनअतों के ख़याल से बहुत कुछ निजी मिलकियतें बनी रहने दीं. जैसे चेकोस्लोवाकिया में सन् ४८ ई० तक २० फ़ीसदी सनअती पैदावार और उसी साल तक पौलैन्ड में ४० फ़ीसदी सनअती पैदावार जाती मिलकियत की शकल में थी. हंग्री में इस पैदावार के ८० फ़ीसदी मालिक निजी पूंजी वाले थे. बलग़ारिया में पूरा राष्ट्रीकरन ११ फ़ीसदी से ज्यादा नहीं था. जैसा कि साइरिल लेज़ोराव ने बलग़ारिया की कम्युनिस्ट पार्टी के परचेमें ३१ अकतूबर सन् ४८ ई० को लिखा था कि बावजूद इस के कि सरमायादार तबके को आर्थिक मैदान में हार खानी पड़ी, फिर भी

کی تعداد جو سن ۴۶ع تک ۷۴۲۰ کروڑ ۶۰ لاکھ تھی' سن ۴۷ع کے آخیر تک کم ہوکر ۷۲۶۸ کروڑ رہگئی . اس قدم سے کچھ فائدہ ضرور ہوا . بینکوں پر سرکار کا پورا قبضہ ہوگیا پھر بھی یہ کافی نہیں تھا ' مزدوروں کی بہت سی دقتیں پھر بھی باقی رہگئیں .

۲ — راشٹری کرن

پولینڈ' چیکوسلوواکیا اور یوگوسلاویہ میں اور ان سے کچھ کم بلغاریہ میں سن ۴۵-۴۶ میں راشٹری کرن شروع ہوتا ہے . اس وقت ان ملکوں میں مزدوروں کی بغاوت کے نتیجے میں سرکاروں کو راشٹری کرن کرنے میں بہت بڑی مدد ملی . راشٹری کرن کو ایک بڑی مدد اس بات سے ملی کہ جرمن ملکیتوں کے مالک بھاگ گئے یا ختم کر دیئے گئے . اس کے علاوہ لڑائی کے پہلے بھی ان ملکوں کے آرتھک ڈھانچے میں راج کا کافی ادھیکار تھا اور نسبتاً نجی پونجی کمزور تھی . پھر بھی راشٹری کرن کی پہلی لہر نے بیوپار اور بینکوں و صنعتوں کے خیال سے بہت کچھ نجی ملکیتیں بنی رہنے دیں . جیسے چیکوسلوواکیا میں سن ۴۸ع تک ۲۰ فیصدی صنعتی پیداوار اور اسی سال تک پولینڈ میں ۴۰ فیصدی صنعتی پیداوار ذاتی ملکیت کی شکل میں تھی . ہنگری میں اس پیداوار کے ۸۰ فیصدی مالک نجی پونجی والے تھے . بلغاریہ میں پورا راشٹری کرن ۱۱ فیصدی سے زیادہ نہیں تھا . جیسا کہ سائرل لیزوراو نے بلغاریہ کی کمیونسٹ پارٹی کے پرچے میں ۳۱ اکتوبر سن ۴۸ع کو لکھا تھا کہ باوجود اس کے کہ سرمایہ‌دار طبقے کو آرتھک میدان میں ہار کھانی پڑی' پھر بھی

मुल्क के आर्थिक जीवन में इसका रोब ग़ालिब रहा. रोमानिया में राष्ट्री बैंकों और कुछ लिमिटेड कम्पनियों के अलावा सारी मिलकियत निजी पूंजी की शक्ल में थी. इसके बाद सन् ४८ ई० में राष्ट्री करन की दूसरा लहर आई. अब अन्धाधुन्ध ग़ैरक़ानूनी राष्ट्री करन का बाज़ार गर्म हुआ इस तरह बलग़ारिया के ७००० कारखानो का राष्ट्रीकरन हुआ, जिन में ५०० ऐसे कारखाने थे, जहाँ ५० से ज़्यादा मज़दूर काम करते थे बाक़ी कारखाने छोटे थे. विदेशी पूंजीपतियों को मुआवज़ा दिया गया. केवल जर्मन सरमायादारों को मुआवज़ा नहीं दिया गया क्योंकि उन के सरमाया पर रूसियों ने क़ब्ज़ा कर लिया था. उन सरमायादारों को भी मुआवज़ा नहीं दिया गया जिन्हों ने पहली मार्च सन् ४१ ई० और सन् ४४ ई० के बीच अपने कारखाने दुशमनों के सुपुर्द कर दिये थे. अब बैंकों का भी राष्ट्री करन हुआ. नतीजा यह हुआ कि बलग़ारिया के थोक व्योपार का ६४ फ़ीसदी और फुटकर व्योपार का २२.२ फ़ीसदी राष्ट्री करन हो गया.

हंग्री में अप्रैल सन् ४८ ई० में पारलियामेन्ट ने सारी खानों, धात के कारखानों और बिजली घरों के राष्ट्री करन का क़ानून पास किया. जर्मन पूंजी के अलावा, जिसे सोवियत रूस ने ज़ब्त कर लिया था, वह सभी कारखाने, जिन में ५० फ़ीसदी तक विदेशी पूंजी लगी थी, राष्ट्रीकरन से बचे रहे. इस के ख़िलाफ़ बलग़ारिया में सभी देशी पूंजीपतियों को बिना शर्त मुआवज़ा दिये जाने का इन्तज़ाम किया गया. बैंकों का और लग भग २० फ़ीसदी थोक तिजारत [illegible] कि सनअतों में

ملک کے آرتھک جیون میں اس کا رعب غالب رہا . رومانیہ میں راشٹری بینکوں اور کچھ لمیٹڈ کمپنیوں کے علاوہ ساری ملکیت نجی پونجی کی شکل میں تھی . اسکے بعد سن ۴۸ء میں راشٹری کرن کی دوسری لہر آئی . اب اندھا دھند غیر قانونی راشٹری کرن کا بازار گرم ہوا . اس طرح بلغاریہ کے ۷۰۰۰ کارخانوں کا راشٹری کرن ہوا' جن میں ۵۰۰ ایسے کارخانے تھے' جہاں ۵۰ سے زیادہ مزدور کام کرتے تھے ' باقی کارخانے چھوٹے تھے . ودیشی پونجی پتیوں کو معاوضہ دیا گیا . کیول جرمن سرمایہ داروں کو معاوضہ نہیں دیا گیا کیونکہ ان کے سرمایہ پر روسیوں نے قبضہ کرلیا تھا . اُن سرمایہ داروں کو بھی معاوضہ نہیں دیا گیا جنھوں نے پہلی مارچ سن ۴۱ء اور سن ۴۴ء کے بیچ اپنے کارخانے دشمنوں کے سپرد کردیئے تھے . اب بینکوں کا بھی راشٹری کرن ہوا . نتیجہ یہ ہوا کہ بلغاریہ کے تھوک بیوپار کا ۶۴ فیصدی اور پھٹکر بیوپار کا ۲۲.۲ فیصدی راشٹری کرن ہوگیا .

ھنگری میں اپریل سن ۴۸ء میں پارلیامنٹ نے ساری کھانوں' دھات کے کارخانوں اور بجلی گھروں کے راشٹری کرن کا قانون پاس کیا . جرمن پونجی کے علاوہ' جسے سوویت روس نے ضبط کرلیا تھا' وہ سبھی کارخانے' جن میں ۵۰ فیصدی تک ودیشی پونجی لگی تھی' راشٹری کرن سے بچے رہے اسکے خلاف بلغاریہ میں سبھی دیشی پونجی پتیوں کو بنا شرط معاوضہ دیئے جانے کا انتظام کیا گیا . بینکوں کا اور لگ بھگ ۲۰ فیصدی تھوک تجارت کا بھی راشٹری کرن ہوا . نتیجہ یہ ہوا کہ صنعتوں میں

(२०) मंजिलें दूर हुई जाती हैं, हिम्मतें चूर हुई जाती हैं. 'उमर'

(२१) कुछ मेरी नजर ने उठके कहा कुछ उनकी नजर ने झुकके कहा
झगड़ा जो न चुकता बरसों में तै होगया बातों बातों में.
रजा

(२२) कमर बाँधे हुए चलने को याँ सब यार बैठे हैं
बहुत आगे गये बाक़ी जो हैं तैयार बैठे हैं. इन्शा

(२३) पत्ता पत्ता बूटा बूटा हाल हमारा जाने है
जाने न जाने गुल ही न जाने बाग़ तो सारा जाने है
मीर

(२४) ज़ुल्फ में फंस के 'फ़ुसूं' अब है यह वहशत कैसी
साँप जब काट चुका सीखने मन्तर बैठे. फ़ुसूं

(२५) 'फ़िराक़' तूही मुसाफ़िर है तूही मंजिल भी
किधर चला है मुहब्बत की चोट खाये हुए. लेखक

(२६) मैं जों मर जाऊँ तेरी जान से दूर
जाके रहियो न इस मकान से दूर.
मसनवी "ज़हरे इश्क़" मिर्ज़ा शौक़

(२७) रूह भटकेगी गर न पायेगी
ढूंढने किस तरफ़ को जायेगी.
मसनवी "ज़हरे इश्क़" मिर्ज़ा शौक़

(२८) ज़मीं पे नूर के पुतलों ने क्यों ढई दी है
कफ़न मिले तो समझना धनी थे क़िस्मत के. यगाना

(२९) पहाड़ काटने वाले ज़मीं से हार गये
इसी ज़मीन में दरिया समाये हैं क्या क्या. यगाना

(३०) साक़िया याँ चल रहा है चल चलाव

نیا هلد میں هلدی پریمیوں سے پوچھتا هوں

(۲۰) منزلیں دور هوئي جاتی هیں
همتیں چور هوئی جاتي هیں 'عمر'

(۲۱) کچھ میري نظر نے اُٹھہ کےکہا کچھ انکی نظر نے جھک کے کہا
جھگڑا جو نہ چکتا برسوں میں طے هوگیا باتوں باتوں میں
'رضا'

(۲۲) کمر باندھے هوئے چلنے کو یاں سب یار بیٹھے هیں
بہت آگے گئے باقي جو هیں تیار بیٹھے هیں 'انشا'

(۲۳) پتا پتا بوٹا بوٹا حال همارا جانے هے
جانے نہ جانے گل هی نہ جانےباغ توسارا جانےهے 'میر'

(۲۴) زلف میں پھنس کے فسوں اب هے یہ وحشت کیسی
سانپ جب کاٹ چکا سیکھنے منتر بیٹھے 'فسوں'

(۲۵) 'فراق' تو هي مسافر هے تو هي منزل بھی
کدھر چلا هے محبت کي چوٹ کھائے هوئے (لیکھک)

(۲۶) میں جو مرجاؤں تیري جان سے دور
جاکے رهیو نہ اس مکاں سے دور
'مثنوي زهر عشق' مرزا شوق

(۲۷) روح بھٹکے گي گر نہ پائے گی
ڈھونڈنے کس طرف کو جائیگی
مثنوی 'زهر عشق' مرزا شوق

(۲۸) زمیں پہ نور کے پتلوں نے کیوں ڈھئي دي هے
کفن ملے تو سمجھنا دهنی تھے قسمت کے 'یگانہ'

(۲۹) پہاڑ کاٹنے والے زمیں سے هار گئے
اسی زمین میں دریا سمائے هیں کیا کیا یگانہ

(۳۰) ساقیا یاں لگ رها هے چل چلاؤ

राष्ट्री करन की हद ७३·४ फ़ीसदी होगई. ज़ाती सरमाया सिर्फ़ १८·४ फ़ीसदी रह गया. पोलैन्ड के सन् ४७–४८ के सुधारों का नतीजा यह हुआ कि मुल्क के उद्योगों के ६० से ८० फ़ीसदी पर राज का अधिकार होगया. विदेशी ब्योपार भी अब १० या १५ फ़ीसदी से ज्यादा नहीं है. फुटकर ब्योपार में निजी ब्योपार का हिस्सा लग भग ७० फ़ीसदी है. १५ नवम्बर सन् ४८ के क़ानून ने बैंकों का पूरी तरह राष्ट्री करन कर दिया. अगरचे विदेशी ब्योपार के बैंक (बैंक आफ़ फ़ारेन कामर्स) में अब भी कुछ ज़ाती हिस्से (शेयर्स) हैं.

रूमानिया के ११ जुलाई सन् ४८ ई० के सुधार के मुताबिक़ ७०२ कारबारों का राष्ट्री करन हुआ जिस में वह सभी तेल की कम्पनियाँ, जिन में विदेशी पूंजी (सोवियत रूमानिया मिलीजुली कम्पनी के अलावा) लगी थी, ब्रिटिश ट्रस्ट के दो कारख़ाने, बैंक, बीमा कम्पनियाँ, रेलें. रेडियो और टेलीफ़ोन की कम्पनियाँ और जहाज़ी बेड़े शामिल थे. धात के उन सभी कारख़ानों का राष्ट्रीकरन होगया जिन में १०० से ज्यादा मजदूर काम करते थे. इस तरह बड़ी बड़ी सूती मिलों का भी राष्ट्री करन होगया. इन सब को मुआवज़ा देने का इन्तज़ाम किया गया. सिर्फ़ तोड़ फोड़ करने वालों और ग़ैर क़ानूनी ढंग से मुल्क छोड़ने वालों को कोई मुआवज़ा नहीं दिया गया.

चेकोस्लोवाकिया के सभी कारख़ानों और कारबारों का राष्ट्री-करन हुआ. बड़े ब्योपार सिर्फ़ ८ फ़ीसदी निजी पूंजी के रूप में रह गये हाँ, फुटकर तिजारत में निजी पूंजी का ही बोल बाला है.

راشٹری کرن کی حد ۷۳٫۴ فیصدی هوگئی . ذاتی سرمایه صرف ۱۸٫۴ فیصدی رهگیا . پولینڈ کے سن ۴۸–۴۷ کے سدهاروں کا نتیجه یه هوا که ملک کے اُدیوگوں کے ۶۰ سے اسی فیصدی پر راج کا ادهکار هوگیا . ودیشی بیوپار بهی اب دس یا پندرہ فیصدی سے زیادہ نهیں هے . پهٹکر بیوپار میں نجی بیوپار کا حصه لگ بهگ ۷۰ فیصدی هے . ۱۵ نومبر سن ۴۸ کے قانون نے بینکوں کا پوری طرح راشٹری کرن کردیا . اگرچه ودیشی بیوپار کے بینک (بینک آف فارن کامرس) میں اب بهی کچھ ذاتی حصے (شیئرس) هیں .

رومانیه کے ۱۱ جولائی سن ۴۸ع کے سدهار کے مطابق ۷۰۲ کاربارون کا راشٹری کرن هوا' جس میں وہ سبهی تیل کی کمپنیاں جن میں ودیشی پونجی (سوویت رومانیه ملی جلی کمپنی کے علاوہ) لگی تهی' برٹش ٹرسٹ کے دو کارخانے' بینک' بیمه کمپنیاں' ریلیں' ریڈیو اور ٹیلی فون کی کمپنیاں اور جهازی بیڑے شامل تهے . دهات کے اُن سبهی کارخانوں کا راشٹری کرن هوگیا جن میں ۱۰۰ سے زیادہ مزدور کم کرتے تهے . اسطرح بڑی بڑی سوتی ملیں کا بهی راشٹری کرن هوگیا . ان سب کو معاوضه دینے کا انتظام کیا گیا . صرف توڑ پهوڑ کرنے والوں اور غیر قانونی ڈهنگ سے ملک چهوڑنے والوں کو کوئی معاوضه نهیں دیا گیا .

چیکوسلواکیا کے سبهی کارخانوں اور کاربارون کا راشٹری کرن هوا . بڑے بیوپار صرف ۸ فیصدی نجی پونجی کے روپ میں رهگئے . هاں' پهٹکر تجارت میں نجی پونجی کا هی بول بالا هے .

(۲۳۷)

योगोस्लाविया के अप्रैल सन् ४८ ई० के क़ानून के मुताबिक ३१०० निजी पूंजी वाले कारख़ाने और कारबार जिस में ६५ छोटे कारखाने, २०० प्रेस, १०० सिनेमा, ३५० सेहत के मरकज़, अस्पताल, होटल, नहान घर वग़ैरा और ५० से ज़्यादा मुसाफ़िर ढोने वाले सभी जहाज़ राष्ट्री करन के ज़रिये सरकार के क़ब्ज़े में आगये. इन सबके मालिकों को मुआवज़ा दिये जाने का सरकारी दस्तावेज़ लिखा गया सभी थोक व्योपारों का भी राष्ट्री करन हुआ. खुलासा यह कि सन् ४७ ई० तक सिर्फ़ योगोस्लाविया में कारखानों के पूंजीपति मालिकों का खात्मा हो सका. यहाँ भी छोटे कारखाने निजी पूंजी के रूप में बने रहे. चेकोस्लोवाकिया और पोलैन्ड में छोटे कारखानों में अब भी निजी पूंजी का बोल बाला रहा. हंगरी में घात के धन्धों और कारखानों को छोड़ कर और जगहों में सरमायादार तबक़े की अहमियत बनी रही. व्योपारियों का क़रीब क़रीब सभी जगह पहले जैसा ही बोल बाला रहा.

योगोस्लाविया और बलग़ारिया में अब ज़्यादा फ़र्क़ दिखाई दे रहा है. यहाँ सनअती सरमायादारी के पूरे खात्मे के अलावा व्योपारियों के हाथों में भी छोटे मोटे फुटकर धन्धे रह गये हैं. मगर पोलैन्ड और चेकोस्लोवाकिया में यह बात नहीं है. यहाँ छोटे कारख़ाने और थोक तिजारत पूंजी पतियों ही के हाथ में है, जब कि फुटकर व्योपार भी क़रीब क़रीब उन्हीं के हाथ मे है.

३. योजनायें (स्कीमें)

राष्ट्रीकरन के साथ ही योजानायें भी चलती हैं. योजनाओं के सब से पहले एलान थे— पोलैन्ड की तीन साला योजना और

یوگوسلاویہ کے اپریل سن ۴۸ع کے قانون کے مطابق ۳۱۰۰ نجی، پونجی والے کارخانے اور کاربار جس میں ۶۵ چھوٹے کارخانے' ۲۰۰ پریس' ۱۰۰ سنیما' ۳۵۰ صحت کے مرکز' ہسپتال' ہوٹل' نہان گھر وغیرہ اور ۵۰ سے زیادہ مسافر ڈھونے والے سبھی جہاز راشٹری کرن کے ذریعے سرکار کے قبضے میں آگئے. ان سب کے مالکوں کو معاوضہ دیئے جانے کا سرکاری دستاویز لکھا گیا. سبھی تھوک بیوپاروں کا بھی راشٹری کرن ہوا. خلاصہ یہ کہ سن ۴۷ع تک صرف یوگوسلاویہ میں کارخانوں کے پونجی پتی مالکوں کا خاتمہ ہوسکا. یہاں بھی چھوٹے کارخانے نجی پونجی کے روپ میں بنے رہے. چیکوسلوواکیا اور پولینڈ میں چھوٹے کارخانوں میں اب بھی نجی پونجی کا بول بالا رہا. ہنگری میں دھات کے دھندوں اور کارخانوں کو چھوڑ کر اور جگہوں میں سرمایہ‌دار طبقے کی اہمیت بنی رہی. بیوپاریوں کا قریب قریب سبھی جگہ پہلے جیسا ہی بول بالا رہا.

یوگوسلاویہ اور بلغاریہ میں اب زیادہ فرق دکھائی دے رہا ہے. یہاں صنعتی سرمایہ‌داروں کے پورے خاتمے کے علاوہ بیوپاریوں کے ہاتھوں میں بھی چھوٹے موٹے پھٹکر دھندے رہگئے ہیں. مگر پولینڈ اور چیکوسلوواکیا میں یہ بات نہیں ہے. یہاں چھوٹے کارخانے اور تھوک تجارت پونجی پتیوں ہی کے ہاتھ میں ہے' جبکہ پھٹکر بیوپار بھی قریب قریب انہیں کے ہاتھ میں ہے.

۳—یوجنائیں (اسکیمیں)

راشٹری کرن کے ساتھ ہی یوجنائیں بھی چلتی ہیں. یوجناؤں کے سب سے پہلے اعلان تھے—پولینڈ کی تین سالہ یوجنا اور

चेकोस्लोवाकिया की दो साला योजना. इन दोनों पर जनवरी सन् ४७ ई० ही में अमल होना चाहिये था, मगर शुरू हुआ बहुत दिनों के बाद. बलगारिया की दो साला योजना पहली अप्रैल सन् ४७ ई० से चालू हुई. इसीतरह योगोस्लविया की पाँच साला योजना को २० अप्रैल सन् ४७ ई० से और हंग्री की तीन साला योजना को पहली अगस्त सन् ४७ ई० से चालू करने का एलान हुआ. सब के बाद २७ दिसम्बर सन् ४८ ई० को रोमानिया की एक साला योजना का एलान हुआ. इन सभी योजनाओं का मक़सद मुल्क को ज़्यादा से ज़्यादा सनअती बनाना, खेती बारी को तरक़्क़ी देना और मुल्क की आर्थिक उन्नति करना था. अब देखना है कि यह मक़सद कहाँ तक पूरे हो सके.

बलगारिया में सन् ४७ ई० तक ७७ फ़ीसदी योजनायें चालू होगईं. सन् ४८ ई० में इन पर कामयाबी से अमल हुआ और सन् ३८ ई० के मुक़ाबिले में पैदावार ७० फ़ीसदी बढ़ गई. लेकिन खेती में उम्मीद के मुताबिक़ कामयाबी नहीं हुई. १० अक्तूबर सन् ४८ ई० तक महज़ एक ज़िले में यह मक़सद सौ फ़ीसदी पूरा हुआ. १३ ज़िलों में ८० से ९० फ़सदी तक कामयाबी हुई मगर कई ज़िलों में ५० फ़ीसदी भी कामयाबी नहीं हुई.

हंग्री में सन् ४७ ई० में सनअती पैदावार में तरक़्क़ी हुई. लेकिन छोटे मोटे धन्धे पीछे रह गये मिसाल के लिये हंग्री ने जहाँ सन् ३८ ई० में ४७७ लाख जोड़े जूते तैयार किये थे वहाँ सन् ४७ ई० में महज़ २० लाख जोड़े जूते तैयार किये यही हालत कपड़े की पैदावार की हुई. लेकिन हंग्री में खेती की पैदावार में काफ़ी तरक़्क़ी हुई और इस ख़याल से इसे ख़ुशहाल कहा जायेगा.

چیکوسلوواکیا کي دو سالہ یوجنا . ان دونوں پر جنوری سن ۴۷ع ھی میں عمل ھونا چاھئیے تھا' مگر شروع ھوا بہت دنوں کے بعد . بلغاریہ کی دو سالہ یوجنا پہلی اپریل سن ۴۷ع سے چالو ھوئی . اسیطرح یوگوسلاویہ کی پانچ سالہ یوجنا کو ۲۰ اپریل سن ۴۷ع سے اور ھنگری کي ۳ سالہ یوجنا کو پہلی اگست سن ۴۷ع سے چالو کرنے کا اعلان ھوا . سب کے بعد ۲۷ دسمبر سن ۴۸ع کو رومانیہ کي ایک سالہ یوجنا کا اعلان ھوا . ان سبھي یوجناؤں کا مقصد ملک کو زیادہ سے زیادہ صنعتی بنانا' کھیتي باري کو ترقی دینا اور ملک کی آرتھک انتی کرنا تھا . اب دیکھنا ھے کہ یہ مقصد کہاں تک پورے ھوسکے .

بلغاریہ میں سن ۴۷ع تک ۷۷ فیصدی یوجنائیں چالو ھوگئیں . سن ۴۸ع میں ان پر کامیابی سے عمل ھوا اور سن ۳۸ع کے مقابلے میں پیداوار ۷۰ فیصدی بڑھگئی . لیکن کھیتی میں اُمید کے مطابق کامیابی نہیں ھوئی . ۱۰ اکتوبر سن ۴۸ع تک محض ایک ضلع میں یہ مقصد سو فیصدي پورا ھوا . ۱۳ ضلعوں میں ۸۰ سے ۹۰ فیصدی تک کامیابی ھوئی مگر کئي ضلعوں میں ۵۰ فیصدی بھی کامیابي نہیں ھوئی .

ھنگري میں سن ۴۷ع میں صنعتی پیداوار میں ترقی ھوئي لیکن چھوٹے موٹے دھندے پیچھے رھگئے . مثال کے لئے ھنگري نے جہاں سن ۳۸ع میں ۴۷۷ لاکھ جوڑے جوتے تیار کئے تھے وھاں سن ۴۷ع میں محض ۲۰ لاکھ جوڑے جوتے تیار کئے . یہی حالت کپڑے کی پیداوار کي ھوئي . لیکن ھنگری میں کھیتی کي پیداوار میں کافی ھوئی اور اس خیال سے اُسے خوشحال کہا جائیگا .

पोलैन्ड ने उद्योग धन्धों और खेती दोनों में काफ़ी तरक़्क़ी की. रूमानिया में इस योजना को किसी लिहाज़ से भी कामयाबी नहीं हासिल हुई. चेकोस्लोवाकिया सनअत के एतबार से पूरबी योरप के सभी देशों से आगे था लेकिन वहाँ भी इस योजना को कोई कामयाबी नहीं हुई बल्कि वहाँ बड़ा भयानक आर्थिक संकट पैदा होगया. हाँ योगोस्लविया मे टीटो ने इस योजना को बहुत मुस्तैदी और मज़बूती से कामयाब बनाया.

मुख़्तसर यह कि सनअती मैदान में क़रीब क़रीब सभी मुल्कों ने अपनी योजनाओं को कामयाबी से चलाया मगर खेती में सभी पीछे रहे. इस तरह हम कह सकते हैं कि अब तक हम ने जिन आर्थिक मामलों में इन मुल्कों की आर्थिक नीति पर ग़ौर किया है उन में यह बात साफ़ दिखाई पड़ती है कि सोवियत हामियों को जिस हद तक इन मुल्कों मे राष्ट्रीकरन और सुधार के कामों को बढ़ादेने के लिये मजबूर होना पड़ा है उस हद तक यह मुल्क तरक़्क़ी के रास्ते पर गये हैं. लेकिन जैसा कि मैं एक दूसरे लेख में दिखाऊँगा कि यह मुल्क अब भी पूंजी वादी मुल्कों और सोवियत रूस के मुख़्तलिफ़ आर्थिक असूलों के बीच में हैं और अकसर इन मुल्कों में सरमायादारी की पिछली हालत की तरफ़ वापस जाने का उस से भी ज़्यादा ख़तरा है, जितना ख़ुद सोवियत रूस में. और इन ख़तरों से उस वक़्त तक दुनिया को छुटकारा नहीं मिल सकता जब तक दुनिया भर में मज़दूर इन्क़लाब न हो.

پولینڈ نے اُدیوگ دھندوں اور کھیتی دونوں میں کافی ترقی کی۔ رومانیہ میں اس یوجنا کو کسی لحاظ سے بھی کامیابی نہیں حاصل ہوئی ۔ چیکوسلوواکیا صنعت کے اعتبار سے پوربی یورپ کے سبھی دیشوں سے آگے تھا لیکن وہاں بھی اس یوجنا کو کوئی کامیابی نہیں ہوئی بلکہ وہاں بڑا بھیانک آرتھک سنکٹ پیدا ہوگیا ۔ ہاں یوگوسلاویہ میں ٹیٹو نے اس یوجنا کو بہت مستعدی اور مضبوطی سے کامیاب بنایا ۔

مختصر یہ کہ صنعتی میدان میں قریب قریب سبھی ملکوں نے اپنی یوجناؤں کو کامیابی سے چلایا ۔ مگر کھیتی میں سبھی پیچھے رہے ۔ اس طرح ہم کہ سکتے ہیں کہ اب تک ہم نے جن آرتھک معاملوں میں ان ملکوں کی آرتھک نیتی پر غور کیا ہے اُن میں یہ بات صاف دکھائی پڑتی ہے کہ سوویت حامیوں کو جس حد تک ان ملکوں میں راشٹری کرن اور سدھار کے کاموں کو بڑھا دینے کے لئے مجبور ہونا پڑا ہے اُس حد تک یہ ملک ترقی کے راستے پر گئے ہیں ۔ لیکن جیسا کہ میں ایک دوسرے لیکھ میں دکھاؤں گا کہ یہ ملک اب بھی پونجی وادی ملکوں اور سوویت روس کے مختلف آرتھک اصولوں کے بیچ میں ہیں اور اکثر ان ملکوں میں سرمایہ‌داری کی پچھلی حالت کی طرف واپس جانے کا اُس سے بھی زیادہ خطرہ ہے جتنا خود سوویت روس میں اور ان خطروں سے اُس وقت تک دنیا کو چھٹکارا نہیں مل سکتا جب تک دنیا بھر میں مزدور انقلاب نہ ہو ۔

दान

(भाई भैरव प्रसाद गुप्त)

बहुत पुराने ज़माने की बात है. एक गाँव में एक साधू रहता था. अपनी छोटी सी झोंपड़ी में उसने ठाकुर जी की एक छोटी मूरत बैठा रखी थी. उसी मूरत की पूजा में वह अपने दिन बिता रहा था.

ठाकुर जी के भक्तों की कृपा से उसे रोज़ चार आने की आमदनी हो जाती थी. इसी से वह ठाकुर जी का भोग लगाता, प्रसाद बाँटता और ख़ुद भी प्रसाद पाता. कुछ ऐसी बात थी कि उसे रोज़ चार ही आने मिलते, न एक पैसा कम, न एक पैसा ज़्यादा. साधू बड़ा सन्तोषी था. चार आने में ही वह मज़े में गुज़र कर लेता था. उसे कभी कोई मुश्किल न होती थी.

दिन यों ही कटते जा रहे थे कि एक दिन एक ऐसी बात हो गई जिस से उस साधू का जीवन हमेशा के लिये धर्म संकट में पड़ गया.

शाम का वक़्त था. दाहिने हाथ में आरती की थाली लिये, बायें हाथ से घंटी टुनटुनाता साधू ठाकुर जी की आरती करता, भक्ति और श्रद्धा के नशे में झूम रहा था. पास ही कुछ भक्त लोग हाथ जोड़े खड़े थे. झोंपड़ी धूप और कपूर की ख़ुशबू से महक रही थी. भक्ति-रस में डूबी घंटी की टुनटुनाहट जैसे अमृत बरसा रही थी.

دان

(بھائی بھیرو پرساد گپت)

بہت پرانے زمانے کی بات ہے . ایک گاؤں میں ایک سادھو رھتا تھا . اپنی چھوٹی سی جھونپڑی میں اس نے ٹھاکر جی کی ایک چھوٹی مورت بیٹھا رکھی تھی . اُسي مورت کي پوجا میں وہ اپنے دن بتا رہا تھا .

ٹھاکر جی کے بھکتوں کی کرپا سے اسے روز چار آنے کی آمدنی ھوجاتی تھی . اسی سے وہ ٹھاکر جی کا بھوگ لگاتا، پرساد بانٹتا اور خود بھی پرساد پاتا . کچھ ایسی بات تھي کہ اسے روز چار ھی آنے ملتے، نہ ایک پیسہ کم، نہ ایک پیسہ زیادہ . سادھو بڑا سنتوشي تھا چار آنے میں ھی وہ مزے میں گذر کرلیتا تھا . اُسے کبھی کوئي مشکل نہ ھوتی تھی .

دن یوں ھي کٹتے جارہے تھے کہ ایکدن ایسی بات ھوگئی جس سے اس سادھو کا جیون ھمیشہ کے لئے دھرم سنکٹ میں پڑگیا .

شام کا وقت تھا . داھنے ھاتھ میں آرتي کی تھالی لئے بائیں ھاتھ سے گھنٹی ٹنٹناتا سادھو ٹھاکر جي کی آرتی کرتا، بھکتی اور شردھا کے نشے میں جھوم رھا تھا . پاس ھی کچھ بھکت لوگ ھاتھ جوڑے کھڑے تھے . جھونپڑی دھوپ اور کپور کی خوشبو سے مہک رھی تھی . بھکتی رس میں ڈوبی گھنٹی کی ٹنٹناھٹ جیسے امرت برسا رھی تھي .

पास से ही गुज़रते हुए एक सन्यासी ने घंटी का आवाज़ सुनी तो झोंपड़ी के सामने आकर वहाँ इकट्ठे हुए बच्चों के बीच हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया.

जय जय कार के साथ आरती खतम हुई. ठाकुर के चरणों में आरती की थाली रख कर साधू ने ठाकुर जी की अर्चना की. फिर भक्तों को प्रसाद और चरणामृत बाँट कर वह प्रसाद की थाली लिये बाहर खड़े हुए बाल गोपालों के बीच आ खड़ा हुआ.

ललचाई आँखों से साधू की ओर देखते हुए बालकों ने थाली की तरफ़ हाथ बढ़ा दिये. साधू ने थाली ऊँची कर के प्रसाद बाँटना शुरू कर दिया. सन्यासी एक ओर हट गया.

(२२६)

बच्चों को निबटाने के बाद साधू की नज़र सन्यासी पर पड़ी. उस ने उस का स्वागत 'जय ठकुर जी' कह कर किया. फिर वह उसे प्रसाद देने लगा तो सन्यासी बोला — "भगवन, पहले ज़रा पानी दें. हाथ-मुंह धोकर ही मैं प्रसाद पाऊँगा. बड़ी दूर से आ रहा हूँ."

"अच्छा, अच्छा!" बड़ी नम्रता से कह कर साधू झोंपड़ी के अन्दर चला गया और कमण्डल ला कर, पास ही पड़ी पटिया पर रखकर, सन्यासी से हाथ-मुंह धो लेने के लिये निवेदन किया.

सन्यासी जब प्रसाद पाने लगा तो साधू ने यों ही पूछा —"कहाँ से आना हो रहा है ठाकुर जी?"

"मैं काशी जी से आ रहा हूं. प्रयाग राज के माघ-मेले में जाने का विचार है." सन्यासी ने कहा.

پاس سے ہی گذرتے ہوئے ایک سنیاسی نے گھنٹی کی آواز سنی تو جھونپڑی کے سامنے آکر وہاں اکٹھے ہوئے بچوں کے بیچ ہاتھ جوڑ کر کھڑا ہوگیا ۔

جے جے کار کے ساتھ آرتی ختم ہوئی ۔ ٹھاکر کے چرنوں میں آرتی کی تھالی رکھکر سادھو نے ٹھاکر جی کی ارچنا کی ۔ پھر بھگتوں کو پرساد اور چرنا مرت بانٹ کر وہ پرساد کی تھالی لئے باہر کھڑے ہوئے بال گوپالوں کے بیچ آکھڑا ہوا ۔

للچائی آنکھوں سے سادھو کی اور دیکھتے ہوئے بالکوں نے تھالی کی طرف ہاتھ بڑھا دیئے ۔ سادھو نے تھالی اونچی کرکے پرساد بانٹنا شروع کردیا ۔ سنیاسی ایک اور ہٹ گیا ۔

بچوں کو نپٹانے کے بعد سادھو کی نظر سنیاسی پر پڑی ۔ اس نے اس کا سواگت 'جے ٹھاکر جی' کہکر کیا ۔ پھر وہ اسے پرساد دینے لگا تو سنیاسی بولا — "بھگون' پہلے ذرا پانی دیں ۔ ہاتھ منہ دھو کر ہی میں پرساد پاؤنگا ۔ بڑی دور سے آرہا ہوں ."

"اچھا' اچھا' !" بڑی نمرتا سے کہکر سادھو جھونپڑی کے اندر چلاگیا اور کمنڈل لاکر' پاس ہی پڑی پٹیا پر رکھکر' سنیاسی سے ہاتھ منہ دھو لینے کے لئے نویدن کیا ۔

سنیاسی جب پرساد پانے لگا تو سادھو نے یوں ہی پوچھا — "کہاں سے آنا ہو رہا ہے ٹھاکر جی ؟"

"میں کاشی جی سے آرہا ہوں ۔ پریاگ راج کے ماگھ میلے میں جانے کا وچار ہے ." سنیاسی نے کہا ۔

" अहो भाग्य कि आप के दर्शन हुए ! " साधू ने खुशी जाहिर करते हुए कहा.

" सब भगवान की महिमा है भगवन." सन्यासी ने कहा— " भण्डारे वंडारे का कुछ इन्तजाम हो सकेगा आपके यहाँ ? आप के ऐसे भक्त की संगत भाग्य से ही मिलती है. चलते-चलते थक भी बहुत गया हूं. अगर कुछ इन्तजाम हो जाता, तो रात आप के ठाकुर जी के चरणों में बिता कर, आप की संगत का लाभ-उठाता और सुबह होते ही चला जाता. "

साधू ने नम्रता से सिर झुका कर कहा— " ठाकुर जी की कृपा से जो भी साग–सतू मिल सकेगा, मैं आप की सेवा में ला रखूंगा. आपके सत्कार का यह मौक़ा मेरे लिये बड़े भाग्य की बात है. आप आराम करें, ठाकुर जी ! "

सन्यासी पटिया पर मृग छाला बिछा कर लेट गया. साधू उस के सत्कार की चिन्ता में झोपड़ी के अन्दर चला गया.

ठाकुर के चरणों में पड़ी हुई थाली में बिलकुल थोड़ा प्रसाद बच गया था. सन्यासी न होता तो साधू उसे ही खाकर अपनी रात काट लेता, लेकिन अब इतने ही प्रसाद से कैसे काम चलेगा ?

साधू को अपनी चिन्ता न थी. अगर यह प्रसाद सन्यासी के लिये काफ़ी होता तो वह यों ही बिना खाये सो रहता. लेकिन प्रसाद तो इतना कम था कि सन्यासी के सामने रखते भी उसे शर्म आती.

यही सब सोच कर वह झोंपड़ी के बाहर निकला और गाँव की ओर चल पड़ा, सोचा कि मुमकिन है ठाकुर जी का कोई भक्त इस मौके पर उस की मदद कर दे.

" اهو بھاگیہ کہ آپ کے درشن ہوئے ! " سادھو نے خوشي ظاهر کرتے ہوئے کہا ۔

" سب بھگوان کي ٘مہما ہے بھگون ." سنیاسی نے کہا — " بھنڈارے ونڈارے کا کچھ انتظام ہوسکے گا آپ کے یہاں ؟ آپ کے ایسے بھگت کي سنگت بھاگیہ سے هي ملتی ہے . چلتے چلتے تھک بھی بہت گیا ہوں . اگر کچھ انتظام ہو جاتا تو رات آپ کے تھاکر جي کے چرنوں میں بتاکر آپ کی سنگت کا لابھ اُتھاتا اور صبح ہوتے هي چلا جاتا ."

سادھو نے نمرتاسے سرجھکا کر کہا — " تھاکر جی کی کرپا سے جو بھی ساگ ستو مل سکے گا' میں آپ کی سیوا میں لارکھوں گا . آپ کے ستکار کا یہ موقعہ میرے لئے بڑے بھاگیہ کی بات ہے . آپ آرام کریں' تھاکر جي ! "

سنیاسی پٹیا پر مرگ چھالا بچھاکر لیٹ گیا . سادھو اس کے ستکار کی چنتا میں جھونپڑي کے اندر چلا گیا .

تھاکر کے چرنوں میں پڑی ہوئی تھالی میں بالکل تھوڑا پرساد بچ گیا تھا . سنیاسي نہ ہوتا' تو سادھو اُسے هي کھاکر اپنی رات کاٹ لیتا . لیکن اب اتنے هي پرساد سے کیسے کام چلے گا ؟

سادھو کو اپني چنتا نہ تھي اگر یہ پرساد سنیاسی کے لئے کافی ہوتا تو وہ یوں هی بنا کھائے سو رہتا . لیکن پرساد تو اتنا کم تھا کہ سنیاسي کے سامنے رکھتے بھی اُسے شرم آتی .

یہي سب سوچکر وہ جھونپڑی کے باهر نکلا اور گاؤں کی اور چل پڑا . سوچا کہ ممکن ہے تھاکر جي کا کوئی بھگت اس موقعہ پر اُسکي مدد کردے .

साधू कभी भी गाँव में नहीं जाता था, उस ने आज तक किसी से कुछ न माँगा था. आज भी शायद किसी के सामने हाथ फैलाने की जरूरत उसे न पड़े. ठाकुर जी की कृपा होगी तो सब आप ही हो जायगा. यही सोच कर वह गाँव में चक्कर लगाने लगा.

लोगों को उसे गाँव में देख कर अचरज हुआ. कई आदमियों ने पूछा भी कि बाबा ने आज कैसे तकलीफ़ की, लेकिन साधू के मुंह से जरूरत की बात न निकली. उस ने एक आदमी से भी खुल कर न कहा कि उसे कुछ सीधे (आटा, दाल. चावल) की जरूरत है, कोई भक्त कृपा कर दे.

फल यह हुआ कि जैसे वह गया था, वैसे ही उसे लौटना पड़ा. मन दुख से भरा हुआ था. कैसे वह अपने अतिथि का सत्कार करेगा ? क्या ठाकुर जी के सामने ही उन के भक्त की बेइज्जती होगी ? दुख और शर्म के मारे उसका बुरा हाल हो रहा था.

अपनी झोंपड़ी के पास पहुंचा ही था कि साधू की नजर पास की ही एक छोटी दुकान पर पड़ गई. उस ने मन में सोचा कि क्यों न वह बनिये की दुकान से सीधा उधार ले ले. ठाकुर जी के पुजारी पर क्या बनिया दो चार आने का भी विश्वास न करेगा ! यही सोच कर वह दुकान पर जा खड़ा हुआ.

गाहकों को निवटा कर बनिये की नजर साधू पर पड़ी. उसने कहा—" कैसे कृपा हुई बाबा ? "

" मेरे यहाँ आज एक सन्यासी अतिथि पधारे हैं. उन के लिये एक वक्त के सीधे की जरूरत है. क्या तुम उधार दे सकोगे ? मैं कल ही पैसे चुका दूँगा."

سادھو کبھی بھی گاؤں میں نہیں جاتا تھا . اُس نے آج تک کسی سے کچھ نہ مانگا تھا . آج بھی شاید کسی کے سامنے ھاتھ پھیلانے کی ضرورت اسے نہ پڑے . ٹھاکر جی کی کرپا ھوگی تو سب آپ ھی ھوجائیگا . یہی سوچ کر وہ گاؤں میں چکر لگانے لگا .

لوگوں کو اسے گاؤں میں دیکھکر اچرج ھوا . کئی آدمیوں نے پوچھا بھی کہ بابا نے آج کیسے تکلیف کی . لیکن سادھو کے منھ سے ضرورت کی بات نہ نکلی . اس نے ایک آدمی سے بھی کھلکر نہ کہا کہ اُسے کچھ سیدھے (آٹا دال' چاول) کی ضرورت ھے' کوئی بھگت کرپا کردے .

پھل یہ ھوا کہ جیسے وہ گیا تھا' ویسے ھی اُسے لوٹنا پڑا . من دکھ سے بھرا ھوا تھا . کیسے وہ اپنے اتتھی کا ستکار کریگا ؟ کیا ٹھاکرجی کے سامنے ھی ان کے بھگت کی بے عزتی ھوگی ؟ دکھ اور شرم کے مارے اس کا برا حال ھو رھا تھا .

اپنی جھونپڑی کے پاس پہونچا ھی تھا کہ سادھو کی نظر پاس کی ھی ایک چھوٹی دوکان پر پڑگئی . اس نے من میں سوچا کہ کیوں نہ وہ بنئے کی دوکان سے سیدھا اُدھار لےلے . ٹھاکر جی کے پجاری پر کیا بنیا دو چار آنے کا بھی وشواس نہ کریگا ! یہی سوچ کر وہ دوکان پر جا کھڑا ھوا .

گاھکوں کو نبٹا کر بنئے کی نظر سادھو پر پڑی . اس نے کہا — " کیسے کرپا ھوئی بابا ؟ "

" میرے یہاں آج ایک سنیاسی اتتھی پدھارے ھیں . انکے لئے ایک وقت کے سیدھے کی ضرورت ھے . کیا تم اُدھار دے سکوگے ؟ میں کل ھی پیسے چکاؤں گا . "

बनिये ने मरी आवाज़ में कहा —' उधार तो मैं किसी को देता नहीं, बाबा. लेकिन जब आप आये हैं तो देना ही पड़ेगा. मगर एक बात है." कुछ हिसाब जोड़ कर उसने कहा —" दो आने का सीधा होगा. जब तक आप दो आने चुका न देंगे, तब तक आप को इस का सूद दो आने रोज़ देना पड़ेगा. अरे हाँ. सूद आज ही से लगना शुरू हो जायगा. क्षमा करें, बाबा, हमें व्योपार चलाने के लिये ऐसा करना ही पड़ता है."

साधू ने सोचा, इसमें क्या बात है. कल तो वह चुका ही देगा. उस ने मान लिया.

(२५०)

रूमाल में सीधा बाँध कर. ख़ुश हो कर साधू अपनी झोंपड़ी में आया और सन्यासी के भण्डारे का इन्तज़ाम कर के उस ने आराम की साँस ली.

सन्यासी साधू को बहुत धन्यबाद दे कर चला गया. लेकिन साधू को वह जिस धर्म संकन में फँसा गया, उस से छुटकारा पाना साधू के लिके नामुमकिन हो गया. साधू की कुल आमदनी चार आने रोज़ाना की थी. किसी तरह कतर-ब्योंत कर के दो आने में ही ठाकुर जी के भोग का इन्तज़ाम उसने उस दिन किया. प्रसाद बाँट देने के बाद कुछ भी न बच पाया. मगर इसकी उसे चिन्ता न हुई. एक दिन का उपवास उस के लिये कोई कठिन बात न थी.

शाम की आरती के बाद वह बची हुई दुअन्नी लिये बनिये के यहाँ पहुंचा और उस के हाथ में दुअन्नी रख दी.

بنئے نے مری آواز میں کہا ـــ " اُدھار تو میں کسی کو دیتا نہیں بابا . لیکن جب آپ آئے ہیں تو دینا ہی پڑے گا . مگر ایک بات ہے . کچھ حساب جوڑ کر اُس نے کہا ـــ " دو آنے کا سیدھا ہوگا . جب تک آپ دو آنے چکا نہ دیںگے' تب تک آپ کو اس کا سود دوآنے روز دینا پڑےگا . ارے ہاں' سود آج ہی سے لگنا شروع ہو جائیگا . چھما کریں' بابا' ہمیں بیوپار چلانے کے لئے ایسا کرنا ہی پڑتا ہے ."

سادھو نے سوچا' اس میں کیا بات ہے . کل تو وہ چکا ہی دے گا . اُس نے مان لیا .

(۲۵۰)

رومال میں سیدھا باندھکر' خوش ہوکر سادھو اپنی جھونپڑی میں آیا اور سنیاسی کے بھنڈارے کا انتظام کرکے اُس نے آرام کی سانس لی .

سنیاسی سادھو کو بہت بہت دھنیہواد دیکر چلا گیا . لیکن سادھو کو وہ جس دھرم سنکٹ میں پھنسا گیا اُس سے چھٹکارا پانا سادھو کے لئے ناممکن ہوگیا . سادھو کی کل آمدنی چار آنے روز انہ کی تھی . کسی طرح کتر بیونت کرکے دو آنے میں ہی ٹھاکر جی کے بھوگ کا انتظام اُس نے اس دن کیا . پرساد بانٹ دینے کے بعد کچھ بھی نہ بچ پایا . مگر اسکی اسے چنتا نہ ہوئی . ایک دن کا اُپواس اس کے لئے کوئی کٹھن بات نہ تھی .

شام کی آرتی کے بعد وہ بچی ہوئی دوانی لئے بنئے کے یہاں پہنچا اور اس کے ہاتھ میں دوانی رکھدی .

बनिये ने दुअन्नी देख कर कहा — " बाबा, यह दुअन्नी तो सूद की हुई. मेरी उधार वाली दुअन्नी नहीं लाये क्या ? "

यह सुनकर साधू का दिमाग़ झनझना गया. ओह, यह बात तो उसके धयान में ही नहीं आई थी ! सँभल कर कहा —" उसका भी इन्तज़ाम हो जायगा. आज इतना ही मेरे पास है. "

" अच्छा, अच्छा ! " कह कर बनिये ने सिर हिला दिया.

साधू वहाँ से लौटा तो उसका सिर चिन्ता और दुख से भन्ना रहा था. वह बार बार क़र्ज़ चुकाने के बारे मे सोचता मगर किसी तरह हिसाब बैठता ही नहीं था. चार आने रोज़ की आमदनी. उस में से कम से कम दो आने ठ कुर जी के भोग में ख़र्च. बाक़ी दो आने में तो वह सूद की रक़म ही जमा कर पायेगा. असल क़र्ज़ तो हमेशा उस पर बना ही रहेगा. ओह, कैसे संकट में फँस गया !

फिर उसने सोचा, क्यों न एक दिन वह ठाकुर जी को भोग न लगाये और चारों आने बनिये को दे कर कर्ज़ से छुटकारा पा ले. मगर ठाकुरजी पुजारी के रहते हुए उपवास करें, यह बात वह कैसे बरदाश्त करता. फिर भोग न लगेगा तो भक्त लोग क्या कहेंगे. और फिर वह ठाकुरजी के लिये पैसा ही क्यों देंगे. नहीं, इससे तो मामला और भी चौपट हो जायगा भोग लगाना भी मुशिकल हो जायगा तब तो !

कोई चारा न था. रोज़ साधू बनिये को दो आने दे आता और असल दो आने के तक़ाज़े का भार सिर पर लिये बिना कुछ खाये सो जाता

بنئے نے دوانی دیکھ کر کہا — ''بابا' یہ دوانی تو سود کی ہوئی . میری ادھار والی دوانی نہیں لائے کیا ؟ ''

یہ سنکر سادھو کا دماغ جھنجھنا گیا . اوہ' یہ بات تو اس کے دھیان میں ھی نہیں آئی تھی ! سنبھلکر کہا — '' اُس کا انتظام ہوجائیگا . آج اتنا ھی میرے پاس ھے . ''

'' اچھا' اچھا ! '' کہکر بنئے نے سر ہلادیا .

سادھو وہاں سے لوٹا تو اس کا سر چنتا اور دکھ سے بھنا رھا تھا، وہ بار بار قرض چکانے کے بارے میں سوچتا مگر کسی طرح حساب بیٹھتا ھی نہیں تھا . چار آنے روز کی آمدنی . اس میں سے کم سے کم دوآنے ٹھاکر جی کے بھوگ میں خرچ . باقی دوآنے سے تو وہ سود کی رقم ھی جمع کر پائیگا . اصل قرض تو ہمیشہ اس پر بنا ھی رھیگا . اوہ' کیسے سنکٹ میں پھنس گیا !

پھر اس نے سوچا' کیوں نہ ایک دن وہ ٹھاکر جی کو بھوگ نہ لگائے اور چاروں آنے بنئے کو دیکر قرض سے چھٹکارا پالے . مگر ٹھاکر جی پجاری کے رہتے ہوئے اپواس کریں' یہ بات وہ کیسے برداشت کرتا . پھر بھوگ نہ لگے گا تو بھکت لوگ کیا کہیں گے . اور پھر وہ ٹھاکر جی کے لئے پیسہ ھی کیوں دیں گے . نہیں اس سے تو معاملہ اور بھی چوپٹ ہو جائیگا . بھوگ لگانا بھی مشکل ہوجائیگا تب تو !

کوئی چارہ نہ تھا . روز سادھو بنئے کو دو آنے دے آتا اور اصل دو آنے کے تقاضے کا بھار سر پر لئے بنا کچھ کھائے سو رھتا .

(३१) तमन्नाओं में उलझाया गया हूँ
खिलौने दे के फुसलाया गया हूँ. शाद

(३२) मत सहल हमें जानो फिरता है फ़लक बरसों
तब ख़ाक के पर्दे से इन्सान निकलते हैं. मीर

(३३) मौत एक गीत रात गाती थी
ज़िन्दगी झूम झूम जाती थी. लेखक

(३४) न समझोगे तो मिट जाओगे ए हिन्दोस्ताँ वालो
तुम्हारी दास्ताँ तक भी न होगी दास्तानों में. एक़बाल

(३५) पत्थर की मूरतों में कहता है तू ख़ुदा है
ख़ाके वतन का मुझको हर ज़र्रा देवता है.
"नया शिवाला" एक़बाल

(३६) भर आये फूल के आँसू पयामे शबनम से
कली का नन्हा सा दिल ख़ून हो गया ग़म से. एक़बाल

(३७ अब तो घबराके यह कहते हैं कि मर जायेंगे
मर के भी चैन न पाया तो किधर जायेंगे. ज़ौक़

(३८) आती हैं मद भरे सङ्गीत की लपटें साक़ी
आग आकाश के सीने में वह दहकाती हुई.
उङ्गलियाँ साज़ के पर्दों पे रवाँ हैं साक़ी
इस जवाँ रात के दिल की कसक उकसाती हुई.
(रैन सङ्गीत) लेखक

(३९) जनाज़ा क़ौम का घर से तेरे निकलता है
सुहाग हिन्द का तेरी चिता में जलता है.
(गोखले) चकबस्त

(४०) अगर नहाये तो अपने लहू की गङ्गा में
पढ़ी नमाज़ तो उजड़े घरों के सहरा में.
(दक्खिनी अफ़्रीक़ा) चकबस्त

(۳۱) تمناؤں میں الجھایا گیا ہوں
کھلونے دے کے پھسلایا گیا ہوں شاد

(۳۲) مت سہل ہمیں جانو پھرتا ہے فلک برسوں
تب خاک کے پردے سے انسان نکلتے ہیں میر

(۳۳) موت اک گیت رات گاتی تھی
زندگی جھوم جھوم جاتی تھی لیکھک

(۳۴) نہ سمجھوگے تو مٹ جاؤگے اے ہندوستاں والو
تمہاری داستاں تک بھی نہ ہوگی داستانوں میں اقبال

(۳۵) پتھر کی مورتوں میں کہتا ہے تو خدا ہے
خاک وطن کا مجھکو ہر ذرہ دیوتا ہے "نیا شوالہ" اقبال

(۳۶) بھر آئے پھول کے آنسو پیام شبنم سے
کلی کا ننھا سا دل خون ہوگیا غم سے اقبال

(۳۷) ابتو گھبرا کے یہ کہتے ہیں کہ مرجائینگے
مر کے بھی چین نہ پایا تو کدھر جائینگے ذوق

(۳۸) آتی ہیں مد بھرے سنگیت کی لپٹیں ساقی
آگ آکاش کے سینے میں وہ دہکاتی ہوئی
انگلیاں ساز کے پردوں پہ رواں ہیں ساقی
اس جواں رات کے دل کی کسک اُکساتی ہوئی
(رین سنگیت) لیکھک

(۳۹) جنازہ قوم کا گھر سے ترے نکلتا ہے
سہاگ ہند کا تیری چتا میں جلتاہے (گوکھلے) چکبست

(۴۰) اگر نہائے تو اپنے لہو کی گنگا میں
پڑھی نماز تو اُجڑے گھرونکے صحرا میں (دکھنی افریقہ)
چکبست

बिना खाये यों कई दिन बीत गये. चरणामृत और जल पर आख़िर वह कब तक टिका रहता. शरीर कमज़ोर हो गया. फिर भी वह अपने ठाकुरजी की पूजा-अर्चा करता, भोग लगाता, प्रसाद बाँटता और शाम को किसी तरह चल कर बनिये को दो आने सूद चुका आता.

धीरे धीरे उसकी तन्दुरुस्ती बहुत गिर गई. भक्तों ने देखा तो पूछा —"बाबा, आपको क्या हो गया है, जो यों दिन दिन सूखते जा रहे हैं ? क्यों नहीं किसी वेद को दिखा कर कुछ दवा दारू ले लेते. यों कब तक चल सकेंगे आप ? "

साधू ने ठाकुरजी की मूरत की ओर देख कर एक दर्द भरी मुस्कान होंठों पर ला कर कहा —" सब ठाकुरजी की कृपा है. उनकी जो इच्छा !

यों ही कुछ दिन और बीत गये. साधू अब बिलकुल निर्बल हो गया. उसे अपने मर जाने की चिन्ता न थी. चिन्ता थी सिर्फ़ इस बात की कि वह बनिये के क़र्ज़ का भार लिये ही न मर जाय. पहले उसे आशा थी कि ठाकुरजी की कृपा से एक न एक दिन वह इस कर्ज़ से ज़रूर छुटकारा पा जायगा. लेकिन अब वह आशा भी टूट गई. अब तो मौत उस के सामने नाचती हुई दिखाई देने लगी. आज नहीं तो कल, कल नहीं तो परसों वह ज़रूर मर जायगा. आह, जिस ने जीवन में कभी किसी का एहसान न लिया, आज वही क़र्ज़ का भार अपनी आत्मा पर लिये कैसे मर सकेगा.

कमज़ोरी के कारन वह बड़ी देर तक बेहोश पड़ा रहा होश आया तो किसी तरह उठा और ठाकुरजी की आरती की तैयारी की.

بنا کھائے یوں کئی دن بیت گئے ۔ چرنا مرت اور جل پر آخر وہ کب تک ٹکا رہتا ۔ شریر کمزور ہوگیا ۔ پھر بھی وہ اپنے ٹھاکرجی کی پوجا ارچا کرتا، بھوگ لگاتا، پرساد بانٹتا اور شام کو کسی طرح چل کر بنئے کو دوآنے سود چکا آتا ۔

دھیرے دھیرے اسکی تندرستی بہت گرگئی ۔ بھکتوں نے دیکھا تو پوچھا ۔ " بابا، آپ کو کیا ہوگیا ہے، جو یوں دن دن سکھتے جارہے ہیں ؟ کیوں نہیں کسی وید کو دکھاکر کچھ دوا دارو لے لیتے یوں کب تک چل سکیں گے آپ "

سادھو نے ٹھاکر جی کی مورت کی اور دیکھکر ایک درد بھری مسکان ہونٹھوں پر لاکر کہا ـــ " سب ٹھاکر جی کی کرپا ہے ۔ ان کی جو اچھا ! "

یوں ہی کچھ دن اور بیت گئے ۔ سادھو اب بالکل نربل ہو گیا ۔ اُسے اپنے مرجانے کی چنتا نہ تھی ۔ چنتا تھی صرف اس بات کی کہ وہ بنئے کے قرض کا بھار لئے ہی نہ مرجائے ۔ پہلے اُسے آشا تھی کہ ٹھاکر جی کی کرپا سے ایک نہ ایک دن وہ اِس قرض سے ضرور چھٹکارا پا جائیگا ۔ لیکن اب وہ آشا بھی ٹوٹ گئی ۔ اب تو موت اُسکے سامنے ناچتی ہوئی دکھائی دینے لگی ۔ آج نہیں تو کل، کل نہیں تو پرسوں وہ ضرور مرجائے گا ۔ آہ، جس نے جیون میں کبھی کسی کا احسان نہ لیا، آج وہی قرض کا بھار اپنی آتما پر لئے کیسے مرسکے گا ۔

کمزوری کے کارن وہ بڑی دیر تک بے ہوش پڑا رہا ۔ ہوش آیا [illegible] تیاری کی ۔

मूरत के सामने पता नहीं कहाँ से बल पा कर वह हाथ में आरती की थाली और घंटी लिये खड़ा था. भक्तों को लग रहा था कि आज साधू नहीं, बल्कि उसका भूत आरती कर रहा है. कई लोगों ने काना फूसी की कि बाबा आज ज़रूर मर जायगा.

आरती खतम हुई आज प्रसाद बाँटने की शक्ति भी साधू में न थी. उस के एक भक्त ने यह काम कर दिया. एक दूसरे भक्त ने आरती से पैसे निकाल कर, गिन कर साधू के हाथ में देते हुए कहा—"चार आने हैं, बाबा."

चार आने! हाँ, चार आने ही तो सदा से मिलते आये हैं. ज्यादा कैसे मिलते. तो आज भी जब साधू की आख़िरी घड़ी उस के सिर पर मँडला रही है, उसे चार आने ही मिले!

भक्त चले गये. साधू मुट्ठी में पैसे लिये ठाकुरजी के चरणों में थकावट की आखिरी हद पर पहुंच जाने वाले मुसाफिर की तरह बैठा ठाकुर का मुंह अपनी फटी आँखों से दिल में जाने कैसे कैसे भाव लिये देख रहा था.

आँसू की धारें बही जा रही थीं. मालूम होता था, जैसे ठाकुर के चरणों में बैठी करुणा की मूरत रो रही हो. साधू ने मुट्ठी खोल कर पैसे देखे. फिर एकाएक फूट पड़ा. दिल में कब की दबी चीख़ शिकायत की बेरोक धारा की तरह बह निकली. "ठाकुर. जीवन में मैंने तेरी पूजा और भक्ति के सिवा कुछ भी नहीं चाहा! तेरे ही चरणों की सेवा में मैंने पूरा जीवन बिता दिया. लेकिन तुझ से कभी भी कुछ भी न चाहा, न माँगा. मैं सोचता था कि तू अपने भक्त का कष्ट समझता है और कभी न कभी कृपा

مورت کے سامنے پتہ نہیں کہاں سے بل پاکر وہ ہاتھ میں آرتی کی تھالی اور گھنٹی لئے کھڑا تھا ۔ بھکتوں کو لگ رہا تھا کہ آج سادھو نہیں بلکہ اسکا بھوت آرتی کر رہا ہے ۔ کئی لوگوں نے کانا پھوسی کی کہ بابا آج ضرور مرجائیگا ۔

آرتی ختم ہوئی ۔ آج پرساد بانٹنے کی شکتی بھی سادھو میں نہ تھی ۔ اس کے ایک بھکت نے یہ کام کر دیا ۔ ایک دوسرے بھکت نے آرتی سے پیسے نکال کر گن کر سادھو کے ہاتھ میں دیتے ہوئے کہا—"چار آنے ہیں بابا ۔"

چار آنے ! ہاں' چار آنے ہی تو سدا سے ملتے آئے ہیں ۔ زیادہ کیسے ملتے ۔ تو آج بھی جب سادھو کی آخری گھڑی اس کے سر پر منڈلا رہی ہے' اسے چار آنے ہی ملے !

بھکت چلے گئے ۔ سادھو مٹھی میں پیسے لئے ٹھاکرجی کے چرنوں میں تھکاوٹ کی آخری حد پر پہنچ جانے والے مسافر کی طرح بیٹھا ٹھاکر کا منھ اپنی پھٹی آنکھوں سے دل میں جانے کیسے کیسے بھاو لئے دیکھ رہا تھا ۔

آنسو کی دھاریں بہی جا رہی تھیں ۔ معلوم ہوتا تھا جیسے ٹھاکر کے چرنوں میں بیٹھی کرونا کی مورت رو رہی ہو ۔ سادھو نے مٹھی کھول کر پیسے دیکھے ۔ پھر ایکا ایک پھوٹ پڑا ۔ دل میں کب کی دبی چیخ شکایت کی بے روک دھارا کی طرح بہہ نکلی. "ٹھاکر' جیون میں میں نے تیری پوجا اور بھکتی کے سوا کچھ بھی نہیں چاہا ! تیرے ہی چرنوں کی سیوا میں میں نے پورا جیون بتا دیا ۔ لیکن تجھ سے کبھی بھی کچھ نہ چاہا' نہ مانگا ۔ میں سوچتا تھا کہ تو اپنے بھکت کا کشٹ سمجھتا ہے اور کبھی نہ کبھی کرپا

कर के उसका निवारण करेगा ही. लेकिन आज मेरी आखिरी घड़ी आ गई और तू अब भी चुप है, जैसे कुछ हुआ हो नहीं. ठाकुर, तुझ से मेरी कोई शिकायत नहीं, लेकिन क्या तेरी मर्यादा को यह शोभा देता है कि तेरा एक पुजारी अपनी आत्मा पर कर्ज़ का लांछन लिये ही मर जाय. नहीं, नहीं ठाकुर. मेरे जीवन भर के पुन्य पर इस दो आने को क़र्ज़ का कलंक लगने से मेरी रक्षा कर ! " कह कर बेहद जोश के कारण उस ने मूरत के चरणों पर सिर पटक दिया. कमज़ोरी थी ही, सिर में चोट लगने से वह बेहोश हो गया.

वह इस बेहोशी की हालत में घंटों पड़ा रहा. यह हालत मौत के पहले की हालत थी. बुझने के पहले जैसे दिये की लौ भड़क उठती है, उसी तरह साधू की चेतना भी एक बार लौटी. उसकी डूबी हुई आत्मा की गहराइयों में भी जैसे वही क़र्ज़ की बात गूंज रही थी. उसने बँधी मुट्ठी की ओर एक बार पथराई आँखों से देखा और बड़बड़ाता हुआ उठ बैठा —" ठाकुर, तेरे भोग लगाने के वक़्त तक मैं ज़िन्दा न रहूँगा. यह चार आने बनिये को दे कर क़र्ज़ से छुटकारा पा कर ही मैं जीवन त्याग करूंगा. तेरे पुजारी ने कितने ही दिन उपवास किये ! आज एक वक़्त तू भी अपने पुजारी की मौत पर उपवास कर लेना ! " लेकिन अभी उठ भी न पाया था कि वह गिर पड़ा. पिंजड़े का आकुल पंछी उड़ गया.

आरती के समय भक्त लोग जब पहुँचे तो देखा, साधू ठाकुरजी के चरणों में मरा पड़ा था. उसके हाथ फैले हुए थे और एक की हथेली पर चार आने पैसे पड़े हुए थे गाँव भर में शोर हो गया कि बाबा मर गया. बनिये को जब खबर मिली तो वह अपनी स्त्री से

(१५६)

کرکے اُس کا نوارن کریگا هی۔ لیکن آج میري آخري گھڑي آگئي اور تو اب بھی چپ هے' جیسے کچھ هوا هی نهیں۔ تھاکر' تجھسے میري کوئي شکایت نهیں' لیکن کیا تیری مریادا کو یه شوبھا دیتا هے که تیرا ایک پجاری اپني آتما پر قرض کا لانچھن لئے هي مرجائے۔ نهیں' نهیں تھاکر' میرے جیون بھر کے پن پر اس دو آنے کے قرض کا کلنک لگنے سے میري رکشا کر!" کھکر بیحد جوش کے کارن اُس نے مورت کے چرنوں پر سر پٹک دیا۔ کمزوری تھي هي' سر میں چوٹ لگنے سے وہ بے هوش هو گیا۔

وہ اِس بیهوشي کي حالت میں گھنٹوں پڑا رها۔ یه حالت موت کے پهلے کي حالت تھي۔ بجھنے کے پهلے جیسے دیئے کي لو بھڑک اُٹھتي هے' اُسی طرح سادھو کي چیتنا بھي ایک بار لوٹي اُس کي ڈوبي هوئي آتما کي گهرائیوں میں بھی جیسے وهي قرض کي بات گونج رهی تھي۔ اُس نے بندھی مٹھی کی اور ایک بار پتھرائی آنکھوں سے دیکھا اور بڑ بڑاتا هوا اُٹھ بیٹھا— "تھاکر' تیرے بھوگ لگانے کے وقت تک میں زندہ نه رهوں گا۔ یه چار آنے بنئے کو دے کر' قرض سے چھٹکارا پاکر هی میں جیون تیاگ کروں گا۔ تیرے پجاري نے کتنے هی دن اُپواس کئے! آج ایک وقت تو بھی اپنے پجاري کی موت پر اپواس کر لینا!" لیکن ابھی اُٹھ بھی نه پایا تھا که-وہ گر پڑا۔ پنجرے کا آکل پنچھي اُڑ گیا۔

آرتي کے سمے بھکت لوگ جب پهونچے تو دیکھا' سادھو تھاکر جی کے چرنوں میں مرا پڑا تھا۔ اُس کے هاتھ پھیلے هوئے تھے اور ایک کي هتھیلی پر چار آنے پیسے پڑے هوئے تھے۔ گاؤں بھر میں شور هو گیا که بابا مرگیا۔ بنئے کو جب خبر ملی تو وہ اپنی استری سے

(١٥٦)

बोला— "सुना कुछ ? बाबा मर गया ! उन पर मेरे चार आने उधार रह गये. ज़रा दुकान पर तुम बैठो. देखूं, शायद कुछ हाथ लग जाय." कह कर वह साधू की झोंपड़ी की ओर दौड़ा.

साधू की झोंपड़ी में लोग चन्दा करके साधू के कफ़न वग़ैरा के इन्तज़ाम की बात तै कर रहे थे कि बनिया उनके पास आ खड़ा हुआ. बोला — "क्यों भाई, बाबा मर गये ?"

"हाँ, भाई." एक ने एक कहा — "ऐसा सच्चा साधू मैंने कहीं भी नहीं देखा ! ठाकुरजी की पूजा छोड़ कर इसने संसार की किसी बात से कोई मतलब नहीं रखा."

"ओफ़ !" बनिये के मुंह से निकल गया

"अब दुख करने से क्या होगा, भाई ?" उसी आदमी ने कहा.

"मुझे दुख इनके मरने का उतना नहीं है जितना इस बात का है कि इनके ज़िन्दा रहते ही मैं इन्हें क़र्ज़ से छुटकारा न दे सका. मेरे चार आने इन पर रह ही गये."

एक दूसरा आदमी, जो उनकी बात सुन रहा था, बोला — "अच्छा, तो आप के चार आने बाबा पर रह गये थे ? वही पैसे तो बाबा के हाथ में नहीं हैं. अब तो आप यह पैसे ले कर बाबा को मुक्त कर दें, नहीं तो इनका आत्मा क़र्ज़ के बन्धन में बंधी ही रहेगी."

बनिये ने देखा तो आँखें झपकाने लगा. जी मे आया कि पैसे ले ले, पर उस की हिम्मत उसका साथ न दे सकी. किसी शंका से वह कांप गया. आँखें उठीं तो ठाकुर पर जी नज़र पड़ गई. उसे ऐसा

بولا — ''سنا کچھ ؟ بابا مرگیا ! اُس پر میرے چار آنے اُدھار رہ گئے . ذرا دوکان پر تم بیٹھو . دیکھوں' شاید کچھ ھاتھ لگ جائے .'' کہکر وہ سادھو کي جھونپڑي کی اُور دوڑا .

سادھو کي جھونپڑی میں لوگ چندہ کرکے سادھو کے کفن وغیرہ کے انتظام کی بات طے کر رھے تھے کہ بنیا اُن کے پاس آ کھڑا ھوا . بولا — ''کیوں بھائی بابا مرگئے ؟''

''ھاں' بھائي .'' ایک نے کہا — ''ایسا سچا سادھو میں نے کہیں بھی نہیں دیکھا ! ٹھاکر جی کي پوجا چھوڑ کر اسنے سنسار کی کسی بات سے کوئي مطلب نہیں رکھا .'

''اُف ! ' بنئے کے منہ سے نکل گیا .

''اب دکھ کرنے سے کیا ھوگا بھائی ؟'' اُسی آدمی نے کہا .

''مجھے دکھ اِنکے مرنے کا اُتنا نہیں ھے جتنا اس بات کا ھے کہ اِن کے زندہ رھتے ھی میں اِنھیں قرض سے چھٹکارا نہ دے سکا . میرے چار آنے اِن پر رہ ھی گئے .''

ایک دوسرا آدمی' جو اُن کی بات سن رھا تھا' بولا — ''اچھا' تو آپ کے چار آنے بابا پر رہ گئے تھے ؟ وھی پیسے تو بابا کے ھاتھ میں نہیں ھیں . اب تو آپ یہ پیسے لے کر بابا کو مکت کردیں' نہیں تو اِن کي آتما قرض کے بندھن میں بندھي ھي رھے گی .''

بنئے نے دیکھا تو آنکھیں جھپکانے لگا . جی میں آیا کہ پیسے لے لے ' پر اُسکی ھمت اُسکا ساتھ نہ دے سکی . کسي شنکا سے وہ کانپ گیا . آنکھیں اُٹھیں تو ٹھاکرجي پر نظر پڑگئي . اُسے ایسا

मालूम हुआ जैसे ठाकुर की आँखों से कोप की अग्नि निकल रही हो. वह एक क़दम पीछे हट गया.

"क्यों, आप बाबा को मुक्त क्यों नहीं करते ?" उस आदमी ने कहा. बनिया सँभला. फिर ही-ही कर के बोला —"इन के कफ़न के लिये आप लोग चन्दे की बात कर रहे थे न, उसी में यह चार आने मेरी तरफ़ से भी दान ले लें ! ही ही..."

معلوم ہوا جیسے ٹھاکر کی آنکھوں سے کوپ کي اگنی نکل رہی ہو . وہ ایک قدم پیچھے ہٹ گیا .

"کیوں، آپ بابا کو مکت کیوں نہیں کرتے ؟" اُس آدمي نے کہا .

بنیا سنبھلا . پھر 'ہي ہي' کرکے بولا—"اِن کے کفن کے لئے آپ لوگ چندے کي بات کر رہے تھے نا' اُسي میں یہ چار آنے میري طرف سے بھی دان لے لیں ! ہی ہي......"

दुनिया की शान्ति के लिये अपील

(भाई श्रीकृष्णदास)

रूस के मशहूर लेखक ईलिया अहरेन बर्ग ने योरप और अमरीक के नावेल लिखने वालों और नाटक लिखने वालों से यह मांग की है कि वह उस सरकार का विरोध करें जो सब से पहले एटम बम इस्तेमाल करे. उन्हों ने जिन मशहूर लेखकों से अपील की है उन में से कुछ के नाम यह हैं—जे. बी. प्रिस्टले, अर्निस्ट हेमिंगवे, जान स्टीन वेक, जीन रिचर्ड ब्लाक, अलबर्टो मुराविया, आँद्रे शैमजाँ और मार्टिन लुगार्ड. योरप और अमरीका ही नहीं, सारी दुनिया में यह लेखक और पत्र कार अपने शान्ति वादी विचारों के लिये मशहूर हैं. पिछले हिटलरी दौर में इन्हों ने आइन्स्टीन के कन्धे से कन्धा मिला कर हिटलर शाही का विरोध किया था. यह लेखक, पत्रकार' साइन्स के विद्वान और दुनिया की रहनुमाई करने वाले विचारकहैं अपनी हिम्मत, बहादुरी और शान्ति प्रेम का सबूत बार बार दे चुके हैं. इन के बारे में यह नहीं कहा जासकता कि यह सब के सब कम्युनिस्ट हैं और हर तरह से यह लोग सोवियत रूस की पालिसी से बंधे हुए हैं. योरप और अमरीका में इन लोगों की कितनी इज्जत यह कौन नहीं जानता. इन के नाम इलिया अहरेन बर्ग ने अपील शाया कर के योरप और अमरीका ही नहीं सारी दुनिया के लेखक विचारकों, शान्ति प्रेमियों और आजादी और भाई चारे के बच

دنیا کی شانتی کے لئے اپیل

(بھائی شری کرشن داس)

روس کے مشہور لیکھک ایلیا اھرن برگ نے یورپ آور امریکہ کے ناول لکھنے والوں آور ناٹک لکھنے والوں سے یہ مانگ کی ھے کہ وہ اُس سرکار کا ورودھ کریں جو سب سے پہلے ایٹم بم استعمال کرے ۔ اُنھوں نے جن مشہور لیکھکوں سے اپیل کی ھے اُن میں سے کچھ کے نام یہ ھیں—جے ۔ بی ۔ پریسٹلے' آرنیسٹ ھیملگوے' جان اسٹین بیک' جین ریچرڈ بلاک' البرٹو موراویا' آندرےشیمژاں اور مارٹن لوگارڈ ۔ یورپ اور امریکہ ھي نہیں' ساري دنیا میں یہ لیکھک اور پترکار اپنے شانتی وادي وچاروں کے لئے مشہور ھیں ۔ پچھلے ھٹلري دور میں انھوں نے آئنسٹین کے کندھے سے کندھا ملاکر ھٹلر شاھی کا ورودھ کیا تھا ۔ یہ لیکھک' پترکار' سائنس کے ودوان آور دنیا کی رھنمائي کرنے والے وچارک اپني ھمت' بہادری آور شانتی پریم کا ثبوت بار بار دے چکے ھیں ۔ ان کے بارے میں یہ نہیں کہا جا سکتا کہ یہ سب کے سب کمیونسٹ ھیں آور ھر طرح سے یہ لوگ سوویت روس کی پالیسی سے بندھے ھوے ھیں ۔ یورپ اور امریکہ میں ان لوگوں کی کتنی عزت ھے یہ کون نہیں جانتا ۔ ان کے نام ایلیا اھرن برگ نے اپیل شایع کرکے یورپ آور امریکہ ھی نہیں' ساری دنیا کے لیکھکوں' وچارکوں' شانتي پریمیوں آور آزادی آور بھائی چارے کے

अलमबरदारों को एक चुनौती दी है. यह चुनौती इलिया अहरेन बर्ग की नहीं बल्कि उस जनता की है जो शान्ति चाहती है, अमन चाहती है, मेल मोहब्बत के साथ रहना चाहती है.

जे. बी. प्रिस्टले के पास इलिया अहरेन बर्ग ने लिखा है—" यह सच है कि मैं इस बात की गारन्टी नहीं देसकता कि एक अपील से ही बदकार लोग अपनी हरकत से बाज़ आजायेंगे. मगर मैं आप को यह यक़ीन दिला सकता हूँ कि अगर आप एटम बम का खुल्लम खुल्ला विरोध नहीं करते और हमारी अपील पर दस्तख़त नहीं करते तो मासको, लन्दन और न्यूयार्क में बसने वाले आप के पाठक आप को माफ़ न कर सकेंगे. "

योरप के सभी लेखकों से अपील करते हुए अहरेन बर्ग ने कहा है—" मै नहीं कहता कि आप मेरे विचारों को — राजनीतिक या ज़िन्दगी की ख़ूबसूरती से सम्बन्ध रखने वाले विचारों को—स्वीकार करलें. मै यह भी नहीं कहता कि आप किसी एक राजनीतिक पार्टी के ख़िलाफ़ दूसरी राजनीतिक पार्टी का, या एक राज के ख़िलाफ़ दूसरे राज का साथ दें. मैं यह नहीं कहता कि इस या उस सरकार को उस के घरेलू या विदेशी नीति के लिये बुरा भला कहें.

" मैं तो सिर्फ़ यह चाहता हूँ कि आप उस सरकार को बुरा भला कहें जो सब से पहले किसी देश की जनता पर एटम बम गिराती है. "

इलिया अहरेन बर्ग की यह अपील इतनी साफ़, ज़ोरदार और पुरमानी है कि उसे अनसुनी नहीं किया जा सकता. क्यों कि उसे

علم برداروں کو ایک چنوتی دی ھے. یہ چنوتی ایلیا اھرنبرگ کی نہیں بلکہ اُس جنتا کی ھے جو شانتي چاھتي ھے' امن چاھتی ھے میل محبت کے ساتھ' رھنا چاھتی ھے .

جے . بی . پریسٹلے کے پاس ایلیا اھرن برگ نے لکھا ھے — " یہ سچ ھے کہ میں اِس بات کي گارنٹی نہیں دے سکتا کہ ایک اپیل سے ھی بدکار لوگ اپنی حرکت سے باز آجائیں گے . مگر میں آپ کو یہ یقین دلا سکتا ھوں کہ اگر آپ ایٹم بم کا کھلم کھلا وروده نہیں کرتے اور ھماری اپیل پر دستخط نہیں کرتے تو ماسکو' لندن اور نیویارک میں بسنے والے آپ کے پاٹھک آپ کو معاف نہ کرسکیں گے ."

یورپ کے سبھی لیکھکوں سے اپیل کرتے ھوئے اھرن برگ نے کہا ھے —"میں نہیں کہتا کہ آپ میرے وچاروں کو—راج نیتک یا زندگی کی خوبصورتي سے سمبندھ رکھنے والے وچاروں کو سویکار کرلیں . میں یہ بھی نہیں کہتا کہ آپ کسی ایک راج نیتک پارٹی کے خلاف دوسری راج نیتک پارٹی کا' یا ایک راج کے خلاف دوسرے کا ساتھ دیں . میں یہ نہیں کہتا کہ اس یا اُس سرکار کو اُسکے گھریلو یا ودیشی نیتی کے لئے برا بھلا کہیں ."

"میں تو صرف یہ چاھتا ھوں کہ آپ اُس سرکار کو برا بھلا کہیں جو سب سے پہلے کسی دیش کی جنتا پر ایٹم بم گراتی ھے ."

ایلیا اھرن برگ کی یہ اپیل اتنی صاف' زوردار اور پر معنی ھے کہ اُسے اَن سنی نہیں کیا جاسکتا . کیونکہ

अन-सुनी करना और उस भयानक घड़ी की ओर से आँखे बन्द कर लेना जो कि धीरे धीरे नज़दीक आती जारही है.

ऐसे समय जब कि सियासत और ब्योपार के मैदान में एक दूसरे का गला घोटने के लिये, एक दूसरे को पीस डालने के लिये कोशिशें चल रही हों, जब कि मज़हब, कलचर, सभ्यता और इन्सानियत का नाम लड़ाई और एटम को सही साबित करने के लिये इस्तेमाल किया जा रहा हो, जब कि सारी दुनिया की शान्ति-प्रेमी जनता के हितों की तरफ से आँख बन्द करके सिर्फ मुनाफ़ाख़ोरी और राज बढ़ाने के सपने को पूरा करने के लिये हर बेजा, ख़ूंख़्वार और वहशियाना ढंग अपनाने की पूरी तैयारी की जारही हो, इलिया अहरेन बर्ग की यह अपील ख़तरे की घण्टी और शान्ति की बंसी की तरह हमारे कानों में सुनाई देती है.

ख़तरे की घण्टी और शान्ति की बंसी! हाँ, हाँ दोनों एक साथ सुनाई देता हैं. महात्मा गांधी की हर आवाज़, हर तम्बीह, हर चेतावनी इसी तरह ख़तरे की घण्टी और शान्ति की बंसी थी! यह आगाही, यह चेतावनी और यह मांग जो कि इलिया अहरेन बर्ग के ज़रिये उठाई गई है, उस घण्टी की तरह है जो हमारे बहरे कानों को उस भयानक चीख़ पुकार की याद दिलाती है जो लड़ाई और एटम बम का लाज़िमी नतीजा है. साथ ही, यह उस बंसी की तरह भी है जिस की मीठी सुरीली आवाज़ हमारे थके, परेशान दिलों को ज़िन्दगी, आशा और सन्तोष देती है, शर्त यह है कि हम अपने कान के परदों को खोल कर उसे सुनने की कोशिश करने लगें. जब हम ने महात्मा गांधी की आवाज़ वक़्त रहते सुन ली

ان سنی کرنا اور اس بھیانک گھڑی کی اور سے آنکھیں بند کرلینا جو کہ دھیرے دھیرے جو نزدیک آتی جارہی ہے۔

ایسے سمے جب کہ سیاست اور بیوپار کے میدان میں ایک دوسرے کا گلا گھونٹنے کے لئے، ایک دوسرے کو پیس ڈالنے کے لئے کوششیں چل رہی ہوں، جب کہ مذہب، کلچر، سبھیتا اور انسانیت کا نام لڑائی اور ایٹم کو سہی ثابت کرنے کے لئے استعمال کیا جارہا ہو جب کہ ساری دنیا کی شانتی پریمی جنتا کے ہتوں کی طرف سے آنکھ بند کرکے صرف منافع خوری اور راج بڑھانے کے سپنے کو پورا کرنے کے لئے ہر بیجا خونخوار اور وحشیانہ ڈھنگ اپنانے کی پوری تیاری کی جارہی ہو، ایلیا اہرن برگ کی یہ اپیل خطرے کی گھنٹی اور شانتی کی بنسی کی طرح ہمارے کانوں میں سنائی دیتی ہے۔

خطرے کی گھنٹی اور شانتی کی بنسی! ہاں، ہاں، دونوں ایک ساتھ سنائی دیتی ہیں۔ مہاتما گاندھی کی ہر آواز، ہر تنبیہ، ہر چیتاونی اسی طرح خطرے کی گھنٹی اور شانتی کی بنسی تھی! یہ آگاہی، یہ چیتاونی اور یہ مانگ جو کہ ایلیا اہرن برگ کے ذریعے اٹھائی گئی ہے، اس گھنٹی کی طرح ہے جو ہمارے بہرے کانوں کو اس بھیانک چیخ پکار کی یاد دلاتی ہے جو لڑائی اور ایٹم بم کا لازمی نتیجہ ہے۔ ساتھ ہی، یہ اس بنسی کی طرح بھی ہے جس کی میٹھی سریلی آواز ہمارے تھکے، پریشان دلوں کو زندگی، آشا اور سنتوش دیتی ہے۔ شرط یہ ہے کہ ہم اپنے کان کے پردوں کو کھول کر اسے سننے کی کوشش کرنے لگیں۔ جب ہم نے مہاتما گاندھی کی آواز وقت رہتے سن لی

तो वह आवाज़ बंसी की सुरीली आवाज़ साबित हुई और जब भी हम ने उसे अनसुनी किया, वह ख़तरे की घण्टी बन गई. गांधीजी की आवाज़ आगाही और चेतावनी के साथ ही प्रेम और ज़िन्दगी की भी, शान्ति और भाई चारे की भी आवाज़ रहा करती थी. इलिया अहरेन बर्ग की इस अपील में हमें उस सन्यासी की सुरीली आवाज़ की झनकार सुनाई देती है जो बम के धड़ाकों के तले दब जायगी अगर हम ने उसके साथ अपनी आवाज़ भी न मिला दी.

स्टाकहोम में होने वाली विश्वशान्ति कांग्रेस की स्टैंडिंग कमेटी की सत्तरहवीं बैठक को मुख़ातिब करते हुए इलिया एहरेन बर्ग ने कहा था :—

पेरिस कांग्रेस को हुए एक साल गुज़र चुका है. शान्ति की ताक़तें बढ़ चुकी हैं. वह इतनी ज़्यादा बढ़ और फैल चुकी हैं कि जंग चाहने वालों को अपनी धोखाधड़ी और हिन्सा में कई गुनी बढ़ती करनी पड़ी है. लेकिन शान्ति की ताक़तें अभी इतनी ज़्यादा मज़बूत नहीं हो पाई हैं कि लड़ाई के पुजारियों को अपनी हिंसात्मक योजनायें बन्द करने के लिये मजबूर किया जासके.

हम अब शान्ति के महान संघर्ष के आख़िरी दौर में पहुंच चुके हैं. हमारी सन्तानें या तो इस कामयाब संघर्ष के लिये हमें दुआयें देंगी या हमारी नाकाम कोशिशों को कोसती रहेंगी. इस संघर्ष का नतीजा अब हम पर मुनहसर है. आदत, आत्म संतोष यानी ख़ुद इतमीनानी और हलकेपन का ख़तरा बहुत बड़ा ख़तरा है. ख़तरा इस बात का है कि [illegible]

تو وہ آواز بنسی کی سریلی آواز ثابت ہوئی اور جب بھی ہم نے اسے ان سنی کیا' وہ خطرے کی گھنٹی بن گئی ۔ گاندھی جی کی آواز آگاہی اور چیتاونی کے ساتھ ہی پریم اور زندگی کی بھی' شانتی اور بھائی چارے کی بھی آواز رہا کرتی تھی ۔ ایلیا اہرن برگ کی اس اپیل میں ہمیں اس سنیاسی کی سریلی آواز کی جھنکار سنائی دیتی ہے جو بم کے دھڑاکوں کے تلے دب جائیگی اگر ہم نے اس کے ساتھ اپنی آواز بھی نہ ملا دی ۔

اسٹاک ہوم میں ہونے والی وشوشانتی کانگریس کی اسٹینڈنگ کمیٹی کی سترھویں بیٹھک کو مخاطب کرتے ہوئے اہرن برگ نے کہا تھا :—

پیرس کانگرس کو ہوئے ایک سال گذر چکا ہے ۔ شانتی کی طاقتیں بڑھ چکی ہیں ۔ وہ اتنی زیادہ بڑھ اور پھیل چکی ہیں کہ جنگ چاہنے والوں کو اپنی دھوکا دھڑی اور ہنسا میں کئی گنی بڑھتی کرنی پڑی ہے ۔ لیکن شانتی کی طاقتیں ابھی اتنی زیادہ مضبوط نہیں ہوپائی ہیں کہ لڑائی کے پجاریوں کو اپنی ہنساتمک یوجنائیں بند کرنے کے لئے مجبور کیا جا سکے ۔

ہم اب شانتی کے مہان سنگھرش کے آخری دور میں پہنچ چکے ہیں ۔ ہماری سنتانیں یا تو اس کامیاب سنگھرش کے لئے ہمیں دعائیں دینگی یا ہماری نا کام کوششوں کو کوستی رہینگی ۔ اس سنگھرش کا نتیجہ اب ہم پر منحصر ہے ۔ عادت' آتم سنتوش یعنی خود اطمینانی اور ہلکے پن کا خطرہ بہت بڑا خطرہ ہے ۔ خطرہ اس بات کا ہے کہ [illegible]

सुपर बमों के बारे में सुनती है वह आदम ख़ोरों की इस ग़ुर्राहट को आदी बन जाती है, वह समझने लगती है कि यह जीवन का जरूरी अंग है.

इस में आशा की गुंजाइश भी है. आम आदमी सोचता है कि यह पहला साल नहीं कि लड़ाइ की बातें सुनने में आ रही हों. लेकिन अभी तक तो कोई लड़ाई हुई नहीं और इस का मतलब यह है कि लड़ाई लड़ाई नहीं होगी.

लेकिन इस की उलटी बात निराशा की तरफ़ भी ले जाने वाली है. जनता सोचती है— अगर लड़ाई की इतनी ज्यादा चर्चा है तो यह जरूर होगी ; एक साल पहले या एक साल बाद. इस हालत मे मुझ जैसा मामूली आदमी कर ही क्या सकता है. मेरे लिये एक साल या दो साल शान्ति के साथ बीत ही जायंगे. इस के बाद जो हो.

हमारा फ़र्ज़ है कि हम इस मूर्खता भरे विचार को दूर करें और निराशा हो कर क़िस्मत के भरोसे बैठने की जेहनियत पर फ़तेह हासिल करें. हमें दुनिया की जनता को यक़ीन दिलाना होगा कि उसी की मरजी से लड़ाई हो सकती है या रुक सकती है.

मैं साफ़ कहूँगा कि लड़ाई न तो राज काजी लोग करते हैं और न बड़े फ़ौजी अफ़सर. जंग करने वाला तो आम जनता है. जंग का होना या न होना कोई लाट्री या जुआ नहीं. किसी देश में ऊँचे ओहदों पर बैठे हुए थोड़े से पागल जंग नहीं कर सकते.

हर एक जिन्दा इन्सान को वोट देने का हक़ है चाहे वह मिसिसपी का हब्शी हो या हिन्दुस्तान में नीची जाति से सम्बन्ध

سوپر بموں کے بارے میں سنتی ہے' وہ آدم خوروں کی اِس غراہٹ کی عادی بن جاتی ہے . وہ سمجھنے لگتی کہ یہ جیون کا ضروری انگ ہے .

اس میں آشا کی گنجائش بھی ہے . عام آدمی سوچتا ہے کہ یہ پہلا سال نہیں کہ لڑائی کی باتیں سننے میں آرہی ہوں . لیکن ابھی تک تو کوئی لڑائی ہوئی نہیں اور اسکا مطلب ہے کہ کوئی لڑائی وڑائی نہیں ہو گی .

لیکن اسکی اُلٹی بات نراشا کی طرف بھی لیجانے والی ہے . جنتا سوچتی ہے---اگر لڑائی کی اتنی زیادہ چرچا ہے تو یہ ضرور ہو گی ؛ ایک سال پہلے یا ایک سال بعد . اس حالت میں مجھ جیسا معمولی آدمی کرھی کیا سکتا ہے میرے لئے ایک سال یا دو سال شانتی کے ساتھ بیت ہی جائیں گے . اس کے بعد جو ہو .

ہمارا فرض ہے کہ ہم اِس مورکھتا بھرے وچار کو دور کریں اور نراش ہوکر قسمت کے بھروسے بیٹھنے کی ذہنیت پر فتح حاصل کریں . ہمیں دنیا کی جنتا کو یقین دلانا ہوگا . کہ اُسی کی مرضی سے لڑائی ہو سکتی ہے یا رک سکتی ہے .

میں صاف کہوں گا کہ لڑائی نہ تو راج کا جی لوگ کرتے ہیں اور نہ بڑے فوجی افسر . جنگ کرنے والی تو عام جنتا ہے . جنگ کا ہونا یا نہ ہونا کوئی لاٹری یا جوا نہیں . کسی دیش میں اونچے عہدوں پر بیٹھے ہوئے تھوڑے سے پاگل جنگ نہیں کرسکتے .

ہر ایک زندہ انسان کو ووٹ دینے کا حق ہے چاہے وہ مسسپی کا حبشی ہو یا ہندستان میں نیچی ذات سے سمبندھ

(४१) किस तरह बन में आँख के तारे को भेज दूँ
जोगी बना के राज दुलारे को भेज दूँ
(राम बनवास) चकबस्त

(४२) आराम को तरस गये जबसे छुटा है घर
किन आफ़तों में पाँच महीने हुए बसर.
"मर्सिया' अनीस

(४३) यह आँधियाँ, यह गर्मी के अय्याम, यह सफ़र
दिन भर चले हैं धूप में जागे हैं रात भर
'मर्सिया' अनीस

(४४) क्या क्या चमक दिखाती थी सर काट काट के
तनती थी बस तनों से जमीं पाट पाट के.
(तलवार की तारीफ़) अनीस

(४५) पानी वह खुद पिये हुए थी घाट घाट के
दम और बढ़ गया था लहू चाट चाट के.
(तलवार की तारीफ़) अनीस

(४६) दो दिन से बेज़बाँ पे जो था आबोदाना बन्द
दरिया को हिनहिना के लगा देखने समन्द.
हर बार काँपता था सिमटता था बन्द बन्द
चुमकारते थे हज़रते अब्बास अर्जुमन्द

(४७) तड़पाता था जिगर को जो शोर आबशार का
गर्दन फिरा के देखता था मुँह सवार का. अनीस

हज़रत अब्बास जब नहर के पास पहुंचे हैं तो घोड़ा जो कई दिन का प्यासा था पानी देख कर बेताब होगया है लेकिन हज़रत अब्बास उसे पानी पीने से रोकते हैं उसी हालत की तसवीर ऊपर के तीन शेरों में खींची गई है

(۴۱) کسطرح بن میں انکھہ کے تارے کو بھیج دوں
جوگی بنا کے راج دلارے کو بھیج دوں
(رام بن باس) چکبست

(۴۲) آرام کو ترس گئے جب سے چھٹا ہے گھر
کن آفتوں میں پانچ مہینے ہوئے بسر
'مرثیہ' انیس

(۴۳) یہ آندھیاں یہ گرمی کے ایام یہ سفر
دن بھر چلے ہیں دھوپ میں جاگے ہیں رات بھر
'مرثیہ' انیس

(۴۴) کیا کیا چمک دکھاتی تھی سر کاٹ کاٹ کے
تنتی تھی بس تنوں سے زمیں پاٹ پاٹ کے
(تلوار کی تعریف) انیس

(۴۵) پانی وہ خود پئے ہوئے تھی گھاٹ گھاٹ کے
دم اور بڑھ گیا تھا لہو چاٹ چاٹ کے
(تلوار کی تعریف) انیس

(۴۶) دو دن سے بےزباں پہ جو تھا آب و دانہ بند
دریا کو ہنہنا کے لگا دیکھنے سمند
ہربار کانپتا تھا سمٹتا تھا بند بند
چمکارتے تھے حضرت عباس ارجمند

(۴۷) تڑپاتا تھا جگر کو جو شور آبشار کا
گردن پھرا کے دیکھتا تھا منہ سوار کا انیس

حضرت عباس جب نہر کے پاس پہنچے ہیں تو گھوڑا جو کئی دن کا پیاسا تھا پانی دیکھکر بیتاب ہو گیا ہے لیکن حضرت عباس اُسے پانی پینے سے روکتے ہیں۔ اسی حالت کی تصویر اوپر کے تین شعروں میں کھینچی گئی ہے

रखता हो. चाहे वह सिसली का खेत मजदूर हो या मार्सेल्स का गोदी में काम करने वाला मज़दूर. इस में उन लोगों को भी वोट देने का हक़ है जो इस दुनिया में अब नहीं हैं. स्टलिनग्राड के बाहदुर, योरप के छापा मार. लिडिस और ओरे डोर के शहीद. लन्दन. राटर्डम और वार्सा के भोले भाले बच्चे. यह सभी पर लोक पहुँच जाने वाली अआत्माएं इन नये आदमखोरों और नफरत के क़ाबिल सुपर बमों समेत इन " ऊंचे प्राणियों " के ख़िलाफ़ अपनी आवाज़ बुलन्द कर रही हैं.

जग के पुजारी हमारे आन्दोलन को यह कह कर बदनाम कर रहे हैं कि हमने सोवियत रूस की हिफ़ाज़त के लिये इसे शुरू किया है. लेकिन सोवियत शिष्टमंडल (वफ्द) की तरफ़ से मैं एलान कर देना चाहता हूँ कि शान्ति की हिमायत करने वाले सोवियतें रूस की रक्षा नहीं कर रहे हैं बल्कि सोवियत जनता ख़ुद दुनिया की तमाम जनता के साथ मिल कर शान्ति की हिफ़ाज़त कर रही है.

सोवियत जनता शान्ति की रक्षा इस लिये नहीं कर रही है कि वह कमज़ोर है बल्कि इस लिये कि वह मानसिक यानी जेहनी तौर पर ताक़तवर है. उस को अपने उजले भविष्य तामीरी मेहनत और बच्चों की ख़ुश हाली में पूरा विश्वास है. हमारी ताक़त स्टालिनग्राड के पत्थरों में परखी जा चुकी है. परेडों या ओलम्पिक खेलों में नहीं

हम अपने विचारों को बमों या सुपरबमों की मदद से दूसरों पर लादना नहीं चाहते. यह कोई बरामद की जाने वाली चीज़ नहीं

رکھتا ہو ۔ چاہے وہ سسلی کا کھیت مزدور ہو یا مارسیلس کا گودی میں کام کرنے والا مزدور ۔ اس میں اُن لوگوں کو بھی ووٹ دینے کا حق ہے جو اِس دنیا میں اب نہیں ہیں ۔ استالن گراڈ کے بہادر، یورپ کے چھاپا مار، لڈس اور اوریڈور کے شہید، لندن، راٹرڈم اور وارسا کے بھولے بھالے بچے یہ سبھی پرلوک پہنچ جانے والی آتمائیں ان نئے آدمخوروں اور نفرت کے قابل سوپر بموں سمیت ان ''اونچے پرانیوں'' کے خلاف اپنی آواز بلند کر رہی ہیں ۔

جنگ کے پجاری ہمارے آندولن کو یہ کہکر بدنام کر رہے ہیں کہ ہم نے سوویت روس کی حفاظت کے لئے اسے شروع کیا ہے ۔ لیکن سوویت ششٹ منڈل (وفد) کی طرف سے میں اعلان کردینا چاہتا ہوں کہ شانتی کی حمایت کرنے والے سوویت روس کی رکشا نہیں کر رہے ہیں بلکہ سوویت جنتا خود دنیا کی تمام جنتا کے ساتھ ملکر شانتی کی حفاظت کر رہی ہے ۔

سوویت جنتا شانتی کی رکشا اس لئے نہیں کر رہی ہے کہ وہ کمزور ہے بلکہ اس لئے کہ وہ مانسک یعنی ذہنی طور پر طاقتور ہے ۔ اس کو اپنے اُجلے بھوشیہ، تعمیری محنت اور بچوں کی خوشحالی میں پورا وشواس ہے ۔ ہماری طاقت استالن گراڈ کے پتھروں میں پرکھی جاچکی ہے ۔ پریڈوں یا اولمپک کھیلوں میں نہیں ۔

ہم اپنے وچاروں کو بموں یا سوپر بموں کی مدد سے دوسروں پر لادنا نہیں چاہتے ۔ یہ کوئی برآمد کی جانے والی چیز نہیں

है. इन की सच्चाई साबित करने के लिये हमारे पास दूसरे साधन मौजूद हैं—हर साल ज़्यादा से ज़्यादा फलते फूलते हमारे शहर, हमारी फ़सलें, हमारी किताबें और सोवियत जनता में इन्सानी चेतना का विकास.

जंग चाहने वालों की एक नई ईजाद है " पच्छिमी संस्कृति " लेकिन मैं पूछना चाहता हूं कि बड़े बड़े फ़्रेन्च साइन्सदानों—वार्तोलेटा पास्चर और क्यूरी के काम किसे ज़्यादा प्यारे हैं, एचिसन को या जूलियट क्यूरी को ? लावरिस, डफ़िक्ज़ी और प्रादो के भविष्य के बारे में किस को ज़्यादा चिन्ता है, जनरल फ़्रान्को को या पाब्लो-पिकासो को ? आज कल कौन शेक्सपियर के नाटकों को अच्छी तरह से समझता है, सोवियत मज़दूर या मिसिसिपी के दूसरों को ग़ुलाम बनाने वाले ? हमें हर एक आदमी के कान में अच्छी तरह सुना कर एलान कर देना चाहिये कि हमारे ख़यालात कुछ भी हों हम इन्सानी तहज़ीब के सच्चे पहरेदार हैं.

हमारा आन्दोलन फैल ज़रूर रहा है लेकिन मेरी राय में उस की रफ़्तार उतनी तेज़ नहीं जितनी तेज़ होनी चाहिये थी. हमें अपनी कोशिशों को और तेज़ करना होगा और दुनिया के अवाम को सच्ची एकता की लड़ी में पिरोना होगा

दुनिया की सब ईमानदार जनता से हमारी अपील है कि वह अपनी आवाज़ बुलन्द करे और एटम हथियार पर फ़ौरन और बिला शर्त पाबन्दी की मांग करे. एक बच्चा भी इस बात को समझता है कि एटम बम हमले का हथियार है.

ہے . ان کی سچائی ثابت کرنے کے لئے ہمارے پاس دوسرے سادھن موجود ہیں — ہر سال زیادہ سے زیادہ پھلتے پھولتے ہمارے شہر' ہماری فصلیں' ہماری کتابیں اور سوویت جنتا میں انسانی چیتنا کا وکاس .

جنگ چاہنے والوں کی ایک نئی ایجاد ہے " پچھمی سنسکرتی " لیکن میں پوچھنا چاہتا ہوں کہ بڑے بڑے فرنچ سائنس دانوں — بار تو لیٹ' پاسچر اور کیوری کے کام کسے زیادہ پیارے ہیں' ایچیسن کو یا جولیٹ کیوری کو ؟ لوریس' ڈفنزی اور پرادو کے بھوشیہ کے بارے میں کسکو زیادہ چنتا ہے' جنرل فرانکو کو یا پابلو پکاسو کو ؟ آج کل کون شیکسپیر کے ناٹکوں کو اچھی طرح سے سمجھتا ہے' سوویت مزدور یا مسسپی کے دوسروں کو غلام بنانے والے ؟ ہمیں ہر ایک آدمی کے کان میں اچھی طرح سنا کر اعلان کر دینا چاہئے کہ ہمارے خیالات کچھ بھی ہوں' ہم انسانی تہذیب کے سچے پہرے دار ہیں .

ہمارا آندولن پھیل ضرور رہا ہے لیکن میری رائے میں اس کی رفتار اتنی تیز نہیں جتنی تیز ہونی چاہئے تھی . ہمیں اپنی کوششوں کو اور تیز کرنا ہوگا اور دنیا کے عوام کو سچی ایکتا کی لڑی میں پرونا ہوگا .

دنیا کی سب ایماندار جنتا سے ہماری اپیل ہے کہ وہ اپنی آواز بلند کرے اور ایٹم ہتھیار پر فوراً اور بلا شرط پابندی کی مانگ کرے . ایک بچہ بھی اس بات کو سمجھتا ہے کہ ایٹم بم حملے کا ہتھیار ہے .

शायद यह एलान बिलकुल सही होगा कि जो राज, राज करने वाले या सिपाही ऐटमी हथियार को हमले के लिये इस्तेमाल करेंगे उन्हें मुजरिम समझा जायगा और हत्यारों की निगाह से देखा जायगा. मेरा ख़याल है कि सिर्फ़ जरायम पेशा लोग ही हमारे इस फ़ैसले का विरोध कर सकते हैं.

इलिया अहेरन बर्ग की यह अपील हिन्दुस्तान के लिये ज्यादा ज़रूरी है क्यों कि उस के ऊपर अमरीकी साम्राज शाही की आँखें गड़ी हुई हैं. पाकिस्तान और हिन्दुस्तान आपस में हमेशा लड़ते रहें और इस तरह कमज़ोर होते रहें इस में अमरीकी मुनाफ़ा खोर अपना फ़ायदा देखते हैं. चीन की आज़ादी और दक्खिन-पूरबी एशिया के देशों की हलचलों ने उन का दिल दहला दिया है और वह एटम बमों की तादाद दिन पर दिन बढ़ाते जा रहे हैं. एक हिन्दुस्तान ही ऐसा मुल्क है जो दुनिया के इस बड़े हिस्से में अपनी जमहूरी नीति पर चलते हुए शान्ति का मोर्चा क़ायम कर सकता है और साम्राजवादियों की चालों को नाकाम बना सकता है.

गांधीजी के असूलों पर चल कर हिन्दुस्तान दुनिया भर में फैले हुए शान्ति प्रेमियों का हाथ मजबूत कर सकता है.

شاید یہ اعلان بالکل صحی ہوگا کہ جو راج، راج کرنے والے یا سپاہی ایٹمی ہتھیار کو حملے کے لئے استعمال کرینگے انہیں مجرم سمجھا جائیگا اور ہتیاروں کی نگاہ سے دیکھا جائیگا ۔ میرا خیال ہے کہ صرف جرائم پیشہ لوگ ہی ہمارے فیصلے کا وررودھ کرسکتے ہیں ۔

ایلیا اہرن برگ کی یہ اپیل ہندستان کے لئے زیادہ ضروری ہے کیونکہ اس کے اوپر امریکی سامراج شاہی کی آنکھیں گڑی ہوئی ہیں ۔ پاکستان اور ہندستان آپس میں ہمیشہ لڑتے رہیں اور اس طرح کمزور ہوتے رہیں، اس میں امریکی منافع خور اپنا فائدہ دیکھتے ہیں ۔ چین کی آزادی اور دکھن پوربی ایشیا کے دیشوں کی ہلچلوں نے ان کا دل دہلا دیا ہے اور وہ ایٹم بموں کی تعداد دن پر دن بڑھاتے جارہے ہیں ۔ ایک ہندستان ہی ایسا ملک ہے جو دنیا کے اس بڑے حصے میں اپنی جمہوری نیتی پر چلتے ہوئے شانتی کا مورچہ قائم کرسکتا ہے اور سامراج وادیوں کی چالوں کو ناکام بنا سکتا ہے ۔

گاندھی جی کے اصولوں پر چلکر ہندستان دنیا بھر میں پھیلے ہوئے شانتی پریمیوں کا ہاتھ مضبوط کرسکتا ہے ۔

उर्दू हिन्दी का सवाल और हिन्दुस्तानी

(भाई ए० हुसैन)

हिन्दुस्तान में ज़बान की बहस की तारीख़ तो बहुत पुरानी है और इस पर हज़ार तरीक़े से विचार हो चुका है, इसलिये इस सवाल पर पढ़ने वालों का समय उसी वक़्त लिया जा सकता है जब कि कोई ख़ास बात कहनी हो.

यों तो एक उलझी हुई बात को सुलझाने के लिये सिर्फ़ प्रचार ही काफी नहीं होता. ज़बान की समस्या भी आज कल और कई कठिन समस्याओं की तरह समय की सहायता के बिना हल नहीं हो सकती. समय या यों कहिये कि इतिहास की छिपी हुई ताक़तों ही में इस को सुलझाने की सबसे ज़्यादा शक्ति है और यह सुलझाने की शक्ति आने वाले ज़माने की एक आशा ही नहीं बल्कि हम उसे अपनी आँखों के सामने पूरा होते हुए देख रहे हैं.

गुत्थियों को सुलझाने के सम्बंध में समय की उंगलियाँ ऊपर से देखने में कितनी ही मोटी और भद्दी क्यों न हों, पर इसी मोटे और भद्देपन में इनकी शक्ति छिपी हुई है जिसके कारन वह बारीक से बारीक नाख़ून से भी, ज़्यादा सफ़ाई से गांठें खोल लेती हैं और आज भी खोल रही हैं. अगर हम उन भावनाओं पर विचार करें जो हमारे मुल्क में हिन्दू-मुस्लिम ऐके को मिटाने वाली

اُردو ھندي کا سوال اور ھندستانی

(بھائی اے ـ حسین)

ھندستان میں زبان کی بحث کی تاریخ تو بہت پرانی ھے اور اس پر ھزار طریقہ سے وچار ھو چکا ھے۔ اس لئے اس سوال پر پڑھنے والوں کا سمے اسی وقت لیا جاسکتا ھے جب کہ کوئی خاص بات کہنی ھو .

یوں تو ایک الجھی ھوئی بات کو سلجھانے کے لئے صرف پرچار ھی کافی نہیں ھوتا . زبان کی سمسیا بھی آج کل اور کئی کٹھن سمسیاؤں کی طرح سمے کی سہایتا کے بنا حل نہیں ھوسکتی . سمے یا یوں کہئے کہ اتہاس کی چھپی ھوئی طاقتوں ھی میں اس کو سلجھانے کی سب سے زیادہ شکتی ھے . اور یہ سلجھانے کی شکتی آنے والے زمانے کی ایک آشا ھي نہیں بلکہ ھم اسے اپنی آنکھوں کے سامنے پورا ھوتے ھوئے دیکھ رھے ھیں .

گتھیوں کو سلجھانے کے سمبندھ میں سمے کی انگلیاں اوپر سے دیکھنے میں کتنی ھی موٹی اور بھدی کیوں نہ ھوں، پر اسی موٹے اور بھدے پن میں ان کي شکتي چھپی ھوئي ھے۔ جس کے کارن وہ باریک سے باریک ناخن سے بھي، زیادہ صفائی سے گانٹھیں کھول لیتی ھیں اور آج بھي کھول رھی ھیں . اگر ھم ان بھاوناؤں پر وچار کریں جو ھمارے ملک میں ھندو مسلم ایکے کو مٹانے والی،

भाषा के सवाल को उलझाने वाली और आपस के मेल मिलाप और हमदर्दी की दीवारों को ढाने वाली हैं और इस पर रोज़मर्रा व्यवहार को देखें, उस रूप को देखें जो भाषा हमारे सामने लेती जा रही है तो हमको अचरज होता है कि समय की शक्ति, प्रेम और मोहब्बत की शक्ति कितनी महान है जिसके काम को नफ़रत के कितने ही हमले मिटाना चाहते हैं पर मिटा नहीं पाते, जिसके जिन्दा शरीर को दुश्मनी और शर के कितने ही तीर तलवार घायल करते हैं पर मार नहीं पाते.

लेकिन इस गहरे और अमिट विश्वास का यह मतलब हरगिज़ नहीं कि हम हाथ पर हाथ रख कर बैठ जायं और अपने जी में यह सोच ले कि जो कुछ होगा अच्छा ही होगा. और फिर उन शक्तियों का जो दो बिलकुल विरोधी धारा के बीच में अपने आप को समझती हैं, जो दो बड़े सम्प्रदायों को क़रीब लाना चाहती हैं और उनके बीच से भाषा और कलचर वग़ैरा के भेदभाव को मिटाना चाहती हैं — ऐसी शक्तियों का देश के इस नाज़ुक समय में चुप रहना बहुत नुक्सान पहुंचा सकता है.

तो फिर हम क्या करें? कौन सा रास्ता निकालें? क्या हम हिन्दी का या उर्दू का या फिर दोनों का विरोध शुरू कर दें.

नहीं इस सम्बन्ध में हमको न तो हिन्दी के प्रेमियों का विरोध करना चाहिये, न उर्दू के प्रेमियों का. क्योंकि एक अच्छी और मीठी और तरक़्क़ी पाई हुई हिन्दुस्तानी भाषा के रास्ते में न तो हिन्दी की तरक्की रुकावट पैदा करती है और न उर्दू की. बल्कि सच तो यह है कि जो बातें हिन्दुस्तानी के रास्ते में रुकावट बनती

بھاشا کے سوال کو الجھانے والی اور آپس کے میل ملاپ اور ھمدردی کی دیواروں کو ڈھانے والی ھیں اور اس پر روزمرہ کے بیوھار کو دیکھیں' اس روپ کو دیکھیں جو بھاشا ھمارے سامنے لیتی جارھی ھے تو ھم کو اچرج ھوتا ھے کہ سمے کی شکتی' پریم اور محبت کی شکتی کتنی مہان ھے جس کے کام کو نفرت کے کتنے ھی حملے مٹانا چاھتے ھیں پر مٹا نہیں پاتے' جس کے زندہ شریر کو دشمنی اور شر کے کتنے ھی تیر تلوار گھائل کرتے ھیں پر مار نہیں پاتے .

لیکن اس گہرے اور امٹ وشواس کا یہ مطلب ھرگز نہیں کہ ھم ھاتھ پر ھاتھ رکھکر بیٹھ جائیں اور اپنے جی میں یہ سوچ لیں کہ جو کچھ ھوگا اچھا ھی ھوگا . اور پھر ان شکتیوں کا جو دو بالکل ورودھی دھارا کے بیچ میں اپنے آپ کو سمجھتی ھیں جو دو بڑے سمپردایوں کو قریب لانا چاھتی ھیں اور انکے بیچ سے بھاشا اور کلچر وغیرہ کے بھید بھاؤ کو مٹانا چاھتی ھیں — ایسی شکتیوں کا دیش کے اس نازک سمے میں چپ رھنا بہت نقصان پہنچا سکتا ھے .

تو پھر ھم کیا کریں ؟ کون سا راستہ نکالیں ؟ کیا ھم ھندی کا یا اردو کا یا پھر دونوں کا ورودھ شروع کردیں ؟

نہیں اس سمبندھ میں ھم کو نہ تو ھندی کے پریمیوں کا ورودھ کرنا چاھئے نہ اردو کے پریمیوں کا . کیونکہ ایک اچھی اور میٹھی اور ترقی پائی ھوئی ھندستانی بھاشا کے راستے میں نہ تو ھندی کی ترقی رکاوٹیں پیدا کرتی ھے اور نہ اردو کی . بلکہ سچ تو یہ ھے کہ جو باتیں ھندستانی کے راستے میں رکاوٹ بنتی

हैं वही और ठीक वही बातें हिन्दी और उर्दू का भी विकास नहीं होने देतीं.

हमारे मुल्क में तो आम तौर पर यह समझ लिया गया है और कई तरफ से यह समझाने की बराबर कोशिशें भी होती रहती हैं कि भाषा की उन्नति किसी संस्था या जाति या शक्ति या इन सब की "सेवा" के कारन होती है. ऐसा समझना बहुत बड़ी भूल है. ज़बान के विकास या तरक़्क़ी में किसी की सेवा या ख़िदमत का बहुत कम हाथ होता है हमने माना कि किसी भी काम में कोशिश के बिना प्रगति नहीं होती और इस कोशिश को हम चाहे सेवा कह लें चाहे इसका नाम कुछ और रख दें. लेकिन अगर हम यह भूल जायंगे कि तरक़्क़ी की कोई भी कोशिश तब तक सफल नहीं हो सकती जब तक उसके लिये मुनासिब हालात न हों, तो फिर हम चाहे कितनी ही सेवा क्यों न करते फिरें लेकिन वास्तव में उसका कोई ख़ास फल नहीं मिल सकता.

भाषा को तरक़्क़ी देने की धुन में आम तौर पर जिस तरह के विचार ज़ाहिर किये जाते हैं उनसे बहुत सी ग़लतफ़हमियां पैदा होने का ख़तरा है.

जो भाई हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के पक्ष में हैं वह कहते हैं कि भारत की रूह को एक करने, उसकी बिखरी हुई संस्कृति को समेटने का एक ही तरीक़ा है और वह यह कि हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाया जाय और सब लोग भाषा और कलचर के भेद भाव को भूल कर देश को सच्चे मानों में अखण्ड बनाने के लिये इसी ---- को अपनायें. फिर जब देश की उन्नति इसी में ठहरी कि

ہیں وہی اور ٹھیک وہی باتیں ہندی اور أردو کا بھی وکاس نہیں ہونے دیتیں .

ہمارے ملک میں تو عام طور پر یہ سمجھ لیا گیا ہے اور کئی طرف سے یہ سمجھانے کی برابر کوششیں بھی ہوتی رہتی ہیں کہ بھاشا کی أنتی کسی سنستھا یا جاتی یا شکتی یا ان سب کی " سیوا " کے کارن ہوتی ہے . ایسا سمجھنا بہت بڑی بھول ہے . زبان کے وکاس یا ترقی میں کسی کی سیوا یا خدمت کا بہت کم ہاتھ ہوتا ہے . ہم نے مانا کہ کسی بھی کام میں کوشش کے بنا پرگتی نہیں ہوتی اور اس کوشش کو ہم چاہے سیوا کہہ لیں چاہے اس کا نام کچھ اور رکھ دیں۔ لیکن اگر ہم یہ بھول جائیں گے کہ ترقی کی کوئی بھی کوشش تب تک سپھل نہیں ہوسکتی جب تک اس کے لئے مناسب حالات نہ ہوں۔ تو پھر ہم چاہے کتنی ہی سیوا کیوں نہ کرتے پھریں لیکن واستو میں اس کا کوئی خاص پھل نہیں مل سکتا .

بھاشا کو ترقی دینے کی دھن میں عام طور پر جس طرح کے وچار ظاہر کئے جاتے ہیں ان سے بہت سی غلط فہمیاں پیدا ہونے کا خطرہ ہے

جو بھائی ہندی کو راشٹر بھاشا بنانے کے پکش میں ہیں وہ کہتے ہیں کہ بھارت کی روح کو ایک کرنے، أس کی بکھری ہوئی سنسکرتی کو سمیٹنے کا ایک ہی طریقہ ہے اور وہ یہ کہ ہندی کو راشٹر بھاشا بنایا جائے اور سب لوگ بھاشا اور کلچر کے بھید بھاؤ کو بھول کر دیش کو سچے معنوں میں اکھنڈ بنانے کے لئے اسی بھاشا کو اپنائیں . پھر جب دیش کی أنتی اسی میں ٹھہری کہ

हिन्दी अधिक से अधिक फैले तो फिर हम हिन्दी की " सेवा " करना और दूसरी भाषाओं को मिटाने का जतन करना देश भक्ति की सबसे बड़ी निशानी क्यों न समझें ?

और जब सूबाई भाषाओं और खास तौर पर उर्दू भाषा के प्रेमी यह बातें सुनते हैं तो वह डर जाते हैं और समझने लगते हैं कि शायद हिन्दी भाषा और केन्द्रीय भारती कलचर का विकास उनकी अपनी भाषा और कलचर को बिलकुल मिटा देगा. इसीलिये वह अपनी भाषा और कलचर को बचाने का रास्ता यह समझते हैं कि हिन्दी की मुखालफत की जाय. लेकिन उनको इस भूल में डालने वाले, कि अगर हिन्दी बढ़ी तो उनकी अपनी भाषा नहीं पनप सकती, खुद हिन्दी ही के प्रचारक हैं.

इस तरह एक भाषा और एक कलचर की तरक्की को दूसरी भाषा और दूसरे कलचर के खिलाफ समझा जाने लगा है.

यहां पहुंच कर एक बुनियादी सवाल का जवाब देना हमारे लिये जरूरी हो जाता है, जिसके बिना हम समस्या पर विचार करने में आगे बढ़ ही नहीं सकते और वह सवाल यह है कि आखिर कलचर का विकास किस तरह होता है और आगे किस तरह होगा ?

हम हिन्दुस्तानी के पक्ष में होते हुए भी हिन्दी के प्रचारकों से पूछ सकते हैं कि चलिये साहब, अगर हम यह मान भी लें कि देश की एक अखण्ड आत्मा बनाने का इसके सिवा और कोई रास्ता

هندي ادهک سے ادهک پهیلے تو پهر هم هندي کی "سیوا" کرنا اور دوسري بهاشاؤں کو مٹانے کا جتن کرنا دیش بهکتی کی سب سے بڑي نشانی کیوں نه سمجهیں ؟

اور جب صوبائی بهاشاؤں اور خاص طور پر اُردو بهاشا کے پریمی یه باتیں سنتے هیں تو وہ ڈر جاتے هیں اور سمجهنے لگتے هیں که شاید هندي بهاشا اور کیندری بهارتي کلچر کا وکاس اُن کی اپنی بهاشا اور کلچر کو بالکل مٹا دیگا اسی لئے وہ اپنی بهاشا اور کلچر کو بچانے کا راسته یه سمجهتے هیں کی هندي کی مخالفت کي جائے . لیکن اُن کو اس بهول میں ڈالنے والے' که اگر هندي بڑهی تو انکی اپنی بهاشا نهیں پنپ سکتي' خود هندی هی کے پرچارک هیں .

اس طرح ایک بهاشا اور ایک کلچر کی ترقی کو دوسري بهاشا اور دوسرے کلچر کے خلاف سمجها جانے لگا هے .

یہاں پهونچ کر ایک بنیادي سوال کا جواب دینا همارے لئے ضروري هوجاتا هے' جس کے بنا هم اس سمسیا پر وچار کرنے میں آگے بڑه هي نهیں سکتے اور وہ سوال یه هے که آخر کلچر کا وکاس کس طرح هوتا هے اور آگے کس طرح هوگا ؟

هم هندستانی کے پکش میں هوتے هوئے بهي هندي کے پرچارکوں سے پوچه سکتے هیں که چلئے صاحب اگر هم یه مان بهی لیں که دیش کی ایک اکهنڈ آتما بنانے کا اس کے سوا اور کوئی راسته

नहीं है कि हिन्दी को सारे मुल्क मे फैलाया जाय और यह भी मान लें कि और सारी भाषाओं को मिटाना या कम से कम उन्हें हिन्दी से नीचे एक स्थान पर लाना जरूरी है तो भी क्या हम आजकल की हालत में हर देश वासी को हिन्दी की बिलकुल शुरू की शिक्षा देने की शक्ति भी रखते हैं ?

हिन्दुस्तानी के हक़ में होने पर भी मैं इस बात को कहीं ज्यादा पसन्द करूंगा कि हमारे देश का बच्चा बच्चा पढ़ा लिखा हुआ हो, चाहे वह किसी जबान में भी हो. आज के अनपढ़ रहने से सब का हिन्दी ही में पढ़ा होना तो कहीं अच्छा है. चाहे वह हिन्दी जबरदस्ती ही लोगों पर ठूंसी गई हो. इसलिये इस सवाल से भी कि यह जबान हो या वह जबान हो कहीं ज्यादा अहम सवाल यह है कि सारे देश में सौ फीसदी शिक्षा कैसे फैलाई जाय. आज तो हालत यह है कि देश के अन्दर सौ में दस बारह से अधिक आदमी भी किसी तरह का पढ़ना लिखना नहीं जानते और ज्ञान और कला के तमाम दरवाज़े उन पर बन्द हैं.

अब ज़रा यह सोचिये कि सारी भाषाओं को मिटा कर या दबा कर भी हिन्दी भाषा ही में सारे देश के बच्चों, जवानों और अनपढ़ लोगों को शिक्षा देने के लिये देश की कितनी उन्नति होनी चाहिये ? हमारे राष्ट्र को ऊपर से नीचे तक कितना सुखी और शान्तिवान होना चाहिये ? क्या इस समय हमारे अन्दर इतना बल है कि हम सारे देश को हिन्दी में शिक्षा देना तो दूर की बात है, हिन्दी में लिखने पढ़ने के जोग भी बना सकें ?

نہیں ہے کہ ہندی کو سارے ملک میں پھیلایا جائے اور یہ بھی مان لیں کہ اور ساری بھاشاؤں کو مٹانا یا کم سے کم اُنہیں ہندی کے نیچے ایک استھان پر لانا ضروری ہے' تو بھی کیا ہم آجکل کی حالت میں ہر دیش واسی کو ہندی کی بالکل شروع کی شکشا دینے کی شکتی بھی رکھتے ہیں ؟

ہندستانی کے حق میں ہونے پر بھی میں اس بات کو کہیں زیادہ پسند کرونگا کہ ہمارے دیش کا بچہ بچہ پڑھا لکھا ہوا ہو' چاہے وہ کسی زبان میں بھی ہو. آجکے اَن پڑھ رہنے سے سب کا ہندی ہی میں پڑھا ہونا تو کہیں اچھا ہے' چاہے وہ ہندی زبردستی ہی لوگوں پر ٹھونسی گئی ہو. اس لئے اس سوال سے بھی کہ یہ زبان ہو یا وہ زبان ہو کہیں زیادہ اہم سوال یہ ہے کہ سارے دیش میں سو فی صدی شکشا کیسے پھیلائی جائے. آج تو حالت یہ ہے کہ دیش کے اندر سو میں دس بارہ سے ادھک آدمی بھی کسی طرح کا پڑھنا لکھنا نہیں جانتے اور گیان اور کلا کے تمام دروازے اُن پر بند ہیں.

اب ذرا یہ سوچئے کہ ساری بھاشاؤں کو مٹا کر یا دبا کر بھی ہندی بھاشا ہی میں سارے دیش کے بچوں' جوانوں اور اَن پڑھ لوگوں کو شکشا دینے کے لئے دیش کی کتنی اُنتی ہونی چاہئے ؟ ہمارے راشٹر کو اوپر سے نیچے تک کتنا سکھی اور شکتی وان ہونا چاہئے ؟ کیا اِس سمے ہمارے اندر اتنا بل ہے کہ ہم سارے دیش کو ہندی میں شکشا دینا تو دور کی بات ہے' ہندی میں لکھنے پڑھنے کے جوگ بھی بنا سکیں ؟

नहीं—आज हमारे देश की हालत बिलकुल ऐसी नहीं है सारे देश की बात तो जाने दीजिये, केवल तीन प्रान्तों को ही ले लीजिये जिनमें जनता की मातृ-भाषा हिन्दी या हिन्दुस्तानी या उर्दू है और इस लिये जिन में हिन्दी ही में पूरी आबादी को शिक्षा देना कुछ ज्यादा कठिन भी नहीं है. इन प्रान्तों में भी अभी हम साफ़ तौर पर नहीं देख पाते कि आख़िर इतने बरसों में यहां का पूरी न सही आधी आबादी ही लिखने पढ़ने के क़ाबिल बन जायगी.

इसलिये अब इस सवाल को अगर अपने असली रूप में रखिये तो बहुत सी उलझनें दूर हो जाती हैं. यह बात साफ़ तौर पर समझ में आ जाती है कि हिन्दी भाषा भी केवल हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रचार से प्रगति की तरफ़ नहीं जायगी. उसको तरक़्क़ी हासिल होगी केवल उसी वक्त जबकि हिन्दी में अधिक से अधिक लोग न सिर्फ़ दस्तख़त कर सकें और एकाध शब्द पढ़ लेने की क़ाबलियत पैदा कर लें बल्कि सचमुच पढ़ लिख सकें और पढ़ें भी अच्छे और ऊंचे क़िस्म के हिन्दी के माहवार, हफ़तावार और रोज़ाना अख़बार. यह पत्र आज से कहीं ज्यादा तादाद में निकलें. आज के मुक़ाबले में हिन्दी की सैकड़ों गुना अधिक और अच्छी किताबें छपें दुनिया के साहित्य में उपन्यास, नाटक, कहानी, सामाजिक और साहित्यिक आलोचना का जो एक ऊँचा स्थान बन चुका है उस पर पूरी उतरने वाली बल्कि उससे भी आगे बढ़ जाने वाली कहानियाँ, नाटक, उपन्यास, आलोचनायें, साइंस की किताबें वग़ैरा लिखी

نہیں—آج ہمارے دیش کی حالت بالکل ایسی نہیں ہے. سارے دیش کی بات تو جانے دیجئے' کیول تین پرانتوں ہی کو لے لیجئے جن میں جنتا کی ماتر بھاشا ہندی یا ہندستانی یا اُردو ہے' اور اس لئے جن میں ہندی ہی میں پوری آبادی کو شکشا دینا کچھ زیادہ کٹھن بھی نہیں ہے. اِن پرانتوں میں بھی ابھی ہم صاف طور پر نہیں دیکھ پاتے کہ آخر اتنے برسوں میں یہاں کی پوری نہ سہی آدھی آبادی ہی لکھنے پڑھنے کے قابل بن جائے گی.

اس لئے اب اس سوال کو اگر اپنے اصلی روپ میں رکھئے تو بہت سی الجھنیں دور ہو جاتی ہیں. یہ بات صاف طور پر سمجھ میں آجاتی ہے کہ ہندی بھاشا بھی کیول ہندی ساہتیہ سمیلن کے پرچار سے پرگتی کی طرف' نہیں جائیگی اس کو ترقی حاصل ہوگی کیول اسی وقت جب کہ ہندی میں ادھک سے ادھک لوگ نہ صرف دستخط کرسکیں اور ایک آدھ شبد پڑھ لینے کی قابلیت پیدا کرلیں بلکہ سچ مچ پڑھ لکھ سکیں اور پڑھیں بھی اچھے اور اونچے قسم کے ہندی کے ماہوار' ہفتہ وار اور روزانہ اخبار. یہ پتر آج سے کہیں زیادہ تعداد میں نکلیں. آج کے مقابلہ میں ہندی کی سیکڑوں گنا ادھک اور اچھی کتابیں چھپیں. دنیا کے ساہتیہ میں اُپنیاس' ناٹک' کہانی' سماجک اور ساہتیک آلوچنا کا جو ایک اونچا استھان بن چکا ہے اُس پر پوری اترنے والی بلکہ اس سے بھی آگے بڑھ جانے والی کہانیاں' ناٹک' اُپنیاس' آلوچنائیں' سائنس کی کتابیں وغیرہ لکھی جائیں ہندی

जरूरी यह है कि फैले. उसमें गंभीरता, शक्ति, सुन्दरता और पूर्णता पैदा हो. तभी हम कह सकते हैं कि हिन्दी भाषा सचमुच प्रगति की ओर जा रही है.

तो इस सबका मतलब क्या निकला. इसका मतलब यह हुआ कि जब तक पूरे देश की आर्थिक और समाजी उन्नति नहीं होती, जब तक देश का पूरा जीवन और उसका हर पहलू सुधरता नहीं, उस वक़्त तक सिर्फ़ एक ही सिम्त में तरक़्क़ी करना नामुमकिन है, चाहे उसके बारे में कितना ही ग़लत प्रचार क्यों न किया जाय. प्रगति कभी भी केवल प्रचार ही से नहीं होती.

जब हम यह मान लेते हैं कि किसी एक भाषा या तहज़ीब के किसी एक पहलू में उस वक़्त तक तरक़्क़ी नहीं हो सकती जब तक कि सारा जीवन तरक़्क़ी न करे, हमारी महान जनता की आर्थिक और समाजी हालत न बदले, उसकी पूरी तहज़ीब और संस्कृति को बेरोक टोक और किसी समाजी बाधा के बिना आगे बढ़ने और फैलने का रास्ता न मिले, तो उसी के साथ साथ हमको यह भी मानना पड़ेगा कि ऐसी तरक़्क़ी किसी ज़ोर और दबाव के बल पर नहीं हो सकती. जिस जनता को आर्थिक तौर पर पूरा इतमीनान और संतोष हो उसे कोई मजबूर नहीं कर सकता कि वह अपनी बात इस ज़बान में कहे, और उस ज़बान में न कहे अपनी संस्कृति को बनाने बढ़ाने और निखारने के लिये कहाँ से सहायता ले, इतिहास के किस दौर को अपनाये और किसको छोड़े, अगर जनता बिलकुल सच्चे मानों में स्वतंत्र होगी, उसका जीवन हर तरह तरक़्क़ी कर रहा होगा, तो उसके अंदर बोली जाने वाली

ضروري یہ ھے کہ پھیلے . اس میں گمبھیرتا' شکتی' سندرتا اور پورنتا پیدا ھو . تبھی ھم کہ سکتے ھیں کہ ھندی بھاشا سچ مچ پرگتی کی اور جارھی ھے .

تو اس سب کا مطلب کیا نکلا . اس کا مطلب یہ ھوا کہ جب تک پورے دیش کی آرتھک سماجی أنتی نہیں ھوئی جب تک دیش کا پورا جیون اور اس کا ھر پہلو سدھرتا نہیں' اُس وقت تک صرف ایک ھی سمت میں ترقی کرنا ناممکن ھے' چاھے اسکے بارے میں کتنا ھی غلط پرچار کیوں نہ کیا جائے . پرگتی کبھی بھی کیول پرچار ھی سے نہیں ھوتی .

جب ھم یہ مان لیتے ھیں کہ کسی ایک بھاشا یا تہذیب کے کسی ایک پہلو میں اسوقت تک ترقي نہیں ھوسکتي جب تک کہ سارا جیون ترقی نہ کرے' ھماری مہان جنتا کي آرتھک سماجی حالت نہ بدلے' اس کي پوري تہذیب اور سنسکرتی کو بے روک توک اور کسی سماجي بادھا کے بنا آگے بڑھنے اور پھیلنے کا راستہ نہ ملے' تو اسي کے ساتھ ساتھ ھم کو یہ بھی ماننا پڑے گا کہ ایسي ترقی کسی زور اور دباؤ کے بل پر نہیں ھوسکتی . جس جنتا کو آرتھک طور پر پورا اطمینان اور سنتوش ھو اُسے کوئی مجبور نہیں کرسکتا کہ وہ اپنی بات اِس زبان میں کہے اور اُس زبان میں نہ کہے . اپنی سنسکرتی کو بنانے' بڑھانے اور نکھارنے کے لئے کہاں سے سہایتا لے' اتہاس کے کس دور کو اپنائے اور کس کو چھوڑے' اگر جنتا بالکل سچے معنوں میں سوتنتر ھوگي' اُس کا جیون ھر پرکار سے ترقی کر رھا ھوگا' تو اُس کے اندر بولی جانے والی

(४८) दुनिया से अलग जा के कहीं सर फोड़ो
या जीते ही जी मुर्दों से नाता जोड़ो.
क्यों ठोकरें खाने को पड़े हो बेकार
बढ़ना है बढ़ो नहीं तो रस्ता छोड़ो. ' रुबाई ' यगाना

(४९) कहते हैं कि शैताँ कभी सोता ही नहीं
इन्सान से ग़ाफ़िल कभी होता ही नहीं
मुल्ला भी मगर कम नहीं हुशयारी में
मौक़ा कोई हाथ आये तो खोता ही नहीं
' रुबाई ' यगाना

(५०) घर बोलता है आज दलिद्दर भागा
दुख दर्द के मारों का नसीबा जागा
दिन काटे हैं गिन गिन के इसी दिन के लिये
साजन आते हैं रास्ता दे कागा.
' रुबाई ' यगाना

(५१) ग़म के दरिया की थाह मिलती ही नहीं
दुनिया में कहीं पनाह मिलती ही नहीं.
आगे बढ़ना बहुत ही मुशकिल है ' फुसूँ '
पीछे हटने की राह मिलती ही नहीं ' रुबाई ' फुसूँ

(५२) एक रात भी कम्बख़्त सुहानी नहीं आती
नींद आये. कोई एसी कहानी नहीं आती.
वहशत में कोई बात बनानी नहीं आती
क़ाबू में किसी तरह जवानी नहीं आती.
कमसिन के लिये मौत है शौहर का बुढ़ापा.
(बूढ़ा शौहर) जोश मलीहाबादी

(۴۸) دنیا سے الگ جاکے کہیں سر پھوڑو
یا جیتے ہی جی مردوں سے ناتا جوڑو
کیوں ٹھوکریں کھانے کو پڑے ہو بیکار
بڑھنا ہے بڑھو نہیں تو رستا چھوڑو 'رباعی' یگانہ

(۴۹) کہتے ہیں کہ شیطاں کبھی سوتا ہی نہیں
انسان سے غافل کبھی ہوتا ہی نہیں
ملا بھی مگر کم نہیں ہشیاری میں
موقع کوئی ہاتھ آئے تو کھوتا ہی نہیں 'رباعی' یگانہ

(۵۰) گھر بولتا ہے آج دلدر بھاگا
دکھ درد کے ماروں کا نصیبا جاگا
دن کاٹے ہیں گن گن کے اسی دن کے لئے
ساجن آتے ہیں راستہ دے کاگا 'رباعی' یگانہ

(۵۱) غم کے دریا کی تھاہ ملتی ہی نہیں
دنیا میں کہیں پناہ ملتی ہی نہیں
آگے بڑھنا بہت ہی مشکل ہے 'فسوں'
پیچھے ہٹنے کی راہ ملتی ہی نہیں 'رباعی' فسوں

(۵۲) اک رات بھی کمبخت سہانی نہیں آتی
نیند آئے کوئی ایسی کہانی نہیں آتی
وحشت میں کوئی بات بنانی نہیں آتی
قابو میں کسی طرح جوانی نہیں آتی
کم سن کے لئے موت ہے شوہر کا بڑھاپا
(بوڑھا شوہر) جوش ملیح آبادی

अनेक भाषायें तरक़्क़ी करेंगी, उसके अन्दर सभ्यता और संस्कृति के जितने भी रूप हैं सभी की तरक़्क़ी होगी

तो अब यह साफ़ हो जाता है कि हिन्दी के आजकल के प्रचारक हिन्दी की तरक्की का जो तरीक़ा बताते हैं वह ग़लत है यह हो ही नहीं सकता कि अकेली हिन्दी तरक़्क़ी करे या भारत का सिर्फ़ कोई एक या दो सम्प्रदाय तरक़्क़ी करें और बाक़ी पिछड़े रह जायें. इस तरह की आगे पीछे रखने वाली उन्नति जितनी हो सकती थी हो चुकी. अब दुनिया में कहीं भी ऐसी तरक़्क़ी की सम्भावना ही नहीं रही है. हमारे देश में भी चिंवटी की चाल मे जो तरक़्क़ी हुई है और हो रही है वह इसी तरह की है और हम रोज़ देख रहे हैं कि ऐसी तरक़्क़ी और विकास के बरसों के बाद भी कोई ख़ास फ़रक़ नहीं होगा.

(४७४)

आज तो हम इतिहास के उस दौर में आ गये हैं कि हिन्दी वाले दूसरी भाषाओं को दबाकर चलना चाहेंगे और उसके प्रचारक दूसरी भाषाओं और संस्कृतियों को दबाने का जतन करेंगे तो उनके जतन से हिन्दी बढ़ेगी नहीं बल्कि उसको उलटा नुक़सान पहुँचेगा. आज हमारे देश में हिन्दी, उर्दू, बंगाली, मराठी, गुजराती और दक्खिनी भाषायें एक साथ ही बढ़ सकती हैं. अगर हम सचमुच हिन्दी के प्रेमी हैं और उसको फूलता फलता देखना चाहते हैं तो हमको कुछ ऐसा करना होगा जिससे सारी भाषाओं की तरक़्क़ी हो, चाहे हम उन्हें जानते न हों न उनका प्रयोग करते हों. हिन्दी के सच्चे प्रेम का अर्थ आज यह है कि हम आज पूरी भारती जनता और पूरी भारती संस्कृति और उसके हर रूप और शैली से प्रेम करें.

انیک بھاشائیں ترقی کریںگی، اس کے اندر سبھیتا اور سنسکرتی کے جتنے بھی روپ ہیں سبھی کی ترقی ہوگی .

تو اب یہ صاف ہوجاتا ہے کہ ہندی کے آجکل کے پرچارک ہندی ترقی کا جو طریقہ بتاتے ہیں وہ غلط ہے . یہ ہو ہی نہیں سکتا کہ اکیلی ہندی ترقی کرے، یا بھارت کا صرف کوئی ایک یا دو سمپر دائے ترقی کریں اور باقی بچھڑے رہ جائیں . اس طرح کی آگے پیچھے رکھنے والی اُنتی تو جتنی ہوسکتی تھی ہوچکی . اب نہ دنیا میں کہیں بھی ایسی ترقی کی سمبھاؤنا ہی نہیں رہی ہے . ہمارے دیش میں بھی چیونٹی کی چال سے جو ترقی ہوئی ہے اور ہو رہی ہے وہ اسی طرح کی ہے اور ہم روز دیکھ رہے ہیں کہ ایسی ترقی اور وکاس کے برسوں کے بعد بھی کوئی خاص فرق نہیں ہوگا .

آج تو ہم اتہاس کے اس دور میں آگئے ہیں کہ ہندی والے دوسری بھاشاؤں کو دبا کر چلنا چاہیں گے اور اس کے پرچارک دوسری بھاشاؤں اور سنسکرتیوں کو دبانے کا جتن کریںگے تو اُنکے جتن سے ہندی بڑھے گی نہیں بلکہ اس کو الٹا نقصان پہنچے گا . آج ہمارے دیش میں ہندی، اردو، بنگالی، مراٹھی، گجراتی اور دکھنی بھاشائیں ایک ساتھ ہی بڑھ سکتی ہیں . اگر ہم سچ مچ ہندی کے پریمی ہیں اور اسکو پھولتا پھلتا دیکھنا چاہتے ہیں تو ہم کو کچھ ایسا کرنا ہوگا جس سے ساری بھاشاؤں کی ترقی ہو، چاہے ہم انہیں جانتے نہ ہوں نہ انکا پریوگ کرتے ہوں ہندی کے سچے پریم کا ارتھ آج یہ ہے کہ ہم آج پوری بھارتی جنتا اور پوری بھارتی سنسکرتی اور اس کے ہر روپ اور شیلی سے پریم کریں .

यही बातें उर्दू के प्रेमियों को भी सोचनी हैं. अगरचे वह अपनी बात साफ़ तौर पर बयान करना मस्लहत के ख़िलाफ़ समझते हैं लेकिन उनके दिल में वही पुराना ख़याल अब भी धँसा हुआ है कि उनकी उर्दू उस वक़्त तक बढ़ नहीं सकती. जब तक कि किसी न किसी तरह यानी सियासत के उलट फेर या "ख़ुदाई मदद" से कोई ऐसा मज़बूत हाथ न पैदा होजाय जो हिन्दी का गला घोंट दे.

लेकिन पूर्बी पाकिस्तान का तजरबा हमारे सामने है. जिनाह साहब जैसी शख़्सियत ने, जिससे कम से कम पाकिस्तान में तो बहुत ज़्यादा लोग मुहब्बत करते थे और जिसकी बात मानी जाती थी, जब बंगालियों पर उर्दू ज़बरदस्ती ठूँसना चाहा तो आख़िर उनको हार मानकर पीछे क़दम हटाना पड़ा. क्योंकि इस मामले में जिनाह साहब की एक नहीं चली और बंगालियों ने साफ़ कह दिया कि वह उर्दू को हरगिज़ नहीं अपनायेंगे और बंगाली को हरगिज़ नहीं छोड़ेंगे.

इस तरह एक मज़बूत हाथ पैदा तो हुआ था जिस ने एक ज़बान का गला घोंट कर उर्दू को बढ़ाना चाहा. पर नतीजा क्या निकला ? इस से उर्दू को फ़ायदा हुआ या नुक़सान. बिलाशुभा नुक़सान ही हुआ. क्योंकि चार करोड़ की आबादी को, जिसे उर्दू से कोई ख़ास दुश्मनी न थी और जिसे आज़ादी के तरीक़े से उर्दू का क़द्रदान बना या जा सकता था, आख़िरकार उर्दू के दुश्मनों की सफ़ में खड़ा करने के लिये ढकेल दिया गया.

इस तजरबे में उन सभी लोगों के लिये बड़े अहम सबक़ छिपे हुए हैं जो यह समझते हैं कि कोई ज़बान आजकल के ज़माने में

یہی باتیں اردو کے پریمیوں کو بھی سوچنی ہیں . اگرچہ وہ اپنی بات صاف طور پر بیان کرنا مصلحت کے خلاف سمجھتے ہیں . لیکن ان کے دل میں وہی پرانا خیال اب بھی دھنسا ہوا ہے کہ ان کی أردو اس وقت تک بڑھ نہیں سکتی جب تک کہ کسی نہ کسی طرح یعنی سیاست کے الٹ پھیر یا " خدا کی مدد " سے کوئی ایسا مضبوط ہاتھ نہ پیدا ہوجائے جو ہندی کا گلا گھونٹ دے .

لیکن پوربی پاکستان کا تجربہ ہمارے سامنے ہے . جناح صاحب جیسی شخصیت نے' جس سے کم سے کم پاکستان میں تو بہت زیادہ لوگ محبت کرتے تھے اور جس کی بات مانی جاتی تھی' جب بنگالیوں پر اردو زبردستی ٹھونسنی چاہی تو آخر ان کو ہار مان کر پیچھے قدم ہٹانا پڑا . کیونکہ اس معاملہ میں جناح صاحب کی ایک نہیں چلی اور بنگالیوں نے صاف کہ دیا کہ وہ أردو کو ہرگز نہیں اپنائیں گے اور بنگالی کو ہرگز نہیں چھوڑینگے .

اسطرح ایک مضبوط ہاتھ پیدا تو ہوا تھا جس نے ایک زبان کا گلا گھونٹ کر أردو کو بڑھانا چاہا . پر نتیجہ کیا نکلا . اس سے أردو کو فائدہ ہوا یا نقصان . بلا شبہ نقصان ہی ہوا ' کیونکہ چار کروڑ آبادی کو' جسے أردو سے کوئی خاص دشمنی نہ تھی اور جسے آزادی کے طریقہ سے أردو کا قدردان بنایا جا سکتا تھا ' آخرکار أردو کے دشمنوں کی صف میں کھڑا کرنے کے لئے ڈھکیل دیا گیا .

اس تجربے میں ان سبھی لوگوں کے لئے بڑے اہم سبق چھپے ہوئے ہیں جو یہ سمجھتے ہیں کہ کوئی زبان آجکل کے زمانے میں

तो फिर हिन्दुस्तानी का इस भारती संस्कृति में हम क्या स्थान रक्खें ? अगर हिन्दी, हिन्दी ही के रूप में और उर्दू, उर्दू ही के रूप में बढ़ती रही तो फिर हिन्दुस्तानी कैसे तरक़्क़ी करेगी ? हिंदुस्तानी के सम्बंध में भी कुछ लोग यह समझते हैं कि हिन्दी और उर्दू के मरने से ही उसे तरक़्क़ी मिल सकती है. लेकिन यह ख़याल ग़लत है.

हिन्दुस्तानी के सामने तो यह सवाल ही नहीं पैदा होता कि वह उस हिन्दी और उस उर्दू को मार डाले जिन्होंने उस को जन्म दिया है, पाला पासा है और अब तक उस की जो तरक़्क़ी हुई है, उस में मदद दी है. हिन्दुस्तानी भाषा तो इन दोनों माताओं की उन्नति से ही तरक़्क़ी कर सकती है. यह ज़रूर है कि हिन्दुस्तानी की एक मां को हिन्दुस्तान के और दूसरी को पाकिस्तान के राज सिंहासन पर बैठा दिया गया है और दोनों तरफ नासमझी से यह कोशिश हो रही है कि अब यह रानियाँ अपनी दूसरी छोटी बहनों को लौंडियाँ बना कर रक्खें बल्कि हो सके तो उन को देश निकाला दे दें. लेकिन ऐसा होना कठिन है.

पाकिस्तान में सरकारी ताक़त को, बंगाली भाषा को मार कर उर्दू को उस की जगह दिलाने में, जो हार खानी पड़ी उस का हाल हम ऊपर लिख चुके हैं. हिन्दुस्तान में भी तंग नज़री के कारन और वोटों के बल पर उर्दू लिपि को सरकारी दफ़्तरों से निकाल दिया गया पर अब सरकार के इस फ़ैसले के ख़िलाफ़ आवाज़ें उठने लगी हैं.

تو پھر هندستانی کا اِس بھارتی سنسکرتی میں هم کیا استهان رکھیں ؟ اگر هندي، هندی هی کے روپ میں اور اُردو، اُردو هی کے روپ میں بڑهتی رهی تو پھر هندستانی کیسے ترقی کرے گی ؟ هندستانی کے سمبندھ میں بھی کچھ لوگ یہ سمجھتے هیں کہ هندی اور اُردو کے مرنے سے هي اُسے ترقی مل سکتي هے . لیکن یہ خیال غلط هے .

هندستانی کے سامنے تو یہ سوال هی نہیں پیدا هوتا کہ وہ اُس هندي اور اُس اُردو کو مار ڈالے جنھوں نے اسکو جنم دیا هے، پالا پوسا هے اور اب تک اسکی جو ترقی هوئي هے اس میں مدد دي هے . هندستاني بھاشا تو اپني اِن دونوں ماتاؤں کی اُنتی سے هی ترقی کرسکتي هے . یہ ضرور هے کہ هندستانی کي ایک ماں کو هندستان کے اور دوسری کو پاکستان کے راج سنگھاسن پر بٹھا دیا گیا هے اور دونوں طرف نا سمجھي سے یہ کوشش هو رهي هے کہ اب یہ رانیاں اپني دوسری چھوٹی بهنوں کو لونڈیاں بناکر رکھیں بلکہ هو سکے تو ان کو دیش نکالا دے دیں . لیکن ایسا هونا کٹھن هے .

پاکستان میں سرکاري طاقت کو، بنگالی بھاشا کو مار کر اردو کو اسکي جگہ دلانے میں جو هار کھانی پڑي اسکا حال هم اوپر لکھ چکے هیں . هندستان میں بھی تنگ نظری کے کارن اور ووٹوں کے بل پر اردو لپی کو سرکاری دفتروں سے نکال دیا گیا پر اب سرکار کے اس فیصلہ کے خلاف آوازیں اٹھنے لگی هیں .

उर्दू के हामियों का यह कहना कि विधान सभा ने उर्दू को किसी सूबे को भी भाषा न मान कर उर्दू के साथ अन्याय किया है, बिलकुल ग़लत नहीं कहा जा सकता. यह बात दूसरी है कि उत्तर प्रदेश की सरकार ने जब यह फ़ैसला किया कि सरकारी कामों में उर्दू लिपि का इस्तेमाल ख़तम कर दिया जायगा तो उस के इस फ़ैसले के खिलाफ़ आवाज़ उठाने वाले मुसलमानों को यह कहकर ख़ामोश कर दिया गया कि यह बातें फ़िरक़ा वाराना हैं. लेकिन आज यही आवाज़ पूरबी पंजाब से उठ रही है. पूरबी पंजाब में पहले सारा काम उर्दू में होता था. पर उर्दू चूँकि पाकिस्तान की सरकारी भाषा बन गई थी और पाकिस्तान की तरफ़ से हिन्दुओं और सिक्खों के दिलों में बड़ा ग़ुस्सा था इस लिये उस समय जोश में उर्दू के बायकाट और हिन्दी को सरकारी भाषा बनाने का स्वागत किया गया. लेकिन अब, जब हिन्दी से साधा काम पड़ रहा है और बिलकुल नई भाषा और लिपि के इस्तेमाल में कठिनाई होरही है तो सरकार का यह फ़ैसला ज़बरदस्ती मालूम हो रहा है. अब यह ख़बरें आरही हैं कि पूरबी पंजाब के कुछ लोग फिर से सरकारी दफ़्तरों में उर्दू को भी जगह देने की मांग कर रहे हैं. यह लोग मुसलमान नहीं हैं और इस लिये इन पर फ़िरक़ा परस्ती का इलज़ाम भी नहीं लगाया जा सकता.

कहा नहीं जा सकता कि वहाँ की जनता की मुश्किलों को देखते हुए उर्दू को सरकारी दफ़्तरों में कोई जगह मिलेगी या नहीं पर इतना तो ज़ाहिर होगया कि अगर हिन्दुस्तानी को राज भाषा मान लिया जाता तो आज यह दिक्कतें न पैदा होतीं. न लिपि का झगड़ा

३०

اُردو کے حامیوں کا یہ کہنا کہ ودھان سبھا نے اُردو کو کسی صوبے کی بھی بھاشا نہ مانکر اُردو کے ساتھ انیائے کیا ہے، بالکل غلط نہیں کہا جاسکتا۔ یہ بات دوسری ہے کہ اُتر پردیش کی سرکار نے جب یہ فیصلہ کیا کہ سرکاری کاموں میں اُردو لپی کا استعمال ختم کردیا جائے گا تو اس کے اِس فیصلہ کے خلاف آواز اُٹھانے والے مسلمانوں کو یہ کہکر خاموش کردیا گیا کہ یہ باتیں فرقہ وارانہ ہیں. لیکن آج یہی آواز پوربی پنجاب سے اُٹھ رہی ہے. پوربی پنجاب میں پہلے سارا کام اُردو میں ہوتا تھا۔ پر اُردو چونکہ پاکستان کی سرکاری بھاشا بن گئی تھی اور پاکستان کی طرف سے ہندوؤں اور سکھوں کے دلوں میں بڑا غصہ تھا اسلئے اس سمے جوش میں اُردو کے بائیکاٹ ارر ہندی کو سرکاری بھاشا بنانے کا سواگت کیا گیا۔ لیکن اب، جب ہندی سے سیدھا کام پڑ رہا ہے اور بالکل نئی بھاشا اور نئی لپی کے استعمال میں کٹھنائی ہو رہی ہے تو سرکار کا یہ فیصلہ زبردستی معلوم ہو رہا ہے۔ اب یہ خبریں آرہی ہیں کہ پوربی پنجاب کے کچھ لوگ سرکاری دفتروں میں اُردو کو بھی جگہ دینے کی مانگ کر رہے ہیں یہ لوگ مسلمان نہیں ہیں اور اس لئے ان پر فرقہ پرستی کا الزام بھی نہیں لگایا جاسکتا

کہا نہیں جا سکتا کہ وہاں کی جنتا کی مشکلوں کو دیکھتے ہوئے اردو کو سرکاری دفتروں میں کوئی جگہ ملے گی یا نہیں پر اتنا تو ظاہر ہو گیا کہ اگر ہندستانی کو راج بھاشا مان لیا جاتا تو آج یہ دقتیں نہ پیدا ہوتیں۔ نہ لپی کا جھگڑا

उठता और न हिन्दी के नाम पर चालू शब्दों को निकाल कर उनकी जगह कठिन संस्कृत शब्द ठूंसे जा सकते. और फिर हिन्दी उर्दू दोनों अपने मौजूदा रूप में तरक़्क़ी करती रहतीं क्योंकि हिन्दुस्तानी को अपनी इन दोनों शैलियों की तरक़्क़ी से जलन न होती बल्कि ख़ुशी ही होती. एक बड़ा फ़ायदा यह होता कि अपने उदार स्वभाव के कारन हिन्दुस्तानी हर भाषा के मीठे, सरल और चालू शब्दों को पचाती जाती. अब तो हिन्दी और उर्दू में समय के साथ साथ अलगाव बढ़ता ही जायगा ऐसा मलूम होता है. लेकिन अब भी यह अलगाव, यह दूरी कम हो सकती है अगर उर्दू वाले जल्दी से जल्दी हिन्दी को अपना लें, हिन्दी में लिखने लगें और उर्दू का सारा साहित्य हिन्दी हरूफ़ में छाप डालें.

ऐसा करके वह हिन्दी पर एक बड़ा एहसान भी करेंगे. सरल भाषा में हर हिन्दी पढ़ा लिखा आदमी उस साहित्य को पढ़ेगा और इस तरह हिन्दी को संस्कृतमयी बनाने की कोशिश करने वालों को मजबूर होकर उसी भाषा में ख़ुद लिखना होगा जिसके पढ़ने वालों की तादाद बड़ी होगी और पाँच दस बरस में आज की राज भाषा हिन्दी सही मानों में राष्ट्र भाषा बन जायगी और चाहे उसका नाम यही रहे जो आज है, पर वह होगी वही हिन्दुस्तानी जिसके लिये गांधी जी मरते दम तक कोशिश करते रहे.

اُٹھتا اور نہ هندی کے نام پر چالو شبدوں کو نکال کر ان کی جگہ کٹھن سنسکرت شبد ٹھونسے جا سکتے . اور پھر هندی اردو دونوں اپنے موجودہ روپ میں ترقی کرتی رهیں . کیونکہ هندستانی کو اپنی ان دونوں شیلیوں کی ترقی سے جلن نہ هوتی بلکہ خوشی هی هوتی. ایک بڑا فائدہ یہ هوتا کہ اپنے اُدار سوبھاؤ کے کارن هندستانی هر بھاشا کے میٹھے' سرل اور چالو شبدوں کو پچاتی جاتی . اب تو هندی اور اُردو میں سمے کے ساتھ ساتھ الگاؤ بڑھتا هی جائیگا ایسا معلوم هوتا هے . لیکن اب بھی یہ الگاؤ' یہ دوری کم هو سکتی هے اگر اُردو والے جلدی سے جلدی هندی کو اپنالیں' هندی میں لکھنے لگیں اور اُردو کا سارا ساهتیہ هندی حروف میں چھاپ ڈالیں .

ایسا کرکے وہ هندی پر ایک بڑا احسان بھی کریں گے . سرل بھاشا میں هر هندی پڑھا لکھا آدمی اُس ساهتیہ کو پڑھے گا اور اسطرح هندی کو سنسکرت مئی بنانے کی کوشش کرنے والوں کو مجبور هوکر اُسی بھاشا میں خود لکھنا هوگا جس کے پڑھنے والوں کی تعداد بڑی هوگی اور پانچ دس برس میں آج کی راج بھاشا هندی سهی مانوں میں راشٹر بھاشا بن جائیگی اور چاهے اُسکا نام یهی رهے جو آج هے' پر وہ هوگی وهی هندستانی جسکے لئے گاندھی جی مرتے دم تک کوشش کرتے رهے

शेर शाह

(सेठ गोविन्द दास)

उपसंहार

स्थान—दिल्ली के बाहर का एक मार्ग.

समय—प्रात : काल.

[दूर पर शेरशाह के समय के दिल्ली नगर की कुछ इमारतें दिखाई पड़ती हैं. इनमें सबसे ऊँची क़ुतुब मीनार और उसी के निकट शेरशाह के वक़्त के क़िले का कुछ बाहरी भाग दिखता है. मार्ग निर्जन है और दोनों ओर ऊँचे ऊँचे वृक्षों की छाया से आच्छादित. नेपथ्य में गान की धुन सुन पड़ती है स्वर निज़ाम का है]

गीत

दुनिया है जंजाल, रे बन्दे, दुनिया है जंजाल !
नज़र नज़र को क़दम क़दम पर रूप रिझाने वाले
डगर डगर में जाल बिछे हैं मन को फँसाने वाले
देख के चलना चाल, रे बन्दे,
दुनिया है जंजाल !

[गाते गाते निज़ाम का आना. उसके स्वर से तो वह पहचान लिया जाता है परन्तु स्वरूप और वेष में इतना अन्तर हो गया है कि देखकर उसको पहचानना बहुत कठिन है. सर के बाल लम्बे होगये हैं, जो पीठ और कन्धों पर फैले हुए हैं. मूँछें भी बड़ी बड़ी हैं और दाढ़ी भी रख ली गई है. दाढ़ी छाती तक बढ़ आई है. उसका वेष फ़क़ीरी है, पैर तक लम्बा हरे रंग का चोग़ा, दाहने

شیر شاہ

(سیٹھ گوبند داس)

اُپسنہار

ستھان — دلی کے باہر کا ایک مارگ .

سمے — پراتہ کال .

[دور پر شیر شاہ کے سمے کے دلی نگر کی کچھ عمارتیں دکھائی پڑتی ہیں . ان میں سب سے اونچی قطب مینار اور اسی کے نکٹ شیرشاہ کے وقت کے قلعے کا کچھ باہری بھاگ دیکھتا ہے . مارگ نرجن ہے اور دونوں اور اونچے اونچے ورکشوں کی چھایا سے آچھادت. نیپتھیہ میں گان کی دھن سن پڑتی ہے . سور نظام کا ہے .]

گیت

دنیا ہے جلجال رے بندے دنیا ہے جلجال !
نظر نظر کو قدم قدم پر روپ ریجھانے والے
ڈگر ڈگر میں جال بچھے ہیں من کو پھنسانے والے
دیکھ کے چلنا چال، رے بندے،
دنیا ہے جلجال !

[گاتے گاتے نظام کا آنا . اس کے سور سے تو وہ پہچان لیا جاتا ہے پرنتو سروپ اور ویش میں اتنا انتر ہوگیا ہے کہ دیکھکر اسکو پہچاننا بہت کٹھن ہے . سر کے بال لمبے ہوگئے ہیں، جو پیٹھ اور کندھوں پر پھیلے ہوئے ہیں . مونچھیں بھی بڑی بڑی ہیں اور داڑھی بھی رکھ لی گئی ہے . داڑھی چھاتی تک بڑھ آئی ہے . اسکا ویش فقیری ہے . پیر تک لمبا ہرے رنگ کا چوغا، داہنے

हाथ में मनका और बायें हाथ में कमन्डल. इस वेष में भी निज़ाम सुन्दर दिखाई पड़ता है. उसका गीत आगे बढ़ता है.]

दुनिया है जंजाल.........

दुनिया की सुन्दरता फ़ानी, आज का जोवन कल है कहानी.
अब तो मन में बैठ गई है. अपने गुरू की प्यारी बानी
तोड़ दे मोह का जाल, रे बन्दे,
दुनिया है जंजाल !

निज़ाम—गुरूजी का यह फ़िक़रा ' सर्वंखल्विदं ब्रह्म ' रट...... हाँ, अच्छी तरह रट लेने पर भी, इसका मतलब उनके समझाने ....न जाने कितनी दफ़ा अच्छी तरह समझाने पर भी समझ में न आया ..... लेकिन .... लेकिन जब से उन्होंने यह गीत बनाया है (गाता है)

दुनिया है जंजाल.........

मन की आँखें देख रही हैं जिस से जग में उजाला
सब से बड़ा सुन्दर है सुन्दरता को रचने वाला
उसी से अपना सवाल, रे बन्दे,
दुनिया है जंजाल !

निज़ाम —जब से हर एक आदमी को भाई साहब की शक्ल में, हर एक औरत को लाड की सूरत में देखने की कोशिश शुरू कराई है तब से इस कोशिश में जरूर कामयाबी मिल रही है ....और पूरी ... पूरी पूरी कामयाबी के बाद क्या होगा ? (फिर गाता)

दुनिया है जंजाल.........

मिट्टी का यह बदन है एक दिन मिट्टी में मिल जाना

ہاتھ میں منکا اور بائیں ہاتھ میں کمنڈل . اس ویش میں بھی نظام سندر دکھائی پڑتا ہے . اس کا گیت آگے بڑھتا ہے .]

دنیا ہے جنجال ....

دنیا کی سندرتا فانی' آج کا جیون کل ہے کہانی
اب تو من میں بیٹھ گئی ہے' اپنے گرو کی پیاری بانی
توڑ دے موہ کا جال' رے بندے'
دنیا ہے جنجال !

نظام — گروجی کا یہ فقرہ ' سرون کھل ودن برہم ' رٹ ...... ہاں ' اچھی طرح رٹ لینے پر بھی' اسکا مطلب ان کے سمجھانے .... نہ جانے کتنی دفعہ اچھی طرح سمجھانے پر بھی سمجھ میں نہ آیا .... لیکن ...... لیکن جب سے اُنھوں نے یہ گیت بنایا ہے (گاتا ہے)

دنیا ہے جنجال ....

من کی آنکھیں دیکھ رہی ہیں جس سے جگ میں اُجالا
سب سے بڑا سندر ہے' سندرتا کو رچنے والا
اُسی سے اپنا سوال' رے بندے'
دنیا ہے جنجال !

نظام — جب سے ہر ایک آدمی کو بھائی صاحب کی شکل میں' ہر ایک عورت کو لاڈ کی صورت میں دیکھنے کی کوشش شروع کرائی ہے' تب سے اِس کوشش میں ضرور کامیابی مل رہی ہے ... اور پوری .. پوری پوری کامیابی کے بعد کیا ہوگا ؟ (پھر گاتا ہے)

دنیا ہے جنجال ....

مٹی کا یہ بدن ہے ایک دن مٹی میں مل جانا

मिटने वाली दुनिया से क्या मन को अपने लगाना
रूह को अपनी संभाल, रे बन्दे,
दुनिया है जंजाल !

निज़ाम—भाई साहब तो अपनी रिआया से ही मुहब्बत कर सकते हैं, मुग़ल उनके दुशमन हैं इस लिये वह उनसे नफ़रत करते हैं, लेकिन मेरे...मेरे लिये तो सभी आदमी भाई जान और सभी औरतें लाड की मानिन्द प्यार ...... मुहब्बत करने की चीज़ हो जायँगे. हाँ, लाड की मुहब्बत में, गुरूजी के लफ्ज़ों में मेरे दिल में जो 'वासना थी वह......वह इस मुहब्बत में न रहेगी. (फिर गाता है)

दुनिया है जंजाल.........
मन की आँखों पर जो बँधी थी मोह जाल की पट्टी
जब से खुली है देख रहा हूँ सब धोके की टट्टी
इसका रोग न पाल, रे बन्दे,
दुनिया है जंजाल !

निज़ाम—लड़ाई न हुई, मैं भाई जान के लिये लड़कर न मर सका...... लाड के बिना जीना मुशकिल था, ख़ुदकुशी करने की कोशिश की, पर उसी वक़्त गुरूजी मिल गये. और ...... और क्या कर डाला उन्हों ने मेरा. फिर गाता है.)

दुनिया है जंजाल.. ...
हर नारी के रूप में उसका जलवा देख रहा हूँ
अब अपने दुश्मन को भी भाई सा देख रहा हूँ
सब में वही जमाल, रे बन्दे
दुनिया है जंजाल !

مٹنے والی دنیا سے کیا من کو اپنے لگانا
روح کو اپنی سنبھال، رے بندے،
دنیا ھے جنجال !

نظام — بھائی صاحب تو اپنی رعایا سے ھی محبت کرسکتے ھیں، مغل ان کے دشمن ھیں اسلئے وہ ان سے نفرت کرتے ھیں، لیکن میرے ...... میرے لئے تو سبھی آدمی بھائی جان اور سبھی عورتیں لاڈ کی مانند پیار...... محبت کرنے کی چیز ھوجائیں گے . ھاں، لاڈ کی محبت میں، گروجی کے لفظوں میں، میرے دل میں جو 'واسنا' تھی وہ......وہ اس محبت میں نہ رھے گی . (پھر گاتا ھے)

دنیا ھے جنجال ....
من کی آنکھوں پر جو بندھی تھی موہ جال کی پٹی
جب سے کھلی ھے دیکھ رھا ھوں سب دھوکے کی ٹٹی
اس کا روگ نہ پال، رے بندے،
دنیا ھے جنجال !

نظام — لڑائی نہ ھوئی، میں بھائی جان کے لئے لڑکر نہ مرسکا ..... لاڈ کے بنا جینا مشکل تھا، خودکشی کرنے کی کوشش کی پر اسی وقت گروجی مل گئے . اور ...... اور کیا کر ڈالا انھوں نے میرا . (پھر گاتا ھے .)

دنیا ھے جنجال ....
ھر ناری کے روپ میں اس کا جلوہ دیکھ رھا ھوں
اب اپنے دشمن کو بھی بھائی سا دیکھ رھا ھوں
سب میں وھی جمال، رے بندے
دنیا ھے جنجال !

(२७८)

निज़ाम—धीरे धीरे किस...... किस तरह वह मेरा दिल एक सीढ़ी से दूसरी और दूसरी से तीसरी पर चढ़ा रहे हैं. ...... अब गिरना .... हाँ, गिरना नहीं, चढ़ना ...... चढ़ते ही जाना है; ...... पाक .... पाक से पाक ज़ीने पर. (फिर गाने लगता है)

दुनिया है जंजाल, रे बन्दे, दुनिया है जंजाल !
देख के चलना चाल, रे बन्दे, दुनया है जंजाल !
दुनिया है जंजाल, रे बन्दे,
दुनिया है जंजाल !

[नेपथ्य में कुछ लोगों की बात चीत का स्वर सुनाई देता है, जो इसी ओर आरहा है. निज़ाम गाना बन्द कर कुछ ध्यान से इस स्वर को सुनता है. स्वर को बहुत नज़दीक आते हुए सुन कर वह एक दरख़्त की ओट में होजाता है. कुछ ही देर में कई हिन्दू मुसलमान नागरिकों का बात चीत करते हुए आना.]

एक हिन्दू—हाँ हाँ. मैं कहता हूँ. शेरशाह के राज की तरह कोई राज इस देश में नहीं हुआ.

दूसरा हिन्दू—मैं भी मानता हूं, और उसका कारण है कि जिस तरह वह बिना किसी भी भेद भाव के राज करते हैं, उस प्रकार आज तक किसी ने नहीं किया.

एक मुसलमान—हाँ, इसमें तो शक नहीं कि उन के लिये हिन्दू मुसलमान सब एकसाँ हैं.

तीसरा हिन्दू—वह जितना आदर मसजिद का करते हैं, उतना

(٢٧٨)

نظام — دھیرے دھیرے کس ... کس طرح وہ میرا دل ایک سیڑھی سے دوسری اور دوسری سے تیسری پر چڑھا رہے ہیں .. اب گرنا ... ہاں' گرنا نہیں' چڑھنا ...... چڑھتے ہی جانا ہے؛ ... پاک ..... پاک سے پاک زینے پر . (پھر گانے لگتا ہے)

دنیا ہے جنجال' رے بندے' دنیا ہے جنجال !
دیکھ کے چلنا چال، رے بندے' دنیا ہے جنجال !
دنیا ہے جنجال' رے بندے'
دنیا ہے جنجال !

[نیپتھیہ میں کچھ لوگوں کی بات چیت کا سور سنائی دیتا ہے' جو اسی اور آرہا ہے . نظام گانا بند کر کچھ دھیان سے اس سور کو سنتا ہے . سور کو بہت نزدیک آتے ہوئے سنکر وہ ایک درخت کی اوٹ میں ہوجاتا ہے . کچھ ہی دیر میں کئی ہندو مسلمان ناگرکوں کا بات چیت کرتے ہوئے آنا .]

ایک ہندو — ہاں ہاں' میں کہتا ہوں' شیر شاہ کے راج کی طرح کوئی راج اس دیش میں نہیں ہوا .

دوسرا ہندو — میں بھی مانتا ہوں' اور اسکا کارن ہے کہ جس طرح وہ بنا کسی بھی بھید بھاؤ کے راج کرتے ہیں' اس پرکار آج تک کسی نے نہیں کیا .

ایک مسلمان — ہاں' اس میں تو شک نہیں کہ اُن کے لئے ہندو مسلمان سب یکساں ہیں .

تیسرا ہندو — وہ جتنا آدر مسجد کا کرتے ہیں' اُتنا ہی

مندر کا .

चौथा हिन्दू—उन्होंने गोहत्या भी बंद कर दी है.

दूसरा मुसलमान—उनके दिल मे तो सिर्फ़ एक ख़याल है कि रिआया की तरक़्क़ी और उसे आराम किस तरह हो.

तीसरा मुसलमान—चूंकि रिआया में ज़्यादातर खेती करने वाले हैं, इसलिये उनके फ़ायदे के कितने क़ानून बने हैं.

पाँचवाँ हिन्दू—और इन क़ानूनों की पाबन्दी राज कर्मचारियों को किस प्रकार करनी पड़ रही है.

छठवाँ हिन्दू—अरे ! यह पहला अवसर है जब राज कर्मचारियों को अपने को प्रजा का सेवक मानना पड़ता है.

चौथा मुसलमान—और कोई कहीं किसी भी तरह की ज़्यादती करता है तो उसकी शिकायत ख़ुद बादशाह सुनते हैं. सबूत होने पर बड़ी से बड़ी, कड़ी से कड़ी सज़ा देते हैं.

(५६)

पाँचवाँ मुसलमान—फिर सब तरफ़ तरक़्क़ी ही तरक़्क़ी नज़र आ रही है. क्या नहीं हो रहा है ?

छठवाँ मुसलमान—हाँ खेतों की बेहतरी के लिये नहरें बन रही है. वही यहाँ का सब से बड़ा पेशा होने की वजह से और भी हर तरह से उसकी तरक़्क़ी का जारही है .

सातवाँ मुसलमान—आमदरफ़्त की सहूलत के लिये सड़कें बन रही हैं.

आठवाँ मुसलमान—सफ़र में कोई तकलीफ़ न हो, इसलिये सड़कों के दोनों तरफ़ दरख़्त लगवाये जा रहे हैं, कुएं खुद रहे हैं, मुसाफ़िर ख़ाने बन रहे हैं.

چوتھا ھندو — اُنھوں نے گو ھتیا بھی بند کردی ھے .

دوسرا مسلمان — ان کے دل میں تو صرف ایک خیال ھے کہ رعایا کی ترقی اور اُسے آرام کس طرح ھو .

تیسرا مسلمان — چونکہ رعایا میں زیادہ تر کھیتی کرنے والے ھیں اس لئے ان کے فائدے کے کتنے قانون بنے ھیں .

پانچواں ھندو — اور ان قانونوں کی پابندی راج کرمچاریوں کو کس پرکار کرنی پڑ رھی ھے .

چھٹواں ھندو — ارے ! یہ پہلا اوسر ھے جب راج کرم چاریوں کو اپنے کو پرجا کا سیوک ماننا پڑتا ھے .

چوتھا مسلمان — اور کوئی کہیں کسی بھی طرح کی زیادتی کرتا ھے' تو اس کی شکایت خود بادشاہ سنتے ھیں . ثبوت ھونے پر بڑی سے بڑی' کڑی سے کڑی سزا دیتے ھیں .

پانچواں مسلمان — پھر سب طرف ترقی ھی ترقی نظر آ رھی ھے . کیا نہیں ھورھا ھے ؟

چھٹواں مسلمان — ھاں کھیتی کی بہتری کے لئے نہریں بن رھی ھیں . وھی یہاں کا سب سے بڑا پیشہ ھونے کی وجہ سے اور بھی ھر طرح سے اس کی ترقی کی جا رھی ھے .

ساتواں مسلمان — آمدرفت کی سہولت کے لئے سڑکیں بن رھی ھیں .

آٹھواں مسلمان — سفر میں کوئی تکلیف نہ ھو' اس لئے سڑکوں کے دونوں طرف درخت لگوائے جا رھے ھیں' کنویں کھد رھے ھیں' مسافر خانے بن رھے ھیں .

(५३) दौलत के आगे सर टेकें बड़े बड़े गम्भीर
जर के आगे भाव बतायें बड़े बड़े सरदार
नादां बैठे करती में और दाना ग़ोते खाय
कुत्ता सोये गद्दी पर और टहले चौकीदार
आदम का बांका बेटा और भड़ुएपन का रूप
हव्वा की सुन्दर बेटी और रंडी का व्यौहार
शेर के मुंह में सर दे दे और नाग के बिल में हाथ
पेट पुराना पापी है इस पापी से हुशियार
पेट बड़ा बदकार
पेट बड़ा बदकार है बाबा
पेट बड़ा बदकार
(पेट बड़ा बदकार) जोश मलीहाबादी

(۵۳) دولت کے آگے سر ٹیکیں بڑے بڑے گمبھیر
زر کے آگے بھاؤ بتائیں بڑے بڑے سردار
ناداں بیٹھے کشتی میں اور دانا غوطے کھائے
کتا سوئے گدی پر اور ٹہلے چوکیدار
آدم کا بانکا بیٹا اور بھڑوے پن کا روپ
حوا کی سندر بیٹی اور رنڈی کا بیوہار
شیر کے منہ میں سر دے دے اور ناگ کے بل میں ہاتھ
پیٹ پرانا پاپی ہے اس پاپی سے ہشیار
پیٹ بڑا بدکار
پیٹ بڑا بدکار ہے بابا
پیٹ بڑا بدکار (پیٹ بڑا بدکار) جوش ملیح آبادی

(५४) किस जादूगर का यह घर है
बङ्गला देस एक रङ्गभवन
घने घने बाँसों के जङ्गल
जिन में हवायें गाती मङ्गल
हरे भरे सब खेत और बन
कृष्ण-वर्ण से भी कुछ गहरी
जिसकी धरती और गगन
(रूप बङ्गाल) डाक्टर मसऊद हुसैन

(۵۴) کس جادوگر کا یہ گھر ہے
بنگلہ دیس، اک رنگ بھون
گھنے گھنے بانسوں کے جنگل
جن میں ہوائیں گاتی منگل
ہرے بھرے سب کھیت اور بن!
کرشن ورنز سے بھی کچھ گہری
جس کی دھرتی اور گگن (روپ بنگال) ڈاکٹر مسعود حسین

(५५) इन्सां का शिकारी इन्सां है, दिन रात इसी का रोना है
मजदूर की चर्बी चांदी है दहकान की हड्डी सोना है
[illegible] से हम [illegible] को जल्दी धोना है

(۵۵) انساں کا شکاری انساں ہے، دن رات اسی کا رونا ہے
مزدور کی چربی چاندی ہے، دہقان کی ہڈی سونا ہے
[illegible] داغ کو جلدی سے دھونا ہے

सातवाँ हिन्दू —और कितनी ...... कितनी जल्दी यह सब हुआ है !

आठवाँ हिन्दू – हाँ, विदेशियों को देश से निकले और शेरशाह को सिंहासन पर बैठे अभी समय ही कितना हुआ है .

नवाँ हिन्दू—इसका कारण है — प्रजा हित ही हमारे शहंशाह के लिये दिन की चिन्ता और रात का स्वप्न है.

दसवाँ हिन्दू—फिर इस चिन्ता और स्वप्न के अनुसार काम करने की भगवान ने उन्हें बुद्धि और अनथक परिश्रम करने की शक्ति दी है.

ग्यारहवाँ हिन्दू—जैसी बुद्धि और काम करने की शक्ति है वैसा ही चरित्र और विद्वता भी है.

बारहवाँ हिन्दू—फिर एक क्षण भी वह बेकार नहीं खोते. सवेरे उठने से लेकर रात को सोते तक सारी दिन चर्या बनी हुई है.

नवाँ मुसलमान—इनकी कामयाबियों का एक सबब और है.

दसवाँ मुसलमान—क्या ?

नवाँ मुसलमान—वह एक मामूली जागीदार के यहाँ पैदा हुए. रिआया की छोटी से छोटी जरूरतों से वाक़िफ़ हैं. बुरे से बुरा वक़्त देखा. वह बादशाह हुए हैं एक मामूली से मामूली आदमी से बढ़कर.

तेरहवाँ हिन्दू—इसी के साथ एक कारण और है.

दसवाँ मुसलमान—क्या ?

तेरहवाँ हिन्दू—संसार में विजेता बड़े बड़े हुए, परन्तु हमारे बादशाह पहले प्रबन्धक हैं और उस के बाद विजेता. दूसरा डग

ساتواں هندو — اور کتنی ...... کتنی جلدی یہ سب هوا هے !

آٹھواں هندو — هاں' ودیشیوں کو دیش سے نکلے اور شیر شاہ کو سنگھاسن پر بیٹھے ابھی سمے هی کتنا هوا هے .

نواں هندو — اسکا کارن هے — پرجا هت هی همارے شہنشاہ کے لئے دن کی چنتا اور رات کا سپن هے .

دسواں هندو — پھر اس چنتا اور سپن کے انوسار کام کرنے کی بھگوان نے انھیں بدھی اور انتھک پرشرم کرنے کی شکتی دی هے .

گیارھواں هندو — جیسی بدھی اور کام کرنے کی شکتی هے ویسا هی چرتر اور ودوتا بھی هے.

بارھواں هندو—پھر ایک چھن بھی وہ بیکار نہیں کھوتے. سویرے اُٹھنے سے لیکر رات کو سوتے تک ساری دن چریا بنی هوئی هے .

نواں مسلمان — ان کی کامیابیوں کا ایک سبب اور هے .

دسواں مسلمان — کیا ؟

نواں مسلمان — وہ ایک معمولی جاگیردار کے یہاں پیدا هوئے. رعایا کی چھوٹی سے چھوٹی ضرورتوں سے واقف هیں . برے سے برا وقت دیکھا . وہ بادشاہ هوئے هیں ایک معمولی سے معمولی آدمی سے بڑھکر .

تیرھواں هندو — اسی کے ساتھ ایک کارن اور هے .

دسواں مسلمان — کیا ؟

تیرھواں هندو—سنسار میں وجیتا بڑے بڑے هوئے' پرنتو همارے بادشاہ پہلے پر بندھک هیں اور اس کے بعد وجیتا . دوسرا ڈگ

तब तक नहीं उठाते जब तक पहले डग के किये हुए काम की पूरी पूरी व्यवस्था और निरीक्षण नहीं कर लेते.

ग्यारहवाँ मुसलमान—फिर तो उन की कामयाबियों का एक सबब और मानना होगा.

तेरहवाँ हिन्दू—क्या ?

ग्यारहवाँ मुसलमान—उन के सलाह कार ब्रह्मादित्य गौड़.

सब हिन्दू मुसलमान—(एक साथ) बिलकुल ठीक, बिलकुल ठीक !

पहला हिन्दू—मैंने कहा न. शेरशाह से अच्छा कोई राजा इस देश में नहीं हुआ.

दूसरा हिन्दू—अच्छा अब जल्दी जल्दी चलो, झरोके पर से उन के दर्शन देने का समय हो रहा है.

[सब लोग जाने लगने हैं. निज़ाम निकल कर उन्हें रोकता है]

निज़ाम—क्यों, भाइयो, भाई साहब की – (चौंक कर) ओह... शेरशाह साहब की सलतनत में किसी को कोई तकलीफ़ नहीं ?

[सब लोग कुछ आश्चर्य से निज़ाम की ओर देखते हैं]

एक मुसलमान—तकलीफ़ ...... कैसी बातें करते हैं आप ? यह सलतनत क़ायम हुई है सब की तकलीफ़ रफ़ा करने के लिये.

एक हिन्दू—जनाब, यह हिन्दू मुसलमानों का मिला जुला राज है. सभी को पूरा सुख है, पूरा पूरा.

[कुछ देहातियों का आना.]

एक देहाती — (नागरिकों से) बादसा के दरसन तो अबही

تب تک نہیں اُٹھاتے جب تک پہلے ڈگ کے کئے ہوئے کام کی پوری پوری ویوستھا اور نریکشن نہیں کرلیتے .

گیارھواں مسلمان — پھر تو ان کی کامیابیوں کا ایک سبب اور ماننا ہوگا .

تیرھواں ہندو — کیا ؟

گیارھواں مسلمان — ان کے صلاح کار برھما دتیہ گوڑ .

سب ہندو مسلمان — (ایک ساتھ) بالکل ٹھیک . بالکل ٹھیک !

پہلا ہندو — میں نے کہا نہ' شیر شاہ سے اچھا کوئی راج اِس دیش میں نہیں ہوا .

دوسرا ہندو — اچھا' اب جلدی جلدی چلو' جھروکے پر سے اُن کے درشن دینے کا سمے ہو رہا ہے .

[سب لوگ جانے لگتے ہیں. نظام نکل کر اُنہیں روکتا ہے .]

نظام—کیوں بھائیو' بھائی صاحب کی--(چونک کر) اوہ... شیر شاہ صاحب کی سلطنت میں کسی کو کوئی تکلیف نہیں ؟

[سب لوگ کچھ آشچریہ سے نظام کی اُور دیکھتے ہیں .]

ایک مسلمان — تکلیف. . . . کیسی باتیں کرتے ہیں آپ ؟ یہ سلطنت قائم ہوئی ہے سب کی تکلیف رفع کرنے کے لئے .

ایک ہندو — جناب' یہ ہندو مسلمانوں کا ملا جلا راج ہے . سبھی کو پورا سکھ ہے' پورا پورا .

[کچھ دیہاتیوں کا آنا]

ایک دیہاتی —(ناگرکوں سے) بادسا کے درسن تو ابھی ہوئے جنہیں نہ ؟

एक हिन्दू—हाँ, हाँ, अभी हो जायँगे.

[देहाती जल्दी से जाने लगते हैं.]

निजाम — (देहातियों के सामने आकर उन्हें रोकते हुए) क्यों भाइयों, इस सल्तनत में तुम लोग आराम से तो हो ?

दूसरा देहाती — अरे सत जुग है.

[सब देहाती तेजी से जाते हैं. नेपथ्य में सब की मिली आवाज सुनाई देती है — ' हां, हाँ. सतजुग है, पूरम्पार सतजुग नागरिक जाते हैं.]

निजाम — (कुछ सोचते हुए, एकाएक नागरिकों से) हाँ, हाँ, सुनिये, सुनिये तो

[नागरिक रुक जाते हैं.]

निजाम—आप लोग उन की बेगम लाड मलिका का भी कुछ हाल जानते हैं ?

एक मुसलमान—(सोचते हुए) लाड मलिका ?

दूसरा मुसलमान—हाँ, हाँ, वह चुनार वाली ?

दूसरा हिन्दू—जिस से हमारे बादशाह सलामत को डेढ़ सौ रत्न, सात मन मोती और डेढ़ सौ मन सोना मिला था ; जिस धन के कारण इस राज की स्थापना हो सकी ?

तीसरा हिन्दू— (निजाम से) हाँ, मैं उसका हाल जानता हूँ. सुना है उसको एक सहेली थी, उसका नाम था नसीम, किन्तु वह सखी मनुष्य न होकर मैना थी. एक दिन नसीम उड़ गई और लाड मलिका पागल होगई.

ایک هندو — هاں، هاں، ابهی هوجائیں گے .

[دیهاتی جلدی سے جانے لگتے هیں .]

نظام — (دیهاتیوں کے سامنے آکر اُنهیں روکتے هوئے) کیوں بهائیو، اس سلطنت میں تم لوگ آرام سے تو هو ؟

دوسرا دیهاتی — ارے ست جگ ہے .

[سب دیهاتی تیزی سے جاتے هیں . نیپتهیه میں سب کی ملی جلی آواز سنائی دیتی ہے — ' هاں، هاں، ست جگ ہے، پورمپار ست جگ، ناگرک جانے لگتے هیں .]

نظام — (کچه سوچتے هوئے، ایک ایک ناگرکوں سے) هاں، هاں، سنئے، سنئے تو ۔

[ناگرک رک جاتے هیں .]

نظام — آپ لوگ اُن کی بیگم لاڈ ملکه کا بهی کچه حال جانتے هیں ؟

ایک مسلمان — (سوچتے هوئے) لاڈ ملکه ؟

دوسرا مسلمان — هاں، هاں، وه چنار والی ؟

دوسرا هندو — جس سے همارے بادشاه سلامت کو ڈیڑه سو رتن، سات من موتی اور ڈیڑه سو من سونا ملا تها ؛ جس دهن کے کارن اس راج کی استهاپنا هوسکی ؟

تیسرا هندو — (نظام سے) هاں، میں اس کا حال جانتا هوں . سنا ہے اس کی ایک سہیلی تهی، اس کا نام تها نسیم، کنتو وه سکهی منش نه هوکر مینا تهی . ایک دن نسیم اُڑگئی اور لاڈ ملکه پاگل هوگئی .

निज़ाम — (चौंक कर) पागल ! (सिर झुक जाता है.)

एक हिन्दू — अच्छा, ... अच्छा, अब चलो नहीं तो फिर शहंशाह के दर्शन ही न मिलेंगे.

[सब लोग निज़ाम की ओर देखते हुए जाते हैं. निज़ाम वैसा का वैसा मूर्ति की भांति खामोश खड़ा रहता है.]

निज़ाम — (कुछ देर बाद, बड़ी ही गम्भीता से) पागल ! ..... लाड मलिका पागल !

यवनिका

आज के शहीद

(सम्पादक श्री० रतन लाल बंसल)

आज के शहीद में उन बहादुरों की कहानियाँ हैं जिन्होंने विदेशी हाकिमों की फैलाई फूट की आग में इन्सानियत को भस्म होते देख एक छन की भी देर न की और उसे बुझाने के लिये अपनी जान क़ुरबान कर दी, उन वीरों की कहानियाँ हैं जिन्हों ने फूट और नफ़रत के अंधेरे में रोशनी बनकर दूसरों को रास्ता दिखाया.

हर एकता प्रेमी के पढ़ने की किताब

सुन्दर जिल्द और आर्ट पेपर पर छपी आठ तस्वीरों के साथ इस किताब का दाम सिर्फ़ ढाई रुपया रक्खा गया है. किताब उर्दू और नागरी दोनों लिखावटों में मिल सकती है.

मैनेजर 'नया हिन्द' ४८ बाई का बाग इलाहाबाद.

نظام (ـــ چونک کر) پاگل ! (سر جهک جاتا)

ایک هندو ـــ اچها' ...... اچها اب چلو نهیں تو پهر شہنشاہ کے درشن هی نہ ملیں گے .

[سب لوگ نظام کی اور دیکھتے هوئے جاتے هیں . نظام ویسا کا ویسا مورتی کی بهانت خاموش کهڑا رهتا هے .]

نظام ـــ (کچھ دیر بعد' بڑی هی گمبهیرتا سے) پاگل ! ... . لاڈ ملکہ پاگل !

یونیکا

آج کے شہید

(سمپادک' شری رتن لال بنسل)

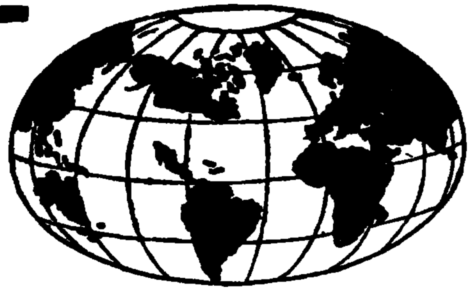
آج کے شہید میں اُن بہادروں کی کہانیاں هیں جنهوں نے بدیشی حاکموں کی پهیلائی پهوٹ کی آگ میں انسانیت کو بهسم هوتے دیکھ ایک چهن کی بهی دیر نہ کی اور اُسے بجهانے کے لئے اپنی جان قربان کردی' اُن ویروں کی کہانیاں هیں جنهوں نے پهوٹ اور نفرت کے اندھیرے میں روشنی بنکر دوسروں کو راستہ دکهایا .

هر ایکتا پریمی کے پڑھنے کی کتاب

سندر جلد اور آرٹ پیپر پر چهپی آٹھ تصویروں کے ساتھ اس کتاب کا دام صرف ڈهائی روپیہ رکها گیا هے . کتاب اُردو اور ناگری دونوں لکهاوٹوں میں مل سکتی هے

مینیجر ' نیا هند ' ٤٧ بائی کا باغ الہ آباد

दुनिया का हाल



دنیا کا حال

(भाई इशरत अली सिद्दीक़ी)

(بھائی عشرت علی صدیقي)

"ठण्डी लड़ाई"

यू० एन० ओ० के सेक्रेट्री जनरल मोसियो तर्गफ़ लो ने एक बयान में कहा है कि दुनिया का हाल पिछली बड़ी लड़ाई के ख़तम होने के बाद से आज तक कभी इतना ख़राब नहीं था. जितना कि इस वक़्त है. मतलब यह है कि दुनिया अभी तक कभी लड़ाइ से इतनी क़रीब नहीं थी जितना कि इस वक़्त है. उनकी राय में किसी देश की सरकार या जनता मारधाड़ नहीं चाहती मगर इस वक़्त जो एक तरह की "ठंडी लड़ाई" हो रही है वह दुनिया को उमी तरफ़ ले जा रही है. इसलिये इसे ख़तम करना वक़्त की सबसे बड़ी जरूरत है.

"ठण्डी लड़ाई" का मतलब है दुनिया के बड़े राष्ट्रों की अलग अलग जत्था बन्दी. इन जत्थों के आपस की लाग डांट, एक दूसरे के ख़िलाफ़ इनका प्रोपेगन्डा, एक दूसरे को नीचा दिखाने के लिये राजनैतिक दाँवपेच और एक दूसरे को हराने के लिये फौजों और हथियारों की तैयारी. अगर यह सब बातें जारी रहीं तो

"ٹھنڈی لڑائي"

یو . این . او . کے سکریٹري جنرل موسیو ترگوف لي نے ایک بیان میں کہا ہے کہ دنیا کا حال پچھلي بڑي لڑائی کے ختم ہونے کے بعد سے آج تک کبھی اتنا خراب نہیں تھا جتنا کہ اس وقت ہے . مطلب یہ ہے کہ دنیا ابھی تک کبھي لڑائی سے اتني قریب نہیں تھي جتني کہ اس وقت ہے . ان کي رائے میں کسی دیش کي سرکار یا جنتا مار دھاڑ نہیں چاہتی مگر اس وقت جو ایک طرح کي "ٹھنڈی لڑائي" ہو رہی ہے وہ دنیا کو اُسي طرف لے جارہی ہے . اس لئے اسے ختم کرنا وقت کی سب سے بڑی ضرورت ہے .

"ٹھنڈی لڑائی" کا مطلب ہے دنیا کے بڑے راشٹروں کي الگ الگ جتھہ بندی' ان جتھوں کے آپس کي لاگ ڈانٹ' ایک دوسرے کے خلاف ان کا پروپیگنڈا' ایک دوسرے کو نیچا دکھانے کے لئے راج نیتک داؤں پیچ اور ایک دوسرے کو ہرانے کے لئے فوجوں اور ہتھیاروں کي تیاری. اگر یہ سب باتیں جاري رہیں تو

रूसी और अमरीकी जत्थों में तनातनी बढ़ती रहेगी और बढ़ कर यह एक तरह की बारूद बन जायगी जो एक मामूली सी चिन्गारी पड़ जाने से भड़क उठेगी.

हवाई झड़प

अभी पिछले महीने इसके भड़क उठने का एक डर पैदा हो गया था, जब जर्मनी से हालैंड जाते हुए अमरीका का एक हवाई जहाज रास्ते में ग़ायब हो गया. अमरीका ने कहा कि उसे रूस ने गिरा लिया है और रूस ने कहा कि उस हवाई जहाज को इसलिये गिराया गया कि वह लिटेविया की रियासत पर रूस की फौजी तैयारियों और मोर्चों का हाल मालूम करने के लिये आया था और जब उससे रूसी हवाई जहाजों ने उतरने को कहा तो यह कहना मानने के बजाय उसने गोली चला दी. अमरीका ने यह जवाब माना तो नहीं पर वह खामोश हो गया और इसका एक कारन यह बताया जाता है कि कुछ अर्से से रूस और अमरीका दोनों एक दूसरे की तैयारियों का भेद मालूम करने की कोशिश करते रहते हैं. शायद इन दोनों में इस तरह की हवाई और समुन्दरी टक्करें इससे पहले भी हो चुकी हैं. पर दोनों ने इस खयाल से कि कहीं दूसरे को कोई नई बात न मालूम हो जाय इन टक्करों का हाल छिपा डाला. हो सकता है कि आगे भी इनमें कोई टक्कर हो जाय. इसलिये कि जब तक इन दोनों में "ठंडी लड़ाई" हो रही है तब तक दोनों "गरम लड़ाई" की तैयारी करते रहेंगे और एक दूसरे की तैयारियों का हाल जानने की कोशिश करते रहेंगे. नहीं कहा जा सकता कि किस मंज़िल पर पहुँच कर "ठण्डी लड़ाई" खतम हो जायगी और "गरम लड़ाई" शुरू हो जायगी.

(४८)

روسی اور امریکی جتھوں میں تنا تنی بڑھتی رہے گی اور بڑھکر یہ ایک طرح کی باروود بن جائیگی جو ایک معمولی سی چنگاری پڑجانے سے بھڑک اٹھے گی ۔

ہوائی جھڑپ

ابھی پچھلے مہینے اس کے بھڑک اٹھنے کا ایک ڈر پیدا ہوگیا تھا، جب جرمنی سے ہالینڈ جاتے ہوئے امریکہ کا ایک ہوائی جہاز راستے میں غائب ہوگیا ۔ امریکہ نے کہا کہ اسے روس نے گرا لیا ہے اور روس نے کہا کہ اس ہوائی جہاز کو اس لئے گرایا گیا کہ وہ لیتھویا کی ریاست پر روس کی فوجی تیاریوں اور مورچوں کا حال معلوم کرنے کے لئے آیا تھا اور جب اس سے روسی ہوائی جہازوں نے اترنے کو کہا تو یہ کہنا ماننے کے بجائے اس نے گولی چلادی ۔ امریکہ نے یہ جواب مانا تو نہیں پر وہ خاموش ہوگیا اور اس کا ایک کارن یہ بتایا جاتا ہے کہ کچھ عرصے سے روس اور امریکہ دونوں ایک دوسرے کی تیاریوں کا بھید معلوم کرنے کی کوشش کرتے رہتے ہیں ۔ شاید ان دونوں میں اس طرح کی ہوائی اور سمندری ٹکریں اس سے پہلے بھی ہوچکی ہیں ۔ پر دونوں نے اس خیال سے کہ کہیں دوسرے کو کوئی نئی بات نہ معلوم ہوجائے' ان ٹکروں کا حال چھپا ڈالا ۔ ہوسکتا ہے کہ آگے بھی ان میں کوئی ٹکر ہوجائے ۔ اس لئے کہ جب تک ان دونوں میں " ٹھنڈی لڑائی " ہو رہی ہے تب تک دونوں " گرم لڑائی " کی تیاری کرتے رہیں گے اور ایک دوسرے کی تیاریوں کا حال جاننے کی کوشش کرتے رہیں گے ۔ نہیں کہا جاسکتا کہ کس منزل پر پہنچ کر " ٹھنڈی لڑائی " ختم ہوجائیگی اور " گرم لڑائی " شروع ہوجائیگی ۔

रूस और अमरीका

ऐसी हालत में 'मोसियो ली का " ठण्डी लड़ाई " को खतम करने के इरादे से रूस जाना एक बड़ा अच्छा बात है. इन्हीं दिनों रूस के एक सरकारी अखबार में स्टालिन का एक बहुत पुराना बयान पहली बार छपा है जिसमें उन्होंने कहा था कि कम्युनिस्ट और पूंजी वादी राष्ट्र दोस्ती के साथ रह सकते हैं.

प्रेसीडेन्ट ट्रूमेट और उनके विदेश मन्त्री ने भी कहा है कि अभी कुछ अर्से तक लड़ाई छिड़ने की कोई सम्भावना नहीं है. पर यह बात उन्होंने " गरम लड़ाई " के लिये कही है. " ठण्डी लड़ाई " को वह खतम नहीं करना चाहते बल्कि लड़कर जीत लेना चाहते हैं. इसलिये कि यह लड़ाई उन के विचार में गरम लड़ाई से सस्ती पड़ेगी. इसे लड़ने के लिये राजनैतिक दाँवपेच और आर्थिक मदद की जरूरत होती है जो दूसरे देशों को क़र्ज़ और भीक के रूप में दी जाती है जिसमें कि वह अपनी आर्थिक हालत इतनी दुरुस्त कर लें कि जनता कम्युनिस्टों की बात पर कान न धरे. इसके साथ ही अमरीका अपने असर वाले मुल्कों को फौजी सामान भी दे रहा है ताकि वह रूस के मुक़ाबले पर मोर्चा बना सकें और अन्दर और बाहर के कम्युनिस्टों की काट कर सकें.

जर्मनी का नवजीवन

योरप में मार्शल प्लान आर्थिक सहायता के लिये बनाया गया था और एटलान्टिक समझौता फ़ौजी सहायता के लिये हुआ है. इस सिलसिले के सवालों पर सोच विचार करने के लिये मई में

روس اور امریکہ

ایسی حالت میں موسیو لی کا " ٹھنڈی لڑائی " کو ختم کرنے کے ارادے سے روس جانا ایک بڑی اچھی بات ہے . اِنھیں دنوں روس کے ایک سرکاری اخبار میں اِستالن کا ایک بہت پرانا بیان پہلی بار چھپا ہے جس میں اُنھوں نے کہا تھا کہ کمیونسٹ اور پونجی وادی راشٹر دوستی کے ساتھ رہ سکتے ہیں .

پریسیڈنٹ ٹرومین اور اُن کے ودیش منتری نے بھی کہا ہے کہ ابھی کچھ عرصے تک لڑائی چھڑنے کی کوئی سمبھاؤنا نہیں ہے . پر یہ بات اُنھوں نے "گرم لڑائی" کے لئے کہی ہے. "ٹھنڈی لڑائی" کو وہ ختم نہیں کرنا چاہتے بلکہ لڑکر جیت لینا چاہتے ہیں . اس لئے کہ یہ لڑائی ان کے وچار میں گرم لڑائی سے سستی پڑے گی . اسے لڑنے کے لئے راج نیتک داؤں پیچ اور آرتھک مدد کی ضرورت ہوتی ہے جو دوسرے دیشوں کو قرض اور بھیک کے روپ میں دی جاتی ہے جس میں کہ وہ اپنی آرتھک حالت اتنی درست کرلیں کہ جنتا کمیونسٹوں کی بات پر کان نہ دھرے . اس کے ساتھ ہی امریکہ اپنے اثر والے ملکوں کو فوجی سامان بھی دے رہا ہے تاکہ وہ روس کے مقابلہ پر مورچہ بنا سکیں اور اندر اور باہر کے کمیونسٹوں کی کاٹ کرسکیں .

جرمنی کا نوجیون

یورپ میں مارشل پلان آرتھک سہائتا کے لئے بنایا گیا تھا اور اٹلانٹک سمجھوتہ فوجی سہایتا کے لئے ہوا ہے . اس سلسلے کے سوالوں پر سوچ وچار کرنے کے لئے مئی میں

बरतानिया, अमरीका और फ़्रान्स के विदेश मन्त्री लन्दन में इकट्ठा हुए. उनके सामने सबसे बड़ा सवाल जर्मनी का है जिसके पूरबी हिस्से पर रूस का क़ब्ज़ा है और पच्छिमी हिस्से पर पच्छिमी राष्ट्र पूरा अधिकार रखते हैं. उन्होंने जर्मनों की अपनी सरकार भी बना दी है. लेकिन यह सरकार, यह देखकर कि रूस के मुक़ाबले पर पच्छिमी राष्ट्रों की मोर्चाबन्दी उसके बिना पूरी नहीं हो सकती, उनसे ज्यादा से ज्यादा अधिकार मांग रही है. उसके साथ पच्छिमी राष्ट्र कभी प्यार की बातें करते हैं और कभी ग़ुस्से की. कभी वह यह कहते हैं कि जर्मनी के बिना योरप में कोई मज़बूत बिरादरी नहीं बन सकती और कभी वह इस बात से डरते हैं कि जर्मनी कहीं आस्तीन का सांप न बन जाय और जिस तरह पहली बड़ी लड़ाई हारने के बाद वह दूसरी बड़ी लड़ाई शुरू करने के क़ाबिल बन गया था, उसी तरह दूसरी लड़ाई हारने के बाद कहीं तीसरी बड़ी लड़ाई के लिये तैयार न हो जाय. यह डर सब से ज्यादा फ़्रान्स को है जिसकी सरहद जर्मनी से मिली है. फ़्रान्स के विदेश मन्त्री लन्दन कान्फ़्रेन्स में यह तजवीज़ लेकर आये हैं कि फ़्रान्स और जर्मनी में कोयला और लोहे की पैदावार एक साथ जोड़ दी जाय और इसकी निगरानी एक ऐसी संस्था के सुपुर्द कर दी जाय जिसमें पच्छिमी योरप के सभी देश शरीक हों. यह 'ठण्डी लड़ाई' का एक वार है और इस का असर मोसियो ली के मिशन पर कुछ अच्छा नहीं पड़ेगा.

<u>हिन्द चीन की अहमियत</u>

इस मिशन पर दूर पूरब के हालात और यहाँ रूस और अमरीका [illegible] और भी ख़राब होगा. दरअसल इस वक़्त

برطانیہ' امریکہ اور فرانس کے ودیش منتری لندن میں اکٹھا ہوئے . اُن کے سامنے سب سے بڑا سوال جرمنی کا ہے جس کے پوربی حصے پر روس کا قبضہ ہے اور پچھمی حصے پر پچھمی راشٹر پورا ادھیکار رکھتے ہیں . اُنہوں نے جرمنوں کی اپنی سرکار بھی بنا دی ہے . لیکن یہ سرکار' یہ دیکھکر کہ روس کے مقابلے پر پچھمی راشٹروں کی مورچہ بندی اُس کے بنا پوری نہیں ہوسکتی' ان سے زیادہ سے زیادہ ادھیکار مانگ رہی ہے . اُس کے ساتھ پچھمی راشٹر کبھی پیار کی باتیں کرتے ہیں اور کبھی غصہ کی . کبھی وہ یہ کہتے ہیں کہ جرمنی کے بنا یورپ میں کوئی مضبوط برادری نہیں بن سکتی اور کبھی وہ اس بات سے ڈرتے ہیں کہ جرمنی کہیں آستین کا سانپ نہ بن جائے اور جسطرح پہلی بڑی لڑائی ہارنے کے بعد وہ دوسری بڑی لڑائی شروع کرنے کے قابل بن گیا تھا' اسی طرح دوسری لڑائی ہارنے کے بعد کہیں تیسری بڑی لڑائی کے لئے تیار نہ ہوجائے . یہ ڈر سب سے زیادہ فرانس کو ہے جس کی سرحد جرمنی سے ملی ہے . فرانس کے ودیش منتری لندن کانفرنس میں یہ تجویز لے کر آئے ہیں کہ فرانس اور جرمنی میں کوئلہ اور لوہے کی پیداوار ایک ساتھ جوڑ دی جائے اور اس کی نگرانی ایک ایسی سنستھا کے سپرد کردی جائے جس میں پچھمی یورپ کے سبھی دیش شریک ہوں . یہ ' ٹھنڈی لڑائی ' کا ایک وار ہے اور اسکا اثر موسیو لی کے مشن پر کچھ اچھا نہیں پڑے گا .

<u>هند چین کی اهمیت</u>

اس مشن پر دور پورب کے حالات اور یہاں روس اور امریکہ کی تناتنی کا اثر اور بھی خراب ہوگا .. در اصل اس وقت

'ठण्डी लड़ाई' सबसे ज़्यादा ज़ोर के साथ इसी मैदान में हो रहा है और सबसे अधिक ध्यान हिन्द-चीन पर दिया जा रहा है जो एक तरफ़ चीन से और दूसरी तरफ़ स्याम और बरमा से मिला हुआ है. पिछली 'गरम लड़ाई' में जापान के साम्राजी हिन्द चीन में जीत जाने के बाद थोड़े दिनों में स्याम, मलाया और बरमा को जीतते हुए हिन्दुस्तान तक पहुंच गये थे. शायद यही डर पच्छिमी राष्ट्रों को 'ठण्डी लड़ाई' में रूस, चीन और दूसरे देशों के कम्युनिस्टों से है. इसीलिये अमरीका ने हिन्द चीन में फ्रान्स के ज़रिये उसकी बनाई हुई बावडाई की सरकार को मदद देने का फ़ैसला किया है. यह मदद आर्थिक और फ़ौजी दोनों तरह की होगी और अमरीका के अधिकारियों ने कहा है कि इस से हिन्द चीन की राष्ट्रीयता की भी तरक़्क़ी होगी लेकिन बावडाई सरकार फ़्रान्स की कठपुतली है. हिन्द चीनी जनता उस के साथ नहीं है और उस की मदद देने से राष्ट्रीयता की जो तरक़्क़ी होगी वह अमरीका, फ़्रान्स और बावडाई के ख़िलाफ़ जायगी. इसका थोड़ा बहुत पता हाल की इस ख़बर से चलता है कि एक जगह हिन्द चीनी फ़ौज ने, जो बाग़ियों से निपटने के लिये भेजी गई थी, लारियों पर से उतरने से इन्कार कर दिया. बावडाई के लिये अमरीका की सहायता का एक असर यह भी हो सकता है कि चीन और रूस हो ची मिंह को खुल्लम खुल्ला और बड़े पैमाने पर मदद देने लगें. चीनी कम्युनिस्टों के हेनान टापू पर क़ब्ज़ा कर लेने से उनके लिये अपने हिन्द-चीनी साथियों को मदद पहुंचाना पहले से ज़्यादा आसान हो गया है. वैसे भी चीन की सरहद हिन्द चीन से मिली हुई है और ख़बर है कि सरहदी मोर्चों पर कई हज़ार चीनी सिपाही टिका दिये गये हैं.

'ٹھنڈی لڑائی' سب سے زیادہ زور کے ساتھ اسی میدان میں ہو رہی ہے اور سب سے ادھک دھیان ہند چین پر دیا جا رہا ہے' جو ایک طرف چین سے اور دوسری طرف سیام اور برما سے ملا ہوا ہے. پچھلی 'گرم لڑائی' میں جاپان کے سامراجی ہند چین میں جیت جانے کے بعد تھوڑے دنوں میں سیام' ملایا اور برما کو جیتتے ہوئے ہندستان تک پہنچ گئے تھے. شاید یہی ڈر پچھمی راشٹروں کو 'ٹھنڈی لڑائی' میں روس' چین اور دوسرے دیشوں کے کمیونسٹوں سے ہے اسی لئے امریکہ نے ہند چین میں فرانس کے ذریعے اُس کی بنائی ہوئی باؤ ڈائی کی سرکار کو مدد دینے کا فیصلہ کیا ہے یہ مدد آرتھک اور فوجی دونوں طرح کی ہوگی اور امریکہ کے ادھیکاریوں نے کہا ہے کہ اس سے ہند چین کی راشٹریتا کی بھی ترقی ہوگی. لیکن باؤ ڈائی سرکار فرانس کی کٹھ پتلی ہے. ہند چینی جنتا اس کے ساتھ نہیں ہے اور اس کو مدد دینے سے راشٹریتا کی جو ترقی ہوگی وہ امریکہ' فرانس اور باؤ ڈائی کے خلاف جائیگی. اس کا تھوڑا بہت پتہ حال کی اس خبر سے چلتا ہے کہ ایک جگہ ہند چینی فوج نے' جو باغیوں سے نپٹنے کے لئے بھیجی گئی تھی' لاریوں پر سے اُترنے سے انکار کردیا. باؤ ڈائی کے لئے امریکہ کی سہایتا کا ایک اثر یہ بھی ہوسکتا ہے کہ چین اور روس ہوچی منہ کو کھلم کھلا اور بڑے پیمانے پر مدد دینے لگیں. چینی کمیونسٹوں کے ہینان ٹاپو پر قبضہ کر لینے سے ان کے لئے اپنے ہند چینی ساتھیوں کو مدد پہنچانا پہلے سے زیادہ آسان ہوگیا ہے. ویسے بھی چین کی سرحد ہند چین سے ملی ہوئی ہے اور خبر ہے کہ سرحدی مورچوں پر کئی ہزار چینی سپاہی ٹکا دیئے گئے ہیں.

मलाया का आन्दोलन

हिन्द चीन ही से मिलती जुलती हालत मलाया की भी है. वहाँ जो हैसियत फ़ान्स की है वही यहाँ बरतानिया की है. और जिस तरह वहाँ फ़ान्सीसी फ़ौजों के होते हुए कम्युनिस्ट आनदोलन पूरे जोर के साथ चल रहा है उसी तरह यहाँ १६ हजार सेना, ७० हजार पुलीस और एक ताक़तवर हवाई दस्ता कम्युनिस्ट छापा मारों का जोर नहीं तोड़ सका है. दोनों जगह के हालात पर चीन के इन्क़लाब का असर पड़ा है. हिन्द चीन पर इस लिये कि उसकी सरहद चीन से मिली हुई है और मलाया पर इस लिये कि वहाँ चीनियों की एक बड़ी तादाद आबाद है. (सिंगापुर में ७० फ़ीसदी और बाक़ी इलाक़ में ४० फ़ीसदी) मलाया के आन्दोलन की बुनियाद आर्थिक और राजनैतिक दोनों तरह की है. वहाँ टीन की खानों और रबड़ के बाग़ों में काम करने वाले मजदूर अपनी मजदूरी और रिआयतों में बढ़ती चाहते हैं और जनता बरतानी साम्राज्य से आजादी चाहती है. ऐसा आन्दोलन चाहे वह मलाया में हो और चाहे हिन्द चीन में, सिर्फ़ वैसी बातों से नहीं ख़त्म हो सकता जैसी कि तीन बड़े विदेश मंत्रियों की लन्दन कानफ़्रेन्स के एक एलान में कही गई हैं. उसमें कहा गया है कि दक्खिन पूरबी एशिया के जो देश आजाद हो रहे हैं उनकी हमदर्दी और सहायता की जायगी. और "कम्युनिस्ट साम्राजशाही" का पोल खोला जायगा. हिन्द-चीन और मलाया इस एलान की कसौटी हैं और इस कसौटी पर कसने से पच्छिमी राष्ट्रों की पालिसी " कम्युनिस्ट सामाजशाही " से कहीं ज्यादा पोली निकलेगी.

ملایا کا آندولن

ھند چین ھی سے ملتی جلتی حالت ملایا کی بھی ھے. وھاں جو حیثیت فرانس کی ھے وھی یہاں برطانیہ کی ھے' اور جسطرح وھاں فرانسیسی فوجوں کے ھوتے ھوئے کمیونسٹ آندولن پورے زور کے ساتھ چل رھا ھے اسی طرح یہاں ۱۶ ھزار سینا' ۷۰ ھزار پولیس اور ایک طاقتور ھوائی دستہ کمیونسٹ چھاپہ ماروں کا زور نہیں توڑ سکا ھے. دونوں جگہ کے حالات پر چین کے انقلاب کا اثر پڑا ھے. ھند چین پر اس لئے کہ اس کی سرحد چین سے ملی ھوئی ھے اور ملایا پر اِس لئے کہ وھاں چینیوں کی ایک بڑی تعداد اباد ھے. (سنگا پور میں ۷۰ فیصدی اور باقی علاقہ میں ۴۰ فیصدی، ملایا کے آندولن کی بنیاد آرتھک اور راج نیتک دونوں طرح کی ھے. وھاں تین کی کھانوں اور ربر کے باغوں میں کام کرنے والے مزدور اپنی مزدوری اور رعایتوں میں بڑھتی چاھتے ھیں اور جنتا برطانی سامراج سے آزادی چاھتی ھے. ایسا آندولن چاھے وہ ملایا میں ھو اور چاھے ھند چین میں' صرف ویسی باتوں سے نہیں ختم ھو سکتا جیسی کہ "تین بڑے" ودیش منتریوں کی لندن کانفرنس کے ایک اعلان میں کہی گئی ھیں. اس میں کہا گیا ھے کہ دکھن پوربی ایشیا کے جو دیش آزاد ھو رھے ھیں ان کی ھمدردی اور سہایتا کی جائے گی. اور "کمیونسٹ سامراج شاھی" کا پول کھولا جائے گا. ھند چین اور ملایا اس اعلان کی کسوٹی ھیں اور اس کسوٹی پر کسنے سے پچھمی راشٹروں کی پالیسی "کمیونسٹ سامراج شاھی" سے کہیں زیادہ پولی نکلے گی.

ज़ाहिर में यह फोड़ा सुर्ख़ सही अन्दर का मवाद अब ख़ाम नहीं
ऐ दोस्त अभी आराम न कर आराम का यह हङ्गाम नहीं
(ऐ दोस्त अभी आराम न कर) एहसान दानिश

(५६) मेरे प्यारे वतन !
मेरे अच्छे वतन !
लोग कहते हैं मैं तेरा ग़द्दार हूँ
अपने घर की सियह रात को छोड़ कर अजनबी सुब्हे नौ का परिस्तार हूं
ग़ैर का नक़्श हूँ, सायए रूस हूं
दुश्मने दीं हूँ, मुलहिद हूँ, जासूस हूँ
इस तरह के बनाये, तराशे हुए और भी कितने ही तेज़ इलज़ाम हैं
जिस तरफ़ भी निगाहें उठाता हूँ मैं तोहमतों के चमकते हुए दाम हैं
और मेरा जुर्म, मेरी ख़ता, मेरी तक़सीर
अगर कोई है तो फ़क़त यह——कि मैं
लहलहाते हुए खेत की मेंड पर भूक की लू में
दहक़ाँ को जलता हुआ देख सकता नहीं
शोर करते हुए कारख़ानों की बदबू में
मज़दूर का ख़ून उगलता हुआ देख सकता नहीं
फ़ाइलों से सजे दफ़्तरों के क्लर्कों को
तन्ख़्वाह के ग़म में घुलता हुआ देख सकता नहीं
ज़ेहनो दिल, इल्मोफ़न, नग़मओ शेर पर
सेफ़्टी ऐक्ट का आरा चलता हुआ देख सकता नहीं

ظاہر میں یہ پھوڑا سرخ سہی اندر کا مواد ابھی خام نہیں
اے دوست ابھی آرام نہ کر آرام کا یہ ہنگام نہیں
(اے دوست ابھی آرام نہ کر) 'احسان دانش'

(٥٦) میرے پیارے وطن !
میرے اچھے وطن !
لوگ کہتے ہیں میں تیرا غدار ہوں
اپنے گھر کی سیہ رات کو چھوڑ کر اجنبی صبح نو کا پرستار ہوں
غیر کا نقش ہوں' سایہ روس ہوں
دشمن دیں ہوں' ملحد ہوں' جاسوس ہوں
اس طرح کے بنائے تراشے ہوئے' اور بھی کتنے ہی تیز الزام ہیں
جسطرف بھی نگاہیں اُٹھاتا ہوں میں تہمتوں کے چمکتے ہوئے دام ہیں
اور مرا جرم' میری خطا میری تقصیر
اگر کوئی ہے تو فقط یہ——کہ میں
لہلہاتے ہوئے کھیت کی مینڈ پر بھوک کی لو میں
دہقان کو جلتا ہوا دیکھ سکتا نہیں
شور کرتے ہوئے کارخانوں کی بدبو میں
مزدور کو خون اگلتا ہوا دیکھ سکتا نہیں
فائلوں سے سجے دفتروں کے کلرکوں کو
تنخواہ کے غم میں گھلتا ہوا دیکھ سکتا نہیں
ذہن و دل' علم و فن' نغمہ و شعر پر
سیفٹی ایکٹ کا آرا چلتا ہوا دیکھ سکتا نہیں

सिडनी कानफ़्रेन्स

लन्दन कानफ़्रेन्स के फ़ौरन ही बाद सिडनी (आस्ट्रेलिया) में कामनवेल्थ के मेम्बरों की एक कानफ़्रेन्स बुलाई गई है और उसमें दक्खिन पूरबी एशिया के आर्थिक मसलों और उनके हल पर ख़ास तौर से सोच विचार किया जायगा. यह मसले भूक, बीमारी और बेकारी के रूप में बहुत दिनों से सामने हैं. मगर इन पर अब ध्यान इसलिये दिया जा रहा है कि कम्युनिज्म उनको सीढ़ी बनाकर तरक़्क़ी करने की कोशिश कर रहा है और संजोग से इस इलाक़े में जो देश कम्युनिज्म के बहुत ज्यादा ख़िलाफ़ है यानी आस्ट्रेलिया, जहाँ कम्युनिस्ट पार्टी को ग़ैर क़ानूनी क़रार दे दिया गया है, वही इस कानफ़्रेन्स में सबसे आगे आगे है. उसके विदेश मंत्री मिस्टर स्पेन्डर कानफ़्रेन्स के सामने एक योजना रखने वाले हैं जिसके अनुसार दक्खिन पूरबी एशिया के मुल्कों की मदद के लिये एक फ़ंड खोला जायगा और उस फ़ंड में अमरीका को भी शरीक किया जायगा.

(४६४)

कानफ़्रेन्स में तक़रीर करते हुए मिस्टर स्पेन्डर ने घुमा फिरा कर और न्युज़ी लैंड के विदेश मंत्री ने साफ़ तौर से कम्युनिज्म के ख़तरे का ज़िक्र किया. और इस ख़तरे को देख कर अमरीका दक्खिन-पूरबी एशिया के मुल्कों की सहायता के लिये आमादा हुआ है. यह सही है कि इन देशों के आर्थिक ढाँचे में कोई तबदीली न हुई तो उन्हें अपनी तरक़्क़ी के लिये इतने सामान, आदमियों और पैसे की ज़रूरत होगी कि वह अमरीका से मदद लेने के लिये मजबूर हो जायँगे लेकिन अमरीका के सामने इस मदद का जो

سڈنی کانفرنس

لندن کانفرنس کے فوراً ہی بعد سڈنی (آسٹریلیا) میں کامن ویلتھ کے ممبروں کی ایک کانفرنس بلائی گئی ہے اور اس میں دکھن پوربی ایشیا کے آرتھک مسئلوں اور ان کے حل پر خاص طور سے سوچ وچار کیا جائے گا . یہ مسئلے بھوک، بیماری اور بیکاری کے روپ میں بہت دنوں سے سامنے ہیں . مگر ان پر اب دھیان اس لئے دیا جا رہا ہے کہ کمیونزم ان کو سیڑھی بناکر ترقی کرنے کی کوشش کر رہا ہے . اور سنجوگ سے اس علاقے میں جو دیش کمیونزم کے بہت زیادہ خلاف ہے یعنی آسٹریلیا جہاں کمیونسٹ پارٹی کو غیر قانونی قرار دیدیا گیا ہے، وہی اس کانفرنس میں سب سے آگے آگے ہے . اس کے ودیش منتری مسٹر اسپنڈر کانفرنس کے سامنے ایک یوجنا رکھنے والے ہیں جس کے انوسار دکھن پوربی ایشیا کے ملکوں کی مدد کے لئے ایک فنڈ کھولا جائے گا اور اس فنڈ میں امریکہ کو بھی شریک کیا جائے گا .

(۴۶۴)

کانفرنس میں تقریر کرتے ہوئے مسٹر اسپنڈر نے گھما پھرا کر اور نیوزی لینڈ کے ودیش منتری نے صاف طور سے کمیونزم کے خطرے کا ذکر کیا اور اس خطرے کو دیکھکر امریکہ دکھن پوربی ایشیا کے ملکوں کی سہایتا کے لئے آمادہ ہوا ہے . یہ صحیح ہے کہ ان دیشوں کے آرتھک ڈھانچے میں کوئی تبدیلی نہ ہوئی تو انہیں اپنی ترقی کیلئے اتنے سامان، آدمیوں اور پیسے کی ضرورت ہوگی کہ وہ امریکہ سے مدد لینے کے لئے مجبور ہو جائیں گے لیکن امریکہ کے سامنے اس مدد کا جو

मकसद है उसके कारन यह सौदा रूस और कम्युनिज़म के खिलाफ़ 'ठन्डी लड़ाई' का एक मोर्चा बन जायगा. जो मुल्क यह मदद लेगा उसे इस लड़ाई में शरीक होना पड़ेगा और अमरीका की राजनैतिक और आर्थिक शर्तें मानना होंगी. इनमें से कुछ शर्तों से बरतानिया की चौधराई पर आँच आती है पर बरतानिया से भी ज्यादा मुश्किल हिन्दुस्तान की है जो 'ठंडी लड़ाई' से अलग रहना चाहता है. अब देखना यह है कि सिडनी कानफ़्रेन्स ऐसा कौन सा प्रोग्राम बनाती है जिसमें हिन्दुस्तान की यह पोज़ीशन बनी रहे और कामनवेल्थ की बिरादरी अमरीका के हाथ की कठपुतली न बनने पाये. दरअसल यह काम है बहुत ही मुश्किल, इसीलिये पिछले जनवरी में कोलम्बो की कामनवेल्थ कानफ़्रेन्स इसके बारे में कोई फ़ैसला नहीं कर सकी थी. मगर तब से अब तक चार महीनों के बीच के समय में दक्खिन-पूरबी एशिया की हालत पच्छिमी राष्ट्रों की दृष्टि से और ज्यादा खराब होगई है. इसलिये मुमकिन है कि वह इसके सुधार के लिये अब पहले से ज्यादा समझदारी के साथ कोशिश करें.

हिन्दुस्तान और पाकिस्तान

एक हिसाब से यह हालत अच्छी भी होगई है हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के समझौते से (जिसका हाल पिछले महीने के 'नयाहिन्द' में पंडित सुन्दरलाल जी बड़ी अच्छी तरह बता चुके हैं) कामन वेल्थ के अन्दर की एक 'ठंडी लड़ाई' जो 'गरम लड़ाई' के बिलकुल क़रीब तक पहुँच गई थी, बहुत धीमी पड़ गई है और दोनों मुल्कों में दोस्ती इतनी तेज़ी से बढ़ रही है कि कुछ लोगों को

(२९३)

مقصد ہے اس کے کارن یہ سودا روس اور کمیونزم کے خلاف 'ٹھنڈی لڑائی' کا ایک مورچہ بن جائے گا. جو ملک یہ مدد لے گا اسے اس لڑائی میں شریک ہونا پڑے گا اور امریکہ کی راج نیتک اور آرتھک شرطیں ماننا ہوں گی. انمیں سے کچھ شرطوں سے برطانیہ کی چودھرائی پر آنچ آتی ہے پر برطانیہ سے بھی زیادہ مشکل ہندستان کی ہے جو 'ٹھنڈی لڑائی' سے الگ رہنا چاہتا ہے. اب دیکھنا یہ ہے کہ سڈنی کانفرنس ایسا کون سا پروگرام بناتی ہے جس میں ہندستان کی یہ پوزیشن بنی رہے اور کامن ویلتھ کی برادری امریکہ کے ہاتھ کی کٹھ پتلی نہ بننے پائے. دراصل یہ کام ہے بہت ہی مشکل. اسی لئے پچھلے جنوری میں کولمبو کی کامن ویلتھ کانفرنس اس کے بارے میں کوئی فیصلہ نہیں کرسکی تھی. مگر تب سے ابتک چار مہینوں کے بیچ کے سمے میں دکھن پوربی ایشیا کی حالت پچھمی راشٹروں کی درشٹی سے اور زیادہ خراب ہو گئی ہے اس لئے ممکن ہے کہ وہ اس کے سدھار کے لئے اب پہلے سے زیادہ سمجھداری کے ساتھ کوشش کریں.

ہندستان اور پاکستان

ایک حساب سے یہ حالت اچھی بھی ہوگئی ہے. ہندستان اور پاکستان کے سمجھوتے سے (جسکا حال پچھلے مہینے کے 'نیا ہند' میں پنڈت سندر لال جی بڑی اچھی طرح بتا چکے ہیں) کامن ویلتھ کے اندر کی ایک 'ٹھنڈی لڑائی' جو 'گرم لڑائی' کے بالکل قریب تک پہنچ گئی تھی' بہت دھیمی پڑگئی ہے اور دونوں ملکوں میں دوستی اتنی تیزی سے بڑھ رہی ہے کہ کچھ لوگوں کو

इसपर यक़ीन नहीं आता. इमें से कुछ लोग कहते हैं कि यह समझौता बरतानिया और अमरीका ने बीच में पड़ कर कराया है जिममें कि इन दोनों मुल्कों में कम्युनिज्म के ख़िलाफ एक मोर्चा बना सकें. मगर यही लोग पहले यह कहते थे कि दोनों बंगालो में हिन्दू मुस्लिम दंगे इस वजह से कराये गये है कि कम्युनिस्ट आन्दोलन कमजोर होजाय. जब तक ऐसे लोग यह न बतादें कि वह पहले झूट बोलते थे या अब झूट बोलते हैं उस वक़्त तक इनकी बातों पर कोई राय देना बेकार है.

इस समझौते के सिलसिले में हिन्दुस्तान का रवैया बहुत ही साफ है. जब वह दूसरों की "ठन्डी लड़ाई" से अलग रहना चाहता है तो खुद ऐसी लड़ाई कैसे जारी रख सकता है. इस 'लड़ाई' का नुक़सान पाकिस्तान भी समझता है मगर उसके वज़ीर आज़म लियाक़त अली ख़ाँ साहब ने अपने अमरीका के दौरे में कश्मीर के मामले में जो मदद माँगी है और अपनी सरहदों के लिये कामनवेल्थ और अमरीका से जो ज़मानत चाही है उससे मालूम होता है कि अभी उनके मन में कुछ संदेह मौजूद हैं. आशा है कि इनमें से ज्यादातर पाकिस्तान वापस आने पर और यहाँ के हालात देख कर दूर होजायँगे. मगर बड़े राष्ट्रों की "ठन्डी लड़ाई" के बारे में उनका आम रवैया भी हिन्दुस्तान के रुख़ से कुछ अलग है, जैसा कि अमरीका में उनके और बयानों से ज़ाहिर होता है कि पाकिस्तान को अमरीकी हथियारों की जरूरत है और इस्लाम के सामने कम्युनिज्म के पनपने की कोई सम्भावना नहीं है.

(२९४)

اسپر یقین نہیں آتا . انمیں سے کچھ لوگ کہتے ہیں کہ یہ سمجھوتہ برطانیہ اور امریکہ نے بیچ میں پڑکر کرایا ہے جس میں کہ ان دونوں ملکوں میں کمیونزم کے خلاف ایک مورچہ بنا سکیں مگر یہی لوگ پہلے یہ کہتے تھے کہ دونوں بنگالوں میں ہندو مسلم دنگے اس وجہ سے کرائے گئے ہیں کہ کمیونسٹ آندولن کمزور ہوجائے . جبتک ایسے لوگ یہ نہ بتا دیں کہ وہ پہلے جھوٹ بولتے تھے یا اب جھوٹ بولتے ہیں اس وقت تک ان کی باتوں پر کوئی رائے دینا بے کار ہے .

اس سمجھوتے کے سلسلہ میں ہندستان کا رویہ بہت ہی صاف ہے . جب وہ دوسروں کی " ٹھنڈی لڑائی " سے الگ رہنا چاہتا ہے تو خود ایسی لڑائی کیسے جاری رکھ سکتا ہے . اس 'لڑائی' کا نقصان پاکستان بھی سمجھتا ہے مگر اس کے وزیر اعظم لیاقت علی خاں صاحب نے اپنے امریکہ کے دورے میں کشمیر کے معاملہ میں جو مدد مانگی ہے اور اپنی سرحدوں کے لئے کامن ویلتھ اور امریکہ سے جو ضمانت چاہی ہے اس سے معلوم ہوتا ہے کہ ابھی ان کے من میں کچھ سندیہ موجود ہیں . آشا ہے کہ انمیں سے زیادہ تر پاکستان واپس آنے پر اور یہاں کے حالات دیکھکر دور ہو جائیں گے. مگر بڑے راشٹروں کی " ٹھنڈی لڑائی " کے بارے میں ان کا عام رویہ بھی ہندستان کے رخ سے کچھ الگ ہے جیسا کہ امریکہ میں ان کے اور بیانوں سے ظاہر ہوتا ہے کہ پاکستان کو امریکی ہتھیاروں کی ضرورت ہے اور اسلام کے سامنے کمیونزم کے پنپنے کی کوئی سمبھاونا نہیں ہے .

क़दम रख कर चलने वाले इस लिये उसने नवाबी ढंग से काम लिया और रिफ्युजियों को हर तरह मेहमान समझा, इतना ही नहीं सताये हुए मेहमान समझा. सरकार को. क़दम क़दम पर उन की दिल शिकनी का ख़याल था और इस तरह उनकी एक दो नहीं सैकडों ग़लतियाँ माफ़ थीं. सरकार ने जो कुछ किया वह बिलकुल ठीक किया. जो कोई भी सरकार की जगह होता. वह यही करता. पर इस ख़ातिरदारी का. अब चाहे आप इसे जा समझें या बेजा. नतीजा यह हुआ कि कुछ दिनों तक तो उनके भारती सहकारी साथी उनपर तरस खाते रहे उनकी ढील देखते और अपने काम में कोई ढील न आने देते. पर जब यह मामला महीनों लम्बा हो गया तो उन के सहकारी साथी उसी पोल में दाखिल हो गये और उस पोल में दब पिचे बग़ैर सुख चैन से रहने लगे, क्योंकि उनके ढीले पन को रोकेने वाले अफ़सर कभी कभी ख़ुद रिफ़्युजी भाई होते थे. और उन्हों ने मेहमानी में ढील पाई थी इस लिये बदले में ढील ही दी. इस तरह सिर्फ़ रेलवे का ही नहीं. सब महकमों का इन्तज़ाम ढीला पड़ गया. किसी और महकमे में ढील थोड़ी बहुत खप सकती है पर रेल के महकमे में राई भर ढील परबत भर भूल पैदा कर देती है और सैकडों हज़ारों को मौत के बिस्तर पर सुला देती है.

रेल का महकमा पहले से बहुत ढीला पड़ गया है, इसे मानने से सरकार का इन्कार करना बहुत ख़तरनाक साबित होगा.

दुर्घटनाओं के कारन

रेल जब पटरी से गिरती है या जब उसकी दूसरी रेल से टककर होती है तब उसमें रेल के कई महकमे आ फँसते हैं हर दुर्घटना

قدم رکھکر چلنے والی' اس لئے اس نے نوابی ڈھنگ سے کام لیا اور رفیوجیوں کو ہر طرح مہمان سمجھا' اتنا ہی نہیں ستائے ہوئے مہمان سمجھا. سرکار کو قدم قدم پر ان کی دل شکنی کا خیال تھا اور اس طرح ان کی ایک دو نہیں سیکڑوں غلطیاں معاف تھیں سرکار نے جو کچھ کیا وہ بالکل ٹھیک کیا. جو کوئی بھی سرکار کی جگہ ہوتا' وہ یہی کرتا. پر اس خاطر داری کا' اب چاہے آپ اسے جا سمجھیں یا بیجا' نتیجہ یہ ہوا کہ کچھ دنوں تک تو ان کے بھارتی سہکاری ساتھی ان پر ترس کھاتے رہے' ان کی ڈھیل دیکھتے اور اپنے کام میں کوئی ڈھیل نہ آنے دیتے پر جب یہ معاملہ مہینوں لمبا ہوگیا تو ان کے سہکاری ساتھی اسی پول میں داخل ہوگئے اور اس پول میں دبے پچے بغیر سکھ چین سے رہنے لگے' کیونکہ ان کے ڈھیلے پن کو روکنے والے افسر کبھی کبھی خود رفیوجی بھائی ہوتے تھے. اور انھوں نے مہمانی میں ڈھیل پائی تھی اسلئے بدلے میں ڈھیل ہی دی. اِسطرح صرف ریلوے کا ہی نہیں' سب محکموں کا انتظام ڈھیلا پڑگیا. کسے اور محکمے میں ڈھیل تھوڑی بہت کھپ سکتی ہے پر ریل کے محکمے میں رائی بھر ڈھیل پربت بھر بھول پیدا کردیتی ہے اور سیکڑوں ہزاروں کو موت کے بستر پر سلا دیتی ہے.

ریل کا محکمہ پہلے سے بہت ڈھیلا پڑگیا ہے' اسے ماننے سے سرکار کا انکار کرنا بہت خطرناک ثابت ہوگا.

درگھٹناؤں کے کارن

ریل جب پٹری سے گرتی ہے یا جب اسکی دوسری ریل سے ٹکر ہوتی ہے تب اس میں ریل کے کئی محکمے آ پھنستے ہیں. ہر درگھٹنا

जगह एक — या एक की जगह बारह बज जाते हैं. ठीक यही हाल सरकारी मशीनरी का हो रहा है, और ख़ासकर रेलो मशीनरी का हो रहा है. वह चौबीस घंटे चलती तो है पर कहीं गिर पड़ती है, कहीं मुसाफ़िर छोड़ जाती है कहीं माल छोड़ जाती है और कहीं कुछ और कहीं कुछ.

अंगरेजों के जाते ही यह इतनी ढीली क्यों पड़ गई ? क्या अंगरेज़ इसके ऐसे सही पुरज़े थे जो ठीक सटकर बैठते थे ? या यह कि वह खुद इस मशीन के कुछ पुरज़े ढीले कर गये, तोड़ फोड़ गये या उड़ा ले गये ? हो सकता है, इस बात में एक फ़ीसदी या उससे भी कम सचाई हो. पर वह सचाई इतनी नहीं है कि जिस की वजह से आज के नतीजे निकल सकें. नतीजे के रूप में आज जो हमारे सामने है उसमें अंगरेज कारन नहीं उसमें कारन हैं अंगरेजों की चाल बाज़ी और हमारे सिर थोपे जाने वाले उन के वह मेहमान जो रिफ्युजी नाम से पुकारे जाते हैं.

रिफ्युजी भाई हमारे भाई तो हैं पर हमने इन रिफ्युजी भाइयों को अगर ऐसे ही अपनाया होता जैसे मदीने के अंसारों ने हज़रत मुहम्मद के साथियों को अपनाया था. यानी मदीने वालों ने मक्का से भागकर आये हुए मुसलमानों में से एक-एक दो-दो को अपने घर में जगह दी थी, जगह ही नहीं उन को आधे घर का मालिक बना दिया था. यह नहीं किया था कि उनकी अलग बस्तियाँ बसाई हों, तो हम को आज यह दिन न देखने पड़ते. असल में हमने रिफ्युजियों को अपनाया ही नहीं. अपनाया हमारी सरकार ने. और सरकार थी हमारी नई नई और 'माल-मुफ़्त-दिल-बेरहम' वाली अंगरेजी सरकार के क़दम पर

جگہ ایک — یا ایک کی جگہ بارہ بج جاتے ہیں. ٹھیک یہی حال سرکاری مشینری کا ہو رہا ہے اور خاص کر ریلی مشینری کا ہو رہا ہے . وہ چوبیس گھنٹے چلتی تو ہے پر کہیں گر پڑتی ہے' کہیں مسافر چھوڑ جاتی ہے' کہیں مال چھوڑ جاتی ہے اور کہیں کچھ اور کہیں کچھ .

انگریزوں کے جاتے ہی یہ اتنی ڈھیلی کیوں پڑگئی ؟ کیا انگریز اِس کے ایسے سہی پرزے تھے جو ٹھیک سٹ کر بیٹھتے تھے ؟ یا یہ کہ وہ خود اس مشین کے کچھ پرزے ڈھیلے کر گئے' توڑ پھوڑ گئے یا اُڑا لے گئے ؟ ہوسکتا ہے' اس بات میں ایک فیصدی یا اُس سے بھی کم سچائی ہو پر وہ سچائی اتنی نہیں ہے کہ جس کی وجہ سے آج کے نتیجے نکل سکیں . نتیجے کے روپ میں آج جو ہمارے سامنے ہے اس میں انگریز کارن نہیں' اُس میں کارن ہیں انگریزوں کی چالبازی اور ہمارے سر تھوپے جانے والے ان کے وہ مہمان جو رفیوجی نام سے پکارے جاتے ہیں .

رفیوجی بھائی ہمارے بھائی تو ہیں پر ہم نے اِن رفیوجی بھائیوں کو اگر ایسے ہی اپنایا ہوتا جیسے مدینہ کے انصاروں نے حضرت محمد کے ساتھیوں کو اپنایا تھا' یعنی مدینہ والوں نے مکہ سے بھاگ کر آئے ہوئے مسلمانوں میں سے ایک ایک دو دو کو اپنے گھر میں جگہ دی تھی' جگہ ہی نہیں ان کو آدھے گھر کا مالک بنا دیا تھا' یہ نہیں کیا تھا کہ ان کی الگ بستیاں بسائی ہوں' تو ہم کو آج یہ دن نہ دیکھنے پڑتے . اصل میں ہم نے رفیوجیوں کو اپنایا ہی نہیں. اپنایا ہماری سرکار نے اور سرکار تھی ہماری نئی نئی . اور ' مال مفت دل بیرحم ' والی انگریزی سرکار کے قدم پر

नुक़सान हुआ और ऐसी दुर्घटना हुई किसके हाथों ? जनता में से, उसी दुर्घटना में, अगर किसी का भाई मर गया होता है तो वह सीधे सरकार को कोसता है, उन कम्युनिस्टों को नहीं, जिनके बारे में अखबार यह बताते हैं कि उस दुघटना में उन्हीं का हाथ था. यह जनता-चर्चा की नाड़ी. जो सरकार की हथेली के नीचे धुक धुक चल रही है, कुछ ज्यादा अच्छी चीज नहीं

नाड़ी की जड़

हो सकता है रेल दुर्घटनाओं में कम्युनिस्टों का हाथ हो, पर यह हमारे गले नहीं उतरता कि वह हाथ इतना ज्यादा है जितना सरकार या सरकारी अफ़सर बता रहे हैं. हम ने खुद एक मरतबा जबलपुर जेल में सन १९२१ में एक हत्यारे को 'महात्मा गांधी का जय' बोलकर फांसी के तख्ते पर चढ़ते देखा था. उन दिनों असहयोग की गंगा बह रही थी. उसने भी लगे हाथों डुबकी लगाली. हो सकता है ठीक इसी तरह आज भी नाम के कम्युनिस्ट किसी ऐसे ही इलजाम में पकड़े जाने पर अपने को कम्युनिस्ट कह कर सस्ती वाह वाही खरीदना चाहते हों. दुखी जनता समझे नासमझे सरकार के खिलाफ बातों में रस लिया ही करती है.

रेल की दुर्घटनाओं में, हम जहां तक सोचते हैं, बैठी हुई है यह बात कि रेल का इन्तज़ाम कुछ ढीला पड़ गया है. एक रेल का ही क्या ? सरकार की सारी मशीनरी उस बंधी हुई चाल से नहीं चल रही जिस बंधी हुई चाल से उसे चलना चाहिये. जिस तरह घड़ी के ढीले पुरज़े घड़ी को चलाते तो रहते हैं पर घड़ी की चाल का जो नतीजा होना चाहिये था वह नहीं हो पाता. यानी बारह की

نقصان ہوا اور ایسی درگھٹنا ہوئی کس کے ہاتھوں ؟ جنتا میں سے، اُسی درگھٹنا میں، اگر کسی کا بھائی مرگیا ہوتا ہے تو وہ سیدھے سرکار کو کوستا ہے، اُن کمیونسٹوں کو نہیں، جن کے بارے میں اخبار یہ بتاتے ہیں کہ اُس درگھٹنا میں اُنہیں کا ہاتھ تھا. یہ جنتا چرچا کی ناڑی، جو سرکار کی ہتھیلی کے نیچے دھک دھک بول رہی ہے، کچھ زیادہ اچھی چیز نہیں .

ناڑی کی جڑ

ہوسکتا ہے ریل درگھٹناؤں میں کمیونسٹوں کا ہاتھ ہو، پر یہ ہمارے گلے نہیں اُترتا کہ وہ ہاتھ اتنا زیادہ ہے جتنا سرکار یا سرکاری افسر بتا رہے ہیں. ہم نے خود ایک مرتبہ جبلپور جیل میں سن ۱۹۲۱ع میں ایک ہتیارے کو 'مہاتما گاندھی کی جے' بول کر پھانسی کے تختے پر چڑھتے دیکھا تھا. اُن دنوں 'سہیوگ' کی گنگا بہ رہی تھی. اُس نے بھی لگے ہاتھوں ڈبکی لگا لی. ہوسکتا ہے ٹھیک اسی طرح آج بھی نام کے کمیونسٹ کسی ایسے ہی الزام میں پکڑے جانے پر اپنے کو کمیونسٹ کہکر سستی واہ واہی خریدنا چاہتے ہوں. دکھی جنتا سمجھے نا سمجھے سرکار کے خلاف باتوں میں رس لیا ہی کرتی ہے .

ریل کی درگھٹناؤں میں، ہم جہاں تک سوچتے ہیں، بیٹھی ہوئی ہے یہ بات کہ ریل کا انتظام کچھ ڈھیلا پڑگیا ہے . ایک ریل کا ہی کیا ؟ سرکار کی ساری مشینری اُس بندھی ہوئی چال سے نہیں چل رہی جس بندھی ہوئی چال سے اُسے چلنا چاہئے . جس طرح گھڑی کے ڈھیلے پرزے گھڑی کو چلاتے تو رہتے ہیں پر گھڑی کی چال کا جو نتیجہ ہونا چاہئے تھا وہ نہیں ہو پاتا، یعنی بارہ کی

हादसे नहीं—सरकार की नाड़ी

रेल दुर्घटनाएं अंगरेजी राज में भी होती थीं. और वह सब रेली घटनाएँ ही नहीं होती थीं. उनमें से कुछ फीसदी राज काजी भी होती थीं. फिर भी उन सब को मिल कर कभी इतनी गिनती नहीं हुई जितनी वह आज है. तिस पर उन दिनों की अंगरेजी सरकार हर रेल हादसे को राज काजी कह बैठना न पसन्द करती था. और न मुनासिब समझती था पर आज तो. जहाँ तक हम समझते हैं. सरकार ही नहीं. पुलिस के जिम्मेदार अफ़सर भी जहाँ तक बन पड़ता है बहुत सी रेल दुघटनाओं को राजकाजी कह कर कम्युनिस्टों के सिर मढ़ने की कोशिश करते हैं. हो सकता है सरकार और सरकारी अफ़सर यह सोचते हों कि इस तरह वह कम्युनिस्टों की तरफ से जनता के दिल में नफ़रत पैदा कर सकेंगे पर जनता की भीड़ में घुस कर उनकी आपसी बातें सुनने वाले हम कुछ दूसरा ही तजरबा रखते हैं. जिस तरह बड़ी लड़ाई में मित्र-मुल्कों ने हिटलर के ख़िलाफ़ हद से ज्यादा प्रचार करके लोगों के दिल में हिटलर के लिये हमदर्दी का बीज बोदिया था ठीक इसी तरह आज की सरकार भी जा बेजा कम्युनिस्टों के ख़िलाफ़ प्रचार करके लोगों के दिल मे कम्युनिस्ट हमदर्दी का और कम्युनिज्म भक्ति का बीज बो रही है जनता किसी वजह से आज कल इतनी दुखी है कि सरकार का काम करते हुए वही जनता सरकार के नौकर के रूप में अगर किसी से पिटने लगे तो वह यह समझ कर अपनी कुछ तसल्ली ही कर लेगी कि वह नहीं पिटी, पिटा है तो सरकारी नौकर पिटा है. रेल की दुर्घटना की खबर पर जनता में इस पर बहुत कम बहस होती है कि उस दुर्घटना में कितने आदमी मरे, ज्यादा बहस होती है इस बात पर, कि रेल का कितना

(१०४)

حادثے نہیں – سرکار کی ناڑی

ریل درگھٹنائیں انگریزی راج میں بھی ہوتی تھیں. اور وہ سب ریلی گھٹنائیں ہی نہیں ہوتی تھیں. اُن میں سے کچھ فیصدی راج کاجی بھی ہوتی تھیں. پھر بھی اُن سب کی مل کر کبھی اتنی گنتی نہیں ہوئی جتنی وہ آج ہے. تسپر اُن دنوں کی انگریزی سرکار ہر ریل حادثے کو راج کاجی کہہ بیٹھنا نہ پسند کرتی تھی' اور نہ مناسب سمجھتی تھی. پر آج تو' جہاں تک ہم سمجھتے ہیں' سرکار ہی نہیں' پولیس کے ذمہ دار افسر بھی جہاںتک بن پڑتا ہے بہت سی ریل درگھٹناؤں کو راج کاجی کہکر کمیونسٹوں کے سر مڑھنے کی کوشش کرتے ہیں. ہوسکتا ہے سرکار اور سرکاری افسر یہ سوچتے ہوں کہ اس طرح وہ کمیونسٹوں کی طرف سے جنتا کے دل میں نفرت پیدا کرسکیں گے پر جنتا کی بھیڑ میں گھس کر اُن کی آپسی باتیں سننے والے ہم کچھ دوسرا ہی تجربہ رکھتے ہیں. جس طرح بڑی لڑائی میں متر ملکوں نے ہٹلر کے خلاف حد سے زیادہ پرچار کرکے لوگوں کے دل میں ہٹلر کے لئے ہمدردی کا بیج بودیا تھا ٹھیک اِسی طرح آج کی سرکار بھی جابیجا کمیونسٹوں کے خلاف پرچار کرکے لوگوں کے دل میں کمیونسٹ ہمدردی کا اور کمیونزم بھکتی کا بیج بورہی ہے جنتا کسی وجہ سے آج کل اتنی دکھی ہے کہ سرکار کا کام کرتے ہوئے وہی جنتا سرکار کے نوکر کے روپ میں اگر کسی سے پٹنے لگے تو وہ یہ سمجھکر اپنی کچھ تسلی ہی کرلے گی کہ وہ نہیں پٹی' پٹا ہے تو سرکاری نوکر پٹا ہے. ریل کی درگھٹنا کی خبر پر جنتا میں اس پر بہت کم بحث ہوتی ہے کہ اس درگھٹنا میں کتنے آدمی مرے' زیادہ بحث ہوتی ہے اس بات پر' کہ ریل کا کتنا

हमारी राय

ہماری رائے

रेल के हादसे

कुछ दिनो से यह हाल है कि हफ्ते में एकाध बार कहीं न कहीं से
यह खबर आ जाती है कि रेलगाड़ी पटरी से गिर गई. इतने आदमी
जख्मी हुए और इतने मर गये, या यह सुनने को मिलता है कि यह
यह गाड़ियां लड़ गईं. इतने डिब्बे चूर चूर हो गये और इतने मुसाफ़िर
जान खो बैठे. इन खबरों का यह असर हुआ है कि लोग कोशिश
करते हैं कि, जहां तक हो सके, रेल से सफ़र ही न किया जाय.
यह हम इस लिये लिख रहे हैं कि आये दिन रेल गिरने की बुराई
जनता के दिल में कितनी गहरी जगह बनाती जा रही है. यह बुराई
इसी तरह बढ़ती रही तो एक दिन वह नौबत आ जायगी कि दिन
में दस बार रेल की टक्करों की खबर सुनकर भी जनता कुछ भी न
कहा करेगी और अखबार वाले भी उन खबरों को जगह देना छोड़
बैठेंगे. और ऐसे ही मौक़े के लिये तो कोई कवि लिख गया है:

मुसीबत हद से जब गुजारी, तो जाहिर हो नहीं सकती
बहुत गम में बहुत कम आँख से आँसू निकलते हैं.

ریل کے حادثے

کچھ دنوں سے یہ حال ہے کہ ہفتے میں ایک آدھ بار کہیں
نہ کہیں سے یہ خبر آجاتی ہے کہ ریل گاڑی پٹری سے گر گئی، اتنے
آدمی زخمی ہوئے اور اتنے مر گئے، یا یہ سننے کو ملتا ہے کہ یہ یہ
گاڑیاں لڑ گئیں، اتنے ڈبے چور چور ہوگئے اور اتنے مسافر جان کھو
بیٹھے . ان خبروں کا یہ اثر ہوا ہے کہ لوگ کوشش کرتے ہیں کہ،
جہاں تک ہوسکے، ریل سے سفر ہی نہ کیا جائے . یہ ہم اس لئے
لکھ رہے ہیں کہ آئے دن ریل گرنے کی برائی جنتا کے دل میں
کتنی گہری جگہ بناتی جارہی ہے . یہ برائی اسی طرح بڑھتی
رہی تو ایک دن وہ نوبت آجائیگی کہ دن میں دس بار ریل کی
ٹکروں کی خبر سن کر بھی جنتا کچھ بھی نہ کہا کریگی اور اخبار
والے بھی اُن خبروں کو جگہ دینا چھوڑ بیٹھیں گے . اور ایسے ہی
موقعے کے لئے تو کوئی کوی لکھ گیا ہے :

مصیبت حد سے جب گذری، تو ظاہر ہو نہیں سکتی
بہت غم میں بہت کم آنکھ سے آنسو نکلتے ہیں

मिलाप का फल

(प्रेम भाई)

रमेश और अख़तर दो दोस्त थे. दोनों में एक दिन झगड़ा होगया. रमेश के बड़े भाई को जब इस झगड़े का पता चला तो उन्हों ने रमेश को कोई उपदेश नहीं दिया बल्कि एक कहानी सुनादी जिसे सुनकर दोनों दोस्तों में मेल होगया. वह कहानी नीचे दी जाती है.

एक नदी के किनारे एक मछली, एक कौवा और बन्दर तीनों मिल जुल कर रहते थे और हर काम तीनों मिल कर करते थे. अगर कौवा कहीं से ढूंढ ढाँड कर रोटी का टुकड़ा ले आता तो वह पहले अपने साथियों के सामने रख देता. फिर तीनों मिल कर खाते इसकी परवाह न करते कि बटने से सबको कम कम हिस्सा मिलेगा. इसी तरह अगर कभी कोई चीज़ बंदर को हाथ आती तो वह अपने दोस्त कौवे और मछली के पास ले आता. फिर तीनों मिल कर खाते.

एक दिन ऐसा हुआ कि एक शिकारी नदी किनारे मछली के शिकार को आया. वह बंदूक़ का निशाना साध रहा था कि ऐसे में कौवे ने उसके सर पर ज़ोर से चोंच मारदी और शिकारी का निशाना चूक गया. इस तरह कौवे ने अपने साथी की जान बचाली.

बच्चे इस पते पर अपनी चीज़ें भेजें :—

प्रेम भाई, एडीटर—'बच्चों की दुनिया' (नया हिन्द)

४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद.

ملاپ کا پھل

(پریم بھائی)

رمیش اور اختر دو دوست تھے . دونوں میں ایک دن جھگڑا ھوگیا . رمیش کے بڑے بھائی کو جب اس جھگڑے کا پتہ چلا تو اُنہوں نے رمیش کو کوئی اُپدیش نہیں دیا بلکہ ایک کہانی سنا دی جسے سن کر دونوں دوستوں میں میل ھوگیا . وہ کہانی نیچے دی جاتی ھے .

ایک ندی کے کنارے ایک مچھلی' ایک کوا اور ایک بندر تینوں مل جل کر رھتے تھے اور ھر کام یہ تینوں ملکر کرتے تھے . اگر کوا کہیں سے ڈھونڈ ڈھانڈ کر روٹی کا ٹکڑا لے آتا تو وہ پہلے اپنے ساتھیوں کے سامنے رکھ دیتا . پھر تینوں مل کر کھاتے . اسکی پرواہ نہ کرتے کہ بٹنے سے سب کو کم کم حصہ ملے گا . اسی طرح اگر کبھی کوئی چیز بندر کو ھاتھ آتی تو وہ اپنے دوست کوے اور مچھلی کے پاس لے آتا . پھر تینوں مل کر کھاتے .

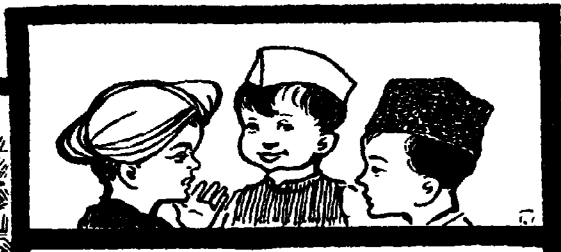
ایک دن ایسا ھوا کہ ایک شکاری ندی کے کنارے مچھلی کے شکار کو آیا . وہ بندوق کا نشانہ سادھ رھا تھا کہ ایسے میں کوے نے اس کے سر پر زور سے چونچ مار دی اور شکاری کا نشانہ چوک گیا . اس طرح کوے نے اپنے ساتھی کی جان بچالی .

بچے اس پتے پر اپنی چیزیں بھیجیں :—

پریم بھائی' اڈیٹر—'بچوں کی دنیا' (نیا ھند)

۴۸' بائی کا باغ' الہ آباد .

बच्चों की दुनिया



بچوں کی دنیا

एडीटर—प्रेम भाई

प्यारे भाइयो !

इस महीने हम तुम्हारे लिये ज़्यादा सफ़े नहीं निकाल सके. अगले महीने से हर महीने हम कम से कम आठ सफ़े ज़रूर तुम्हारे लिये रक्खेंगे. हाँ, पिछले महीने तुम से कहा गया था कि 'बच्चों की दुनिया' के लिये तुम भी अपने लेख, कहानियाँ, कवितायें भेजो. तुम्हारी चीज़ें छापने से हमें बहुत ख़ुशी होगी.

तुम्हारा—

प्रेम भाई

बापू

(भाई शंकर सिंह हैदराबाद दकन)

दुखियों का ग़म खाने वाला हिन्दू और मुस्लिम का दुलारा
देश का तारा जी का उजाला दुखियों को था उससे सहारा
भारत को आज़ाद कराया तन को सेवा में कटवाया
प्रेम का चरचा गूंजा घर घर दुख सुख में वह सब का रहबर
देश की किस्मत, प्यारा गांधी
प्रेम की मूरत, प्यारा गांधी

ایڈیٹر—پریم بھائی

پیارے بھائیو !

اِس مہینے ہم تمہارے لئے زیادہ صفحے نہیں نکال سکے . اگلے مہینے ہم کم سے کم آٹھ صفحے ضرور تمہارے لئے رکھیں گے اور تصویریں بھی چھاپیں گے . ہاں، پچھلے مہینے تم سے کہا گیا تھا کہ 'بچوں کی دنیا' کے لئے تم بھی اپنے لیکھ، کہانیاں، کویتائیں بھیجو . تمہاری چیزیں چھاپنے سے ہمیں بہت خوشی ہوگی .

تمہارا—

پریم بھائی

باپو

(بھائی شنکر سنگھ، حیدرآباد دکن)

دکھیوں کا غم کھانے والا ہندو اور مسلم کا دلارا
دیش کا تارا جی کا اجالا دکھیوں کو تھا اُس سے سہارا
بھارت کو آزاد کرایا تن کو سیوا میں کٹوایا
پریم کا چرچا گونجا گھر گھر دکھ سکھ میں وہ سب کا رہبر
دیش کی قسمت، پیارا گاندھی
پریم کی مورت پیارا گاندھی

मेरे प्यारे वतन !
मेरे अच्छे वतन !
अब तू ख़ुद ही बता
मैं तेरा कौन हूँ ? (मैं तेरा कौन हूँ)   ज़हूर नज़र

(५७) तुम्हारे सपूतों ने ए माओ बहनों
जो कल तक थे मासूम और भोले भाले
तुम्हारे ही महरम पे क्यों हाथ डाला
यही थे तुम्हारी फ़ुग़ां सुनने वाले
अगर जानती थीं मआले मोहब्बत
तो क्यों अपने ही दूध से नाग पाले ?
(आज़ादी के बाद) अख़्तरुल ईमान

(५८) मेरे प्यारो मेरी छाती से लिपटने वालो
आग वह दिलमें लगी है कि मैं ही जान्ती हूँ
यों मेरी कोख जली है कि मैं ही जान्ती हूँ
मेरे बच्चो मेरे नामूस के पहरेदारो
देखो नेज़ों पे तुम्हारे हैं यह किसकी लाशें
तुमने ख़ुद लूट लिया अपनी ही बहनों का सुहाग
मांग में झोंक दी सेंदूर की जगह तुमने आग
(मां) वामिक़ जौनपुरी

(५९) हिन्द के घूंघटों तले,   कैसी सुहानी आग है.
सुबह को मां के माथे पर,   आज नया सुहाग है.
नीले गगन की चोटियाँ,   तुमको बुला रही हैं आज.

میرے پیارے وطن !
میرے اچھے وطن !
اب تو خود ہی بتا
میں ترا کون ہوں ؟ (میں ترا کون ہوں ؟)   ظہور نظر

(۵۷) تمہارے سپوتوں نے اے ماؤ بہنو
جو کل تک تھے معصوم اور بھولے بھالے
تمہارے ہی محرم پہ کیوں ہاتھ ڈالا
یہی تھے تمہاری فغاں سننے والے
اگر جانتی تھیں مآل محبت
تو کیوں اپنے ہی دودھ سے ناگ پالے
(آزادی کے بعد)   اختر الایمان

(۵۸) میرے پیارو میری چھاتی سے لپٹنے والو
آگ وہ دل میں لگی ہے کہ میں ہی جانتی ہوں
یوں مری کوکھ جلی ہے کہ میں ہی جانتی ہوں
میرے بچو میرے ناموس کے پہرےدارو
دیکھو نیزوں پہ تمہارے ہیں یہ کس کی لاشیں
تم نے خود لوٹ لیا اپنی ہی بہنوں کا سہاگ
مانگ میں جھونک دی سیندور کی جگہ تم نے آگ
(ماں) 'وامق' جونپوری

(۵۹) ہند کے گھونگھٹوں تلے   کیسی سہانی آگ ہے
صبح کو ماں کے ماتھے پر   آج نیا سہاگ ہے
نیلے گگن کی چوٹیاں   تم کو بلا رہی ہیں آج

दक्खिनी अफ़रीक़ा और छूत छात

हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के समझौते से कामन वेल्थ और दक्खिन पूरबी एशिया में एकता और शान्ति की जो उम्मीदें पैदा होती हैं वह कामन वेल्थ के एक मेम्बर दक्खिनी अफ़रीक़ा के हथकंडों से थोड़ी बहुत मद्धिम पड़ जाती हैं वहाँ की सरकार हिन्दुस्तानी और दूसरे एशियाई लोगों के साथ, जो बरसों से वहाँ बसे हुए हैं, सिर्फ़ उनके रंग और नस्ल की बुनियाद पर जो भेद बरत रही है उसके ख़िलाफ़ हिन्दुस्तान यू० एन० ओ० में शिकायत कर चुका है और वहाँ से उसके पक्ष में फ़ैसला हो चुका है. हालाँकि दक्खिनी अफ़रीक़ा की सरकार ने ज़्यादा तर फ़ैसलों को रद्दी की टोकरी में डाल दिया फिर भी अब वह इसके लिये तैयार होगई थी कि इस मामले पर हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के प्रतिनिधियों के साथ बैठकर सोच विचार करे. मगर इस कानफ़्रेन्स से पहले पहले उसने एक नये क़ानून की तैयारी शुरू कर दी है जिसके मंज़ूर हो जाने के बाद हर नस्ल के लोगों के लिये अलग अलग इलाक़े मुक़र्रर हो जायँगे जिनके बाहर वह न तो रह सकेंगे और न जायदाद रख सकेंगे बल्कि कुछ इलाक़ों में ग़ैर सफ़ेद लोगों को आने जाने तक की इजाज़त नहीं होगी. यह क़ानून अगर मंज़ूर हो गया तो हिन्दुस्तान, पाकिस्तान, सीलौन और दक्खिनी अफ़रीक़ा का एक ही बिरादरी में रहना और भाई चारे के उसूल बरतना नामुमकिन हो जायगा.

دکھنی افریقہ اور چھوت چھات

ہندستان اور پاکستان کے سمجھوتے سے کامن ویلتھ اور دکھن پوربی ایشیا میں ایکتا اور شانتی کی جو امیدیں پیدا ہوتی ہیں وہ کامن ویلتھ کے ایک ممبر دکھنی افریقہ کے ہتھکنڈوں سے تھوڑی بہت مدھم پڑجاتی ہیں . وہاں کی سرکار ہندستانی اور دوسرے ایشیائی لوگوں کے ساتھ' جو برسوں سے وہاں بسے ہوئے ہیں' صرف ان کے رنگ اور نسل کی بنیاد پر جو بھید برت رہی ہے اس کے خلاف ہندستان یو . این . او . میں شکایت کرچکا ہے اور وہاں سے اس کے پکش میں فیصلہ ہوچکا ہے . حالانکہ دکھنی افریقہ کی سرکار نے زیادہ تر فیصلوں کو ردی کی ٹوکری میں ڈال دیا پھر بھی اب وہ اس کے لئے تیار ہوگئی تھی کہ اس معاملہ پر ہندستان اور پاکستان کے پرتی ندھیوں کے ساتھ بیٹھ کر سوچ وچار کرے . مگر اس کانفرنس سے پہلے پہلے اس نے ایک نئے قانون کی تیاری شروع کردی ہے جس کے منظور ہوجانے کے بعد ہرنسل کے لوگوں کے لئے الگ الگ علاقے مقرر ہو جائیں گے جن کے باہر وہ نہ تو رہ سکیں گے اور نہ جائداد رکھ سکیں گے . بلکہ کچھ علاقوں میں تو غیر سفید لوگوں کو آنے جانے تک کی اجازت نہیں ہوگی . یہ قانون اگر منظور ہوگیا تو ہندستان' پاکستان' سیلون اور دکھنی افریقہ کا ایک ہی برادری میں رہنا اور بھائی چارے کے اصول برتنا ناممکن ہوجائے گا .

में इंजन का महकमा (Loco) इतना ही फँस सकता है जितना लाइन का महकमा (Permanent way). उसी तरह सवारी का महकमा (Traffic) और तार का महकमा (Telegraph) भी फँस सकता है. पुलिस का महकमा भी नहीं बच सकता और न इंजीनियरिंग का. इसी लिये जब किसी दुर्घटना की तहक़ीक़ात होती है तब उसमें सभी महकमों के अफ़सर बुलाये जाते हैं. हर महकमे वाले की यह कोशिश होती है कि वह अपने महकमे को बचा ले और किसी एक को फँसा दे. अगर वह फँसा न सके तो अपने को बचा ज़रूर लेता है. और अगर न बचा सके तो अपने अफ़सरों की झिड़की का शिकार होता है. बचने की इस कोशिश में तहक़ीक़ाती कमेटी में तरह तरह की गुटबन्दियां बन जाती हैं और बहुमत (Majority) से फ़ैसले के रिवाज की वजह से खूब खींचतान बढ़ जाती है. कम्युनिस्टी सवाल ने इन सब की दिक़्क़त को आसानी से हल कर दिया है. कम्युनिस्टों का नाम लेकर सारी तहक़ीक़ाती कमेटी एक राय होजाती है और सारे महकमे उस दुर्घटना के इलज़ाम से बच जाते हैं. गहराई से नज़र डालने पर कम्युनिस्टों पर इलज़ाम लगा कर पुलिस का महकमा किसी तरह नहीं बच सकता पर वह शायद इतना बचना भी नहीं चाहता. क्योंकि इसी बल बूते पर तो वह सरकार से अपनी तरक़्क़ी की मांग कर सकता है और अपने यहाँ के आदमियों में बढ़वारी की मांग कर सकता है. अंगरेज़ी राज में भी पुलिस सरकार को तरह तरह के डर दिखाकर यही करती रही है और वही पुलिस तो आज इस जनराज की पुलिस है.

(४०४)

میں انجن کا محکمہ (Loco) اِتنا هی پهنس سکتا هے جتنا لائن کا محکمہ (Permanent way). اُسی طرح سواری کا محکمہ (Traffic) اور تار کا محکمہ (Telegraph) بهی پهنس سکتا هے. پولیس کا محکمہ بهی نہیں بچ سکتا اور نہ انجینیرنگ کا. اِسی لئے جب کسی دُرگهٹنا کی تحقیقات هوتی هے تب اُس میں سبهی محکموں کے افسر بلائے جاتے هیں. هر محکمے والے کی یہ کوشش هوتی هے کہ وہ اپنے محکمے کو بچالے اور کسی ایک کو پهنسادے. اگر وہ پهنسا نہ سکے تو اپنے کو بچا ضرور لیتا هے. اور اگر نہ بچا سکے تو اپنے افسروں کی جهڑکی کا شکار هوتا هے. بچنے کی اس کوشش میں تحقیقاتی کمیٹی کی طرح طرح کی گٹ بندیاں بن جاتی هیں اور بہمت (Majority) سے فیصلے کے رواج کی وجہ سے خوب کهینچ تان بڑھ جاتی هے. کمیونسٹی سوال نے اِن سب کی دقت کو آسانی سے حل کر دیا هے. کمیونسٹوں کا نام لیکر ساری تحقیقاتی کمیٹی ایک رائے هوجاتی هے اور سارے محکمے اُس دُرگهٹنا کے الزام سے بچ جاتے هیں. گہرائی سے نظر ڈالنے پر کمیونسٹوں پر الزام لگاکر پولیس کا محکمہ کسی طرح نہیں بچ سکتا پر وہ شاید اِتنا بچنا بهی نہیں چاهتا. کیونکہ اِسی بل بوتے پر تو وہ سرکار سے اپنی ترقی کی مانگ کر سکتا هے اور اپنے یہاں کے آدمیوں میں بڑهواری کی مانگ کر سکتا هے. انگریزی راج میں بهی پولیس سرکار کو طرح طرح کے ڈر دکهاکر یہی کرتی رهی هے اور وهی پولیس تو آج اِس جن راج کی پولیس هے.

(۴۰۴)

सरकारी वज़ीरों के मुँह से एक हद तक तो पुलिस की तारीफ़ भली मालूम होती है और पुलिस की पीठ ठोंकना भी राजनेतापन का काम मालूम होता है. पर जा बेजा हमेशा ही पुलिस की तारीफ़ कर बैठना ज्यादा अच्छी चीज नहीं और अगर रेल के सब महकमों के साथ थोड़ी थोड़ी सख्ती करते हुए पुलिस को भी थोड़ा जिम्मेदार समझा जाय तब और तभी रेल के हादसों में कुछ कमी हो सकती है.

रेल की लाइन पर पुलिस खड़े किये जाने की तजवीज हमें कुछ भली नहीं लगी. ऐसा करके सरकार जनता की हमदर्दी हासिल नहीं कर सकती. इस वक़्त जनता और पुलिस में जो रिश्ता है वह होना तो चाहिये था खुशगवार पर किसी वजह से वैसा नहीं है. इस लिये इस वक़्त सरकार पुलिस पर थोड़ी सख्ती कर के ही जनता की हमदर्दी हासिल कर सकती है. हमारा एक से ज्यादा बार का तजरबा हमें ऐसा कहने के लिये मजबूर करता है. सन् '२१ में जिस वक़्त आगरे के पास चम्बल के किनारे की पुलिस सरकार ने जनता से नाराज होकर हटाली थी उस वक़्त चम्बल पार के डाकुओं ने कान्फ़रेन्स कर के उसी दिन से डाके डालने छोड़ दिये थे और वह डाके उस वक़्त तक बन्द रहे जब तक पुलिस फिर तैनात नहीं हुई. यह ठीक है कि आज की हालत उस हालत से मेल नहीं खाती पर यह बात तो हमने उदाहरन के लिये रखदी है. हम जोर के साथ कह सकते हैं कि आज सन् २१ वाली हालत न भी हो तब भी ऐसी हालत जरूर है कि जनता सरकार के साथ पूरी हमदर्दी दिखाये गी अगर सरकार हिम्मत करके पुलिस पर जा बेजा बेहद भरोसा करना छोड़ दे और सीधे जनता से मदद चाहे.

(४०४)

سرکاری وزیروں کے منہ سے ایک حد تک تو پولیس کی تعریف بھلی معلوم ہوتی ہے اور پولیس کی پیٹھ ٹھونکنا بھی راج نیتا پن کا کام معلوم ہوتا ہے. پر جا بیجا ہمیشہ ہی پولیس کی تعریف کر بیٹھنا زیادہ اچھی چیز نہیں اور اگر ریل کے سب محکموں کے ساتھ تھوڑی تھوڑی سختی کرتے ہوئے پولیس کو بھی تھوڑا ذمہ دار سمجھا جائے تب اور تبھی ریل کے حادثوں میں کچھ کمی ہو سکتی ہے۔

ریل کی لائن پر پولیس کھڑے کئے جانے کی تجویز ہمیں کچھ بھلی نہیں لگی۔ ایسا کرکے سرکار جنتا کی ہمدردی حاصل نہیں کرسکتی۔ اس وقت جنتا اور پولیس میں جو رشتہ ہے وہ ہونا تو چاہئے تھا خوشگوار پر کسی وجہ سے ویسا نہیں ہے اس لئے اِس وقت سرکار پولیس پر تھوڑی سختی کر کے ہی جنتا کی ہمدردی حاصل کر سکتی ہے۔ ہمارا ایک سے زیادہ بار کا تجربہ ہمیں ایسا کہنے کے لئے مجبور کرتا ہے۔ سن ۲۱ میں جس وقت آگرے کے پاس چمبل کے کنارے کی پولیس سرکار نے جنتا سے ناراض ہوکر ہٹا لی تھی اُس وقت چمبل پار کے ڈاکوؤں نے کانفرنس کرکے اُسی دن سے ڈاکے ڈالنے چھوڑ دئیے تھے اور وہ ڈاکے اُس وقت تک بند رہے جب تک پولیس پھر تعینات نہیں ہوئی۔ یہ ٹھیک ہے کہ آج کی حالت اُس حالت سے میل نہیں کھاتی پر یہ بات تو ہم نے اُداہرن کے لئے رکھ دی ہے۔ ہم زور کے ساتھ کہہ سکتے ہیں کہ آج سن ۲۱ والی حالت نہ بھی ہو تب بھی ایسی حالت ضرور ہے کہ جنتا سرکار کے ساتھ پوری ہمدردی دکھائے گی اگر سرکار ہمت کرکے پولیس پر جا بیجا بیحد بھروسہ کرنا چھوڑ دے اور سیدھے جنتا سے مدد چاہے۔

सरकार को यह न भूलना चाहिये कि वह जितने विश्वास के साथ जनता तक पहुँचेगी उतना ही विश्वास पासकेगी.

विश्वास से विश्वास पैदा होता है और एक रेल के हादसों के लिये ही नहीं सारी सरकारी मशीनरी को ठीक करने के लिये जनता का विश्वास, नौकर-जनता के विश्वास से कहीं ज्यादा जरूरी है.

रेल की दुर्घटनाओं में वह अंश बहुत कम है जिस को दूर करने के लिये जनता की हमदर्दी की जरूरत है, ज्यादा अंश तो वह है जिस के लिये सरकार को रेल के महकमे और पुलिस के महकमे की ठीक ठीक सेवा की जरूरत है. जिस महकमे की ढील जनता की जान पर आबने उस ढील को दूर करना सरकार का पहला काम होना चाहिये. पुलिस का यह काम नहीं है कि वह तोड़ फोड़ ' (Sabotage) कह कर यह समझ ले कि उस ने अपना फ़र्ज़ पूरा कर लिया, उस का काम है कि वह तोड़ फोड़ वालों को तोड़ फोड़ करते पकड़े. एक हद तक वह ' शक संदेह ' का फ़ायदा उठा सकती है पर ऐसी हालत में रेल दुर्घटनायें कम या बिलकुल बंद होजानी चाहियें.

भगवान दीन

पत्रकारों की ज़िम्मेदारियां

चार मई को नई दिल्ली में भारती और पाकिस्तानी पत्रकारों की एक कान्फ़रेन्स हुई. यह कान्फ़रेन्स बड़ी अनोखी और मर्के की समझी जाती और इस कान्फ़रेन्स मे पत्रकारों का रुतबा और भी उंचा हो जाता अगर यह कान्फ़रेन्स पत्रकारों की अपनी सूझ पर

سرکار کو یه نه بهولنا چاهئے که وہ جتنے وشواس کے ساتھ جنتا تک پهونچیگی اُتنا هی وشواس پاسکے گی .

وشواس سے وشواس پیدا هوتا هے اور ایک ریل کے حادثوں کے لئے هی نهیں ساري سرکاري مشینری کو ٹهیک کرنے کے لئے جنتا کا وشواس، نوکر جنتا کے وشواس سے کهیں زیادہ ضروري هے .

ریل کی درگهٹناؤں میں وہ انش بهت کم هے جس کو دور کرنے کے لئے جنتا کی همدردي کی ضرورت هے، زیادہ انش تو وہ هے جس کے لئے سرکار کو ریل کے محکمے اور پولیس کے محکمے کی ٹهیک ٹهیک سیوا کی ضرورت هے . جس محکمے کی ڈهیل جنتا کی جان پر آبنے اُس ڈهیل کو دور کرنا سرکار کا پهلا کام هونا چاهئے . پولیس کا یه کام نهیں هے که وہ توڑ پهوڑ (Sabotage) کہ کر یه سمجھ لے که اُس نے اپنا فرض پورا کرلیا، اُس کا کام هے که وہ توڑ پهوڑ والوں کو توڑ پهوڑ کرتے پکڑے . ایک حد تک وہ 'شک سندیہ' کا فایدہ اُٹها سکتي هے پر ایسی حالت میں ریل درگهٹنائیں کم یا بالکل بند هو جاني چاهئیں .

بهگواندین

پترکاروں کی ذمهداریاں

چار مئي کو نئي دلي میں بهارتی اور پاکستاني پترکاروں کی ایک کانفرنس هوئی . یه کانفرنس بڑی انوکهي اور معرکے کی سمجهي جاتی اور اِس کانفرنس سے پترکاروں کا رتبه اور بهی اونچا هو جاتا اگر یه کانفرنس پترکاروں کی اپنی سوجھ پر

थोड़ी सी जोखम उठाकर उस समझौते से पहले हुई होती जो आज भारत और पाकिस्तान में हुआ. समझौते के बाद भी कान्फरेन्स का मोल इतना जरूर है कि जिस से दोनो मुल्कों को बेहद फायदा पहुंच सकता है.

असल में जो समझौता दो मुल्को के बड़े वजीरों ने किया वह पहले हम पत्रकारो को सूझना चहिये था. हमें न सूझना इस बात का सबूत है कि हम बेजा देश भक्ति और बेजा धर्म भक्ति में फंसे हुए थे और इस धुन में हम मे से बहुतों का एक दूसरे के ऐब देखने के सिवा अपने पर नजर डालने का मौका ही न मिल पाता था. और ऐसी हालत में हम उस पाक कर्तव्य को पूरा ही न कर पाते थे जो हर एडीटर, एडीटर के आसन पर बैठकर अपने जिम्मे आप लेता है.

एडीटरी की पाक जिम्मेदारी से एडीटर में वह ताकत पैदा हो जाती है कि वह सच्चे मानों में बिला मेहनत किये जनता का हादी बन बैठता है और फिर अपने आसन पर बैठा हुआ ही अपने मुल्क की सरकार के दिल में जगह बना लेता है और सच्चे मानों में उसका वजीर बन बैठता है. अगर किसी मुल्क के पत्रकार यह कहने की हिम्मत नहीं रखते कि, यह हम हैं जो सरकार को चला रहे हैं, तो उनका पत्रकार होना बेकार है, पर इस तरह के पत्रकार होने का दावा तो वही एडीटर कर सकते हैं जो जी जान से अपने मुल्क पर फिदा रहते जी जान से सारी इन्सानी जमात का भला चाहने वाले हों. यह आदर्श है और इस तक शायद ही कोई पत्रकार पहुंचे पर यह

تھوڑی سی جوکھم اُتھا کر اُس سمجھوتے سے پہلے ھوئی ھوتی جو آج بھارت اور پاکستان میں ھوا . سمجھوتے کے بعد بھی کانفرنس کا مول اِتنا ضرور ھے کہ جس سے دونوں ملکوں کو بیحد فایدہ پہونچ سکتا ھے .

اصل میل جو سمجھوتہ دو ملکوں کے بڑے وزیروں نے کیا وہ پہلے ھم پترکاروں کو سوجھنا چاھئے تھا . ھمیں نہ سوجھنا اس بات کا ثبوت ھے کہ ھم بیجا دیش بھکتی اور بیجا دھرم بھکتی میں پھنسے ھوئے تھے اور اِس دھن میں ھم میں سے بہتوں کو ایک دوسرے کے عیب دیکھنے کے سوا اپنے پر نظر ڈالنے کا موقعہ ھی نہ مل پاتا تھا . اور ایسی حالت میں ھم اُس پاک کرتویہ کو پورا ھی نہ کر پاتے تھے جو ھر ایڈیٹر' ایڈیٹر کے آسن پر بیٹھ کر اپنے ذمہ آپ لیتا ھے .

ایڈیٹری کی پاک ذمہ داری سے اڈیٹر میں وہ طاقت پیدا ھو جاتی ھے کہ وہ سچے معنوں میں بلا محنت کئے جنتا کا ھادی بن بیٹھتا ھے اور پھر اپنے آسن پر بیٹھا ھوا ھی اپنے ملک کی سرکار کے دل میں جگہ بنا لیتا ھے اور سچے معنوں میں اس کا وزیر بن بیٹھتا ھے . اگر کسی ملک کے پترکار یہ کہنے کی ھمت نہیں رکھتے کہ' یہ ھم ھیں جو سرکار کو چلا رھے ھیں' تو ان کا پترکار ھونا بیکار ھے. پر اس طرح کے پترکار ھونے کادعوی تو وھی ایڈیٹر کرسکتے ھیں جو جی جان سے اپنے ملک پر فدا رھتے جی جان سے ساری انسانی جماعت کا بھلا چاھنے والے ھوں . یہ آدرش ھے اور اس تک شاید ھی کوئی پترکار پہونچے . پر یہ

आदर्श सामने रहने से कम से कम ग़लतियाँ होंगी, यह बात तो हर एक को माननी होगी.

दिल्ली में दोनों मुल्कों के ख़ास ख़ास एडीटर इकट्ठे हुए, उन्हों ने कुछ ठहराव पास किये. उन पर वह अमल भी ज़रूर करेंगे क्योंकि उन्हों ने वह ठहराव आप अपने लिये बनाये हैं, किसी दूसरे ने उन के सिर नहीं थोपे. पर क्या ही अच्छा होता अगर वह अपनी कान्फ़रेन्स में अपनी उन भूलों को मान लेते जो वह अब तक करते रहे हैं. इतना ही नहीं पाकिस्तान के प्रतिनिधि एडीटरों को अपने देश के सब एडीटरों की भूलों को अपना कर उन पर पछतावा ज़ाहिर करना चाहिये था और ठीक इसी तरह भारत के नुमाइन्दा एडीटरों को अपने यहाँ के सब पत्रकारों की भूलों को अपने सिर ओढ़ कर और उन को अपनी ही भूलें मान कर अपना दिल साफ़ कर लेना चाहिये था. इस वक़्त ठहराव उतने क़ीमती साबित नहीं हो सकते जितनी दिल की सफ़ाई. पीर रशीदी साहब ने "बीती बातें भुलाइये" कह कर शुरूआत अच्छी की पर कनफ़रेन्स की कारवाई के नतीजे से जो बात समझ में आती है उस में दिल की सफ़ाई कम और क़ायदे की कारवाई ज़्यादा दिखाई देती है.

हमें यह तो मालूम होता है कि कान्फ़रेन्स की नीयत बहुत अच्छी है पर कान्फ़रेन्स ख़ुद अपनी किसी सूझ को लेकर नहीं चलरही. वह चल रही है उस समझौते को लेकर जो भारत और पाकिस्तान के बीच हुआ है और जिस को दोनों सरकारों ने मान लिया है. अगर किसी राज काजी वजह से, न हो ऐसा !, यह समझौता ढीला पड़ जाय या न हुआ जैसा होजाय या रद्द हो जाय तब इन एडिटरों की इस झमेले में वह जगह होगी जिस को

آدرش سامنے رہنے سے کم غلطیاں ہونگی' یہ بات تو ہر ایک کو ماننی ہوگی .

دلی میں دونوں ملکوں کے خاص خاص ایڈیٹر اکٹھے ہوئے' اُنہوں نے کچھ ٹھہراو پاس کئے . اُن پر عمل بھی ضرور کرینگے کیونکہ اُنہوں نے وہ ٹھہراو آپ اپنے لئے بنائے ہیں' کسی دوسرے نے اُن کے سر نہیں تھوپے . پر کیا ہی اچھا ہوتا اگر وہ اپنی کانفرنس میں اپنی اُن بھولوں کو مان لیتے جو وہ اب تک کرتے رہے ہیں اتنا ہی نہیں پاکستان کے پرتی ندھی ایڈیٹروں کو اپنے دیش کے سب ایڈیٹروں کی بھولوں کو اپناکر اُن پر پچھتاوا ظاہر کرنا چاہئے تھا اور ٹھیک اسی طرح بھارت کے نمایندہ ایڈیٹروں کو اپنے یہاں کے سب پترکاروں کی بھولوں کو اپنے سر اوڑھ کر اور اُن کو اپنی ہی بھولیں مان کر اپنا دل صاف کرلینا چاہئے تھا . اس وقت ٹھہراو اُتنے قیمتی ثابت نہیں ہوسکتے جتنی دل کی صفائی . پیر راشدی صاحب نے "بیتی باتیں بھولائیے" کہکر شروعات اچھی کی پر کانفرنس کی کاروائی کے نتیجے سے جو بات سمجھ میں آتی ہے اس میں دل کی صفائی کم اور قاعدے کی کاروائی زیادہ دکھائی دیتی ہے .

ہمیں یہ تو معلوم ہوتا ہے کہ کانفرنس کی نیت بہت اچھی ہے پر کانفرنس خود اپنی کسی سوجھ کو لیکر نہیں چل رہی . وہ چل رہی ہے اس سمجھوتے کو لیکر جو بھارت اور پاکستان کے بیچ ہوا ہے اور جس کو دونوں سرکاروں نے مان لیا ہے . اگر کسی راج کاجی وجہ سے' نہ ہو ایسا !' یہ سمجھوتہ ڈھیلا پڑجائے یا نہ ہوا جیسا ہوجائے یا رد ہوجائے تب اِن ایڈیٹروں کی اس جھمیلے میں وہ جگہ ہوگی جس کو

वह खुद हमसे ज्यादा जानते हैं. इसलिये हम कहते हैं कि इस कान्फ़रेन्स में इतनी क़ायदे की कारवाई की जरूरत नहीं थी जितनी दिल की धुलाई की.

जो कुछ हुआ है वह कम नहीं हुआ. इन हालतों में इतना बहुत हुआ है कि उस पर भी हम सब सच्चे जी से डट जायँ और पूरी तरह जुट जायँ तो हम इस मुल्क के दोनों हिस्सों की फ़िज़ा बदल सकते हैं और दोनों सरकारो और दोनों तरफ की जनता के दुख दूर कर सकते हैं. साथ ही साथ दोनो सरकारों के नेक और सही सलाहकार बन सकते हैं.

भगवान दीन

وہ خود هم سے زیادہ جانتے هیں . اسي لئے هم کهتے هیں که اِس کانفرنس میں اِتنی قاعدے کی کاروائی کی ضرورت نهیں تهی جتناي دل کی دهلائی کی .

جو کچھ هوا هے وہ کم نهیں هوا . ان حالتوں میں اتنا بهت هوا هے که اس پر بهی هم سب سچے جي سے ڈٹ جائیں اور پوري طرح جٹ جائیں تو هم اِس ملک کے دونوں حصوں کی فضا بدل سکتے هیں اور دونوں سرکارور، اور دونوں طرف کي جنتا کے دکھ دور کرسکتے هیں . ساتھ هي ساتھ دونوں سرکاروں کے نیک اور صحیح صلاح کار بن سکتے هیں .

بهگوان دین

(१) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(२) एकता फैलाने के लिये किताबों, अख़बारों, रिसालों वग़ैरह का छापना.

(३) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िरक़ों में आपस में मेल बढ़ाना.

—o—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा, वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़; गवर्निंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; सेक्रेटरी पं० सुन्दरलाल; —

गवर्निंग बाडी के और मेम्बर

डा० सय्यद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सय्यद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० खेर, मि० एस० के० रुद्रा, पं० विशम्भर नाथ. महात्मा भगवान दीन, सेठ पूनम चन्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम प्रकाश पालीवाल.

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिए.

सुन्दर लाल

सेक्रेटरी हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी
४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद

नोट—सोसाइटी के नये क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" के जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायगा. अलगअमे मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ज़्यादा दाम की किताबें लेने पर एक रुपया कम करा सकेंगे.

---

(۱) ایک ایسی ہندوستانی کلچر کا بڑھانا' پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ہندستانی شامل ہوں -

(۲) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں' اخباروں' رسالوں وغیرہ کا چھاپنا -

(۳) پڑھائی گھروں' کتب گھروں' سبھاؤں' کانفرنسوں' لکچروں سے سب دھرموں' جاتوں' برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا -

---

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ— مسٹر عبد المجید خواجہ' وائس پریسیڈنٹ— ڈاکٹر بھگوان داس - اور ڈاکٹر عبدالحق گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ - ڈاکٹر بھگوان داس' سکریٹری پنڈت سندلال'

گورننگ باڈی کے اور ممبر —

ڈاکٹر سید محمود' ڈاکٹر تارا چند - مولوی سید سلیمان ندوی' مسٹر منظر علی سوختہ' شری بی - جی - کھیر' مسٹر ایس- کے- رودرا' پنڈت بشمبھر ناتھ' مہاتما بھگوان دین' سیٹھ پونم چند رانکا' قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال'

ممبری کے قاعدے کے لئے لکھئے -

سندر لال

سکریٹری ہندستانی کلچر سوسائٹی'
۴۸ بائی کا باغ' الہ آباد

نوٹ—سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کردی گئی ہے - '' نیا ہند '' کے جو گاہک ممبر بننا چاہیں اُن کو صرف چھ روپیہ چندہ دینے پر ہی ممبر بنا لیا جائیگا - الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی ہوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ہوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ کم کرا سکینگے

Registered No. A—210.

“गीता और क़ुरान”

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

इस किताब के शुरू में दुनया के सब बड़ बड़ धमा की एकता को दिखाया गया है और सब धर्मों की किताबों से हवाले दे देकर मिलती जुलती बुनियादी सचाइयो को बयान किया गया है.

उसके बाद गीता के लिखे जाने के वक्त की इस देश की हालत, गीता के बड़प्पन और एक एक अध्याय को लेकर गीता की तालीम को बतलाया गया है.

आखिर में क़ुरान से पहले की अरब की हालत, क़ुरान के बड़प्पन और एक एक बात पर क़ुरान की तालीम का बयान किया गया है. इस में क़ुरान की पांच सौ से ऊपर आयतों का लफ्ज़ी तरजुमा दिया गया है. यह भी बताया गया है कि क़ुरान में जेहाद, आक़बत, आखिरत, जन्नत, जहन्नम, काफ़र वग़ैरा किसे कहा गया है.

जो लोग सब धर्मों की एकता को समझना चाहें या हिन्दू धर्म और इसलाम दोनो की इन दो अमर पुस्तको की सच्ची जानकारी हासिल करना चाहें उन्हे इस किताब को ज़रूर पढ़ना चाहिए.

किताब आसान हिन्दुस्तानी ज़बान में, नागरी और उर्दू दोनो लिखावटों में अलग अलग मिल सकती है. पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बँधी किताब की क़ीमत सिर्फ ढाई रुपये डाक खर्च अलग.

मैनेजर “नया हिन्द”

४८ बाई का बाग़. इलाहाबाद

”گیتا اور قرآن“

لیکھک پنڈت سندر لال

اس کتاب کے شروع میں دنیا کے سب بڑے بڑے دھرموں کی ایکتا کو دکھایا گیاہے اور سب دھرموں کی کتابوں سے حوالے دے دے کر ملتی جلتی بنیادی سچائیوں کو بیان کیا گیا ہے.
اسکے بعد گیتا کے لکھے جانے کے وقت کی اس دیس کی حالت، گیتا کے بڑپن اور ایک ایک ادھیائے کو لیکر گیتا کی تعلیم کو بتلایا گیا ہے.

آخر میں قرآن سے پہلے عرب کی حالت، قرآن کے بڑپن اور ایک ایک بات پر قرآن کی تعلیم کو بیان کیا گیا ہے. اسمیں قرآن کی پانچ سو سے اوپر آیتوں کا لفظی ترجمہ دیا گیا ہے یہ بھی بتایا گیا ہے کہ قرآن میں جہاد، عاقبت، آخرت، جنت، جہنم، کافر وغیرہ کسے کہا گیا ہے.

جو لوگ سب دھرموں کی ایکتا کو سمجھنا چاہیں یا ہندو دھرم اور اسلام دونوں کی ان دو امر پستکوں کی سچی جانکاری حاصل کرنا چاہیں اُنھیں اس کتاب کو ضرور پڑھنا چاہئے۔
کتاب ہندستانی زباں مین ناگری اور اُردو دونوں لکھاوٹوں میں الگ الگ مل سکتی ہے پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ- ڈاک خرچ الگ -

مینیجر 'نیا ہند'

۴۸ بائی کا باغ، الہ آباد


नया हिन्द

भरी भरी घटाओं में फ़िज़ा की वह उदाहटें
धुली हुई हवा में ज़ुल्फ़े शब की थरथराहटें
गजर से पहले कायनात की वह कुन्मुनाहटें
वह पौ फटी जबीने चर्ख़ की वह जगमगाहटें
कुछ ऊदी बदलियों में धूप की वह मुस्कुराहटें
शिगूफ़ा छोड़ती जवानियों की अचपलाहटें
लबों की पंखड़ी पे तारों की वह झिलमिलाहटें
वह मद में डूबे सीनों की रसीली गुनगुनाहटें
निगाहे शर्मसार की किरन की लपलपाहटें
समय के चादरों की वह ख़मोश सरसराहटें
हवाये इन्क़लाब के परों की फड़फड़ाहटें
चिराग़े ज़िन्दगी की वह उदास टमटमाहटें
ज़मीन की तहों में ज़लज़लो की गड़गड़ाहटें
निज़ामे कायनात की रगों की सन्सनाहटें

कथा कली के लोच में कलाइयों की मोच में
फ़िज़ा की नर्म साँस में हर एक खटकती फाँस में
हर एक ग़म और शादी में 'फ़िराक़' वादी वादी में
हयात ढूंढते चलो हयात ढूंढते चलो

(तलाशे हयात) लेखक

(६०) उठ मेरे काली कमली वाले, रात चली है जोगिन होकर
ओस से अपने मुँह को धोकर लट छटकाये बाल सँवारे
उठ मेरी काली कमली वाले

بھری بھری گھٹاؤں میں فضا کی وہ اداھٹیں
دھلی ہوئی ہوا میں زلف شب کی تھرتھراھٹیں
گجر سے پہلے کائنات کی وہ کنمناھٹیں
وہ پو پھٹی جبین چرخ کی وہ دگمگاھٹیں
کچھ اودی بدلیوں میں دھوپ کی وہ مسکراھٹیں
شگوفہ چھوڑتی جوانیوں کی اچپلاھٹیں
لبوں کی پنکھڑی پہ تاروں کی وہ جھلملاھٹیں
وہ مد میں ڈوبے سینوں کی رسیلی گنگناھٹیں
نگاہ شرمسار کی کرن کی لپلپاھٹیں
سمے کی چادروں کی وہ خموش سرسراھٹیں
ہوائے انقلاب کے پروں کی پھڑ پھڑاھٹیں
چراغ زندگی کی وہ اداس تمتماھٹیں
زمین کی تہوں میں زلزلوں کی گڑگڑاھٹیں
نظام کائنات کی رگوں کی سنسناھٹیں

کتھا کلی کے لوچ میں کلائیوں کی موچ میں
فضا کی نرم سانس میں ہر اک کھٹکتی پھانس میں
ہر ایک غم اور شادی میں 'فراق' وادی وادی میں
حیات ڈھونڈھتے چلو حیات ڈھونڈھتے چلو

(تلاش حیات) لیکھک

(٦٠) اُٹھ مرے کالی کملی والے رات چلی ہے جوگن ہوکر
اوس سے اپنے منہ کو دھوکر لٹ چھٹکائے بال سنوارے
اُٹھ مرے کالی کملی والے

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का परचा

एडीटर—
ताराचन्द, भगवानदीन, मुज़फ़्फ़र हसन, विश्वम्भरनाथ, सुन्दरलाल

जुलाई १९५०

क्या किस से — सफ़ा

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल
एक परचा दस आने .

هندستانی کلچر سوسائٹی کا پرچا

ایڈیٹر—
تاراچند ' بھگوان دین ' مظفر حسن ' بشمبھر ناتھ ' سندر لال '

جولائی ۱۹۵۰

کیا کس سے — صفحہ

۱—آتم دھکار—خلیل جبران—انووادک—بھائی مائی دیال جین ۱
۲—سمراٹ اکبر اور پنڈت سندر لال ۳
۳—جمایا ہوا بنسپتی تیل—مہاتما بھگوان دین ۹
۴—جنتا کی چنتا—بھائی عبدالحلیم انصاری ۱۶
۵—اسلام کا سماجی سنگٹھن—پنڈت سندر لال ۲۳
۶—کوریا اور اس کی گھریلو لڑائی—مہاتما بھگوان دین ... ۳۴
۷—زبردستی نہ کیجئے—بھائی سر سوتی سرن ۴۴
۸—پرکرتی کا سندیش (کویتا) بھائی چرن سرن ناز ... ۵۴
۹—بچوں کی دنیا ۵۷
۱۰—ہماری رائے—کوریا کے دو ٹکڑے—اڈیٹر ' کوریا اور بھارت—بھگوان دین اور سندر لال یا ترکی کے نئے چناؤ—بھگوان دین ' کانگریس اور لجا—بھگوان دین ' شانتی انعام کا حق دار کون ؟—بھگوان دین شاباش کوریا !—بھگوان دین—یہ ہے امریکہ—بھگوان دین ' دنیا کی بڑی لڑائی—بھگوان دین ۶۳

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال - باہر دس روپیہ سال
ایک پرچہ دس آنے -

मैनेजर 'नया हिन्द' ५०, बाई का बाग़, इलाहाबाद
منیجر ' نیا ہند ' ۵۰ ' بائی کا باغ ' الہ آباد -

नया हिन्द — نیا ھند

जिल्द ९ | जुलाई सन् '५० | नम्बर १

نمبر ۱ | جولائی سن ۵۰ | جلد ۹

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुंचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ھندستانی بولی
' نیا ھند ' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی

आत्म-धिक्कार

(खलील जिब्रान)

सात बार मैं ने अपनी आत्मा को धिक्कारा है :—

१—जब मैं ने उसे बड़प्पन पाने के लिये नर्म हते हुए देखा ;

२—जब मैं ने उसे पतित के सामने झुक कर चलते देखा ;

३—जब उसे सरल और मुशकिल कामों में से किसी एक काम को चुनने का मौक़ा दिया गया और उसने सरल काम को पसंद किया ;

४—जब उसने कोई अपराध और पाप किया और यह कह कर अपने को संतोष दे लिया कि दूसरे भी इसी तरह अपराध और पाप करते हैं ;

[illegible]

اتم دھکار

(خلیل جبران)

سات بار میں نے اپنی آتما کو دھکارا ہے :—

۱ — جب میں نے اُسے بڑپپن پانے کے لئے نرم ہوتے ہوئے دیکھا ؛

۲ — جب میں نے اُسے پتت کے سامنے جھک کر چلتے دیکھا ؛

۳ — جب اُسے سرل اور مشکل کاموں میں سے کسی ایک کام کو چننے کا موقعہ دیا گیا اور اس نے سرل کام کو پسند کیا ؛

۴ — جب اس نے کوئی اپرادھ اور پاپ کیا اور یہ کہکر اپنے کو سنتوش دے لیا کہ دوسرے بھی اسی طرح اپرادھ اور پاپ کرتے ہیں ؛

[illegible]

५—जब उसने अपनी कमज़ोरी के कारन किसी अत्याचार को सहन किया और फिर यह कहा कि संतोष और शांति करना भी गुन है ;

६—जब उसने किसी बदरूप चेहरे को देखकर उससे नफ़रत की और यह न समझा कि असल में यह उस का ही दूसरा रूप है ;

७—जब उसने अपनी बड़ाई की डींग मारी या दूसरों की अनुचित तारीफ़ की और उसे भी एक गुन समझा.

अनवादक—भाई भाई दयाल जैन

۵ – جب اس نے اپنی کمزوری کے کارن کسی اتیاچار کو سہن کیا اور پھر یہ کہا کہ سنتوش اور شانتی کرنا بھی گن ہے ؛

۶ – جب اس نے کسی بدروپ چہرہ کو دیکھکر اُس سے نفرت کی اور یہ نہ سمجھا کہ اصل میں یہ اُسکا ہی دوسرا روپ ہے ؛

۷ – جب اس نے اپنی بڑائی کی ڈینگ ماری یا دوسروں کی اُنوچت تعریف کی اور اُسے بھی ایک گن سمجھا .

انوادک – بھائی بھائی دیال جین

———

सम्राट अकबर और हमारा आगे का रास्ता

(पंडित सुन्दर लाल)

राजा राम चन्द्र को छोड़कर शायद ही किसी राजा या बादशाह का नाम इस सारे देश में उत्तर से दक्खिन और पूरब से पच्छिम तक इतना मशहूर हो जितना सम्राट अकबर का. यह बात भी आम तौर पर सब जानते हैं कि अकबर ने इस देश के हिन्दू मुसलमानों को मिलाने और सारे देश को एक करके उसे हर तरह खुशहाल और माला माल करने की कितनी कोशिश की. दुनिया के जिन छै सात बड़े से बड़े शासकों को सब इतिहास लिखने वाले एक राय से 'महान', 'आज़म' या 'दी ग्रेट' कह कर पुकारते हैं उनमें से दो हिन्दुस्तान के हिस्से में पड़े हैं—अशोक और अकबर.

फिर भी अकबर की बाबत उसके अपने देश के लोगों में तरह तरह की भावनायें हैं.

बहुत से पढ़े लिखे हिन्दू अकबर की एकता की कोशिश को थोड़ा बहुत जानते और सराहते हुए भी उसे 'मीठी छुरी' कह कर याद करते हैं. कोई कोई औरंगज़ेब को हिन्दुओं और हिन्दू धर्म का दुश्मन कहते हुए भी औरंगज़ेब को अकबर से अच्छा बताते हैं. इस मामले में इस तरह के हिन्दुओं का आदर्श वह महाराना प्रताप हैं जो इस टेक के लिये मर मिटे कि किसी राजपूत कन्या की किसी दूसरे से शादी क्यों हो और मारवाड़ की पवित्र भूमि पर

سمراٹ اکبر اور ہمارا آگے کا راستہ

(پنڈت سندر لال)

راجہ رام چندر کو چھوڑ کر شاید ہی کسی راجہ یا بادشاہ کا نام اس سارے دیش میں اُتر سے دکھن اور پورب سے پچھم تک اتنا مشہور ہو جتنا سمراٹ اکبر کا . یہ بات بھی عام طور پر سب جانتے ہیں کہ اکبر نے اِس دیش کے ہندو مسلمانوں کو ملانے اور سارے دیش کو ایک کرکے اُسے ہر طرح خوشحال اور مالا مال کرنے کی کتنی کوشش کی . دنیا کے جن چھ سات بڑے سے بڑے شاسکوں کو سب اتہاس لکھنے والے ایک رائے سے 'مہان' 'اعظم' یا 'دی گریٹ' کہکر پکارتے ہیں اُن میں سے دو ہندوستان کے حصے میں پڑے ہیں —— اشوک اور اکبر .

پھر بھی اکبر کی بابت اس کے اپنے دیش کے لوگوں میں طرح طرح کی بھاونائیں ہیں .

بہت سے پڑھے لکھے ہندو اکبر کی ایکتا کی کوششوں کو تھوڑا بہت جانتے اور سراہتے ہوئے بھی اُسے 'میٹھی چھری' کہکر یاد کرتے ہیں . کوئی کوئی اورنگ زیب کو ہندوؤں اور ہندو دھرم کا دشمن کہتے ہوئے بھی اورنگ زیب کو اکبر سے اچھا بتاتے ہیں . اس معاملہ میں اسطرح کے ہندوؤں کا آدرش وہ مہارانا پرتاپ ہیں جو اس ٹیک کے لئے مرمٹے کہ کسی راجپوت کنیا کی کسی دوسرے سے شادی کیوں ہو اور مارواڑ کی پوتر بھومی پر

किसी विधर्मी की हुकूमत क्यों क़ायम हो. महाराना प्रताप की तसवीर हज़ारों हिन्दू घरों में मिलेगी. अकबर की शायद ही कहीं इधर उधर. देश के दूर दूर के सूबों में नाटक खेले जाते हैं जिनमें माहाराना प्रताप का आदर्श लोगों के सामने रखा जाता है और मान सिंह और अकबर को नीचा दिखाया जाता है

दूसरी तरफ़ बहुत से पढ़े लिखे मुसलमान अकबर के राज काज की थोड़ी बहुत तारीफ़ करते हुए भी उसे दीन के मामले में गिरा हुआ मानते हैं. और अधिक कट्टर काफ़िर तक कह डालते हैं. इस तरह के लोगों की निगाह में एक सच्चे मुसलमान बादशाह की हैसियत से अकबर की निस्बत कहीं ज्यादा अच्छा और ऊँचा आदर्श था सम्राट औरंगज़ेब. बहुत से मुसलमान आलिमों में औरंगज़ेब के ख़त और फ़तवे ख़ासी क़दर के साथ पढ़े जाते हैं. ऐसे लोगों को सम्राट अकबर के कामों की तारीफ़ उतनी नहीं भाती और अगर उनके सामने औरंगज़ेब में कोई नुक़्स दिखाया जाये वो उनको वैसा ही बुरा लगता है जैसा किसी वली अल्लाह को बुरा कहना.

यह है हिन्दू और मुसलमानों दोनों के दिलों में उस आदमी को क़दर जिस से ज्यादा शायद एक कबीर को छोड़ कर, हिन्दू और मुसलमानों को मिलाने की इन हजार बरस के अन्दर किसी ने कोशिश नहीं की.

किसी भी मुल्क या क़ौम के लोगों की तरक़्क़ी और उनके फलने फूलने का दारोमदार बहुत कुछ इस बात पर होता है कि आख़िर

کسی ودھرمی کی حکومت کیوں قائم ہو. مہارانا پرتاپ کی تصویر ہزاروں ہندو گھروں میں ملے گی. اکبر کی شاید ہی کہیں اِدھر اُدھر. دیش کے دور دور کے صوبوں میں ناٹک کھیلے جاتے ہیں جن میں مہارانا پرتاپ کا آدرش لوگوں کے سامنے رکھا جاتا ہے اور مان سنگھ اور اکبر کو نیچا دکھایا جاتا ہے.

دوسری طرف بہت سے پڑھے لکھے مسلمان اکبر کے راج کاج کی تھوڑی بہت تعریف کرتے ہوئے بھی اُسے دین کے معاملہ میں گرا ہوا مانتے ہیں. اور اَدھک کٹر کافر تک کہہ ڈالتے ہیں. اسطرح کے لوگوں کی نگاہ میں ایک سچے مسلمان بادشاہ کی حیثیت سے اکبر کی نسبت کہیں زیادہ اچھا اور اُونچا آدرش تھا سمراٹ اورنگ زیب. بہت سے مسلمان عالموں میں اورنگ زیب کے خط اور فتوے خاصی قدر کے ساتھ پڑھے جاتے ہیں. ایسے لوگوں کو سمراٹ اکبر کے کاموں کی تعریف اتنی نہیں بھاتی اور اگر ان کے سامنے اورنگ زیب میں کوئی نقص دکھایا جائے تو اِن کو ویسا ہی برا لگتا ہے جیسا کسی ولی اللہ کو برا کہنا.

یہ ہے ہندو اور مسلمانوں دونوں کے دلوں میں اس آدمی کی قدر جس سے زیادہ شاید ایک کبیر کو چھوڑ کر ہندو اور مسلمانوں کو ملانے کی اِن ہزار برس کے اندر کسی نے کوشش نہیں کی.

کسی بھی ملک یا قوم کے لوگوں کی ترقی اور ان کے پھلنے پھولنے کا دارومدار بہت کچھ اِس بات پر ہوتا ہے کہ آخر

उनके जीवन के आदर्श क्या हैं. और वह अपने इतिहास के हीरो या महापुरुषों को कहाँ तक सच्ची रोशनी में देख सकते हैं और इनसे क्या कुछ सीख सकते हैं.

महाराना प्रताप ने जिस ढंग से और जिस तरह की क़ुरबानियाँ देकर अपनी टेक को निभाया इसके लिये महाराना की तारीफ़ की जा सकती है लेकिन हमें यह समझना होगा कि जिस पुरानी भावना के असर में राजपूत अपनी लड़कियों को इसलिये पैदा होते ही मार डालते थे कि कोई उनका दामाद क्यों बने वह भावना न बहुत ऊँची भावना थी और न किसी मुल्क की तरक़्क़ी में मदद दे सकती है. वह भावना ही क़ौमों और मुल्कों को तंग दायरों में बन्द करके उन्हें बरबाद और ख़तम कर देने वाली भावना थी. यह ख़याल भी कि किसी मुल्क में किसी एक ही धार्मिक परम्परा के लोगों का राज हो, बहुत छोटा और तंग और ग़लत ख़याल है. अकबर का सर्वधर्म समभाव यानी सब मज़हबों का एक सा आदर करना, सारी इन्सानी क़ौम को एक कुन्बा समझना और सब में ब्याह शादी रिश्ते नाते और मेल मुहब्बत क़ायम करने की कोशिश करना दीन और दुनिया दोनों की निगाह से कहीं ज़्यादा ऊँचा आदर्श है.

योरप के बड़े से बड़े राज काजी सोचने वालों को आज अपनी जिन बातों पर सब से ज़्यादा घमंड है उनमें से एक सैकुलर गवरमेन्ट यानी मज़हब के मामले में बिलकुल ग़ैर जानिबदार गवरमेन्ट की कल्पना है. लेकिन जब कि योरप में अभी सैकुलर गवरमेन्ट की कल्पना पैदा भी नहीं हुई थी और जब कि योरप के एक एक

اُن کے جیون کے آدرش کیا ہیں. اور وہ اپنے اتہاس کے ہیرو یا مہا پرشوں کو کہاں تک سچی روشنی میں دیکھ سکتے ہیں اور اُن سے کیا کچھ سیکھ سکتے ہیں ۔

مہارانا پرتاپ نے جس ڈھنگ سے اور جس طرح کی قربانیاں دیکر اپنی ٹیک کو نبھایا اُس کے لئے مہارانا کی تعریف کی جاسکتی ہے ۔ لیکن ہمیں یہ سمجھنا ہوگا کہ جس پرانی بھاونا کے اثر میں راجپوت اپنی لڑکیوں کو اس لئے پیدا ہوتے ہی مارڈالتے تھے کہ کوئی اُن کا داماد کیوں بنے وہ بھاونا نہ بہت اونچی بھاونا تھی اور نہ کسی ملک کی ترقی میں مدد دے سکتی ہے ۔ وہ بھاونا ہی قوموں اور ملکوں کو تنگ دائروں میں بند کرکے اُنھیں برباد اور ختم کردینے والی بھاونا تھی. یہ خیال بھی کہ کسی ملک میں کسی ایک ہی دھارمک پرمپرا کے لوگوں کا راج ہو بہت چھوٹا اور تنگ اور غلط خیال ہے ۔ اکبر کا سرودھرم سمبھاؤ یعنی سب مذہبوں کا ایک سا آدر کرنا، ساری اِنسانی قوم کو کو ایک کنبہ سمجھنا اور سب میں بیاہ شادی رشتے ناتے اور میل محبت قائم کرنے کی کوشش کرنا دین اور دنیا دونوں کی نگاہ سے کہیں زیادہ اونچا آدرش ہے ۔

یورپ کے بڑے سے بڑے راج کاجی سوچنے والوں کو آج اپنی جن باتوں پر سب سے زیادہ گھمنڈ ہے ان میں سے ایک سیکولر گورمنٹ یعنی مذہب کے معاملے میں بالکل غیر جانب دار گورمنٹ کی کلپنا ہے ۔ لیکن جب کہ یورپ میں ابھی سیکولر گورمنٹ کی کلپنا پیدا بھی نہیں ہوئی تھی اور جب کہ یورپ کے ایک ایک

मुल्क में लोग अपने अपने मज़हब वालों की हकूमत क़ायम करने और दूसरे मज़हबी ख़याल वालों को मिटा देने की कोशिश में लाखों नहीं करोड़ों बेगुनाहों को मौत के घाट उतार रहे थे और इलाक़े के इलाक़े वीरान कर रहे थे उस ज़माने में हिन्दुस्तान के इस सम्राट ने तख़्त पर बैठते ही यह देख लिया था कि जिस महान देश में अलग अलग धार्मिक ख़यालों के लोगों की मिली जुली आबादी हो उसमें राजा वही होना चाहिये और वही हो सकता है जिसका किसी एक धार्मिक परिपाटी से कोई ख़ास लगाव न दिखाई दे. जिसे सब अपना समझें और जो सब को एक निगाह से देखे. सम्राट अकबर दुनिया की तारीख़ में पहला इंसान था जिसने सैकुलर गवरमेन्ट की कल्पना को आज कल की किसी जम्हूरी पारलिमेन्ट में नहीं बल्कि शख़्सी हकूमत के अन्दर अमली जामा पहनाने की शानदार कोशिश की. तारीख़ में सम्राट अकबर ही सैकुलर गवरमेन्ट की कल्पना का जन्म दाता था.

इसमें शक नहीं कि अकबर के मुक़ाबले में औरंगज़ेब इस्लाम की ऊपरी रीत रिवाजों और फ़क़ीहों (आचार्यों) के हुकमों का कहीं ज़्यादा पाबन्द था. लेकिन अगर हम समझें तो एक मुसलमान बादशाह के लिये भी अपनी हर मज़हब की रिआया के दिलों को हाथ में लेना और दुनिया में सच्ची 'अख़ूवत इन्सानी' यानी इन्सानी भाई चारा क़ायम करने की कोशिश करना रूहानी निगाह से भी कहीं ज़्यादा ऊँची चीज़ थी . भगवान के सच्चे भक्त और हक़ीक़ी वाली अल्लाह कबीर साहब का सियासी वारिस, अबुलफ़ज़ल और फ़ैज़ी जैसे सूफ़ी मनुष बुज़ुर्गों का साथी अकबर रसूम परस्त नहीं

ملک میں لوگ اپنے اپنے مذہب والوں کی حکومت قائم کرنے اور دوسرے مذہبی خیال والوں کو مٹا دینے کی کوشش میں لاکھوں نہیں کروڑوں بے گناہوں کو موت کے گھاٹ اتار رہے تھے اور علاقے کے علاقے ویران کر رہے تھے اس زمانے میں ہندستان کے اس سمراٹ نے تخت پر بیٹھتے ہی یہ دیکھ لیا تھا کہ جس مہان دیش میں الگ الگ دھارمک خیالوں کے لوگوں کی ملی جلی آبادی ہو اس میں راجہ وہی ہونا چاہئیے اور وہی ہوسکتا ہے جس کا کسی ایک دھارمک پریپاٹی سے کوئی خاص لگاؤ نہ دکھائی دے' جسے سب اپنا سمجھیں اور جو سب کو ایک نگاہ سے دیکھے . سمراٹ اکبر دنیا کی تاریخ میں پہلا انسان تھا جس نے سیکولر گورنمنٹ کی کلپنا کو آجکل کی کسی جمہوری پارلیمنٹ میں نہیں بلکہ شخصی حکومت کے اندر عملی جامہ پہنانے کی شاندار کوشش کی . تاریخ میں سمراٹ اکبر ہی سیکولر گورنمنٹ کی کلپنا کا جنم داتا تھا .

اس میں شک نہیں اکبر کے مقابلے میں اورنگ زیب اسلام کی اوپری ریت رواجوں اور فقیہوں (آچاریوں) کے حکموں کا کہیں زیادہ پابند تھا . لیکن اگر ہم سمجھیں تو ایک مسلمان بادشاہ کے لئے بھی اپنی ہر مذہب کی رعایا کے دلوں کو ہاتھ میں لینا اور دنیا میں سچی ' اخوت انسانی ' یعنی انسانی بھائی چارہ قائم کرنے کی کوشش کرنا روحانی نگاہ سے بھی کہیں زیادہ اونچی چیز تھی . بھگوان کے سچے بھگت اور حقیقی ولی اللہ کبیر صاحب کا سیاسی وارث' ابوالفضل اور فیضی جیسے صوفی منش بزرگوں کا ساتھی . اکبر رسوم پرست نہیں

हो सकता था लेकिन सच्ची रूहानियत की निगाह से कुछ छोटा इन्सान भी नहीं था.

दुनिया ने हमेशा से अपने सच्चे भलाई करने वालों को बहुत कम और बहुत देर में पहचाना है. सम्राट अकबर को इस दुनिया से कूच किये लगभग साढ़े तीन सौ बरस हो चुके. अकबर की बाज़ कोशिशों के बारे में अलग अलग राय हो सकती हैं. लेकिन जहाँ तक अकबर के इरादे और उसके ऊँचे आदर्श का सवाल है उन से इनकार नहीं किया जा सकता. सम्राट अकबर दुनिया के और इन्सानी क़ौम के बड़े से बड़े तामीर करने वालो मे से था. ख़ास कर इस मुल्क का पाँच हज़ार बरस का इतिहास और उसकी मौजूदा हालत दोनों हमें साफ़ बता रहे हैं कि इस मुल्क के लिये कबीर और अकबर के बताये रास्ते के सिवा सलामती और सचाई का कोई दूसरा रस्ता नहीं है. इस मुल्क का भविष्य अपने पूरे तेज के साथ चमकने के लिये उस दिन के इन्तज़ार में है जिस दिन एक एक हिन्दू इस बात को महसूस करने लगे कि महराना प्रताप की आन तारीफ़ की चीज़ होते हुए भी सम्राट अकबर के जीवन का आदर्श ज्यादा विशाल, ज्यादा ऊँचा और हक़ीक़ी हिन्दू धर्म यानी उपनिषदों और भगवत गीता के आदर्शों के ज्यादा निकट था. और एक एक मुसलमान इस बात को महसूस करे कि ऊपरी शरा और मिनहाज का पाबन्द न रहते हुए भी इस्लाम की सच्ची स्प्रिट के लिहाज़ से अकबर ज्यादा दीन दार और ज्यादा बा अमल रूहानी ज़िन्दगी बसर करने वाला था.

यह मुल्क इन्सानी क़ौम की आगे की तरक़्क़ी में तब ही और

(७)

ھوسکتا تھا لیکن سچی روحانیت کی نگاہ سے کچھ چھوٹا اِنسان بھی نہیں تھا۔

دنیا نے ھمیشہ سے اپنے سچے بھلائی کرنے والوں کو بہت کم اور بہت دیر میں پہچانا ھے۔ سمراٹ اکبر کو اس دنیا سے کوچ کئے لگ بھگ ساڑھے تین سو برس ھوچکے۔ اکبر کی بعض کوششوں کے بارے میں الگ الگ رائے ھوسکتی ھیں۔ لیکن جہاں تک اکبر کے ارادے اور اس کے اُونچے آدرش کا سوال ھے اُن سے اِنکار نہیں کیا جاسکتا۔ سمراٹ اکبر دنیا کے اور اِنسانی قوم کے بڑے سے بڑے تعمیر کرنے والوں میں سے تھا۔ خاص کر اس ملک کا پانچ ھزار برس کا اِتہاس اور اُس کی موجودہ حالت دونوں ھمیں صاف بتا رھے ھیں کہ اِس ملک کے لئے کبیر اور اکبر کے بتائے راستے کے سوا سلامتی اور سچائی کا کوئی دوسرا راستہ نہیں ھے۔ اِس ملک کا بھوشیہ اپنے پورے تیج کے ساتھ چمکنے کے لئے اُس دن کے اِنتظار میں ھے جس دن ایک ایک ھندو اِس بات کو محسوس کرنے لگے کہ مہارانا پرتاپ کی آن تعریف کی چیز ھوتے ھوئے بھی سمراٹ اکبر کے جیون کا آدرش زیادہ وشال' زیادہ اُونچا اور حقیقی ھندو دھرم یعنی اُپنشدوں اور بھگوت گیتا کے آدرشوں کے زیادہ نکٹ تھا. اور ایک ایک مسلمان اِس بات کو محسوس کرے کہ اُوپری شرع اور منہاج کا پابند نہ رھتے ھوئے بھی اِسلام کی سچی اسپرٹ کے لحاظ سے اکبر زیادہ دین دار اور زیادہ باعمل روحانی زندگی بسر کرنے والا تھا۔

یہ ملک اِنسانی قوم کی آگے کی ترقی میں تب ھی اور

केवल तब ही अपना पूरा पूरा हिस्सा ले सकता है जब मुल्क में सच्ची रूहानियत अपने पूरे ज़ोर के साथ चमकने लगे और यह चीज़ तभी हो सकती है जब हम सब ऊपरी रीत रिवाजों, कर्म कांडों, तंग नज़रियों और फ़िरक़ा परस्तियों से ऊपर उठ कर सच्ची इन्सानियत और इन्सानी भाई चारे को अपने दिलों में सब से ऊपर जगह दें. इसके लिये सम्राट अकबर के बताये आदर्श और उसके बताये रास्ते के सिवा हमारे लिये कोई दूसरा आदर्श या रास्ता नहीं है .

१५ जून सन् '५०.   ("रहबर" बम्बई से)

کیول تب ہی اپنا پورا پورا حصہ لے سکتا ہے جب ملک میں سچی روحانیت اپنے پورے زور کے ساتھ چمکنے لگے . اور یہ چیز تبھی ہوسکتی ہے جب ہم سب اوپری ریت رواجوں' کرم کانڈوں' تنگ نظریوں اور فرقہ پرستیوں سے اوپر اُٹھکر سچی اِنسانیت اور اِنسانی بھائی چارے کو اپنے دلوں میں سب سے اوپر جگہ دیں . اِس کے لئے سمراٹ اکبر کے بتائے آدرش اور اس کے بتائے راستے کے سوا ہمارے لئے کوئی دوسرا آدرش یا راستہ نہیں ہے .

۱۵ جون سن ۵۰   (" رہبر " بمبئی سے)

जमाया हुआ वनस्पति तेल

वनस्पति का व्योपार करने वाले चिकने घड़े हो गये हैं. उनपर जब गांधी जी के यह लफ़्ज़ असर न कर पाये कि "कोई ईमानदार कारखानेदार इतना नीचे नहीं गिरेगा कि जाली काम शुरू करे. बाज़ार नक़ली चीज़ों से भरे पड़े हैं. जाली सिक्के बनाने पर काफ़ी सज़ा होती है फिर जाली घी के लिये क्यों न काफ़ी सज़ा दी जाय! जबकि असली घी सिक्कों से कहीं ज्यादा क़ीमती है." (हरिजन सेवक १४-४-४६) और यह कि 'वनस्पति घी के नाम से जो वनस्पति तेल, घी या मक्खन की शकल में उसके नाम से बेचा जाता है वह हिन्दुस्तान के साथ बड़ा धोखा है, दग़ा है. हिन्दुस्तान के व्योपारियों का धर्म है कि वह किसी भी शकल में घी के नाम से ऐसा दिखावा करके कोई तेल या पदार्थ न बेचें. किसी सरकार को तो ऐसा हरगिज़ न करना चाहिये न किसी को ऐसा करने देना चाहिये." (हरिजन सेवक १३-१०-४६) तो अब किस के शब्द उन पर टिक सकेंगे. गांधी जी के जो कथन हमने ऊपर दिये हैं उनमें सरकार के लिये भी काफ़ी इशारा है. पर यह अंग्रेज़ी सरकार के लिये है यानी विदेशी सरकार के लिये है. और आज भारत की बागडोर देशी सरकार के हाथों में है. वह उस पर क्यों ध्यान देने लगी? हाँ, अब अगर स्वर्ग से ही गांधी जी कुछ लिख कर भेजें तो सरकार उस पर ध्यान दे सकती है. पर वनस्पति व्योपारी यह खूब जानते हैं कि आज तक किसी विज्ञानी ने स्वर्ग आने जाने की

جمایا ہوا بنسپتی تیل

بنسپتی کا بیوپار کرنے والے چکنے گھڑے ہوگئے ہیں ۔ اُن پر جب گاندھی جی کے یہ لفظ اثر نہ کرپائے کہ " کوئی ایماندار کارخانہ دار اتنا نیچے نہیں گریگا کہ جعلی کام شروع کرے ۔ بازار نقلی چیزوں سے بھرے پڑے ہیں ۔ جعلی سکہ بنانے پر کافی سزا ہوتی ہے پھر جعلی گھی کیلئے کیوں نہ کافی سزا دیجائے ! جب کہ اصلی گھی سکوں سے کہیں زیادہ قیمتی ہے." (ہریجن سیوک ۱۴-۴-۴۶) اور یہ کہ " بنسپتی گھی کے نام سے جو بنسپتی تیل' گھی یا مکھن کی شکل میں اس کے نام سے بیچا جاتا ہے وہ ہندستان کے ساتھ بڑا دھوکہ ہے' دغا ہے ۔ ہندستان کے بیوپاریوں کا دھرم ہے کہ وہ کسی بھی شکل میں گھی کے نام سے ایسا دکھاوا کرکے کوئی تیل یا پدارتھ نہ بیچیں ۔ کسی سرکار کو ایسا ہرگز نہ کرنا چاہئیے نہ کسی کو ایسا کرنے دینا چاہئیے." (ہریجن سیوک ۔ ۱۳-۱۰-۴۶) تو اب کس کے شبد ان پر ٹک سکینگے ۔ گاندھی کے جو کتھن ہم نے اُوپر دئیے ہیں ان میں سرکار کیلئے بھی کافی اشارہ ہے ۔ پر یہ انگریزی سرکار کیلئے ہے یعنی ودیشی سرکار کے لئے ہے ۔ اور آج بھارت کی باگ ڈور دیشی سرکار کے ہاتھوں میں ہے ۔ وہ اُس پر کیوں دھیان دینے لگی ؟ ہاں' اب اگر سورگ سے ہی گاندھی جی کچھ لکھکر بھیجیں تو سرکار اُس پر دھیان دے سکتی ہے ۔ پر بنسپتی بیوپاری یہ خوب جانتے ہیں کہ آج تک کسی وگیانی نے سورگ آنے جانے کی

रो के हमारा नाम जो लेगा दिलके दर्द से काम जो लेगा
टूट पड़ेंगे अर्श से तारे उठ मेरे काली कमली वाले
(खुदा हजरत मुहम्मद को नमाज के लिये जगा रहा है) शाद

ऊपर ६० नमूने पेश किये गये हैं. इन में लगभग पचीस सौ शब्द हैं और दो सौ से ऊपर मिसरे (पंक्तियाँ) हैं. यह सब बातें ध्यान में रखते जाइये. अब इनमें वह शब्द कौन हैं जो अनपढ़ आदमी नहीं जानते ? वह शब्द यह हैं :—

(१) कोहकन (पहाड़खोदने वाला, फ़रहाद, (जिसने अपनी प्रेमिका शीरीं के लिये पहाड़ खोदकर नहर निकाली थी) (२). समन्द (घोड़ा). (३) अरजुमन्द (माननीय या सम्मानित). (४) वहशत (परेशानी) (५) बदकार (पापी). (६) दहक़ान (देहाती), (७) खाम (कच्चा), (८) हंगाम (समय). (९) ग़द्दार (बाग़ी या बग़ावत करने वाला). (१०) सुबहे नौ (नई सुबह). (११) परस्तार (पुजारी). (१२) नक़्श (चिन्ह, निशानी). (१३) मुलहिद (धर्म से इनकार करने वाला). (१४) तक़सीर (क़सूर. अपराध). (१५) ज़ेहन (समझ). (१६) महरम (अंगिया), (१७) फ़ुग़ाँ (चीत्कार). (१८) मआल (नतीजा, परिणाम). (१९) [illegible]ात (जीवन का साज). (२०) जबीने चर्ख़ (आकाश का ललाट) (२१) निज़ामे कायनात (संसार के नियम क़ायदे).

मैं हिन्दी प्रेमियों से पूछता हूँ कि इसे जादू नहीं कहियेगा तो क्या कहियेगा ? दो सौ मिसरे जिनमें पचीस सौ या ढाई हजार शब्द आये हैं उनमें कुल बीस बाईस ऐसे शब्द आना जिनका मतलब पछना पड़े और वह भी इतने नर्म और मधुर. अगर इसे आप

روکے ہمارا نام جو لے گا دل کے درد سے کام جو لے گا
ٹوٹ پڑیں گے عرش سے تارے اُٹھ مرے کالی کملی والے
(خدا حضرت محمد کو نماز کے لئے جگا رہا ہے) 'شاد'

اُوپر ۶۰ نمونے پیش کئے گئے ہیں - ان میں لگ بھگ پچیس سو شبد ہیں اور دو سو سے اوپر مصرعے (پنکتیاں) ہیں - یہ سب باتیں دھیان میں رکھتے جائیے - اب ان میں وہ شبد کون ہیں جو ان پڑھ آدمی نہیں جانتے ؟ وہ شبد یہ ہیں :—

(۱) کوہکن، پہاڑ کھودنے والا فرہاد، 'جس نے اپنی پریمیکا شیریں کے لئے پہاڑ کھود کر نہر نکالی تھی) (۲) سمند (گھوڑا) (۳) ارجمند (مانّیہ یا سنمانت) (۴) وحشت (پریشانی) (۵) بدکار (پاپی) (۶) دہقان (دیہاتی) (۷) خام (کچا) (۸) ہنگام (سمے) (۹) غدار (باغی یا بغاوت کرنے والا) (۱۰) صبح نو (نئی صبح) (۱۱) پرستار (پجاری) (۱۲) نقش (چنھ، نشانی) (۱۳) ملحد (دھرم سے انکار کرنے والا) (۱۴) تقصیر (قصور، اپرادھ) (۱۵) ذہن (سمجھ) (۱۶) محرم (انگیا) (۱۷) فغاں (چتکار) مآل (نتیجہ، پرینام) (۱۹) ساز حیات (جیون کا ساز) (۲۰) جبین چرخ (آکاش کا للاٹ) (۲۱) نظام کائنات (سنسار کے نیم یا قاعدے) -

میں ہندی پریمیوں سے پوچھتا ہوں کہ اسے جادو نہیں کہئے گا تو کیا کہئے گا ؟ دو سو مصرعے جن میں پچیس سو یا ڈھائی ہزار شبد آئے ہیں ان میں کل بیس بائیس ایسے شبد آنا جن کا مطلب پوچھنا پڑے اور وہ بھی اتنے نرم اور مدھر اگر اسے آپ جادو

सड़क नहीं बनाई. हाँ, कुछ आत्मावादी आत्माएँ बुलाने का दावा करते हैं और यहाँ वहाँ आत्माएँ बुलाने की और उनसे बातें करने और सवाल पूछ कर जवाब मिलने की खबरें भी आती रहती हैं पर आत्मावाद न तो अभी वनस्पति वालों की नजरों में विज्ञान की हैसियत को पहुँचा है और न सरकार की नजरों में उसे विज्ञान का रुतबा मिला है. क्यों कि अगर ऐसा होता तो विद्यापीठों में उसको जरूर आसन मिल गया होता. इस लिये स्वर्ग से कोई व्यवस्था मिलने की तो आशा हमें छोड़ ही बैठना चाहिये.

आज के व्योपारी आम तौर से और वनस्पति के व्योपारी खास तौर से पहुँचे हुए साधुओं की तरह से पहुँचे हुए विज्ञानियों की राय का खूब फायदा उठाते हैं और पहुँचे हुए विज्ञानी सरकार की तो आंख, कान, नाक, जीभ, हाथ और मन सभी कुछ हैं पर वह हैं इसी लिये कि वह जो कुछ कहें सरकार के हो कर कहें.

विज्ञानियों की राय का ढोल पीट कर और सरकारी मिनिस्टरों की सनद को दिखा कर इन वनस्पति व्योपारियों को वनस्पति का प्रचार करते यह क्यों नहीं सूझता कि वह उन्हीं मिनिस्टरों के उस हुक्म का पालन करें जो यह कहता है कि काला बाजार मत करो, जाली चीजें न बनाओ, वग़ैरा वग़ैरा. इन वनस्पति व्योपारियों का तो यह हाल है कि "मीठा मीठा हप्प, कड़ुवा कड़ुवा थू." वनस्पति व्योपारियों को यह मालूम है कि विज्ञानियों की राय पर अमल करना जरूरी नहीं है. क्यों कि विज्ञानियों की राय से अगर भाई-बहन शादी कर लें तो उनसे संतान उत्पन्न हो सकती है पर उनकी इस राय को मान कर किसी भाई-बहन ने आज तक शादी नहीं

سڑک نہیں بنائی . ھاں کچھ آتما وادی آتمائیں بلانیکا دعوی کرتے ھیں اور یہاں وھاں آتمائیں بلانیکی اور ان سے باتیں کرنے اور سوال پوچھ کر جواب ملنے کی خبریں بھی آتی رھتی ھیں . پر آتماواد نہ تو ابھی بنسپتی والونکی نظروں میں وگیان کی حیثیت کو پہونچا ھے اور نہ سرکار کی نظروں میں اُسے وگیان کا رتبہ ملا ھے . کیونکہ اگر ایسا ھوتا تو ودیا پیٹھوں میں اُس کو ضرور آسن مل گیا ھوتا . اس لئے سورگ سے کوئی ویوستھا ملنے کی تو آشا ھمیں چھوڑ ھی بیٹھنا چاھئے .

آج کے بیوپاری عام طور سے اور بنسپتی کے بیوپاری خاص طور سے پہونچے ھوئے سادھو کی طرح سے پہونچے ھوئے وگیانیوں کی رائے کا خوب فائدہ اُٹھاتے ھیں اور پہونچے ھوئے وگیانی سرکار کی تو آنکھ، کان، ناک، جیبھ ھاتھ اور من سبھی کچھ ھیں . وہ ھیں اسی لئے کہ وہ جو کچھ کہیں، سرکار کے ھوکر کہیں .

وگیانیوں کی رائے کا ڈھول پیٹ کر اور سرکاری منسٹروں کی سند کو دکھا کر ان بنسپتی بیوپاریوں کو بنسپتی کا پرچار کرتے یہ کیوں نہیں سوجھتا کہ وہ انھیں منسٹروں کے اُس حکم کا پالن کریں جو یہ کہتا ھے کہ کالا بازار مت کرو، جعلی چیزیں نہ بناؤ، وغیرہ وغیرہ . ان بنسپتی بیوپاریوں کا تو یہ حال ھے کہ "میٹھا میٹھا ھپ، اور کڑوا کڑوا تھو ." بنسپتی بیوپاریوں کو یہ معلوم ھے کہ وگیانیوں کی رائے پر عمل کرنا ضروری نہیں ھے، کیونکہ وگیانیوں کی رائے سے اگر بھائی بہن شادی کرلیں تو ان سے سنتان اُتپن ھوسکتی ھے پر ان کی اس رائے کو مان کر کسی بھائی بہن نے آج تک شادی نہیں

की. विज्ञानी सिर्फ एक सचाई बताता है. वह किसी सचाई पर अमल करने का न ज़ोर देता है और न ज़ोर देने का हक़दार है. अगर वह अपने विज्ञान के बल पर किसी को उस सचाई पर अमल करने की सलाह देता है तो अपनी हद लांघने का जुर्म करता है. विज्ञानी यह बता सकता है कि आदमी के दांत क्या क्या चबा सकते हैं और आदमी का गला क्या क्या निगल सकता है और उसके पेट में क्या क्या जा सकता है. इसी ज्ञान के बल पर वह यह कह सकता है कि घास चबाई जा सकती है, निगली जा सकती है और पेट में पहुँच सकती है पर क्या उस की इस राय पर किसी को अमल करना चाहिये ? या किसी ने इस राय को आधार मान कर घास खाकर रहना ठीक समझा ? विज्ञानियों की राय कभी कभी इतनी खतरनाक और गन्दी होती है कि सरकार को उन पर रोक थाम लगानी पड़ती है और इस बात पर पूरा ध्यान रखना पड़ता है कि उनकी यह राय जनता तक न पहुँचने पाये.

विज्ञानियों की राय की नदी सीधी नहीं बहती. इतनी टेढ़ी बहती है कि कभी पूरब और कभी पच्छिम. मिसाल के लिये एक समय था जब विज्ञानी यह मानते थे कि जमीन थाली की तरह गोल है और उस के बीच में सुमेर पर्वत है और चांद, सूरज और और ग्रह उस सुमेर पर्वत का चक्कर काट रहे हैं. इस के बाद विज्ञानियों की यह राय हुई कि जमीन गेंद की तरह गोल है और चांद सूरज और और ग्रह उस जमीन का चक्कर काट रहे हैं और आज उन की यह राय है कि सूरज के चारों तरफ सब ग्रह और जमीन चक्कर काट रहे हैं. और चांद तो अब जमीन गैया का बछड़ा बन कर

کی . وگیانی صرف ایک سچائی بتاتا ہے . وہ کسی سچائی پر عمل کرنے کا نہ زور دیتا ہے اور نہ زور دینے کا حقدار ہے . اگر وہ اپنے وگیان کے بل پر کسی کو اس سچائی پر عمل کرنے کی صلاح دیتا ہے تو اپنی حد لانگھنے کا جرم کرتا ہے . وگیانی یہ بتا سکتا ہے کہ آدمی کے دانت کیا کیا چبا سکتے ہیں اور آدمی کا گلا کیا کیا نگل سکتا ہے اور اُس کے پیٹ میں کیا کیا جاسکتا ہے. اسی گیان کے بل پر وہ یہ کہ سکتا ہے کہ گھاس چبائی جاسکتی ہے نگلی جاسکتی ہے اور پیٹ میں پہونچ سکتی ہے . پر کیا اس کی اس رائے پر کسی کو عمل کرنا چاہئے ؟ یا کسی نے اس رائے کو آدھار مان کر گھاس کھاکر رہنا ٹھیک سمجھا ؟ وگیانیوں کی رائے کبھی کبھی اتنی خطرناک اور گندی ہوتی ہے کہ سرکار کو اُنپر روک تھام لگانی پڑتی ہے اور اس بات پر پورا دھیان رکھنا پڑتا ہے کہ ان کی یہ رائے جنتا تک نہ پہونچنے پائے .

وگیانیوں کی رائے کی ندی سیدھی نہیں بہتی . اتنی ٹیڑھی بہتی ہے کہ کبھی پورب اور کبھی پچھم . مثال کے لئے ایک سمے تھا جب وگیانی یہ مانتے تھے کہ زمین تھالی کیطرح گول ہے اور اُس کے بیچ میں سمیر پربت ہے اور چاند سورج اور اور گرہ اس سمیر پربت کا چکر کاٹ رہے ہیں . اس کے بعد وگیانیوں کی یہ رائے ہوئی کہ زمین گیند کی طرح گول ہے اور چاند سورج اور اور گرہ اس زمین کا چکر کاٹ رہے ہیں اور آج ان کی یہ رائے ہے کہ سورج کے چاروںطرف سب گرہ اور زمین چکر کاٹ رہے ہیں . اور چاند تو اب زمین گیا کا بچھڑا بن کر

उस के चारों तरफ़ घूम रहा है. यह कहकर हम यह कहना चाहते हैं कि विज्ञानी अपनी राय बदलते रहते हैं.

विज्ञानी राय क्यों बदलते हैं ? उस की दो वजह तो हमें साफ़ दिखाई देती हैं. और भी हों तो पढ़ने वाले अपने आप सोचलें. एक यह कि जब विज्ञानियों की राय की नदी चलती है तो वह चलती तो एक तरफ़ को ही है. मान लीजिये वह पूरब की तरफ़ चली. पर चलते चलते रास्ते मे विज्ञान की बहुत बड़ी, ऊँची सचाई का टीला आगया. तब उस राय की नदी को उस टीले का चक्कर काटने के लिये उलटा बहना ही पड़ेगा. दूसरी यह कि राय की नदी को चलते चलते बीच मे कहीं सोने चांदी का ऊँचा टीला दीख पड़ा तब भी उस को चक्कर काट कर चलने के लिये पीछे मुड़ना ही पड़ेगा. मेल-मुरव्वत के टीले भी विज्ञानियों की राय की नदी को इधर उधर मोड़ देने के लिये काफ़ी होते है. हॉ. अगर विज्ञानी नीतिमान देश भक्त यानी देश की जनता का हर तरह भलाई का चाहने वाला हो तो बेशक चांदी सोने के टीले और मेल-मुरव्वत की पहाड़ियां उसकी राय की नदी के सीधे सीधे चलने में कोई रुकावट नहीं होंगे. पर सचाई की पहाड़ी तो फिर भी उसे राय बदलने के लिये मजबूर करती रहेगी. विज्ञानियों की राय इसलिये नहीं होती कि उस पर अमल किया जाय. खाने पहनने या किसी तरह की चीज़ें मोल लेने में इश्तिहारो में दी हुई सरकारी या सरकारी मिनिस्टरों या अफ़सरों की राय पर भी जनता को अमल नहीं करना चाहिये. यह किस को नहीं मालूम कि " सरकार से रजिस्ट्री की हुई " सैकड़ों ऐसी चीजें बाजार मे आती है जो हर तरह से

اس کے چارونطرف گھوم رہا ہے . یہ کہکر ہم یہ کہنا چاہتے ہیں کہ وگیانی اپنی رائے بدلتے رہتے ہیں .

وگیانی رائے کیوں بدلتے ہیں ؟ اس کی دو وجہ تو ہمیں صاف دکھائی دیتی ہیں . اور بھی ہوں تو پڑھنے والے اپنےآپ سوچ لیں . ایک یہ کہ جب وگیانیوں کی رائے کی ندی چلتی ہے تو وہ چلتی تو ایک طرف کو ہی ہے مان لیجئے وہ پورب کی طرف چلی . پر چلتے چلتے راستے میں وگیان کی بہت بڑی' اونچی سچائی کا ٹیلا آگیا . تب اس رائے کی ندی کو اس ٹیلے کا چکر کاٹنے کے لئے اُلٹا بہنا ہی پڑیگا . دوسری یہ کہ رائے کی ندی کو چلتے چلتے بیچ میں کہیں سونے چاندی کا اونچا ٹیلا دیکھ پڑا تب بھی اس کو چکر کاٹ کر چلنے کے لئے پیچھے مڑنا ہی پڑیگا . میل مروت کے ٹیلے بھی وگیانیوں کی رائے کی ندی کو اِدھر اُدھر موڑ دینے کے لئے کافی ہوتے ہیں . ہاں' اگر وگیانی نیتی مان دیش بھگت یعنی دیش کی جنتا کی ہر طرح کی بھلائی کا چاہنے والا ہو تو بیشک چاندی سونے کے ٹیلے اور میل مروت کی پہاڑیاں اس کی رائے کی ندی کے سیدھے سیدھے چلنے میں کوئی رکاوٹ نہیں ہونگے. پر سچائی کی پہاڑی تو پھر بھی اسے رائے بدلنے کیلئے مجبور کرتی رہیگی . وگیانیوں کی رائے اس لئے نہیں ہوتی کہ اس پر عمل کیا جائے . کھانے پہننے یا کسی طرح کی چیزیں مول لینے میں اشتہاروں میں دی ہوئی سرکاری یا سرکاری منسٹروں یا افسروں کی رائے پر بھی جنتا کو عمل نہیں کرنا چاہئے . یہ کس کو نہیں معلوم کہ "سرکار سے رجسٹری کی ہوئی" سیکڑوں ایسی چیزیں بازار میں آتی ہیں جو ہر طرح سے

निकम्मी होती हैं! अगर यह कहा जाय कि "सरकार से रजिस्ट्री की हुई" सौ चीजों में से निन्यानबे चीजें खराब होती हैं तो कुछ बेजा नहीं होगा. "सरकार से रजिस्ट्री की हुई" का यह मतलब ही नहीं है कि सरकार उसकी अच्छाई-बुराई की रत्ती भर भी जिम्मेदार है. ठीक इसी तरह से इश्तिहारों में दी हुई सरकारी मिनिस्टरों की राय का कुछ अर्थ नहीं होता. जनता को इस धोके से बचना चाहिये. अगर इश्तिहारों से अलग भी कोइ सरकारी या मिनिस्टरों की राय मिले तो उस राय के सिर्फ़ उतने ही दाम लगने चाहिये जितने विज्ञानियों की राय के. और यह हम ऊपर बता ही चुके हैं.

गांधी जी ने बनस्पति घी के काम को 'नीच' काम, 'धोके' का काम और 'दग़ा' का काम कहा है. इसलिये इस बारे में हम किसी की राय भी क्यों टटोलते फिरें? और फिर हम इस बात के लिये अपने पर ही क्यों न भरोसा करें? हमारा अपना अनुभव है और हमारे सैंकड़ों दोस्त भी यही कहते हैं कि जब भी हम बनस्पति घी भूल से खा लेते हैं या हमें धोके से खिला दिया जाता है या कोई नीच दग़ा देकर खिला देता है तो हमारे गले में खुजली सी हो जाती है और जो बहुत दिनों तक इस दग़ा के शिकार होते हैं उनकी गले की खुजली तो कम हो जाती है या बहुत दिनों के बाद बिलकुल बंद हो जाती है पर इस खुजली के बंद होने के साथ साथ खाना पचना कम हो जाता है और फिर खाना पचना बिलकुल बन्द हो जाता है.

बनस्पति घी अपने आप में खराब है सो तो है पर उसमें सबसे

نکمی هوتی هیں! اگر یه کها جائے که "سرکار سے رجستری کی هوئی" سو چیزوں میں سے نینانوے چیزیں خراب هوتی هیں تو کچھ بیجا نہیں هوگا ۔ "سرکار سے رجستری کی هوئی" کا یه مطلب هی نہیں هے که سرکار اس کی اچھائی برائی کی رتی بھر بھی ذمه‌دار هے ۔ ٹھیک اسی طرح سے اشتہاروں میں دی هوئی سرکاری منسٹروں کی رائے کا کچھ ارتھ نہیں هوتا ۔ جنتا کو اس دهوکه سے بچنا چاهئیے ۔ اگر اشتہاروں سے الگ بھی کوئی سرکاری یا منسٹروں کی رائے ملے تو اس رائے کے صرف اتنے هی دام لگانے چاهئیے جتنے وگیانیوں کی رائے کے ۔ اور یه هم اوپر بتا هی چکے هیں ۔

گاندهی جی نے بنسپتی گھی کے کام کو 'نیچ' کام' 'دهوکے' کا کام اور 'دغا' کا کام کہا هے ۔ اس لئے اس بارے میں هم کسی کی رائے بھی کیوں ٹٹولتے پھریں؟ اور پھر تب اس بات کے لئے اپنے پر هی کیوں نه بھروسه کریں؟ همارا اپنا انوبھو هے اور همارے سینکڑوں دوست بھی یهی کہتے هیں ۔ جب بھی هم بنسپتی گھی بھول سے کھا لیتے هیں یا همیں دهوکے سے کھلا دیا جاتا هے یا کوئی نیچ دغا دے کر کھلا دیتا هے تو همارے گلے میں کھجلی سی هوجاتی هے اور جو بہت دنوں تک اس دغا کے شکار هوتے هیں انکی گلے کی کھجلی تو کم هوجاتی هے یا بہت دنوں کے بعد بالکل بند هوجاتی هے پر اس کھجلی کے بند هونے کیساتھ ساتھ کھانا پچنا کم هو جاتا هے اور پھر کھانا پچنا بالکل بند هوجاتا هے ۔

بنسپتی گھی اپنے آپ میں خراب هے سو تو هے پر اسمیں سب سے

बड़ा ऐब तो यह है कि वह घी में इस तरह घुल मिल जाता है कि घीसे और बढ़िया दिखाई देने लगता है और इस वजह से धोके बाजी और दग़ाबाजी की मंडी ही खुल गई है. नजाने क्यों सरकार ने इस दग़ाबाजी और धोके बाजी की तरफ़ से आंख फेर ली और न जाने क्यो सरकार उन भले आदमियों की बात को सुनी अन सुनी कर रही है. जो इस दग़ाबाजी की तरफ सरकार का ध्यान दिलाते हैं.

बड़ी बड़ी तनखाहें पाने वाले बड़े बड़े विज्ञानियों की मदद से यह जमा हुआ बनस्पति तेल चिकनाइयों में इतना ऊँचा आसन जमा बैठा है जितना ऊँचा आसन आज कल सिर्फ़ धर्म को मिला हुआ है. और धर्म जब रिशियों के हाथ से पैसे वालों के हाथ में पहुँचता है तब धर्म पर इतने ग्रंथ तैयार हो जाते हैं कि उनको घोड़ो, बैलों और गदहों की कतार भी नही ढो सकती. और आजकल के जमाने में तो उनमें से किसी एक ग्रंथ की कापियो के बोझ को इधर उधर ले जाने में रेल की गाड़ी नहीं गड़ियों की जरूरत पड़ेगी. इसी तरह बनस्पति नामी तत्त्व पर आज कल के विज्ञानियों और पंडितो ने बेहद लिख मारा और अब वह लिखा हुआ पैसे वालों के हाथ पड़ गया. इस लिये उनके एक एक वाक्य और उनके एक एक पद की इतनी कापियां कर दी गई हैं और रोज की जा रही हैं कि उनमें से किसी एक के बोझ ढोने के लिये कितनी ही गाड़ियों और हवाई जहाजों की जरूरत पड़ेगी. शायद ही कोई अखबार मिले जिसका एक कोना इसके प्रचार के लिये अलग से त कर न रख दिया गया हो. इतने प्रचार के बोझ से दब कर कुछ कम तनखाह पाने वाले और छोटे

بڑا عیب تو یہ ہے کہ وہ گھی میں اسطرح گھل مل جاتا ہے کہ گھی سے اور بڑھیا دکھائی دینے لگتا ہے. اور اس وجہ سے دھوکے بازی اور دغا بازی کی منڈی ہی کھل گئی ہے. نہ جانے کیوں سرکار نے اس دغا بازی اور دھوکے بازی کی طرف سے آنکھ پھیر لی اور نہ جانے کیوں سرکار اُن بھلے آدمیوں کی بات کو سنی ان سنی کر رہی ہے جو اس دغابازی کیطرف سرکار کا دھیان دلاتے ہیں.

بڑی بڑی تنخواہیں پانیوالے بڑے وگیانیوں کی مدد سے جما ہوا بنسپتی تیل چکنائیوں میں اتنا اونچا آسن جما بیٹھا ہے جتنا اُونچا آسن آجکل صرف دھرم کو ملا ہوا ہے اور دھرم جب رشیوں کے ہاتھ سے پیسے والوں کے ہاتھ میں پہونچتا ہے تب دھرم پر اتنے گرنتھ تیار ہوجاتے ہیں کہ ان کو گھوڑوں' بیلوں اور گدھوں کی قطار بھی نہیں ڈھو سکتی. اور آجکل کے زمانہ میں تو ان میں سے کسی ایک گرنتھ کی کاپیوں کے بوجھ کو اِدھر اُدھر لیجانے میں ریل کی گاڑی نہیں گاڑیوں کی ضرورت پڑیگی. اِسیطرح بنسپتی نامی تتو پر آجکل کے وگیانیوں اور پنڈتوں نے بے حد لکھ مارا. اور اب وہ لکھا ہوا پیسہ والوں کے ہاتھ پڑگیا. اس لئے ان کے ایک ایک واکیہ اور ان کے ایک ایک پدکی اتنی کاپیاں کردی گئی ہیں اور روز کی جارہی ہیں کہ انمیں سے کسی ایک کے بوجھ ڈھونے کے لئے کتنی ہی گاڑیوں اور ہوائی جہازونکی ضرورت پڑیگی. شاید ہی کوئی اخبار ملے جسکا ایک کونہ اسکے پرچار کے لئے الگ سینت کر نہ رکھدیا گیا ہو. اتنے پرچار کے بوجھ سے دب کر کچھ کم تنخواہ پانیوالے اور چھوٹے

मोटे विज्ञानी शोर मचाकर उस वनस्पति तेल को बुरा भी कहें तो उनकी कौन सुनेगा ? नक़्क़ारखाने में तूती की आवाज़ की तरह उनकी आवाज़ इस शोर में ऐसी रल मिल जायगी कि वह नक़्क़ारे की ही आवाज़ बन बैठेगी.

महाभारत कार ने महाभारत में 'धर्म क्या है' इसका बड़ा सुन्दर जवाब दिया और वह यह है, "धर्म के बारे में वेदों के मत अलग अलग हैं, श्रुतियों के मत अलग अलग हैं, कोई ऐसे रिशि मुनि नहीं जिनकी अपनी अलग राय न हो इस लिये यही समझना चाहिये कि धर्म-तत्त्व बहुत ही गहरा छिपा हुआ है और सिवाय इसके कोई चारा नहीं है कि हम उसी रास्ते चलें जिस रास्ते हमारे बड़े बूढ़े गये हैं" बस, इसी सलाह के बल पर हम अपने पढ़ने वालों से यही कहेंगे कि वनस्पति के बारे में अंगरेज़ी की किताबें अलग अलग कुछ कहती हैं और उसी तरह हिन्दी और दूसरी भाषाओं की किताबों में से कोई कुछ कहती हैं और कोई कुछ. और आज कल के विज्ञानी पंडित और सरकारी अफ़सर भी वनस्पति के बारे में एक मत नहीं हैं. इसलिये यही समझना चाहिये कि वनस्पति-तत्त्व बहुत गहरा छिपा हुआ है और सिवाय इसके कोई चारा नहीं है कि हम उस रास्ते चलें जिस रास्ते हमारे बड़े बूढ़े गये हैं. और वह तो यही बता गये हैं कि वनस्पति खाना अपनी तन्दुरुस्ती ख़राब करना है और कितने ही रोग मोल लेना है. फिर चाहे वनस्पति घी नाम से बिके या 'जमे तेल' नामसे.

१६-६-५०.   भगवानदीन

موٹے وگیانی شور مچاکر اس بنسپتی تیل کو برا بھی کہیں تو ان کی کون سنیگا ؟ نقار خانہ میں طوطی کی آواز کیطرح انکی آواز اس شور میں ایسی رل مل جائیگی کہ وہ نقار خانہ کی ھی آواز بن بیٹھیگی ۔

مہابھارت کار نے مہابھارت میں' دھرم کیا ھے' اس کا بڑا سندر جواب دیا اور وہ یہ ھے '' دھرم کے بارے میں ویدوں کے مت الگ الگ ھیں' شرتیوں کے مت الگ الگ ھیں' کوئی ایسے رشی منی نہیں ھیں جنکی اپنی الگ رائے نہ ھو' اس لئے یہ سمجھنا چاھئے کہ دھرم تتو بہت ھی گہرا چھپا ھوا ھے اور سوائے اس کے کوئی چارہ نہیں ھے کہ ھم اسی راستے چلیں جس راستے ھمارے بڑے بوڑھے گئے ھیں۔' بس' اسی صلاح کے بل پر ھم اپنے پڑھنے والوں سے یہی کہیں گے کہ بنسپتی کے بارے میں انگریزی کی کتابیں الگ الگ کچھ کہتی ھیں اور اسیطرح ھندی اور دوسری بھاشاؤں کی کتابوں میں سے کوئی کچھ کہتی ھیں اور کوئی کچھ . اور آجکل کے وگیانی پنڈت اور سرکاری افسر بھی بنسپتی کے بارے میں ایک مت نہیں ھیں . اس لئے یہی سمجھنا چاھئے کہ بنسپتی تتو بہت گہرا چھپا ھوا ھے اور سوائے اس کے کوئی چارہ نہیں ھے کہ ھم اس راستے چلیں جس راستے ھمارے بڑے بوڑھے گئے ھیں اور وہ تو یہی بتا گئے ھیں کہ بنسپتی کھانا اپنی تندرستی خراب کرنا ھے اور کتنے ھی روگ مول لینا ھے . پھر چاھے بنسپتی ' گھی ' نام سے بکے یا ' جمے تیل ' نام سے .

١٦-٦-٥٠   بھگوان دین .

जनता की चिन्ता

(भाई अबदुल हलीम अन्सारी)

चिन्ता ही जनता में दुख दर्द पैदा करती और उनकी दिमाग़ी दुनिया में हलचल मचाती हैं. यही हलचल आगे चल कर उसकी ज़िन्दगी में क्रान्ति का कारन बनती है.

चिन्ता से ही जनता बे नींद और बे आराम रहती है. बे कौड़ी और बे दाम रहती है.

बे नींद और बेआराम रखने वाली ताक़त या असर का असली नाम ही असल में दुख दर्द, ग़म फ़िक्र और चिन्ता है. इसी चिन्ता के असर और तकलीफ़ से एक नई तहरीक और नया आन्दोलन जनता के जीवन में जन्म लेता है जिसके कारन नये नये विचार उसके दिमाग़ में आते जाते हैं और इस आन्दोलन को सारे ढाँचे में फैलाते हैं. गोया पहले अन्दर ही अन्दर इन्क़लाबी मंडल में चलाते हैं. इसके बाद बाहर लाकर तारीक माहौल और उसकी ग़मनाकी से उसका परिचय कराते हैं. यह परिचय उसके बदन में कँपकँपी और लरज़ा पैदा करता है. जिस से उसको बुख़ार की सी कैफ़ियत महसूस होने लगती है—यह बुख़ार चिन्ता का लरज़ा है.

चिन्ता से घर घर परेशानी फैलती है. देस देस ग़म की लहरें उठती हैं. यह लहरें फ़िज़ा को अलग ग़मगीन बनाती हैं और हवा पर

جنتا کی چنتا

(بھائي عبدالحليم انصاری)

چنتا هی جنتا میں دکھ درد پیدا کرتی اور اس کی دماغی دنیا میں هل چل مچاتی هے. یہي هل چل آگے چل کر اُسکی زندگی میں کرانتی کا کارن بنتي هے.

چنتا سے هي جنتا بے نیند اور بے آرام رهتی هے. بے کوڑی اور بے دام رهتی هے.

بے نیند اور بے آرام رکھنے والي طاقت یا اثر کا نام هي اصل میں دکھ درد، غم فکر اور چنتا هے. اسي چنتا کے اثر اور تکلیف سے ایک نئی تحریک اور نیا آندولن جنتا کے جیون میں جنم لیتا هے جس کے کارن نئے نئے وچار اس کے دماغ میں آتے جاتے هیں اور اس آندولن کو سارے ڈھانچے میں پھیلاتے هیں گویا پہلے اندر هي اندر اِنقلابی منڈل میں چلاتے هیں. اس کے بعد باهر لاکر تاریک ماحول اور اس کي غم ناکي سے اس کا پریچے کراتے هیں. یه پریچے اس کے بدن میں کپکپی اور لرزہ پیدا کرتا هے. جس سے اس کو بخار کي سی کیفیت محسوس هونے لگتی هے — یه بخار چنتا کا لرزہ هے.

چنتا سے گھر گھر پریشاني پھیلتي هے. دیش دیش غم کی لہریں اٹھتی هیں. یه لہریں فضا کو الگ غمگین بناتی هیں اور هوا پر

अलग रंज के पैग़ाम दौड़ाती हैं. जिसकी वजह से ग़म के बादल हर सू छा जाते हैं और देस के देस अमन से महरूम रहने लग जाते हैं. कुटुम्ब के कुटुम्ब शान्ति को तरसने लगते हैं.

इन सारी मुसीबतों, परेशानियों और बद अमनियों का कारन केवल जनता की चिन्ता है. मगर जनता की कौन सुनता है?

जो आप ही आप जीवन के मज़े लूटता है वह कब उस ग़रीब को पूछता है?

हालाँकि वह उसकी भारी ज़िम्मेदारी होती है.

लेकिन अपनी ज़िम्मेदारी कौन पूरी करता है?

(२)

यही तो बड़ी मुसीबत है.

यही तो सारा मातम है.

इसी का तो रोना है.

चिन्ता एक ज़हर और एक बीमारी है. एक रोग और एक ख़तरा है.

बेशक चिन्ता एक ख़तरा है और ख़तरनाक हादसा — जिससे दिल को चोट लगती है, दिमाग़ को धक्का पहुँचता है.

चिन्ता एक आग है जिससे अन्दर ही अन्दर कलेजा जलता है और धुआँ उठता है—दम घुटता है. ग़म बढ़ता है.

इसी से फ़िज़ा बिगड़ती है और बिगड़ कर दामन अपना नोचती है. इसी से हवा पलटती है और पलट कर रुख़ अपना फेरती है.

चिन्ता एक कीड़ा है जो धीरे धीरे इन्सान का कलेजा नोचता है. ख़ून चूसता है. भेजा चबाता है. गूदा खाता है.

الگ رنج کے پیغام دوڑاتی هیں . جسکي وجه سے غم کے بادل هر سو چھا جاتے هیں اور دیس کے دیس امن سے محروم رهنے لگ جاتے هیں . کٹمب کے کٹمب شانتي کو ترسنے لگتے هیں .

اِن ساري مصیبتوں' پریشانیوں اور بد امنیوں کا کارن کیول جنتا کي چنتا هے . مگر جنتا کي کون سنتا هے ؟

جو آپ هی آپ جیون کے مزے لوٹتا هے وہ کب اس غریب کو پوچھتا هے ؟

حالانکه وہ اس کی بھاري ذمےداري هوتی هے .

لیکن اپنی ذمےداري کون پوری کرتا هے ؟

(۲)

یہی تو بڑی مصیبت هے .

یہي تو سارا ماتم هے .

اسی کا تو رونا هے

چنتا ایک زهر اور ایک بیماري هے . ایک روگ اور ایک خطرہ هے .

بیشک چنتا ایک خطرہ هے اور خطرناک حادثه — جس سے دل کو چوٹ لگتي هے دماغ کو دهکا پہونچتا هے .

چنتا ایک آگ هے جس سے اندر هي اندر کلیجه جلتا هے اور دهواں اُٹھتا هے — دم گھٹتا هے . غم بڑھتا هے .

اِسی سے فضا بگڑتی هے . اور بگڑ کر دامن اپنا نوچتی هے . اسي سے هوا پلٹتی هے اور پلٹ کر رخ اپنا پھیرتی هے .

چنتا ایک کیڑا هے جو دھیرے دھیرے اِنسان کا کلیجه نوچتا هے . خون چوستا هے . بھیجا چباتا هے گودا کھاتا هے .

नया हिन्द | जनता की चिन्ता | जुलाई सन् '५०

चिन्ता, दिमाग़ को खोखला करने वाला एक बरमा है जो हर वक़्त दिमाग़ में बरमाता रहता है.

चिन्ता, खुदकुशी कराने वाला एक अन्दरूनी आन्दोलन है—यानी जान लेवा आन्दोलन.

चिन्ता, हैजान उठाने वाला एक तेज़ाबी माद्दा है. जिससे दिमाग़ चकराता और दिल घबराता है. यही बाज़ वक़्त इन्सान को दीवाना और पागल बना देता है. यही खुदक खुदक कर दिल में छाले डालता रहता है और यही एक ऐसा कीड़ा है जो सारे बदन के अन्दर घुन बन कर उसे खाता रहता है.

चिन्ता, वर्तमान काल को रौंद कर भविष्य काल का भी बुरा हाल बनाती है.

चिन्ता, जज़बात का ख़ून भी करती है, भून भी डालती है.

चिन्ता अपने ज़हरीले असर से नसलों को वक़्त से पहले हलाकत का पैग़ाम देती है और क़ौम को तबाही की त ले जाती है.

चिन्ता का ग़मनाक असर अफ़राद की ज़िन्दगियों पर पड़ता है और ज़िन्दगियों की तन्दुरुस्तियों पर.

चिन्ता, इन्सान को मार भी डालती है, और एहसास पैदा कर के मुरदा दिलों में जान भी डालती है.

चिन्ता, हाज़मा ख़राब करती है—हाज़मे की बात तो बाद की चिन्ता, इन्सान की भूक मारती है और उसको खाकर अपनी [illegible] कहते हैं "ग़म उसको खागया."

نیا ھند | چنتا کی چنتا | جولائی سن ۵۰'

چنتا' دماغ کو کھوکلا کرنے والا ایک برما ہے جو ہر وقت دماغ میں برماتا رہتا ہے .

چنتا' خودکشی کرانے والا ایک اندرونی آندولن ہے — یعنی جان لیوا آندولن .

چنتا' ہیجان اُٹھانےوالا ایک تیزابی مادہ ہے . جس سے دماغ چکراتا اور دل گھبراتا ہے . یہی بعض وقت انسان کو دیوانہ اور پاگل بنا دیتا ہے . یہی کھدک کھدک کر دل میں چھالے ڈالتا رہتا ہے اور یہی ایک ایسا کیڑا ہے جو سارے بدن کے اندر گھن بن کر اسے کھاتا رہتا ہے .

چنتا' ورتمان کال کو روندھ کر بھوشیہ کال کا بھی برا حال بناتی ہے .

چنتا' جذبات کا خون بھی کرتی ہے' بھون بھی ڈالتی ہے .

چنتا' اپنے زہریلے اثر سے نسلوں کو وقت سے پہلے ہلاکت کا پیغام دیتی ہے اور قوم کو تباہی کی طرف لے جاتی ہے .

چنتا کا غمناک اثر افراد کی زندگیوں پر پڑتا ہے اور زندگیوں کی تندرستیوں پر .

چنتا' انسان کو مار بھی ڈالتی ہے اور احساس پیدا کرکے مردہ دلوں میں جان بھی ڈالتی ہے .

چنتا' ہاضمہ خراب کرتی ہے — ہاضمے کی بات تو بعد کی چنتا' انسان کی بھوک مارتی ہے اور اس کو کھاکر اپنی بھوک پوری کرتی ہے . اسی لئے کہتے ہیں " غم اس کو کھا گیا "

चिन्ता के इन तमाम दर्जों को तै करके जब इन्सान बिलकुल दिक़ हो जाता है तो वही दिक़ चिन्ता कहलाता है. आज की सियासी दुनिया में जिन्दगी की यह चिन्ता "सियासी दिक़" है—यानी सियासत की लाई हुई.

इस लिये इस दिक़ का इलाज न किसी दिक़ के हस्पताल में मिलेगा और न किसी "टी० बी० वार्ड" में.

इस दिक़ का इलाज सिर्फ़ मन्त्रियों के वार्ड में मिलेगा या सियासी हस्पताल में—क्यों कि इस राज नैतिक दिक़ के जरासीम इन्हीं राजनीतिकारों के फैलाए हुए हैं. इस लिये उसका इलाज भी वही ठीक और कामयाबी के साथ कर सकते हैं अगर वह चाहें तो—

जिस तरह डाक्टरों के लिये एक मोटा ताजा बीमार अच्छा खासा शिकार होता है इसी तरह लीडरों का शिकार उनकी साधारन जनता है. यह अगरचे ग़रीब है लेकिन फिर भी इस की चरबी उनके काम की चीज़ है.

सच यह है दुखियारों और ग़मख्वारों के साथ सच्ची हमदर्दी न डाक्टरों के पास होती है और न लीडरों के पास. लीडरों को तो यह सबक़ सियासत ने पढ़ाया ही नहीं कि मौक़े से फ़ायदा न उठाया जाय—अगर कोई बीमार मालदार है और जल्दी अच्छा हो कर भगवान की कृपा से वह ज़िन्दगी पा जाये तो डाक्टर की आशा मर जाती है—इसी तरह अगर 'जनता की चिन्ता' खुदा की मेहरबानी से दूर हो जाये तो नेता की कमान गिर जाती है और उसके ख्वाबों की ताबीरें पलट जाती हैं. क्योंकि जनता की

چنتا کے ان تمام درجوں کو طے کرکے جب اِنسان بالکل دق ہو جاتا ہے تو وهي دق چنتا کہلاتا ہے . آج کی سیاسی دنیا میں زندگی کی یہ چنتا " سیاسی دق " ہے — یعني سیاست کي لائی ہوئی .

اِسی لئے اس دق کا علاج نہ کسي دق کے هسپتال میں ملے گا اور نہ کسی " ٹی بی وارڈ " میں .

اِس دق کا علاج صرف منتریوں کے وارڈ میں ملیگا یا سیاسی هسپتال میں — کیونکہ اِس راجنیتک دق کے جراثیم اِنهي راجنیتي کاروں کے پھیلائے ہوئے ہیں . اس لئے اِس کا علاج بھي وهی ٹھیک اور کامیابی کے ساتھ کرسکتے ہیں اگر وہ چاہیں تو —

جس طرح ڈاکٹروں کے لئے ایک موٹا تازہ بیمار اچھا خاصا شکار ہوتا ہے اِسیطرح لیڈروں کا شکار ان کی سادھارن جنتا ہے . یہ اگرچہ غریب ہے لیکن پھر بھی اس کی چربی ان کے کام کی چیز ہے .

سچ یہ ہے دکھیاروں اور غم خواروں کے ساتھ سچی همدردی نہ ڈاکٹروں کے پاس ہوتی ہے اور نہ لیڈروں کے پاس — لیڈروں کو تو یہ سبق سیاست نے پڑھایا هي نہیں کہ موقع سے فایدہ نہ اُٹھایا جائے — اگر کوئی بیمار مالدار ہے اور جلدي اچھا ہوکر' بھگوان کي کرپا سے وہ زندگي پاجائے تو ڈاکٹر کی آشا مرجاتي ہے — اسی طرح اگر جنتا کی 'چنتا' خدا کي مہربانی سے دور ہوجائے تو نیتا کي کمان گرجاتي ہے اور اس کے خوابوں کي تعبیریں پلٹ جاتی ہیں — کیونکہ جنتا کی

बहुत तो इतने ही रचे हुए भाव और विचार प्रकट करने वाले नमूने पिछले सौ बरस की हिन्दी शायरी से ढूँढ लाइये जिनमें ढाई हज़ार शब्द इसी सजावट से आये हों और जिनमें एक डेढ़ फ़ीसदी ही ऐसे शब्द आये हों जिन्हें पूछना पड़े. पूछूँ कि न पूछूँ ? आप जैसा कहें.

पचीस सौ शब्दों के इन नमूनों में चौबीस सौ के लगभग शुद्ध हिन्दी शब्द आये हैं. हिन्दी कविता जैसी सौ बरस या पचास बरस से लिखी जा रही है उस से ढाई हज़ार शब्दों के दस बीस पचास नमूने निकालिये तो जिनमें चौबीस सौ शब्द शुद्ध हिन्दी के हों. हिन्दी कौन लिख रहा है ? हिन्दी वाले या उर्दू वाले ? क्या आपका यही हिन्दी प्रेम है कि जिस साहित्य में पंचानवे फ़ीसदी सुन्दर और शुद्ध हिन्दी हो उसे मिटा कर उस हिन्दी को फैलायें और रिवाज दें जिसमें साठ सत्तर फ़ीसदी शुद्ध हिन्दी है और पाँच फ़ी सदी भी सुन्दर हिन्दी नहीं ?

कभी आप यह सोच सके कि उर्दू वालों ने खड़ी बोली हिन्दी, टकसाली हिन्दी में कितना महान साहित्य आपको दिया है और आपकी मातृ भाषा की कितनी बड़ी सेवा की है ? मैं फिर कहता हूँ कि लाखों सफ़े उर्दू शायरी और नस्र (गद्य) के इसी नर्म भाषा में हैं जिसके नमूने मैं आप को दिखा चुका हूँ. मानता हूँ कि कठिन अरबी फ़ारसी शब्द भी उर्दू वाले लाते हैं लेकिन निन्नानवे फ़ीसदी उर्दू पढ़ने वालों में उर्दू साहित्य का यह हिस्सा समझा नहीं जाता. फिर भी उन कठिन फ़ारसी अरबी शब्दों की संख्या भी बहुत ज़्यादा नहीं है, अगर आप घबरा के और हड़बड़ा के हिसाब न लगायें. आज के नमूनों या मिसालों में बीस बाइस ऐसे शब्द मिले जिनका

کہئے تو اتنے ہی رچے ہوئے بھاؤ اور وچار پرکٹ کرنے والے نمونے پچھلے سو برس کی ہندی شاعری سے ڈھونڈھ لائیے جن میں ڈھائی ہزار شبد اسی سجاوٹ سے آئے ہوں اور جن میں ایک ڈیڑھ فی صدی ہی ایسے شبد آئے ہوں جنہیں پوچھنا پڑے - پوچھوں کہ نہ پوچھوں ؟ آپ جیسا کہیں -

پچیس سو شبدوں کے ان نمونوں میں چوبیس سو کے لگ بھگ شدھ ہندی شبد آئے ہیں - ہندی کویتا جیسی سو برس یا پچاس برس سے لکھی جا رہی ہے اس سے ڈھائی ہزار شبدوں کے دس بیس پچاس نمونے نکالئے تو جن میں چوبیس سو شبد شدھ ہندی کے ہوں - ہندی کون لکھ رہا ہے ؟ ہندی والے یا اُردو والے ؟ کیا آپ کا یہی ہندی پریم ہے کہ جس ساہتیہ میں پنچانوے فی صدی سندر اور شدھ ہندی ہو اُسے مٹاکر اس ہندی کو پھیلائیں اور رواج دیں جس میں ساٹھ ستر فی صدی شدھ ہندی ہے اور پانچ فی صدی بھی سندر ہندی نہیں ؟

کبھی آپ یہ سوچ سکے کہ اُردو والوں نے کھڑی بولی ہندی، ٹکسالی ہندی میں کتنا مہان ساہتیہ آپ کو دیا ہے اور آپ کی ماتری بھاشا کی کتنی بڑی سیوا کی ہے ؟ میں پھر کہتا ہوں کہ لاکھوں صفحے اُردو شاعری اور نثر (گدیہ) کے اُسی نرم بھاشا میں ہیں جس کے نمونے میں آپ کو دکھا چکا ہوں - مانتا ہوں کہ کٹھن عربی فارسی شبد بھی اُردو والے لاتے ہیں لیکن ننانوے فی صدی اُردو پڑھنے والوں میں اُردو ساہتیہ کا یہ حصہ سمجھا نہیں جاتا. پھر بھی اُن کٹھن فارسی عربی شبدوں کی سنکھیا بھی بہت زیادہ نہیں ہے' اگر آپ گھبرا کے اور ہڑبڑا کے حساب نہ لگائیں. آج کے نمونوں یا مثالوں میں بیس بائیس ایسے شبد ملے جن کا

परेशानियाँ ही उसकी कामयाबियों और ऐशसामानियों के जरिये हैं. इन्हीं का सहारा लेकर और इसी डारी को पकड़कर वह अपने जाती फ़ायदे के रस्ते पर लगा रहता और बढ़ता चला जाता है.

हर हर देस और मुल्क के नेता—किसान का, मजदूर का और ग़रीब जनता के नाम का ढोल पीट पीट कर अपनी लीडरी और नेतागीरी क़ायम रखते हैं. हालाँकि उन ग़रीबों को खाक कुछ नहीं मिलता—वही उनके नाम से लाभ उठाते हैं—यह जनता के साथ हमदर्दी हुई या दुश्मनी ?

जिस नेता की जनता के पेट को टुकड़ा न मिले और न तन को कपड़ा नसीब हो तो ऐसे नेता से जनता को क्या फ़ायदा ?

यह तो नेताओं के बिलकुल बस और एख़तियार की बात है कि वह जनता के अन्दर से चिन्ता दूर कर के उसके जीवन को ख़तरनाकी से बचा लें और नया उसको प्रान दें.

जनता की भलाई, नेता की नियत की नेकी और ख़िदमत की सच्चाई पर मौक़ूफ़ है.

जनता की सेवा और रक्षा नेता ही कर सकते हैं. क्यों कि वही उसके सेवक और रक्षक होते हैं.

जनता हर वक़्त अपने नेताओं की तरफ़ देखती रहती है. उनके सन्देशों पर ध्यान रखती है और उनकी आवाजों पर कान.

जब जनता अपने नेताओं के साथ प्रेम और अक़ीदत रखे तो क्या नेताओं का यह फ़र्ज नहीं है कि वह उसकी मुहब्बत का जवाब अपनी मुहब्बत से दें और उसकी श्रद्धा को आदर का दरजा बख़शें—अगर नेतागीरी की शान या उन की कुरसी की ऊचान उन्हें इजाजत नहीं देती तो कम से कम इंसनियत ही का हक़ अदा करें.

پریشانیاں هی اُس کي کامیابیوں اور عیش سامانیوں کے ذریعے هیں . انهی کا سهارا لے کر اور اسی ڈوري کو پکڑ کر وہ اپنے ذاتی فائدے کے رستے پر لگا رهتا اور بڑهتا چلا جاتا هے .

هر هر دیس اور ملک کے نیتا — کسان کا' مزدور کا اور غریب جنتا کے نام کا ڈهول پیٹ پیٹ کر اپنی لیڈری اور نیتا گیري قایم رکهتے هیں . حالانکه اُن غریبوں کو خاک کچه نهیں ملتا . وهی ان کے نام سے لابه اُٹهاتے هیں — یه جنتا کے ساته همدردی هوئی یا دشمنی ؟

جس نیتا کي جنتا کے پیٹ کو ٹکڑا نه ملے اور تن کو کپڑا نصیب نهو تو ایسے نیتا سے جنتا کو کیا فائدہ ؟

یه تو نیتاؤں کے بالکل بس اور اختیار کي بات هے که وہ جنتا کے اندر سے چنتا دور کرکے اس کے جیون کو خطرناکي سے بچالیں اور نیا اس کو پران دیں .

جنتا کی بهلائي' نیتا کي نیت کي نیکی اور خدمت کی سچائی پر موقوف هے .

جنتا کی سیوا اور رکشا نیتا هي کرسکتے هیں . کیونکه وهی اس کے سیوک اور رکشک هوتے هیں .

جنتا' هر وقت اپنے نیتاؤں کی طرف دیکهتی رهتی هے . ان کے سندیشوں پر دهیان رکهتي هے اور ان کی آوازوں پر کان .

جب جنتا اپنے نیتاؤں کے ساته پریم اور عقیدت رکهے تو کیا نیتاؤں کا یه فرض نهیں هے که وہ اس کی محبت کا جواب اپنی محبت سے دیں اور اُس کی شردها کو آدر کا درجه بخشیں — اگر نیتا گیری کی شان یا ان کي کرسی کی اونچان اُنهیں اجازت نهیں دیتی تو کم سے کم انسانیت هی کا حق ادا کریں .

छोड़ें जनता के हक़ को,
धता बतये सेवा के शब्द को.
इंसानियत का भी तो आखिर उन पर कुछ हक़ है.
एखलाक़ का भी तो आखिर उन पर कुछ फ़र्ज़ है.

चिन्ता से जनता को निजात दिलाना और अपने सुन्दर एखलाक़ और सुन्दर बर्ताव से उसको सुख शान्ति पहुंचाना नेताओं का काम है. वह ग़रज़ के बन्दे और नाम के सेवक, और वह सारे मतलब परस्त बुत इसी के बनाये और बिठाये हुए हैं जो मेमबरी की कुरसियों पर आसन जमाये बैठे हैं—वह तमाम सियासी चेहरे और मीआदी मोहरे इसी के हाथ से खानों में जमाये हुए हैं. उन का जो कुछ पद और पोज़ीशन है वह भी इसीका दिया हुआ है. इसलिये जनता को यह हक़ और एख़तियार हर वक़्त हासिल है कि वह जब चाहे उस पद को वापस ले सकती है और जब चाहे उसकी कुरसी छीन सकती है—चुनाव इसी कारन होते हैं. राय के बहुमत का यही मतलब और मंशा होता है.

(५८)

नेता अगर जनता पर कृपा रक्खे तो उसकी चिन्ता दूर हो सकती है.

नेता अगर जनता के साथ मुहब्बत और हमदर्दी बरते तो वह अपनी ज़िन्दगी में सुख सन्तोष पा कर जान भी उस पर क़ुरबान कर सकती है.

नेता अगर जनता के साथ प्रेम, त्याग और सदाचार से काम ले तो वह जनता को अपनी रक्षा के लिये अपने सामने एक मज़बूत दीवार की तरह खड़ा पाये.

چھوڑیں جنتا کے حق کو،
دھتا بتائیں سیوا کے شبد کو.
اِنسانیت کا بھی تو آخر اُن پر کچھ حق ہے .
اِخلاق کا بھی تو آخر اُن پر کچھ فرض ہے .

چنتا سے جنتا کو نجات دلانا اور اپنے سندر اِخلاق اور سندر برتاؤ سے اس کو سکھ شانتی پہونچانا نیتاؤں کا کام ہے وہ غرض کے بندے اور نام کے سیوک، اور وہ سارے مطلب پرست بت اِسی کے بنائے اور بٹھائے ہوئے ہیں جو ممبری کی کرسیوں پر آسن جمائے بیٹھے ہیں — وہ تمام سیاسی چہرے اور میعادی مہرے اِسی کے ہاتھ سے خانوں میں جمائے ہوئے ہیں . اُن کا جو کچھ پد اور پوزیشن ہے وہ بھی اسیکا دیا ہوا ہے . اِس لئے جنتا کو یہ حق اور اختیار ہر وقت حاصل ہے کہ وہ جب چاہے اُس پد کو واپس لے سکتی ہے اور جب چاہے اسکی کرسی چھین سکتی ہے— چناؤ اسی کارن ہوتے ہیں . رائے کے بہومت کا یہی مطلب اور منشا ہوتا ہے .

نیتا اگر جنتا پر کرپا رکھے تو اسکی چنتا دور ہوسکتی ہے .

نیتا اگر جنتا کے ساتھ محبت اور ہمدردی برتے تو وہ اپنی زندگی میں سکھ سنتوش پاکر جان بھی اس پر قربان کرسکتی ہے .

نیتا اگر جنتا کے ساتھ پریم، تیاگ، اور سداچار سے کام لے تو وہ جنتا کو اپنی رکشا کے لئے اپنے سامنے ایک مضبوط دیوار کی طرح کھڑا پائے .

जनता को ताक़तवर और सेहतवर बनाने के यही साधन हैं. इन्हीं साधनों से वह अपने अन्दर नई ज़िन्दगी और नई शक्ति पा सकती है और उस शक्ति को किसी भी वक़्त उस पर खर्च कर सकती है. क्यों कि दिल की जीत दिल से होती है.

जनता नाम है वफ़ादार गिरोह का, ज़रूरी है पहले इस गिरोह के साथ वफ़ादारी की जाये फिर उसको आजमाया जाये. यह शोभा नहीं देता कि जनता को चिन्ता में डालकर उसकी जान लेने की ठान ली जाये—यह वफ़ादारी आजमाने का तरीक़ा ग़लत है.

जब नेता जनता का ग़म दूर न कर सके, तकलीफ़ों और परेशानियों से रिहाई न दिला सके, फ़िकरों के जाल से निकाल कर उसे खुशहाल न बना सके, उसके लिये भलाई की राहें न निकाल सकें और उसके दुखी जीवन के लिये अच्छा और शान्ति पूर्ण प्रबंध न कर सके तो वह जन सेवक या शुभ चिन्तक कहलाने का मुस्तहक़ नहीं.

जब उसने सारी ज़िम्मेवारियाँ अपने ऊपर ले लीं और उनको वह पूरा नकर सका,

जब उसने पूरी ख़िदमत और सेवा का विश्वास दिलाया मगर "इख़्लास और विश्वास" दोनों को वह क़ायम और बाक़ी न रख सका तो ऐसी सूरत में वह ज़िम्मेदारी की उस नाज़ुक कुरसी पर केवल एक बोझ है.

جنتا کو طاقتور اور صحتور بنانے کے یہی سادھن ھیں ۔ انہی سادھنوں سے وہ اپنے اندر نئی زندگی اور نئی شکتی پاسکتی ھے اور اس شکتی کو کسی بھی وقت اس پر خرچ کرسکتی ھے ۔ کیونکہ دل کی جیت دل سے ہوتی ھے ۔

جنتا نام ھے وفادار گروہ کا" ضروری ھے پہلے اس گروہ کے ساتھ وفاداری کی جائے پھر اس کو آزمایا جائے ۔

یہ شوبھا نہیں دیتا کہ جنتا کو چنتا میں ڈال کر اس کی جان لینے کی ٹھان لی جائے — یہ وفاداری آزمانے کا طریقہ غلط ھے ۔

جب نیتا جنتا کا غم دور نہ کرسکے تکلیفوں اور پریشانیوں سے رہائی نہ دلا سکے فکروں کے جال سے نکالکر اُسے خوشحال نہ بناسکے اُسکے لئے بھلائی کی راھیں نہ نکال سکے اور اسکے دکھی جیون کے لئے اچھا اور شانت پورن پربندھ نہ کرسکے تو وہ جن سیوک، شبھ چنتک کہلانے کا مستحق نہیں ۔

جب اُس نے ساری ذمےداریاں اپنے اوپر لے لیں اور اُن کو وہ پورا نہ کرسکا

جب اُس نے پوری خدمت اور سیوا کا وشواس دلایا مگر "اخلاص اور وشواس" دونوں کو وہ قایم اور باقی نہ رکھ سکا تو ایسی صورت میں وہ ذمےداری کی اُس نازک کرسی پر کیول ایک بوجھ ھے ۔

इस्लाम का सामाजी संगठन

[२९ जून १९५० को आल इन्डिया रेडियो पटना से पं० सुन्दर लाल की बात चीत]

इस्लाम के माने अरबी में अमन, इतमिनान, शान्ति, सन्तोष, दूसरे के सामने झुक जाना या दूसरे की मरज़ी पर अपने को छोड़ देना है. दीन में इस्लाम के माने अल्लाह की मरज़ी पर अपने को छोड़ देना यानी अल्लाह की आज्ञाओं को पालना और उसी में संतोष मानना है. इसी को गीता और हिन्दू धर्म की दूसरी किताबों में अपने को ईश्वर के अर्पन कर देना कहा गया है.

इस्लाम की किताबों में इस्लाम शब्द दो साफ़ अलग अलग मानों में आता है. एक दुनिया के सब बड़े बड़े मज़हबों के वह बुनियादी असूल जो दुनिया के शुरू से चले आ रहे हैं और जो सब धर्मों में एक से हैं. और दूसरे वह मज़हबी रास्ता या पूजा बन्दगी के वह रीत रिवाज जो आज से साढ़े तेरह सौ बरस पहले हज़रत मोहम्मद के ज़माने से शुरू हुए और अब तक चले आ रहे हैं.

क़ुरान में जगह जगह क़ुरान से पहले के सब बड़े मज़हबों को 'इस्लाम' नाम दिया गया है. और इन के मानने वालों को 'मुस्लिम' या 'मुसलमान' कहा गया है. लिखा है कि दुनिया के शुरू से सब मुल्कों, सब क़ौमों और सब ज़मानों में अल्लाह के रसूल या पैग़म्बर आते रहे हैं, इन सब ने अपनी अपनी ज़बानों में एक ही बुनियादी

اِسلام کا سماجی سنگٹھن

[۲۹ جون ۱۹۵۰ع کو آل اِنڈیا ریڈیو پٹنہ سے پنڈت سندر لال کی بات چیت .]

اِسلام کے معنی عربی میں امن' اطمینان' شانتی' سنتوش' دوسرے کے سامنے جھک جانا یا دوسرے کی مرضی پر اپنے کو چھوڑ دینا ھے . دین میں اسلام کے معنی الله کی مرضی پر اپنے کو چھوڑ دینا یعنی الله کی آگیاؤں کو پالنا اور اسی میں سنتوش ماننا ھے . اِسی کو گیتا اَور ھندو دھرم کی دوسری کتابوں میں اپنے کو ایشور کے آرپن کردینا کہا گیا ھے .

اسلام کی کتابوں میں اسلام شبد دو صاف الگ الگ معنوں میں آتا ھے . ایک دنیا کے سب بڑے بڑے مذھبوں کے وہ بنیادی اصول جو دنیا کے شروع سے چلے آرھے ھیں اور جو سب دھرموں میں ایک سے ھیں . اور دوسرے وہ مذھبی راستہ یا پوجا بندگی کے وہ ریت رواج جو آج سے ساڑھے تیرہ سو برس پہلے حضرت محمد کے زمانے سے شروع ھوئے اور اب تک چلے آرھے ھیں .

قرآن میں جگہ جگہ قرآن سے پہلے کے سب بڑے مذھبوں کو ' اسلام ' نام دیا گیا ھے . اور ان کے ماننے والوں کو ' مسلم ' یا ' مسلمان ' کہا گیا ھے . لکھا ھے کہ دنیا کے شروع سے سب ملکوں' سب قوموں اور سب زمانوں میں الله کے رسول یا پیغمبر آتے رھے ھیں' اُن سب نے اپنی اپنی زبانوں میں ایک ھی بنیادی

सचाइयों का उपदेश दिया है. जो ईश्वरी यानी इलामी किताबें वह छोड़ गये हैं—और कोई जमाना नहीं जब इस तरह की किताबें न रही हों—उन सब में एक ही सी तालीम दी गई है और उसी का नाम इस्लाम है. और जो आदमी भी जिस मुल्क और जिस जमाने में भी उस महा पुरुष की बताई हुई या अपनी उस धार्मिक किताब में लिखी हुई उन बुनयादी सचाइयों को मानता रहा है और उन पर अमल करता रहा है वह मुसलमान है—जितनी बातें हमने यहाँ कही हैं ठीक उन ही के मतलब की और लगभग उन्हीं शब्दों में क़ुरान की पचासों आयतें नक़ल की जा सकती हैं.

इस माने में इस्लाम कोई नया मजहब नहीं है. क़ुरान में जगह (२९) जगह यह भी कहा गया है कि इस किताब यानी क़ुरान में ऐसी बात नहीं कही गई जो इस से पहले की किताबों में नहीं है. और न हज़रत मुहम्मद के जरिये किसी ऐसी बात की तालीम दी गई है जो उन से पहले के रसूलों ने नहीं कही. यहाँ तक कि क़ुरान में एक जगह क़ुरान से पहले की किताबों को भी "क़ुरान" नाम दिया गया है.

अब हम इस्लाम के इस बड़े माने से हट कर उसके दूसरे माने की तरफ़ आते हैं यानी दीन धर्म की वह राह जो मुल्क अरब में हज़रत मुहम्मद के जमाने से से शुरू हुई. इन मानों में क़ुरान के मुताबिक़ हर मुसलमान के लिये पाँच और सिर्फ़ पाँच बातें मानना जरूरी है—एक अल्लाह, दूसरे फ़रिश्ते, तीसरे सब ईश्वरी किताबें, चौथे दुनिया के सब रसूल और पाँचवें आख़िरत का दिन. इन पाँचों में एक अल्लाह या ईश्वर को मानना तो लगभग सब धर्मों

سچائیوں کا اُپدیش دیا ھے . جو ایشوری یعنی الہامي کتابیں وہ چھوڑ گئے ھیں — اور کوئی زمانہ نہیں جب اس طرح کي کتابیں نہ رھی ھوں—اُن سب میں ایک ھی سی تعلیم دي گئی ھے اور اسي کا نام اِسلام ھے . اور جو آدمی بھي جس ملک اور جس زمانے میں بھي اُس مہا پرش کی بتائی ھوئی یا اپنی اُس دھارمک کتاب میں لکھي ھوئی اُن بنیادي سچائیوں کو مانتا رھا ھے اور ان پر عمل کرتا رھا ھے وہ مسلمان ھے — جتنی باتیں ھم نے یہاں کہی ھیں ٹھیک اُن ھی کے مطلب کی اور لگ بھگ اُنھیں شبدوں میں قرآن کي پچاسوں آئتیں نقل کی جاسکتي ھیں . (۲۹)

اس معنے میں اِسلام کوئی نیا مذھب نہیں ھے . قرآن میں جگہ جگہ یہ بھی کہا گیا ھے کہ اِس کتاب یعنی قرآن میں کوئی ایسی بات نہیں کہی گئی جو اس سے پہلے کی کتابوں میں نہیں ھے . اور نہ حضرت محمد کے ذریعے کسی ایسي بات کي تعلیم دي گئی ھے جو اُن سے پہلے کے رسولوں نے نہیں کہی . یہاں تک کہ قرآن میں ایک جگہ قرآن سے پہلے کی کتابوں کو بھی " قرآن " نام دیا گیا ھے .

اب ھم اِسلام کے اِس بڑے معنے سے ھٹ کر اس کے دوسرے معنی کی طرف آتے ھیں یعنی دین دھرم کی وہ راہ جو ملک عرب میں حضرت محمد کے زمانے سے شروع ھوئی . ان معنوں میں قرآن کے مطابق ھر مسلمان کے لئے پانچ اور صرف پانچ باتیں ماننا ضروری ھے—ایک اللہ، دوسرے فرشتے، تیسرے سب ایشوري کتابیں، چوتھے دنیا کے سب رسول اور پانچویں، آخرت کا دن . اِن پانچوں میں ایک اللہ یا ایشور کو ماننا تو لگ بھگ سب دھرموں

में एक सा है. फ़रिश्ते अल्लाह और इन्सान के बीच की कोई हस्तियाँ हो सकते हैं. लेकिन क़ुरान की टीका करने वाले कुछ मुसलमान आलिमों की राय है कि फ़रिश्ते कोई अलग हस्तियाँ नहीं हैं न कहीं आसमान पर बैठे हैं. जिस तरह शैतान कोई अलग हस्ती नहीं है बल्कि हर आदमी के दिल के अन्दर बुराई की तरफ़ जो झुकाव है उसी का नाम शैतान है उसी तरह आदमी के अन्दर के नेक रुझानों का नाम "फ़रिश्ते" है. यह नेक रुझान अल्लाह ही की ताक़तें हैं जो घट घट में काम कर रही हैं. इस राय की क़ुरान और मुहम्मद साहब के उपदेशों से काफ़ी तसदीक़ होती है. यहाँ यह भी साफ़ कर देना ज़रूरी है कि क़ुरान और इस्लाम के मुताबिक़ सिवाए एक अल्लाह के, फ़रिश्ते या इन्सान किसी दूसरे की पूजा करना या किसी दूसरे के सामने सर झुकाना या दीन में किसी दूसरे से मदद चाहना या अल्लाह के सामने किसी की सिफ़ारिश की उम्मीद करना गुनाह है. तीसरी और चौथी चीज़ दुनिया भर के सब रसूल और सब ईश्वरी किताबें हैं जिसकी चर्चा हम ऊपर कर चुके हैं. मुहम्मद साहब की एक मशहूर कहावत है कि दुनिया भर में शुरू से अब तक एक लाख से ऊपर रसूल हो चुके हैं. क़ुरान की तालीम है कि उन सब रसूलों को मानना हर मुसलमान का फ़र्ज़ है. यहाँ तक कि क़ुरान कहता है कि जो आदमी भी इन रसूलों में फ़र्क़ करता है यानी कुछ को मानता है और कुछ को नहीं या किसी को बड़ा मानता है और किसी को छोटा वह "काफ़िरून हक़्क़ा" यानी सच्चा काफ़िर है. क़ुरान भर में यह फ़िक़रा "काफ़िरून हक़्क़ा" सिर्फ़ एक मरतबा आया है और वह उन लोगों के लिये जो रसूल रसूल में फ़र्क़ करते

میں ایک سا ہے۔ فرشتے اللہ اور اِنسان کے بیچ کی کوئی ہستیاں ہوسکتے ہیں۔ لیکن قرآن کی ٹیکا کرنے والے کچھ مسلمان عالموں کی رائے ہے کہ فرشتے کوئی الگ ہستیاں نہیں ہیں نہ کہیں آسمان پر بیٹھے ہیں۔ جس طرح شیطان کوئی الگ ہستی نہیں ہے بلکہ ہر آدمی کے دل کے اندر برائی کی طرف جو جھکاؤ ہے اُسی کا نام شیطان ہے۔ اُسی طرح آدمی کے اندر کے نیک رجحانوں کا نام " فرشتے " ہے۔ یہ نیک رجحان اللہ ہی کی طاقتیں ہیں جو گھٹ گھٹ میں کام کر رہی ہیں۔ اس رائے کی قرآن اور محمد صاحب کے اپدیشوں سے کافی تصدیق ہوتی ہے۔ یہاں یہ بھی صاف کردینا ضروری ہے کہ قرآن اور اِسلام کے مطابق سوائے ایک اللہ کے فرشتے یا اِنسان کسی دوسرے کی پوجا کرنا یا کسی دوسرے کے سامنے سر جھکانا یا دین میں کسی دوسرے سے مدد چاہنا یا اللہ کے سامنے کسی کی سفارش کی اُمید کرنا گناہ ہے۔ تیسری اور چوتھی چیز دنیا بھر کے سب رسول اور سب ایشوری کتابیں ہیں جسکی چرچا ہم اُوپر کرچکے ہیں۔ محمد صاحب کی ایک مشہور کہاوت ہے کہ دنیا بھر میں شروع سے اب تک ایک لاکھ سے اُوپر رسول ہوچکے ہیں۔ قرآن کی تعلیم ہے کہ اُن سب رسولوں کا ماننا ہر مسلمان کا فرض ہے یہاں تک کہ قرآن کہتا ہے کہ جو آدمی بھی ان رسولوں میں فرق کرتا ہے یعنی کچھ کو مانتا ہے اور کچھ کو نہیں یا کسی کو بڑا مانتا ہے اور کسی کو چھوٹا وہ " کافرون حقا " یعنی سچا کافر ہے۔ قرآن بھر میں یہ فقرہ " کافرون حقا " صرف ایک مرتبہ آیا ہے اور وہ اُن لوگوں کے لئے جو رسول رسول میں فرق کرتے

हैं. पाँचवीं और आखिरी चीज़ आख़िरत का दिन है, जिसे क़यामत का दिन भी कहते हैं. क़ुरान में कई जगह क़यामत के दिन का बयान मौजूद है. लेकिन यह भी साफ़ लिखा है कि इस तरह की चीज़ों को हमें अपने हवास यानी पाँच इन्द्रियों के दायरे में लाकर समझने की कोशिश नहीं करनी चाहिये और जो कुछ बयान इन चीज़ों के क़ुरान में दिये गये हैं वह कम समझ इन्सानों को समझाने के लिये तशबीह यानी मिसाल के तौर पर हैं. इस मामले में भी कई मुसलमान आलिमों की राय है कि आख़िरत के दिन से मतलब हमारी दुनिया के मानों में किसी ख़ास दिन से नहीं है बल्कि सिर्फ़ यह है कि हर आदमी को अपने अच्छे और बुरे सब तरह के कामों का नतीजा भोगना पड़ता है. क़ुरान में जगह जगह यह भी बताया गया है कि लोगों को और क़ौमों को इसी दुनिया और इसी ज़िन्दगी में अपने अच्छे या बुरे कामों का फल मिलता है. इन पाँच बातों के सिवा क़ुरान के मुताबिक़ किसी छोटी बात का मानना किसी मुसलमान के लिये ज़रूरी नहीं है.

इसी तरह पर हम देखें तो जो इस्लाम आज से साढ़े तेरह सौ बरस पहले चला वह भी दुनिया के सब मज़हबों को मिलाने वाला और सब की सीधी सादी बुनियादी मोटी सचाईयों का ही नाम है.

मुहम्मद साहब से बार बार पूछा जाता था कि इस्लाम क्या चीज़ है. जो जवाब मुहम्मद साहब देते थे वह हमारी बात को और साफ़ कर देते हैं.

هیں . پانچویں اور آخری چیز آخرت کا دن هے . جسے قیامت کا دن بھی کہتے هیں . قرآن میں کئی جگہ قیامت کے دن کا بیان موجود هے . لیکن یہ بھی صاف لکھا هے کہ اس طرح کی چیزوں کو همیں اپنے حواس یعنی پانچ اِندریوں کے دائرے میں لاکر سمجھنے کی کوشش نہیں کرنی چاهئے اور جو کچھ بیان اِن چیزوں کے قرآن میں دیئے گئے هیں وہ کم سمجھ اِنسانوں کو سمجھانے کے لئے تشبیہ یعنی مثال کے طور پر هیں . اِس معاملے میں بھی کئی مسلمان عالموں کی رائے هے کہ آخرت کے دن سے مطلب هماری دنیا کے معنوں میں کسی خاص دن سے نہیں هے بلکہ صرف یہ هے کہ هر آدمی کو اپنے اچھے اور برے سب طرح کے کاموں کا نتیجہ بھوگنا پڑتا هے . قرآن میں یہ بھی جگہ جگہ بتایا گیا هے کہ لوگوں کو اور قوموں کو اسی دنیا اور اسی زندگی میں اپنے اچھے یا برے کام کا پھل ملتا هے . اِن پانچ باتوں کے سوا قرآن کے مطابق کسی چھوٹی بات کا ماننا کسی مسلمان کے لئے ضروری نہیں هے .

اس طرح پر هم دیکھیں تو جو اِسلام آج سے ساڑھے تیرہ سو برس پہلے چلا وہ بھی دنیا کے سب مذهبوں کو ملانے والا اور سب کی سیدھی سادی بنیادی موٹی سچائیوں کا هی نام هے .

محمد صاحب سے بار بار پوچھا جاتا تھا کہ اِسلام کیا چیز هے . جو جواب محمد صاحب دیتے تھے وہ هماری بات کو اور صاف کردیتے هیں .

"निसाई" में लिखा है मुहम्मद साहब से पूछा गया कि "ऐ रसूल में आप से पूछता हूँ कि अल्लाह ने आपको हमारे पास क्या दे कर भेजा है ?" रसूल ने जवाब दिया "इस्लाम देकर" फिर पूछा गया "और इस्लाम के अहकामात क्या हैं ?" रसूल ने जवाब दिया "यह कहो कि मै अपने आप को अल्लाह ताला की मरज़ी पर छोड़ता हूँ और मै सिर्फ़ अल्लाह ही का हूँ और अल्लाह से दुआ मांगते रहो और लोगों को खैरात देते रहो."

"सही मुस्लिम" में लिखा है कि किसी ने रसूल से पूछा कि इस्लाम की सब से बड़ी बात क्या है ? रसूल ने जवाब दिया "भूकों को खाना देना और जिन्हे तुम जानते हो उन्हें और जिन्हें तुम नहीं जानते उन्हें सब को सलाम करना."

"सही बुख़ारी" में लिखा है कि मुहम्मद साहब ने कहा "लोग अगर समझें तो इस्लाम से पहले के नासमझी के दिनों में जो तुम में सब से अच्छी बातें थीं वही अब इस्लाम के दिनों में तुम्हारे लिये सब से अच्छी बातें हैं."

मुहम्मद साहब ने एक बार कहा कि "जो कोई किसी बुराई करने वाले का साथ देता है, यह जानते हुए भी कि वह बुराई करता है, वह इस्लाम से हट गया है."

उमरू कहता है "मैं ने रसूल से पूछा इस्लाम क्या है ?" रसूल ने जवाब दिया "ज़बान यानी बात चीत की पाकी और मेहमान नवाज़ी." मैं ने फिर पूछा "और ईमान क्या है ?" उन्हों ने जवाब दिया "सब्र करना और दूसरों के साथ नेकी करना."

" نسائی " میں لکھا ھے' محمد صاحب سے پوچھا گیا کہ " اے رسول میں آپ سے پوچھتا ھوں کہ اللہ نے آپ کو ھمارے پاس کیا دے کر بھیجا ھے ؟ " رسول نے جواب دیا " اسلام دے کر " پھر پوچھا گیا " اور اسلام کے احکامات کیا ھیں ؟ " رسول نے جواب دیا " یہ کہو کہ میں اپنے آپ کو اللہ تعالیٰ کی مرضی پر چھوڑتا ھوں اور میں صرف اللہ ھی کا ھوں اور اللہ سے دعا مانگتے رھو اور لوگوں کو خیرات دیتے رھو ".

" صحیح مسلم " میں لکھا ھے کہ کسی نے رسول سے پوچھا کہ اسلام کی سب سے بڑی بات کیا ھے ؟ رسول نے جواب دیا " بھوکوں کو کھانا دینا اور جنھیں تم جانتے ھو انھیں اور جنھیں تم نہیں جانتے انھیں سب کو سلام کرنا ".

" صحیح بخاری " میں لکھا ھے کہ محمد صاحب نے کہا " لوگ اگر سمجھیں تو اسلام کے پہلے کے ناسمجھی کے دنوں میں جو تم میں سب سے اچھی باتیں تھیں وھی اب اسلام کے دنوں میں تمہارے لئے سب سے اچھی باتیں ھیں "

محمد صاحب نے ایک بار کہا کہ " جو کوئی کسی برائی کرنے والے کا ساتھ دیتا ھے' یہ جانتے ھوئے بھی کہ وہ برائی کرتا ھے' وہ اسلام سے ھٹ گیا ھے ".

عمرو کہتا ھے " میں نے رسول سے پوچھا اسلام کیا ھے ؟ " رسول نے جواب دیا " زبان یعنی بات چیت کی پاکی اور مہمان نوازی ". میں نے پھر پوچھا " اور ایمان کیا ھے ؟ " انھوں نے جواب دیا " صبر کرنا اور دوسروں کے ساتھ نیکی کرنا ".

किसी आदमी ने पूछा " ऐ अल्लाह के रसूल ईमान की पहचान क्या है ?" रसूल ने जवाब दिया " जब तुझे नेकी करने से ख़ुशी हो और बदी करने से दुख हो तब तू ईमान वाला है."

उस आदमी ने फिर पूछा " और गुनाह क्या है ?" रसूल ने जवाब दिया " किसी काम के करने से तेरे दिल को चोट लगे तो उसे न कर."

इबने मसऊद लिखता है मुहम्मद साहब ने कहा कि " किसी आदमी का इमान सच्चा नहीं है जब तक कि उस के पड़ोसी उसके हाथों से बिलकुल महफ़ूज़ न हों."

(५६)

इसी तरह की और भी बहुत सी हदीसें और आयतें नक़ल की जा सकती हैं.

इस्लाम में किसी तरह के पुरोहित या प्रीस्ट के लिये कोई गुंजायश नहीं है. क़ुरान में साफ़ लिखा है कि अल्लाह और बन्दे के बीच किसी तीसरे की सिफ़ारिश नहीं चल सकती. इस्लाम में कोई भी ग़रीब से ग़रीब और बे पढ़ा मुसलमान नमाज़ पढ़ाने में इमाम का काम कर सकता है और कोई भी मुसलमान या ग़ैर मुसलमान निकाह पढ़ा सकता है. दुनिया के मज़हबों में शायद इस्लाम ही एक ऐसा मज़हब है जिसमें कोई प्रोहित या प्रीस्ट नहीं होता.

आदमी आदमी के बीच इस्लाम किसी तरह की जात पात, ऊँच नीच, नस्ल, क़बीलेया ख़ानदान के किसी तरह के फ़रक़ों को नहीं मानता.

کسی آدمی نے پوچھا " اے اللہ کے رسول ایمان کی پہچان کیا ھے ؟" رسول نے جواب دیا " جب تجھے نیکی کرنے سے خوشی ھو اور بدی کرنے سے دکھ ھو تب تو ایمان والا ھے ."

اُس آدمی نے پھر پوچھا " اور گناہ کیا ھے ؟ " رسول نے جواب دیا " جب کسی کام کے کرنے سے تیرے دل کو چوٹ لگے تو اُسے نہ کر "

ابن مسعود لکھتا ھے محمد صاحب نے کہا کہ " کسی آدمی کا ایمان سچا نہیں ھے جبتک کہ اس کے پڑوسی اُس کے ھاتھوں سے بالکل محفوظ نہ ھوں ."

اِسی طرح کی اور بھی بہت سی حدیثیں اور آئتیں نقل کی جا سکتی ھیں .

اسلام میں کسی طرح کے پروھت یا پریسٹ کے لئے کوئی گنجائش نہیں ھے . قرآن میں صاف لکھا ھے کہ اللہ اور بندے کے بیچ کسی تیسرے کی سفارش نہیں چل سکتی . اسلام میں کوئی بھی غریب سے غریب اور بے پڑھا مسلمان نماز پڑھانے میں اِمام کا کام کرسکتا ھے اور کوئی بھی مسلمان یا غیر مسلمان نکاح پڑھا سکتا ھے . دنیا کے مذھبوں میں شاید اسلام ھی ایک ایسا مذھب ھے جس میں کوئی پروھت یا پریسٹ نہیں ھوتا .

آدمی آدمی کے بیچ اسلام کسی طرح کی جات پات، اونچ نیچ، نسل، قبیلے یا خاندان کے کسی طرح کے فرقوں کو نہیں مانتا .

मुहम्मद साहब की मशहूर हदीस है—

" सब मख़लूक़ अल्लाह का कुन्बा हैं और उनमें अल्लाह को सब से प्यारा वह है जो अल्लाह के इस कुन्बे के साथ सब से ज्यादा भलाई करता है."

मुहम्मद साहब अपनी नमाज में रोज यह कहा करते थे —

"ऐ अल्लाह में गवाही देता हूँ कि सब आदमी भाई भाई हैं."

एक बार अरब का कोई सरदार, जो हाल में मुसलमान हुआ था. काबे की परिक्रमा कर रहा था. कोई ग़रीब ग़ुलाम मुसलमान भी ठीक उसी वक़्त काबे की परिक्रमा कर रहा था. अपने पुराने ढंग पर वह सरदार उस ग़रीब मुसलमान को हाथ से हटाता हुआ आगे बढ़ गया. मुहम्मद साहब तक ख़बर पहुँची. उन्हों ने फ़ौरन हुक्म दिया कि वह सरदार और वह ग़रीब आदमी फिर से जा कर काबे की परिक्रमा करें, सरदार आगे रहे और ग़रीब आदमी पीछे. फिर वह ग़रीब पीछे से आकर उसी तरह उस सरदार को हटाता हुआ आगे निकल जाये जिस तरह वह सरदार निकला था, ताकि सब लोगों को मालूम हो जाये कि आदमी आदमी सब बराबर हैं.

इस्लाम ने अमीरी और ग़रीबी के फ़र्क़ को मिटाने की भी कोशिश की. हर मुसलमान का फ़र्ज़ है कि हर साल कम से कम एक बार अपनी पूँजी का एक चालीसवाँ हिस्सा ख़ैरात में खर्च कर दे. चालीसवाँ हिस्सा साल की आमदनी का नहीं, बल्कि कुल चल और अचल मिलकियत का चालीसवाँ हिस्सा. क़ुरान में साफ़ लिखा है

محمد صاحب کی مشہور حدیث ہے —

" سب مخلوق الله کا کنبہ ہیں اور ان میں الله کو سب سے پیارا وہ ہے جو الله کے اس کنبے کے ساتھ سب سے زیادہ بھلائی کرتا ہے ."

محمد صاحب اپنی نماز میں روز یہ کہا کرتے تھے —

" اے الله میں گواہی دیتا ہوں کہ سب آدمی بھائی بھائی ہیں ."

ایک بار عرب کا کوئی سردار، جو حال میں مسلمان ہوا تھا، کعبہ کی پریکرما کر رہا تھا . کوئی غریب غلام مسلمان بھی ٹھیک اسی وقت کعبہ کی پریکرما کر رہا تھا . اپنے پرانے ڈھنگ پر وہ سردار اس غریب مسلمان کو ہاتھ سے ہٹاتا ہوا آگے بڑھ گیا . محمد صاحب تک خبر پہونچی . اُنھوں نے فوراً حکم دیا کہ وہ سردار اور وہ غریب آدمی پھر سے جاکر کعبہ کی پریکرما کریں، سردار آگے رہے اور غریب آدمی پیچھے . پھر وہ غریب پیچھے سے آکر اُسی طرح اُس سردار کو ہٹاتا ہوا آگے نکل جائے جس طرح وہ سردار نکلا تھا تاکہ سب لوگوں کو معلوم ہوجائے کہ آدمی آدمی سب برابر ہیں .

اسلام نے امیری اور غریبی کے فرق کو مٹانے کی بھی کوشش کی . ہر مسلمان کا فرض ہے کہ ہر سال کم سے کم ایک بار اپنی پونجی کا ایک چالیسواں حصہ خیرات میں خرچ کردے . چالیسواں حصہ سال کی آمدنی کا نہیں، بلکہ کل چل اور اَچل ملکیت کا چالیسواں حصہ . قرآن میں صاف لکھا ہے

मतलब पूछना पड़े. अगर ग्यारह बारह सौ ऐसे शब्द आप साल दो साल में सीखलें तो उर्दू अदब (साहित्य) का एक बहुत थोड़ा सा हिस्सा छोड़ कर पूरा उर्दू अदब आपके लिये पानी हो जायगा.

मैं आपसे यह भी पूछता हूँ कि जिस तरह के नमूने आज आपके सामने आये अगर हिन्दी में एफ़० ए० या बी० ए० का पूरा कोर्स इसी तरह या इस से मिलती जुलती भाषा में तैयार कर दिया जाय तो पढ़ने वालो को ज्यादा आसानी होगी या जैसी हिन्दी किताबें आजकल कोर्स में हैं ? और हिन्दी किस तरह की किताबों से आयेगी ? खड़ी बोली का निखार कहाँ नजर आता है ? जिस तरह की हिन्दी इन मिसालों और नमूनों मे नजर आती है वैसी ही मुहावरेदार हिन्दी लिखते हुए अगर हिन्दी के शायर मौक़े से कुछ संस्कृत शब्द इसी सफ़ाई से, इसी हलके फुलके अन्दाज़ से लाते जिस तरह ऊपर के नमूनों में अरबी फ़ारसी शब्द आते हैं तो मैं उनके क़लम चूम लेता. लेकिन हुआ क्या, एफ़० ए०, बी० ए०, एम० ए० में उर्दू लेने वाले तो अपनी किताबों का आनन्द उठाते हैं और उन्हीं दर्जों में हिन्दी लेने वाले घोंटते और घोखते रहते हैं संस्कृत शब्दों के अर्थ.

बाबा, दोनों तरह की हिन्दी की रक्षा करो. शुरू ही से नागरी लिपि में ऐसा कोर्स बनाओ कि संस्कृत वाली हिन्दी और वह हिन्दी जिसे उर्दू कहते हो, दोनों सिखाई जायें. दोनों के नमूने एक ही किताब में दो. ऐसा शुरू से एम० ए० तक के कोर्स में करदो. बहुत कठिन हिन्दी कोर्स में शामिल करना चाहिते हो तो करो. बहुत कठिन उर्दू कोर्स में शामिल न करना चाहो न करो. लेकिन नर्म और

(३)

مطلب پوچھنا پڑے۔ اگر گیارہ بارہ سو ایسے شبد آپ سال دو سال میں سیکھ لیں تو اُردو ادب (ساھتیہ) کا ایک بہت تھوڑا حصہ چھوڑ کر پورا اُردو ادب آپ کے لئے پانی ھوجائے گا ۔

میں آپ سے یہ بھی پوچھتا ھوں کہ جس طرح کے نمونے آج آپ کے سامنے آئے اگر ھندي میں ایف ۔ اے یا بی ۔ اے کا پورا کورس اسی طرح یا اِس سے ملتی جلتی بھاشا میں تیار کردیا جائے تو پڑھنے والوں کو زیادہ آسانی ھوگی یا جیسی ھندي کتابیں آج کل کورس میں ھیں ؟ اور ھندي کس طرح کی کتابوں سے آئے گی ؟ کھڑي بولي کا نکھار کہاں نظر آتا ھے ؟ جس طرح کي ھندي ان مثالوں اور نمونوں میں نظر آتی ھے ویسی ھی محاورےدار ھندي لکھتے ھوئے اگر ھندي کے شاعر موقع سے کچھہ سنسکرت شبد اسی صفائی سے، اسی ھلکے پھلکے انداز سے لاتے جس طرح اوپر کے نمونوں میں عربی فارسی شبد آئے ھیں تو میں ان کے قلم چوم لیتا ۔ لیکن ھوا کیا ۔ ایف ۔ اے، بی ۔ اے، ایم ۔ اے، میں اُردو لینے والے تو اپنی کتابوں کا آنند اُٹھاتے ھیں اور انھیں درجوں میں ھندي لینے والے گھونٹتے اور گھوکھتے رھتے ھیں سنسکرت شبدوں کے ارتھ ۔

بابا، دونوں طرح کی ھندي کي رکشا کرو ۔ شروع ھی سے ناگري لپی میں ایسا کورس بناؤ کہ سنسکرت والی ھندي اور وہ ھندي جسے اُردو کہتے ھو، دونوں سکھائی جائیں ۔ دونوں کے نمونے ایک ھی کتاب میں دو ۔ ایسا شروع سے ایم ۔ اے تک کے کورس میں کردو ۔ بہت کٹھن ھندي کورس میں شامل کرنا چاھتے ھو تو کرو بہت کٹھن اُردو کورس میں شامل نہ کرنا چاھو نہ کرو لیکن، نرم اور

कि ज्यादा दौलत आदमी को दीन से गिरा देती है. और उसकी नजात के रास्ते में रुकावट होती है. मुहम्मद साहब ने खुद हमेशा बहुत ग़रीबी की जिन्दगी बसर की. और यही चाल शुरू के ख़लीफ़ाओं की रही. रेशम पहनना या सोने के जेवर पहनना या दौलत जमा करना इस्लाम की तालीम के मुताबिक़ सब ना जायज़ हैं.

ग़ुलामी का रिवाज इस्लाम के हजारों बरस पहले से लग भग सारी दुनिया में चला आ रहा था. योरप के तमाम बाजारों में उन दिनों मर्द, औरतें और बच्चे जानवरों की तरह बेचे और ख़रीदे जाते थे. इस्लाम ने इस बुरे रिवाज को बन्द तो नहीं किया, फिर भी इस्लाम पहला मजहब था जिसने इस रिवाज को ख़तम करने की कोशिश की. मुहम्मद साहब की मशहूर हदीस है कि "अल्लाह किसी चीज से इतना ख़ुश नहीं होता जितना ग़ुलाम को आजाद करने से."

मुसलमानों को बार बार हिदायत की गई है कि वह न सिर्फ़ अपने ग़ुलामों को आजाद कर दें बल्कि दूसरों के ग़ुलामों को आजाद कराने में भी अपनी दौलत ख़र्च करें. खुद मुहम्मद साहब ने अपनी जिन्दगी में इसी असूल पर अमल किया.

औरतों को मर्दों के बराबर हक़ और माँ बाप की जायदाद में हिस्सा दिलाने की भी इस्लाम ने पूरी कोशिश की. क़ुरान में लड़कों और लड़कियों दोनों के हिस्से माँ बाप की जायदाद में बता दिये गये हैं.

کہ زیادہ دولت آدمی کو دین سے گرا دیتی ھے . اور اس کو نجات کے راستے میں رکاوٹ ھوتی ھے . محمد صاحب نے خود ھمیشہ بہت غریبی کی زندگی بسر کی . اور یہی چال شروع کے خلیفاؤں کی رھی . ریشم پہننا یا سونے کے زیور پہننا یا دولت جمع کرنا اسلام کی تعلیم کے مطابق سب ناجائز ھیں .

غلامی کا رواج اسلام کے ھزاروں برس پہلے سے لگ بھگ ساری دنیا میں چلا آ رھا تھا . یورپ کے تمام بازاروں میں اُن دنوں مرد، عورتیں اور بچے جانوروں کی طرح بیچے اور خریدے جاتے تھے . اسلام نے اس برے رواج کو بند تو نہیں کیا، پھر بھی اسلام پہلا مذھب تھا جس نے اس رواج کو ختم کرنے کی کوشش کی . محمد صاحب کی مشہور حدیث ھے کہ " اللہ کسی چیز سے اتنا خوش نہیں ھوتا جتنا غلام کو آزاد کرنے سے ."

مسلمانوں کو بار بار ھدایت کی گئی ھے کہ وہ نہ صرف اپنے غلاموں کو آزاد کردیں بلکہ دوسروں کے غلاموں کو آزاد کرانے میں بھی اپنی دولت خرچ کریں . خود محمد صاحب نے اپنی زندگی میں اسی اصول پر عمل کیا .

عورتوں کو مرد کے برابر حق اور ماں باپ کی جائدادمیں حصہ دلانے کی بھی اسلام نے پوری کوشش کی . قرآن میں لڑکوں اور لڑکیوں دونوں کے حصے ماں باپ کی جائداد میں بتا دیئے گئے ھیں .

मुहम्मद साहब की एक मशहूर तक़रीर में, जो उन्हों ने ७ मार्च सन ६३२ ई० को मक्के में दी थी, यह फ़िक़रे आते हैं—

" ऐ लोगो, मेरी बात सुनो, क्योंकि यह नहीं मालूम कि इस साल के बाद भी मुझे फिर तुम से मिलने का मौक़ा मिलेगा या नहीं. तुम्हें अपने पड़ोसियों पर हक़ हासिल हैं, सब लोगों को दूसरे लोगों पर हक़ हासिल हैं, मरदों को अपनी बीवियों पर हक़ हासिल हैं और तुम्हारी बीवियों को तुम पर हक़ हासिल हैं. अपनी बीवियों के साथ प्रेम का बर्ताव करो...............

" जो कोई तुम पर भरोसा करे उसके साथ सदा वफ़ादारी बरतो, गुनाहों से बचो, सूद लेना तुम्हारे लिये मना है. जिस को किसी का कुछ क़र्ज़ा देना है वह सिर्फ़ असल रक़म वापस करे.............

" पिछले ना समझी के ज़माने में जो लोग ख़ून का बदला लिया करते थे उसे अब बन्द किया जाये. मार काट के सब झगड़े अब आगे के लिये मना किये जाते हैं. जो तुम्हारे पास ग़ुलाम हैं ख़याल रक्खो कि तुम उन्हें वही खाना खिलाओ जो तुम खाते हो, उसी चीज़ के बने हुए और वही कपड़े पहनाओ जो तुम पहनते हो. और अगर ग़ुलाम कोई ऐसा क़सूर कर बैठे जिसे माफ़ कर देने को तुम्हारा जी नहीं चाहता तो उसे छुट्टी दे दो लेकिन उसके साथ किसी तरह की सख़्ती न करो.............

" ऐ लोगो! मेरी बात सुनो और उसे समझो कोई अरब किसी ग़ैर अरब से बढ़ कर नहीं है और न कोई ग़ैर अरब किसी

محمد صاحب کی ایک مشہور تقریر میں جو انہوں نے ۷ مارچ ۶۳۲ء کو مکے میں دی تھی، یہ فقرے آتے ہیں ــ

" اے لوگو، میری بات سنو کیونکہ یہ نہیں معلوم کہ اس سال کے بعد بھی مجھے پھر تم سے ملنے کا موقع ملیگا یا نہیں. تمہیں اپنے پڑوسیوں پر حق حاصل ہیں سب لوگوں کو دوسرے لوگوں پر حق حاصل ہیں، مردوں کو اپنی اپنی بیویوں پر حق حاصل ہیں اور تمہاری بیویوں کو تم پر حق حاصل ہیں. اپنی بیویوں کے ساتھ پریم کا برتاؤ کرو ......

" جو کوئی تم پر بھروسہ کرے اُس کے ساتھ سدا وفاداری برتو، گناہوں سے بچو، سود لینا تمہارے لئے منع ہے. جس کو کسی کا کچھ قرضہ دینا ہے وہ صرف اصل رقم واپس کرے ....

" پچھلے نا سمجھی کے زمانے میں جو لوگ خون کا بدلا لیا کرتے تھے اُسے اب بند کیا جائے. مار کاٹ کے سب جھگڑے اب آگے کے لئے منع کئے جاتے ہیں. جو تمہارے پاس غلام ہیں خیال رکھو کہ تم انہیں وہی کھانا کھلاؤ جو تم کھاتے ہو، اسی چیز کے بنے ہوئے اور وہی کپڑے پہناؤ جو تم پہنتے ہو. اور اگر غلام کوئی ایسا قصور کر بیٹھے جسے معاف کردینے کو تمہارا جی نہیں چاہتا تو اُسے چھٹی دے دو لیکن اس کے ساتھ کسی طرح کی سختی نہ کرو ....

" اے لوگو! میری بات سنو اور اُسے سمجھو، کوئی عرب کسی غیر عرب سے بڑھکر نہیں ہے اور نہ کوئی غیر عرب کسی

अरब से बढ़ कर है. तुम सब आदम की औलाद हो और आदम मिट्टी का बना हुआ था.............

"कोई चीज़ जो दूसरे आदमी की मिलकियत है उसके किसी भाई के लिये हलाल नहीं है जब तक कि उसका मालिक अपनी ख़ुशी और मरज़ी से किसी को न दे दे. दूसरों पर ज़ुल्म या बे इन्साफ़ी करने से बचो."

क़ुरान में साफ़ लिखा है कि —

"नेकी इसमें नहीं है कि नमाज़ के वक़्त तुमने मुँह पूरब की तरफ़ कर लिया या पच्छिम की तरफ़. नेकी इसमें है कि तुम अपने रिश्ते दारों को, और ग़ैर रिश्तेदार ज़रूरतमन्दों को और माँगने वालों को दान दो. ग़ुलामों को आज़ाद कराने में अपना पैसा ख़र्च करो, जब किसी से वायदा करो तो उसे पूरा करो और मुसीबत और फ़ितने फ़साद के दिनों में सब्र से काम लो. यही लोग जो सच्चे हैं."

शायद ही दुनिया का और कोई मज़हब इन्सानी बराबरी और भाई चारे पर इतना ज़्यादा ज़ोर देता हो जितना इस्लाम. हमारा मतलब यहाँ क़ुरान के मज़हब और मुहम्मद साहब की तालीम से है. इन साढ़े तेरह सौ बरस के अन्दर आम और ख़ास मुसलमानों के अमल से नहीं.

इसमें ज़रा भी शक नहीं कि दुनिया आजकल के सब अलग अलग मज़हबों की दीवारों से बाहर निकल कर एक मज़हबे इन्सानियत, एक मानव धर्म, एक रेलिजन आफ़ ह्यु मेनिटी, एक प्रेम धर्म या एक मज़हबे इश्क़ की तरफ़ बढ़ रही है. दुनिया के बड़े मज़हबों

عرب سے بڑھکر ھے . تم سب آدم کی اولاد ھو اور آدم متی کا بنا ھوا تھا ....

'' کوئي چیز جو دوسرے آدمي کی ملکیت ھے اس کے کسی بھائی کے لئے حلال نہیں ھے جبتک اس کا مالک اپنی خوشی اور مرضي سے کسي کو نہ دے دے . دوسروں پر ظلم یا بے انصافی کرنے سے بچو ."

قرآن میں صاف لکھا ھے —

'' نیکی اس میں نہیں ھے کہ نماز کے وقت تم نے منھ پورب کی طرف کرلیا یا پچھم کي طرف . نیکی اس میں ھے کہ تم اپنے رشتہداروں کو اور غیر رشتے دار ضرورتمندوں کو اور مانگنے والوں کو دان دو . غلاموں کو آزاد کرانے میں اپنا پیسہ خرچ کرو' جب کسی سے وعدہ کرو تو اسے پورا کرو اور مصیبت اور فتنے فساد کے دنوں میں صبر سے کام لو. یہی لوگ ھیں جو سچے ھیں .''

شاید ھي دنیا کا کوئی اور مذھب اِنسانی برابری اور بھائی چارے پر اتنا زیادہ زور دیتا ھو جتنا اسلام ھمارا مطلب یہاں قرآن کے مذھب اور محمد صاحب کی تعلیم سے ھے . اِن ساڑھے تیرہ سو برس کے اندر عام اور خاص مسلمانوں کے عمل سے نہیں .

اس میں ذرا بھی شک نہیں کہ دنیا آجکل کے سب الگ الگ مذھبوں کی دیواروں سے باھر نکل کر ایک مذھب اِنسانیت' ایک مانو دھرم' ایک ریلیجن آف ھیومینیٹی' ایک پریم دھرم یا ایک مذھب عشق کی طرف بڑھ رھی ھے . دنیا کے بڑے مذھبوں

में इस्लाम सब से हाल का मजहब है. उसमे एक आलमगीर मजहब का ढाँचा और रूह दोनों मौजूद हैं. और उसमे ज़रा भी शक नहीं कि उस आने वाले मजहबे इन्सानियत को शकल देने में इस्लाम किसी दूसरे मजहब से कम हिस्सा नहीं लेगा.

(आल इन्डिया रेडियो पटना की इजाजत से)

२९ जून, सन् ५० ई०.

मुस्लिम देश भक्त

[लेखक श्री० रतन लाल बंसल]

इस किताब में कुछ ऐसे मुसलमान देश भक्तों के जीवन का हाल और उनके कारनामे बयान किये गये हैं जिन्होंने अंगरेजों के मनहूस क़दम यहां जमने के पहले ही उनके राज की बुराइयों का अन्दाज़ा कर लिया था और उनको हिन्दुस्तान से निकाल भगाने में ही हिन्द की भलाई देखी थी.

इस किताब को पढ़कर आपको मालूम होगा कि किस तरह मुसलमान आलिमों ने सन १८५७ से भी पहले से आज़ादी की लड़ाई शुरू कर रक्खी थी. अपनी जान हथेली पर रखकर उन्होंने हिन्दुस्तान और विदेशों में रहते हुए भी अंगरेज़ी हुकूमत का मुक़ाबला किया. यह सब हाल पढ़कर आप दंग रह जायेंगे

किताब दोनों लिखावटों में छपी है. क़ीमत १ रुपया १२ आने.

मैनेजर, 'नया हिन्द,'
४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद.

میں اسلام سب سے حال کا مذھب ھے . اُس میں ایک عالمگیر مذھب کا ڈھانچہ اور روح دونوں موجود ھیں . اور اِس میں ذرا بھی شک نہیں کہ اُس آنے والے مذھب' اِنسانیت کو شکل دینے میں اسلام کسي دوسرے مذھب سے کم حصہ نہیں لے گا .

(آل اِنڈیا ریڈیو پٹنہ کی اجازت سے)

۲۹ جون سن ۵۰ع

مسلم دیش بھگت

[لیکھک ــــ شري رتن لال بنسل]

اِس کتاب میں کچھ ایسے مسلمان دیش بھگتوں کے جیون کا حال اور اُنکے کارنامے بیان کئے گئے ھیں جنھوں نے انگریزوں کے منحوس قدم یہاں جمنے کے پہلے ھي اُنکے راج کي برائیوں کا اندازہ کر لیا تھا اور اُن کو ھندستان سے نکال بھگانے میں ھند کي بھلائي دیکھي تھي۔

اِس کتاب کو پڑھ کر آپ کو معلوم ھوگا کہ کس طرح مسلمان عالموں نے سنہ ۱۸۵۷ سے بھی پہلے سے آزادي کي لڑائی شروع کر رکھی تھي۔ اپني جان ھتھیلي پر رکھ کر اُنھوں نے ھندستان اور ودیشوں میں رھتے ھوئے بھي انگریزي حکومت کا مقابلہ کیا۔ یہ سب حال پڑھ کر آپ دنگ رہ جائیں گے۔

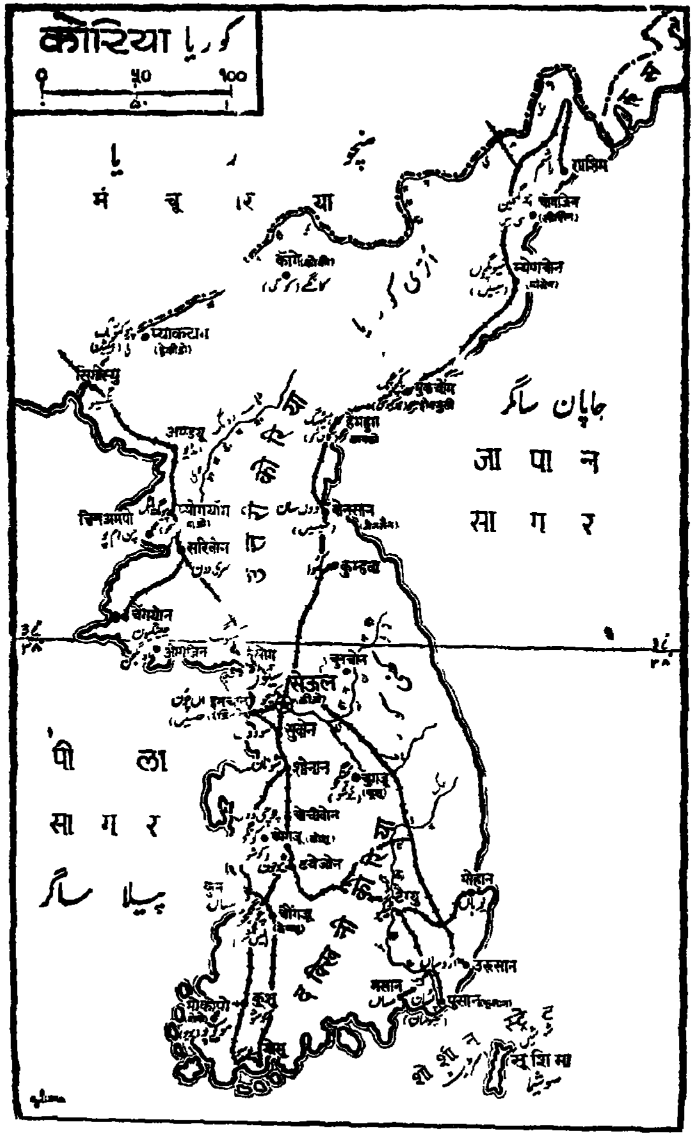
کتاب دونوں لکھاوٹوں میں چھپی ھے۔ قیمت ۱ روپیہ ۱۲ آنے

منیجر' 'نیا ھند'
۴۸ بائی کا باغ ـ الہ آباد

कोरिया और उसकी घरेलू लड़ाई

कोरिया के पुराने इतिहास को छोड़िये दूसरी बड़ी लड़ाई के खत्म होने से पहले तक कोरिया पर जापानियों का राज था. और उन का राज कोरिया पर इतना ही बुरा या भला था जितना अंगरेज़ों का हिन्दुस्तान पर.

लड़ाई से पहले सारा कोरिया एक था — उत्तरी कोरिया और दक्खिनी कोरिया जैसे दो टुकड़े नहीं थे. यह टुकड़े उस वक़्त हुए जब जापान सन् १९४५ में हार गया और जापान की हार के नाते रूसी और अमरीकी उसके मालिक बने यह दोनों कोरिया के मालिक कोरिया की



کوریا اور اسکی گھریلو لڑائی

کوریا کے پرانے اتہاس کو چھوڑئیے. دوسری بڑی لڑائی کے ختم ہونے سے پہلے تک کوریا پر جاپانیوں کا راج تھا. اور انکا راج کوریا پر اتنا ہی برا یا بھلا تھا جتنا انگریزوں کا ہندستان پر.

لڑائی سے پہلے سارا کوریا ایک تھا. اتری کوریا اور دکھنی کوریا جیسے دو ٹکڑے نہیں تھے. یہ ٹکڑے اس وقت ہوئے جب جاپان سن ۱۹۴۵ع میں ہار گیا اور جاپان کی ہار کے ناتے روسی اور امریکی اسکے مالک بنے. یہ دونوں کوریا کے مالک کوریا کے.

मरज़ी से नहीं बने. कोरिया वाले यह आस लगाये बैठे थे कि जापानयोंके हट जाने के बाद वह कोरिया के मालिक बन जायेंगे यानी कोरिया में कोरिया वालों का राज हो जायगा. पर वैसा न हो सका. जापानियों को हराया तो था अमरीका, रूस, बरतानिया, फ़्रान्स और चीन ने. पर जापानियों की मातहती मे रहने वाले कोरिया का बँटवारा हुआ सिर्फ़ दो में. यानी रूस और अमरीका में. यह ठीक है कि मालिक बनते वक़्त रूस और अमरीका दोनों ही ने मालिकी का दावा नहीं किया था. सिर्फ़ यह दावा किया था कि चूंकि उन की फ़ौजे कोरिया में पड़ी हुई हैं और कुछ दिनों के लिये उनका वहाँ रहना ज़रूरी है इसलिये कोरिया उनकी मिलकियत नहीं, उन के फ़ौजी घेरे में रहेगा. फ़ौजी घेरे दो मुल्कों के होने के कारन कोरिया के अड़तीस अंश पड़ी रेखा पर दो टुकड़े कर दिये गये. ऊपर का हिस्सा उत्तरी कोरिया रहा और नीचे का दक्खिनी कोरिया.

सन् १६४८ तक कोरिया वाले यह कोशिश करते रहे कि उनके वह दोनों घेरे ख़त्म हों और दोनों मुल्कों की फ़ौजें उन्हें उन पर छोड़कर अपने अपने घर जायें. रूसने कोरिया वालों को इस बात को ठीक समझा और उसने हर तरह से यह चाहा कि उस की फ़ौजें और अमरीका की फ़ौजें दोनों साथ साथ कोरिया को छोड़दें और कोरिया कोरिया वालों के सुपुर्द कर दें. पर अमरीका किसी तरह राज़ी न हुआ और आज २६ जून १६५० तक अमरीका दक्खिनी कोरिया पर अपना पंजा जमाये हुए है.

रूसी फ़ौजें सन् १६४८ में कोरिया छोड़ चुकीं यानी रूस ने कोरिया के उत्तरी हिस्से को दो बरस पहले ही आज़ाद कर दिया. रूस

مرضي سے نہیں بنے . کوریا والے یہ آس لگائے بیٹھے تھے کہ جاپانیوں کے ہٹ جانے کے بعد وہ کوریا کے مالک بن جائینگے یعني کوریا میں کوریا والوں کا راج ہوجائیگا . پر ویسا نہ ہوسکا . جاپانیوں کو ہرایا تو تھا امریکہ، روس، برطانیہ، فرانس اور چین نے . پر جاپانیوں کی ماتحتي میں رہنے والے کوریا کا بٹوارہ ہوا صرف دو میں یعنی روس اور امریکہ میں . یہ ٹھیک ہے کہ مالک بنتے وقت روس اور امریکہ دونوں ہی نے مالکي کا دعوا نہیں کیا تھا . صرف یہ دعوی کیا تھا کہ چونکہ اُنکی فوجیں کوریا میں پڑی ہوئی ہیں اور کچھ دنوں کے لئے انکا وہاں رہنا ضروري ہے اس لئے کوریا ان کی ملکیت نہیں، ان کے فوجی گھیرے میں رہیگا . فوجی گھیرے دو ملکوں کے ہونے کے کارن کوریا کے اڑتیس انش پڑي ریکھا پر دو ٹکڑے کردیئے گئے . اوپر کا حصہ اُتري کوریا رہا اور نیچے کا دکھنی کوریا .

سن ۱۹۴۸ تک کوریا والے یہ کوشش کرتے رہے کہ ان کے وہ دونوں گھیرے ختم ہوں اور دونوں ملکوں کی فوجیں انہیں ان پر چھوڑ کر اپنے اپنے گھر جائیں. روس نے کوریا والوں کي اس بات کو ٹھیک سمجھا . اور اس نے ہر طرح سے یہ چاہا کہ اسکی فوجیں اور امریکہ کي فوجیں دونوں ساتھ ساتھ کوریا کو چھوڑدیں. اور کوریا کوریا والوں کے سپرد کردیں . پر امریکہ کسی طرح راضی نہ ہوا اور آج ۲۹ جون ۱۹۵۰ تک امریکہ دکھنی کوریا پر اپنا پنجا جمائے ہوئے ہے .

روسی فوجیں سن ۱۹۴۸ میں کوریا چھوڑ چکیں یعنی روس نے کوریا کے اُتری حصہ کو دو برس پہلے ہی آزاد کردیا . روس

की फ़ौजें छोड़ने और उत्तरी कोरिया को आज़ाद करने की बात पर यू. एन. कमीशन, जो कोरिया के लिये बना था, एतबार करने के लिये तैयार नहीं. सुना जाता है इस घरेलू लड़ाई के शुरू होने से ठीक पहले यू. एन. कमीशन दक्खिनी कोरिया में मौजूद था. इतना ही नहीं यह भी ख़बरें मिलती रही हैं कि उत्तरी कोरिया ने अपने तीन आदमी उस कोरिया कमीशन से मिलने भेजे थे. और यह भी सुना गया है कि दक्खिनी कोरिया ने उन तीन में से दो को गिरफ़्तार कर लिया और एक को कमीशन से नहीं मिलने दिया. कुछ लोगों का यह भी अन्दाज़ा है कि लड़ाई का असली कारन यही है पर हमे यह कारन कुछ जँचता नहीं.

मुद्दतों से यह ख़बरें भी आती रही हैं कि दक्खिनी कोरिया को कुछ फ़ौजी दस्ते (वह अमरीकी थे या कोरिया के यह पता नहीं) अड़तीस अंश वाली लकीर को लांघ कर उत्तरी कोरिया मे छेड़ छाड़ करते रहे हैं.

इस बात से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि दक्खिनी कोरिया के लोग यह नहीं पसन्द करते कि अमरीका वाले वहाँ जमे रहें और कोरिया वालों को दबाते रहें.

यह बात भी कही जाती है कि सोवियट रूस और उत्तरी कोरिया के बीच एक दस बरसी सुलह नामा भी हो गया है. वह सुलह नामा माली और कलचरी है.

सब से मार्के की पर हँसी की बात यह है कि दक्खिनी कोरिया रिपबलिक यानी जन राज कहलाता है और उत्तरी अमरीका लोकशाही जन राज. और फिर और भी हँसी की बात यह है कि

کی فوجیں چھوڑنے اور اُتری کوریا کو آزاد کرنیکی بات پر یو . این . کمیشن' جو کوریا کے لئے بنا تھا' اعتبار کرنے کے لئے تیار نہیں. سنا جاتا هے اس گھریلو لڑائی کے شروع هونے سے ٹھیک پہلے یو . این . کمیشن دکھنی کوریا میں موجود تھا . اتنا هی نہیں یہ بھی خبریں ملتی رهی هیں که اتری کوریا نے اپنے تین آدمی اُس کوریا کمیشن سے ملنے بھیجے تھے . اور یہ بھی سنا گیا هے که دکھنی کوریا نے اُن تین میں سے دو کو گرفتار کرلیا اور ایک کو کمیشن سے نہیں ملنے دیا . کچھ لوگوں کا یہ بھی اندازہ هے که لڑائی کا کارن اصلی یہی هے پر همیں یہ کارن کچھ جنچتا نہیں .

مدتوں سے یہ خبریں آتی رهی هیں که دکھنی کوریا کے کچھ فوجی دستے (وہ امریکی تھے یا کوریا کے یہ پته نہیں) اڑتیس انش والی لکیر کو لانگھ کر اتری کوریا میں چھیڑ چھاڑ رهے هیں .

اس بات سے کوئی انکار نہیں کر سکتا که دکھنی کوریا کے لوگ یہ نہیں پسند کرتے که امریکه والے وهاں جمے رهیں اور کوریا والوں کو دباتے رهیں .

یہ بات بھی کہی جاتی هے که سوویت روس اور اُتری کوریا کے بیچ ایک دس برسی صلحنامه بھی هوگیا هے . وہ صلحنامه مالی اور کلچری هے .

سب سے معرکے کی پر هنسی کی بات یہ هے که دکھنی کوریا ری پبلک یعنی جن راج کہلاتا هے اور اتری امریکه لوک شاهی جن راج . اور پھر اور بھی هنسی کی بات یہ هے که

हमें यह विश्वास करने के लिये मजबूर किया जाता है कि डाक्टर सिंघमन री की दक्खिनी कोरिया सरकार ने अमरीका वालों से यह प्रार्थना की थी कि अमरीका वाले दक्खिनी कोरिया से अपना फौजी घेरा न उठायें. और सुनते हैं कि अमरीका वालों ने उनकी बात नहीं मानी और जून सन १९४९ में अपना फौजी घेरा दक्खिनी कोरिया से उठा लिया. पर दक्खिनी कोरिया की फौजों को अपने देश के बचाव के लिये फौजी सलाह देने के लिये पांच सौ अफसर जरूर दक्खिनी कोरिया में ही रहने दिये. इतना ही नहीं. ३० जून सन् १९५१ तक दक्खिनी कोरिया अमरीका से मदद पाता रहेगा. और वह रक़म सोलह मिलियन डालर यानी आठ करोड़ रुपये के लगभग होगी. हाँ, इसमें से कुछ रक़म फिलिपाइन टापुओं के लिये भी खर्च की जायगी.

हाल ही में कोई जन तंत्रा सलाहकार अड़तीस अंश वाली रेखा के आस पास निरीक्षन के लिये गया था और उसने यह रिपोर्ट दी थी कि ' जल्दी ही हमला होने की सम्भावना है. और यह कि ' हमें पूरा विश्वास है कि हम हमला करने वालों को अपने क्षेत्र से खदेड़ सकेंगे '

यह सब बातें साफ जाहिर करती हैं कि इस घरेलू लड़ाई के शुरू कराने में अमरीका वालों का पूरा हाथ है और अगर इस तरह किसी मुल्क में घरेलू लड़ाई कराना अन्तर-क़ौमी गुनाह है तो अमरीका पूरा गुनाहगार है. और अगर सचमुच कोई जोरदार अन्तर-क़ौमी अदालत होती तो अमरीका जरूर मुलजिम के कटघरे में खड़ा दिखाई देता. हो सकता है कुछ लोगों या मुल्कों का यह

همیں یہ وشواس کرنے کے لئے مجبور کیا جاتا ہے کہ ڈاکٹر سنگھمن ری کی دکھنی کوریا سرکار نے امریکہ والوں سے یہ پرارتھنا کی تھی کہ امریکہ والے دکھنی کوریا سے اپنا فوجی گھیرا نہ اُٹھائیں . اور سنتے ہیں کہ امریکہ والوں نے ان کی بات نہیں مانی اور جون ۱۹۴۹ میں اپنا فوجی گھیرا دکھنی کوریا سے اُٹھا لیا . پر دکھنی کوریا کی فوجوں کو اپنے دیش کے بچاؤ کیلئے فوجی صلاح دینے کیلئے پانسو افسر ضرور دکھنی کوریا میں ہی رہنے دیئے نہیں اتنا ہی ۳۰ جون سن ۱۹۵۱ تک دکھنی کوریا امریکہ سے مدد پاتا رہیگا . اور وہ رقم سولہ ملین ڈالر یعنی آٹھ کروڑ روپئے کے لگ بھگ ہوگی . ہاں، اس میں سے کچھ رقم فلپائن ٹاپوؤں کے لئے بھی خرچ کی جائیگی .

حال ہی میں کوئی جن تنتری صلاحکار اڑتیس انش والی ریکھا کے آس پاس نریکشن کے لئے گیا تھا اور اس نے یہ رپورٹ دی تھی کہ ' جلدی ہی حملہ ہونیکی سمبھاؤنا ہے .' اور یہ کہ ہمیں پورا وشواس ہے کہ ہم حملہ کرنے والوں کو اپنے چھیتر سے کھدیڑ سکینگے .

یہ باتیں صاف ظاہر کرتی ہیں کہ اس گھریلو لڑائی کے شروع کرانے میں امریکہ والوں کا پورا ہاتھ ہے اور اگر اس طرح کسی ملک میں گھریلو لڑائی کرانا انتر قومی گناہ ہے تو امریکہ پورا گنہگار ہے . اوراگر سچ مچ کوئی زور دار انتر قومی عدالت ہوتی تو امریکہ ضرور ملزم کے کٹگھرے میں کھڑا دکھائی دیتا . ہوسکتا ہے کچھ لوگوں یا ملکوں کا یہ

भी दावा हो कि नहीं इस घरेलू लड़ाई में रूस का हाथ है. अगर इस बात को महत्त्व दिया जाय तो रूस भी अमरीका की फ़ेहरिस्त मे आजाता है.

को।रया की लड़ाई एक दम घरेलू लड़ाई है यानी सिविल वार है. होना तो यह चाहिये कि घरेलू लड़ाई के मौक़े पर आसपास के देश या कहीं के भी देश उस घरेलू लड़ाई मे किसी तरह हिस्सा न बॅटायें, न लड़ाई का सामान भेजें और न उकसाने, भड़काने का काम करें. सलाहकार अफ़सर भेजना भी ऐसे मौक़े पर बुरा समझा जाय और फ़ौजें भेजना तो एक दम गुनाह. आज तक की ख़बरें हमे यह तो बताती हैं कि कोरिया में आज २९ तारीख़ तक

खुल्लम खुल्ला किसी देश की फ़ौज क़दम नहीं रख पाई पर यह साफ़ ज़ाहिर है कि अमरीका खुल्लम खुल्ला और डंके की चोट दक्खिनी कोरिया मे गोला बारूद भेज रहा है. उस के सलाहकार अफ़सर पहले ही से वहाँ मौजूद हैं और उसकी फ़ौजें लड़ाई के मैदान के आसपास कोरिया की हद से बाहर खड़ी हुई सिर्फ़ तमाशा ही नहीं देख रही, उकसाने और भड़काने का काम भी कर रही है. हो सकता है रूस भी इस तरह की हरकतें कर रहा हो पर न अख़बार और न रूसी रेडियो और न टास-एजेन्सी की ख़बरें यह बता रही हैं कि उधर ऐसा हो रहा है.

हो सकता है हमारी यह लाइनें हमारे पढ़ने वालों पर यह असर डालती हुई मालूम हों कि हम एकतरफ़ा हो कर अमरीका पर ही इलज़ाम लगाना चाहते हैं. अगर ऐसा है तो हम पढ़ने वालों को ठीक ही समझेंगे. हम साफ़ साफ़ अमरीका को कोरिया

بھي دعوی ہو کہ نہیں اس گھریلو لڑائی میں روس کا ھاتھ ھے . اگر اس بات کو مہتو دیا جائے تو روس بھي امریکہ کی فہرست میں آجاتا ھے .

کوریا کي لڑائی ایکدم گھریلو لڑائي ھے یعني سول وار ھے . ھونا تو یہ چاھئے کہ گھریلو لڑائی کے موقع پر آس پاس کے دیش یا کہیں کے بھی دیش اس گھریلو لڑائي میں کسي طرح حصہ نہ بٹائیں' نہ لڑائي کا سامان بھیجیں اور نہ اکسانے' بھڑکانے کا کام کریں . صلاحکار افسر بھیجنا بھی ایسے موقعے پر برا سمجھا جائے . اور فوجیں بھیجنا تو ایکدم گناہ . آج تک کي خبریں ھمیں یہ تو بتاتی ھیں کہ کوریا میں آج ۲۹ تاریخ تک کھلم کھلا

کسي دیش کی فوج قدم نہیں رکھ پائی پر یہ صاف ظاھر ھے کہ امریکہ کھلم کھلا اور ڈنکے کی چوٹ پر دکھنی کوریا میں گولا بارود بھیج رھا ھے . اس کے صلاحکار افسر پہلے ھي سے وھاں موجود ھیں اور اس کی فوجیں لڑائی کے میدان کے آس پاس کوریا کی حد سے باھر کھڑي ھوئي صرف تماشہ ھی نہیں دیکھ رھي' اُکسانے اور بھڑکانے کا کام بھی کر رھی ھیں . ھوسکتا ھے روس بھی اس طرح کي حرکتیں کر رھا ھو . پر نہ اخبار اور نہ روسی ریڈیو اور نہ تاس ایجنسي کي خبریں یہ بتا رھي ھیں کہ اُدھر ایسا ھو رھا ھے .

ھو سکتا ھے ھماري یہ لائنیں ھمارے پڑھنے والوں پر یہ اثر ڈالتی ھوئي معلوم ھوں کہ ھم ایکطرفہ ھوکر امریکہ پر ھی الزام لگانا چاھتے ھیں . اگر ایسا ھے تو ھم پڑھنے والوں کو ٹھیک ھی سمجھیں گے . ھم صاف صاف امریکہ کو کوریا

की इस घरेलू लड़ाई का ज़िम्मेदार समझते हैं. और वह आज के दिन तक चीन की घरेलू लड़ाई को अपने फ़ायदे के लिये बढ़ाता रहा. उस के पास बेहद पैसा है और वह इस पैसे का लड़ाई लड़ाने के सिवाय और उपयोग ही क्या कर सकता है? चीन की कम्युनिस्ट सरकार को न मानकर तो उसने यह साबित कर दिया है कि यू. एन. ओ. अमरीका के हाथ का खिलौना है. वह यू. एन. ओ. का मेम्बर नहीं है.

जिन्हों ने यू. एन. ओ. का विधान पढ़ा है या जो उस से वाक़िफ़ हैं या जो अब भी तकलीफ़ उठा कर यू. एन. ओ. विधान पर नज़र डालें, वह जान सकते हैं कि यू. एन. ओ का हाल का प्रस्ताव कितना विधान के ख़िलाफ़ है और इसके आधार पर दिय हुआ प्रेसीडेन्ट ट्रूमैन का बयान कितना बालू की नीव पर खड़े हुए महल जैसा है. हिन्दुस्तान और मिस्र ने ऐसे मौक़े पर किसी वजह और किसी दूरन्देशी से तटस्थ होकर बड़े मार्के का काम किया है. और हिन्दुस्तान और मिस्र की एख़लाक़ी शान को काफ़ी ऊँचा उठा दिया है.

बरतानिया ने प्रेसीडेन्ट ट्रूमैन की पीठ ठोंक कर अगर भभकी और घुड़की की पीठ ठोंकी है तब तो हम यही कहेंगे कि वह बहुत बुद्धिमान है. पर अगर उसके पीछे हर बुराई भलाई में अमरीका के साथ देने की बात छिपी हुई है या अगर यू. एन. ओ. के विधान विरुद्ध प्रस्तावों का समर्थन भी छिपा हुआ है तब हम यह कहेंगे कि बरतानिया इस वक़्त वह क़दम उठा रहा है जो उस के लिये ठीक नहीं है. जो बरतानिया अपने ताज के सब से बड़े हीरे

(५७)

کي اس گھریلو لڑائی کا ذمہدار سمجھتے هیں . اور وہ آج کے دن تک چین کی گھریلو لڑائی کو اپنے فائدہ کے لئے بڑھاتا رہا . اس کے پاس بے حد پیسہ هے اور وہ اس پیسہ کا لڑائی لڑانے کے سوائے اور اپیوگ هي کیا کرسکتا هے ؟ چین کی کمیونسٹ سرکار کو نہ مان کر تو اُس نے یہ ثابت کردیا هے کہ یو . این . او . امریکہ کے هاتھ کا کھلونا هے وہ یو . این . او . کا ممبر نہیں هے .

جنھوں نے یو . این . او . کا ودھان پڑھا هے یا جو اس سے واقف هیں یا جو اب بھی تکلیف اُٹھاکر یو . این . او . ودھان پر نظر ڈالیں' وہ جان سکتے هیں کہ یو . این . او . کا حال کا پرستاو کتنا ودھان کے خلاف هے اور اس کے آدھار پر دیا هوا پریسیڈنٹ ٹرومین کا بیان کتنا بالو کی نیو پر کھڑے هوئے محل جیسا هے . هندستان اور مصر نے ایسے موقعہ پر کسي وجہ اور کسی دور اندیشی سے تٹستھ هوکر بڑے معرکے کا کام کیا هے . اور هندستان اور مصر کي اِخلاقی شان کو کافی اونچا اُٹھا دیا هے .

برطانیہ نے پریسیڈنٹ ٹرومین کی پیٹھ ٹھوک کر اگر بھبھکي اور گھڑکي کی پیٹھ ٹھونکي هے تب تو هم یهي کہیں گے کہ وہ بہت بدھی مان هے . پر اگر اس کے پیچھے هر برائي بھلائی میں امریکہ کے ساتھ دینے کی بات چھپی هوئي هے یا اگر یو . این . او . کے ودھان ورودھ پرستاؤں کا سمرتھن بھی چھپا هوا هے تب هم یہ کہینگے کہ برطانیہ اس وقت وہ قدم اُٹھا رہا هے جو اس کے لئے ٹھیک نہیں هے . جو برطانیہ اپنے تاج کے سب سے بڑے هیرے

(٥٧)

सिजल उर्दू नागरी हर्फ़ों में भी न पढ़ा कर, ऐसी उर्दू को कोर्स में न शामिल करके अपने बाल बच्चों को गँवार तो न बनाओ. पंडित बन कर भी तो गँवार रहेंगे हमारे बच्चे अगर खड़ी बोली हिन्दी का वह निखार उन्होंने नहीं देखा जो उर्दू ही में मिलती है. हिन्दी प्रेमियों से यह पूछूँ कि न पूछूँ कि भैया मेरी बात, मेरे प्रस्ताव में हिन्दी का कल्यान है या नहीं ? क्या उर्दू से डर कर उसकी परछाईं तक न पड़ने देना हिन्दी की सेवा है ? गँवारपन का सैलाब आ चला है. उर्दू से जाहिल बना कर हम जैसे पढ़ने वाले ऊँचे दर्जों में भेज रहे हैं उन का गँवारपन देख कर, उनकी फूहड़ बोली सुन कर हिन्दी के समझदार पढ़ाने वाले घबरा जाते हैं. हिन्दी बोलना क्या प्रसाद, पन्त, निराला या मैथिली शरण गुप्त हमारे बच्चों को सिखा सकते हैं ? उनकी रचनाओं को हिन्दी बोल चाल से, टकसाली हिन्दी से क्या वास्ता. यह हिन्दी तो उर्दू ही शायर हिन्दी पढ़ने वाले बच्चों को सिखा सकते हैं क्योंकि उनकी रचनाओं में साँचे में ढली हुई खड़ी बोली हमें मिलती है—मिसालें आप के सामने हैं क्या आप सोच समझ कर कुछ फ़ैसला करेंगे या अपने झूटे डर को अकड़, नफ़रत, गुस्से, छूत छात और जबरदस्ती के पर्दे में छिपाते रहेंगे. रखिये उर्दू से बच्चों को जाहिल और बनाइये उन्हें गँवार और गूंगा.

मैं हिन्दी प्रेमियों से पूछता हूं कि अगर, आप जिसे हिन्दी भाषा और साहित्य समझते हैं उसका जानना और पढ़ना और दफ़्तर या सरकारी कामों में उसे बरतना या ब्योहार में लाना सब के लिये लाज़िमी बना चुकने के बाद भी, हिन्दी में इम्तेहान पास करना सब

سجل اُردو ناگری حرفوں میں بھي نہ پڑھاکر ، ایسی اُردو کو کورس میں نہ شامل کرکے اپنے بال بچوں کو گنوار تو نہ بناؤ ـ پنڈت بنکر بھي تو گنوار رھیں گے ھمارے بچے اگر کھڑي بولی ھندي کا وہ نکھار انھوں نے نہیں دیکھا جو اُردو ھی میں ملتی ھے ـ ھندي پریمیوں سے یہ پوچھوں کہ نہ پوچھوں کہ بھیا میري بات ، میرے پرستاؤ میں ھندي کا کلیان ھے یا نہیں ؟ کیا اُردو سے ڈر کر اس کی پرچھائیں تک نہ پڑنے دینا ھندی کی سیوا ھے ـ گنورپن کا سیلاب آچلا ھے ـ اُردو سے جاھل بناکر ھم جیسے پڑھنے والے اونچے درجوں میں بھیج رھے ھیں ان کا گنورپن دیکھکر ، انکی پھوھڑ بولی سن کر ھندي کے سمجھدار پڑھانے والے گھبرا جاتے ھیں ـ ھندي بولنا کیا پرسادم پنت، نرالا یا میتھلی شرن گپت ھمارے بچوں کو سکھا سکتے ھیں ؟ ان کی رچناؤں کو ھندي بول چال سے ٹکسالی ھندي سے کیا واسطہ ـ یہ ھندي تو اُردو ھی شاعر ھندي پڑھنے والے بچوں کو سکھا سکتے ھیں کیونکہ ان کی رچناؤں میں سانچے میں ڈھلی ھوئی کھڑي بولی ھمیں ملتی ھے ـ مثالیں آپ کے سامنے ھیں ـ کیا آپ سوچ سمجھکر کچھہ فیصلہ کریں گے یا اپنے جھوٹے ڈر کو اکڑ' نفرت' 'غصے' چھوت چھات اور زبردستی کے پردے میں چھپاتے رھیں گے ـ رکھئے اردو سے بچوں کو جاھل اور بنائیے انھیں گنوار اور گونگا ـ

میں ھندي پریمیوں سے پوچھتا ھوں کہ اگر آپ جسے ھندي بھاشا اور ساھتیہ سمجھتے ھیں اس کا جاننا اور پڑھنا اور دفتر یا سرکاری کاموں میں اسے برتنا یا بیوھار میں لانا سب کے لئے لازمی بنا چکنے کے بعد بھی' ھندي میں امتحان پاس کرنا سب

हिन्दुस्तान का लालच छोड़ चुका हो उस में तो बेहद एख़लाक़ी बल होना चाहिये था और क्या ही अच्छा होता अगर वह यू. एन. ओ. में हाल के प्रस्ताव के वक़्त हिन्दुस्तान और मिस्र का अनुकरन करता. काश ! ऐसा हुआ होता तो आज के अख़बारों की झंडा लकीरें कुछ और ही होतीं.

मुनरो के सिद्धान्त का भक्त अमरीका क्यों मुनरो की छाती पर मूंग दल रहा है ? आज दुनिया में शान्ति फैल सकती . अगर अमरीका रूज़वेल्ट और ट्रूमैन की नीति को छोड़ मुनरो सिद्धान्त अपना ले और वह दुनिया में उसी के प्रचार के लिये खड़ा होजाय. मुनरो सिद्धान्त था " अमरीका अमरीका वालों के लिये " यानी न अमरीका यूरप एशिया के मामलों में दख़ल देगा और न यूरप एशिया वालों का अपने मामलों में दख़ल देना बरदाश्त कर सकेगा.

मुनरो सिद्धान्त को रू से अमरीका वाले अगर आज इस बात पर डट जायँ कि कोरिया कोरिया वालों के लिये तो हमें उम्मीद है कि सारे मुल्क ख़ुशी से अमरीका का साथ देंगे और शायद रूस भी किसी तरह की आना कानी न करेगा. अमरीका यह न समझे कि आज जो मुल्क उस का साथ दे रहे हैं, वह सच्चे जी से उसका साथ दे रहे हैं आज के मुल्कों का साथ अमरीका ऐसा ही साथ समझे जैसे किसी घर की लूट में घर का बेटा भी अपनी जान बचाने की ख़ातिर डाकुओं का साथ दे, या इस ख़याल से डाकुओं का साथ दे कि उसके हिस्से में जो रुपया आयेगा उससे वह कुछ न कुछ अपने घर वालों की मदद कर सकेगा. हिन्दुस्तान और मिस्र की

ھندستان کا لالچ چھوڑ چکا ھو اس میں تو بے حد اخلاقی بل ھونا چاھئے تھا اور کیا ھی اچھا ھوتا اگر وہ یو . این . او . میں حال کے پرستاؤ کے وقت ھندستان اور مصر کا انو کرن کرتا . کاش ! یسا ھوا ھوتا تو آج کے اخباروں کی جھنڈا لکیریں کچھ اور ھی ھوتیں .

منرو کے سدھانت کا بھکت امریکہ کیوں منرو کی چھاتی پر مونگ دل رھا ھے ؟ آج دنیا میں شانتی پھیل سکتی ھے اگر امریکہ روزویلٹ اور ٹرومین کی نیتی کو چھوڑ منرو سدھانت اپنالے اور وہ دنیا میں اسی کے پرچار کے لئے کھڑا ھوجائے . منرو سدھانت تھا " امریکہ امریکہ والوں کیلئے " یعنی نہ امریکہ یورپ ایشیا کے معاملوں میں دخل دیگا اور نہ یورپ ایشیا والوں کا اپنے معاملہ میں دخل دینا برداشت کرسکیگا .

منرو سدھانت کی رو سے امریکہ والے اگر آج اس بات پر ڈٹ جائیں کہ کوریا کوریا والوں کیلئے تو ھمیں اُمید ھے کہ سارے ملک خوشی سے امریکہ کا ساتھ دینگے اور روس بھی شاید کسیطرح کی آنا کانی نہ کریگا . امریکہ یہ نہ سمجھے کہ آج جو ملک اس کا ساتھ دے رھے ھیں، وہ سچے جی سے اس کا ساتھ دے رھے ھیں . آج کے ملکوں کا ساتھ امریکہ ایسا ھی ساتھ سمجھے جیسے کسی گھر کی لوٹ میں گھر کا بیٹا بھی اپنی جان بچانے کی خاطر ڈاکوؤں کا ساتھ دے کہ اس کے حصے میں جو روپیہ آئیگا اس سے وہ کچھ نہ کچھ اپنے گھر والوں کی مدد کرسکیگا . ھندستان اور مصر کی

की राथा का अमरीका का वह निनके समझना चाहिये जो यह बता देते है कि हवा का रुख किधर है. होसकता है अमरीका या अमरीका और बरतानिया दोनों फूंक मार कर तिनकों की दिशा बदलदें पर इस से क्या हवा का रुख बदल जायगा.

अमरीका जापान पर छाया हुआ है और कोई एशियाई मुल्क यह नहीं पसन्द करता कि अमरीका वहाॅ छाया रहे. रूस एशियाई मुल्क है. उसे भी जापान की यह हालत पसन्द नहीं हो सकती. और अमरीका एशिया को अपने दबाव में रखने के लिये जापान पर छाये रहना ज़रूरी समझता है. जापन से लगा हुआ रूस का देश मन्चूरिया है. और जापान और मन्चूरिया के बीच में कोरिया का प्रायद्वीप है. इस नाते भी अमरीका कोरिया के एक हिस्से को अपने क़ाबू में रखना चाहता है और इस वास्ते उसी को सबसे ज्यादा जरूरत हो सकती है कि वह कोरिया में घरेलू लड़ाई बनाये रखे और इसी वजह से वह चीन की घरेलू लड़ाई का अन्त नहीं होने देता. यह मोटी सी बात है कि कोरिया वाले एक होकर एशिया के ज्यादा तरफ़दार होंगे न कि अमरीका के. अमरीका को वह किसी तरह अपना नहीं मान सकते. अगर वह अपना मानते हैं तो यही समझना चाहिये कि वह या तो अमरीका के तालीमी नशे में चूर होकर बड़बड़ा रहे हैं या डालरी नशे में बदमस्त हो कर बेजा वफ़ादारी का ढोल पीट रहे हैं. अमरीका क्यों नहीं चीन के उन कर्नैलों और जर्नैलों से सबक़ लेता जो उसी की दी हुई बन्दूक़ बग़ल में दबा कर माऊ की फ़ौजों से जा मिलते थे? कोरिया क्या बुरा करता है अगर वह अपने पड़ोसी देश रूस से दोस्ती रखना चाहता है ?

رایوں کو امریکہ کو وہ تنکے سمجھنا چاھئے جو یہ بتا دیتے ھیں کہ ھوا کا رخ کدھر ھے . ھوسکتا ھے امریکہ یا امریکہ اور برطانیہ دونوں پھونک مارکر تنکے کی دشا بدل دیں پر اس سے کیا ھوا کا رخ بدل جائیگا ؟

امریکہ جاپان پر چھایا ھوا ھے اور کوئي ایشیائی ملک یہ نہیں پسند کرتا کہ امریکہ وھاں چھایا رھے . روس ایشیائی ملک ھے . اسے بھي جاپان کي یہ حالت پسند نہیں ھوسکتي اور امریکہ ایشیا کو اپنے دباؤ میں رکھنے کے لئے جاپان پر چھائے رھنا ضروري سمجھتا ھے . جاپان سے لگا ھوا روس کا دیش منچوریا ھے . اور جاپان اور منچوریا کے بیچ میں کوریا کا پرائے دویپ ھے . اس ناتے بھی کوریا امریکہ کے ایک حصہ کو اپنے قابو میں رکھنا چاھتا ھے اور اسی واسطے اُسی کو سب سے زیادہ ضرورت ھوسکتی ھے کہ وہ کوریا میں گھریلو لڑائی بنائے رکھے اور اسیوجہ سے وہ چین کي گھریلو لڑائی کا انت نہیں ھونے دیتا . یہ موتی سی بات ھے کہ کوریا والے ایک ھوکر ایشیا کے زیادہ طرفدار ھونگے نہ کہ امریکہ کے . امریکہ کو وہ کسطرح اپنا نہیں مان سکتے . اگر وہ اپنا مانتے ھیں تو یہي سمجھنا چاھئے کہ وہ یا تو امریکہ کے تعلیمي نشے میں چور ھوکر بڑبڑا رھے ھیں یا ڈالري نشے میں بدمست ھوکر بیجا وفاداری کا ڈھول پیٹ رھے ھیں . امریکہ کیوں نہیں چین کے ان کرنیلوں اور جرنیلوں سے سبق لیتا جو اسی کی دی ھوئي بندوق بغل میں دبا کر ماؤ کی فوجوں سے جا ملتے تھے ؟ کوریا کیا برا کرتا ھے اگر وہ اپنے پڑوسي دیش روس سے دوستي رکھنا چاھتا ھے ؟

६

और कोरिया क्या बुरा करता है अगर वह यह नहीं चाहता कि अमरीका वाले दक्खिनी कोरिया में रहने पायें ? और वह यों भी तो अमरीका वालों को जल्दी से जल्दी दक्खिनी कोरिया से निकलते हुए देखने का हक़दार है कि पाँच बरस में अमरीका वालों ने दक्खिनी कोरिया वालों को जो कुछ सिखाया यही तो सिखाया कि वह अमरीका को कच्चा माल भेजते रहें और अमरीका के अफ़सरों को अपना ख़ुदा मानते रहें ? क्या सिउल का तीन दिन में उत्तरी कोरिया के हाथ में आजाना इस बात का सबूत नहीं है कि अमरीका वालों ने दक्खिनी कोरिया वालों को इतना नामर्द बना दिया है जितना जापान ने भी नहीं बनाया था. तभी तो दक्खिनी कोरिया नामधारी जन-राज का प्रेसीडेन्ट पहले ही उत्तरी हमले में जेनरल मेकार्थर से प्रार्थना करता है कि "मुझे बचाइये."

यह तो हमने कहने के लिये कह दिया. लेकिन अगर अमरीका ने दक्खिनी कोरिया को हर तरह से मज़बूत भी बना दिया होता तब भी हम यही कहते कि अमरीका को किसी तरह वहाँ रहने का न हक़ था, न है और न रहना चाहिये.

दुनिया में कोरिया की लड़ाई अशान्ति पैदा कर सकती है लेकिन तभी जब अमरीका उसको उकसाने भड़काने और उसमें अमली हिस्सा लेने का काम करता रहेगा. लेकिन अगर वह जापान छोड़ने की तारीख़ तय कर दे और चीन की लड़ाई में हिस्सा लेना बन्द कर दे और कोरिया की घरेलू लड़ाई को कोरिया पर छोड़ दे और एशिया के मामलों में एशिया वालों के बलाय बिना दखल न दे तो

اور کوریا کیا برا کرتا هے اگر وہ یہ نہیں چاهتا کہ امریکہ والے دکھنی کوریا میں رهنے پائیں ؟ اور وہ یوں بھی تو امریکہ والوں کو جلدی سے جلدی دکھنی کوریا سے نکلتے هوئے دیکھنے کا حقدار هے کہ پانچ برس میں امریکہ والوں نے دکھنی کوریا والوں کو جو کچھ سکھایا یہی تو سکھایا کہ وہ امریکہ کو کچا مال بھیجتے رهیں اور امریکہ کے افسروں کو اپنا خدا مانتے رهیں ؟ کیا سیئول کا تین دنمیں اُتری کوریا کے هاتھ میں آجانا اس بات کا ثبوت نہیں هے کہ امریکہ والوں نے دکھنی کوریا والوں کو اتنا نامرد بنا دیا هے جتنا جاپان نے بھی نہیں بنایا تھا . تبھی تو دکھنی کوریا نامدھاری جن راج کا پریسیڈنٹ پہلے هی اُتری حملے میں جنرل میک آرتھر سے پرارتھنا کرتا هے کہ " مجھے بچائیے ."

یہ تو هم نے کہنے کے لئے کہدیا . لیکن اگر امریکہ نے دکھنی کوریا کو هر طرح سے مضبوط بھی بنا دیا هوتا تب بھی هم یہی کہتے کہ امریکہ کو کسی طرح وهاں رهنے کا نہ حق تھا نہ هے اور نہ رهنا چاهئے .

دنیا میں کوریا کی لڑائی اشانتی پیدا کرسکتی هے لیکن تبھی جب امریکہ اسکو اُکسانے بھڑکانے اور اُسمیں عملی حصہ لینے کا کام کرتا رهیگا . لیکن اگر وہ جاپان چھوڑنے کی تاریخ طے کردے اور چین کی لڑائی میں حصہ لینا بند کردے اور کوریا کی گھریلو لڑائی کوکوریاپر چھوڑدے ایشیا کے معاملوں میں ایشیاوالوں کے بلائے بدا دخل

शान्ति की गारन्टी कर देता है. नहीं तो एशिया की अशान्ति का जिम्मेदार एशिया वाले जी से अमरीका को ही समझते रहेंगे.

अब अमरीका सोच ले !

२१-६-५०

भगवान दीन.

شانتی کی گارنٹی کردیتا ھے . نہیں تو ایشیا کی آشانتی کا ذمہدار ایشیا والے جی سے امریکہ کو ھی سمجھتے رھینگے .

اب امریکہ سوچ لے !

۲۱-۶-۵۰

بھگوان دین

पंजाब हमें क्या सिखाता है

लेखक. पंडित सुन्दरलाल

पंडित सुन्दरलाल जी ने, महात्मा गांधी की सलाह से. अक्तूबर सन १९४७ में पच्छिमी और पूरबी पंजाब का दौरा किया था. इस छोटे से बयान में उन्होंने वहाँ की भयंकर बरबादी और आपसी मारकाट की वजह से जो जो नतीजे लोगों को भुगतने पड़ रहे हैं उनका बहुत ही दर्दनाक वर्नन किया है. आख़ीर में. आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिये, कुछ सुझाव भी पेश किये हैं. हमें विश्वास है कि पंजाब की मौजूदा हालत को ठीक तरह से समझने में इस बयान से बड़ी मदद मिलेगी.

किताब उर्दू और नागरी दोनों लिखावटों में मिल सकती है. क़ीमत चार आने.

मैनेजर—'नया हिन्द' ४८, बाई का बाग़, इलाहाबाद

پنجاب همیں کیا سکھاتاھے

لیکھک' پنڈت سندر لال

پنڈت سندر لال جی نے ' مہاتما گاندھی کی صلاح سے' اکتوبر سن ۱۹۴۷ میں پچھمی اور پوربی پنجاب کا دورا کیا تھا. اِس چھوٹے سے بیان میں انہوں نے وھاں کی بھینکر بربادی اور آپسی مارکاٹ کی وجہ سے جو جو نتیجے لوگوں کو بھگتنے پڑ رھے ھیں اُن کا بہت ھی دردناک ورنن کیا ھے. آخیر میں آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کیلئے' کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے ھیں. ھمیں وشواس ھے کہ پنجاب کی موجودہ حالت کو ٹھیک طرح سے سمجھنے میں اِس بیان سے بڑی مدد ملے گی.

کتاب اُردو اور ناگری دونوں لکھاوٹوں میں مل سکتی ھے. قیمت چار آنے.

منیجر - 'نیا ھند' ۴۸ بائی کا باغ ' اِلہ آباد.

ज़बरदस्ती न कीजिये

(भाई सरस्वती सरन)

दूसरी बड़ी लड़ाई के बाद संसार में जितनी उथल पुथल मची है वह इतिहास में अपनी मिसाल आप ही है. राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक मैदानों में ज़बरदस्त दिमाग़ी टकराव हो रहे हैं. क़ुदरती बात है कि इस भंवरजाल में असलियत और सच्चाई कुछ इस तरह से गुम हो जायँ जिन्हें खोजकर लाने का बड़े बड़े ग़ोता ख़ोरों का दावा भी झूटा साबित हो.

हमारे देश में भी यह दिमाग़ी अशांति पूरे ज़ोर से काम कर रही है. दूसरे सवालों के अलावा भाषा, लिपि और संस्कृति के सवालों पर सर फुटौवल हो रही है. सर फुटौवल इसलिये कहना पड़ता है कि इन सवालों पर जो बहसें होती हैं उनपर ठंडे दिमाग़ से काम लेने के बजाय अक्सर ज़ोरदार विरोध, फिर गर्मा गर्मी और आख़िर में गाली गलौज तक की नौबत आ जाती है. कुछ अजब नहीं कि कुछ समय के बाद भाषा और लिपि के सवालों को लेकर हमारे देश में साम्प्रदायिक दंगों की तरह नये ढङ्ग के दंगे होने लगें. तेलगू और उड़िया के समर्थकों में भाषा के सवाल पर एक बार पत्थरबाज़ी हो ही चुकी है. ठीक भी है, धर्म के नाम पर जब इन्सानों का ख़ून जायज़ है तो संस्कृति और सभ्यता के नाम पर गाली गलौज ज़रूर ही की जा सकती है.

زبردستی نہ کیجئے

(بھائی سرسوتي سرن)

دوسري بڑی لڑائي کے بعد سنسار میں جتنی اُتھل پتھل مچي ہے وہ اتہاس میں اپنی مثال آپ ہی ہے . راج نیتک' آرتھک' ساماجک اور سانسکرتک میدانوں میں زبردست دماغی ٹکراو ہو رہے ہیں . قدرتی بات ہے کہ اس بھنور جال میں اصلیت اور سچائی کچھ اس طرح سے گم ہو جائیں جنھیں کھوج کر لانے کا بڑے بڑے غوطہ خوروں کا دعوی بھی جھوٹا ثابت ہو .

ہمارے دیش میں بھی یہ دماغی اشانتی پورے زور شور سے کام کر رہي ہے . دوسرے سوالوں کے علاوہ بھاشا' لپی اور سنسکرتی کے سوالوں پر سر پھٹول ہو رہی ہے . سر پھٹول اسلئے کہنا پڑتا ہے کہ ان سوالوں پر جو بحثیں ہوتی ہیں اُن پر ٹھنڈے دماغ سے کام لینے کے بجائے اکثر زور دار وررودھ' پھر گرما گرمی اور آخر میں گالی گلوج تک کی نوبت آجاتی ہے . کچھ عجب نہیں کہ کچھ سمے کے بعد بھاشا اور لپي کے سوالوں کو لیکر ہمارے دیش میں سامپردائک دنگوں کی طرح نئے ڈھنگ کے دنگے ہونے لگیں . تیلگو اور اُڑیا کے سمرتھکوں میں بھاشا کے سوال پر ایک بار پتھر بازي ہو ہی چکی ہے . ٹھیک بھي ہے' دھرم کے نام پر انسانوں کا خون جائز ہے تو سنسکرتی اور سبھیتا کے نام پر گالي گلوج ضرور هي کیجا سکتی ہے .

लेकिन भाषा और लिपि के सवालों पर जो बाज़ीगरी हो रही है उसे देख कर इसलिये दुख और होता है कि इस सारी बहस मे भाषा के आधार को ही जड़ से खत्म कर दिया जाता है. खुली असलियत की तरफ से आंखे मूंद कर दिमाग़ी घोड़ों को बे लगाम छोड़ दिया जाता है. इसी रौ मे जो नये नये सुझाव पेश किये गये हैं उन्हें बरठोस रूप मे जनता के आगे लाया जाता है तो वह भौंचक रह जाती है. मेरा दावा है कि भाषा और लिपि सम्बन्धी जितने भी सुझाव अभी तक सामने आये हैं उनमें दो एक को छोड़ कर बाकी किसी मे जनता ने अपनी मुश्किलों का हल नहीं देखा. देखा क्या, सिर्फ तरह तरह के तमाशे, जिनसे कुछ देर तो हंसी आई और बाद में तबियत उकताने लगी.

ऐसा क्यों होता है ? इसीलिये कि ज्यादातर सुझाव देने वाले भाषा के मूल स्रोत जनता और उसकी ज़रूरतों की तरफ ध्यान नहीं देते. या यों कहना चाहिये कि वह जनता को ज़िंदा और समझ बूझ रखने वाली चीज़ नहीं बल्कि मशीन समझते हैं जिसके हैंडिल को इधर उधर घुमाने से वह घुमाने वाले की मनचाही दिशा में दौड़ना शुरू कर दे. इससे ज्यादा हंसी की बात और क्या हो सकती है.

इसलिये यह लोग सुझाव देते समय यह भूल जाते हैं कि कोई भाषा या लिपि या संस्कृति एक दिन में बनाई, मिटाई, बिगाड़ी या संवारी नहीं जा सकती. जब तक पूरी की पूरी जनता या उसका बहुत बड़ा हिस्सा किसी सुझाव को नहीं अपना लेता तब तक भाषा पर उसका असर टिकाऊ नहीं हो सकता. जबरदस्ती करने का सिर्फ यही नतीजा होगा कि उलझे हुए दिमाग़ और उलझ जायँगे.

لیکن بھاشا اور لپی کے سوالوں پر جو بازی گری ہو رہی ہے اُسے دیکھ کر اس لئے دکھ اور ہوتا ہے کہ اس ساری بحث میں بھاشا کے آدھار کو ہی جڑ سے ختم کردیا جاتا ہے . کھلی اصلیت کی طرف سے آنکھیں موند کر دماغی گھوڑوں کو بے لگام چھوڑ دیا جاتا ہے . اس رو میں جو نئے نئے سجھاؤ پیش کئے گئے ہیں اُنہیں ٹھوس روپ میں جب جنتا کے آگے لیا جاتا ہے تو وہ بھوچک رہ جاتی ہے . میرا دعویٰ ہے کہ بھاشا اور لپی سمبندھی جتنے بھی سجھاؤ ابھی تک سامنے آئے ہیں ان میں دو ایک کو چھوڑ کر باقی کسی میں جنتا نے اپنی مشکلوں کا حل نہیں دیکھا . دیکھا کیا صرف طرح طرح کے تماشے جن سے کچھ دیر تو ہنسی آئی اور بعد میں طبیعت اُکتانے لگی .

ایسا کیوں ہوتا ہے ؟ اسی لئے کہ زیادہ تر سجھاؤ دینے والے بھاشا کے مول سروت جنتا اور اُس کی ضرورتوں کی طرف دھیان نہیں دیتے . یا یوں کہنا چاہئے کہ وہ جنتا کو زندہ اور سمجھ بوجھ رکھنے والی چیز نہیں بلکہ مشین سمجھتے ہیں جس کے ہینڈل کو اِدھر اُدھر گھمانے سے وہ گھمانے والے کی من چاہی دشا میں دوڑنا شروع کر دے . اس سے زیادہ ہنسی کی بات اور کیا ہو سکتی ہے .

اسی لئے یہ لوگ سجھاؤ دیتے سمے یہ بھول جاتے ہیں کہ کوئی بھاشا یا لپی یا سنسکرتی ایک دن میں بنائی، مٹائی، بگاڑی یا سنواری نہیں جاسکتی جب تک پوری کی پوری جنتا یا اس کا بہت بڑا حصہ کسی سجھاؤ کو نہیں اپنا لیتا تب تک بھاشا پر اُس کا اثر ٹکاؤ نہیں ہو سکتا زبردستی کرنے کا صرف یہی نتیجہ ہوگا کہ اُلجھے ہوئے دماغ اور اُلجھ جائینگے .

भाषा के मामले में इस तरह की उलझन डालने वाले कितने सुझाव दिये गये हैं इनका कोई हिसाब नहीं है. मैं इस समय इनका जिक्र नहीं करूंगा. मैं इस समय लिपि के सवाल को लेता हूं जो ऊपर से देखने में इतना उलझा हुआ नहीं मालूम होता. राष्ट्र भाषा की लिपि देवनागरी रहे. इस मत को लगभग सभी मानते हैं लेकिन एक दल ऐसा भी है जिसकी राय में फ़ारसी या अरबी लिपि को बिलकुल खत्म कर देना चाहिये. इन लोगों में कुछ तो ईमानदारी से यह बात कहते हैं और कुछ की नियत पर उचित रूप से शक किया जा सकता है. ईमान दारी से यह सुझाव देने वाले वह लोग हैं जिनका खयाल है कि हिन्दी और उर्दू के, जो दरअसल एक ही भाषा है, झगड़े का खास कारन अलग अलग लिपियों का होना है इसलिये इनमें से एक को खत्म कर दिया जाय. इनके अलावा कुछ लोग ऐसे भी जिन्हें उम्मीद है कि फ़ारसी लिपि के साथ ही उर्दू भाषा भी खत्म हो जायगी.

(३५)

मैं यहाँ पर सिर्फ उन लोगों के विचारों पर लिखूंगा जो ईमानदारी से समझते हैं कि फ़ारसी लिपि को खत्म करके हमें भाषा की एकता बनानी चाहिये. जून के "नया हिन्द" में इलाहाबाद यूनीवर्सिटी के डाक्टर एजाज़ हुसेन साहब का लेख इसी विषय पर छपा है. डाक्टर साहब की राय में फ़ारसी लिपि छोड़ देनी चाहिये. क्योंकि "उर्दू से हिन्दी वालों के बैर की सबसे बड़ी वजह इसका वह रूप है जिसमें यह लिखी जाती है. मेरा मतलब रस्मुलखत यानी लिपि से है."

यह कहने का साहस तो शायद ही कोई कर सके कि इन भाषाओं के अलगाव का लिपि से कोई वास्ता नहीं, लेकिन मेरे खयाल से इसे

بھاشا کے معاملے میں اس طرح کی اُلجھن ڈالنے والے کتنے سجھاؤ دیئے گئے ھیں اِن کا کوئی حساب نہیں ھے . میں اِس سمے اُنکا ذکر نہیں کروں گا . میں اس سمے لپی کے سوال کو لیتا ھوں جو اوپر سے دیکھنے میں اتنا اُلجھا ھوا نہیں معلوم ھوتا . راشٹر بھاشا کی لپی دیوناگری رھے . اس مت کو لگ بھگ سبھی مانتے ھیں . لیکن ایک دل ایسا بھی ھے جس کی رائے میں فارسی یا عربی لپی کو بالکل ختم کر دینا چاھئے ان لوگوں میں کچھ تو ایمانداری سے یہ بات کہتے ھیں اور کچھ کی نیت پر اُچت روپ سے شک کیا جا سکتا ھے . ایمانداری سے سجھاؤ دینے والے وہ لوگ ھیں جنکا خیال ھے کہ هندی اور اُردو کے ، جو در اصل ایک ھی بھاشا ھیں ، جھگڑے کا خاص کارن الگ الگ لپیوں کا ھونا ھے اس لئے ان میں سے ایک کو ختم کردیا جائے . ان کے علاوہ کچھ لوگ ایسے بھی ھیں جنھیں اُمید ھے کہ فارسی لپی کے ساتھ ھی اُردو بھاشا بھی ختم ھو جائیگی .

(٣٥)

میں یہاں پر صرف اُن لوگوں کے وچاروں پر لکھوں گا جو ایمانداری سے سمجھتے ھیں کہ فارسی لپی کو ختم کرکے ھمیں بھاشا کی ایکتا بنانی چاھئے جون کے " نیا ھند " میں الہ آباد یونیورسٹی کے ڈاکٹر اعجاز حسین صاحب کا لیکھ اسی وشے پر چھپا ھے . ڈاکٹر صاحب کی رائے میں فارسی لپی چھوڑ دینی چاھئے کیونکہ "اُردو سے هندی والوں کے بیر کی سب سے بڑی وجہ اس کا وہ روپ ھے جس میں یہ لکھی جاتی ھے . میرا مطلب رسم الخط یعنی لپی سے ھے ."

یہ کہنے کا ساھس تو شاید ھی کوئی کر سکے کہ ان بھاشاؤں کے الگاؤ کا لپی سے کوئی واسطہ نہیں . لیکن میرے خیال سے اسے

बैर की सबसे बड़ी वजह नहीं कहा जा सकता. इंशा अल्ला खां को हिन्दी और उर्दू दोनों के समर्थक गर्व से अपना लेखक कहते हैं. उनकी 'रानी केतकी की कहानी' हिन्दुस्तानी भाषा की बे जोड़ चीज़ है. हिन्दुस्तानी भाषा को दिनरात कोसने वाले हिन्दी और उर्दू दोनों के समर्थक रानी केतकी की कहानी पर उंगली उठाने का साहस नहीं करते. अब सवाल यह है कि क्या आज तक किसीने यह झगड़ा भी पैदा किया कि रानी केतकी की कहानी फ़ारसी लिपि में लिखी गई थी या नागरी लिपि में. इंशा अल्ला ख़ॉ नवाब अवध के दरबार में थे और उर्दू और फ़ारसी के बहुत बड़े कवि थे. रानी केतकी की कहानी भी फ़ारसी लिपि में लिखी गई थी. लेकिन इस वजह से कोई हिन्दी प्रेमी भी उस से नफ़रत नहीं करता.

हिन्दी और उर्दू दोनों में गद्य या नस्र के जो सब से पहले नमूने मिलते हैं वह हमें दोनों लिपियों में मिलते हैं. मेरा मतलब तोता मैना, सिंहासन बत्तीसी, बैताल पचीसी वग़ैरा से है. यह कहानियाँ आज कितनी ही नीची क्यों न समझी जायँ पर हमारे कहानी साहित्य के विकास में इनकी भी एक जगह है. इनके बारे में लिपी के कारन कभी झगड़े फ़साद की नौबत न आई. बल्कि यह भी कोई खोज कर्ता ही बता सकता है कि पहले पहल इन्हें किस लिपि में लिखा गया था. इन मिसालों के देने से मेरा मतलब यह है कि लिपि के अलग होने पर भी एक ही भाषा में साहित्य पैदा किया जा सकता है बशर्ते कि वह तनदुरुस्त साहित्य हो.

डाक्टर साहब ने आगे चलकर कहा है कि "फ़ारसी ख़त कितना ही ख़ूबसूरत सही मगर छपाने में जितनी कठिनाइयाँ हैं उन्हें

(३७)

بیر کی سب سے بڑی وجہ نہیں کہا جا سکتا ۔ انشاء اللہ خاں کو ہندی اور اُردو دونوں کے سمرتھک گرو سے اپنا لیکھک کہتے ہیں ۔ ان کی 'رانی کیتکی کی کہانی' ہندستانی بھاشا کی بے جوڑ چیز ہے ۔ ہندستانی بھاشا کو دن رات کوسنے والے ہندی اور اُردو دونوں کے سمرتھک رانی کیتکی کی کہانی پر اُنگلی اُٹھانے کا ساہس نہیں کرتے ۔ اب سوال یہ ہے کہ کیا آج تک کسی نے یہ جھگڑا بھی پیدا کیا کہ رانی کیتکی کی کہانی فارسی لپی میں لکھی گئی تھی یا ناگری لپی میں انشاء اللہ خاں نواب اودھ کے دربار میں تھے اور اُردو اور فارسی کے بہت بڑے کوی تھے ۔ رانی کیتکی کی کہانی بھی فارسی لپی میں لکھی گئی تھی ۔ لیکن اسوجہ سے کوئی ہندی پریمی اس سے نفرت نہیں کرتا ۔

ہندی اور اُردو دونوں میں گدیہ یا نثر کے جو سب سے پہلے نمونے ملتے ہیں وہ ہمیں دونوں لپیوں میں ملتے ہیں میرا مطلب طوطا مینا، سنگھاسن بتیسی، بیتال پچیسی وغیرہ سے ہے ۔ یہ کہانیاں آج کتنی ہی نیچی کیوں نہ سمجھی جائیں پر ہمارے کہانی ساہتیہ کے وکاس میں ان کی بھی ایک جگہ ہے ۔ ان کے بارے میں لپی کے کارن کبھی جھگڑے فساد کی نوبت نہ آئی ۔ بلکہ یہ بھی کوئی کھوج کرتا ہی بتا سکتا ہے کہ پہلے پہل انہیں کس لپی میں لکھا گیا تھا ۔ ان مثالوں کے دینے سے میرا مطلب یہ ہے کہ لپی کے الگ ہونے پر بھی ایک ہی بھاشا میں ساہتیہ پیدا کیا جاسکتا ہے بشرطیکہ وہ تندرست ساہتیہ ہو ۔

ڈاکٹر صاحب نے آگے چل کر کہا ہے کہ "فارسی خط کتنا ہی خوبصورت سہی مگر چھپانے میں جتنی کٹھنائیاں ہیں انہیں

(۳۷)

देखकर उस खूबसूरती से हाथ उठाना पड़ता है." यह दलील इसबात के पक्ष में है कि उर्दू भाषा को नागरी लिपि में लिखा जाये लेकिन ताज्जुब यह है आगे चलकर अरबी लिपि के खिलाफ़ वह इसी दलील को उलटी कर देते हैं और कहते हैं "लेकिन दिक्क़त यह है कि यह टाइप इतने खूबसूरत नहीं होते जितना आप चाहते हैं. आप नज़रों को तकलीफ़ होती है." डाक्टर साहब की यह दलील उर्दू पढ़ने वाली जनता को कितना संतोष दे सकेंगी यह तो वही बता सकती है, लेकिन मुझे इस सिलसिले में यह कहना है कि अरबी लिपि, फ़ारसी लिपि की आदी जनता को कितनी ही ऊटपटी क्यों न लगे लेकिन देवनागरी लिपि से कहीं आसान पड़ेगी.

(५८)

डाक्टर साहब की एक और दलील मुझे उलटी मालूम हुई. आप कहते हैं कि कुछ लोगों का यह एतराज़ ग़लत है कि "लिपि बदलने से उर्दू ज़बान ही बदल जायगी क्योंकि जिस ज़बान की लिपि ली जायगी वह उस पर इस तरह छा जायगी कि उर्दू उर्दू न रह जायगी. डाक्टर साहब का कहना है कि लिपियों के बदलने से कोई भाषा नहीं बदल जाती है. लेकिन इससे पहले वह कह चुके हैं कि हिन्दी उर्दू के बैर की सबसे बड़ी वजह दोनों की लिपियों का अलग अलग होना है. सवाल यह है कि जब आज कल की हिन्दी और उर्दू के, जो शुरू में एक ही थीं, अलग होने की "सबसे बड़ी वजह" दोनों लिपियों का अलग अलग होना है तो यह कैसे कहा जा सकता है कि लिपि बदलने से भाषा ज्यों की त्यों रहेगी.

फिर डाक्टर साहब का कहना है कि उर्दू की छपाई में बहुत झंझट होता है और इससे मैटर के छापने में देर लगती है

دیکھکر اس خوبصورتی سے ہاتھ اُٹھانا پڑتا ہے ." یہ دلیل اس بات کے پکش میں ہے کہ اُردو بھاشا کو ناگری لپی میں لکھا جائے . لیکن تعجب یہ ہے کہ آگے چل کر عربی لپی کے خلاف وہ اسی دلیل کو اُلٹی کردیتے ہیں اور کہتے ہیں '' لیکن دقت یہ ہے کہ یہ ٹائپ اتنے خوبصورت نہیں ہوتے جتنا آپ چاہتے ہیں، آپ کی نظروں کو تکلیف ہوتی ہے ." ڈاکٹر صاحب کی یہ دلیلیں اُردو پڑھنے والی جنتا کو کتنا سنتوش دے سکینگی یہ تو وہی بتاسکتی ہے' لیکن مجھے اس سلسلے میں یہ کہنا ہے کہ عربی لپی' فارسی لپی کی عادی جنتا کو کتنی ہی اٹ پٹی کیوں نہ لگے لیکن دیوناگری لپی سے کہیں آسان پڑیگی .

(۵۸)

ڈاکٹر صاحب کی ایک اور دلیل مجھے اُلٹی معلوم ہوئی . آپ کہتے ہیں کہ کچھ لوگوں کا یہ اعتراض غلط ہے کہ '' لپی بدلنے سے اُردو زبان ہی بدل جائیگی کیونکہ جس زبان کی لپی لی جائیگی وہ اس پر اس طرح چھا جائیگی کہ اُردو اُردو نہ رہ جائیگی ." ڈاکٹر صاحب کا کہنا ہے کہ لپیوں کے بدلنے سے کوئی بھاشا نہیں بدلجاتی ہے . لیکن اس سے پہلے وہ کہ چکے ہیں کہ ہندی اُردو کے بیر کی سب سے بڑی وجہ دونوں کی لپیوں کا الگ الگ ہونا ہے . سوال یہ ہے کہ جب آجکل کی ہندی اور اُردو کے' جو شروع میں ایک ہی تھیں' الگ ہونیکی '' سب سے بڑی وجہ '' دونوں لپیوں کا الگ الگ ہونا ہے تو یہ کیسے کہا جاسکتا ہے کہ لپی بدلنے سے بھاشا جیوں کی تیوں رہیگی .

پھر ڈاکٹر صاحب کا کہنا ہے کہ اُردو کی چھپائی میں بہت جھنجھٹ ہوتاہے . اور اس سے میٹر کے چھاپنے میں دیر لگتی ہے .

यह डाक्टर साहबने कोई नई बात नहीं बताई. लेकिन वह यह भूल गये कि किताबों और पत्रों के प्रकाशक जिन्हें भाषाके माहिरों से ऐसी बातों की ज्यादा चिंता रहती है क्यो फ़ारसी लिपि से चिपके पड़े हैं. कारन सिर्फ़ एक है. और वह यह कि सारी कठिनाइयों के बावजूद उर्दू जानने वाली जनता हिन्दी के अच्छे छपे हुए अखबारों के बजाय उर्दू के ज्यादातर भद्दे छपे हुए अखबार ख़रीदती और पढ़ती है. जनता की इस रुचि की तरफ़ से शायद डाक्टर साहब भी आँखें न मूंद सकेंगे.

डाक्टर साहब के इस कथन से मेरा मतभेद है कि "कोई जबान अपने साथ अपने लिये लिपि लेकर नहीं पैदा होती. जिस मुल्क में पैदा होती है वहीं के लिहाज से उसकी लिपि भी बन जाती है क्योंकि आवाज आबोहवा के असर से हलक़ (कंठ) से निकलती है और जिस तरह वहां के रहने वाले आवाज निकालते हैं और जिस क़िस्म के शब्द बनते हैं उनको अदा करने के लिये उसी सरजमीन का ढांचा ज्यादा सही और आसान भी होता है." उर्दू की लिपि फ़ारसी क्यों हो गई इसकी वजह डाक्टर साहब बताते हैं फ़ारसी जबान का बोल-बाला. पर यह रोमन लिपि रूस को छोड़ कर सारे योरप, दोनों अमरीकाओं, आस्ट्रेलिया, अफ्रीक़ा के बहुत से भागों और तुरकी में क्यों रिवाज पा गई ? क्या डाक्टर साहब का यह मतलब है कि इन सभी जगहों की आबोहवा और वहां के रहनेवाले सभी लोगों की हलक़ों (कंठों) की आवाज एक सी है ? इतिहास के सभी जानकार यह मानेंगे कि जितनी तेजी से भाषाएँ बनती हैं उतनी तेजी से लिपियाँ नहीं बनतीं. ऐसी हालत में अधिकतर भाषाएँ अपने

یہ ڈاکٹر صاحب نے کوئي نئی بات نہیں بتائی لیکن وہ یہ بھول گئے کہ کتابوں اور پتروں کے پرکاشک جنہیں بھاشا کے ماہروں سے ایسی باتوں کي زیادہ چنتا رہتی ہے کیوں فارسی لپي سے چپکے پڑے ہیں ۔ کارن صرف ایک ہے ۔ اور وہ یہ کہ ساري کٹھنائیوں کے باوجود اُردو جاننے والي جنتا ہندی کے اچھے چھپے ہوئے اخباروں کے بجائے اُردو کے زیادہ تر بھدے چھپے ہوئے اخبار خریدتی اور پڑھتی ہے ۔ جنتا کي اس رچی کی طرف سے شاید ڈاکٹر صاحب بھي آنکھیں نہ موند سکینگے ۔

ڈاکٹر صاحب کے اس کتھن سے میرا مت بھید ہے کہ " کوئي زبان اپنے ساتھ اپنے لئے لپی لیکر نہیں پیدا ہوتی ۔ جس ملک میں پیدا ہوتی ہے وہاں کے لحاظ سے اس کي لپي بھي بن جاتی ہے ۔ کیونکہ آواز آب و ہوا کے اثر سے حلق (کنٹھ) سے نکلتي ہے اور جس طرح وہاں کے رہنے والے آواز نکالتے ہیں اور جس قسم کے شبد بنتے ہیں ان کو ادا کرنے کے لئے اسی سرزمین کا ڈھانچہ زیادہ صحیح اور آسان بھي ہوتا ہے ." اُردو کی لپی فارسی کیوں ہوگئي اسکی وجہ ڈاکٹر صاحب بتاتے ہیں فارسی زبان کا بول بالا ۔ پر یہ رومن لپی روس کو چھوڑ کر سارے یورپ' دونوں امریکاؤں' آسٹریلیا' افریقہ کے بہت سے بھاگوں اور ترکي میں کیوں رواج پاگئی ؟ کیا ڈاکٹر صاحب کا یہ مطلب ہے کہ ان سبھی جگہوں کی آب و ہوا اور وہاں کے رہنے والے سبھي لوگوں کی حلقوں (کنٹھوں) کی آواز ایک سی ہے ؟ اتہاس کے سبھي جانکار یہ مانینگے کہ جتنی تیزي سے بھاشائیں بنتی ہیں اتنی تیزی سے لپیاں نہیں بنتیں ۔ ایسي حالت میں ادھک تر بھاشائیں اپنے

के लिये रोटी या जीने मरने का सवाल बना चुकने के बाद भी, आप का पेट नहीं भरा तो आप उर्दू से (नागरी लिपि में भी उर्दू से) इतना डरते क्यों हैं ? सौ फ़ीसदी के लिये हिन्दी लाज़मी बना चुकने के बाद पन्द्रह बीस फ़ी सदी लड़के लड़कियों के लिये उर्दू भी सीखने का इन्तज़ाम करते हुए. उर्दू सीखने की इजाज़त देते हुए आप इतना घबराते और डरते क्यो हैं ? हिन्दी सब पर लाज़मी कर के आप यह बेईमानी क्यो कर रहे हैं कि अगर उर्दू भी सीखोगे तो हम तुम्हें स्कूल में अंग्रेज़ी पढ़ने न देंगे ? मैं हिन्दी प्रेमियो से पूछता हूं कि इस बात को नामुमकिन बना देना कि आज़ाद भारत के स्कूलो और कालिजो में कोई हिन्दी के साथ साथ उर्दू और अंग्रेज़ी भी सीख सके राम राज है या रावन राज. एक साहित्य के प्रेमी होकर दूसरे साहित्य से इतना डरना, इतना घबराना, इतना कांपना एक ऐसी बुज़दिली है जिसकी मिसाल आप ही बताइये हम कहां ढूंढें ? आप के स्कूलों में हम सब कुछ सीख सकते हैं लेकिन उर्दू अंग्रेज़ी भी हिन्दी के साथ साथ नहीं सीख सकते ? क्या आप चाहते हैं कि प्रेमचन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपत राय, बाल मुकुन्द गुप्त, आर्य समाज और सनातन धर्म के अनगिनत प्रचारक, राय देवी प्रसाद पूर्ण, बाबू राजेन्द्र प्रसाद, श्री पद्मसिंह शर्मा, श्री रामबिलास शर्मा, बाबू पुरुषोत्तम दास टंडन, डाक्टर बाबू राम सक्सेना, श्री अज़ीम बेग चग़ताई, पंडित सुन्दर लाल जी, आचार्य नरेन्द्र देव और पंडित मदन मोहन मालवीय ऐसे आदमी अब देश में पैदा न होने पायें क्योंकि यह लोग हिन्दी उर्दू और अंग्रेज़ी तीनों भाषायें

کے لئے روٹی یا جینے مرنے کا سوال بنا چکنے کے بعد بھی آپ کا پیٹ نہیں بھرا تو آپ اردو سے (ناگری لپی میں بھی اردو سے) اتنا ڈرتے کیوں هیں ؟ سو فیصدی کے لئے هندی لازمی بنا چکنے کے بعد پندرہ بیس فی صدی لڑکے لڑکیوں کے لئے .اردو بھی سیکھنے کا انتظام کرتے ہوئے' اردو سیکھنے کی اجازت دیتے ہوئے آپ اتنا گھبراتے اور ڈرتے کیوں هیں ؟ هندی سب پر لازمی کرکے آپ یہ بے ایمانی کیوں کر رہے هیں کہ اگر اردو بھی سیکھو گے تو هم تمہیں اسکول میں انگریزی پڑھنے نہ دیں گے ؟ میں هندی پریمیوں سے پوچھتا هوںکہ اس بات کو ناممکن بنا دینا کہ آزاد بھارت کے اسکولوں اور کالجوں میں کوئی هندی کے ساتھہ ساتھہ اردو اور انگریزی بھی سیکھہ سکے رام راج ہے یا راون راج ؟ ایک ساهتیہ کے پریمی ہوکر دوسرے ساهتیہ سے اتنا ڈرنا اتنا گھبرانا' اتنا کانپنا ایک ایسی بزدلی ہے جس کی مثال آپ هی بتائیے هم کہاں ڈھونڈیں ؟ آپکے اسکولوں میں هم سب کچھہ سیکھ سکتے هیں لیکن اردو انگریزی بھی هندی کے ساتھہ ساتھہ نہیں سیکھہ سکتے کیا آپ چاہتے هیں کہ پریمچند ' سوامی شردھا نند ' لالہ لاجپت رائے ' بالمکند گپت آریہ سماج اور سناتن دھرم کے ان گنت پرچارک' رائے دیوی پرساد پورن ' بابو راجندر پرساد ' شری پدم سنگھہ شرما ' شری رام بلاس شرما ' بابو پرشوتم داس ٹنڈن' ڈاکٹر بابو رام سکسینا ' شری عظیم بیگ چغتائی' پنڈت سندر لال جی' آچاریہ نریندر دیو اور پنڈت مدن موهن مالوی ایسے آدمی اب دیش میں پیدا نہ هونے پائیں کیوں کہ یہ لوگ هندی' اردو اور انگریزی تینوں بھاشائیں جانتے

साथ या तो कोई लिपि लेकर ही पैदा होती हैं या शुरू में उनकी कोई लिपि नहीं होती और वह बाद में किसी लिपि को अपना लेती हैं. अरबी लिपि सारे दक्खिन पच्छिमी एशिया और उत्तरी अफ़्रीक़ा में और रूसी लिपि एशियाई रूस के अधिकतर देशों में फैल ही गई है हर भाषा के लिये नई लिपि न कभी रही है न रहेगी

यह तो हुई एक मोटे सिद्धांत की बात. फ़ारसी लिपि की बहस से इसका सम्बन्ध यह है कि हिन्दुस्तान के रहने वाले फ़ारसी लिपि के कुछ हर्फ़ों का उच्चारन ठीक से नहीं कर पाते और कई हर्फ़ों को एक सा बोलते हैं इसलिये लिखावट में ग़लतियाँ हो जाती हैं. यह एतराज़ काफ़ी पुराना एतराज़ होते हुए भी बिल्कुल दुरुस्त है लेकिन किसी लिपि में कुछ कमज़ोरी होने के माने यह तो नहीं है कि लिपि ही मिटा डाली जाय. लिपियों में सुधार होते ही रहते हैं. रोमन लिपि के हर्फ़ों में अलग अलग भाषाओं में उच्चारन के ख़याल से छोटे मोटे सुधार किये गये हैं. दूर न जाइये. ख़ुद नागरी में ही फ़ारसी अरबी शब्द लाने के लिये क. ख, ग, ज, और फ के नीचे बिन्दी देने का रिवाज हो गया है (हालांकि कुछ ठेठ क़िस्म के लोग अब भी इस बिन्दी के बिना ही काम चलाते हैं चाहे इससे फ़ारसी अरबी शब्दों के उच्चारन का सत्यानाश ही क्यों न हो जाय) उर्दू के लिये फ़ारसी लिपि में ज़रूरी सुधार किया जा सकता है. इस सिलसिले में कुछ सुझाव भी आये हैं जिनपर ग़ौर किया जाना चाहिये.

लेकिन इस में भी इस बात का ध्यान रखना होगा कि हम कहीं लिपि को आसान बनाने के चक्कर में भाषा का रूप ही बिगाड़ कर न रख दें. मिसाल के लिये एक सुझाव है कि एक सी आवाज वाले

ساتھ یا تو کوئی لپی لیکر هی پیدا هوتی هیں یا شروع میں ان کی کوئی لپی نهیں هوتی اور وه بعد میں کسی لپی کو اپنا لیتی هیں ۔ عربی لپی سارے دکھن پچھمی ایشیا اور اُتری افریقه میں اور روسی لپی ایشیائی روس کے ادهک تر دیشوں میں پھیل هی گئی هے. هر بھاشا کیلئے نئی لپی نه کبھی رهی هے نه رهیگی ۔

یه تو هوئی ایک موٹے سدھانت کی بات ۔ فارسی لپی کی بحث سے اس کا سمبندھ یه هے که هندستان کے رهنے والے فارسی لپی کے کچھ حرفوں کا اُچچارن ٹھیک سے نهیں کرپاتے اور کئی حرفوں کو ایک سا بولتے هیں اس لئے لکھاوٹ میں غلطیاں هو جاتی هیں ۔ یه اعتراض کافی پرانا اعتراض هوتے هوئے بھی بالکل درست هے ۔ لیکن کسی لپی میں کچھ کمزوری هونے کے معنی یه تو نهیں هیں که لپی هی مٹا ڈالی جائے ۔ لپیوں میں سدھار هوتے هی رهتے هیں ۔ رومن لپی کے حرفوں میں الگ الگ بھاشاؤں میں اُچچارن کے خیال سے چھوٹے موٹے سدھار کئے گئے هیں ۔ دور نه جائیے ۔ خود ناگری میں هی فارسی عربی شبد لانے کے لئے 'क' 'ख' 'ग' 'ज' اور 'फ' کے نیچے بندی دینے کا رواج هوگیا هے ۔ (حالانکه کچھ ٹھیٹھ قسم کے لوگ اب بھی اس بندی کے بنا هی کام چلاتے هیں چاهے اس سے فارسی عربی شبدوں کے اُچچارن کا ستیاناش هی کیوں نه هوجائے) اُردو کے لئے فارسی لپی میں ضروری سدھار کیا جاسکتا هے ۔ اس سلسلے میں کچھ سجھاؤ بھی آئے هیں جن پر غور کیا جانا چاهئے ۔

لیکن اس میں بھی اس بات کا دھیان رکھنا هوگا که هم کهیں لپی کو آسان بنانے کے چکر میں بھاشا کا روپ هی بگاڑ کر نه رکھدیں ۔ مثال کے لئے ایک سجھاؤ هے که ایک سی آواز والے

हरूफ एक तरह से लिखे जायँ. ज़ाल (ذ), ज़े (ز) ज़्वाद (ض) और ज़ो (ظ) के बजाय सिर्फ़ ज़े (ز) से काम लिया जाय. इस सुझाव को अंधाधुंध अमल में लाने का नतीजा क्या होगा. सिर्फ़ यही नहीं कि उर्दू पढ़ने वालों को काफ़ी अटपटा सा लगेगा बल्कि कई शब्दों के अर्थ ही बदल जायँगे. क़ाज़ी शब्द का मतलब होता है न्यायाधीश. अभी क़ाज़ी ज़्वाद (ض) लिखा जाता है. ज़े (ز) से लिखने पर यह क़ाज़ी قازی हो जायगा. क़ाज़ (ज़े से) एक चिड़िया होती है. चुनान्चे इस सुधरे हुए न्यायाधीश का सम्बन्ध क़ाज़ चिड़िया से क़ायम हो जायगा.

(४९)

फिर यह भी ख़याल रखना चाहिये कि भाषा का विकास इन कठिनाइयों के बावजूद हो सकता है. अंगरेज़ी में बी, यू. टी, बट और पी, यू, टी, पुट की मुसीबत या 'के' और 'सी' का झमेला हमें चाहे जितना अखरे लेकिन उसकी वजह से अंगरेज़ी भाषा के रास्ते में कोई ख़ास मुश्किलें नहीं आईं और न अंगरेज़ी बोलने वालों ने इसकी वजह से वावैला मचाया.

डाक्टर एजाज़ साहब की एक और बात पर विचार करना है. वह यह मानते हैं कि फ़ारसी लिपि जल्दी लिखी जाती है. लेकिन इसके बारे में उनका कहना है कि चूंकि आइंदा सारा लिखना मशीनों से होगा हाथ से नहीं इसलिये फ़ारसी लिपि को अभी से ख़त्म कर दो. घोड़े को गाड़ी के पीछे जोतना इसी को कहते हैं. अव्वल तो मेरी समझ में यही नहीं आता कि वह ज़माना कैसा होगा जब हाथ से लिखने की ज़रूरत ही ख़त्म हो जायगी. अभी तक तो किसी देश में ऐसा नहीं है. ख़ैर यह मान लिया जाय तो भी जब ज़रूरत न रहेगी

حروف ایک طرح سے لکھے جائیں. ذ' ز' ض اور ظ کے بجائے صرف ز سے کام لیا جائے. اس سجھاؤ کو اندھا دھند عمل میں لانیکا نتیجہ کیا ہوگا ؟ صرف یہی نہیں کہ اُردو پڑھنے والوں کو کافی اٹ پٹا سا لگیگا بلکہ کئی شبدوں کے ارتھ ہی بدل جائینگے. قاضی شبد کا مطلب ہوتا ہے نیایا دھیش ابھی قاضی ض سے لکھا جاتا ہے. ز سے لکھنے پر یہ قاضی " قازی " ہوجائیگا. قاز (ز سے) ایک چڑیا ہوتی ہے. چنانچہ اس سدھرے ہوئے نیایا دھیش کا سمبندھ قاز چڑیا سے قایم ہوجائیگا.

پھر یہ بھی خیال رکھنا چاہئے کہ بھاشا کا وکاس ان کٹھنائیوں کے با وجود ہوسکتا ہے. انگریزی میں بی' یو' ٹی' بٹ اور پی' یو' ٹی' پٹ کی مصیبت یا 'کے' اور 'سی' کا جھمیلا ہمیں چاہے جتنا اکھرے لیکن اس کی وجہ سے انگریزی بھاشا کے راستے میں کوئی خاص مشکلیں نہیں آئیں. اور نہ انگریزی بولنے والوں نے اس کی وجہ سے واویلا مچایا

ڈاکٹر اعجاز صاحب کی ایک اور بات پر وچار کرنا ہے. وہ یہ مانتے ہیں کہ فارسی لپی جلدی لکھی جاتی ہے لیکن اس کے بارے میں ان کا کہنا ہے کہ چونکہ آئندہ سارا لکھنا مشینوں سے ہوگا ہاتھ سے نہیں اسلئے فارسی لپی کو ابھی سے ختم کردو. گھوڑے کو گاڑی کے پیچھے جوتنا اسی کو کہتے ہیں. اول تو میری سمجھ میں یہی نہیں آتا کہ وہ زمانہ کیسا ہوگا جب ہاتھ سے لکھنے کی ضرورت ہی ختم ہوجائیگی. ابھی تو کسی دیش میں ایسا نہیں ہے. خیر یہ مان لیا جائے تو بھی جب ضرورت نہ رہیگی

तो लोग खुद ही झंझट वाली फ़ारसी लिपि को छोड़ देंगे. पेशगी सौदे की क्या जरूरत है ? अभी से जल्दी लिखी जाने वाली लिपि को इसलिये छोड़ दिया जाय कि पचास साठ साल बाद हाथ से लिखने की जरूरत न रहेगी ! (और उस समय तक आज के लिखने वाले क़ब्र में जा पहुँचेंगे)

मैंने डाक्टर साहब के लेख पर ही टीका की है. इसका सबब यह है कि उर्दू लिपि को खत्म करने के लिये इससे ज्यादा और सुलझी हुई दलीलें और कहीं नहीं दी गईं . अब सवाल यह है कि किया क्या जाय. इस सिलसिले में पहले तो इस बात का खयाल रखना जरूरी है कि फ़ारसी लिपि के बारे में दो तरह के सवाल हो सकते हैं और दोनों पर दिमाग़ साफ कर लेना जरूरी है. यह मानी हुई बात है कि उर्दू और हिन्दी बुनियादी तौर पर चाहे एक हों लेकिन उनके आज के रूप रंग, विचारों, साहित्य और उच्चारन में भेद है . उर्दू कही जाने वाली भाषा की लिपि फ़ारसी है. अब सवाल यह है कि भारत की राष्ट्र भाषा के लिये फ़ारसी रखी जाय या नहीं. यहाँ पर फ़ारसी और देवनागरी लिपियों के मुक़ाबले का सवाल पैदा होता है और मेरी निजी राय भी यही है कि फ़ारसी लिपि की दिक़्क़तों को देखते हुए राष्ट्र भाषा के लिये फ़ारसी लिपि को छोड़ देना होगा.

लेकिन मैं डाक्टर एजाज़ हुसेन साहब की इस राय से सहमत नहीं हूँ कि उर्दू भाषा की तरक़्क़ी के लिये फ़ारसी लिपि छोड़ कर नागरी का प्रयोग किया जाय. किसी भाषा और लिपि को पलक झपकाते बनाया या बिगाड़ा नहीं जा सकता . राष्ट्र भाषा चाहे न हो लेकिन उर्दू मिट नहीं सकती. उर्दू की तरक़्क़ी फ़ारसी लिपि को मिटाने से नहीं बल्कि उसे

تولوگ خود هی جهنجهٹ والی فارسی لپی کو چھوڑ دینگے . پیشگی سودے کی کیا ضرورت ہے ؟ ابھی سے جلدی لکھی جانیوالی لپی کو اس لئے چھوڑ دیا جائے کہ پچاس ساٹھ سال بعد هاتھ سے لکھنے کی ضرورت نہ رهیگی ! (اور اُس سمے تک آج کے لکھنے والے قبر میں جاپہونچینگے .)

میں نے ڈاکٹر صاحب کے لیکھ پر هی ٹیکا کی ہے . اس کا سبب یہ ہے کہ اُردو لپی کو ختم کرنے کے لئے اس سے زیادہ اور سلجھی هوئی دلیلیں اور کہیں نہیں دی گئیں . اب سوال یہ ہے کہ کیا کیا جائے ؟ اس سلسلے میں پہلے تو اس بات کا خیال رکھنا ضروری ہے کہ فارسی لپی کے بارے میں دو طرح کے سوال هوسکتے هیں اور دونوں پر دماغ صاف کرلینا ضروری ہے . یہ مانی هوئی بات ہے کہ اُردو اور هندی بنیادی طور پر چاهے ایک هوں لیکن اُن کے آج کے روپ رنگ، وچاروں، ساهتیہ اور اُچچارن میں بھید ہے . اُردو کہی جانیوالی بھاشا کی لپی فارسی ہے . اب سوال یہ ہے کہ بھارت کی راشٹر بھاشا کی لپی فارسی رکھی جائے یا نہیں . یہاں پر فارسی اور دیوناگری لپیوں کے مقابلے کا سوال پیدا هوتا ہے اور میری نجی رائے بھی یہی ہے کہ فارسی لپی کی دقتوں کو دیکھتے هوئے راشٹر بھاشا کے لئے فارسی لپی کو چھوڑ دینا هوگا .

لیکن میں ڈاکٹر اعجاز حسین صاحب کی اس رائے سے سہمت نہیں هوں کہ اُردو بھاشا کی ترقی کیلئے فارسی لپی چھوڑکر ناگری کا پریوگ کیا جائے . کسی بھاشا اور لپی کو پلک جھپکاتے بنایا یا بگاڑا نہیں جاسکتا . راشٹر بھاشا چاهے نہ هو لیکن اُردو مٹ نہیں سکتی . اُردو لپی کی ترقی فارسی لپی کو مٹانے سے نہیں بلکہ اُسے

सुधारने से होगी. उत्तर प्रदेश के मुसलमान ही नहीं पंजाब के हिन्दू भी फ़ारसी या ज़्यादा से ज़्यादा अरबी लिपि में किताबें और अख़बार पढ़ना चाहते हैं. उनपर कोई भाषा या लिपि थोपी नहीं जासकती. सरकार की सरपरस्ती न मिलने पर भी भाषाएँ अपने बल पर ज़िन्दा रहती हैं. उनकी ताक़त का आधार उनकी साहित्यक परम्परा होती है . उर्दू साहित्य की परम्परा बहुत कुछ ईरानी है. उससे फ़ारसी लिपि छीन लेना उसे लुंज पुंज कर देना होगा.

अब समय का तक़ाज़ा यह है कि हम भाषाओं और लिपियों की वकालत न करके हर भाषा को तरक़्क़ी दें और उसे ताक़तवर बनायें. इसका तरीक़ा यह है कि हर भाषा के साहित्य को जनता के पास लाया जाय और जनता से ही उसके लिये ताक़त हासिल की जाय . जल्दी नहीं लेकिन ठीक समय पर ख़ुद ब ख़ुद ऐसी भाषा और ऐसी लिपि का चलन होजायगा जो जनता की भाषा और लिपि होगी और जिसके बारे में लड़ने झगड़ने की किसी को ज़रूरत नहीं रहेगी. इस समय सर फुटौवल करने से भाषा और साहित्य की बरबादी के अलावा कुछ हाथ न लगेगा.

سدھارنے سے ھوگی . اتر پردیش کے مسلمان ھی نہیں' پنجاب کے ھندو بھی فارسی یا زیادہ سے زیادہ عربی لپی میں کتابیں اور اخبار پڑھنا چاھتے ھیں . ان پر کوئی بھاشا یا لپی تھوپی نہیں جاسکتی . سرکار کی سرپرستی نہ ملنے پر بھی بھاشائیں اپنے بل پر زندہ رھتی ھیں . ان کی طاقت کا آدھار انکی ساھتیک پرمپرا ھوتی ھے . اُردو ساھتیہ کی پرامپرا بہت کچھ ایرانی ھے . اس سے فارسی لپی چھین لینا اُسے لنج پنج کردینا ھوگا .

اب سمے کا تقاضہ یہ ھے کہ ھم بھاشاؤں اور لپیوں کی وکالت نہ کرکے ھر بھاشا اکو ترقی دیں اور اُسے طاقتور بنائیں . اس کا طریقہ یہ ھے کہ ھر بھاشا کے ساھتیہ کو جنتا کے پاس لایا جائے اور جنتا سے ھی اس کے لئے طاقت حاصل کیجائے . جلدی نہیں لیکن ٹھیک سمے پر خود بخود ایسی بھاشا اور ایسی لپی کا چلن ھو جائیگا جو جنتا کی بھاشا اور لپی ھوگی اور جس کے بارے میں لڑنے جھگڑنے کی کسی کو ضرورت نہیں رھیگی . اس سمے سر پھٹول کرنے سے بھاشا اور ساھتیہ کی بربادی کے علاوہ کچھ ھاتھ نہ لگیگا .

प्रकृति का सन्देश

(भाई चरन सरन ' नाज़ ')

मेरा एक सन्देसा सुन ले
भूक की लौ में जलने वाले,
आंसू से मुँह धोने वाले
राने और तड़पने वाले
मेरा एक सन्देसा सुनले !

ऐ भूके मजदूर किसान
भारत की निर्धन सन्तान
छाती फाड़ परिश्रम तेरा.
भूक से तू मजबूर जवान

मेरे अन्तर पट के तूने
राज़ हैं कितने खोल दिये,
आंधी, बदल के भी तूने
साज़ हैं कि तने थाम लिये.

मेरे बवंडर में भी अकसर
मौत का तेरी नाच हुआ है,
मेरे ओलों पालों का भी
खेत पे तेरे वार हुआ है.

मेरे कारन खेत से अकसर
भूक की बाली उगती है,
मेरे अत्याचार पे तेरी
क़िस्मत अकसर रोती है

मेरे अत्याचार में पागल
प्यार का मेरे भेद छिपा है,

پرکرتی کا سندیش

(بھائی چرن سرن ' ناز ')

میرا ایک سندیسہ سن لے
بھوک کی لو میں جلنے والے،
آنسو سے منہ دھونے والے،
رونے اور تڑپنے والے
میرا ایک سندیسہ سن لے !

اے بھوکے مزدور کسان
بھارت کی نردھن سنتان
چھاتی پھاڑ پر شرم تیرا،
بھوک سے تو مجبور جوان

میرے انتر پٹ کے تونے
راز ہیں کتنے کھول دئیے
آندھی، بادل کے بھی تونے
ساز ہیں کتنے تھام لئیے

میرے بونڈر میں بھی اکثر
موت کا تیری ناچ ہوا ہے،
میرے اولوں پالوں کا بھی
کھیت پہ تیرے وار ہوا ہے

میرے کارن کھیت سے اکثر
بھوک کی بالی اگتی ہے،
میرے اتیاچار پر تیری
قسمت اکثر روتی ہے

میرے اتیاچار میں پاگل
پیار کا میرے بھید چھپا ہے،

मेरे आंधी पानी में ही
कर्म का तेरे भेद छिपा है.
बन को मेरे काट के तूने
खेत बनाये, बाग़ बनाये;
मेरी अन्धेरी रात की ख़ातिर
तूने कितने चराग़ जलाये.
मेरे पत्थर के टुकड़ों को
तूने बना दिया है दर्पन;
मेरे खारी सागर जल में
तूने किया है अमृत-मंथन.
तूने मेरे विष से अक्सर
अमृत का भी काम लिया है,
तूने मेरे 'मीठे' को भी
ज़हरे हलाहल बना दिया है.
सागर के जल-सेज पे तूने
कर्म की अपनी नाव चलाई,
तूने अपने कर्म से उड़कर
पंछी को भी मात दिखाई.
कर्म के पुतले देख रहा है
बे मौक़ा क्यों आंधी पानी ?
बिठला दे साहस से अपने
सागर की उठती तुग़यानी
भारत तेरा देश नहीं है
मेरी खुली हथेली है यह
बूझ ले इस को बूझ ले जल्दी
तेरे लिये पहेली है यह.
गंगा, जमुना की धारायें

میرے آندھی پانی میں ہی
کرم کا تیرے بھید چھپا ہے ۔
بن کو میرے کاٹ کے تونے
کھیت بنائے، باغ بنائے؛
میری اندھیری رات کی خاطر
تونے کتنے چراغ جلائے
میرے پتھر کے ٹکڑوں کو
تونے بنا دیا ہے درپن؛
میرے کھاری ساگر جل میں
تونے کیا ہے امرت منتھن ۔
تو نے میرے وش سے اکثر
امرت کا بھی کام لیا ہے،
تو نے میرے 'میٹھے' کو بھی
زہر ہلا ہل بنا دیا ہے
ساگر کے جل سیج پہ تونے
کرم کی اپنی ناؤ چلائی،
تونے اپنے کرم سے اُڑکر
پنچھی کو بھی مات دکھائی
کرم کے پتلے دیکھ رہا ہے
بے موقعہ کیوں آندھی پانی ؟
بٹھلا دے ساہس سے اپنے
ساگر کی اُٹھتی طغیانی
بھارت تیرا دیش نہیں ہے
میری کھلی ہتھیلی ہے یہ
بوجھ لے اسکو بوجھ لے جلدی
تیرے لئے پہیلی ہے یہ
گنگا جمنا کی دھارائیں

भारत की जीवन रेखा हैं
विंध्याचल, नर्बदा, तापती
तेरी क़िस्मत का लेखा हैं.

मेरी हथेली सदा खुली है
इस पर जो है वह तेरा है,
भारत से ले भारत वाले
तूने जो उस को दे रक्खा है.

मेरी हथेली पर तू ज़ालिम
खून की छींटें मार रहा है,
भारत जैसे हाथ पे मेरे
तू भारत का भार रहा है.

ऐसे अत्याचार से ज़ालिम
तेरी क्या क़िस्मत बदले गी,
खुली हथेली से क्या यों ही
तेरे लिये दौलत बिखरेगी

आँसू देगा, आँसू लेगा,
अन्न बिखेर, अन्न उपजेगा,
मेरे हाथ पे जो रक्खेगा,
वही बहुत सा तू पायेगा.

उठ और आपस में घुल मिलकर
हाथ मेरा मज़बूत बना दे,
अपने इस अन्धेर नगर में
कर्म की अपने ज्योति जगा दे.

अब भी तुझे गर होश न आया
तो मुट्ठी बंध जाये गी.
भारत भूमि तेरे ही कारन
जग से गायब हो जाये गी.

بھارت کی جیون ریکھا ہیں'
وندھیا چل' نربدا' تاپتی
تیری قسمت کا لیکھا ہیں

میری ہتھیلی سدا کھلی ہے
اس پر جو ہے وہ تیرا ہے'
بھارت سے لے بھارت والے
تو نے جو اس کو دے رکھا ہے.

میری ہتھیلی پر تو ظالم
خون کی چھینٹیں مار رہا ہے
بھارت جیسے ہاتھ پہ میرے
تو بھارت کا بھار رہا ہے

ایسے اتیاچار سے ظالم
تیری کیا قسمت بدلیگی'
کھلی ہتھیلی سے کیا یونہی
تیرے لئے دولت بکھریگی

آنسو دیگا' آنسو لیگا'
اَن بکھیر' ان اُپجیگا'
میرے ہاتھ پہ جو رکھیگا'
وہی بہت سا تو پائیگا

اُٹھ اور آپس میں گھل مل کے
ہاتھ میرا مضبوط بنا دے'
اپنے اس اندھیر نگر میں
کرم کی اپنے جیوتی جگادے

اب بھی تجھے گر ہوش نہ آیا
تو مٹھی بندھ جائیگی
بھارت بھومی تیرے ہی کارن
جگ سے غائب ہو جائیگی



पानी और हवा

(भाई सुरेन्द्र कुमार)

एडीटर, प्रेम भाई

गरमी से बेचैन थी धरती
गरम गरम थी आहें भरती
लोग थे पानी पानी कहते
आहें भरते पंखा झलते

कोई बैठे पेड़ तले थे
गरमी से हैरान बड़े थे
ठन्डी. हवा पूरब से आई
दामन में खुशियाँ भर लाई

बादल गरजा पानी बरसा
मन झूमा और गाया थिरका
ठन्डी हवा और बूँदा बाँदी
यानी खुशियों की थी आँधी

پانی اور ھوا!

(بھائی ' سریندر کمار)

ایڈیٹر - پریم بھائی

گرمی سے بے چین تھی دھرتی
گرم گرم تھی آہیں بھرتی
لوگ تھے پانی پانی کہتے
آہیں بھرتے پنکھا جھلتے

کوئی بیٹھے پیڑ تلے تھے
گرمی سے حیران بڑے تھے
ٹھنڈی ' ہوا پورب سے آئی
دامن میں خوشیاں بھر لائی

بادل گرجا پانی برسا
من جھوما اور گایا تھرکا
ٹھنڈی ہوا اور بوندا باندی
یعنی خوشیوں کی تھی آندھی

ज़ुल्म का फल

(भाई विक़ार ख़लील)

रशीद बड़ा शरीर लड़का था . उसके स्कूल के सभी लोग उससे नफ़रत करते थे. वह स्कूल हमेशा देर में पहुँचता और हर काम बड़े अनमने ढंग से करता . वह बड़ा काहिल और सुस्त लड़का था. उसे पढ़ने लिखने से बिलकुल दिलचस्पी न थी और कोई अच्छा काम करने से तो वह बहुत दूर भागता था. हाँ खेल कूद और शिकार का उसे बड़ा शौक़ था. खेल कूद और शिकार ही उसकी दुनिया थी. वह सोचा करता कि क्या ही अच्छा हो अगर यह सारी धरती एक बड़ा सा जंगल बन जाय जिसके मैदानों में मैं खेला करूँ और झाड़ियों में शिकार खेला करूँ .

उसके मास्टर लाख मनाते, समझाते और अन्त में डाटते डपटते भी कि वह अपनी बुरी आदतें छोड़ दे और एक अच्छा और सच्चा देश भक्त बने पर रशीद की समझ में कुछ न आता. वह अपने शिक्षकों के उपदेश एक कान सुना करता और दूसरे कान उड़ा दिया करता .

एक दिन मास्टर जी ने भरे क्लास में रशीद से कहा "सुनो मियां रशीद ! तुम बहुत अच्छे लड़के हो. अच्छे लड़के कभी बुरे काम और बुरी बातों की ओर ध्यान नहीं देते. तुम घड़ी दो घड़ी की अपनी ख़ुशी के लिये कितना भारी पाप करते हो. तुम शिकार करके ख़ुश होते हो कि मैं ने एक ही निशाने में चिड़िया को मार गिराया. यह बुरी बात है. तुम्हारा इस तरह बेगुनाह ग़रीब जानवरों को मारना ठीक नहीं. तुम ख़ुद सोचो कि अगर कोई तुम्हें बिना क़सूर एक तमाचा मार

ظلم کا پھل

(بھائی وقار خلیل)

رشید بڑا شریر لڑکا تھا - اس کے اسکول کے سبھی لوگ اس سے نفرت کرتے تھے - وہ اسکول ہمیشہ دیر میں پہنچتا اور ہر کام بڑے انمنے ڈھنگ سے کرتا - وہ بڑا کاہل اور سست لڑکا تھا - اُسے پڑھنے لکھنے سے بالکل دلچسپی نہ تھی اور کوئی اچھا کام کرنے سے تو وہ بہت دور بھاگتا تھا - ہاں کھیل کود اور شکار کا اُسے بڑا شوق تھا - کھیل کود اور شکار ہی اس کی دنیا تھی - وہ سوچا کرتا کہ کیا ہی اچھا ہو اگر یہ ساری دھرتی ایک بڑا سا جنگل بن جائے جس کے میدانوں میں میں کھیلا کروں اور جھاڑیوں میں شکار کھیلا کروں -

اس کے ماسٹر لاکھ مناتے ' سمجھاتے اور انت میں ڈانٹتے ڈپٹتے بھی کہ وہ اپنی بری عادتیں چھوڑ دے اور ایک اچھا اور سچا دیش بھکت بنے پر رشید کی سمجھ میں کچھ نہ آتا - وہ اپنے شکشکوں کے اپدیش ایک کان سنا کرتا اور دوسرے کان اُڑا دیا کرتا -

ایک دن ماسٹر جی نے بھرے کلاس میں رشید سے کہا - " سنو میاں رشید ! تم بہت اچھے لڑکے ہو - اچھے لڑکے کبھی برے کام اور بری باتوں کی اور دھیان نہیں دیتے - تم گھڑی دو گھڑی کی اپنی خوشی کے لئے کتنا بھاری پاپ کرتے ہو - تم شکار کرکے خوش ہوتے ہو کہ میں نے ایک ہی نشانہ میں چڑیا کو مار گرایا - یہ بری بات ہے تمہارا اسطرح بے گناہ غریب جانوروں کو مارنا ٹھیک نہیں - تم خود سوچو کہ اگر کوئی تمہیں بنا قصور ایک طمانچہ مار

दे तो तुमको कितना दुख होगा. इसी तरह इन बे जबान पछियों के दिल से भी तुम्हारे खिलाफ़ क्या कुछ न फ़रियाद निकलती होगी. बताओ अब तुम्हारा क्या इरादा है? क्या अब भी तुम बेजबान पछियों को सताया करोगे या दूसरों की सेवा करके उनके दिल की दुआयें लोगे?"

रशीद ने मास्टर जी की बातों को उनके डर से सुन तो लिया पर उस पर उसका कुछ असर न हुआ. उस समय भी उसका मन खेल कूद में लगा था. वह सोच रहा था कि कब स्कूल बन्द हो और वह अपनी गुलेल लेकर शिकार को निकले.

यह दूसरे दिन की बात है. रशीद का स्कूल बन्द था. वह अपनी गुलेल लेकर गांव से बाहर निकल गया. इधर उधर देखा पर उसे कोई चिड़िया न दिखाई दी. आखिर एक शीशम के पेड़ पर उसे एक मैना दिखाई पड़ी. मैना के पास ही उसका बच्चा भी बैठा था. मैना बड़े प्रेम से उसकी चोंच में चोंच डाल कर दाना खिला रही थी. रशीद चुपके से पेड़ के नीचे पहुँच गया और गुलेल में कंकर रखकर निशाना साधने लगा. एक बार रशीद के कानों में मास्टर जी के यह शब्द गूँज उठे कि बे जबान जानवरों को मारना ठीक नहीं है. रशीद का हाथ रुक गया लेकिन फिर उसने मास्टर जी की बात एक पागल की बड़ समझ कर भुला दी और फिर निशाना साधने लगा. रशीद चाहता था कि मैना के साथ उसका बच्चा भी गिर पड़े. बड़ी कोशिश के बाद रशीद का निशाना सधा. पर जैसे ही उसने गुलेल का रबर खेंचा वैसे ही 'ठायें' की आवाज हुई. रशीद का गुल्ला चल न सका और उसके बायें हाथ में बन्दूक का एक छर्रा लगा. रशीद का ...

ہے تو تم کو کتنا دکھہ ہوگا - اسی طرح اِن بے زبان پکشیوں کے دل سے بھی تمہارے خلاف کیا کچھہ فریاد نہ نکلتی ہوگی - بتاؤ اب تمہارا کیا ارادہ ہے ؟ کیا اب بھی تم بےزبان پکشیوں کو ستایا کروگے یا دوسروں کی سیوا کرکے اُن کے دل کی دعائیں لوگے ؟

رشید نے ماسٹر جی کی باتوں کو اُن کے ڈر سے سن تو لیا پر اس پر اس کا کچھہ اثر نہ ہو - اس سمے بھی اس کا من کھیل کود میں لگا رہا - وہ سوچ رہا تھا کہ کب اسکول بند ہو اور وہ اپنی غلیل لیکر شکار کو نکلے -

یہ دوسرے دن کی بات ہے - رشید کا اسکول بند تھا - وہ اپنی غلیل لیکر گاؤں سے باہر نکل گیا - ادھر اُدھر دیکھا پر اسے کوئی چڑیا نہ دکھائی دی - آخر ایک شیشم کے پیڑ پر اسے ایک مینا دکھائی پڑی - وہ مینا کے پاس ہی اس کا بچہ بھی بیٹھا تھا - مینا بڑے پریم سے اس کی چونچ میں چونچ ڈال کر دانہ کھلارہی تھی - رشید چپکے سے پیڑ کے نیچے پہنچ گیا اور غلیل میں کنکر رکھکر نشانہ سادھنے لگا - ایک بار رشید کے کانوں میں ماسٹر جی کے یہہ شبد گونج اُٹھے کہ بے زبان جانوروں کو مارنا ٹھیک نہیں ہے - رشید کا ہاتھہ رک گیا لیکن پھر اُس نے مانو ماسٹر جی کی بات ایک پاگل کی بڑ سمجھکر بھلادی اور پھر نشانہ سادھنے لگا - رشید چاہتا تھا کہ مینا کے ساتھ اس کا بچہ بھی گرپڑے - بڑی کوشش کے بعد رشید کا نشانہ سدھا - پر جیسے ہی اُس نے غلیل کا ربڑ کھینچا ویسے ہی 'ٹھائیں' کی آواز ہوئی - رشید کا غلہ چل نہ سکا اور اس کے ...

वर्मा और दर्जनों हिन्दी के बड़े लेखक हिन्दी जानते हैं, अंग्रेज़ी जानते हैं लेकिन यह भी लहक और हुमक उनके दिल में उठती है कि वह उर्दू भी सीख लें तो कितना अच्छा हो. मारिये उनको, रोकिये रोकिये, ऐसा होने न दीजिये. तीन टिकट महा विकट. मैं हिन्दी प्रेमियों से [illegible] हूँ कि क्या आप यह चाहते हैं कि चाहे सूरज पच्छिम [illegible] [illegible] हमारे स्कूलों, कालिजों से हिन्दी अंग्रेज़ी उर्दू [illegible] का [illegible] पैदा न हों ?

पञ्जाब हमें क्या सिखाता है

लेखक-पंडित सुन्दरलाल

पंडित सुन्दरलाल जी ने, महात्मा गांधी की सलाह से अक्तूबर सन् '४७ में पच्छिमी और पूरबी पंजाब का दौरा किया था. इस छोटे से बयान में उन्होंने वहाँ की भयंकर बरबादी और आपसी मारकाट की वजह से जो जो नतीजे लोगों को भुगतने पड़ रहे हैं उनका बहुत ही दर्दनाक वर्णन किया है. आखीर में, आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिये, कुछ सुझाव भी पेश किये हैं. हमें विश्वास है कि पंजाब की मौजूदा हालत को ठीक तरह से समझने में इस बयान से बड़ी मदद मिलेगी.

किताब उर्दू और नागरी दोनों लिखावटों में मिल सकती है. क़ीमत चार आने.

—मैनेजर 'नया हिन्द'
४८, बाई का बाग़, इलाहाबाद.

ورما اور درجنوں ہندی کے بڑے لیکھک ہندی جانتے ہیں، انگریزی جانتے ہیں لیکن یہ بھی لہک اور ہمک ان کے دل میں اٹھتی ہے کہ وہ اردو بھی سیکھ لیں تو کتنا اچھا ہو۔ مارئے ان کو ــ روکئے روکئے، ایسا ہونے نہ دیجئے ــ تین ٹکٹ مہا بکٹ. میں ہندی پریمیوں سے پوچھتا ہوں کہ کیا آپ یہ چاہتے ہیں کہ چاہے سورج پچھم سے اگے لیکن ہمارے اسکولوں کالجوں سے ہندی انگریزی اردو تینوں ساہتیہ کے گیانی پیدا نہ ہوں ؟

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے

لیکھک پنڈت سندر لال

پنڈت سندر لال جی نے، مہاتما گاندھی کی صلاح سے اکتوبر سنہ ۱۹۴۷ء میں پچھمی اور پوربی پنجاب کا دورا کیا تھا. اس چھوٹے سے بیان میں انہوں نے وہاں کی بھینکر بربادی اور آپسی مارکاٹ کی وجہ سے جو جو نتیجے لوگوں کو بھگتنے پڑ رہے ہیں ان کا بہت ہی دردناک ورنن کیا ہے. آخیر میں، آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کیلئے، کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے ہیں. ہمیں وشواس ہے کہ پنجاب کی موجودہ حالت کو ٹھیک طرح سے سمجھنے میں اس بیان سے بڑی مدد ملے گی.

کتاب اردو اور ناگری دونوں لکھاوٹوں میں مل سکتی ہے. قیمت چار آنہ.

'نیا ہند'
۴۸، بائی کا باغ، الہ آباد.

यह गोली एक दूसरे शिकारी की थी जिसने रशीद को देखा नहीं था. रशीद के चिल्लाने की आवाज़ सुन कर एक बूढ़े साधू वहाँ आ गये और रशीद का घायल हाथ देख कर उन्होंने पूछा "यह क्या हुआ बेटा ?"

रशीद ने रोते हुए बताया—"बाबा ! मैं अपनी गुलेल से मैना और उसके बच्चे को मार गिराना चाहता था कि किसी ज़ालिम शिकारी ने गोली चला दी और मेरा हाथ ज़ख्मी हो गया"

साधू ने झट रशीद के हाथ में पट्टी बाँधी और फिर बोला—"बेटा शिकारी सभी ज़ालिम होते हैं. तुम भी तो मैना और उसके बच्चे को मार कर ज़ुल्म ही कर रहे थे. भला तुम्हारा इन बे ज़बान पक्षियों ने क्या बिगाड़ा था ?"

रशीद को फिर मास्टर जी की बात याद आ गई. पर वह जल्दी क़ायल न होना चाहता था. बोला—"बाबा ! मैं तो शिकार खेलने निकला था ."

साधू ने कहा – "तुमको यह ख़तरनाक खेल खेलने से किसी ने मना नहीं किया ?"

रशीद ने आँखें नीची करके कहा—"मना तो किया था. अब्बा भी मना करते थे और मास्टर जी ने भी मना किया था."

साधू ने कहा—"फिर बेटा, तुमने उनकी बात क्यों न मानी ? बड़े लोग जो कुछ कहते हैं वह छोटों के भले के लिये ही कहते हैं. जिस शिकारी की गोली ने तुम्हारा हाथ घायल कर दिया उसने भी —— में तुम्हारी ही तरह छोटी चिड़ियों को मार कर अपना हाथ साफ़

یہ گولی ایک دوسرے شکاری کی تھی جس نے رشید کو دیکھا نہیں تھا - رشید کے چلانے کی آواز سن کر ایک بوڑھے سادھو وہاں آگئے اور رشید کا گھائل ہاتھ دیکھکر اُنہوں نے پوچھا —" یہ کیا ہوا بیٹا ؟ "

رشید نے روتے ہوئے بتایا " بابا ! میں اپنی غلیل سے مینا اور اُس کے بچے کو مار گرانا چاہتا تھا کہ کسی ظالم شکاری نے گولی چلادی اور میرا ہاتھ زخمی ہوگیا - "

سادھو نے جھٹ رشید کے ہاتھ میں پٹی باندھی اور پھر بولا— " بیٹا ! شکاری سبھی ظالم ہوتے ہیں - تم بھی تو مینا اور اُس کے بچے کو مار کر ظلم ہی کر رہے تھے - بھلا تمہارا ان بے زبان پکشیوں نے کیا بگاڑا تھا ؟ "

رشید کو پھر ماسٹر جی کی بات یاد آگئی - پر وہ جلدی قائل نہ ہونا چاہتا تھا - بولا - " بابا ! میں تو شکار کھیلنے نکلا تھا - "

سادھو نے کہا - " تم کو یہ خطرناک کھیل کھیلنے سے کسی نے منع نہیں کیا ؟ "

رشید نے آنکھیں نیچی کر کے کہا - " منع تو کیا تھا - ابا بھی منع کرتے تھے اور ماسٹر جی نے بھی منع کیا تھا - "

سادھو نے کہا - " پھر بیٹا ! تم نے ان کی بات کیوں نہ مانی ؟ بڑے لوگ جو کچھ کہتے ہیں وہ چھوٹوں کے بھلے کے لئے ہی کہتے ہیں - جس شکاری کی گولی نے تمہارا ہاتھ گھائل کر دیا اُس نے بھی بچپن میں تمہاری ہی طرح چھوٹی چڑیوں کو مارکر اپنا ہاتھ صاف

किया होगा. बड़ा होकर अब वह बन्दूक चलाता है. अगर गोली ज़रा सा ऊपर को होती तो तुम्हारे सर में लग गई होती और तुम्हारी जान ही चली जाती. देखो बेटा. यह शिकार बहुत बुरी चीज़ है. जो जानवर तुम्हारा कुछ नुक्सान नहीं करते उनको सताने से क्या लाभ. तुमको चोट आगई पर इस चोट से तुमको यह सीख मिल गई कि निर्दोष पच्छियों को सताना भगवान को भी बुरा लगता है. शायद भगवान ने किसी पच्छी की प्रार्थना सुनकर तुमको सज़ा देने के लिये ही दूसरे शिकारी को भेज दिया था.… ”

रशीद यह सुनकर बहुत रोया फिर हाथ जोड़ कर बोला—बाबा ! आज से मैं अहद (प्रतिज्ञा) करता हूँ कि कभी शिकार न खेलूँगा और दूसरों को भी ऐसा करने से रोकूँगा.”

साधू यह सुनकर बहुत ख़ुश हुआ. बोला—“जाओ बेटा, अब घर जाओ. अपने पिता से साफ़ साफ़ बता देना. वह डाक्टर से कह कर तुम्हारा इलाज करा देंगे और फिर इस हाथ से तुम निर्बलों और निर्दोषों को कष्ट पहुंचाने की जगह उनकी सेवा किया करना. अच्छा ! जाओ, भगवान करे तुम ख़ूब पढ़ो लिखो और देश की सेवा करो.”

यह कह कर साधू जिधर से आया था उधर चला गया. रशीद भी यह सोचता हुआ घर की तरफ़ चल पड़ा कि आगे कभी ऐसा न करेगा. उसने मन में तय कर लिया कि अब मास्टर जी और दूसरों का कहना कभी न टालेगा.

کیا ہوگا - بڑا ہوکر اب وہ بندوق چلاتا ہے - اگر گولی ذرا سا اوپر کو ہوتی تو تمہارے سر میں لگ گئی ہوتی اور تمہاری جان ہی چلی جاتی - دیکھو بیٹا یہ شکار بہت بری چیز ہے - جو جانور تمہارا کچھ نقصان نہیں کرتے اُن کو ستانے سے کیا لابھ - تم کو چوٹ آگئی پر اس چوٹ سے تم کو یہ سیکھ مل گئی کہ نردوش پکھشیوں کو ستانا بھگوان کو بھی برا لگتا ہے - شاید بھگوان نے کسی پکھشی کی پرارتھنا سن‌کر تم کو سزا دینے کے لئے دوسرے شکاری کو بھیج دیا تھا۔ .... '

یہ رشید یہ سن کر بہت رویا - پھر ہاتھ جوڑ کر بولا - " بابا ! آج سے میں عہد (پرتگیا) کرتا ہوں کہ کبھی شکار نہ کھیلوں گا اور دوسروں کو بھی ایسا کرنے سے روکوں گا - "

سادھو یہ سن کر بہت خوش ہوا - بولا - " جاؤ بیٹا ' اب گھر جاؤ - اپنے پتا سے صاف صاف بتا دینا - وہ ڈاکٹر سے کہہ کر تمہارا علاج کرادیں گے اور پھر اس ہاتھ سے تم نربلوں اور نردوشوں کو کشٹ پہنچانے کی جگہ اُن کی سیوا کیا کرنا - اچھا ! جاؤ ' بھگوان کرے تم خوب پڑھو لکھو اور دیش کی سیوا کرو - "

یہ کہکر سادھو جدھر سے آیا تھا اُدھر چلا گیا - رشید بھی یہ سوچتا ہوا گھر کی طرف چل پڑا کہ آگے کبھی ایسا نہ کرے گا - اُس نے من میں طے کر لیا کہ اب ماسٹر جی اور دوسروں کا کہنا کبھی نہ ٹالے گا -

चुटकुले

(भाई राजेश सरन)

रमेश—(दोस्त से) यार, मेरा चेहरा बड़ा काला हो गया है.

हरीश—धोबी के यहाँ डाल दो.

रोगी—डाक्टर साहब मेरा इलाज कीजिये.

डाक्टर—क्या तकलीफ़ है ?

रोगी—तकलीफ़ सिर्फ़ इतनी है कि मैं इतना मोटा हो गया हूँ कि झुक कर अपने जूते का फ़ीता भी नहीं बाँध सकता. मैं बेहद परेशान हूँ, बताइये मैं क्या करूँ ?

डाक्टर—बस ! चप्पल पहना कीजिये !

इन तस्वीरों को ध्यान से देखो. तस्वीर बनाने वाले ने जान बूझकर हर तस्वीर में कोई न कोई चीज ग़लत बना दी है. क्या तुम उसकी सब ग़लतियाँ पकड़ सकते हो ?



چٹکلے

(بھائی راجیش سرن)

رمیش - یار میرا چہرا بڑا کالا ہوگیا ہے -

ہریش - دھوبی کے یہاں ڈال دو -

روگی - ڈاکٹر صاحب میرا علاج کیجئے -

ڈاکٹر - کیا تکلیف ہے !

روگی - تکلیف صرف اتنی ہے کہ میں اتنا موٹا ہوگیا ہوں کہ جھک کر اپنے جوتے کا فیتہ بھی نہیں باندھ سکتا - بےحد پریشان ہوں ' بتائیے میں کیا کروں !

ڈاکٹر - بس ! چپل پہنا کیجئے -

ان تصویروں کو دھیان سے دیکھو - تصویر بنانے والے نے جان بوجھ‌کر ہر تصویر میں کوئی نہ کوئی چیز غلط بنا دی ہے - کیا تم اس کی سب غلطیاں پکڑ سکتے ہو؟

हमारी राय

ہماری رائے

कोरिया के दो टुकड़े

अखबारों में अमरीका के पत्रकार एंड्रूराथ का कोरिया पर एक लेख छपा है जो आज से कुछ महीने पहले लिखा गया था. एंड्रूराथ ने कोरिया पहुँच कर वहाँ का आँखों देखा हाल लिखा है. इस लेख में उत्तर कोरिया और दक्खिन कोरिया के बारे में जो बातें बताई गई हैं उनमें से कुछ हम अपने शब्दों में नीचे देते हैं.

—एडीटर

कोरिया ठीक उसी राह पर चल रहा है जिस राह पर चीन गया है. चीन में भी थोड़े दिनों पहले उत्तर में कम्युनिस्टों का ज़ोर था और दक्खिन में च्यांग काई शेक की कोमिनटांग पारटी का. उत्तर वालों को रूस से बढ़ावा मिलता था और दक्खिन वालों को अमरीका से मदद मिलती रही. यही हाल अब कोरिया का है.

दक्खिन कोरिया की सरकार ने पिछले बरसों के अन्दर अपने ख़िलाफ़ राजकाजी विचार रखने वाले लोगों को खूब क़तल किया, वहाँ की नेशनल ऐसम्बली के आज़ाद ख़याल मेम्बरों को जेलों में ठूँसा, देश भर में लोगों को डराने और दबाने के लिये पुलिस ने खूब अत्याचार किये और अमरीका ने पानी की तरह अपना धन

کوریا کے دو ٹکڑے

اخباروں میں امریکہ کے پترکار اینڈرو راتھ کا کوریا پر ایک لیکھ چھپا ہے جو آج سے کچھ مہینے پہلے لکھا گیا تھا - اینڈرو راتھ نے کوریا پہونچ کر وہاں کا آنکھوں دیکھا حال لکھا ہے - اس لیکھ میں اُتر کوریا اور دکھن کوریا کے بارے میں جو باتیں بتائی گئی ہیں اُن میں سے کچھ ہم اپنے شبدوں میں نیچے دیتے ہیں -

—اڈیٹر

کوریا ٹھیک اُسی راہ پر چل رہا ہے جس راہ پر چین گیا ہے - چین میں تھوڑے دنوں پہلے اُتر میں کمیونسٹوں کا زور تھا اور دکھن میں چیانگ کائی شیک کی کومن تانگ پارٹی کا - اتر والوں کو روس سے بڑھاوا ملتا تھا اور دکھن والوں کو امریکہ سے مدد ملتی رہی - یہی حال اب کوریا کا ہے -

دکھن کوریا کی سرکار نے پچھلے برسوں کے اندر اپنے خلاف راج کا جی وچار رکھنے والے لوگوںکو خوب قتل کیا ' وہاں کی نیشنل اسمبلی کے آزاد خیال ممبروں کو جیلوں میں ٹھونسا ' دیش بھر میں لوگوں کو ڈرانے اور دبانے کے لئے پولیس نے خوب اتیاچار کئے اور امریکہ نے پانی کیطرح اپنا دھن

बहाया. इस सब पर भी मालूम होता है कि दक्खिन कोरिया का अन्त वही होने वाला है जो कोमिनटांग चीन का हुआ।

कोरिया के लोग बहुत ही भावुक हैं. शायद एशिया के किसी दूसरे देश के लोग अपने भावों और जज़्बों की रौ में इतने नहीं बहते. कोरिया के ऊपर चालीस बरस तक जापानियों ने राज किया. उन दिनों कोरिया के बड़े बड़े देश भक्तों और लीडरों ने जेलों में और जिलावतनी में अपनी उमरें काटीं कोरिया वालों के चरित्र पर इस सब का भी बहुत गहरा असर पड़ा है।

जिस तरह चीन में कोमिनटांग पारटी थी, उसी तरह और उसी के मुक़ाबले की दक्खिन कोरिया में "कोरियन डेमोक्रेटिक नेशनलिस्ट पारटी है." चीन की उस पारटी में अमीरों, साहूकारों और ज़मींदारों का ज़ोर था. कोरिया की इस पारटी में भी कोरिया के मालदारों का बोलबाला है. चीन की पारटी का नेता था च्यांग काई शेक और कोरिया की पारटी का नेता है डाक्टर सिंघमन री. दूसरी तरफ़ उत्तर चीन का सारा बल चीन के ग़रीबों का बल था और उत्तर कोरिया का सारा बल कोरिया के ग़रीबों का बल है. हाल में दक्खिन कोरिया की नेशनल एसेम्बली में वहाँ की सरकार ने जिस तरह के क़ानूनों को पास होने से रोका उनसे साफ़ दिखाई दे गया कि वह सरकार अमीरों और ज़मींदारों की सरकार है.

चीन में भी अभी हाल में जापानियों की हुकूमत रह चुकी है. च्यांग काई शेक ने शासन हाथ में लेते ही उन सब बड़े बड़े लोगों को ख़ूब बढ़ाया जो जापानी हाकिमों के दाहिने हाथ बने हुए थे. ठीक इसी तरह कोरिया में डाक्टर सिंघमन री ने उन सब लोगों को बढ़ावा दिया जो कोरिया में किसी समय जापानियों के दाहिने हाथ बने हुए थे. कोरिया का एक पूँजीपति है जिसका नाम है पाक-ह्युंग-सिक. जापानियों को उसने खुले मदद दी

بہایا - اس سب پر بھی معلوم ہوتا ہے کہ دکھن کوریا کا انت وہی ہونیوالا ہے جو کومن‌تانگ چین کا ہوا -

کوریا کے لوگ بہت ہی بھاوک ہیں - شاید ایشیا کے کسی دوسرے دیش کے لوگ اپنے بھاؤں اور جذبوں کی رو میں اتنے نہیں بہتے - کوریا کے اوپر چالیس برس تک جاپانیوں نے راج کیا - ان دنوں کوریا کے بڑے بڑے دیش بھکتوں اور لیڈروں نے جیلوں میں اور جلا وطنی میں اپنی عمریں کاٹیں ' کوریا والوں کے چرتر پر اس سب کا بھی بہت گہرا اثر پڑا ہے -

جسطرح چین میں کومن‌تانگ پارٹی تھی ' اسی طرح اور اسکے مقابلہ کی دکھن کوریا میں " کورین ڈیموکریٹک نیشنلسٹ پارٹی " ہے - چین کی اس پارٹی میں امیروں ' ساہوکاروں اور زمینداروں کا زور تھا - کوریا کی اس پارٹی میں بھی کوریا کے مالداروں کا بول بالا ہے - چین کی پارٹی کا نیتا تھا چیانگ کائی شیک اور کوریا کی پارٹی کا نیتا ہے ڈاکٹر سنگھمن ری - دوسری طرف اتر چین کا سارا بل چین کے غریبوں کا بل تھا اور اتر کوریا کا سارا بل کوریا کے غریبوں کا بل ہے - حال میں دکھن کوریا کی نیشنلسٹ اسمبلی میں وہاں کی سرکار نے جس طرح کے قانونوں کو پاس ہونے سے روکا اُن سے صاف دکھائی دے گیا ہے کہ وہ سرکار امیروں اور زمینداروں کی سرکار ہے -

چین میں بھی ابھی حال میں جاپانیوں کی حکومت رہ چکی ہے - چیانگ کائی شیک نے شاسن اپنے ہاتھ میں لیتے ہی اُن سب بڑے بڑے لوگوں کو خوب بڑھایا جو جاپانی حاکموں کے داہنے ہاتھ بنے ہوئے تھے - ٹھیک اسی طرح کوریا میں ڈاکٹر سنگھمن ری نے اُن سب لوگوں کو بڑھاوا دیا جو کوریا میں کسی سمے جاپانیوں کے داہنے ہاتھ بنے ہوئے تھے - کوریا کا ایک پونجی پتی ہے جس کا نام ہے پاک - ہیونگ - سک - جاپانیوں کو اُس نے کھلے مدد دی

थी और उनसे खूब कमाया भी था. डाक्टर सिंघमन री का भी रुपए पैसे के मामले में सबसे बड़ा मददगार वही पाक-ह्यूंग-सिक है. पिछले दिनों इस आदमी ने इतने जुर्म किये कि जगह जगह से जनता ने उस पर मुक़द्मा चलाए जाने की मांग की. डाक्टर री ने बहुत दिनों टलाया. पर आखिर जनता के क्रोध से दब कर पाक-ह्यूंग-सिक पर मुक़द्मा चलाना पड़ा. दक्खिन कोरिया की नेशनल एसेम्बली में सरकार की तरफ़ के दल का सबसे बड़ा नेता है किम जून-युन, जो उस समय जब जापानियों की हुकूमत थी जापानी गवरनर-जनरल का सबसे बड़ा सलाहकार था और जापानी वार कौंसिल तक का मेम्बर था. लोग उसके यहाँ तक ख़िलाफ़ हैं कि नेशनल एसेम्बली के बाईस मेम्बरों ने लिख कर सरकार को दरख़ास्त दी कि इस आदमी को एसेम्बली से निकाल दिया जाय.

दक्खिन कोरिया की नेशनल एसेम्बली ही में एक दल सरकार के ख़िलाफ़ भी है जिसने अपनी एक कमेटी बना रक्खी है जिसका नाम है "स्पेशल कमेटी आन नेशनल ट्रेटरस ." (यानी देश घातकों के ख़िलाफ़ ख़ास कमेटी) इस कमेटी ने विदेशी जापानियों के इन मददगारों के ख़िलाफ़ बहुत सी सच्ची शहादतें जमा की हैं. इस काम के लिये इस कमेटी को अपनी अलग ख़ास पुलिस रखनी पड़ी. जून के शुरू में सरकारी पुलिस ने इस कमेटी के दफ़्तर पर धावा किया. बहुत से काग़ज़ पत्तर उठा कर ले गई और बहुत से आदमियों को गिरफ़्तार कर लिया. कमेटी के चेयरमैन ने जब ऐतराज़ किया तो धावा करने वाले पुलिस अफ़सर ने जवाब दिया कि "हमने जो कुछ किया है प्रेसिडेंट री के ख़ास हुकुम से किया है ." जिन बाईस आदमियों को गिरफ़्तार किया गया था उन्हें ले जाकर सरकारी पुलिस ने उनकी ख़ूब गत बनाई. जब यह बाईस रिहा किये गए तो उनमें से सोलह घायल थे, कुछ की पसलियाँ टूटी हुई थीं, कुछ की

تھی اور اُن سے خوب کمایا بھی تھا - ڈاکٹر سنگھمن ری کا بھی روپئے پیسے کے معاملے میں سب سے بڑا مددگار وہی پاک - ھیونگ - سک ہے - پچھلے دنوں اس آدمی نے اتنے جرم کئے کہ جگہ جگہ سے جنتا نے اُس پر مقدمہ چلائے جانے کی مانگ کی - ڈاکٹر ری نے بہت دنوں ٹلایا - پر آخر جنتا کے کرودھ سے دب کر پاک - ھیونگ - سک پر مقدمہ چلانا پڑا - دکھن کوریا کی نیشنلسٹ اسمبلی میں سرکار کی طرف کے دل کا سب سے بڑا نیتا ہے کم - جون - ین ' جو اُس سمے جب جاپانیوں کی حکومت تھی جاپانی گورنرجنرل کا سب سے بڑا صلاحکار تھا اور جاپانی وار کونسل تک کا ممبر تھا - لوگ اسکے یہاں تک خلاف ہیں کہ نیشنل اسمبلی کے بائیس ممبروں نے لکھ کر سرکار کو درخواست دی کہ اس آدمی کو اسمبلی سے نکالدیا جائے -

دکھن کوریا کی نیشنل اسمبلی ہی میں ایک دل سرکار کے خلاف بھی ہے جسنے اپنی ایک کمیٹی بنا رکھی ہے جسکا نام ہے "اسپیشل کمیٹی آن نیشنل ٹریٹرس" (یعنی دیش گھاتکوں کیخلاف خاص کمیٹی) اس کمیٹی نے ودیشی جاپانیوں کے ان مددگاروں کے خلاف بہت سی سچی شہادتیں جمع کی ہیں - اسکام کیلئے اس کمیٹی کو اپنی الگ خاص پولیس رکھنی پڑی - جون کے شروع میں سرکاری پولیس نے اس کمیٹی کے دفتر پر دھاوا کیا - بہت سے کاغذ پتر اٹھا کر لیگئی اور بہت سے آدمیوں کو گرفتار کر لیا - کمیٹی کے چیرمین نے جب اعتراض کیا تو دھاوا کرنیوالے پولیس افسر نے جوابدیا کہ "ہم نے جو کچھ کیا ہے پریسیڈنٹ ری کے خاص حکم سے کیا ہے" جن بائیس آدمیونکو گرفتار کیا گیا تھا انہیں لے جا کر سرکاری پولیس نے انکی خوب گت بنائی - جب یہ بائیس رہا کئے گئے تو اُن میں سے سولہ گھائل تھے ' کچھ کی پسلیاں ٹوٹی ہوئی تھیں ' کچھ کی

खोपड़ियाँ फटी हुई थीं और कुछ के कान के परदे फट गये थे. इससे मालूम होता है कि दक्खिन कोरिया की आज कल की पुलिस ने अपने उस समय के जापानी मालिकों से यह सब काम अच्छी तरह सीख लिये हैं .

चीन में कोमिनटांग पारटी के जमाने में खुफ़िया पुलिस की भरमार थी. दक्खिन कोरिया में अब खुफ़िया पुलिस की भरमार है. यहाँ तक कि दक्खिन कोरिया का बड़ा वज़ीर ली-बुम-सुक एक समय कोमिनटांग की खुफ़िया पुलिस में रह चुका है और चीन के लोग उससे काफ़ी नफ़रत करते थे. च्यांग काई शेक ने एक किताब लिखी है "चाइनाज़ डेस्टिनी" (चीन की क़िस्मत) डाक्टर री ने एक एक किताब लिखी है "इलमिन डाकट्रिन" (एक क़ौम का सिद्धान्त) दोनों में एक ही से उसूलों का प्रचार किया गया है .

डाक्टर री के वजीर मंडल में तालीम विभाग का वज़ीर है डाक्टर अहन-हो-साग. अहन-हो-साग ने दक्खिन कोरिया के स्कूलों से दो हज़ार अध्यापकों को पिछले दिनों केवल इस लिये बरखास्त कर दिया कि "उनके राजकाजी विचारों" पर उसे पूरा भरोसा नहीं था. डाक्टर अहन-हो साग ने एक "स्टूडेंटस् नेशनल गार्ड" क़ायम किया जिसका मक़सद है लोगों के "विचारों को पाक" करना ! डाक्टर अहन-जिस तरह की तालीम दक्खिन कोरिया के नौजवानों को देना चाहते हैं उसका अन्दाज़ा उनके इस मशहूर वाक्य से किया जा सकता है—"इस देश के अन्दर कोई ऐसा समाचार पत्र बरदाश्त नहीं किया जा सकता जो सरकार का विरोध करे ...... "

कोमिनटाँग पारटी की हुकूमत के दिनों में चीन में घूसखोरी का बाजार खूब गरम था. दक्खिन कोरिया की हालत आजकल उससे भी बदतर है. यह बुराई नीचे से ऊपर तक फैली हुई है. डाक्टर री के वज़ीर मंडल में तिजारत और उद्योग विभाग की वज़ीर हैं

کھوپڑیاں پھٹی ہوئی تھیں اور کچھ کے کان کے پردے پھٹ گئے تھے - اس سے معلوم ہوتا ہے کہ دکھن کوریا کی آج کل کی پولیس نے اپنے اُس سمے کے جاپانی مالکوں سے یہ سب کام اچھی طرح سیکھ لئے ہیں -

چین میں کومن تانگ پارٹی کے زمانے میں خفیہ پولیس کی بھرمار تھی - دکھن کوریا میں اب خفیہ پولیس کی بھرمار ہے - یہاں تک کہ دکھن کوریا کا بڑا وزیر لی-بم-سک ایک سمے کومن تانگ کی خفیہ پولیس میں رہ چکا ہے اور چین کے لوگ اُس سے کافی نفرت کرتے تھے - چیانگ کائی شیک نے ایک کتاب لکھی ہے " چائناز ڈیسٹنی " (چین کی قسمت) - ڈاکٹر ری نے ایک کتاب لکھی ہے " المن ڈاکٹرن " (ایک قوم کا سدھانت) دونوں میں ایک ہی سے اُصولوں کا پرچار کیا گیا ہے -

ڈاکٹر ری کے وزیر منڈل میں تعلیم وبھاگ کا وزیر ہے - ڈاکٹر اہن - ہو - سانگ . اہن - ہو - سانگ نے دکھن کوریا کے اسکولوں سے دو ہزار ادھیاپکوں کو پچھلے دنوں کیول اس لئے برخاست کردیا کہ " اُن کے راج کاجی وچاروں " پر اُسے پورا بھروسہ نہیں تھا - ڈاکٹر آہن - ہوسانگ نے ایک " اسٹوڈنٹس نیشنل گارڈ " قایم کیا جس کا مقصد ہے لوگوں کے " وچاروں کو پاک " کرنا ! ڈاکٹر اہن جس طرح کی تعلیم دکھن کوریا کے نوجوانوں کو دینا چاہتے ہیں اُس کا اندازہ اُن کے اس مشہور واکیہ سے کیا جاسکتا ہے - " اس دیش کے اندر کوئی ایسا سماچار پتر برداشت نہیں کیا جاسکتا جو سرکار کا ورودھ کرے........ "

کومن تانگ پارٹی کی حکومت کے دنوں میں چین میں گھوس خوری کا بازار خوب گرم تھا - دکھن کوریا کی حالت آجکل اُس سے بھی بدتر ہے - یہ برائی اُوپر سے نیچے تک پھیلی ہوئی ہے - ڈاکٹر ری کے وزیر منڈل میں تجارت اور اُدیوگ وبھاگ کی وزیر ہیں

एक मिस लुई-यिम. मिस लुई यिम डाक्टर री की बड़ी चहेती हैं. मिस लुई-यिम ने डाक्टर री की पचहत्तरवीं साल गिरह के मौक़े पर डाक्टर री को भेंट करने के लिये उन पूंजीपतियों से, जो मिस यिम के दबाव में थे, पाँच करोड़ वान (कोरियाई सिक्का) जमा कर लिये. लोगों ने इस पर इतना शोर मचाया कि डाक्टर री ने मिस यिम से कह कर उस रुपये को वापिस करा दिया. हाल में फिर एक तहक़ीक़ाती कमेटी ने पता लगाया कि मिस यिम ने खुद अपने फिर से चुने जाने के लिये उन्हीं लोगों पर दबाव डालकर फिर एक बहुत बड़ी रक़म जमा कर ली. यह बात क़ानून के बिलकुल खिलाफ़ थी. लोगों का कहना है कि वज़ीर मंडल ही के अन्दर दो पारटियाँ हैं जिसकी बदौलत मिस यिम की यह हरकतें खुलती रहती हैं.

च्यांग काई शेक के अधीन चीन अपनी पारटी बाज़ी के लिये खूब बढ़ा चढ़ा था, दक्खिन कोरिया में भी सरकार के अन्दर और बाहर दोनों जगह पारटी बाज़ी हद को पहुँची हुई है.

जंग के दिनों में चीनी कम्युनिस्टों की राजधानी बहुत दिनों तक येनान थी. उत्तर कोरिया के पाँच चोटी के नेताओं में से तीन येनान में रहे हुए और वहीं के पढ़े हुए हैं. वहां के बहुत से नेता चीनी कम्युनिस्ट फ़ौज में बरसों रह चुके हैं. येनान ही में एक "कोरियन इंडिपिंडेंस लीग" क़ायम हुई थी. उस लीग का सरदार किम-तु-बोंग, जो बहुत बड़ा विद्वान है, आजकल उत्तर कोरिया की मजदूर पारटी का चेयरमैन है. यह पारटी बिलकुल कम्युनिस्ट पारटी है और सोवियट रूस के रास्ते पर चलती है.

कोरिया के कम्युनिस्ट ठीक उसी ढंग पर चल रहे हैं जिस ढंग पर चीन के कम्युनिस्ट. केवल एक खास बात में उनमें फ़रक़ है. चीनी कम्युनिस्ट जिन किसानों में जमीन बाँटते हैं उन्हें उन जमीनों का मालिक बना देते हैं. उत्तर कोरिया के कम्युनिस्ट जिन किसानों को जमीनें देते हैं उन्हें केवल बरतने के

ایک مس لوئی یم - مس لوئی یم ڈاکٹر ری کی بڑی چہیتی ہیں - مس لوئی یم نے ڈاکٹر ری کی پچھترویں سالگرہ کے موقع پر ڈاکٹر ری کو بھینٹ کرنے کیلئے اُن پونجی پتیوں سے جو مس یم کے دباؤ میں تھے ' پانچ کروڑ وان (کوریائی سکہ) جمع کر لئے - لوگوں نے اس پر اتنا شور مچایا کہ ڈاکٹر ری نے مس یم سے کہہ کر اُس روپے کو واپس کرا دیا - حال میں پھر ایک تحقیقاتی کمیٹی نے پتہ لگایا کہ مس یم نے خود اپنے پھر سے چنے جانیکے لئے اُنہی لوگوں پر دباؤ ڈال کر پھر ایک بہت بڑی رقم جمع کر لی - یہ بات قانون کے بالکل خلاف تھی - لوگوں کا کہنا ہے کہ وزیر منڈل ہی کے اندر دو پارٹیاں ہیں جس کی بدولت مس یم کی یہ حرکتیں کھلتی رہتی ہیں -

چیانگ کائی شیک کے ادھین چین اپنی پارٹی بازی کیلئے خوب بڑھا چڑھا تھا - دکھن کوریا میں بھی سرکار کے اندر اور باہر دونوں جگہ پارٹی بازی حد کو پہونچی ہوئی ہے -

جنگ کے دنوں میں چینی کمیونسٹوں کی راجدھانی بہت دنوں تک یے نان میں تھی - اُتر کوریا کے پانچ چوٹی کے نیتاؤں میں سے تین یے نان میں رہے ہوئے اور وہیں کے پڑھے ہوئے ہیں - وہاں کے بہت سے نیتا چینی کمیونسٹ فوج میں برسوں رہ چکے ہیں - یے نان ہی میں ایک " کوریَن انڈیپینڈنس لیگ " قایم ہوئی تھی - اس لیگ کا سردار کم - تو - بونگ ' جو بہت بڑا ودوان ہے ' آج کل اُتر کوریا کی مزدور پارٹی کا چیرمین ہے - یہ پارٹی بالکل کمیونسٹ پارٹی ہے - اور سوویٹ روس کے راستہ پر چلتی ہے -

کوریا کے کمیونسٹ ٹھیک اسی ڈھنگ پر چل رہے ہیں جس ڈھنگ پر چین کے کمیونسٹ - کیول ایک خاص بات میں ان میں فرق ہے - چینی کمیونسٹ جن کسانوں میں زمین بانٹتے ہیں اُنھیں ان زمینوں کا مالک بنا دیتے ہیں - اُتر کوریا کے کمیونسٹ جن کسانوں کو زمین دیتے ہیں اُنھیں کیول برتنے کے

लिये देते हैं. ज़मीन की मिलकियत एक 'गाँव पंचायत' के हाथ में रहती है. कहा जाता है कि उत्तर कोरिया के किसानों को इसकी शिकायत भी है. पर यह इसलिये किया जा रहा है कि आगे चलकर किसानों की निजी मिलकियत को ख़तम करके सोवियट के ढंग पर ज़मीन की पंचायती मिलकियत क़ायम की जा सके.

रूस और अमरीका की खींचातानी का कोरिया पर सबसे बुरा असर पड़ा. इस खींचातानी से जितनी बरबादी चीन की हुई है उससे कहीं ज़्यादा बरबादी कोरिया की हुई है. दुनिया में और कोई मुल्क ऐसा नहीं है जिसे रूस और अमरीका ने बीच से दो टुकड़े कर के आधा आधा अपने अपने क़ब्ज़े में किया हो. रूस और अमरीका दोनों कहने को कोरिया से चले आए पर दोनों दोनों टुकड़ों की सरकारों पर अपनी अपनी गहरी छाप छोड़ आए. मालूम होता है कोरिया के यह दोनों टुकड़े एक डम्बेल के दो हिस्से हैं जिनमें से एक को रूस के असर में कोरियाई ग़रीबों ने अपने हाथ में कस रक्खा है और दूसरे को अमरीका के असर में कोरियाई मालदारों ने अपने हाथों में भींच रक्खा है .

(५८)

दक्खिन कोरिया के अमरीकी पिट्ठुओं में डेमाक्रेसी या लोकशाही का तो निशान भी नहीं. कम्युनिज़्म का मुक़ाबला करने के लिये और सोवियट के असर को बढ़ने से रोकने के लिये अमरीका ने कम्युनिस्टों के उन जानी दुशमनों की मदद ली और उन्हें बढ़ावा दिया जिन्होंने पुलिस के उन सब ज़ुल्मों और अत्याचारों और उन तरीक़ों से जी भर के काम लिया जिनका इलज़ाम अमरीका वाले कम्युनिस्टों पर लगाया करते हैं. जनता की आज़ादी का तो उन्होंने ख़ात्मा ही कर दिया .

यू० एन० ओ० का जो कमीशन कोरिया गया हुआ है उसे चूँकि सोवियट रूस और उसके साथियों ने बायकाट कर रक्खा है इस लिये

لئے دیتے ہیں - زمین کی ملکیت ایک ' گاؤں پنچایت ' کے ہاتھ میں رہتی ہے - کہا جاتا ہے کہ اُتر کوریا کے کسانوں کو نجی ملکیت کو ختم کر کر سوویت کے ڈھنگ پر زمین کی پنچایتی ملکیت قایم کی جا سکے

روس اور امریکہ کی کھینچا تانی کا کوریا پر سب سے برا اثر پڑا - اس کھینچا تانی سے جتنی بربادی چین کی ہوئی ہے اس سے کہیں زیادہ بربادی کوریا کی ہوئی ہے - دنیا میں اور کوئی ملک ایسا نہیں ہے جسے روس اور امریکہ نے بیچ سے دو ٹکڑے کرکے آدھا آدھا اپنے قبضہ میں کیا ہو - روس اور امریکہ دونوں کہنے کو کوریا سے چلے آئے پر دونوں دونوں ٹکڑوں کی سرکاروں پر اپنی اپنی گہری چھاپ چھوڑ آئے - معلوم ہوتا ہے کہ کوریا کے یہ دونوں ٹکڑے ایک ڈمبل کے دو حصے ہیں جن میں سے ایک کو روس کے اثر میں کوریائی غریبوں نے اپنے ہاتھ میں کس رکھا ہے - اور دوسرے کو امریکہ کے اثر میں کوریائی مالداروں نے اپنے ہاتھوں میں بھینچ رکھا ہے -

(۵۸)

دکھن کوریا کے امریکی پٹھوؤں میں ڈیمو کریسی یا لوک شاہی کا تو نشان بھی نہیں - کمیونزم کا مقابلہ کرنے کے لئے اور سوویت اثر کو بڑھنے سے روکنے کے لئے امریکہ نے کمیونسٹوں کے ان جانی دشمنوں کی مدد لی اور اُنہیں بڑھاوا دیا جنہوں نے پولیس کے ان سب ظلموں اور اتیاچاروں اور ان طریقوں سے جی بھر کے کام لیا جن کا الزام امریکہ والے کمیونسٹوں پر لگایا کرتے ہیں - جنتا کی آزادی کا تو انہوں نے خاتمہ ہی کر دیا -

یو - این - او کا جو کمیشن امریکہ گیا ہوا ہے اسے چونکہ سوویت روس اور اس کے ساتھیوں نے بائیکاٹ کر رکھا ہے اس لئے وہ یہاں بالکل نکما ہے - اس کمیشن میں ...

अनूप सिंह के जो हिन्दुस्तान के प्रतिनिधि हैं और सब अमरीका की पारटी के हैं .

चीन के कम्युनिस्टों में जो अपने पैरों पर खड़े होने की ताक़त दिखाई देती थी वह कोरिया के कम्युनिस्टों में कम दिखाई देती है. वह बहुत अधिक दरजे तक रूस के सहारे खड़े हैं ,

दक्खिन कोरिया वालों की हालत इस बारे में और भी ज्यादा नाज़ुक है. वह तो बिलकुल ही अमरीका के सहारे ज़िन्दा हैं . देश वाले उन्हें देशघातक मानते हैं. चीन की कोमिनटांग पारटी में अपने पैरों पर खड़े होने की इससे कहीं ज्यादा ताक़त थी .

कोरिया कुल मिलाकर ख़ासा धनवान देश है. उसमें सब चीज़ें पैदा होती हैं और वह अच्छी तरह अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है. दक्खिन कोरिया में दो करोड़ आदमी बसते हैं पर उनमें अधिकतर खेतिहर हैं. खानें और बड़े बड़े कारखाने ज्यादातर उत्तर कोरिया में हैं जहाँ की आबादी एक करोड़ है. अमरीका पानी की तरह धन बहा बहा कर दक्खिन के टुकड़े को अलग ज़िन्दा रख रहा है . जानने वालों का कहना है कि यह चीज़ बहुत दिनों तक नहीं चल सकती . दक्खिन कोरिया की पिट्ठू सरकार को घूसखोरी और पारटी बाज़ी से ही फ़ुरसत नहीं. चीन की कोमिनटांग पारटी की तरह उसे कम्युनिस्टों को मिटाने की ज्यादा फ़िक्र है, देश को खुशहाल करने की कम .

यह सब बातें एक अमरीकी पत्रकार की कही हुई हैं .

—एडीटर

انوپ سنگھ کے جو ہندوستان کے پرتینِدھی ہیں اور سب امریکہ کی پارٹی کے ہیں -

چین کے کمیونسٹوں میں جو اپنے پیروں پر کھڑے ہونے کی طاقت دکھائی دیتی تھی وہ کوریا کے کمیونسٹوں میں کم دکھائی دیتی ہے - وہ بہت ادھک درجہ تک روس کے سہارے کھڑے ہیں -

دکھن کوریا والوں کی حالت اس بارے میں اور بھی زیادہ نازک ہے - وہ تو بالکل ہی امریکہ کے سہارے زندہ ہیں ۔ دیش والے انہیں دیش گھاتک مانتے ہیں ۔ چین کی کومن تانگ پارٹی میں اپنے پیروں پر کھڑے ہونے کی اس سے کہیں زیادہ طاقت تھی -

کوریا کل ملا کر ایک خاصہ دھنوان دیش ہے - اس میں سب چیزیں پیدا ہوتی ہیں اور وہ اچھی طرح اپنے پیروں پر کھڑا ہو سکتا ہے - دکھن کوریا میں دو کروڑ آدمی بستے ہیں - پر ان میں ادھک تر کھیتیہر ہیں - کھانیں اور بڑے بڑے کارخانے زیادہ تر اُتری کوریا میں ہیں - جہاں کی آبادی ایک کروڑ ہے - امریکہ پانی کی طرح دھن بہا بہا کر دکھن کے ٹکڑے کو الگ زندہ رکھ رہا ہے - جاننے والوں کا کہنا ہے کہ یہ چیز بہت دنوں تک نہیں چل سکتی - دکھن کوریا کی پٹھو سرکار کو گھوسخوری اور پارٹی بازی سے فرصت نہیں - چین کی کومن تانگ پارٹی کی طرح اسے کمیونسٹوں کو مٹانے کی زیادہ فکر ہے - دیش کو خوش حال کرنے کی کم -

یہ سب باتیں ایک امریکی پترکار کی کہی ہوئی ہیں -

—اڈیٹر

विधान और बलिदान का महीना

(भाई अब्दुल हलीम अंसारी)

क्या जनवरी केवल संदेशों और पैग़ामों का ही महीना है. ?

क्या ख़बर है ? यह और किन किन चीज़ों का महीना है.

प्रथम यह जीवन पर रोशनी डालने का महीना है और उत्तम भविष्य की ख़बर सुनाने वाला.

शान्ति का संदेसा लाने वाला भी, क्रान्ति का पैग़ाम देने वाला भी.

भूत काल को पीछे छोड़कर, वर्त्तमान काल में क़दम रखने वाला, और भविष्य काल का प्रोग्राम लाने वाला.

और याद रहे कि यह जनवरी का महीना :

एक प्रेम-पुजारी पर गोली की आवाज़ों का महीना है और बहुत से सियासी राज़ों का.

यह साम्प्रदायिक ... श का महीना है और क़ौमी काविश का.

श्री भी हिन्दी के साथ

... वत का महीना है और राष्ट्रीय बग़ावत का

पेमचन्द

यह ... क़ाम की तलवार बेनयाम होने का महीना है और ज़ालिम के वार का.

यह क्रोध और विरोध की आग भड़कने का महीना है और सन्तोष की छाती फट जाने का.

यह क़ौम के बाप पर चोट का महीना है और बेटे के हाथ से बाप की मौत क .

यह महात्मा के आख़री बार 'राम-राम' कहने का महीना

ودھان اَور بلیدان کا مہینہ

(بھائی عبدالحلیم انصاری)

کیا جنوری کیول سندیشوں اَور پیغاموں کا ھی مہینہ ھے ؟

کیا خبر ھے ؟ یہ اور کن کن چیزوں کا مہینہ ھے -

پرتھم یہ جیون پر روشنی ڈالنے کا مہینہ ھے اور اُتم بھوشیہ کی خبر سنانے والا .

شانتی کا سندیسہ لانے والا بھی، کرانتی کا پیغام دینے والا بھی.

بھوت کال کو پیچھے چھوڑ کر ورتمان کال میں قدم رکھنے والا اور بھوشیہ کال کا پروگرام لانے والا .

اَور یاد رھے کہ یہ جنوری کا مہینہ :

ایک پریم پجاری پر گولی کی آوازوں کا مہینہ ھے اَور بہت سے سیاسی رازوں کا .

یہ سامپردایک سازش کا مہینہ ھے اَور قومی کاوش کا.

یہ دھارمک عداوت کا مہینہ ھے اَور راشٹریہ بغاوت کا .

یہ انتقام کی تلوار بے نیام ھونے کا مہینہ ھے اَور ظالم کے وار کا.

یہ کرودھ اَور وِرودھ کی آگ بھڑکنے کا مہینہ ھے اَور سنتوش کی چھاتی پھٹ جانے کا.

یہ قوم کے باپ پر چوٹ کا مہینہ ھے . اور بیٹے کے ھاتھہ سے باپ کی موت کا.

یہ مہاتما کے آخری بار "رام رام" کہنے کا مہینہ ھے اَور پھر

कोरिया और भारत

कोरिया के सच्चे कोरिया प्रेमियों के जी पर क्या बीती होगी जब उन्होंने भारत का फ़ैसला अपने बारे में सुना होगा ! हम उनके जी की हालत का पता अपने जी से लगा सकते हैं. भारत के तटस्थ (ना तरफ़दार) रहने की खबर सुन कर हमें तसल्ली हुई थी और ऐसा मालूम हुआ था कि इस वक्त भारत ने बहुत अंशों तक बड़ी लड़ाई को होते होते रोक दिया. और हमें यह अन्दाजा था कि भारत आख़िर दम तक तटस्थ बना रहेगा या अगर बोला ही तो 'ना' करेगा पर उसकी 'हाँ' सुन कर तो हम दाँतों तले उँगली दाब कर रह गये. हमें तो अभी भी भरोसा है कि हिन्दुस्तान में हम जैसों की गिनती कुछ कम नहीं है. जब हमारा यह हाल हुआ तो कोरियावासी तो एक दम भौंचक्के रह गये होंगे. भारत के फ़ैसले से हमारा दिल इतना मुस गया था कि उसके बाद मिस्र के फ़ैसले से ऐसा मालूम हुआ कि मानो मिस्र में गांधी बोल उठा और हमारा दिल खिल उठा. अहिंसा फलती फूलती है सचाई के रूप में और सचाई का अंकुर बहादुरी की गरमी पाकर बाहर आता है. मिस्र की साफ़गोई बहादुरी से भरी हुई है. उसके देश में अंगरेजी घेरे के रूप में 'एग्रेशन' यानी 'बेजा हमला' मौजूद है. उसके पड़ोस में भी यही हाल हो रहा है फिर वह किस तरह इस नाइन्साफ़ी में साथी हो सकता है. न हो ऐसा, अगर पाकिस्तान की वही हालत होती जो आज दक्खिनी कोरिया की है और भारत की वही हालत होती जो आज उत्तरी कोरिया की है और हमारा काश्मीर की मदद को जाना पाकिस्तान पर हमला मान लिया गया होता और तब सिक्योरिटी कौंसिल (सुरक्षा समिति) ने यही फ़ैसला दिया होता और आमरीका इसी तरह पाकिस्तान की मदद को

کوریا اور بھارت

کوریا کے سچے کوریا پریمیوں کے جی پر کیا بیتی ہوگی جب انہوں نے بھارت کا فیصلہ اپنے بارے میں سنا ہوگا ! ہم ان کے جی کی حالت کا پتہ اپنے جی سے لگا سکتے ہیں - بھارت کے تٹستھ (ناطرفدار) رہنے کی خبر سن کر ہمیں تسلی ہوئی تھی اور ایسا معلوم ہوا تھا کہ اس وقت بھارت نے بہت انشوں تک بڑی لڑائی کو ہوتے ہوتے روک دیا - اور ہمیں یہ اندازہ تھا کہ بھارت آخر دم تک تٹستھ بنا رہے گا - یا اگر بولا ہی تو 'نا' کرے گا - پر اسکی 'ہاں' سن کر تو ہم دانتوں تلے انگلی داب کر رہ گئے - ہمیں تو ابھی بھی بھروسہ ہے کہ ہندوستان میں ہم جیسوں کی گنتی کچھ کم نہیں ہے - جب ہمارا یہ حال ہوا تو کوریا واسی تو ایک دم بھونچکے رہ گئے ہوں گے - بھارت کے فیصلے سے ہمارا دل اتنا مس گیا تھا کہ اس کے بعد مصر کے فیصلے سے ایسا معلوم ہوا کہ مانو مصر میں گاندھی بول اٹھا اور ہمارا دل کھل اٹھا - اہنسا پھلتی پھولتی ہے سچائی کے روپ میں اور سچائی کا انکر بہادری کی گرمی پاکر باہر آتا ہے - مصر کی صاف گوئی بہادری سے بھری ہوئی ہے - اسکے دیش میں انگریزی گھیرے کے روپ میں 'ایگریشن' یعنی 'بیجا حملہ' موجود ہے - اسکے پڑوس میں بھی یہی حال ہو رہا ہے پھر وہ کس طرح اس ناانصافی میں ساتھی ہو سکتا ہے - نہ ہو ایسا' اگر پاکستان کی وہ حالت ہوتی جو آج دکھنی کوریا کی ہے اور بھارت کی وہی حالت ہوتی جو آج اتری کوریا کی ہے اور ہمارا کشمیر کی مدد کو جانا پاکستان پر حملہ مان لیا گیا ہوتا اور تب سکیورٹی کونسل (سرکشا سمیتی) نے یہی فیصلہ دیا ہوتا اور امریکہ اسی طرح پاکستان کی مدد کو

दौड़ा होता तब और मुल्कों के आज के हमारे जैसे फ़ैसले का हमारे ऊपर क्या असर हुआ होता ? हमारा तो यही ख़याल है कि जब भी कोई सचाई बहुत सी शर्तों के घेरे में होकर आती है तो न वह ख़ालिस सचाई रह जाती है और न अन्तरात्मा की पुकार . भारत का इस वक़्त का फ़ैसला भी, और कुछ भले ही हो, भारत के अन्तरात्मा की पुकार नहीं है .

क़ानून की बात हम नहीं करेंगे . सुरक्षा समिति ने ख़ुद अपने क़ायदे के ख़िलाफ़ फ़ैसला देकर क़ानून को बे आबरू कर दिया . हमारी मामूली बुद्धि सुरक्षा समिति के फ़ैसले को पहले तो यों ठीक मानने के लिये तैयार नहीं कि जिस समिति में यह फ़ैसला दिया गया है उसमें जज की हैसियत से ऐसे दो आदमी भी शामिल हैं जो कोरिया में अपना अपना अलग अलग हित रखते हैं, यानी रूस और अमरीका . समिति के विधान में एक ऐसी धारा रहनी ही चाहिये कि जिन मुल्कों के बारे में फ़ैसला देना हो वह मुल्क न जज की हैसियत से रह सकते हैं और न उनकी राय गिनी जा सकती है. दूसरे हम यों भी मानने को तैयार नहीं कि जब एक ऐसा ठहराव समिति के सामने आये जो क़ायदे के ख़िलाफ़ है और उसे सभापति बे क़ायदा न ठहरा सके , तीसरे यों भी कि जब समिति के क़ायदों के मुआफ़िक़ वह प्रस्ताव पास ही नहीं हुआ था तो जनता तक भी क्यों पहुँचने दिया गया .

अमरीका की जल्दबाज़ी तो हम जैसों को और भी अखरती है और वह यह साबित करती है कि अमरीका सुरक्षा समिति की इतनी इज़्ज़त नहीं करता जितनी इज़्ज़त वाली वह उसको कह कर अपनी ग़लत कारवाई का समर्थन कर रहा है .

हमें और भी ज़्यादा अफ़सोस इस बात का है कि वह बेक़ायदा कारवाई सुरक्षा समिति ने उस वक़्त कर डाली जब कि उसका सभापति एक भारती है और समिति के ज़रिये ऐसे वक़्त दुनिया की शान्ति ख़तरे में पड़ी जब गांधी भक्तों की भारती सरकार का भेजा हुआ

دوڑا ہوتا تب اور ملکوں کے آج کے ہمارے جیسے فیصلے کا ہمارے اوپر کیا اثر ہوتا ؟ ہمارا تو یہی خیال ہے کہ اب بھی کوئی سچائی بہت سی شرطوں کے گھیرے میں ہوکر آتی ہے تو نہ وہ خالص سچائی رہ جاتی ہے اور نہ انترآتما کی پکار - بھارت کا اس وقت کا فیصلہ بھی ' اور کچھ بھلے ہی ہو ' بھارت کے انترآتما کی پکار نہیں ہے -

قانون کی بات ہم نہیں کرینگے - سرکشا سمیتی نے خود اپنے قاعدے کے خلاف فیصلہ دےکر قانون کو بے آبرو کردیا - ہماری معمولی بدھی سرکشا سمیتی کے فیصلے کو پہلے تو یوں ٹھیک ماننے کے لئے تیار نہیں کہ جس سمیتی میں یہ فیصلہ دیا گیا ہے اسمیں جج کی حیثیت سے یہ دو آدمی بھی شامل ہیں جو کوریا میں اپنا اپنا الگ الگ ہت رکھتے ہیں - یعنی روس اور امریکہ - سمیتی کے ودھان میں ایک ایسی دھارا رہنی ہی چاہئے کہ جن ملکوں کے بارے میں فیصلہ دینا ہو وہ ملک نہ جج کی حیثیت سے رہ سکتے ہیں اور نہ انکی رائے گنی جاسکتی ہے - دوسرے ہم یوں بھی ماننے کو تیار نہیں کہ جب ایک ایسا ٹھہراؤ سمیتی کے سامنے آئے جو قاعدہ کے خلاف ہے اور سبھاپتی اسے بے قاعدہ نہ ٹھہرا سکے . تیسرے یوں بھی کہ جب سمیتی کے قاعدوں کے موافق وہ پرستاو پاس نہیں ہوا تھا تو جنتا تک بھی کیوں پہونچنے دیا گیا -

امریکہ کی جلدبازی تو ہم جیسوں کو اور بھی اکھرتی ہے اور وہ یہ ثابت کرتی ہے کہ امریکہ سرکشا سمیتی کی اتنی عزت نہیں کرتا جتنی عزت والی وہ اسکو کہکر اپنی غلط کارروائی کا سمرتھن کررہا ہے -

ہمیں اور بھی زیادہ افسوس اس بات کا ہے کہ یہ بے قاعدہ کارروائی سرکشا سمیتی نے اسوقت کر ڈالی جبکہ اس کا سبھاپتی ایک بھارتی ہے اور سمیتی کے ذریعے ایسے وقت دنیا کی شانتی خطرہ میں پڑی جب گاندھی بھگتوں کی بھارتی سرکار کا بھیجا ہوا

आदमी सुरक्षा समिति के सभापति के आसन पर मौजूद है. उत्तरी कोरिया के दक्खिनी कोरिया पर हमले से दुनिया की शान्ति भंग नहीं हुई थी. दुनिया की शान्ति भंग हो गई है अमरीका के प्रेसीडेन्ट ट्रूमैन के उस हुक्म से जो उसने अपनी फ़ौजों को कोरिया की ओर बढ़ने को दिया है. और इस बात ने तो शान्ति भंग होने में कोई शक ही नहीं रखा कि उसने समिति से सब मुल्कों को अपना साथ देने के लिये कहा. अब अगर सारे मुल्क उस हुक्म को मान कर अपनी फ़ौजें कोरिया की तरफ़ भेजें तो शान्ति भंग होने में कोई शक रह जायगा ?

सुरक्षा समिति के मंत्री ने एक बात बड़ी अच्छी कही है और वह यह कि कोरिया सुरक्षा समिति का बच्चा है. पर हमें तो वह उस माँ का बच्चा दिखाई देता है जिसने उसे काट कर दो टुकड़े कर दिये हैं और सिर्फ़ उस टुकड़े को ही बच्चा मानती है जिसके हाथ में वह खेल रही है .

जल्दबाज़ी में या भड़क कर कोई आदमी या और भी आगे बढ़ कर कोई संस्था या बहुत ही आगे बढ़ कर कोई एक मुल्क ग़लती कर सकता है और ऐसी ग़लती करने की छूट इन तीनों को इनसे बड़ी संस्थाएँ हो दे सकती हैं. लेकिन अगर दुनिया की सबसे बड़ी संस्था जल्दबाज़ी करने लगे या भड़क उठे तो उसे ऐसी छूट शोभा नहीं देती. और अगर वह ऐसी छूट चाहती है तो वह उन तीनों की तरह किसी अपने से बड़े के सामने जवाबदार होने के लिये तैयार रहे. क़ानून में जल्दबाज़ी और भड़क की भी सज़ा है और क़ानून ने ही तो जल्दबाज़ी और भड़क का बंधान बनाया है, जल्दबाज़ी अपने आप में ख़ुद एक बुराई है. अगर वह भलाई भी मान ली जाय तो कोरिया के मामले में तो हरगिज़ नहीं. क्योंकि कोरिया को बचाने के लिये दौड़ा है वह मुल्क जो ख़ुद ही मक्खी कोरिया को मकड़ी की तरह दबाये हुए है .

... ने Academic के माने

آدمی سرکشا سمیتی کے سبھاپتی کے آسن پر موجود ہے - اُتری کوریا کے دکھنی کوریا پر حملے سے دنیا کی شانتی بھنگ نہیں ہوئی تھی . دنیا کی شانتی بھنگ ہوگئی ہے امریکہ کے پریسیڈنٹ ٹرومین کے اس حکم سے جو اس نے اپنی فوجوں کو کوریا کی اور بڑھنے کو دیا ہے - اور اس بات نے تو شانتی بھنگ ہونے میں کوئی شک ہی نہیں رکھا کہ اس نے سمیتی سے سب ملکوں کو اپنا ساتھ دینے کیلئے کہا - اب اگر سارے ملک اس حکم کو مان کر اپنی فوجیں کوریا کیطرف بھیجیں تو شانتی بھنگ ہونے میں کوئی شک رہ جائیگا ؟

سرکشا سمیتی کے منتری نے ایک بات بڑی اچھی کہی ہے اور وہ یہ ہے کہ کوریا سرکشا سمیتی کا بچہ ہے - پر ہمیں تو وہ اُس ماں کا بچہ دکھائی دیتا ہے جس نے اُسے کاٹ کر دو ٹکڑے کر دئے ہیں اور صرف اُس ٹکڑے کو ہی بچہ مانتی ہے جس کے ہاتھ میں وہ کھیل رہی ہے -

جلد بازی میں یا بھڑک کر کوئی آدمی یا اور بھی آگے بڑھکر کوئی سنستھا یا بہت ہی آگے بڑھکر کوئی ایک ملک غلطی کر سکتا ہے اور ایسی غلطی کرنے کی چھوٹ ان تینوں کو ان سے بڑی سنستھائیں ہی دے سکتی ہیں - لیکن اگر دنیا کی سب سے بڑی سنستھا جلد بازی کرنے لگے یا بھڑک اُٹھے تو اُسے ایسی چھوٹ شوبھا نہیں دیتی - اور اگر وہ ایسی چھوٹ چاہتی ہے تو وہ اُن تینوں کی طرح کسی اپنے سے بڑے کے سامنے جوابدار ہونے کے لئے تیار رہے - قانون میں جلد بازی اور بھڑک کی بھی سزا ہے اور قانون نے ہی تو جلد بازی اور بھڑک کا بندھان بنایا ہے - جلد بازی اپنے آپ میں خود ایک برائی ہے - اگر وہ بھلائی بھی مان لی جائے تو کوریا کے معاملے میں تو ہرگز نہیں - کیونکہ کوریا کو بچانے کے لئے دوڑا ہے وہ ملک جو خود ہی مکھی کوریا کو مکڑی کی طرح دبائے ہوئے ہے -

کیسل یونیورسٹی ڈکشنری میں ایکڈیمک Academic کے معنی

दिये हुए हैं Unpractical यानी ना व्यवहारी, यानी जो व्यवहार में न आ सके. कुछ लोगों का कहना है कि भारत का 'हाँ' करना एकेडेमिक है यानी ना व्यवहारी है यानी यह कि इस पर कुछ अमल नहीं किया जायगा. नये नये आजाद भारत को ऐसे ना व्यवहारी 'हाँ' की क्या ज़रूरत आ पड़ी और क्यों ज़रूरत आ पड़ी? यह कहने की हमारी हिम्मत नहीं होती कि भारत सरकार ने समिति की बेक़ायदगी की हाँ में हाँ मिला कर ऐसा काम किया है जो भारत की आत्मा के योग्य है.

भारत को भारत का राष्ट्र पिता अहिंसा के एख़लाक़ी पहाड़ पर बहुत ऊँचा चढ़ा गया है और सचमुच भारत इस क़ाबिल है कि अगर वह चाहे तो उसकी चोटी पर चढ़ सकता है. साथ ही साथ भारत किसी वजह से हिंसा के गहरे गढ़े में उतरने की क़ाबिलियत भी रखता है. पर अभी तक इतनी क़ाबिलियत नहीं रखता कि वह उसकी तह तक पहुंच सके इसलिये वह इस गिरावट में अपने से बढ़े हुए मुल्कों से बाज़ी नहीं मार सकता. ऐसी हालत में अगर वह इस दुविधा में पड़ जाय कि तीसरी बड़ी जंग छिड़ जाने पर वह तटस्थ रह सकेगा या नहीं रह सकेगा या अगर तटस्थ रह सकेगा तो किस हद तक रह सकेगा और न रहा तो क्या करेगा तो कोई अचरज की बात नहीं. अहिंसा की ऊँची चोटी पर उड़ पहुँचने के लिये उसने कभी अपने बाजू तोलने की बात भी नहीं सोची. काश! ऐसे वक़्त भारत का राष्ट्र-पिता जीवित होता तो वही भारत को तीसरी लड़ाई के समुन्दर में से होकर भारत को उसके कपड़े भीगे बग़ैर तैरा कर ले जा सकता था. और जब हम उसकी आत्मा मे दाख़िल होने की कोशिश करते हैं तो हमारे जी से यही आवाज़ निकलती है कि भारत का राष्ट्र-पिता गांधी हमें इस वक़्त फ़ौजों को किसानों में तब्दील कर के और समुन्दरी बेड़े को व्योपारी बेड़ा बना कर और तोप, तलवार, तमंचों को हल, हथौड़ा,

دئے ہوئے ہیں ان‌پریکٹیکل Unpractical یعنی ناویو ہاری یعنی جو ویوہار میں نہ آسکے - کچھ لوگوں کا کہنا ہے کہ بھارت کا 'ہاں' ایکڈیمک ہے یعنی ناویوہاری ہے یعنی یہ کہ اس پر کچھ عمل نہیں کیا جائیگا - نئے نئے آزاد بھارت کو ایسے ناویوہاری 'ہاں' کی کیا ضرورت آپڑی اور کیوں ضرورت آپڑی؟ یہ کہنے کی ہماری ہمت نہیں ہوتی کہ بھارت سرکار نے سمیتی کی بےقاعدگی کی ہاں میں ہاں ملا کر ایسا کام کیا ہے جو بھارت کی آتما کے یوگیہ ہے۔

بھارت کو بھارت کا راشٹر پتا اہنسا کے اخلاقی پہاڑ پر بہت اونچا چڑھا گیا ہے اور سچ‌مچ بھارت اس قابل ہے کہ اگر وہ چاہے تو اُس کی چوٹی پر چڑھ سکتا ہے - ساتھ ہی ساتھ بھارت کسی وجہ سے ہنسا کے گہرے گڈھے میں اُترنے کی قابلیت بھی رکھتا ہے پر ابھی تک اتنی قابلیت نہیں رکھتا کہ وہ اُس کی تہہ تک پہونچ سکے - اس لئے وہ اس گراوٹ میں اپنے سے بڑھے ہوئے ملکوں سے بازی نہیں مار سکتا - ایسی حالت میں اگر وہ اس دبدھا میں پڑ جائے کہ تیسری بڑی جنگ چھڑ جانے پر وہ تٹستھ رہ سکیگا یا نہیں رہ سکیگا یا اگر تٹستھ رہ سکیگا تو کس حد تک رہ سکیگا اور نہ رہا تو کیا کریگا تو کوئی اچرج کی بات نہیں - اہنسا کی اونچی چوٹی پر اُڑ پہونچنے کیلئے اس نے کبھی اپنے بازو تولنے کی بات بھی نہیں سوچی - کاش! ایسے وقت بھارت کا راشٹرپتا جیوت ہوتا تو وہی بھارت کو تیسری لڑائی کے سمندر میں سے ہوکر بھارت کو اس کے کپڑے بھیگے بغیر تیرا کر لے جاسکتا تھا - اور جب ہم اس کی آتما میں داخل ہونیکی کوشش کرتے ہیں تو ہمارے جی سے یہی آواز نکلتی ہے کہ بھارت کا راشٹرپتا گاندھی ہمیں اِس وقت فوجوں کو کسانوں میں تبدیل کرکے اور سمندری بیڑے کو بیوپاری بیڑا بناکر اور توپ' تلوار' طمنچوں کو ہل' ہتھوڑا'

हंसिया का रूप देकर हमें ऐसे तैरा ले जाता कि दुनिया के सारे मुल्क दांत तले उँगली दबा कर रह जाते. कोई मन चला या राजमद में मस्त हमारी इस ख़ामख़याली पर हँस कर यह फ़िक़रे कस सकता है कि फिर तो गाँधी ने भारत को समुन्दर में डुबा दिया होता. हम उसके इस जवाब से इनकार नहीं करते. ज़रूर डुबा दिया होता और डूबे कौन से मुल्क नहीं हैं, पर इस तरह डूबा हुआ भारत उन उछले हुए मुल्कों के सर पर चाँद सूरज रहते रहते छाया हुआ रहता जो मुल्क एक दूसरे के ख़ून में लथपथ हाँपते हुए अपने किये पर पछता रहे होते.

हमारी तो यही समझ में नहीं आता कि सुरक्षा समिति ने 'दक्खिनी कोरिया को बचाने को दौड़ो' की आवाज़ उठा कर और अमरीका ने उसका कहना मान उस ओर दौड़ कर सचमुच दक्खिनी कोरिया के लोगों को बचाया है ? अगर वह घरेलू लड़ाई में हज़ार की गिनती में मरते तब अमरीका की मदद के साथ लाखों की गिनती में मरेंगे और अगर कहीं रूस भड़क बैठा, जिसको भड़काने में अमरीका ने कोई कसर नहीं रखी, तो अमरीका और रूस की चक्की में पिस कर कोरिया में करोड़ों का ही चूरन बन जायगा और अगर बरतानिया के सुझाये ऐटम बम की याद किसी को आ गई तो फिर तो कोरिया में न जानवर बचेंगे और न बनस्पति. और कहीं तब तक हाइड्रोज बम बन गया तब तो फिर क्या होगा इसको आइन्स्टीन भी नहीं सोच सकता.

भारत सरकार के फ़ैसले ने, फिर चाहे वह ना व्यवहारी हो या व्यवहारी, अमरीका को हिम्मत बढ़ा दी है और न हो ऐसा, कि यह लड़ाई बड़ी लड़ाई में बदल जाय तब रूस और अमरीका में से जो भी जीतेगा भारत को उसी का ग़ुलाम बन कर रहना होगा। एक इस और इस ख़याल से ही भारत के लिये तटस्थ रहना ही ज़्यादा अच्छा था. आज वह यह कह तो रहा है कि वह तटस्थ है और किसी का दुश्मन

ھنسیا کا روپ دیکر ھمیں ایسے تیرا لیجاتا کہ دنیا کے سارے ملک دانت تلے أنگلی دبا کر رہ جاتے - کوئی منچلا یاراج مد میں مست ھماری اس خام خیالی پر ھنس کر یہ فقرے کس سکتا ہے کہ پھر تو گاندھی نے بھارت کو سمندر میں ڈبا دیا ھوتا - ھم اس کے اس جواب سے انکار نہیں کرتے - ضرور ڈبا دیا ھوتا اور ڈوبے کونسے ملک نہیں ھیں' پر اس طرح ڈوبا ھوا بھارت اُن اُچھلے ھوئے ملکوں کے سر پر چاند سورج رھتے رھتے چھایا ھوا رھتا جو ملک ایک دوسرے کے خون میں لتھ پتھ ھانپتے ھوئے اپنے کئے پر پچھتا رہے ھوتے -

ھماری تو یہی سمجھ میں نہیں آتا کہ سرکھشا سمیتی نے ' دکھنی کوریا کے بچانے کو دوڑو ' کی آواز اُٹھا کر اور امریکہ نے اُس کا کہنا مان اس اور دوڑ کر سچ مچ دکھنی کوریا کے لوگونکو بچایا ہے ؟ اگر وہ گھریلو لڑائی میں ھزار کی گنتی میں مرتے تب امریکہ کی مدد کیساتھ لاکھوں کی گنتی میں مرینگے اور اگر کہیں روس بھڑک بیٹھا ' جس کو بھڑکانے میں امریکہ نے کوئی کسر نہیں رکھی ' تو امریکہ اور روس کی چکی میں پس کر کوریا میں کروڑوں کا ھی چورن بن جائیگا - اور اگر برطانیہ کے سجھائے اٹم بم کی یاد کسی کو آ گئی تو پھر تو کوریا میں نہ جانور بچینگے اور نہ بنسپتی - اور کہیں تب تک ھائیڈ روجن بم بن گیا تب تو پھر کیا ھوگا اس کو آئین اسٹین بھی نہیں سوچ سکتا -

بھارت سرکار کے فیصلے نے ' پھر چاھے وہ نا ویوھاری ھو یا ویوھاری ' امریکہ کی ھمت بڑھا دی ہے - اور نہ ھو ایسا ' کہ یہ لڑائی بڑی لڑائی میں بدل جائے - تب روس اور امریکہ میں سے جو بھی جیتےگا بھارت کو اُسی کا غلام بن کر رھنا ھوگا - ایک اس اور خیال اِس سے ھی بھارت کے لئے تٹستھ رھنا ھی زیادہ اچھا تھا - آج وہ کہہ تو یہہ رھا ہے کہ وہ تٹستھ ہے اور کسی کا دشمن

नहीं पर खाली दुश्मन न होने से दुनिया में शान्ति बनाये रखने की क़ाबलियत भारत नहीं रख सकता . वह दुनिया के सब मुल्कों का दोस्त होकर ही शान्ति की और इन्साफ़ की तराज़ू की डंडी सीधी रख सकता है . इस फ़ैसले के बाद भी, जिससे उसकी शान को धक्का पहुँचा है, अगर वह दक्खिनी कोरिया के साथ और उत्तरी कोरिया के साथ खुली दोस्ती का भी एलान कर दे तो फिर अपनी वही शान पा सकता है जो फ़ैसले से पहले थी. वह दोस्ती के फ़ैसले पर अमल भी कर सकता है और वह यों कि वह अपने डाक्टर, एम्बुलेन्स कोर, दक्खिनी कोरिया और उत्तरी कोरिया में भेजे और सिर्फ़ उस जनता की ख़िदमत करे जो दोनों तरफ़ से लड़ाई में भाग नहीं ले रही. सिपाहियों से उसे कोई दुश्मनी नहीं होनी चाहिये पर उनकी मरहम पट्टी के लिये तो काफ़ी इन्तज़ाम रहता है और सिपाही तो लड़ाई के वक़्त में कोयले की जगह घी से काम लेते हैं .

यह भी न हो सके तो सारे कोरिया के एक होकर सुखी रहने की प्रार्थना ही भगवान से करने का सरकार हुक्म निकाले .

ता० २-७-५०   —भगवानदीन और सुन्दरलाल

نہیں پر خالی دشمن نہ ہونے سے دنیا میں شانتی بنائے رکھنے کی قابلیت بھارت نہیں رکھ سکتا - وہ دنیا کے سب ملکوں کا دوست ہوکر ہی شانتی کی اور انصاف کی ترازو کی ڈنڈی سیدھی رکھ سکتا ہے - اس فیصلے کے بعد بھی ' جس سے اُس کی شان کو دھکا پہونچا ہے ' اگر وہ دکھنی کوریا کے ساتھ اور اُتری کوریا کے ساتھ کھلی دوستی کا بھی اعلان کردے تو پھر اپنی وہی شان پا سکتا ہے جو فیصلے سے پہلے تھی - وہ دوستی کے فیصلے پر عمل بھی کر سکتا ہے اور وہ یوں کہ وہ اپنے ڈاکٹر ' ایمبولینس کور ' دکھنی کوریا اور اُتری کوریا میں بھیجے اور صرف اُس جنتا کی خدمت کرے جو دونوں طرف سے لڑائی میں بھاگ نہیں لے رہی - سپاہیوں سے اُسے کوئی دشمنی نہیں ہونی چاہئے پر اُن کی مرہم پٹی کے لئے تو کافی انتظام رہتا ہے اور سپاہی تو لڑائی کے وقت میں کوئلہ کی جگہ گھی سے کام لیتے ہیں -

یہ بھی نہ ہو سکے تو سارے کوریا کے ایک ہوکر سکھی رہنے کی پرارتھنا ہی بھگوان سے کرنے کا سرکار حکم نکالے -

٢-٧-٥٠   —بھگوان دین اور سندر لال

तुर्की के नए चुनाव

चौदह मई को तुर्की में नए चुनाव हो गए. अब तक तुर्की की हकूमत पीपुल्स पार्टी के हाथ में थी और प्रेसीडेन्ट थे श्री इनोनू. नये चुनाव से हकूमत की बागडोर डेमोक्रेटिक पारटी के हाथ में आगई है और उसके प्रेसीडेन्ट हैं श्री जलाल बायर.

पीपुल्स पारटी और डेमोक्रेटिक पारटी के नामों से हमारे पढ़ने वालों को तुर्की की राजकाजी हालत का ठीक ठीक पता नहीं चल सकता. हाँ, यह कहने से बात समझ में आ सकती है कि पीपुल्स पारटी का मतलब है बूढ़ों का दल और डेमोक्रेटिक पारटी का मतलब है नये खून वालों का दल. बस अब यह समझना चाहिये कि तुर्की की हकूमत तुर्की के जवानों के हाथ में आगई है. जवान नातजरबेकारी के लिये बदनाम होते हैं पर जिन जवानों ने तुर्की की हकूमत अपनाई है वह हमें नातजरबेकार नहीं दिखाई देते. हम नातजरबेकारी का संबंध उमर से जोड़ने के लिये तैयार नहीं. हाँ, उसका सम्बंध सचाई और मुहब्बत से जोड़ने के लिये तैयार हैं. सचाई और मोहब्बत दो ऐसे गुन हैं जो दिल का मैल साफ कर देते हैं और इस मैल के साथ नातजरबेकारी के दाग धुल जाते हैं और बुद्धि चमक उठती है. तुर्की के नये जवानों में हमें यह दोनों सिफ़तें साफ़ दिखाई दे रही हैं.

श्री जलाल बायर ने प्रेसीडेन्ट की कुर्सी सँभालते ही बड़े बड़े सुलतानी महलों को नमस्कार कर दिया और बहुत जल्द ही 'सावरोना' नामी शाही नाव से छुट्टी लेने वाले हैं. प्रेसीडेन्ट के नाम से रक्खी हुई सोलह मोटर कारों की उन्हें कोई जरूरत नहीं मालूम हुई. उन्होंने उनमें से तेरह औरों को दे डालीं वह तीन मोटर कारों

ترکی کے نئے چناؤ

چودہ مئی کو ترکی میں نئے چناؤ ھو گئے - اب تک ترکی کی حکومت پیپلس پارٹی کے ھاتھ میں تھی اور پریسیڈنٹ تھے شری انونو - نئے چناؤ سے حکومت کی باگ ڈور ڈیمو کریٹک پارٹی کے ھاتھ میں آ گئی ھے اور اُس کے پریسیڈنٹ ھیں شری جلال بائر -

پیپلس پارٹی اور ڈیمو کریٹک پارٹی کے ناموں سے ھمارے پڑھنے والوں کو ترکی کی راج کاجی حالت کا ٹھیک ٹھیک پتہ نہیں چل سکتا - 'ھاں' یہ کہنے سے بات سمجھ میں آ سکتی ھے کہ پیپلس پارٹی کا مطلب ھے بوڑھوں کا دل اور ڈیمو کریٹک پارٹی کا مطلب ھے نئے خون والوں کا دل - بس' اب یہ سمجھنا چاھئے کہ ترکی کی حکومت ترکی کے جوانوں کے ھاتھ میں آ گئی ھے - جوان نا تجربہ کاری کے لئے بد نام ھوتے ھیں پر جن جوانوں نے ترکی کی حکومت اپنائی ھے وہ ھمیں نا تجربہ کار نہیں دکھائی دیتے - ھم نا تجربہ کاری کا سمبندھ عمر سے جوڑنے کے لئے تیار نہیں - اُس کا سمبندھ سچائی اور محبت سے جوڑنے کے لئے تیار ھیں - سچائی اور محبت دو ایسے گن ھیں جو دل کا میل صاف کر دیتے ھیں اور اس میل کے ساتھ ناتجربہ کاری کے داغ دھل جاتے ھیں اور بدھی چمک اُٹھتی ھے - ترکی کے نئے جوانوں میں ھمیں یہ دونوں صفتیں صاف دکھائی دے رھی ھیں -

شری جلال بائر نے پریسیڈینٹی کی کرسی سنبھالتے ھی بڑے بڑے سلطانی محلوں کو نمسکار کر دیا اور بہت جلد ھی 'ساورونا' نامی شاھی ناؤ سے چھٹی لینے والے ھیں پریسیڈنٹ کے نام سے رکھی ھوئی سولہ موٹر کاروں کی اُنہیں کوئی ضرورت نہیں معلوم ھوئی - اُنہوں نے اُن میں سے تیرہ اوروں کو دے ڈالیں - وہ تین موٹر کاروں

से ही काम चला सकते हैं. चार चार एडजुटेन्ट (वाडी गार्ड) उन्हे अपने लिये बेकार जँचे. वह एक से ही काम चला सकते हैं. अपने लिये मोटर साइकिल वाली पुलिस गारद को देखकर तो उन्हें हँसी आगई और कहने लगे कि "मैं राजधानी अंकरा के सब रास्ते जानता हूँ और कहीं भूल जाऊँगा तो पूछ कर पता चला सकता हूँ, इसलिये मुझे इस पुलिस गारद की ज़रूरत नहीं" यह है किसी मुल्क के सच्चे नेता की पहचान ! जिसे सारा मुल्क चाहे उसे इतनी पुलिस की ज़रूरत ?

इन नए प्रेसीडेन्ट का नारा है "खुशखर्ची, न बरबादी, न ऐय्याशी' कुर्सी पर बैठते ही कितने ही खर्च घटा दिये गये हैं और कितनी ही जगहें कम कर दी गई हैं. यह काम चाहे तजरबे कारी का सबूत न देते हों पर इस बात का सबूत ज़रूर हैं कि नये खून में पूरी सचाई है और अपने मुल्क के लिये पूरी मोहब्बत है. हमें उम्मीद है कि इन दो सिफ़तों के साथ उनकी नातजरबेकारी भी हकूमत को इस तरह सँभालेगी कि तजरबेकार दाँतो तले उँगली दबाकर रह जायँगे.

(३)

भारत के नए चुनाव सर पर हैं. वह जो आज हकूमत सँभाले हुए हैं और वह जिनके दिलों में हकूमत सँभालने की उमंगें ज़ोर मार रही हैं दोनों ही को तुर्की के इस चुनाव से सबक लेना चाहिये. भारत की जनता इस वक़्त उसी के हाथ में हकूमत देना पसंद करेगी जो इस तरह का त्याग लेकर मैदान में आने की हिम्मत करेंगे जैसा त्याग लेकर तुर्की की डेमोक्रेटिक पारटी मैदान में आई और बाजी ले गई.

१३ - ६ - ५० भगवानदीन

سے ہی کام چلا سکتے ہیں - چار چار ایڈجوٹنٹ (باڈی گارڈ) انہیں اپنے لئے بیکار جنچے - وہ ایک سے ہی کام چلا سکتے ہیں - اپنے لئے موٹر سائیکل والی پولیس گارد کو دیکھکر تو انہیں ہنسی آگئی اور کہنے لگے کہ "میں راجدھانی انقرہ کے سب راستے جانتا ہوں اور کہیں بھول جاؤنگا تو پوچھ کر پتہ لگا سکتا ہوں ' اس لئے مجھے اس پولیس گارد کی ضرورت نہیں " یہ ہے کسی ملک کے سچے نیتا کی پہچان ! جسے سارا ملک چاہے اسے اتنی پولیس کی ضرورت ؟

ان نئے پریسیڈنٹ کا نعرہ ہے " خوش خرچی ' نہ بربادی نہ عیاشی" کرسی پر بیٹھتے ہی کتنے ہی خرچ گھٹا دئے گئے ہیں اور کتنی ہی جگہیں کم کردی گئی ہیں - یہ کام چاہے تجربہ کاری کا ثبوت نہ دیتے ہوں پر اس بات کا ثبوت ضرور ہیں کہ نئے خون میں پوری سچائی ہے اور اپنے ملک کیلئے پوری محبت ہے - ہمیں امید ہے کہ اِن دو صفتوں کے ساتھ اُن کی ناتجربہ کاری بھی حکومت کو اسطرح سنبھالیگی کہ تجربہ کار دانتوں تلے انگلی دباکر رہ جائیں گے -

(۳)

بھارت کے نئے چناؤ سر پر ہیں - وہ جو آج حکومت سنبھالے ہوئے ہیں اور وہ جن کے دلوں میں حکومت سنبھالنے کی امنگیں زور مار رہی ہیں دونوں ہی کو ترکی کے اِس چناؤ سے سبق لینا چاہئے - بھارت کی جنتا اس وقت اُسی کے ہاتھ میں حکومت دینا پسند کریگی جو اسطرح کا تیاگ لے کر میدان میں آنے کی ہمت کریں گے جیسا تیاگ لیکر ترکی کی ڈیمو کریٹک پارٹی میدان میں آگئی اور بازی لیگئی -

۱۳ - ۶ - ۵۰ بھگوان دین

कांग्रेस और लज्जा

विहार असेम्बली की फड़ से यह बात सुनी गई:—

"............ बेतिया राज की १२,००० बीघा जमीन बाहर वालों के नाम कर दी गई, उनमें चालीस कांग्रेस वाले शामिल हैं.........."

उसी असेम्बली के एक कांग्रेसी मेम्बर के यह शब्द हैं :—

"............... इसमें कांग्रेस वालों को शर्माने की कोई बात नहीं, असल में अगर शर्माने की कोई बात है तो वह यह है कि उन्हें इससे ज्यादा जमीन न मिल सकी .... "

उन्हीं का यह भी कहना है कि "असेम्बली के कांग्रेसी मेम्बर जमीन के दिये जाने का समर्थन इस लिये करते हैं कि वह जमीनें ऐसे लोगों को दी गई हैं जो देश की आज़ादी की कोशिश में बहुत कुछ तकलीफ़ें उठा चुके हैं और बहुत कुछ बलिदान कर चुके हैं... ..... "

ऊपर के कथन से यह बातें निकलती हैं :—

१—कुछ कांग्रेस वालों को जमीनें दी गईं.

२—इस जमीन की देनदारी में न उनके लिये कोई शर्म की बात है जिन कांग्रेस वालों ने जमीनें दीं और न उन कांग्रेस वालों के लिये कोई शर्म की बात है जिन्होंने जमीनें लीं.

३—देश की आज़ादी के लिये जिन लोगों ने दुख उठाये उनको कुछ मिले तो बुरा क्या ?

कांग्रेस वाले भारत को आज़ादी दिलाकर अभी अभी लौटे हैं. यों उन्हें हक़ है जो जी में आये कहें. और अगर कुछ शेख़ी भी बघारें तो हम सब को सहन करनी चाहिये. इतने बड़े काम के बाद शेख़ी भी क्या बघारी जा सकती है ?

کانگریس اور لجا

بہار اسمبلی کی پھڑ سے یہ بات سنی گئی :—

" ....بیتیا راج کی ۱۲۰۰۰ بیگھا زمین باہر والوں کے نام کردی گئی - ان میں چالیس کانگریس والے شامل ہیں........"

اسی اسمبلی کے ایک کانگریسی ممبر کے یہ شبد ہیں :—

" ... .اس میں کانگریس والوں کو شرمانے کی کوئی بات نہیں - اصل میں اگر شرمانے کی کوئی بات ہے تو وہ یہ ہے کہ انہیں اس سے زیادہ زمین نہ مل سکی ... ."

انہیں کا یہ بھی کہنا ہے کہ " اسمبلی کے کانگریسی ممبر زمینیں کے دیئے جانے کا سمرتھن اس لئے کرتے ہیں کہ وہ زمینیں ایسے لوگوں کو دی گئی ہیں جو دیش کی آزادی کی کوشش میں بہت کچھ تکلیفیں اٹھا چکے ہیں اور بہت کچھ بلیدان کر چکے ہیں ... ..."

اوپر کے کتھن سے یہ باتیں نکلتی ہیں :—

۱—کچھ کانگریس والوں کو زمینیں دی گئیں -

۲—اس زمین کی دینداری میں نہ ان کے لئے کوئی شرم کی بات ہے جن کانگریس والوں نے زمینیں دیں اور نہ ان کانگریس والوں کے لئے کوئی شرم کی بات ہے جنہوں نے زمینیں لیں -

۳—دیش کی آزادی کے لئے جن لوگوں نے دکھ اٹھائے ان کو کچھ ملے تو برا کیا ؟

کانگریس والے بھارت کو آزادی دلا کر ابھی ابھی لوٹے ہیں - یوں انہیں حق ہے جو جی میں آئے کہیں - اور اگر کچھ شیخی بھی بگھاریں تو ہم سب کو سہن کرنی چاہئے - اتنے بڑے کام کے بعد شیخی بھی کیا بگھاری جاسکتی ہے ؟

यह कौन नहीं जानता कि जब हम किसी रिक्शा वाले से दाम ठहराये बिना उसके रिक्शा में बैठ जाते हैं तो फिर उसका यह हक़ हो जाता है कि वह जो कुछ चाहे माँग बैठे. और क़ायदे से हमें चुप चाप वही दे देना चाहिये जो वह माँगे. मुनासिब से दुगने दाम पाकर भी रिक्शा वाला क्यों शर्माये ? बस, ऐसे रिक्शा वाले से मिलता जुलता ही कांग्रेस वालों का हाल है. उनसे बिना ठहराये ही उनको देश की आजादी की गाड़ी में जोत लिया गया और अब अगर वह अपनी मेहनत से कुछ ज्यादा भी पा जायँ तो उन्हें शर्माने की जरूरत क्या है ? उन्हें कितना भी ज्यादा क्यों न मिले शर्माने की जरूरत नहीं. क्योंकि वह ज्यादा तो हर हालत में ही कम रहेगा. जिस तरह मां और बाप की सेवाओं का मोल किन्हीं दामों नहीं चुकाया जा सकता, उसी तरह कांग्रेस वालों की सेवा और बलिदानों का मोल भी, जब तक वह ख़ुद या अपनी संतानों के रूप में जीवित हैं, किसी दामों नहीं चुकाया जा सकता.

यह बात ठीक है कि जिस रिक्शा वाले से हम दाम नहीं ठहराते वह अपनी मजदूरी से अगर कम दाम पाता है तो उन दामों को मंजूर कर बैठना वह अपनी शान के ख़िलाफ़ समझता है और कैसा भी जरूरतमन्द क्यों न हो दाम फेंककर चलता बनता है. ऐसी हालत में दाम चुकाने वाला ढीला पड़ जाता है और रिक्शा वाले को धमका मना कर वही दाम लेने के लिये या कुछ और ज्यादा लेने के लिये तैयार करने की कोशिश करता है. यह ठीक है कि इस तरह की कोई बात किसी कांग्रेस वाले ने नहीं की यानी किसी कांग्रेस वाले ने मिलने वाली जमीन को इतना कम नहीं समझा कि वह उसको अपनी शान के ख़िलाफ़ समझता और रूठ कर या मुह बना कर उसे लेने से इन्कार कर देता. इसलिये असेम्बली के कांग्रेसी मेम्बरों की यह शिकायत तो ठीक नहीं मालूम होती की कांग्रेस वालों को अपने

(६)

یہ کون نہیں جانتا کہ جب ہم کسی رکشا والے سے دام ٹھہرائے بنا اسکے رکشا میں بیٹھ جاتے ہیں تو پھر اس کا یہ حق ہو جاتا ہے کہ وہ جو کچھ چاہے مانگ بیٹھے - اور قاعدے سے ہمیں چپ چاپ وہی دے دینا چاہئے جو وہ مانگے - مناسب سے دگنے دام پاکر بھی رکشا والا کیوں شرمائے ؟ بس ' ایسے رکشا والے سے ملتا جلتا ہی کانگریس والوں کا حال ہے - ان سے بنا ٹھہرائے ہی ان کو دیش کی آزادی کی گاڑی میں جوت لیا گیا اور اب اگر وہ اپنی محنت سے کچھ زیادہ بھی پا جائیں تو انہیں شرمانے کی ضرورت کیا ہے ؟ انہیں کتنا بھی زیادہ کیوں نہ ملے شرمانے کی ضرورت نہیں - کیونکہ وہ زیادہ تو ہر حالت میں ہی کم رہیگا - جس طرح ماں اور باپ کی سیواؤں کا مول کنہیں داموں نہیں چکایا جاسکتا ' اسی طرح کانگریس والوں کی سیوا اور بلیدانوں کا مول بھی - جب تک وہ خود یا اپنی سنتانوں کے روپ میں جیوت ہیں ' کسی داموں نہیں چکایا جا سکتا -

یہہ بات ٹھیک ہے کہ جس رکشا والے سے ہم دام نہیں ٹھہراتے وہ اپنی مزدوری سے اگر کم دام پاتا ہے تو ان داموں کو منظور کر بیٹھنا وہ اپنی شان کے خلاف سمجھتا ہے اور کیسا بھی ضرورت مند کیوں نہ ہو دام پھینک کر چلتا بنتا ہے - ایسی حالت میں دام چکانے والا ڈھیلا پڑ جاتا ہے اور رکشا والے کو دھمکا منا کر وہی دام لینے کے لئے یا اور کچھ زیادہ لینے کے لئے تیار کرنے کی کوشش کرتا ہے - یہہ ٹھیک ہے کہ اس طرح کی کوئی بات کسی کانگریس والے نے نہیں کی یعنی کسی کانگریس والے نے ملنے والی زمین کو اتنا کم نہیں سمجھا کہ وہ اس کو اپنی شان کے خلاف سمجھتا اور روٹھ کر یا منہ بنا کر اسے لینے سے انکار کر دیتا ۔ اس لئے اسمبلی کے کانگریسی ممبروں کی یہہ شکایت روتھ تو ٹھیک نہیں معلوم ہوتی کہ کانگریس والوں کو اپنے

(۶)

यह महात्मा की आत्मा बुलन्द हो जाने का महीना है और सन्सार के झंडे झुक जाने का.

यह अहिंसा का ख़ून में नहाने का महीना है और महात्मा का आग में जल जाने का.

यह फ़िरक़ा क़वारों के घर घर घी के चिराग़ जलाने का महीना है और मिठाई बताशे बांटने का.

यह फ़िरक़ावारों की पकड़ धकड़ का महीना है और क़ातिल की गिरफ़्तारी का.

यह हिन्दुस्तान के दुर्भाग्य का महीना है और राजघाट पर क़ौमी मिलाप का.

(३)

यह हिन्द पर ग़म के बादल छा जाने का महीना है और फ़िज़ा का शोक संदेश बरसाने का.

यह बूढ़े बाप की जवान उम्मीदों का महीना है और जवान उम्मीदों के ख़ून होने का.

यह गीता और क़ुरान के प्रेमी की जान जाने का महीना है और "प्रार्थना" बन्द हो जाने का.

यह साज़िश का पर्दा चाक हो जाने का महीना है और हिन्दू मुस्लिम फ़साद रुक जाने का.

यह बापू के 'नये विधान' के जन्म लेने का महीना है और बापू के जीवन ख़त्म होने का.

प्रथम यह संदेश और पैग़ाम का महीना है,
आख़िर यह विधान और बलिदान का महीना है.

—: ० :—

یہ مہاتما کی آتما بلند ہوجانے کا مہینہ ہے اور سنسار کے جھنڈے جھک جانے کا.

یہ اہنسا کا خون میں نہانے کا مہینہ ہے اور مہاتما کا آگ میں جل جانے کا .

یہ فرقہ واروں کے گھر گھر گھی کے چراغ جلانے کا مہینہ ہے اور مٹھائی بتاشے بانٹنے کا .

یہ فرقہواروں کی پکڑ دھکڑ کا مہینہ ہے اور قاتل کی گرفتاری کا.

یہ ہندستان کے دربھاگیہ کا مہینہ ہے اور راج گھاٹ پر قومی ملاپ کا.

یہ ہند پر غم کے بادل چھا جانے کا مہینہ ہے اور فضا کا شوک سندیش برسانے کا .

(۳)

یہ بوڑھے باپ کی جوان اُمیدوں کا مہینہ ہے اور جوان اُمیدوں کے خون ہونے کا .

یہ گیتا اور قرآن کے پریمی کی جان جانے کا مہینہ ہے اور "پراتھنا" بند ہوجانے کا

یہ سازش کا پردہ چاک ہو جانے کا مہینہ ہے اور ہندو مسلم فساد رک جانے کا .

یہ باپو کے "نئے ودھان" کے جنم لینے کا مہینہ ہے اور باپو کے جیون ختم ہونے کا

پرتھم یہ سندیش اور پیغام کا مہینہ ہے .
آخر یہ ودھان اور بلیدان کا مہینہ ہے .

बलिदानों के बदले में कम ज़मीनें मिली हैं. हाँ, यह शिकायत उनकी ज्यों की त्यों खड़ी रहती है कि उन्हे और ज्यादा ज़मीनें क्यों नहीं मिलीं. इसके जवाब में हम इसके सिवा और क्या कह सकते हैं कि वह जिन कांग्रेस वालों की शिकायत लेकर खड़े हुए हैं उनको देश की आज़ादी की गाड़ी में जोता किसने था ? जिसके ख़िलाफ़ शिकायत है उसका कम से कम नाम तो बतायें. उसको अदालत में हाज़िर करना फिर अदालत का काम रह जाता है .

अगर शिकायत उन्हें उस बूढ़े गांधी के ख़िलाफ़ है जिसने यह आज़ादी का तूफ़ान उठाया था, तो वह तो अब अदालत की अमलदारी से परे है और अगर शिकायत उन्हे कांग्रेस के ख़िलाफ़ है तो कांग्रेस ख़ुद उन्हीं की बनी हुई है. और जब चाहें जब उसे जितना चाहें देने के लिये मजबूर कर सकते हैं. और अब तो कांग्रेस कोई नादार संस्था नहीं है करोड़ों की मालिक है और अरबों रुपयों पर उसका असर है. और ज़मीनों के लिहाज़ से तो भारत भर की अच्छी बुरी सारी ज़मीनें उसकी एक क़लम की नोक से अगर आज 'अ' की हैं तो कल 'ब' की हो सकती हैं. आज कांग्रेस के पौ बारह हैं. सचमुच हमारी भी राय में कांग्रेस वालों को शर्माने की कोई ज़रूरत नहीं और हम भी यह कहते हुए कहाँ शर्मा रहे हैं कि शर्माने की ज़रूरत नहीं है ?

कांग्रेस एक संस्था है और आजकल के पंडितों का यह कहना है कि संस्था बेजान हुआ करती है. और जिसमें जान नहीं उसे शर्म से क्या लेना देना ? अगर हम कोशिश करें तो अपनी इस बात का समर्थन गांधी के लेखों से भी खोज निकाल सकते हैं पर यह काम जान बूझ कर हम अपने पढ़ने वालों पर ही छोड़ते हैं और यहीं इस नोंद की अन्तिम बिन्दी लगाते हैं .

२६-६-५० भगवानदीन

بلیدانوں کے بدلے میں کم زمینیں ملی هیں ۔ هاں ' ان کی یہہ شکایت جیوں کی تیوں کھڑی رهتی هے که انهیں اور زیادہ زمینیں کیوں نہیں ملیں - اس کے جواب میں هم اس کے سوا اور کیا کہہ سکتے هیں که وہ کانگریس والے جن کانگریس والوں کی شکایت لیکر کھڑے هوئے هیں اُن کو دیش کی آزادی کی گاڑی میں جوتا کس نے تھا ؟ جس کے خلاف شکایت هے اُس کا کم سے کم نام تو بتائیں - اُس کو عدالت میں حاضر کرنا پھر عدالت کا کام رہ جاتا هے -

اگر شکایت اُنھیں اُس بوڑھے گاندھی کے خلاف هے جس نے یہ آزادی کا طوفان اُٹھایا تھا ' تو وہ عدالت کی عملداری سے پرے هے - اور اگر شکایت اُنھیں کانگریس کے خلاف هے تو کانگریس خود اُنھی کی بنی هوئی هے - اور جب چاهیں جب اُسے جتنا چاهیں دینے کے لئے مجبور کر سکتے هیں - اور اب تو کانگریس کوئی نادار سنستھا نہیں هے - کروڑوں کی مالک هے اور اربوں روپیوں پر اُس کا اثر هے - اور زمینوں کے لحاظ سے تو بھارت بھرکی اچھی بری ساری زمینیں اُس کی ایک قلم کی نونک سے اگر آج ' الف ' کی هیں تو کل ' ب ' کی هو سکتی هیں -

آج کانگریس کے پوبارہ هیں - سچ سچ هماری بھی رائے میں کانگریس والوں کو شرمانے کی کوئی ضرورت نہیں اور هم بھی یہہ کہتے هوئے کہاں شرما رهے هیں که شرمانے کی ضرورت نہیں هے ؟

کانگریس ایک سنستھا هے اور آج کل کے پنڈتوں کا یہہ کہنا هے که سنستھا بے جان هوا کرتی هے اور جس میں جان نہیں اُسے شرم سے کیا لینا دینا ؟ اگر هم کوشش کریں تو اپنی اس بات کا سمرتھن گاندھی کے لیکھوں سے بھی کھوج نکال سکتے هیں پر یہہ کام جان بوجھ کر هم اپنے پڑھنے والوں پر هی چھوڑتے هیں اور یہیں اس نوند کی انتم بندی لگاتے هیں -

بھگوان دین ۲۶-۶-۵۰

शांति इनाम का हक़दार कौन ?

कोरिया में घरेलू लड़ाई छिड़ी. उससे न दुनिया के किसी मुल्क की शांति भंग हुई और न बहुत से मुल्कों की जनता को यह पता ही चला कि कोरिया में कोई लड़ाई हो रही है. भारत कोरिया के काफी पास है पर उसकी जनता ने भी यह न जाना कि कोरिया में लड़ाई हो रही है. और वह ऐसी घरेलू लड़ाई की ओर अपने कान भी क्यों लगाने लगी ? पर जब से महानता के लोभी अमरीका ने कोरिया की घरेलू लड़ाई का शोर मचाया और लड़ने वालों में से एक को 'ज्यादती करने वाला' यानी 'अग्रेसर' कह कर जल्दबाजी करके सुरक्षा समिति से इजाज़त लिये बिना कोरिया पर चढ़ाई कर दी तब से क्या भारत और क्या दुनिया के और मुल्क सभी कोरिया की लड़ाई को जान गये और आज तो सारे अखबार उस घरेलू लड़ाई से ऐसे ही भरे रहते हैं मानो वह दुनिया की बड़ी लड़ाई से भी बड़ी हो. और वह सचमुच दुनिया की बड़ी लड़ाई से बड़ी है. अगर दो लड़ती हुई भेड़ों को बचाने के लिये कोई शेर दौड़ पड़े और दौड़ते हुए यह पुकारता जाय कि ऐ जंगल के चीतो, हाथियो, भेड़ियो और गीदड़ो, तुम भी दौड़ो. बड़ा ग़ज़ब हो गया, दो भेड़ें लड़ बैठीं. तब सारा जंगल कांप ही जायगा. इस वक्त अमरीका ने ठीक ऐसी ही हालत पैदा कर दी है. और सारी दुनिया को बड़ी चिन्ता में डाल दिया है. अमरीका के हथकंडों से और अमरीका के पत्रकारों से हम खूब वाक़िफ़ हैं. वह जब जी में आये किसी को 'ज्यादती करने वाला' कह बैठते हैं. एक से ज्यादा बार वह हिन्दुस्तान के बारे में भी इस तरह का झूटा शोर उठा चुके हैं.

شانتی انعام کا حق دار کون ؟

کوریا میں گھریلو لڑائی چھڑی - اس سے نہ دنیا کے کسی ملک کی شانتی بھنگ ہوئی اور نہ بہت سے ملکوں کی جنتا کو یہ پتہ ہی چلا کہ کوریا میں کوئی لڑائی ہو رہی ہے - بھارت کوریا کے کافی پاس ہے پر اس کی جنتا نے بھی یہ نہ جانا کہ کوریا میں لڑائی ہو رہی ہے - اور وہ ایسی گھریلو لڑائی کی اور اپنے کان بھی کیوں لگانے لگی ؟ پر جب سے مہانتا کے لوبھی امریکہ نے کوریا کی گھریلو لڑائی پرشور مچایا اور لڑنے والوں میں سے ایک کو ' زیادتی کرنے والا ' یعنی ' اگریسر ' کہکر جلد بازی کرکے سرکھشا سمیتی سے اجازت لئے بنا کوریا پر چڑھائی کردی تب سے کیا بھارت اور کیا دنیا کے اور ملک سبھی کوریا کی لڑائی کو جان گئے اور آج تو سارے اخبار اس گھریلو لڑائی سے ایسے ہی بھرے رہتے ہیں مانو وہ دنیا کی بڑی لڑائی سے بھی بڑی ہو - اور وہ سچ مچ دنیا کی بڑی لڑائی سے بڑی ہے - اگر دو لڑتی ہوئی بھیڑوں کو بچانے کے لئے کوئی شیر دوڑ پڑے اور دوڑتے ہوئے یہ پکارتا جائے کہ اے جنگل کے چیتو ' ہاتھیو ' بھیڑیو اور گیدڑو ' تم بھی دوڑو - بڑا غضب ہوگیا - دو بھیڑیں لڑ بیٹھیں - اب سارا جنگل کانپ ہی جائیگا - اس وقت امریکہ نے ٹھیک ایسی ہی حالت پیدا کردی ہے - اور ساری دنیا کو بڑی چنتا میں ڈالدیا ہے - امریکہ کے ہتھکنڈوں سے اور امریکہ کے پترکاروں سے ہم خوب واقف ہیں - وہ جب جی میں آئے کسی کو ' زیادتی کرنے والا ' کہ بیٹھتے ہیں - ایک سے زیادہ بار وہ ہندوستان کے بارے میں بھی اس طرح کا جھوٹا شور اٹھا چکے ہیں -

और कोई अजब नहीं, मौक़ा पाकर फिर उठा बैठें . इसी अमरीका ने इसी भारत को उस वक्त 'ज्यादती करने वाला' कहा था जब भारत अपने बहके हुए हिस्से हैदराबाद को दबा समझ कर अपने में मिलाना चाहता था . पर यही ग़नीमत है कि उस वक्त वह सुरक्षा समिति से हुकुम लेकर हैदराबाद की तरफ़ से भारत पर नहीं कूद पड़ा और न उसने बरतानिया को ही ऐसा करने के लिये उकसाया . अगर वह उस वक्त ऐसा करता तो या तो चुपचाप भारत मुंह की खाकर रह जाता और हैदराबाद अमरीका की निगरानी में या बरतानिया की निगरानी में ऐसे ही आ जाता जिस तरह आज दक्खिन कोरिया उसी काका साम के हाथ में है . या अगर भारत ने कुछ हाथापाई की होती तो सारा भारत ही अमरीका के हाथों में होता और फिर शायद भारत में प्रेसीडेन्ट की जगह वाइसराय होता या एजेन्ट टू यु. एस. ए. होता . ऐसा क्यों नहीं हुआ इसे अमरीका जाने . हम इस वक्त इस गहराई में नहीं जाना चाहते . हम तो सिर्फ़ यह बताना चाहते हैं कि इस वक्त अमरीका ने दुनिया की शान्ति भंग कर दी है . कोरिया पर उसकी चढ़ाई क़ानून की रू से ठीक भी होती और नीति की रू से भी ठीक होती तो भी अमली रूप से जो अशांति फैली है उसकी जिम्मेदारी अमरीका पर है और अशांति फैलाकर उसने बहुत बड़ी ग़लती की . जिस तरह क़ानून की रू से और धर्म की रू से एक आदमी का मामा उसके बाप का साला होता है पर अगर वह उस क़ानूनी और धार्मिक अधिकार की रू से अपने मामा को अपने बाप का साला कह कर पुकारे तो वह कुटुम्ब की शांति को भंग करने का मुजरिम होगा . ठीक इसी तरह से अमरीका इस वक्त दुनिया की शांति के भंग करने का मुजरिम है .

(६)

اور کوئی عجب نہیں، موقع پاکر پھر اٹھا بیٹھیں - اسی امریکہ نے اسی بھارت کو اس وقت 'زیادتی کرنے والا' کہا تھا جب بھارت اپنے بہکے ہوئے حصہ حیدرآباد کو دبا سمجھا کر اپنے میں ملانا چاہتا تھا - پر یہی غنیمت ہے کہ اس وقت وہ سرکشا سمیتی سے حکم لیکر حیدرآباد کی طرف سے بھارت پر نہیں کود پڑا اور اس نے برطانیہ کو ہی ایسا کرنے کے لئے اکسایا - اگر وہ اس وقت ایسا کرتا تو یا تو چپ چاپ بھارت منھ کی کھاکر رہ جاتا اور حیدرآباد امریکہ کی نگرانی میں یا برطانیہ کی نگرانی میں ایسے ہی آجاتا جس طرح آج دکھن کوریا اسی کاکا سام کے ہاتھ میں ہے - یا اگر بھارت نے کچھ ہاتھا پائی کی ہوتی تو سارا بھارت ہی امریکہ کے ہاتھوں میں ہوتا اور پھر شاید بھارت میں پریسیڈنٹ کی جگہ وائسرائے ہوتا یا ایجنٹ ٹو یو- ایس- اے- ہوتا - ایسا کیوں نہیں ہوا اسے امریکہ جانے - ہم اس وقت اس گہرائی میں نہیں جانا چاہتے - ہم تو صرف یہ بتانا چاہتے ہیں کہ اسوقت امریکہ نے دنیا کی شانتی بھنگ کردی ہے - کوریا پر اس کی چڑھائی قانون کی رو سے ٹھیک بھی ہوتی اور نیتی کی رو سے بھی ٹھیک ہوتی تو بھی عملی روپ سے جو اشانتی پھیلی ہے اس کی ذمہ داری امریکہ پر ہے - اور اشانتی پھیلا کر اس نے بہت بڑی غلطی کی - جس طرح قانون کی رو سے اور دھرم کی رو سے ایک آدمی کا ماما اس کے باپ کا سالا ہوتا ہے پر اگر وہ اس قانونی اور دھارمک ادھیکار کی رو سے اپنے ماما کو اپنے باپ کا سالا کہہ کر پکارے تو وہ کٹمب کی شانتی بھنگ کرنے کا مجرم ہوگا - اسی طرح سے امریکہ اس وقت دنیا کی شانتی کے بھنگ کرنے کا مجرم ہے -

सुरक्षा समिति की पुकार और अमरीका के चढ़ाई के हुकुम से अनेकों हाथ वाली शांति देवी को चोट तो पहुँची थी पर भारत और मिस्र के तटस्थ रहने से यह दो हाथ सलामत थे. थोड़ी देर में, न जाने किस वजह से भारती हाथ अगर टूटा नहीं तो कंधे से उतर कर लटक जरूर पड़ा और अब शांति, जो बच रहे थे, उनकी नजरों में भी भंग हो गई. और ऐसा होते ही हम भारत के रहने वालों पर चिंता की न दिखाई देने वाली गोलियों की बौछार होने लगी. और अब हर भारत वासी के मन में दुविधा है कि न जाने किस दिन सीसे और लोहे की गोलियों की बौछार भी उन पर होने लगे. जैसा हाल भारत का है वैसा ही हाल और मुल्कों का है. इसलिये भारत अगर सीधे नहीं तो नासीधे दुनिया में अशांति फैलाने का जिम्मेदार बन बैठा. इस गांधी पैदा करने वाले भारत को अब दुनिया क्या कहेगी, यह कौन जाने ?

नार्वे, जिसने नोबेल जैसे दानी को जन्म दिया और उस नोबेल को जो दुनिया में हमेशा के लिये और इनामों के साथ साथ एक शांति का इनाम भी रख गया है, वह भी इस चढ़ाई की इजाजत के लिये 'हां' कह कर शांति के भंग करने वालों में शामिल हो गया.

अमरीका ने इस वक्त जो दुनिया भर में आग लगाई है, इतना ही अच्छा हुआ है कि इस वक्त दुनिया के सारे मुल्क अच्छी खासी गीली लकड़ी बने हुए हैं और जल्दी आग नहीं पकड़ रहे, नहीं तो वह आग बड़ी जल्दी सारी दुनिया में फैल जाती. इस अशांति की हालत में अगर कुछ शांति बची हुई है और दुनिया की इस बेचैनी में

سرکھشا سمیتی کی پکار اور امریکہ کے چڑھائی کے حکم سے انیکوں ہاتھ والی شانتی دیوی کو چوٹ تو پہونچی تھی پر بھارت اور مصر کے تٹستھ رہنے سے یہ دو ہاتھ سلامت تھے - تھوڑی دیر میں نہ جانے کس وجہ سے بھارتی ہاتھ اگر ٹوٹا نہیں تو کندھے سے اتر کر لٹک ضرور پڑا . اور اب شانتی ' جو بچ رہے تھے ' ان کی نظروں میں بھی بھنگ ہو گئی اور ایسا ہوتے ہی ہم بھارت کے رہنے والوں پر چنتا کی نہ دکھائی دینے والی گولیوں کی بوچھار ہونے لگی - اور اب ہر بھارت واسی کے من میں دودھا ہے کہ نہ جانے کس دن سیسے اور لوہے کی گولیوں کی بوچھار بھی ان پر ہونے لگے - جیسا حال بھارت کا ہے ویسا ہی حال اور ملکوں کا ہے - اس لئے بھارت اگر سیدھے نہیں تو نا سیدھے دنیا میں اشانتی پھیلانے کا ذمہ دار بن بیٹھا - اس گاندھی پیدا کرنے والے بھارت کو اب دنیا کیا کہیگی ' یہ کون جانے ؟

ناروے جس نے نوبیل جیسے دانی کو جنم دیا اور اس نوبیل کو جو دنیا میں ہمیشہ کے لئے اور انعاموں کے ساتھ ساتھ ایک شانتی کا انعام بھی رکھ گیا ہے ' وہ بھی اس چڑھائی کی اجازت کے لئے ' ہاں ' کہکر شانتی کے بھنگ کرنے والوں میں شامل ہوگیا -

امریکہ نے اس وقت جو دنیا بھر میں آگ لگائی ہے ' اتنا ہی اچھا ہوا ہے کہ اس وقت دنیا کے سارے ملک اچھی خاصی گیلی لکڑی بنے ہوئے ہیں اور جلدی آگ نہیں پکڑ رہے ' نہیں تو وہ آگ بڑی جلدی ساری دنیا میں پھیل جاتی - اس اشانتی کی حالت میں اگر کچھ شانتی بچی ہوئی ہے اور دنیا کی اس بے چینی میں

अगर कहीं कुछ चैन का हिस्सा बाक़ी है, तो उसका यश अगर अभी तक किसी एक मुल्क को दिया जा सकता है, तो वह है रूस और अगर अभी तक किसी एक आदमी को दिया जा सकता है तो वह है जोजेफ़ स्टालिन . और अगर २५ जून से आज चार जुलाई तक यानी दस दिन की शांति का इनाम नोबेल प्राइज़ समिति दे सकती हो तो यह इनाम रूस के हिस्से में आयेगा . कल इस इनाम का हक़दार कौन रहेगा या कौन होगा , हम नहीं जानते .

अफ़सोस हमें यही है कि इस इनाम का हक़दार सब से पहले भारत को होना चाहिये था या इसके बाद नार्वे को . क्योंकि भारत ने शांति के देवता गांधी को जन्म दिया और नार्वे ने शांति के इनाम दाता नोबेल को जन्म दिया . पर आज इस इनाम का हक़दार है रूस जिसने वर्ग युद्ध के जन्म दाता लेनिन को जन्म दिया या उसके बाद फिर इस इनाम का हक़दार है मिस्र जिसने तलवार के ज़ोर से अपने मुल्क को आज़ाद किया .

ऐ स्टालिन, हम शांति प्रिय भारत वालों की निगाहों में तुम धन्य हो . इतनी भड़क के बाद तुम्हारा हाथ अगर कुछ दिन तक भी तलवार पर नहीं गया और इस तरह से अगर तुम कुछ दिन तक भी गांधी व्रत निभाते रहे और सच्चे जी से किसान बनकर नाज उगाते रहे और जुलाहा बन कर कपड़ा बुनते रहे तो यह क्या कम है ! हम भारती तो एक दिन के व्रत को भी तारने वाला समझते हैं . और अगर अब बहुत भड़काने पर तुम बिगड़ भी बैठे तो ईश्वर के दरबार में तुम्हें मन पर क़ाबू न रखने की सज़ा भले ही मिले , दुनिया की शान्ति भंग करने की सज़ा तुम्हें नहीं मिलेगी .

४—७—५० भगवानदीन

———

اگر کہیں کچھ چین کا حصہ باقی ہے ' تو اس کا یش اگر ابھی تک کسی ایک ملک کو دیا جاسکتا ہے ' تو وہ ہے روس - اور ابھی تک کسی ایک آدمی کو دیا جاسکتا ہے تو وہ ہے جوزف استالن - اور اگر ۲۵ جون سے آج ۴ جولائی تک یعنی دس ۱۰ دن کی شانتی کا انعام نوبیل پرائز سمیتی دے سکتی ہے تو یہ انعام روس کے حصہ میں آئیگا - کل اس انعام کا حق دار کون رہے گا یا کون ہوگا ' ہم نہیں جانتے -

افسوس ہمیں یہی ہے کہ اس انعام کا حق دار سب سے پہلے بھارت کو ہونا چاہئے تھا یا اس کے بعد ناروے کو - کیونکہ بھارت نے شانتی کے دیوتا گاندھی کو جنم دیا اور ناروے نے شانتی کے انعام داتا نوبیل کو جنم دیا - پر آج اس انعام کا حق دار ہے روس جس نے ورگ یدھ کے جنم داتا لینن کو جنم دیا یا اس کے بعد پھر اس انعام کا حق دار ہے مصر جس نے تلوار کے زور سے اپنے ملک کو آزاد کیا -

اے استالن ' ہم شانتی پریہ بھارت والوں کی نگاہوں میں تم دھنیہ ہو - اتنی بھڑک کے بعد تمہارا ہاتھ اگر کچھ دن تک بھی تلوار پر نہیں گیا اور اگر اس طرح سے تم کچھ دن تک بھی گاندھی ورت نبھاتے رہے اور سچے جی سے کسان بن کر ناج اگاتے رہے اور جولاہا بنکر کپڑا بنتے رہے تو یہ کیا کم ہے ! ہم بھارتی تو ایک دن کے ورت کو بھی تارنے والا سمجھتے ہیں - اور اگر اب بہت بھڑکانے پر تم بگڑ بھی بیٹھے تو ایشور کے دربار میں تمہیں من پر قابو نہ رکھنے کی سزا بھلے ہی ملے ' دنیا کی شانتی بھنگ کرنیکی سزا تمہیں نہیں ملیگی -

۴ - ۷ - ۵۰ بھگوان دین

कोरिया बेक़सूर

मशहूर अंगरेज़ पत्रकार सर आरथर मूर ने अपने एक लेख में लिखा है कि कोरिया ने लड़ कर अमरीका और रूस को लड़ पड़ने के लिये भड़का दिया. जबकि अभी तक रूस और अमरीका ठंडे ठंडे ही लड़ रहे थे. यानी अगर एक दूसरे की खीस उड़ा रहा था तो दूसरा उसको मुस्कुरा कर चिढ़ा रहा था. कोरिया के माथे यह इलज़ाम थोपना सरासर अमरीका के साथ तरफ़दारी करना है और अमरीका की कोरिया पर बेजा चढ़ाई का समर्थन करना है.

कोरिया एक देश है. कोरिया के दो टुकड़े किये गये. इसमें कोरिया ने किसको भड़काया. कोरिया तो इस तरह उल्टा भड़काया गया.

(४७)

कोरिया एक देश है, उसकी एक कलचर है. उसकी एक बोली है. वह हर तरह से एक है. उसके दो टुकड़े करके उस पर दो मुल्क क़ब्ज़ा कर बैठे. और बैठे थे गुरू बनकर भलाई सिखाने और बुराई की तालीम देने लगे. बैठे थे बाड़ बन कर उसकी रच्छा करने और उसी को खाने लगे. इसमें कोरिया ने किसको भड़काया. उल्टा कोरिया ही भड़काया गया.

कोरिया एक देश है. हर तरह से एक है और एक रहना चाहता है. जैसे दो टूटे हुए धातु के टुकड़े गरम किये बग़ैर एक नहीं होते वैसे ही किसी मुल्क के किसी की शरारत से किये हुए दो टुकड़े बिना लड़े भिड़े आसानी से एक नहीं होते. भारत और हैदराबाद ही टैंकों की गरमी के बग़ैर एक न हो सके. इसी तरह अगर कोरिया के किसी की शरारत से हुए दो टुकड़े आपस में लड़ भिड़कर एक होना चाहते हैं तो वह किसको

کوریا بے قصور

مشہور انگریز پترکار سر آرتھر مور نے اپنے ایک لیکھ میں لکھا ہے کہ کوریا نے لڑ کر امریکہ اور روس کو لڑ پڑنے کے لئے بھڑکا دیا ' جب کہ ابھی تک روس اور امریکہ ٹھنڈے ٹھنڈے ہی لڑ رہے تھے - یعنی اگر ایک دوسرے کی کھیس اڑا رہا تھا تو دوسرا اس کو مسکرا کر چڑھا رہا تھا - کوریا کے ماتھے یہ الزام تھوپنا سراسر امریکہ کے ساتھ طرفداری کرنا ہے اور امریکہ کی کوریا پر بیجا چڑھائی کا سمرتھن کرنا ہے -

کوریا ایک دیش ہے - کوریا کے دو ٹکڑے کئے گئے اس میں کوریا نے کس کو بھڑکایا ؟ کوریا تو اس طرح الٹا بھڑکایا گیا -

(۴۷)

کوریا ایک دیش ہے - اس کی ایک کلچر ہے - اس کی ایک بولی ہے - وہ ہر طرح سے ایک ہے - اس کے دو ٹکڑے کرکے اس پر دو ملک قبضہ کر بیٹھے - اور بیٹھے تھے گرو بن کر بھلائی سکھانے اور برائی کی تعلیم دینے لگے - بیٹھے تھے باڑ بن کر اس کی رکشا کرنے اور اسی کو کھانے لگے - اس میں کوریا نے کس کو بھڑکایا ؟

کوریا ایک دیش ہے ہر طرح سے ایک ہے اور ایک رہنا چاہتا ہے - جیسے دو ٹوٹے ہوئے دھاتو کے ٹکڑے گرم کئے بغیر ایک نہیں ہوتے ویسے ہی کسی ملک کے کسی کی شرارت سے کئے ہوئے دو ٹکڑے بنا لڑے بھڑے آسانی سے ایک نہیں ہوتے - بھارت اور حیدرآباد ہی ٹینکوں کی گرمی کے بغیر ایک نہ ہو سکے - اسی طرح اگر کوریا کے کسی کی شرارت سے ہوئے دو ٹکڑے آپس میں لڑ بھڑ کر ایک ہونا چاہتے ہیں تو وہ کس کو

भड़काते हैं ? और कोई क्यों भड़के ? कोरिया से सात समुन्दर पार रहने वाला अमरीका अगर उस लड़ाई से भड़क उठे तो हमें यही कहना पड़ेगा कि "भैंस न कूदी, कूदी गौन." चीन भड़कता तो कोई बात थी. हिन्दुस्तान भड़कता तो कोई बात थी. यह अमरीका की भड़क कैसी. अमरीका की भड़क की तह में कोरिया पर और एशिया के किसी हिस्से पर क़ब्ज़ा करने की बात छिपी हुई है. इसलिये कोरिया की आपसी लड़ाई कोरिया में एक सरकार क़ायम करने की है न कि किसी को भड़काने की . कोरिया ने अमरीका को नहीं भड़काया. अमरीका ने कोरिया को भड़काया है.

दो बरस नहीं बीते सितम्बर सन् ४८ में सारे कोरिया ने यानी उत्तर कोरिया और दक्खिन कोरिया ने मिलकर एक बड़ी जन-पंचायत बनाई थी जिसको अंगरेज़ी में सुप्रीमपीपुल्स असेम्बली कहा जाता है. इसका चुनाव आम जनता की राय से हुआ था और पर्चियों से हुआ था. इस पंचायत में सब मिल कर पाँच सौ बहत्तर पंच थे. दो सौ बारह उत्तर कोरिया के और तीन सौ साठ दक्खिन कोरिया के . इस बड़ी पंचायत ने एक ठहराव पास किया कि अमरीका और रूस दोनों फ़ौरन और एक साथ अपनी अपनी फ़ौजें कोरिया से वापस बुला लें क्योंकि इसके बग़ैर हम कोरिया वासी मिलकर एक नहीं हो सकते. और एक हुए बग़ैर हम कोरियावासी शांतिप्रिय लोकशाही कोरियाई राज न क़ायम कर सकते हैं और न उसकी माली, राजकाजी और कलचरी तरक़्क़ी कर सकते हैं .

यह प्रस्ताव पास करके कोरिया वासियों ने क्या गुनाह किया . और किसको भड़काया ? इसके जवाब में रूसी सरकार ने तो अपनी

بھڑکاتے ھیں ؟ اور کوئی کیوں بھڑکے ؟ کوریا سے سات سمندر پار رھنے والا امریکہ اگر اس لڑائی سے بھڑک اٹھے تو ھمیں یہی کہنا پڑیگا کہ "بھینس نہ کودی ، کودی گون" - چین بھڑکتا تو کوئی بات تھی ' ھندستان بھڑکتا تو کوئی بات تھی ' یہ امریکہ کی بھڑک کیسی ؟ امریکہ کی بھڑک کی تہہ میں کوریا اور ایشیا کے کسی حصے پر قبضہ کرنے کی بات چھپی ھوئی ھے - اس لئے کوریا کی آپسی لڑائی کوریا میں ایک سرکار قائم کرنے کی ھے نہ کہ کسی کو بھڑکانے کی - کوریا نے امریکہ کو نہیں بھڑکایا ' امریکہ نے کوریا کو بھڑکایا ھے -

دو برس نہیں بیتے ستمبر سن ۴۸ میں سارے کوریا نے یعنی اتر کوریا اور دکھن کوریا نے مل کر ایک بڑی جن پنچایت بنائی تھی جس کو انگریزی میں سپریم پیپلس اسمبلی کہا جاتا ھے - اس کا چناؤ عام جنتا کی راے سے ھوا تھا - اور پرچیوں سے ھوا تھا - اس پنچایت میں سب مل کر پانچ سو بہتر پنچ تھے - دو سو بارہ اتر کوریا کے اور تین سو ساٹھ دکھن کوریا کے - اس بڑی پنچایت نے ایک ٹھہراؤ پاس کیا کہ امریکہ اور روس دونوں فوراً اور ایک ساتھ اپنی اپنی فوجیں کوریا سے واپس بلا لیں کیونکہ اس کے بغیر ھم کوریا واسی مل کر ایک نہیں ھو سکتے اور ایک ھوئے بغیر ھم کوریا واسی شانتی پریہ لوکشاھی کوریائی راج نہ قایم کر سکتے ھیں اور نہ اس کی مالی ' راجکاجی اور کلچری ترقی کر سکتے ھیں -

یہ پرستاو پاس کرکے کوریا واسیوں نے کیا گناہ کیا ؟ اور کس کو بھڑکایا ؟ اس کے جواب میں روسی سرکار نے تو اپنی

फ़ौजें वापस बुला लीं लेकिन अमरीकी सरकार टस से मस न हुई. उसने दक्खिन कोरिया की " रक्षा " के नाम पर अपनी फ़ौजें वहीं बनाये रखीं और फिर दुनिया यह जान ले कि अमरीका के ' शिकागो-डेली न्यूज़ ' के एडीटर ने यह लफ़्ज़ लिखे थे .—

" (कोरिया से) फ़ौजें हटाना तो पूरब में (अमरीका की) शान को धक्का पहुंचाना होगा . "

अब कहिये, कोरिया ने अमरीका को भड़काया या अमरीका ने अपनी ऐंठ में आकर और ऐटम बम के घमंड में कोरिया को भड़काया और सारे एशिया को चुनौती दी ?

अमरीका आज एशिया में अपनी शान जमाये रखना चाहता है . कल ताक़त बनाये रखना चाहेगा और परसों उसके धन-दौलत को हड़पना चाहेगा. यह है " भड़काना . "

अमरीका कोरिया को भड़का कर और सारी दुनिया को भड़का कर जब यह कहता है कि कोरिया ने लड़ कर उसे भड़काया तब हमें यही कहावत याद आजाती है. " उलटा चोर कोतवाल को डांटे ."

४ - ७ - ५० भगवानदीन

فوجیں واپس بلا لیں لیکن امریکی سرکار ٹس سے مس نہ ہوئی - اس نے دکھن کوریا کی "رکشا" کے نام پر اپنی فوجیں وهیں بنائے رکھیں اور پھر دنیا یہ جان لے کہ امریکہ کے ' شکاگو ڈیلی نیوز کے ایڈیٹر نے یہ لفظ لکھے تھے -

" (کوریا سے) فوجیں هٹانا تو پورب میں (امریکہ کی) شان کو دھکا پہونچانا ہوگا "

اب کہئے ' کوریانے امریکہ کو بھڑکایا یا امریکہ نے اپنی اینٹھ میں آکر اور ایٹم بم کے گھمنڈ میں کوریا کو بھڑکایا اور سارے ایشیا کو چنوتی دی ؟

امریکہ آج ایشیا میں اپنی شان جمائے رکھنا چاهتا ہے ' کل طاقت بنائے رکھنا چاهیگا اور پرسوں اس کے دھن دولت کو هڑپنا چاهیگا یہ ہے - " بھڑکانا ' -

امریکہ کوریا کو بھڑکا کر اور ساری دنیا کو بھڑکاکر جب یہ کہتا ہے کہ کوریا نے لڑکر اسے بھڑکایا تب یہی کہاوت یاد آجاتی ہے " الٹا چور کوتوال کو ڈانٹے "

بھگوان دین ٤ - ٧ - ٥٠

शाबाश कोरिया !

आज एक पखवाड़े से ज्यादा होने को आया. तुम जिस बहादुरी से लड़ रहे हो उसकी, हम समझते हैं, दुश्मन भी तारीफ़ करते होंगे. यों तो तुम एक दिन भी अमरीका के साथ लड़कर अमरीका को कुछ पीछे हटा देते तो तुम शाबाशी के हक़दार थे. अब सत्रह रोज़ एक जोश के साथ लड़कर तो तुम बहादुर दुनिया की नज़रों में काफ़ी ऊँचे उठ गये हो. और हम तो क्या हज़ारों लाखों तुम्हें शाबाशी देते होंगे.

हमने ग्वालों के मुंह से गाय को पूंछ उठा कर और बदन फुला कर अपने बच्चे या अपने पालने वाले ग्वाले को बचाने की ख़ातिर अपने सींगों से शेर की थाप, पंजों और डाढ़ों का मुक़ाबला करने की बात सुनी है और उसी तरह गड़रियों से बकरी के अपना बच्चा बचाने के लिये अपने छोटे छोटे गुटठ्ल सींगों की मदद से भेड़िये के सामने निडर होकर डट जाने की बात सुनी है. उसी से हम तुम्हारे जोश का अन्दाज़ा लगा सकते हैं. तुम अपने बच्चों की हिफ़ाज़त के लिये लड़ रहे हो और अमरीका तुम गाय और बकरियों के मुक़ाबले में शेर भले ही हो पर इतना जोश कहां से ला सकता है. खाने के लिये इतना जोर कब किसने लगाया है जितना जान बचाने के लिये. तुम जान बचाने के लिये जान की बाज़ी लगाये हुए हो. अमरीका शान बचाने के लिये ईमान को दाँव पर लगा बैठा है. तुम्हें या तुम्हारे किसी हिस्से को पच्छिम बदनाम करता तो हमें अचरज न होता. पर पच्छिम के बदनाम करने वालों के साथ पूरब को मिलते हुए देख कर हम दांत तले उंगली दबा कर रह जाते हैं. पच्छिम के हथकंडों से यों तो बहुत

شاباش کوریا !

آج ایک پکھواڑے سے زیادہ هونےکو آیا ' تم جس بہادری سے لڑ رہے هو اُسکی ' هم سمجھتے هیں ' دشمن بھی تعریف کرتے هوںگے - یوں تو تم ایکدن بھی امریکہ کے ساتھ لڑ کر امریکہ کو کچھ پیچھے هٹا دیتے تو تم شاباشی کے حقدار تھے - اب سترہ روز ایک جوش کیساتھ لڑ کر تو تم بہادر دنیا کی نظروں میں کافی اونچے اُٹھ گئے هو - اور هم تو کیا هزاروں لاکھوں تمھیں شاباشی دیتے هونگے -

هم نے گوالوں کے منھ سے گائے کو پونچھ اُٹھا کر اور بدن پھلا کر اپنے بچے یا اپنے پالنے والے گوالے کو بچانے کی خاطر اپنے سینگوں سے شیر کی تھاپ ' پنجوں اور ڈاڑھوں کا مقابلہ کرنے کی بات سنی هے اور اُسی طرح گڑریوں سے بکری کے اپنا بچہ بچانے کے لئے اپنے چھوٹے گٹھل سینگوں کی مدد سے بھیڑیے کے سامنے نڈر هوکر ڈٹ جانے کی بات سنی هے - اسی سے هم تمہارے جوش کا اندازہ لگا سکتے هیں - تم اپنے بچوں کی حفاظت کے لئے لڑ رهے هو اور امریکہ تم گائے اور بکریوں کے مقابلہ میں شیر بھلے هی هو پر اتنا جوش کہاں سے لا سکتا هے - کھانے کے لئے اتنا زور کب کس نے لگایا هے جتنا جان بچانے کیلئے - تم جان بچانے کیلئے جان کی بازی لگائے هوئے هو - امریکہ شان بچانے کے لئے ایمان کو داؤں پر لگا بیٹھا هے - تمھیں یا تمہارے کسی حصہ کو پچھم بدنام کرتا تو همیں اچرج نہ هوتا - پر پچھم کے بدنام کرنے والوں کے ساتھ پورب کو ملتے هوئے دیکھکر هم دانت تلے اُنگلی دبا کر رہ جاتے هیں - پچھم کے هتھکنڈوں سے یوں تو بہت

पहले से पूरब वाकिफ है पर दुनिया के बाबा गांधी ने भारत के माई बाप बने अंग्रेज़ी राज को शैतानी राज कहकर पूरब वालों को हमेशा के लिये यह समझा दिया है कि पच्छिम वाले इस तरह माई बाप का नाटक करके चीते और भेड़िये साबित होते हैं. उन्हें भेड़ की खाल में भेड़िया बनने की कला बड़ी अच्छी तरह आती है. पच्छिम की यह कहावत कौन नहीं जानता कि "कुत्ते को पहले बदनाम करो और फिर उसका गला घोंट दो" और लुक़मान की उस भेड़िये की कहानी किसने नहीं सुनी जिसने मेमने के इस जवाब में कि उसे अभी पैदा हुए छै महीने हुए ही नहीं, यह कह कर फाड़ खाया था कि तू नहीं तो तेरा बाप रहा होगा. पच्छिम हमेशा से यह कहता आया है और आज भी उसी नीति पर चल रहा है. पर सचमुच दूसरे मुल्क पर चढ़ाई करने के लिये या क़ब्ज़ा रखने के लिये या घेरा डाले रखने के लिये कोई बहाना भी अगर न हो तो दुनिया के मुल्क बहकाए भी कैसे जा सकते हैं.

(४)

ऐ कोरिया, हम अमरीका की आदत से खूब वाकिफ हैं और सुरक्षा समिति के फ़ैसलों का हमें खूब तजरबा है. हम भारतवासी लेकर गये थे कुछ मामला और सुरक्षा समिति ने उसको बना दिया था कुछ और. हम गये थे लड़ाई को रोकने पर उलटा उसने हमें लड़वा दिया. और रहा हमारे मामले का फ़ैसला सो वह आज तक लटका हुआ है. ऐ कोरिया, यही हाल आज तुम्हारा हुआ है. मानने की खातिर हम यह माने लेते हैं कि दक्खिन कोरिया के प्रेसीडेन्ट डाक्टर री ने ही अपने मुल्क के खिलाफ अपनी शिकायत सुरक्षा समिति के सामने पहुँचाई होगी, तब भी हमारी समझ में यह नहीं आता कि यह बीच बचाव करने के लिये सुरक्षा समिति ने उस अमरीका को ही क्यों लाठी लेकर भेजा जो पहले से दक्खिन कोरिया में अपने पाँव जमाये हुए था, जो दक्खिन कोरिया से लगे मुल्क जापान

پہلے سے پورب واقف ہے پر دنیا کے بابا گاندھی نے بھارت کے مائی باپ بنے انگریزی راج کو شیطانی راج کہکر پورب والوں کو ہمیشہ کیلئے یہ سمجھا دیا ہے کہ پچھم والے اسطرح مائی باپ کا ناٹک کرکے چیتے اور بھیڑئیے ثابت ہوتے ہیں ۔ انہیں بھیڑ کی کھال میں بھیڑیا بننے کی کلا بڑی اچھی طرح آتی ہے - پچھم کی یہ کہاوت کون نہیں جانتا کہ " کتے کو پہلے بدنام کرو اور پھر اس کا گلا گھونٹ دو " اور لقمان کی اس بھیڑئیے کی کہانی کس نے نہیں سنی جس نے میمنے کے اس جواب میں کہ اُسے ابھی پیدا ہوئے چھ مہینہ ہوئے ہی نہیں ' یہ کہکر پھاڑ کھایا تھا کہ تو نہیں تو تیرا باپ رہا ہوگا - پچھم ہمیشہ سے یہ کہتا آیا ہے اور آج بھی اسی نیتی پر چل رہا ہے - پر سچ مچ دوسرے ملک پر چڑھائی کرنے کے لئے یا قبضہ بنائے رکھنے کے لئے یا گھیرا ڈالے رکھنے کے لئے کوئی بہانہ بھی اگر نہ ہو تو دنیا کے ملک بہکائے بھی کیسے جا سکتے ہیں -

اے کوریا ' ہم امریکہ کی عادت سے خوب واقف ہیں اور سرکھشا سمیتی کے فیصلوں کا ہمیں خوب تجربہ ہے - ہم بھارت واسی لیکر گئے تھے کچھ معاملہ اور سرکھشا سمیتی نے اُس کو بنا دیا تھا کچھ اور - ہم گئے تھے لڑائی کو روکنے پر اُلٹا اس نے ہمیں لڑوا دیا - اور رہا ہمارے معاملے کا فیصلہ سو وہ آج تک لٹکا ہوا ہے - اے کوریا ' یہی حال آج تمہارا ہوا ہے - ماننے کی خاطر ہم یہ مانے لیتے ہیں کہ دکھن کوریا کے پریسیڈنٹ ڈاکٹر ری نے ہی اپنے ملک کے خلاف اپنی شکایت سرکھشا سمیتی کے سامنے پہونچائی ہوگی ' تب بھی ہماری سمجھ میں یہ نہیں آتا کہ یہ بیچ بچاؤ کرنے کے لئے سرکھشا سمیتی نے اس امریکہ کو ہی کیوں لاٹھی لیکر بھیجا جو پہلے سے دکھن کوریا میں اپنے پاؤں جمائے ہوئے تھا ' جو دکھن کوریا سے لگے ملک جاپان

हिन्द वासी

(भाई विक़ार ख़लील शाहपूरी)

हिन्दोस्तान आओ पहला तुम्हें दिखायें
इन हिन्द वासियों का कुछ माजरा सुनायें

हिन्दू भी और मुसलमां कैसे मिले जुले थे
मालूम होते आपस में यह सदा भले थे

आपस में भाई भाई बनकर सदा विचरते*
जान इनपे वारते वह यह उनपे दिल से मरते

जब साथ में कभी यह बाहर सफ़र को जाते
भाई पने का नक़्शा हर जा पे थे दिखाते.

जब राह में कहीं यह पनघट पे बैठ जाते
वह हाथ पैर धोते और यह वज़ू बनाते

वह ध्यान में मगन हैं सजदे में यह झुके हैं
दो शक्ल से यह गोया पूजा में अब लगे हैं.

आपस में दोनों मिलकर खाते खिलाते चलते
गोदी में प्रेम देवी के थे सदा टहलते

आपस में पासबां थे यह देशबन्धु दोनों.
लहरों में बस मगन थे यह प्रेम सिन्धु दोनों

आपस में दोनों हरदम हम साया बन के रहते
वह इनपे नाज़ करते यह उनके नाज़ सहते

थे जानने से क़ासिर आपस की यह लड़ाई
थे एक दूसरे की करते सदा भलाई

(بھائي وقار خليل شاہ پوری)

ھندوستان آؤ پہلا تمہیں دکھائیں
ان ھند واسیوں کا کچھ ماجرا سنائیں

ھندو بھی اور مسلماں کیسے ملے جلے تھے
معلوم ھوتے آپس میں یہ سدا بھلے تھے

آپس میں بھائی بھائی بنکر سدا *بچرتے
جان ان پہ وارتے وہ یہ اُن پہ دل سے مرتے

جب ساتھہ میں کبھی یہ باھر سفر کو جاتے
بھائی پنے کا نقشہ ھر جا پہ تھے دکھاتے

جب راہ میں کہیں یہ پنگھٹ پہ بیٹھہ جاتے
وہ ھاتھہ پیر دھوتے اور یہ وضو بناتے

وہ دھیان میں مگن ھیں سجدے میں یہ جھکے ھیں
دو شکل سے یہ گویا پوجا میں اب لگے ھیں

آپس میں دونوں مل کر کھاتے کھلاتے چلتے
گودي میں پریم دیوی کے تھے سدا ٹہلتے

آپس میں پاسباں تھے یہ دیش بندھو دونوں
لہروں میں بس مگن تھے یہ پریم سندھو دونوں

آپس میں دونوں ھردم ھم سایہ بن کے رھتے
وہ اِن پہ ناز کرتے یہ اُن کے ناز سہتے

تھے جاننے سے قاصر آپس کی یہ لڑائي
تھے ایک دوسرے کي کرتے سدا بھلائي

में घेरा डाले पड़ा था और जो आज इसी जापान से जापान में पक्के लड़ाई अड्डे बनाने की बात चीत कर रहा है और इस तरह फ़ारमूसा को हड़प कर चीन और सारे एशिया पर छा जाना चाहता है ? अगर सुरक्षा समिति अमरीका के हाथ में न खेल रही होती तो उसने कोरिया की आपसी लड़ाई में बीच बचाव करने के लिये गांधी को जन्म देने वाले भारत को चुना होता या कोरिया के पड़ोसी चीन को चुना होता या इसी तरह का कोई और तरीक़ा निकाला होता.

ऐ कोरिया, हम इस से वाक़िफ़ हैं कि उत्तर कोरिया का नेता 'सेन' और दक्खिन कोरिया का नेता 'री' एक दिन दोनों जापानी राज को उखाड़ फेंकने को कंधों से कंधा मिला कर लड़ चुके हैं और मां जाए भाइयों की तरह रहे हैं. डाक्टर री ने सेन से कुछ कम तकलीफ़ें नहीं सहीं. हां, डाक्टर री अपने मुल्क के लिये गोरीला युद्ध नहीं लड़ा था और री के पकड़े जाने के बाद सेन गोरीला बन कर जापानियों का मुक़ाबला करता रहा. हम इससे भी वाक़िफ़ हैं कि सेन रूस भाग गया था और रूस के हाथों में रहा. और वहीं उसने रूसी युद्ध कला की जानकारी हासिल की और री हवाई टापू में रहा और अमरीकियों के हाथों में खेलता रहा. आज वही बुड्ढा री अमरीकियों के साथ जुआ खेलने में कोरिया को दाँव पर लगाकर हार गया है जिस तरह युधिष्ठिर द्रोपदी को हार गये थे. यह किसको नहीं मालूम कि द्रोपदी का जब चीर खींचा जा रहा था तो युधिष्ठिर ऐसे ही बैठे थे मानो कुछ हो ही नहीं रहा ? क्या आज अमरीका कोरिया का चीर नहीं खींच रहा है ? और फिर भी सिंगमन री युधिष्ठिर बने बैठे हैं क्योंकि अमरीकियों से वचन हार बैठे हैं. यह तो है, पर आज इस दुनिया में कोरिया का चीर खिंच रहा है और बड़े बड़े समझदार लोग भी न कुछ बोलते हैं

میں گھیرا ڈالے پڑا تھا اور جو آج اسی جاپان سے جاپان میں پکے لڑائی اڈے بنانے کی بات چیت کر رہا ہے اور اس طرح فارموسا کو ہڑپ کر چین اور سارے ایشیا پر چھا جانا چاہتا ہے ؟ اگر سرکشا سمیتی امریکہ کے ہاتھ میں نہ کھیل رہی ہوتی تو اس نے کوریا کی آپسی لڑائی میں بیچ بچاؤ کرنے کے لئے گاندھی کو جنم دینے والے بھارت کو چنا ہوتا یا کوریا کے پڑوسی چین کو چنا ہوتا یا اسی طرح کا کوئی اور طریقہ نکالا ہوتا -

اے کوریا ' ہم اس سے واقف ہیں کہ اتر کوریا کا نیتا ' سین ' اور دکھن کوریا کا نیتا ' ری ' ایک دن دونوں جاپانی راج کو اکھاڑ پھینکنے کو کندھوں سے کندھا ملا کر لڑ چکے ہیں اور ماں جائے بھائیوں کی طرح رہے ہیں - ڈاکٹر ' ری نے سین سے کچھ کم تکلیفیں نہیں سہیں - ہاں ڈاکٹر ری اپنے ملک کے لئے گوریلا یدھ نہیں لڑا تھا اور ری کے پکڑے جانے کے بعد سین گوریلا بن کر جاپانیوں کا مقابلہ کرتا رہا - ہم اس سے بھی واقف ہیں کہ سین روس بھاگ گیا تھا اور روس کے ہاتھوں میں رہا اور وہیں اس نے روسی یدھ کلا کی جانکاری حاصل کی اور ری ہوائی ٹاپو میں رہا اور امریکیوں کے ہاتھوں میں کھیلتا رہا - آج وہی بڈھا ری امریکیوں کے ساتھ جوا کھیلنے میں کوریا کو داؤں پر لگاکر ہار گیا ہے جس طرح یدھشٹر دروپدی کو ہار گئے تھے - یہ کس کو نہیں معلوم کہ دروپدی کا جب چیر کھینچا جا رہا تھا یدھشٹر ایسے ہی بیٹھے تھے مانو کچھ ہو ہی نہیں رہا ؟ کیا آج امریکہ کوریا کا چیر نہیں کھینچ رہا ہے ؟ اور پھر بھی سنگمن ری یدھشٹر بنے بیٹھے ہیں کیونکہ امریکیوں سے بچن ہار بیٹھے ہیں - یہ تو ہے ' پر آج اس دنیا میں کوریا کا چیر کھنچ رہا ہے اور بڑے بڑے سمجھدار لوگ بھی نہ کچھ بولتے ہیں

और न अमरीका को रोकने की कोशिश करते हैं. द्रोपदी के चीर खींचने के वक़्त चुप्पी के नतीजे में हुआ था महाभारत और उस महाभारत का ज़िम्मेदार हम उन्हीं समझदारों को मानते हैं जो उस वक़्त चुप रहे थे. अगर यह कोरिया की लड़ाई दुनिया की बड़ी लड़ाई का रूप ले ले तो ज़िम्मेवार होंगे वह मुल्क जो चुप हैं और अमरीका के ख़िलाफ़ आवाज़ नहीं उठाते.

ऐ कोरिया, तुम्हें हम क्या कहे. तुम अपना ज़ोर लगाकर अपने चीर को खिंचने से रोक रही हो. और इसमें शक नहीं कि अनेकों मुल्कों का इकसाया अमरीका पूरा ज़ोर लगाकर भी तुम्हारा चीर खींचने के बजाय तुम्हें ही जापान की तरफ़ घसीट रहा है और जितनी तुम आगे बढ़ती हो उतना ही तुम्हारे पीछे का सारा कोरिया तुम्हारी भक्ति में डूब कर तुम्हारा जी जान से वफ़ादार होता जाता है. यह हमें मालूम है कि तुम दुनिया के किसी मुल्क के सामने गिड़गिड़ाने को तैयार नहीं हो और तुम्हारी बहादुरी इस तरह की कमज़ोरी बरदाश्त भी कैसे कर सकती है? बस, तुम तुम हो और दूसरा है तुम्हारा ईश्वर. बस उसी अल्लाह की मदद के सहारे तुम हिम्मत के साथ घिसटती हो और वह घिसटन तुम्हारी बहादुरी की वजह से जीत में बदलती जाती है. ईश्वर ने तुम्हारा मुल्क ही ऐसा बनाया है कि वहां अमरीका के बड़े बड़े हवाई जहाज़ उतर ही नहीं सकते. और अगर उतरे भी तो तुम्हारे मुल्क की ज़ोरदार हवाएँ उनके इस तरह पाँव जमने नहीं देतीं जिस तरह ज़ोर की हवा मच्छर के पाँव जमने नहीं देती. सचाई तुम्हारी तरफ़ है, धर्म तुम्हारी तरफ़ है और इस लिये ईश्वर भी तुम्हारी तरफ़ है. हम भारत वासी ईश्वर में अक़ीदा रखते हैं और उसी अक़ीदे के बल पर हम यह कह सकते हैं कि वह दुनियादार का रूप लेकर तुम्हारी मदद को आयगा और ज़रूर

اور نہ امریکہ کو روکنے کی کوشش کرتے هیں - دروپدی کے چیر کھینچنے کے وقت چپی کے نتیجہ میں ہوا تھا مہابھارت اور اس مہابھارت کا ذمہ دار هم اُن هی سمجھداروں کو مانتے هیں جو اس وقت چپ رہے تھے - اگر یہ کوریا کی لڑائی دنیا کی بڑی لڑائی کا روپ لے لے تو ذمہ دار هونگے وہ ملک جو چپ هیں اور امریکہ کے خلاف آواز نہیں اُٹھاتے -

اے کوریا ' تمہیں هم کیا کہیں - تم اپنا زور لگا کر اپنے چیر کو کھنچنے سے روک رهی هو اور اس میں شک نہیں کہ انیکوں ملکوں کا اُکسایا امریکہ پورا زور لگا کر بھی تمہارا چیر کھینچنے کے بجائے تمہیں هی جاپان کی طرف گھسیٹ رها هے اور جتنی تم آگے بڑھتی هو اُتنا هی تمہارے پیچھے کا سارا کوریا تمہاری بھکتی میں ڈوب کر تمہارا جی جان سے وفادار هوتا جاتا هے - یہ همیں معلوم هے کہ تم دنیا کے کسی ملک کے سامنے گڑ گڑانے کو تیار نہیں هو اور تمہاری بہادری اس طرح کی کمزوری برداشت بھی کیسے کر سکتی هے ؟ بس ' تم تم هو اور دوسرا هے تمہارا ایشور - بس اُسی اللہ کی مدد کے سہارے تم همت کے ساتھ گھسٹتی هو اور وہ گھسٹن تمہاری بہادری کیوجہ سے جیت میں بدلتی جاتی هے - ایشور نے تمہارا ملک هی ایسا بنایا هے کہ وهاں امریکہ کے بڑے بڑے هوائی جہاز اُتر هی نہیں سکتے - اور اگر اُتریں بھی تو تمہارے ملک کی زور دار هوائیں اُن کے اس طرح پاؤں جمنے نہیں دیتیں جس طرح زور کی هوا مچھر کے پاؤں جمنے نہیں دیتی - سچائی تمہاری طرف هے ' دھرم تمہاری طرف هے اور اس لئے ایشور بھی تمہاری طرف هے - هم بھارت واسی ایشور میں عقیدہ رکھتے هیں اور اسی عقیدے کے بل پر هم یہ کہہ سکتے هیں کہ وہ دنیا دار کا روپ لیکر تمہاری مدد کو آئیگا اور ضرور

आयगा. दुनिया के इस छोर से उस छोर तक इस कहावत से सब वाक़िफ़ हैं कि "ईश्वर उनकी मदद करता है जो अपनी मदद आप करते हैं."

दो हाथों की मुठभेड़ होकर जब ताली की आवाज़ निकलती है तो लोग चौंकते ही हैं और उस वक़्त कहने वालों का कौन मुँह रोक सकता है जब कोई दाएं हाथ की ज़्यादती कह बैठे या बाएं हाथ की ज़्यादती बता बैठे. गाली देने के बाद जब गाली देने वाले के सिर पर चपत पड़ती है तब वह चपत मारने वाले की ज़्यादती बताता ही है. और दूर से देखने वाला तो यही कहेगा कि चपत मारने वाले ने ही ज़्यादती की क्योंकि पहले उसी ने चपत जमाया और चपत खाने वाला ही मुद्दई बन कर दौड़ेगा. फिर वह चाहे चपत के बदले में सामने वाले के कितने ही चपत जमाकर लाठी उठाने के लिये मजबूर कर चुका हो. हम भारतवासी १८५७ का तजरबा अपने सिरों में रखते हैं. हमारी आज़ादी की लड़ाई को ग़दर का नाम दिया गया था. और हमारे उस बहादुरशाह बादशाह को, जिसको ईस्ट इंडिया कम्पनी का गवरनर जनरल अरज़ी देते वक़्त अपने को उसका 'फ़िदवी ए-ख़ास' लिखा करता था, बाग़ी बताया गया. जो पच्छिम वाले दूसरे के मुल्क में रह कर उसी मुल्क के आदमी और बादशाह को बाग़ी कह सकते हैं वह तुम में से किसी को ज़्यादती करने वाला (एग्रेसर) कह कर तुम्हारे मुल्क को लूटने का बहाना निकाल सकते हैं.

यह लिखते लिखते हमें ख़बर मिली है कि दक्खिन कोरिया की फ़ौजों के कमान्डर-इन-चीफ़ सौन हो सून ने सियोल से रेडियो पर दक्खिन कोरिया के सब अफ़सरों और सिपाहियों से इन शब्दों में अपील की है —

"अगर आप लोग अपनी जन्म भूमि और उसके रहने वालों को प्यार करते हैं और अगर आप में राष्ट्रीय चेतना है तो आप को चाहिये कि सिंगमन री के गिरोह और अमरीकी हमलावरों के ख़िलाफ़

آئیگا - دنیا کے اس چھور سے اُس چھور تک اس کہاوت سے سب واقف ہیں کہ "ایشور ان کی مدد کرتا ہے جو اپنی مدد آپ کرتے ہیں" -

دو ہاتھوں کی مٹھ بھیڑ ہوکر جب تالی کی آواز نکلتی ہے تو لوگ چونکتے ہی ہیں اور اس وقت کہنے والوں کا کون منھ روک سکتا ہے جب کوئی دائیں ہاتھ کی زیادتی کہہ بیٹھے یا بائیں ہاتھ کی زیادتی بتا بیٹھے - گالی دینے کے بعد جب گالی دینے والے کے سر پر چپت پڑتی ہے تب وہ چپت مارنے والے کی زیادتی بتاتا ہی ہے - اور دور سے دیکھنے والا تو یہی کہیگا کہ چپت مارنے والے نے ہی زیادتی کی کیونکہ پہلے اسی نے چپت جمایا اور چپت کھانیوالاہی مدعی بن کر دوڑیگا - پھر وہ چاہے چپت کے بدلے میں سامنے والے کے کتنے ہی چپت جما کر لاٹھی اٹھانے کے لئے مجبور کر چکا ہو - ہم بھارت واسی سن ۱۸۵۷ کا تجربہ اپنے سروں میں رکھتے ہیں - ہماری آزادی کی لڑائی کو غدر کا نام دیا گیا تھا - اور ہمارے اُس بہادر شاہ بادشاہ کو' جس کو ایسٹ انڈیا کمپنی کا گورنر جنرل عرضی دیتے وقت اپنے کو اس کا ' فدوئی خاص ' لکھا کرتا تھا ' باغی بتایا گیا - جو پچھم والے دوسرے کے ملک میں رہ کر اسی ملک کے آدمی اور بادشاہ کو باغی کہہ سکتے ہیں وہ تم میں سے کسی کو زیادتی کرنے والا (اگریسر) کہکر تمہارے ملک کو لوٹنے کا بہانہ نکال سکتے ہیں -

یہ لکھتے لکھتے ہمیں جو خبرملی ہے کہ دکھن کوریا کی فوجوں کے کمانڈر ان چیف سون ہو سون نے سیول سے ریڈیو پر دکھن کوریا کے سب افسروں اور سپاہیوں سے ان شبدوں میں اپیل کی ہے -

" اگرآپ لوگ اپنی جنم بھومی اور اس کے رہنے والوں کو پیار کرتے ہیں اور اگر آپ میں راشٹریہ چیتنا ہے تو آپ کو چاہئے کہ سنگمن ری کے گروہ اور امریکی حملہ آوروں کے خلاف

खुल कर खड़े हो जावें और जिस तरह मैंने किया है उसी तरह आप भी जनता की फ़ौज और गोरीला फ़ौज में शामिल हो जायें. मैंने जनता की एक स्वयं सेवक सेना का संगठन किया है जिसमें हज़ारों ऐसे योद्धा हैं जो सिंगमन री की कठपुतली फ़ौज से टूट कर आ गये हैं और जनता की फ़ौज और गोरीला फ़ौज में शामिल हो गये हैं. जनता की फ़ौज के साथ कंधे से कंधा मिला कर यह सब मेरी सरदारी में आगे बढ़ रहे हैं."

सुबह का भूला शाम को घर आ जाये तो भूला नहीं कहलाता.

शाबाश अपनी जन्म भूमि के लिये जान पर खेल जाने वाले कोरिया !

भगवान दीन

यह है अमरिका

हालमें कुछ समझदार अमरीकी भारत आये. यहाँसे लौट कर उन्हों ने अपने मुल्क वालों को यह बताया कि भारत वासियों का ख़याल अमरीकियों के बारे में ख़ासा बुरा है.उन्हों ने उनको यह भी बताया कि भारत वासी, उन बरतानिया वालों को, जो बरसों भारत को गुलाम बनाये रहे. इतनी बुरी नज़र से नहीं देखते जितनी बुरी नज़र से अमरीका वालों को. हम उन के इस कहने को बहुत दरजे तक ठीक समझते हैं और अपने तजरबे से इतना और जोड़ देना चाहते हैं कि दिनों दिन यह बात बढ़ती जा रही है और कोरिया की लड़ाई

کھل کر کھڑے ہو جاویں اور جس طرح میں نے کیا ہے اُسی طرح آپ بھی جنتا کی فوج اور گوریلا فوج میں شامل ہو جائیں . میں نے جنتا کی ایک سویم سیوک سینا کا سنگٹھن کیا ہے جس میں ہزاروں ایسے یودھا ہیں جو سنگمن ری کی کٹھپتلی فوج سے ٹوٹ کر آ گئے ہیں اور جنتا کی فوج اور گوریلا فوج میں شامل ہو گئے ہیں . جنتا کی فوج کے ساتھ کندھے سے کندھا ملاکر یہ سب میری سرداری میں آگے بڑھ رہے ہیں ."

صبح کا بھولا شام کو گھر آجائے تو بھولا نہیں کہلاتا .

شاباش اپنی جنم بھومی کے لئے جان پر کھیل جانے والے کوریا !

بھگوان دین

یہ ہے امریکہ

حال میں کچھ امریکی بھارت آئے . یہاں سے لوٹ کر انہوں نے اپنے ملک والوں کو یہ بتایا کہ بھارت واسیوں کا خیال امریکیوں کے بارے میں خاصا برا ہے . اُنہوں نے اُن کو یہ بھی بتایا کہ بھارت واسی' ان برطانیہ والوں کو' جو برسوں بھارت کو غلام بنائے رہے' اتنی بری نظر سے نہیں دیکھتے جتنی بری نظر سے امریکہ والوں کو . ہم اُن کے اس کہنے کو بہت درجے تک ٹھیک سمجھتے ہیں اور تجربے سے اتنا اور جوڑ دینا چاہتے ہیں کہ دنوں دن یہ بات بڑھتی جا رہی ہے . اور کوریا کی لڑائی

केबाद से तो उस में दिन दूनी रात चौगुनी तरक़्क़ी हो रही है.थोड़े से में अगर इस की वजह बताई जा सकती है तो वह यह है कि बरतानिया हमें अभी अभी आज़ाद छोड़कर गया है और इस ख़ुशी में हम बरतानिया की सब बदकारियों को भूल गये हैं. पर अमरीका पर हमें यह शक है कि वह हमें फिर ग़ुलामी में फँसाना चाहता है. हम दूध के जले हैं छाछ को फूँक फूँक कर पीते हैं. हमें बरतानिया वालों की भारत में व्योपारी बन कर आने की कहानी याद है. हमें बरतानिया से आये मिशनरियों के धर्म फैलाने की बातें ख़ूब मालूम हैं. हम बरतानिया वालों की उस कृपा से ख़ूब वाक़िफ़ हैं जो उन्होंने ने यहाँ अंगरेज़ी कालेज और यूनीवर्सिटियाँ खोलकर की थीं. क्या रेल, क्या तार, क्या अस्पताल हर नेक काम के ज़रिये ग़ुलामी की ज़ंजीरें गढ़ने की कला पच्छिम वालों को ख़ूब आती है और अमरीका तो आज इस कला में बरतानिया का हमको गुरु बना दिखाई देता है. अभी इसी महीने की बात है ट्रूमेन साहब ने अपनी चौमुखी योजना का ज़िक्र करते हुए भारत से टेहरी की मिसाल लेकर दुनिया को यह दिखाने की कोशिश की है कि भारत कितना गिरा हुआ देश है. उन्होंने यह बताया है कि टेहरी में बरसों से कितना मलेरिया फैला हुआ है और कितने हज़ार आदमी हर साल मर जाते हैं. और टेहरी में और उसके आसपास सौ से ऊपर गाँव की ज़मीन जो बहुत अच्छा नाज पैदा कर सकती है इसी मलेरिया के कारन बिना जोती बोई पड़ी है. इसके बाद उन्होंने यह बताया है कि किस तरह उनकी चौमुखी योजना से काम लेने से टेहरी वालों का कितना

(६)

کے بعد سے تو اس میں دن دوني رات چوگني ترقی ھو رھی ھے. تھوڑے سے میں اگر اس کی وجہ بتائی جا سکتی ھے تو وہ یہ ھے کہ برطانیہ ھمیں ابھي ابھی آزاد چھوڑ کر گیا ھے اور اِس خوشی میں ھم برطانیہ کی سب بدکاریوں کو بھول گئے ھیں. پر امریکہ پر ھمیں یہ شک ھے کہ وہ ھمیں پھر غلامي میں پھنسانا چاھتا ھے. ھم دودھ کے جلے ھیں. چھاچھ کو پھونک پھونک کر پیتے ھیں. ھمیں برطانیہ والوں کی بھارت میں بیوپاري بن کر آنے کی کہانی یاد ھے. ھمیں برطانیہ سے آئے مشنریوں کے دھرم پھیلانے کی باتیں خوب معلوم ھیں. ھم برطانیہ والوں کي اُس کرپا سے خوب واقف ھیں جو اُنھوں نے یہاں انگریزی کالج اور یونیورسٹیاں کھول کر کی تھیں. کیا ریل' کیا تار' کیا اسپتال ھر نیک کام کے ذریعے غلامی کی زنجیریں گڑھنے کی کلا پچھم والوں کو خوب آتي ھے اور امریکہ تو آج اس کلا میں برطانیہ کا ھم کو گرو بنا دکھائی دیتا ھے. ابھی اسی مھینے کي بات ھے ترومین صاحب نے اپنی چومکھي یوجنا کا ذکر کرتے ھوئے بھارت سے تھري کي مثال لے کر دنیا کو یہ دکھانے کی کوشش کی ھے کہ بھارت کتنا گرا ھوا دیش ھے. اُنھوں نے یہ بتایا ھے کہ تھري میں برسوں سے کتنا ملیریا پھیلا ھوا ھے اور کتنے ھزار آدمی ھر سال مر جاتے ھیں. اور تھری میں اور اُس کے آس پاس سو سے اوپر گاؤں کي زمین جو بہت اچھا ناج پیدا کر سکتي ھے اسی ملیریا کے کارن بنا جوتي بوئی پڑي ھے. اس کے بعد اُنھوں نے یہ بتایا ھے کہ کسطرح ان کی چو مکھی یوجنا میں سے ایک یوجنا سے کام لینے سے تھری والوں کا کتنا

(۶)

गिरा हुआ महाद्वीप (अनडेवलप एरियाज़ आफ़ दी वल्र्ड) बताया गया है. और अपनी चौमुखी योजना को एशिया भर में फैलाने की बात कही गई है. इस सब से तो हमें उन बरतानी चालबाज़ियों की याद आजाती है जो शुरू में हमारे भले की बताई गई थीं और बाद में हमारी ग़ुलामी का कारन बनीं.

हमें यह कहते हुए झिझक नहीं होती कि जब तक अमरीका जापान पर घेरा डाले हुए है तब तक वह हमारी नज़रों में गिरा हुआ रहेगा. चीन की सच्ची हकूमत को हकूमत मानने से इन्कार करके वह यह उम्मीद रक्खे कि भारतवासी उसे अच्छी नज़र से देखेंगे तो वह गूलर के पेड़ से फूल पाने की उम्मीद करता है. अमरीका फ़ारमूसा में अड्डे बना कर भारत से इज़्ज़त चाहता है तो वह बबूल बो कर आम पाना चाहता है. जो अमरीका बरतानिया में हवाई अड्डे बनाने की सोच रहा है वह भारत से किस दिन क्या माँग बैठे इसका क्या पता. और ऐटम बम के नाते वह कब क्या धमकी दे बैठे इसको कौन जानता है. भारत के ग़ुलाम रहते अमरीका ने जो भारत की आज़ादी हासिल करने में थोड़ी बहुत एख़लाक़ी मदद की थी क्या वह उसके दाम चुकाना चाहता है. फ़िलस्तीन में यहूदियों को बढ़ावा देने वाला अमरीका ख़ुद शाईलाक बनता जा रहा है हम भारतवासियों को ऐसा साफ़ दिखाई दे रहा है.

हम इस नोट को ज़्यादा बढ़ाना नहीं चाहते. हम यहाँ उस फ़िलिपाइन वासी के कुछ शब्द देकर ख़तम करना चाहते हैं जो मनीला टाउन हाल आर्गनाइज़ेशन का प्रेसीडेन्ट है. वह इसी जुलाई की ९ तारीख़ को मदरास के मदुरा ज़िले में एक खुली सभा में

گرا ھوا مہادیپ (ان ڈیولپ ایریاز آف دی ورلڈ) بتایا گیا ھے . اور اپنی چو مکھی یوجنا کو ایشیا بھر میں پھیلانے کی بات کہی گئی ھے . اس سب سے تو ھمیں اُن برطانی چال بازیوں کی یاد آجاتی ھے جو شروع میں ھمارے بھلے کی بتائی گئی تھیں اور بعد میں ھماری غلامی کا کارن بنیں .

ھمیں یہ کہتے ھوئے جھجھک نہیں ھوتی کہ جبتک امریکہ جاپان پر گھیرا ڈالے ھوئے ھے تب تک وہ ھماری نظروں میں گرا ھوا رھیگا . چین کی سچی حکومت کو حکومت ماننے سے انکار کرکے وہ یہ اُمید رکھے کہ بھارت واسی اُسے اچھی نظر سے دیکھیں گے تو وہ گولر کے پیڑ سے پھول پانے کی اُمید کرتا ھے . امریکہ فارموسا میں اڈے بناکر بھارت سے عزت چاھتا ھے تو وہ ببول بو کر آم پانا چاھتا ھے . جو امریکہ برطانیہ میں ھوائی اڈے بنانے کی سوچ رھا ھے وہ بھارت سے کس دن کیا مانگ بیٹھے اس کا کیا پتہ . اور ایٹم بم کے ناتے وہ کب کیا دھمکی دے بیٹھے اسکو کون جانتا ھے . بھارت کے غلام رھتے امریکہ نے جو بھارت کی آزادی حاصل کرنے میں تھوڑی بہت اِخلاقی مدد کی تھی کیا وہ اُس کے دام چکانا چاھتا ھے . فلسطین میں یہودیوں کو بڑھاوا دینے والا امریکہ خود شائلاک بنتا جا رھا ھے . ھم بھارت واسیوں کو ایسا صاف دکھائی دے رھا ھے .

ھم اس نوٹ کو زیادہ بڑھانا نہیں چاھتے . ھم یہاں اُس فلپائن واسی کے کچھ شبد دیکر اسے ختم کر دینا چاھتے ھیں جو منیلا ٹاؤن ھال آرگنائیزیشن کا پریسیڈنٹ ھے . وہ اسی جولائی کی ۹ تاریخ کو مدراس کے مدورا ضلع میں ایک کھلی سبھا میں

अमरीकियों के बारे में इस तरह बोला था—"फ़िलिपाइन राज काजी निगाह से भले ही स्वाधीन हो पर वह माली और फ़ौजी ख़याल से अमरीका की एक बस्ती है. फ़िलिपाइन की स्वाधीनता 'झूटी' स्वाधीनता है. वहाँ की नई 'जमहूरियत' की नाक तक पानी आ गया है और वह डूबने ही को है."

यह अमरीका का हाल है कि वह बरसों के ग़ुलाम उस फ़िलिपाइन को आज तक आज़ादी नहीं दे रहा है जो न अमरीका के नज़दीक है और न किसी मानी में अमरीका का हो सकता है. फ़िलिपाइन टापू चीन और जापान के बहुत पास हैं. अगर दुनिया में कोई अन्तर क़ौमी दीवानी अदालत होती तो अमरीका के ख़िलाफ़ ज़रूर हक़ शुफ़ा का दावा चलता.

यह है अमरीका—और भारत की नज़रों में ऊंचा होना चाहता है !

भगवानदीन

दुनिया की बड़ी लड़ाई

कोरिया में घरेलू लड़ाई छिड़ी. उस लड़ाई से न जाने क्यों अमरीका को यह डर लगा कि कोरिया की लड़ाई की आग सारी दुनिया में फैल जायगी और वह इतना डर गया कि उसे बुझाने की ख़ातिर वह यू० एन० ओ० के सब क़ायदों को भूल कर जापान पर ज़बरदस्ती से बैठे हुए अपने जनरल मैकार्थर को हुकुम दे बैठा कि वह एक दम कोरिया की आग बुझाने को दौड़ने के लिये तैयार हो जाय.

امریکیوں کے بارے میں اسطرح بولا تھا — "فلپائن راجکاجی نگاہ سے بھلے ھی سوادھین ھو پر وہ مالی اور فوجی خیال سے امریکہ کی ایک بستی ھے . فلپائن کی سوادھینتا 'جھوٹی' سوادھینتا ھے . وھاں کی نئی 'جمہوریت' کی ناک تک پانی آ گیا ھے اور وہ ڈوبنے ھی کو ھے ."

یہ امریکہ کا حال ھے کہ وہ برسوں کے غلام اُس فلپائن کو آج تک آزادی نہیں دے رھا ھے جو نہ امریکہ کے نزدیک ھے اور نہ کسی معنی میں امریکہ کا ھو سکتا ھے . فلپائن ٹاپو چین اور جاپان کے بہت پاس ھیں . اگر دنیا میں کوئی انٹر قومی دیوانی عدالت ھوتی تو امریکہ کے خلاف ضرور حق شفا کا دعوی چلتا .

یہ ھے امریکہ — اور بھارت کی نظروں میں اونچا ھونا چاھتا ھے !

بھگوان دین

دنیا کی بڑی لڑائی

کوریا میں گھریلو لڑائی چھڑی . اُس لڑائی سے نہ جانے کیوں امریکہ کو یہ ڈر لگا کہ کوریا کی لڑائی کی آگ ساری دنیا میں پھیل جائیگی اور وہ اتنا ڈر گیا کہ اسے بجھانے کی خاطر وہ یو . این . او . کے سب قاعدوں کو بھول کر جاپان پر زبردستی سے بیٹھے ھوئے اپنے جنرل میکارتھر کو حکم دے بیٹھا کہ وہ ایکدم کوریا کی آگ بجھانے کو دوڑنے کیلئے تیار ھوجائے ·

अमरीका को यह पता भी न चला कि वह आग बुझाने की जगह ऐसा काम कर रहा है जिस से चिंगारियाँ उड़कर हर मुल्क में गिरेंगी और कहीं भी अगर बारूद या सूखी घास हुई तो वहां भड़क उठेंगी और इस तरह दुनिया में जगह जगह आग लग जायगी. और फिर कोरिया की जगह अमरीका ख़ुद ही दुनिया की बड़ी लड़ाई का सबब बन बैठेगा.

अमरीका ने कोरिया की घरेलू लड़ाई को दुनिया की बड़ी लड़ाई बना देने में कोई कसर उठा नहीं रक्खी. उसने दुनिया भर की पंचायत, यू० यन० ओ० के सामने अपनी जल्दबाज़ी और बेजा कारवाई को ठीक ठहरवा लिया और फिर रूस की गैरहाज़िरी और एक नाजायज़ मेम्बर की हाज़िरी में एक ऐसा अहम ठहराव पास करा लिया जिस के लिये उसके साथी रूस की हाज़िरी ज़रूरी थी. यानी यह कि उत्तर कोरिया का दक्खिन कोरिया पर हमला घरेलू लड़ाई नहीं है बल्कि एक मुल्क की दूसरे मुल्क पर बेमतलब चढ़ाई या ज़बर-दस्ती है या अंगरेज़ी बोली में 'एगरेसन' है. यह सोचने की न अमरीका ने और न यू० एन० ओ० की सुरक्षा समिति के कौंसिल के किसी हाज़िर मुल्क ने परवाह की कि वह हमला जवाबी हमला भी हो सकता है. एक मुल्क कोरिया को हर तरह दो मुल्क साबित करके अमरीका ने कोरिया पर अपनी चढ़ाई को यू० यन० ओ० की की हुई 'पुलिस कारवाई' का नाम दिलवा दिया और अब यह चढ़ाई सिर्फ अमरीका की तरफ से नहीं दुनिया के उन सब मुल्कों की तरफ से बताई जायगी जो यू० एन० ओ० में शामिल हैं और उन के हुकुम से की हुई कही जायगी जो यू० एन० ओ० की सुरक्षा समिति में शामिल हैं. और फिर मारके की बात यह है कि इस कारवाई के ठीक होने के लिये जिन सब मुल्कों की हाज़िरी 'हाँ' करने के लिये ज़रूरी थी न वह हाज़िर थे और न किसी दूसरे तरीक़े से उनकी 'हाँ' हासिल की गई.

वह जनरल मेकार्थर जिसकी फ़ौजें पन्द्रह दिन से दक्खिन कोरिया में मुंह की खा रही हैं इस दुनिया भर की पुलिस के, जिसके

امریکه کو یه پته بهي نه چلا که وه آگ بجهانے کي جگه ایسا کام کر رها هے جس سے چنگاریاں اُڑ کر هر ملک میں گریں گی اور کہیں بهي اگر بارود یا سوکهی گهاس هوئی تو وهیں بهوک اُٹهینگي اور اس طرح دنیا میں جگه جگه آگ لگ جائیگی' اور پهر کوریا کی جگه امریکه خود هی دنیا کي بڑي لڑائی کا سبب بن بیٹهیگا .

امریکه نے کوریا کی گهریلو لڑائی کو دنیا کی بڑي لڑائي بنا دینے میں کوئی کسر اٹها نہیں رکهی . اس نے دنیا بهر کی پنچایت یو این او . کے سامنے اپني جلد بازی اور بیجا کاروائی کو ٹهیک ٹهہروالیا اور پهر روس کی غیر حاضری میں ایک ایسا اهم ٹهہراو پاس کرالیا جس کے لئے اس کے ساتهی روس کی حاضري ضروری تهی . یعنی یه که اُتر کوریا کا دکهن کوریا پر حمله گهریلو لڑائی نہیں بلکه ایک ملک کی دوسرے ملک پر بے مطلب چڑهائی یا زبردستی هے . یا انگریزی بولی میں ' اگریسن ' هے . یه سوچنے کی نه امریکه نے اور نه یو . این . او . کی سرکشا سمیتي کے کونسل کے کسی حاضر ملک نے پرواه کي که وه حمله جوابی حمله بهي هوسکتا هے . ایک ملک کوریا کو هر طرح دو ملک ثابت کرکے امریکه نے کوریا پر اپنی چڑهائي کو یو . این . او . کی کی هوئی ' پولیس کاروائي ' کا نام دلوا دیا . اور اب یه چڑهائي صرف امریکه کی طرف سے نہیں دنیا کے ان سب ملکوں کی طرف سے بتائی جائیگي جو یو . این . او . میں شامل هیں . اور ان کے حکم سے کی هوئی کہی جائیگی جو یو . این . او . کي سرکشا سمیتی میں شامل هیں . اور پهر معرکے کي بات یه هے که اس کاروائي کے ٹهیک هونے کے لئے جن سب ملکوں کی حاضری 'هاں' کرنے کے لئے ضروری تهی نه وه حاضر تهے اور نه کسي دوسرے طریقه سے ان کي 'هاں' حاصل کی گئی .

وه جنرل میکارتهر جس کی فوجیں پندره دن سے دکهن کوریا میں منه کي کها رهی هیں' اس دنیا بهر کي پولیس کے' جس کے

अमरीका के आज के तरीक़ों से यह साफ़ ज़ाहिर है कि वह पक्का शहंशाहीवाद है. और दुनिया की बड़ी लड़ाई खड़ी करने का इतना ही भूका है जितने हिन्दुस्तान के वह राजे रहा करते थे जिनका ज़िक्र पुरानों में आया है.

अमरीका के रास्ते में मुश्किल यह आपड़ी है कि कोरिया की घरू लड़ाई या कोरिया की आज़ादी की लड़ाई दुनिया की बड़ी लड़ाई न बन पाई. मुल्क पर मुल्क शामिल हो रहे हैं पर एक रूस के मुक्का दिखाए बग़ैर यह बड़ी सी बड़ी लड़ाई दुनिया की बड़ी लड़ाई में तब्दील नहीं हो सकती. इस मारके की बात से अमरीका को सीख लेनी चाहिये थी और दुनिया भर की जनता को समझ लेना चाहिये कि अब लोकशाही या जनता का राज किसी मुल्क में नहीं रहगया और न कोई मुल्क आज़ाद है. आज़ाद तो क्या मुल्क मुल्क भी नहीं रहे. बस अब दो मुल्क हैं. एक का नाम है नई दुनिया और दूसरी का नाम है पुरानी दुनिया. नई दुनिया के मालिक हैं ट्रूमेन और पुरानी दुनिया के मालिक हैं स्टैलिन. यह दो लड़ें तो दुनिया की बड़ी लड़ाई हो. मानो और सब मुल्क मुल्क ही नहीं हैं सब मुल्कों के लिये यह बड़ी शर्म की बात है और उन मुल्कों के लिये तो बेहद शर्म की बात है जो यू. एन. ओ. में शामिल हैं. कुछ मुल्कों को मिलकर फ़ौरन जनरल असेम्बली की मीटिंग बुलानी चाहिये या जो अभी होने वाली है उस में शामिल होकर कोई ऐसी तजवीज़ तैयार करनी चाहिये जिस से न सिर्फ़ सुरक्षा समिति क़ाबू मे रहे बल्कि वह मुल्क भी क़ाबू में रहें जिन्हें नामको 'विटो' की ताक़त मिली हुई है. अगर ऐसा न हो सके तो यू. एन. ओ. से सब ग़ैर ज़रूरी मुल्कों को इसतीफ़ा दे देना चाहिये और यू. एन. ओ. का सिर्फ़ रूस और अमरीका के हाथ में दे देना चाहिये. यह दोनों जी भर कर लड़लें. और दूसरे मुल्क इनका तमाशा देखें. लड़ाई में शामिल होने के लिये मजबूर न किये जायें.

भगवान दीन

امریکہ کے آج کے طریقوں سے یہ صاف ظاهر هے کہ وہ پکا شہنشاهي وادی هے . اور دنیا کي بڑی لڑائي کھڑی کرنے کا اتنا هي بھوکا هے جتنے هندستان کے وہ راجے رها کرتے تھے جنکا ذکر پرانوں میں آیا هے .

امریکہ کے رستے میں مشکل یہ آپڑي هے کہ کوریا کي گھریلو لڑائی یا کوریا کو آزادی کی لڑائی دنیا کی بڑی لڑائي نہ بن پائی. ملک پر ملک شامل هو رهے هیں پر ایک روس کے مکا دکھائے بغیر یہ بڑي سے بڑي لڑائی دنیا کي بڑي لڑائی میں تبدیل نہیں هوسکتی . اس معرکے کی بات سے امریکہ کو سیکھ لینی چاهئے تھي اور دنیا بھر کی جنتا کو سمجھ لینا چاهئے کہ اب لوک شاهی یا جنتا کا راج کسی ملک میں نہیں رکھا اور نہ کوئي ملک آزاد هے . آزاد تو کیا ملک ملک بھی نہیں رهے بس اب دو ملک هیں . ایک کا نام هے نئي دنیا اور دوسری کا نام هے پرانی دنیا . نئی دنیا کے مالک هیں ٹرومین اور پرانی دنیا کے مالک هیں اسٹالن . یہ دو لڑیں تو دنیا کی بڑي لڑائي هو . مانو اور سب ملک ملک هی نہیں هیں . سب ملکوں کے لئے یہ بڑی شرم کی بات هے اور ان ملکوں کے لئے تو بے حد شرم کی بات هے جو یو . این او . میں شامل هیں . کچھ ملکوں کو مل کر فوراً جنرل اسمبلي کی میٹنگ بلانی چاهئے یا جو ابھی هونےوالي هے اس میں شامل هوکر کوئی ایسی تجویز تیار کرنی چاهئے جس سے نہ صرف سرکشا سمیتی قابو میں رهے بلکہ وہ ملک بھی قابو میں رهیں جنھیں نام کی ' ویٹو ' کي طاقت ملی هوئی هے . گر ایسا نہ هوسکے تو یو . این . او . کے سب غیر ضروري ملکوں کو استعفا دے دینا چاهئے اور یو . این . او . کو صرف روس اور امریکہ کے هاتھ میں دے دینا چاهئے . یہ دونوں جی بھر کر لڑ لیں . اور دوسرے ملک ان کا تماشہ دیکھیں . لڑائی میں شامل هونے کے لئے مجبور نہ کئے جائیں .

بھگوان دین

मक़सद

(१) एक ऐसे हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(२) एकता फैलाने के लिये किताबों, अखबारों, रिसालों वग़ैरह का छापना.

(३) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफरेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस में मेल बढ़ाना

—•—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख्वाजा, वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़; गवर्निंग बाडी के प्रेसीडेन्ट - डा० भगवानदास; सेक्रेटरी पं० सुन्दरलाल;—

गवर्निंग बाडी के और मेम्बर —

डा० सय्यद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सय्यद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख्ता, श्री बी० जी० खेर, मि० एस० के० हुद्दा, पं० विशम्भर नाथ, महात्मा भगवान दीन, सेठ पूनम चन्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम प्रकाश पालीवाल.

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये.

सुन्दर लाल

सेक्रटरी हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

४८, बाई का बाग़, इलाहाबाद

नोट—सोसाइटी के नये क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है, "नया हिन्द" के जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायगा अलगसे मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ज़्यादा दाम की किताबें लेने पर एक रुपया कम करा सकेंगे.

مقصد

(۱) ایک ایسی ہندستانی کلچر بڑھانا ' پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ہندستانی شامل ہوں -

(۲) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں ' اخباروں ' رسالوں کا چھاپنا -

(۳) پڑھائی گھروں ' کتب گھروں ' سبھاؤں ' کانفرنسوں ' لکچروں سے سب دھرموں ' جاتوں ' برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا -

---

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ — مسٹر عبدالمجید خواجہ ' وائس پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس - اور ڈاکٹر عبدالحق گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ - ڈاکٹر بھگوان داس ' سکریٹری پنڈت سندرلال '

گورننگ باڈی کے اور ممبر —

ڈاکٹر سید محمود ' ڈاکٹر تاراچند مولوی سید سلیمان ندوی ' مسٹر منظر علی سوختہ ' شری بی جی کھیر ' مسٹر ایس - کے - ہودا' پنڈت بشمبھر ناتھ ' مہاتما بھگوان دین ' سیٹھ پونم چند رانکا ' قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال '

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے -

سندر لال

سکریٹری ہندستانی کلچر سوسائٹی

۴۸ بائی کا باغ ' الہ آباد

نوٹ سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کردی گئی ہے - " نیا ہند " کے جو گاہک ممبر بننا چاہیں ان کو صرف چھہ روپیہ چندہ دینے پر ہی ممبر بنالیا جائیگا - الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی ہوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ہوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ کم کرا سکینگے -

सूटकेस

(बहन राजरानी)

"अम्मू" पुकारता हुआ कृष्णन आगे बढ़ा.

'उफ, अजीब है यह अम्मू भी! कितना मना करके गया कि वहाँ से न हटना, लेकिन अम्मू जो ठहरी! न जाने मुझे परेशान करने में उसे कौन सा मजा मिलता है? इस भीड़-भाड़ में उसे कहाँ-कहाँ खोजता फिरूँ?' अपने में ही बुदबुदाता कुछ झुँझला-सा गया कृष्णन. अचानक पुल के पास वह खड़ी नज़र आ गई. लपक कर वह उसके पास गया और उस से बोला—"मालूम होता है वह नहीं आये" लेकिन अम्मू का सारा ध्यान उसकी घूरती आँखों से निकल कर एक पड़े हुए सूटकेस पर ठहर गया था.

"अम्मू!" उसकी तवज्जह अपनी ओर करने के लिये कृष्णन जरा जोर से बोला.

मगर खोई हुई अम्मू खोई ही रही. कृष्णन उसे यों ताकता रहा जैसे उसकी समझ में न आ रहा हो कि वह क्या करे.

"बाबूजी, दस आने पैसे होंगे."

"अरे, सामान भी देखता है, या पैसे ही गिनना जानता है?" माथे की गांधी टोपी उतार, रूमाल से झाड़ते हुए बोले बाबूजी.

"दो इतने बड़े-बड़े बकस, एक इतना बड़ा बिस्तर. बाबूजी, तीन जगह के क्या दस आने भी नहीं मिलेंगे?"

سوٹ کیس

(بہن راج رانی)

"اَمّو" پکارتا ہوا کرشن آگے بڑھا۔

'اُف، عجیب ہے یہ اَمّو بھی! کتنا منع کر کے گیا تھا کہ یہاں سے نہ ہٹنا، لیکن اَمّو جو ٹھہری! نہ جانے مجھے پریشان کرنے میں اُسے کون سا مزا آتا ہے؟ اس بھیڑ بھاڑ میں اُسے کہاں کہاں کھوجتا پھروں؟' اپنے میں ہی بدبداتا کچھ جھنجھلا سا گیا کرشن۔ اچانک پُل کے پاس وہ کھڑی نظر آ گئی۔ لپک کر وہ اس کے پاس گیا اور اس سے بولا "معلوم ہوتا ہے وہ نہیں آئے"، لیکن اَمّو کا سارا دھیان اس کی گھورتی آنکھوں سے نکل کر ایک پڑے ہوئے سوٹ کیس پر ٹھہر گیا تھا۔

"اَمّو!" اس کی توجہ اپنی اور کرنے کے لئے کرشن ذرا زور سے بولا۔

مگر کھوئی ہوئی اَمّو کھوئی ہی رہی۔ کرشن اُسے یوں تاکتا رہا جیسے اس کے سمجھ میں نہ آ رہا ہو کہ وہ کیا کرے۔

"بابو جی، دس آنے پیسے ہوں گے۔"

"ارے، سامان بھی دیکھتا ہے، یا پیسے ہی گننا جانتا ہے؟" ماتھے کی گاندھی ٹوپی اُتار، رومال سے جھاڑتے ہوئے بولے بابو جی۔

"دو اتنے بڑے بڑے بکس، ایک اتنا بڑا بستر۔ بابو جی، تین جگہ کے کیا دس آنے بھی نہیں ملینگے؟"

Registered No. A—210.

"गीता और क़ुरान"

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

इस किताब के शुरू में [illegible] एकता को दिखाया गया है और सब [illegible] देकर मिलती जुलती [illegible] सचाइयों को बताया [illegible]

उसके बाद गीता के लिखे जाने के वक्त का [illegible] हालत, गीता के बड़प्पन और एक एक अध्याय [illegible] तालीम को बतलाया गया है.

आख़िर में क़ुरान से पहले की अरब की हालत, क़ुरान के बड़प्पन और एक एक बात पर क़ुरान की तालीम को बयान किया गया है. इस में क़ुरान की पांच सौ से ऊपर आयतों का लफ़्ज़ी तरजुमा दिया गया है. यह भी बताया गया है कि क़ुरान में जेहाद, आक़बत, आख़ुवत, जन्नत, जहन्नम, काफ़िर वग़ैरा किसे कहा गया है.

जो लोग सब धर्मों की एकता को समझना चाहें या हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों की इन दो अमर पुस्तकों की सच्चा जानकारी हासिल करना चाहें उन्हें इस किताब को ज़रूर पढ़ना चाहिए.

किताब हिन्दुस्तानी ज़बान में, नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में अलग अलग मिल सकती है. पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बँधी किताब की कीमत सिर्फ़ ढाई रुपये. डाक ख़र्च अलग.

मैनेजर "नया हिन्द"
४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद

"گیتا اور قرآن"

لیکھک پنڈت سندر لال

اس کتاب کے شروع میں [illegible] کی ایکتا کو دکھایا گیا ہے اور [illegible] کے حوالے دے دے کر [illegible] بیان کیا گیا ہے۔ اس کے بعد [illegible] اس دیس کی حالت، [illegible] ایک ایک ادھیائے کو لے کر گیتا کی تعلیم کو بتلایا گیا ہے۔

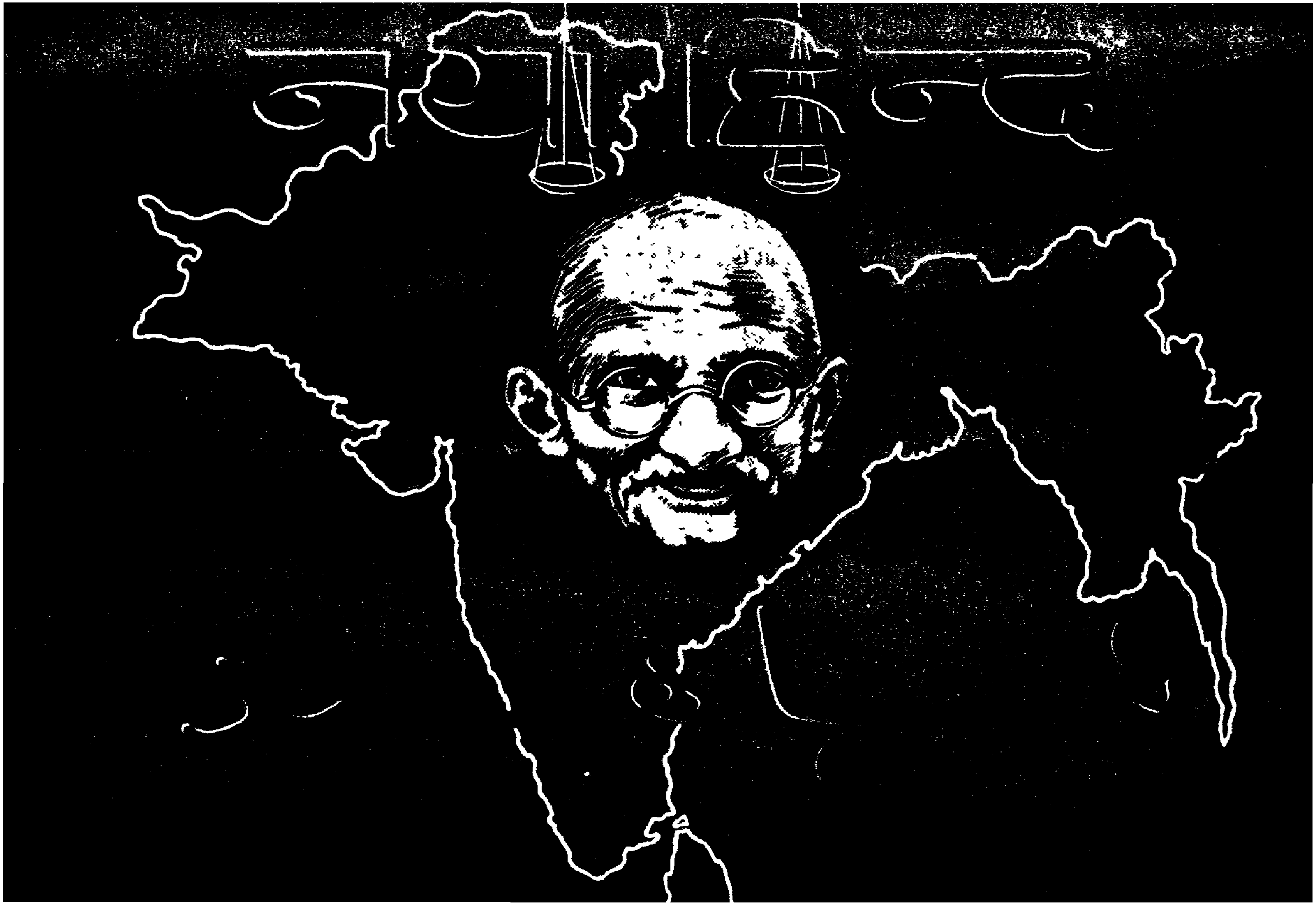
آخر میں قرآن سے پہلے عرب کی حالت، قرآن کے بڑپن اور ایک ایک بات پر قرآن کی تعلیم کو بیان کیا گیا ہے۔ اس میں قرآن کی پانچ سو سے اوپر آیتوں کا لفظی ترجمہ دیا گیا ہے۔ یہ بھی بتلایا گیا ہے کہ قرآن میں جہاد، عاقبت، آخرت، جنت، جہنم، کافر وغیرہ کسے کہا گیا ہے۔

جو لوگ سب دھرموں کی ایکتا کو سمجھنا چاہیں یا ہندو دھرم اور اسلام دونوں کی ان دو امر پستکوں کی سچی جانکاری حاصل کرنا چاہیں انہیں اس کتاب کو ضرور پڑھنا چاہئے۔

کتاب ہندوستانی زبان میں ناگری اور اردو دونوں لکھاوٹوں میں الگ الگ مل سکتی ہے۔ پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ۔ ڈاک خرچ الگ۔

منیجر 'نیا ہند'
۴۸ بائی کا باغ، الہ آباد

Printer—Bishambhar Nath, Vishwavani Press South Malaka, Allahabad
Publisher—Bishambhar Nath, for Hindustani Culture Society, 48 Bai ka Bagh, Allahabad.


जय हिन्द

“नया हिन्द”

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का परचा

एडीटर—

तारा चन्द, भगवानदीन, मुज़फ़्फ़र हसन, विश्वम्भरनाथ, सुन्दरलाल

अगस्त १९५०

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल. एक परचा दस आने.

मैनेजर
‘नया हिन्द’

३८, भाई का बाग, इलाहाबाद

" نیا ہند "

ہندستانی کلچر سوسائٹی کا پرچا

ایڈیٹر—

تاراچند ، بھگوان دین ، مظفر حسن ، بشمبھر ناتھ ، سندر لال

اگست ۱۹۵۰

قیمت — ہندستان میں چھ روپیہ سال . باہر دس روپیہ سال . ایک پرچہ دس آنے .

منیجر
'نیا ہند'

۳۸ بائی کا باغ الہ آباد .

नया हिन्द

نیا ہند

जिल्द ६ | अगस्त सन् '५० | नम्बर २

نمبر ۲ | جولائی سن ۵۰ | جلد ۹

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुंचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی' پریم دھرم ہے' ہندستانی بولی'
' نیا ہند ' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی

जी में आता है....

(भाई ' शबनम ')

जी में आता है उपवन को हर एक कली मेरी होती.
हर फूल मुझे प्यारा लगता,
हर लता मुझे प्यारी लगती,
हर चीज़ एक से एक यहाँ
इन आँखों को न्यारी लगती,

جی میں آتا ہے....

(بھائی ' شبنم ')

جی میں آتا ہے اپون کی ہر ایک کلی میری ہوتی .
ہر پھول مجھے پیارا لگتا'
ہر لتا مجھے پیاری لگتی'
ہر چیز ایک سے ایک یہاں
ان آنکھوں کو نیاری لگتی'

मन कहता है—इन कुञ्जों की हर एक गली मेरी होती.
तितली की छबि मुझको भाती,
मधुकर का गीत सुहाता है,
दिल चुपके-चुपके कोयल के
रागो में राग मिलाता है,
मन में आता है—जीवन की हर बात भली मेरी होती है.
सुन्दर फूलों के होठों को
गर मैं भी पाता चूम कहीं,
मधु पीकर इठलाता फिरना
पाता मस्ती से झूम कहीं,
या काश, रागिनी मधुकर की मेरे स्वर से निकली होती.
जी में आता है—उपवन की हर एक कली मेरी होती.

من کہتا ہے—ان کنجوں کی ہر ایک گلی میری ہوتی
تتلی کی چھب مجھکو بھاتی،
مدھوکر کا گیت سہاتا ہے،
دل چپکے چپکے کوئل کے
راگوں میں راگ ملاتا ہے،
من میں آتا ہے—جیون کی ہر بات بھلی میری ہوتی .
سندر پھولوں کے ہونٹھوں کو
گر میں بھی پاتا چوم کہیں،
مدھو پی کر اٹھلاتا پھرتا
پاتا مستی سے جھوم کہیں،
یا کاش، راگنی مدھوکر کی میرے سور سے نکلی ہوتی .
جی میں آتا ہے—اپون کی ہر ایک کلی میری ہوتی .

अमीर खुसरो

(भाई फ़रहतउल्ला अन्सारी)

अमीर खुसरो ११९३ ई० में जिला एटा के एक गाँव पटियाली में पैदा हुए. उन के पिता अमीर सैफुद्दीन एक तुर्क सरदार थे जो सुल्तान अलतमश के समय में हिन्दुस्तान आये थे. उनकी माँ इमादुल मुल्क की बेटी थीं. यह हिन्दुस्तानी थीं जिसका सबूत यह है कि खुसरो के बयान के मुताबिक़ उनका रंग काला था और उन्हें पान खाने का, जिसके मज़े से बाहर से आये हुए तुर्क और मुग़ल नावाक़िफ़ थे, बड़ा शौक़ था.

कुछ लोगों का कहना है कि अमीर खुसरो अपने पिता के साथ हिन्दुस्तान आये थे. यानी हिन्दुस्तान में पैदा नहीं हुए थे. यह वह लोग हैं जिन्हें अमीर खुसरो का हिन्दुस्तानी होना खटकता है. लेकिन अमीर खुसरो ने हिन्दुस्तान का ज़िक्र करते हुए कहा है कि मैं यहीं पैदा हुआ और मेरा वतन यही है.

आज हिन्दुस्तान को अपना वतन समझना और हिन्दुस्तानी होने पर फ़ख़ करना कोई बड़ी बात नहीं है. हालाँकि आज भी हम में से कितने हैं जो ईरान तूरान से नाते जोड़ा करते हैं और अपने नाम के साथ बाहरी शहरों के नाम लिखते रहते हैं. पर जिस मुसलमान ने आज से सात साढ़े सात सौ बरस पहले अपने को हिन्दुस्तानी कहा उसका वतनियत यानी राष्ट्रीता का जज़बा ज़रूर

امیر خسرو

(بھائی فرحت اللہ 'انصاری')

امیر خسرو سن ۱۱۹۳ع میں ضلع ایٹہ کے ایک چھوٹے سے گاؤں پٹیالی میں پیدا ہوئے ۔ ان کے پتا امیر سیف الدین ایک ترک سردار تھے جو سلطان التمش کے سمے میں ہندستان آئے تھے ۔ ان کی ماں عمادالملک کی بیٹی تھیں ۔ یہ ہندستانی تھیں جس کا ثبوت یہ ہے کہ خسرو کے بیان کے مطابق ان کا رنگ کالا تھا اور انھیں پان کھانے کا جس کے مزے سے باہر سے آئے ہوئے ترک اور مغل نا واقف تھے' بڑا شوق تھا ۔

کچھ لوگوں کا کہنا ہے کہ امیر خسرو اپنے پتا کے ساتھ ہندستان آئے تھے ۔ یعنی ہندستان میں پیدا نہیں ہوئے تھے ۔ یہ وہ لوگ ہیں جنھیں امیر خسرو کا ہندستانی ہونا کھٹکتا ہے ۔ لیکن امیر خسرو نے ہندستان کا ذکر کرتے ہوئے کہا ہے کہ میں یہیں پیدا ہوا اور میرا وطن یہی ہے ۔

آج ہندستان کو اپنا وطن سمجھنا اور ہندستانی ہونے پر فخر کرنا کوئی بڑی بات نہیں ہے ۔ حالانکہ آج بھی ہم میں سے کتنے ہیں جو ایران توران سے ناتے جوڑا کرتے ہیں اور اپنے نام کے ساتھ باہری شہروں کے نام لکھتے رہتے ہیں ۔ پر جس مسلمان نے آج سے سات ساڑھے سات سو برس پہلے اپنے کو ہندستانی کہا اس کا وطنیت یعنی راشٹریتا کا جذبہ ضرور

क़ाबिले क़द्र है. ख़ुसरो की एक पीढ़ी भी मुशकिल ही से हिन्दुस्तान में गुज़री थी कि उन्हों ने हिन्दुस्तान की बड़ाई भाँप ली और हिन्दुस्तानी बन गये. ऐसी ही सूझ बूझ वालों के लिये एक़बाल ने कहा है :—

हज़ारों साल नरगिस अपनी बे नूरी पे रोती है
बड़ी मुशकिल से होता है चमन में दीदा वर पैदा

मैंने ख़ुसरो के साथ एक़बाल का नाम सिर्फ़ इसलिये लिया है कि इस ज़माने में एक़बाल अकेला वह शायर है जिसने ब्रह्मन बच्चा होने पर फ़ख़्र किया है और आम मुसलमानों की तरह अपना सिलसिला मक्के मदीने से नहीं जोड़ा है. एक इस बात के अलावा ख़ुसरो और एक़बाल में कोई बात मिलती जुलती नहीं है. ख़ुसरो का वतन वह ज़मीन थी जिसने उनको जन्म दिया. एक़बाल के यहाँ वतन कोई चीज़ ही नहीं है. शुरू में ज़रूर एक़बाल ने वतन का गीत गाया है और कहा है कि "सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा" मगर थोड़े ही दिन बाद वह ऐसे फ़लसफ़े की असर में आगए जिसके बाद से वह इंसानों को भेड़ों और भेड़ियों में बाँटने लगे.

ख़ैर, ख़ुसरो हों या एक़बाल हर शख़्स अपने माहौल (वातावरन) की गोद में पलता है और बढ़ता है. ख़ुसरो ने हिन्दुस्तान में ऐसे ज़माने में आँख खोली जब यहाँ दो तहज़ीबें मिल रही थीं. वह ऐसे माँ बाप से पैदा हुए जिन में से एक की ज़बान तुर्की थी और दूसरे की ज़बान हिन्दी. ऐसे नाना के हाथों पाले गये थे जिनका हिन्दू राजाओं से बड़ा मेल जोल था. ख़ुसरो लिखते हैं कि उनका इतना असर था कि बड़े से बड़ा सरकश

قابل قدر ہے . خسرو کی ایک پیڑھی بھی مشکل ہی سے هندستان میں گذری تھی کہ انہوں نے هندستان کی بڑائی بھانپ لی اور هندستانی بن گئے . ایسی ہی سوجھ بوجھ والوں کے لئے اقبال نے کہا ہے :—

ہزاروں سال نرگس اپنی بے نوری پہ روتی ہے
بڑی مشکل سے ہوتا ہے چمن میں دیدہ ور پیدا

میں نے خسرو کے ساتھ اقبال کا نام اس لئے لیا ہے کہ اس زمانہ میں اقبال اکیلا وہ شاعر ہے جس نے برہمن بچہ ہونے پر فخر کیا ہے اور عام مسلمانوں کی طرح اپنا سلسلہ مکہ مدینہ سے نہیں جوڑا ہے . ایک اس بات کے علاوہ خسرو اور اقبال میں کوئی بات ملتی جلتی نہیں ہے . خسرو کا وطن وہ زمین تھی جس نے ان کو جنم دیا . اقبال کے یہاں وطن کوئی چیز ہی نہیں ہے . شروع میں ضرور اقبال نے وطن کا گیت گایا ہے اور کہا ہے کہ " سارے جہاں سے اچھا هندوستاں ہمارا " مگر تھوڑے ہی دن بعد وہ ایسے فلسفے کے اثر میں آگئے جس کے بعد سے وہ انسانوں کو بھیڑوں اور بھیڑیوں میں بانٹنے لگے .

خیر، خسرو ہوں یا اقبال ہر شخص اپنے ماحول (واتاورن) کی گود میں پلتا ہے اور بڑھتا ہے . خسرو نے هندستان میں ایسے زمانے میں آنکھ کھولی جب یہاں دو تہذیبیں مل رہی تھیں . وہ ایسے ماں باپ سے پیدا ہوئے جن میں سے ایک کی زبان ترکی تھی اور دوسرے کی زبان هندی . ایسے نانا کے ہاتھوں پالے گئے تھے جن کا هندو راجاؤں سے بڑا میل جول تھا . خسرو لکھتے ہیں کہ اُن کا اتنا اثر تھا کہ بڑے سے بڑا سرکش

राजा भी, जहाँ इमादुल मुल्क उसके पास पहुंचे, यार हो जाता. उनके घर के तौर तरीक़ों मे हिन्दुस्तानी तहज़ीब का अच्छा ख़ासा मेल था. यह इसी बात से जाहिर है कि इमादुल मुल्क की महफ़िल में पान के दौर चला करते थे.

बचपने में बाप का मर जाना आम तौर से लड़के के लिये एक बड़ी मुसीबत होता है. लेकिन ख़ुसरो के हक़ में शायद यह अच्छा ही हुआ. इसलिये कि उनके बाप जिन्दा रहते तो शायद ख़ुसरो को अपने नाना की तरफ़ से इतनी शिक्षा दीक्षा न मिलती और वह ख़ुद एक सिपाही पेशा होने के कारन अपने बेटे पर इतना ध्यान न दे पाते जितना ध्यान इमादुउल मुल्क दे सके. जो भी हो, ख़ुसरो के पिता एक काम कर ही गये थे. वह यह कि उन्होंने बचपने ही में ख़ुसरो को हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया का मुरीद करा दिया था. यह वही बुज़ुर्ग हैं जिनके एक चेले हज़रत बख़्तियार काकी के मज़ार पर महात्मा गांधी ने उर्स कराया था. बड़े होने के बाद ख़ुसरो हज़रत निज़ामुद्दीन के फिर से मुरीद हुए. कुछ लोगों का विचार है कि हज़रत निज़ामुद्दीन की रूहानी कृपा बचपने से ही ख़ुसरो की हिदायत करती रही. ख़ैर, यह तो अपने अपने विश्वास की बात है. हाँ इतना ज़रूर है कि यह सूफ़ी मत ही की करामात थी जिसने ख़ुसरो को रंग और नसल के झगड़ों और मस्जिद व मन्दिर की भूल भुलैयों में न पड़ने दिया और उन्हें प्रेम पुजारी बना दिया, जिसका विश्वास था कि हर इंसान से प्रेम करना चाहिये और हर मज़हब की इज़्ज़त करनी चाहिये.

راجه بهی ' جهاں عمادالملک اُس کے پاس پهونچے ' یار هو جاتا . ان کے گهر کے طور طریقوں میں هندستانی تہذیب کا اچها خاصه میل تها . یه اسی بات سے ظاهر هے که عمادالملک کی محفل میں پان کے دور چلا کرتے تهے .

بچپنے میں باپ کا مر جانا عام طور سے لڑکے کے لئے ایک بڑی مصیبت هوتا هے . لیکن خسرو کے حق میں شاید یه اچها هی هوا . اس لئے که ان کے باپ زندہ رهتے تو شاید خسرو کو اپنے نانا کی طرف سے اتنی شکشا دیکشا نه ملتی اور وہ خود ایک سپاهی پیشه هونے کے کارن اپنے بیٹے پر اتنا دهیان نه دے پاتے جتنا دهیان عمادالملک دے سکے . جو بهی هو' خسرو کے پتا ایک کام کر هی گئے تهے . وہ یه که انهوں نے بچپنے هی میں خسرو کو حضرت نظام الدین اولیا کا مرید کرا دیا تها . یه وهی بزرگ هیں جن کے ایک چیلے حضرت بختیار کاکی کے مزار پر مهاتما گاندهی نے عرس کرایا تها . بڑے هونے کے بعد خسرو حضرت نظام الدین کے پهر سے مرید هوئے . کچه لوگوں کا وچار هے که حضرت نظام الدین کی روحانی کرپا بچپنے سے هی خسرو کی هدایت کرتی رهی . خیر' یه تو اپنے اپنے وشواس کی بات هے هاں اتنا ضرور هے که یه صوفی مت کی هی کرامات تهی جس نے خسرو کو رنگ اور نسل کے جهگڑوں اور مسجد و مندر کی بهول بهلیوں میں نه پڑنے دیا اور انهیں پریم پجاری بنا دیا' جس کا وشواس تها که هر انسان سے پریم کرنا چاهئے اور هر مذهب کی عزت کرنی چاهئے .

तसव्वुफ़ उस समय में फ़ारसी शायरी की एक आम रीत थी. वह तमाम शायर जिनको ख़ुसरो ने पढ़ा या जिन से उनका मुक़ाबला हुआ तसव्वुफ़ के रंग में डूबे हुए थे. यह रीत कैसे पड़ी, इसके बारे में अल्लामा शिबली लिखते हैं कि जब चंगेज़ ख़ाँ ने सन् ११९८ ई० में तातार से निकल कर ख़ुरासान से शाम तक जितने राज महल थे सब के चराग़ ठन्डे कर दिये तो इसका असर यह हुआ कि मुसलमानों में एक आम सुस्ती पैदा हो गई. उनके दिल बुझ गये. जब कभी कोई ज़बरदस्त आफ़त आती है, वह चाहे हमले की शकल में हो चाहे भूचाल या तूफ़ान की शकल में, तो इन्सान ख़ुदा की तरफ़ दौड़ता है. इसलिये मुसलमानों की दुनिया में भी सब अल्लाह अल्लाह करने लगे. शायरी पर इसका यह असर हुआ कि जहाँ बहादुरी के गीत गाये जाते थे वहाँ तसव्वुफ़ के गीत गाये जाने लगे और चूंकि मुसलमानों की उजड़ी हुई बस्तियाँ फिर जल्दी से बस गईं इसलिये तसव्वुफ़ की महफ़िल जमती ही चली गई. ग़रज़ जब ख़ुसरो ने शायरी शुरू की तो हर तरफ़ तसव्वुफ़ का ही चर्चा था. उन्हों ने भी उसी साज़ में अपनी आवाज़ मिलाई और प्रेम व प्रीत के ऐसे गीत गाये कि ईरान ने भी हिन्दुस्तान का सिक्का मान लिया

यह सिर्फ़ बढ़ावे चढ़ावे की बात नहीं है बल्कि सच है कि ईरान ने अगर फ़ारसी के किसी हिन्दुस्तानी शायर को माना है तो वह सिर्फ़ ख़ुसरो हैं. और कैसे न मानता ? इसलिये कि उस ज़माने में बल्कि उससे पहले भी ईरान में जितने शायर हुए थे वह सब के

تصوف اس سمے میں فارسی شاعری کی ایک عام ریت تھی . وہ تمام شاعر جن کو خسرو نے پڑھا یا جن سے اُن کا مقابلہ ہوا تصوف کے رنگ میں ڈوبے ہوئے تھے . یہ ریت کیسے پڑی ' اس کے بارے میں علامہ شبلی لکھتے ھیں کہ جب چنگیز خاں نے سن ۱۱۹۸ع میں تاتار سے نکل کر خراسان سے شام تک جتنے راج محل تھے سب کے چراغ ٹھنڈے کر دئے تو اس کا اثر یہ ہوا کہ مسلمانوں میں ایک عام سستی پیدا ہو گئی . ان کے دل بجھ گئے . جب کبھی کوئی زبردست آفت آتی ھے وہ چاھے حملے کی شکل میں ہو چاھے بھونچال یا طوفان کی شکل میں تو انسان یاد کی طرف دوڑتا ھے . اس لئے مسلمانوں کی دنیا میں بھی سب اللہ اللہ کرنے لگے . شاعری پر اس کا یہ اثر ہوا کہ جہاں بہادری کے گیت گائے جاتے تھے وہاں تصوف کے گیت گائے جانے لگے اور چونکہ مسلمانوں کی اجڑی ہوئی بستیاں پھر جلدی سے بس گئیں اس لئے تصوف کی محفل جمتی ہی چلی گئی . غرض جب خسرو نے شاعری شروع کی تو ہر طرف تصوف ہی کا چرچا تھا . انہوں نے بھی اُسی ساز میں اپنی آواز ملائی اور پریم و پریت کے ایسے گیت گائے کہ ایران نے بھی ھندستان کا سکہ مان لیا .

یہ صرف بڑھاوے چڑھاوے کی بات نہیں ھے بلکہ سچ ھے کہ ایران نے اگر فارسی کے کسی ھندستانی شاعر کو مانا ھے تو وہ صرف خسرو ھیں . اور کیسے نہ مانتا ؟ اس لئے کہ اس زمانے میں بلکہ اس سے پہلے بھی ایران میں جتنے شاعر ہوئے تھے وہ سب کے سب

ग़ज़ल भी अच्छी कहे, क़सीदा भी अच्छा कहे, हिन्दुस्तान ही ने पैदा किया और वह खुसरो थे. यह इसलिये और भी फ़ख्र की बात है कि फ़ारसी खुसरो की अपनी ज़बान नहीं थी. उनकी ज़बान तुर्की थी या हिन्दी. फिर भी खुसरो ने फ़ारसी शायरी में वह कमाल हासिल किया कि हाफ़िज़ शीराज़ी और शेख़ सादी ने भी, जो फ़ारसीके अहले ज़बान थे, उनकी तारीफ़ की. कहा जाता है कि एक बार शेख़ सादी खुसरो से मिलने देहली आये. यह बात सही हो या न हो मगर यह बात ज़रूर तारीख़ से साबित है कि जब सुलतान शहीद (बलबन के बड़े लड़के) ने शेख़ सादी को हिन्दुस्तान आने की दावत दी तो उन्होंने अपने बुढ़ापे का उज्र करते हुए सुलतान शहीद को यह लिखा कि जिस दरबार में खुसरो मौजूद हो उसे किसी और की क्या ज़रूरत है. उस ज़माने में खुसरो की उमर सिर्फ़ ३२ साल थी और शेख़ सादी की उमर ८२ साल.

खुसरो के सम्बन्ध में दूसरी बात यह है कि उन्हों ने यह तो कहा है कि न उन्हें फ़ारसी आती है न हिन्दी आती है जैसे आइना की पहेली में खुसरो कहते हैं "फ़ारसी बोली आइ ना. तुर्की सोची पाई ना. हिन्दी बोले आरसी आये. मुहँ देखे जो इसे बताये" मगर दूसरे शायरों की तरह यह रोना कभी नहीं रोया है कि हिन्दी में क्या है, शायरी के लिये तो बस फ़ारसी भाषा ठीक है. ग़ालिब तक फ़ारसीकी बड़ाई करते रहे हैं और अपनी ज़बान को घटिया समझते रहे हैं. पर खुसरो में इस तरह का अपने छोटे होने का भाव ज़रा भी नहीं था. वह यह हौसला रखते थे कि फ़ारसी में भी कहें तो ऐसा कहें कि हिन्द की फ़ारसी ईरान के दर्जे को पहुँच जाये. इसलिये

غزل بھی اچھی کہے' قصیدہ بھی اچھا کہے' ہندستان ہی نے پیدا کیا اور وہ خسرو تھے. یہ اس لئے اور بھی فخر کی بات ہے کہ فارسی خسرو کی اپنی زبان نہیں تھی. ان کی زبان ترکی تھی یا ہندی. پھر بھی خسرو نے فارسی شاعری میں وہ کمال حاصل کیا کہ حافظ شیرازی اور شیخ سعدی نے بھی' جو فارسی کے اہل زبان تھے' ان کی تعریف کی. کہا جاتا ہے کہ ایک بار شیخ سعدی خسرو سے ملنے دہلی آئے. یہ صحیح ہو یا نہ ہو مگر یہ بات ضرور تاریخ سے ثابت ہے کہ جب سلطان شہید (بلبن کے بڑے بیٹے) نے شیخ سعدی کو ہندستان آنے کی دعوت دی تھی تو اُنہوں نے اپنے بڑھاپے کا عذر کرتے ہوئے سلطان شہید کو یہ لکھا کہ جس دربار میں خسرو موجود ہوں اسے کسی اور کی کیا ضرورت ہے. اُس زمانہ میں خسرو کی عمر صرف ۳۲ سال تھی اور شیخ سعدی کی عمر ۸۲ سال.

خسرو کے سمبندھ میں دوسری بات یہ ہے کہ اُنہوں نے یہ تو کہا ہے کہ نہ اُنہیں فارسی آتی ہے نہ ہندی آتی ہے جیسے آئینہ کی پہیلی میں خسرو کہتے ہیں " فارسی بولی آئی نا' ترکی سوچی پائی نا. ہندی بولے آرسی آئے' منہ دیکھے جو اسے بتائے " مگر دوسرے شاعروں کی طرح یہ رونا کبھی نہیں رویا ہے کہ ہندی میں کیا ہے' شاعری کے لئے تو بس فارسی بھاشا ٹھیک ہے. غالب تک فارسی کی بڑائی کرتے رہے ہیں اور اپنی زبان کو گھٹیا سمجھتے رہے ہیں پر خسرو میں اس طرح کا اپنے چھوٹے ہونے کا بھاؤ ذرا بھی نہیں تھا. وہ یہ حوصلہ رکھتے تھے کہ فارسی میں بھی کہیں تو ایسا کہ ہند کی فارسی ایران کے درجے کو پہونچ جائے. اسلئے

"अरे, उस सूटकेस में कुछ है भी, या अदद ही शुमार किय आते हो?" टोपी को सर पर ठीक करते हुए बाबूजी बोले.

कुली ने सूटकेस उठाकर देखा, तो सचमुच वह खाली था. उस अपनी नादानी पर कुछ झेंप सी आ गई. वह आँखें झपकाता बोला.

"अच्छा, बाबूजी, छै आने ही दीजियेगा."

"अच्छा, चल उठा. बिस्तर और यह बकस तू ले. यह सूटकेस मैं खुद ले चलूंगा." कह कर बाबूजी ने वह सूटकेस उठा लिया.

अब कहीं अम्मू की आँखों का सपना टूटा. उसकी उठी पलकें झुक गईं. उसने ब्लाउज़ की आस्तीन से रूमाल निकाल कर भीगी आँखें पोछीं. फिर कृष्णन की ओर देख कर कहा—"वह आये?"

"नहीं," कृष्णन ने जवाब दिया.

"अच्छा, सुनिये! जरा...देखिये न वह...वह जो सूटकेस लटकाये जा रहे हैं न! उनका पता मालूम कर लीजिये!" अम्मू ने कहा.

कृष्णन उधर लपका, तो अम्मू भी होंठ चबाती न जाने क्या सोचती उसके पीछे हो ली.

(२)

"आइये, आइये! बैठिये!" सेठ जी ने सामने कोचों की ओर इशारा कर के कहा.

कृष्णन और अम्मू बैठ गये, तो सेठजी ने कहा—"आप..."

"जी मेरा नाम कृष्णन है. यहाँ सेक्रेटैरियेट में काम करता हूँ. और यह मेरी पत्नी हैं. आप डाक्टर राजन को जानते हैं न?"

"ارے، اس سوٹ کیس میں کچھ ہے بھی، یا عدد ہی شمار کئے جاتے ہو؟" ٹوپی کو سر پر ٹھیک کرتے ہوئے بابو جی بولے.

قلی نے سوٹ کیس اٹھا کر دیکھا، تو سچ مچ وہ خالی تھا۔ اُسے اپنی نادانی پر کچھ جھینپ سی آ گئی۔ وہ آنکھیں جھپکاتا بولا۔

"اچھا، بابو جی، چھ آنے ہی دیجئے گا۔"

"اچھا، چل اُٹھا۔ بستر اور بکس تو لے۔ یہ سوٹ کیس میں خود لے چلوں گا." کہہ کر بابو جی نے وہ سوٹ کیس اٹھا لیا۔

اب کہیں اَمّو کی آنکھوں کا سپنا ٹوٹا۔ اس کی اُٹھی پلکیں جھک گئیں۔ اس نے بلاؤز کی آستین سے رومال نکال کر بھیگی آنکھیں پونچھیں۔ پھر کرشنن کی اور دیکھ کر کہا— "وہ آئے؟"

"نہیں،" کرشنن نے جواب دیا۔

"اچھا، سُنئے! ذرا...... دیکھئے نا وہ...... وہ جو سوٹ کیس لٹکائے جا رہے ہیں نا! اُن کا پتہ معلوم کر لیجئے!" اَمّو نے کہا

کرشنن ادھر لپکا، تو اَمّو بھی ہونٹ چباتی نہ جانے کیا سوچتی اس کے پیچھے ہو لی۔

(۲)

"آئیے، آئیے! بیٹھئے!" سیٹھ جی نے سامنے کوچوں کی اُور اشارہ کر کے کہا۔

کرشنن اور اَمّو بیٹھ گئے، تو سیٹھ جی نے کہا— "آپ...."

"جی میرا نام کرشنن ہے۔ یہاں سکریٹریٹ میں کام کرتا ہوں۔ اور یہ میری پتنی ہیں۔ آپ ڈاکٹر راجن کو جانتے ہیں نا؟"

ऐसा ही हुआ. उन्होंने फ़ारसी में कविता कह कर अपनी इज़्ज़त नहीं बढ़ाई बल्कि फ़ारसी में चार चाँद लगा दिये

हाँ, तो खुसरो ऐसे समय में पैदा हुए जब यहाँ अलग अलग तहज़ीबों का मेल हो रहा था. तुर्की से तुर्क आरहे थे तो ईरान से ईरानी और अफ़ग़ानिस्तान से अफ़ग़ानी. इन में से बाकमाल लोगों के हिन्दुस्तान आने का एक बड़ा कारन यह भी था कि उस ज़माने मे दिल्ली ही एक ऐसी जगह थी जहाँ सब गुनियों और विद्वानों को शरन मिल सकती थी. बाक़ी सब जगहें तातारियों के ख़तरे में घिरी हुई थीं. खुसरो ने वह तमाम इल्म व फ़न (विद्या और कला) हासिल करने की कोशिश की जो यहाँ जमा हो गये थे. यहाँ तक कि वह हिन्दुस्तानी विद्यायें भी जो मज़हब की निगाह से दुरुस्त नहीं थीं जैसे संगीत, जादू, तिलिस्म और ज्योतिष विद्या भी खुसरो ने सीखी. ज़बानों में तो शायद ही कोई ज़बान हो जो खुसरो ने न सीखी हो. फ़ारसी के तो वह माहिर ही थे पर संस्कृत, तुर्की और हिन्दुस्तान के कुछ सूबों की ज़बानें भी जानते थे. हाँ अरबी ज़्यादा नहीं जानते थे. इस लिये एक मौक़े पर उन्होंने अपने एक फ़ारसी शेर में कहा है :—

"मैं हिन्दुस्तानी तुर्क हूँ और हिन्दुस्तानी में जवाब देता हूँ. अरबी नहीं जानता कि अरब से बात कर सकूँ"

संस्कृत के बारे में खुसरो लिखते हैं कि "संस्कृत अरबी से घट कर है और फ़ारसी से बढ़ कर है"

इन सब ज़बानों को जानने से ज़्यादा अचरज की बात यह है कि खुसरो हिसाब भी जानते थे और उन तमाम मज़हबी व समाजी

ایسا هی هوا . انهوں نے فارسي میں کویتا کهکر اپني عزت نہیں بڑهائی بلکه فارسي میں چار چاند لگا دئے .

هاں' خسرو ایسے سمے میں پیدا هوے جب یہاں الگ الگ تہذیبوں کا میل هو رها تها . ترکی سے ترک آرهے تهے تو ایران سے ایراني اور افغانستان سے افغاني . ان میں سے با کمال لوگوں کے هندستان آنے کا ایک بڑا کارن یه بهی تها که اُس زمانے میں دلي هی ایک ایسی جگه تهي جہاں سب گنیوں اور ودوانوں کو شرن مل سکتي تهی . باقي سب جگہیں تاتاریوں کے خطرے میں گهري هوئي تهیں . خسرو نے وه تمام علم و فن (ودیا اور کلا) حاصل کرنے کی کوشش کي جو یہاں جمع هو گئے تهے . یہاں تک که وه هندستاني ودیائیں بهي جو مذهب کي نگاه سے درست نہیں تهیں جیسے سنگیت' جادو' طلسم اور جیوتش ودیا بهي خسرو نے سیکهیں . زبانوں میں تو شاید هي کوئی زبان هو جو خسرو نے نه سیکهي هو . فارسي کے تو وه ماهر هی تهے پر سنسکرت' ترکی اور هندستان کے کچه صوبوں کي زبانیں بهی جانتے تهے . هاں عربی زیاده نہیں جانتے تهے . اس لئے ایک موقع پر اُنهوں نے اپنے ایک فارسی شعر میں کہا هے :—

"میں هندستاني ترک هوں اور هندستانی میں جواب دیتا هوں . عربی نہیں جانتا که عرب بات کر سکوں ."

سنسکرت کے بارے میں خسرو لکهتے هیں که "سنسکرت عربی سے گهٹ کر هے اور فارسي سے بڑه کر هے ."

ان سب زبانوں کو جاننے سے زیاده اچرج کي بات یه هے که خسرو حساب بهی جانتے تهے اور ان تمام مذهبی و سماجي

बातों से अच्छी तरह वाकिफ़ थे जो उन ज़माने में हिन्दुस्तान में चालू थीं. खुसरो ने कुछ गीत ऐसे कहे हैं जिनमें मूर्तियों पर बलिदान चढ़ाने की रस्मों को इस तरह बाँधा है और उन से इस तरह नसीहतें की हैं कि जब तक कोई दोनों धर्मों की पूरी जानकारी न रखता हो, उसको समझ ही नहीं सकता. यह गीत, जो देखने में मूर्ति पूजा की बातें हैं, हज़रत निज़ामुद्दीन की महफ़िलों में गाये जाते थे और सुनने वाले उन पर सर धुनते थे.

मज़हबी रस्म रिवाज की जानकारी से ज्यादा अचम्भे की बात ख़ुसरो का आम तबक़ों से मेल जोल और उनके समाजी रसम रिवाज की जानकारी है. खुसरो का हिन्दी कलाम देखने से मालूम होता है कि एक ऐसा आदमी कह रहा है जिसकी एक नहीं कितनी पीढ़ियाँ इन ही रसमों में बीत गई हैं और वह उन्हें जानता ही नहीं है बल्कि चाहता भी है. हालांकि ख़ुसरो अमीर के घर पैदा हुए, अमीर घराने में पले और अमीरों ही में रहे. यह बातें ज़ाहिर करती हैं कि सूफ़ी मत का और अपने पीर हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया का उनपर कितना गहरा प्रभाव पड़ा. खीर, चरखा, कुत्ता और ढोल वाला किस्सा सिर्फ़ इस बात का सबूत नहीं है कि ख़ुसरो कितने हाज़िर जवाब थे बल्कि इस बात का भी सबूत है कि वह अमीर कहलाने के बावजूद एक ऐसे फ़क़ीर थे जिन्हें सब मानते थे. कहते हैं कि कुछ औरतें पनघट पर पानी भर रही थीं. उधर से ख़ुसरो गुज़रे और पानी पीने के ख़याल से कुएँ की तरफ़ बढ़े. औरतों ने ख़ुसरो को आते देखा तो ख़ुश हो कर आपस में कहने लगीं "खुसरो आवत हैं, खुसरो आवत हैं" ख़ुसरो ने क़रीब

باتوں سے اچھی طرح واقف تھے جو اس زمانے میں ہندستان میں چالو تھیں . خسرو نے کچھ گیت ایسے کہے ہیں جن میں مورتیوں پر بلیدان چڑھانے کی رسموں کو اس طرح باندھا ہے اور ان سے اسطرح نصیحتیں کی ہیں کہ جب تک کوئی دونوں دھرموں کی پوری جانکاری نہ رکھتا ہو، اس کو سمجھ ہی نہیں سکتا . یہ گیت، جو دیکھنے میں مورتی پوجا کی باتیں ہیں حضرت نظام الدین کی محفلوں میں گائے جاتے تھے اور سننے والے ان پر سر دھنتے تھے .

مذہبی رسم رواج کی جانکاری سے زیادہ اچنبھے کی بات خسرو کا عام طبقوں سے میل جول اور ان کے سماجی رسم رواج کی جانکاری ہے . خسرو کا ہندی کلام دیکھنے سے معلوم ہوتا ہے کہ ایک ایسا آدمی کہہ رہا ہے جس کی ایک نہیں کتنی پیڑھیاں ان ہی رسموں میں بیت گئی ہیں اور وہ انہیں جانتا ہی نہیں ہے بلکہ چاہتا بھی ہے . حالانکہ خسرو امیر کے گھر پیدا ہوئے، امیر گھرانے میں پلے اور امیروں ہی میں رہے . یہ باتیں ظاہر کرتی ہیں کہ صوفی مت کا اور اپنے پیر حضرت نظام الدین اولیا کا اُن پر کتنا گہرا پربھاؤ پڑا . کھیر، چرخہ، کتا اور ڈھول والا قصہ صرف اس بات کا ثبوت نہیں ہے کہ خسرو کتنے حاضر جواب تھے بلکہ اس بات کا بھی ثبوت ہے کہ وہ امیر کہلانے کے باوجود ایک ایسے فقیر تھے جنہیں سب مانتے تھے . کہتے ہیں کہ کچھ عورتیں پنگھٹ پر پانی بھر رہی تھیں . اُدھر سے خسرو گذرے اور پانی پینے کے خیال سے کنویں کی طرف بڑھے . عورتوں نے خسرو کو آتے دیکھا تو خوش ہوکر آپس میں کہنے لگیں "کھسرو آوت ہیں، کھسرو آوت ہیں ." خسرو نے قریب

पहुँच कर कहा, ज़रा पानी पिला दो. एक औरत बोली. काहे पिलावें कुछ कहो तो पिलावें ख़ुसरोने कहा कि क्या कहें ? एक बोली. चरखे पर कहो. दूसरी बोली. खीर पर कहो. तीसरी बोली. ढोल पर कहो. ख़ुसरोने फ़ौरन कहा, "खीर पकाई जतन से चरखा दिया जला. कुत्ता आया खा गया, तू बैठी ढोल बजा. ला पानी पिला."

शाही दरबार में उठना बैठना और पनिहारिनों और भटियारिनों तक में इतना मक़बूल (सर्व प्रिय) होना कि वह बे तकल्लुफ़ी से फ़रमायश कर सकें और जब तक अपनी फ़रमायश पूरी न करा लें उस वक़्त तक पानी न पिलाएँ. यह ज़ाहिर करता है कि ख़ुसरो हर दिल की ठंडक थे हर महफ़िल की रौनक़ थे और हर घर का उजाला थे.

आज भी उनकी मक़बूलियत का यही हाल है. उत्तर भारत में शायद ही कोई घर हो जहाँ लड़की की रुख़सती (बिदाई) पर ख़ुसरो के बाबुल न गाये जाते हों या बरसात की रुत में उनके सावन न छेड़े जाते हों. ब्याही लड़कियों के लिये अलग सावन कहे हैं और बिन ब्याही लड़कियों के लिये अलग. कहते हैं :—

जो पिया आवन कह गये, अजहूँ न आये स्वामी हो,

ऐ हो, जो पिया आवन कह गये.

आवन आवन कह गये—आये न बारह मास

ऐ हो, जो पिया आवन कह गये.

इसकी धुन भी अमीर ख़ुसरो ही ने बिरवा रागमें बांधी है. पहेलियाँ और मुकरनियाँ तो अमीर ख़ुसरो पर ख़तम हैं शायद ही कोई

پہونچ کر کہا ذرا پانی پلا دو ایک عورت بولی' کاھے پلاویں کچھ کہو تو پلاویں . خسرو نے کہا کہ کیا کہیں ؟ ایک بولی' چرخہ پر کہو . دوسری بولی' کھیر پر کہو . تیسری بولی' ڈھول پر کہو . خسرو نے فوراً کہا " کھیر پکائی جتن سے چرخا دیا جلا . کتا آیا کھا گیا تو بیٹھی ڈھول بجا . لا پانی پلا "

شاھی دربار میں اٹھنا بیٹھنا اور پنہارنوں اور بھٹیارنوں تک میں اتنا مقبول (سروپریہ) ھونا کہ وہ بے تکلفی سے فرمائش کر سکیں اور جب تک اپنی فرمائش پوری نہ کرا لیں اس وقت تک پانی نہ پلائیں ' یہ ظاھر کرتا ھے کہ خسرو ھر دل کی ٹھنڈک تھے' ھر محفل کی رونق تھے اور ھر گھر کا اُجالا تھے .

آج بھی ان کی مقبولیت کا یہی حال ھے . اُتر بھارت میں شاید ھی کوئی گھر ھو جہاں لڑکی کی رخصتی (بدائی) پر خسرو کے بابل نہ گائے جاتے ھوں یا برسات کی رت میں ان کے ساون نہ چھیڑے جاتے ھوں . بیاھی لڑکیوں کے لئے الگ ساون کہے ھیں اور بن بیاھی لڑکیوں کے لئے الگ . کہتے ھیں :—

جو پیا آون کہ گئے' اجھوں نہ آئے سوامی ھو.

اے ھو' جو پیا آون کہ گئے .

آون آون کہ گئے—آئے نہ بارہ ماس

اے ھو' جو پیا آون کہ گئے

اِس کی دھن بھی امیر خسرو ھی نے بروا راگ میں باندھی ھے . پہیلیاں اور مکرنیاں تو امیر خسرو پر ختم ھیں . شاید ھی کوئی

हिन्दुस्तानी घराना हो जिसमें अमीर खुसरो की पहेलियाँ न बुझाई जाती हों. कम से कम मैं ने तो अमीर खुसरो का नाम सबसे पहले अपनी बूढ़ी दादी ही से सुना था. उन्हें न जाने कितनी पहेलियाँ याद थीं. जब " अमीर खुसरो यूँ कहें " " अमीर खुसरो यूँ कहें " सुनते सुनते मैं थक गया तो मैं ने एक दिन पूछा—" यह कौन है ? " कहने लगीं " एक फ़क़ीर थे. " मैंने फिर पूछा " अमीर भी फ़क़ीर भी ?" उन्होंने टालते हुए कहा " अमीर तो नाम है—थे फ़क़ीर." आज समझ में आता है कि सच मुच खुसरो अमीर भी थे और फ़क़ीर भी.

इन में से दो मुकरनियाँ, जिनका नाम मुझे अब मालूम हुआ है, अब तक याद हैं :—

(१) सगरी रैन मोहे संग जागा
भोर भई तब बिछड़न लागा.
उसके बिछड़े फाटत हिया
ए सखी साजन ना सखी दिया.

(२) वह आवे तब शादी होय.
उस बिन दूजा और न कोय.
मीठे लागे वाके बोल—ए सखी साजन ना सखी ढोल.

इस किस्म की पहेलियाँ, मुकरनियाँ, दोहे और न जाने क्या क्या चीज़ें खुसरो ने कही हैं और कितनी कही हैं. मगर हमारी नाक़दरी ने जहाँ और चीज़ें मिट जाने दीं वहाँ खुसरो का हिन्दी कलाम भी गँवा दिया. बस वही चीज़ें रह गई हैं जो सुन्दर होने के साथ साथ इतनी सख़्त जान भी थीं कि मिटाये न मिटें.

ھندستانی گھرانہ ھو جس میں امیر خسرو کی پہیلیاں نہ بجھائی جاتی ھوں . کم سے کم میں نے تو امیر خسرو کا نام سب سے پہلے اپنی بوڑھی دادی ھی سے سنا تھا . اُنھیں نہ جانے کتنی پہیلیاں یاد تھیں . جب "امیر خسرو یوں کہیں" "امیر خسرو یوں کہیں" سنتے سنتے میں تھک گیا تو میں نے ایک دن پوچھا — " یہ کون ھیں ؟ " کہنے لگیں " ایک فقیر تھے " میں نے پھر پوچھا " امیر بھی فقیر بھی ؟ " اُنھوں نے ٹالتے ھوئے کہا " امیر تو نام ھے — تھے فقیر ." آج سمجھ میں آتا ھے کہ سچ مچ خسرو امیر بھی تھے اور فقیر بھی .

اُن میں سے دو مکرنیاں، جن کا نام مجھے اب معلوم ھوا ھے، اب تک یاد ھیں :—

(۱) سگری رین موھے سنگ جاگا
بھور بھئی تب بچھڑن لاگا
اس کے بچھڑے پھاٹت ھیا
اے سکھی ساجن . نا سکھی دیا

(۲) وہ آوے تب شادی ھوئے—اس بن دوجا اور نہ کوئے .
میٹھے لاگے واکے بول—اے سکھی ساجن . نا سکھی ڈھول .

اس قسم کی پہیلیاں، مکرنیاں، دوھے اور نہ جانے کیا کیا چیزیں خسرو نے کہی ھیں اور کتنی کہی ھیں . مگر ھماری ناقدری نے جہاں اور چیزیں مٹ جانے دیں وھاں خسرو کا ھندی کلام بھی گنوا دیا . بس وھی چیزیں رہ گئی ھیں جو سندر ھونے کے ساتھ ساتھ اتنی سخت جان بھی تھیں کہ مٹائے نہ مٹیں .

जनता की शायरी, जिसकी आजकल बड़ी चर्चा है, सच पूछो तो वही शायरी थी जो ख़ुसरो और जायसी कर गये और जनता के दिल में बिठा गये. यह नहीं कि जो रची तो जनता के नाम पर जाती है मगर ऐसी भाषा में और ऐसे ढंग से कि जनता उस शायरी को समझ ही न सके, याद रखना और इस पर सर धुनना तो बाद की बात है. मेरा मतलब नये दौर के शायरों को घटाना नहीं है बल्कि उनका ध्यान इस तरफ़ खींचना है कि जनता उसी कलाम को याद रखती है जो जनता की भाषा में हो. जो इन्क़लाबी शायरी शाहनामे की ज़बान में की जाती है वह कालिज और यूनिवर्सिटी की चहार दीवारी के अन्दर ही और उसी वक़्त तक इन्क़लाबी शायरी कहलायेगी जब तक इन्क़लाब इन्क़लाब चीख़ने वाले बहुत हैं मगर इन्क़लाब का मतलब समझने वाले कम हैं.

मेरे विचार में तो यह आता है कि वह ख़ुसरो जिसने ईरान के सनम को अपने दिल से निकाल कर हिन्दुस्तान के साजन को अपने सीने से लगाया, जिसने एक सपाट मैदान में नई नई और सुन्दर से सुन्दर राहें निकाली और शाही दरबार में रहते हुए भी अवाम के गीत गाये, आज के इन्क़लाबी शायरों से कहीं बड़ा इन्क़लाबी था. मगर ख़ुसरो शायर पहले था और शायर ही आख़िर में भी था. इसलिये वह इन्क़लाब भी शायरी ही की दुनिया में लाया. सब जानते हैं कि फ़ारसी शायरी में इश्क़ की बुनियाद मर्द की तरफ़ से क़ायम की जाती है. ख़ुसरो ने इस रीत को पलट दिया और अपनी गंगा
[illegible] इश्क़ की बुनियाद

جنتا کی شاعری' جسکی آج کل بڑی چرچا ہے' سچ پوچھو تو وہی شاعری تھی جو خسرو اور جائسی کر گئے اور جنتا کے دل میں بٹھا گئے . یہ نہیں کہ جو رچی تو جنتا کے نام پر جاتی ہے مگر ایسی بھاشا میں اور ایسے ڈھنگ سے کہ جنتا اس شاعری کو سمجھ ہی نہ سکے . یاد رکھنا اور اس پر سر دھننا تو بعد کی بات ہے. میرا مطلب نئے دور کے شاعروں کو گھٹانا نہیں ہے بلکہ اُن کا دھیان اِس طرف کھینچنا ہے کہ جنتا اسی کلام کو یاد رکھتی ہے جو جنتا کی بھاشا میں ہو . جو انقلابی شاعری شاہ نامہ کی زبان میں کی جاتی ہے وہ کالج اور یونیورسٹی کی چہار دیواری کے اندر ہی اور اسی وقت تک انقلابی شاعری کہلائے گی جب تک انقلاب انقلاب چیخنے والے بہت ہیں مگر انقلاب کا مطلب سمجھنے والے کم ہیں .

میرے وچار میں تو یہ آتا ہے کہ وہ خسرو جس نے ایران کے صنم کو اپنے دل سے نکال کر ہندستان کے ساجن کو اپنے سینہ سے لگایا' جس نے ایک سپاٹ میدان میں نئی نئی اور سندر سے سندر راہیں نکالیں اور شاہی دربار میں رہتے ہوئے بھی عوام کے گیت گائے' آج کے انقلابی شاعروں سے کہیں بڑا انقلابی تھا . مگر خسرو شاعر پہلے تھا اور شاعر ہی آخر میں بھی تھا اس لئے وہ انقلاب بھی شاعری ہی کی دنیا میں لایا . سب جانتے ہیں کہ فارسی شاعری میں عشق کی بنیاد مرد کی طرف سے قائم کی جاتی ہے . خسرو نے اِس ریت کو پلٹ دیا اور اپنی گنگا جمنی غزلوں میں ہندی شاعری کے ڈھنگ پر عشق کی بنیاد

औरत की तरफ से क़ायम की. देखिये इस गंगा जमुनी कलाम में क्या मिठास है:—

ज़हाले मिस्कीं मकुन तग़ाफ़ुल दर आय नयना बनाये बतियाँ
कि ताबे हिजराँ नदारम ऐ जाँ न लेहो काहे लगाये छतियाँ.
शबाने हिज्रॉ दराज चूँ ज़ुल्फ़े रोज़े वसलत चो उम्र कोताह
(जुदाई की रातें बालों की तरह लम्बी हैं और मिलाप का दिन ज़िन्दगी की तरह ज़रा सा है.)
सखी पिया को जो मैं न देखूँ तो कैसे काटूँ अँधेरी रतियाँ.
यकायक अज़दिल दो चश्मे जादू बसद फ़रेबम बबुर्द तसकीं
(कोई अपनी जादू भरी नज़र से मेरे दिल का चैन ले गया)
किसे पड़ी है जो जा सुनावे पियारे पी को हमारी बतियाँ.
चो शमा सोज़ाँ चो ज़र्रा हैराँ ज़ मेहरे आँ मह बगशतम आख़िर
(किसी के प्रेम में शमा की तरह घुल रही हूँ)
न नींद नयना न अङ्ग चैना न आप आवें न भेजें पतियाँ.

ख़ुसरो का छोटे से छोटा बयान भी उस वक़्त तक अधूरा रहेगा जब तक उसमें संगीत का ज़िक्र न हो. मौलाना शिब्ली ने एक पुरानी संस्कृत किताब के हवाले से, जो औरंगज़ेब के समय में तरजुमा करके राग दर्पन के नाम से फ़ारसी ज़बान में लाई गई, लिखा है कि अमीर ख़ुसरो संगीत में इस दर्जे को पहुँचे हुए थे कि उनको नायक का ख़िताब मिला. उस ज़माने में गाने के उस्तादों के यह दर्जे रखे गये थे. सब से छोटा दर्जा गायन, इसके बाद गन्धर्व, गुनी, पंडित और सब से बड़ा दर्जा नायक. अलाउद्दीन ख़िलजी के ज़माने के नायक एक गोपाल जी थे.

عورت کی طرف سے قائم کی ۔ دیکھئے اس گنگا جمنی کلام میں کیا مٹھاس ھے :—

ز حال مسکیں مکن تغافل در آئے نینا بنائے بتیاں
کہ تاب ھجراں ندارم اے جان نہ لیھو کاھے لگائے چھتیاں
شبان ھجراں دراز چوں زلف وروز وصلت چو عمر کوتاہ
(جدائی کی راتیں بالوں کی طرح لمبی ھیں اور ملاپ کا دن زندگی کی طرح ذراسا ھے)
سکھی پیا کو جو میں نہ دیکھوں تو کیسے کاٹوں اندھیری رتیاں
یکایک از دل دو چشم جادو بصد فریبم ببرد تسکیں
(کوئی اپنی جادو بھری نظر سے میرے دل کا چین لے گیا)
کسے پڑی ھے جو جا سناوے پیارے پی کو ھماری بتیاں
چو شمع سوزاں چو ذرہ حیراں ز مہر آں مہ بگشتم آخر
(کسی کے پریم میں شمع کی طرح گھل رھی ھوں)
نہ نیند نینا نہ انگ چینا نہ آپ آویں نہ بھیجیں پتیاں

خسرو کا چھوٹے سے چھوٹا بیان بھی اس وقت تک ادھورا رھے گا جب تک اس میں سنگیت کا ذکر نہ ھو ۔ مولانا شبلی نے ایک پرانی سنسکرت کتاب کے حوالے سے جو اورنگزیب کے سمے میں ترجمہ کرکے راگ درپن کے نام سے فارسی زبان میں لائی گئی لکھا ھے کہ امیر خسرو سنگیت میں اس درجہ کو پہونچے ھوئے تھے کہ ان کو نایک کا خطاب ملا تھا ۔ اس زمانے میں گانے کے استادوں کے یہ درجے رکھے گئے تھے ۔ سب سے چھوٹا درجہ گائن' اس کے بعد گندھرو' گنی' پنڈت اور سب سے بڑا درجہ نایک ۔ علاء الدین خلجی کے زمانہ کے نایک ایک گوپال جی تھے۔

उनके न जाने कितने चेले थे. जिन में से बड़े बड़े शागिर्द उन के संगीत सिंघासन को अपने कन्धों पर ले कर चला करते थे और वह उस पर संगीत के राजा की हैसियत से बैठे रहते थे. जब अलाउद्दीन खिलजी ने उनको अपने दरबार में बुलाया तो वहाँ भी वह इसी शान से पहुँचे. सात दिन की महफ़िल हुई जिसमें हर रोज़ नायक गोपाल ने एक नया राग सुनाया. अमीर ख़ुसरो के बारे में कहा जाता है कि वह छै दिन तक कहीं छिपे बैठे रहे और नायक गोपाल को सुनते रहे. जब सातवें दिन वह सामने आये तो गोपाल जी ने कहा कुछ आप भी सुनायें. ख़ुसरो ने वह छहो राग सुना दिये जो गोपाल जी ने बाँधे थे. इसके बाद कहा कि यह तो आम राग थे. अब वह राग सुनिये जो मैंने बाँधा है. और कुछ ऐसा राग सुनाया कि गोपाल जी अपने सिंघासन से उठ कर खड़े हो गये और ख़ुसरो को गले से लगा लिया. इसके बाद से अमीर ख़ुसरो भी नायक कहलाने लगे.

यह कहानी कहाँ तक सच्ची है इसको तो ख़ुदा ही जाने मगर इससे इतना पता ज़रूर चलता है कि अमीर ख़ुसरो को गाने में इतनी शोहरत हासिल थी कि गोपाल जी ने भी उनसे कुछ सुनने की फ़रमाइश की. इसके अलावा राग दर्पन में एक बड़ी सी फ़ेहरिस्त दी हुई है जिसमें बताया गया है कि अमीर ख़ुसरो ने हिन्दुस्तानी और ईरानी रागों को मिला कर कौन कौन से राग ईजाद किये. ख़ुद अमीर ख़ुसरो ने भी यह लिखा है कि वह संगीत विद्या से अच्छी तरह वाक़िफ़ थे अमीर ख़ुसरो अपने बारे में कभी कोई बात

ان کے نہ جانے کتنے چیلے تھے جن میں سے بڑے بڑے شاگرد ان کے سنگیت سنگھاسن کو اپنے کندھوں پر لے کر چلا کرتے تھے اور وہ اس پر سنگیت کے راجہ کی حیثیت سے بیٹھے رہتے تھے ۔ جب علاء الدین خلجی نے ان کو اپنے دربار میں بلایا تو وہاں بھی وہ اسی شان سے پہونچے ۔ سات دن کی محفل ہوئی جس میں ہر روز نایک گوپال نے ایک نیا راگ سنایا ۔ امیر خسرو کے بارے میں کہا جاتا ہے کہ وہ چھ دن تک کہیں چھپے بیٹھے رہے اور نایک گوپال کو سنتے رہے ۔ جب ساتویں دن وہ سامنے آئے تو گوپال جی نے کہا کچھ آپ بھی سنائیں ۔ خسرو نے وہ چھہو راگ سنا دئے جو گوپال جی نے باندھے تھے ۔ اس کے بعد کہا کہ یہ تو عام راگ تھے ۔ اب وہ راگ سنئے جو میں نے باندھا ہے ۔ اور کچھ ایسا راگ سنایا کہ گوپال جی اپنے سنگھاسن سے اٹھ کر کھڑے ہو گئے اور خسرو کو گلے سے لگا لیا ۔ اس کے بعد سے امیر خسرو بھی نایک کہلانے لگے ۔

یہ کہانی کہاں تک سچی ہے اس کو تو خدا ہی جانے مگر اس سے اتنا پتہ ضرور چلتا ہے کہ امیر خسرو کو گانے میں اتنی شہرت حاصل تھی کہ گوپال جی نے بھی ان سے کچھ سننے کی فرمائش کی ۔ اس کے علاوہ راگ درپن میں ایک بڑی سی فہرست دی ہوئی ہے جس میں بتایا گیا ہے کہ امیر خسرو نے ہندستانی اور ایرانی راگوں کو ملا کر کون کون سے راگ ایجاد کئے ۔ خود امیر خسرو نے بھی یہ لکھا ہے کہ وہ سنگیت ودیا سے اچھی طرح واقف تھے ۔ امیر خسرو اپنے بارے میں کبھی کوئی بات

बढ़ा कर नहीं कहा करते थे सितार के बारे में तो यह आम तौर पर मशहूर है कि यह ख़ुसरो ही की ईजाद है.

मुख़्तसर यह कि हिन्दुस्तान और ईरान की शायद ही कोई विद्या या कला हो जिसमे अमीर ख़ुसरो को किसी न किसी हद तक कमाल नहीं हासिल था. और सिर्फ़ ऐसा ही शख़्स. जिसके कमाल का यह हाल हो कि जिसकी बात छेड़ दे मालूम हो उसी का आलम है, वह गंगा जमुनी तहज़ीब पेश कर सकता था जो उस वक़्त ढल रही थी और बन रही थी.

ख़ुसरो की मौत भी एक प्रेमी की मौत हुई. वह ग़यासुद्दीन तुग़लक़ के साथ तिरहुत की लड़ाई पर गये हुए थे कि दिल्ली मे उनके पीर हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया इस दुनिया से कूच कर गये. जब ख़ुसरो वापस हुए और उन्हें मालूम हुआ कि हज़रत चल बसे तो वह पागलों की तरह उनके मज़ार पर गये, यह दोहा कहा और बेहोश हो कर गिर पड़े.

गोरी सोये सेज पर और मुख पर डारे केस
चल ख़ुसरो घर अपने रैन भई सब देस

उनके सालाना उर्स के लिहाज़ से ख़ुसरो ने ईद को १८, तारीख़ सन १२६७ ई० में इन्तक़ाल किया.

بڑھا کر نہیں کہا کرتے تھے ستار کے بارے میں تو یہ عام طور پر مشہور ھے کہ یہ خسرو ھی کی ایجاد ھے .

مختصر یہ کہ ھندستان اور ایران کی شاید ھی کوئی ودیا یا کلا ھو جس میں امیر خسرو کو کسی نہ کسی حد تک کمال نہیں حاصل تھا . اور صرف ایسا ھی شخص جس کے کمال کا یہ حال ھو کہ جس کی بات چھیڑ دے معلوم ھو اسی کا عالم ھے' وہ گنگا جمنی تہذیب پیش کر سکتا تھا جو اُس وقت ڈھل رھی تھی اور بن رھی تھی .

خسرو کی موت بھی ایک پریمی کی موت ھوئی . وہ غیاث الدین تغلق کے ساتھ ترھت کی لڑائی پر گئے ھوئے تھے کہ دلی میں انکے پیر حضرت نظام الدین اولیا اُس دنیا سے کوچ کر گئے . جب خسرو واپس ھوئے اور اُنھیں معلوم ھوا کہ حضرت چل بسے تو وہ پاگلوں کی طرح ان کے مزار پر گئے' یہ دوھا کہا اور بے ھوش ھوکر گر پڑے .

گوری سوئے سیج پر اور مکھ پر ڈارے کیس
چل خسرو گھر اپنے رین بھئی سب دیس

ان کے سالانہ عرس کے لحاظ سے خسرو نے عید کی ۱۸ تاریخ سن ۱۲۶۷ع میں انتقال کیا

कश्मीर का अमन और सर डिक्सन

(भाई अब्दुल हलीम अन्सारी)

आज़ादी मिलने के बाद कश्मीर, लगातार तीन चार साल तक लूट खसोट, मार धाड़, क़तल, खूंरेज़ी, ग़ारत गरी और तबाह-कारियों का अड्डा बना रहा है. अब कुछ दिन से वहाँ की सियासत का रंग बदलता मालूम हो रहा है. वहाँ की आग भी धीरे धीरे मन्दी पड़ रही है और फ़िज़ा भी हौले हौले ठन्डी होती जा रही है— कश्मीर की सियासत पर नेहरू-लियाक़त की मुलाक़ात का ख़ास असर है. वहाँ की आग और फिज़ा में एका एकी जो तबदीली हुई और जो फ़रक़ पड़ा है वह उसी मुलाक़ात के कारन हैं.

कहा गया है कि नेहरू-लियाक़त समझौता मोजज़ा (चमत्कार) है

नेहरू-लियाक़त समझौता मोजज़ा नहीं है. मोजज़े का ताल्लुक़ मज़हब से होता है और सियासत का ख़ुश्क दामन मज़हब की नेमत से ख़ाली है. इस लिये सियासी मुआहदा मोजज़ा नहीं. नेहरू लियाक़त मोआहदा हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की आज़ादी के इतिहास का वह तारीख़ी वरक़ है जिसके न होते हुए आज़ादी बेजान और बे रौनक़ रह जाती, नातमाम और अधूरी रह जाती, या यह कि इतिहास का क़ीमती और निहायत ज़रूरी पन्ना ख़ाली और सादा रह जाता.

नेहरू-लियाक़त समझौता अलबत्ता अवाम की ज़िन्दगियों पर अमन शान्ति की लहर दौड़ाने वाला और दिलों की धड़कन दूर करने

کشمیر کا امن اور سر ڈکسن

(بھائي عبدالحلیم انصاری)

آزادی ملنے کے بعد کشمیر' لگاتار تین چار سال تک لوٹ کھسوٹ' مار دھاڑ' قتل' خونریزی' غارتگری اور تباہ کاریوں کا اڈا بنا رہا ہے . اب کچھ دن سے وہاں کی سیاست کا رنگ بدلتا معلوم ہورہا ہے . وہاں کی آگ بھی دھیرے دھیرے مندی پڑ رہي ہے اور فضا بھی ہولے ہولے ٹھنڈی ہوتي جارہي ہے — کشمیر کی سیاست پر نہرو لیاقت کی ملاقات کا خاص اثر ہے . وہاں کي آگ اور فضا میں ایکا ایکی جو تبدیلي ہوئی اور جو فرق پڑا ہے وہ اسی ملاقات کے کارن ہیں .

کہا گیا ہے کہ نہرو لیاقت سمجھوتہ معجزہ (چمتکار) ہے .

نہرو لیاقت سمجھوتہ معجزہ نہیں ہے . معجزے کا تعلق مذہب سے ہوتا ہے اور سیاست کا خشک دامن مذہب کی نعمت سے خالی ہے . اس لئے سیاسی معاہدہ معجزہ نہیں . نہرو لیاقت معاہدہ ہندستان اور پاکستان کی آزادی کے اتہاس کا وہ تاریخي ورق ہے جس کے نہ ہوتے ہوئے آزادي بے جان اور بے رونق رہ جاتي' نا تمام اور ادھوري رہ جاتي یا یہ کہ اتہاس کا قیمتی اور نہایت ضروري پنا خالي اور سادہ رہ جانا .

نہرو لیاقت سمجھوتہ البتہ عوام کي زندگیوں پر امن شانتی کی لہر دوڑانے والا اور دلوں کي دھڑکن دور کرنے

वाला एक अच्छा असर हो सकता है अगर वह अपनी रूह को बाक़ी रखे ऐसी ही हालत में यह भी इमकान है कि इसकी बरकत से कश्मीर के मैदान का फौजी इन्सान खूनी लबादा उतार कर अमन का लिबास पहने और जंग का झंडा गिराकर अमन का बटवारा खड़ा करे—और ऐसीही सूरत में यह भी गुमान कर लेना आसान हो जाता है कि कश्मीरकी क़िस्मत का सितारा जो खून के बादलों में डूबा हुआ था, सुलह और अमन के जल से स्नान कर के दुनिया को दर्शन दे. यू० ऐन० ओ० से सर डिक्सन अमन का मिशन लेकर हिन्दुस्तान आचुके हैं—पिछले दिनों की बात है कि जून के मास में शादाब कश्मीर के आकाश तले उनका स्वागत हुआ जहाँ उन्होंने काफ़ी दिन क़याम कर के खूब जन्नती डिनर उड़ाये, जन्नती फ्रूट खाये. जन्नती शराबें पीं.

(७५५)

नेहरू-लियाक़त समझौता जब अमल में आ चुका है तो फिर कश्मीर के अमन के बारे में किसी दूसरी या तीसरी ताक़त या शख़्सियत का नाम, बराये नाम ही रह जाता है. फिर किसी की ज़रूरत ही बाक़ी नहीं रहती.

आज सारी दुनिया में जम्हूरियत के डंके बज रहे हैं. फिर भी आपस में झगड़े क़िस्से चल रहे हैं.

जम्हूरी दुनिया की जंग, राय की जंग होती है. याद रहे कि जंग के अन्दर झूट, मक्कारी, फरेब कारी, धोके बाज़ी सब जायज़ है.

आजका दौर सियासतका दौर है. भूलना न चाहिये कि सियासत में "पालिसी" को वहीदर्जा और अख़्तियार हासिल है जो जंग में मक्कारी, बे ईमानी और चाल बाज़ी को.

والا ایک اچھا اثر ہوسکتا ہے اگر وہ اپنی روح کو باقی رکھے . ایسی ہی حالت میں یہ بھی امکان ہے کہ اسکی برکت سے کشمیر کے میدان کا فوجی اِنسان خونی لبادہ اُتار کر امن کا لباس پہنے اور جنگ کا جھنڈا گرا کر امن کا باڑتا کھڑا کرے— اور ایسی ہی صورت میں یہ بھی گمان کرلینا آسان ہوجاتا ہے کہ کشمیر کی قسمت کا ستارہ جو خون کے بادلوں میں ڈوبا ہوا تھا، صلح اور امن کے جل سے اشنان کرکے دنیا کو درشن دے . یو . این . او . سے سر ڈکسن امن کا مشن لیکر ہندستان آچکے ہیں — پچھلے دنوں کی بات ہے کہ جون کے ماس میں شاداب کشمیر کے آکاش تلے ان کا سواگت ہوا . جہاں انہوں نے کافی دن قیام کرکے خوب جنتی ڈنر اُڑائے، جنتی فروٹ کھائے، جنتی شرابیں پیں .

(۱۱٧)

نہرو لیاقت سمجھوتہ جب عمل میں آچکا ہے تو پھر کشمیر کے امن کے بارے میں کسی دوسری یا تیسری طاقت یا شخصیت کا نام، برائے نام ہی رہ جاتا ہے . پھر کسی کی ضرورت ہی باقی نہیں رہتی .

آج ساری دنیا میں جمہوریت کے ڈنکے بج رہے ہیں . پھر بھی آپس میں جھگڑے قصے چل رہے ہیں .

جمہوری دنیا کی جنگ، رائے کی جنگ ہوتی ہے . یاد رہے کہ جنگ کے اندر جھوٹ، مکاری، فریب کاری، دھوکے بازی سب جائز ہے .

آج کا دور سیاست کا دور ہے . بھولنا نہ چاہئے کہ سیاست میں " پالیسی " کو وہی درجہ اور اختیار حاصل ہے جو جنگ میں مکاری، بے ایمانی اور چالبازی کو .

"हाँ, हाँ," खुश हो कर सेठजी ने कहा.

"यह उन्हीं की पोती हैं."

"अच्छा!" सेठजी की आँखें अम्मू की ओर उठ कर चमक उठीं. अम्मू उठ कर बैठक में इधर-उधर टंगी बेशक़ीमत तस्वीरें देखने लगी.

"अच्छा, तो मेरे लायक़ कोई सेवा?" सेठजी ने कहा.

"जी?" कृष्णन कुछ पसोपेश में पड़ गया और जवाब देने के लिये उसने अम्मू की तरफ़ आँखें उठाईं.

तभी अम्मू पुकार उठी—"ज़रा इधर आइये!"

वह सेठजी से माफ़ी माँग अम्मू के पास पहुंचा, अम्मू की उंगलियाँ कोने में रखे हुए एक सूटकेस पर थिरक रही थीं. कृष्णन को याद आया, कि यह वही सूटकेस है, जिसे उस दिन उसने स्टेशन पर देखा था. उसने कहा—"क्या है, अम्मू?"

"देखिये!" अम्मू ने धीरे से कहा.

"उम्दा है," कृष्णन ने कहा.

"ज़रा सेठजी से पूछिये कि उन्होंने यह कहाँ से लिया?" अम्मू ने सेठजी की ओर देखते हुए कहा.

दोनों को सूटकेस के पास देख कर सेठजी का चेहरा दमक उठा. सेठजी के पास आकर कृष्णन ने कहा—"अम्मू को आपका वह सूटकेस बहुत पसन्द आया."

"वह चीज़ ही ऐसी है, साहब! शायद ही कोई ऐसा हो, जो इस कमरे में आये, और सूटकेस की तरफ़ न खिंचे." सेठजी ने आँखों से खुशी झलकाते हुए कहा.

"ہاں، ہاں،" خوش ہو کر سیٹھ جی نے کہا۔

"یہ انھیں کی پوتی ہیں۔"

"اچھا!" سیٹھ جی کی آنکھیں اَمّو کی اُور اٹھ کر چمک اٹھیں۔ اَمّو اٹھ کر بیٹھک میں ادھر اُدھر ٹنگی بیش قیمت تصویریں دیکھنے لگی۔

"اچھا، تو میرے لائق کوئی سیوا؟" سیٹھ جی نے کہا!

"جی؟" کرشنن کچھ پس وپیش میں پڑ گیا اور جواب دینے کے لئے اس نے اَمّو کی طرف آنکھیں اٹھائیں۔

تبھی اَمّو پکار اُٹھی— "ذرا ادھر آئیے!"

وہ سیٹھ جی سے معافی مانگ اَمّو کے پاس پہنچا، اَمّو کی انگلیاں کونے میں رکھے ہوئے ایک سوٹ کیس پر تھرک رہی تھیں۔ کرشنن کو یاد آیا کہ یہ وہی سوٹ کیس ہے، جسے اس دن اس نے اسٹیشن پر دیکھا تھا۔ اس نے کہا— "کیا ہے، اَمّو؟"

"دیکھئے!" اَمّو نے دھیرے سے کہا۔

"عمدہ ہے،" کرشنن نے کہا۔

"ذرا سیٹھ جی سے پوچھئے کہ انھوں نے یہ کہاں سے لیا؟" اَمّو نے سیٹھ جی کی اُور دیکھتے ہوئے کہا۔

دونوں کو سوٹ کیس کے پاس دیکھ کر سیٹھ جی کا چہرہ دمک اٹھا۔ سیٹھ جی کے پاس آکر کرشنن نے کہا— "اَمّو کو آپ کا وہ سوٹ کیس بہت پسند آیا۔"

"وہ چیز ہی ایسی ہے، صاحب! شاید ہی کوئی ایسا ہو، جو اس کمرے میں آئے، اور سوٹ کیس کی طرف نہ کھنچے،" سیٹھ جی نے آنکھوں سے خوشی چھلکاتے ہوئے کہا۔

ऐसे ही समय तमाम जायज़ और नाजायज़ तरकीबें और चालें काम में लाई जाती हैं. ऐसी सूरत और नाज़ुक हालत में वक़्त की सियासत पर सच्ची राय ज़ाहिर करना मुश्किल तो नहीं है पर मसलेहत के ख़िलाफ़ है--ख़ास कर किसी ऐसी रियासत पर जिसकी सियासत दो रुख़ी हो.

देखा यह जा रहा है कि जहाँ सच बात कही गई वहीं गरदन मारी गई. अगर किसी की गरदन फ़ालतू हो तो मुज़ायक़ा नहीं लेकिन हमको अपनी प्यारी गरदन बचाने के लिये मुनासिब और बेहतर यही मालूम होता है कि जब तक यह बादल न छट जायें अपनी राय बचाकर रखी जाय.

कोई शक नहीं कि कश्मीर की सियासत बड़ी पेचीदा है और वहाँ का मामला बुरी तरह उलझा हुआ है. मगर शुक्र है कि अब सुलझने के क़ाबिल होता जा रहा है. देश की पुरानी गाँठे ढीली पड़ रही हैं और मोहब्बत की नई नई राहें खुलती जा रही हैं. यही कारन है कि दुनिया की आँखें बड़ी बेचैनी के साथ कश्मीर की तरफ़ लगी हुई हैं और उसका हश्र (परिनाम) हश्र (क़यामत) से पहले देखना चाहती हैं.

यह तय है कि अवाम की ठोस और आज़ाद राय पर आज़ाद कश्मीर की क़िस्मत का फ़ैसला होने को है—देखना यह है कि कश्मीर की जन्नत या जन्नत की सियासत का ऊँट किस करवट बैठता है.

कश्मीर की क़िस्मत के फ़ैसले के लिये सर ओवन डिक्सन से पहले कितने ही कमीशन अमन का सन्देश लेकर पच्छिम देश से कश्मीर आये और गये लेकिन उनकी दिमाग़ी और सियासी काबलियत

(४४६)

ایسے ہی سمے تمام جائز اور ناجائز ترکیبیں اور چالیں کام میں لائی جاتی ہیں ۔ ایسی صورت اور نازک حالت میں وقت کی سیاست پر سچی رائے ظاہر کرنا مشکل تو نہیں ہے پر مصلحت کے خلاف ہے ـــ خاصکر کسی ایسی ریاست پر جس کی سیاست دو رخی ہو ۔

دیکھا یہ جا رہا ہے کہ جہاں سچ بات کہی گئی وہیں گردن ماری گئی ۔ اگر کسی کی گردن فالتو ہو تو مضائقہ نہیں لیکن ہم کو اپنی پیاری گردن بچانے کے لئے مناسب اور بہتر یہی معلوم ہوتا ہے کہ جبتک یہ بادل نہ چھٹ جائیں اپنی رائے بچاکر رکھی جائے ۔

کوئی شک نہیں کہ کشمیر کی سیاست بڑی پیچیدہ ہے اور وہاں کا معاملہ بری طرح الجھاہوا ہے ۔ مگر شکر ہے کہ اب سلجھنے کے قابل ہوتا جارہا ہے ۔ دیش کی پرانی گانٹھیں ڈھیلی پڑ رہی ہیں اور محبت کی نئی نئی راہیں کھلتی جارہی ہیں ۔ یہی کارن ہے کہ دنیا کی آنکھیں بڑی بے چینی کے ساتھ کشمیر کی طرف لگی ہوئی ہیں اور اس کا حشر (پرنام) حشر (قیامت) سے پہلے دیکھنا چاہتی ہیں

یہ طے ہے کہ عوام کی ٹھوس اور آزاد رائے پر آزاد کشمیر کی قسمت کا فیصلہ ہونے کو ہے ـــ دیکھنا یہ ہے کہ کشمیر کی جنت یا جنت کی سیاست کا اونٹ کس کروٹ بیٹھتا ہے ۔

کشمیر کی قسمت کے فیصلے کے لئے سر اوون ڈکسن سے پہلے کتنے ہی کمیشن امن کا سندیش لے کر پچھم دیش سے کشمیر آئے اور گئے لیکن ان کی دماغی اور سیاسی قابلیت

(۴۴۶)

का यह कमाल जरूर तारीफ़ के काबिल है कि दोनो फ़ौजो में लड़ाई भी बराबर जारी रही और ख़ून भी दोनों तरफ बराबर बहता रहा ——उन कमीशनों पर लखो रुपया क़ौम के ख़ज़ाने से जो ख़र्च हुआ है—वह रुपया अमन के नाम लिखा जाये या उनकी सैर के नाम.

नेहरू-लियाक़त समझौता बहुत ख़ूब, बड़ा मुबारक ! लेकिन दोनों फ़ौजें अब भी अपने अपने मोरचो पर कील काँटे से होशियार हैं. उनकी नंगी तलवारें अचल और चुप जरूर हैं मगर अवाम की जबान की दुधारी तलवारे बारबर काट कर रही हैं. और वह उन बेचारो को भी घायल कर रही है जो सुबह शाम थोड़ी देर के लिये किसी तरफ हवाख़ोरी और चहलक़दमी के लिये निकल जाया करते हैं. या जो कोई थका माँदा " बे आराम और बे इतमीनान इन्सान " किसी ठन्डे वक़्त लाल क़िले के लान या मैदान में कभी कभी जा कर बैठ जाया करता है.

सर डिक्सन ने शहर कश्मीर के नगर नगर और श्रीनगर का दौरा करके तमाम कश्मीर को अमन का पैग़ाम पहुँचाया. वही पैग़ाम वादी वादी गूंजा.

बे शक उनकी जबान से अमन का नाम निकला और उनके होठों से अमन का पैग़ाम फैला — पर हमें क्या ख़बर कि उनके सीने में क्या छुपा है ?

पयामे अमन होटों पर, ख़रोशे जंग सीने मे
जबाँ से अमन का प्रचार, दिल से जंग की ख़्वाहिश.

हम फिर कह सकते हैं कि डिक्सन की निगाहमें एक ख़ास नुक़्ते की तलाश है और उनके दिमाग़ में एक ख़ास मोरचे का ख़याल है.

کا یہ کمال ضرور تعریف کے قابل ھے کہ دونوں فوجوں میں لڑائی بھی برابر جاری رھی اور خون بھی دونوں طرف برابر بہتا رھا—ان کمیشنوں پر لاکھوں روپیہ قوم کے خزانے سے جو خرچ ھوا ھے — وہ روپیہ امن کے نام لکھا جائے یا ان کی سیر کے نام .

نہرو لیاقت سمجھوتہ بہت خوب، بڑا مبارک ! لیکن دونوں فوجیں اب بھی اپنے اپنے مورچوں پر کیل کانٹے سے ھشیار ھیں، ان کی ننگی تلواریں اچل اور چپ ضرور ھیں مگر عوام کی زبان کی دو دھاری تلواریں برابر کاٹ کر رھی ھیں . اور وہ ان بیچاروں کو بھی گھائل کر رھی ھیں جو صبح شام تھوڑی دیر کے لئے کسی طرف ھوا خوری اور چہل قدمی کے لئے نکل جایا کرتے ھیں یا جو کوئی تھکا ماندہ " بے آرام اور بے اطمینان انسان " کسی ٹھنڈے وقت لال قلعے کی لان یا میدان میں کبھی کبھی جاکر بیٹھ جایا کرتا ھے .

سر ڈکسن نے شہر کشمیر کے نگر نگر اور سری نگر کا دورہ کرکے تمام کشمیر کو امن کا پیغام پہونچایا — وھی پیغام وادی وادی گونجا .

بے شک اُن کی زبان سے امن کا نام نکلا اور ان کے ھونٹوں سے امن کا پیغام پھیلا —— پر ھمیں کیا خبر کہ ان کے سینے میں کیا چھپا ھے ؟

پیام امن ھونٹوں پر، خروش جنگ سینے میں
زبان سے امن کا پرچار، دل سے جنگ کی خواھش .

ھم پھر کہ سکتے ھیں کہ ڈکسن کی نگاہ میں ایک خاص نقطے کی تلاش ھے اور ان کے دماغ میں ایک خاص مورچے کا خیال ھے .

और यह बात तो साफ है कि अमरीकन ब्लाक रूस के खिलाफ है.

लेकिन देखो तो सही !

कहाँ का आदमी. कहाँ आकर डोरे डाले और कहाँ कहाँ.

कहाँ का वासी, कहां से जाल फेंके और किधर किधर.

यह न सिर्फ़ हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के लिये खतरनाक है बल्कि दुनिया के अमन को ग़ारत करने वाला ज़हरीला कार्य क्रम !

इन तमाम हालात को देखने और समझने के बाद हमें डर है कि—

कश्मीर का भविष्य भयानक है.

कश्मीर का अमन ख़तरे में है.

कश्मीर का फ़ैसला खटाई में है—और

कश्मीर जन्नत निशान मे नरक का निरमान है.

——अब रहा मुआहदा (यानी नेहरू लियाक़त पैक्ट) जब मुआहदा जन्म ले चुका है तो उसको भी अपनी आज़ादी के राज में बदलते बदलाते हालात के अनुसार आगे पीछे हटनेका अधिकार होना चाहिये. उसको भी अपना जीवन बनाये रखने के लिये बात का रुख़ और ख़ुद का पहलू बदलने की जरूरत है जब कि हर चीज बदल रही है और बहुत कुछ बदल चुकी है. ऐसी दशा में अच्छा है कि—वह भी अपना मिज़ाज बदले और जहाँ ज़रूरत हो वहाँ अलफाज़ बदले—ऐसा करने से वह ज़्यादा सुन्दर और अच्छे रूप में सामने आ सकेगा और नया जीवन ले कर नई शक्ति पा सकेगा

اور یہ بات تو صاف ہے کہ امریکن بلاک روس کے خلاف ہے .

لیکن دیکھو تو سہی !

کہاں کا آدمی' کہاں آکر ڈورے ڈالے اور کہاں کہاں .

کہاں کا واسي' کہاں سے جال پھینکے اور کدھر کدھر .

یہ نہ صرف ہندستان اور پاکستان کے لئے خطرناک ہے بلکہ دنیا کے امن کو غارت کرنے والا زہریلا کاریہ کرم !

ان تمام حالات کو دیکھنے اور سمجھنے کے بعد ہمیں ڈر ہے کہ —

کشمیر کا بھوشیہ بھیانک ہے .

کشمیر کا امن خطرے میں ہے .

کشمیر کا فیصلہ کھٹائی میں ہے —— اور

کشمیر جنت نشان میں نرک کا نرمان ہے .

—— اب رہا معاہدہ (یعني نہرو لیاقت پیکٹ) جب معاہدہ جنم لے چکا ہے تو اس کو بھی اپني آزادی کے راج میں بدلتے بدلاتے حالات کے انوسار آگے پیچھے ہٹنے کا ادھیکار ہونا چاہئے . اس کو بھی اپنا جیون بنائے رکھنے کے لئے بات کا رخ اور خود کا پہلو بدلنے کي ضرورت ہے . جبکہ ہر چیز بدل رہی ہے اور بہت کچھ بدل چکی ہے . ایسی دشا میں اچھا ہے کہ — وہ بھی اپنا مزاج بدلے اور جہاں ضرورت ہو وہاں الفاظ بدلے — ایسا کرنے سے وہ زیادہ سندر اور اچھے روپ میں سامنے آسکیگا اور نیا جیون لے کر نئي شکتي پاسکے گا .

उस वक्त जब जंग ख़त्म हुई है और अमन का ढोल पिटा है. जैसे ही हमारे कानों में अमन की आवाज़ पड़ी थी हमने उसी वक़्त अचरजके साथ यह सवाल किया था—क्या दुनिया मे सचमुच अमन है ? और फिर ख़ुद ही इस बात का जवाब दिया था—इन शब्दों में.

* "हाँ हाँ अमन है लेकिन इसमें छिपी एक और जंग है. अमन एक हसीन आस्तीन है जिसमें बे हद बाँकपन है मगर उसके अन्दर एक ख़ूबसूरत साँपिन है. वही डसने वाली नागन है—उसके नाम में शान्ति की लहर है जिसके अन्दर विलायती ज़हर है"

आजसे साढ़े चार साल पहले अमन के बारे में हमने अपना जो विचार प्रकट किया था और अमन की गोद में जो नक़शा भविष्य का पेश किया था आज वह हू बहू सामने मौजूद है—अमन की वही साँपिन पच्छिम की हसीन आस्तीन से लहराती और फन मारती निकल खड़ी हुई है, जिसका ज़हर फ़िज़ा में फैलना और फ़िज़ा का ज़हरीला होना लाज़मी है—

अमन अमन की पुकार के बाद जंग का बिगुल —

इससे दिलों का निफ़ाक़ और दिलों के अन्दर अदावत की परवरिश का भेद खुलता है.

सच की कमी का पता चलता है और सचाई में झूट का राज़ मालूम होता है.

जब किसी क़ौम को अपनी दौलत और शक्ति पर घमन्ड होता है. साइन्स और ईजाद पर घमन्ड होता है, मशीन और आलात पर

* "आज का समाँ और ज़ख्मी राज नीति" — 'नया हिन्द' दिसम्बर सन् ४६. सफ़ा ५६५.

اُس وقت جب جنگ ختم ہوئی ہے اور امن کا ڈھول پٹا ہے . جیسے ہی ہمارے کانوں میں امن کی آواز پڑی تھی ہم نے اُسی وقت آچرج کے ساتھ یہ سوال کیا تھا — کیا دنیا میں سچ مچ امن ہے ؟ اور پھر خود ہی اس کا جواب دیا تھا — ان شبدوں میں .

* " ہاں ہاں امن ہے لیکن اس میں چھپی ایک اور جنگ ہے . امن ایک حسین آستین ہے جس میں بے حد بانکپن ہے مگر اس کے اندر ایک خوبصورت سانپن ہے . وہی ڈسنے والی ناگن ہے — اس کے نام میں شانتی کی لہر ہے جس کے اندر ولائتی زہر ہے ."

آج سے ساڑھے چار سال پہلے امن کے بارے میں ہم نے اپنا جو وچار پرکٹ کیا تھا اور امن کی گود میں جو نقشہ بھوشیہ کا پیش کیا تھا' آج وہ ہو بہو سامنے موجود ہے — امن کی وہی سانپن پچھم کی حسین آستین سے لہراتی اور پھن مارتی نکل کھڑی ہوئی ہے' جس کا زہر فضا میں پھیلنا اور فضا کا زہریلا ہونا لازمی ہے —

امن امن کی پکار کے بعد جنگ کا بگل —

اس سے دلوں کا نفاق اور دلوں کے اندر عداوت کی پرورش کا بھید کھلتا ہے .

سچ کی کمی کا پتہ چلتا ہے اور سچائی میں جھوٹ کا راز معلوم ہوتا ہے .

جب کسی قوم کو اپنی دولت اور شکتی پر گھمنڈ ہوتا ہے' سائنس اور ایجاد پر گھمنڈ ہوتا ہے' مشین اور آلات پر

* " آج کا سماں اور زخمی راج نیتی " — 'نیا ہند' — دسمبر سن ۴۶ء صفحہ ۵۶۵

घमन्ड होता है, पेट्रोल और जहाज पर घमंड होता है या ऐटम के कनों पर घमन्ड होता है तो उसके दिमाग़ में एक तरह का बल खाता हुआ जोश उठता है. दूसरे शब्दों में यूँ समझना चाहिये कि उसके दिमाग़ में एक तरह का फ़तूर पैदा हो जाता है, यानी इन्सानी विवेक जाता है और जनून उसके सर पर सवार हो जाता है. जिसके कारन वह ख़ुद ब ख़ुद अपना सर पहाड़ों पर दे दे मारता है—यहाँ तक कि अगर उसके सामने कोई चट्टान या फ़ौलादी इन्सान भी आ जाय तो वह उस से टक्कर लेने की ठान लेता है. वह सब कुछ उसकी हकूमत पसन्दी और ताना शाही का नतीजा होता है जो उसके दिमाग़ में छया हुआ होता है. परन्तु जब नशा उतर जाता है तो उसको ख़ुद एक तरह की कमज़ोरी और पशेमानी महसूस होती है. लेकिन यह अजीब बात है कि ऐसा ही मनुष्य अपने आप को दुनिया का सब से बड़ा आदमी मनवाता है और दुनिया की ज़बान से अपने आप को 'सच्चा आदमी' कहलवाने में सोलह आने कामयाब होता है. चाहे सच और इन्साफ़ की तराज़ू में वह पूरा न उतर रहा हो.

ऐटम पर बल और तबाहकारी के सामान.

दौलत पर घमन्ड और मशीनों पर ईमान.

जो ईश्वर की शक्ति और क़ुदरत को भूल कर दूसरों को तबाह बरबाः और नेस्त नाबूद करने का बीड़ा उठाता है, ईश्वर उसका बेड़ा डुबाता है. मिस्र में नील नदी के किनारे जाकर ज़रा खड़े तो हो जाओ—उसकी एक एक बूंद गवाही देगी—वह शोर मचा कर और

گھمنڈ ہوتا ہے، پٹرول اور جہاز پر گھمنڈ ہوتا ہے یا ایٹم کے کنوں پر گھمنڈ ہوتا ہے تو اس کے دماغ میں ایک طرح کا بل کھاتا ہوا جوش اٹھتا ہے ۔ دوسرے شبدوں میں یوں سمجھنا چاہئے کہ اس کے دماغ میں ایک طرح کا فتور پیدا ہوجاتا ہے، یعنی اِنسانی وِیویک جاتا ہے اور جنون اس کے سر پر سوار ہوجاتا ہے ۔ جس کے کارن وہ خود بخود اپنا سر پہاڑوں پر دے دے مارتا ہے — یہاں تک کہ اگر اس کے سامنے کوئی چٹان یا فولادی انسان بھی آجائے تو وہ اس سے ٹکر لینے کی ٹھان لیتا ہے ۔ یہ سب کچھ اس کی حکومت پسندی اور تانا شاہی کا نتیجہ ہوتا ہے جو اس کے دماغ میں چھایا ہوا ہوتا ہے ۔ پرنتو جب نشہ اُتر جاتا ہے تو اس کو خود ایک طرح کی کمزوری اور پشیمانی محسوس ہوتی ہے ۔ لیکن یہ عجیب بات ہے کہ ایسا ہی منشیہ اپنے آپ کو دنیا کا سب سے بڑا آدمی منواتا ہے اور دنیا کی زبان سے اپنے آپ کو "سچا آدمی" کہلوانے میں سولہ آنے کامیاب ہوتا ہے ۔ چاہے سچ اور انصاف کی ترازو میں وہ پورا نہ اُتر رہا ہو ۔

ایٹم پر بل اور تباہ کاری کے سامان ۔

دولت پر گھمنڈ اور مشینوں پر ایمان ۔

جو ایشور کی شکتی اور قدرت کو بھول کر دوسروں کو تباہ برباد اور نیست نابود کرنے کا بیڑا اٹھاتا ہے، ایشور اس کا بیڑا ڈباتا ہے — مصر میں نیل ندی کے کنارے جاکر ذرا کھڑے تو ہوجاؤ — اُس کی ایک ایک بوند گواہی دے گی — وہ شور مچاکر اور سر اٹھا اٹھا کر کہے گی — [illegible]

और हाँ!

मै ही वह नदी हूँ जहाँ अत्याचारी और घमंडी, ईश्वर की ताक़त और क़ुदरत का नास्तिक और—ख़ुदाई का दावा करने वाले फ़िरऔन का बेड़ा ग़रक़ हुआ है और वह घमंड और अत्याचार का देवता अपने किरदार को पहुँचा है.

दूर क्यों जाओ? हिटलर की ताज़ा मिसाल सामने है जो कल की बात है और जो आज के बच्चे बच्चे को याद है. फिर भी हम देख रहे हैं कि इस थोड़े अरसे में हर देश और हर मुल्क में कितने नये नये फ़िरऔन और हिटलर पैदा हो गये हैं. और जो कल तक हिटलर के कट्टर दुश्मन थे वही आज हिटलरी किरदार और लिबास में हैं.

आग और जज़्बात की नई बाढ़ जो फूट पड़ी है.

ग़ुस्से और बदले का नया तूफ़ान जो उठ खड़ा हुआ है.

हमें डर है कि अगर आग लम्बी गई और अगर तूफ़ान ज़्यादा आगे बढ़ा तो अमरीका या इङ्गलिस्तान. यह या वह चन्द क़दम आगे चलकर या चन्द उड़ानें ऊँची भर कर अपने पुराने दोस्त को धोका दे दे और आँखें फेर ले और जिसको इस से वफ़ा की उम्मीद भी नहीं उससे दोस्ती गाँठ ले.

यह बात बहुत पहले कही जा रही है—हो सकता है कि यह किसी वक़्त दुनिया के लिये अचरज का कारन बने.

लेकिन यह बात क्या कर कही गई?

फ़िज़ा की जाँच परताल और रंगों के हाल अहवाल से.

फ़ितरत (प्रकृति) के रंग आर्टिस्ट के मुख़बिर होते हैं, जासूस होते हैं, भेदिया होते हैं. वही प्रकृति के पैग़ाम होते हैं जो

نیا ہند   کشمیر کا امن اور سر ڈکسن   اگست سن ۵۰

اور ہاں!

میں ہی وہ ندی ہوں جہاں اتیاچاری اور گھمنڈی، ایشور کی طاقت اور قدرت کا ناستک اور — خدائی کا دعویٰ کرنے والے فرعون کا بیڑا غرق ہوا ہے اور وہ گھمنڈ اور اتیاچار کا دیوتا اپنے کردار کو پہونچا ہے۔

دور کیوں جاؤ؟ ہٹلر کی تازہ مثال سامنے ہے جو کل کی بات ہے اور جو آج کے بچے بچے کو یاد ہے۔ پھر بھی ہم دیکھ رہے ہیں کہ اس تھوڑے عرصے میں ہر دیش اور ہر ملک میں کتنے نئے نئے فرعون اور ہٹلر پیدا ہوگئے ہیں۔ اور جو کل تک ہٹلر کے کٹر دشمن تھے وہی آج ہٹلری کردار اور لباس میں ہیں۔

آگ اور جذبات کی نئی باڑھ جو پھوٹ پڑی ہے۔

غصے اور بدلے کا نیا طوفان جو اٹھ کھڑا ہوا ہے۔

ہمیں ڈر ہے کہ اگر آگ لمبی گئی اور اگر طوفان زیادہ آگے بڑھا تو امریکہ یا انگلستان۔ یہ یا وہ، چند قدم آگے چل کر یا چند اڑانیں اونچی بھر کر اپنے پرانے دوست کو دھوکا دے دے اور آنکھیں پھیر لے۔ اور جس کو اس سے وفا کی امید بھی نہیں اس سے دوستی گانٹھ لے۔

یہ بات بہت پہلے کہی جارہی ہے —— ہوسکتا ہے کہ یہ کسی وقت دنیا کے لئے اچرج کا کارن بنے۔

لیکن یہ بات کیونکر کہی گئی؟

فضا کی جانچ پرتال اور رنگوں کے حال احوال سے۔

فطرت (پرکرتی) کے رنگ آرٹسٹ کے مخبر ہوتے ہیں۔ جاسوس ہوتے ہیں، بھیدیہ ہوتے ہیں۔ وہی پرکرتی کے پیغام ہوتے ہیں جو

मराठी पर हिन्द का हमला

(भाई श्रीपाद जोशी)

मैं यह लेख उनके लिये नहीं लिख रहा हूँ जो अपने को बहुत ज्यादा समझदार या बहुत विशाल हृदय के मानते हैं. यह तो उन लोगों के विचार के लिये है जो मेरे जैसे ही कम समझदार और तंग नजर समझे जाते हैं. आजकल भाषा की नींव पर प्रान्तों के फिर संगठन की माँग करने वालों को स्वार्थी और तंगनजर कहा जाता है. इस लिहाज से समाजवादी, साम्यावादी और भाषावार प्रान्त रचना चाहने वाले कांग्रेसी, सभी तंग ख़याल हो जाते हैं. मैं अपने को इन्हीं आदमियों में शामिल करता हूँ, क्यों कि मैं आम जनता की शक्ति और बुद्धि पर विश्वास रखता हूँ. मेरा अक़ीदा है कि जनता को उसकी अपनी भाषा मे शिक्षा-दीक्षा मिलने से ही—जैसा कि रूस और दूसरे प्रगतिशील देशों में हो रहा है—उसकी उचित प्रगति जल्द से जल्द हो सकती है. मुझे यह पक्का विश्वास है कि इस महाद्वीप जैसे देश मे चलने वाली छोटी-बड़ी अनगिनत भाषाओं को मिटाकर एक ही भाषा को रिवाज देना न संभव है न उचित ही. और इसलिये मैं समझता हूँ कि हर जबान को अपने अपने दायरे में पनपने का मौक़ा देने के लिये भाषावार प्रान्त-रचना होने की सख्त जरूरत है.

लेकिन लगभग सभी छोटे बड़े हिन्दी भाषी नेता भाषावार

مراٹھی پر ھندي کا حملہ

(بھائي شري پاد جوشی)

میں یہ لیکھ ان کے لئے نہیں لکھ رہا ہوں جو اپنے کو بہت زیادہ سمجھدار یا بہت وشال ہردیہ کے مانتے ھیں . یہ تو ان لوگوں کے وچار کے لئے ھے جو میرے جیسے ھی کم سمجھدار اور تنگ نظر سمجھے جاتے ھیں . آجکل بھاشا کي نیو پر پرانتوں کے پھر سنگٹھن کي مانگ کرنے والوں کو سوارتھی اور تنگ نظر کہا جاتا ھے . اس لحاظ سے سماجوادي، سامیہ وادی اور بھاشاوار پرانت رچنا چاھنے والے کانگریسی، سبھی تنگ خیال ھوجاتے ھیں . میں اپنے کو ان ھي آدمیوں میں شامل کرتا ہوں . کیونکہ میں عام جنتا کی شکتي اور بدھی پر وشواس رکھتا ھوں . میرا عقیدہ ھے کہ جنتا کو اس کي اپني بھاشا میں شکشا دیکشا ملنے سے ھي — جیسا کہ روس اور دوسرے پرگتی شیل دیشوں میں ھو رہا ھے— اس کي اُچت پرگتی جلد سے جلد ھوسکتي ھے . مجھے یہ پکا وشواس ھے کہ اس مہادیپ جیسے دیش میں چلنے والی چھوٹی بڑی ان گنت بھاشاؤں کو مٹاکر ایک ھی بھاشا کو رواج دینا نہ سمبھو ھے نہ اُچت ھی . اور اس لئے میں سمجھتا ھوں کہ ھر زبان کو اپنے اپنے دائرے میں پنپنے کا موقعہ دینے کے لئے بھاشاوار پرانت رچنا ھونے کی سخت ضرورت ھے .

لیکن لگ بھگ سبھی چھوٹے بڑے ھندی بھاشی نیتا بھاشاوار

(۴۵۲)

प्रान्त-रचना का कसकर विरोध करते चले आ रहे हैं. जब हिन्दी राज भाषा नहीं बनी थी तब यह विरोध कुछ छिपा और हलका था लेकिन जबसे हिन्दी पर राज भाषा की मुहर लग गई है, हिन्दी वालों के दिमाग़ आठवें आसमान पर चढ़े हुए हैं. वह भाषावार प्रान्त रचना का विरोध तो करते ही हैं साथ में उसकी माँग करने वालों को तुच्छ और तंग ख़याल भी समझते हैं. असल में देखा जाय तो जिनकी मादरी ज़बान हिन्दी या उर्दू नहीं है वह सब लोग भाषावार प्रान्त रचना चाहते हैं—फिर वह पंजाबी हों, मराठी हों, कन्नड़ हों या और कोई हों. उसके सबूत के तौर पर डाक्टर पट्टाभि सीता रमय्या और श्री पुरुषोत्तम दास टंडन का कांग्रेस की सदारत के लिये जो मुक़ाबला हुआ था उसकी मिसाल पेश की जा सकती है. उसमें श्री पट्टाभि भाषावार प्रान्त-रचना के हामी थे और टंडन जी उस के मुख़ालिफ़. अहिन्दी भाषी जनता ने श्री पट्टाभि को बहुमत से चुनकर अपनी राय ज़ाहिर कर दी थी. विधान परिषद् में भी हमने देखा है कि हिन्दी वालों की ताना शाही से ऊबकर अहिन्दी वालो ने किस तरह उनका डटकर मुक़ाबला किया और किस तरह 'अंतरराष्ट्री भारती'' अंकों को हिन्दी के मत्थे मढ़कर उसे उसका उचित स्थान बतला दिया.

विधान परिषद का फ़ैसला होते ही हिन्दी वालों ने देश भर पर छा जाने के मनसूबे बाँधना शुरू किये. वह तो पहले से ही 'राष्ट्रभाषा हिन्दी' और 'राष्ट्रलिपी नागरी' के नारे लगाते आये हैं. इस लिये विधान परिषद के निर्णय से उनमें बेहद जोश उमड़ आया और उन्हों ने अपने पड़ोस के अहिन्दी प्रान्तों पर हमला शुरू किया. इस हमले

پرانت رچنا کا کس کر وروده کرتے چلے آرھے ھیں . جب ھندی راج بھاشا نہیں بنی تھی تب یہ وروده کچھ چھپا اور ھلکا تھا لیکن جب سے ھندی پر راج بھاشا کی مہر لگ گئی ھے' ھندی والوں کے دماغ آٹھویں آسمان پر چڑھے ھوئے ھیں . وہ بھاشا وار پرانت رچنا کا وروده تو کرتے ھی ھیں' ساتھ میں اُس کی مانگ کرنے والوں کو تچھ اور تنگ خیال بھی سمجھتے ھیں . اصل میں دیکھا جائے تو جنکی مادری زبان ھندی یا اُردو نہیں ھے وہ سب لوگ بھاشا وار پرانت رچنا چاھتے ھیں — پھر وہ پنجابی ھوں' مراتھی ھوں' کنڑ ھوں یا اور کوئی ھوں . اس کے ثبوت کے طور پر ڈاکٹر پٹا بھی سیتا رمیا اور شری پرشوتم داس ٹنڈن کا کانگریس کی صدارت کے لئے جو مقابلہ ھوا تھا اس کی مثال پیش کی جاسکتی ھے . اس میں شری پٹا بھی بھاشا وار پرانت رچنا کے حامی تھے اور ٹنڈن جی اس کے مخالف . اھندی بھاشی جنتا نے شری پٹا بھی کو بہو مت سے چنکر اپنی رائے ظاھر کردی تھی . ودھان پریشد میں بھی ھم نے دیکھا ھے کہ ھندی والوں کی تانا شاھی سے اُوب کر اھندی والوں نے کس طرح انکا ڈٹ کر مقابلہ کیا اور کس طرح ' انتر راشٹری بھارتی ' انکوں کو ھندی کے متھے مڑھکر اسے اس کا اُچت استھان بتلا دیا .

ودھان پریشد کا فیصلہ ھوتے ھی ھندی والوں نے دیش بھر پر چھا جانے کے منصوبے باندھنا شروع کئے . وہ تو پہلے سے ھی 'راشٹر بھاشا ھندی' اور 'راشٹر لپی ناگری' کے نعرے لگاتے ائے ھیں . اسلئے ودھان پریشد کے نرنے سے ان میں بے حد جوش اُمڑ آیا اور اُنھوں نے اپنے پڑوس کے اھندی پرانتوں پر حملہ شروع کیا . اس حملے

के रूप के बारे में सोचने से पहले हम इस बात पर विचार करें कि आया हिन्दीके सर राष्ट्र भाषा का सेहरा बँधा भी है या नहीं. विधान परिषद् के ठहराव में हिन्दी को 'राजभाषा' (State language) के तौर पर माना गयाहै. उसे कहीं भी 'राष्ट्रभाषा' (Lingua franca or National language) नहीं बताया गया. राष्ट्र भाषाका निर्णय दस-बीस या सौ-दो सौ चुने हुए आदमी बैठकर कर ही नहीं सकते. वह तो सारी जनता का सवाल है. विधान परिषद् सिर्फ़ 'राजभाषा' का ही फ़ैसला कर सकती थी और वही उसने किया. जब सारी जनता को हिन्दी के बड़प्पन और उपयोगिता का पूरा पूरा विश्वास हो जायगा और हिन्दी की तानाशाही का डर दूसरी प्रांती भाषाओं के दिल से निकल जायगा तभी वह राष्ट्रभाषा की गद्दी पर बैठ सकेगी. तबतक हिन्दी का दर्जा मामूली राज भाषा का ही रहेगा. केन्द्री सरकार और रियासती (सूबाई) सरकारों के बीच सम्बन्ध रखने वाली अंग्रेज़ी की जगह हिन्दी एक कड़ी का कम करेगी. उसे रियासती सरकारों के कामों में दखल देने का कोई अधिकार नहीं. एक एक रियासत का कारोबार वहाँ की मुकामी भाषाओं में ही चला करेगा अंतर प्रान्ती कारबार में हिन्दी का इस्तेमाल जरूर बढ़ता जायेगा, लेकिन इस तरह अंतर प्रान्ती छेत्र में काम करने वाले लोग हमेशा कम ही रहेंगे. इसका मतलब यह हुआ कि हिन्दी को सिर्फ़ राज काज के कामोंमें ही थोड़ा बहुत बड़प्पन मिला है और वह भी इसपर निर्भर हैं कि पंद्रह साल बाद अंग्रेजी का स्थान क्या रहेगा. अंग्रेजी को तो इस देश से निकल जाना ही पड़ेगा. लेकिन अहिन्दी वाले यह कभी गवारा न करेंगे कि अंग्रेजी की जगह हिन्दी

کے روپ کے بارے میں سوچنے سے پہلے ہم اس بات پر وچار کریں کہ آیا ہندی کے سر راشٹر بھاشا کا سہرا بندھا بھی ہے یا نہیں ۔ ودھان پریشد کے ٹھہراؤ میں ہندی تو 'راج بھاشا' (State Language) کے طور پر مانا گیا ہے ۔ اسے کہیں بھی 'راشٹر بھاشا' (Lingua franca or National Language) نہیں بتایا گیا ۔ راشٹر بھاشا کا نرنے دس بیس یا سو دو سو چنے ہوئے آدمی بیٹھ کر کر ہی نہیں سکتے۔ وہ تو ساری جنتا کا سوال ہے۔ ودھان پریشد صرف راج بھاشا کا ہی فیصلہ کر سکتی تھی اور وہی اس نے کیا ۔ جب ساری جنتا کو ہندی کے بڑپن اور اپیوگتا کا پورا پورا وشواس ہوجائیگا اور ہندی کی تانا شاہی کا ڈر دوسری پرانتی بھاشاؤں کے دل سے نکل جائیگا تبھی وہ راشٹر بھاشا کی گدی پر بیٹھ سکیگی ۔ تب تک ہندی کا درجہ معمولی راج بھاشا کا ہی رہیگا ۔ کیندری سرکار اور ریاستی (صوبائی) سرکاروں کے بیچ سمبندھ رکھنے والی انگریزی کی جگہ ہندی ایک کڑی کا کام کریگی ۔ اسے ریاستی سرکاروں کے کاموں میں دخل دینے کا کوئی ادھیکار نہیں ۔ ہر ایک ریاست کا کاربار وہاں کی مقامی بھاشاؤں میں ہی چلا کریگا ۔ انتر پرانتی کاربار میں ہندی کا استعمال ضرور بڑھتا جائیگا' لیکن اس طرح انتر پرانتی چھیتر میں کام کرنے والے لوگ ہمیشہ کم ہی رہینگے ۔ اس کا مطلب یہ ہوا کہ ہندی کو صرف راج کاج کے کاموں میں ہی تھوڑا بہت بڑپن ملا ہے اور وہ بھی اس پر نربھر ہے کہ پندرہ سال کے بعد انگریزی کا استھان کیا رہیگا ۔ انگریزی کو تو اس دیش سے نکل جانا ہی پڑیگا' لیکن اہندی والے یہ کبھی گوارا نہ کرینگے کہ انگریزی کی جگہ ہندی

आये और वह अपनी साम्राजवादी नीति से प्रान्ती भाषाओं को जीना दूभर करदे.

इस डर का एक कारन है. चूँकि हिन्दी एक खास हिस्से की—उत्तरप्रदेश, बिहार, राजस्थान, मध्यप्रदेश, मध्यभारत रियासतों की प्रान्ती भाषा है इसलिये हिन्दीवाले सामझते हैं कि हिन्दी के राज-भाषा होने से मानो उनके हाथ में भाषा का साम्राज आ गया है. इस खतरे से महाराष्ट्र वाले बहुत पहले से आगाह हो चुके थे. इसीलिये उनमें से प्रगतिशील लोगों ने—तरक़्क़ी पसंद तबक़े ने—हिन्दी को उसके प्रान्ती रूप में कभी राष्ट्रभाषा नहीं माना. जबतक गांधी जी रहे, माहाराष्ट्र के बहुगिनत लोग और समूचे कांग्रेस वाले हिन्दुस्तानी को राष्ट्रभाषा मानते रहे. या यों कहिये कि हिन्दी के हिन्दुस्तानी रूप को उन्होंने राष्ट्रभाषा के तौर पर स्वीकार किया. जिसका सत यही है कि बम्बई सरकार ने अपने स्कूलों में हिन्दी की नहीं बल्कि हिन्दुस्तानी की शिक्षा को लाजिमी कर रखा था. आचार्य काका कालेलकर, श्री शंकर राव देव, आचार्य स. ज. भागवत और महाम-होपाध्याय द.वा. पोतदार हिन्दुस्तानी के सबसे बड़े हिमायती हैं. पिछले कुछ वर्षों से महाराष्ट्र के हिन्दू सभा वादी लोगों ने हिन्दी साहित्य सम्मेलन वालों से मिलकर, हिन्दी को राष्ट्रभाषा के तौर पर स्वीकार करके 'राष्ट्रभाषा प्राचार समिति' के जरिये उसका प्रचार शुरू तो किया है, और रूढ़िवादी यानी कट्टरपंथी और पिछगामो वर्गोंने उनको बढ़ावा भी दिया है. लेकिन श्री देव और पोतदार जी की अगवाई में जो 'महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार सभा' पूना में काम कर रही है उसको सभी तरक़्क़ी पसन्द वर्गों की हिमायत हासिल है. कांग्रेसी

آئے اور وه اپنی سامراج وادی نیتی سے پرانتی بھاشاؤں کو جینا دوبھر کردے.

اس ڈر کا ایک کارن هے. چونکه هندی ایک خاص حصے کی—اُتّر پردیش، بہار، راجستھان، مدھیه پردیش، مدھیه بھارت ریاستوں کی پرانتی بھاشا هے. اس لئے هندی والے سمجھتے هیں که هندی کے راج بھاشا هونے سے مانو اُن کے هاتھ میں بھاشا کا سامراج آگیا هے. اس خطره سے مها راشٹر والے بہت پہلے سے آگاه هو چکے تھے. اسی لئے اُن میں سے پرگتی شیل لوگوں نے—ترقی پسند طبقے نے—هندی کو اس کے پرانتی روپ میں کبھی راشٹر بھاشا نہیں مانا. جب تک گاندھی جی رهے، مها راشٹر کے بہو گنت اور سموچے کانگریس والے هندستانی کو راشٹر بھاشا مانتے رهے. یا یوں کہئے که هندی کے هندستانی روپ کو اُنہوں نے راشٹر بھاشا کے طور پر سویکار کیا. اس کا ثبوت یہی هے که بمبئی سرکار نے اپنے اسکولوں میں هندی کی نہیں بلکه هندستانی کی شکچھا کو لازمی کر رکھا تھا. آچاریه کاکا کالیلکر، شری شنکر راؤ دیو، آچاریه س. ج. بھاگوت اور مہامہو پادھیا د. و. پوتدار هندستانی کے سب سے بڑے حمایتی هیں. پچھلے کچھ برسوں سے مها راشٹر کے هندو سبھا وادی لوگوں نے هندی ساهتیه سمیلن والوں سے مل کر، هندی کو راشٹر بھاشا کے طور پر سویکار کرکے 'راشٹر بھاشا پرچار سمیتی' کے ذریعه اُس کا پرچار شروع تو کیا هے، اور روڑھی وادی یعنی کٹر پنتھی اور پچھ گامی ورگوں نے اُن کو بڑھاوا بھی دیا هے. لیکن شری دیو اور پوتدار جی کی اگوائی میں جو 'مها راشٹر راشٹر بھاشا پرچار سبھا' پونا میں کام کر رهی هے اُسکو سبھی ترقی پسند ورگوں کی حمایت حاصل هے. کانگریسی

"इसकी क़ीमत भी तो आपको काफ़ी..."

"जी, काफ़ी ही नहीं," बीच ही में सेठजी बोल उठे—"भला आपका क्या अन्दाज़ा हो सकता है"

"जी, यही," बड़ी हिम्मत करके कृष्णन ने कहा—"साठ-सत्तर रुपये तो लगे ही होंगे."

"बस ?" मुस्करा कर सेठ जी ने कहा.

"जी मेरा तो यही..."

"अन्दाज़ा है, क्यों ?...अजी जनाब, इस सूटकेस के लिये मैंने पूरे दस हज़ार दिये हैं." हर शब्द पर ज़ोर देकर सेठ जी ने कहा. 'अरे बाप रे !' कृष्णन भौंचक सा अम्मू का मुँह ताकने लगा. लेकिन अम्मू की आँखों में अचरज से ज्यादा कुछ और भरा था.

"क्यों, आप लोगों को अचरज हो रहा है न ?...और अगर मैं आप लोगों से कहूँ," सेठ जी ने गम्भीर हो कर कहा—"कि जब मैंने यह सूटकेस लिया, उसी वक़्त एक सज्जन ने एक पाव सत्तू पूरे सत्रह सौ में लिया, तब आप क्या ख़याल करेंगे ?"

"जी, मेरा दिमाग़ ख़राब हो जायगा....लेकिन आपने यह लिया कहां से ?" अचरज में डूबा हुआ कृष्णन बोला. अम्मू की आंखों की उत्सुकता का रंग और गहरा हो गया. वह आंखें फैलाये सेठ जी की ओर कुछ उतावली सी देखने लगी. सेठ जी का चेहरा और भी गम्भीर हो गया. उन्होंने धीरे धीरे कहा—"आप सोचते होंगे कि मैंने यह सूटकेस इतने दामों पर किसी दूकान से ख़रीदने की बेवक़ूफ़ी की होगी मगर ऐसा नहीं. मैंने यह सूटकेस बापूजी से ख़रीदा था. वह भी भाग्य कहिये कि मुझे इतने दामों पर भी..."

سوٹ کیس

"... کی قیمت بھی تو آپ کو کافی......"

"جی، کافی ہی نہیں،" بیچ ہی میں سیٹھ جی بول اٹھے "بھلا آپ ... اندازہ ہو سکتا ہے"

"جی، یہی،" بڑی ہمت کر کے کرشنن نے کہا "ساٹھ ستر روپے تو لگے ہی ... گے۔"

"..." مسکرا کر سیٹھ جی نے کہا۔

"جی میرا تو یہی......"

"... ہے، کیوں؟... اجی جناب، اس سوٹ کیس کے ... پورے دس ہزار دیئے ہیں۔" ہر شبد پر زور دے کر سیٹھ ... "ارے باپ رے!" کرشنن بھونچک سا امّو کا منہ تاکنے ... امّو کی آنکھوں میں اچرج سے زیادہ کچھ اور بھرا تھا۔

"کیوں، آپ لوگوں کو اچرج ہو رہا ہے نا؟..... اور اگر میں آپ لوگوں سے کہوں،" سیٹھ جی نے گمبھیر ہو کر کہا "کہ جب میں نے یہ سوٹ کیس لیا، اسی وقت ایک سجن نے ایک پاؤ ستو پورے سترہ سو میں لیا، تب آپ کیا خیال کریں گے؟"

"جی، میرا دماغ خراب ہو جائے گا...... لیکن آپ نے یہ لیا کہاں سے؟" اچرج میں ڈوبا ہوا کرشنن بولا۔ امّو کی آنکھوں کی اُتسکتا کا رنگ اور گہرا ہو گیا۔ وہ آنکھیں پھیلائے سیٹھ جی کی اور کچھ اُتاولی سی دیکھنے لگی۔ سیٹھ جی کا چہرا اور بھی گمبھیر ہو گیا۔ انھوں نے دھیرے دھیرے کہا "آپ سوچتے ہوں گے کہ میں نے یہ سوٹ کیس اتنے داموں پر کسی دکان سے ... ایسا نہیں۔ میں نے یہ سوٹ کیس باپو جی ... اتنے داموں پر بھی......"

और समाज वादी कार कर्ताओं की मदद से इस सभा का काम बड़े ज़ोर शोर से चल रहा है और हर साल हज़ारों स्त्री-पुरुष, लड़के-लड़कियाँ हिन्दुस्तानी का ज्ञान हासिल कर रही हैं. इस सभा का यह विश्वास है कि हिन्दी का वह रूप ही राष्ट्रभाषा का स्थान ले सकता है जिसमें उर्दू और हिन्दुस्तानी की शैलियाँ भी शामिल हों और जिसका दरवाज़ा सभी प्रान्ती भाषाओं के खिराज के लिये हमेशा खुला हो.

हिन्दीभाषा की दो प्रधान धाराएँ हैं. एक उसकी प्रान्ती धारा और दूसरी कुलहिन्द धारा. इस कुलहिन्द धारा को ही, जिसमें उर्दू और दूसरी प्रान्ती भाषाओं के छोटे मोटे प्रवाहों को जज़्ब किया जा सकता है और किया जाना चाहिये, हम अहिन्दी भाषी लोग हिन्दुस्तानी नाम देते हैं जहाँ तक इस कुलहिन्द धारा का सवाल है, उसका विरोध करने की इच्छा किसी के दिल में नहीं होगी, क्योंकि जिस धारा को बलवान और प्राणदायिनी बनाने का काम सारे भारत को करना है, उस राष्ट्रभाषा के रूप का फ़ैसला किसी एक भाषा-भाषी बाबूओं की इच्छा से नहीं होगा.

लेकिन जहाँ तक प्रान्ती धारा का सवाल है उसकी ताना शाही भी प्रान्ती भाषा बर्दाश्त नहीं कर सकेगी. इलाहाबाद का हिन्दी साहित्य सम्मेलन पूना में आकर हमें यह सिखाये कि 'हम जो बोलें वही तुम्हारी राष्ट्रभाषा होगी' तो दूसरे प्रान्तों की बात तो मैं नहीं जानता, कम से कम प्रगतिशील महाराष्ट्र तो इसे कभी मंज़ूर नहीं करेगा. हिन्दी साहित्य सम्मेलन को चाहिये कि वह हिन्दी साहित्य के विकास की तरकीबें सोचता रहे क्यों कि हमारी प्रान्ती

اور سماج وادی کار کرتاؤں کی مدد سے اِس سبها کا کام بڑے زور شور سے چل رها هے اور هر سال هزاروں استری پرش' لڑکے لڑکیاں هندستانی کا حاصل گیان کر رهی هیں . اس سبها کا یه وشواس هے که هندی کا وه روپ هی راشٹر بهاشا کا استهان لے سکتا هے جسمیں اُردو اور هندستانی کی شیلیاں بهی شامل هوں اور جس کا دروازه سبهی پرانتی بهاشاؤں کے خراج کے لئے همیشه کهلا هو .

هندی بهاشا کی دو پردهان دهارائیں هیں . ایک اسکی پرانتی دهارا اور دوسری کل هند دهارا . اس کل هند دهارا کو هی' جس میں اُردو اور دوسری پرانتی بهاشاؤں کے چهوٹے موٹے پرواهوں کو جذب کیا جاسکتا هے اور کیا جانا چاهئے' هم اهندی بهاشی لوگ هندستانی نام دیتے هیں . جهاں تک اس کل هند دهارا کا سوال هے' اُسکا ورودھ کرنے کی اِچها کسی کے دل میں نهیں هوگی' کیونکه اس دهارا کو بلوان اور پران دائنی بنانے کا کام سارے بهارت کو کرنا هے' راشٹر بهاشا کے روپ کا فیصله کسی ایک بهاشا بهاشی بابوؤں کی اِچها سے نهیں هوگا

لیکن جهاں تک پرانتی دهارا کا سوال هے اُس کی تانا شاهی کوئی بهی پرانتی بهاشا برداشت نهیں کرسکیگی . الٰهآباد کا هندی ساهتیه سمیلن پونا میں آکر همیں یه سکهائے که 'هم جو بولیں وهی تمهاری راشٹر بهاشا هوگی' تو دوسرے پرانتوں کی بات تو میں نهیں جانتا کم سے کم پرگتی شیل مهاراشٹر تو اُسے کبهی منظور نهیں کریگا . هندی ساهتیه سمیلن کو چاهئے که وه هندی ساهتیه کے وکاس کی ترکیبیں سوچتا رهے کیونکه همارے پرانتی

भाषाओंके सामने हिन्दी बहुत ही पिछड़ी हुई और ढीली ढाली भाषा है. उसका व्याकरन अभी तक तै नहीं हुआ है. उसका साहित्य चौमुखी प्रगति नहीं कर सका है. इसलिये हिन्दी साहित्य सम्मेलन भाषा साम्राजवाद के नशे में सस्ते क़िस्म के प्रचार के पीछे न पड़कर राष्ट्र भाषा के प्रचार की ज़िम्मेवारी सरकार पर या भारत की जनता पर छोड़कर, अपनी प्रान्ती भाषा की उन्नति करता रहे तो उससे हिन्दी का बहुत कुछ भला होगा. लेकिन आजकल के सम्मेलन के करता धरता लोगों की मनोदशा को देखते हुए इस आशा के पूरा होने का कोई लच्छन नहीं दिखाई देता.

हिन्दुस्तानी भाषा किसी खास प्रान्त या फिरक़े की बपौती नहीं है, इसलिये उससे यह डर नहीं था कि वह प्रान्ती भाषाओं में दख़ल देगी. बल्कि हिन्दी वालों और उर्दू वालों को भी औरों की तरह उसे सीखना पड़ता और वह अहिन्दी-भाषी जनता पर आज की तरह रोब न जमा पाते.

यह तो हुआ हिन्दी और दूसरी प्रान्ती भाषाओं का आपसी संबंध. इसमें मैंने जो डर दिखाया है उसके लिये मेरे पास खुले सबूत हैं. हिन्दी और मराठी की सरहदें मध्यप्रदेश (सी. पी.) में एक दूसरी से सटी हुई हैं. वहाँ हिन्दीवालों ने मराठी पर हमला तो पहले से ही शुरू कर दिया था, लेकिन जबतक राज भाषा का निर्नय नहीं हुआ था, इस हमले का रूप कुछ छिपा हुआ था. अब जब कि हिन्दी राजभाषा हो चुकी है, सी पी. के हिन्दीवालों ने मराठी पर खुल्लम खुल्ला धावा बोल दिया है. मराठी पढ़ाने वाले स्कूल बन्द कराके हिन्दी के स्कूल खोले जा रहे हैं. नागपूर विद्यापीठ में हिन्दी

بھاشاؤں کے سامنے ہندی بہت ہی پچھڑی ہوئی اور ڈھیلی ڈھالی بھاشا ہے . اسکا ویاکرن ابھی تک طے نہیں ہوا ہے . اسکا ساہتیہ چومکھی پرگتی نہیں کرسکا ہے . اسلئے ہندی ساہتیہ سمیلن بھاشا سامراج واد کے نشہ میں سستے قسم کے پرچار کے پیچھے نہ پڑکر راشٹر بھاشا کے پرچار کی ذمہ‌داری سرکار پر یا بھارت کی جنتا پر چھوڑ کر اپنی پرانتی بھاشا کی اُنتی کرتا رہے تو اُس سے ہندی کا بہت کچھ بھلا ہوگا . لیکن آجکل کے سمیلن کے کرتا دھرتا لوگوں کی منو دشا دیکھتے ہوئے اس آشا کے پورا ہونے کا کوئی لچھن دکھائی نہیں دیتا .

ہندستانی بھاشا کسی خاص پرانت یا فرقہ کی بپوتی نہیں ہے' اسلئے اس میں یہ ڈر نہیں تھا کہ وہ پرانتی بھاشاؤں میں دخل دیگی بلکہ ہندی والوں اور اُردو والوں کو بھی اوروں کی طرح اُسے سیکھنا پڑتا اور وہ اہندی بھاشی جنتا پر آج کی طرح رعب نہ جما پاتے .

یہ تو ہوا ہندی اور دوسری پرانتی بھاشاؤں کا آپسی سمبندھ. اس میں جو میں نے ڈر دکھایا ہے اس کے لئے میرے پاس کھلے ثبوت ہیں . ہندی اور مراٹھی کی سرحدیں مدھیہ پردیش (سی . پی .) میں ایک دوسرے سے سٹی ہوئی ہیں . وہاں ہندی والوں نے مراٹھی پر حملہ تو پہلے سے ہی شروع کردیا تھا' لیکن جب تک راج بھاشا کا نرنے نہیں ہوا تھا' اس حملے کا روپ کچھ چھپا ہوا تھا . اب جب کہ ہندی راج بھاشا ہوچکی ہے' سی . پی . کے ہندی والوں نے مراٹھی پر کھلم کھلا دھاوا بول دیا ہے . مراٹھی پڑھانے والے اسکول بند کراکے ہندی کے اسکول کھولے جارہے ہیں . ناگپور ودیا پیٹھ میں ہندی

का दौर दौरा शुरू हो गया है. (हालाँ कि हिन्दी वालों को अब सागर का अलग विद्यापीठ मिल गया है.) और हर तरह से मराठी का नामो निशान मिटाकर हिन्दी को जबरदस्ती लोगों पर लादने की कोशिश की जा रही है. और कोई हिन्दी वाला माई का लाल ऐसा नहीं निकलता जो इस अत्याचार को रोकना तो दूर रहा, उसकी निन्दा भी करे. यह सब मैं अपने मन की बातें नहीं कह रहा हूँ. अभी पिछले महीने चांदा (सी. पी.) में जो विदर्भ (बेरार) साहित्य सम्मेलन हुआ उसमें इस सम्बन्ध में जो ठहराव पास हुआ उसका अनुवाद नीचे दिया जा रहा है. छठा ठहराव यह है—

" (सी. पी.) में राजकाज की सहूलियत के लिये जिला, तहसील या जनपद वग़ैरा जो विभाग किये गये हैं उनमें कई जिलों, तहसीलों और जनपदों में हिन्दी-मराठी हिस्से खिल्त-मिल्त हो गये हैं और उससे हिन्दी-मराठी के सीमा प्रदेश में मराठी भाषा-भाषियों पर शिक्षा और दूसरी बातों में अन्याय हो रहा है. नये विधान में हिन्दी और मराठी दोनों भाषाओं को रियासती (प्रान्ती) (State Language) के तौर पर माना गया है. ऐसी हालत में यह सम्मेलन मध्यप्रदेश सरकार से अनुरोध करता है कि जिलों, तहसीलों और जनपदों की सीमाएँ नये सिरे से इस तरह तय की जायें जिससे मध्यप्रदेश की मराठी भाषी जनता को हिन्दी भाषी विभागों में कम गिनत जमात की हैसियत से न रहना पड़े.

"इसी तरह बहु गिनत मराठी भाषी विभागों में मराठी के प्रायमरी स्कूलों को बन्द करके हिन्दी का जो हमला शुरू हुआ है उसे भी रोका जाय.''

کا دور دورا شروع ہوگیا ہے . (حالانکہ ہندی والوں کو اب ساگر کا الگ ودیا پیٹھ مل گیا ہے) اور ہر طرح سے مراٹھی کا نام و نشان مٹاکر ہندی کو زبردستی لوگوں پر لادنیکی کوشش کی جارہی ہے اور کوئی ہندی والا مائی کا لال ایسا نہیں نکلتا جو اس اتیاچار کو روکنا تو دور رہا اُسکی نندا بھی کرے . یہ سب میں اپنے من کی باتیں نہیں کہہ رہا ہوں . ابھی پچھلے مہینے چاندا (سی. پی.) میں جو ودربھ (برار) ساہتیہ سمیلن ہوا اُس میں اس سمبندھ میں جو ٹھہراؤ پاس ہوا اسکا انوواد نیچے دیا جارہا ہے . چھٹا ٹھہراؤ یہ ہے —

" (سی . پی .) میں راج کاج کی سہولت کے لئے ضلع' تحصیل یا جنپد وغیرہ جو وبھاگ کئے گئے ہیں انمیں کئی ضلعوں' تحصیلوں اور جنپدوں میں ہندی مراٹھی حصے خلط ملط ہوگئے ہیں اور اس سے ہندی مراٹھی کے سیما پردیش میں مراٹھی بھاشا بھاشیوں پر شکشا اور دوسری باتوں میں انیائے ہو رہا ہے . نئے ودھان میں ہندی اور مراٹھی دونوں بھاشاؤں کو ریاستی (پرانتی) (State Language) کے طور پر مانا گیا ہے . ایسی حالت میں یہ سمیلن مدھیہ پردیش سرکار سے انورودھ کرتا ہے کہ ضلعوں' تحصیلوں اور جنپدوں کی سیمائیں نئے سرے سے اسطرح طے کی جائیں جس سے مدھیہ پردیش کی مراٹھی بھاشی جنتا کو ہندی بھاشی وبھاگوں میں کم گنت جماعت کی حیثیت سے نہ رہنا پڑے .

" اسی طرح بہو گنت مراٹھی بھاشی وبھاگوں میں مراٹھی کے پرائمری اسکولوں کو بند کرکے ہندی کا جو حملہ شروع ہوا ہے اُسے بھی روکا جائے .''

यही हालत नागपूर रेडियो की भी है. असल में वहाँ मराठी के प्रोग्रामों को प्रधानता मिलनी चाहिये. लेकिन वहाँ तो हिन्दी का राज इस तरह चल रहा है कि मराठी बेचारी पराये घर में मेहमान की तरह दुबकी रहती है. इस बारे में भी विदर्भ साहित्य सम्मेलन ने एक ठहरात्र पास किया है.

यहाँ एक बात साफ कर देना चाहता हूँ. जो लोग इस तरह हिन्दी के हमले से परेशान होकर दुहाई दे रहे हैं वह कोई हिन्दी वालों के दुश्मन या प्रान्तीयता की कीचड़ में फँसे हुए नहीं हैं. उनमें से ज्यादा तर कांग्रेसी हैं, मध्यप्रदेश की सरकार पर उन्हें भी उतना ही विश्वास है जितना कि दूसरे प्रांतों के कांग्रेसियों का अपनी अपनी सरकारों पर होता है, और कई हिन्दीवाले उनके निजी मित्र हैं. फिर भी उन्हें कमर बाँधकर अपनी मातृभाषा की रक्षा के लिये खड़ा होना पड़ा है.

(४६०)

इस सम्बन्ध में श्री पु. य. देश पांडे का भाषन. जो उन्होंने विदर्भ साहित्य सम्मेलन में दिया था. मराठी वालों की भूमिका का ठीक ठीक प्रतिनिधित्व करता है. श्री देश पांडे मध्यप्रदेश के उन इने गिने विचारकों में से हैं जो हर सवाल की तह तक जाते हैं. मध्यप्रदेश के घर मंत्री श्री मिश्र जी जैसे हिन्दी भाषी नेताओं से उनकी बड़ी दोस्ती है इसलिये यह नहीं कहा जा सकता कि वह तंग प्रान्तवाद या संकुचित भाषावाद के चक्कर में फँसे हुए हैं. वह अपने भाषन में कहते हैं :—

"वह किसी को नहीं भूलना चाहिये कि सबसे पहले महाराष्ट्र के लोगों ने ही यह आवाज बुलन्द की थी कि हिन्दी पूरे भारत

یہی حالت ناگپور ریڈیو کی بھی ہے . اصل میں وہاں مراتھی کے پروگراموں کو پردھانتا ملنی چاہئے' لیکن وہاں تو ہندی کا راج اس طرح چل رہا ہے کہ مراتھی بیچاری پرائے گھر میں مہمان کی طرح دبکی رہتی ہے . اس بارے میں بھی ودربھ ساہتیہ سمیلن نے ایک ٹھہراؤ پاس کیا ہے .

یہاں ایک بات صاف کردینا چاہتا ہوں . جو لوگ اس طرح ہندی کے حملے سے پریشان ہوکر دہائی دے رہے ہیں وہ کوئی ہندی والوں کے دشمن یا پرانتیتا کی کیچڑ میں پھنسے ہوئے نہیں ہیں . اُن میں سے زیادہ تر کانگریسی ہیں . مدھیہ پردیش کی سرکار پر اُنہیں بھی اُتنا ہی وشواس ہے جتنا کہ دوسرے پرانتوں کے کانگریسیوں کا اپنی اپنی سرکاروں پر ہوتا ہے' اور کئی ہندی والے اُن کے نجی مترا ہیں . پھر بھی اُنہیں کمر باندھ کر اپنی ماتر بھاشا کی رکشا کے لئے کھڑا ہونا پڑا ہے .

(۴۶۰)

اس سمبندھ میں شری پ . ی . دیش پانڈے کا بھاشن' جو اُنہوں نے ودربھ ساہتیہ سمیلن میں دیا تھا' مراتھی والوں کی بھومیکا کا ٹھیک ٹھیک پرتی ندھتو کرتا ہے . شری دیش پانڈے مدھیہ پردیش کے اُن اِنے گنے وچارکوں میں سے ہیں جو ہر سوال کی تہہ تک جاتے ہیں . مدھیہ پردیش کے گھر منتری شری مشر جی جیسے ہندی بھاشی نیتاؤں سے اُن کی بڑی دوستی ہے . اسلئے یہ نہیں کہا جا سکتا کہ وہ تنگ پرانتواد یا سنکوچت بھاشاواد کے چکر میں پھنسے ہوئے ہیں . وہ اپنے بھاشن میں کہتے ہیں :—

"یہ کسی کو نہیں بھولنا چاہئے کہ سب سے پہلے مہا راشٹر کے لوگوں نے ہی یہ آواز بلند کی تھی کہ ہندی پورے بھارت

की राज भाषा होनी चाहिये. हिन्दुस्तान में 'सर्वोपर लोकशाही जनराज, के क़ायम होते ही हिन्दी उसकी राज्यभाषा बनी इसके लिये हम महाराष्ट्र के लोगो को ख़ुशी ही हुई है. लेकिन राजभाषा के नाते देश के राज काज मे और सार्वजनिक व्यवहार मे हिन्दी को जो स्थान मिलना चाहिये उसे मानते हुए भी अपनी मातृभाषा की रक्षा और बढ़ौती करना हम अपना पहला कर्त्तव्य मानते हैं. इसलिये आज की हालत मे विदर्भ साहित्य संघ का यह पहला कर्तव्य है कि मराठी प्रांत में रहने वाला एक भी मराठी भाषी अमराठी नही होगा इसकी फ़िक्र वह करे. आज नागपूर शहर मे सब जगह हिन्दी का इतना बोलबाला है कि जिस तरह आज यह सवाल खड़ा किया गया है कि बम्बई शहर महाराष्ट्र का है या नहीं. उसी तरह मुझे डर है कि कल यही सवाल नागपूर शहर के सम्बन्ध में भी खड़ा होगा. हिन्दी के यश का हमें ज़रा सा भी रंज नही है, लेकिन हमें सिर्फ़ इतना ही देखना है कि हिन्दी का यश मराठी जनता की मातृ-भाषा के विकास में किसी तरह की बाधा न डाले.......

"जनता राज की स्थापना के साथ साथ भाषावार प्रांत रचना के न होने से अपनी मातृभाषा को जीवित रखने का महान प्रश्न आज हमारे सामने खड़ा है.......

"राजभाषा के नाते हिन्दी भाषा सीखना हमारा कर्त्तव्य है और महाराष्ट्र की जनता को राष्ट्रीयता के पाठ पढ़ाने के लिये किसी दूसरेको तकलीफ़ उठानेकी जरूरत नहीं है. राजभाषा और मातृभाषाके सम्बन्ध और काम एक दूसरेके पोषक होने चाहिये. लेकिन बदक़िस्मती से नागपूर विद्यापीठ में आज इससे उलटी ही हालत दिखाई देरही है.

کی راج بھاشا ھونی چاھئے . ھندستان میں 'سروو پر لوک شاھی جنراج' کے قائم ھوتے ھی ھندی اُس کی راج بھاشا بنی . اس کے لئے ھم مہا راشٹر کے لوگوں کو خوشی ھی ھوئی ھے . لیکن راج بھاشا کے ناتے دیش کے راج کاج میں اور سارو جنک ویوھار میں ھندی کو جو استھان ملنا چاھئے اُسے مانتے ھوئے بھی اپنی ماتر بھاشا کی رکشا اور بڑھوتی کرنا ھم اپنا پہلا کرتویہ مانتے ھیں . اس لئے آج کی حالت میں ودربھ ساھتیہ سنگھ کا یہ پہلا کر تو یہ کہ مراٹھی پرانت میں رھنے والا ایک بھی مراٹھی بھاشی امراٹھی نہیں ھوگا' اس کی فکر وہ کرے آج ناگپور شہر میں سب جگہ ھندی کا اتنا بول بالا ھے کہ جس طرح آج یہ سوال کھڑا کیا گیا ھے کہ بمبئی شہر مہاراشٹر کا ھے یا نہیں . اسی طرح مجھے ڈر ھے کہ کل یہی سوال ناگپور شہر کے سمبندھ میں بھی کھڑا ھوگا . ھندی کے یش کا ھمیں ذرا سا بھی رنج نہیں ھے' لیکن ھمیں صرف اتنا ھی دیکھنا ھے کہ ھندی کا یش مراٹھی جنتا کی ماتر بھاشا کے وکاس میں کسی طرح کی بادھا نہ ڈالے ......

" جنتا راج کی استھاپنا کے ساتھ ساتھ بھاشاوار پرانت رچنا کے نہ ھونے سے اپنی ماتر بھاشا کو جیوت رکھنے کا مہان پرشن آج ھمارے سامنے کھڑا ھے ......

" راج بھاشا کے ناتے ھندی بھاشا سیکھنا ھمارا کرتویہ ھے اور مہاراشٹر کی جنتا کو راشٹریتا کے پاٹھ پڑھانے کے لئے کسی دوسرے کو تکلیف اُٹھانے کی ضرورت نہیں ھے . راج بھاشا اور ماتر بھاشا کے سمبندھ اور کام ایک دوسرے کے پوشک ھونے چاھئے . لیکن بدقسمتی سے ناگپور ودیا پیٹھ میں آج اس سے اُلٹی ھی حالت دیکھائی دے رھی ھے .

"हिन्दी की सीनाजोरी से आज इस प्रांत के नागपूर, वर्धा, चांदा और भंडारा इन चारों जिलों पर अपना हक़ जमाने का झुकाव हिन्दी भाषा भाषियों में जोर पकड़ता जा रहा है. जिन सरहदी जिलों में हिन्दी और मराठी भागों का संगम हो गया है वहाँ पुराने मराठी स्कूलों को बन्द करके उनके बदले हिन्दी में प्रायमरी शिक्षा देने की कोशिश शुरू हो गई है. भाषावार प्रान्त रचना न होने से राजभाषा बनी हुई हिन्दी का आज प्रांती भाषाओं पर बाक़ायदा हमला शुरू हो गया है.......

"दर असल हिन्दी भाषा-भाषियों को ही चाहिये कि वह ऐसी कोशिश करें कि प्रांती भाषाओं पर हिन्दी किसी भी तरह हमला न करे क्योंकि राष्ट्रभाषा का विकास आपसी सहयोग और आपसी विश्वास से ही होने वाला है. लेकिन बद क़िस्मती से हिन्दी वालों को इस बात का भान नहीं है. इसलिये आज मराठी भाषा की रक्षा का सवाल पैदा हुआ है...."

देखा आपने, हिन्दी के हमले से मराठी वाले कितने परेशान हो गये हैं? आप तो अभी हिन्दी-उर्दू के झगड़े में ही फँसे हुए हैं. लेकिन हम तो इस नई राजभाषा के बोझ के नीचे दबे ही जा रहे हैं. हाँ, यह ठीक है कि मराठी भाषा और महाराष्ट्र की जनता किसी से दबने वाली नहीं है, लेकिन अच्छा तो यह है कि बड़े संघर्ष की नौबत आने से पहले ही हम सब चेत जायँ और एक-दिल हो कर अपना यह घरेलू सवाल आपस में ही हल कर लें.

नोट—विद्वान लेखक के हर विचार से हम पूरी तरह सहमत नहीं हैं. फिर भी इस लेख को हम इस लिये आदर के साथ छाप

" ہندی کی سینہ زوری سے آج اس پرانت کے ناگپور' واردھا' چاندا اور بھنڈارا ان چاروں ضلعوں پر اپنا حق جمانیکا جھکاؤ ہندی بھاشا بھاشیوں میں زور پکڑتا جا رہا ہے . جن سرحدی ضلعوں میں ہندی اور مراتھی بھاگوں کا سنگم ہوگیا ہے وہاں پرانے مراتھی اسکولوں کو بند کرکے ان کے بدلے ہندی میں پرائمری ششا دینے کی کوشش شروع ہوگئی ہے . بھاشا وار پرانت رچنا نہ ہونے سے راج بھاشا بنی ہوئی ہندی کا آج پرانتی بھاشاؤں پر باقاعدہ حملہ شروع ہوگیا ہے......

" در اصل ہندی بھاشا بھاشیوں کو ہی چاہئے کہ وہ ایسی کوشش کریں کہ پرانتی بھاشاؤں پر ہندی کسی بھی طرح حملہ نہ کرے کیونکہ راشٹر بھاشا کا وکاس آپسی سہیوگ اور آپسی وشواس سے ہی ہونے والا ہے لیکن بدقسمتی سے ہندی والوں کو اس بات کا بھان نہیں ہے . اس لئے آج مراتھی بھاشا کی رکشا کا سوال پیدا ہوا ہے ......"

دیکھا آپ نے' ہندی کے حملے سے مراتھی والے کتنے پریشان ہوگئے ہیں ؟ آپ تو ابھی ہندی اُردو کے جھگڑے میں ہی پھنسے ہوئے ہیں . لیکن ہم تو اس نئی راج بھاشا کے بوجھ کے نیچے دبے ہی جا رہے ہیں . ہاں' یہ ٹھیک ہے کہ مراتھی بھاشا اور مہاراشٹر کی جنتا کسی سے دبنے والی نہیں ہے' لیکن اچھا تو یہ ہے کہ بڑے سنگھرش کی نوبت آنے سے پہلے ہی ہم سب چیت جائیں اور ایک دل ہوکر اپنا یہ گھریلو سوال آپس میں ہی حل کرلیں .

نوٹ ـــ ودوان لیکھک کے ہر وچار سے ہم پوری طرح سہمت نہیں ہیں . پھر بھی اس لیکھ کو ہم اسلئے آدر کے ساتھ چھاپ

रहे हैं क्योंकि लेखक के विचार बहुत से लोगों के विचार हैं. केवल एक बात लेखक की ठीक कर देना हम जरूरी समझते हैं. नये विधान के अनुसार हिन्दी को राजभाषा (State Language), जैसा लेखक ने कहना चाहा है, नहीं कहा जा सकता. विधान सभा के मेम्बरों में इस सवाल पर बहस होते समय हिन्दी के पच्चवालों ने पहले यह चाहा था कि हिन्दी को विधान में राष्ट्रभाषा (नैशनल लैङ्ग्वेज) कहा जाय. लोगों ने नहीं माना. इसपर उन्होंने चाहा कि हिन्दी को राजभाषा (State Language) ही कहा जाय. लोगों ने इसे भी नहीं माना. तब बहुत बहस के बाद तय हुआ कि हिन्दी को यूनियन की 'आफ़िशल लैंगवेज' कहा जाय जिसका अनुवाद, खास कर इस परिस्थिति में, दफ्तरी भाषा या शायद सरकारी भाषा हो सकता है, राष्ट्रभाषा या राजभाषा नहीं. हम लेखक को यह भी याद दिला देना चाहते हैं कि विधान सभा के ठहराव में हिन्दी का वही रूप तय किया गया है जो विद्वान लेखक ने चाहा है और जिसे अब तक बहुत से लोग हिन्दुस्तानी कहते रहे हैं. इसके विरुद्ध हिन्दी प्रेमियो की जितनी कोशिशें हैं वह विधान का साफ़ उलंघन हैं. विधान के ठहराव के शब्द किसी प्रान्ती या किसी भी दूसरी इस देश की भाषा की बढ़ौती और उसके विकास को किसी तरह भी रोकना नहीं चाहते.

—एडीटर

رهے هیں کیونکه لیکهک کے وچار بہت سے لوگوں کے وچار هیں . کیول ایک بات لیکهک کی ٹهیک کردیا هم ضروري سمجهتے هیں . نئے ودهان کے انوسار هندي کو راج بهاشا (State Language) جیسا لیکهک نے کہنا چاها هے' نہیں کہا جاسکتا . ودهان سبها کے ممبروں میں اس سوال پر بحث هوتے سمے هندی کے پکهش والوں نے پہلے یه چاها تها که هندی کو ودهان میں راشٹر بهاشا (National Language) کہا جائے . لوگوں نے نہیں مانا . اِس پر انهوں نے چاها که هندي کو راج بهاشا (State Language) هی کہا جائے . لوگوں نے اسے بهی نہیں مانا . تب بہت بحث کے بعد طے هوا که هندی کو یونین کي ' آفیشل لینگویج ' کہا جائے . جسکا انواد' خاصکر اس پرستتهی میں' دفتری بهاشا یا شاید سرکاری بهاشا هوسکتا هے' راشٹر بهاشا یا راج بهاشا نہیں . هم لیکهک کو یه بهي یاد دلا دینا چاهتے هیں که ودهان سبها کے ٹهہراو میں هندي کا وهی روپ کہا گیا هے جو ودوان لیکهک نے چاها هے اور جسے اب تک بہت سے لوگ هندستانی کہتے رهے هیں اس کے ورده هندی پریمیوں کي جتنی کوششیں هیں وہ ودهان کا صاف اُلنگهن هیں . ودهان کے ٹهہراؤ کے شبد کسی پرانتي یا کسی بهي دوسری اس دیش کي بهاشا کي بڑهوتي اور اس کے وکاس کو کسی طرح بهی روکنا نہیں چاهتے .

—ایڈیٹر

“ मसजिद में मेरा मालिक तो मुझे मिला ही नहीं ”

(गु. म.)

कई दिन हुए मुझे बाँदरा (जो बम्बई शहर के पास है) स्टेशन के नजदीक एक बूढ़े मुसलमान भाई दिखाई पड़े. वह अकेले एक कोने में खड़े हुए बार बार कह रहे थे—“मसजिद में मेरा मालिक तो मुझे मिला ही नहीं !” उनके यह शब्द सुन कर मैं अपनी चहल क़दमी में, जो मैं प्लेट फ़ार्म पर कर रहा था, कुछ देर के लिये रुक गया. फिर मैं ने उनकी तरफ़ बड़े ध्यान से देखा और मुझे उनसे बात करने का एक अन्दरूनी खिंचाव और ख़्वाहिश हुई.

“सलाम भाई साहब !” उनके पास पहुँच कर मैंने बड़े अदब से कहा.

‘सलाम !” उन्होंने जवाब दिया अगरचे उनकी आवाज़ के लहजे से मुझे ऐसा मालूम हुआ कि उन्हें मेरा उनसे मिलना कुछ ज़्यादा पसंद नहीं आया. फिर भी मैं ने उनसे कहा—‘भाई साहब, क्या मैं आप से पूछ सकता हूँ कि मसजिद में ‘ख़ुदा वन्देताला’ आपको क्यों नहीं मिले ?”

वह चुप रहे पर मैं ने अपना बोलना बंद न किया—“मसजिद तो ‘ख़ुदा वन्देताला’ का एक मुक़द्दस (पवित्र) मकान है. इसलिये आप उन्हें वहाँ ज़रूर मिल सकते हैं.’

”مسجد میں میرا مالک تو مجھے ملا ھی نہیں“

(گ — م)

کئی دن ھوئے مجھے باندرا (جو بمبئی شہر کے پاس ھے) اسٹیشن کے نزدیک ایک بوڑھے مسلمان بھائی دکھائی پڑے . وہ اکیلے ایک کونے میں کھڑے ھوئے بار بار کہ رھے تھے — ”مسجد میں میرا مالک تو مجھے ملا ھی نہیں !“ اُنکے یہ شبد سنکر میں اپنی چہل قدمی میں، جو میں پلیٹ فارم پر کر رھا تھا، کچھ دیر کے لئے رک گیا . پھر میں نے اُن کی طرف بڑے دھیان سے دیکھا اور مجھے اُن سے بات کرنے کا ایک اندرونی کھنچاؤ اور خواھش ھوئی .

”سلام بھائی صاحب !“ اُن کے پاس پہونچ کر میں نے بڑے ادب سے کہا .

” سلام !“ اُنھوں نے جواب دیا اگرچہ اُن کی آواز کے لہجہ سے مجھے ایسا معلوم ہوا کہ اُنھیں میرا اُن سے ملنا کچھ زیادہ پسند نہیں آیا . پھر بھی میں نے اُن سے کہا—”بھائی صاحب‘ کیا میں آپ سے پوچھ سکتا ھوں کہ ’مسجد میں خدا وند تعالیٰ‘ آپ کو کیوں نہیں ملے ؟“

وہ چپ رھے پر میں نے اپنا بولنا بند نہ کیا . ”مسجد تو ’خدا وند تعالیٰ‘ کا ایک مقدس (پوتر) مکان ھے . اسلئے آپ اُنھیں وھاں ضرور مل سکتے ھیں .“

इस पर वह ज़रा चिढ़ से गये. पर शायद मुझसे अपना पीछा छुड़ाने के इरादे से उन्होंने त्योरी चढ़ा कर कहा—"तो सुन लो तुम भी मेरे दुख की दास्तान. मैं लग भग पचास बरस से, वह मसजिद जो तुम्हें दूर नज़र आ रही है, उसमें हर रोज़ सुबह और शाम नमाज़ पढ़ता हूँ, हर हफ़्ता ग़रीबों को एक दिन खाना भी खिलाता हूँ. कुछ यतीमों की परवरिश और पढ़ाई के लिये हर महिने थोड़े रुपये भी ख़ैरात के तौर पर देता हूँ. अपने रोज़ाना व्योपार में किसी को ठगता नहीं और अपने बरताव से भी किसी को जान बूझ कर नाराज़ नहीं करता. इस तरह मैंने अपनी ज़िन्दगी आज तक बसर की है. मगर बहुत अरसा नहीं गुज़रा कि एक शाम जब मैं अपनी नमाज़ पूरी कर चुका था कि मुझे ऐसा मालूम हुआ जैसे कोई ग़ैबी (दैवी) आवाज़ कह रही है:—"इस तरह तुम चाहे हज़ार बरस तक मेरे सामने सजदा करते रहो मगर मैं तुम्हें कभी नहीं मिल सकता." यह सुनकर मैं बड़ा हैरान हुआ और तब ही से मैं सब को कहता फिरता हूँ. "मसजिद में मेरा मालिक मुझे तो मिला ही नहीं."

(४६४)

उनकी दास्तान सुन कर मैंने उनसे कहा.—"शुक्रिया भाई साहब. मगर बेअदबी माफ़. क्या मैं आप से यह पूछ सकता हूँ कि जिनको आप ख़ैरात देते हैं और जिन्हें आप अपने व्योपार में ठगते नहीं. जैसा कि आपने अभी फ़रमाया, वह सिर्फ़ मुसलमान ही हैं या और किसी धर्म के लोग भी हैं ?"

इस पर उन्होंने मेरी तरफ़ ज़रा ग़ुस्से भरी आँखों से देखा और कहा—"आपका मतलब ?"

اس پر وہ ذرا چڑھ سےگئے . پر شاید مجھسے اپنا پیچھا چھڑانے کے ارادے سے اُنھوں نے تھوری چڑھا کر کہا—"تو سن لو تم بھي میرے دکھ کی داستان . میں لگ بھگ پچاس برس سے' وہ مسجد جو تمھیں دور نظر آ رھي ھے' اُس میں ھر روز صبح اور شام نماز پڑھتا ھوں ' ھر ھفتہ غریبوں کو ایک دن کھانا بھی کھلاتا ھوں . کچھ یتیموں کی پرورش اور پڑھائي کے لئے ھر مھینہ تھوڑے روپئے بھی خیرات کے طور پر دیتا ھوں . اپنے روزانہ بیوپار میں کسی کو ٹھگتا نہیں اور اپنے برتاؤ سے بھي کسی کو جان بوجھ کر ناراض نہیں کرتا . اِس طرح میں نے اپنی زندگی آج تک بسر کي ھے . مگر بہت عرصہ نہیں گزرا کہ ایک شام جب میں اپنی نماز پوري کرچکا تھا کہ مجھے ایسا معلوم ھوا جیسے کوئي غیبی (دیوی) آواز کہہ رھي ھے :—"اِس طرح تم چاھے ھزار برس تک میرے سامنے سجدہ کرتے رھو مگر میں تمھیں کبھي نہیں مل سکتا ." یہ سنکر میں بڑا حیران ھوا اور تب ھی سے میں سب کو کہتا پھرتا ھوں . 'مسجد میں میرا مالک مجھے تو ملا ھی نہیں ."

(۴۶۴)

اُنکی داستان سنکر میں نے اُن سے کہا—"شکریہ بھائي صاحب . مگر بے ادبی معاف . کیا میں آپ سے یہ پوچھ سکتا ھوں کہ جن کو آپ خیرات دیتے ھیں اور جنھیں آپ اپنے بیوپار میں ٹھگتے نہیں ' جیسا کہ آپ نے ابھی فرمایا ' وہ صرف مسلمان ھی ھیں یا اور کسی دھرم کے لوگ بھي ھیں ؟"

اِس پر اُنھوں نے میري طرف ذرا غصے بھري آنکھوں سے دیکھا اور کہا—" آپکا مطلب ؟"

मैंने जवाब दिया—"भाई साहब मुझे तो ऐसा मालूम होता है कि अगर आप अपने मुसलमान लोगों के अलावा और धर्म वाले लोगों की भी कभी कभी प्रेम और मोहब्बत और सदाक़त से ख़ैरात और सेवा किया करेंगे तो यह नामुमकिन नहीं कि मालिक की कृपा आप पर हो और वह आपको सिर्फ मसजिद में ही नहीं बल्कि मसजिद के बाहर भी मिल जायें."

यह सुनकर उन्होंने मेरे सर की तरफ़ अपने एक हाथ से इशारा किया और कहा—"क्या आपकी ऊपर की मंजिल ख़ाली है ? या आपके दिमाग़ में कुछ ख़लल है ?"

मैं ने जवाब दिया—"आपकी दोनो बातें सही हैं क्योंकि अदालत ने ख़ुद मुझे ऐसा एक सर्टीफ़िकिट एक बार दिया था"

इस पर मालूम नहीं कैसे या क्यों उनका गुस्सा कुछ ठन्डा हो गया और वह अपने घर की तरफ़ रवाना हो गये. और मैं रेल में, जो उसी वक़्त प्लेट फ़ार्म पर आ चुकी थी, बैठकर अपने घर की तरफ़ चला गया.

लेकिन हाल मे ही उसी मुसलमान भाई से एक बार फिर रेल में मुलाक़ात हो गई. मुझे देखते ही वह अपनी जगह से उठ कर मेरे पास आ बैठे और उन्होंने कहा—"दोस्त ! तुम तो ख़ूब रहे. उस दिन से तुमने मुझे इस शक में डाल दिया है कि आया तुम ही पागल हो या मैं भी."

मैं ने आहिस्ता से जवाब दिय—"शायद हम दोनो ही."

میں نے جواب دیا—"بھائي صاحب مجھے تو ایسا معلوم ھوتا ھے کہ اگر آپ اپنے مسلمان لوگوں کے علاوہ اور دھرم والے لوگوں کی بھی کبھي کبھي پریم اور محبت اور صداقت سے خیرات اور سیوا کیا کریں گے تو یہ نا ممکن نہیں کہ مالک کی کرپا آپ پر ھو اور وہ آپ کو صرف مسجد میں ھي نہیں بلکہ مسجد کے باھر بھی مل جائیں ."

یہ سن کر اُنھوں نے میرے سر کي طرف اپنے ایک ھاتھ سے اِشارہ کیا اور کہا—"کیا آپ کی اوپر کي منزل خالی ھے ؟ یا آپ کے دماغ میں کچھ خلل ھے ؟"

میں نے جواب دیا—"آپکي دونوں باتیں صحیح ھیں کیونکہ عدالت نے خود مجھے ایسا ایک سرٹیفکیٹ ایک بار دیا تھا ."

اِس پر معلوم نہیں کیسے یا کیوں اُن کا غصہ کچھ ٹھنڈا ھو گیا اور وہ اپنے گھر کی طرف روانہ ھو گئے . اور میں ریل میں جو اُسی وقت پلیٹ فارم پر آچکی تھي بیٹھ کر اپنے گھر کي طرف چلا گیا .

لیکن حال ھی میں اُسي مسلمان بھائي سے ایک بار پھر ریل میں ملاقات ھو گئي . مجھے دیکھتے ھی وہ اپني جگہ سے اُٹھ کر میرے پاس آ بیٹھے اور اُنھوں نے کہا—"دوست ! تم تو خوب رھے . اُس دن سے تم نے مجھے اِس شک میں ڈال دیا ھے کہ آیا تم ھي پاگل ھو یا میں بھی ."

میں نے آھستہ سے جواب دیا—"شاید ھم دونوں ھي !"

"यह...यह...नहीं, नहीं," अम्मू तभी न जाने कैसे चीख उठी—"मेरा सर चकरा रहा है. चलिये, घर चलिये!" दोनों जल्दी से आ कर अपनी कार में बैठ गये. सेठ जी उनका मुंह ताकते रह गये.

(३)

"उस समय तुम्हें अचानक क्या हो गया, अम्मू ?" कृष्णन ने पूछा.

"कुछ नहीं, योंही..." अम्मू ने बात टालनी चाही.

"नहीं, योंही कैसे हो सकता है ? मैं देख रहा हूं, कि तुम तभी से बहुत उदास हो गई हो. कोई गूढ़ बात जरूर है. अगर तुम न बताना चाहो, तो..."

"नहीं, नहीं, ऐसा न कहिये ! भला आप से कोई बात मैं छिपा ही कैसे सकती हूं ?" अम्मू ने सर हिला कर कहा.

"तो फिर कह ही डालो. जब तक मुझे मालूम न हो जायगा..."

"यों तो बात कुछ कहने के लायक़ नहीं है. फिर भी जब आप को इस के लिये इतनी परेशानी है, तो मैं सुनाये ही देती हूं." कह कर अम्मू ने आँखें मूँद लीं, जैसे वह कोई बीती बात याद कर रही हो. फिर कुछ देर बाद बोली—"उस समय मैं यही रीब . . . समझ लीजिये कि आठ साल की थी."

"अच्छा", कृष्णन ने ध्यान से सुनते हुए कहा.

"एक शाम की बात है. मैं अम्मा के साथ स्कूल से लौटी, तो मेरे घर के सामने कुछ लोगों की भीड़ लगी थी. उनकी आँखें खुशी से चमक रही थीं. मैं कुछ न समझ सकी और आँखें झपकाती दौड़

...نہیں، نہیں،" اَمّو تبھی نہ جانے کیسے چیخ اُٹھی — "میرا سر چکرا رہا ہے. چلئے، گھر چلئے!" دونوں جلدی سے آکر اپنی کار میں بیٹھ گئے. سیٹھ جی ان کا مُنھ تاکتے رہ گئے.

(۳)

"اُس سمے تمہیں اچانک کیا ہوگیا، اَمّو ؟" کرشنن نے پوچھا.

"کچھ نہیں، یونہی...." اَمّو نے بات ٹالنی چاہی.

"نہیں، یونہی کیسے ہو سکتا ہے ؟ میں دیکھ رہا ہوں، کہ تم تبھی سے بہت اداس ہو گئی ہو. کوئی گوڑھ بات ضرور ہے. اگر تم نہ بتانا چاہو، تو......"

"نہیں، نہیں، ایسا نہ کہئے ! بھلا آپ سے کوئی بات میں چھپا ہی کیسے سکتی ہوں ؟" اَمّو نے سر ہلا کر کہا.

"تو پھر کہہ ہی ڈالو. جب تک مجھے معلوم نہ ہو جائے گا......"

"یوں تو بات کچھ کہنے کے لائق نہیں ہے. پھر بھی جب آپ کو اس کے لئے اتنی پریشانی ہے، تو میں سُنائے ہی دیتی ہوں." کہہ کر اَمّو نے آنکھیں موند لیں، جیسے وہ کوئی بیتی بات یاد کر رہی ہو. پھر کچھ دیر بعد بولی — "اُس سمے بس یہی قریب..... سمجھ لیجئے کہ آٹھ سال کی تھی."

"اچھا"، کرشنن نے دھیان سے سُنتے ہوئے کہا.

"ایک شام کی بات ہے. میں اَمّاں کے ساتھ اسکول سے لوٹی، تو میرے گھر کے سامنے کچھ لوگوں کی بھیڑ لگی تھی. ان کی آنکھیں خوشی سے چمک رہی تھیں. میں کچھ نہ سمجھ سکی اور آنکھیں جھپکاتی دوڑ

(۵)

इस पर हम दोनों खूब हँसे. मगर कौन कह सकता है कि उनके और मेरे एक दूसरे से इतनी मोहब्बत से मिलने के पीछे खुदा वन्दे ताला खुद मौजूद नहीं थे.

اس پر ھم دونوں خوب ھنسے . مگر کون کہ سکتا ھے کہ اُن کے اور میرے ایک دوسرے سے اتنی محبت سے ملنے کے پیچھے خداوند تعالیٰ خود موجود نہیں تھے .

कौटिल्य का अर्थशास्त्र

(भाई ओंकार नाथ शास्त्री)

३२१-३०० ईसा के पहले के बीच लिखी हुई इस किताब का लेखक चन्द्र गुप्त मौर्य का मशहूर मंत्री चाणक्य था. उसका नाम विष्णु गुप्त और कौटिल्य भी है. इस किताब का ऐतिहासिक बड़प्पन सभी मानते हैं. इस निगाह से कुछ लोग तो इसको हर आदमी को ख़रीद कर रखने की सलाह देते हैं. इसमें बयान की हुई बातों की उपयोगिता के सम्बन्ध में बहुत पुराने समय से ही दो रायें रही हैं. (१५१) इसके पहिले कि मैं एक एक विषय को ले कर उसकी अहमियत पर अपना ख़याल ज़ाहिर करूँ, शुरू में इन दोनों रायों का चरचा कर देना जरूरी समझता हूँ.

कामन्दक नीति का लेखक लिखता है :—"कामन्दक नीति उसी विद्वान के ग्रन्थ की बुनियाद पर लिखी गई है, जिसके बज्र से, पहाड़ की तरह क़ायम नन्द, जड़ से उखड़ गया, जिसने चन्द्र गुप्त को पृथ्वी का राजा बनाया. जिसने अर्थ शास्त्रके समुद्र से नीति शास्त्र के अमृत को निकाला. उसी विष्णु गुप्त को प्रनाम है.'' इस तरह अर्थ शास्त्र एक आलिम के बड़े दिमाग़ की क़ीमती उपज माना गया है.

ठीक इसके ख़िलाफ़ दण्डी ने लिखा है—"उन लोगों के लिये क्या कहा जाय, जो कि गिरे से गिरे कामों को ठीक बताने वाले कौटिल्य अर्थ शास्त्र को प्रमान मानते हैं, जिनकी आदतें माया और

کوتلیہ کا ارتھ شاستر

(بھائي أونکار ناتھ شاستري)

سنہ ۳۲۱ - ۳۰۰ عیسیٰ کے پہلے کے بیچ لکھی ہوئی اس کتاب کا لیکھک چندر گپت موریہ کا مشہور منتري چانکیہ تھا . اُسکا نام وشنو گپت اور کوتلیہ بھی ہے . اس کتاب کا اتہاسک بڑپپن سبھي مانتے ہیں . اس نگاہ سے کچھ لوگ تو اس کو ہر آدمی کو خرید کر رکھنے کی صلاح دیتے ہیں . اسمیں بیان کی ہوئي باتوں کي اُپیوگتا کے سمبندھ میں بہت پرانے سمے سے ہی دو رائیں رہي ہیں . (۱۵۱) اسکے پہلے کہ میں ایک ایک وشے کو لیکر اس کی اہمیت پر اپنا خیال ظاہر کروں' شروع میں ان دونوں رایوں کا چرچا کردینا ضروری سمجھتا ہوں .

کامندک نیتي کا لیکھک لکھتا ہے :— '' کامندک نیتی اُسی ودوان کے گرنتھ کی بنیاد پر لکھی گئی ہے' جس کے بجر سے' پہاڑ کی طرح قائم نند' جڑ سے اکھڑ گیا' جس نے چندر گپت کو پرتھوی کا راجہ بنایا' جس نے ارتھ شاستر کے سمدر سے نیتي شاستر کے امرت کو نکالا . اُسي وشنو گپت کو پرنام ہے .''
اِس طرح ارتھ شاستر ایک عالم کے بڑے دماغ کي قیمتي اُپج مانا گیا ہے .

ٹھیک اس کے خلاف دنڈی نے لکھا ہے — '' اُن لوگوں کے لئے کیا کہا جائے' جو کہ گرے سے گرے کاموں کو ٹھیک بتانے والے کوتلیہ ارتھ شاستر کو پرمان مانتے ہیں' جن کی عادتیں مایا اور

भोग वामन सम्बन्धी कामों के करने के कारन क्रूर हैं. जिनके गुरु, पुरोहित और सलाहकार ऐसे मन्त्री हैं जो कि दूसरे को धोखा देना ही ठीक समझते हैं. जिनके लिये हजारों राजाओं का छीना हुआ धन ही सब कुछ है. जो मारने वाले शास्त्रों का प्रयोग करते हैं और भाई तक को मारना पसन्द करते हैं."

मेरे विचार से अर्थशास्त्र के बारे में पहली राय हर्फ़ ब हर्फ़ ग़लत और दूसरी राय हर्फ़ ब हर्फ़ सही है. हर्फ़ ब हर्फ़ ग़लत इसलिये कि अर्थ शास्त्र के रचैता ने सन ३०० ईसा से पहले के इक़्तसादी सियासी मसलों के हल के लिये भी जो उपाय बताये हैं वह अमृत नहीं विष हैं. विष इसलिये कि ऐसे लग भग सभी पुराने ग्रन्थों में शोषकों, मालिकों और सामन्तों के स्वार्थों से ही सोचा और लिखा गया है. उनमें जनता, ग़ुलामों, शूद्रों, दासों, चण्डालों, किसानों के फ़र्ज़ों पर अगर कोई एक बात मिलती है तो यह कि वह आँखें बन्द कर के अपने राजाओं की ग़ुलामी बजाते और उनके ज़ुल्मों और लूटों, उनकी भोग विलास की ज़िन्दगी और पतन को उनका पैदायशी हक़ समझ कर बरदाश्त करते रहें.

इस किताब पर कुछ लिखने से मेरा मतलब महज़ यह है कि इस में दी हुई इतिहासी बातों को सामने रख कर इस देश की भोली भाली जनता को इस भ्रम से छुटकारा दिलाऊँ कि हर प्राचीन किताब को रिषियों, मुनियों के नाम पर वरदान समझकर वह अपनी आँखों के दरवाज़ों को बन्द न रक्खे क्योंकि यह दिमाग़ी ग़ुलामी, उसे आज भी अपने शोषकों के ज़ुल्मों को बरदाश्त करते रहने का सबक़ देगी.

بھوگ وامن سمبندھی کاموں کے کرنے کے کارن کرور ھیں ۔ جن کے گرو، پروھت اور صلاح کار ایسے منتری ھیں جو کہ دوسرے کو دھوکہ دینا ھی ٹھیک سمجھتے ھیں ۔ جن کے لئے ھزاروں راجاؤں کا چھینا ھوا دھن ھی سب کچھ ھے ۔ جو مارنے والے شاستروں کا پریوگ کرتے ھیں اور بھائی تک کو مارنا پسند کرتے ھیں ۔"

میرے وچار سے ارتھ شاستر کے بارے میں پہلی رائے حرف بحرف غلط اور دوسری رائے حرف بحرف صحیح ھے ۔ حرف بحرف غلط اسلئے کہ ارتھشاستر کے رچیتا نے سنہ ٣٠٠ عیسیٰ سے پہلے کے اقتصادی سیاسی مسئلوں کے حل کے لئے بھی جو اُپائے بتائے ھیں، وہ امرت نہیں وش ھیں ۔ وش اسلئے کہ ایسے لگ بھگ سبھی پرانے گرنتھوں میں شوشکوں، مالکوں اور سامنتوں کے سوارتھوں سے ھی سوچا اور لکھا گیا ھے ۔ ان میں جنتا، غلاموں، شودروں، داسوں، چنڈالوں، کسانوں کے فرضوں پر اگر کوئی ایک بات ملتی ھے تو یہ کہ وہ آنکھیں بند کرکے اپنے راجاؤں کی غلامی بجاتے اور ان کے ظلموں اور لوٹوں، ان کی بھوگ ولاس کی زندگی اور پتن کو انکا پیدایشی حق سمجھ کر برداشت کرتے رھیں ۔

اس کتاب پر کچھ لکھنے سے میرا مطلب محض یہ ھے کہ اسمیں دی ھوئی اِتہاسی باتوں کو سامنے رکھکر اس دیش کی بھولی بھالی جنتا کو اس بھرم سے چھٹکارا دلاؤں کہ ھر پراچین کتاب کو رشیوں، منیوں کے نام پر وردان سمجھ کر وہ اپنی آنکھوں کے دروازوں کو بند نہ رکھیں ۔ کیونکہ یہ دماغی غلامی، اُسے آج بھی اپنے شوشکوں کے ظلموں کو برداشت کرتے رھنے کا سبق دے گی ۔

लेकिन एक एक बात पर अलग अलग विचार करने से पहले मैं इस किताब के नाम की सार्थकता पर विचार करना चाहता हूँ. क्यों कि पुस्तक पढ़ जाने के बाद जो बातें खास तौर से खटकती हैं, उनमें अर्थ शास्त्र नाम भी एक है.

कौटिल्य अर्थ शास्त्र में इतने विषयों पर रोशनी डालने की कोशिश की गई है कि सब पर मामूली निगाह डालने से भी यह मालूम हुए बिना नहीं रहता कि वैज्ञानिक दृष्टि से यह नाम सार्थक नहीं है. इसमें अर्थशास्त्र से ताल्लुक रखने वाली बहुत सी बातों पर विचार ज़रूर किया गया है, लेकिन यह देखर हँसी आये बिना नहीं रहती कि इस तरह के विषय, जैसे 'दूत के काम' सेना-पतियों की घात, खुफिया पुलिस का इस्तेमाल. क़िले का घेरना, हारे हुए राजा से व्यहार, दंड विधान, राजद्रोहियों और दुश्मनो के साथी वग़ैरा विषय अर्थशास्त्र के अन्दर कैसे आते हैं. मुझे तो ऐसा मालूम होता है कि समाज से सम्बन्ध रखने वाली शायद ही कोई बात रही होगी जिसका बयान अर्थशास्त्र में न हुआ हो.

मिसाल के लिये १६२ प्रकरन को लीजिये. इसकी सुर्ख़ी है दूत के काम. इसमें अर्थशास्त्र की बात तो दूर रही. दूत के बारे में भी कुछ नहीं है. जैसा कि इसकी छोटी सुर्ख़ियों—धर्म विजयी, लोभ विजयी, असुर विजयी, दंडसन्धि, पुरुष सन्धि, कोष सन्धि वग़ैरा से ज़ाहिर होता है.

और तशरीह में जाना हो तो इस इबारत को पढ़िये :—

"कमज़ोर राजा पर अगर कोई मज़बूत राजा हमला करे, तो

اگست سن ۵۰'   کوتلیہ کا ارتھ شاستر   نیا ھند

لیکن ایک ایک بات پر الگ الگ وچار کرنے سے پہلے میں اس کتاب کے نام کی سارتھکتا پر وچار کرنا چاھتا ھوں. کیونکہ پستک پڑھ جانے کے بعد جو باتیں خاص طور سے کھٹکتی ھیں' اُن میں ارتھ شاستر نام بھی ایک ھے .

کوتلیہ ارتھ شاستر میں اتنے وشیوں پر روشنی ڈالنے کی کوشش کی گئی ھے کہ سب پر معمولی نگاہ ڈالنے سے بھی یہ معلوم ھوئے بنا نہیں رھتا کہ ویگیانک درشٹی سے یہ نام سارتھک نہیں ھے . اسمیں ارتھ شاستر سے تعلق رکھنے والی بہت سی باتوں پر وچار ضرور کیا گیا ھے' لیکن یہ دیکھکر ھنسی آئے بنا نہیں رھتی کہ اس طرح کے وشے' جیسے ' دوت کے کام ' سینا پتیوں کی گھات' خفیہ پولیس کا اِستعمال' قلعہ کا گھیرنا' ھارے ھوئے راجہ سے بیوھار' دنڈ ودھان' راج دروھیوں اور دشمنوں کے ساتھی وغیرہ وشے ارتھ شاستر کے اندر کیسے آتے ھیں . مجھے تو ایسا معلوم ھوتا ھے کہ سماج سے سمبندھ رکھنے والی شاید ھی کوئی بات رھی ھوگی جس کا بیان ارتھ شاستر میں نہ ھوا ھو .

مثال کے لئے ۱۶۲ پر کرن کو لیجئے . اسکی سرخی ھے دوت کے کام . اس میں ارتھ شاستر کی بات تو دور رھی' دوت کے بارے میں بھی کچھ نہیں ھے . جیسا کہ اس کی چھوٹی سرخیوں—دھرم وجئی' لوبھ وجئی' اسور وجئی' دنڈ سندھی' پرش سندھی' کوش سندھی وغیرہ سے ظاھر ھوتا ھے .

اور تشریح میں جانا ھو تو اس عبارت کو پڑھئے :—

" کمزور راجہ پر اگر کوئی مضبوط راجہ حملہ کرے' تو

वह अपने लड़के, लड़कियां को उसके मातहत कर बेंत की तरह उसके सामने झुक जाय. भरद्वाज का मत है कि जो बलवान के सामने झुकता है, एक तरह से वह साक्षात इन्द्र को प्रनाम करता है."

अजीब सी बात है. यह दूत के फर्ज़ का बयान है या किसी कमज़ोर पराजित राजा के फर्ज़ का. फिर दूत का फर्ज़ भी होता, तो वह अर्थशास्त्र नाम को सार्थक कैसे बनाता.

लोग कह सकते हैं कि "अर्थशास्त्र" से चाणक्य का कुछ और मतलब रहा होगा. लेकिन आखिरी अध्याय पढ़ने से, इस दलील का भी जवाब मिल जाता है और यह साफ़ जाहिर हो जाता है कि इस नाम से चाणक्य का भी उसी से मिलता जुलता मतलब था जो आज समझा जाता है. लिखा है:—

"आदमियों की रोजी और आदमियों के लायक़ जमीन का नाम अर्थ है. जमीन के फ़ायदे और परवरिश के उपाय को जाहिर करने वाले इल्म को अर्थशास्त्र कहते हैं."

जहाँ तक इस परिभाषा (तारीफ़) के वैज्ञानिक होने की बात है, साफ़ न होते हुए भी इसे वैज्ञानिक माना जा सकता है. सारे सामन्तवादी जमाने में पैदावार का खास जरिया जमीन था. फिर भी हाथ के रोज़गार और तिजारत की बहुत शुरू जमाने में भी उपेक्षा नहीं की जा सकती थी. इसीलिये जहाँ चाणक्य ने अर्थशास्त्र का खास विषय खेती माना है, वहाँ उन्होंने 'पालन के उपाय' की बात कह कर अर्थशास्त्र के अर्थ की व्यापकता का भी इजहार

وہ اپنےلڑکے' لڑکیوں کو اس کے ماتحت کر بیت کی طرح اسکے سامنے جھک جائے . بھر دواج کا مت ہے کہ جو بلوان کے سامنے جھکتا ہے' ایک طرح وہ ساکشات اندر کو پرنام کرتا ہے ."

عجیب سی بات ہے . یہ دوت کے فرض کا بیان ہے یا کسی کمزور پراجت راجہ کے فرض کا . پھر دوت کا فرض بھی ہوتا' تو وہ ارتھ شاستر نام کو سارتھک کیسے بناتا .

لوگ کہہ سکتے ہیں کہ " ارتھ شاستر " سے چانکیہ کا کچھ اور مطلب رہا ہوگا . لیکن آخری ادھیائے پڑھنے سے' اس دلیل کا بھی جواب مل جاتا ہے اور یہ صاف ظاہر ہو جاتا ہے کہ اس نام سے چانکیہ کا بھی اُسی سے ملتا جلتا مطلب تھا جو آج سمجھا جاتا ہے . لکھا ہے :—

" آدمیوں کی روزی اور آدمیوں کے لائق زمین کا نام ارتھ ہے . زمین کے فائدے اور پرورش کے اُپائے کو ظاہر کرنے والے علم کو ارتھ شاستر کہتے ہیں ."

جہاں تک اس پریبھاشا (تعریف) کے ویگیانک ہونے کی بات ہے' صاف نہ ہوتے ہوئے بھی اسے ویگیانک مانا جاسکتا ہے . سارے سامنتوادی زمانہ میں پیداوار کا خاص ذریعہ زمین تھا . پھر بھی ہاتھ کے روزگار اور تجارت کی بہت شروع زمانہ میں بھی اُپیکشا نہیں کی جاسکتی تھی . اسی لئے جہاں چانکیہ نے ارتھ شاستر کا خاص وشے کھیتی مانا ہے' وہاں اُنہوں نے 'پالن کے اُپائے' کی بات کہکر ارتھ شاستر کے ارتھ کی ویاپکتا کا بھی اظہار

कर दिया है. चाणक्य का ज़मान आजका उन्नत ज़माना नहीं था, जब किसी शास्त्र की परिभाषा करते समय एक पूरी तवारीख़ का ख़याल रक्खा जा सकता हो. औद्योगिक क्रान्ति यानी सनअती इन्क़लाब सदियों आगे था. कल कारख़ाने नहीं बने थे. रोज़ी के नये तरीक़ों की कल्पना भी नामुकिन थी. तब ऊपर की तारीफ़ ही बहुत थी. और इस ख़याल से कौटिल्य की तारीफ़ करने में किसी को संकोच नहीं होना चाहिये. अचरज तो यह है कि ऐसी परिभाषा कर लेने के बाद भी उन्होंने ऐसे सारे विषयों पर रोशनी डाली जिनका अर्थशास्त्र से सीधा सम्बन्ध नहीं था.

इसी प्रकरन में किसी विषय के समझाने की ३२ युक्तियाँ (नुक्ते) दी गई हैं. इन युक्तियों के साइन्सी ना साइन्सी होने पर अलग विचार होगा. मगर इन पर विचार करते समय भी, यह ताज्जुब की बात है, कि अर्थशास्त्र के लेखक का ध्यान इस बात की ओर नहीं गया कि क्या जिन बेमौक़ा बातों का बयान लेखक ने किया है, वह भी किसी उक्ति के अन्दर आ सकती हैं.

एक दूसरा विषय—विवाहितों के सम्बन्ध में नियम—लीजिये. इस में लिखा है—"बारह साल की लड़की और सोलह साल का लड़का बालिग़ होता हैं,....'नंगी, अधनंगी, लूली, लंगड़ी, बाप मरी, मां मरी, वग़ैरा गालियाँ दिये बिना ही ढंग की बातें सिखाई जायँ. अगर यह मुमकिन न हो, तो बाँस की खपची, कोड़ा या थप्पड़ पीठ पर तीन बार मारा जाय. घर के दरवाज़े पर या बाहर बाग़ीचे में होने वाले खेल तमाशों में जो औरत शामिल हो, उसके लिये

کردیا هے . چانکیه کا زمانه آج کا اُنت زمانه نهیں تها' جب کسی شاستر کي پری بهاشا کرتے سمے ایک پوري تواریخ کا خیالؔ رکها جاسکتا هو . آودیوگک کرانتي یعني صنعتی انقلاب صدیوں اگے تها' کل کارخانے نهیں بنے تهے' روزی کے نئے طریقوں کی کلپنا بهی ناممکن تهی . تب اوپر کی تعریف هی بهت تهي' اور اس خیال سے کوتلیه کي تعریف کرنے میں کسی کو سنکوچ نهیں هونا چاهئے . اچرج تو یه هے که ایسي پري بهاشا کرلینے کے بعد بهی انهوں نے ایسے سارے وشیوں پر روشنی ڈالی جن کا ارته شاستر سے سیدها سمبندھ نهیں تها .

اسي پرکرن میں کسی وشے کے سمجهانے کي ۳۲ یکتیاں (نکتے) دی گئی هیں . ان یکتیوں کے سائنسی نا سائنسی هونے پر الگ وچار هوگا . مگر ان پر وچار کرتے سمے بهی' یه تعجب کی بات هے' که ارته شاستر کے لیکهک کا دهیان اس بات کی اور نهیں گیا که کیا جن بے موقعه باتوں کا بیان لیکهک نے کیا هے' وه بهي کسی اُکتی کے اندر آسکتی هیں .

ایک دوسرا وشے — وواهتوں کے سمبندھ میں نیم — لیجئے . اس میں لکها هے—" بارہ سال کی لڑکي اور سوله سال کا لڑکا بالغ هوتا هے'..." ننگي' ادھ ننگی' لولی' لنگڑي' باپ مري' ماں مری وغیرہ گالیاں دئے بنا هی ڈهنگ کی باتیں سکهائی جائیں . اگر یه ممکن نه هو' تو بانس کی کهپچی' کوڑا یا تهپڑ پیٹھ پرتین بار مارا جائے . گهر کے دروازے پر یا باهر باغیچے میں هونے والے کهیل تماشوں میں جو عورت شامل هو' اس کے لئے

दंड आगे दिया जायगा; अगर कोई ब्राह्मन बाहर कहीं पढ़ने गया हो, तो उसकी स्त्री को दस साल तक और उसके बच्चे को बारह साल तक और अगर कोई क्षत्री राजा के काम से बाहर गया हो, तो उसकी स्त्री ताउम्र उसका इन्तज़ार करे···, "अगर किसी समाज के आदमी के ज़रिये उससे बच्चा पैदा हो गया हो, तो इसमें उनकी बदनामी किसी को भी न करनी चाहिये." वग़ैरा बातों का अर्थशास्त्र से क्या सम्बन्ध है.

तब फिर जान पड़ता है "अर्थशास्त्र" नाम की सार्थकता समझने के लिये चाणक्य के सूत्रों की मदद लेनी पड़ेगी. कुछ सूत्र ये हैं—सुख का मूल धर्म है. धर्म का मूल अर्थ है. अर्थ का मूल राज है, राज्य का मूल इन्द्रि जय है. इन्द्रि जय का मूल विनय, या शिक्षण है. विनय का मूल बुज़ुर्गों की ख़िदमत है. बुज़ुर्गों की सेवा से ज्ञान बढ़ता है. ज्ञान से आत्मा का ज्ञान होता है. आत्मा के ज्ञान से आत्मशक्ति प्राप्त होती है. आत्मशक्ति से सब अर्थ प्राप्त हो जाते हैं." इस तरह के सूत्रों के ज़रिये चाणक्य ने एक विषय का दूसरे विषय से सम्बन्ध दिखलाया है. इसलिये हिंदुस्तान के पुराने रिवाज के मुताबिक एक ही विषय पर रोशनी डालते समय सब विषयों पर कुछ न कुछ कहना ज़रूरी हो गया. मगर आज का विकसित समाज इस सब के मूल को एक मान कर चलने की शैली को छोड़ चुका है. वह अलग अलग बातों को अलग अलग लेता है. इसीलिये, फ़िलासफ़ी की किताबों में हिसाब या केमेस्ट्री वग़ैरा की बात का ज़िक्र महज़ प्रसंग के लिये होता है. राजनीति और अर्थशास्त्र एक दूसरे से बहुत सम्बन्धित होते हुए भी दो

دنڈ آگے دیا جائیگا ؛ اگر کوئی برھمن باھر کھیں پڑھنے گیا ھو' تو اس کی استری کو دس سال تک اور اسکے بچے کو بارہ سال تک اور اگر کوئی چھتری راجہ کے کام سے باھر گیا ھو' تو اس کی استری تا عمر اس کا انتظار کرے . . . '' اگر کسی سماج کے آدمی کے ذریعہ اس کے بچہ پیدا ھوگیا ھو' تو اس میں ان کی بدنامی کسی کو بھی نہ کرنی چاھئے ." وغیرہ باتوں کا ارتھ شاستر سے کیا سمبندھ ھے .

تب پھر جان پڑتا ھے' ''ارتھ شاستر " نام کی سارتھکتا سمجھنے کے لئے چانکیہ کے سوتروں کی مدد لیلی پڑیگی . کچھ سوتر یہ ھیں — سکھ کا مول دھرم ھے' دھرم کا مول ارتھ ھے' ارتھ کا مول راج ھے' راج کا مول اندری جے ھے . اندری جے کا مول ونے یا شکشن ھے . ونے کا مول بزرگوں کی خدمت ھے . بزرگوں کی سیوا سے گیان بڑھتا ھے . گیان سے آتما کا گیان ھوتا ھے . آتما کے گیان سے آتم شکتی پراپت ھوتی ھے . آتم شکتی سے سب ارتھ پراپت ھوجاتے ھیں ." اس طرح کے سوتروں کے ذریعے چانکیہ نے ایک وشے کا دوسرے وشے سے سمبندھ دکھلایا ھے . اس لئے ھندستان کے پرانے رواج کے مطابق ایک ھی وشے پر روشنی ڈالتے سمے سب وشیوں پر کچھ نہ کچھ کہنا ضروری ھوگیا مگر آج کا وکست سماج اس سب کے مول کو ایک مان کر چلنے کی شیلی کو چھوڑ چکا ھے . وہ الگ الگ باتوں کو الگ الگ لیتا ھے . اسی لئے فلاسفی کی کتابوں میں حساب یا کیمسٹری وغیرہ کی بات کا ذکر محض پرسنگ کے لئے ھوتا ھے . راج نیتی اور ارتھ شاستر ایک دوسرے سے بہت سمبندھت ھوتے ھوئے بھی دو

अलग विषय माने जाते हैं और एक इल्म पर किताब लिखते समय दूसरे इल्म का बेमौक़ा ज़िक्र नहीं होता. अर्थशास्त्र नाम देकर खुफ़िया पुलिस के फ़र्ज़ का वर्णन बिलकुल बेमानी था।

पंजाब हमें क्या सिखाता है

लेखक, पंडित सुन्दरलाल

पंडित सुन्दरलाल जी ने, महात्मा गांधी की सलाह से. अक्तूबर सन् १९४७ में पच्छिमी और पूरबी पंजाब का दौरा किया था. इस छोटे से बयान में उन्होंने वहाँ की भयंकर बरबादी और आपसी मारकाट की वजह से जो जो नतीजे लोगों को भुगतने पड़ रहे हैं उनका बहुत ही दर्दनाक वर्नन किया है. अख़ीर में. आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिये, कुछ सुझाव भी पेश किये हैं. हमें विश्वास है कि पंजाब की मौजूदा हालत को ठीक तरह से समझने में इस बयान से बड़ी मदद मिलेगी.

किताब उर्दू और नागरी दोनों लिखावटों में मिल सकती है. क़ीमत चार आने.

बेचने वालों या कम से कम दस कापी ख़रीदने वालों को ३३ फ़ीसदी कमीशन दिया जायगा.

मैनेजर—'नया हिन्द' ४८, बाई का बाग़, इलाहाबाद.

الگ وشے مانے جاتے ھیں اور ایک علم پر کتاب لکھتے سمے دوسرے علم کا بے موقعہ ذکر نہیں ھوتا . ارتھ شاستر نام دے کر خفیہ پولیس کے فرض کا ورنن بالکل بے معنی تھا .

پنجاب ھمیں کیا سکھاتا ھے

لیکھک' پنڈت سندر لال

پنڈت سندر لال جی نے ' مہاتما گاندھی کی صلاح سے' اکتوبر سن ۱۹۴۷ میں پچھمی اور پوربی پنجاب کا دورا کیا تھا . اِس چھوٹے سے بیان میں انہوں نے وھاں کی بھینکر بربادی اور آپسی مارکاٹ کی وجہ سے جو جو نتیجے لوگوں کو بھگتنے پڑ رھے ھیں اُن کا بہت ھی دردناک ورنن کیا ھے . آخیر میں ' آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کیلئے ' کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے ھیں . ھمیں وشواس ھے کہ پنجاب کی موجودہ حالت ٹھیک طرح سے سمجھنے میں اِس بیان سے بڑی مدد ملے گی .

کتاب اُردو اور ناگری دونوں لکھاوٹوں میں مل سکتی ھے . قیمت چار آنے .

بیچنے والوں یا کم سے کم دس کاپی خریدنے والوں کو ۳۳ فیصدی کمیشن دیا جائیگا .

منیجر—'نیا ھند' ۴۸ 'بائی کا باغ ' اِلہ آباد .

पुन्यात्मा

(भाई भैरव प्रसाद गुप्ता)

लद्मी जी जब दुनिया की सैर कर के लौटीं. तो भाग्य देव पर बुरी तरह बरस पड़ीं

भाग्य देव ने लद्मी जी को बहुत समझाया, लेकिन उन्होंने उसकी एक न सुनी. उसे उसी तरह खरी-खोटी सुनाती रहीं.

भाग्य देव आखिर कब तक सहन करता ? वह जनता था कि लद्मी जी ग़ुस्से में हैं. उनकी समझ मे इस समय कोई बात नही आ सकती. और अगर वह भी उन्हीं की तरह ग़ुस्से में आकर उन्हें खरी खोटी सुनाने लगे, तो इस झगड़े का कभी अन्त न होगा. इस लिये धीरज से काम ले कर, नम्रता भरे शब्दों में बोला—"लद्मी जी आप तो बेकार ही मुझ बेक़सूर पर कीचड़ उछाल रही हैं. इस तरह अगर आप अपनी ही फेटती रहेंगी, तो फल कुछ न होगा. मेरी बात अगर आपको ग़लत लग रही है, तो चलिये किसी ऐसे के पास, जो हम दोनो से अधिक ज्ञानी हो. हम दोनों अपनी अपनी बातें उससे कहें. और वह जो न्याय करे उसे मान लें. अगर मैं अपराधी ठहराया गया, तो आपको मुझे दंड देने का पूरा पूरा अधिकार होगा."

लद्मी जी को भाग्य देव की यह बात जच गई. बोलीं—"तो आप ही कहिये, किसके पास चला जाय ?

" پنیاتما "

(بھائی بھیرو پرساد گپت)

لکشمی جی جب دنیا کی سیر کرکے لوٹیں' تو بھاگیہ دیو پر بری طرح برس پڑیں ۔

بھاگیہ دیو نے لکشمی جی کو بہت سمجھایا لیکن انہوں نے اس کی ایک نہ سنی ۔ اسے اسی طرح کھری‌کھوٹی سناتی رہیں ۔

بھاگیہ دیو آخر کب تک سہن کرتا ؟ وہ جانتا تھا کہ لکشمی جی غصے میں ہیں ان کی سمجھ میں اس سمے کوئی بات نہیں آسکتی ۔ اور اگر وہ بھی انہیں کی‌طرح غصے میں آکر انہیں کھری کھوٹی سنانے لگے' تو اس جھگڑے کا کبھی انت نہ ہوگا ۔ اس لئے دھیرج سے کام لیکر' نمرتا بھرے شبدوں میں بولا — " لکشمی جی' آپ تو بیکار ہی مجھ بے قصور پر کیچڑ اچھال رہی ہیں ۔ اس طرح اگر آپ اپنی ہی پھینٹتی رہینگی' تو پھل کچھ نہ ہوگا ۔ میری بات اگر آپ کو غلط لگ رہی ہے' تو چلئے کسی ایسے کے پاس' جو ہم دونوں سے ادھک گیانی ہو ۔ ہم دونوں اپنی اپنی باتیں اس سے کہیں ۔ اور وہ جو نیائے کرے اسے مان لیں ۔ اگر میں اپرادھی ٹھہرایا گیا' تو آپ کو مجھے دنڈ دینے کا پورا پورا ادھیکار ہوگا ۔"

لکشمی جی کو بھاگیہ دیو کی یہ بات جنچ گئی ۔ بولیں — " تو آپ ہی کہئے' کس کے پاس چلا جائے ؟"

"न न, मैं किसी का नाम न लूंगा' कहीं आपको विश्वास न हुआ तो बेकार मेरे आत्म सम्मान को धक्का लगेगा. आपका क्या ठिकाना ? इस समय आप गुस्से मे हैं. आपके मन का दशा ऐसी नहीं कि आप मेरी बात मानें. इसलिये. देवी जी, मेरा तो निवेदन है कि आप ही जिसे चाहें चुन लें. मुझ पर विश्वास करें, मैं किसी तरह की आपत्ति न करूँगा." भाग्य देव ने नम्रता से निवेदन किया.

लक्ष्मी जी कुछ देर तक अच्छी तरह सोच-विचार कर बोलीं—"अच्छा, चलिये विष्णु भगवान के यहाँ."

भाग्य देव के मन में विष्णु का नाम सुन कर यह विचार जरूर उठा कि विष्णु लक्ष्मी जी के पति हैं. वह, सम्भव है, लक्ष्मी जी का पक्ष लें, और शायद यही सोच कर लक्ष्मीजी ने उन्हें चुना हो. मगर वह इस शंका को मन में ही दबा गया. कहा—"जैसी आपकी इच्छा. चलिये."

(२)

विष्णु भगवान के सामने दोनों जा खड़े हुए. विष्णुजी ने लक्ष्मी जी का तमतमाया चेहरा, लाल आँखें. काँपती देह देखी तो कहा—"क्यों देवी. कुशल तो है ? आज आपकी मुद्रा इस तरह असाधारन क्यों हो उठी है. आप दुनिया की सैर करने गई थीं न ? वहाँ कहीं कुछ ऐसा तो नहीं देखा, जिससे आपकी दशा ऐसी हो उठी हो ?"

'हाँ, देव, देखा है. तभी तो जी मे आता है कि इस पापी भाग्य देव का गला घोट दूँ!" होठों को दांतों से चबाते हुए लक्ष्मीजी ने कहा.

" نہ نہ، میں کسی کا نام نہ لونگا ' کہیں آپ کو وشواس نہ هوا تو بیکار میرے آتم سمان کو دهکا لگیگا . آپ کا کیا ٹھکانا ؟ اس سمے آپ غصہ میں هیں آپ کے من کی دشا ایسی نہیں کہ آپ میری بات مانیں . اسلئے، دیوی جی' میرا تو نویدن هے کہ آپ هی جسے چاهیں چن لیں . مجھ پر وشواس کریں' میں کسی طرح کی آپتی نہ کرونگا ." بھاگیہ دیو نے نمرتا سے نویدن کیا .

لکشمی جی کچھ دیر تک اچھی طرح سوچ وچار کر بولیں — " اچھا' چلئے وشنو بھگوان کے یہاں . "

بھاگیہ دیو کے من میں وشنو کا نام سنکر یہ وچار ضرور اُٹھا کہ وشنو لکشمی جی کے پتی هیں . وہ' سمبھو هے' لکشمی جی کا پکش لیں' اور شاید یہی سوچ کر لکشمی جی نے انہیں چنا هو . مگر وہ اس شنکا کو من میں هی دبا گیا . کہا — " جیسی آپ کی اِچھا . چلئے "

(۲)

وشنو بھگوان کے سامنے دونوں جا کھڑے هوئے . وشنو جی نے لکشمی جی کا تمتمایا چہرا' لال آنکھیں' کانپتی دیہ دیکھی تو کہا — " کیوں دیوی' کشل تو هے ؟ آج آپ کی مدرا اس طرح 'سادھارن کیوں هو اُٹھی' هے آپ دنیا کی سیر کرنے گئی تھیں نہ ؟ وهاں کہیں کچھ ایسا تو نہیں دیکھا' جس سے آپکی دشا ایسی هو اُٹھی هو ؟ '

" هاں' دیو' دیکھا هے . تبھی تو جی میں آتا هے کہ اس پاپی بھاگیہ دیو کا گلا گھونٹ دوں ! " هونٹوں کو دانتوں سے چباتے هوئے لکشمی جی نے کہا .

कर अम्मा के कमरे में पहुँची. मगर अम्मा वहां नहीं थीं. मैं कुछ घबराई सी महाराज से पूछने चौके की ओर बढ़ी तो देखती हूँ कि अम्मा कुछ बनाने में लगी हैं. मुझे अचरज हो आया कि अम्मा तो कभी चौके में नहीं आतीं, आज कौन सी ऐसी बात आ पड़ी, जो वह खुद खाना बना रही हैं. मैं ज़्यादा देर तक अपने को रोक न सकी. दौड़कर अम्मा की गोद में जा चढ़ी और उनका मुंह देखते ही पूछ पड़ी ' अम्मा, आज...? '

" 'बेटी आज रात को तेरे दादा आ रहे हैं," उन्हों ने कहा.

" 'दादा !' मैं अचरज में पड़ कर बोली—' कौन दादा ? मैंने तो उन्हें पहले कभी नहीं देखा.'

" ' तू देखती कैसे ? वह यहाँ पहले आये ही कब ?' फिर मेरे गाल को उँगली से उसकाती हुई खुश होकर बोलीं—' बेटी, तेरे दादा बहुत अच्छे, बहुत बड़े आदमी हैं—बहुत बड़े ! समझी ?'

" 'तब तो मैं उनके साथ खूब खेलूंगी, और अम्मा, कल मैं स्कूल भी नहीं जाऊँगी!' और अम्मा की गोद से निकल कर मैं मारे ख़ुशी के नाचने लगी.

" 'अच्छा, न जाना. अब जा कपड़े बदल ले.' अम्मा ने कहा.

"मैं वहाँ से हटते हटते यह पूछने से बाज न आई, कि दादा कितने बजे आ रहे हैं. और अम्मा ने जब बताया कि दस बजे, तो मेरी उमंग जैसे कुछ हल्की पड़ गई कि भला दस बजे रात तक मैं कैसे जागती रहूँगी. फिर भी वहाँ से क़स्द करके हटी कि आज दस बजे

کر اَمّاں کے کمرے میں پہنچی. مگر اَمّاں وہاں نہیں تھیں. میں کچھ گھبرائی سی مہاراج سے پوچھنے چوکے کی اُور بڑھی تو دیکھتی ہوں کہ اَمّاں کچھ بنانے میں لگی ہیں. مجھے اچرج ہو آیا کہ اَمّاں تو کبھی چوکے میں نہیں آتیں، آج کون سی ایسی بات آ پڑی، جو وہ خود کھانا بنا رہی ہیں. میں زیادہ دیر تک اپنے کو روک نہ سکی. دوڑکر اَمّاں کی گود میں جا چڑھی اور ان کا مُنھ دیکھتے ہی پوچھ پڑی، اَمّاں، آج......؟

"بیٹی آج رات کو تیرے دادا آ رہے ہیں، انھوں نے کہا.

"دادا!' میں اچرج میں پڑکر بولی — 'کون دادا؟ میں نے تو انھیں پہلے کبھی نہیں دیکھا.'

"تو دیکھتی کیسے؟ وہ یہاں پہلے آئے ہی کب؟' پھر میرے گال کو اُنگلی سے اُسکاتی ہوئی خوش ہوکر بولیں — 'بیٹی، تیرے دادا بہت اچھے، بہت بڑے آدمی ہیں — بہت بڑے! سمجھی؟'

"تب تو میں ان کے ساتھ خوب کھیلوں گی، اور اَمّاں، کل میں اسکول بھی نہیں جاؤں گی!' اور اَمّاں کی گود سے نکل کر میں مارے خوشی کے ناچنے لگی.

"اچھا، نہ جانا. اب جا کپڑے بدل لے،' اَمّاں نے کہا.

"میں وہاں سے ہٹتے ہٹتے یہ پوچھنے سے باز نہ آئی کہ دادا کتنے بجے آ رہے ہیں. اور اَمّاں نے جب بتایا کہ دس بجے تو میری اُمنگ جیسے کچھ ہلکی پڑ گئی کہ بھلا دس بجے رات تک میں کیسے جاگتی
... دس بجے تک

"हैं हैं, लक्ष्मीजी, आप गुस्से मे भूलती हैं कि विष्णु भगवान के सामने हम न्याय के लिये आये हैं. यहाँ हम दोनों बराबर हैं. आपको कोई अधिकार नहीं कि यहाँ किसी तरह भी मेरा अपमान करें !'' जरा गुस्से मे आकर भाग्य देव बोला.

''शान्त हूजिये, भाग्य देव ! जरूर देवी के हृदय को कोई गहरी चोट लगी है. देवी, आप भी शान्त हों. शान्ति के साथ आपको जो कहना हो, कहें. मैं न्याय करने की कोशिश करूंगा. हाँ, तो कहिये. भला भाग्य देव से कौन-सा अपराध हो गया है ?'' कह कर विष्णु जी ने अपनी आँखें लक्ष्मी जी पर गड़ा दीं.

शान्त होने की कोशिश करती हुई लक्ष्मीजी बोलीं—''सैर करते-करते एक स्थान पर देखा कि एक टूटी-फूटी झोपड़ी में एक पुन्यात्मा, धर्म परायण, सत्यवादी, कर्मशील इन्सान का अधनंगा शरीर ज्यादा ठण्ड होने के कारन थर-थर काँप रहा था. उसके पास ठंड से अपनी रक्षा करने का साधन सिर्फ आग थी. उसकी पत्नी बार-बार फूंक मार कर आग को जगाने की कोशिश करती थी, लेकिन ठंड इतनी अधिक थी कि आग भी ठंडी हुई जा रही थी. उनके पास ईंधन भी इतना न था कि वह उससे भी अधिक देर तक अपने शरीर को गर्मी पहुंचा पाते. उसे उस हालत मे देख कर भाग्यदेव पर गुस्से से मेरा हृदय भर उठा. मैं ने देखा कि संसार के पापियों, अधर्मियों, झूटों, आलसियों, मक्कारों, धूर्तों, चोरों, डाकुओं, शोषकों को तो इन्होंने ऊँचे-ऊँचे सुन्दर महल, गरम ऊन के कपड़े, ताक़तवर और स्वादिष्ट भोजन, तरह-तरह के गर्मी पहुंचाने के साधन और हर तरह के बेज़रूरत भोग-विलास के समान दे रखे हैं. भला आप

" ہیں ہیں، لکشمی جی، آپ غصہ میں بھولتی ہیں کہ وشنو بھگوان کے سامنے ہم نیائے کے لئے آئے ہیں . یہاں ہم دونوں برابر ہیں . آپ کو کوئی ادھیکار نہیں کہ یہاں کسی طرح بھی میرا اپمان کریں '' ذرا غصہ میں آکر بھاگیہ دیو بولا .

'' شانت ہو جئے، بھاگیہ دیو ! ضرور دیوی کے ہردیہ کو کوئی گہری چوٹ لگی ہے . دیوی، آپ بھی شانت ہوں . شانتی کے ساتھ آپکو جو کہنا ہو، کہیں . میں نیائے کرنے کی کوشش کرونگا . ہاں تو کہئے، بھلا بھاگیہ دیو سے کونسا اپرادھ ہوگیا ہے ؟'' کہکر وشنو جی نے اپنی آنکھیں لکشمی جی پر گڑا دیں .

شانت ہونے کی کوشش کرتی ہوئی لکشمی جی بولیں—''سیر کرتے کرتے ایک استھان پر دیکھا کہ ایک ٹوٹی پھوٹی جھونپڑی میں ایک پنیاتما، دھرم پرائن، ستیہ وادی، کرم شیل اِنسان کا ادھ ننگا شریر زیادہ ٹھنڈ ہونے کے کارن تھر تھر کانپ رہا تھا . اُس کے پاس ٹھنڈ سے اپنی رکشا کرنے کا سادھن صرف آگ تھی . اس کی پتنی بار بار پھونک مار کر آگ کو جگانے کی کوشش کرتی تھی، لیکن ٹھنڈ اتنی ادھک تھی کہ آگ بھی ٹھنڈی ہوئی جارہی تھی . اُن کے پاس ایندھن بھی اتنا نہ تھا کہ وہ اس سے بھی ادھک دیر تک اپنے شریر کو گرمی پہونچا پاتے . اُسے اس حالت میں دیکھکر بھاگیہ دیو پر غصہ سے میرا ہردیہ بھر اُٹھا . میں نے دیکھا کہ سنسار کے پاپیوں، ادھرمیوں، جھوٹوں، آلسیوں، مکاروں، دھورتوں، چوروں، ڈاکوؤں، شوشکوں کو تو اِنہوں نے اُونچے اُونچے، سندر محل، گرم اون کے کپڑے، طاقتور اور سوادشٹ بھوجن، طرح طرح کے گرمی پہونچانے کے سادھن اور ہر طرح کے بےضرورت بھوگ ولاس کے سامان دے رکھے ہیں . بھلا آپ

ही बताइये देव, यह कहाँ का न्याय है कि पापी जाड़े में भी सुहानी गर्मी का आनन्द लूटे और एक धर्मात्मा ठण्ड में ठिठुर-ठिठुर कर जान दे दे. उस समय तो मेरे जी में आया कि सारे पापियों को छोड़ कर मैं उस पुन्यात्मा की झोपड़ी में जा बैठूँ. लेकिन ब्रह्मा के विधान से मजबूर हो कर बिना भाग्य देव की आज्ञा पाये मैं ऐसा कैसे कर सकती थी ? देव, उस पुन्यात्मा की विकट दशा देखकर मेरा हृदय हाहाकार कर उठा ! मेरी शान्ति नष्ट हो गई है ! मैं ब्रह्मा के इस विधान को तोड़-फोड़ बिना न रहूँगी ! अब मैं भाग्य देव के अधीन रह कर एक छन भी काम करना नहीं चाहती ! " कहते-कहते लक्ष्मी जी की आँखों से चिनगारियाँ छिटकने लगीं. शरीर मारे गुस्से के काँपने लगा.

विष्णुजी लक्ष्मीजी की बातें सुन कर सन्नाटे में आ गये. भाग्य देव का मुख पीला पड़ गया. अपने पक्ष में वह बहुत कुछ कहना चाह कर भी कुछ न कह सका.

कुछ देर के बाद गम्भीर हो कर विष्णुजी ने कहा—"देवी के इस तरह गुस्सा होने का कारन उचित ही जान पड़ता है. लेकिन .." गहरे सोच में धीरे-धीरे सिर हिलाते हुए उन्होंने कहा—"डर है कि जल्दी में मैं कुछ अन्याय न कर बैठूं. इसलिये आप लोग मुझे कुछ सोचने का समय दें."

भाग्य देव के हृदय में धुकधुकी लग गई. लक्ष्मीजी के चेहरे पर विजय की आभा झलकने लगी.

काफी देर के बाद विष्णुजी ने सोच से सिर उठाया. भाग्य देव और लक्ष्मीजी उनका फैसला सुनने के लिये बेचैन हो उठे.

ھی بتائیے دیو، یہ کہاں کا نیائے ھے کہ پاپی جاڑے میں بھی سہانی گرمی کا آنند لوٹے اور ایک دھرماتما ٹھنڈ میں ٹھٹھر ٹھٹھر کر جان دیدے . اس سمے تو میرے جی میں آیا کہ سارے پاپیوں کو چھوڑ کر میں اس پنیاتما کی جھونپڑی میں جابیٹھوں . لیکن برھما کے ودھان سے مجبور ھوکر بنا بھاگیہ دیو کی آگیا پائے میں ایسا کیسے کرسکتی تھی ؟ دیو، اُس پنیاتما کی وکٹ دشا دیکھکر میرا ھردیہ ھاھا کار کر اُٹھا ! میری شانتی نشٹ ھو گئی ھے ! میں برھما کے اس ودھان کو توڑے پھوڑے بنا نہ رھونگی ! اب میں بھاگیہ دیو کے ادھین رھکر ایک چھن بھی کام کرنا نہیں چاھتی !" کہتے کہتے لکشمی جی کی آنکھوں سے چنگاریاں چھٹکنے لگیں . شریر مارے غصہ کے کانپنے لگا .

وشنو جی لکشمی جی کی باتیں سنکر سناٹے میں آگئے . بھاگیہ دیو کا مکھ پیلا پڑگیا . اپنے پکش میں وہ بہت کچھ کہنا چاہ کر بھی کچھ نہ کہہ سکا .

کچھ دیر کے بعد گمبھیر ھوکر وشنو جی نے کہا — " دیوی کے اس طرح غصہ ھونے کا کارن اُچت ھی جان پڑتا ھے . لیکن..." گہرے سوچ میں دھیرے دھیرے سر ھلاتے ھوئے انھوں نے کہا — "ڈر ھے کہ جلدی میں میں کچھ انیائے نہ کر بیٹھوں . اس لئے آپ لوگ مجھے کچھ سوچنے کا سمے دیں ."

بھاگیہ دیو کے ھردیہ میں دھک دھکی لگ گئی . لکشمی جی کے چہرہ پر وجے کی آبھا جھلکنے لگی .

کافی دیر کے بعد وشنو جی نے سوچ سے سر اُٹھایا . بھاگیہ دیو اور لکشمی جی اُنکا فیصلہ سننے کے لئے بیچین ھو اُٹھے .

विष्णु बहुत गम्भीर थे. धीरे-धीरे बोले--"किसी फैसले पर पहुँचने के पहले मैं ने एक प्रयोग करने का निश्चय किया है. प्रयोग के फल पर ही मेरा फैसला होगा. आप दोनों से मेरा निवेदन है कि आप इस प्रयोग में मेरा साथ दें !"

"कैसा प्रयोग, देव ?" लक्ष्मी जी और भाग्य देव साथ ही बोल उठे.

"अभी बताऊँगा." सिंहासन से उठकर विष्णु बोले—"आइये मेरे साथ. हम अभी उस अभागे पुन्यात्मा की झोपड़ी में चलेंगे."

(३)

(१५९) "अच्छा तो भाग्यदेव जी, अब आप जाइये. मेरी बातें याद रखियेगा. आओ देवी, तब तक हम यहीं रुकेंगे." विष्णु ने यह कह कर भाग्य देव को विदा किया.

कड़ी मेहनत से थका हुआ पुन्यात्मा हाथ-मुँह धोकर एक गुड़ की डली मुँह में डाल रहा था. उसकी गृहिनी पास ही हाथ में पीतल के चमचम लोटे में निर्मल जल लिये खड़ी थी.

भाग्य देव उसके पास जा कर खड़ा हो गया. पुन्यात्मा गुड़ खा कर पानी लेने को गृहिनी की ओर मुड़ा तो भाग्यदेव पर नज़र पड़ गई. बोला—"आप कौन हैं महाराज ?"

गृहिनी अकचका कर अपरिचित की ओर देखने लगी. "मैं भाग्य देव हूँ. तुम्हारे पुण्य कार्यों से मैं प्रसन्न हुआ हूँ. मैं तुम्हें वर देने आया हूँ. जो माँगो गे वही पाओगे ! माँगो, पुन्यात्मा, अपनी इच्छा के अनुसार जो चाहो. माँगो." कह कर भाग्य देव ने अपना दाहिना हाथ उसके सिर पर फैला दिया

وشنو بہت گمبھیر تھے ۔ دھیرے دھیرے بولے — " کسی فیصلہ پر پہونچنے کے پہلے میں نے ایک پریوگ کرنے کا نشچے کیا ہے ۔ پریوگ کے پھل پر ہی میرا فیصلہ ہوگا ۔ آپ دونوں سے میرا نویدن ہے کہ آپ اس پریوگ میں میرا ساتھ دیں ! "

" کیسا پریوگ دیو ؟ " لکشمی جی اور بھاگیہ دیو ساتھ ہی بول اٹھے ۔

" ابھی بتاؤنگا ۔ " سنگھاسن سے اٹھ کر وشنو بولے —" آئیے میرے ساتھ ۔ ہم ابھی اس ابھاگے پنیاتما کی جھونپڑی میں چلیں گے ۔ "

(٣)

" اچھا تو بھاگیہ دیو جی' اب آپ جائیے ۔ میری باتیں یاد رکھئیے گا ۔ آؤ دیوی' تب تک ہم یہیں رکیں گے ۔ " وشنو نے (١٥٩)
یہ کہکر بھاگیہ دیو کو ودا کیا ۔

کڑی محنت سے تھکا ہوا پنیاتما ہاتھ منہ دھوکر ایک گڑ کی ڈلی منہ میں ڈال رہا تھا ۔ اس کی گرہنی پاس ہی ہاتھ میں پیتل کے چم چم لوٹے میں نرمل جل لئے کھڑی تھی ۔

بھاگیہ دیو اس کے پاس جاکر کھڑا ہوگیا ۔ پنیاتما گڑ کھا کر پانی لینے کو گرہنی کی اور مڑا تو بھاگیہ دیو پر نظر پڑگئی ۔ بولا — " آپ کون ہیں مہاراج ؟ "

گرہنی اکچکا کر اپریچت کی اور دیکھنے لگی ۔ " میں بھاگیہ دیو ہوں ۔ تمہارے پنیہ کاریوں سے میں پرسن ہوا ہوں ۔ میں تمہیں بر دینے آیا ہوں جو مانگوگے وہی پاؤگے ! مانگو' پنیاتما' اپنی اچھا کے انوسار جو چاہو' مانگو ۔ " کہ کر بھاگیہ دیو نے اپنا داہنا ہاتھ اس کے سر پر پھیلا دیا ۔

गृहिनी खुशी से बावली हो तन मन की सुध खो बैठी. उसके हाथ का जल भरा लोटा भूमि पर गिर पड़ा और उसका पानी बह गया. वह पागल की तरह बोल पड़ी—"माँग लो खेत, बैल, घर, धन, बेटा, बेटी..." और अभी पूरी बात कह भी न पाई थी कि खुशी के मारे बेहोश हो कर गिर पड़ी.

"हाँ, पुन्यात्मा, जो इच्छा हो, माँगो!" भाग्यदेव ने फिर कहा.

पुन्यात्मा के चेहरे पर किसी तरह का विकार न आया. उसने साधारन स्वर में कहा—"आप मुझ पर प्रसन्न हैं, यह जान कर धन्य हुआ. लेकिन इतनी जल्दी में मैं आप से क्या माँगूं? मुझे कुछ सोचने-विचारने का समय दें. तै करने के बाद मैं आप से कुछ माँग सकूँगा."

"जो तुम्हारी इच्छा! मैं फिर आऊंगा. तब तक तुम तै कर लो." कह कर भाग्य देव ग़ायब हो गये.

गृहिनी का ज्ञान जब लौटा, तो उसने पति को विचारों में डूबा पाया. कहा—"क्यों, क्या माँगा तुमने?"

"अभी तो कुछ नहीं माँगा." पुन्यात्मा ने कहा.

"अरे, खेत, बैल, घर, धन, बेटा, बेटी कुछ भी तुम ने नहीं माँगा?" अचरज मे पड़ी गृहिनी बोली.

"जब भाग्यदेव प्रसन्न ही हुए हैं, तो उनसे यह मामूली चीज़ें क्या माँगूं? हमे तो उनसे कोई बहुत बड़ी चीज माँगना चाहिये. मै सोच रहा हूं. वह फिर आने का बचन दे गये हैं" पुन्यातमा कह कर काम पर चला गया. गृहिनी हैरत में पड़ी उसकी ओर देखती रह गई.

گرہنی خوشی سے باؤلی ہو تن من کی سدھ کھو بیٹھی . اس کے ہاتھ کا جل بھرا لوٹا بھومی پر گر پڑا اور اُس کا پانی بہ گیا . وہ پاگل کی طرح بول پڑی — " مانگ لو کھیت، بیل، گھر، دھن، بیٹا، بیٹی ......" اور ابھی پوری بات کہ بھی نہ پائی تھی کہ خوشی کے مارے بیہوش ہوکر گر پڑی .

"ہاں، پنیاتما، جو اِچھا ہو، مانگو!" بھاگیہ دیو نے پھر کہا .

پنیاتما کے چہرے پر کسی طرح کا وکار نہ آیا . اس نے سادھارن سور میں کہا — " آپ مجھ پر پرسن ہیں، یہ جان کر دھنیہ ہوا . لیکن اتنی جلدی میں میں آپ سے کیا مانگوں؟ مجھے کچھ سوچنے وچارنے کا سمے دیں . طے کرنے کے بعد میں آپ سے کچھ مانگ سکونگا ."

" جو تمہاری اِچھا! میں پھر آؤنگا . تب تک تم طے کرلو . " کہ کر بھاگیہ دیو غائب ہوگئے .

گرہنی کا گیان جب لوٹا، تب اس نے پتی کو وچاروں میں ڈوبا پایا . کہا — " کیوں، کیا مانگا تم نے؟"

" ابھی تو کچھ نہیں مانگا ." پنیاتما نے کہا .

" ارے، کھیت، بیل، گھر، دھن، بیٹا، بیٹی کچھ بھی تم نے نہیں مانگا؟" اچرج میں پڑی گرہنی بولی .

" جب بھاگیہ دیو پرسن ہی ہوئے ہیں، تو اُن سے یہ معمولی چیزیں کیا مانگوں؟ ہمیں تو ان سے کوئی بہت بڑی چیز مانگنی چاہئے . میں سوچ رہا ہوں . وہ پھر آنے کا وچن دے گئے ہیں ." پنیاتما کہ کر کام پر چلا گیا گرہنی حیرت میں پڑی اس کی اور دیکھتی رہ گئی .

दिन बीते, महीने बीते, देखते देखते कितने साल बीत गये. भाग्य देव कितनी ही बार आया और वापस चला गया. लेकिन पुन्यात्मा लाख सोचने विचारने के बाद भी तै न कर सका कि वह भाग्य देव से क्या माँगे. सुख सम्पति, वैभव प्रतिष्ठा, शान शौकत, बेटा बेटी, सांसारिक ऐश्वर्य, कोई भी चीज़ उसे न जँचती. इन चीज़ों में कोई न कोई ऐसी घातक बात दिखाई देती, जिससे उसके पुन्य कर्मों के नष्ट हो जाने की सम्भावना, चरित्र ख़राब हो जाने का डर, इन्सानियत से डिग जाने की शंका और आत्मा के पतित हो जाने का ख़याल मन में उठ जाता. इन चीज़ों की कीमत पर वह अपने जीवन का आदर्श बेच देने की बात मन में ला भी नहीं सकता थाँ. फिर भी जब भाग्य देव ख़ुश हुए हैं तो उसे कुछ न कुछ तो माँगना ही है. इसी विचार में वह हमेशा खोया रहता, लेकिन कुछ भी माँगने की बात तै न कर पाता.

गृहिनी अपने घर की गिरी हालत पर झुँझला झुँझला कर पुन्यात्मा को कोसती. संसार का वैभव जिसके चरनों पर लोटने को तैयार है, उसकी पत्नी इस तरह तकलीफ का जीवन बिताये, यह बात उसे असह्य हो उठती थी. फिर भी पुन्यात्मा उसकी बातों पर ध्यान न देता.

(४)

देखते-देखते पुन्यात्मा बूढ़ा हो चला. उसका शरीर जर्जर हो गया. कड़ी मेहनत अब वह कर न सकता था इस लिये घर की हालत और बदतर हो गई. इस समय भी वह चाहता तो एक छन

دن بیتے' مہینے بیتے' دیکھتے دیکھتے کتنے سال بیت گئے . بھاگیہ دیو کتنی ہی بار آیا اور واپس چلا گیا . لیکن پنیاتما لاکھ سوچنے وچارنے کے بعد بھی طے نہ کرسکا کہ وہ بھاگیہ دیو سے کیا مانگے . سکھ سمپتی' ویبھو پرشٹھا' شان شوکت' بیٹا بیٹی' سانسارک ایشوریہ' کوئی بھی چیز اسے نہ جنچتی . ان چیزوں میں کوئی نہ کوئی ایسی گھاتک بات دکھائی دیتی' جس سے اس کے پنیہ کرموں کے نشٹ ہو جانے کی سمبھاونا' چرتر خراب ہو جانے کا ڈر' اِنسانیت سے ڈگ جانے کی شنکا اور آتما کے پتت ہوجانے کا خیال من میں اُٹھ جاتا . ان چیزوں کی قیمت پر وہ اپنے جیون کا آدرش بیچ دینے کی بات من میں لا بھی نہیں سکتا تھا . پھر بھی جب بھاگیہ دیو خوش ہوئے ہیں' تو اُسے کچھ نہ کچھ تو مانگنا ہی ہے . اسی وچار میں وہ ہمیشہ کھویا رہتا' لیکن کچھ بھی مانگنے کی بات طے نہ کر پاتا .

گرھنی اپنے گھر کی گری حالت پر جھنجھلا جھنجھلا کر پنیاتما کو کوستی . سنسار کا ویبھو جس کے چرنوں پر لوٹنے کو تیار ہے' اس کی پتنی اس طرح تکلیف کا جیون بتائے یہ بات اُسے اسہیہ ہو اُٹھتی تھی . پھر بھی پنیاتما اس کی باتوں پر دھیان نہ دیتا .

(۴)

دیکھتے دیکھتے پنیاتما بوڑھا ہو چلا . اس کا شریر جر جر ہوگیا . کڑی محنت اب وہ کر نہ سکتا تھا اس لئے گھر کی حالت اور بدتر ہوگئی . اس سمے بھی وہ چاہتا تو ایک چھن

जमा था. संसार की किसी चीज़ का उसे लोभ न था वह संसार की कोई चीज़ माँगता, तो कैसे ? फिर भी वह कुछ न कुछ माँगने की बात पर सोच-विचार करता रहता था. भाग्य देव आ-आ कर लौटता रहा.

एक दिन पुन्यात्मा बुख़ार में खाट पर पड़ गया. बुढ़ापा खुद एक रोग है, उस पर तेज़ बुख़ार ! पुन्यातमा के जर्जर शरीर का बचा खुचा खून भी सूखने लगा. गृहिनी ने समझाया कि अब वह भाग्य देव से कुछ नहीं तो एक लम्बे जीवन का वर ही माँग ले. जीवन से बढ़ कर तो संसार में कोई चीज़ नहीं. लेकिन पुन्यात्मा ने एक करुण मुस्कान में उसकी बात उड़ा दी. गृहिनी ने अपना सिर पीट लिया.

रोग बढ़ता ही गया. दरिद्र के पास रोग से छुटकारा पाने का साधन ही क्या था. अन्त में वह दिन भी आया, जब पुन्यात्मा विकट पीड़ा से छटपटाने लगा. रह रह कर वह चीख़ता, चिल्लाता और बेहोश हो जाता. दुख सहते सहते उसकी हालत ऐसी हो गई कि जब वह बेहोशी से छन भर को भी होश मे आता, तो चीख़ कर कहता—"भगवान, अब तो मुक्ति दो इस पीड़ा से !"

इसी अवसर पर भाग्य देव फिर हाज़िर हुआ. मरने के क़रीब, पीड़ा से छटपटाते पुन्यात्मा के मुँह के पास मुँह लाकर वह बोला—"पुन्यात्मा, पुन्यात्मा ! अब तो कुछ माँग लो ! कहीं ऐसा न हो कि जीवन का यह सुनहरा मौक़ा तुम खो बैठो !"

पुन्यात्मा की पथराई आँखें खुल गईं. एक दुख भरी मुस्कान उसके होंठों पर खेल गई. घुटी हुई आवाज़ में उसने रुक रुक कर

جما تھا . سنسار کی کسی چیز کا اُسے لوبھ نہ تھا . وہ سنسار کی کوئی چیز مانگتا' تو کیسے ؟ پھر بھی وہ کچھ نہ کچھ مانگنے کی بات پر سوچ وچار کرتا رہتا تھا . بھاگیہ دیو آ آ کر لوٹتا رہا .

ایک دن پنیاتما بخار میں کھاٹ پر پڑگیا . بڑھاپا خود ایک روگ ہے' اس پر تیز بخار ! پنیاتما کے جر جر شریر کا بچا کھچا خون بھی سوکھنے لگا . گرھنی نے سمجھایا کہ اب وہ بھاگیہ دیو سے کچھ نہیں تو ایک لمبے جیون کا بر ھی مانگ لے . جیون سے بڑھکر تو سنسار میں کوئی چیز نہیں . لیکن پنیاتما نے ایک کرون مسکان میں اس کی بات اُڑادی . گرھنی نے اپنا سر پیٹ لیا .

روگ بڑھتا ھی گیا درِدر کے پاس روگ سے چھٹکارا پانے کا سادھن ھی کیا تھا . انت میں وہ دن بھی آیا ' جب پنیاتما وکٹ پیڑا سے چھٹپٹانے لگا . رہ رہ کر وہ چیختا چلاتا اور بیہوش ہوجاتا . دکھ سہتے سہتے اس کی حالت ایسی ہوگئی' کہ جب وہ بیہوشی سے چھن بھر کو بھی ہوش میں آتا' تو چیخ کر کہتا — "بھگوان' اب تو مکتی دو اس پیڑا سے ."

اسی اوسر پر بھاگیہ دیو پھر حاضر ہوا مرنے کے قریب پیڑا سے چھٹپٹاتے پنیاتما کے منھ کے پاس منھ لاکر وہ بولا — "پنیاتما' پنیاتما ! اب تو کچھ مانگ لو ! کہیں ایسا نہ ہو کہ جیون کا یہ سنہرا موقعہ تم کھو بیٹھو !"

پنیاتما کی پتھرائی آنکھیں کھل گئیں. ایک دکھ بھری مسکان اسکے ہونٹوں پر کھیل گئی. گھٹی ہوئی آواز میں اسنے رک رک کر

कहा—"नहीं. भाग्य देव जी. आज यह मौक़ा हाथ से न जाने दूँगा. मैं ने आज तै कर लिया है !"

"तो माँगो, पुन्यात्मा ! तुम्हें कुछ देने को मेरा जी छटपटा रहा है !" यह कह कर भाग्य देव ने अपने दाहिने हाथ की छाया पुन्यात्मा की आँखों पर कर दी.

"भाग्य देव, आप मुझे इस पीड़ा से सदा के लिये मुक्त कर दीजिये ! मुझे इस झूटी, छलनामयी, दुखपूर्न दुनिया से मुक्ति प्रदान कीजिये ! मुझे अभी मौत दीजिये, मौत !" पुन्यात्मा ने आत्मा का सारा बल लगा कर किसी तरह कहा.

"ऐसा ही होगा !" भाग्य देव के मुँह से ऐसे निकला. जैसे यह शब्द पहले ही से उसके होंठों पर थे.

दूसरे ही छन पुन्यात्मा की जान शरीरके बन्धन से मुक्त हो गई. गृहिनी चीख़ मार कर रो उठी. भाग्य देव ठक रह गये.

भाग्य देव ने लौट कर जब यह बात विष्णु जी से बताई, तो न वो उनमें कोई फ़ैसला सुनाने का उत्साह रहा और न लच्मीजी में फ़ैसला सुनने का. विष्णु जी ने बहुत गम्भीर हो कर सिर्फ़ यही कहा—"मालूम होता है कि पापियों, अधर्मियों, झूटों, मक्कारों, चोरों, डाकुओं और शोषकों ने संसार को ऐसा बना दिया है, जिसमें कोई पुन्यात्मा रहना पसन्द नहीं कर सकता ! मैं ब्रह्मा के यहाँ अभी जाऊँगा. इस गम्भीर मसले को तै किये बिना मुझे चैन न मिलेगा."

کہا—'' نہیں، بھاگیہ دیو جی، آج یہ موقع ہاتھ سے نہ جانے دونگا. میں نے آج طے کر لیا ہے !''

'' تو مانگو، پنیاتما ! تمہیں کچھ دینے کو میرا جی چھٹپٹا رہا ہے !'' یہ کہکر بھاگیہ دیو نے اپنے داہنے ہاتھ کی چھایا پنیاتما کی آنکھوں پر کر دی

'' بھاگیہ دیو، آپ مجھے اس پیڑا سے سدا کے لئے مکت کر دیجئے ! مجھے اس جھوٹی، چھلنامئی دکھ پورن دنیا سے مکتی پردان کیجئے ! مجھے ابھی موت دیجئے، موت !'' پنیاتما نے آتما کا سارا بل لگا کر کسی طرح کہا

'' ایسا ہی ہوگا !'' بھاگیہ دیو کے منھ سے ایسے نکلا، جیسے یہ شبد پہلے ہی سے اسکے ہونٹوں پر تھے .

دوسرے ہی چھن پنیاتما کی جان شریر کے بندھن سے مکت ہو گئی . گرہنی چیخ مارکر رو اٹھی . بھاگیہ دیو ٹھک رہ گئے .

بھاگیہ دیو نے لوٹ کر جب یہ بات وشنو جی سے بتائی، تو نہ تو ان میں کوئی فیصلہ سنانے کا اُتساہ رہا اور نہ لکشمی جی میں فیصلہ سننے کا . وشنو جی نے بہت گمبھیر ہو کر صرف یہی کہا—'' معلوم ہوتا ہے کہ پاپیوں، ادھرمیوں، جھوٹوں، مکاروں، چوروں، ڈاکوؤں اور شوشکوں نے سنسار کو ایسا بنا دیا ہے، جس میں کوئی پنیاتما رہنا پسند نہیں کر سکتا ! میں برہما کے یہاں ابھی جاؤں گا. اِس گمبھیر مسئلے کو طے کئے بنا مجھے چین نہ ملیگا .''

डाक्टरेट की डिगरी का मज़ाक़

[भाई महादेव साहा पी-एच. डी. (बुडापेस्ट)]

डाक्टर (लातीन शिक्षक) की डिगरी यूनिवरसिटी की आख़री डिगरी मानी जाती है. १०००, १२०० ई० के आस पास जब यूरप में पहले पहल यूनिवर्सिटियाँ बनीं तो वहाँ बी. ए. और एम. ए. यह ही दो डिगरियाँ थीं. डाक्टर की डिगरी ख़ास इज़्ज़त के लिये कुछ एम. ए. पास लोगों को ही दी जाती थी. बोलोग्ना यूनिवरसिटी में १२ वीं सदी में क़ानून की फ़ैकलटी में डाक्टर की डिगरी दिये जाने की बात सुनाई पड़ती है. पैरिस यूनिवरसिटी का इतिहास लेखक ऐंटनी वुड लिखता है कि ११५० ई० के बाद वहाँ यह डिगरी मज़हब की फ़ैकलटी में दी जाने लगी. बरतानिया में इस डिगरी का देना १३ वीं सदी से शुरू हुआ. पर यूरपी महा देश की यूनिवरसिटियों की तरह वहां भी तब यह डिगरी क़ानून और मज़हब की फ़ैकलटी में ही दी जाती थी. १४ वीं सदी मे बीमारों का इलाज करने वालों को भी इस डिगरी का दिया जाना शुरू हुआ. जर्मनी में कला की फ़ैकलटी मे पहले मैजिस्टर (मास्टर) की डिगरी दी जाती थी. बाद में उसकी जगह डाक्टर की डिगरी दी जाने लगी.

इसके अलावा ईसाई धर्म के डाक्टर (डाक्टर आफ़ दी चर्च) भी हुआ करते थे. यह डिगरी उन गिने चुने ईसाई संतो, महन्तो को दी जाती थी जिनके उपदेशों को सब पादरियों की राय से या

ڈاکٹریت کی ڈگری کا مذاق

(بھائی مہادیو ساھا پی . ایچ . ڈی (بوڈا پیسٹ)

ڈاکٹر (لاطین شکشھک) کی ڈگری یونیورسٹی کی آخری ڈگری مانی جاتی ھے . ۱۰۰۰' ۱۲۰۰ عیسوی کے آس پاس جب یورپ میں پہلے پہل یونیورسٹیاں بنیں تو وھاں بی . اے . اور ایم . اے . یہ ھی دو ڈگریاں تھیں . ڈاکٹر کی ڈگری خاص عزت کے لئے کچھ ایم . اے . پاس لوگوں کو ھی دی جاتی تھی . بولوگنا یونیورسٹی میں ۱۲ ویں صدی میں قانون کی فیکلٹی میں ڈاکٹر کی ڈگری دیئے جانے کی بات سنائی پڑتی ھے . پیرس یونیورسٹی کا اتہاس لیکھک اینٹنی اُوڈ لکھتا ھے کہ سن ۱۱۵۰ع کے بعد وھاں یہ ڈگری مذھب کی فیکلٹی میں دی جانے لگی . برطانیہ میں اس ڈگری کا دینا ۱۳ ویں صدی میں شروع ھوا' پر یورپی مہادیش کی یونیورسٹیوں کی طرح وھاں بھی تب یہ ڈگری قانون اور مذھب کی فیکلٹی میں ھی دی جاتی تھی . ۱۴ ویں صدی میں بیماروں کا علاج کرنے والوں کو بھی اس ڈگری کا دیا جانا شروع ھوا . جرمنی میں کلا کی فیکلٹی میں پہلے میجسٹر ([illegible]) کی ڈگری دی جاتی تھی' بعد میں اس کی جگہ ڈاکٹر کی ڈگری دی جانے لگی .

اس کے علاوہ عیسائی دھرم کے ڈاکٹر (ڈاکٹر آف دی چرچ) بھی ھوا کرتے تھے . یہ ڈگری ان گنے چنے عیسائی سنتوں' مہنتوں کو دی جاتی تھی جن کے اُپدیشوں کو سب پادریوں کی رائے سے یا

पोप के फ़र्मान के मुताबिक़ ख़ास तौर से प्रमान समझा जाता था. बीच ज़माने के बड़े बड़े शिक्षकों, स्कूल मैन या स्कोलैस्टिक दर्शन के आचार्यों को डाक्टर की डिगरी के साथ कुछ और उपाधियाँ भी दी जाती थीं. जैसे टामस अक्सेना को एंजिलिक्स, बर्नर्ड को मेलिफ़्लूअस वग़ैरा. लेकिन ईसाई चर्च के उन डाक्टरों की तादाद अनगिनत नहीं थी. यूरप के संतों मे अयनासिउस नज़ियानज़ुस के ग्रेगरी महानये-सिलवान क्राईसोस्टम को ही डाक्टर की उपाधि मिली था. बाद में नये पोप अलफ़ान्सो देई लिगोरी का नाम भी इस फ़ेहरिस्त मे जोड़ दिया था.

जैसे पुराने ज़माने मे महर्षि और राजर्षि हुआ करते थे उसी तरह बीच काल के भारतमें भी ब्राह्मन, बौद्ध और जैन सच्चे पंडितों को सम्मान के लिये आचार्य, महा पंडित, महो पाध्याय. महा महोपाध्याय सर्व भौम वग़ैरा की बड़ी बड़ी उपाधियाँ दी जाती थीं. दरबारी कवियों को उनके मालिक कवि राय, कवि शेखर, कवि कंकन, कवि राज वग़ैरा की उपाधियाँ देते थे. अब फिर यूनिवरसिटियों को लें. बीच के युग के बाद जब जब बरतनिया, फ़्रांस वग़ैरा मे राष्ट्री क्रांतियो के बाद पूंजीवाद का ज़माना आया तो बरतनिया मे पुराने लार्ड. काउन्ट, ड्यूक. वग़ैरा के साथ नये शासकों यानी पूंजी पतियों को भी आनरेरी डिगरियाँ बटने लगीं. उस समय उनमे एक तरह का छुट वहम था. वह भी पंडित बनना या कहलवाना चाहते थे. पढ़ लिख कर इस डिगरी को हासिल करना उनके बूते के बाहर की बात थी. वह पैसे के बल पर डिगरियाँ ख़रीदने लगे. अभी १८३२ के ... का हक नहीं था.

پوپ کے فرمان کے مطابق خاص طور سے پرمان سمجھا جاتا تھا. بیچ زمانہ کے بڑے بڑے شکشکوں' اسکول مین یا اسکولیسٹک درشن کے آچاریوں کو ڈاکٹر کی ڈگری کے ساتھ کچھ اور اُپادھیاں بھی دی جاتی تھیں جیسے ٹامس ایکسنا کو اینجلکس' برنرڈ کومیلی فلوئس وغیرہ. لیکن عیسائی چرچ کے ان ڈاکٹروں کی تعداد انگنت نہیں تھی. یورپ کے سنتوں میں آینا سئیوس نزیانجس کے گریگری مہلنئے سل وان کرائسوسٹم کو ھی ڈاکٹر کی اُپادھی ملی تھی. بعد میں نئے پوپ الفانسو دیئی لگوری کا نام بھی اس فہرست میں جوڑ دیا تھا.

جیسے پرانے زمانے میں مہرشی اور راج رشی ہوا کرتے تھے اسی طرح بیچ کال کے بھارت میں بھی براھمن' بودھ اور جین سچے پنڈتوں کو سمان کے لئے آچاریہ مہاپنڈت' مہوپادھیائے' مہا مہوپادھیائے' سرو بھوم وغیرہ کی بڑی بڑی اُپادھیاں دی جاتی تھیں. درباری کویوں کو ان کے مالک کوی رائے' کوی شیکھر' کوی کنکن' کوی راج وغیرہ کی اُپادھیاں دیتے تھے. اب پھر یونیورسٹیوں کو لیں. بیچ کے یگ کے بعد جب جب برطانیہ' فرانس وغیرہ میں راشٹری کرانتیوں کے بعد پونجی واد کا زمانہ آیا تو برطانیہ میں پرانے لارڈ' کاونٹ' ڈیوک' وغیرہ کے ساتھ نئے شاسکوں یعنی پونجی پتیوں کو بھی آنریری ڈگریاں بٹنے لگیں. اس سمے ان میں ایک طرح کا چھوٹ وھم تھا. وہ بھی پنڈت بننا یا کہلوانا چاھتے تھے. پڑھ لکھکر اس ڈگری کوحاصل کرنا ان کے بوتے کے باھر کی بات تھی. وہ پیسے کے بل پر ڈگریاں خریدنے لگے. ابھی ۱۸۳۲ کے سدھار قانون کے پہلے برطانیہ میں سب کو ووٹ دینے کا حق نہیں تھا.

पारलीमेन्ट को सीटें तब नीलाम मे बिकती थीं. उसी तरह लार्ड और पूंजी पति अपने नाम के लिये डाक्टर की डिगरियाँ ख़रीदा करते थे. पूंजी पति पैसा खर्च करके लार्ड बन जाया करते थे. ठीक इसी तरह से जैसे इस देश में राय साहब, राय बहादुर, खाँ साहब, खान बहादुर, सर, राजा वग़ैरा.

पूँजी पति युग में आनरेरी डिगरी देने की बीमारी लग भग सभी देशों मे हैज़े की तरह फैल गई है. सेठ साहूकारों, राजकाजियों के साथ ही माने हुए विद्वानों को भी आनरेरी डिगरी देने का रिवाज चल पड़ा.

पूंजी वाद ने पुराने ज़माने में कवि, पुरोहित, वैद्य, वकील वग़ैरा के पेशे में पहले जो एक आदर्श का मुलम्मा चढ़ा हुआ था उसे रगड़ कर उतार दिया और सब को कारोबार मे बदल दिया. यहाँ तक कि विद्या तक को भी. यूरप, अमरीका मे कितनी ही जगह नकली डिगरियाँ बेचने की दुकानें खुल गई. जैसे असली देशी घी की जगह डालडा की दुकानें. विज्ञान कला की कोई भी डिगरी एक ख़ास रक़म देने पर मिल जाती था. यहाँ डाक्टरेट के साथ ही बी. ए., एम. ए., साइन्स और कला दोनों की डिगरियाँ मिलती थीं. लेकिन ऐसा होने से बड़ी और मशहूर यूनिवरसिटियों की रोज़ी मारी जाती थी. इसलिये अमरीका मे इन डिगरियों की दुकानों को बन्द करने के लिये क़ानून बनाने की नौबत आ गई थी इस । न कितने ही सम्मेलन और परिषद वग़ैरा डिगरियों की दुकानें चल रही हैं. अभी क़ानून बनाकर इन्हें बन्द करने की नौबत नहीं आई है

پارلیمنٹ کي سیٹیں تب نیلام میں بکتي تھیں ۔ أسي طرح لارڈ اور پونجی پتی اپنے نام کے لئے ڈاکٹر کی ڈگریاں خریدا کرتے تھے ۔ پونجي پتی پیسہ خرچ کرکے لارڈ بن جایا کرتے تھے ۔ ٹھیک اسي طرح جیسے اس دیش میں رائے صاحب، رائے بہادر، خاں صاحب، خان بہادر، سر، راجہ وغیرہ ۔

پونجی پتی یگ میں آنریري ڈگری دینے کی بیماری لگ بھگ سبھی دیشوں میں ہیضہ کي طرح پھیل گئی ہے ۔ سیٹھ ساھوکاروں، راج کاجیوں کے ساتھ ھی مانے ھوئے ودوانوں کو بھی آنریری ڈگری دینے کا رواج چل پڑا ۔

پونجی واد نے پرانے زمانہ میں کوي، پروھت، ويد، وکیل وغیرہ کے پیشہ میں پہلے جو ایک آدرش کا ملمع چڑھا ہوا تھا أسے رگڑ کر أتار دیا اور سب کو کاروبار میں بدل دیا ۔ یہاں تک کہ ودیا تک کو بھی ۔ یورپ، امریکہ میں کتنی ھی جگہ نقلی ڈگریاں بیچنے کی دوکانیں کھل گئیں ۔ جیسے اصلی دیشي گھی کی جگہ ڈالڈا کي دوکانیں ۔ وگیان کلا کی کوئي بھی ڈگری ایک خاص رقم دینے پر مل جاتي تھی یہاں ڈاکٹریٹ کے ساتھ ھي بي ۔ اے ۔، ایم ۔ اے ۔، سائنس اور کلا دونوں کی ڈگریاں مل سکتی تھیں ۔ لیکن ایسا ھونے سے بڑی اور مشہور یونیورسٹیوں کي روزي ماري جاتی تھي ۔ اس لئے امریکہ میں ان ڈگریوں کی دوکانوں کو بند کرنے کے لئے قانون بنانے کي نوبت آگئي تھی ۔ اس دیش میں کتنے ھی سمیلن اور پریشد وغیرہ ڈگریوں کی دوکانیں چل رھی ھیں ۔ ابھی قانون بنا کر انھیں بند کرنے کی نوبت نہیں آئي ھے ۔

मन दादा ही में लगा रहा.

"खेल से लौटने पर अम्मा ने जबरदस्ती मुझे खिला पिला कर बिस्तर पर लिटा दिया. और न सोने पर गुस्सा होने की धमकी दी, फिर काम में लग गईं. उनके सामने तो मैंने आँखें बन्द कर लीं. लेकिन जैसे ही वह वहाँ से हटीं, मेरी आँखें खुल गईं. फिर भी उठ बैठने की हिम्मत मुझमें नहीं थी. आँखें खोल, टक-टक ताकते हुए दादा के बारे में अपनी भोली कल्पनाओं के सहारे सोचते-सोचते न जाने कितना वक़्त कट गया. कान दरवाज़े ही पर लगे थे कि किसी के आने की आहट मिले और मैं उठ बैठूँ. पता नहीं, कब तक यों जागती रही और कब और कैसे इन्तज़ार करती हुई आंखें बन्द हो गईं.

"सुबह हुई, तो दादा को देखने का सपना सँभाले उठ बैठी. सदा की तरह उस दिन कोई मेरे उठने का इन्तज़ार न कर रहा था. शायद सब भूले हुए थे. मैं आहिस्ता से बिस्तर से उठी यह सोचती हुई कि अभी-अभी चुपके से दादा को देख आऊँ. कमरे से आते ही आवाज़ सुन कर मैंने भाँप लिया कि किस कमरे में दादा हैं. कोने के कमरे में कुछ लोग बातें कर रहे थे. मैं समझ गई दादा उसी कमरे में हैं और धीरे-धीरे नन्हें-नन्हें डग भरती हुई उस कमरे की ओर बढ़ी. अभी कुछ ही बढ़ी हूंगी कि पीछे से अम्मा की आवाज़ आई —'अम्मू !' मैं एकाएक ठिठक गई. मेरी सहमी नज़रें अम्मा की ओर उठीं और मैं पसोपेश में मैं खड़ी की खड़ी रही, कि अम्मा ने आगे बढ़कर मुझे गोद में उठाते हुए कहा—'क्यों री, ऐसे ही दादा के

میں لگا رہا۔

"کھیل سے لوٹنے پر اماں نے زبردستی مجھے کھلا پلا کر بستر پر لٹا دیا۔ اور نہ سونے پر غصہ ہونے کی دھمکی دی، پھر کام میں لگ گئیں۔ ان کے سامنے تو میں نے آنکھیں بند کر لیں۔ لیکن جیسے ہی وہ وہاں سے ہٹیں، میری آنکھیں کھل گئیں۔ پھر بھی اٹھ بیٹھنے کی ہمت مجھ میں نہیں تھی۔ آنکھیں کھول ٹک ٹک تاکتے ہوئے دادا کے بارے میں اپنی بھولی کلپناؤں کے سہارے سوچتے سوچتے نہ جانے کتنا وقت کٹ گیا۔ کان دروازے ہی پر لگے تھے کہ کسی کے آنے کی آہٹ ملے اور میں اٹھ بیٹھوں۔ پتہ نہیں، کب تک یوں جاگتی رہی اور کب اور کیسے انتظار کرتی ہوئی آنکھیں بند ہو گئیں۔

"صبح ہوئی، تو دادا کو دیکھنے کا سپنا سنبھالے اٹھ بیٹھی۔ سدا کی طرح اس دن کوئی میرے اٹھنے کا انتظار نہ کر رہا تھا۔ شاید سب بھولے ہوئے تھے۔ میں آہستہ سے بستر سے اٹھی یہ سوچتی ہوئی کہ ابھی ابھی چپکے سے دادا کو دیکھ آؤں۔ کمرے سے آتے ہی آواز سن کر میں نے بھانپ لیا کہ کس کمرے میں دادا ہیں۔ کونے کے کمرے میں کچھ لوگ باتیں کر رہے تھے میں سمجھ گئی دادا اسی کمرے میں ہیں اور دھیرے دھیرے ننھے ننھے ڈگ بھرتی ہوئی اس کمرے کی اور بڑھی۔ ابھی کچھ ہی بڑھی ہوں گی کہ پیچھے سے اماں کی آواز آئی — "امو!" میں ایکایک ٹھٹھک گئی۔ میری سہمی نظریں اماں کی اور مڑیں اور میں پس و پیش میں کھڑی کی کھڑی رہی، کہ اماں نے آگے بڑھ کر مجھے گود میں اٹھاتے ہوئے کہا "کیوں ری، ایسے ہی دادا کے

लेखक के दोस्त डाक्टर (नक़ली यानी आनरेरी नहीं) सुनीत कुमार चट्टोपाध्या ने एक बार डिगरियों की दुकान के बारे में एक बड़ी मज़ेदार कहानी सुनाई थी. पैरिस की एक डिगरी की दुकान पर एक मालदार ख़रीदार घोड़े पर चढ़ कर डिगरी लेने गया. अपने लिये तो उसने डिगरी ले ली. लेकिन वह अपने घोड़े को भी यह सम्मान दिलाना चाहता था. दुकानदार से उसने घोड़े के लिये भी एक डिगरी देने के लिये कहा. इस पर दुकानदार ने जवाब दिया कि डिगरी सिर्फ़ गधों को ही बेची जाती है, घोड़ों को नहीं. प्राचीन रोमन राजाओं और रानियों ने अपने प्यारे जानवरों तक को शौक़ से गद्दी पर बिठाया था, तो घोड़े के सवार ने अपने घोड़े के लिये डिगरी माँग कर क्या अन्याय किया.

१५ अगस्त की अहिंसक क्रांति के बाद और बातों के साथ डिगरी देने में भी यहाँ क्रांति हो गई है. किसी ज़माने में हिन्दू यूनिवरसिटि के लिये श्री मदन मोहन मालवी राजा, महाराजा, सेठों से रुपया लेने के लिये उनको डाक्टरेट की डिगरियाँ दिया करते थे. बिरला भाईयों के वालिद श्री बलदेव दास बिरला को अंगरेज़ सरकार ने राजा की उपाधि दी. मालवी जी महाराज ने उन्हें डाक्टर आफ़ लिट्रेचर की उपाधि दी. इस पर दिल्ली के "नैशनल काल" के सम्पादक श्री साहनी ने लिखा था कि इस डिगरी की जगह अगर उन्हें "डाक्टर आफ़ फाटका बाज़ार" की उपाधि दी जाती तो कितना अच्छा होता. क्यो कि इस विषय का इतना बड़ा आचार्य शायद ही कोई दूसरा हो. हिन्दू यूनिवरसिटी ने बनारस के नाबालिग महाराजा

لیکھک کے دوست ڈاکٹر (نقلی یعنی آنریری نہیں) سنیت کمار چٹوپادھیاے نے ایک بار ڈگریوں کی دوکان کے بارے میں ایک بڑی مزیدار کہانی سنائی تھی. پیرس کی ایک ڈگری کی دوکان پر ایک مالدار خریدار گھوڑے پر چڑھ کر ڈگری لینے گیا. اپنے لئے تو اُسنے ڈگری لے لی. لیکن وہ اپنے گھوڑے کو بھی یہ سمان دلانا چاہتا تھا. دوکاندار سے اس نے گھوڑے کے لئے بھی ایک ڈگری دینے کے لئے کہا. اس پر دوکاندار نے جواب دیا کہ ڈگری صرف گدھوں کو ہی بیچی جاتی ہے' گھوڑوں کو نہیں. پراچین رومن راجاؤں اور رانیوں نے اپنے پیارے جانوروں تک کو شوق سے گدی پر بٹھایا تھا' تو گھوڑے کے سوار نے اپنے گھوڑے کے لئے ڈگری مانگ کر کیا انیاے کیا.

١٥ اگست کی اہنسک کرانتی کے بعد اور باتوں کے ساتھ ڈگری دینے میں بھی یہاں کرانتی ہوگئی ہے. کسی زمانے میں ہندو یونیورسٹی کے لئے شری مدن موہن مالوی راجہ' مہا راجا' سیٹھوں سے روپیہ لینے کے لئے اُن کو ڈاکٹریٹ کی ڈگریاں دیا کرتے تھے. برلا بھائیوں کے والد شری بلدیو داس برلا کو انگریز سرکار نے راجہ کی اُپادھی دی تھی. مالوی جی مہاراج نے انہیں ڈاکٹر آف لٹریچر کی اُپادھی دی. اسپر دلی کے "نیشنل کال" کے سمپادک شری ساہنی نے لکھا تھا کہ اس ڈگری کی جگہ اگر اُنہیں "ڈاکٹر آف پھاٹکا بازار" کی اُپادھی دی جاتی تو کتنا اچھا ہوتا. کیونکہ اس وشے کا اتنا بڑا آچاریہ شاید ہی کوئی دوسرا ہو. ہندو یونیورسٹی نے بنارس کے نابالغ مہاراجہ

को भी डाक्टर की उपाधि दी थी. पाठकों को इस पर अचरज नहीं करना चाहिये. सोने में सब गुन हुआ करते है. यह सच है भूट नहीं.

अमरीका के पूंजी पति हर बात को हद तक पहुँचाने के आदी हैं. डाक्टरी बाँटने में भी उन्होंने हद कर दी है. अमरीका के एक पिछले प्रेसिडेन्ट हूवर को बावन यूनिवरसिटियों से डाक्टरेट की आनरेरी उपाधि मिली है. रूज़वेल्ट बत्तीस यूनिवरसिटियों के ही डाक्टर हो कर मरे. ट्रूमैन साहब अभी तक सत्ताईस यूनिवरसिटियों के ही डाक्टर बन पाये हैं. कामनवैल्थी भारत के कितने ही मंत्रियों के डाक्टरेट का संख्या कम से कम एक दर्जन तो हो गई होगी. केन्द्री मंत्रियो के कदमो पर चल कर रियासतों के बड़े और दूसरे मंत्री भी डाक्टर बनने के लिये आपस में होड़ लगा रहे हैं. अभिनन्दन ग्रन्थों की तरह डाक्टरी का बाज़ार गर्म है. रियासती मंत्री बेचारे घाटे में हैं. एक तो उनकी दौड़ राज के अन्दर ही सीमित है दूसरे राजो मे इतनी यूनिवरसिटियाँ नहीं कि वह केन्द्र वालों का मुकाबला कर सकें.

मंत्रियों की तरह कितने ही सेठ भी डाक्टरेट के उम्मीद वार हैं. वह डाक्टर बनने के लिये तरह तरह की तिकड़मो से काम लेते हैं. लेकिन अभी तक इस मामले मे उन्हे मन चाही सफलता नहीं मिल रही है कुछ दिन हुए कानपुरी सेठ सिंघानिया ने अपने बाप कमला पति के नाम पर भौतिक विज्ञान का एक इन्स्टीट्यूट खोलने के लिये इलाहाबाद यूनिवरसिटी को कई लाख रुपया देने का एलान किया. यूनिवरसिटी की डायमन्ड जुबली मनाई जा रही थी. वहाँ

(१४१)

کو بھی ڈاکٹر کی اُپادھی دی تھی . پاٹھکوں کو اس پر اچرج نہیں کرنا چاھئے. سونے میں سب گن ھوا کرتے ھیں . یہ سچ ھے جھوٹ نہیں .

امریکہ کے پونجی پتی ھر بات کو حد تک پھونچانے کے عادی ھیں . ڈاکٹری بانٹنے میں بھی اُنھوں نے حد کر دی ھے . امریکہ کے ایک پچھلے پریسیڈنٹ هوور کو باون یونیورسٹیوں سے ڈاکٹریت کی آنریری اُپادھی ملی ھے . روز ویلٹ بتیس یونیورسٹیوں کے ھی ڈاکٹر ھوکر مرے . ٹرومین صاحب ابھی تک ستائیس یونیورسٹیوں کے ھی ڈاکٹر بن پائے ھیں کامن ویلتھی بھارت کے کتنے ھی منتریوں کے ڈاکٹریت کی سنکھیا کم سے کم ایک درجن تو ھوگئی ھوگی. کیندری منتریوں کے قدموں پر چل کر ریاستوں کے بڑے اور دوسرے منتری بھی ڈاکٹر بننے کے لئے آپس میں ھوڑ لگا رھے ھیں . ابھینندن گرنتھوں کی طرح ڈاکٹری کا بازار گرم ھے . ریاستی منتری بیچارے گھاٹے میں ھیں . ایک تو اُنکی دوڑ راج کے اندر ھی سیمت ھے دوسرے راجوں میں اتنی یونیورسٹیاں نہیں کہ وہ کیندر والوں کا مقابلہ کر سکیں .

منتریوں کی طرح کتنے ھی سیٹھ بھی ڈاکٹریت کے اُمیدوار ھیں . وہ ڈاکٹر بننے کے لئے طرح طرح کی تکڑموں سے کام لیتے ھیں . لیکن ابھی تک اِس معاملہ میں اُنھیں من چاھی سپھلتا نہیں مل رھی ھے کچھ دن ھوے کانپوری سیٹھ سنگھانیا نے اپنے باپ کملا پتی کے نام پر بھوتک وگیان کا ایک انسٹیٹیوٹ کھولنے کے لئے الہ آباد یونیورسٹی کو کئی لاکھ روپیہ دینے کا اعلان کیا . یونیورسٹی کی ڈائمنڈ جوبلی منائی جا رھی تھی . وھاں

(۱۴۱)

के शिक्षक और राजकाजी अधिकारियों ने सेठ जी को डाक्टर बना कर धन्य बनाना और ख़ुद भी धन्य होना चाहा. पर बुरा हो इस यूनिवरसिटी के लेकचरारों और अध्यापकों का जिन्होंने हाय तोबा मचाकर "सैटिल्ड फ़ैक्ट" को "अन सैटिल्ड" कर दिया.

इस तरह की एक घटना हिटलर के जीवन मे भी हुई थी. साहब बहादुर ज़्यादा पढ़े हुए नहीं थे. फिर भी फ़ुहरर बन जाने के बाद उन्हें भी डाक्टर बनने का शौक़ चर्राया. टूबिनजेन यूनिवरसिटी के सिनेट मे उन्हें डाक्टर की उपाधि देने का प्रस्ताव पेश हुआ. जर्मनी मे एक क़ायदा सा बना हुआ है कि सिनेट की एक राय से ही आनरेरी डिगरी दी जा सकती है. बुरा हो इस यूनिवरसिटी के इन्डियन इन्सटीट्यूट के डायरेक्टर प्रोफ़ेसर जे. डब्लू. हावर का (उन्होंने योग पर अनूठे ग्रन्थ लिखे हैं और भारत में बरसों मिशनरी का काम कर चुके हैं) जिन्होंने विरोध मे अकेला हाथ उठाकर हिटलर के डाक्टर बनने के अरमान पर पानी फेर दिया. लेकिन प्रोफ़ेसर साहब को इसकी क़ीमत भी चुकानी पड़ी थी. सिनेट की सभा से घर पर पहुँचते ही उनको आर्मर्ड कारों ने घेर लिया. इसके बाद उनका क्या हुआ होगा यह पढ़ने वाले ख़ुद सोच सकते हैं. इलाहाबादी शिक्षक भाई अगर हावर की गति से बच गये तो इसे तीर्थराज प्रयाग का वरदान ही समझना चाहिये.

दुनिया में एक ऐसा भी देश है जहाँ डाक्टर की डिगरियों के साथ मज़ाक़ नहीं किया जाता. वह ख़रीद फ़रोख़्त की चीज़ नहीं समझी जाती. वहाँ उसे ख़ैरात में नहीं बाँटा जाता. उस देश

کے شکشک اور راج کاجی ادھیکاریوں نے سیٹھ جی کو ڈاکٹر بنا کر دھنیہ بنانا اور خود بھی دھنیہ ہونا چاہا. پر برا ہو اس یونیورسٹی کے لیکچراروں اور ادھیاپکوں کا جنھوں نے ہائے توبہ مچاکر "سیٹلڈ فیکٹ" کو "انسیٹلڈ" کردیا.

اسطرح کی ایک گھٹنا ہٹلر کے جیون میں بھی ہوئی تھی. صاحب بہادر زیادہ پڑھے ہوئے نہیں تھے. پھر بھی فیورر بن جانے کے بعد اُنھیں بھی ڈاکٹر بننے کا شوق چرایا توبن جین یونیورسٹی کے سینیٹ میں اُنھیں ڈاکٹر کی اُپادھی دینے کا پرستاؤ پیش ہوا. جرمنی میں ایک قاعدہ سا بنا ہوا ہے کہ سینیٹ کی ایک رائے سے ہی آنریری ڈگری دیجا سکتی ہے. برا ہو اس یونیورسٹی کے انڈین انسٹیٹیوٹ کے ڈاکٹر پروفیسر جے. ڈبلو. ہاور کا (اُنھوں نے یوگ پر اُنوٹھے گرنتھ لکھے ہیں اور بھارت میں برسوں مشنری کا کام کر چکے ہیں) جنھوں نے وِرودھ میں اکیلا ہاتھ اُٹھاکر ہٹلر کے ڈاکٹر بننے کے ارمان پر پانی پھیر دیا. لیکن پروفیسر صاحب کو اس کی قیمت بھی چکانی پڑی تھی. سینیٹ کی سبھا سے گھر پر پہونچتے ہی اُن کو آرمرڈ کاروں نے گھیر لیا. اس کے بعد ان کا کیا ہوا ہوگا یہ پڑھنے والے خود سوچ سکتے ہیں. الہ آبادی شکشک بھائی اگر ہاور کی گتی سے بچ گئے تو اسے تیرتھ راج پریاگ کا وردان ہی سمجھنا چاہئے.

دنیا میں ایک ایسا بھی دیش ہے جہاں ڈاکٹر کی ڈگریوں کے ساتھ مذاق نہیں کیا جاتا. وہ خرید فروخت کی چیز نہیں سمجھی جاتی. وہاں اُسے خیرات میں نہیں بانٹا جاتا. اُس دیش والے دوسرے دیشوں کی دی ہوئی آنریری ڈگ...

देश है सोवियत रूस. वहां इस सम्मान की डिगरी के लिये (यह सच मुच ही सम्मान की चीज़ समझी जाती है) कम से कम छै से दस साल कठिन मेहनत करने की ज़रूरत पड़ती है.

हिन्दुस्तान के विद्यार्थी और अध्यापक डिगरी का सदा ब्रत बन्द करायें. इसे फरोख़्त की चीज़ बनने से बचायें. पत्रकार भाई इसमें पूरी मदद और सहयोग दें यही हमारी प्रार्थना है.

आज के शहीद

(सम्पादक श्री रतन लाल बंसल)

आज के शहीद में उन बहादुरो की कहानियाँ हैं जिन्होंने विदेशी हाकिमो की फैलाई फूट की आग में इन्सानियत को भस्म होते देख एक छन की भी देर न की और उसे बुझाने के लिये अपनी जान क़ुरबान कर दी, उन वीरो की कहानियाँ हैं जिन्हो ने फूट और नफ़रत के अंधेर मे रोशनी बनकर दूसरो को रास्ता दिखाया.

हर एकता प्रेमी के पढ़ने की किताब

सुन्दर जिल्द और आर्ट पेपर पर छपी आठ तस्वीरों के साथ. इस किताब का दाम सिर्फ ढाई रुपया रक्खा गया है. किताब उर्दू और नागरी दोनों लिखावटों मे मिल सकती है.

[नोट—बेचने वालों या कम से कम दस कापी ख़रीदने वालों को ३३ फ़ीसदी कमीशन दिया जायगा.]

मैनेजर 'नया हिन्द' ४८ बाई का बाग़, इलहाबाद.

دیش ہے سوویت روس . وہاں اس سمان کی ڈگری کے لئے (یہ سچ مچ ہی سمان کی چیز سمجھی جاتی ہے) کم سے کم چھ سے دس سال کٹھن محنت کرنے کی ضرورت پڑتی ہے .

ہندستان کے ودیارتھی اور ادھیاپک ڈگری کا سدا برت بند کرائیں . اسے خرید فروخت کی چیز بننے سے بچائیں . پترکار بھائی اس میں پوری مدد اور سہیوگ دیں یہی ہماری پرارتھنا ہے .

اج کے شہید

(سمپادک، شری رتن لال بنسل)

آج کے شہید میں اُن بہادروں کی کہانیاں ہیں جنھوں نے بدیشی حاکموں کی پھیلائی پھوٹ کی آگ میں انسانیت کو بھسم ہوتے دیکھ ایک چھن کی بھی دیر نہ کی اور اُسے بجھانے کے لئے اپنی جان قربان کردی' اُن ویروں کی کہانیاں ہیں جنھوں نے پھوٹ اور نفرت کے اندھیرے میں روشنی بنکر دوسروں کو راستہ دکھایا .

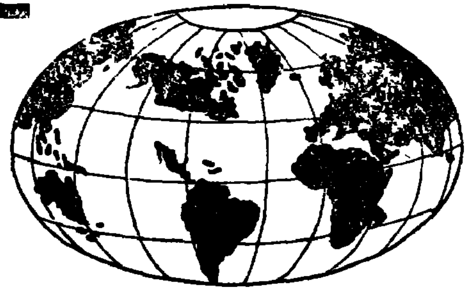
ہر ایکتا پریمی کے پڑھنے کی کتاب

سندر جلد اور آرٹ پیپر پر چھپی آٹھ تصویروں کے ساتھ . اس کتاب کا دام صرف ڈھائی روپیہ رکھا گیا ہے . کتاب اُردو اور ناگری دونوں لکھاوٹوں میں مل سکتی ہے

[نوٹ—بیچنے والوں یا کم سے کم دس کاپی خریدنے والوں کو ۳۳ فیصدی کمیشن دیا جائیگا .]

منیجر ' نیا ہند ' ۴۸ بائی کا باغ' الہ آباد .

दुनिया का हाल



دنیا کا حال

(भाई इशरत अली सद्दीक़ी)

कोरिया की लड़ाई जिसके दुनिया की लड़ाई बन जाने की सम्भावना, पंडित जवाहर लाल नेहरू की राय में रुपये में आठ आने भर है, दर असल दूसरी बड़ी लड़ाई के समय से ही शुरू हो चुकी थी यह लड़ाई कुछ समझौतों के सहारे थोड़े दिनो टलती रही. पर यह समझौते वैसे ही कमज़ोर थे जैसे कि लड़ाई के बाद के समझौते आम तौर पर हुआ करते है और जो लड़ाई को थोड़े दिनों के लिये रोक कर लड़ने वालों को तैयारी करने का मौक़ा दे देते हैं.

इस तरह का पहला समझौता रूस, बरतानिया और अमरीका के बीच २७. दिसम्बर सन् ४५ ई० को हुआ था. बाद को इस पर चीन ने भी दस्तख़त कर दिये. इसका मतलब यह था कि कोरिया को पाँच बरस में एक आज़ाद रियासत बना दिया जाये. और इस बीच में उसे आज़ादी के वास्ते तैयार करने के लिये उस पर चारों बड़े राष्ट्रों की निगरानी रहे. मगर उस से पहले जापान, जिसने

(بھائی عشرت علی صدیقی)

کوریا کی لڑائی جس کے دنیا کی لڑائی بن جانے کی سمبھاونا' پنڈت جواہر لال نہرو کی رائے میں روپیہ میں آٹھ آنے بھر ہے' دراصل دوسری بڑی لڑائی کے سمے سے ھی شروع ھوچکی تھی۔ یہ لڑائی کچھ سمجھوتوں کے سہارے تھوڑے دنوں تک ٹلتی رھی پر یہ سمجھوتے ویسے ھی کمزور تھے جیسے کہ لڑائی کے بعد کے سمجھوتے عام طور پر ھوا کرتے ھیں اور جو لڑائی کو تھوڑے دنوں کے لئے روک کر لڑنے والوں کو تیاری کرنے کا موقع دے دیتے ھیں۔

اس طرح کا پہلا سمجھوتہ روس' برطانیہ اور امریکہ کے بیچ ۲۷ دسمبر سن ۴۵ء کو ھوا تھا بعد کو اس پر چین نے بھی دستخط کردیئے۔ اس کا مطلب یہ تھا۔ کہ کوریا کو پانچ برس میں ایک آزاد ریاست بنا دیا جائے اور اس بیچ میں اسے آزادی کے واسطے تیار کرنے کے لئے اس پر چاروں بڑے راشٹروں کی نگرانی رھے۔ مگر اس سے پہلے جاپان' جس نے

सन १९१० ई० से कोरिया पर क़ब्ज़ा कर रखा था, लड़ाई हार चुका था और कोरिया के उत्तरी इलाक़े पर, जो आबादी के हिसाब से पूरे मुल्क का एक तिहाई हिस्सा था, रूस का और दक्खिनी इलाक़े पर अमरीका का क़ब्ज़ा हो गया था

झगड़े की जड़

यह दोनों राष्ट्र दूर पूर्वी एशिया के बारे में जो नक़्शे बना रहे थे, उनमें कोरिया बहुत बड़ी अहमियत रखता था. रूस ने कोरिया से मिले हुए चीनी सूबे मन्चूरिया में चीनी सरकार से कुछ अधिकार हासिल कर लिये थे और चीनी कम्युनिस्टों के चलन से उसे और पूरी दुनिया को यकीन हो गया था कि एक दिन वह च्यांग काई शेक की सरकार को हरा कर पूरे चीन में कम्युनिस्ट राज कायम कर लेंगे. ऐसी हालत में कोरिया पर अमरीका के कब्ज़े या असर से रूस और दूर पूरब में उस के असर वाला इलाक़ा ख़तरे में पड़ा रहता. दूसरी तरफ़ अमरीका जापान पर अपना पूरा असर जमाने का इरादा कर रहा था कोरिया, चीन और जापान के बीच एक पुल की हैसियत रखता था. अगर इस पुल पर कम्युनिस्टों का क़ब्ज़ा हो जाता तो कम्युनिस्ट एक सीधी छलांग मार कर जापान तक पहुंच सकते थे

कोरिया की इसी अहमियत के कारन उसकी एकता और आज़ादी के बारे मे रूस और अमरीका के बीच कोई समझौता नहीं हो सका. मास्को के समझौते के अनुसार एक रूसी-अमरीकी कमशीन क़ायम हुआ था और उसे सब से पहले यह तै करना था कि कोरिया के मसले पर वहाँ किन संस्थाओं से बात चीत की

سن ١٩١٠ع سے کوریا پر قبضہ کر رکھا تھا' لڑائي هارچکا تھا اور کوریا کے اُتري علاقے پر' جو آبادی کے حساب سے پورے ملک کا ایک تہائی حصہ تھا' روس کا اور دکھني علاقے پر امریکہ کا قبضہ هوگیا تھا .

جھگڑے کی جڑ

یہ دونوں راشٹر دور پوربی ایشیا کے بارے میں جو نقشے بنا رهے تھے ان میں کوریا بہت بڑی اهمیت رکھتا تھا . روس نے کوریا سے ملے هوئے چیني صوبے منچوریا میں چیني سرکار سے کچھ ادھیکار حاصل کر لئے تھے اور چیني کمیونسٹوں کے چلن سے اسے اور پوری دنیا کو یقین هوگیا تھا کہ ایک دن وہ چیانگ کائی شیک کي سرکار کو هرا کر پورے چین میں کمیونسٹ راج قائم کرلینگے . ایسي حالت میں کوریا پر امریکہ کے قبضے یا اثر سے روس اور دور پورب میں اس کے اثر والا علاقہ خطرے میں پڑا رهتا . دوسری طرف امریکہ جاپان پر اپنا پورا اثر جمانے کا ارادہ کر رها تھا . کوریا' چین یا جاپان کے بیچ ایک پل کي حیثیت رکھتا تھا . اگر اس پل پر کمیونسٹوں کا قبضہ هوجاتا تو کمیونسٹ ایک هی سیدھی چھلانگ مارکر جاپان تک پہنچ سکتے تھے .

کوریا کي اسی اهمیت کے کارن اس کی ایکتا اور آزادی کے بارے میں روس اور امریکہ کے بیچ کوئی سمجھوتہ نہیں هوسکا . ماسکو کے سمجھوتے کے انوسار ایک روسی امریکی کمیشن قائم هوا تھا اور اسے سب سے پہلے یہ طے کرنا تھا کہ کوریا کے مسئلے پر وهاں کن سنستھاؤں سے بات چیت کی

(१४२)

जाये ;और किन लोगों को अधिकार सौंपा जाय. रूस सिर्फ कम्युनिस्ट पार्टी और उसके साथियो को इसका अधिकारी समझता था. और अमरीका दूसरी संस्थाओं को भी इस मामले में शरीक करना चाहता था.

एक देश, दो सरकारें

दोनो का मक़सद यह था कि कोरिया मे अपने असर वाली सरकार क़ायम करा दें. और अमरीका ने यह देखकर कि रूस उसकी राह में अड़ंगा लगा रहा है, कोरिया के मामले को यू. एन. ओ. मे पेश कर दिया. जहाँ उसकी मरज़ी के मुताबिक और रूस की मरज़ी के खिलाफ़ यह तै हो गया कि कोरिया मे एलेक्शन कराने और एलेक्शन के ज़रिये क़ायम होने वाली सरकार को अधिकार दिलाने के लिये एक कमीशन मुक़र्रर कर दिया जाये. रूस ने यह सोच कर कि कमीशन क़ायम करना अमरीका की एक चाल है और शायद यह देख कर कि कम्युनिस्ट अभी मुकाबले के लिये नहीं तैयार हैं, इस कमीशन को उत्तरी कोरिया मे नहीं आने दिया और एलेक्शन सिर्फ़ दक्खिनी कोरिया मे हो सका. इस एलेक्शन के बाद जो सरकार बनी उसे यू. एन. ओ. की जनरल असेम्बली और अमरीका, बरतानिया और दस दूसरे राष्ट्रों ने भी मान लिया. मगर रूस ने इसे नहीं माना और दक्खिनी कोरिया के एलेक्शन के तीन महीने बाद उत्तरी कोरिया मे उसके अफ़सरों ने ऐलान कर दिया कि वहाँ भी एलेक्शन हुए हैं और एक सरकार क़ायम हो गई है.

बाहर का हाथ

(۱۴۲)

جائے اور کن لوگوں کو ادھیکار سونپا جائے . روس صرف کمیونسٹ پارٹی اور اس کے ساتھیوں کو اس کا ادھیکاری سمجھتا تھا اور امریکہ دوسری سنستھاؤں کو بھی اس معاملے میں شریک کرنا چاھتا تھا .

ایک دیش' دو سرکاریں

دونوں کا مقصد یہ تھا کہ کوریا میں اپنے اثر والی سرکار قائم کرا دیں . اور امریکہ نے یہ دیکھکر کہ روس اس کی راہ میں اڑنگا لگا رھا ھے کوریا کے معاملے کو یو . این . او . میں پیش کردیا جہاں اُس کی مرضی کے مطابق اور روس کی مرضی کے خلاف یہ طے ھوگیا کہ کوریا میں الکشن کرانے اور الکشن کے ذریعے قائم ھونے والی کوریائی سرکار کو ادھیکار دلانے کے لئے ایک کمیشن مقرر کردیا جائے . روس نے یہ سوچ کر کہ کمیشن قائم کرنا امریکہ کی ایک چال ھے اور شاید یہ دیکھکر کہ کمیونسٹ ابھی مقابلے کے لئے نہیں تیار ھیں اس کمیشن کو اُتری کوریا میں نہیں آنے دیا . اور الکشن صرف دکھنی کوریا میں ھوسکا . اس الکشن کے بعد جو سرکار بنی اسے یو . این . او . کی جنرل اسمبلی اور امریکہ' برطانیہ اور دس دوسرے راشٹروں نے بھی مان لیا . مگر روس نے اسے نہیں مانا اور دکھنی کوریا کے الکشن کے تین مہینے بعد اتری کوریا سے اس کے افسروں نے اعلان کردیا کہ وھاں بھی الکشن ھوئے ھیں اور ایک سرکار قائم ھوگئی ھے .

باھر کا ھاتھ

مثل مشہور ھےکہ ایک گدڑی میں دس فقیر تو سما سکتے ھیں '

मगर एक देश में दो राजा नहीं रह सकते. इसलिये कोरिया के उत्तरी और दक्खिनी हिस्से में अलग अलग सरकारों के बन जाने के बाद उनकी टक्कर यकीनी हो गई थी. उत्तरी कोरिया के रेडियो ने २१. जून को ऐलान किया कि "हमारे मुल्क को एक बनाने की कारवाइयाँ १५. अगस्त तक पूरी हो जायँगी" और उसी जमाने में दक्खिनी कोरिया के प्रधान ने कहा कि "हमारे उत्तरी भाइयों का दुख ज्यादा दिनों तक टाला नहीं जा सकता." अगर कोरिया वालों को उनके हाल पर छोड़ दिया जाता तो शायद एक मुल्क के दो टुकड़े नहीं होते और अगर टुकड़े हो जाने के बाद भी रूस और अमरीका अपनी फ़ौजों के साथ साथ अपने ध्यान को भी हटा लेते तो कोरिया थोड़े दिन बाद फिर एक मुल्क बन जाता या कम से कम दुनिया की शान्ति के लिये इतना बड़ा खतरा न बनता जितना इस समय बन गया है. मगर उत्तरी कोरिया रूस के इशारे पर चलता रहा और दक्खिनी कोरिया अमरीका के हाथ की कठ पुतली बन गया. नतीजा यह हुआ कि जैसे जैसे दूसरे अन्तर राष्ट्री मामलों में अमरीका और रूस की तनातनी बढ़ी वैसे ही वैसे दक्खिनी और उत्तरी कोरिया के झगड़े बढ़ते गये. पहले सरहदी झड़पें हुई और आखिर २५. जून को बाक़ायदा लड़ाई शुरू हो गई. (१५८)

पहल किसकी ?

उत्तरी कोरिया की सरकार और रूस का कहना है कि इस लड़ाई में दक्खिनी कोरिया ने अमरीका के हुक्म और उसकी मदद से पहल की है और दूसरी तरफ से यह कहा जाता है कि रूस उत्तरी कोरिया को अपना आला बना कर कम्युनिस्ट राज को फैलाने की

مگر ایک دیش میں دو راجہ نہیں رہسکتے. اور اس لئے کوریا کے اُتری اور دکھنی حصے میں الگ الگ سرکاروں کے بن جانے کے بعد ان کی ٹکر یقینی ہوگئی تھی. اُتری کوریا کے ریڈیو نے ۲۱ جون کو اعلان کیا کہ " ہمارے ملک کو ایک بنانے کی کاروائیاں ۱۵ اگست تک پوری ہوجائیں گی." اور اسی زمانے میں دکھنی کوریا کے پردھان نے کہا کہ " ہمارے اُتری بھائیوں کا دکھ زیادہ دنوں تک ٹالا نہیں جاسکتا." اگر کوریا والوں کو ان کے حال پر چھوڑ دیا جاتا تو شاید ایک ملک کے دو ٹکڑے نہیں ہوتے اور اگر ٹکڑے ہوجانے کے بعد بھی روس اور امریکہ اپنی فوجوں کے ساتھ ساتھ اپنے دھیان کو بھی ہٹا لیتے تو کوریا تھوڑے دنوں کے بعد پھر ایک ملک بن جاتا یا کم سے کم دنیا کی شانتی کے لئے اتنا بڑا خطرہ نہ بنتا جتنا اس سمے بن گیا ہے. مگر اُتری کوریا روس کے اشارے پر چلتا رہا اور دکھنی کوریا امریکہ کے ہاتھ کی کٹھ پتلی بن گیا. نتیجہ یہ ہوا کہ جیسے جیسے دوسرے انتر راشٹری معاملوں میں امریکہ اور روس کی تناتنی بڑھی ویسے ہی ویسے دکھنی اور اُتری کوریا کے جھگڑے بڑھتے گئے. پہلے سرحدی جھڑپیں ہوئیں اور آخر ۲۵ جون کو باقاعدہ لڑائی شروع ہوگئی. (١٥٨)

پہل کس کی ؟

اُتری کوریا کی سرکار اور روس کا کہنا ہے کہ اس لڑائی میں دکھنی کوریا نے امریکہ کے حکم اور اس کی مدد سے پہل کی ہے اور دوسری طرف سے یہ کہا جاتا ہے کہ روس اُتری کوریا کو اپنا آلہ بنا کر کمیونسٹ راج کو پھیلانے کی

कोशिश कर रहा है. यह दोनों बातें एक हद तक ठीक हो सकती हैं. इसलिये कि दक्खिनी कोरिया की तरफ से उत्तरी कोरिया की सरहद पर कुछ धावे हो चुके हैं, और अमरीका ने जून. ४९ ई० मे अपनी फ़ौजे हटा लेने के बाद "दक्खिनी कोरियाई सरकार के कहने से" अपने पाँच सौ आदमी वहाँ की फौज को काम सिखाने के लिये छोड़ दिये थे. इस तरह मुमकिन है कि २५, जून को या इस से दो चार दिन पहले दक्खिनी कोरिया की सेना ने उत्तरी कोरिया के किसी सरहदी मोर्चे पर कोई हमला किया हो. पर लड़ाई की चाल से पता चलता है कि उत्तरी कोरिया इसके लिये पूरी तरह से तैयार था हो सकता है कि उसने दक्खिन के हमले से फायदा उठाया हो. अगरचे यू. एन. ओ. के कोरिया कमीशन का कहना है कि पहल उसी ने की है. उस के टैंक और हवाई जहाज रूस के बने हुए हैं, उसकी फ़ौजे जिस तेज़ी से आगे बढ़ी हैं उससे मालूम होता है कि उनको बड़े बड़े माहिरो ने काम सिखाया है और उन्हीं के बनाये हुए नकशे और बताई हुई तरकीबो पर फौजें चल रही हैं. ऐसे माहिर उत्तरी कोरिया के पास नहीं थे और उसे चीन या रूस के अलावा कहीं और से नहीं मिल सकते थे.

अमरीका की हिचकिचाहट

इन माहिरो ने दक्खिनी कोरिया को खत्म करने या दूसरे शब्दों में कोरिया को एक करने के लिये बड़ा अच्छा वक़्त चुना है. बरसात के दिनों मे वहाँ अमरीकी हवाई जहाजों को उड़ने और उतरने मे बड़ी मुश्किल पड़ रही है. और उत्तर के ... [illegible]

کوشش کر رہا ھے . یہ دونوں باتیں ایک حد تک ٹھیک ھوسکتی ھیں . اس لئے کہ دکھنی کوریا کی طرف سے اُتری کوریا کی سرحد پر کچھ دھاوے ھو چکے ھیں اور امریکہ نے جون' ۴۹ع میں اپنی فوجیں ھٹا لینے کے بعد '' دکھنی کوریائی سرکار کے کہنے سے '' اپنے پانچ سو آدمی وھاں کی فوج کو کام سکھانے کے لئے چھوڑ دیئے تھے . اسطرح ممکن ھے کہ ۲۵ جون کو یا اس سے دو چار دن پہلے دکھنی کوریا کی سینا نے اُتری کوریا کے کسی سرحدی مورچے پر کوئی حملہ کیا ھو . پر لڑائی کی چال سے پتہ چلتا ھے کہ اُتری کوریا اسکے لئے پوری طرح سے تیار تھا . ھو سکتا ھے کہ اس نے دکھن کے حملے سے فائدہ اُٹھایا ھو . اگرچہ یو این . او . کے کوریا کمیشن کا کہنا ھے کہ پہل اسی نے کی ھے . اس کے ٹینک اور ھوائی جہاز روس کے بنے ھوئے ھیں اور اس کی فوجیں جس تیزی سے آگے بڑھی ھیں اس سے معلوم ھوتا ھے کہ ان کو بڑے بڑے ماھروں نے کام سکھایا ھے اور اُنھی کے بنائے ھوئے نقشے اور بتائی ھوئی ترکیبوں پر یہ فوجیں چل رھی ھیں . ایسے ماھر اتری کوریا کے پاس نہیں تھے اور اسے چین یا روس کے علاوہ کہیں اور سے نہیں مل سکتے تھے .

امریکہ کی ھچکچاھٹ

اِن ماھروں نے دکھنی کوریا کو ختم کرنے یا دوسرے شبدوں میں کوریا کو ایک کرنے کے لئے بڑا اچھا وقت چنا ھے . برسات کے دنوں میں ، وھاں امریکی ھوائی جہازوں کو اُڑنے اور اترنے میں بڑی مشکل پڑ رھی ھے اور اتر کے چھاپہ مار دستے امریکی فوجوں کو بڑی آسانی سے گھیر لیتے ھیں

इसके अलावा हालाँकि अमरीका ने दिसम्बर सन् ४८ ई० में दक्खिनी कोरिया को आर्थिक मदद देने का एक समझौता कर लिया था और बचाव के एक समझौते के मातहत फौजी मदद देने का भी वायदा कर चुका था. मगर अभी तक वह कुछ ज्यादा मदद नहीं दे सका था. इसका एक बड़ा कारन यह था कि चीन में च्यांग काई शेक की मदद पर अमरीका के अरबों डालर बरबाद हो जाने के बाद वहाँ कुछ लोग ऐसी मदद के ख़िलाफ़ हो गये थे. इसलिये इस साल के शुरू में अमरीकी प्रधान ट्रूमैन ने ऐलान कर दिया था कि अमरीका चीन के टापू फ़ारमूसा को, जहाँ च्यॉग ने भाग कर पनाह ले रखी है, चीनी कम्युनिस्टों से बचाने के लिये नहीं आयगा. और इसके साथ यह बात आम तौर पर मशहूर हो गई थी कि अमरीका का जंगी महकमा कोरिया की तरफ़ से निराश हो गया है और वहाँ जम कर लड़ने का इरादा नहीं रखता.

(१६६)

दक्खिन की हालत

दक्खिनी कोरिया की मदद से अमरीका के हाथ खेंच लेने का एक दूसरा कारन यह भी था कि वहाँ के लोग यह देख रहे थे कि डाक्टर सिंघमन री की सरकार देखने में चाहे जितनी बाकायदा हो मगर उसकी बुनियाद उतनी ही कमज़ोर थी जितनी कि चीन में च्यांग सरकार की. जनता इस सरकार के साथ नहीं थी और दक्खिनी कोरिया की पुलिस तक कई दफ़ा बग़ावत कर चुकी थी. उत्तरी कोरिया के साथ मिलाप का आन्दोलन बराबर बढ़ता जा रहा था और उसे कुचलने के लिये री सरकार कम्युनिस्टों के अलावा

اس کے علاوہ حالانکہ امریکہ نے دسمبر سن ۴۸ع میں دکھنی کوریا کو آرتھک مدد دینے کا ایک سمجھوتہ کر لیا تھا اور بچاؤ کے ایک سمجھوتے کے ماتحت فوجی مدد دینے کا بھی وعدہ کرچکا تھا مگر ابھی تک وہ کچھ زیادہ مدد نہیں دے سکا تھا۔ اس کا ایک بڑا کارن یہ تھا کہ چین میں چیانگ کائی شیک کی مدد پر امریکہ کے اربوں ڈالر برباد ہوجانے کے بعد وہاں کچھ لوگ ایسی مدد کے خلاف ہوگئے تھے اسلئے اس سال کے شروع میں امریکی پردھان ٹرومین نے اعلان کر دیا تھا کہ امریکہ چین کے ٹاپو فارموسا کو، جہاں چیانگ نے بھاگ کر پناہ لے رکھی ہے، چینی کمیونسٹوں سے بچانے کے لئے نہیں جائیگا اور اس کے ساتھ یہ بات عام طور پر مشہور ہوگئی تھی کہ امریکہ کا جنگی محکمہ کوریا کی طرف سے نراش ہوگیا ہے اور وہاں جم کر لڑنے کا ارادہ نہیں رکھتا۔

(۱۶۶)

دکھن کی حالت

دکھنی کوریا کی مدد سے امریکہ کے ہاتھ کھینچ لینے کا ایک دوسرا کارن یہ بھی تھا کہ وہاں کے لوگ یہ دیکھ رہے تھے کہ ڈاکٹر سنگ من ری کی سرکار دیکھنے میں چاہے جتنی باقاعدہ ہو مگر اس کی بنیاد اتنی ہی کمزور تھی جتنی کہ چین میں چیانگ سرکار کی۔ جنتا اس سرکار کے ساتھ نہیں تھی اور دکھنی کوریائی پولیس تک کئی دفعہ بغاوت کرچکی تھی۔ اُتری کوریا کے ساتھ ملاپ کا آندولن برابر بڑھتا جارہا تھا اور اسے کچلنے کے لئے ری سرکار کمیونسٹوں کے علاوہ

धंस जायगी ? चल, तेरा हाथ-मुँह तो धो दूँ.'

"अम्मा को क्या मालूम कि मेरे लिये उस वक्त यह सब उतना ज़रूरी न था. पर मैं क्या करती ?

"अम्मा मुझे बना सँवार कर दादा के कमरे की ओर चलीं. मैं उमड़ती बेचैनी को दबाये बढ़ी कि अम्मा ने मेरे हाथों को पकड़ सोने की चूड़ियाँ निकाल लीं. देर न चाहते हुए भी मैं रुक कर पूछ बैठी—"यह क्यों ?" "'बेटी', मुझे डराती-सी अम्मा बोलीं—'दादा के यहाँ जो भी सोने की चूड़ियाँ पहन कर जाती है. उससे वह उसे ले लेते हैं. जा, अब तू दादा को देख आ.'

"मैं दादा के कमरे के दरवाज़े पर पहुँचते ही झिझक गई. और खड़ी-खड़ी झाँकने लगी.

"तभी किसी ने पुकारा—'कौन है ?'

"मेरी आँखें शर्मा कर पीछे की ओर मुड़ीं कि एक आदमी ने मुझे कमरे में लाकर, बैठा दिया. अब दादा मेरे सामने थे. उनकी कितनी ही तस्वीरें मैं कई बार देख चुकी थी. मुझे क्या मालूम था कि यह वही दादा हैं. मेरी आँखें उन्हें देख देख कर शर्म से झुकती मुँदती रहीं उन्होंने मुझे अपनी गोद में खींच लिया और मेरे बालों को सहलाते हुए पूछा—'तुम्हारा नाम, बेटी ?'

"मैंने उनका मुँह देखते ही टूटी आवाज़ में कहा—'अम्मू'.

"'बहुत प्यारा नाम है. बेटी, भला, तेरे पिता···'

"'डाक्टर साहब की यह पोती है." मेरे होंठ खुलने के पहले

پاس جائے گی؟ چل تیرا ہاتھ منہ تو دھو دوں؛

"اماں کو کیا معلوم کہ میرے لئے اس وقت یہ سب اتنا ضروری نہ تھا۔ پر میں کیا کرتی؟

"اماں مجھے بنا سنوار کر دادا کے کمرے کی اور چلیں۔ میں اُمڑتی بے چینی کو دبائے بڑھی کہ اماں نے میرے ہاتھوں کو پکڑ سونے کی چوڑیاں نکال لیں۔ دیر نہ چاہتے ہوئے بھی میں رُک کر پوچھ بیٹھی— "یہ کیوں؟" "بیٹی"، مجھے ڈراتی سی اماں بولیں— 'دادا کے یہاں جو بھی سونے کی چوڑیاں پہن کر جاتی ہے، اس سے وہ اسے لے لیتے ہیں۔ جا، اب تو دادا کو دیکھ آ۔'

"میں دادا کے کمرے کے دروازے پہ پہنچتے ہی جھجھک گئی۔ اور کھڑی کھڑی جھانکنے لگی۔

"تبھی کسی نے پکارا— 'کون ہے؟'

"میری آنکھیں شرما کر پیچھے کی اور مڑیں کہ ایک آدمی نے مجھے کمرے میں لاکر، بیٹھا دیا۔ اب دادا میرے سامنے تھے۔ ان کی کتنی ہی تصویریں میں کئی بار دیکھ چکی تھی۔ مجھے کیا معلوم تھا کہ یہ وہی دادا ہیں۔ میری آنکھ انہیں دیکھ دیکھ کر شرم سے کھلتی مندتی رہی انھوں نے مجھے اپنی گود میں کھینچ لیا اور میرے بالوں کو سہلاتے ہوئے پوچھا— 'تمہارا نام، بیٹی؟'

"میں نے ان کا منہ دیکھتے ہی ٹوٹی آواز میں کہا— 'امو'؛

"بہت پیارا نام ہے۔ بیٹی، بھلا، تیرے پتا......'

"'ڈاکٹر صاحب کی یہ پوتی ہے'، میرے ہونٹ کھلنے کے پہلے ہی ایک آدمی نے بتا دیا۔ مجھے یہ بہت ہی برا لگا۔ کہ انھوں

बहुत से दूसरे लोगों को भी क़ैद कर चुकी थी. ऐसी हालत में अगर उत्तरी कोरिया हमला न करता तब भी दक्खिनी कोरिया में री की अमरीका-दोस्त सरकार ज़्यादा दिनों तक टिक न सकती और जब तक टिकी रहती उस वक़्त तक परेशानियों में फँसी रहती.

हमला क्यों ?

सवाल यह है कि फिर यह हमला क्यों हुआ? शायद इसलिये कि उत्तरी कोरिया की सरकार और उसके रूसी सरपरस्त उन तैयारियों का तोड़ करना चाहते थे, जो अमरीका जापान में कर रहा था, और जिनका सिलसिला दक्खिनी कोरिया तक फैलता हुआ मालूम हो रहा था. इसलिये कि अमरीकी सरकार एक तरफ़ तो कोरिया को मदद देते हिचकिचा रही थी और दूसरी तरफ़ उसके ज़िम्मेदार लोग दक्खिनी कोरिया के मोर्चों और अड्डों को मज़बूत बनाने की तरकीबों पर सोच-विचार कर रहे थे. ऐसे कुछ लोग जून के शुरू में दक्खिनी कोरिया गये थे और उनकी बातों से पता चलता था कि अमरीका में बहुत से लोग, जो सरकारी पालिसी बनाते और चलाते हैं, दक्खिनी कोरिया से हाथ धो लेने के लिये नहीं तैयार हैं. अगर थोड़ा समय और बीत जाता तो हो सकता था कि यह लोग अमरीकी सरकार पर दबाव डालकर दक्खिनी कोरिया को दूसरा जापान बनवा देते. दूसरी तरफ़ अगर दक्खिनी कोरिया में छेड़ छाड़ शुरू हो जाती, तो न केवल यह कि अमरीका की राह में एक रुकावट पड़ जाती. बल्कि उस के यहाँ उलझ जाने से यूरप और दूर पूरब के दूसरे

بہت سے دوسرے لوگوں کو بھی قید کرچکی تھی . ایسی حالت میں اگر اُتری کوریا حملہ نہ کرتا تب بھی دکھنی کوریا میں ری کی امریکہ دوست سرکار زیادہ دنوں تک ٹک نہ سکتی اور جب تک ٹکی رہتی اس وقت تک پریشانیوں میں پھنسی رہتی .

حملہ کیوں ؟

سوال یہ ہے کہ پھر یہ حملہ کیوں ہوا ؟ شاید اس لئے کہ اتری کوریا کی سرکار اور اس کے روسی سرپرست ان تیاریوں کا توڑ کرنا چاہتے تھے جو امریکہ جاپان میں کررہا تھا ' اور جنکا سلسلہ دکھنی کوریا تک پھیلتا ہوا معلوم ہو رہا تھا . اس لئے کہ امریکی سرکار ایک طرف تو کوریا کو مدد دیتے ہچکچا رہی تھی اور دوسری طرف اس کے ذمہ دار لوگ دکھنی کوریا کے مورچوں اور اڈوں کو مضبوط بنانے کی ترکیبوں پر سوچ بچار کر رہے تھے . ایسے کچھ لوگ جون کے شروع میں دکھنی کوریا گئے تھے اور اُن کی باتوں سے پتہ چلتا تھا کہ امریکہ میں بہت سے لوگ ' جو سرکاری پالیسی بناتے اور چلاتے ہیں ' دکھنی کوریا سے ہاتھ دھولینے کے لئے نہیں تیار ہیں . اگر تھوڑا سمے اور بیت جاتا تو ہو سکتا تھا کہ یہ لوگ امریکی سرکار پر دباؤ ڈال کر دکھنی کوریا کو دوسرا جاپان بنوا دیتے . دوسری طرف اگر دکھنی کوریا میں چھیڑ چھاڑ شروع ہوجاتی تو نہ کیول یہ کہ امریکہ کی راہ میں ایک رکاوٹ پڑ جاتی بلکہ اس کے یہاں الجھ جانے سے یورپ اور دور پورب کے

यू. एन. ओ. का रुख.

एक और बात जो उत्तरी कोरिया और रूस के ध्यान में रही होगी, यह है कि आज कल यू. एन. ओ. की सुरक्षा समिति रूस के अलग हो जाने के कारन लंगड़ी होगई है. रूस ने उसे इस कारन छोड़ रखा है कि अमरीका ने उसमें चीन की नई सरकार के प्रतिनिधि को नहीं आने दिया और इसी कारन उसने ऐलान कर दिया है कि वह अपने आपको उस समिति के फ़ैसलों का पाबन्द नहीं समझता. वह उस समिति में शरीक रहकर भी उसके फ़ैसलों को नामंजूर कर सकता था पर तब उसकी बदनामी होती और अब अमरीका की बदनामी हो रही है. इसलिये कि दुनिया और ख़ासकर एशिया में बहुत से लोग यह समझते हैं कि सुरक्षा समिति अमरीका के हाथ की कठपुतली बन गई है और उसी के कहे पर चलती है. इसी कारन वह फ़िलस्तीन और कश्मीर की लड़ाई में तो चुप रही मगर कोरिया के मामले में ताल ठोक कर मैदान में आगई. उसने यहाँ लड़ाई छेड़ने में उत्तरी कोरिया को हमले का अपराधी ठहरा दिया और फिर उसके ख़िलाफ़ फ़ौजी कारवाई करने का ऐलान कर दिया. इस ऐलान से भी चौबीस घंटा पहले अमरीका के प्रधान ट्रूमैन ने अपनी हवाई फ़ौज को दक्खिनी कोरिया की मदद के लिये भेज दिया और अपनी समुन्दरी फ़ौज को हुक्म दे दिया कि अगर चीन की कम्युनिस्ट सरकार फ़ारमूसा के टापू पर, जहाँ च्यांग काई शेक और उनके साथियों ने पनाह ले रखी है, क़ब्ज़ा करने की कोशिश करे तो उसका मुक़ाबला किया जाय.

یو . این . او . کا رخ

ایک اور بات جو اُتری کوریا اور روس کے دھیان میں رہی ہوگی یہ ہے کہ آج کل یو . این او . کی سورکشا سمیتی روس کے الگ ہوجانے کے کارن لنگڑی ہوگئی ہے . روس نے اسے اس کارن چھوڑ رکھا ہے کہ امریکہ نے اُس میں چین کی نئی سرکار کے پرتی‌ندھی کو نہیں آنے دیا . اور اسی کارن اس نے اعلان کر دیا ہے کہ وہ اپنے آپ کو اس سمیتی کے فیصلوں کا پابند نہیں سمجھتا . وہ اس سمیتی میں شریک رہ کر بھی اس کے فیصلوں کو نا منظور کر سکتا تھا پر تب اس کی بدنامی ہوتی اور اب امریکہ کی بدنامی ہورہی ہے . اس لئے کہ دنیا اور خاصکر ایشیا میں بہت سے لوگ سمجھتے ہیں کہ سورکشا سمیتی امریکہ کے ہاتھ کی کٹھ پتلی بن گئی ہے اور اسی کے کہے پر چلتی ہے . اسی کارن وہ فلسطین اور کشمیر کی لڑائی میں تو چپ رہی مگر کوریا کے معاملہ میں تال تھونک کر میدان میں آگئی . اس نے یہاں لڑائی چھیڑنے میں اُتری کوریا کو حملے کا اپرادھی ٹھہرادیا اور پھر اس کے خلاف فوجی کاروائی کرنے کا اعلان کر دیا . اس اعلان سے بھی چوبیس گھنٹہ پہلے امریکہ کے پردھان ٹرومین نے اپنی ہوائی فوج کو دکھنی کوریا کی مدد کے لئے بھیج دیا اور اپنی سمندری فوج کو حکم دیدیا کہ اگر چین کی کمیونسٹ سرکار فارموسا کے ٹاپو پر، جہاں چیانگ کائی شیک اور اُن کے ساتھیوں نے پناہ لے رکھی ہے، قبضہ کرنے کی کوشش کرے تو اسکا مقابلہ کیا جائے .

प्रधान ट्रूमैन ने यह हुक्म इस कारन दिया था कि वह उत्तरी कोरिया के हमले को कम्युनिज़्म के अन्तर राष्ट्री धावे का एक हिस्सा समझते हैं. और बरतानिया का विचार भी क़रीब क़रीब यही है. वह, जैसा कि पारलीमेन्ट में सरकार की तरफ़ से कहा गया है, कोरिया और मलाया के मसलों को एक ही जैसा मानती है. मगर सुरक्षा समिति के ठहराव में ऐसी कोई बात नहीं कही गई है और इसीलिये हिन्दुस्तान जैसे उन राष्ट्रों ने, जो रूस की इस दलील को नहीं मानते कि उस की ग़ैर हाज़िरी में सुरक्षा समिति के फ़ैसले ग़ैर क़ानूनी हैं और जिन्हों ने कोरिया के बारे में उस समिति के ठहराव मान लिये हैं, इस लड़ाई में कोई भाग नहीं लिया है और ट्रूमैन और एटली ने जो बात कही है उससे अपने अलग होने का एलान कर दिया है.

नेहरू का सुझाव

हिन्द सरकार इतनी सावधानी बरतने पर भी रूस और उसके कारिन्दों के एतराज़ और गाली गलौज से बच नहीं सकी. लेकिन जब से पंडित नेहरू ने कोरिया के झगड़े के शान्ति के साथ तै होने के बारे में अमरीका के विदेश मंत्री एचीसन और रूस के प्रधान मंत्री स्टालिन को चिट्ठियां लिखी हैं तब से एतराज़ करने वालों का रुख़ कुछ बदल गया है. पर अब दूसरी तरफ़ से एतराज़ और शिकायतें शुरू हो गई हैं. इसलिये कि उन चिट्ठियों में पंडित नेहरू ने यह सुझाव रखा था कि चीन की नई सरकार के प्रतिनिधि ... ... इस

پردھان ترومین نے یہ حکم اِس کارن دیا تھا کہ وہ اُتری کوریا کے حملے کو کمیونزم کے انتر راشٹری دھاوے کا ایک حصہ سمجھتے هیں اور برطانیہ کا وچار بھی قریب قریب یہی ھے . وہ جیسا کہ پارلیمنٹ میں سرکار کی طرف سے کہا گیا ھے' کوریا اور ملایا کے مسئلوں کو ایک هی جیسا مانتی ھے . مگر سورکشا سمیتی کے ٹھہراؤ میں ایسی کوئی بات نہیں کہی گئی ھے اور اسی لئے هندستان جیسے اُن راشٹروں نے جو روس کی اس دلیل کو نہیں مانتے کہ اُس کی غیر حاضری میں سورکشا سمیتی کے فیصلے غیر قانونی هیں' اور جنہوں نے کوریا کے بارے میں اس سمیتی کے ٹھہراؤ مان لئے هیں' اس لڑائی میں کوئی بھاگ نہیں لیا ھے اور ترومین اور ایٹلی نے جو بات کہی ھے اس سے اپنے الگ ہونے کا اعلان کردیا ھے .

نہرو کا سجھاؤ

هند سرکار اتنی ساودھانی برتنے پر بھی روس اور اس کے کارندوں کے اعتراض اور گالی گلوج سے بچ نہیں سکی . لیکن جب سے پنڈت نہرو نے کوریا کے جھگڑے کے شانتی کے ساتھ طے ہونے کے بارے میں امریکہ کے ودیش منتری ایچیسن اور روس کے پردھان منتری اسٹالن کو چٹھیاں لکھی هیں تب سے اعتراض کرنے والوں کا رخ کچھ بدل گیا ھے . پر اب دوسری طرف سے اعتراض اور شکایتیں شروع ہوگئی هیں . اس لئے کہ ان چٹھیوں میں پنڈت نہرو نے یہ سجھاؤ رکھا تھا کہ چین کی نئی سرکار کے پرتی‌ندھی کو سورکشا سمیتی میں شامل کرلیا جائے جس میں کہ روس بھی اِس

समिति में लौट आयें और यहाँ बैठ कर कोरिया के झगड़े को चुकाने पर सोच विचार किया जा सके. इससे अमरीका और बरतानिया ने यह मतलब निकाला कि इस तरह उत्तरी कोरिया और रूस पर दबाव पड़ने के बजाये उसे मुँह भराई मिल जायगी. इसी कारन उन्होंने इस सुझाव को नामन्ज़ूर कर दिया. पर रूस ने उसे मन्ज़ूर कर लिया और इस तरह राजनीति के मैदान में पच्छिमी राष्ट्रों को हरा दिया.

रूस की जीत

पंडित नेहरू का सुझाव मानकर रूस की जो जीत हुई थी वह सुरक्षा समिति में लौट आने के फ़ैसले से और पक्की हो गई है. इस फ़ैसले को पच्छिमी राष्ट्र अपनी जीत बताते हैं इसलिये कि रूस ने सुरक्षा समिति का बाईकाट इस वजह से किया था कि वहाँ चीन की नई सरकार के प्रतिनिधि को बैठने नहीं दिया गया था और च्यांग सरकार के प्रतिनिधि को रूस की राय में सुरक्षा समिति में बैठने का कोई अधिकार नहीं था. अभी तक उसी सरकार का प्रतिनिधि सुरक्षा समिति में मौजूद है और उसको हटाने के बारे में अपनी शर्त पूरी कराये बिना रूस ने अपना रुख़ बदल दिया है. देखने में यह उसकी हार है पर असल में यह जीत है. एक तो इसलिये कि दुनिया के इन्साफ़ पसन्द लोग रूस की शर्त को ठीक समझते थे और पंडित नेहरू ने सुरक्षा समिति को ठोस काम के लायक़ और शान्ति की रख-वाली के क़ाबिल बनाने के लिये जो सुझाव रखा था उसमें इस

سمیتي میں لوٹ آئے اور یہاں بیٹھ کر کوریا کے جھگڑے کو چکانے پر سوچ وچار کیا جا سکے اِس سے امریکہ اور برطانیہ نے یہ مطلب نکالا کہ اس طرح اُتری کوریا اور روس پر دباؤ پڑنے کے بجائے اسے منھ بھرائي مل جائے گي. اِسي کارن اُنھوں نے اس سجھاؤ کو نا منظور کر دیا. پر روس نے اسے منظور کر لیا اور اس طرح راج نیتي کے میدان میں پچھمی راشٹروں کو ھرا دیا.

روس کی جیت

پنڈت نہرو کا سجھاؤ مان کر روس کي جو جیت ھوئی تھي وہ سورکشا سمیتي میں لوٹ آنے کے فیصلے سے اور پکی ھوگئي ھے. اِس فیصلے کو پچھمی راشٹر اپنی جیت بتاتے ھیں اس لئے کہ روس نے سورکشا سمیتی کا بائیکاٹ اس وجہ سے دیا تھا کہ وھاں چین کی نئي سرکار کے پرتی ندھی کو بیٹھنے نہیں دیا گیا تھا اور چیانگ سرکار کے پرتی ندھي کو روس کی رائے میں سورکشا سمیتی میں بیٹھنے کا کوئی ادھیکار نہیں تھا. ابھی تک اسی سرکار کا پرتی ندھی سورکشا سمیتی میں موجود ھے اور اس کو ھٹانے کے بارے میں اپنی شرط پوری کرائے بنا روس نے اپنا رخ بدل دیا ھے دیکھنے میں یہ اس کی ھار ھے پر اصل میں یہ جیت ھے. ایک تو اسلئے کہ دنیا کے انصاف پسند لوگ روس کی شرط کو ٹھیک سمجھتے تھے اور پنڈت نہرو نے سورکشا سمیتی کو ٹھوس کام کے لائق اور شانتی کی رکھوالي کے قابل بنانے کے لئے جو سجھاؤ رکھا تھا اسمیں اس

शर्त का समर्थन किया था. ऐसी हालत में रूस के इस शर्त को छोड़ देने से उसकी साख गिरने के बजाय और बढ़ जायगी.

यही नहीं बल्कि सुरक्षा समिति में रूस के वापस आ जाने से अमरीका की राह में एक बहुत बड़ी रुकावट पड़ जायगी. रूस को इस समिति में 'विटो' का अधिकार हासिल है जिसका मतलब यह है कि अगर किसी कारवाई के लिये समिति के ग्यारह में से दस मेम्बर भी एक राय हो जायें तो भी रूस अकेला उसके खिलाफ़ वोट देकर उसे नामन्जूर करा सकता है. इसके अलावा वह इस संसथा में अपनी बात कह कर पूरी दुनिया को सुना सकता है. और यह दिखा कर कि वह शान्ति चाहता है, दूसरे देशों को अपने साथ ला सकता है. इसलिये उसके प्रतिनिधि ने जब पहली अगस्त को यह बात कही कि चीन का जो प्रतिनिधि इस वक़्त समिति में मौजूद हैं उसे उस देश की तरफ़ से बात करने का कोई अधिकार नहीं है तो हिन्दुस्तान ने उसके गरोह से अलग रहते हुए भी और योगोसलाविया ने रूस से आजकल अन बन रहते हुए भी इस बात का समर्थन किया.

(१३८)

इस तरह रूस हार कर जीत गया और उसके विरोधी राष्ट्र, जिन्होंने च्यांग सरकार के प्रतिनिधि को अपने वोट के बल पर सुरक्षा समिति में टिकाये रखा, जीत कर हार गये.

लड़ाई का हाल

شرط کا سمرتھن کیا تھا . ایسی حالت میں روس کے اس شرط کو چھوڑ دینے سے اس کی ساکھ گرنے کے بجائے اور بڑھ جائیگی .

یہی نہیں بلکہ سورکشا سمیتی میں روس کے واپس آجانے سے امریکہ کی راہ میں ایک بہت بڑی رکاوٹ پڑجائیگی . روس کو اس سمیتی میں 'ویٹو' کا ادھیکار حاصل ہے جسکا مطلب یہ ہے کہ اگر کسی کاروائی کے لئے سمیتی کے گیارہ میں سے دس ممبر بھی ایک رائے ہوجائیں تو بھی روس اکیلا اسکے خلاف ووٹ دے کر اسے نامنظور کرا سکتا ہے . اس کے علاوہ وہ اس سنستھا میں اپنی بات کہکر پوری دنیا کو سنا سکتا ہے . اور یہ دکھا کر کہ وہ شانتی چاہتا ہے دوسرے دیشوں کو اپنے ساتھ لا سکتا ہے . اِس لئے اسکے پرتی ندھی نے جب پہلی اگست کو یہ بات کہی کہ چین کا جو پرتی ندھی اس وقت سمیتی میں موجود ہے اسے اس دیش کی طرف سے بات کرنے کا کوئی ادھیکار نہیں ہے تو ہندستان نے اسکے گروہ سے الگ رہتے ہوئے بھی اور یوگوسلاویہ نے روس سے آج کل ان بن رہتے ہوئے بھی اس بات کا سمرتھن کیا .

(١٣٨)

اسطرح روس ہار کر جیت گیا اور اسکے وِرودھی راشٹر جنہوں نے چیانگ سرکار کے پرتی ندھی کو اپنے ووٹ کے بل پر سورکشا سمیتی میں ٹکائے رکھا' جیت کر ہار دئے .

لڑائی کا حال

لڑائی کے میدان میں بھی اُتری کوریا کی سیما' جسے ...

फौज तो नहीं पर सामान और सलाह जरूर मिल रहा है, बराबर आगे बढ़ती जा रही है और दक्खिनी कोरिया और अमरीका की सेनायें बराबर पीछे हटती जा रही हैं. दक्खिनी कोरिया की सरकार अपनी दो राजधानियाँ छोड़ चुकी है और तीसरी राजधानी (ताइगो) से भागने की तैयारियाँ कर रही है. उत्तर की कम्युनिस्ट सेना उस से सिर्फ ३५ मील पर बताई जाती है. और इतना ही बड़ा खतरा अमरीका के सबसे बड़े अड्डे पूसान बन्दरगाह के लिये भी पैदा हो गया है. इसके दो कारन हैं. एक तो यह कि अमरीका के लिये उत्तरी कोरिया का हमला अचानक था और वह लड़ाई के मैदान से लगभग सात हज़ार मील दूर होने के कारन अभी तक जितनी चाहिये उतनी सेना और सामान वहाँ तक नहीं पहुंचा सका है. दूसरा कारन यह है कि दक्खिनी कोरिया की सेना शुरू ही में हिम्मत हार गई और जनता जगह जगह उत्तर की कम्युनिस्ट सेना से मिल गई. जब यह सेना किसी शहर पर बाहर से धावा करती है तो जनता उसे अन्दर से मदद देती है जिसके कारन अमरीका के दस्ते घिर जाते हैं.

इस घेरे से बचने के लिये उनको पीछे हटना पड़ता है. जनरल मेकार्थर ने यू. एन. ओ. की सेना के सेनापति की हैसियत से सुरक्षा समिति के सामने अपनी पहली रिपोर्ट में बताया है कि वक़्त जीतने के लिये उनको ज़मीन हारना पड़ी है. इस सिलसिले में एक बात यह भी कही जा रही थी कि लड़ाई का मैदान दूर दूर तक फैला होने के कारन जनरल मेकार्थर को अपनी थोड़ी सी सेना छोटे छोटे टुकड़ों में बाँटना पड़ी है और मैदान छोटा हो जाने पर वह उसे इकट्ठा कर के जम कर मुक़ाबला कर सकेंगे. मगर मैदान

فوج تو نہیں پر سامان اور صلاح ضرور مل رہی ہے برابر آگے بڑھتی جارہی ہے اور دکھنی کوریا اور امریکہ کی سینائیں برابر پیچھے ہٹتی جارہی ہیں ۔ دکھنی کوریا کی سرکار اپنی دو راج دھانیاں چھوڑ چکی ہے اور تیسری راج دھانی (تائی گو) سے بھاگنے کی تیاریاں کر رہی ہے ۔ اُتر کی کمیونسٹ سینا اس سے صرف ۳۵ میل پر بتائی جاتی ہے ۔ اور اتنا ہی بڑا خطرہ امریکہ کے سب سے بڑے اڈے پوسان بندرگاہ کے لئے بھی پیدا ہوگیا ہے ۔ اسکے دو کارن ہیں ۔ ایک تو یہ کہ امریکہ کے لئے اُتری کوریا کا حملہ اچانک تھا اور وہ لڑائی کے میدان سے لگ بھگ سات ہزار میل دور ہونے کے کارن ابھی تک جتنی چاہئے اتنی سینا اور سامان وہاں تک نہیں پہونچا سکا ہے ۔ دوسرا کارن یہ ہے کہ دکھنی کوریا کی سینا شروع ہی میں ہمت ہار گئی اور جنتا جگہ جگہ اُتری کمیونسٹ سینا سے مل گئی ۔ جب یہ سینا کسی شہر پر باہر سے دھاوا کرتی ہے تو جنتا اسے اندر سے مدد دیتی ہے جس کے کارن امریکہ کے دستے گھر جاتے ہیں ۔

اس گھیرے سے بچنے کے لئے اُن کو پیچھے ہٹنا پڑتا ہے ۔ جنرل میک آرتھر نے یو ۔ این او ۔ کی سینا کے سینا پتی کی حیثیت سے سورکشا سمیتی کے سامنے اپنی پہلی رپورٹ میں بتایا ہے کہ وقت جیتنے کے لئے اُن کو زمین ہارنا پڑی ہے ۔ اس سلسلے میں ایک بات یہ بھی کہی جارہی تھی کہ لڑائی کا میدان دور دور تک پھیلا ہونے کے کارن جنرل میک آرتھر کو اپنی تھوڑی سی سینا چھوٹے چھوٹے ٹکڑوں میں بانٹنا پڑی ہے اور میدان چھوٹا ہوجانے پر وہ اُسے اکٹھا کرکے جم کر مقابلہ کرسکیں گے ۔ مگر میدان

शर्त का समर्थन किया था. ऐसी हालत में रूस के इस शर्त को छोड़ देने से उसकी साख गिरने के बजाय और बढ़ जायगी.

यही नहीं बल्कि सुरक्षा समिति में रूस के वापस आ जाने से अमरीका की राह में एक बहुत बड़ी रुकावट पड़ जायगी. रूस को इस समिति में 'विटो' का अधिकार हासिल है जिसका मतलब यह है कि अगर किसी कारवाई के लिये समिति के ग्यारह में से दस मेम्बर भी एक राय हो जायें तो भी रूस अकेला उसके खिलाफ़ वोट देकर उसे नामन्जूर करा सकता है. इसके अलावा वह इस संसथा में अपनी बात कह कर पूरी दुनिया को सुना सकता है. और यह दिखा कर कि वह शान्ति चाहता है, दूसरे देशों को अपने साथ ला सकता है. इसलिये उसके प्रतिनिधि ने जब पहली अगस्त को यह बात कही कि चीन का जो प्रतिनिधि इस वक़्त समिति में मौजूद है उसे उस देश की तरफ़ से बात करने का कोई अधिकार नहीं है तो हिन्दुस्तान ने उसके गरोह से अलग रहते हुए भी और योगोसलाविया ने रूस से आजकल अन बन रहते हुए भी इस बात का समर्थन किया.

इस तरह रूस हार कर जीत गया और उसके विरोधी राष्ट्र, जिन्होंने च्यांग सरकार के प्रतिनिधि को अपने वोट के बल पर सुरक्षा समिति में टिकाये रखा, जीत कर हार गये.

लड़ाई का हाल

लड़ाई के मैदान में भी उत्तरी कोरिया की सेना जिसे रूस से

شرط کا سمرتھن کیا تھا. ایسی حالت میں روس کے اس شرط کو چھوڑ دینے سے اس کی ساکھ گرنے کے بجائے اور بڑھ جائیگی.

یہی نہیں بلکہ سورکشا سمیتی میں روس کے واپس آجانے سے امریکہ کی راہ میں ایک بہت بڑی روکاٹ پڑجائیگی. روس کو اس سمیتی میں 'ویٹو' کا ادھیکار حاصل ہے جسکا مطلب یہ ہے کہ اگر کسی کاروائی کے لئے سمیتی کے گیارہ میں سے دس ممبر بھی ایک رائے ہوجائیں تو بھی روس اکیلا اسکے خلاف ووٹ دے کر اسے نامنظور کرا سکتا ہے. اس کے علاوہ وہ اس سنستھا میں اپنی بات کہکر پوری دنیا کو سنا سکتا ہے. اور یہ دکھا کر کہ وہ شانتی چاہتا ہے دوسرے دیشوں کو اپنے ساتھ لا سکتا ہے. اِس لئے اسکے پرتی ندھی نے جب پہلی اگست کو یہ بات کہی کہ چین کا جو پرتی ندھی اس وقت سمیتی میں موجود ہے اسے اس دیش کی طرف سے بات کرنے کا کوئی ادھیکار نہیں ہے تو ہندستان نے اسکے گروہ سے الگ رہتے ہوئے بھی اور یوگوسلاویہ نے روس سے آج کل ان بن رہتے ہوئے بھی اس بات کا سمرتھن کیا.

اسطرح روس ہار کر جیت گیا اور اسکے ورودھی راشٹر جنھوں نے چیانگ سرکار کے پرتی ندھی کو اپنے ووٹ کے بل پر سورکشا سمیتی میں ٹکائے رکھا' جیت کر ہار دئے.

لڑائی کا حال

لڑئی کے میدان میں بھی اُتری کوریا کی سینا' جسے روس سے

फ़ौज तो नहीं पर सामान और सलाह ज़रूर मिल रही है, बराबर आगे बढ़ती जा रही है और दक्खिनी कोरिया और अमरीका की सेनायें बराबर पीछे हटती जा रही हैं. दक्खिनी कोरिया की सरकार अपनी दो राजधानियाँ छोड़ चुकी है और तीसरी राजधानी (ताइगो) से भागने की तैयारियाँ कर रही है. उत्तर की कम्युनिस्ट सेना उस से सिर्फ़ ३५ मील पर बताई जाती है. और इतना ही बड़ा ख़तरा अमरीका के सबसे बड़े अड्डे पूसान बन्दरगाह के लिये भी पैदा हो गया है. इसके दो कारन हैं. एक तो यह कि अमरीका के लिये उत्तरी कोरिया का हमला अचानक था और वह लड़ाई के मैदान से लगभग सात हज़ार मील दूर होने के कारन अभी तक जितनी चाहिये उतनी सेना और सामान वहाँ तक नहीं पहुंचा सका है. दूसरा कारन यह है कि दक्खिनी कोरिया की सेना शुरू ही में हिम्मत हार गई और जनता जगह जगह उत्तर की कम्युनिस्ट सेना से मिल गई. जब यह सेना किसी शहर पर बाहर से धावा करती है तो जनता उसे अन्दर से मदद देती है जिसके कारन अमरीका के दस्ते घिर जाते हैं

इस घेरे से बचने के लिये उनको पीछे हटना पड़ता है. जनरल मेकार्थर ने यू. एन. ओ. की सेना के सेनापति की हैसियत से सुरक्षा समिति के सामने अपनी पहली रिपोर्ट में बताया है कि वक़्त जीतने के लिये उनको ज़मीन हारना पड़ी है. इस सिलसिले में एक बात यह भी कही जा रही थी कि लड़ाई का मैदान दूर दूर तक फैला होने के कारन जनरल मेकार्थर को अपनी थोड़ी सी सेना छोटे छोटे टुकड़ों में बाँटना पड़ी है और मैदान छोटा हो जाने पर वह उसे इकट्ठा कर के जम कर मुक़ाबला कर सकेंगे. मगर मैदान

فوج تو نہیں پر سامان اور صلاح ضرور مل رھی ھے، برابر آگے بڑھتی جارھی ھے اور دکھنی کوریا اور امریکہ کی سینائیں برابر پیچھے ھٹتی جارھی ھیں ۔ دکھنی کوریا کی سرکار اپنی دو راج دھانیاں چھوڑ چکی ھے اور تیسری راج دھانی (تائی گو) سے بھاگنے کی تیاریاں کر رھی ھے ۔ اُتر کی کمیونسٹ سینا اس سے صرف ۳۵ میل پر بتائی جاتی ھے ۔ اور اتنا ھی بڑا خطرہ امریکہ کے سب سے بڑے اڈے پوسان بندرگاہ کے لئے بھی پیدا ھوگیا ھے ۔ اسکے دو کارن ھیں ۔ ایک تو یہ کہ امریکہ کے لئے اُتری کوریا کا حملہ اچانک تھا اور وہ لڑائی کے میدان سے لگ بھگ سات ھزار میل دور ھونے کے کارن ابھی تک جتنی چاھئے اتنی سینا اور سامان وھاں تک نہیں پہونچا سکا ھے ۔ دوسرا کارن یہ ھے کہ دکھنی کوریا کی سینا شروع ھی میں ھمت ھار گئی اور جنتا جگہ جگہ اُتری کمیونسٹ سینا سے مل گئی ۔ جب یہ سینا کسی شہر پر باھر سے دھاوا کرتی ھے تو جنتا اسے اندر سے مدد دیتی ھے جس کے کارن امریکہ کے دستے گھر جاتے ھیں ۔

اس گھیرے سے بچنے کے لئے اُن کو پیچھے ھٹنا پڑتا ھے ۔ جنرل میک آرتھر نے یو ۔ این ۔ او ۔ کی سینا کے سینا پتی کی حیثیت سے سورکشا سمیتی کے سامنے اپنی پہلی رپورٹ میں بتایا ھے کہ وقت جیتنے کے لئے اُن کو زمین ھارنا پڑی ھے ۔ اس سلسلے میں ایک بات یہ بھی کہی جارھی تھی کہ لڑائی کا میدان دور دور تک پھیلا ھونے کے کارن جنرل میک آرتھر کو اپنی تھوڑی سی سینا چھوٹے چھوٹے ٹکڑوں میں بانٹنا پڑی ھے اور میدان چھوٹا ھوجانے پر وہ اُسے اکٹھا کرکے جم کر مقابلہ کرسکیں گے ۔ مگر میدان

बहुत ज्यादा छोटा हो जाने से दुश्मन को धोका देने का मौक़ा खतम हो जाता है और उसके हौसले बढ़ जाते हैं.

टोकियो (जापान) की एक ताज़ा खबर मे कोरिया की लड़ाई पर बेलाग निगाह से यह राय जाहिर की गई है कि उसको कम्युनिस्टों ने क़रीब क़रीब जीत लिया है, और जिस तरह दूसरी बड़ी लड़ाई मे बरतानी सेना को फ़रांस के बन्दरगाह डंकर्क से अपना तमाम सामान छोड़ कर और बहुत से आदमी कटा कर भागना पड़ा था उसी तरह पूसान और दक्खिनी कोरिया के दूसरे मोर्चों से अमरीकी सेना को भागना पड़ेगा. या फिर अगर उन्होंने जमे रहने की कोशिश की तो उसके बहुत ही महँगे दाम देने होंगे और ऐसे दाम देने पर भी न तो शान्ति प्राप्त हो सकेगी और न कोई गुत्थी ही सुलझ सकेगी.

यह बात चाहे जिस ख़याल से कही गई हो पर है बड़े पते की. इसलिये कि उत्तरी कोरियाकी सेनाको दक्खिनी कोरिया की जनता की जो हमदर्दी हासिल हो गई है और जो मदद मिल रही है उसे देखते हुए अमरीका को या यू. एन. ओ. की सेना को क़दम जमाये रखने में लोहे के चने चबाने पड़ जायँगे और हारी हुई जमीन को वापस लेना नामुमकिन हो जायगा. अगर उन्होंने इसकी कोशिश की तो उस इलाक़े की जनता खुद उनका मुक़ाबला करेगी. वह उत्तरी कोरिया के हमले और ज़बरदस्ती के बारे में अमरीका की बातों पर, चाहे यह बातें यू. एन. ओ. के मुँह से ही क्यों न कहलवाई जायें, उतना ... के बारे मे उत्तर

بہت زیادہ چھوٹا ہوجانے سے دشمن کو دھوکہ دینے کا موقع ختم ہوجاتا ہے اور اس کے حوصلے بڑھ جاتے ہیں .

توکیو (جاپان) کی ایک تازہ خبر میں کوریا کی لڑائی پر بے لاگ نگاہ سے یہ رائے ظاہر کی گئی ہے کہ اس کو کمیونسٹوں نے قریب قریب جیت لیا ہے . اور جس طرح دوسری بڑی لڑائی میں برطانی سینا کو فرانس کے بندرگاہ ڈنکرک سے اپنا تمام سامان چھوڑ کر اور بہت سے آدمی کٹاکر بھاگنا پڑا تھا اسی طرح پوسان اور دکھنی کوریا کے دوسرے مورچوں سے امریکی سینا کو بھاگنا پڑیگا . یا پھر اگر انہوں نے جمے رہنے کی کوشش کی تو اس کے بہت ہی مہنگے دام دینے ہونگے اور ایسے دام دینے پر بھی نہ تو شانتی پراپت ہوسکےگی اور نہ کوئی گتھی ہی سلجھ سکے گی .

(۱۸۴)

یہ بات چاہے جس خیال سے کہی گئی ہو مگر ہے بڑے پتے کی. اس لئے کہ اتری کوریا کی سینا کو دکھنی کوریا کی جنتا کی جو ہمدردی حاصل ہو گئی ہے اور جو مدد مل رہی ہے اسے دیکھتے ہوئے امریکہ کو یا یو . این . او . کی سینا کو قدم جمائے رکھنے میں لوہے کے چنے چبانے پڑ جائیں گے اور ہاری ہوئی زمین کو واپس لینا نا ممکن ہو جائے گا . اگر انہوں نے اس کی کوشش کی تو اس علاقے کی جنتا خود ان کا مقابلہ کرے گی . وہ اتری کوریا کے حملے اور زبردستی کے بارے میں امریکہ کی باتوں پر، چاہے یہ باتیں یو . این . او . کے منھ سے ہی کیوں نہ کہلوائی جائیں، اتنا دھیان نہیں دے گی جتنا کہ دیش کی ایکتا کے بارے میں اتر

से आने वाली आवाज़ और री सरकार की नालायक़ी के बारे में अपने निजी तजरुबे पर.

जनून की हालत

अमरीका और उसके साथी उतनी दूर तक नहीं देखते. वह पिछली बातों से भी यह सबक़ नहीं सीखते कि चीन और हिन्द चीन में च्यांग काई शेक और बावडाई की तरह उन्होंने कोरिया में सिंघमन री की पीठ पर हाथ रख कर एक बार फिर एक ऐसे घोड़े पर बाज़ी लगाई है जिसका पेट रिशवत, लूट और दान के पैसे से चाहे जितना फूल गया हो पर उसकी टाँगों में दौड़ना तो दूर रहा चलने तक का भी दम नहीं है, और जिसकी हार तै है—देर हो या सवेर.

पच्छिमी राष्ट्रों को अगर कुछ दिखाई देता है तो सिर्फ़ यह कि कम्युनिज़्म का सैलाब उनके साम्राजवाद और आर्थिक लूट को ख़तम करने के लिये आगे बढ़ रहा है, इस डर ने उनमें एक जनून की हालत पैदा करदी है जिसका पता उनके लीडरों के हाल के बयानों से चलता है. अमरीका के प्रधान ट्रूमैन साहब ने फ़ौज बढ़ाने, टैक्स लगाने और फ़ौजी कामों और तैयारियों पर बजट से ज़्यादा रक़म ख़र्च करने का अधिकार माँगा है. इसी तरह बरतानिया के प्रधान मंत्री एटली ने रूस का हौवा उछाल कर दूसरी बड़ी लड़ाई के इस "सबक़" को याद दिलाया है कि "एक बुरे लगने वाले लेकिन ज़रूरी फ़र्ज़ को अंजाम न देने से मुसीबत ख़तम नहीं होती बल्कि सिर्फ़ टल जाती है और बाद को पहले से अधिक दुख पहुंचाती है."

سے آنے والی آواز اور ری سرکار کی نالائقی کے بارے میں اپنے نجی تجربے پر .

جنون کی حالت

امریکہ اور اُسکے ساتھی اِتنی دور تک نہیں دیکھتے . وہ پچھلی باتوں سے بھی یہ سبق نہیں سیکھتے کہ چین اور هند چین میں چیانگ کائی شیک اور باؤڈائی کی طرح اُنھوں نے کوریا میں سنگ من ری کی پیٹھ پر هاتھ رکھکر ایک بار پھر ایک ایسے گھوڑے پر بازی لگائی ھے جسکا پیٹ رشوت' لوٹ اور دان کے پیسے سے چاھے جتنا پھول گیا ھو پر اس کی ٹانگوں میں دوڑنا تو دور رھا چلنے تک کا بھی دم نہیں ھے اور جسکی ھار طے ھے—دیر ھو یا سویر .

پچھمی راشٹروں کو اگر کچھ دکھائی دیتا ھے تو صرف یہ کہ کمیونزم کا سیلاب اُن کے سامراج واد اور آرتھک لوٹ کو ختم کرنے کے لئے آگے بڑھ رھا ھے . اِس ڈر نے ان میں ایک جنون کی حالت پیدا کردی ھے جس کا پتہ ان کے لیڈروں کے حال کے بیانوں سے چلتا ھے . امریکہ کے پردھان ترومین صاحب نے فوج بڑھانے ' ٹیکس لگانے اور فوجی کاموں اور تیاریوں پر بجٹ سے زیادہ رقم خرچ کرنے کا ادھیکار مانگا ھے . اسی طرح برطانیہ کے پردھان منتری ایٹلی نے روس کا ھوا اچھال کر دوسری بڑی لڑائی کے اِس "سبق" کو یاد دلا یا ھے کہ " ایک برے لگنے والے لیکن ضروری فرض کو انجام نہ دینے سے مصیبت ختم نہیں ھوتی بلکہ صرف ٹل جاتی ھے اور بعد کو پہلے سے ادھک دکھ پہنچاتی ھے ."

दी. मैंने सोचा, कि अब मुझे ही बोलना चाहिए. मैंने उनका हाथ पकड़ कर पूछने का साहस किया—'क्यों. दादा, आपके हाथ में तो चूड़ियाँ नहीं. फिर आप दूसरे के हाथों से उनकी सोने की चूड़ियाँ क्यों ले लेते हैं ?'

" 'ओह !' वह मेरा गाल छू कर बोले—'सोने की चूड़ियाँ मैं उन हाथों के लिए लेता हूँ, जिनको काँच की भी कभी नसीब नहीं होतीं ! समझीं ?' दादा ने कहते-कहते मेरी आँखों की ओर देखा फिर मुस्करा कर मेरा हाथ उठाते हुए कहा—"ला' तू भी दे अपनी चूड़ियाँ !···'अरे, तेरा हाथ तो खाली है ! क्या हुईं तेरी चूड़ियाँ ?'

" 'अम्मा ने निकाल लीं,' मैं उदास होकर बोली.

" 'अच्छा' जा, माँग तो ला, मेरी अच्छी बिटिया !' मुझे गोद से उतार कर दादा ने कहा और मेरा मुँह चूम लिया. "मैं दौड़ती हुई अम्मा के पास गई और चूड़ियाँ माँगीं. लेकिन अम्मा ने मेरी ज़िद की परवा न की. उन्होंने यह कह कर मुझे टाल दिया, कि 'तू जाकर खेल. मैं अपनी चूड़ियाँ बापू जी को दूँगी.'

" मैं वहां से अपना टूटा दिल लिये अपने कमरे में चारपाई पर आ गिरी. मन मसोस उठा और मैं फूट फूट कर रो उठी." यह कह कर अचानक अम्मू चुप हो गई.

" क्यों, तुम चुप क्यों हो गईं ?" कृष्णन ने अचकचा कर कहा—" ओह, तुम तो..."

" नहीं, नहीं," आंखों को आंचल से पोंछ अम्मू एक ठण्डी सांस लेकर बोली—" लोग कहते हैं, कि बच्चों की दुनिया में कोई दुख नहीं होता, क्योंकि उन्हें कोई कमी नहीं खटकती या उन्हें किसी

دی۔ میں نے سوچا، کہ اب مجھے ہی بولنا چاہیے۔ میں نے اُنکا ہاتھ پکڑ کر پوچھنے کا ساہس کیا — کیوں، دادا، آپ کے ہاتھ میں تو چوڑیاں نہیں، پھر آپ دوسرے کے ہاتھوں سے اُنکی سونے کی چوڑیاں کیوں لے لیتے ہیں؟

"اوہ!' وہ میرا گال چھوکر بولے — سونے کی چوڑیاں میں اُن ہاتھوں کے لئے لیتا ہوں، جنکو کانچ کی بھی کبھی نصیب نہیں ہوتیں! سمجھیں؟' دادا نے کہتے کہتے میری آنکھوں کی اور دیکھا پھر مسکرا کر میرا ہاتھ اُٹھاتے ہوئے کہا — "لا' تو بھی دے اپنی چوڑیاں! ..... ارے، تیرا ہاتھ تو خالی ہے! کیا ہوئی تیری چوڑیاں؟"

"اماں نے نکال لیں،' میں اُداس ہوکر بولی۔

"اچھا جا، مانگ تو لا، میری اچھی بٹیا!' مجھے گود سے اُتار کر دادا نے کہا اور میرا منہ چوم لیا۔" میں دوڑتی ہوئی اماں کے پاس گئی اور چوڑیاں مانگیں۔ لیکن اماں نے میری ضد کی پروا نہ کی۔ انھوں نے یہ کہہ کر مجھے ٹال دیا، کہ تو جا کر کھیل۔ میں اپنی چوڑیاں باپو جی کو دوں گی!

"میں وہاں سے اپنا ٹوٹا دل لئے اپنے کمرے میں چارپائی پر آ گری۔ من مسوس اُٹھا اور میں پھوٹ پھوٹ کر رو اُٹھی۔" یہ کہہ کر اچانک امّو چپ ہو گئی۔

"کیوں، تم چپ کیوں ہو گئیں؟" کرشن نے اچکچا کر کہا — "اوہ، تم تو...."

"نہیں، نہیں،" آنکھوں کو آنچل سے پونچھ امّو ایک ٹھنڈی سانس لیکر بولی — "لوگ کہتے ہیں، کہ بچوں کی دنیا میں کوئی دکھ نہیں ہوتا، کیونکہ انھیں کوئی کمی نہیں کھٹکتی یا انھیں کسی

इसी सिलसिले में टोरी लीडर चर्चिल ने कहा है कि रूस सेना और सामान में बरतानिया पर भारी होते हुए भी अमरीका के ऐटम बम को मात नहीं दे सका है और अभी इस बम से डरा कर उसे समझौते पर राज़ी किया जा सकता है.

यह बातें खोखली नहीं हैं. बरतानिया, आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैन्ड और तुरकी ने भी कोरिया की लड़ाई में अपनी पैदल सेना भेजने का एेलान कर दिया है. अमरीकी पारलीमेन्ट कम्युनिस्ट दुश्मन मुल्कों को फ़ौजी सामान देने के लिये चार अरब डालर की मन्जूरी पर सोच विचार कर रही है. इस काम के लिये लगभग सवा अरब डालर पहले ही मन्जूर किये जा चुके हैं. इसके अलावा जनरल मेकार्थर, जो कहने को तो कोरिया में यू. एन. ओ. की तरफ से सेनापति मुक़र्रर किये गये हैं. फ़ारमूसा जा कर चीनी कम्युनिस्टों से कह आये हैं कि वह इस टापू पर, जो जापान से निकाला जा चुका है और जिसपर चीन का अधिकार माना जा चुका है और जहाँ आज कल च्वांग काई शेक ने दिखावे की सरकार क़ायम कर रखी है, हमला करने की हिम्मत न करें. हालाँ कि प्रधान ट्रूमैन पिछली जनवरी में यह ऐलान कर चुके हैं कि वह फ़ारमूसा को बचाने के लिये अपनी सेना नहीं भेजेंगे और आख़िर जुलाई में उनकी सरकार ने हिन्द सरकार के नाते चीन की कम्युनिस्ट सरकार को यह यक़ीन दिलाया था कि अमरीका फ़ारमूसा पर क़ब्ज़ा करना नहीं चाहता.

रूस का रुख़

कोरिया की लड़ाई से रूस के अलग रहनेका कारन कुछ तो यह

اِسی سلسلے میں توری لیڈر چرچل نے کہا ھے کہ روس سینا اور سامان میں برطانیہ پر بھاری ھوتے ھوئے بھی امریکہ کے ایٹم بم کو مات نہیں دے سکا ھے اور ابھی اس بم سے ڈرا کر اُسے سمجھوتے پر راضی کیا جا سکتا ھے .

یہ باتیں کھوکھلی نہیں ھیں . برطانیہ' آسٹریلیا' نیوزی لینڈ اور ترکی نے بھی کوریا کی لڑائی میں اپنی پیدل سینا بھیجنے کا اعلان کر دیا ھے . امریکی پارلیمنٹ کمیونسٹ دشمن ملکوں کو فوجی سامان دینے کے لئے چار ارب ڈالر کی منظوری پر سوچ وچار کر رھی ھے . اس کام کے لئے لگ بھگ سوا ارب ڈالر پہلے ھی منظور کئے جا چکے ھیں . اِس کے علاوہ جنرل میک آرتھر' جو کہنے کو تو کوریا میں یو . این . او . کی طرف سے سینا پتی مقرر کئے گئے ھیں' فارموسا جاکر چینی کمیونسٹوں سے کہہ آئے ھیں کہ وہ اس ٹاپو پر' جو جاپان سے نکالا جا چکا ھے اور جس پر چین کا ادھیکار مانا جا چکا ھے اور جہاں آج کل چیانگ کائی شیک نے دکھاوے کی سرکار قائم کر رکھی ھے' حملہ کرنے کی ھمت نہ کریں . حالانکہ پردھان ٹرومین پچھلے جنوری میں یہ اِعلان کرچکے ھیں کہ وہ فارموسا کو بچانے کے لئے اپنی سینا نہیں بھیجیں گے اور آخر جولائی میں اُن کی سرکار نے ھند سرکار کے ناتے چین کی کمیونسٹ سرکار کو یہ یقین دلایا تھا کہ امریکہ فارموسا پر قبضہ کرنا نہیں چاھتا .

روس کا رخ

کوریا کی لڑائی سے روس کے الگ رھنے کا کارن کچھ تو یہ

है कि उसके मैदान में आये बग़ैर ही उसका काम बना जाता है, कुछ यह कि उसकी फ़ौजी शक्ति पच्छिमी राष्ट्रों की शक्ति से कम है और कुछ यह कि उसके अपने देश की तरक़्क़ी और दूसरे देशों में कम्युनिस्ट आन्दोलन की कामयाबी के लिये शान्ति एक जरूरी चीज़ है. पच्छिमी राष्ट्रों की हालत और पालिसी इसके बिलकुल उलटी है. मगर रूस इतना कमज़ोर भी नहीं है कि बराबर दबता चला जाय. अगर कोरिया की लड़ाई उत्तरी कोरिया के पूरी तरह या बड़ी हद तक जीत जाने के बाद भी जारी रही तो कोई नहीं कह सकता कि अमरीका, रूस और उसके साथियों को किस हद तक दबाना चाहेगा और रूस किस जगह से जवाबी वार शुरू करेगा.

एक ही रास्ता

यही सोच कर प्रधान मंत्री नेहरू ने कोरिया के मसले पर अपनी पहली प्रेस कानफ़रेन्स में कहा था कि इस लड़ाई के दुनिया की लड़ाई बन जाने का इमकान रुपये में आठ आने भर है. उस मौक़े पर उन्होंने इस सुझाव का भी चरचा कर दिया था जो बाद को उन्होंने अमरीका और रूस के मंत्रियों के सामने रखा. और इसलिये यह कहना ग़लत है कि हिन्द सरकार ने अपने शुरू के रुख़ को ग़लत समझ कर या देश और विदेश के किसी दबाव से दब कर अपना रुख़ बदल दिया. सच तो यह है कि वह कोरिया की लड़ाई छिड़ने से बहुत पहले चीन की कम्युनिस्ट सरकार के प्रति-निधि के सुरक्षा समिति में शामिल कर लिये जाने की ताईद कर रही थी. इसलिये कि उसके बग़ैर सुरक्षा समिति की साख गिरती और

ھے کہ اسکے میدان میں آئے بغیر ھی اسکا کام بنا جاتا ھے . کچھ یہ کہ اسکی فوجی شکتی پچھمی راشٹروں کی شکتی سے کم ھے اور کچھ یہ کہ اسکے اپنے دیش کی ترقی اور دوسرے دیشوں میں کمیونسٹ آندولن کی کامیابی کے لئے شانتی ایک ضروری چیز ھے . پچھمی راشٹروں کی حالت اور پالیسی اُسکے بالکل اُلٹی ھے . مگر روس اتنا کمزور بھی نہیں ھے کہ برابر دبتا چلا جائے . اگر کوریا کی لڑائی اُتری کوریا کے پوری طرح یا بڑی حد تک جیت جانے کے بعد بھی جاری رھی تو کوئی نہیں کہہ سکتا کہ امریکہ روس اور اسکے ساتھیوں کو کس حد تک دبانا چاھیگا اور روس کس جگہ سے جوابی وار شروع کرے گا

ایک ھی راستہ

یہی سوچ کر پردھان منتری نہرو نے کوریا کے مسئلے پر اپنی پہلی پریس کانفرنس میں کہا تھا کہ اس لڑائی کے دنیا کی لڑائی بن جانے کا اِمکان روپیہ میں آٹھ آنے بھر ھے . اسی موقع پر انہوں نے اس سجھاؤ کا بھی چرچا کردیا تھا جو بعد کو اُنھوں نے امریکہ اور روس کے منتریوں کے سامنے رکھا . اور اس لئے یہ کہنا غلط ھے کہ ھند سرکار نے اپنے شروع کے رخ کو غلط سمجھکر یا دیش اور ودیش کے کسی دباؤ سے دب کر اپنا رخ بدل دیا . سچ تو یہ ھے کہ وہ کوریا کی لڑائی چھڑنے سے بہت پہلے چین کی کمیونسٹ سرکار کے پرتی ندھی کے سورکشا سمیتی میں شامل کر لئے جانے کی تائید کر رھی تھی . اسلئے کہ اس کے بغیر سورکشا سمیتی کی ساکھ گرتی اور

नया हिन्द दुनिया का हाल अगस्त सन् '५० اگست سن ٥٠ دنیا کا حال نیا ہند

काम रुकता है. इसी बात को अब पंडित नेहरू ने दोहरा दिया है. इसलिये कि इस संस्था को और उसकी साख को बनाये रखे बिना कोरिया के झगड़े को. जो रूस और पच्छिमी राष्ट्रों के बड़े झगड़े का एक हिस्सा है, अमन और शान्ति के साथ चुकाया नहीं जा सकता.

सौदेबाज़ी और गरोह बन्दी

पंडित नेहरू ने मिस्र के प्रधान मंत्री नहास पाशा को भी यह सलाह दी थी की वह चीन की नई सरकार को मान लें और अगरचे मिस्र शाम में बग़ावत के बाद बनने वाली सरकार को मान चुका है मगर उसने चीन के बारे में यह कहा है कि वहाँ की नई सरकार ज़बरदस्ती बनी है इसलिये उसे माना नहीं जा सकता. दूसरी तरफ़ मिस्री सरकार ने कोरिया के बारे में सुरक्षा समिति के प्रस्तावों को भी नहीं माना है और उसे बेलाग रहने के सबूत के तौर पर पेश किया जाता है. पर उसमान मुहर्रम पाशा ने. जो आज कल प्रधान मंत्री का काम कर रहे हैं. एक इशारा ऐसा किया है जिससे ख़याल होता है कि अगर बरतानिया सूडान पर मिस्र का अधिकार मानने और सुएज़ के इलाक़े से अपनी फ़ौजें हटाने लिये तैयार हो जाये तो मिस्र कोरिया के मामले में उसके साथ आ सकता है.

सौदे बाज़ी की यह ज़ेहनियत अकेले मिस्र ही की नहीं है. दुनिया के ज़्यादा तर देश यही दृष्टि रखते हैं. वह अपने दाम तै करके बड़े राष्ट्रों से अपने ऊपर बोली बुलवाते हैं और जिसकी बोली ज़्यादा होती है उसके हाथ बिक जाते हैं. इसी कारन दुनिया दो बड़े गरोहों

کام رکتا ہے . اسی بات کو اب پنڈت نہرو نے دوہرا دیا ہے . اسلئے کہ اس سنستھا اور اسکی ساکھ کو بنائے رکھے بنا کوریا کے جھگڑے کو' جو روس اور پچھمی راشٹروں کے بڑے جھگڑے کا ایک حصہ ہے امن اور شانتی کے ساتھ چکایا نہیں جاسکتا .

سودے بازی اور گروہ بندی

پنڈت نہرو نے مصر کے پردھان منتری نحاس پاشا کو بھی یہ صلاح دی تھی کہ وہ چین کی نئی سرکار کو مان لیں اور اگرچہ مصر شام میں بغاوت کے بعد بننے والی سرکار کو مان چکا ہے مگر اس نے چین کے بارے میں یہ کہا ہے کہ وہاں کی نئی سرکار زبردستی بنی ہے اسلئے اسے مانا نہیں جاسکتا . دوسری طرف مصری سرکار نے کوریا کے بارے میں سورکشا سمیتی کے پرستاؤں کو بھی نہیں مانا ہے اور اُسے بے لاگ رہنے کے ثبوت کے طور پر پیش کیا جاتا ہے پر عثمان محرم پاشا' نے جو آج کل پردھان منتری کا کام کر رہے ہیں' ایک اِشارہ ایسا کیا ہے جس سے خیال ہوتا ہے کہ اگر برطانیہ سوڈان پر مصر کا ادھیکار ماننے اور سوئز کے علاقے سے اپنی فوجیں ہٹانے کے لئے تیار ہوجائے تو مصر کوریا کے معاملے میں اس کے ساتھ آسکتا ہے .

سودے بازی کی یہ ذہنیت اکیلے مصر ہی کی نہیں ہے . دنیا کے زیادہ تر دیش یہی درشٹی رکھتے ہیں وہ اپنے دام طے کرکے بڑے راشٹروں سے اپنے اوپر بولی بلواتے ہیں اور جسکی بولی زیادہ ہوتی ہے اسکے ہاتھ بک جاتے ہیں. اِسی کارن دنیا دو بڑے گروہوں

मे बँट गई है, और जो मुल्क इस गरोहबन्दी से अलग रहता है उस पर दोनों तरफ से गालियों की बौछार होती रहती है. लेकिन अगर हिन्दुस्तान की तरह कुछ और मुल्क यह गालियाँ सुनने के लिये तैयार नहीं होते तो दुनिया ज़्यादा दिनों तक तीसरी बड़ी लड़ाई के भूचाल से बच नहीं सकता.

रूस के सुरक्षा समिति मे वापस आ जाने पर लड़ाई एक बड़ी मुद्दत तक के लिये टल सकता है. मगर शर्त यह है कि चीन के मामले में अमरीका अपनी हट छोड़ दे और कोरिया का झगड़ा चुकाते वक़्त अमरीका की साख से ज़्यादा वहाँ की जनता का ख़याल रखा जाये.

میں بٹ گئی ھے . اور جو ملک اس گروہ بندی سے الگ رهتا ھے اس پر دونوں طرف سے گالیوں کی بوچھار ھوتی رهتی ھے . لیکن اگر هندستان کی طرح کچھ اور ملک یه گالیاں سننے کے لئے تیار نہیں ھوتے تو دنیا زیادہ دنوں تک تیسری بڑی لڑائی کے بھونچال سے بچ نہیں سکتی .

روس کے سورکشا سمیتی میں واپس آجانے پر لڑائی ایک بڑی مدت تک کے لئے ٹل سکتی ھے . مگر شرط یه ھے که چین کے معاملے میں امریکه اپنی ھٹ چھوڑ دے اور کوریا کا جھگڑا چکاتے وقت امریکه کی ساکھ سے زیادہ وھاں کی جنتا کا خیال رکھا جائے .



एडीटर. प्रेम भाई | ایڈیٹر: پریم بھائی

राम रहीम

(बहन खुर्शीद बेगम)

मसजिद मे शान तेरी मन्दिर में आन तेरी
होती है सब में पूजा, ए मेहरबान तेरी
इस में भजन हैं तेरे उसमें अज़ान तेरी
यह भी है तेरी बोली वह भी ज़बान तेरी
हर दिल में है तेरा घर हर मन है तेरा मन्दिर
राम और रहीम तू है गाड और ईश्वर है

हर एक ज़बाँ पे चरचा
है सुबह शाम तेरा
मैं भी कभी न भूलूँ
भगवान ! नाम तेरा

رام رحیم

(بہن خورشید بیگم)

مسجد میں شان تیری مندر میں آن تیری
ہوتی ہے سب میں پوجا اے مہربان تیری
اسمیں بھجن ہیں تیرے اُس میں آذان تیری
یہ بھی ہے تیری بولی وہ بھی زبان تیری
ہر دل میں ہے تیرا گھر ہر من ہے تیرا مندر
رام اور رحیم تو ہے گاڈ اور ایشور ہے

ہر ایک زباں پہ چرچا
ہے صبح شام تیرا
میں بھی کبھی نہ بھولوں
بھگوان ! نام تیرا

सपना

भाई—मुबारक

हमारे मकान में आम रास्ते की तरफ जो जीना है, वह अक्सर बंद रहता है. इसके ज़रिये आने-जाने का काम बहुत कम लिया जाता है. इसकी एक ख़ास वजह है—जीने में जो खिड़की है, वह हमेशा खुली रहती है. डाकिया उसी की राह आने वाली डाक जीने में फेंक कर चला जाता है.

एक दिन की बात है—मैं डाक उठाने जीने में उतरा, तो देखता क्या हूँ कि जीने की सीढ़ियों पर दस-दस और सौ-सौ रुपये वाले नोटों के ऊँचे-ऊँचे ढेर लगे हैं. मेरे ताज्जुब की हद न रही. कहाँ से आए ये नोट, कौन फेंक गया इन्हें यहाँ, कुछ समझ में न आया. मैंने उलटे पैरों लौट कर अब्बाजान को यह अनोखी खबर सुनाई.

अब्बाजान फौरन कलम पटक कर जीने में पहुंचे और लगे उठा-उठा कर नोट देखने परखने. सभी नोट बिल्कुल नये और असल, मानो अभी-अभी सरकारी खजाने से निकल कर आए थे. अब्बाजान कुछ देर तक तो उन पर ताज्जुब भरी नज़र डालते रहे, फिर मुझ से बोले— जाओ, भूला, भूरी, नन्ही और अमीरन को बुला लाओ. बस, दौड़ो... जल्दी."

भूला, भूरी, नन्ही और अमीरन बूढ़ी नानियाँ हैं, जो मुद्दत हुई, कुछ फासले पर हमारे पुराने घर में रहतीं और मेहनत-मजदूरी

سپنا

(بھائی مبارک علی)

ہمارے مکان میں عام راستے کی طرف جو زینہ ہے، وہ اکثر بند رہتا ہے۔ اُسکے ذریعے آنے جانے کا کام بہت کم لیا جاتا ہے۔ اس کی ایک خاص وجہ ہے — زینے میں جو کھڑکی ہے، وہ ہمیشہ کھلی رہتی ہے۔ ڈاکیہ اُسی راہ آنے والی ڈاک زینے میں پھینک کر چلا جاتا ہے۔

ایک دن کی بات ہے — میں ڈاک اٹھانے زینے میں اُترا تو دیکھتا کیا ہوں کہ زینے کی سیڑھیوں پر دس دس اور سو سو روپے والے نوٹوں کے اُونچے اُونچے ڈھیر لگے ہیں۔ میرے تعجب کی حد نہ رہی۔ کہاں سے آئے یہ نوٹ، کون پھینک گیا انہیں یہاں۔ کچھ سمجھ میں نہ آیا۔ میں نے اُلٹے پیروں لوٹ کر ابا جان کو یہ انوکھی خبر سنائی۔

ابا جان فوراً قلم پٹک کر زینے میں پہونچے اور لگے اُٹھا اُٹھا کر نوٹ دیکھنے پرکھنے۔ سبھی نوٹ بالکل نئے اور اصلی تھے، مانو ابھی ابھی سرکاری خزانے سے نکل کر آئے تھے۔ ابا جان کچھ دیر تک تو اُن پر تعجب بھری نظر ڈالتے رہے، پھر مجھ سے بولے—"جاؤ، بھولا، بھوری، ننھی اور امیرن کو بلا لاؤ۔ بس، دوڑو... جلدی۔"

بھولا، بھوری، ننھی اور امیرن بوڑھی نانیاں ہیں، جو مدت ہوئی، کچھ فاصلے پر ہمارے پرانے گھر میں رہتیں اور محنت مزدوری

त या हिन्द दुनिया का हाल अगस्त सन् '५० | ۵۰' اگست سن دنیا کا حال نیا هند

करती हैं. वह चारों फ़ौरन मेरे साथ आ पहुंचीं. उनको देखते ही अब्बाजान ने कहा—'यह नोट देख रही हो न? बस, जितने बन सके, उठा ले जाओ और मज़े से खाओ पियो. मगर देखो, किसी को कानों कान खबर न हो.''

चारों नानियाँ निहाल हो गईं. जल्दी-जल्दी नोटों से झोलियाँ भर कर दुआओं का मेह बरसाती हुई भागीं. इसके बाद अब्बाजान सर पर हाथ रख कर बैठ गये और भर्राई हुई आवाज़ में बोले—"या अल्लाह! यह क्या ग़ज़ब हुआ! मालूम नहीं, किस दुश्मन ने बदला चुकाने की ठानी है. बस, अभी पुलिस आ जायगी और तमाम इज़्ज़त—आबरू धूल में मिला देगी.''

(५९)

अम्मीजान ने बिगड़ कर कहा—"बुरी आदत है तुम्हारी. ज़रा सी बात हुई नहीं, कि सर पकड़ कर बैठ गए. तुमने न चोरी की है न डाका डाला है. फिर पुलिस को तुम्हारी इज़्ज़त-आबरू धूल में मिलाने का क्या अख़्तियार? बेटा मुबारक, चले तो जाओ, और पुलिस-कोतवाल को बुला लाओ. कहना, अभी चलिये; बड़ा ज़रूरी काम है.''

पुलिस-कोतवाल मेरे साथ आए और मुसकराकर अब्बाजान से बोले—"क्या मामला है मास्टर साहब?'' अब्बाजान ने नोटों की तरफ़ उँगली उठाई और जवाब दिया—"यह देखिये. हज़ारों-लाखों रुपये के नोट! मालूम नहीं. कौन फेंक गया है. बताइये, मैं क्या करूँ?''

... खाइये दोस्तों को

کرتی هیں. وہ چاروں فوراً میرے ساتھ آ پهونچیں. اُن کو دیکھتے هی ابا جان نے کہا—"یہ نوٹ دیکھ رهی هو نہ؟ بس، جتنے بن سکے، اُٹھا لے جاؤ اور مزے سے کھاؤ پیو. مگر دیکھو، کسی کو کانوں کان خبر نہ هو."

چاروں نانیاں نہال هو گئیں. جلدی جلدی نوٹوں سے جھولیاں بھر کر دعاؤں کا مینھہ برساتی هوئی بھاگیں. اس کے بعد ابا جان سر پر هاتھ رکھکر بیٹھ گئے اور بھرائی هوئی آواز میں بولے—"یا اللہ! یہ کیا غضب هوا! معلوم نہیں، کس دشمن نے بدلہ چکانے کی ٹھانی هے. بس، ابھی پولیس آجائیگی اور تمام عزت آبرو دھول میں ملادیگی."

(۵۹)

امی جان نے بگڑ کر کہا—"بری عادت هے تمهاری. ذرا سی بات هوئی نہیں کہ سر پکڑ کر بیٹھ گئے. تم نے نہ چوری کی هے، نہ ڈاکہ ڈالا هے. پھر پولیس کو تمهاری عزت آبرو دھول میں ملانے کا کیا اختیار؟ بیٹا مبارک، چلے تو جاؤ، اور پولیس کوتوال کو بلا لاؤ، کہنا ابھی چلئے، بڑا ضروری کام هے."

پولیس کوتوال میرے ساتھ آئے اور مسکرا کر ابا جان سے بولے—"کیا معاملہ هے ماسٹرصاحب؟" ابا جان نے نوٹوں کی طرف اُنگلی اُٹھائی اور جواب دیا—"یہ دیکھئے، هزاروں لاکھوں روپیوں کے نوٹ! معلوم نہیں، کون پھینک گیا هے. بتائیے میں کیا کروں؟"

"مزا کیجئے — خوشیاں منائیے! خود کھائیے دوستوں کو کھلائیے."

"ऐसा न कहिये कोतवाल साहब ! मैं ग़रीब आदमी हूँ. कोई कारवाई कीजिये."

"किसलिये ? ईश्वर आपको छप्पर फाड़कर दे और मैं दाल-भात में मूसल चंद की तरह फट पड़ूं ? वाह ! आप भी ख़ूब रहे !"

यह कह कर कोतवाल साहब तो चलते बने, मगर अब्बाजान को कब तसल्ली होने वाली थी. उन्होंने दुखभरी आवाज़ मे अम्मीजान से कहा—"यह तो बहुत बुरा हुआ ! पुलिस वाले का क्या भरोसा, कहीं पीछे कोई कारवाई कर बैठा, तो यहाँ लेने के देने पड़ जायेंगे ? बताओ. अब क्या करना चाहिये ? मुझे तो ऐसा जान पड़ता है, जैसे नोटों के इस ढेर में हज़ारों-लाखों नाग फुफकारें मार रहे हों."

अम्मीजान हँसकर बोलीं—"फ़ज़ूल घबराते हो ! जब तुमने चोरी नहीं की है, डाका नहीं डाला है; तो कोई तुम्हारा क्या लिये लेता है ? अच्छा, एक काम करो. बड़े साहब को बुलवा लो. अगर वह आ जायेंगे, तो फिर किसी तरह का झगड़ा-बखेड़ा न रहेगा."

अब्बाजान को यह बात जँच गई. उन्होंने मुझ पर नज़र डाली और कहा—"सुनते हो बेटा मुबारक ? बस, चले जाओ, ज़रा जल्दी-जल्दी और ले आओ बड़े साहब को. हम तुम्हें पेट-भर मिठाई खिलायेंगे. समझे ?"

यह सुनते ही मैं बड़े साहब के बँगले की ओर दौड़ चला. बड़े साहब बग़ीचे में घूम रहे थे. मुझे देखते ही बड़े प्रेम से बोले—"क्या है बच्चे ? इस तरह क्यों भागे आ रहे हो ?"

मैंने सब हाल सुनाया तो बड़े साहब फ़ौरन मोटर में बैठ मेरे साथ चले आये. अब्बाजान ने उनको आदर से बिठाया और

" ایسا نہ کہئیے کوتوال صاحب ! میں غریب آدمی ہوں ۔ کوئی کار روائی کیجئے ."

" کس لئے ؟ ایشور آپ کو چھپر پھاڑ کر دے اور میں دال بھات میں موسل چند کی طرح پھٹ پڑوں ؟ واہ ! آپ بھی خوب رہے !"

یہ کہکر کوتوال صاحب تو چلتے بنے' مگر ابا جان کو کب تسلی ہونے والی تھی . انہوں نے دکھ بھری آواز میں امی جان سے کہا—"یہ تو بہت برا ہوا ! پولیس والے کا کیا بھروسہ ' کہیں پیچھے کوئی کاروائی کر بیٹھا' تو یہاں لینے کے دینے پڑ جائینگے ! بتاؤ' اب کیا کرنا چاہئے ؟ مجھے تو ایسا جان پڑتا ہے' جیسے نوٹوں کے اس ڈھیر میں ہزاروں' لاکھوں ناگ پھنکاریں مار رہے ہوں !'

امی جان ہنس کر بولیں—"فضول گھبراتے ہو ! جب تم نے چوری نہیں کی ہے' ڈاکہ نہیں ڈالا ہے ؛ تو کوئی تمہارا کیا لیئے لیتا ہے ؟ اچھا' ایک کام کرو . بڑے صاحب کو بلوا لو . اگر وہ آ جائینگے' تو پھر کسیطرح کا جھگڑا بکھیڑا نہ رہیگا ."

ابا جان کو یہ بات جچ گئی . انہوں نے مجھ پر نظر ڈالی اور کہا—" سنتے ہو بیٹا مبارک ؟ بس' چلے جاؤ' ذرا جلدی جلدی اور لے آؤ بڑے صاحب کو . ہم تمہیں پیٹ بھر مٹھائی کھلوا دینگے . سمجھے ؟"

یہ سنتے ہی میں بڑے صاحب کے بنگلے کی اور دوڑ چلا . بڑے صاحب باغیچے میں گھوم رہے تھے . مجھے دیکھتے ہی بڑے پریم سے بولے—" کیا ہے بچے ؟ اس طرح کیوں بھاگے آرہے ہو؟"

میں نے سب حال سنایا تو بڑے صاحب فوراً موٹر میں

नोटों का वह ढेर दिखाते हुए कहा—"जनाब, मेरी जान मुसीबत में फँस गइ है. मालूम नहीं, कौन भला आदमी मेरे घर मे लाखों की दौलत फेंक गया है. कोतवाल साहब कोई कारवाई नहीं करना चाहते. अब आप ही बताइये, मै क्या करूँ ? मेरी तो अक़्ल काम नहीं करती."

बड़े साहब ही-ही कर के हँस पड़े और बोले—"इस ख़ुश क़िस्मती पर मैं आपको बधाई देना हूँ. बस, बेफ़िकरी से ख़ूब ख़र्च कीजिये और ख़ूब कहानियाँ लिखिये."

यह कहकर बड़े साहब मोटर मे बैठ कर चल दिये. इस तरह जब अब्बाँजान की तबीयत ठिकाने आ गई, तो उन्होंने हम लोगों की तरफ़ देखते हुए कहा—"मालूम नहीं किस का धन है. मै तो छूने से रहा, बस, तुम्हीं पाँचों भाई-बहिन लूटो और खाओ. अल्लाह ने तुम्हीं लोगों की क़िस्मत से भेजा है."

अब क्या था, हम पाँचो भाई-बहिन नोटों पर टूट पड़े, और लगे एक दूसरे को चपतें घूंसे जमाने. इसी बीच मलका आपा ने जो मुझे तड़ाक से एक चाँटा रसीद किया, तो मेरी आँखें खुल गईं. मैं घबरा कर लालटैन लिये-लिये जीने में दौड़ा तो देखता हूँ कि "बाल-भारती" के संपादक जी ने मलका आपा की कहानी लौटा दी है. उसके फटे हुए पन्ने इधर उधर बिखड़े पड़े हैं और हवा के झकोरों के साथ अपनी बदक़िस्मती पर सांसें भर रहे हैं.

نوٹوں کا وہ ڈھیر دکھاتے ہوئے کہا—"جناب، میری جان مصیبت میں پھنس گئی ہے معلوم نہیں، کون بھلا آدمی میرے گھر میں لاکھوں کی دولت پھینک گیا ہے۔ کوتوال صاحب کوئی کاروائی کرنا نہیں چاہتے۔ اب آپ ہی بتائیے، میں کیا کروں ؟ میری تو عقل کام نہیں کرتی۔"

بڑے صاحب ہی ہی کرکے ہنس پڑے اور بولے—"اِس خوش قسمتی پر میں آپ کو بدھائی دیتا ہوں۔ بس بے فکری سے خوب خرچ کیجئے اور خوب کہانیاں لکھئے۔"

یہ کہکر بڑے صاحب موٹر میں بیٹھ کر چلدئیے۔ اس طرح جب ابا جان کی طبیعت ٹھکانے آگئی، تو انھوں نے ہم لوگوں کی طرف دیکھتے ہوئے کہا—"معلوم نہیں، کس کا دھن ہے۔ میں تو چھونے سے رہا، بس تم ہی پانچوں بھائی بہن لوٹو کھاؤ۔ اللہ نے تم ہی لوگوں کی قسمت سے بھیجا ہے۔"

اب کیا تھا، ہم پانچوں بھائی-بہن نوٹوں کے ڈھیروں پر ٹوٹ پڑے، اور لگے ایک دوسرے کو چپتیں، گھونسے جمانے۔ اسی بیچ ملکہ آپا نے جو مجھے تڑاق سے ایک چانٹا رسید کیا، تو میری آنکھیں کھل گئیں۔ میں گھبرا کر لالٹین لئے لئے زینے میں دوڑا تو دیکھتا ہوں "کہ بال-بھارتی" کے سمپادک جی نے ملکہ آپا کی کہانی لوٹا دی ہے۔ اُس کے پھٹے ہوئے پنے ادھر اُدھر بکھرے پڑے ہیں اور ہوا کے جھکوروں کے ساتھ اپنی بدقسمتی پر سانسیں بھر رہے ہیں۔

हमारी राय
ہماری رائے

(५)

भारत की तीन बरस की आज़ादी

आदमी की उमर के मुक़ाबले में हुकूमत की उमर कुछ लम्बी ही मानी गई है. इसलिये हमारी तीन बरस की उमर वाली भारती हुकूमत की बच्ची आदमी के तीन बरस के बच्चे से अभी छोटी है. छोटी है तो क्या, बरमा की हुकूमत के बराबर की है. चीनी हुकूमत से बड़ी है और इन्डोनेशिया की हुकूमत को तो गोद खिलाया है. इसलिये इतनी छोटी होते हुए भी उसके सिर बड़ी ज़िम्मेदारियाँ आ गई हैं और इसी से उसकी दिमाग़ी उमर उसकी जिस्मानी उमर से कुछ ज़्यादा दिखाई दे तो किसी को अचरज नहीं करना चाहिये. मां जब अपने तीन बरस के बच्चे के सिर कोई छै महीने का बच्चा छोड़ मरे तो तीन बरस के बच्चे को ईश्वर आप ही समझदार बना देता है.

आम तौर से आदमी अपने नौकर के बच्चे के किये नुक़सान नज़र में रखता है और यही हाल उसका बैरी के बच्चों के साथ होता है. पर

(۵)

بھارت کی تین برس کی آزادی

آدمی کی عمر کے مقابلے میں حکومت کی عمر کچھ لمبی ہی مانی گئی ہے . اسلئے ہماری تین برس کی عمر والی بھارتی حکومت کی بچی آدمی کے تین برس کے بچے سے ابھی چھوٹی ہے . چھوٹی ہے تو کیا برما کی حکومت کے برابر کی ہے . چینی حکومت سے بڑی ہے اور انڈونیشیا کی حکومت کو تو گود کھلایا ہے . اسلئے اتنی چھوٹی ہوتے ہوئے بھی اس کے سر بڑی ذمہداریاں آگئی ہیں اور اسی سے اس کی دماغی عمر اس کی جسمانی عمر سے کچھ زیادہ دکھائی دے تو کسی کو اچرج نہیں کرنا چاہئے . ماں جب اپنے تین برس کے بچے کے سر کوئی چھ مہینے کا بچہ چھوڑ مرے تو تین برس کے بچے کو ایشور آپ ہی سمجھدار بنا دیتا ہے .

عام طور سے آدمی اپنے نوکر کے بچے کے لئے نقصان نظر میں رکھتا ہے اور یہی حال اسکا بیری کے بچوں کے ساتھ ہوتا ہے . پر

कड़का

(भाई नज्म आफ़न्दी)

रन में सुन लो मेरा कड़का
मैं हूँ हिन्दुस्तानी लड़का.
सूरज की आंखों का तारा
पूरब के दिल का मैं पारा.
चाँद है मेरा एक खिलौना
मेरे वतन की धूप है सोना.
ठंडी ठंडी नहरें मेरी
गर्म हवा की लहरें मेरी.
खेत में पनपी काया मेरी
धरती धरती माया मेरी.
परबत परबत चढ़ने वाला
आंधी ऐसा बढ़ने वाला
हिन्द का रोशन तारा हूँ मैं
देस को अपने प्यारा हूँ मैं.
दोनों हैं शैदाई मेरे
हिन्दू मुस्लिम भाई मेरे.
जंग है जब अंगड़ाई लेती
आता हूँ मैं छोड़ के खेती.
बिजली, बादल कोई न टोके
मेरा रस्ता कोई न रोके.
डर की परवा करता कब हूँ

کڑکا

(بھائی نجم آفندی)

رن میں سُن لو میرا کڑکا
میں ہوں ہندستانی لڑکا
سُورج کی آنکھوں کا تارا
پورب کے دل کا میں پارا
چاند ہے میرا ایک کھلونا
میرے وطن کی دھوپ ہے سونا
ٹھنڈی ٹھنڈی نہریں میری
گرم ہوا کی لہریں میری
کھیت میں پنپی کایا میری
دھرتی دھرتی مایا میری
پربت پربت چڑھنے والا
آندھی ایسا بڑھنے والا
ہند کا روشن تارا ہوں میں
دیس کو اپنے پیارا ہوں میں
دونوں ہیں شیدائی میرے
ہندو مسلم بھائی میرے
جنگ ہے جب انگڑائی لیتی
آتا ہوں میں چھوڑ کے کھیتی
بجلی ، بادل کوئی نہ ٹوکے
میرا رستہ کوئی نہ روکے

अपने बच्चे के साथ वह इससे उलटा बरताव करता है. अपने बच्चे के किये नुकसान उसे याद ही नहीं रहते. उसे याद रहती है अपने बच्चे की मुस्कराहट, किलकारियाँ, चंचलता, तोतले शब्द अ' .सी तरह की और मीठी शरारतें. यही वजह है कि हम भारति· ़ो अपनी हुकूमत की की हुई न तो टूट फूट याद आती है और न मार धाड़ याद आती है. लूट खसोट तो याद ही कैसे आ सकती हैं ? बच्चे के मक्खन चुराने और मां बाप के हाथ से चीज़ छीन कर खा जाने को कब किसी ने लूट खसोट का नाम दिया है ? हमने तो हर किसी को उसका ज़िक्र करते हुए स्याते ही देखा है.

भारतमाता सचमुच इस तीन बरस की बच्ची को देखकर कितनी स्याती होगी इसका अन्दाज़ा नहीं लगाया जा सकता. हो सकता है भारत माता की अमरीका और बरतानिया सहेलियों की नज़र शायद इस बच्ची की टूट फूट, मारधाड़ और लूट खसोट पर ही हो. पर भारत माता को उन से क्या लेना देना.

आइये.अब इस तीन बरस की बच्ची हुकूमत की तरफ़ एक प्यार की नज़र डालें और देखें कि वह किस तरह से मुस्कराती, किलकारती, हाथ पांव चलाती और घुटनों चलती है और किस तरह भारतमाता से छीन छीन कर चीज़ें खाती और जल्दी से जल्दी खड़े हो कर अपने पैरों पर चलने के लिये बेचैन दिखाई देती है.

पैदा होते ही इसने अपने आंगन मे एक तरफ नहीं दो तरफ दीवार खड़ी देखी. और वह दीवार भी ऐसी जिससे हवा रुकती थी पर धूप और तेज़ी से आकर बदन जलाती थी. इस नादान बच्ची ने उसका मुक़ाबला किया. कभी चुप रह कर और कभी हाथ पाँव

اپنے بچے کے ساتھ وہ اس سے اُلٹا برتاؤ کرتا ھے . اپنے بچے کے کئے نقصان اسے یاد ھي نہیں رھتے . اسے یاد رھتي ھے اپنے بچے کی مسکراھت' کلکاریاں' چلبلتا' توتلے شبد اور اسی طرح کی اور میٹھي شرارتیں . یہي وجہ ھے کہ ھم بھارتیوں کو اپنی حکومت کی کی ھوئی نہ تو توت پھوت یاد آتي ھے اور نہ مار دھاڑ یاد آتی ھے . لوت کھسوت تو یاد ھی کیسے آسکتی ھے ؟ بچے کے مکھن چرانے اور ماں باپ کے ھاتھ سے چیز چھین کر کھا جانے کو کب کسی نے لوت کھسوت کا نام دیا ھے ؟ ھم نے تو ھر کسی کو اُسکا ذکر کرتے ھوئے سہاتے ھي دیکھا ھے .

بھارت ماتا سچ مچ اس تین برس کي بچی کو دیکھکر کتنی سہاتي ھوگی اسکا اندازہ نہیں لگایا جاسکتا . ھوسکتا ھے بھارت ماتا کي امریکہ اور برطانیہ سہیلیوں کی نظر شاید اس بچي کی توت پھوت' مار دھاڑ اور لوت کھسوت پر ھي ھو . پر بھارت ماتا کو اُن سے کیا لینا دینا .

آئیے' اب اس تین برس کی بچی حکومت کی طرف ایک پیار کی نظر ڈالیں اور دیکھیں کہ وہ کس طرح سے مسکراتی' کلکارتی' ھاتھ پاؤں چلاتی اور گھٹنوں چلتی ھے اور کس طرح بھارت ماتا سے چھین چھین کر چیزیں کھاتي اور جلدی سے جلدی کھڑے ھوکر اپنے پیروں پر چلنے کے لئے بیچین دکھائي دیتی ھے .

پیدا ھوتے ھی اسنے اپنے آنگن میں ایک طرف نہیں دو طرف دیوار کھڑي دیکھی . اور وہ دیوار بھی ایسی جس سے ھوا رکتی تھی پر دھوپ اور تیزی سے آکر بدن جلاتی تھی . اس نادان بچی نے اُسکا مقابلہ کیا' کبھی چپ رہ کر اور کبھی ھاتھ پاؤں

मारकर. आज तीन बरस के बाद कोई धूप तकलीफ़ देने वाली नहीं रह गई और अगर भारत-पाक समझौते का पौदा ठीक ठीक हवा पानी पाता रहा तो यह धूप एक दिन चाँदनी में बदल कर रहेगी. कौन है जो इस काम को इस बच्ची का चमत्कार नहीं मानता ?

पैदा होते ही इसने घर में बेहद ग़रीबी देखी. यह ठीक है कि यह सत्तरह अरब की नक़दी की मालिक होकर जनमी थी पर वह नक़दी तो ऐसे साहूकार के हाथ में थी जिससे वसूल करना कोई आसान काम नहीं था. उधार की लेनदारी कुछ धाक भले ही जमा सकती हो और साख बनाये रखने में कुछ मदद भी दे सकती हो, पर भूक मिटाने का काम नहीं कर सकती. इसलिये इस मालदार बच्ची को पैदा होने के दिन से ही मुर्ग़ी के बच्चे की तरह अंडे से निकलतेही दाने के लिये ज़मीन पर चोंच मारनी पड़ी. और आख़िर इसने अपनी मेहनत से किसी न किसी तरह पेट भर ही लिया. इसमें शक नहीं कि इसने उस सत्तरह अरब में से आधे से ज़्यादा ख़र्च कर डाला है. हो सकता है कुछ लोगों की नज़र में यह इस बच्ची की फ़ज़ूल ख़र्ची और ना समझी समझी जाय, पर भारत माता की नज़र में यह उसकी ख़ुश ख़र्ची और समझदारी ही है और फिर यह आठ नौ अरब रुपया नक़द ही कब मिला. पुराने बेकार जहाज़ों की शकल में मिला या फिर इसी तरह और लड़ाई के सामान के रूप में. उस साहूकार से इस शकल में भी वसूली कर लेना चमत्कार ही समझना चाहिये.

पैदा होते ही इस बच्ची ने यह देखा कि उसकी मां का दुनिया के मुल्कों में कोई ऐसा स्थान नहीं है जिसका फ़ायदा उठाकर यह

مارکر . آج تین برس کے بعد کوئی دھوپ تکلیف دینے والی نہیں رھگئی اور اگر بھارت پاک سمجھوتے کا پودا ٹھیک ٹھیک ھوا پانی پاتا رھا تو یہ دھوپ ایک دن چاندنی میں بدل کر رھیگی . کون ھے جو اس کام کو اس بچی کا چمتکار نہیں مانتا ؟

پیدا ھوتے ھی اسنے گھر میں بے حد غریبی دیکھی . یہ ٹھیک ھے کہ یہ سترہ ارب کی نقدی کی مالک ھوکر جنمی تھی پر وہ نقدی تو ایسے ساھوکار کے ھاتھ میں تھی جس سے وصول کرنا کوئی آسان کام نہیں تھا . اُدھار کی لین داری کچھ دھاک بھلے ھی جما سکتی ھو اور ساکھ بنائے رکھنے میں کچھ مدد بھی دے سکتی ھو پر بھوک مٹانے کا کام نہیں کرسکتی . اسلئے اس مالدار بچی کو پیدا ھونے کے دن سے ھی مرغی کے بچے کی طرح انڈے سے نکلتے ھی دانے کے لئے زمین پر چونچ مارنی پڑی . اور آخر اس نے اپنی محنت سے کسی نہ کسی طرح پیٹ بھر ھی لیا . اس میں شک نہیں کہ اِس نے اس سترہ ارب میں سے آدھے سے زیادہ خرچ کر ڈالا ھے . ھوسکتا ھے کچھ لوگوں کی نظر میں یہ اس بچی کی فضول خرچی اور نا سمجھی سمجھی جائے' پر بھارت ماتا کی نظر میں یہ اس کی خوش خرچی اور سمجھداری ھی ھے اور پھر یہ آٹھ نو ارب روپیہ نقد ھی کب ملا . پرانے بیکار جہازوں کی شکل میں ملا یا پھر اسی طرح اور لڑائی کے سامان کے روپ میں . اُس ساھوکار سے اس شکل میں بھی وصولی کرلینا چمتکار ھی سمجھنا چاھئے .

پیدا ھوتے ھی اس بچی نے یہ دیکھا کہ اس کی ماں کا دنیا کے ملکوں میں کوئی ایسا استھان نہیں ھے جسکا فائدہ اٹھاکر یہ

अपनी तमाम ताक़त अपने ऊपर ही खर्च कर सके. इसलिये इसने अपने मासूम और हंसमुख चेहरे से दुनिया के मुल्कों पर वह असर डाला कि सब इसको गोद लेने के लिये विकल हो उठे और आज इसने अपनी बच्चों जैसी साफ दिली की वजह से दुनिया में जगह बनाली. इसके पास न मुल्क जीतने वाले नये वीरों की कथाएँ हैं और न दूसरे मुल्कों को माल भेज कर धन बटोर लाने वाले सौदागरों की कहानियां हैं और न मिनटों में लाखों आदमियों की जान लेने वाले हथियार बनाने वालों के कारनामे. इसके पास तो सिर्फ भारत के राष्ट्रपिता की दी हुई सचाई और अहिन्सा की देन का एक कन है और उसी को लेकर इसने दुनिया में जो जगह बनाई है उसे चमत्कार नहीं तो और क्या कहा जा सकता है.

पैदा होते ही इसने अपने घर में खूनी झगड़े देखे. आग की लपटें देखीं, भुकमरी और बीमारी देखी. पर इन सबसे वह नहीं घबराई. पैदा होते ही जो बच्चे जिस आफ़त का मुक़ाबला कर लेते हैं उससे उनको मरते दम तक डर नहीं लगता. यही हाल इसका हुआ. इसको न अब खून की बाढ़ से डर लगता है और न आग की लपट से यह घबराती है और न भुकमरी और महामारी से यह काँपती है. यह चमत्कार नहीं तो क्या है ? कुछ की नजरों में यह मालूम होता हो कि इस हुकूमत में यह सब चीजें पहले से ज्यादा हो गई हैं. हम भी मानते हैं कि यह ज्यादा हो गई हैं, पर ज्यादा होने का यहाँ सवाल कहाँ है ? सवाल तो यहाँ यह है कि यह तीन बरस की बच्ची उनका मुक़ाबला कर लेगी है या नहीं और इस बारे में हमारी क्या

اپنی تمام طاقت اپنے اوپر ہی خرچ کرسکے . اس لئے اس نے اپنے معصوم اور ہنس مکھ چہرے سے دنیا کے ملکوں پر وہ اثر ڈالا کہ سب اس کو گود لینے کے لئے وکل ہو اُٹھے اور آج اس نے اپنی بچوں جیسی صاف دلی کی وجہ سے دنیا میں جگہ بنالی . اِس کے پاس نہ ملک جیتنے والے نئے ویروں کی کتھائیں ہیں اور نہ دوسرے ملکوں کو مال بھیج کر دھن بٹورنے والے سوداگروں کی کہانیاں ہیں اور نہ منٹوں میں لاکھوں آدمیوں کی جان لینے والے ہتھیار بنانے والوں کے کارنامے . اس کے پاس تو صرف بھارت کے راشٹر پتا کی دی ہوئی سچائی اور اہنسا کی دین کا ایک کن ہے اور اسی کو لیکر اس نے دنیا میں جو جگہ بنائی ہے اُسے چمتکار نہیں تو اور کیا کہا جاسکتا ہے .

پیدا ہوتے ہی اس نے اپنے گھر میں خونی جھگڑے دیکھے' آگ کی لپٹیں دیکھیں' بھکمری اور بیماری دیکھی' پر اُن سب سے وہ نہیں گھبرائی . پیدا ہوتے ہی جو بچے جس آفت کا مقابلہ کر لیتے ہیں اس سے ان کو مرتے دم تک ڈر نہیں لگتا . یہی حال اس کا ہوا . اس کو نہ اب خون کی باڑھ سے ڈر لگتا ہے اور نہ آگ کی لپٹ سے یہ گھبراتی ہے اور نہ بھکمری اور مہا ماری سے یہ کانپتی ہے . یہ چمتکار نہیں تو کیا ہے ؟ کچھ کی نظروں میں یہ معلوم ہوتا ہو کہ اس حکومت میں یہ سب چیزیں پہلے سےزیادہ ہوگئی ہیں' ہم بھی مانتے ہیں کہ یہ زیادہ ہوگئی ہیں' پر زیادہ ہونے کا یہاں سوال کہاں ہے ؟ سوال تو یہاں یہ ہے کہ یہ تین برس کی بچی اُنکا مقابلہ کر لیگی ہے یا نہیں . اور اس بارے میں ہماری کیا

सभी की यह राय है कि यह उसका मुक़ाबला कर लेती है और खूब कर लेती है.

कोरिया के मामले में यह कहा जा सकता है कि इस बच्ची ने भूल की. पर भारत माता तो इस भूल से भी ख़ुश ही होगी. कोई मा अपने बच्चे से क़ीमती लैम्प के टूट जाने का नुक़सान ध्यान में नहीं लाती, उसका ध्यान तो अपने बच्चे के उस सबक़ की तरफ़ रहता है जो उसने लैम्प तोड़ कर सीखा होता है और वह यह कि लैम्प गरम होता है और कोरिया के मामले मे आज किसको यह इन्कार है कि इस तीन बरस की बच्ची ने बहुत बड़ा सबक़ लिया है और क्यों न लेती आख़िर चीन और इन्डोनेशिया से तो उमर में बड़ी ही है!

तीन बरस का वक़्त सामने रखते हुए और भारत की इस बिगड़ी हुई हालत के रहते भारत की हुकूमत ने तीन बरस में जो बुरा भला किया है, हम तो उसे भला ही समझते हैं और वह यों कि वह हर अपनी ग़लती से सबक़ लेती हुई मालूम होती है.

जब जब इस बच्ची को सांस लेने का वक़्त मिला है तब तब इसने अपने घर की तरफ़ नज़र डाली है. फ़िरक़ेवारी को मिटाने की कोशिश की है, शराब कम करने के लिये तरह तरह के जतन किये हैं. अछूतपने की जड़ में मठा डाल कर हमेशा के लिये मिटाने की कोशिश की है. हिन्दुस्तान भर मे एक सीधी सादी बोली फैलाने की तरफ़ क़दम उठाये हैं और भी तरह तरह की तकलीफ़ें मिटाने के सोच विचार किये हैं. पर कुछ लोगों की नज़र में यह तीन बरस की बच्ची जवान मालूम होती है और वह इसी वजह से इस पर तरह तरह की कमियों के इलज़ाम लगाते हैं और यह बच्ची उन इलज़ामों

سبهی کی یه رائے هے که یه اس کا مقابله کر لیتی هے اور خوب کر لیتی هے .

کوریا کے معاملے میں یه کہا جا سکتا هے که اس بچی نے بهول کی . پر بهارت ماتا تو اس بهول سے بهی خوش هی هوگی . کوئی ماں اپنے بچے سے قیمتی لیمپ کے ٹوٹ جانے کا نقصان دهیان میں نہیں لاتی' اسکا دهیان تو اپنے بچے کے اُس سبق کی طرف رهتا هے جو اس نے لیمپ توڑ کر سیکها هوتا هے اور وہ یه که لیمپ گرم هوتا هے . اور کوریا کے معاملے میں آج کس کو یه انکار هے که اس تین برس کی بچی نے بہت بڑا سبق لیا هے اور کیوں نه لیتی آخر چین اور انڈونیشیا سے تو عمر میں بڑی هی هے .

تین برس کا وقت سامنے رکهتے هوئے اور بهارت کی اس بگڑی هوئی حالت کے رهتے بهارت کی حکومت نے تین برس میں جو برا بهلا کیا هے' هم تو اسے بهلا هي سمجهتے هیں اور وہ یوں که وہ هر اپني غلطی سے سبق لیتي هوئی معلوم هوتی هے .

جب جب اس بچی کو سانس لینے کا وقت ملا هے تب تب اسنے اپنے گهر کی طرف نظر ڈالی هے . فرقهواری کو مٹانے کی کوشش کی هے' شراب کم کرنے کے لئے طرح طرح کے جتن کئے هیں' اچهوت پنے کی جڑ میں مٹها ڈالکر همیشه کے لئے مٹانے کی کوشش کی هے . هندستان بهر میں ایک سیدهی سادی بولی پهیلانے کی طرف قدم اُٹهائے هیں اور بهی طرح طرح کی تکلیفیں مٹانے کے سوچ وچار کئے هیں . پر کچه لوگوں کی نظر میں یه تین برس کی بچی جوان معلوم هوتی هے اور وہ اِسي وجه سے اسپر طرح طرح کي کمیوں کے اِلزام لگاتے هیں اور یه بچی اُن اِلزاموں

को ऐसे ही सुन लेती है मानो पच्चीस बरस की गृहस्थिनी ही हो. और चट उन कमियों के दूर करने में अपने छोटे छोटे हाथ लेकर जुट जाती है. जब यह असफल होती है तो भारत मां इसकी बेजा हिम्मत पर हंसती है और खोट निकालने वाले इसे बदनाम करके आंसुओं से रुलाने की कोशिश करते है पर यह उस तरफ नज़र भी नहीं डालती और अपने काम में जुटी रहती है.

अब यह चौथे बरस में पाँव रखती है और हम भारत मां की ओर से इसे यह आशीर्वाद देते हैं कि यह नित नये कपड़े बदलने पर भी अपनी हिम्मत और अपनी आत्मा को अटल और कभी न बदलने वाली बनाये रखे. और राष्ट्रपिता की दी हुई देन को किसी अंश में भी बनाये रखे तो इसका आगे का रास्ता साफ रहेगा और यह दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की करती हुई सब पड़ोसी मुल्कों को सुख पहुँचाती इस दुनिया के आकाश में चमकती रहेगी.

७—८—५०. भगवान दीन

दियासलाई और बारूद

राजा जी ने हाल ही में उत्तर कोरिया के दक्खिन कोरिया पर हमले के बारे में यह शब्द कहे हैं :—

"बारूद के ढेर पर दियासलाई फेंकते हुए देखकर भारत कैसे चुप बैठ सकता था."

हमने इसे समझने की बड़ी कोशिश की और जितनी तरह हम समझ पाये, हमारी तसल्ली न हुई. एक बार हमने उत्तर कोरिया को

کو ایسے ہی سن لیتی ہے مانو پچیس برس کی گرہستنی ہی ہو. اور چٹ اُن کمیوں کے دور کرنے میں اپنے چھوٹے چھوٹے ہاتھ لیکر جٹ جاتی ہے. جب یہ اسپھل ہوتی ہے تو بھارت ماں اس کی بیجا ہمت پر ہنستی ہے اور کھوٹ نکالنے والے اسے بدنام کرکے آنسوؤں سے رلانے کی کوشش کرتے ہیں. پر یہ اس طرف نظر بھی نہیں ڈالتی اور اپنے کام میں جٹی رہتی ہے.

اب یہ چوتھے برس میں پاؤں رکھتی ہے اور ہم بھارت ماں کی اور سے اِسے یہ آشیرواد دیتے ہیں کہ یہ نت نئے کپڑے بدلنے پر بھی اپنی ہمت اور اپنی آتما کو اٹل اور کبھی نہ بدلنے والی بنائے رکھے اور راشٹر پتا کی دی ہوئی دین کو کسی انش میں بھی بنائے رکھے تو اسکا آگے کا راستہ صاف رہیگا اور یہ دن دونی رات چوگنی ترقی کرتی ہوئی سب پڑوسی ملکوں کو سکھ پہونچاتی اس دنیا کے آکاش میں چمکتی رہیگی

بھگوان دین ۷-۸-۵۰ع

دیاسلائی اور بارود

راجہ جی نے حال ہی میں اُتر کوریا کے دکھن کوریا پر حملے کے بارے میں یہ شبد کہے ہیں :—

"بارود کے ڈھیر پر دیا سلائی پھینکتے ہوئے دیکھکر بھارت کیسے چپ بیٹھ سکتا تھا."

ہم نے اِسے سمجھنے کی بڑی کوشش کی اور جتنی طرح ہم سمجھ پائے ہماری تسلی نہ ہوئی ایک بار ہم نے اُتر کوریا کو

दियासलाई समझा और दक्खिन कोरिया को बारूद. तब यह सवाल पैदा हुआ कि यह बारूद किसने जमा की. और जिसने जमा की वह ज्यादा क़सूरवार है या दियासलाई या दियासलाई फेंकने वाला. न बारूद होती, न दियासलाई फेंकी जाती. और अगर फेंकी भी जाती तो वह कोई नुकसान न करती.

दूसरी बार हमने दक्खिन कोरिया को दियासलाई समझा क्योंकि यह भी कहा जाता है कि उत्तर कोरिया के बड़े हमले से पहले दक्खिन कोरिया भी छोटे मोटे हमले करता रहा है पर जब हम दक्खिन कोरिया को दियासलाई मानते हैं तब राजा जी की बात बेमतलब हो जाती है. क्योंकि वह दक्खिन कोरिया पर कोई इलजाम लगाते मालूम नहीं होते, वह तो अपनी बात उस हमले के बारे में कह रहे हैं जो उत्तर कोरिया ने दक्खिन कोरिया पर किया और ज्यादती बता रहे हैं.

(६४१)

तीसरी बार हम यह मान कर चले कि उत्तर कोरिया और दक्खिन कोरिया दोनों बारूद के थैले हैं. अब अगर बारूद का थैला बारूद पर गिरे तो न किसी के भागने की जरूरत है और न किसी के भड़कने की. इसलिये दियासलाई की खोज फिर हुई. और अब वह हो सकता था तो अमरीका. तब बेशक भारत को क्या दुनिया भर को दौड़ पड़ने की जरूरत पड़ जाती. पर राजा जी यह बात तो नहीं कह रहे. अमरीका को दियासलाई कहना तो उत्तर कोरिया का समर्थन करना है, जो काम भारत सरकार ने कभी नहीं किया.

दियासलाई समझने के लिये हमने रूस की तरफ नजर डालने की कोशिश की. पर उस तरफ हमारी नजर जाते जाते रुक गई. क्योंकि

دیاسلائی سمجھا اور دکھن کوریا کو بارود تب یہ سوال پیدا ہوا کہ یہ بارود کس نے جمع کی. اور جس نے جمع کی وہ زیادہ قصوروار ہے یا دیا سلائی یا دیا سلائی پھینکنے والا. نہ بارود ہوتی' نہ دیاسلائی پھینکی جاتی. اور اگر پھینکی بھی جاتی تو وہ کوئی نقصان نہ کرتی.

دوسری بار ہم نے دکھن کوریا کو دیا سلائی سمجھا کیونکہ یہ بھی کہا جاتا ہے کہ اُتر کوریا کے بڑے حملے سے پہلے دکھن کوریا بھی چھوٹے موٹے حملے کرتا رہا ہے پر جب ہم دکھن کوریا کو دیاسلائی مانتے ہیں تب راجہ جی کی بات بے مطلب ہوجاتی ہے. کیونکہ وہ دکھن کوریا پر کوئی الزام لگاتے معلوم نہیں ہوتے. وہ تو اپنی بات اُس حملے کے بارے میں کہہ رہے ہیں جو اُتر کوریا نے دکھن کوریا پر کیا اور زیادتی بتا رہے ہیں.

(۶۴۱)

تیسری بار ہم یہ مان کر چلے کہ اُتر کوریا اور دکھن کوریا دونوں بارود کے تھیلے ہیں. اب اگر بارود کا تھیلا بارود پر گرے تو نہ کسی کے بھاگنے کی ضرورت ہے اور نہ کسی کے بھڑکنے کی. اس لئے دیاسلائی کی کھوج پھر ہوئی. اور اب وہ ہو سکتا تھا تو امریکہ. تب بیشک بھارت کو کیا دنیا بھر کو دوڑ پڑنے کی ضرورت پڑجاتی. پر راجہ جی یہ بات تو نہیں کہہ رہے. امریکہ کو دیاسلائی کہنا تو اُتر کوریا کا سمرتھن کرنا ہے' جو کام بھارت سرکار نے کبھی نہیں کیا.

دیاسلائی سمجھنے کے لئے ہم نے روس کی طرف نظر ڈالنے کی کوشش کی. پر اُس طرف ہماری نظر جاتے جاتے رک گئی. کیونکہ

अभी तक उन अमरीकियों ने भी, जो कम्युनिज़्म को खुले खुले बदनाम कर रहे हैं, यह नहीं कहा कि रूस खुले या छिपे उत्तर कोरिया की फ़ौजों से मदद कर रहा है. जब अमरीकी ही उसको दियासलाई नहीं कहते तो राजा जी उसको दियासलाई क्यों कहने लगे ? इसलिये हम इस नतीजे पर अभी तक नहीं पहुँच पाये कि राजा जी किसको दियासलाई और किसको बारूद कह रहे हैं.

अगर हम बहस के लिये उत्तर कोरिया को 'मेनसल' और दक्खिन कोरिया को 'पोटास' मान लें और दक्खिन कोरिया में बसने वाले अमरीकियों को कंकरी मान लें, तब भी सिर्फ़ पटाख़ा बनता है. विस्फोट और धड़ाके के लिये फिर भी हथौड़े की ज़रूरत पड़ती है और वह हथौड़ा हमें सिवाय अमरीका के और कोई दिखाई नहीं पड़ता.

कोरिया से पहले चीन में इससे बड़े पैमाने पर घरेलू लड़ाई हो चुकी है. पर उस समय किसी को बारूद के थैलों पर दियासलाई फेंकने की बात नहीं सूझी और न बारूद के थैलों की कल्पना ही किसी के सिर में आई. फिर आज कोरिया की छोटी सी लड़ाई क्यों बारूद के थैले और जलती हुई दियासलाई जँची ? क्या सिर्फ़ इसी वजह से कि कुछ लोगों ने कोरिया को दो मुल्कों में बँटा हुआ मान लिया है ? इस लिहाज़ से देखा जाय तो चीन भी उस दिन दो मुल्कों में बँट गया जब रूसी सरकार ने चीन की लाल सरकार को मान लिया. उसके बादबरमा, भारत, बरतानिया कई मुल्कों ने मान लिया. चीन के दूसरे हिस्से को अमरीका और उसके दोस्त

ابهی تک اُن امریکیوں نے بهي' جو کمیونزم کو کهلے کهلے بدنام کر رهے هیں' یه نهیں کها که روس کهلے یا چهپے اُتر کوریا کی فوجوں سے مدد کر رها هے . جب امریکي هی اُس کو دیاسلائي نهیں کهتے تو راجه جی اُس کو دیا سلائی کیوں کهنے لگے ؟ اس لئے هم اس نتیجے پر ابهي تک نهیں پهونچ پائے که راجه جی کسکو دیاسلائي اور کسکو بارود کہ رهے هیں .

اگر هم بحث کے لئے اُتر کوریا کو ' میلسل ' اور دکهن کوریا کو ' پوٹاس ' مان لیں اور دکهن کوریا میں بسنے والے امریکیوں کو کنکري مان لیں' تب بهي صرف پٹاخا بنتا هے . وسپهوٹ اور دهماکے کے لئے پهر بهی هتهوڑے کی ضرورت پڑتی هے اور وه هتهوڑا همیں سوائے امریکه کے اور کوئي دکهائی نهیں پڑتا .

کوریا سے پہلے چین میں اس سے بڑے پیمانے پر گهریلو لڑائی هو چکی هے . پر اُس سمے کسیکو بارود کے تهیلوں پر دیاسلائی پهینکنے کی بات نهیں سوجهی اور نه بارود کے تهیلوں کی کلپنا هي کسی کے سر میں آئی . پهر آج کوریا کي چهوٹی سی لڑائي کیوں بارود کے تهیلے اور جلتي هوئي دیاسلائي جنچی ؟ کیا صرف اسي وجه سے که کچه لوگوں نے کوریا کو دو ملکوں میں بٹا هوا مان لیا هے ؟ اس لحاظ سے دیکها جائے تو چین بهی اُسدن دو ملکوں میں بٹ گیا جب روسی سرکار نے چین کي لال سرکار کو مان لیا . اُس کے بعد برما' بهارت' برطانیه کئي ملکوں نے مان لیا . چین کے دوسرے حصے کو امریکه اور اُس کے دوست ملک

मुल्कों में बँटा हुआ आपस में लड़ता रहा. पर किसी ने उस वक़्त न एक का दूसरे पर हमला माना न दियासलाई फेंकना माना और न कोई उस तरफ़ दौड़ा. फिर आज कोरिया के लिये ही यह बारूद और दियासलाई से तुलना कैसी ?

हमारे साथी और हमारे पढ़ने वाले हमारी मदद करें और हमें बतायें कि राजा जी किसको दियासलाई और किसको बारूद कहते हैं और कौन क्यों दियासलाई फेंकने वाला है ?

७—८—५०.

भगवान दीन

ملکوں میں بٹا ہوا آپسمیں لڑتا رہا. پر کسی نے اس وقت نہ ایک دوسرے پر حملہ مانا ؛ نہ دیاسلائی پھینکنا مانا اور نہ کوئی اُس طرف دوڑا . پھر آج کوریا کے لئے ہی یہ بارود اور دیا سلائی سے تلنا کیسی ؟

ہمارے ساتھی اور ہمارے پڑھنے والے ہماری مدد کریں اور ہمیں بتائیں کہ راجہ جی کسکو دیاسلائی اور کسکو بارود کہتے ہیں اور کون کیوں دیاسلائی پھینکنے والا ہے ؟

۷-۸-۵۰ع

بھگوان دین

हिन्द के विधान

की

अंगरेजी हिन्दुस्तानी शब्दावली

(अंगरेजी नागरी लिखावट में)

जिसमें

हिन्द का जो नया विधान पास हुआ है उसके
लग भग चौदह सौ खास खास अंगरेजी
शब्दों के लिए आसान हिन्दुस्तानी
शब्द महात्मा भगवान दीन
और कुछ दूसरे विद्वानों ने सुझाए हैं.

शुरू में 'दो शब्द' लिखे हैं—काका कालेलकर,
श्रीमती रामेश्वरी नेहरू, श्री मां० सत्य नारायण
और पंडित सुन्दर लाल ने.

निकाली है—हिन्दुस्तानी प्रचार सभा वर्धा ने.

क़ीमत दो रुपै

[नोट—बेचने वालों को या कम से कम दस कापी खरीदने
वालों को ३३ फीसदी कमीशन दिया जायगा.]

मिलने का पता—मैनेजर "नया हिन्द"
४८ बाई का बाग़: इलाहाबाद

هند کے ودهان

کی

انگریزی هندستانی شبداولی

(انگریزی ناگری لکهاوٹ میں)

جس میں هندی کا جو نیا ودهان پاس هوا هے اس کے
لگ بهگ چودہ سو خاص خاص انگریزی
شبدوں کے لئے آسان هندستانی شبد
مهاتما بهگوان دین اور کچھ دوسرے
ودوانوں نے سجهائے هیں'

شروع میں 'دو شبد' لکهے هیں—کاکا کالیلکر' شریمتی
رامیشوری نهرو' شری م . ستیه نارائن
اور پنڈت سندر لال نے .

نکالی هے—هندستانی پرچار سبها وردها نے .

قیمت ۲ روپے

[نوٹ — بیچنے والوں کو یا کم سے کم دس کاپی خریدنے
والوں کو ۳۳ فیصدی کمیشن دیا جائیگا .]

ملنے کا پته—منیجر 'نیا هند'
۴۸ بائی کا باغ' الهآباد

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

मक़सद

(१) एक ऐसे हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(२) एकता फैलाने के लिये किताबों, अखबारों, रिसालों वग़ैरह का छापना.

(३) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफरेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िक़ों में आपस में मेल बढ़ाना

—•—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख्वाजा, वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़; गवर्निंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; सेक्रेटरी पं० सुन्दरलाल;—

गवर्निंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सय्यद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सय्यद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख्ता, श्री बी० जी० खेर, मि० एस० के० रुद्रा, पं० विशम्भर नाथ, महात्मा भगवान दीन, सेठ पूनम चन्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम प्रकाश पालीवाल.

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये.

सुन्दर लाल

सक्रटरी हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

४८, बाई का बाग़, इलाहाबाद

नोट—सोसाइटी के नये क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है, "नया हिन्द" के जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायगा अलग से मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई [illegible]

هندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد

(۱) ایک ایسی هندستانی کلچر بڑھانا ' پھیلانا اور [illegible] جس میں سب هندستانی شامل هوں -

(۲) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابیں ' اخباروں ' رسالوں [illegible] چھاپنا -

(۳) پڑھائی گھروں ' کتب گھروں ' سبھاؤں ' کانفرنسوں ' [illegible] سب دھرموں ' جاتوں ' برادریوں اور فرقوں [illegible] میل بڑھانا -

---

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ — مسٹر عبدالمجید خواجہ ' وائس پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس - اور ڈاکٹر عبدالحق [illegible] کے پریسیڈنٹ - ڈاکٹر بھگوان داس ' سکریٹری [illegible] لال

[illegible] باڈی کے اور ممبر—

[illegible] محمود ' ڈاکٹر تاراچند ' مولوی سید سلیمان [illegible] مسٹر منظر علی سوختہ ' شری بی · جی کھیر ' مسٹر [illegible] پنڈت بشمبھر ناتھ ' مہاتما بھگوان دین ' سیٹھ [illegible] قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش [illegible]

[illegible] کے قاعدوں کے لئے لکھئے -

سندر لال

سکریٹری هندستانی کلچر سوسائٹی

۴۸ بائی کا باغ ' الہ آباد

سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس [illegible] روپیہ کردی گئی هے - " نیا هند " کے جو گاهک [illegible] چاهیں اُن کو صرف چھ روپیہ چندہ دینے پر هی [illegible] بنالیا جائیگا - الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی [illegible] کوئی کتاب یا ایک روپیہ دام کی [illegible]

अकेला

(भाई रामजी दर)

सभ्य-समाज की असभ्य बातों से ऊब कर मैं अपने बग़ीचे के एक शान्त और एकान्त कोने में, एक घने पेड़ की छाया तले, फूल, पत्तियों, चिड़ियों और तितलियों के बीच जा बैठा.

कुदरती हुस्न और वातावरण के असर से मन की थकान दूर हुई. एक अजीब नाक़ाबिले बयान आनन्द हासिल हुआ—नये भाव और विचार उमड़ने लगे. लेकिन इतने ही में मेरे एक गहरे दोस्त की नज़र मुझ पर पड़ी —

"अरे भाई अकेले क्या कर रहे हो ?" सवाल में ताज्जुब और मज़ाक़ की झलक थी.

"मैं अकेला नहीं हूँ" मैंने धीमे से पर गम्भीर आवाज़ में जवाब दिया.

कुदरत ने भी उसी वक़्त अपनी हस्ती का इशारा किया.

मेरे मित्र भाषा-शास्त्र के बड़े पंडित थे. एक परोपकारी जीव थे. वह सामने की सड़क से किसी बहुत ज़रूरी काम से कहीं जा रहे थे.

मेरा जवाब सुन वह दो घड़ी रुके, अपने चारों ओर बड़े ध्यान से देखा, फिर ऊपर निगाह डाली. मेरे अलावा, मेरे मित्र को, और कोई जीव न दिखाई दिया. हाँ पेड़ों की टहनियाँ मस्तानी पेंग ले रही थीं, उनके बेशुमार पत्ते आपस में टकरा रहे थे. चिड़ियाँ चहक और फुदक रही थीं, तितलियाँ मंडरा रही थीं और फूल अपनी ख़ुशबू पूरी आज़ादी से फैला रहे थे मगर——

मेरे दुनयादार दोस्त को न तो मेरी सीधी-सादी बोली समझ में आई और न कुदरत का साफ़ इशारा.

मेरे बेतुके और बेमानी जीवन पर तरस खाकर वह समाज-सुधार की पगडन्डी पर आगे बढ़ गये और मुझे "अकेला" छोड़ गये !!

اکیلا

(بھائی رام جی در)

سبھیہ سماج کی اسبھیہ باتوں سے اُوب کر میں اپنے باغیچے کی ایک شانت اور ایکانت کونے میں، ایک گھنے پیڑ کی چھایا تلے، پھول، پتّوں، چڑیوں اور تتلیوں کے بیچ جا بیٹھا.

قدرتی حسن اور واتاورن کے اثر سے من کی تھکن دور ہوئی ایک عجیب ناقابلِ بیان آنند حاصل ہوا— نئے بھاؤ اور وچار اُمنڈنے لگے. لیکن اتنے ہی میں میرے ایک گہرے دوست کی نظر مجھ پر پڑی —

"ارے بھائی اکیلے کیا کر رہے ہو؟" سوال میں تعجب اور مذاق کی جھلک تھی

"میں اکیلا نہیں ہوں" میں نے دھیمے سے پر گمبھیر آواز میں جواب دیا.

قدرت نے بھی اسی وقت اپنی ہستی کا اشارا کیا.

میرے متر بھاشا شاستر کے بڑے پنڈت تھے. ایک پروپکاری جیو تھے. وہ سامنے کی سڑک سے کسی بہت ضروری کام سے کہیں جا رہے تھے.

میرا جواب سن وہ دو گھڑی رُکے، اپنے چاروں اور بڑے دھیان سے دیکھا، پھر اوپر نگاہ ڈالی. میرے علاوہ، میرے متر کو، اور کوئی جیو نہ دکھائی دیا. ہاں پیڑوں کی ٹہنیاں مستانی پینگ لے رہی تھیں، اُنکے بیشمار پتے آپس میں ٹکرا رہے تھے. چڑیاں چہک اور پھدک رہی تھیں، تتلیاں منڈرا رہی تھیں اور پھول اپنی خوشبو پوری آزادی سے پھیلا رہے تھے مگر——

میرے دنیادار دوست کو نہ تو میری سیدھی سادی بولی سمجھ میں آئی اور نہ قدرت کا صاف اشارا.

میرے بے تُکے اور بے معنی جیون پر ترس کھا کر وہ سماج سدھار کی پگڈنڈی پر آگے بڑھ گئے اور مجھے "اکیلا" چھوڑ گئے !!

"गीता और क़ुरान"

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

इस किताब के शुरू में दुनिया के सब बड़े बड़े धर्मों की एकता को दिखाया गया है और सब धर्मों की किताबों के हवाले दे देकर मिलती जुलती धार्मिक सचाइयों को बयान किया गया है

इसके बाद गीता के लिखे जाने के समय की कुछ [illegible] की हालत, गीता के बड़प्पन और [illegible] [illegible] की तालीम को बतलाया गया है

आख़िर में क़ुरान से पहले की अरब की हालत, क़ुरान के बड़प्पन और एक एक बात पर क़ुरान की [illegible] को [illegible] किया गया है, इस में क़ुरान की पाच सौ से [illegible] का तरजुमा दिया गया है [illegible] आकबत, आखरत, जन्नत, [illegible]

जो लोग सब धर्मों की एकता को समझना चाहें या हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों की इन दो अमर पुस्तकों के बारे में जानकारी हासिल करना चाहें उन्हें इस किताब को ज़रूर पढ़ना चाहिए।

किताब हिन्दुस्तानी ज़बान में, नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में अलग अलग मिल सकती है। [illegible] सौ से ऊपर सफ़ों की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपये डाक खर्च अलग।

मैनेजर "नया हिन्द"
४८ बाई का बाग, इलाहाबाद

"گیتا اور قرآن"

لیکھک پنڈت سندر لال

[اس] کتاب کے شروع میں دنیا کے [illegible] دھرموں کی ایکتا کو دکھایا گیا ہے اور سب دھرموں [illegible] کے حوالے دے دے کر ملتی جلتی سچائیوں کو بیان کیا گیا ہے۔ اس کے بعد گیتا کے لکھے جانے کے وقت کی اس دیس کی حالت، گیتا کی بڑائی اور [illegible] کو لیکر گیتا کی تعلیم کو بتایا گیا ہے

آخر میں قرآن سے پہلے عرب کی حالت [illegible] ایک ایک بات پر قرآن کی تعلیم کو [illegible] قرآن کی پانچ سو سے اوپر آیتوں کا ترجمہ دیا گیا ہے [illegible] بھی بتایا گیا ہے کہ قرآن میں [illegible] جہنم، کافر وغیرہ کسے کہا گیا ہے

جو لوگ سب دھرموں کی ایکتا کو سمجھنا [illegible] دھرم اور اسلام دونوں کی ان دو [illegible] حاصل کرنا چاہیں انہیں اس کتاب کو ضرور پڑھنا چاہیے

کتاب ہندستانی زبان میں ناگری [illegible] لکھاوٹوں میں الگ الگ مل سکتی ہے [illegible] کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت [illegible] ڈاک خرچ الگ۔

مینیجر "نیا ہند"
۴۸ بائی کا باغ الہ آباد

Printer—Bishambhar Nath Vishwavani Press South Malaka, Allahabad.
Publisher—Bishambhar Nath, for Hindustani Culture Society, 48 Bai ka Bagh, Allahabad.
Cover Printed by—Allahabad Block Works Ltd. Allahabad.


जय हिन्द

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का परचा

एडीटर—

ताराचन्द, भगवानदीन, मुज़फ़्फ़र हसन, विश्वम्भरनाथ, सुन्दरलाल

सितम्बर १९५०

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल
एक परचा दस आने .

मैनेजर
'नया हिन्द'

१४५, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद .

هندستانی کلچر سوسایٹی کا پرچا

ایڈیٹر —

تارا چند، بھگوان دین، مظفر حسن، بشمبھر ناتھ، سندر لال

ستمبر ۱۹۵۰

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال، باہر دس روپیہ سال
ایک پرچہ دس آنے .

مینیجر
'نیا ہند'

۱۴۵، مٹھی گنج، الہ آباد .

नया हिन्द — نیا ہند

जिल्द ९ सितम्बर सन् '५० नम्बर ३

نمبر ۳ ستمبر سن ۵۰ جلد ۹

जात आदमी, प्रेम धर्म है. हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुंचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمي' پریم دھرم ھے' ھندستانی بولی'
' نیا ھند ' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کي جھولی .

समय की पुकार

(भाई मुज़फ्फ़र शाहजहाँपुरी)

कर न आराम अरे ग़ाफ़िल है बहुत दूर अभी,
रास्ता मिल गया मंज़िल है बहुत दूर अभी.
नाव को रोक न साहिल है बहुत दूर अभी,
अपने क़ाबू में हर एक मौज को लाना है अभी.
देश को अपने बहुत ऊँचा उठाना है अभी.

سمے کی پکار

(بھائی مظفر شاہجہانپوري)

کر نہ آرام ارے غافل ھے بہت دور ابھی'
راستہ مل گیا منزل ھے بہت دور ابھی .
ناؤ کو روک نہ ساحل ھے بہت دور ابھي '
اپنے قابو میں ھر اک موج کو لانا ھے ابھي .
دیش کو اپنے بہت اونچا اٹھانا ھے ابھی .

चोर गोदामों ने फिर जन्म दिये झूटे काल.
जाग उठा फिर कई सूबों में वह भूका बंगाल.
दे गई मात हकूमत को वह सरमाये की चाल,
ऐसी हर चाल को दुनिया से मिटाना है अभी.

देश को अपने बहुत ऊँचा उठाना है अभी.

चोर बाज़ारी की बीमारी का करना है इलाज.
चाटे जाती है जो दीमक की तरह अपना समाज.
हमको अब जड़ से मिटाना है यह धनवानों का राज,
भुकमरी रोग की बुनियाद को ढाना है अभी.

देश को अपने बहुत ऊँचा उठाना है अभी.

कारख़ानों में यह हड़ताल का कारन क्या है ?
दाम चढ़ते हुए हर माल का कारन क्या है ?
आज जनता के बुरे हाल का कारन क्या है ?
जो भी कारन हो, उसे जड़ से मिटाना है अभी.

देश को अपने बहुत ऊँचा उठाना है अभी.

बन्द करना है मिलावट का यह काला व्योपार,
नक़ली घी तेल से भी शुद्ध है करना बाज़ार.
दिन ब दिन क़ौम हुई जाती है अपनी बीमार,
देश के बच्चों को बलवान बनाना है अभी.

देश को अपने बहुत ऊँचा उठाना है अभी

چور گوداموں نے پھر جنم دئے جھوٹے کال‘
جاگ اٹھا پھر کئی صوبوں میں وہ بھوکا بنگال۔
دے گئی مات حکومت کو وہ سرمائے کی چال‘
ایسی ہر چال کو دنیا سے مٹانا ھے ابھی۔

دیش کو اپنے بہت اونچا اٹھانا ھے ابھی۔

چور باراری کی بیماری کا کرنا ھے علاج ‘
چاٹے جاتی ھے جو دیمک کی طرح اپنا سماج۔
ھمکو اب جڑ سے مٹانا ھے یہ دھنوانوں کا راج ‘
بھکمری روگ کی بنیاد کو ڈھانا ھے ابھی۔

دیش کو اپنے بہت اونچا اٹھانا ھے ابھی۔

کارخانوں میں یہ ھڑتال کا کارن کیا ھے ؟
دام چڑھتے ھوے ھر مال کا کارن کیا ھے ؟
آج جنتا کے برے حال کا کارن کیا ھے ؟
جو بھی کارن ھو‘ اسے جڑ سے مٹانا ھے ابھی۔

دیش کو اپنے بہت اونچا اٹھانا ھے ابھی۔

بند کرنا ھے ملاوٹ کا یہ کالا بیوپار ‘
نقلی گھی تیل سے بھی شدھ ھے کرنا بازار۔
دن بہ دن قوم ھوئی جاتی ھے اپنی بیمار‘
دیش کے بچوں کو بلوان بنانا ھے ابھی۔

دیش کو اپنے بہت اونچا اٹھانا ھے ابھی

धर्म की आड़ में फिर जंग की है तैयारी,
राम के रूप में रावन की यह अगुआकारी.
फ़िरक़ेवारी की उगलने लगी फिर चिन्गारी,
इस सुलगती हुई भट्टी को बुझाना है अभी.
देश को अपने बहुत ऊँचा उठाना है अभी.

रह के बेगुन हो तरक़्क़ी यह कुछ आसान नहीं,
धर्म पर ज़ोर है दुनिया का मगर ज्ञान नहीं.
और साइन्स की शिक्षा की तरफ़ ध्यान नहीं,
इस महाशक्ति को भी अपना बनाना है अभी.
देश को अपने बहुत ऊँचा उठाना है अभी.

ستمبر سن ۵۰' سمے کی پکار نیا ھند

دھرم کی آڑ میں پھر جنگ کی ھے تیاری'
رام کے روپ میں راون کی یہ اگواکاري .
فرقہ واري کی اگلنے لگی پھر چنگاري'
اس سلگتی ھوئی بھٹی کو بجھانا ھے ابھی .
دیش کو اپنے بہت اونچا اٹھانا ھے ابھی .

رہ کے بے گن ھو ترقی یہ کچھ آسان نہیں '
دھرم پر زور ھے دنیا کا مگر گیان نہیں .
اور سائنس کی شکشا کی طرف دھیان نہیں'
اس مہا شکتی کو بھی اپنا بنانا ھے ابھی .
دیش کو اپنے بہت اونچا اٹھانا ھے ابھی .

सत्याग्रह की ज़रूरत

(भाई सुरेश राम भाई)

सितारे, सूरज, ज़मीन और चाँद ने अपनी गरदिश की एक मंज़िल और पूरी की. १५ अगस्त दोबारा आई और चली गई. आज तीन साल हुए इसी १५ अगस्त को दुनिया के सामने देखते देखते अंगरेज़ी हकूमत हमारे मुल्क से चली गई और हम अपने घर के खुद मालिक बने. एक लम्बे अरसे के बाद हिन्दुस्तान की गिरती पड़ती, उठती चलती ज़िन्दगी में यह सुनहरा मौक़ा आया.

लेकिन हमारे जिगर के दो टुकड़े हो चुके थे. जिस लाहौर में रावी नदी के किनारे १९२९ के खत्म होते होते और १९३० के शुरू होते होते आधी रात के घंटे की टन टनाहट में हमने आज़ादी की क़सम ली थी उसी लाहौर में आज एक दूसरा झंडा लहलहा रहा है. इसके बाद १९३१ की मार्च में जिस कराची में हमने अपने बुनियादी हक़ों का एलान किया था वह कराची भी आज अपना नहीं है. बल्कि एक दूसरी हकूमत की राज धानी है. लेकिन दिल में जहाँ एक चोट है वहाँ यह भी संतोष है कि उन लाहौर और कराची में कम से कम उस विदेशी हकूमत का झंडा तो नहीं लहलहा रहा है जो उस वक़्त उन्हें ग़ुलामों की बस्ती बनाये हुए थी.

तीन साल गुज़र गये, मगर नहीं ऐसा मालूम होता है कि सदियाँ निकल गईं. बापू, जो हमारी लड़ाई के रहबर थे. हमारी नाव के

ستیا گرہ کی ضرورت

(بھائی سریش رام بھائی)

ستارے، سورج، زمین اور چاند نے اپنی گردش کی ایک منزل اور پوری کی ۔ ۱۵ اگست دوبارہ آئی اور چلی گئی ۔ آج تین سال ہوئے اسی ۱۵ اگست کو دنیا کے سامنے دیکھتے دیکھتے انگریزی حکومت ہمارے ملک سے چلی گئی ۔ اور ہم اپنے گھر کے خود مالک بنے ۔ ایک لمبے عرصے کے بعد ہندستان کی، گرتی پڑتی، اٹھتی چلتی زندگی میں یہ سنہرا موقعہ آیا ۔

لیکن ہمارے جگر کے دو ٹکڑے ہو چکے تھے ۔ جس لاہور میں راوی ندی کے کنارے ۱۹۲۹ کے ختم ہوتے ہوتے اور ۱۹۳۰ کے شروع ہوتے ہوتے آدھی رات کے گھنٹے کی ٹن ٹناہٹ میں ہم نے آزادی کی قسم لی تھی اسی لاہور میں آج ایک دوسرا جھنڈا لہلہا رہا ہے اس کے بعد ۱۹۳۱ کے مارچ میں جس کراچی میں ہم نے اپنے بنیادی حقوں کا اعلان کیا تھا وہ کراچی بھی آج اپنا نہیں ہے ۔ بلکہ ایک دوسری حکومت کی راجدھانی ہے ۔ لیکن دل میں جہاں ایک چوٹ ہے وہاں یہ بھی سنتوش ہے کہ اُن لاہور اور کراچی میں کم سے کم اُس ودیشی حکومت کا جھنڈا تو نہیں لہلہا رہا ہے جو اُسوقت اُنہیں غلاموں کی بستی بنائے ہوئے تھی ۔

تین سال گذر گئے، مگر نہیں ایسا معلوم ہوتا ہے کہ صدیاں نکل گئیں ۔ باپو، جو ہماری لڑائی کے رہبر تھے، ہماری ناؤ کے

तारन हार थे इस अरसे मे हमे छोड कर चले गये और उनकी याद ही बाक़ी रह गई. इस वजह से बोझ और भी बढ़ गया. हकूमत करने का तजरबा वैसे भी नहीं था और न उसको दुशवारियों या आसानियों और न उसकी मशीनरी के कल पुरज़ों की रविश से हमें वाक़फ़ियत थी. ख़ास कर हमारे हुक्कामी भाई बापू का नाम ले ले कर उसी सब्ज़ बाग़ के नक़शे दिखला रहे थे. जिस की चरचा वह पहले किया करते थे. इसलिये जो सोचा था, जो समझा था वह अमल में नहीं आ पाया. मुसीबतों का पहाड़ और नातजरबेकारी दोनों का इतना ज़बरदस्त दुखदायी नतीजा हुआ कि सारी हकूमत से जनता का जी भर गया.

जनता दिन पर दिन बेचैन होती गई. महँगाई से परेशान. पैसा होने पर भी चीज़ न मिलने से परेशान. वह दुखी हो गई और मामूली से मामूली चीज़ को पाने की ख़ातिर अपना ईमान तक उसे अकसर बेचना पड़ा या झूट का रास्ता अख़तियार करना पड़ा. इस तरह जहाँ जनता में हकूमत के ख़िलाफ़ बेएतबारी है, हकूमत के ख़तम हो जाने की चाह है, वहाँ साथ ही साथ एक बुज़दिली है, कमज़ोरी है और डर है. उसकी वजह से वह कुछ कर नहीं पाती. अपने घर पर बैठे बैठे दूसरों को बुरा कहने से तो कोई काम नहीं चलता. अपने को पाक और दूसरे को गंदा ख़याल करने से किसी की तरक़्क़ी नहीं होती. जिस ख़याल के पीछे अमल नहीं है वह धोका है और दग़ाबाज़ी है. तो क्या हम आज की जनता को निकम्मा और झूटा समझें ? क्या वही जनता जिसने अंगरेज़ी हकूमत जैसी बड़ी ताक़त का मटिया मेट कर दिया, वह इतनी गिर गई कि कुछ साल पुरानी

تارن هار تھے' اس عرصہ میں ہمیں چھوڑ کر چلے گئے اور ان کی یاد ہی باقی رہ گئی . اسوجہ سے بوجھ اور بھی بڑھ گیا . حکومت کرنے کا تجربہ ویسے بھی نہیں تھا اور نہ اسکی دشواریوں یا آسانیوں اور نہ اُس کی مشینری کے کل پرزوں کی روش سے ہمیں واقفیت تھی . خاص کر ہمارے حکامی بھائی باپو کا نام لے لے کر اُسی سبز باغ کے نقشے دکھلا رہے تھے' جس کی چرچا وہ پہلے کیا کرتے تھے . اسلئےجو سوچا تھا' جو سمجھا تھا وہ عمل میں نہیں آ پایا . مصیبتوں کا پہاڑ اور نا تجربہ کاری دونوں کا اتنا زبردست دکھدائی نتیجہ ہوا کہ ساری حکومت سے جنتا کا جی بھر گیا .

جنتا دن پر دن بے چین ہوتی گئی . مہنگائی سے پریشان . پیسہ ہونے پر بھی چیز نہ ملنے سے پریشان . وہ دکھی ہو گئی اور معمولی سے معمولی چیز کو پانے کی خاطر اپنا ایمان تک اُسے اکثر بیچنا پڑا یا جھوٹ کا راستہ اختیار کرنا پڑا . اس طرح جہاں جنتا میں حکومت کے خلاف بے اعتباری ہے' حکومت کے ختم ہو جانے کی چاہ ہے' وہاں ساتھ ہی ساتھ ایک بزدلی ہے' کمزوری ہے اور ڈر ہے . اُس کی وجہ سے وہ کچھ کر نہیں پاتی . اپنے گھر پر بیٹھے بیٹھے دوسروں کو برا کہنے سے تو کوئی کام نہیں چلتا . اپنے کو پاک اور دوسرے کو گندا خیال کرنے سے کسی کی ترقی نہیں ہوتی . جس خیال کے پیچھے عمل نہیں ہے وہ دھوکا ہے اور دغا بازی ہے . تو کیا ہم آج کی جنتا کو نکما اور جھوٹا سمجھیں ؟ کیا وہی جنتا! جسنے انگریزی حکومت جیسی بڑی طاقت کو ملیا میٹ کر دیا' وہ اتنی گر گئی کہ کچھ سال پرانی

अपनी ही हुकूमतको ठीक नहीं कर सकती. नहीं, ऐसी नहीं है. जनता न बदतर है न बेहतर. जैसी थी वैसी हमेशा से रही है और वैसी आज भी है.

लेकिन आज की जनता में पहले की जनता के मुक़ाबले में एक फ़र्क़ है. मिसाल के तौर पर किसी छोटे से गाँव को लीजिये, जहाँ के लोग अमन चैन की जिन्दगी गुज़ार रहे हों. मान लीजिये कि कुछ अरसे के बाद बाहरी असर से या अन्दर की ख़राबियो से चार पाँच ऐसे जवान खड़े हो जाते हैं जो वहाँ की सारी शान्ति को बरबाद करने पर उतारू हैं. तब शुरू में इन पाँचों को कामयाबी मिलती चली जायगी और गाँव भर की अकसरियत सिर्फ़ हैरत में पड़कर इस बरबादी का तमाशा देखती रहेगी. अगर गॉव वाले उन चार पाँच की सिर्फ़ बुराई करते रहें और कोई ख़ास क़दम नहीं उठायें तो उन गुन्डों की बनती चली जायगी और गॉव का जीवन हराम हो जायगा. लेकिन अगर गाँव की जनता हिम्मत के साथ मिल कर क़दम उठाये—यानी अगर जनताके सीधे सादे और अमन पसन्द लोग भी आपस में वैसा संगठन कर लें जैसा उन गुन्डों का आपस में है, तो देखते देखते गुन्डों की ताक़त हवा हो जायगी और गाँव में फिर से अमन क़ायम हो सकेगा.

एक दूसरी मिसाल और लीजिये. हिन्दुस्तान में सिर्फ़ कुछ लाख अंगरेज़ थे और हुकूमत कर रहे थे चालीस करोड़ इन्सानो पर. सच यह है कि इस हिसाब से एक आदमी इतनी भेड़ो पर भी क़ाबू नहीं रख सकता. तो क्या हम हिन्दुस्तान के रहने वाले भेड बकरियो से भी गये गुज़रे थे ? हाँ थे, हम में कमी थी संगठन की. लेकिन जिस वक़्त

اپنی ھی حکومت کو ٹھیک نہیں کر سکتی . نہیں' ایسا نہیں ھے . جنتا نہ بدتر ھے نہ بہتر . جیسی تھی ویسی ھمیشہ سے رھی ھے اور ویسی آج بھی ھے .

لیکن آج کی جنتا میں پہلے کی جنتا کے مقابلے میں ایک فرق ھے . مثال کے طور پر کسی چھوٹے سے گاؤں کو لیجئے ' جہاں کے لوگ امن چین کی زندگی گذار رھے ھوں . مان لیجئے کہ کچھ عرصے کے بعد باھری اثر سے یا اندر کی خرابیوں سے چار پانچ ایسے جوان کھڑے ھو جاتے ھیں جو وھاں کی ساری شانتی کو برباد کرنے پر اُتارو ھیں . تب شروع میں ان پانچوں کو کامیابی ملتی چلی جائیگی' اور گاؤں بھر کی اکثریت صرف حیرت میں پڑ کر اس بربادی کا تماشا دیکھتی رھے گی . اگر گاؤں والے ان چار پانچ کی صرف برائی کرتے رھیں اور کوئی خاص قدم نہیں اُٹھائیں تو اُن گنڈوں کی بنتی چلی جائے گی اور گاؤں کا جیون حرام ھو جائیگا . لیکن اگر گاؤں کی جنتا ھمت کے ساتھ ملکر قدم اُٹھائے—یعنی اگر جنتا کے سیدھے سادے اور امن پسند لوگ بھی آپس میں ویسا سنگٹھن کر لیں جیسا اُن گنڈوں کا آپس میں ھے' تو دیکھتے دیکھتے گنڈوں کی طاقت ھوا ھو جائیگی اور گاؤں میں پھر سے امن قائم ھو سکے گا .

ایک دوسری مثال اور لیجئے . ھندستان میں صرف کچھ لاکھ انگریز تھے اور حکومت کر رھے تھے چالیس کروڑ انسانوں پر . سچ یہ ھے کہ اِس حساب سے ایک آدمی اتنی بھیڑوں پر بھی قابو نہیں رکھ سکتا . تو کیا ھم ھندستان کے رھنے والے بھیڑ بکریوں سے بھی گئے گذرے تھے ؟ ھاں تھے ' ھم میں کمی تھی سنگٹھن کی . لیکن جسوقت

१९१९ की ६ अप्रैल को महात्मा गांधी की पुकार पर सारे मुल्क ने एक हो कर हड़ताल करदी उस वक़्त ही अंगरेज़ी हकूमत की जड़ें हिन्दुस्तान में हिल गईं. संगठन का नाम ताक़त है. चाहे वह नेक आदमियों का हो या बुरों का. यह दूसरी बात है कि बुरों की ताक़त बुरे काम में खर्च हो कर जल्दी ही खतम हो जाती है. नेक आदमियों की ताक़त नेक काम में लग कर दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती है.

इस तरह मौजूदा हिन्दुस्तान में आज कमी है जनता के संगठन की. हमारे यहाँ हकूमत का एक संगठन है. उसकी एक आवाज़ है. उसका एक प्रोग्राम है जिसको चौराहे के सिपाही से लेकर नई दिल्ली में बैठा राजपति तक पूरा कर रहा है. लेकिन जनता की कोई आवाज़ नहीं है. न उसका कोई प्रोग्राम है. न कोई उसका अलमबरदार. जनता की मिली जुली ताक़त को ही बापू ने सत्याग्रह का नाम दिया था. उसी सत्याग्रह की ताक़त से उन्होंने दक्खिन अफरीक़ा मे वह करशमा दिखाया था जो संसार के लिये अनहोनी चीज़ थी. और इसी सत्याग्रह की ताक़त से उन्होंने अंगरेज़ी हकूमत को हिन्दुस्तान से बाहर जाने को मजबूर कर दिया.

सवाल यह है कि इस सत्याग्रह की ताक़त कहाँ से आये. कौन हिन्दुस्तान के नौजवानों मे यह दम फूंके और सत्याग्रही फ़ौज का लशकर आगे बढ़े. हम सब चूहे की तरह हो रहे हैं जो हकूमत रूपी बिल्ली से घबराये हुए हैं लेकिन गले में घंटी कौन बाँधे यही सवाल है.

जवाब कह देने का नहीं कर डालने का है, और इस रोग में इन लकीरों का लिखने वाला भी उतनी ही बुरी तरह फँसा हुआ है

۱۹۱۹ کی ۶ اپریل کو مہاتما گاندھی کي پکار پر سارے ملک نے ایک ہو کر ہڑتال کر دي اس وقت ھی انگریزی حکومت کي جڑیں ہندستان میں ہل گئیں. سنگٹھن کا نام طاقت ہے. چاہے وہ نیک آدمیوں کا ہو یا بروں کا. یہ دوسري بات ہے کہ بروں کی طاقت برے کام میں خرچ ہو کر جلدی ہی ختم ہو جاتی ہے. نیک آدمیوں کی طاقت نیک کام میں لگ کر دن دونی رات چوگنی بڑھتي ہے.

اس طرح موجودہ ہندستان میں آج کمی ہے جنتا کے سنگٹھن کي. ہمارے یہاں حکومت کا ایک سنگٹھن ہے. اسکی ایک آواز ہے. اس کا ایک پروگرام ہے جس کو چوراہے کے سپاہی سے لیکر نئی دلی میں بیٹھا راج پتي تک پورا کر رہا ہے. لیکن جنتا کی کوئي آواز نہیں ہے. نہ اس کا کوئی پروگرام ہے. نہ کوئی اس کا علم بردار جنتا کي ملي جلی طاقت کو ھی باپو نے ستیاگرہ کا نام دیا تھا. اسی ستیاگرہ کي طاقت سے انھوں نے دکھن افریقہ میں وہ کرشمہ دکھایا تھا جو سنسار کے لئے انہونی چیز تھی. اور اسی ستیا گرہ کی طاقت سے اُنھوں نے انگریزی حکومت کو ہندستان سے باہر جانے کو مجبور کر دیا.

سوال یہ ہے کہ اس ستیا گرہ کي طاقت کہاں سے آئے کون ہندستان کے نوجوانوں میں یہ دم پھونکے اور ستیا گرھی فوج کا لشکر اگے بڑھے. ہم سب چوہے کے طرح ہو رہے ہیں جو حکومت روپی بلی سے گھبرائے ہوئے ہیں لیکن گلے میں گھنٹي کون باندھے یہي سوال ہے.

جواب کہدینے کا نہیں کر ڈالنے کا ہے اور اس روگ میں ان لکیروں کا لکھنے والا بھي اُتنی ہی بری طرح پھنسا ہوا ہے

سنہ ۱۹۴۹ء کا لیکھا جوکھا

(بھائی شری کرشن داس)

مہاتما گاندھی کے نہ رہنے پر ہندستان کا کیا حال ہوگا یہ میں اکثر سوچا کرتا تھا۔ اور جب سچ مچ گاندھی جی ہمارے بیچ نہ رہے اور سارا دیش یہ کہہ کر رو پڑا کہ قوم یتیم ہوگئی تب بھی میں نے یہی سوچا کہ اب دیش کی نیّا کون کھیوے گا۔ ایسا میں نے اس لئے نہیں سوچا تھا کہ مجھے دیش کی جنتا پر یقین نہ تھا یا مجھے نیتاؤں کی نیک نیتی پر بھروسہ نہ تھا۔ بلکہ ایسا میں نے اس لئے سوچا تھا کہ مہاتما گاندھی کے ویکتتو (شخصیت) میں سب کو ایک ساتھ ملا کر لے چلنے کی جو خاص خوبی تھی وہ کسی بھی دوسرے نیتا میں نہ تھی۔ اس لئے بار بار دل میں یہ سوال اٹھتا تھا کہ طرح طرح کے مذہبوں، زبانوں، سنسکرتیوں (کلچروں) اتہاسوں اور ریت رواجوں والے اس بڑے بھاری ملک اور بڑی پرانی اور شاندار جنتا کی رہبری کون کرے گا؟

مہاتما گاندھی میں سب سے بڑی خوبی یہ تھی کہ انھوں نے اپنے کو، اپنی ہستی کو، اپنی آتما اور خودی کو مٹا دیا تھا اور اس طرح وہ سچ مچ جنتا کے ایک ایسے حصہ بن چکے تھے جیسے سمندر کا ایک حصہ بوند ہوتا ہے۔ اسی لئے گاندھی جی کا اپنا

१९४९ का लेखा-जोखा

[भाई श्रीकृष्णदास]

महात्मा गांधी के न रहने पर हिन्दुस्तान का क्या हाल होगा यह मैं अक्सर सोचा करता था. और, जब सचमुच गांधी जी हमारे बीच न रहे और सारा देश यह कहकर रो पड़ा कि क़ौम यतीम हो गई, तब भी मैंने यही सोचा कि अब देश की नैया कौन खेवेगा. ऐसा मैंने इसलिये नहीं सोचा था कि मुझे देश की जनता पर यक़ीन न था, या मुझे नेताओं की नेकनीयती पर भरोसा न था, बल्कि ऐसा मैंने इसलिये सोचा था कि महात्मा गांधी के व्यक्तित्व (शख़्सियत) में सबको एक साथ मिलाकर ले चलने की जो ख़ास ख़ूबी थी वह किसी भी दूसरे नेता में न थी. इसलिये बार बार दिल में यह सवाल उठता था कि तरह तरह के मज़हबों, ज़बानों, संस्कृतियों, इतिहासों और रीति रिवाजों वाले इस बड़े भारी मुल्क और बड़ी पुरानी और शानदार जनता की रहबरी कौन करेगा ?

महात्मा गांधी में सबसे बड़ी ख़ूबी यह थी कि उन्होंने अपने को, अपनी हस्ती को, अपनी आत्मा और ख़ुदी को मिटा दिया था और इस तरह वह सचमुच जनता के एक ऐसे हिस्सा बन चुके थे जैसे समुद्र का एक हिस्सा बूंद होता है. इसीलिये गांधी जी का अपना

जितना कि कोई दूसरा. इसलिये यह सवाल यहीं ख़तम हो जाता है. और मालिक से यही दुआ करने को मन करता है कि हम में इतनी ताक़त दे कि हम अपने अन्दर के रोग को निकाल सकें और अपना मक़सद हासिल कर सकें.

जैसा हमने अभी कहा इस सवाल में हम नहीं जा सकते कि सत्याग्रह कब और कैसे किया जाये. लेकिन सत्याग्रह का प्रोग्राम क्या है. इस पर जरूर रोशनी डाली जा सकती है. हमारा अनजाना मुखिया हमें क़दम बढ़ाने का हुक्म जब भी दे हमें उसकी परवाह नहीं लेकिन हम एक काम जरूर कर सकते हैं, वह यह कि हम अपनी अपनी जगह पर अपने अपने काम में अपने को इस सत्याग्रही फौज का सिपाही मान लें.

जरूरत इस बात की है कि हम अपने को सिपाही मान लें और किसी बात की न फ़िकर करें न परेशान हों. हम यह ख़याल छोड़ दें कि हिन्दुस्तान का क्या होगा या दुनिया किधर जायगी. हम अपनी अपनी जगह पर जमीन के उस छोटे से टुकड़े को जो हमें भगवान ने दिया है सुन्दर और उपजाऊ बना लें. अपने हाथ में इस वक़्त जो काम करने को है—चाहे वह सरकारी दफ़्तर का हो, चाहे किसी पूंजी पति के कारख़ाने का हो, चाहे किसी अदालत या स्कूल का, थाना या तहसील का, व्योपार या मजदूरी का, तीमारदारी या मेहमानदारी का—जो काम भी हो उसे लगन के साथ करें. उसे पूरा करने में कोई कसर उठा न रखें. उसे ईमानदारी से पूरा करके ही चैन [illegible] फौज

جتنا کہ کوئی دوسرا . اسلئے یہ سوال یہیں ختم ہوجاتا ہے . اور مالک سے یہی دعا کرنے کو من کرتا ہے کہ ہم میں اتنی طاقت دے کہ ہم اپنے اندر کے روگ کو نکال سکیں اور اپنا مقصد حاصل کر سکیں .

جیسا ہم نے ابھی کہا اس سوال میں ہم نہیں جا سکتے کہ ستیا گرہ کب اور کیسے کیا جائے . لیکن ستیا گرہ کا پروگرام کیا ہے' اس پر ضرور روشنی ڈالی جا سکتی ہے . ہمارا انجانا مکھیا ہمیں قدم بڑھانے کا حکم جب بھی دے ہمیں اسکی پرواہ نہیں . لیکن ہم ایک کام ضرور کر سکتے ہیں' وہ یہ کہ ہم اپنی اپنی جگہ پر اپنے اپنے کام میں اپنے کو اس ستیا گرہی فوج کا سپاہی مان لیں .

ضرورت اس بات کی ہے کہ ہم اپنے کو سپاہی مان لیں اور کسی بات کی نہ فکر کریں نہ پریشان ہوں . ہم یہ خیال چھوڑ دیں کہ ہندستان کا کیا ہوگا یا دنیا کدھر جائیگی . ہم اپنی اپنی جگہ پر زمین کے اس چھوٹے سے ٹکڑے کو جو ہمیں بھگوان نے دیا ہے سندر اور اُپجاؤ بنا لیں . اپنے ہاتھ میں اس وقت جو کام کرنے کو ہے—چاہے وہ سرکاری دفتر کا ہو' چاہے کسی پونجی پتی کے کارخانے کا ہو' چاہے کسی عدالت یا اسکول کا' تھانہ یا تحصیل کا' بیوپار یا مزدوری کا' تیمار داری یا مہمان داری کا—جو کام بھی ہو اُسے لگن کے ساتھ کریں . اُسے پورا کرنے میں کوئی کسر اُٹھا نہ رکھیں اُسے ایمان‌داری سے پورا کرکے ہی چین لیں—بس [illegible] ہے کرلینے سے ہماری منشا پوری ہو گئی . ستیا گرہی [illegible]

के सिपाही होने के नाते हमारा फर्ज अदा हो गया. और बात की बात में हम देखेंगे कि मुल्क की शकल क्या से क्या हो गई. हमारे बापू की ही यह सलाह है. यह उन्हीं का बताया हुआ प्रोग्राम है. आज से चालीस साल पहले से ज्यादा अरसा हुआ उन्हों ने एक खत में एक भाई को लिखा था—"सारे हिन्दुस्तान के उद्धार का बोझ बिला कारन सर पर मत लो. अपना खुद का ही उद्धार करो. इतना ही बोझ काफी है. सब कुछ अपने पर ही लागू करना चाहिये. हम खुद ही हिन्दुस्तान हैं—बस यही मानने में आत्मा का बड़प्पन है. हमारा उद्धार ही हिन्दुस्तान का उद्धार है. बाक़ी सब बेकार है. ढोंग है."

आइये ! इस प्रोग्राम को लेकर सत्याग्रही फौज में भरती होवें— फिर स्वराज का सुराज बनालें और हिन्दुस्तान में राम राज कायम हो जायगा.

"अहिंसक ढंग के हिन्दुस्तान में अपराध होंगे लेकिन अपराधी न होंगे. उन्हें सजा नहीं दी जायगी. किसी भी मर्ज़ की तरह अपराध भी एक मर्ज़ या बीमारी है और मौजूदा समाजी व्यवस्था का फल है. इस लिये हत्या वगैरा सभी तरह के अपराधों को बीमारी समझा जायगा और उनका वैसा ही इलाज भी होगा. यह बात दूसरी है कि हिन्दुस्तान कभी ऐसा बनेगा भी या नहीं ?"

— महात्मा गांधी

کے سپاہی ہونے کے ناتے ہمارا فرض ادا ہو گیا . اور بات کی بات میں ہم دیکھیں گے کہ ملک کی شکل کیا سے کیا ہو گئی . ہمارے باپو کی ہی یہ صلاح ہے . یہ انہیں کا بتایا ہوا پروگرام ہے آج سے چالیس سال پہلے سے زیادہ عرصہ ہوا انہوں نے ایک خط میں ایک بھائی کو لکھا تھا— " سارے ہندستان کے ادھار کا بوجھ بلا کارن سر پر مت لو . اپنا خود کا ہی ادھار کرو . اتنا ہی بوجھ کافی ہے . سب کچھ اپنے پر ہی لاگو کرنا چاہئے ہم خود ہی ہندستان ہیں—بس یہی ماننے میں آتما کا بڑپن ہے . ہمارا ادھار ہی ہندستان کا ادھار ہے . باقی سب بیکار ہے ' ڈھونگ ہے . "

آئیے ! اس پروگرام کو لیکر ستیا گرہی فوج میں بھرتی ہو ویں—پھر سوراج کا سوراج بنالیں اور ہندستان میں رام راج قائم ہو جائیگا .

" اہنسک ڈھنگ کے ہندستان میں اپرادھ ہونگے لیکن اپرادھی نہ ہونگے . انہیں سزا نہیں دی جائیگی . کسی بھی مرض کی طرح اپرادھ بھی ایک مرض یا بیماری ہے اور موجودہ سماجی ویوستھا کا پھل ہے . اس لئے ہتیا وغیرہ سبھی طرح کے اپرادھوں کو بیماری سمجھا جائیگا اور ان کا ویسا ہی علاج بھی ہوگا . یہ بات دوسری ہے کہ ہندستان کبھی ایسا بنیگا بھی یا نہیں "

— مہاتما گاندھی

जन्नत में ख़ून और आग

(भाई अब्दुल ह़ल़ीम अन्सारी)

कश्मीर के नीचे बादल, ऊँचे आसमान

कश्मीर में हिन्दू कम, अधिक मुसलमान

कश्मीर एक रियासत:

दो वज़ीरों की जो बिसाते सियासत

कश्मीर एक दिलकश वायु मंडल और दिलचस्प स्थान !

कश्मीर रंगों और रागों का एक हसीन ख़ित्ता है और पंडित जवाहर लाल नेहरू के शब्दों में--

" कश्मीर रंगों और रागों की जान है "

कश्मीर क़ुदरत की क़लमकारियो का ख़ूबसूरत निगारख़ाना है. जिसका नाम ही आर्टिस्ट की रूह को गुदगुदाता है. और फ़ौरन क़ुदरत और आर्टिस्ट के सम्बन्ध को ज़ाहिर करके उसके रिशते को जोड़ता है. उसी सम्बन्ध और रिशते से कश्मीर के साथ आर्टिस्ट को ख़ास लगाव और दिलचस्पी है.

कश्मीर की झीलों पर रंगीन रंगीन कश्तियाँ और पीछे उनके सफ़ेद सफ़ेद पहाड़ियाँ

कश्मीर के मीठे मीठे मेवे और मीठे मीठे चेहरे

अनार और चनार के बाग

(۵۰۴)

جنت میں خون اور آگ

(بھائی عبدالحلیم انصاری)

کشمیر کے نیچے بادل، اُونچے آسمان

کشمیر میں ھندو کم، ادھک مسلمان

کشمیر ایک ریاست :

دو وزیروں کی جو بساط سیاست

کشمیر ایک دلکش وایو منڈل اور دل چسپ استھان !

کشمیر رنگوں اور راگوں کا ایک حسین خطہ ھے . اور پنڈت جواھر لال نہرو کے شبدوں میں ــــ

''کشمیر رنگوں اور راگوں کی جان ھے . ''

کشمیر قدرت کی قلمکاریوں کا خوبصورت نگارخانہ ھے . جس کا نام ھی آرٹسٹ کی روح کو گدگداتا ھے . اور فوراً قدرت اور آرٹسٹ کے سمبندھ کو ظاھر کرکے اُس کے رشتے کو جوڑتا ھے . اُسی سمبندھ اور رشتے سے کشمیر کے ساتھ آرٹسٹ کو خاص لگاؤ اور دلچسپی ھے .

کشمیر کی جھیلوں پر رنگین رنگین کشتیاں اور پیچھے اُن کے سفید سفید پہاڑیاں

کشمیر کے میٹھے میٹھے میوے اور میٹھے میٹھے چہرے

انار اور چنار کے باغ

अंगूर की टट्टियाँ और शराब की नहरें
कश्मीर की रूह परवर फ़िज़ा और अमृत भरी हवा.
कश्मीर की अनार जैसी बेटियाँ और ज़ाफ़रान की खेतियाँ.

यह सब की सब कश्मीर की दिलचस्पियाँ और खूबसूरतियाँ फितरत के परस्तारों और प्रकृति के पुजारियों के लिये रूहानी सामान अपने अन्दर रखती हैं. क़ुदरत की यह आत्मिक यादगारें. आसभरी आत्माओं के लिये उसके फ़ैज़ और दया के चश्मे हैं. जिनसे रूहों के सूखे सूखे बासन शान्ति की शबनम से लबरेज़ होते हैं. जिनकी शादाबी से दिल और दिमाग़ बाग़ बाग़ होते हैं.

कश्मीर वह जगह है जिसके अन्दर हुस्न ही हुस्न, शबाब ही शबाब, शराब ही शराब और ज़िन्दगी ही ज़िन्दगी है. इसीलिये कश्मीर हिन्दुस्तान की जन्नत कहलाती है बल्कि दुनिया की जन्नत. यानी भूगोल का स्वर्ग—किसी फ़ारसी कवि ने कहा है—

* अगर फ़िरदौस बर रूये ज़मीन अस्त
हमीन अस्तो हमीन अस्तो हमीन अस्त

कश्मीरी बाग़ों के फूल फल गोया जन्नती मेवे हैं. कश्मीर के क़ुदरती बाग़ीचों और हसीन वादियों में लहराती फिरने वाली देवियाँ उस भूमि जन्नत की रौनक़ और आबादियाँ हैं यानी हूरें.

जवान जवान और मोहनी मोहनी

हुस्न और जमाल से भरी हुई उनकी ज़िन्दगियाँ और शबाब के मेवों से लदी हुई उनकी जवानियाँ उस जन्नत की जीती जागती

* अगर दुनिया में कहीं जन्नत है तो वह यही है यही है यही है.

انگور کی ٹٹیاں اور شراب کی نہریں
کشمیر کی روح پرور فضا اور امرت بھری ہوا
کشمیر کی انار جیسی بیٹیاں اور زعفران کی کھیتیاں ۔

یہ سب کی سب کشمیر کی دلچسپیاں اور خوبصورتیاں فطرت کے پرستاروں اور پرکرتی کے پجاریوں کے لئے روحانی سامان اپنے اندر رکھتی ہیں ۔ قدرت کی یہ آتمک یادگاریں آس بھری آتماؤں کے لئے اس کے فیض اور دیا کے چشمے ہیں جن سے روحوں کے سوکھے سوکھے باسن شانتی کی شبنم سے لبریز ہوتے ہیں جن کی شادابی سے دل اور دماغ باغ باغ ہوتے ہیں ۔

کشمیر وہ جگہ ہے جس کے اندر حسن ہی حسن، شباب ہی شباب شراب ہی شراب اور زندگی ہی زندگی ہے ۔ اسی لئے کشمیر ہندستان کی جنت کہلاتی ہے بلکہ دنیا کی جنت ۔ یعنی بھوگول کا سورگ ــــ کسی فارسی کوی نے کہا ہے ــــ

* اگر فردوس بر روئے زمین است
ہمین است و ہمین است و ہمین است

کشمیری باغوں کے پھول پھل گویا جنتی میوے ہیں ۔ کشمیر کے قدرتی باغیچوں اور حسین وادیوں میں لہراتی پھرنے والی دیویاں اس بھومی جنت کی رونق اور آبادیاں ہیں یعنی حوریں ۔

جوان جوان اور موہنی موہنی

حسن اور جمال سے بھری ہوئی اُن کی زندگیاں اور شباب کے میووں سے لدی ہوئی اُن کی جوانیاں اُس جنت کی جیتی جاگتی

* اگر دنیا میں کہیں جنت ہے تو وہ یہی ہے یہی ہے یہی ہے ۔

तसवीरें है. जिनके अन्दर मस्ती है. शबाब है.

डाक्टर एकबाल जब कश्मीर के "निशात बाग़" मे दाखिल हुए तो बेसाख्ता बोल उठे--

"शराबे किताबे, रबाबे, निगारे" यानी "कश्मीर एक नशा है, कश्मीर एक किताब है, कश्मीर एक बाजा है, कश्मीर एक तसवीर है" गोया खड़े खड़े चार लफ्ज़ों मे कश्मीर पर एक किताब लिख डाली

पंडित नेहरू जब कश्मीर की वादियो मे घूमे फिरे तो उन्होंने भी अपने को भूल कर कह डाला--

"मै इस वादी मे इस तरह खो गया जैसे कोई शराब से सरशार हो" उस सुन्दर जमीन की दिलकशी और खूबसूरती से असर लेकर और हुस्न पर गिरवीदा हो कर वह सुन्दरता और प्रकृति का दिलदादा आखिर बोल ही उठा---

"सर जमीन कश्मीर की दिलकशी ने मुझे अपना गिरवीदा कर लिया."

कश्मीर नेचर की खूबसूरतियो का मंडल है.

कश्मीर फितरत की फैयाजियो का भंडार है यानी रंगो और रागो का खज़ाना'

नेचर की खूबसूरतियो से लुत्फ न उठाना, फितरत की फैया-जियो से हिस्सा न बटाना और उसके रागो और रंगो से जिन्दगी न पाना बेहिसी और बदरुचि की दलील है

सुन्दरता और खूबसूरती का मतवाला और प्रकृति से प्रेम रखने

تصویریں ہیں جن کے اندر مستی ہے ۔ شباب ہے ۔

ڈاکٹر اقبال جب کشمیر کے " نشاط باغ " میں داخل ہوئے تو بے ساختہ بول اٹھے -- ۔

" شرابے ' کتابے ' ربابے ' نگارے " یعنی " کشمیر ایک نشہ ہے ' کشمیر ایک کتاب ہے ' کشمیر ایک باجا ہے ' کشمیر ایک تصویر ہے ' گویا کھڑے کھڑے چار لفظوں میں کشمیر پر ایک کتاب لکھ ڈالی ۔

پنڈت نہرو جب کشمیر کی وادیوں میں گھومے پھرے تو انہوں نے بھی اپنے کو بھول کر کہہ ڈالا --

" میں اس وادی میں اس طرح کھو گیا جیسے کوئی شراب سے سرشار ہو " اس سندر زمین کی دل کشی اور خوبصورتی سے اثر لے کر اور حسن پر گرویدہ ہو کر وہ سندرتا اور پرکرتی کا دلدادہ آخر بول ہی اٹھا --

" سر زمین کشمیر کی دل کشی نے مجھے اپنا گرویدہ کر لیا "

کشمیر نیچر کی خوبصورتیوں کا منڈل ہے ۔

کشمیر فطرت کی فیاضیوں کا بھنڈار ہے یعنی رنگوں اور راگوں کا خزانہ '

نیچر کی خوبصورتیوں سے لطف نہ اٹھانا ' فطرت کی فیاضیوں سے حصہ نہ بٹانا اور اس کے راگوں اور رنگوں سے زندگی نہ پانا بے حسی اور بد رچی کی دلیل ہے ۔

سندرتا اور خوبصورتی کا متوالا اور پرکرتی سے پریم رکھنے

वाला जब कश्मीर जन्नत नज़ीर की सैर का इरादा करता है और फ़ितरत के उस सुन्दर मन्दिर की पूजा को जब कोई श्रद्धावान यात्री जाता है तो शौक और अरमान का बडा काफ़ला उसके साथ होता है. सम्राट अकबर ने जब कश्मीर का सफ़र किया तो उसका दरबारी कवि फ़ैज़ी बादशाह के साथ था. वह उस समय यह कहे बिना न रह सका—

* हज़ार काफ़लये शौक मी कुनद शबगीर
कि बारे ऐश मी कशायद बख़ित्तये कश्मीर "फ़ैज़ी"

हिन्दुस्तान में आई हुई आज़ादी और बढ़ती हुई बरबादी जब कश्मीर की वादी वादी तक पहुँची तो वहाँ भी वही माद्दा फूट पड़ा जो नगर नगर का नाम मार कर श्रीनगर तक पहुँचा था. कश्मीर की तकदीर में जो दिन बदे है वह तो पूरे होकर ही रहेंगे. आज नहीं कल—मगर कहना यह जरूर पड़ता है कि तरह तरह के संकट उस पर जो पड़ रहे हैं अपने हाथों बुलाये हुए हैं. इसलिये इसका इलज़ाम कुदरत के ऊपर रखना या भगवान को इसका दोषी ठहराना ग़लत !

कश्मीर की जंग मूल में हिन्द के बँटवारे का नतीजा है. इसीलिये कश्मीर जंग के देवता का मेहमान ख़ाना है. इसी कारन

* कश्मीर वह जगह है जहाँ अगर एक रात भी शौक़ के काफ़ले का पड़ाव हो जाये तो वहाँ उसके लिये सुख शान्ति के दरवाज़े खुल जाते हैं.

والا جب کشمیر جنت نظیر کی سیر کا ارادہ کرتا هے اور فطرت کے اُس سندر مندر کی پوجا کو جب کوئي شردھاوان یاتری جاتا هے تو شوق اور ارمان کا بڑا قافلہ اُس کے ساتھ هوتا هے . سمراٹ اکبر نے جب کشمیر کا سفر کیا تو اُس کا درباري کوی فیضی بادشاہ کے ساتھ تھا . وہ اُس سمے یہ کہے بنا نہ رہ سکا ـــ

* هزار قافلۂ شوق می کند شبگیر
کہ بار عیش مي کشاید بہ خطۂ کشمیر "فیضی"

هندستان میں آئی هوئی آزادی اور بڑھتی هوئی بربادی جب کشمیر کي وادي وادي تک پہونچی تو وهاں بھی وهی مادہ پھوٹ پڑا جو نگر نگر کا ناس مار کر سری نگر تک پہونچا تھا . کشمیر کی تقدیر میں جو دن بدے هیں وہ تو پورے هو کر هی رهیں گے . آج نہیں کل ـــ مگر کہنا یہ ضرور پڑتا هے کہ طرح طرح کے سنکٹ اُس پر جو پڑ رهے هیں اپنے هاتھوں بلائے هوئے هیں اس لئے اس کا الزام قدرت کے اوپر رکھنا یا بھگوان کو اس کا دوشی ٹھہرانا غلط !

کشمیر کی جنگ مول میں هند کے بٹوارے کا نتیجہ هے . اِسي لئے کشمیر جنگ کے دیوتا کا مہمان خانہ هے . اِسی کارن

* کشمیر وہ جگہ هے جہاں اگر ایک رات بھی شوق کے قافلے کا پڑاؤ هو جائے تو وهاں اس کے لئے سکھ شانتي کے دروازے کھل جاتے هیں .

कश्मीर अपनी सुन्दर जन्नत में आदम ख़ोर देवता को मेहमान ठहरा कर रोज़ रोज़ नये नये नौजवानों की भेंट देता रहा है और वह ख़ूनी देवता गरम गरम और ताज़ा ताज़ा ख़ून पीकर अपनी हविस और चाट बढ़ाता रहता है. जिससे पता चलता है कि उसकी ज़बान को हिन्दुस्तानी और पाकिस्तानी ख़ून का चसका लग गया है. गोया कि मिला जुला ख़ून पीकर उसको अधिक आनन्द मिल रहा है.

कितना दुख होता है कि आज यह जन्नत दोज़ख़ बनी हुई है. जहाँ अदावत की आग भड़क रही है. ख़ून के चश्मे उबल रहे हैं कल तक इसकी हवा अमृत थी—और अब ? अब साँस लेते बदबू आती है.

यही वह कश्मीर है जहाँ बीमार तन्दुरुस्ती की ख़ातिर जाते थे. कमज़ोर और नाताक़त, ताक़त और शक्ति पाने जाते थे और ख़ुशी ख़ुशी वहाँ से नई ज़िन्दगी, नया जोवन, नई उमंगें और नये वलवले लेकर वापस आते थे. इसलिये कि वहाँ की हवा का असर क़ुदरती तौर पर बीमारों के लिये यह था—

एक आन में सेहत हो जो बरसों का हो बीमार

अब सारा कश्मीर बीमार है. सारे देश को रोग लगा है. मगर उसके पास इलाज नहीं जब कि दस हज़ार तपेदिक़ के मरीज़ * उसके अन्दर मौजूद हैं.

यही वह शहर है और सेहत का शहर,

---

* अख़बार 'मिलाप' देहली २५ जून सन '५० की ख़बर के

کشمیر اپنی سندر جنت میں آدم‌خور دیوتا کو مہمان ٹھہرا کر روز روز نئے نئے نوجوانوں کی بھینٹ دیتا رہا ہے اور وہ خونی دیوتا گرم گرم اور تازہ تازہ خون پی کر اپنی ہوس اور چاٹ بڑھاتا رہتا ہے . جس سے پتہ چلتا ہے کہ اُسکی زبان کو ہندستانی اور پاکستانی خون کا چسکا لگ گیا ہے . گویا کہ ملا جلا خون پی کر اُسکو ادھک آنند مل رہا ہے .

کتنا دکھ ہوتا ہے کہ آج یہ جنت دوزخ بنی ہوئی ہے . جہاں عداوت کی آگ بھڑک رہی ہے . خون کے چشمے ابل رہے ہیں . کل تک اس کی ہوا امرت تھی — اور اب ؟ اب سانس لیتے بدبو آتی ہے .

یہی وہ کشمیر ہے جہاں بیمار تندرستی کی خاطر جاتے تھے . کمزور اور ناطاقت ' طاقت اور شکتی پانے جاتے تھے اور خوشی خوشی وہاں سے نئی زندگی ' نیا جیون ' نئی اُمنگیں اور نئے ولولے لیکر واپس آتے تھے . اس لئےکہ وہاں کی ہوا کا اثر قدرتی طور پر بیماروں کے لئے یہ تھا —

اِک آن میں صحت ہو جو برسوں کا ہو بیمار

اب سارا کشمیر بیمار ہے . سارے دیش کو روگ لگا ہے . مگر اُس کے پاس علاج نہیں جبکہ دس ہزار تپ دق کے مریض * اس کے اندر موجود ہیں .

یہی وہ شہر ہے اور صحت کا شہر '

---

* اخبار ' ملاپ ' دهلی ۲۵ جون سن ۵۰' کی خبر کے

जहाँ मौत जिन्दगी पाने जाती थी—और जहाँ बीमारी सेहत लेने आती थी.

जहाँ देस देस से सैकड़ों मरीज़, अमीर ग़रीब, शफ़ा पाने आते थे और शफ़ा पाकर जाते थे.

जहाँ दुनिया के भाग भाग से शौक़ीन मिज़ाज साल के साल सैर तफ़रीह करने आते थे और ख़ुश ख़ुश वापस जाते थे.

यही कश्मीर जो पहले शान्ति का मुक़ाम था अब वहाँ संग्राम है.

यही कश्मीर जो पहले अमन शान्ति का स्थान था. अब वहाँ बद अमनी का सामान है.

यही श्रीनगर जो दुनिया की नजर मे शान्ति नगर था वही अब खून खच्चर का घर है.

राजनीति का यह इन्क़लाब भी अजीब और आज़ादी की यह तरकीब भी खूब !

इतनी जल्दी कश्मीर की फ़िज़ा बदल गई. फ़िज़ा का रंग बदल गया. हवा बदल गई. हवा का असर बदल गया

पच्छिम से जिसके पास अपनी शिकायत और रोग लेकर गोरे लोग आते थे अब यह अपनी शिकायत और रोग लेकर गोरे लोगों के पास है. उनके इलाज में है यानी—अन्तर राष्ट्री हस्पताल में है और उसके स्पेशल वार्ड में—जिसके द्वार पर मोटे मोटे शब्दों मे लिखा हुआ है: ज़ख्मी कश्मीर ! बीमार कश्मीर !! फ़रियादी कश्मीर !!!

जहाँ उसका खून भी लिया जायगा और जहाँ उसका टैमप्रेचर भी देखा जायगा—हम देख रहे हैं कि उसका मशरिक़ी खून मग़रिबी

جہاں موت زندگی پانے جاتی تھی— اور جہاں بیماری صحت لینے آتی تھی .

جہاں دیس دیس سے سیکڑوں مریض ، امیر غریب ، شفا پانے آتے تھے اور شفا پاکر جاتے تھے .

جہاں دنیا کے بھاگ بھاگ سے شوقین مزاج سال کے سال سیر تفریح کرنے آتے تھے اور خوش خوش واپس جاتے تھے .

یہی کشمیر جو پہلے شانتی کا مقام تھا اب وہاں سنگرام ہے .

یہی کشمیر جو پہلے امن شانتی کا استھان تھا . اب وہاں بدامنی کا سامان ہے .

یہی سری نگر جو دنیا کی نظر میں شانتی نگر تھا . وہی اب خون خچر کا گھر ہے .

راجنیتی کا یہ انقلاب بھی عجیب اور آزادی کی یہ ترکیب بھی خوب !

اتنی جلدی کشمیر کی فضا بدل گئی . فضا کا رنگ بدل گیا . ہوا بدل گئی . ہوا کا اثر بدل گیا .

پچھم سے جس کے پاس اپنی شکایت اور روگ لیکر گورے لوگ آتے تھے اب یہ اپنی شکایت اور روگ لیکر گورے لوگوں کے پاس ہے اُن کے علاج میں ہے یعنی— انتر راشٹری ھسپتال میں ہے اور اس کے اسپیشل وارڈ میں — جس کے دوار پر موٹے موٹے شبدوں میں لکھا ہوا ہے : زخمی کشمیر ! بیمار کشمیر !! فریادی کشمیر !!!

جہاں اس کا خون بھی لیا جائیگا اور جہاں اس کا ٹیمپریچر بھی دیکھا جائیگا— ہم دیکھ رہے ہیں کہ اس کا مشرقی خون مغربی

शीशों में झलक रहा है. जिसकी रिपोर्ट तैयार होकर नतीजा ब्राडकास्ट किया जायगा और आख़िरी फ़ैसला सुनाया जायगा. जिसके सुनने के लिये दुनिया के कान लगे हुए हैं.

दुखी और ज़ख्मी कश्मीर की नाड़ी उसके क़रीब के तीमारदारों ने इलाज से तंग आकर पच्छिमी डाक्टरों के हाथ में थमा दी है-- अब उसकी नाड़ी भी उनके हाथ में है और उसका ख़ून भी उनके क़ब्ज़े में.

हिन्दुस्तान के सियासी डाक्टरों ने ज़ख्मी कश्मीर के नाज़ुक केस को "होप् लेस" समझ कर जब जवाब दे दिया और कोई इलाज नहीं बन पड़ा तो अन्तर राष्ट्री हस्पताल में उस केस को दाख़िल करना पड़ा. लेकिन केस चूँकि नाज़ुक है और मरीज़ इस हाल में गया है कि ख़ून गिराता गिराता.—फिर भी इतनी आशा ज़रूर की जा सकती है कि वहाँ उसकी ड्रेसिंग अच्छी हो सकेगी—यानी ऊपरी लीपा पोती—क्योंकि पच्छिम मरहम पट्टी के काम में अधिक चतुर है—रहा मामला इलाज का.

हमारे ख़याल में पच्छिमी डाक्टरों की दवा दारू जन्नत वासियों के मिजाज़ को रास न आसकेगी—भला अंगरेज़ी दवा जिसमें दारू की मिलावट हो, जन्नत में उसका क्या काम ?

स्वर्ग कश्मीर के भोले भाले बाशिन्दों ने अन्तरराष्ट्री सभा को मसीहा (ज़िन्दा करने वाला) जान कर नई जान की उससे आशा बाँध ली और उसे क़िस्मत बनाने वाला समझ कर उसकी बनाई क़िस्मत पर ईमान भी ला लिया—लेकिन नादान कश्मीर यह न समझा

شیشوں میں جھلک رہا ہے ' جس کی رپورٹ تیار ہوکر نتیجہ براڈ کاسٹ کیا جائیگا اور آخری فیصلہ سنایا جائیگا . جس کے سننے کے لئے دنیا کے کان لگے ہوئے ہیں .

دکھی اور زخمی کشمیر کی ناڑی اُس کے قریب کے تیمارداروں نے علاج سے تنگ آکر پچھمی ڈاکٹروں کے ہاتھ میں تھمادی ہے —— اب اس کی ناڑی بھی ان کے ہاتھ میں ہے اور اس کا خون بھی ان کے قبضہ میں .

ہندستان کے سیاسی ڈاکٹروں نے زخمی کشمیر کے نازک کیس کو '' ہوپ لیس '' سمجھکر جب جواب دے دیا اور کوئی علاج بن نہیں پڑا تو انتر راشٹری ہسپتال میں اس کیس کو داخل کرنا پڑا . لیکن کیس چونکہ نازک ہے اور مریض اس حال میں گیا ہے کہ خون گراتا گراتا —— پھر بھی اتنی آشا ضرور کی جا سکتی ہے کہ وہاں اُس کی ڈریسنگ اچھی ہو سکے گی —— یعنی اوپری لیپا پوتی —— کیونکہ پچھم مرہم پٹی کے کام میں ادھک چتر ہے —— رہا معاملہ علاج کا .

ہمارے خیال میں پچھمی ڈاکٹروں کی دوا دارو جنت واسیوں کے مزاج کو راست نہ آسکے گی —— بھلا انگریزی دوا جس میں دارو کی ملاوٹ ہو ' جنت میں اس کا کیا کام ؟

سورگ کشمیر کے بھولے بھالے باشندوں نے انتر راشٹری سبھا کو مسیحا (زندہ کرنے والا) جان کر نئی جان کی آس سے آشا باندھ لی . اور اُسے قسمت بنانے والا سمجھکر اس کی بنائی قسمت پر ایمان بھی لا لیا —— لیکن نادان کشمیر یہ نہ سمجھا

और न कश्मीर का आला विचारवान. कि वहाँ जो कुछ है वह झूटे नगीनों की मीना कारी है—और.

यूनिवरसल मार्केट में किस बला की चोरबाज़ारी है. और किस गज़ब की लूट खसोट जारी है.

अन्तरराष्ट्री नामी मन्दिर के महान महान और लाल लाल देवताओं ने कश्मीर की भेंट को अपने सन्मुख कबूल कर लिया—क़बूल करके दो मुल्कों पर डबल एहसान किया.

सोचने की बात यह है कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के लिये वह आखिर क्या चीज़ है ?

वह है गैरों की मोहताजी !

उसी मोहताजी का दूसरा नाम है गुलामी !

गुलामी या मोहताजी का मतलब :

गैरों के फैसलों के मोहताज और इन्साफ़ के मोहताज !

क्या यही है कौमी खुद दारी ?

और क्या यही है कौमी पासदारी ?

वही बरतानिया और उसके गुट वाले जिनको कल तक दुश्मन दुश्मन कह कर पुकारा. और जिनको ज़ालिम ज़ालिम कह कर ललकारा.

उन्हीं से बात बात में इन्साफ़ उन्हीं से फरियाद पे फरियाद और मदद की दरख्वास्त.

यह है कितनी शर्म वाली बात .

हिन्दुस्तान के लिये भी और पाकिस्तान के लिये भी !

اور نہ کشمیر کا اعلیٰ وچاروان ۔ کہ وہاں جو کچھ ہے وہ جھوٹے نگینوں کی مینا کاری ہے — اور ۔

یونیورسل مارکیٹ میں کس بلا کی چور بازاری ہے ۔ اور کس غضب کی لوٹ کھسوٹ جاری ہے ۔

انتر راشٹری نامی مندر کے مہان مہان اور لال لال دیوتاؤں نے کشمیر کی بھینٹ کو اپنے سنمکھ قبول کر لیا—قبول کرکے دو ملکوں پر ڈبل احسان کیا ۔

سوچنے کی بات یہ ہے کہ ہندستان اور پاکستان کے لئے وہ آخر کیا چیز ہے ؟

وہ ہے غیروں کی محتاجی !

اسی محتاجی کا دوسرا نام ہے غلامی !

غلامی یا محتاجی کا مطلب :

غیروں کے فیصلوں کے محتاج اور انصاف کے محتاج !

کیا یہی ہے قومی خود داری ؟

اور کیا یہی ہے قومی پاسداری ؟

وہی برطانیہ اور اس کے گٹ والے جن کو کل تک دشمن دشمن کہکر پکارا ۔ اور جن کو ظالم ظالم کہکر للکارا

انھیں سے بات بات میں انصاف

انھیں سے فریاد پہ فریاد اور مدد کی درخواست

یہ ہے کتنی شرم والی بات ۔

ہندستان کے لئے بھی اور پاکستان کے لئے بھی !

कोई स्वार्थ न था, अपनी कोई इच्छा न थी, अपना कोई अरमान न था. जनता का स्वार्थ ही उनका स्वार्थ था, जनता की इच्छा ही उनकी अपनी इच्छा थी और जनता का अरमान ही उनका अपना अरमान था.

यही कारन है कि गांधी जी की आत्मा में बल था क्योंकि उसमें जनता की आत्मा का बल मिला हुआ था. उनके हौसले ऊँचे थे क्योंकि उनमें जनता के सारे हौसले शामिल थे. उनकी छाती बड़ी चौड़ी थी क्योंकि उसमें सारे हिन्दुस्तान की जनता की हमदर्दी और प्रेम भरा हुआ था. उनकी नज़र साफ़ थी और बहुत दूर तक देख सकती थी क्योंकि उसमें सारे देश की दूरन्देशी और समझ समोई हुई थी.

महात्मा गांधी ने जिस हिम्मत और दिलेरी के साथ अंग्रेज़ी सरकार से लोहा लिया था उसी हिम्मत और दिलेरी के साथ उन्होंने समाज की बुराइयों पर भी हमला किया था. जहां वह सियासी ग़ुलामी को दूर करने के लिये किसी भी हद तक जाने के लिये तैयार थे, वहीं वह माली और समाजी बुराइयों को ख़त्म करने के लिये हर विरोधी ताक़त से भिड़ जाने को तैयार रहते थे. महात्मा गांधी की लड़ाई का यह बड़ा पैना और तीखा हथियार था जो एक ही चोट में दोनों ओर वार करता था.

मिसाल के लिये हरिजनों के मसले को लीजिये. एक ओर उन्होंने गोल मेज़ कान्फ़्रेंस में जब सरकार को यह चुनौती दी कि अगर हरिजनों को हिन्दुओं से अलग किया गया तो वह जान की बाज़ी लगा देंगे तो दूसरी ओर उन्होंने हिन्दुओं से यह मांग की कि

کوئی سوارتھ نہ تھا۔ اپنی کوئی اچھا نہ تھی' اپنا کوئی ارمان نہ تھا۔ جنتا کا
سوارتھ ہی اُن کا سوارتھ تھا، جنتا کی اچھا ہی اُن کی اپنی اچھا تھی۔
اور جنتا کا ارمان ہی اُن کا اپنا ارمان تھا۔ یہی کارن ہے کہ گاندھی جی
کی آتما میں بل تھا کیوں کہ اُس میں جنتا کی آتما کا بل ملا ہوا تھا۔ اُن
کے حوصلے اونچے تھے کیوں کہ اُن میں جنتا کے سارے حوصلے شامل
تھے۔ اُن کی چھاتی بڑی چوڑی تھی کیوں اُس میں سارے ہندوستان
کی جنتا کی ہمدردی اور پریم بھرا ہوا تھا۔ اُن کی نظر صاف تھی اور
بہت دور تک دیکھ سکتی تھی کیونکہ اُس میں سارے دیش کی دور
اندیشی اور سمجھ سموئی ہوئی تھی۔
مہاتما گاندھی نے جس ہمت اور دلیری کے ساتھ انگریزی سرکار
سے لوہا لیا تھا۔ اُسی ہمت اور دلیری کے ساتھ انھوں نے سماج کی
برائیوں پر بھی حملہ کیا تھا۔ جہاں وہ سیاسی غلامی کو دور کرنے کے لئے
کسی بھی حد تک جانے کے لئے تیار تھے وہیں وہ مالی اور سماجی
برائیوں کو ختم کرنے کے لئے ہر ورودھی طاقت سے بھڑ جانے کو تیار رہتے
تھے، مہاتما گاندھی کی لڑائی کا یہ بڑا پینا اور تیکھا ہتھیار تھا۔ جو
ایک ہی چوٹ میں دونوں اور وار کرتا تھا۔

مثال کے لئے ہریجنوں کے مسئلے کو لیجئے ایک اور انھوں
نے گول میز کانفرنس میں جب سرکار کو یہ چنوتی دی کہ
اگر ہریجنوں کو ہندوؤں سے الگ کیا گیا تو وہ جان کی
بازی لگا دیں گے تو دوسری اور انھوں نے ہندوؤں سے یہ مانگ کی کہ

یہی کارن ہے کہ گاندھی جی کی آتما میں بل تھا
کیوں کہ اُس میں جنتا کی آتما کا بل ملا ہوا تھا۔ اُن

कश्मीर में कितनी बार अन्तरराष्ट्री अमन कमीशन आये यानी पीस मेकर (Peace Maker) पर नतीजे में रहा सिफर !

कश्मीर में कमीशनों का आना अमन और इन्साफ़ का तो बहाना होता है. असल में तफ़रीह और मतलब से उनका आना जाना होता है. क़ौम के पैसे से, इस हीले से जन्नत की सैर भी हो जाती है. जन्नत के मेवे खाने को मिलते हैं और जन्नत की शराबें पीने को, हमारे ख़याल में इन ख़ुद ग़रज़ और मतलब परस्त यात्रियों से कोई अच्छी आशा रखना कौमी ग़लत फ़हमी होगी.

क़ुदरत ने अपनी फ़ैयाज़ी से कश्मीर की वादी वादी को जो शादाबी बख़्शी है और जिन रंगीनियों और ख़ूबसूरतियों से उसे माला माल किया है.

अफ़सोस ! वहाँ का वासी उसे बरतना जानता ही नहीं. न वह यह जानता है कि कैसे उनसे लुत्फ़ उठाये. न वह यह समझता है कि कैसे उनको काम में लाये ?

कश्मीर की ज़मीन और आसमान
कश्मीर के बाग़ और मैदान
कश्मीर के रंगीन रंगीन दर्रे और हसीन हसीन परे.
इस फ़िरदौसी, वायुमंडल के दिलचस्प और रूह परवर नज़्ज़ारे हैं.
वह दर्रे वरदान हैं क़ुदरत के
वह परे मुजस्समे हैं मुहब्बत के
जिनके अन्दर पैग़ाम भी हैं इलहाम भी--लेकिन इन पैग़ामों और ... नहीं क्योंकि वह

کشمیر میں کتنی بار انتر راشٹری امن کمیشن آئے یعنی پیس میکر (Peace Maker) پر نتیجے میں رہا صفر !

کشمیر میں کمیشنوں کا آنا امن اور انصاف کا تو بہانہ ہوتا ہے . اصل میں تفریح اور مطلب سے اُن کا آنا جانا ہوتا ہے . قوم کے پیسے سے، اِس حیلے سے جنت کی سیر بھی ہوجاتی ہے . جنت کے میوے کھانے کو ملتے ہیں اور جنت کی شرابیں پینے کو، ہمارے خیال میں اِن خود غرض اور مطلب پرست یاتریوں سے کوئی اچھی آشا رکھنا قومی غلط فہمی ہوگی .

قدرت نے اپنی فیاضی سے کشمیر کی وادی وادی کو حوشادابی بخشی ہے اور جن رنگینیوں اور خوبصورتیوں سے مالا مال کیا ہے .

افسوس ! وہاں کا واسی اُسے برتنا جانتا ہی نہیں . نہ وہ یہ جانتا ہے کہ کیسے اُن سے لطف اُٹھائے، نہ وہ یہ سمجھتا ہے کہ کیسے اُن کو کام میں لائے ؟

کشمیر کی زمین اور آسمان
کشمیر کے باغ اور میدان
کشمیر کے رنگین رنگین درے اور حسین حسین پرے .
اس فردوسی وایو منڈل کے دلچسپ اور روح پرور نظارے ہیں .
وہ درے وردان ہیں قدرت کے
وہ پرے مجسمے ہیں محبت کے
جن کے اندر پیغام بھی ہیں الہام بھی -- لیکن ان پیغاموں
اور الہاموں کو سمجھنا اس دیش کے انسان کا کام نہیں کیونکہ وہ

उसके पैग़ामों को नहीं समझ रहा. इसी लिये उसने जन्नत की क़द्र करना जाना ही नहीं.

जन्नत की नाक़द्री बड़ी हद तक जन्नत की हतक है.

वह चूँकि जन्नत को अभी तक समझा ही नहीं. और स्वर्ग की हक़ीक़त को उसने जाना ही नहीं. तभी तो वह अपने को स्वर्ग के लायक़ साबित नहीं कर रहा. और इसीलिये क़ुदरत ने उसके लिये देश भर में जहन्नुमी फ़िज़ा बनाये रखी है ताकि वह जहन्नुमी वायु मण्डल में रह कर जहन्नुमी ज़िन्दगी बसर करे. यानी आग और खून से खेलता और जलता भुनता रहे—और शायद इसी कारन बहुत से उस जन्नत से अपना रहना सहना तर्क करके नरक आबाद कर चुके हैं—

पच्छिम वाला प्रकृति का प्रेमी होता है. वह जानता और समझता है कि फ़ितरत के नज़्ज़ारे और क़ुदरत के कारनामे किस क़दर अज़ीमुश्शान और अचरज भरे हैं. उनके अन्दर कितनी रंगीनियाँ हैं और उन रंगीनियों में कितनी रोशनियाँ—वह उन रंगीनियों से ज़िन्दगियों को सँवारता है और उन रोशनियों से तरक्क़ी की नई नई राहें निकालता है.

वह सुन्दरता का पारखी है और सुन्दरता का पुजारी है इसलिये वह सुन्दरता की क़द्र करना और उससे लुत्फ़ उठाना जानता है इसी ज्ञान और सलाहियत के सबब उम्दा चीज़ों को बरतने का वह अच्छा सलीक़ा रखता है और बुरी चीज़ों को सुन्दर रूप देने के गुर जानता है यही वजह है जहाँ वह रहता है अगर दोज़ख भी हो

اس کے پیغاموں کو نہیں سمجھ رہا ۔ اسی لئے اس نے جنت کی قدر کرنا جانا ہی نہیں ۔

جنت کی ناقدری بڑی حد تک جنت کی ہتک ہے ۔

وہ چونکہ جنت کو ابھی تک سمجھا ہی نہیں ۔ اور سورگ کی حقیقت کو اس نے جانا ہی نہیں ۔ تب ہی تو وہ اپنے کو سورگ کے لائق ثابت نہیں کر رہا ۔ اور اسی لئے قدرت نے اس کے لئے دیش بھر میں جہنمی فضا بنائے رکھی ہے تاکہ وہ جہنمی وایو منڈل میں رہ کر جہنمی زندگی بسر کرے ۔ یعنی آگ اور خون سے کھیلتا اور جلتا بھنتا رہے — اور شاید اسی کارن بہت سے اس جنت سے اپنا رہنا سہنا ترک کرکے نرک آباد کر چکے ہیں —

پچھم والا پرکرتی کا پریمی ہوتا ہے ۔ وہ جانتا اور سمجھتا ہے کہ فطرت کے نظارے اور قدرت کے کارنامے کس قدر عظیم الشان اور اچرج بھرے ہیں ۔ ان کے اندر کتنی رنگینیاں ہیں اور ان رنگینیوں میں کتنی روشنیاں — وہ ان رنگینیوں سے زندگیوں کو سنوارتا ہے اور ان روشنیوں سے ترقی کی نئی نئی راہیں نکالتا ہے ۔

وہ سندرتا کا پارکھی ہے اور سندرتا کا پجاری ہے اس لئے وہ سندرتا کی قدر کرنا اور اس سے لطف اٹھانا جانتا ہے ۔ اسی گیان اور صلاحیت کے سبب عمدہ چیزوں کو برتنے کا وہ اچھا سلیقہ رکھتا ہے اور بری چیزوں کو سندر روپ دینے کے گر جانتا ہے ۔ یہی وجہ ہے جہاں وہ رہتا ہے اگر دوزخ بھی ہو

तो उसे अपने लिये जन्नत बना लेता है और जहां यह रहता है अगर जन्नत भी हो तो उसे अपने लिये दोज़ख बना लेता है.

कश्मीर की जंग, आज़ादी की पहली जंग है—

नेताओं का कहना है कि इसके अन्दर जनता की रक्षा है, देश का विकास है—हमने माना नेताओं का कहना. लेकिन दुख होता है यह देखकर कि ख़ूबसूरत कश्मीर का एक एक भाग अदावत की आग मे जल रहा है. सारा देश तबाही में है.

जम्मू जंग का अड्डा बरसो बना रहा है. श्रीनगर खून के आँसू अभी तक बहा रहा है. नौशहरा, नौशागा, बारा मूला और गिलगट बस जन्नत के यह सारे के सारे हिस्से जहन्नुम के खित्ते मालूम पड़ रहे हैं. जहाँ आगे भड़क चुकी हैं और जहाँ खून खदक चुके है.

(३१२)

ज़रा गौर करने और ध्यान देने से मालूम पड़ता है कि इस कौमी और घरेलू लड़ाई में दो भावों का बड़ा अमल दख़ल रहा है.

हकूमतों का शाहाना इन्तक़ाम और शाहाना इक़्तदार
यानी मुक़ाबले की बदला बदली और बराबरी की लाग डाट

इनही भावों के अमल और असर से कुछ ही समय आगे कश्मीर का सारा वायु मंडल आग और अंगारा हो रहा था. उसके ठंडे पहाड़ो से गर्म गर्म चश्मे निकले उस की सफ़ेद सफ़ेद दरारो से लाल लाल दरिया उबले. कश्मीर का ठंडा आसमान तपा. जिस की गर्मी से उस भूमि का ज़र्रा ज़र्रा भाप ही भाप उगलने लग गया

تو اسے اپنے لئے حنت دنا لیتا ھے اور جہاں یہ رھتا ھے اگر حنت بھی ھو تو اسے اپنے لئے دوزح بنا لیتا ھے .

کشمیر کی جنگ آزادی کی پہلی جنگ ھے —

نیتاؤں کا کہنا ھے کہ اس کے اندر جنتا کی رکشا ھے . دیس کا وکاس ھے — ھم نے مانا نیتاؤں کا کہنا ' لیکن دکھ ھوتا ھے یہ دیکھکر کہ خوبصورت کشمیر کا ایک ایک بھاگ عداوت کی آگ میں جل رھا ھے . سارا دیش تباھی میں ھے .

جموں جنگ کا اڈا برسوں بنا رھا ھے . شری نگر خون کے آنسو ابھی تک بہا رھا ھے . نوشہرہ ' نوشاگا ' بارا مولا اور گلگت اُس حنت کے یہ سارے کے سارے حصے جہنم کے خطے معلوم پڑ رھے ھیں جہاں آگیں بھڑک چکی ھیں اور خون جہاں کھدک چکے ھیں .

(۳۱۲)

ذرا غور کرنے اور دھیان دینے سے معلوم پڑتا ھے کہ اس قومی اور گھریلو لڑائی میں دو بھاؤں کا بڑا عمل دخل رھا ھے .

حکومتوں کا شاھانہ انتقام اور شاھانہ اقتدار

یعنی مقابلہ کی بدلا بدلی اور برابری کی لاگ ڈانٹ

ان ھی بھاؤں کے عمل اور اثر سے کچھ ھی سمے آگے کشمیر کا سارا وایو منڈل آگ اور انگارا ھو رھا تھا . اس کے ٹھنڈے پہاڑوں سے گرم گرم چشمے نکلے . اُس کی سفید سفید دراروں سے لال لال دریا اُبلے . کشمیر کا ٹھنڈا آسمان تپا . جس کی گرمی سے اُس بھومی کا ذرہ ذرہ بھاپ ھی بھاپ اُگلنے لگ گیا تھا اور پاپ ھی پاپ .

कश्मीर के बाग़ और चमन मतभेद की अग्नि से झुलस झुलस कर रह गये और कश्मीरी आशाओं की लाखों हरी भरी डालियाँ अन्दर ही अन्दर मुरझा गईं और झड़ गिर कर ख़ाक हो गईं.

कश्मीर की मशहूर झीलें जो अपने प्रेमियों के लिये अमन शान्ति की सफ़ेद चादर बिछाये रहती थीं वह इन्सानी खून में रंग गई थीं— कुछ दिन पहले की बात है कि उन झीलों की नैया नैया का एक खिवैया उस आन पड़ी मुसीबत पर दैया दैया कर रहा था.

कश्मीर की सारी आबादी और आबादी की बरबादी को देखते हुए उसका रंगीन आसमान और हरा भरा मैदान हमारी नज़रों के सामने आजाता है और उस हसीन फ़िज़ा का पूरा नकशा हमारी आँखों में फिर जाता है.

जिसकी फ़िज़ा के ऊपर बिखरे बिखरे अब्र के टुकड़े
जैसे उड़ते फिरते रूई के गाले
उसके गाते और गुन गुनाते झरने
जिनके सुरीले राग और नग़मे
जिसकी फ़िज़ा में शेरियत और रागिनी
जिसकी हवा में तरन्नुम ही तरन्नुम
आज वह जहन्नुम है जहन्नुम !
जन्नत, नाम है सवाब घर का पुन्य निकेतन का
जन्नत, नाम है सुख घर का—शान्ति भवन का.
जन्नत, उस मुक़ाम का नाम है. जहाँ दुख न हो,
जन्नत, उस जगह का नाम है. जहाँ सुख ही सुख हो,

کشمیر کے باغ اور چمن مت بھید کی اگنی سے جھلس جھلس کر رہ گئے اور کشمیری آشاؤں کی لاکھوں ہری بھری ڈالیاں اندر ہی اندر مرجھا گئیں اور جھڑ گر کر خاک ہو گئیں ۔

کشمیر کی مشہور جھیلیں جو اپنے پریمیوں کے لئے امن شانتی کی سفید چادر بچھائے رہتی تھیں وہ انسانی خون میں رنگ گئی تھیں — کچھ دن پہلے کی بات ہے کہ ان جھیلوں کی نیا نیا کا ایک کھویا اس آن پڑی مصیبت پر دیا دیا کر رہا تھا ۔

کشمیر کی ساری آبادی اور آبادی کی بربادی کو دیکھتے ہوئے اس کا رنگین آسمان اور ہرا بھرا میدان ہماری نظروں کے سامنے آجاتا ہے اور اس حسین فضا کا پورا نقشہ ہماری آنکھوں میں پھر جاتا ہے

جسکی فضا کے اوپر بکھرے بکھرے ابر کے ٹکڑے
جیسے اُڑتے پھرتے روئی کے گالے
اُس کے گاتے اور گنگناتے جھرنے
جنکے سریلے راگ اور نغمے
جس کی فضا میں شعریت اور راگنی
جس کی ہوا میں ترنم ہی ترنم
آج وہ جہنم ہے جہنم !
جنت نام ہے ثواب گھر کا — پنیہ نکیتن کا ۔
جنت، نام ہے سکھ گھر کا — شانتی بھون کا ۔
جنت، اُس مقام کا نام ہے ۔ جہاں دکھ نہ ہو ۔
جنت، اُس جگہ کا نام ہے ۔ جہاں سکھ ہی سکھ ہو ۔

बेशक कश्मीर ऐसी ही जगह थी, जहाँ सुख ही सुख था, अमन ही अमन, शान्ति ही शान्ति—इसी लिये वह जन्नत कहलाई और स्वर्ग नाम पाया.

वही कश्मीर जिसके आकाश से बर्फ बरसता था और हुन गिरता था. जिसके पहाड़ों से बर्फ पिघलती थी और ठण्डक उबलती थी—हाँ हाँ, वही कश्मीर !

यह कश्मीर ! आह यह जन्नत और उसमे इनकलाब ऐसा ?

आज के शहीद

(सम्पादक श्री रतन लाल बंसल)

आज के शहीद मे उन बहादुरो की कहानियाँ हैं जिन्होंने विदेशी हाकिमो की फैलाई फूट की आग मे इन्सानियत को भस्म होते देख एक छिन की भी देर न की और उसे बुझाने के लिये अपनी जान क़ुरबान कर दी. उन वीरो की कहानियां हैं जिन्हो ने फूट और नफ़रत के अंधेर मे रोशनी बनकर दूसरो को रास्ता दिखाया.

हर एकता प्रेमी के पढ़ने की किताब

सुन्दर जिल्द और आर्ट पेपर पर छपी आठ तस्वीरो के साथ इस किताब का दाम सिर्फ ढाई रुपया रक्खा गया है. किताब उर्दू और नागरी दोनो लिखावटो मे मिल सकती है.

[नोट—बेचने वालो या कम से कम दस कापी खरीदने वालो को ३३ फीसदी कमीशन दिया जायगा]

मैनेजर नया हिन्द १४५ मुट्ठीगंज इलाहाबाद

بیشک کشمیر ایسی ہی جگہ تھی ' جہاں سکھ ہی سکھ تھا ' امن ہی امن ' شانتی ہی شانتی — اسی لئے وہ جنت کہلائی اور سورگ نام پایا .

وہی کشمیر جس کے آکاش سے برف برستا تھا اور ہن گرتا تھا . جس کے پہاڑوں سے برف پگھلتی تھی اور ٹھنڈک ابلتی تھی —ہاں ہاں' وہی کشمیر !

یہ کشمیر ! آہ یہ جنت اور اس میں انقلاب ایسا ؟

آج کے شہید

(سمپادک شری رتن لال بنسل)

آج کے شہید میں ان بہادروں کی کہانیاں ہیں جنہوں نے بدیشی حاکموں کی پھیلائی پھوٹ کی آگ میں انسانیت کو بھسم ہوتے دیکھ ایک چھن کی بھی دیر نہ کی اور اسے بجھانے کے لئے اپنی جان قربان کردی' ان ویروں کی کہانیاں ہیں جنہوں نے پھوٹ اور نفرت کے اندھیرے میں روشنی بنکر دوسروں کو راستہ دکھایا .

ہر ایکتا پریمی کے پڑھنے کی کتاب

سندر جلد اور آرٹ پیپر پر چھپی آٹھ تصویروں کے ساتھ اس کتاب کا دام صرف ڈھائی روپیہ رکھا گیا ہے . کتاب اردو اور ناگری دونوں لکھاوٹوں میں مل سکتی ہے

[نوٹ—بیچنے والوں یا کم سے کم دس کاپی خریدنے والوں کو ۳۳ فیصدی کمیشن دیا جائیگا .]

منیجر نیا ہند ۱۴۵ مٹھی گنج الہ آباد

ऐशिया की आज़ादी और भारत

(भाई ए. हुसैन)

अभी बहुत से भारत वासियों को वह दिन याद है जब कांग्रेस एक राज काजी पार्टी ही नहीं बल्कि एशिया का सबसे बड़ा जन आन्दोलन भी थी. देश की कितनी ही विचार धारायें, कितने ही छोटे बड़े संगठन और कितने ही आन्दोलन इसके अन्दर शामिल थे. इन सब का एक ही उद्देश्य, एक ही मकसद था और वह यह कि अंगरेजी साम्राज से भारत को आजाद किया जाय. इन सब लोगों और संस्थाओं और विचारों में आपस में कितने ही मतभेद रहे हों—और इसमें शक नहीं कि उनमें मतभेद थे—लेकिन इस एक सवाल पर कोई मतभेद नहीं था.

लेकिन जब हम भारत की आज़ादी के लिये लड़ते थे तो हम केवल अपने देश की सरहदों के अन्दर ही अपनी निगाह को सीमित नहीं रखते थे बल्कि अन्तर राष्ट्री हालत पर भी हमारी नज़रें जाती थीं, क्योंकि जैसे जैसे हमारी आज़ादी की लड़ाई तेज होती जाती थी, यह बात हम पर साफ होती जाती थी कि अन्तरराष्ट्री हालत का हमारी लड़ाई पर गहरा असर पड़ता है. ख़ास तौर पर पूर्वी देशों और एशिया और अफरीका के देशों की तरफ हमारी नज़रें जाती थीं क्योंकि हम देखते थे कि अकेले हम ही गुलाम नहीं बल्कि इन देशों में से भी बहुत से ऐसे हैं जो या तो वैधानिक ढंग से गुलाम

ایشیا کی آزادی اور بھارت

(بھائی اے . حسین)

ابھی بہت سے بھارت واسیوں کو وہ دن یاد ہیں جب کانگریس ایک راج کاجی پارٹی ہی نہیں بلکہ ایشیا کا سب سے بڑا جن آندولن بھی تھی دیس کی کتنی ہی وچار دھارائیں، کتنے ہی چھوٹے بڑے سنگٹھن اور کتنے ہی آندولن اِس کے اندر شامل تھے . ان سب کا ایک ہی اُدیش، ایک ہی مقصد تھا اور وہ یہ کہ انگریزی سامراج سے بھارت کو آزاد کیا جائے . اِن سب لوگوں اور سنستھاؤں اور وچاروں میں آپس میں کتنے ہی مت بھید رہے ہوں—اور اِس میں شک نہیں کہ اُن میں مت بھید تھے—لیکن اس ایک سوال پر کوئی مت بھید نہیں تھا .

لیکن جب ہم بھارت کی آزادی کے لئے لڑتے تھے تو ہم کیول اپنے دیش کی سرحدوں کے اندر ہی اپنی نگاہ کو سیمت نہیں رکھتے تھے بلکہ انتر راشٹری حالت پر بھی ہماری نظریں جاتی تھیں، کیونکہ جیسے جیسے ہماری آزادی کی لڑائی تیز ہوتی جاتی تھی، یہ بات ہم پر صاف ہوتی جاتی تھی کہ انتر راشٹری حالت کا ہماری لڑائی پر گہرا اثر پڑتا ہے . خاص طور پر پوربی دیشوں اور ایشیا اور افریقہ کے دیشوں کی طرف ہماری نظریں جاتی تھیں کیونکہ ہم دیکھتے تھے کہ اکیلے ہم ہی غلام نہیں بلکہ اِن دیشوں میں سے بھی بہت سے ایسے ہیں جو یا تو ویدھانک ڈھنگ سے غلام

हम हिन्दुस्तान के आठ करोड़ मुसलमानों ही के जीवन को जहन्नुम नहीं बनाये रहते बल्कि अरब और मुसलमान देशों की और भी करोड़ों मुसलमान जनता को भी ग़ुलाम बनाये रखते हैं और उनके हक़ में भी हम काँटे बोते हैं.

इस तरह हमारे राष्ट्री आन्दोलन ने एक गहरा अन्तर राष्ट्री दृष्टि कोन पैदा कर लिया था जिसका मतलब यह था कि हम हर ग़ुलाम देश की ख़ास तौर से पूरब के और एशियाई देशों की आज़ादी चाहते हैं.

यह अन्तर राष्ट्री दृष्टि कोन वैसे तो स्वर्गीय लोकमान्य तिलक के ज़माने से ही पैदा हो चला था, फिर सन् ११ ई० से जब मुस्लिम लीग कांगरेस के कुछ क़रीब आ रही थी, तुर्की में मेडिकल सहायता भेज कर एक और क़दम आगे बढ़ाया गया. यहाँ इस पर सन्देह हो सकता है कि यह एक सही क़दम था या नहीं, इसके बाद सन १४ ई० से लेकर सन् १८ ई० तक के युद्ध ने सारे मुल्क में इस भावना को बहुत गहरा कर दिया और हिन्दुस्तान का जो पहला जन आन्दोलन चला वह सच पूछिये तो बहुत कुछ अन्तर राष्ट्री हालत और एशिया में ग़ुलामी के ख़िलाफ़ एक आम उभरते हुए विरोध का भी नतीजा था. ख़ुद ख़िलाफ़त का आन्दोलन जो केवल हिन्दी मुसलमानों ही का आन्दोलन नहीं था बल्कि उसके साथ पूरी तरह राष्ट्री आन्दोलन भी था, बुनियादी तौर पर अंगरेज़ों और फ़रान्सीसियों की उन कोशिशों के ख़िलाफ़ एक आन्दोलन था जिनके ज़रिये यह देश हारे हुए तुर्की को आपस मे बाँट चूट कर हड़प कर जाना चाहते थे. १९२९ के दुनिया के आर्थिक संकट ने जिसका असर सबसे पहले अमरीका

ہم ہندستان کے آٹھ کروڑ مسلمانوں ہی کے جیون کو جہنم نہیں بنائے رہتے بلکہ عرب اور مسلمان دیشوں کی اور بھی کروڑوں مسلمان جنتا کو بھی غلام بنائے رکھتے ہیں اور اُنکے حق میں بھی ہم کانٹے بوتے ہیں۔

اس طرح ہمارے راشٹری آندولن نے ایک گہرا انتر راشٹری درشٹی کون پیدا کر لیا تھا جس کا مطلب یہ تھا کہ ہم ہر غلام دیش کی خاص طور سے پورب کے اور ایشیائی دیشوں کی آزادی چاہتے ہیں۔

یہ انتر راشٹری درشٹی کون ویسے تو سورگیہ لوکمانیہ تلک کے زمانے سے ہی پیدا ہو چلا تھا' پھر سن ۱۱ ع سے جب مسلم لیگ کانگریس کے کچھ قریب آرہی تھی' ترکی میں میڈیکل سہایتا بھیج کر ایک اور قدم آگے بڑھایا گیا۔ یہاں اِس پر سندیہ ہو سکتا ہے کہ یہ ایک صحیح قدم تھا یا نہیں۔ اِس کے بعد سن ۱۴ ع سے لیکر سن ۱۸ ع تک کے یدھ نے سارے ملک میں اِس بھاونا کو بہت گہرا کر دیا اور ہندستان کا جو پہلا جن آندولن چلا وہ سچ پوچھئے تو بہت کچھ انتر راشٹری حالت اور ایشیا میں غلامی کے خلاف ایک عام اُبھرتے ہوئے وِرودھ کا بھی نتیجہ تھا۔ خود خلافت کا آندولن جو کیول ہندی مسلمانوں ہی کا آندولن نہیں تھا بلکہ اُس کے ساتھ پوری طرح راشٹری آندولن بھی تھا' بنیادی طور پر انگریزوں اور فرانسیسیوں کی اُن کوششوں کے خلاف ایک آندولن تھا جن کے ذریعے یہ دیش ہارے ہوئے ترکی کو آپس میں بانٹ بونٹ کر ہڑپ کر جانا چاہتے تھے۔ ۱۹۲۹ کے [illegible]

मे फूटा था, हमारी जनता की अन्तर राष्ट्री चेतना को और ज्यादा गहरा बनाया. और जब हमने यह देखा कि उन देशों में भी. जिनके लोग हमारे ऊपर राज कर रहे हैं, आर्थिक संकट आया है और वहाँ भी साधारन जनता बेरोजगारी के कारन भूकी मर रही है तो हमारा ध्यान इस तरफ़ गया कि हमको राज काजी आज़ादी ही नहीं चाहिये, जैसी कि फ़रान्स, बरतानिया और अमरीका वालों के पास है, बल्कि उसके बाद हमें आर्थिक आजादी के लिये भी शायद कोशिश करनी होगी जिसमें कि हमारे देश में वैसे संकट न आ सकें जैसे कि इन देशों में आये है. इन्हीं आर्थिक आज़ादी के विचारों को लेकर काँगरेस के अन्दर सन ३५ ई० मे समाजवादी दल बना और सन् ३६ ई० में पंडित नेहरू, जो समाजवादी विचारों से बड़ी हमदर्दी रखते थे, राष्ट्र पति चुने गये और लखनऊ कॉंगरेस मे उन्होंने जो लेक्चर दिया और फिर उसके बाद बराबर कॉंगरेस को जिस रास्ते पर डाला वह ऐसा था कि अन्तर राष्ट्री समस्याओं से हमारी दिलचस्पी एक थोड़ी थोड़ी देर को बात नहीं बल्कि एक मुस्तक़िल बात हो गई. और अब तक जो बातें धुंधले रूप मे हमारे अन्दर थीं उन्हें हमने साफ़ तौर से खुल कर कहा कि हम एशिया के सब देशों की आज़ादी चाहते हैं. हम चीन की आज़ादी की लड़ाई मे चीन के साथ और जापान के खिलाफ़ हैं. हम हिन्द चीनी, मलाया. बरमा और इन्डोनीशिया की आज़ादी चाहते हैं, हम पास पूरब के मुसलमान देशों की आज़ादी चाहते हैं. हम ने यह भी कहा कि जब हम आज़ाद होंगे तो अंगरेज़ों, फ़रान्सीसियों और डचों की तरह साम्राजी नीति पर नहीं चलेंगे. हम किसी को अपना ग़ुलाम नहीं

میں پھوٹا تھا' هماری جنتا کی انتر راشٹری چیتنا کو اور زیادہ گہرا بنایا اور جب هم نے یہ دیکھا کہ اُن دیشوں میں بھی' جن کے لوگ همارے اُوپر راج کر رهے هیں' آرتھک سنکٹ آیا هے اور وهاں بھی سادهارن جنتا بے روز گاری کے کارن بھوکی مررهی هے تو همارا دهیان اس طرف گیا کہ هم کو راج کاجی آزادی هی نهیں چاهئے' جیسی کہ فرانس' برطانیہ اور امریکہ والوں کے پاس هے' بلکہ اس کے بعد همیں آرتھک آزادی کے لئے بھی شاید کوشش کرنی هوگی جسمیں کہ همارے دیش میں ویسے سنکٹ نہ آسکیں جیسے کہ اِن دیشوں میں آئے هیں ۔ اِنهیں آرتھک آزادی کے وچاروں کو لے کر کانگرس کے اندر سن ۳۵ ع میں سماج وادی دل بنا اور سن ۳۶ع میں پنڈت نہرو' جو سماج وادی وچاروں سے بڑی همدردی رکھتے تھے' راشٹر پتی چنے گئے اور لکھنؤ کانگریس میں اُنهوں نے جو لیکچر دیا اور پھر اُس کے بعد برابر کانگریس کو جس راستے پر ڈالا وہ ایسا تھا کہ انتر راشٹری سمسیاؤں سے هماری دلچسپی ایک تھوڑی تھوڑی دیر کی بات نهیں بلکہ ایک مستقل بات هوگئی ۔ اور اب تک جو باتیں دهندلے روپ میں همارے اندر تھیں اُنهیں هم نے صاف طور سے کھل کر کہا کہ هم ایشیا کے سب دیشوں کی آزادی چاهتے هیں ۔ هم چین کی آزادی کی لڑائی میں چین کے ساتھ اور جاپان کے خلاف هیں ۔ هم هند چینی' ملایا' برما اور انڈونیشیا کی آزادی چاهتے هیں' هم پاس پورب کے مسلمان دیشوں کی آزادی چاهتے هیں ۔ هم نے یہ بھی کہا کہ جب هم آزاد هوں گے تو انگریزوں' فرانسیسیوں اور ڈچوں

बनाना चाहेंगे चाहे हमारे पास इसके लिये जरूरी शक्ति भी हो. हम साम्राजी नीतियों का समर्थन भी नहीं करेंगे, हम हरगिज़ इस की इजाज़त नहीं देंगे कि हमारे मुल्क की फौज या रुपया या आदमी दूसरे देशों खासकर एशिया के देशों को ग़ुलाम रखने के लिये इस्तेमाल किये जायें. बल्कि एशिया की आज़ादी और साम्राज की लड़ाई में हम एशिया वालों और अपनी आज़ादी के लिये संघर्ष करने वालों के मित्र होंगे साम्राज के नहीं, और हमसे जहां तक हो सकेगा हम राष्ट्री आज़ादी के हर आन्दोलन की सहायता करेंगे.

(२२४) और यह सब कोरी बातें ही नहीं थीं, बल्कि जब इटली ने हब्श पर हमला किया और उसको ग़ुलाम बनाया तो हमने—हालाँकि तब हम ग़ुलाम ही थे—पूरी ताक़त से आवाज़ उठाई कि हम हब्श की दुखी जनता के साथ और इटली के विरोधी हैं. हमने बड़ी बड़ी सभायें और प्रदर्शन करके अपनी दोस्ती का हाथ हब्श की तरफ़ बढ़ाया. इसी तरह जब चीन पर जापान का हमला शुरू हुआ तो हमने कांगरेस की तरफ़ से चीन को मेडिकल मिशन तक भेजा और जापान अगरचे एक एशियाई मुल्क था लेकिन चीन की आज़ादी का दुश्मन होने के कारन हमने उसका घोर विरोध किया.

यही नहीं बल्कि पंडित नेहरू के प्रभाव से हमने एशिया से अपनी नज़र फैला कर देखा कि दुनिया के हर कोने में किसी न किसी रूप में आज़ादी और ग़ुलामी, प्रगतिवाद और प्रतिक्रियावाद का संघर्ष चल रहा है और हमने हर ऐसे मामले में आज़ादी की शक्तियों का. प्रगतिवाद का साथ दिया. हमने स्पेन की घरेलू लड़ाई ... की और जनवादी

بنانا چاھیں گے چاھے ھمارے پاس اِسکے لئے ضروري شکتی بھی ھو. ھم سامراجی نیتیوں کا سمرتھن بھي نہیں کریں گے ' ھم ھرگز اس کی اِجازت نہیں دیں گے کہ ھمارے ملک کی فوج یا روپیہ یا آدمی دوسرے دیشوں خاص کر ایشیا کے دیشوں کو غلام رکھنے کے لئے اِستعمال کئے جائیں . بلکہ ایشیا کی آزادي اور سامراج کی لڑائی میں ھم ایشیا والوں اور اپنی آزادي کے لئے سنگھرش کرنے والوں کے متر ھوں گے سامراج کے نہیں' اور ھم سے جہاں تک ھوسکے گا ھم راشٹري آزادي کے ھر آندولن کي سہایتا کریں گے .

(۲۲۴) اور یہ سب کوري باتیں ھی نہیں تھیں' بلکہ جب اِٹلی نے حبش حملہ کیا اور اُس کو غلام بنایا تو ھم نے—حالانکہ تب ھم غلام ھی تھے—پوري طاقت سے آواز اُتھائی کہ ھم حبش کی دکھی جنتا کے ساتھ اور اِٹلی کے وِرودھی ھیں . ھم نے بڑي بڑي سبھائیں اور پردرشن کرکے اپنی دوستی کا ھاتھ حبش کی طرف بڑھایا . اسی طرح جب چین پر جاپان کا حملہ شروع ھوا تو ھم نے کانگریس کی طرف سے چین کو میڈیکل مشن تک بھیجا اور جاپان اگرچہ ایک ایشیائی ملک تھا لیکن چین کی آزادی کا دشمن ھونے کے کارن ھم نے اُس کا گھور وِرودھ کیا .

یہی نہیں بلکہ پنڈت نہرو کے پربھاو سے ھم نے ایشیا سے اپنی نظر پھیلا کر دیکھا کہ دنیا کے ھر کونے میں کسی نہ کسی روپ میں آزادي اور غلامی' پرگتی واد اور پرتی کریا واد کا سنگھرش چل رھا ھے اور ھم نے ھر ایسے معاملے میں آزادي کی شکتیوں کا ' پرگتی واد کا ساتھ دیا . ھم نے اسپین کی گھریلو لڑائی میں فاشسٹ فرانکو کی زور شور سے مخالفت کی اور جن وادی

सरकार का समर्थन किया. हमने फ़ाशिज़्म और फ़ाशिस्ट विरोधी शक्तियों के संघर्श मे फ़ाशिज़्म के खिलाफ़ आवाज़ उठाई.

सन् ४२ ई० के बाद से सन् ४५ ई० तक अंगरेज़ साम्राजियों ने हमारे ऊपर बहुत कुछ फ़ाशिस्टों का दोस्त होने का इलज़ाम लगाना चाहा लेकिन हमने इस विषय में अपनी पोज़ीशन इतनी साफ़ करदी थी कि उनका एक झूट नहीं चला. मौलाना आज़ाद, पंडित नेहरू, राजाजी, श्रीमती सरोजिनी नायडू, महाकवि रविन्द्र नाथ टैगोर और हर उस नेता ने, जिसकी आवाज़ दबाई जाने के बावजूद सुनी जा सकी, यही कहा कि हम चीन और रूस के तरफ़दार हैं, हम उनकी जीत चाहते हैं, हम जर्मनी और जापान को हर नेकी का दुश्मन समझते हैं, लेकिन इन सब चीज़ों के होते हुए भी हम अपनी आज़ादी चाहते हैं.

(२२५)

यहाँ तक कि सन् ४७ ई० में भी, जब कि कांगरेस एक राज करने वाली पार्टी भी बन चुकी थी, एशिया की आज़ादी का मामला जनता के सामने इतना आगे था कि पंडित नेहरू ने एशियाई देशों की एक कानफ़रेन्स बुलाई और उसमे एक बार फिर एशिया की आज़ादी का एलान किया गया.

लेकिन यह सब कुछ होने के बाद भी आज हम एशिया में क्या देख रहे हैं. हम देखते हैं कि हिन्द चीनी कई साल से फ़रान्सीसी साम्राज के खिलाफ़ जीवन मरन का एक कठिन संघर्ष कर रहा है और डेढ़ लाख फ़रान्सीसी फ़ौज वहाँ मौजूद है. फ़रान्स उसको पहले की तरह ग़ुलाम बनाये रखना चाहता है. उसे अभी आज़ादी

سرکار کا سمرتھن کیا ۔ ھم نے فاشزم اور فاشسٹ وِرودھی شکتیوں کے سنگھرش میں فاشزم کے خلاف آواز اُٹھائی ۔

سن ۴۲ع کے بعد سے سن ۴۵ع تک انگریز سامراجیوں نے ھمارے اوپر بہت کچھ فاشسٹوں کا دوست ھونے کا اِلزام لگانا چاھا لیکن ھم نے اس وشے میں اپنی پوزیشن اتنی صاف کردی تھی کہ اُن کا ایک جھوٹ نہیں چلا ۔ مولانا آزاد ' پنڈت نہرو ' راجہ جی ' شریمتی سروجنی نائیڈو ' مہا کوی رابندر ناتھ ٹیگور اور ھر اُس نیتا نے جس کی آواز دبائی جانے کے باوجودسنی جاسکی' یہی کہا کہ ھم چین اور روس کے طرفدار ھیں' ھم اُن کی جیت چاھتے ھیں ' ھم جرمنی اور جاپان کو ھر نیکی کا دشمن سمجھتے ھیں' لیکن اِن سب چیزوں کے ھوتے ھوئے بھی ھم اپنی آزادی چاھتے ھیں ۔

(۲۲۵)

یہاں تک کہ سن ۴۷ع میں بھی' جبکہ کانگریس ایک راج کرنے والی پارٹی بھی بن چکی تھی' ایشیا کی آزادی کا معاملہ جنتا کے سامنے اتنا آگے تھا کہ پنڈت نہرو نے ایشیائی دیشوں کی ایک کانفرنس بلائی اور اُس میں ایکبار پھر ایشیا کی آزادی کا اعلان کیا گیا ۔

لیکن یہ سب کچھ ھونے کے بعد بھی آج ھم ایشیا میں کیا دیکھ رھے ھیں ۔ ھم دیکھتے ھیں کہ ھند چینی کئی سال سے فرانسیسی سامراج کے خلاف جیون مرن کا ایک کٹھن سنگھرش کر رھا ھے اور ڈیڑھ لاکھ فرانسیسی فوج وھاں موجود ھے ۔ فرانس اُسکو پہلے کی طرح غلام بنائے رکھنا چاھتا ھے ۔ اُسے ابھی آزادی

अगर वह अपना भला चाहते हैं और ७ करोड़ हरिजनों को अपना दुश्मन नहीं बनाना चाहते तो वह अपना रवैया बदलें. साम्प्रदायिक फ़ैसले के हरिजनों वाले हिस्से के ख़िलाफ़ जब गांधी जी ने आमरण व्रत शुरू कर दिया तब अंग्रेज़ी सरकार ही नहीं कांप उठी थी, हिन्दू जाति के भी पांवों तले की धरती खिसक गई थी. गांधी जी का उपवास तब बन्द हुआ जब मैक्डोनल्ड ने अपना फ़ैसला वापस लिया और हिन्दू नेताओं ने वायदा किया कि वह हिन्दू जाति में इतना सुधार करेंगे कि वह हरिजनों के साथ अन्याय न करे. उसी समय हरिजन सेवक संघ का जन्म हुआ था और वह संघ आज तक अपना काम करता जा रहा है.

(३१) हिन्दू मुसलिम एकता, खादी, ग्रामोद्योग वग़ैरह जितने गांधी जी के प्रोग्राम थे सबकी यही ख़ूबी थी कि उनमें दोधारी चोट होती थी. यही नहीं, उनमें एक ख़ूबी यह भी थी कि इन नारों और प्रोग्रामों के ज़रिये गांधी जी देश की रहनेवाली जनता के नज़दीक भी पहुंच गये थे उनकी उँगली जनता की नब्ज़ पर हमेशा रहती थी. इन संस्थाओं के ज़रिये वह उनके दिलों की धड़कनों का अन्दाज़ा लगा लिया करते थे.

इन संस्थाओं के ज़रिये गांधी जी उन बुनियादी सवालों को भी हल करने की कोशिश करते थे जो सवाल सचमुच जनता के असली सवाल थे. जनता का असली सवाल आख़िर क्या है ? यही न कि उसे काम और खाना, कपड़ा और इज़्ज़त के साथ जीवन बिताने का मौक़ा दिया जाय. अगर जनता को काम न मिले तो खाना, कपड़ा और मकान कैसे मिलेगा ? अगर काम, खाना, कपड़ा, मकान सब मिल भी जाय मगर उसे इज़्ज़त, मर्यादा और ख़ुशी के साथ

اگر وہ اپنا بھلا چاہتے ہیں اور سات کروڑ ہریجنوں کو اپنا دشمن نہیں بنانا چاہتے تو وہ اپنا رویہ بدلیں۔ سامپردائک فیصلہ کے ہریجنوں والے حصے کے خلاف جب گاندھی جی امرن برت شروع کردیا تب انگریزی سرکار ہی نہیں کانپ اٹھی تھی، ہندو جاتی کے بھی پاؤں تلے کی دھرتی کھسک گئی تھی۔ گاندھی جی کا اُپ واس تب بند ہوا جب میک ڈانلڈ نے اپنا فیصلہ واپس لیا اور ہندو نیتاؤں نے وعدہ کیا کہ وہ ہندو جاتی میں اتنا سدھار کریں گے کہ وہ ہریجنوں کے ساتھ انیائے نہ کرے۔ اُسی سمے ہریجن سیوک سنگھ کا جنم ہوا تھا اور وہ سنگھ آج تک اپنا کام کرتا جا رہا ہے۔

ہندو مسلم ایکتا، کھادی، گراموديوگ وغیرہ جتنے گاندھی جی (۳۱) کے پروگرام تھے۔ سب کی یہی خوبی تھی کہ اُن میں دودھاری چوٹ ہوتی تھی۔ یہی نہیں ان میں ایک خوبی یہ بھی تھی کہ ان نعروں اور پروگراموں کے ذریعہ گاندھی جی دیش کی رہنے والی جنتا کے نزدیک بھی پہونچ گئے تھے۔ اُن کی اُنگلی جنتا کی نبض پر ہمیشہ رہتی تھی۔ ان سنستھاؤں کے ذریعہ وہ اُن کے دلوں کی دھڑکنوں کا اندازہ لگا لیا کرتے تھے۔

ان سنستھاؤں کے ذریعے گاندھی جی اُن بنیادی سوالوں کو بھی حل کرنے کی کوشش کرتے تھے۔ جو سوال سچ مچ جنتا کے اصلی سوال تھے۔ جنتا کا اصلی سوال آخر کیا ہے؟ یہی نہ کہ اُسے کام اور کھانا، کپڑا اور عزت کے ساتھ جیون بتانے کا موقع دیا جائے اگر جنتا کو کام نہ ملے تو کھانا، کپڑا اور مکان کیسے ملے گا؟ اگر کام، کھانا، کپڑا اور مکان سب مل بھی جائے مگر اُسے عزت، مریادہ اور خوشی کے ساتھ

हासिल नहीं हुई बलिक उसकी आजादी की लड़ाई चल रही है. ऐसे समय हम अपनी कांगरेस से, जिसने अपने हाथ मे जनता की शक्ति के सिवा और कुछ न होते हुए भी जापान और इटली और जर्मनी का विरोध किया था, आज क्या आशा कर सकते हैं जब कि उसके हाथ में राज काज का अधिकार और शक्ति भी मौजूद है. हम यही आशा कर सकते हैं कि कांगरेस फ्रान्सीसी साम्राजवाद का विरोध करेगी और हिन्द चीन के राष्ट्री आजादी के आन्दोलन का साथ देगी. अगर हम स्पेन मे जनतन्त्रवाद का गला घोटने के दंड में सन् ३६ ई० से आज तक फ्रान्को के स्पेन से राजनैतिक सम्बन्ध तोड़े रह सकते हैं जो कि हमारे देश से बहुत दूर का मामला है तो क्या फ्रान्स की साम्राजी सरकार से आज ही अपने पड़ोस के मामले के लिये नाता नहीं तोड़ सकते. क्या इस तरह हम फ्रान्स पर पूरा राजनैतिक दबाव नहीं डाल सकते कि जनाब आप लोग अब वहाँ से निकल ही आयें तो अच्छा है, आपने अगर वह राज तलवार के जोर से लिया था तो सन् ४२ ई० मे आपको जापान ने मार भगाया और जापान को आपकी किसी भी सहायता के बिना हिन्द चीन के देश भक्तों ने मार भगाया. अब आप वहाँ कौन सा अधिकार रखते हैं और वहाँ क्या कर रहे हैं, आपको किसने बुलाया है ?

और अगर यह कहा जाये कि साहब वह तो बाओडाई महोदय की रक्षा कर रहे हैं तो भारत और हमारी कांगरेस तो बाओ डाई की असलियत को अपने तजरबे से अच्छी तरह जानती है ... अपार यहां तो हर रजवाड़े में एक न

حاصل نہیں ہوئی بلکہ اُس کی آزادی کی لڑائی چل رہی ہے . ایسے سمے ہم اپنی کانگریس سے' جس نے اپنے ہاتھ میں جنتا کی شکتی کے سوا اور کچھ نہ ہوتے ہوئے بھی جاپان اور اٹلی اور جرمنی کا ورودھ کیا تھا ' آج کیا آشا کر سکتے ہیں جبکہ اُس کے ہاتھ میں راج کاج کا ادھیکار اور شکتی بھی موجود ہے ہم یہی آشا کرسکتے ہیں کہ کانگریس فرانسیسی سامراج واد کا ورودھ کرے گی اور ہند چین کے راشٹری آزادی کے آندولن کا ساتھ دے گی . اگر ہم اسپین میں جن تنتر واد کا گلا گھونٹنے کے دنڈ میں سن ۳۶ع سے آج تک فرانکو کے اسپین سے راج نیتک سمبندھ توڑے رہ سکتے ہیں جو کہ ہمارے دیس سے بہت دور کا معاملہ ہے تو کیا فرانس کی سامراجی سرکار سے آج ہی اپنے پڑوس کے معاملے کے لئے ناتا نہیں توڑ سکتے . کیا اس طرح ہم فرانس پر پورا راج نیتک دباؤ نہیں ڈال سکتے کہ جناب آپ لوگ اب وہاں سے نکل ہی آئیں تو اچھا ہے. آپ نے اگر وہ راج تلوار کے زور سے لیا تھا تو سن ۴۲ع میں آپ کو جاپان نے مار بھگایا اور جاپان کو آپ کی کسی بھی سہایتا کے بنا ہند چین کے دیش بھکتوں نے مار بھگایا اب آپ وہاں کون سا ادھیکار رکھتے ہیں اور وہاں کیا کر رہے ہیں' آپکو کس نے بلایا ہے ؟

اور اگر یہ کہا جائے کہ صاحب وہ تو باؤ ڈائی مہودے کی رکشا کر رہے ہیں تو بھارت اور ہماری کانگریس تو باؤ ڈائی کی اصلیت کو اپنے تجربے سے اچھی طرح جانتی ہے وہاں تو صرف ایک باؤ ڈائی ہے ہمارے یہاں تو ہر رجواڑے میں ایک نہ

एक अंगरेज़ों का बिठाया हुआ पिट्ठू बाओडाई बैठा था और अंगरेज़ कह सकते थे कि साहब हम भी पूरे पाँच सौ अस्सी बाओ-डाइयों की रक्षा करना चाहते हैं इसलिये हम भारत छोड़कर नहीं जा सकते. बल्कि कभी कभी वह यह कहते भी थे, लेकिन हमने या कांग्रेस ने कभी इस दलील को माना ? कभी नहीं. तो फिर हम इन बिलकुल नये नवीले बाओडाई महाशय की रक्षा को इतना बड़ा कर्त्तव्य कैसे मान सकते हैं कि उसके लिये डेढ़ लाख फ़रान्सीसी सेना हिन्द चीन के सीने पर मूंग दलती रहे और एक राष्ट्र अपनी आज़ादी हासिल न कर सके ?

लेकिन कांग्रेस की तरफ़ से, हमारी सरकार या उसके विदेश विभाग की तरफ़ से ऐसी कोई आवाज़ नहीं उठ रही, बल्कि और उलटा हमारा तो फ़रान्स से पूरा सहयोग है. उसका राजदूत दिल्ली में मौजूद है, अगर नहीं है तो हिन्द चीन की राष्ट्री जनवादी सरकार का राजदूत. अगर हमारा कोई सम्पर्क नहीं है तो हिन्द चीन के राष्ट्री आज़ादी के आन्दोलन से. पंडित नेहरू खुद बराबर कहते रहते हैं कि पच्छिम अभी पूरब के अनुभव और विचारों को अच्छी तरह नहीं समझ रहा, लेकिन हम को साफ़ तौर से यह कहने से कौन रोकता है कि हम हिन्द चीन की क़ौमी आज़ादी के साथ हैं, जिसका मतलब यह है कि वहाँ से फ़रान्सीसी सेना को फ़ौरन निकलना चाहिये और हिन्द चीन की जनता को अपनी क़िस्मत का फ़ैसला करने के लिये छोड़ देना चाहिये कि वह बाओडाई की हकूमत चाहती है या हो ची मिंह की.

ایک انگریزوں کا بٹھایا ہوا پٹھو باؤ ڈائی بیٹھا تھا اور انگریز کہہ سکتے تھے کہ صاحب ہم بھی پورے پانچ سو اسی باؤ ڈائیوں کی رکشا کرنا چاہتے ہیں اس لئے ہم بھارت چھوڑ کر نہیں جا سکتے۔ بلکہ کبھی کبھی وہ یہ کہتے بھی تھے۔ لیکن ہم نے یا کانگریس نے کبھی اس دلیل کو مانا ؟ کبھی نہیں۔ تو پھر ہم اِن بالکل نئے نویلے باؤ ڈائی مہاشے کی رکشا کو اتنا بڑا کرتویہ کیسے مان سکتے ہیں کہ اُس کے لئے ڈیڑھ لاکھ فرانسیسی سینا ہند چین کے سینے پر مونگ دلتی رہے اور ایک راشٹر اپنی آزادی حاصل نہ کر سکے ؟

لیکن کانگریس کی طرف سے، ہماری سرکار یا اُس کے ودیش وبھاگ کی طرف سے ایسی کوئی آواز نہیں اُٹھ رہی۔ بلکہ اور اُلٹا ہمارا تو فرانس سے پورا سہیوگ ہے۔ اُس کا راج دوت دلی میں موجود ہے، اگر نہیں ہے تو ہند چین کی راشٹری جن وادی سرکار کا راج دوت۔ اگر ہمارا کوئی سمپرک نہیں ہے تو ہند چین کے راشٹری آزادی کے آندولن سے۔ پنڈت نہرو خود برابر کہتے رہتے ہیں کہ پچھم ابھی پورب کے انوبھو اور وچاروں کو اچھی طرح نہیں سمجھ رہا لیکن ہم کو صاف طور سے یہ کہنے سے کون روکتا ہے کہ ہم ہند چین کی قومی آزادی کے ساتھ ہیں جس کا مطلب یہ ہے کہ وہاں سے فرانسیسی سینا کو فوراً نکلنا چاہئے اور ہند چین کی جنتا کو اپنی قسمت کا فیصلہ کرنے کے لئے چھوڑ دینا چاہئے کہ وہ باؤ ڈائی کی حکومت چاہتی ہے یا ہوچی منہ کی۔

इसी तरह मलाया का मामला है. वहाँ तो ख़ुद हमारे पहले आक़ाओं ने अपना राज क़ायम कर रखा है और हमारे देश की तरह चीनियों, मलायों और मद्रासियों को लड़ाते रहते हैं. वहां की ग़ुलामी इतनी नंगी है कि अंगरेज़ शासकों ने कोई बाओडाई भी नहीं बनाया है. वैधानिक अधिकारों में से देश की जनता को कोई अधिकार, यहाँ तक कि दिखावे के प्रतिनिधि चुनने तक का अधिकार नहीं है. और यही मलाया आज बरसों से अंगरेज़ साम्राजियों के ख़िलाफ़ अपनी राष्ट्री आज़ादी के लिये लड़ रहा है. उसकी आज़ादी की समस्या हमारे लिये हिन्द चीन से भी ज़्यादा अपने ख़ास हित की समस्या है, क्योंकि हिन्द चीन में तो हमारे देश के लोग नहीं रहते लेकिन मलाया में तो रबड़ के बाग़ों और खानों के मज़दूर ज़्यादा तर हमारे ही देश के तामिल भाई हैं. उनकी राष्ट्री आज़ादी में हर तरह की मदद देना ही हमारा क़ौमी फ़र्ज़ हो जाता है. लेकिन क्या हमने आज तक मलाया की आज़ादी के लिये कभी कोई आवाज़ उठाई? मलाया की जनता पर साम्राजी अत्याचार यहाँ तक बढ़ा कि वही अंगरेज़ जो अपने को सभ्यता के ठीकेदार बतलाते थे बोर्नियो के जंगलों से आदम ख़ोर बनमानुसों को पकड़ लाये और मलाया की जनता पर छोड़ दिया कि वह जहाँ भी पायें उनको कच्चा चबा जाया करें. लेकिन इस अत्याचार से भी हमारे कान पर जूँ तक नहीं रेंगी और हम वैसे ही कान में तेल डाले बैठे रहे. बैठे ही नहीं रहे बल्कि हमने अपनी पिछली सारी नीति को भुलाकर मलाया की आज़ादी का ख़ून करने में अपने हाथ भी रंगे हैं. आज हमारे ही

(५६९)

اسی طرح ملایا کا معاملہ ھے . وھاں تو خود ھمارے پہلے آقاؤں نے اپنا راج قائم کر رکھا ھے اور ھمارے دیش کی طرح چینیوں، ملایوں اور مدراسیوں کو لڑاتے رھتے ھیں وھاں کی غلامی اتنی ننگی ھے کہ انگریز شاسکوں نے کوئی باؤ ڈائی بھی نہیں بنایا ھے . ویدھانک ادھیکاروں میں سے دیش کی جنتا کو کوئی ادھیکار، یہاں تک کہ دکھاوے کے پرتی ندھی چننے تک کا ادھیکار نہیں ھے . اور یہی ملایا آج برسوں سے انگریز سامراجیوں کے خلاف اپنی راشٹری آزادی کے لئے لڑ رھا ھے . اِس کی آزادی کی سمسیا ھمارے لئے ھند چین سے بھی زیادہ اپنے خاص ھت کی سمسیا ھے، کیونکہ ھند چین میں تو ھمارے دیش کے لوگ نہیں رھتے لیکن ملایا میں تو ربڑ کے باغوں اور کھانوں کے مزدور زیادہ تر ھمارے ھی دیش کے تامل بھائی ھیں . اُن کی راشٹری آزادی میں ھر طرح کی مدد دینا ھی ھمارا قومی فرض ھو جاتا ھے . لیکن کیا ھم نے آج تک ملایا کی آزادی کے لئے کبھی کوئی آواز اُٹھائی؟ ملایا کی جنتا پر سامراجی اتیاچار یہاں تک بڑھا کہ وھی انگریز جو اپنے کو سبھیتا کے ٹھیکیدار بتلاتے تھے، بورنیو کے جنگلوں سے آدم خور بن مانسوں کو پکڑ لائے اور ملایا کی جنتا پر چھوڑ دیا کہ وہ جہاں بھی پائیں انکو کچا چباجایا کریں . لیکن اِس اتیاچار سے بھی ھمارے کان پر جوں تک نہیں رینگی اور ھم ویسے ھی کان میں تیل ڈالے بیٹھے رھے . بیٹھے ھی نہیں رھے بلکہ ھم نے اپنی پچھلی ساری نیتی کو بھلاکر ملایا کی آزادی کا خون کرنے میں اپنے ھاتھ بھی رنگے ھیں . آج ھمارے ھی دیش کے گورکھا سپاھیوں کو انگریز ملایا میں ...

(۵۶۹)

के आन्दोलन को कुचलने के लिये इस्तेमाल कर रहे हैं. और अब जब कि कोरिया में अंगरेज़ी फ़ौजें भेजने की ज़रूरत पड़ी है तो यही हमारे गोरखे भाई हाँग काँग भेजे जा रहे हैं ताकि हाँग काँग की अंगरेज़ी फ़ौज कोरिया की लड़ाई में हिस्सा ले सके.

इस तरह हम एशिया की आज़ादी के मददगार और दोस्त बनने के बजाए कम से कम अपने अमल से उसके दुश्मन मालूम होने लगे हैं.

यह ज़रूर है कि इन्डोनेशिया के मामले में हमने डच साम्राजियों के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाई थी और इससे पता चलता है कि जब हम चाहें तो अपनी आवाज़ से दूर दूर तक काफ़ी खलबली मचा सकते हैं और अपने दोस्तों के साथ जंग में कूदे बिना भी उनको बहुत कुछ मज़बूत बना सकते हैं. लेकिन इन्डोनेशिया का मामला ऐसा था जिसमें अंगरेज़ साम्राजी भी डच हमले के ख़िलाफ़ थे और अमरीकी भी. इसी तरह यह भी सच है कि हमने चीन की जनवादी सरकार को मान कर एशिया की आज़ादी के हित में एक बड़ा भारी क़दम उठाया है. लेकिन फिर यह भी एक ऐसा क़दम है जो हमने अंगरेज़ों के पूरे समर्थन और सहयोग के साथ उठाया है, अगरचे अमरीकी शासकों को हमारी या अंगरेज़ों की यह हरकत बिलकुल पसन्द नहीं आई.

अब यह आख़िरी मामला कोरिया का सामने है. इसमें भी स्टालिन को चिट्ठी लिखकर पंडित नेहरू ने एशिया के फ़ायदे ही के लिये क़दम उठाया था, लेकिन जब तक अमरीका भी मानने को तैयार न होता, इस क़दम का अमली नतीजा कुछ नहीं निकल सकता

کے اندولن کو کچلنے کے لئے استعمال کر رہے ہیں. اور اب جبکہ کوریا میں انگریزی فوجیں بھیجنے کی ضرورت پڑی ہے تو یہی ہمارے گورکھے بھائی ہانگ کانگ بھیجے جا رہے ہیں تاکہ ہانگ کانگ کی انگریزی فوج کوریا کی لڑائی میں حصہ لے سکے.

اس طرح ہم ایشیا کی آزادی کے مددگار اور دوست بننے کے بجائے کم سے کم اپنے عمل سے اس کے دشمن معلوم ہونے لگے ہیں.

یہ ضرور ہے کہ انڈونیشیا کے معاملے میں ہم نے ڈچ سامراجیوں کے خلاف آواز اٹھائی تھی اور اس سے پتہ چلتا ہے کہ جب ہم چاہیں تو اپنی آواز سے دور دور تک کافی کھلبلی مچا سکتے ہیں اور اپنے دوستوں کے ساتھ جنگ میں کودے بنا بھی اُن کو بہت کچھ مضبوط بنا سکتے ہیں. لیکن انڈونیشیا کا معاملہ ایسا تھا جس میں انگریز سامراجی بھی ڈچ حملے کے خلاف تھے اور امریکی بھی. اسی طرح یہ بھی سچ ہے کہ ہم نے چین کی جن وادی سرکار کو مان کر ایشیا کی آزادی کے ہت میں ایک بڑا بھاری قدم اٹھایا ہے. لیکن پھر یہ بھی ایک ایسا قدم ہے جو ہم نے انگریزوں کے پورے سمرتھن اور سہیوگ کے ساتھ اٹھایا ہے، اگرچہ امریکی شاسکوں کو ہماری یا انگریزوں کی یہ حرکت بالکل پسند نہیں آئی.

اب یہ آخری معاملہ کوریا کا سامنے ہے. اس میں بھی استالن کو چٹھی لکھ کر پنڈت نہرو نے ایشیا کے فائدے ہی کے لئے قدم اُٹھایا تھا، لیکن جب تک امریکہ بھی ماننے کو تیار نہ ہوتا، اِس قدم کا عملی نتیجہ کچھ نہیں نکل سکتا

था. लेकिन साथ ही साथ हमारी कांगरेस सरकार ने उत्तरी कोरिया को हमला आवर ठहराने में अमरीका का भी साथ दिया और यह उस वक़्त हुआ जब कि उत्तरी कोरियाकी एक बात तक नहीं सुनी गई. उसे अपनी सफ़ाई देने के लिये सुरक्षा समिति के अन्दर बुलाया तक नहीं गया और अब तक नहीं बुलाया जा रहा है. हालाँ कि आज ही की तरह सन् ३६ ई० में जब हब्श का गला घोंटने के लिये इटली आगे बढ़ा था और फ़रान्स और बरतानिया ने अपने अमल से उसकी हिम्मत बढ़ाई थी और उसे हब्श को हड़प करने की पूरी सहूलत दी थी तो उस वक़्त कांगरेस ने कहा था कि हम लीग आफ़ नेशन्ज़ को नहीं मानते, वह तो अंगरेज़ों और फ़रान्सीसियों की हाँ में हाँ मिलाने वाली एक जमाअत है. लीग आफ़ नेशन्ज़ ने अगरचे दिखावे के लिये इटली पर व्योपारी रुकावटें भी लगाई थीं लेकिन फिर भी हमनें अपना असन्तोष ज़ाहिर किया था और साफ़ कहा था कि दिखावे के लिये लीग जो कुछ भी कह रही हो लेकिन असल में तो वह इटली की मदद ही कर रही है. लेकिन आज हम यह भूल गये हैं कि यू० एन० ओ० भी अमरीका और बरतानिया की जमाअत है. फ़िलस्तीन, इन्डोनेशिया, कश्मीर, दक्खिनी अफ़रीक़ा और भारत के मामलों को उसने कई बरस चलाया और तय नहीं किया. यह बात भी अभी तक तय नहीं होने दी कि ऐटम बम और ऐटमी हथियारों के इस्तेमाल पर पाबन्दी लगाई जाय जिस पर पूरी दुनिया की ९९ फ़ीसदी जनता का एक मत है. लेकिन इस सम्बन्ध में एक तरफ़ तो अमरीकी जनरल मैकार्थर ने

تھا . لیکن ساتھ ہی ساتھ ہماری کانگریس سرکار نے اُتری کوریا کو حملہ آور ٹھہرانے میں امریکہ کا بھی ساتھ دیا اور یہ اُس وقت ہوا جبکہ اُتری کوریا کی ایک بات تک نہیں سنی گئی. اُسے اپنی صفائی دینے کے لئے سورکشا سمیتی کے اندر بلایا تک نہیں گیا اور ابتک نہیں بلایا جارہا ہے . حالانکہ آج ہی کی طرح سن ۳۶ء میں جب حبش کا گلا گھونٹنے کے لئے اِٹلی آگے بڑھا تھا اور فرانس اور برطانیہ نے اپنے عمل سے اُس کی ہمت بڑھائی تھی اور اُسے حبش کو ہڑپ کرنے کی پوری سہولت دی تھی تو اُس وقت کانگریس نے کہا تھا کہ ہم لیگ آف نیشنز کو نہیں مانتے ' وہ تو انگریزوں اور فرانسیسیوں کی ہاں میں ہاں ملانے والی ایک جماعت ہے . لیگ آف نیشنز نے اگرچہ دکھاوے کے لئے اِٹلی پر بیوپاری رکاوٹیں بھی لگائی تھیں لیکن پھر بھی ہم نے اپنا اسنتوش ظاہر کیا تھا اور صاف کہا تھا کہ دکھاوے کے لئے لیگ جو کچھ بھی کہ رہی ہو لیکن اصل میں تو وہ اِٹلی کی مدد ہی کر رہی ہے . لیکن آج ہم یہ بھول گئے ہیں کہ یو . این . او . بھی امریکہ اور برطانیہ کی جماعت ہے . فلسطین ' انڈونیشیا ' کشمیر ' دکھنی افریقہ اور بھارت کے معاملوں کو اُس نے کئی برس چلایا اور طے نہیں کیا . یہ بات بھی ابھی تک طے نہیں ہونے دی کہ ایٹم بم اور ایٹمی ہتھیاروں کے استعمال پر پابندی لگائی جائے جس پر پوری دنیا کی ۹۹ فیصدی جنتا کا ایک مت ہے . لیکن اس سمبندھ میں ایک طرف تو امریکی جنرل میکارتھر نے کوریا میں جاکر اُتری کوریا پر حملہ کرنے کا جال بچھایا

और दूसरी ओर ख़ुद ही हमला शुरू करके अपने बहुमत के बल पर उत्तरी कोरिया को हमला करने वाला एलान करा दिया. अगर भारत को भी अपने साधनों से प्राप्त हुई ख़बरों पर इतना ही यक़ीन था और वह यह जानता था कि लड़ाई उत्तरी कोरिया ने छेड़ी है तो फिर उसने सुरक्षा समिति में क्यों नहीं ज़ोर लगाया कि उत्तरी और दक्खिनी दोनों कोरिया वहाँ आ कर अपनी बात कहें. दुनिया इस बात को ख़ुद जान लेगी कि हमला करने वाला और अत्याचारी कौन है ?

और अगर अमरीकी फ़ौजें कोरिया में ऐसा ही भला काम करने गई थीं तो देश की दो तिहाई आबादी पर अधिकार होते हुए, दक्खिनी कोरिया की इतनी बड़ी फ़ौज होते हुए, अमरीका के अपने अच्छे से अच्छे और अधिक से अधिक हथियार होते हुए, सिर्फ़ साठ मील के फ़ासले पर अमरीका का जापान जैसा महान गढ़ होते हुए और अमरीकियों के इतने जनतंत्र वादी और देश प्रेमी होते हुए कामयाबी उन्हें क्यों नहीं हुई. दक्खिनी कोरिया की पूरी फ़ौज की फ़ौज लड़ाई शुरू होने के तीन दिन के ही अन्दर इस तरह क्यों पिघल कर ख़तम हो गई जैसे बरफ़ धूप में पिघल कर ख़तम हो जाती है. कौन सी ऐसी बात थी जो उसके बड़े बड़े अफ़सरों, जनरलों और कर्नेलों तक को आत्महत्या करने पर उकसा रही थी ? अगर ऐसा नहीं है कि कोरिया का एक एक बच्चा तक अमरीका के ख़िलाफ़ है तो फिर अमरीकी फ़ौज को यह हुक्म क्यों निकालना पड़ा कि गहराई में मीलों दूर तक फैली हुई अमरीकी फ़ौजी लाइन में कोई भी कोरियन दिखाई देगा तो उसे फ़ौरन गोली मार दी जायगी चाहे

اور دوسری اور خود ہی حملہ شروع کر کے اپنے بہومت کے بل پر اُتری کوریا کو حملہ کرنے والا اعلان کرا دیا۔ اگر بھارت کو بھی اپنے سادھنوں سے پراپت ہوئی خبروں پر اتنا ہی یقین تھا اور وہ یہ جانتا تھا کہ لڑائی اتری کوریا نے چھیڑی ہے تو پھر اُس نے سورکشا سمیتی میں کیوں نہیں زور لگایا کہ اتری اور دکھنی دونوں کوریا وہاں آ کر اپنی بات کہیں۔ دنیا اس بات کو خود جان لے گی کہ حملہ کرنے والا اور اتیاچاری کون ہے؟

اور اگر امریکی فوجیں کوریا میں ایسا ہی بھلا کام کرنے گئی تھیں تو دیش کی دوتہائی آبادی پر ادھیکار ہوتے ہوئے، دکھنی کوریا کی اتنی بڑی فوج ہوتے ہوئے، امریکہ کے اپنے اچھے سے اچھے اور ادھک سے ادھک ہتھیار ہوتے ہوئے، صرف ساٹھ میل کے فاصلے پر امریکہ کا جاپان جیسا مہان گڑھ ہوتے ہوئے اور امریکیوں کے اتنے جن تنتر وادی اور دیش پریمی ہوتے ہوئے کامیابی اُنہیں کیوں نہیں ہوئی۔ دکھنی کوریا کی پوری فوج کی فوج لڑائی شروع ہونے کے تین دن کے ہی اندر اس طرح کیوں پگھل کر ختم ہو گئی جیسے برف دھوپ میں پگھل کر ختم ہو جاتی ہے۔ کون سی ایسی بات تھی جو اُس کے بڑے بڑے افسروں، جنرلوں اور کرنلوں تک کو آتم ہتیا کرنے پر اُکسا رہی تھی؟ اگر ایسا نہیں ہے کہ کوریا کا ایک ایک بچہ تک امریکہ کے خلاف ہے تو پھر امریکی فوج کو یہ حکم کیوں نکالنا پڑا کہ گہرائی میں میلوں دور تک پھیلی ہوئی امریکی فوجی لائن میں کوئی بھی کوریین دکھائی دے گا تو اسے فوراً گولی مار دی جائے گی چاہے

वह दक्खिनी कोरिया ही की फ़ौजी वर्दी क्यों न पहने हो ? जिन शहरों पर अमरीकी अधिकार था उनमें अमरीकी सिपाहियों के सिवाय पूरे पूरे नगर की आबादी के लिये बहत्तर बहत्तर घंटों का करफ़्यू क्यों लगाया गया और उसमें इतनी सख़्ती क्यों हुई कि कोई बच्चा भी करफ़्यु के वक़्त घर से निकलेगा तो उसे फ़ौरन गोली से उड़ा दिया जायगा ? आख़िर यह करफ़्यु उत्तरी कोरिया की फ़ौज को क्यों नहीं लगाना पड़ा ? वह तो करफ़्यू लगाने की जगह जहाँ जाते हैं ज़मीनें किसानों में बाँटते चलते हैं. और फिर आख़िर में यह कि ऐसा क्यों होता है कि छापा मार कोरियन अमरीकियों ही को तंग करने के लिये उनकी लाइन के पीछे निकल आते हैं. आख़िर उत्तरी कोरिया की सरकार और फ़ौज को तंग करने के लिये हज़ार दो हज़ार ही सही लेकिन नाम के भी दक्खिनी कोरिया के छापा मार क्यों नहीं भेजे जा सके ? और यह सब बातें ऐसी क्यों हैं जिनकी ख़ुद अमरीकी अख़बारचियों को ख़बरें देनी पड़ीं.

मानना पड़ेगा कि इस वक़्त कोरिया में दक्खिनी और उत्तरी कोरिया का सवाल नहीं है, बल्कि सवाल है सिर्फ़ कोरिया और अमरीका का. उत्तरी कोरिया ने दक्खिनी कोरिया पर हमला नहीं किया, बल्कि अमरीका ने अपनी ताक़त के घमन्ड में आकर एक देश की आज़ादी को हड़प करना चाहा, लेकिन राष्ट्री आन्दोलन के आगे, जनता में मिले जुले कोरिया की भावना के कारन, उसे मुँह की खानी पड़ रही है और रहेगी.

तो फिर इस लड़ाई में हमारा स्थान कहाँ था ? कोरिया के साथ [illegible] के ? और असल में हमने किस का साथ दिया.

وہ دکھنی کوریا ھي کی فوجی وردی کیوں نہ پہنے ہو ؟ جن شہروں پر امریکی ادھیکار تھا اُن میں امریکی سپاھیوں کے سوائے پورے پورے نگر کي آبادی کے لئے بہتر بہتر گھنٹوں کا کرفیو کیوں لگایا گیا اور اُس میں اتنی سختی کیوں ہوئی کہ کوئی بچہ بھی کرفیو کے وقت گھر سے نکلے گا تو اُسے فوراً گولی سے اُڑا دیا جائے گا ؟ آخر یہ کرفیو اُتری کوریا کی فوج کو کیوں نہیں لگانا پڑا ؟ وہ تو کرفیو لگانے کی جگہ جہاں جاتے ھیں زمینیں کسانوں میں بانٹتے چلتے ھیں . اور پھر آخر میں یہ کہ ایسا کیوں ہوتا ھے کہ چھاپہ مار کورین امریکیوں ھی کو تنگ کرنے کے لئے ان کی لائن کے پیچھے نکل آتے ھیں . آخر اُتري کوریا کی سرکار اور فوج کو تنگ کرنے کے لئے ہزار دو ہزار ھی سہی لیکن نام کے بھی دکھني کوریا کےچھاپہ مار کیوں نہیں بھیجے جاسکے؟ اور یہ سب باتیں ایسي کیوں ھیں جن کی خود امریکی اخبارچیوں کو خبریں دینی پڑیں .

ماننا پڑیگا کہ اِس وقت کوریا میں دکھني اور اتری کوریا کا سوال نہیں ھے ' بلکہ سوال ھے صرف کوریا اور امریکہ کا . اتري کوریا نے دکھنی کوریا پر حملہ نہیں کیا ' بلکہ امریکہ نے اپنی طاقت کے گھمنڈ میں آکر ایک دیش کی آزادی کو ہڑپ کرنا چاہا لیکن راشٹری اندولن کے آگے' جنتا میں ملے جلے کوریا کی بھاؤنا کے کارن' اُسے منہ کی کھانی پڑ رھي ھے اور رھے گی .

تو پھر اُس لڑائی میں ھمارا استھان کہاں تھا ؟ کوریا کے ساتھ یا امریکہ کے ؟ اور اصل میں ھم نے کس کا ساتھ دیا .

आख़िर मिस्र जैसे हम से कहीं ज़्यादा छोटे और कहीं कम शक्तिशाली देशों ने साफ़ साफ़ यू० एन० ओ० के ढोंग का भांडा कैसे फोड़ दिया ? हमारे मित्र इन्डो नेशिया तक ने, जिसकी आज़ादी भी अभी खटाई में पड़ी हुई है और बिलकुल पक्की नहीं हुई, सुरक्षा समिति के २७ जून वाले प्रस्ताव का विरोध करने का क्यों कर साहस किया ? और हम जो एशिया की आज़ादी के सब से बड़े हिमायती कहलाते हैं कोरिया का साथ देने से क्यों हिचकिचाने लगे ? हालाँकि आज हमारे देश में भी बहुमत एक छोटी सी एशियाई क़ौम पर महा पापी अमरीका के वार को देख कर दुखी और कोरिया की बहादुरी पर ताज्जुब ही नहीं कर रहा बल्कि बेहद ख़ुश भी है.

मेरा यह कहना है कि अगर हम साफ़ साफ़ कोरिया का साथ नहीं दे सकते थे तो कम से कम इतना तो कर सकते थे कि कोरिया की असलियत को हमारी जनता से छिपाने की जो कोशिशें हो रही हैं उन्हें ही सफल न होने देते, फिर तो जनता ख़ुद ही अपनी राय इस गूँजगरज के साथ बता देती कि न्युयार्क की आसमान से बातें करने वाली इमारतें तक हिल जातीं. हमको कम से कम यह तो मालूम करने से न रोका जाता कि आज अमरीकी हवाई जहाज़ कोरिया के छोटे छोटे शहरों और देहातों पर उस से भी ज़्यादा भयानक बमबारी कर रहे हैं जो पिछली लड़ाई में जर्मनी जैसे बड़े और तैयार मुल्क के शहरों पर लड़ाई के आख़िरी ज़माने में की जाती थी. हमको यह मालूम होने नहीं दिया जाता कि कोरिया के शहरों में हज़ारों देशभक्तों को, जिन्हें दक्खिनी कोरिया की अमरीकी पिट्ठू हुकूमत ने जेलों में बन्द कर रखा था रोज़ाना अमरीकी सिपाही गोलियों से उड़ा देते हैं.

آخر مصر جیسے ہم سے کہیں زیادہ چھوٹے اور کہیں کم شکتی شالی دیشوں نے صاف صاف یو . این . او . کے ڈھونگ کا بھانڈا کیسے پھوڑ دیا ؟ ہمارے متر انڈونیشیا تک نے ' جس کی آزادی بھی ابھی کھٹائی میں پڑی ہوئی ہے اور بالکل پکی نہیں ہوئی ' سورکشا سمیتی کے ۲۷ جون والے پرستاؤ کا ورودھ کرنے کا کیونکر ساہس کیا ؟ اور ہم جو ایشیا کی آزادی کے سب سے بڑے حمایتی کہلاتے ہیں کوریا کا ساتھ دینے سے کیوں ہچکچانے لگے ؟ حالانکہ آج ہمارے بھی دیش میں بہو مت ایک چھوٹی سی ایشیائی قوم پر مہا پاپی امریکہ کے وار کو دیکھ کر دکھی اور کوریا کی بہادری پر تعجب ہی نہیں کررہا بلکہ بے حد خوش بھی ہے .

میرا یہ کہنا ہے کہ اگر ہم صاف صاف کوریا کا ساتھ نہیں دے سکتے تھے تو کم سے کم اتنا تو کر سکتے تھے کہ کوریا کی اصلیت کو ہماری جنتا سے چھپانے کی جو کوششیں ہو رہی ہیں انہیں ہی سپھل نہ ہونے دیتے ' پھر تو جنتا خود ہی اپنی رائے اِس گونج گرج کے ساتھ بتا دیتی کہ نیویارک کی آسمان سے باتیں کرنے والی عمارتیں تک ہل جاتیں . ہم کو کم سے کم یہ تو معلوم کرنے سے نہ روکا جاتا کہ آج امریکی ہوائی جہاز کوریا کے چھوٹے چھوٹے شہروں اور دیہاتوں پر اُس سے بھی زیادہ بھیانک بمباری کر رہے ہیں جو پچھلی لڑائی میں جرمنی جیسے بڑے اور تیار ملک کے شہروں پر لڑائی کے آخری زمانے میں کی جاتی تھی . ہم کو یہ معلوم ہونے نہیں دیا جاتا کہ کوریا کے شہروں میں ہزاروں دیش بھکتوں کو' جنہیں دکھنی کوریا کی امریکی پٹھو حکومت نے جیلوں میں بند کر رکھا تھا روزانہ امریکی سپاہی گولیوں سے اڑا دیتے ہیں .

इंगलैन्ड का "इकनामिस्ट" जैसा अख़बार, जो एशिया वालों और एशिया की आज़ादी का बहुत बड़ा दुश्मन है, वह तो यह लिखता है कि कोरिया पर अमरीकी बमबारी से सारा एशिया अमरीका के ख़िलाफ़ होता जा रहा है. इंगलैन्ड के बिलकुल चर्चिल वादी अख़बारों तक में कोरिया के देश भक्तों को ज़िन्दा दफ़नाने की तसवीरें, जो अमरीकी सिपाहियों की जेबों से निकलती हैं, छप जाती हैं, लेकिन भारत में, जहाँ की जनता कोरिया के भविष्य से गहरी दिलचस्पी रखती है, उस को कुछ नहीं बतलाया जाता. उसके लिये ख़बरों के सारे दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं.

(५८४)

लेकिन सचाई किसी से भी कब तक छिपाई जा सकती है और फिर आज कल के ज़माने में जब कि रेडियो भी है, कम से कम इंगलिस्तान के अख़बारों ही का एक ज़रिया मौजूद है, और फिर ख़ुद अमरीकी ख़बर भेजने वालों ही को बात छिपाने का कौन सा ऐसा ख़ास हुनर आता है. आज भारत की जनता को मालूम हो चला है कि अमरीका न सिर्फ़ पूरे कोरिया पर हमला कर रहा है, बल्कि यह भी कि यह हमला बिलकुल फ़ाशिस्ट ढंग से किया जा रहा है.

ऐसी हालत में हमारे देश की जनता, जिसको पहले से भी साम्राजी अत्याचारों का बहुत कुछ तजरबा है और जो जानती है कि अभी एशिया साम्राजकी गुलामी से आज़ाद नहीं हुआ है, ख़ुद उसके देश में पुर्तगाली और फ़रान्सीसी साम्राज अभी तक क़ायम हैं, एशियाकी आ-ज़ादी का और ज़्यादा साहस और जोश के साथ समर्थन करने और उसकी हर तरहकी मदद करनेके लिये तैयार होगी और यह माँग करेगी कि एशिया के चप्पे चप्पे से हर रंग के साम्राजी का मुँह काला किया

انگلینڈ کا ''اکنامسٹ'' جیسا اخبار' جو ایشیا والوں اور ایشیا کی آزادی کا بہت بڑا دشمن ھے ' وہ تو یہ لکھتا ھے کہ کوریا پر امریکی بمباری سے سارا ایشیا امریکہ کے خلاف ھوتا جارھا ھے . انگلینڈ کے بالکل چرچل وادی اخباروں تک میں کوریا کے دیش بھکتوں کو زندہ دفنانے کی تصویریں ' جو امریکی سپاھیوں کی جیبوں سے نکلتی ھیں ' چھپ جاتی ھیں ' لیکن بھارت میں ' جہاں کی جنتا کوریا کے بھوشیہ سے گہری دلچسپی رکھتی ھے ' اُس کو کچھ نہیں بتایا جاتا . اُس کے لئے خبروں کے سارے دروازے بند کر دیئے جاتے ھیں .

(۵۸۴)

لیکن سچائی کسی سے بھی کب تک چھپائی جا سکتی ھے اور پھر آج‌کل کے زمانے میں جبکہ ریڈیو بھی ھے ' کم سے کم انگلستان کے اخباروں ھی کا ایک ذریعہ موجود ھے' اور پھر خود امریکی خبر بھیجنے والوں ھی کو بات چھپانے کا کون سا ایسا خاص ھنر آتا ھے . آج بھارت کی جنتا کو معلوم ھو چلا ھے کہ امریکہ نہ صرف پورے کوریا پر حملہ کر رھا ھے ' بلکہ یہ بھی کہ یہ حملہ بالکل فاشسٹ ڈھنگ سے کیا جا رھا ھے .

ایسی حالت میں ھمارے دیش کی جنتا جس کو پہلے سے بھی سامراجی اتیاچاروں کا بہت کچھ تجربہ ھے اور جو جانتی ھے کہ ابھی ایشیا سامراج کی غلامی سے آزاد نہیں ھوا ھے ' خود اُس کے دیش میں پرتگالی اور فرانسیسی سامراج ابھی تک قائم ھیں ' ایشیا کی آزادی کا اور زیادہ ساھس اور جوش کے ساتھ سمرتھن کرنے اور اُس کی ھر طرح کی مدد کرنے کے لئے تیار ھوگی اور یہ مانگ کرے گی کہ ایشیا کے چپے چپے سے ھر رنگ کے سامراجی کا منہ کالا کیا

जाये. चाहे वह अंगरेज़ हो या अमरीकी, फ़रान्सीसी हो या डच. इन साम्राजियों को एशिया में ज़रा क़दम रखने की भी जगह नहीं दी जायगी. उनकी फ़ौजें, अड्डे, अफ़सर, मन्डियाँ और उनकी पूँजी सबको एक झाड़ू में समेट कर साफ़ कर दिया जायगा.

جائے . چاہے وہ انگریز ہو . یا امریکي' فرانسیسي ہو یا ڈچ . اِن سامراجیوں کو ایشیا میں ذرا قدم رکھنے کی بھی جگہ نہیں دی جائے گي . اُن کی فوجیں' اڈے' افسر' منڈیاں اور اُن کي پونجي سب کو ایک جھاڑو میں سمیٹ کر صاف کر دیا جائے گا .

रहने का मौक़ा न मिले तब क्या होगा ? फिर अगर इज्जत के साथ रहने का मौक़ा मिलना ज़रूरी समझा जाय तो जनता की भाषा, रीति-रवाज, रहन-सहन, संस्कृति, धर्म वग़ैरा को कैसे नज़रन्दाज़ किया जा सकता है ? अगर यह सब कुछ है तो क्या यह ज़रूरी नहीं है कि जनता राजनैतिक तौर से आज़ाद हो जाय जिससे समाजी, माली और कलचरी आज़ादी के लिये सभी दरवाज़े खुल जायँ.

गांधी जी का तर्क (मतंक़) इसी तरह चलता था, या, यों कहें कि गांधी जी जिन मसलों को उठाते थे उन मसलों में ही उनके हल भी छिपे रहते थे. उनके यहां मसला और हल को अलग करके नहीं देखा जा सकता.

इसीलिये गांधी जी ने आज़ाद हिन्दुस्तान की रिपबलिक के पहिले सदर के लिये क़ाबिल से क़ाबिल आदमी के बावजूद किसी हरिजन या किसान या औरत को ही रखने की राय दी. लोगों ने इस राय का मज़ाक़ उड़ाया मगर गांधी जी की नज़र में किसी हरिजन, या किसान या औरत की जो जगह थी वह किसी भी भारी भरकम नेता की न थी. ऐसा इसलिये नहीं कि वह भारी भरकम नेता से चिढ़ते थे बल्कि इसलिये कि वह समझते थे कि एक अनपढ़ देहाती किसान, या हरिजन या औरत समाज और धरती के बहुत नज़दीक रहने के कारन देश के विधान को ज़्यादा कामयाबी के साथ चला सकता है.

गांधी जी किसानों और मज़दूरों और औरतों और हरिजनों पर इन नेताओं से अधिक भरोसा करते थे. गांधी जी ज़िन्दगी भर

رہنے کا موقع نہ ملے تب کیا ہوگا ؟ پھر اگر عزت کے ساتھ رہنے کا موقع ملنا ضروری سمجھا جائے تو جنتا کی بھاشا، ریت رواج، رہن سہن، سنسکرتی، دھرم وغیرہ کو کیسے نظرانداز کیا جا سکتا ہے ؟ اگر یہ سب کچھ ہے تو کیا یہ ضروری نہیں ہے کہ جنتا راج نیتک طور سے آزاد ہوجائے جس سے سماجی، مالی اور کلچری آزادی کے لئے سبھی دروازے کھل جائیں۔

گاندھی جی کا ترک (منطق) اسی طرح چلتا تھا یا، یوں کہیں کہ گاندھی جی جن مسئلوں کو اٹھاتے تھے اُن مسئلوں میں ہی اُن کے حل بھی چھپے رہتے تھے۔ اُن کے یہاں مسئلہ اور حل کو الگ کرکے نہیں دیکھا جا سکتا۔

اسی لئے گاندھی جی نے آزاد ہندستان کی ری پبلک کے پہلے صدر کے لئے قابل سے قابل آدمی کے باوجود کسی ہریجن یا کسان یا عورت کو ہی رکھنے کی رائے دی۔ لوگوں نے اس رائے کا مذاق اڑایا مگر گاندھی جی کی نظر میں کسی ہریجن یا کسان یا عورت کی جو جگہ تھی وہ کسی بھی بھاری بھرکم نیتا کی نہ تھی۔ ایسا اس لئے نہیں کہ وہ بھاری بھرکم نیتا سے چڑھتے تھے۔ بلکہ اس لئے کہ وہ سمجھتے تھے کہ ایک اَن پڑھ دیہاتی کسان یا ہریجن یا عورت سماج اور دھرتی کے بہت نزدیک رہنے کے کارن دیش کے ودھان کو زیادہ کامیابی کے ساتھ چلا سکتا ہے۔

گاندھی جی کسانوں اور مزدوروں اور عورتوں اور ہریجنوں پر ان نیتاؤں سے ادھک بھروسا کرتے تھے۔ گاندھی جی زندگی بھر

आज़ादी के बाद

(भाई श्रीकृष्ण दास)

१५ अगस्त अब पुरानी ग़ुलामी के ख़ात्मे और नई ग़ुलामी के आरम्भ का एक दोराहा बन चुका है . हमें ख़ुशी है कि देश ने उसे उसी रूपमें मनाया. यह इस बात का सबूत है कि देश की साधारन जनता की समझ अभी भी ठिकाने है और उसकी निगाह धुँधली नहीं हुई है. फ़ौजी मार्च-परेड, सलामी,तोपों की गरज और 'जन गन मन' के बैन्ड के बीच कुछ नेताओं के तोता रटू भाषनों के अलावा अगर किसी तरह के जश्न को इन आँखों ने देखा तो वह ऊँची कोठियों और बंगलों में ही दिखाई दिया . ग़रीब की झोपड़ी अंधेरी ही रही, उनके चालों में आशा या ज़िन्दगी की किरन न जासकी, न जा सकी .

पुरानी ग़ुलामी के ख़ात्मे के समय, इसी १५ अगस्त के दिन जिन आँखों में ख़ुशी के आंसू छलछला आये थे उन्हीं आँखों के आँसू पिछले तीन बरस की जलन और आहों के कारन सूख गये थे . ऐसा क्यों ? आज़ादी की ख़ुशी पिसी-चुसी जनता से अधिक दूसरे किस आदमी या तबक़े को हो सकती है ? मगर काग़ज़ी आज़ादी या विधान की आज़ादी एक चीज है, ज़िन्दा रहने की आज़ादी, खाने-पीने, कपड़ा पहनने और घर बसाने, हँसने-बोलने, प्रेम मुहब्बत करने, मिल जुल कर देश में अमन शान्ति क़ायम करने को आज़ादी

آزادی کے بعد

(بھائی شری کرشن داس)

۱۵ اگست اب پراني غلامی کے خاتمے اورنئی غلامی کے آرمبھ کا ایک دو راھا بن چکا ھے ۔ ھمیں خوشي ھے کہ دیش نے اِسے اُسی روپ میں منایا ۔ یہ اسبات کا ثبوت ھے کہ دیش کی سادھارن جنتا کي سمجھ ابھی بھی ٹھکانے ھے اور اس کی نگاہ دھندلی نہیں ھوئی ھے ۔ فوجی مارچ پریڈ ' سلامی ' توپوں کی گرج اور 'جن گن من ' کے بینڈ کے بیچ کچھ نیتاؤں کے طوطا رٹو بھاشنوں کے علاوہ اگر کسی طرح کے جشن کو ان آنکھوں نے دیکھا تو وہ اُونچی کوٹھیوں اور بنگلوں میں ھی دکھائي دیا ۔ غریب کی جھونپڑی اندھیری ھی رھي ' انکے چالوں میں آشا یا زندگی کی کرن نہ جاسکی ' نہ جاسکي ۔

پرانی غلامی کے خاتمے کے سمے ' اِسی پندرہ اگست کے دن جن آنکھوں میں خوشی کے آنسو چھل چھلا آئے تھے اُنھیں آنکھوں کے آنسو پچھلے تین برس کی جلن اور آھوں کے کارن سوکھ گئے تھے ۔ ایسا کیوں ؟ آزادي کی خوشی پسی چسی جنتا سے ادھک دوسرے کس آدمی یا طبقے کو ھو سکتي ھے ؟ مگر کاغذي آزادی یا ودھان کی آزادی ایک چیز ھے ' زندہ رھنے کی آزادي ' کھانے پینے ' کپڑا پہننے اور گھر بسانے ' ھنسنے بولنے ' پریم محبت کرنے ' مل جل کر دیش میں امن شانتی قائم کرنے کی آزادی

बिलकुल दूसरी चीज़ है. आप कहेंगे, हमारे लोकतंत्रवादी विधान में तो जनता को, हर नागरिक को, यह अधिकार दे दिये गये हैं . मगर यही तो मुश्किल है . काग़ज़ पर, विधान में, क़ानून में तो सब को सब तरह की आज़ादी दी गई है. मगर उस आज़ादी को, उस अधिकार को भोगने की आज़ादी जनता को मिली है या नहीं ? कपड़ा पहनने की आज़ादी सबको है. मगर पहनने के लिये वाजिब दामों पर कपड़ा मिलता कहाँ है ? खाना खाने का सबको अधिकार है . मगर पेट भर खाना दोनों जून मिलता किसको है ? अधिक ठंड, गरमी और पानी, आँधी तूफ़ान से बचने और आराम की नींद सोने के लिये घर बनाने की आज़ादी सबको है. मगर आज पक्की हवेली तो क्या छप्पर डाल लेना, फूस खपरैल की छाजन लगा लेना भी किसको नसीब है ? पढ़ने-लिखने, अपने शरीर और दिमाग़ को चुस्त, तेज़ और योग्य बना लेने की आज़ादी सबको है. मगर आज क्या हमारे बच्चे सचमुच अच्छी और पूरी शिक्षा पा रहे हैं ? क्या उनका दिमाग़ और शरीर सचमुच पूरी तरह बढ़ने, तरक़्क़ी करने का पूरा मौक़ा पा रहा है ? हमें मेल-मुहब्बत से रहने, भाई चारा निभाने और शान्ति और अमन को क़ायम रखने की पूरी आज़ादी है. मगर इस क़ीमती और ख़ूबसूरत आज़ादी को ख़त्म कर देने की भी आज़ादी तो लोगों को हासिल है.

१५ अगस्त के पहिले, आसमान में सूरज, चांद, तारे चमकते थे, हवा चलती थी, नदियाँ कल कल करती बहती थीं, फूल खिलते थे, कलियाँ चटखती थीं, चिड़ियाँ चहकती थीं, भौंरे गुनगुनाते थे, खेतों

بالکل دوسری چیز ہے . آپ کہینگے' ہمارے لوک تنتر وادی ودھان میں تو جنتا کو ' ہر ناگرک کو' یہ ادھیکار دے دئے گئے ہیں . مگر یہی تو مشکل ہے. کاغذ پر' ودھان میں' قانون میں تو سبکو سبطرح کی آزادی دی گئی ہے . مگر اُس آزادی کو اُس ادھیکار کو بھوگنے کی آزادی جنتا کو ملی ہے یا نہیں ؟ کپڑا پہننے کی آزادی سب کو ہے . مگر پہننے کے لئے واجب داموں پر کپڑا ملتا کہاں ہے ؟ کھانا کھانے کا سبکو ادھیکار ہے . مگر پیٹ بھر کھانا دونوں جون ملتا کسکو ہے ؟ ادھک ٹھنڈ' گرمی اور پانی' آندھی طوفان سے بچنے اور آرام کی نیند سونے کے لئے گھر بنانے کی آزادی سبکو ہے . مگر آج پکی حویلی تو کیا چھپر ڈال لینا ' پھوس کھپریل کی چھاجن لگا لینا بھی کسکو نصیب ہے ؟ پڑھنے لکھنے ' اپنے شریر اور دماغ کو چست ' تیز اور یوگیہ بنا لینے کی آزادی سبکو ہے . مگر آج کیا ہمارے بچے سچ مچ اچھی اور پوری شکشا پا رہے ہیں ؟ کیا اُن کا دماغ اور شریر سچ مچ پوری طرح بڑھنے ' ترقی کرنے کا پورا موقع پا رہا ہے ؟ ہمیں میل محبت سے رہنے ' بھائی چارہ نبھانے اور شانتی اور امن کو قائم رکھنے کی پوری آزادی ہے . مگر اِس قیمتی اور خوبصورت آزادی کو ختم کردینے کی بھی آزادی تو لوگوں کو حاصل ہے .

۱۵ اگست کے پہلے' آسمان میں سورج' چاند' تارے چمکتے تھے' ہوا چلتی تھی' ندیاں کل کل کرتی بہتی تھیں' پھول کھلتے تھے' کلیاں چٹکتی تھیں' چڑیاں چہکتی تھیں' بھونرے گنگناتے تھے' کھیتوں

की बालियाँ झूमती थीं, आम बौराते थे, टेसू फूलते थे, महुए महकते थे. आज़ादी के बाद भी यह सारा का सारा कारोबार ज्यों का त्यों चल रहा है. आज़ादी के पहले ग़रीब की ईद मोहर्रम बनी रहती थी. सूरज, चांद, तारे, हवा, नदी, फूल, फल, चिड़ियों भौंरों, खेत बारा, किसी पर उसका अधिकार न था. उसके लिये सभी बेगाने थे, सभी ग़ैर. अंगरेज़ों की मेहरबानी से आज़ादी मिली तो सदा की भूकी, प्यासी, उदास, परेशान जनता को विश्वास हुआ कि अब उसको राहत मिलेगी. मगर जनता की आज़ादी और ख़ुशी के चोर, जो कमन्द लगाये बैठे थे, जनता की ख़ुशी और शान्ति तो ले ही गये, जनता के बाप को भी ले गये. पहरुए ताकते रह गये, नक़ब लग गई और देश के हीरे मोती जवाहरात चोरी चले गये .

इस तरह इस देश की जनता ग़रीब की ग़रीब और भुक्खड़ की भुक्खड़ ही रह गई. उसे न खाना मिला, न कपड़ा, न घर मिला, न खेती बाड़ी. आज़ादी के कुछ ही दिन बाद उसे महसूस होने लगा कि उसकी आज़ादी काग़ज़ी थी उसके सपने धूल में मिल गये. वही पुलिस, फ़ौज, लाठी, गोली, जेल, नज़रबन्दी जिसे पिछले तीस बरस से वह भुगतती चली आई थी, अब भी उसके आगे पीछे थी. हाँ, उसकी परेशानियों, तकलीफ़ों और नाउम्मीदियों में इज़ाफ़ा करने के लिये क़ानूनी रहज़नी, चोर बाज़ारी, मुनाफ़ा ख़ोरी और घूसख़ोरी का बाज़ार गरम हो गया और जब पवित्र खादी पहन कर लोगों ने इस पाप और कमीने पन को समाजी रूप देना शुरू कर दिया तो हमारी गिरावट अपनी हद को पहुँच गई. जिस जनता ने अपनी कोशिशों

کی بالیاں جھومتی تھیں ' آم بوراتے تھے ' ٹیسو پھولتے تھے ' مہوے مہکتے تھے . آزادی کے بعد بھی یہ سارا کا سارا کاروبار جوں کا توں چل رہا ھے . آزادی کے پہلے غریب کی عید محرم بنی رہتی تھی . سورج ' چاند ' تارے ' ھوا ' ندی ' پھول ' پھل ' چڑیوں ' بھونروں ' کھیت باغ کسی پر اُسکا ادھکار نہ تھا . اُس کے لئے سبھی بیگانے تھے ' سبھی غیر . انگریزوں کی مہربانی سے آزادی ملی تو سدا کی بھوکی ' پیاسی ' اُداس ' پریشان جنتا کو وشواس ھوا کہ اب اُس کو راحت ملیگی . مگر جنتا کی آزادی اور خوشی کے چور جو کمند لگائے بیٹھے تھے ' جنتا کی خوشی اور شانتی تو لے ھی گئے ' جنتا کے باپ کو بھی لے گئے . پہروے تاکتے رہ گئے ' نقب لگ گئی اور دیش کے ھیرے موتی جواھرات چوری چلے گئے .

اس طرح اس دیش کی جنتا غریب کی غریب اور بھکڑ کی بھکڑ ھی رہ گئی . اُسے نہ کھانا ملا ' نہ کپڑا ' نہ گھر ملا ' نہ کھیتی باڑی . آزادی کے کچھ ھی دن بعد اُسے محسوس ھونے لگا کہ اُس کی آزادی کاغذی تھی . اُس کے سپنے دھول میں مل گئے . وھی پولیس ' فوج ' لاٹھی ' گولی ' جیل ' نظر بندی جسے پچھلے تیس برس سے وہ بھگتتی چلی آئی تھی ' اب بھی اُس کے آگے پیچھے تھی . ھاں ' اُسکی پریشانیوں ' تکلیفوں اور نا اُمیدیوں میں اضافہ کرنے کے لئے قانونی رہزنی ' چور بازاری ' منافع خوری اور گھوس خوری کا بازار گرم ھو گیا اور جب پوتر کھادی پہن کر لوگوں نے اس پاپ اور کمینے پن کو سماجی روپ دینا شروع کردیا تو ھماری گراوٹ اپنی حد کو پہنچ گئی . جس جنتا نے اپنی کوششوں سے

दौर में अपने ही लोगों और हमदर्दों को देश द्रोही कामों में लगे देख कर भौंचक्की रहगई. उसे कुछ समय यह विश्वास करने में ज़रूर लगा कि जनता की हमदर्दी का दम भरने वालों में से अधिकतर जनता के दुश्मनों के खेमे में चले गये हैं. मगर अब अधिक समय ख़राब न कर के वह विरोध और विद्रोह करने लगी है. आज खादी का जामा मज़ाक़ ही नहीं नफ़रत की चीज़ बनता जा रहा है. खादी के भेस में अब अधिकतर ऐसे ही लोग दिखाई पड़ते हैं जो हमेशा के ग़द्दार और सरकार परस्त और आज के, इस नये ज़माने के, देश भक्त हैं. पुराने और सच्चे देश भक्तों की शक्ति दिनों दिन कम होती जा रही है. नये लोग, देशभक्ति को बेच कर खाना जिनका पेशा है, अब

मंडल, हलक़ा, ज़िला, सूबा कांगरेस कमेटियों में घुस गये हैं . इसका जो नतीजा होना था, हो रहा है. जनता की ग़ुलामी, पस्त हिम्मती, परेशानी और मुसीबत पहले से ज़्यादा ख़ौफ़नाक होकर अपना मुँह फैलाती आ रही है. पुरानी ग़ुलामी का ख़ात्मा पूरी तरह से हो भी न पाया था कि यह नई तरह की ग़ुलामी आ धमकी.

यह ग़ुलामी पहली ग़ुलामी से ज़्यादा ख़तरनाक है. विदेशी ग़ुलामी से लड़ना आसान था, क्यों कि उस समय दोस्त और दुश्मन की तमीज़ करना भी आसान था . कौन अपने हैं और कौन बेगाने यह जान लेना आसान था. मगर आज, जबकि अपने ही बेगाने होते आ रहे हैं, जब कि पुराने साथी और रहनुमा दुश्मन और रहज़न बनते आ रहे हैं, जब कि तपे तपाये लोग भी अपने स्वार्थों की आंच में दूसरों

دور میں اپنے ہی لوگوں اور ہمدردوں کو دیش دروھی کاموں میں لگے دیکھکر بھوچکی رہ گئی . اُسے کچھ سمے یہ وشواس کرنے میں ضرور لگا کہ جنتا کی ہمدردی کا دم بھرنے والوں میں سے ادھک تر جنتا کے دشمنوں کے خیمے میں چلے گئے ہیں . مگر اب ادھک سمے خراب نہ کرکے وہ ورودھ اور ودروہ کرنے لگی ہے . آج کھادی کا جامہ مذاق ہی نہیں نفرت کی چیز بنتا جارہا ہے . کھادی کے بھیس میں اب ادھک تر ایسے ہی لوگ دکھائی پڑتے ہیں جو ہمیشہ کے غدار اور سرکار پرست اور آج کے ' اس نئے زمانے کے' دیش بھکت ہیں . پرانے اور سچے دیش بھکتوں کی شکتی دنوں دن کم ہوتی جارہی ہے . نئے لوگ ' دیش بھکتی کو بیچ کر کھانا جنکا پیشہ ہے ' اب منڈل ' حلقہ' ضلع ' صوبہ

کانگریس کمیٹیوں میں گھس گئے ہیں . اِسکا جو نتیجہ ہونا تھا' ہو رہا ہے . جنتا کی غلامی ' پست ہمتی ' پریشانی اور مصیبت پہلے سے زیادہ خوفناک ہوکر اپنا منہ پھیلاتی جارہی ہے . پرانی غلامی کا خاتمہ پوری طرح سے ہو بھی نہ پایا تھا کہ یہ نئی طرح کی غلامی آ دھمکی .

یہ غلامی پہلی غلامی سے زیادہ خطرناک ہے . ودیشی غلامی سے لڑنا آسان تھا ' کیونکہ اُس سمے دوست اور دشمن کی تمیز کرنا بھی آسان تھا . کون اپنے ہیں اور کون بیگانے یہ جان لینا آسان تھا . مگر آج ' جبکہ اپنے ہی بیگانے ہوتے جارہے ہیں ' جبکہ پرانے ساتھی اور رہنما دشمن اور رہزن بنتے جارہے ہیں ' جبکہ تپے تپائے لوگ بھی اپنے سوارتھوں کی آنچ میں دوسروں

को झुलसा रहे हैं, सचमुच यह जानना कठिन होता जा रहा है कि कौन अपने हैं और कौन बेगाने, कौन दोस्त हैं और कौन दुश्मन.

प्रधान मंत्री जवाहर लाल नेहरू से लेकर नीचे के नेताओं तक सबका यही रोना है कि कांगरेस और देश पतन की ओर जा रहे हैं. मगर पतन की ओर इस यात्रा को कोई नहीं रोक पा रहा है. इसी पन्द्रह अगस्त को, आज़ादी दिवस को लोगों ने जिस तरह मनाया, वह मेरे इस कथन का सबूत है कि इस आज़ादी से लोगों की दिलचस्पी कम होती जा रही है और लोग परिवर्तन की कामना करने लगे हैं. आज़ादी के तीन साल बाद ही आज़ादी लाने वालों पर से लोगों का विश्वास उठने लगा है, और मुझे साफ़ दिखाई दे रहा है कि वह दिन दूर नहीं जब कि इन में से अधिकतर लोगों का नाम लेवा भी कोई नहीं रह जायगा. मुझे लगता है कि जिन लोगों ने राष्ट्रपिता बापू और उनके उपदेशों को भूलने की कोशिश की है वह जल्द ही जनता के दिलो दिमाग़ से भी उतर जायेंगे.

अक्सर लोग इस बात को भूल जाते हैं कि इतिहास बदला लेता है और वह बदला बहुत कड़ा और बेरहम होता है. बापू को जिस समय हमने मर जाने दिया उस समय शायद इस बात का अन्दाज़ा न था कि इस राष्ट्री पाप का बदला हमें अपने ख़ून से, अपनी मां बहनों की लाज से और अपने मासूम बच्चों की चीख़ पुकार से अदा करना होगा. आपसी दंगे फ़साद ही नहीं, बिहार, मद्रास, काठियावाड़ की भुखमरी, मज़दूरों की हड़ताल, नीचे तबक़े के लोगों की उथल पुथल और गुस्सा, काला बाज़ारी और गिरानी

کو جھلسا رہے ہیں ' سچ مچ یہ جاننا کٹھن ہوتا جارہا ہے کہ کون اپنے ہیں اور کون بیگانے' کون دوست ہیں اور کون دشمن .

پردھان منتری جواہر لال نہرو سے لیکر نیچے کے نیتاؤں تک سب کا یہی رونا ہے کہ کانگریس،اور دیش پتن کی اور جارہے ہیں . مگر پتن کی اور اس یاترا کو کوئی نہیں روک پارہا ہے . اسی ۱۵ اگست کو' آزادی دوس کو لوگوں نے جسطرح منایا ' وہ میرے اس کتھن کا ثبوت ہے کہ اِس آزادی سے لوگوں کی دلچسپی کم ہوتی جارہی ہے اور لوگ پریورتن کی کامنا کرنے لگے ہیں . آزادی کے تین سال بعد ہی آزادی لانے والوں پر سے لوگوں کا وشواس اُٹھنے لگا ہے . اور مجھے صاف دکھائی دے رہا ہے کہ وہ دن دور نہیں جبکہ اِن میں سے ادھک تر لوگوں کا نام لیوا بھی کوئی نہیں رہ جائیگا . مجھے لگتا ہے کہ جن لوگوں نے راشٹر پتا باپو اور اُن کے اُپدیشوں کو بھولنے کی کوشش کی ہے وہ جلد ہی جنتا کے دل و دماغ سے بھی اُتر جائینگے .

اکثر لوگ اس بات کو بھول جاتے ہیں کہ اتہاس بدلہ لیتا ہے اور وہ بدلہ بہت کڑا اور بے رحم ہوتا ہے . باپو کو جس سمے ہم نے مرجانے دیا اُس سمے شاید اِسبات کا اندازہ نہ تھا کہ اِس راشٹری پاپ کا بدلہ ہمیں اپنے خون سے ' اپنی ماں بہنوں کی لاج سے اور اپنے معصوم بچوں کی چیخ پکار سے ادا کرنا ہوگا . آپسی دنگے فساد ہی نہیں ' بہار' مدراس' کاٹھیاواڑ کی بھکمری' مزدوروں کی ہڑتال' نیچے طبقے کے لوگوں کی اُتھل پتھل اور غصہ' کالا بازاری اور گرانی کی دن دن بڑھوتی' کانگریس [illegible]

आखिर किस क़ौमी गिरावट और बदहाली के निशान है! जब विदेशी हुकूमत थी उस समय बापू की आवाज़ पर और कांगरेस के नेताओं की पुकार पर सारा देश बिहार के भूकम्प दुखियों की सहायता में जुट पड़ा था. मगर आज असाम की हालत पर क्या सचमुच हमारे नेता रहम खा रहे हैं और क्या हमारी राष्ट्री सरकार और हमारे देश की जनता सचमुच वह सब कुछ कर रही है जो उसे करना चाहिये था ?

इसी तरह के सैकड़ों सवाल आज देश के सामने हैं. अनाज, कपड़े, घर और काम के सवाल दिनों दिन कठिन होते जा रहे हैं. लड़ाई का जो असर हमारे देश की आर्थिक और नैतिक ज़िन्दगी पर पड़ा था वह दूर होने के बजाय ज्यादा कठिन होता जा रहा है. शरनार्थियों के सवाल ने सरकारी इन्तज़ाम और जाति-प्रेम का नारा बुलन्द करने वाले फ़िरक़ा परस्तों का भाँडा फोड़ दिया है. जिस वक़्त यह झगड़े शुरू हुए उस समय लाख मना करने पर भी यह लोग फ़सादों को बढ़ावा देते थे. आज जब उसी सवाल ने अपना नक़ाब उतार फेंका और आध करोड़ आदमियों के बसाने का काम सामने आया तो सारे के सारे तीस मार खाँ जाने किस बिल में घुस गये.

इसी पृष्ठ भूमि यानी पस मंज़र में आज़ादी का दिन मनाया गया था. राज करने वाले यह भूलने लगे थे कि जिनके ऊपर वह राज कर रहे हैं उनकी रज़ामन्दी के बग़ैर वह एक दिन भी राज काज चला न सकेंगे. जनता से उनका सम्पर्क ही नहीं टूट चुका था बल्कि जनता उन्हें गुलछर्रे उड़ाने वाले समाज द्रोहियों में गिनने लगी

آخر کس قومی گراوٹ اور بدحالی کے نشان ہیں! جب ودیشی حکومت تھی اُس سمے باپو کی آواز پر اور کانگریس کے نیتاؤں کی پکار پر سارا دیش بہار کے بھوکمپ دُکھیوں کی سہایتا میں جٹ پڑا تھا. مگر آج آسام کی حالت پر کیا سچ مچ ہمارے نیتا رحم کھا رہے ہیں اور کیا ہماری راشٹری سرکار اور ہمارے دیش کی جنتا سچ مچ وہ سب کچھ کر رہی ہے جو اسے کرنا چاہئے تھا ؟

اسیطرح کے سینکڑوں سوال آج دیش کے سامنے ہیں اناج، کپڑے، گھر اور کام کے سوال دنوں دن کٹھن ہوتے جارہے ہیں. لڑائی کا جو اثر ہمارے دیش کی آرتھک اور نیتک زندگی پر پڑا تھا وہ دور ہونے کے بجائے زیادہ کٹھن ہوتا جارہا ہے. شرنارتھیوں کے سوال نے سرکاری انتظام اور جاتی پریم کا نعرہ بلند کرنیوالے فرقہ پرستوں کا بھانڈا پھوڑ دیا ہے. جسوقت یہ جھگڑے شروع ہوئے اُس سمے لاکھ منع کرنے پر بھی یہ لوگ فسادوں کو بڑھاوا دیتے تھے. آج جب اُسی سوال نے اپنا نقاب اُتار پھینکا اور آدھ کروڑ آدمیوں کے بسانے کا کام سامنے آیا تو سارے کے سارے تیس مار خاں جانے کس بل میں گھس گئے.

اِسی پرشٹھ بھومی یعنی پس منظر میں آزادی کا دن منایا گیا تھا. راج کرنے والے یہ بھولنے لگے تھے کہ جن کے اُوپر وہ راج کر رہے ہیں اُنکی رضامندی کے بغیر وہ ایکدن بھی راج کاج چلا نہ سکینگے. جنتا سے اُنکا سمپرک ہی نہیں ٹوٹ چکا تھا بلکہ جنتا اُنہیں گلچھرے اُڑانے والے سماج دروہیوں میں گننے لگی تھی.

थी . इस लिये, हालाँ कि इस जश्न और त्योहार के दिन यह तो हुआ कि एक बार लोगों को फिर पता चला कि भारत की छाती पर से गोरी हुकूमत का बोझ उठ गया है. मगर साथ ही उसे यह भी पता लगा कि उसके स्थान पर अधिक भारी बोझिल काली हुकूमत सवार है. उसे लगता रहा है कि यह हुकूमत किसी भी माने में पहले वाली हुकूमत से अच्छी नहीं है, क्योंकि इसके जरिये उसकी रोटी और उसके कपड़े की समस्या जरा भी हल नहीं हुई . इसके नतीजे में, जनता सोचने लगी है कि क्यों न अब इस हुकूमत को छोड़ कर किसी नई हुकूमत के क़ायम होने में मदद दी जाय. यही सवाल लोगों के दिल दिमाग़ में चक्कर काट रहा है . और अगर पिछली
(९) कांगरेस की तरह इस समय कोई भी दूसरी पार्टी ऐसी होती जिसे जनता का पूरा सहयोग प्राप्त होता तो अब तक वह शासन की बाग डोर अपने हाथ में ले चुकी होती.

मैंने इस लेख के शुरू में ही दोराहे की बात कही—पुरानी और नई ग़ुलामी का दोराहा ! अब, इस दोराहे पर खड़ी जनता सोच रही है कि वह क्या करे. पुराने रहबरों में से ज्यादा तर रहज़न बन गये हैं. जो बचे खुचे ईमानदार साथी हैं उनकी कुछ चलती नहीं. जनता की दिमाग़ी हालत कुछ ऐसी है कि वह पुराने लोगों से ऊब चुकी है, अगरचे नये लोगों पर भी उसे यक़ीन नहीं है. वह सोचती है कि जब इतने तपे तपाये लोग इतनी जल्दी ताक़त हाथ में आते ही गिर सकते हैं तो उन नये आदमियों से क्या आशा की जाय जो अभी जन सेवा के इम्तहान में पास ही नहीं हुए हैं.

... में एक असमंजस है. वह

تھی. اسلئے' حالانکہ اس جشن اور تیوہار کے دن یہ تو ہوا کہ ایکبار لوگوں کو پھر پتہ چلا کہ بھارت کی چھاتی پر سے گوری حکومت کا بوجھ اُٹھ گیا ہے مگر ساتھ ہی اُسے یہ بھی پتہ لگا کہ اُسکے استھان پر ادھک بھاری بوجھل کالی حکومت سوار ہے . اُسے لگتا رہا ہے کہ یہ حکومت کسی بھی معنی میں پہلے والی حکومت سے اچھی نہیں ہے ' کیونکہ اس کے ذریعے اُسکی روٹی اور اُسکے کپڑے کی سمسیا ذرا بھی حل نہیں ہوئی . اس کے نتیجے میں ' جنتا سوچنے لگی ہے کہ کیوں نہ اب اِس حکومت کو چھوڑ کر کسی نئی حکومت کے قائم ہونے میں مدد دی جائے . یہی سوال لوگوں کے دل دماغ میں چکر کاٹ رہا ہے . اور اگر پچھلی کانگریس کی
طرح اس سمے کوئی بھی دوسری پارٹی ایسی ہوتی جسے جنتا کا (۹) پورا سہیوگ پراپت ہوتا تو ابتک وہ شاسن کی باگ ڈور اپنے ہاتھ میں لے چکی ہوتی .

میں نے اس لیکھ کے شروع میں ہی دوراہے کی بات کہی — پرانی اور نئی غلامی کا دوراہا ! اب ' اس دوراہے پر کھڑی جنتا سوچ رہی ہے کہ وہ کیا کرے . پرانے رہبروں میں سے زیادہ تر رہزن بن گئے ہیں . جو بچے کھچے ایماندار ساتھی ہیں اُن کی کچھ چلتی نہیں . جنتا کی دماغی حالت کچھ ایسی ہے کہ وہ پرانے لوگوں سے اُوب چکی ہے' اگرچہ نئے لوگوں پر بھی اُسے یقین نہیں ہے . وہ سوچتی ہے کہ جب اتنے تپے تپائے لوگ اتنی جلدی طاقت ہاتھ میں آتے ہی گر سکتے ہیں تو اُن نئے آدمیوں سے کیا آشا کی جائے جو ابھی جن سیوا کے امتحان میں پاس ہی نہیں ہوئے ہیں .

اسطرح ہم دیکھتے ہیں کہ جنتا میں ایک اسمنجس ہے . وہ

अपना दिल मज़बूत करके इधर या उधर फ़ैसला नहीं कर पा रही है मगर यह हालत ठीक नहीं है. यह दिमाग़ी कैफ़ियत बड़ी ख़तरनाक है क्योंकि ऐसी हालत में वह देश की तरक़्क़ी के किसी भी काम में जी खोल कर नहीं लग सकती. उसके मन में हमेशा यह शक बना रहता है कि वह जो कुछ कर या कह रही है वह सही भी है या नहीं.

आज़ादी के तीन वर्ष के बाद जहाँ देश और क़ौम को बहुत मज़बूत और ख़ुश हाल होना चाहिये था वहाँ वह इस समय बहुत कमज़ोर और परेशान है. अमरीकी और बरतानी साम्राजवादी उसकी ओर दाँत लगाये हुए हैं. भारत-पाकिस्तान के आपसी झगड़े और भारत की भीतरी कमज़ोरी से फ़ायदा उठा कर वह किसी भी समय झपट कर आसकते हैं. भीतर ही भीतर लोग इतने असन्तुष्ट हैं कि उनका असन्तोष किसी भी समय ज्वालामुखी बनकर फूट सकता है. गहरी निराशा, असंतोष और अविश्वास की ज्वाला में झुलसता समाजी जीवन देश को किसी भी दिन ऐसे भयानक संकट में डाल सकता है जिससे बाहर निकलना शायद उसके लिये नामुमकिन हो जायगा. उस समय हमारे इस पुराने देश, इसकी सभ्यता, संस्कृति, आर्थिक और समाजी जीवन का क्या होगा ? जनता की आज़ादी और तरक़्क़ी का क्या होगा ?

इस ख़तरनाक संकट के समय हम अपने नेताओं और देश-वासियों से यही कह सकते हैं :

"बहुत गई, थोड़ी रही, अजहूँ चेत अचेत"

اپنا دل مضبوط کرکے اِدھر یا اُدھر فیصلہ نہیں کر پارہي ھے . مگر یہ حالت ٹھیک نہیں ھے . یہ دماغي کیفیت بڑی خطرناک ھے کیونکہ ایسي حالت میں وہ دیش کی ترقی کے کسي بھي کام میں جی کھول کر نہیں لگ سکتی . اُس کے من میں ھمیشہ یہ شک بنا رھتا ھے کہ وہ جو کچھ کر یا کہہ رھي ھے وہ صحیح بھي ھے یا نہیں .

آزادی کے تین برس کے بعد جہاں دیش اور قوم کو بہت مضبوط اور خوشحال ھونا چاھئے تھا وھاں وہ اس سمے بہت کمزور اور پریشان ھے . امریکي اور برطانی سامراجوادی اُسکي اور دانت لگائے ھوئے ھیں . بھارت پاکستان کے آپسي جھگڑے اور بھارت کی بھیتري کمزوري سے فائدہ اُٹھاکر وہ کسي بھي سمے جھپٹ کر آسکتے ھیں . بھیتر ھي بھیتر لوگ اتنے اسنتشٹ ھیں کہ اُن کا اسنتوش کسی بھي سمے جوالا مکھی بن کر پھوٹ سکتا ھے . گھري نراشا ' اسنتوش اور اوشواس کی جوالا میں جھلستا سماجي جیون دیش کو کسي بھي دن ایسے بھیانک سنکٹ میں ڈال سکتا ھے جس سے باھر نکلنا شاید اُس کے لئے نا ممکن ھو جائیگا . اُس سمے ھمارے اِس پرانے دیش ' اِس کی سبھیتا ' سنسکرتي ' آرتھک اور سماجي جیون کا کیا ھوگا ؟ جنتا کي آزادي اور ترقی کا کیا ھوگا ؟

اس خطرناک سنکٹ کے سمے ھم اپنے نیتاؤں اور دیش واسیوں سے یہی کہہ سکتے ھیں :

" بہت گئي ' تھوڑي رھی ' اجھوں چیت اچیت "

ऐटम-मन्थन (मथना)

(भाई जगदीश एम. एस सी.)

[इस लेख में विद्वान लेखक ने ऐटम क्या है और ऐटम बम कैसे बनता है इन गहरे मामलों को बहुत आसान और दिलचस्प ढंग से समझाया है. लेख ज़रा ध्यान से पढ़ने लायक़ है. इस सिलसिले के और लेख भी आगे 'नया हिन्द' में निकलेंगे.
—एडीटर]

समुद्र मन्थन की कथा तो आप ने सुनी होगी. देवताओं और दानवों (शैतानों) ने शेषनाग की रस्सी और पर्वत की राई बनाकर समुद्र को मथ कर बहुत सी अच्छी और कुछ बुरी चीज़ें निकालीं. अमृत और लक्ष्मी जी देवताओं को मिलीं और मदिरा यानी शराब दानवों को. शिवजी का एक महाबिस धारन करना भी इस कथा की एक कड़ी है.

यह तो हुई पुरानों की बात जिसको हम लोग मनगढ़ंत समझते हैं. पर आज कल जो इसका नमूना मिला है उस को देख कर सोचना पड़ता है कि क्या यह कथाएँ कुछ तारीख़ी घटनाओं की तरफ़ इशारा नहीं करतीं. आख़िर कथा गढ़ने का भी तो कुछ मतलब होता है और उस की जड़ में कुछ न कुछ सबक़ इन्सान के लिये होता है

अगर आप साइन्स को समुद्र मान लें तो इस कथा के सारे पात्र भी बने बनाए मिल जाते हैं. अच्छी चीज़ें भी मिली हैं. डाक, तार, रेडियो, रोगों के नए इलाज, हवाई जहाज़ वग़ैरा और बुरी भी जैसे

ایٹم منتھن (متھنا)

(بھائی جگدیش ایم - ایس سی)

[اس لیکھ میں ودوان لیکھک نے ایٹم کیا ہے اور ایٹم بم کیسے بنتا ہے اِن گہرے معاملوں کو بہت آسان اور دلچسپ ڈھنگ سے سمجھایا ہے . لیکھ ذرا دھیان سے پڑھنے لائق ہے . اس سلسلے کے اور لیکھ بھی آگے 'نیا ہند' میں نکلیں گے .
—اڈیٹر]

سمدر منتھن کی کتھا تو آپ نے سنی ہوگی . دیوتاؤں اور دانووں (شیطانوں) نے شیش ناگ کی رسی اور پربت کی رئی بنا کر سمدر کو متھ کر بہت سی اچھی اور کچھ بری چیزیں نکالیں . امرت اور لکشمی جی دیوتاؤں کو ملیں اور مدرا یعنی شراب دانووں کو . شیو جی کا ایک مہابس دھارن کرنا بھی اس کتھا کی ایک کڑی ہے .

یہ تو ہوئی پورانوں کی بات جس کو ہم لوگ من گھڑنت سمجھتے ہیں . پر آج کل جو اِس کا نمونہ ملا ہے اُس کو دیکھکر سوچنا پڑتا ہے کہ کیا یہ کتھائیں کچھ تاریخی گھٹناؤں کی طرف اشارہ نہیں کرتیں . آخر کتھا گھڑنے کا بھی تو کچھ مطلب ہوتا ہے اور اُس کی جڑ میں کچھ نہ کچھ سبق انسان کے لئے ہوتا ہے .

اگر آپ سائنس کو سمدر مان لیں تو اس کتھا کے سارے پاتر بھی بنے بنائے مل جاتے ہیں . اچھی چیزیں بھی ملی ہیں . ڈاک، تار، ریڈیو، روگوں کے نئے علاج، ہوائی جہاز وغیرہ اور بری بھی جیسے

बीमारियों के जर्म. तोप, बन्दूक और लड़ाई के हथियार. देवता और दानव आप अपने मन में पायेगें. इन मे संग्राम हमेशा होता रहता है. साइन्सी खोज लगाने वालों में देवता और दानव दोनो पाए जाते हैं. जितने बिस समुद्र मन्थन मे निकले उन से ज्यादा साइन्स-मन्थन में निकले. उन सब को तो जनता महादेव पी गई. हाल में निकला ऐटम बम और जल्दी ही निकलने को है हाइड्रोजन बम. ताक़त के पुजारी इन्सान के लिये क्या यह बम महा बिस साबित नहीं होंगे ? सवाल है कि इस महा बिस को कौन पियेगा. इससे कहीं देवता और दानव दोनों का ही नाश न हो जाय.

आखिर यह ऐटम बम है क्या जिस से सारी दुनया में तहलका मच गया है ? इस ने जापान के शहर हीरोशिमा और नागासाकी का लाखों रहने वालों समेत सफ़ाया कर दिया. इस बम का असर बादकी आने वाली इन्सानी नसल और पेड़ पौधों पर भी पड़ता है.

इसका भेद छिपा है मैटर (Matter) के बस छोटे से छोटे टुकड़े में जिस को हम ऐटम कहते हैं. सब तत्वों यानी उनसुरों (Elements) के अलग अलग ऐटम होते हैं. तत्व 92 तरह के हैं. हर एक के अलग अलग वज़न के ऐटम होते हैं. सब से हलका ऐटम हाइड्रोजन (Hydrogen) का होता है. सब से भारी यूरेनियम (Uranium) का. यह हाइड्रोजन (Hydrogen) के ऐटम से 12 गुना भारी होता है.

पहिले साइन्सदां ऐटम को 'अकट' यानी 'न कट सकने वाला' मानते थे. पर रेडियम की, जो एक भारी तत्व (Element) है, जांच करने पर पता चला कि इस का ऐटम अपने आप ही टूटता रहता

بیماریوں کے جرم، توپ، بندوق اور لڑائی کے ھتھیار. دیوتا اور دانو آپ اپنے من میں پائیں گے. اِن میں سنگرام ھمیشہ ھوتا رھتا ھے. سائنسی کھوج لگانے والوں میں دیوتا اور دانو دونوں پائے جاتے ھیں. جتنے بس سمدر منتھن میں نکلے اُن سے زیادہ سائنس منتھن میں نکلے. اُن سب کو تو جنتا مہادیو پی گئی. حال میں نکلا ایٹم بم اور جلدی ھی نکلنے کو ھے ھائیڈروجن بم طاقت کے پجاری انسان کے لئے کیا یہ بم مہابس ثابت نہیں ھونگے ؟ سوال ھے کہ اس مہابس کو کون پئے گا. اس سے کہیں دیوتا اور دانو دونوں کا ھی ناش نہ ھوجائے.

آخر یہ ایٹم بم ھے کیا جس سے ساری دنیا میں تہلکہ مچ گیا ھے ؟ اِس نے جاپان کے شہر ھیرو شیما اور ناگا ساکی کا لاکھوں رھنے والوں سمیت صفایا کر دیا. اس بم کا اثر بعد کی آنے والی انسانی نسل اور پیڑ پودوں پر بھی پڑتا ھے.

اس کا بھید چھپا ھے میٹر (Matter) کے اُس چھوٹے سے چھوٹے ٹکڑے میں جس کو ہم ایٹم کہتے ھیں. سب تتووں یعنی عنصروں (Elen ents) کے الگ الگ ایٹم ھوتے ھیں. تتو 92 طرح کے ھیں. ھر ایک کے الگ الگ وزن کے ایٹم ھوتے ھیں. سب سے ھلکا ایٹم ھائیڈروجن (Hydrogen) کا ھوتا ھے. سب سے بھاری یورینیم (Uranium) کا. یہ ھائیڈروجن (Hydrogen) کے ایٹم سے 12 گنا بھاری ھوتا ھے.

پہلے سائنس‌داں ایٹم کو 'اکٹ' یعنی 'نہ کٹ سکنے والا' مانتے تھے. پر ریڈیم کی، جو ایک بھاری تتو (Element) ھے، جانچ کرنے پر پتہ چلا کہ اِس کا ایٹم اپنے آپ ھی ٹوٹتا رھتا

इन्हीं की आज़ादी और भलाई के लिये लड़े भी थे और इन्हीं के हाथों में राजकाज की बागडोर भी सौंपना चाहते थे, क्योंकि गांधी जी की निगाहों में सचमुच यही लोग हिन्दुस्तान या भारतमाता थे.

गांधी जी न रहे तो उनका नाम लेकर हमारे नेताओं ने हज़ारों क़समें खाईं और बार बार वायदे किये कि वह देश को, सरकार को और कांग्रेस को गांधी जी के बताये रास्ते पर ही ले चलेंगे. मगर गांधी जी के बाद हिन्दुस्तान में जो कुछ हुआ वह इस बात का सबूत है कि हमारे नेताओं ने सिर्फ़ अपने फ़ायदे के ही लिये गांधी जी का नाम इस्तेमाल किया, मगर वह गांधी जी के बताये रास्ते पर बिलकुल नहीं चले.

आज देश जितना ग़रीब है, उतना ग़रीब वह इसके पहले कभी भी नहीं था. आज लोगों के दिलों में जितनी निराशा है उतनी पहले कभी भी नहीं थी. आज कांग्रेस और नेताओं की ओर से जनता जितनी बेज़ार और बदगुमान है उतनी पहले कभी भी न थी. ज़िन्दगी की ज़रूरी चीज़ों की कमी और महँगाई, कपड़े-खाने की दिक़्क़त और तबाही, सारे देश में फैली बेईमानी, चोर बाज़ारी, मुनाफ़ाख़ोरी और बदइन्तज़ामी चन्द अमीरों और सरकारी अफ़सरों को छोड़ कर बाक़ी सारी जनता को भूकों मरने, नंगे रहने और बेइज़्ज़त होने के लिये मजबूर कर रही है. विरोधी विचारों और सुझावों को दबाने, शहरी आज़ादी छीनने और जनता की ज़बान बन्द करने में सरकार आज जिस बेरहमी, बेहयाई और बेईमानी के साथ लगी हुई है वह भी अपनी मिसाल नहीं रखती. कम्युनिस्टों या सख़्त

ان ہی کی آزادی اور بھلائی کے لئے لڑے بھی تھے اور انھیں کے ہاتھوں میں راج کاج کی باگ ڈور بھی سونپنا چاہتے تھے، کیونکہ گاندھی جی کی نگاہوں میں سچ مچ یہی لوگ ہندستان یا بھارت ماتا تھے۔

گاندھی جی نہ رہے تو اُن کا نام لے کر ہمارے نیتاؤں نے ہزاروں قسمیں کھائیں اور بار بار وعدے کئے کہ وہ دیش کو، سرکار کو اور کانگریس کو گاندھی جی کے بتائے راستے پر ہی لے چلیں گے۔ مگر گاندھی جی کے بعد ہندستان میں جو کچھ ہوا وہ اِس بات کا ثبوت ہے کہ ہمارے نیتاؤں نے صرف اپنے فائدے کے ہی لئے گاندھی جی کا استعمال کیا، مگر وہ گاندھی کے بتائے راستے پر بالکل نہیں چلے۔

آج دیش جتنا غریب ہے اتنا غریب وہ اس کے پہلے کبھی بھی نہیں تھا۔ آج لوگوں کے دلوں میں جتنی نراشا ہے اتنی پہلے کبھی بھی نہیں تھی۔ آج کانگریس اور نیتاؤں کی اور سے جنتا جتنی بیزار اور بدگمان ہے اتنی پہلے کبھی بھی نہ تھی۔ زندگی کی ضروری چیزوں کی کمی اور مہنگائی، کپڑے کھانے کی دقت اور تباہی، سارے دیش میں پھیلی بے ایمانی، چوربازاری، منافع خوری اور بد انتظامی چند امیروں اور سرکاری افسروں کو چھوڑ کر باقی ساری جنتا کو بھوکوں مرنے، ننگے رہنے اور بے عزت ہونے کے لئے مجبور کر رہی ہے۔ ورودھی وچاروں اور سجھاؤں کو دبانے، شہری آزادی چھیننے اور جنتا کی زبان بند کرنے میں سرکار آج جس بے رحمی، بے حیائی اور بے ایمانی کے ساتھ لگی ہوئی ہے وہ بھی اپنی مثال نہیں رکھتی۔ کمیونسٹوں یا سخت طبیعت ... آج خود کانگریس

. इस टूटने से और भी छोटे छोटे टुकड़े निकलते हैं जो बड़ी तेज़ी से ऐटम के बाहर आते हैं. साथ ही बिजली की एक किरन (Atomic ray) भी निकलती है. इस से यह बिश्वास तो ग़लत हो गया कि ऐटम अकट होते हैं. अब सब लोग इस खोज में लग गए कि ऐटम के अन्दर की जांच की जाये. मुशकिल यह थी कि ऐटम इतना छोटा होता है कि न वह दिखाई देता है और न पकड़ में आता है. एक सूई की नोक पर दस करोड़ ऐटम रखे जा सकते हैं.

भला इतनी छोटी चीज़ के अंदर का हाल कैसे मालूम किया जा सकता था पर रेडियम (Radium) के किरन-फिकाव से ऐटम पोला साबित हो ही चुका था. अब उसकी पोल में दाखिल होने के लिये ऐटम से भी छोटी चीज़ की ज़रूरत थी. वह भी लगे हाथों मिल गई. रेडियम के ऐटम के अंदर से जो छोटे छोटे टुकड़े निकलते हैं वह दो तरह के होते हैं. एक हलका और एक भारी. हलका वाला हाइड्रोजन के ऐटम से भी 1/1800 गुना हलका होता है. इस का नाम इलेक्ट्रोन (Electron) है. भारी वाला हाइड्रोजन के ऐटम के बराबर वज़नी. इस का नाम प्रोटोन (Proton) रखा गया. प्रोटोन इलकट्रोन से 1800 गुना भारी होता है. दूसरी अजीब बात यह थी कि यह दोनों टुकड़े बिजली से भरे (Electrically-charged) हैं. इलकट्रोन पर 'नरम' (Negative) बिजली और प्रोटोन पर 'गरम' (Positive) बिजली. यह दोनों ही ऐटम के मुक़ाबले में एक लाख गुना छोटे होते हैं. जैसे घड़े के मुक़ाबले में राई के दाने. रेडियम से एक दूसरा टुकड़ा भी निकलता है जो आकार में प्रोटोन

ھے . اس ٹوٹنے سے اور بھی چھوٹے چھوٹے ٹکڑے نکلتے ھیں جو بڑی تیزی سے ایٹم کے باھر آتے ھیں . ساتھہ ھی بجلی کی ایک کرن (Atomic ray) بھی نکلتی ھے اس سے یہ وشواس تو غلط ھوگیا کہ ایٹم اکٹ ھوتے ھیں . اب سب لوگ اس کھوج میں لگ گئے کہ ایٹم کے اندر کی جانچ کی جائے . مشکل یہ تھی کہ ایٹم اتنا چھوٹا ھوتا ھے کہ نہ وہ دکھائی دیتا ھے اور نہ پکڑ میں آتا ھے . ایک سوئی کی نوک پر دس کروڑ ایٹم رکھے جاسکتے ھیں .

بھلا اتنی چھوٹی چیز کے اندر کا حال کیسے معلوم کیا جاسکتا تھا . پر ریڈیم (Radium) کے کرن پھکاو سے ایٹم پولا ثابت ھو ھی چکا تھا . اب اس کی پول میں داخل ھونے کے لئے ایٹم سے بھی چھوٹی چیز کی ضرورت تھی . وہ بھی لگے ھاتھوں مل گئی . ریڈیم کے ایٹم کے اندر سے جو چھوٹے چھوٹے ٹکڑے نکلتے ھیں وہ دو طرح کے ھوتے ھیں . ایک ھلکا اور ایک بھاری . ھلکا والا ھائیڈروجن کے ایٹم سے بھی 1/1800 گنا ھلکا ھوتا ھے . اس کا نام الیکٹرون (Electron) ھے . بھاری والا ھائیڈروجن کے ایٹم کے برابر وزنی . اس کا نام پروٹون (Proton) رکھا گیا . پروٹون الیکٹرن سے 1800 گنا بھاری ھوتا ھے . دوسری عجیب بات یہ تھی کہ یہ دونوں ٹکڑے بجلی سے بھرے (Electrically-charged) ھیں . الیکٹرون پر 'نرم' بجلی (Negative) اور پروٹون پر 'گرم' (Positive) بجلی . یہ دونوں ھی ایٹم کے مقابلے میں ایک لاکھ گنا چھوٹے ھوتے ھیں . جیسے گھڑے کے مقابلے میں رائی کے دانے . ریڈیم سے ایک دوسرا ٹکڑا بھی نکلتا ھے جو آکار میں پروٹون کے برابر ھی ھوتا ھے .

भारी. इस पर बिजली भी प्रोटोन की तरह 'गरम' यानी पाज़ीटिव' (Positive) होती है इस का नाम एलफ़ा-पारटिकिल (Alpha-particle) रखा गया.

इस खोखले ऐटम का भांडाफोड़ करने के लिये तेज चाल से चलने वाले यह छोटे छोटे इलकट्रोन, प्रोटोन और एलफ़ा-पारटिकिल मिल गए. सब से भारी होने की वजह से एलफ़ा-पारटिकिल ऐटम के अन्दर दूर तक पहुँच जाता है. इलकट्रोन इतनी दूर तक नहीं पहुँच पाता. एलफ़ा-पारटिकिल पहिले तो रुकता ही मुशकिल से है. दूसरे इस की चोट ऐटम के अन्दर के हिस्सों पर ज़ोरों की पड़ती है और ऐटम के टूट जाने की ज़्यादा सम्भावना रहती है.

इन इलकट्रोन, प्रोटोन और एलफ़ा-पारटिकिल नाम के हथौड़ों से साइन्स वालों ने 92 तरह के तत्वों के ऐटमों पर चोटें लगानी शुरू कर दीं. दिखाई तो न ऐटम ही देता है और न उस से भी छोटे यह इलकट्रोन, प्रोटोन वग़ैरा, पर इन के हवा में गुज़रने से एक रोशनी और बिजली की चमकती लकीर बनती थी. इस को अंधेरे में खुर्दबीन (Microscope) से देखने पर यह अन्दाज़ा हो सकता था कि ऐटम पर क्या असर हुआ इन असरों को साइन्स वाले इस तरह जानने लगे:--जब चमकती हुई लकीर बिलकुल सीधी बनती थी तब वह यह समझ लेते थे कि ऐटम के पोले हिस्से में से होकर हथौड़ा साफ़ निकल गया लेकिन जब चमकती हुई लकीर ऐटम से टकरा कर फिर पीछे को लौटती थी या ऐटम से टकरा कर कोना काटती हुई दाएँ या बाएँ कतरा जाती थी तो समझते थे कि हथौड़ा ऐटम के बीच के हिस्से से टकराया. तीसरे यह कि जब उनका फेंका

بھاری . اس پر بجلی بھی پروٹون کی طرح 'گرم' یعنی' پوزیٹو (Positive) ھوتی ھے . اس کا نام الفا پارٹیکل (Alpha-Particle) رکھا گیا .

اس کھوکھلے ایٹم کا بھانڈا پھوڑ کرنے کے لئے تیز چال سے چلنے والے یہ چھوٹے چھوٹے الیکٹرون' پروٹون اور الفا پارٹیکل مل گئے . سب سے بھاری ھونے کی وجہ سے الفا پارٹیکل ایٹم کے اندر دور تک پہنچ جاتا ھے. الیکٹرون اتنی دور تک نہیں پہنچ پاتا . الفاپارٹیکل پہلے تو رکتا ھی مشکل سے ھے. دوسرے اس کی چوٹ ایٹم کے اندر کے حصوں پر زوروں کی پڑتی ھے اور ایٹم کے ٹوٹ جانے کی زیادہ سمبھاونا رھتی ھے .

اِن الیکٹرون پروٹون اور الفاپارٹیکل نام کے ھتھوڑوں سے سائنس والوں نے 92 طرح کے تتوں کے ایٹموں پر چوٹیں لگانی شروع کردیں . دکھائی تو نہ ایٹم ھی دیتا ھے اور نہ اُس سے بھی چھوٹے یہ الیکٹرون ' پروٹون وغیرہ. پر اِن کے ھوا میں گزرنے سے ایک روشنی اور بجلی کی چمکتی لکیر بنتی تھی . اس کو اندھیرے میں خوردبین (Microscope) سے دیکھنے پر یہ اندازہ ھوسکتا تھا کہ ایٹم پر کیا اثر ھوا . ان اثروں کو سائنس والے اس طرح جاننے لگے :---جب چمکتی ھوئی لکیر بالکل سیدھی بنتی تھی تب وہ یہ سمجھ لیتے تھے کہ ایٹم کے پولے حصے میں سے ھوکر ھتھوڑا صاف نکل گیا . لیکن جب چمکتی ھوئی لکیر ایٹم سے ٹکرا کر پھر پیچھے کو لوٹتی تھی یا ایٹم سے ٹکرا کر کونا کاٹتی ھوئی دائیں یا بائیں کترا جاتی تھی تو سمجھتے تھے کہ ھتھوڑا ایٹم کے بیچ کے حصے سے ٹکرایا . تیسرے یہ کہ جب اُنکا پھینکا

हुआ हथौड़ा ऐटम के बीच के हिस्से से टकरा कर आगे की तरफ़ एक साथ दायें बायें दो चमकती लकीरें बनाता था तो वह यह समझ लेते थे कि ऐटम के बीच का हिस्सा टूट गया और उसका एक टुकड़ा टूट कर चमकती हुई लकीर बनाता हुआ भाग गया.

इस खोज से मालूम हुआ कि ऐटम दो हिस्सों में बँटा है एक बाहरी और एक भीतरी हिस्सा. बाहरी हिस्से में हलके हलके इलकट्रोनों का झुन्ड रहता है. और भीतरी वज़नी और ठोस हिस्से में प्रोटोनों का झुन्ड जिस में ऐटम का सारा मसाला होता है. इन दोनों झुन्डों की बिजली अलग अलग होती है. इसी वजह से बाहरी इलकट्रोन का झुन्ड बड़ी तेज़ी से भीतरी प्रोटोन के झुन्ड के चारों तरफ़ चक्कर काटता रहता है. और यह बाहरी भीतरी झुन्ड मिल कर ऐटम बनता है.

हाइड्रोजन के ऐटम के अन्दर एक प्रोटोन होता है और एक इलकट्रोन उस के चारों तरफ़ चक्कर काटता रहता है. हाइड्रोजन के ऐटम से भारी ऐटम के अन्दर एक से ज़्यादा प्रोटोन और बाहर एक से ज़्यादा इलकट्रोन होते हैं. यूरेनियम के ऐटम में 92 प्रोटोन के चारों तरफ़ 92 इलकट्रोन चक्कर लगाते रहते हैं. हाइड्रोजन के बाद जो तत्व आता है उसका नाम हीलियम (helium) है. यह हाइड्रोजन से चार गुना भारी होता है. इस ऐटम के अन्दर के बीज में चार प्रोटोन होते हैं. जिनमें दो इलकट्रोन भी चिपके रहते हैं इस ठोस बीज के चारों तरफ़ दो इलक्ट्रोन चक्कर काटते रहते हैं. इसी

ہوا ہتھوڑا ایٹم کے بیچ کے حصے سے ٹکرا کر آگے کی طرف ایک ساتھ دائیں بائیں دو چمکتی لکیریں بناتا تھا تو وہ یہ سمجھ لیتے تھے کہ ایٹم کے بیچ کا حصہ ٹوٹ گیا اور اُسکا ایک ٹکڑا ٹوٹ کر چمکتی ہوئی لکیر بناتا ہوا بھاگ گیا .

اِس کھوج سے معلوم ہوا کہ ایٹم دو حصوں میں بٹا ہے . ایک باہری اور ایک بھیتری حصہ . باہری حصے میں ہلکے ہلکے الیکٹرونوں کا جھنڈ رہتا ہے اور بھیتری وزنی اور ٹھوس حصے میں پروٹونوں کا جھنڈ جس میں ایٹم کا سارا مسالا ہوتا ہے . اُن دونوں جھنڈوں کی بجلی الگ الگ ہوتی ہے . اسی وجہ سے باہری الیکٹرون کا جھنڈ بڑی تیزی سے بھیتری پروٹون کے جھنڈ کے چارونطرف چکر کاٹتا رہتا ہے . اور یہ باہری بھیتری جھنڈ مل کر ایٹم بنتا ہے .

ہائیڈروجن کے ایٹم کے اندر ایک پروٹون ہوتا ہے اور ایک الیکٹرون اُس کے چارونطرف چکر کاٹتا رہتا ہے . ہائیڈروجن کے ایٹم سے بھاری ایٹم کے اندر ایک سے زیادہ پروٹون اور باہر ایک سے زیادہ الیکٹرون ہوتے ہیں . یورینیم کے ایٹم میں 92 پروٹون کے چارونطرف 92 الیکٹرون چکر لگاتے رہتے ہیں . ہائیڈروجن کے بعد جو تتو آتا ہے اُس کا نام ہیلیم (Helium) ہے . یہ ہائیڈروجن سے چارگونا بھاری ہوتا ہے . اس ایٹم کے اندر کے بیج میں چار پروٹون ہوتے ہیں جن میں دو الیکٹرون بھی چپکے رہتے ہیں . اس ٹھوس بیج کے چارونطرف دو الیکٹرون چکر کاٹتے رہتے ہیں .

अन्दर से निकलता है. हाइड्रोजन के ठोस बीज का नाम तो प्रोटोन है ही जैसा पहिले लिखा जा चुका है.

आप ने देखा कि जिस ऐटम को हम लोग अकट मानते थे वह घड़ी से कहीं ज्यादा बारीक पुरज़ों की ऐंचक पेची मशीन निकला. इसी ऐंचक पेची मशीन के अन्दर का प्रोटोन-झुन्ड जब टूटता या बनता है तो बड़ी भारी ताक़त बिजली और गरमी के रूप में उससे बाहर निकलती है और एक एक्स-रे (X-ray) की तरह की लहर भी निकती है जो ऐटम में से निकल कर आने वाली इन्सानी नसल पर ज़बरदस्त असर डाल देती है. यह ताकत उस ताक़त से कई करोड़ गुना ज़्यादा होती है जो कोयले या लकड़ी के जलने से पैदा हो सकती है.

साइन्स वाले इस नतीजे पर पहुँचे कि 92 क़िस्म के तत्व दो या तीन तरह की ईंटों से बने हैं जिनका नाम इलकट्रोन, प्रोटोन और न्यूट्रोन है. न्यूट्रोन प्रोटोन के बराबर भारी तो होता है पर उस में बिजली नहीं भरी होती. प्रोटोन और एलफा पारटिकिल दोनों गरम बिजली (Positive Electricity) से भरे होते हैं और जब यह ऐटम-बीज (Nucleus) के पास पहुंचते हैं तो उस की गरम बिजली से टकरा कर वापस चले आते हैं. और ऐटम-बीज के टूटने की संभावना कम रहती है. न्यूट्रोन में बिजली नहीं होती इस लिये यह ऐटम-बीज की बिजली की दीवार को पार करता हुआ ऐटम-बीज को भेद कर जाता है और ऐटम-बीज के अन्दर के बिजली के खिंचे ताने बाने को बिगाड़ देता है. यह ताना बाना ऐटम-बीज के अन्दर के प्रोटोन

اندر سے نکلتا ھے . ھائیڈروجن کے ٹھوس بیج کا نام تو پروٹون ھے ھی جیسا پہلے لکھا جا چکا ھے .

آپ نے دیکھا کہ جس ایٹم کو ھم لوگ اکٹ مانتے تھے وہ گھڑی سے کہیں زیادہ باریک پرزوں کی اینچک پیچی مشین نکلا . اسی اینچک پیچی مشین کے اندر کا پروٹون جھنڈ جب ٹوٹتا یا بنتا ھے تو بڑی بھاری طاقت بجلی اور گرمی کے روپ میں اُس سے باھر نکلتی ھے اور ایک ایکس رے (X-ray) کی طرح کی لہر بھی نکلتی ھے جو ایٹم میں سے نکل کر آنے والی انسانی نسل پر زبردست اثر ڈال دیتی ھے . یہ طاقت اُس طاقت سے کئی کروڑ گونا زیادہ ھوتی ھے جو کوئلے یا لکڑی کے جلنے سے پیدا ھو سکتی ھے .

سائنس والے اس نتیجے پر پہنچے کہ 92 قسم کے تتو دو یا تین طرح کی اینٹوں سے بنے ھیں جن کا نام الیکٹرون ، پروٹون اور نیوٹرون ھے . نیوٹرون پروٹون کے برابر بھاری تو ھوتا ھے پر اُس میں بجلی نہیں بھری ھوتی . پروٹون اور الفا پارٹیکل دونوں گرم بجلی (Positive Electricity) سے بھرے ھوتے ھیں اور جب یہ ایٹم بیج (Nucleus) کے پاس پہونچتے ھیں تو اُس کی گرم بجلی سے ٹکرا کر واپس چلے آتے ھیں اور ایٹم بیج کے ٹوٹنے کی سمبھاونا کم رہتی ھے . نیوٹرون میں بجلی نہیں ھوتی اس لئے یہ ایٹم بیج کی بجلی کی دیوار کو پار کرتا ھوا ایٹم بیج کو بھید کر جاتا ھے اور ایٹم بیج کے اندر کے بجلی کے کھنچے تانے بانے کو بگاڑ دیتا ھے . یہ تانا بانا ایٹم بیج کے اندر کے پروٹون

और इलकट्रोन में बुना रहता है और यह ताना बाना न्यूट्रोन के घुस जाने से टूट जाता है. कुछ प्रोटोन और इलकट्रोन इस ताने बाने में से इस तरह बाहर भाग जाते हैं जैसे कड़ी कमान का तीर. और बाक़ी बचे हुओं में से एक नये तत्व का जन्म होता है. साथ ही एक बहुत बड़ी ताक़त जो ऐटम-बीज के अन्दर के ताने बाने में छिपी हुई थी गरमी और बिजली के रूप में बाहर निकल पड़ती है. कभी कभी ऐसा भी होता है कि न्यूट्रोन अन्दर जाकर ऐटम-बीज में मिल जाता है और एक ज़्यादा भारी नए तत्व का जन्म होता है. इसी तरह से साइन्स वालों ने सोने के ऐटम से पारा और पारे के ऐटम से सोना बना लिया, ऐटम-बीज में से केवल उसकी ईंटें घटा बढ़ा कर.

देखा आपने. आख़िर पारे से सोना बन ही गया. यह पारस पत्थर की ही तलाश थी जिस ने पांच सौ बरस पहिले रसायन शास्त्र (Chemistry) को जन्म दिया. ऐटम-मन्थन से यह एक नई चीज़ निकली.

आप यह न समझें कि आप जितना चाहे उतना सोना बना सकते हैं. ऐसी बात नहीं है. इस तरह जो सोना बन सकता है वह इतना थोड़ा होता है कि शायद ख़ुर्दबीन से भी दिखाई न दे. यह क्यों ? इस की क्या वजह ? याद रखिये कि ऐटम-बीज ऐटम के अन्दर इतनी थोड़ी जगह लेता है जितनी एक मक्खी किसी घड़े के बीचों बीच में. अब अगर आप आंख बन्द कर के एक सींक घड़े के मुहँ में डाल कर इस मक्खी को छेदने की कोशिश करें तो शायद लाख दफा कोशिश करने के बाद आप एक बार सफल हों शायद

اور الیکٹرون میں بنا رہتا ہے اور یہ تانا بانا نیوٹرون کے گھس جانے سے توٹ جاتا ہے . کچھ پروٹون اور الکٹرون اس تانے بانے میں سے اس طرح باہر بھاگ جاتے ہیں جیسے کڑی کمان کا تیر آور باقی بچے ہوؤں میں سے ایک نئے تتو کا جنم ہوتا ہے . ساتھ ہی ایک بہت بڑی طاقت جو ایٹم بیج کے اندر کے تانے بانے میں چھپی ہوئی تھی گرمی اور بجلی کے روپ میں باہر نکل پڑتی ہے . کبھی کبھی ایسا بھی ہوتا ہے کہ نیوٹرون اندر جاکر ایٹم بیج میں مل جاتا ہے آور ایک زیادہ بھاری نئے تتو کا جنم ہوتا ہے . اِسی طرح سے سائنس والوں نے سونے کے ایٹم سے پارہ اور پارے کے ایٹم سے سونا بنا لیا ، ایٹم بیج میں سے کیول اُس کی اینٹیں گھٹا بڑھا کر .

دیکھا آپ نے . آخر پارے سے سونا بن ہی گیا . یہ پارس پتھر کی ہی تلاش تھی جس نے پانچ سو برس پہلے رسائن شاستر (Chemistry) کو جنم دیا . ایٹم منتھن سے یہ ایک نئی چیز نکلی .

آپ یہ نہ سمجھیں کہ آپ جتنا چاہے اُتنا سونا بنا سکتے ہیں . ایسی بات نہیں ہے . اس طرح جو سونا بن سکتا ہے وہ اِتنا تھوڑا ہوتا ہے کہ شاید خوردبین سے بھی دکھائی نہ دے . یہ کیوں ؟ اسکی کیا وجہ ؟ یاد رکھئے کہ ایٹم بیج ایٹم کے اندر اتنی تھوڑی جگہ لیتا ہے جتنی ایک مکھی کسی گھڑے کے بیچوں بیچ میں . اب اگر آپ آنکھ بند کرکے ایک سینک گھڑے کے منہ میں ڈال کر اس مکھی کو چھیدنے کی کوشش کریں تو شاید لاکھ دفعہ کوشش

तरह लाखों न्यूट्रोन ऐटम के अन्दर भेजने पर शायद एक ही ऐसा हो जो ऐटम-बीज के पास पहुँच जाय. इस तरह बहुत कम मात्रा में सोना बन सकता है.

मगर खोज तो उस कुन्जी की थी जो ऐटम की अपार ताक़त की कोठरी इन्सान के लिये खोल सके. इस के लिये जरूरत हुई पहिले तो न्यूट्रोन बनाने वाली चीज़ की. दूसरे किसी ऐसे तत्व की जो दुनिया में आसानी के साथ मिल भी जाये और जिसके ऐटम के टूटने पर ज्यादा से ज्यादा मात्रा में ताक़त मिल सके.

सन् १९३९ ई० में एक जरमन रसायन शास्त्री (Chemist) ओटोहान (Ottohahn) ने यह मालूम कर लिया कि जब यूरेनियम धातु के एक तरह के ऐटम U235 पर धीमी चाल का न्यूट्रोन टकराता है तो U235 के ऐटम के दो टुकड़े हो जाते हैं. साथ ही दो न्यूट्रोन भी बड़ी तेजी के साथ ऐटम-बीज में से निकलते हैं. और दो हजार करोड़ वोल्ट (Volt) की बिजली की ताक़त टूटे हुए ऐटम-बीज में से फूट पड़ती है. अगर किसी तरह इन दो न्यूट्रोन की चाल को भी धीमा कर दिया जाय तो बजाय बाहर हवा में भाग जाने के वह न्यूट्रोन पास के U235 के दूसरे दो ऐटम को तोड़ सकते हैं. इस तरह टूटने वाले U235 के ऐटमों की तादाद एक से दो और दो से चार होती हुई बढ़ती ही जायगी और पलक मारते ही करोड़ों की तादाद में U235 के ऐटम फट जायँगे और ऐटम बम का बनना मुमकिन हो सकेगा. ओटोहान को दूसरी बड़ी लड़ाई के बाद इस बड़ी खोज पर नोबेल प्राइज़ (Nobel Prize) इनाम मिला. यूँ समझिये कि अगर ईंट पर ईंट रख कर आप एक घरौंदा बनायें और उस पर एक ईंट फेंक दें

طرح لاکھوں نیوٹرون ایٹم کے اندر بھیجنے پر شاید ایک هی ایسا هو جو ایٹم بیج کے پاس پہنچ جائے . اس طرح بہت کم ماترا میں سونا بن سکتا ہے .

مگر کھوج تو اُس کنجی کی تھی جو ایٹم کی اپار طاقت کی کوٹھری انسان کے لئے کھول سکے . اس کے لئے ضرورت هوئی پہلے تو نیوٹرون بنانے والی چیز کی . دوسرے کسی ایسے تتو کی جو دنیا میں آسانی کے ساتھ مل بھی جائے اور جس کے ایٹم کے ٹوٹنے پر زیادہ سے زیادہ ماترا میں طاقت مل سکے .

سن ۱۹۳۹ع میں ایک جرمن رسائن شاستری (Chemist) اوٹوھان (Ottohahn) نے یہ معلوم کرلیا کہ جب یوریلیم دھات کے ایک طرح کے ایٹم U235 پر دھیمی چال کا نیوٹرون ٹکراتا ہے تو U235 کے ایٹم کے دو ٹکڑے هوجاتے هیں . ساتھ هی دو نیوٹرون بھی بڑی تیزی کے ساتھ ایٹم بیج میں سے نکلتے هیں اور دو هزار کروڑ وولٹ (Volt) کی بجلی کی طاقت ٹوٹے هوئے ایٹم بیج میں سے پھوٹ پڑتی ہے . اگر کسی طرح اِن دو نیوٹرون کی چال کو بھی دھیما کردیا جائے تو بجائے باهر هوا میں بھاگ جانے کے وہ نیوٹرون پاس کے U235 کے دوسرے دو ایٹم کو توڑ سکتے هیں . اس طرح ٹوٹنے والے U235 کے ایٹموں کی تعداد ایک سے دو اور دو سے چار هوتی هوئی بڑھتی هی جائیگی اور پلک مارتے هی کروڑوں کی تعداد میں U235 کے ایٹم پھٹ جائینگے اور ایٹم بم کا بننا ممکن هو سکیگا . اوٹوھان کو دوسری بڑی لڑائی کے بعد اِس بڑی کھوج پر نوبل پرائز (Nobel Prize) انعام ملا . یوں سمجھئے کہ اگر اینٹ پر اینٹ رکھکر آپ ایک گھروندا بنائیں اور اس پر ایک اینٹ پھینک دیں

तो ऊपर से जो ईंट गिरेगी वह बाक़ी ईंटों को आपस में टकराती और उनको गिराती हुई सारे घरौंदे को गिरा देगी. अगर इसी ईंट को आप बड़ी तेज़ी से फेंकतेतो शायद घरौंदे की एक दो ईंट को अपने साथले कर बाहर को निकल जाती और घरौंदा बाक़ी बच जाता.

इस खोज की खबर छपते ही सन् १९४० में अमरीका, इंगलैंड और जरमनी में गुप्त रूप से बहुत बड़े पैमाने पर ऐटम-बम बनाने की खोज शुरू हो गई. तीनों को मालूम था कि जो पहिले ऐटम-बम बना लेगा वही लड़ाई जीतेगा और बाक़ी मुल्क बरबाद हो जायेंगे.

تو اوپر سے جو اینٹ گرے گی وہ باقی اینٹوں کو آپس میں ٹکراتی اور اُن کو گراتی ہوئی سارے گھروندے کو گرا دیگی . اگر اسی اینٹ کو آپ بڑی تیزی سے پھینکتے تو شاید گھروندے کی ایک دو اینٹ کو اپنے ساتھ لیکر باھر کو نکل جاتی اور گھروندا باقی بچ جاتا .

اس کھوج کی خبر چھپتے ہی سن ۱۹۴۰ع میں امریکہ ' انگلینڈ اور جرمنی میں گپت روپ سے بہت بڑے پیمانے پر ایٹم بم بنانے کی کھوج شروع ہو گئی . تینوں کو معلوم تھا کہ جو پہلے ایٹم بم بنا لیگا وھی لڑائی جیتیگا اور باقی ملک برباد ہو جائینگے .

भारत का विधान

[भारत के विधान का एक पूरा और ठीक ठीक हिन्दी तरजुमा हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी ने निकाला है. इसका विज्ञापन 'नया हिन्द' के इस नम्बर में छपा है. यह तरजुमा क्यों कराया गया इसे बताने के लिये उस तरजुमे की 'पहल-बात' हम ज्यूँ की त्यूँ नीचे दे रहे हैं—एडीटर]

पहल बात

छब्बीस नवम्बर सन् 1949 को विधान सभा ने भारत के विधान को अपना कर भारत की दफ़तरी भाशा के सवाल का फ़ैसला कर दिया और देश भर ने शान्ति का सांस लिया. भारत की दफ़तरी भाशा (official language) का नाम हिन्दी रखा गया. वह हिन्दी क्या होगी इसकी तफ़सील दफ़ा 343 और 351 में खोल कर कर दी गई. वह दोनों दफ़ा यह हैं :—

"343—(1) यूनियन की दफ़तरी भाशा देवनागरी लिखावट में हिन्दी होगी.

"यूनियन के दफ़तरी मतलबों के लिये हिन्दसों का जो रूप काम में लाया जायगा वह हिन्दुस्तानी हिन्दसों का अन्तर क़ौमी रूप होगा.

× × × × ×"

"351—यूनियन का फ़रज़ होगा कि हिन्दी भाशा के फैलाव को बढ़ाए, और उसका इस तरह विकास करे कि वह भारत की मिली

بھارت کا ودھان

[بھارت کے ودھان کا ایک پورا اور ٹھیک ٹھیک ھندی ترجمہ ھندستانی کلچر سوسائیٹی نے نکالا ھے . اُس کا وگیاپن 'نیا ھند' کے اس نمبر میں چھپا ھے . یہ ترجمہ کیوں کرایا گیا اسے بتانے کے لئے اُس ترجمے کی 'پہل بات' ھم جیوں کی تیوں نیچے دے رھے ھیں—ایڈیٹر]

پہل بات

چھبیس نومبر سن 1949 کو ودھان سبھانے بھارت کے ودھان کو اپنا کر بھارت کی دفتری بھاشا کے سوال کا فیصلہ کر دیا اور دیش بھرنے شانتی کا سانس لیا . بھارت کی دفتری بھاشا (official language) کا نام ھندی رکھا گیا. وہ ھندی کیا ھوگی اِس کی تفصیل دفعہ 343 اور 351 میں کھول کر کر دی گئی . وہ دونوں دفعہ یہ ھیں :—

"343—(1) یونین کی دفتری بھاشا دیو ناگری لکھاوٹ میں ھندی ھوگی .

" یونین کے دفتری مطلبوں کے لئے ھندسوں کا جو روپ کام میں لایا جائیگا وہ ھندستانی ھندسوں کا انتر قومی روپ ھوگا .

"× × × ×

"351— یونین کا فرض ھوگا کہ ھندی بھاشا کے پھیلاو کو بڑھائے، اور اُس کا اِس طرح وکاس کرے کہ وہ بھارت کی ملی

जुली कलचर के सब अंगों को जाहिर करने का साधन बन सके और, उसकी आत्मा को छेड़े बिना, जो जो रूप, जो शैली और जो मुहाविरे हिन्दुस्तानी में और आठवीं पट्टी में दर्ज भारत की दूसरी भाशाओं में काम में आते हैं उनको उसमें रचा पचा कर, और, जहाँ कहीं जरूरी या चाहनी हो, उसकी शब्दावली के लिये पहले संस्कृत से और फिर दूसरी भाशाओं से शब्द लेकर, उसे माला-माल करे."

आठवीं पट्टी में दर्ज भाशाएँ यह हैं:—1. आसामी, 2. बंगला, 3. गुजराती, 4. हिन्दी, 5. कन्नड़ 6. कश्मीरी, 7. मलयालम, 8. मराठी, 9. उड़िया, 10. पंजाबी, 11. संस्कृत, 12 तामिल, 13' तेलगू, 14. उर्दू.

इस तरह जिस हिन्दी की विधान में व्याख्या की गई है उसमें और उस भाशा में कोई फरक नहीं रह जाता जो भारत के बहुत बड़े भाग की जनबोली है, जो पेशावर से आसाम तक और हिमालय से रासकुमारी तक बोली या समझी जाती है, और जिसे देसी और बिदेसी दोनों ने सैकड़ों बरस पहले हिन्दुस्तान की बोली जानकर हिन्दुस्तानी नाम दिया था. यही एक ऐसी भाशा रही है जो सच्चे मानी में भारत की मिली जुली कलचर के सब अंगों को जाहिर करती है और अपनी आत्मा को नुक़सान पहुँचाए बिना भारत की दूसरी भाशाओं के ही नहीं बाहर की भाशाओं के भी शब्द, शैलियाँ और मुहाविरों को अपने अन्दर समा कर अपने आपको मालामाल करने की सकत रखती है. हमारे देश की इसी भाशा को विधान ने हिन्दी नाम दिया

جلی کلچر کے سب انگوں کو ظاہر کرنے کا سادھن بن سکے ' اور اُس کی آتما کو چھیڑے بنا' جو جو روپ' جو شیلی اور جو محاورے ہندستانی میں اور آٹھویں پٹّی میں درج بھارت کی دوسری بھاشاؤں میں کام میں آتے ہیں اُن کو اُس میں رچا پچاکر' اور' جہاں کہیں ضروری یا چاہنی ہو' اُس کی شبد اولی کے لئے پہلے سنسکرت سے اور پھر دوسری بھاشاؤں سے شبد لیکر ' اُسے مالا مال کرے ."

آٹھویں پٹّی میں درج بھاشائیں یہ ہیں :—1. آسامی ' 2. بنگلہ ' 3. گجراتی ' 4. ہندی ' 5. کنڑ' 6. کشمیری' 7. ملیالم ' 8. مراٹھی' 9. اُڑیا ' 10. پنجابی' 11. سنسکرت' 12. تامل ' 13. تیلگو ' 14. اُردو .

اس طرح جس ہندی کی ودھان میں ویاکھیا کی گئی ہے اُس میں اور اُس بھاشا میں کوئی فرق نہیں رہ جاتا جو بھارت کے بہت بڑے بھاگ کی جن بولی ہے ' جو پیشاور سے آسام تک اور ہمالیہ سے راس کماری تک بولی یا سمجھی جاتی ہے' اور جسے دیسی اور بدیسی دونوں نے سیکڑوں برس پہلے ہندستان کی بولی جان کر ہندستانی نام دیا تھا . یہی ایک ایسی بھاشا رہی ہے جو سچے معنی میں بھارت کی ملی جلی کلچر کے سب انگوں کو ظاہر کرتی ہے اور اپنی آتما کو نقصان پہونچائے بنا بھارت کی دوسری بھاشاؤں کے ہی نہیں باہر کی بھاشاؤں کے بھی شبد ' شیلیاں اور محاورں کو اپنے اندر سما کر اپنے آپ کو مالا مال کرنے کی سکت رکھتی ہے . ہمارے دیش کی اِسی بھاشا کو ودھان نے ہندی نام دیا ہے . جن لوگوں کو بھارت کی اِس ملی جلی کلچر سے پریم ہے ا...

(हिन्दी)

जो भारत को एक शक्तिशाली और गठा हुआ देश बनाना चाहते हैं उन्होंने विधान की इस दफ़ा का खुले दिल से स्वागत किया. पर विधान का जो हिन्दी अनुवाद सरकार की तरफ़ से निकला है वह न तो विधान की ऊपर लिखी दफ़ाओं को निभाता मालूम होता है और न बहुत से पत्रकारों और समझदारों की नज़र चढ़ पाया है. जनता को उसके समझ में न आने की शिकायत तो है ही. उस अनुवाद की आत्मा हिन्दी है यह कहना कठिन है. फिर हिन्दुस्तानी या किसी दूसरी देसी भाशा के रूप, शैली और मुहाविरे उसमें कैसे निभते. गुजराती, कन्नड़, उर्दू वग़ैरा में से किसी एक दो के इक्का दुक्का शब्द लेकर विधान की दफ़ा के अक्षर भले ही निभाए गए हों रूह नहीं निभाई गई. अनुवाद करने वालों ने संस्कृत का इतना अधिक सहारा लिया है कि बेचारी हिन्दी तो दब कर रह गई.

(५५८)

संसार की भाशाओं के इतिहास से पता चलता है कि जब तक कोई भाशा किसी प्राचीन भाशा की शब्दावली के बोझ से दबी रहती है तब तक वह कभी तरक़्क़ी नहीं कर पाती. मिसाल के लिये जब तक अंगरेज़ी भाशा लातीनी, यूनानी जैसी पुरानी भाशाओं के बोझ से दबी रही, वह तरक़्क़ी न कर सकी. जब शेक्सपियर और उसके साथियों ने उस पर से इन भाशाओं का जुआ उतार फेंका उस के बाद ही अंगरेज़ी भाशा ऐसी फली फूली कि आज संसार की भाशाओं में उसका नाम सबसे आगे लिया जाता है. अब अगर अंगरेज़ी भाषा के सब चालू शब्दों को निकाल कर उनकी जगह लातीनी और यूनानी के शब्द भर दिये जांय और उनके रूप भी लातीनी और यूनानी के व्याकरन के अनुसार बनाए जांय तो अंगरेज़ी भाशा का

جو بھارت کو ایک شکتی شالی اور گٹھا ہوا دیش بنانا چاہتے ہیں اُنھوں نے ودھان کی اس دفعہ کا کھلے دل سے سواگت کیا . پر ودھان کا جو ہندی اِنوواد سرکار کی طرف سے نکلا ہے وہ نہ تو ودھان کی اوپر لکھی دفاؤں کو نبھاتا معلوم ہوتا ہے اور نہ بہت سے پترکاروں اور سمجھداروں کی نظر چڑھ پایا ہے . جنتا کو اُس کے سمجھ میں نہ آنے کی شکایت تو ہے ہی . اُس انوواد کی آتما ہندی ہے یہ کہنا کٹھن ہے . پھر ہندستانی یا کسی دوسری دیشی بھاشا کے روپ ، شیلی اور محاورے اُس میں کیسے نبھتے . گجراتی ، کنڑ ، اُردو وغیرہ میں سے کسی ایک دو کے اِکا دکا شبد لیکر ودھان کی دفعہ کے اکشر بھلے ہی نبھائے گئے ہوں روح نہیں نبھائی گئی . انوواد کرنے والوں نے سنسکرت کا اتنا ادھک سہارا لیا ہے کہ بیچاری ہندی تو دب کر رہ گئی .

سنسار کی بھاشاؤں کے اتہاس سے پتہ چلتا ہے کہ جب تک کوئی بھاشا کسی پراچین بھاشا کی شبداولی کے بوجھ سے دبی رہتی ہے تب تک وہ کبھی ترقی نہیں کر پاتی . مثال کے لئے جب تک انگریزی بھاشا لاطینی ، یونانی جیسی پرانی بھاشاؤں کے بوجھ سے دبی رہی ، وہ ترقی نہ کر سکی . جب شیکسپیر اور اُس کے ساتھیوں نے اُس پر سے اِن بھاشاؤں کا جوا اُتار پھینکا اُس کے بعد انگریزی بھاشا ایسی پھلی پھولی کہ آج سنسار کی بھاشاؤں میں اُس کا نام سب سے آگے لیا جاتا ہے . اب اگر انگریزی بھاشا کے سب چالو شبدوں کو نکالکر اُن کی جگہ لاطینی اور یونانی کے شبد بھر دئے جائیں اور اُن کے روپ بھی لاطینی اور یونانی کے دیاکرن کے انوسار بنائے جائیں تو انگریزی بھاشا کا

और उसके सदर की सरकारी मिनिस्टरों और अफ़सरों के मुक़ाबले में क्या हैसियत है ? कांग्रेस के गांधी वादी कार्यकर्ताओं और विचारकों की आज क्या हैसियत है ? गांधीवादी सिद्धान्तों को सरकारी अमल में आज कहाँ तक लाया जा रहा है ? मुसलमानों, हरिजनों और किसानों-मज़दूरों और ग़रीब जनता पर आज क्या बीत रही है ? आज क्या यह सच नहीं है कि लोग ऊबकर और परेशान होकर यह कहने लगे हैं कि इससे अच्छी तो अँग्रेज़ी सरकार ही थी ? यह हमारी मौजूदा सरकार की शिकायत है या तारीफ़ ?

१९४८ की ३० जनवरी को गांधी जी का ख़ून हुआ. उस ख़ूनी को फांसी देने में देश का लाखों रुपया और इतना वक़्त बरबाद हुआ. मगर उस ख़ूनी के साथी, हमख़याल, हमजोली छुट्टा सांड की तरह घूम रहे हैं और अपना संगठन मज़बूत बना रहे हैं. अपने इस नापाक काम में उन्हें ऊंचे ऊंचे काँग्रेसी नेताओं और मिनिस्टरों तक से मदद मिलती है. क्या हमारा यह कहना सच नहीं है ? किसानों, मज़दूरों, मुसलमानों और हरिजनों का हाल आज क्या है ? मुसलमानों की संस्कृति और उनकी इज़्ज़त-आबरू पर हमला करके, उन पर अविश्वास करके, उनको हर तरह से ज़लील और परेशान करके, कांग्रेसमैनों और कांग्रेसी सरकारों ने क्या गांधीवादी होने का सबूत दिया है ?

महात्मा गांधी का नाम लेना और उनके उसूलों की क़समें खाना आसान बात है, मगर गांधी जी के बताये रास्ते पर चलना, न्याय, लोकतन्त्र और भाई चारे के उसूलों को सच्चे मानों में असली जामा पहनाना दूसरी बात है.

اور اس کے صدر کی سرکاری منسٹروں اور افسروں کے مقابلے میں کیا حیثیت ہے؟ کانگریس کے گاندھی وادی کارکرتاؤں اور وچارکوں کی آج کیا حیثیت ہے؟ گاندھی وادی سدھانتوں کو سرکاری عمل میں آج کہاں تک لایا جا رہا ہے؟ مسلمانوں، ہریجنوں اور کسانوں، مزدوروں اور غریب جنتا پر آج کیا بیت رہی ہے؟ آج کیا یہ سچ نہیں ہے کہ لوگ اوب کر اور پریشان ہوکر یہ کہنے لگے ہیں کہ اس سے اچھی تو انگریزی سرکار ہی تھی؟ یہ ہماری موجودہ سرکار کی شکایت ہے یا تعریف؟

۱۹۴۸ء کی ۳۰ جنوری کو گاندھی جی کا خون ہوا۔ اس خونی کو پھانسی دینے میں دیش کا لاکھوں روپیہ اور اتنا وقت برباد ہوا مگر اس خونی کے ساتھی، ہم خیال، ہمجولی چھٹا سانڈ کی طرح گھوم رہے ہیں اور اپنا سنگٹھن مضبوط بنا رہے ہیں۔ اپنے اس ناپاک کام میں انھیں اونچے اونچے کانگریسی نیتاؤں اور منسٹروں تک سے مدد ملتی ہے۔ کیا ہمارا یہ کہنا سچ نہیں ہے؟ کسانوں، مزدوروں، مسلمانوں اور ہریجنوں کا حال آج کل کیا ہے؟ مسلمانوں کی سنسکرتی اور ان کی عزت آبرو پر حملہ کرکے ان پر اوشواس کرکے ان کو ہر طرح سے ذلیل اور پریشان کرکے کانگریس مینوں اور کانگریسی سرکار نے کیا گاندھی وادی ہونے کا ثبوت دیا ہے؟

مہاتما گاندھی کا نام لینا اور ان کے اصولوں کی قسمیں کھانا آسان بات ہے، مگر گاندھی جی کے بتائے راستے پر چلنا، نیائے، لوک تنتر اور بھائی چارے کے اصولوں کو سچے معنوں میں عملی جامہ پہنانا دوسری بات ہے۔

क्या हाल होगा यह हम सहज ही में समझ सकते हैं. सरकार की ओर से निकले हिन्दी अनुवाद की भाषा कुछ ऐसी ही होगई है. 'मिलावट' की जगह 'अपमिश्रण', 'गोद लेना' की जगह 'दत्तकग्रहण,' 'कम करना' की जगह 'अल्पीकरण,' 'दिवाला' (Insolvency) की जगह 'शोधाक्षमता,' 'इकहरे बदलते वोट' (Single transferable vote) की जगह ' एकल संक्रमणीय मत', 'परची' (Ballot) की जगह 'शलाका', 'बुढ़ापा पेनशन' (Old age pension) की जगह ' वार्धक्य निवृत्ति वेतन', 'साख' (Credit) की जगह 'आकलन' 'बेवसीयती' (Intestacy) की जग 'इच्छापत्रहीनत्व', 'उधार लेना' की जगह 'उद्धारग्रहण', 'किया माना गया' की जगह 'कर्तु मभिप्रेत', 'जुआ' की जगह 'द्यूत', 'तख़मीना' (Estimate) की जगह ' प्राक्कलन', 'इस काम से' की जगह 'एतद्द्वारा', 'मिली जुली कलचर' (Composite culture) की जगह 'सामाजिक (?) संस्कृति', इसी तरह के सैकड़ों नहीं हजारों शब्द इस अनुवाद में भरे पड़े हैं.

(२५६)

इससे हिन्दी की हमें कोई भलाई होती दिखाई नहीं देती. इस तरह की भाषा भारत की मिली जुली कलचर को तो किसी भी तरह जाहिर नहीं करती. वह न कहीं बोली जाती है और न देश के किसी भाग की भाषा है. उसे समझने में तो क्या पढ़ने में भी कष्ट होता है. फिर उसमें हिन्दी हिन्दुस्तानी की रवानी और उसके मुहाविरे आ ही कैसे सकते हैं.

... कि उसे शुरू से आखिर तक पढ़

کیا حال هوگا یہ هم سہج هی میں سمجھ سکتے هیں . سرکار کی اور سے نکلے هندي انوواد کی بھاشا کچھ ایسی هی هو گئی هے . 'ملاوٹ' کي جگہ ' اپمشرن ' ' گود لینا ' کی جگہ ' دتک گرهن ' ' کم کرنا ' کی جگہ ' الپیکرن ' ' دیوالہ ' (Insolvency) کی جگہ ' شودھاکشمتا ' ' اکہرے بدلتے ووٹ ' (Single transferable vote) کی جگہ ' ایکل سنکرمنیہ مت ' ' پرچي ' (Ballot) کی جگہ ' شلاکا ' ' بوڑھاپا پینشن ' (Old age pension) کي جگہ ' واردھکیہ نیورتتی ویتن '، ' ساکھ ' (Credit) کی جگہ ' آکلن ' ' بےوصیتی ' (Intestacy) کي جگہ 'اِچھا پتر هینتو '، ' اُدھار لینا ' کی جگہ ' اُددھار گرهن ' ' کیا مانا گیا ' کی جگہ ' کرتمبھی پریت ' ' جوآ ' کي جگہ ' دیوت '، 'تخمینہ' (Estimate) کی جگہ ' پراککلن ' ' اِس کام سے ' کی جگہ ' ایتد دوارا '، ' ملی جلی کلچر ' (Composite culture) کی جگہ ' ساماجک (؟) سنسکرتی '، اسی طرح کے سیکڑوں نہیں هزاروں شبد اس انوواد میں بھرے پڑے هیں .

(۲۵۶)

اِس سے هندی کی همیں کوئی بھلائی هوتی دکھائی نہیں دیتی . اِس طرح کي بھاشا بھارت کی ملی جلی کلچر کو تو کسي بھي طرح ظاهر نہیں کرتی . وہ نہ کہیں بولي جاتی هے اور نہ دیش کے کسی بھاگ کي بھاشا هے . اُسے سمجھنے میں تو کیا پڑھنے میں بھی کشٹ هوتا هے . پھر اُس میں هندي هندستانی کي روانی اور اُس کے محاورے آهی کیسے سکتے هیں .

انگریزي مول کو هی دیکھئے کہ اُسے شروع سے آخر تک پڑھ جائیے اور شاید ...

के लिये कोश का सहारा नहीं लेना पड़ेगा और इस अनुवाद को देखिये कि बिना अंगरेज़ी मूल को देखे और पग पग पर उसकी शब्दावली का सहारा लिये इसका समझना लगभग असम्भव है.

जनता की जरूरत और इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी ने यह मुनासिब समझा कि हमारे विधान का एक ऐसा अनुवाद तैयार किया जाय जिसकी भाशा वही हो जो विधान की दफ़ा 343 और 351 में बताई गई है, जिसमें अंगरेज़ी मूल का अर्थ ज्यों का त्यों आ जाय और जिसे देश की जनता पढ़ सके और समझ सके.

हमारे अनुवाद करने वालों ने भाशा की सरलता और मुहाविरे का तो ध्यान रखा ही है उनकी यह भी कोशिश रही है कि अंगरेज़ी मूल का हर शब्द और हर वाक्य जिन मानों में आया है ठीक वही माने अनुवाद में भी आ जांय. इसके लिये यह जरूरी नहीं कि एक अंगरेज़ी शब्द के लिये हर जगह एक ही हिन्दी का शब्द रखा जाय. शब्दों के ठीक ठीक माने प्रसंग से ही जाने जाते हैं. अंगरेज़ी मूल में कई जगह एक एक शब्द कई कई अर्थों में आया है. हिन्दी में उसका एक ही शब्द से अर्थ करने में अर्थ का अनर्थ हो सकता था. इसलिये अनुवाद करने वालों ने कहीं कहीं एक अंगरेज़ी शब्द के लिये, जहां जैसा जंचा, एक से अधिक हिन्दी शब्द रखे हैं, जैसे— 'public service' में पबलिक का अर्थ 'सरकारी' है तो 'public welfare' में पबलिक का अर्थ 'जनता की', 'civil court' में 'civil' का अर्थ 'दीवानी' है तो 'civil service' में 'civil' का अर्थ 'नागरी' है, 'adopt' का अर्थ कहीं 'गोद लेना' है तो कहीं 'अपनाना',

کےلئے کوش کا سہارا نہیں لینا پڑیگا اور اس انوواد کو دیکھئے کہ بنا انگریزی مول کو دیکھے اور پگ پگ پر اُسکی شبداولی کا سہارا لئے اِسکا سمجھنا لگ بھگ اسمبھو ھے .

جنتا کی ضرورت اور اِن سب باتوں کو دھیان میں رکھتے ہوئے هندستانی کلچر سوسائٹی نے یہ مناسب سمجھا کہ همارے ودھان کا ایک ایسا انوواد تیار کیا جائے جس کی بھاشا وهی ہو جو ودھان کی دفعہ 343 اور 351 میں بتائی گئی ھے ' جس میں انگریزی مول کا ارتھ جیوں کا تیوں آجائے اور جسے دیش کی جنتا پڑھ سکے اور سمجھ سکے .

همارے انوواد کرنے والوں نے بھاشا کی سرلتا اور محاورے کا تو دھیان رکھا هی ھے اُن کی یہ بھی کوشش رهی ھے کہ انگریزی مول کا هر شبد اور هر واکیہ جن معنوں میں آیا ھے ٹھیک وهی معنے انوواد میں بھی آجائیں . اِس کے لئے یہ ضروری نہیں کہ ایک انگریزی شبد کے لئے هر جگہ ایک هی هندی کا شبد رکھا جائے . شبدوں کے ٹھیک ٹھیک معنے پرسنگ سے هی جانے جاتے هیں . انگریزی مول میں کئی جگہ ایک ایک شبد کئی کئی ارتھوں میں آیا ھے . هندی میں اُسکا ایک هی شبد سے ارتھ کرنے میں ارتھ کا انرتھ هو سکتا تھا . اسلئے انوواد کرنے والوں نے کہیں کہیں ایک انگریزی شبد کے لئے ' جہاں جیسا جنچا ' ایک سے ادھک هندی شبد رکھے هیں ' جیسے— ' public service ' میں پبلک کا ارتھ 'سرکاری' ھے تو ' public welfare ' میں پبلک کا ارتھ ' جنتا کی '، ' civil court ' میں ' civil ' کا ارتھ ' دیوانی ' ھے تو ' civil service ' میں ' civil ' کا ارتھ ' ناگری ' ھے ' ' adopt ' کا ارتھ کہیں ' گود لینا ' ھے تو کہیں ' اپنانا '،

'constitution' का अर्थ कहीं 'विधान' है तो कहीं 'बनावट'. फिर भी अनुवादकों ने यह कोशिश की है कि जहां तक हो सके एक अंगरेज़ी शब्द के लिये एक ही हि‹दी शब्द आवे.

इंडिया का अनुवाद 'भारत' और 'हिन्द' दोनों किया गया है. इस विधान के आरंभ होने से पहले वाले 'इंडिया' को अनुवादकों ने 'हिन्द' कहा है, और जहां कहीं इंडिया का मतलब उस पूरे देश से है जिसमें भारत और पाकिस्तान दोनों शामिल थे वहां भी इंडिया का अर्थ 'हिन्द' किया गया है. और सब जगह 'भारत' अर्थ किया गया है.

(५९५) गवरनर शब्द का अर्थ 'रियासत पति' किया गया है, पर विधान के आरंभ होने से पहले के सूबों के गवरनरों को गवरनर ही कहा गया है.

विधान के भाग पांच और भाग छै की बहुत सी दफ़ाएँ मिलती जुलती हैं. अनुवाद में इन दोनों भागों की जवाबी दफ़ाओं का जहां तक ठीक समझा गया एक सा अनुवाद किया गया, पर भाग छै की कुछ दफ़ाओं के अनुवाद की वाक्य रचना में कहीं कहीं अन्तर भी है क्योंकि शुरू के फ़ार्म छप जाने के बाद अनुवादकों को बाद की वाक्य रचना ज़्यादा अच्छी मालूम हुई. इससे मतलब में ज़रा भी फ़रक़ नहीं पड़ा है. इसी तरह की एक दो मिसालें और भी हैं.

जहां तक हो सका अनुवाद करने वालों ने उन शब्दों से काम लिया है जो उत्तर भारत में आम तौर पर बोले और समझे जाते हैं. दूसरी प्रांतीय भाशाओं के भी चालू शब्द जहां तहां लिये गए हैं. यूनानी अंगरेज़ी फ़्रांसीसी पुर्तगाली तुर्की फ़ारसी अरबी

'constitution' کا ارتھ کہیں ' ودھان ' ھے تو کہیں ' بناوٹ ' . پھر بھی انوودکوں نے یہ کوشش کي ھے کہ جہاں تک ھو سکے ایک انگریزي شبد کے لئے ایک ھی هندي شبد آوے .

انڈیا کا انوواد ' بھارت ' اور ' هند ' دونوں کیا گیا ھے . اِس ودھان کے آرمبھ ھونے سے پہلے والے ' انڈیا ' کو انوودکوں نے ' هند ' کہا ھے ' اور جہاں کہیں انڈیا کا مطلب اُس پورے دیش سے ھے جس میں بھارت اور پاکستان دونوں شامل تھے وھاں بھي انڈیا کا ارتھ ' هند ' کیا گیا ھے . اور سب جگہ ' بھارت ' ارتھ کیا گیا ھے .

گورنر شبد کا ارتھ ' ریاست پتی ' کیا گیا ھے ' پر ودھان کے آرمبھ ھونے سے پہلے کے صوبوں کے گورنروں کو گورنر ھي کہا گیا ھے . (۵۹۷)

ودھان کے بھاگ پانچ اور بھاگ چھ کی بہت سی دفائیں ملتي جلتی ھیں . انوواد میں اِن دونوں بھاگوں کی جوابی دفاؤں کا جہاں تک ٹھیک سمجھا گیا ایک سا انوواد کیا گیا ' پر بھاگ چھ کی کنچھ دفاؤں کے انوواد کي واکیہ رچنا میں کہیں کہیں انتر بھی ھے کیونکہ شروع کے فارم چھپ جانے کے بعد انوودکوں کو بعد کی واکیہ رچنا زیادہ اچھی معلوم ھوئي . اس سے مطلب میں ذرا بھی فرق نہیں پڑا ھے . اسی طرح کي ایک دو مثالیں اور بھی ھیں .

جہاں تک ھوسکا انوواد کرنے والوں نے اُن شبدوں سے کام لیا ھے جو اُتر بھارت میں عام طور پر بولے اور سمجھے جاتے ھیں . دوسری پرانتی بھاشاؤں کے بھی چالو شبد جہاں تہاں لئے گئے ھیں .

जैसी भाशाओं के जो शब्द हिन्दी में चल पड़े हैं और देश के कोने कोने में समझे जाते हैं, उनसे भी इस अनुवाद मे काम लिया गया है.

आज अंगरेजी भाशा संसार की सब भाशाओं से आगे है. उसका मूल कारन यही है कि अंगरेजी लेखक संसार की लगभग सभी भाशाओं से शब्द लेकर अपने शब्द भंडार को बढ़ाने में कभी नहीं हिचके. अंगरेजी भाशा का मूल आधार पुरानी जर्मेनिक भाशा का एक अंग पुरानी सेक्सन भाशा है, पर आजकल की अंगरेजी के तीन चौथाई से भी अधिक शब्द दूसरी भाशाओं से लिये हुए हैं, जिनमें अरबी, तुर्की, चीनी, जापानी, हिन्दुस्तानी और अफ़रीकी भाषाएँ भी शामिल हैं. अंगरेजी में हिन्दुस्तानी से लिये शब्दों की गिनती अब हजारों में होती है और इन शब्दों को सिर्फ़ आम बोल चाल की भाषा में ही नहीं क़ानूनी भाशा तक में जगह मिल गई है. इन शब्दों को अंगरेजी ने अपने अन्दर पूरी तरह पचा लिया है. हिन्दी में भी यह पाचन शक्ति हमेशा से थी और है. आज हमें इस पाचन शक्ति को क़ायम रखना और बढ़ाना है. पड़ौसी प्रान्तों की भाशाओं से तो बहुत कुछ हिन्दी ने लिया ही है इसे दक्खिन की भाशाओं से भी अभी बहुत कुछ लेना है. और जैसे जैसे नए भारत का संसार के दूसरे देशों से मेल जोल बढ़ता जायगा वैसे वैसे चीनी, जापानी, बर्मी, श्यामी, हिन्दचीनी, इन्डोनेशी आदि भाशाओं के शब्द भंडार भी हिन्दी के लिये खुल जायंगे और हिन्दी के लेखकों को जहां तक भी हो सके उनसे लाभ उठाने की कोशिश करनी होगी. हिन्दी का जो विशाल भवन तैयार

جیسی بھاشاؤں کے جو شبد ھندي میں چل پڑے ھیں اور دیش کے کونے کونے میں سمجھے جاتے ھیں' اُن سے بھی اس انوواد میں کام لیا گیا ھے .

آج انگریزی بھاشا سنسار کی سب بھاشاؤں سے آگے ھے . اُس کا مول کارن یہی ھے کہ انگریزی لیکھک سنسار کي لگ‌بھگ سبھي بھاشاؤں سے شبد لیکر اپنے شبد بھنڈار کو بڑھانے میں کبھي نہیں ھچکے . انگریزی بھاشا کا مول آدھار پرانی جرمینک بھاشا کا ایک انگ پرانی سکسن بھاشا ھے ' پر آج کل کی انگریزي کے تین چوتھائی سے بھی ادھک شبد دوسري بھاشاؤں سے لئے ھوئے ھیں ' جن میں عربی' ترکي' چیني' جاپانی' ھندستاني اور افریقی بھاشائیں بھی شامل ھیں . انگریزی میں ھندستاني سے لئے شبدوں کي گنتی اب ھزاروں میں ھوتي ھے اور اِن شبدوں کو صرف عام بول چال کی بھاشا میں ھي نہیں قانوني بھاشا تک میں جگہ مل گئی ھے . ان شبدوں کو انگریزی نے اپنے اندر پوري طرح پچا لیا ھے . ھندي میں بھي یہ پاچن شکتی ھمیشہ سے تھي اور ھے . آج ھمیں اس پاچن شکتی کو قائم رکھنا اور بڑھانا ھے . پڑوسی پرانتوں کی بھاشاؤں سے تو بہت کچھ ھندی نے لیا ھی ھے اِسے دکھن کی بھاشاؤں سے بھی ابھی بہت کچھ لینا ھے . اور جیسے جیسے نئے بھارت کا سنسار کے دوسرے دیشوں سے میل جول بڑھتا جائیگا ویسے ویسے چینی' جاپانی' برمی' شیامي' ھند چینی' انڈونیشی آدي بھاشاؤں کے شبد بھنڈار بھی ھندي کے لئے کھل جائینگے اور ھندی کے لیکھکوں کو جہاں تک بھي ھو سکے اُن سے لابھ اُٹھانے کی کوشش کرنی ھوگی . ھندي کا جو وشال بھون تیار

हो रहा है उसके दरवाज़े हमें बन्द नहीं खोल कर रखने होंगे जिससे उसमें हमेशा ताज़ा हवा आती रहे.

शब्दों के चुनने में अनुवाद करने वालों ने एक और सिद्धान्त का भी ध्यान रखा है. एक ही माने रखने वाले अलग अलग मूल के दो शब्द कभी कभी अलग अलग मानों में इस्तेमाल होने लगते हैं. इससे भाशा की शक्ति बढ़ती है. हिन्दी में भी एक ही अर्थ रखने वाले अलग अलग मूल के अनेक शब्द हैं. उन्हें विशेश मानों में लगाना अब हमारा काम है. अनुवाद करने वालों ने इस तरह के कुछ शब्दों को अलग अलग मानी में बरता है, जैसे:—Rule—नियम; Regulation—कायदा; Article—दफ़ा; Clause—धारा; Minister—वज़ीर; Secretary—मंत्री; Road—सड़क; Way—मार्ग.

हिन्दी का धातु भंडार अथाह है. पर शब्द भंडार अभी इतना बड़ा नहीं है कि आजकल के सब विचारों और पदार्थों के लिये काफ़ी हो. इसलिये नए शब्द बनाना भी ज़रूरी हो जाता है. इसके लिये संस्कृत, अरबी, लतीनी, यूनानी जैसी प्राचीन भाशाओं से तत्सम शब्द ले लेना या उनके व्याकरन की मदद से बना लेना सहल है पर यह वही मार्ग है जिसे हम 'कन्ने काटना' (escapism) कहते हैं. किसी भी जीती जागती भाशा के लिये यह विनाश का मार्ग है. जहां ज़रूरत हो वहां हम संस्कृत से और दूसरी भाशाओं से भी शब्द ले सकते हैं पर जो शब्द हम बनाएँ वह हमारे मुहाविरे और हमारे व्याकरन के अनुकूल होने चाहिएं. अनुवाद करने वालों ने इसी सिद्धान्त पर कुछ नए शब्द बनाए हैं, जैसे:—Adjustment—

ہو رہا ہے اُس کے دروازے ہمیں بند نہیں کھول کر رکھنے ہونگے جس سے اُس میں ہمیشہ تازہ ہوا آتی رہے ۔

شبدوں کے چننے میں انوواد کرنے والوں نے ایک اور سدھانت کا بھی دھیان رکھا ہے ۔ ایک ہی معنی رکھنے والے الگ الگ مول کے دو شبد کبھی کبھی الگ الگ معنوں میں استعمال ہونے لگتے ہیں ۔ اِس سے بھاشا کی شکتی بڑھتی ہے ۔ ہندی میں بھی ایک ہی ارتھ رکھنے والے الگ الگ مول کے انیک شبد ہیں ۔ انہیں وشیش معنوں میں لگانا اب ہمارا کام ہے ۔ انواد کرنے والوں نے اس طرح کے کچھ شبدوں کو الگ الگ معنی میں برتا ہے' جیسے :— Rule — نیم ؛ Regulation — قاعدہ ؛ Article—دفعہ ؛ Clause—دھارا ؛ Minister—وزیر ؛ Secretary—منتری ؛ Road—سڑک ؛ Way—مارگ ۔

ہندی کا دھاتو بھنڈار اتھاہ ہے ۔ پر شبد بھنڈار ابھی اتنا بڑا نہیں ہے کہ آجکل کے سب وچاروں اور پدارتھوں کے لئے کافی ہو ۔ اس لئے سنسکرت' عربی' لاطینی' یونانی جیسی پراچین بھاشاؤں سے تت سم شبد لے لینا یا اُن کے ویاکرن کی مدد سے بنا لینا سہل ہے پر یہ وہی مارگ ہے جسے ہم 'کنے کاٹنا' (escapism) کہتے ہیں ۔ کسی بھی جیتی جاگتی بھاشا کے لئے یہ وناش کا مارگ ہے ۔ جہاں ضرورت ہو وہاں ہم سنسکرت سے اور دوسری بھاشاؤں سے بھی شبد لے سکتے ہیں پر جو شبد ہم بنائیں وہ ہمارے محاورے اور ہمارے ویاکرن کے انوکول ہونے چاہئیں ۔ انواد کرنے والوں نے اِسی سدھانت پر کچھ نئے شبد بنائے ہیں' جیسے :—Adjustment—

बैठबिठाव; Successor—पदगाही; International—अन्तरी: क़ौमी; Corporation—एकतनी; Entry—अन्तरी; Contingency—जोगाजोग; Import—आयासी; Export—निकासी; Appointment—नियोजन.

कुछ पुरानी ध्वनियां जैसे ञ, ण, ष ब्रजभाशा आदि में और खड़ी बोली में क्रम से अनुस्वार, नकार और 'श', 'स' या 'ख' की ध्वनियों में बदल गई हैं और बदलती जा रही हैं. जब हिन्दी की खड़ी बोली में संस्कृत तत्सम शब्दों की बाढ़ आई तभी से यह ध्वनियां संस्कृत तत्सम शब्दों के रास्ते हिन्दी में फिर रख दी गईं, पर अब भी हम इनको आम बोल चाल में नहीं बोलते. 'कञ्चन' को 'कंचन', 'कारण' को 'कारन', 'रोष' को 'रोश', 'विष' को 'बिस' और 'वर्षा' को 'बरखा' कहते ही हैं. इसीलिये अनुवादकों ने इन ध्वनियों को नहीं रखा. उन्होंने इनका चालू रूप अपनाया है. इससे शब्दों के बोलने में मदद मिलती है और लिखावट भी काफ़ी सरल हो जाती है.

हमारी पहली बात कुछ लम्बी हो गई पर यह सब इसलिये लिखा गया है कि भाशा के संबंध में तरह तरह के विचार लोगों में फैल रहे हैं. हिन्दी एक भाशा है और उन सबकी है जो उसे बोलते हैं. इस भाशा को ऐसा रूप नहीं देना चाहिये कि फिर वह इने गिने आदमियों की ही चीज़ रह जाय. यह भाशा सैकड़ों बरस से भारत के बड़े भाग की भाशा रही है और अब यह सारे देश की अन्तर-रियासती भाशा है या होने जा रही है. विधान की दफ़ा 351 में इस भाशा के सम्बन्ध में हमें वह चीज़ नज़र आते

بیٹھ بیٹھاو ؛ Successor—پدگاھی؛ International—انتر قومی؛ Corporation — ایک تنی؛ Entry — انتری؛ Contingency—جوگا جوگ؛ Import—آیاسی ؛ Export. نکاسی؛—Appointment—نیوجن .

کچھ پرانی دھونیاں جیسے 'ञ' 'ण' ष برج بھاشا آدی میں اور کھڑی بولی میں کرم سے انوسار، نکار اور 'श' 'स' یا 'ख' کی دھونیوں میں بدل گئی ھیں اور بدلتی جارھی ھیں . جب ھندی کی کھڑی بولی میں سنسکرت تت سم شبدوں کی باڑھ آئی تبھی سے یہ دھونیاں سنسکرت تت سم شبدوں کے راستے ھندی میں پھر رکھ دی گئیں ' پر اب بھی ھم اِن کو عام بول چال میں نہیں بولتے . 'कञ्चन' کو 'कंचन' 'कारण' کو 'कारन' 'रोष' کو 'रोश' 'विष' کو 'बिस' اور 'वर्षा' کو 'बरखा' کہتے ھی ھیں . اسی لئے انوادکوں نے اِن دھونیوں کو نہیں رکھا . اُنھوں نے اِن کا چالو روپ اپنایا ھے . اِس سے شبدوں کے بولنے میں مدد ملتی ھے اور لکھاوٹ بھی کافی سرل ھوجاتی ھے .

ھماری پہلی بات کچھ لمبی ھو گئی پر یہ سب اس لئے لکھا گیا ھے کہ بھاشا کے سمبندھ میں طرح طرح کے وچار لوگوں میں پھیل رھے ھیں . ھندی ایک بھاشا ھے اور اُن سب کی ھے جو اُسے بولتے ھیں . اِس بھاشا کو ایسا روپ نہیں دینا چاھئے کہ پھر وہ اِنے گنے آدمیوں کی ھی چیز رہ جائے . یہ بھاشا سیکڑوں برس سے بھارت کے بڑے بھاگ کی بھاشا رھی ھے اور اب یہ سارے دیش کی انتر ریاستی بھاشا ھے یا ھونے جارھی ھے . ودھان کی دفعہ 351 میں اِس بھاشا کے سمبندھ میں ھمیں وہ چیز نظر آتے

हैं जिनको अगर सचाई से और ठीक ठीक पानी मिलता रहा तो भारत की सूबाई और फ़िरक़ावारी गुटबन्दी मिट कर भारत के लोग सच्चे मानों में एक 'नेशन' का रूप ले सकेंगे. बोली जिस तरह आदमी आदमी को पास लाती है उसी तरह आदमी आदमी को दूर भी कर सकती है. जाने अनजाने मुद्दतों से जगह जगह यह रीत चली आई है कि हुकूमत और पंडित लोग कुछ और बोली बोलते हैं और जनता कुछ और. इस तरह बोली के दो रूप हो जाते हैं. हुकूमत और पंडित तो जनता की बोली समझते हैं पर जनता उनकी बहुत कम बात समझ पाती है हो सकता है यह ढंग उस समय काम देता हो जब देशों की बागडोर राजाओं और रईसों के हाथ में हुआ करती थी और विद्या पर पंडितों का इजारा था. अब जब कि हुकूमत की बागडोर क़ानूनी रूप से जनता के हाथ में मान ली गई है तब सरकार और जनता की दो अलग अलग बोलियों का होना बेजा और बड़ी ख़तरनाक बात है. जनता की बोली में ही हमारा अधिक से अधिक काम होना चाहिये. जनता का दिया विधान भी जनता की बोली में ही होना चाहिये. सरकार का सारा काम भी जहां तक हो सके उसी बोली में किया जाना चाहिये. विधान की दफ़ा 351 इसी सचाई को ध्यान में रख कर बनाई गई है.

अगर हिन्दी को सचमुच केवल दफ़तरी भाशा से बढ़ते बढ़ते क़ौमी और अन्तरक़ौमी भाशा बनना है और फलना फूलना है और संसार की बड़ी बड़ी भाशाओं में अपना स्थान लेना है तो इसको खुली हवा में पनपना होगा, दूसरी देशी और विदेशी भाशाओं के साथ अपना मेलजोल बढ़ाना होगा और बिना झिझक नये शब्द,

ہیں جن کو اگر سچائی سے اور ٹھیک ٹھیک پانی ملتا رہا تو بھارت کی صوبائی اور فرقہ‌واری گٹ بندی مٹ کر بھارت کے لوگ سچے معنوں میں ایک 'نیشن' کا روپ لے سکینگے . بولی جس طرح آدمی آدمی کو پاس لاتی ہے اُسی طرح آدمی آدمی کو دور بھی کر سکتی ہے . جانے اَن جانے مدتوں سے جگہ جگہ یہ ریت چلی آئی ہے کہ حکومت اور پنڈت لوگ کچھ اور بولی بولتے ہیں اور جنتا کچھ اور . اِس طرح بولی کے دو روپ ہوجاتے ہیں . حکومت اور پنڈت تو جنتا کی بولی سمجھتے ہیں پر جنتا اُن کی بہت کم بات سمجھ پاتی ہے.ہوسکتا ہے یہ ڈھنگ اُس سمے کام‌دیتا ہو جب دیشوں کی باگ ڈور راجاؤں اور رئیسوں کے ہاتھ میں ہوا کرتی تھی اور ودیا پر پنڈتوں کا اجارا تھا . اب جبکہ حکومت کی باگ ڈور قانونی روپ سے جنتا کے ہاتھ میں مان لی گئی ہے تب سرکار اور جنتا کی دو الگ الگ بولیوں کا ہونا بیجا اور بڑی خطرناک بات ہے . جنتا کی بولی میں ہی ہمارا ادھک سے ادھک کام ہونا چاہئے . جنتا کا دیا ودھان بھی جنتا کی بولی میں ہی ہونا چاہئے . سرکار کا سارا کام بھی جہاں تک ہوسکے اُسی بولی میں کیا جانا چاہئے . ودھان کی دفعہ 351 اسی سچائی کو دھیان میں رکھکر بنائی گئی ہے .

اگر ہندی کو سچ مچ کیول دفتری بھاشا سے بڑھتے بڑھتے قومی اور انتر قومی بھاشا بننا ہے اور پھلنا پھولنا ہے اور سنسار کی بڑی بڑی بھاشاؤں میں اپنا استھان لینا ہے تو اِس کو کھلی ہوا میں پنپنا ہوگا ' دوسری دیشی اور ودیشی بھاشاؤں کے ساتھ اپنا میل ، جول ، بڑھانا ہوگا اور بنا جھجک نئے شبد '

नए वाक्य और नए मुहाविरे अपने ढंग पर ढाल कर अपने अन्दर समाने होंगे. यही इसकी तरक़्क़ी का रास्ता है, यही कल्यान का मार्ग.

हम मानते हैं कि हमारे इस अनुवाद में भी सुधार की गुंजाइश है. भाशा के संबंध में विधान सभा ने विधान के अन्दर जो कुछ तय किया है उसके अनुसार हिन्दी को अभी बढ़ना और रूप लेना है. उसके दरवाज़े अभी पूरी तरह खुले रखे गए हैं. अभी उसकी न कोई शैली आख़िरी शैली है और न कोई शब्दावली आख़िरी शब्दावली है. आगे के लिये यही एक उम्मीद का रास्ता है. इसीलिये हम विधान के इस अनुवाद को सरकार और जनता के सामने रख रहे हैं ताकि इसे पढ़कर देश के बहुत से लोग अपने विधान को समझ सकें और हमारे अनुवाद करनेवालों की यह छोटी सी कोशिश हिन्दी को क़ानूनी और क़ौमी रूप देने और बढ़ाने में सरकार और जनता दोनों को थोड़ी बहुत मदद दे सके

40-A, हनुमान रोड, सुन्दरलाल
नई दिल्ली. मंत्री हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी
15 अगस्त, 1950

نئے وائیه اور نئے محاورے اپنے ڈھنگ پر ڈهال کر اپنے اندر سمانے هونگے . یهی اِس کی ترقی کا راسته هے ' یهي کلیان کا مارگ .

هم مانتے هیں که همارے اس انوواد میں بهي سدهار کی گلنجائش هے . بهاشا کے سمبندھ میں ودهان سبها نے ودهان کے اندر جو کچھ طے کیا هے اُس کے انوسار هندی کو ابهي بڑهنا اور روپ لینا هے . اِس کے دروازے ابهی پوری طرح کهلے رکهے گئے هیں . ابهي اُس کی نه کوئی شیلي آخري شیلی هے اور نه کوئي شبداولی آخري شبداولی هے . آگے کے لئے یهی ایک اُمید کا راسته هے . اِسی لئے هم ودهان کے اس انوواد کو سرکار اور جنتا کے سامنے رکھ رهے هیں تاکه اِسے پڑھ کر دیش کے بهت سے لوگ اپنے ودهان کو سمجھ سکیں اور همارے انوواد کرنےوالوں کی یه چهوٹی‌سي کوشش هندی کو قانوني اور قومی روپ دینے اور بڑهانے میں سرکار اور جنتا دونوں کو تهوڑي بهت مدد دے سکے .

40-A، هنومان روڈ سندر لال
نئی دهلی . منتري هندستاني کلچر سوسائیٹي
15 اگست 1950

तोता

(भाइ भैरव प्रसाद गुप्त)

रोज की तरह उस दिन सुबह अपने सात साल के लड़के का हाथ पकड़े मैं गाँव के बाहर बाग़ में टहलने निकल गया.

पिछली रात खूब बरखा हुई थी. पत्थर भी गिरा था. इसलिये हवा बहुत तेज और ठंडी थी. बाग़ की जमीन रात के गिरे पत्तों, डालों और टहनियों से भर गई थी. पेड़ ऐसे उजड़े उजड़े से लग रहे थे जैसे उनकी सारी ख़ूबसूरती ही लुट गई हो. कहीं किसी चिड़िया का भी पता न था. जो बाग़ सुबह को पंछियों के सुहाने चहचहों से संगीतमय हो उठता था वह आज ऐसा वीरान और सुनसान पड़ा था, कि उसे देख कर डर सा लगता था.

मैं लड़के का हाथ एक ओर खींचता हुआ दूसरी ओर मुड़ना ही चाहता था कि एकाएक बाग़ की ओर से जोर-जोर की 'टें-टें-टें' की आवाज आई.

लड़के ने उधर मुड़कर कहा—"पिताजी, कोई तोता रो रहा है."

सचमुच तोते की उस टें-टें में रोने का स्वर इतना साफ़ था कि वह छोटा लड़का भी उसे आसानी से समझ गया था. आदमी के रोने में जो दर्द होता है, उससे भी अधिक उस तोते की टें-टें में भरा था.

طوطا

(بھائي بھيرو پرساد گپت)

روز کی طرح اسدن صبح اپنے سات سال کے لڑکے کا ہاتھ پکڑے میں گاؤں کے باہر باغ میں ٹہلنے نکل گیا

پچھلی رات خوب برکھا ہوئی تھي . پتھر بھی گرا تھا . اس لئے ہوا بہت تیز اور ٹھنڈی تھی. باغ کي زمین رات کے گرے پتوں' ڈالوں اور ٹہنیوں سے بھر گئی تھی . پیڑ ایسے اُجڑے اُجڑے سے لگ رہے تھے ' جیسے اُن کی ساري خوبصورتي ھي لٹ گئی ھو . کہیں کسی چڑیا کا بھي پتہ نہ تھا . جو باغ صبح کو پنچھیوں کے سہانے چہچہوں سے سنگیت مے ھو اُٹھتا تھا وہ آج ایسا ویران اور سنسان پڑا تھا ' کہ اُسے دیکھ کر ڈر سا لگتا تھا .

میں لڑکے کا ہاتھ ایک اور کھینچتا ہوا دوسري اور مڑنا ھی چاھتا تھا کہ ایکایک باغ کی اور سے زور زور کی 'ٹیں ٹیں ٹیں' کي آواز آئی .

لڑکے نے اُدھر مڑ کر کہا—"پتاجی' کوئي طوطا رو رہا ھے ."

سچ مچ طوطے کی اُس ٹیں ٹیں میں رونے کا سور اتنا صاف تھا کہ وہ چھوٹا لڑکا بھی اُسے آسانی سے سمجھ گیا تھا . آدمی کے رونے میں جو درد ھوتا ھے' اُس سے بھی ادھک اُس طوطے کی ٹیں ٹیں میں درد بھرا تھا .

"पिता जी, चलिये देखें, वह कहाँ पड़ा है." लड़के ने यह कह कर मेरा हाथ बाग़ की ओर खींचा.

टें टें की आवाज़ और भी ज़ोर पकड़ती जा रही थी. उस आवाज़ को लक्ष करके ही हम उस दिशा की ओर बढ़े. एकाएक लड़के ने चिल्ला कर कहा—"पिताजी, वह देखिये! उस पेड़ की जड़ में!"

मैंने देखा, तोता चित पड़ा पंख फड़फड़ा रहा था और टें-टें करके चीख़ रहा था. उस हालत में उसे देख कर मन दुख और दर्द से भर गया. लड़का उसे पकड़ने दौड़ पड़ा.

चिड़ियों को न जाने क्यों बच्चे बहुत चाहते हैं मेरा लड़का भी इसी भाव से उसे पकड़ने गया या कुछ और सोचकर, यह मैं उस समय न समझ सका. इसीलिये मैंने उसे रोका भी नहीं.

तोता बुरी तरह घायल था. लड़के को अपनी ओर लपकते देख कर बड़ी ही बेचैनी और बेबसी से उसने उसकी ओर देखा, फिर टें-टें-टें करके चीख़ते हुए उड़ने के कई असफल जतन किये, पर ज़रा भी इधर से उधर न हो सका. लड़के ने उसे पकड़ लिया तो वह और भी ज़ोर से चीख़ उठा, जैसे उसके प्रान ही निकल रहे हों. उसकी वह चीख़ इतनी दर्द भरी थी कि मैंने अपने कानों पर हाथ रख लिये.

लड़के ने उसके ख़ून से लथपथ डैनों को मेरी ओर करते हुए कहा—"पिताजी, इसके दोनों डैने टूट गये हैं. हम इसे घर ले जा कर दवा करेंगे, यह अच्छा हो जायगा न ?"

"پتاجی' چلئے دیکھیں' وہ کہاں پڑا ھے." لڑکے نے یہ کہہ کر میرا ھاتھ باغ کی اور کھینچا۔

ٹیں ٹیں کی آواز اور بھی زور پکڑتی جارھی تھی۔ اُس آواز کو لکش کرکے ھی ھم اُس دشا کی اور بڑھے۔ ایکا ایک لڑکے نے چلاکر کہا—"پتاجی' وہ دیکھئے! اُس پیڑ کی جڑ میں!"

میں نے دیکھا' طوطا چت پڑا پنکھ پھڑ پھڑا رھا تھا اور ٹیں ٹیں کرکے چیخ رھا تھا۔ اُس حالت میں اُسے دیکھ کر من دکھ اور درد سے بھر گیا۔ لڑکا اُسے پکڑنے دوڑ پڑا۔

چڑیوں کو نہ جانے کیوں بچے بہت چاھتے ھیں۔ میرا لڑکا بھی اِسی بھاؤ سے اُسے پکڑنے گیا یا کچھ اور سوچ کر' یہ میں اُس سمے نہ سمجھ سکا۔ اسی لئے میں نے اُسے روکا بھی نہیں۔

طوطا بری طرح گھائل تھا۔ لڑکے کو اپنی اور لپکتے دیکھکر بڑی ھی بےچینی اور بے بسی سے اُس نے اُسکی اور دیکھا' پھر ٹیں ٹیں کرکے چیختے ھوئے اُڑنے کے کئی اسپھل جتن کئے' پر ذرا بھی اِدھر سے اُدھر نہ ھوسکا لڑکے نے اُسے پکڑ لیا تو وہ اور بھی زور سے چیخ اُٹھا' جیسے اُس کے پران ھی نکل رھے ھوں۔ اُس کی وہ چیخ اتنی درد بھری تھی کہ میں نے اپنے کانوں پر ھاتھ رکھ لئے۔

لڑکے نے اُس کے خون سے لتھ پتھ ڈینوں کو میری اور کرتے ھوئے کہا—"پتا جی' اسکے دونوں ڈینے ٹوٹ گئے ھیں۔ ھم اسے گھر لیجاکر دوا کرینگے' یہ اچھا ھو جائیگا نہ؟"

१९४९ का साल कांग्रेस के कार्यकर्ताओं और कांग्रेसी-हुकूमतों के इम्तहान का साल रहा है. अफ़सोस के साथ कहना पड़ता है कि दोनों अपने अपने इम्तहानों में बुरी तरह नाकामयाब हुए हैं. आज सच तो यह है कि जब यह लोग गांधी जी का नाम लेते हैं और उनके उसूलों की दोहाई देते हैं तो ऐसा लगता है कि वह गांधी जी और उनके नाम का मज़ाक़ उड़ा रहे हैं.

यह साल इस बात का सबूत रहा है कि कांग्रेस संस्था, कांग्रेस के कार्य कर्ता और कांग्रेसी सरकारें गांधी जी के उसूलों और उपदेशों से अपना नाता तोड़ चुके हैं.

जरूरत यह है कि हिन्दुस्तान के लोग अपने क़ौमी रहनुमाओं के ग़ैर-क़ौमी कामों से सबक़ लें, होशियार रहें और मज़बूती के साथ उन जन-वादी उसूलों के साथ चिपके रहें जिनके कारण गांधी जी की जान गई. अगर जनता ऐसा नहीं करती तो गांधी जी के उसूलों को अपने पैरों तले रौंद कर गांधी जी के हत्यारों के साथी और हमजोली देश की हुकूमत अपने हाथों में ले लेंगे. कांग्रेस की परम्परायें ख़त्म हो जायेंगी और गांधीवाद का, न्याय, शान्ति, प्रेम और सच्चाई का नाम लेवा भी कोई नहीं रह जावेगा.

१९४९ का यह लेखा जोखा हमें डराता है और साथ ही आगाह भी करता है कि १९५० के साल में उन ग़लतियों को न दोहराया जाय जिनके कारण हमारी क़ौमी जिन्दगी पतन (जवाल) की इस गहरी खाई में गिरी है !

यह पतन, यह तबाही, यह परेशानी. यह मुसीबत और यह

سنہ ۱۹۴۹ء کا سال کانگریس کے کاریہ کرتاؤں اور کانگریسی حکومتوں کے امتحان کا سال رہا ہے۔ افسوس کے ساتھ کہنا پڑتا ہے کہ دونوں اپنے اپنے امتحانوں میں بری طرح ناکامیاب ہوئے ہیں۔ آج سچ تو یہ ہے کہ جب یہ لوگ گاندھی جی کا نام لیتے ہیں اور ان کے اصولوں کی دہائی دیتے ہیں تو ایسا لگتا ہے کہ وہ گاندھی جی اور ان کے نام کا مذاق اڑا رہے ہیں۔

یہ سال اس بات کا ثبوت رہا ہے کہ کانگریس سنستھا، کانگریس کے کاریہ کرتا اور کانگریسی سرکاریں گاندھی جی کے اصولوں اور اپدیشوں سے اپنا ناتا توڑ چکے ہیں۔

ضرورت یہ ہے کہ ہندستان کے لوگ اپنے قومی رہنماؤں کے غیر قومی کاموں سے سبق لیں، ہوشیار رہیں اور مضبوطی کے ساتھ ان جن وادی اصولوں کے ساتھ چپکے رہیں جن کے کارن گاندھی جی کی جان گئی اگر جنتا ایسا نہیں کرتی تو گاندھی جی کے اصولوں کو اپنے پیروں تلے روندکر گاندھی جی کے ہتیاروں کے ساتھی اور ہمجولی دیش کی حکومت اپنے ہاتھوں میں لے لیں گے۔ کانگریس کی پرمپرائیں ختم ہو جائیں گی اور گاندھی واد کا نیائے، شانتی، پریم اور سچائی کا نام لیوا بھی کوئی نہیں رہ جاوے گا۔

سنہ ۱۹۴۹ء کا یہ لیکھا جوکھا ہمیں ڈراتا ہے اور ساتھ ہی آگاہ بھی کرتا ہے کہ سنہ ۱۹۵۰ء کے سال میں ان غلطیوں کو نہ دہرایا جائے جن کے کارن ہماری قومی زندگی پتن (زوال) کی اس گہری کھائی میں گری ہے۔

یہ پتن، یہ تباہی، یہ پریشانی، یہ مصیبت اور یہ نا امیدی کیا جہاں

पन्द्रह दिन पहले वह आप अपना हाथ तोड़ चुका था. दवा से ाका हाथ अच्छा हो गया था. शायद यही बात उस समय उसके मारा में थी. यों भी उसका यह विचार मुझे अच्छा लगा. मैं नकार न कर सका.

वह उसके शरीर पर धीरे धीरे हाथ सहलाने लगा तो थोड़ी र में उसका चीखना चिल्लाना भी बन्द हो गया. उसने पास ा के गढ़े से हाथ में पानी लेकर उसकी चोंच में बूँद-बूँद टपकाया और उसके पंखों का ख़ून भी धीरे धीरे धो डाला.

(२)

मैंने दवा मंगा दी. लड़का बड़ी मुस्तैदी से तोते की सेवा और देख भाल करने लगा.

तीन महीनों में धीरे धीरे उसके डैनों के घाव अच्छे हो गये. पर अब भी वह उड़ न सकता था. लड़के ने कहा—"अब अच्छा हो गया. खायगा पियेगा तो पंखों में ताक़त आ जायगी. तब तो वह ज़रूर उड़ सकेगा,"

मैंने कहा—'खिलाओ, पिलाओ! शायद तुम्हारा ख़याल ठीक हो."

थोड़े ही दिनों में तोता काफी मोटा हो गया. नये नये पर भी उसके निकल आये. पर वह उड़ न सकता था. उसके एक डैने की हड्डी बिलकुल कमजोर हो गई थी.

बिल्ली से उसे सुरक्षित रखने के लिये एक पिंजड़ा बनवा दिया ... ही रखते थे, ताकि दवा

پندرہ دن پہلے وہ آپ اپنا ھاتھ توڑ چکا تھا . دوا سے اُسکا ھاتھ اچھا ھو گیا تھا . شاید یہی بات اُس سمے اُس کے دماغ میں تھی . یوں بھی اُس کا یہ وچار مجھے اچھا لگا میں انکار نہ کرسکا .

وہ اُس کے شریر پر دھیرے دھیرے ھاتھ سہلانے لگا تو تھوڑی دیر میں اُس کا چیخنا چلانا بھی بند ھو گیا . اُس نے پاس ھی کے گڈھے سے ھاتھ میں پانی لے کر اُس کی چونچ میں بوند بوند ٹپکایا اور اُس کے پنکھوں کا خون بھی دھیرے دھیرے دھو ڈالا .

(۲)

میں نے دوا منگادی . لڑکا بڑی مستعدی سے طوطے کی سیوا اور دیکھ بھال کرنے لگا .

تین مہینے میں دھیرے دھیرے اُس کے ڈینوں کے گھاؤ اچھے ھوگئے . پر اب بھی وہ اُڑ نہ سکتا تھا . لڑکے نے کہا—"اب اچھا ھو گیا . کھائیگا پئے گا تو پنکھوں میں طاقت آجائیگی . تب تو یہ ضرور اُڑ سکے گا . '

میں نے کہا—"کھلاؤ پلاؤ ! شاید تمہارا خیال ٹھیک ھو."

تھوڑے ھی دنوں میں طوطا کافی موٹا ھو گیا . نئے نئے پر بھی اُس کے نکل آئے . پر وہ اُڑ نہ سکتا تھا . اُس کے ایک ڈینے کی ھڈی بالکل کمزور ھو گئی تھی .

بلی سے اُسے سرکشت رکھنے کے لئے ایک پنجرا بنوا دیا گیا . پہلے اُسے کھانچی میں ڈھک کر ھی رکھتے تھے . تاکہ دوا لگانے کھلانے پلانے کی سودھا رھے .

एक दिन सुबह जब हम टहलने चले, तो लड़के ने कहा—"आज मैं तोते को भी सैर कराने ले चलूँगा"

मेरे मन में एक शंका उठ खड़ी हुई. मैंने कहा—"नहीं."

इसपर उसने पूछा—"क्यों ?"

मैंने कहा—"जब तुम्हारा हाथ टूटा था, तो चारपाई पर पड़े पड़े सहन में लड़कों को खेलते कूदते देख कर तुम्हारे मन में क्या होता था ?"

लड़का मेरी बात शायद समझ न सका. इसलिये ज़िद में आ कर बोला—"नहीं पिताजी, हम तो ज़रूर ले चलेंगे ! यह भी क्या मेरी तरह कोई लड़का है ?"

मैंने फिर उसे मना न किया. भोले भाले पंछी भोले-भाले लड़कों की ही तरह होते हैं, यह बात मैं उसे कैसे समझाता. फिर सोचा, शायद उसी की बात ठीक हो.

बाग़ में एक बेर के पेड़ पर तोतों का एक झुण्ड किलकारियाँ भरता बेरें कुतर रहा था. उनकी किलकारियाँ सुन कर पिंजड़े के तोते ने आँखें उठा गिरा कर ऊपर नीचे देखना शुरू किया. उसकी नज़र बेर के पेड़ पर पड़नी थी कि वह ज़ोर से अपने पंख फड़फड़ाने लगा और फिर चीखने लगा. तोतों ने उसकी आवाज़ सुनी, तो वह भी चीखने लगे.

मैंने कहा—"बेटा, पिंजड़ा खोल दे. यह चीखना मुझसे सहा नहीं जाता."

लड़के को मालूम था कि उसका तोता उड़ नहीं सकता. इसीलिये शायद उसकी बेबसी का खेल देखने के लिये उसने पिंजड़ा खोल

ایک دن صبح جب ہم ٹہلنے چلے، تو لڑکے نے کہا—"آج میں طوطے کو بھی سیر کرانے لے چلونگا۔"

میرے من میں ایک شنکا اُٹھ کھڑی ہوئی۔ میں نے کہا—"نہیں۔"

اسپر اُس نے پوچھا—"کیوں؟"

میں نے کہا—"جب تمہارا ہاتھ ٹوٹا تھا، تو چارپائی پر پڑے پڑے صحن میں لڑکوں کو کھیلتے کودتے دیکھ کر تمہارے من میں کیا ہوتا تھا؟"

لڑکا میری بات شاید سمجھ نہ سکا۔ اس لئے ضد میں آکر بولا—"نہیں پتا جی، ہم تو ضرور لے چلینگے! یہ بھی کیا میری طرح کوئی لڑکا ہے؟"

میں نے پھر اُسے منع نہ کیا بھولے بھالے پنچھی بھولے بھالے لڑکوں کی ہی طرح ہوتے ہیں، یہ بات میں اُسے کیسے سمجھاتا۔ پھر سوچا، شاید اُسی کی بات ٹھیک ہو۔

باغ میں ایک بیر کے پیڑ پر طوطوں کا ایک جھنڈ کلکاریاں مارتا بیریں کتر رہا تھا۔ اُن کی کلکاریاں سنکر پنجرے کے طوطے نے آنکھیں اُٹھا گرا کر اوپر نیچے دیکھنا شروع کیا۔ اُس کی نظر بیر کے پیڑ پر پڑنی تھی کہ وہ زور سے اپنے پنکھ پھڑ پھڑانے لگا اور پھر چیخنے لگا۔ طوطوں نے اُسکی آواز سنی، تو وہ بھی چیخنے لگے۔

میں نے—"بیٹا" پنجرا کھول دے۔ یہ چیخنا مجھسے سہا نہیں جاتا۔

لڑکے کو معلوم تھا کہ اُس کا طوطا اُڑ نہیں سکتا۔ اِس لئے شاید اُس کی بے بسی کا کھیل دیکھنے کے لئے اُس نے پنجرا کھول

ा. तोता आँधी की तरह पिंजड़े से बेर के पेड़ की ओर उड़ा. दूसरे ही छन तने से टकराकर चीखता हुआ जमीन पर गिर पड़ा. ; के तोते उसकी वह आवाज सुन कर फुर्र से उड़ गये. और वह ता आसमान की ओर देखता हुआ ऐसे चीख पड़ा, जैसे कड़ी पीड़ा छुटकारा पाने के लिये आदमी मुक्ति की याचना करता है.

लड़का उसे पकड़ने दौड़ा, तो वह चीखता हुआ ही एक झाड़ी में ,स गया.

लड़का झाड़ी की ओर बढ़ा, तो मैंने उसे रोकते हुए कहा—"छोड़ ो अब उसे. उसकी यह चीख मुझसे नहीं सुनी जाती. अब शायद उसकी यह चीख मरते दम तक बन्द न होगी."

लड़का कुछ समझ रहा था, ऐसा कैसे कहूँ. फिर भी मेरी बात मान कर वह सिर लटकाये लौट आया. उस दिन वह बहुत उदास रहा. बार बार उस तोते के बारे में मुझसे पूछता रहा. मैंने कहा—"मैं यह समझता था बेटा, इसीलिये तुमसे कहा था कि उसे बाहर न ले जाओ. जब तक वह घर में था, अपनी आसमान की दुनिया, अपनी आजादी, अपना उड़ना भूला हुआ था. उस समय शायद उसे अपनी बेबसी का भी ज्ञान नहीं था. पर जैसे ही उसने अपने आजाद भाइयों को देखा, उसे अपनी वह सब बातें याद आ गईं. एक बार उसने फिर अपनी उसी जिन्दगी में जाने की कोशिश की. पर डैनों की बेबसी ने वैसा न करने दिया. उसे अब अपनी बेबसी का ज्ञान हो गया है. अब वह उस बेबसी की जिन्दगी से, जिससे छुटकारा पाना उसके बस की बात नहीं, मर जाना ही बेहतर समझता है. अब वह जिन्दा नहीं रखा जा सकता, बेटा!"

दूसरे दिन हम टहलने गये, तो देखा, वह तोता झाड़ी के किनारे

دیا۔ طوطا آندھی کی طرح پنجرے سے بیر کے پیڑ کی اور اُڑا۔ پر دوسرے ہی چھن تنے سے ٹکرا کر چیختا ہوا زمین پر گر پڑا۔ پیڑ کے طوطے اُس کی وہ آواز سنکر پھر سے اُڑ گئے۔ اور وہ طوطا آسمان کی اور دیکھتا ہوا ایسے چیخ پڑا، جیسے کڑی پیڑا سے چھٹکارا پانے کے لئے آدمی مکتی کی یاچنا کرتا ہے۔

لڑکا اُسے پکڑنے دوڑا، تو وہ چیختا ہوا ہی ایک جھاڑی میں گھس گیا۔

لڑکا جھاڑی کی اور بڑھا، تو میں نے اُسے روکتے ہوئے کہا— "چھوڑ دو اب اُسے۔ اُسکی یہ چیخ مجھ سے نہیں سنی جاتی۔ اب شاید اُسکی یہ چیخ مرتے دم تک بند نہ ہوگی۔"

لڑکا کچھ سمجھ رہا تھا، ایسا کیسے کہوں۔ پھر بھی میری بات مان کر وہ سر لٹکائے لوٹ آیا۔ اُسدن وہ بہت اُداس رہا۔ بار بار اُس طوطے کے بارے میں مجھ سے پوچھتا رہا۔ میں نے کہا—"میں یہ سمجھتا تھا بیٹا، اسلئے تم سے کہا تھا کہ اُسے باہر نہ لیجاؤ۔ جب تک وہ گھر میں تھا، اپنی آسمان کی دنیا، اپنی آزادی، اپنا اُڑنا بھولا ہوا تھا۔ اُس سمے شاید اُسے اپنی بے بسی کا بھی گیان نہیں تھا۔ پر جیسے ہی اُس نے اپنے آزاد بھائیوں کو دیکھا، اُسے اپنی وہ سب باتیں یاد آگئیں۔ ایکبار اُس نے پھر اپنی اُسی زندگی میں جانے کی کوشش کی۔ پر ڈینوں کی بے بسی نے اُسے ویسا نہ کرنے دیا۔ اُسے اب اپنی بے بسی کا گیان ہو گیا ہے۔ اب وہ اُس بے بسی کی زندگی سے، جس سے چھٹکارا پانا اس کے بس کی بات نہیں، مرجانا ہی بہتر سمجھتا ہے۔ اب وہ زندہ نہیں رکھا جاسکتا، بیٹا!"

دوسرے دن ہم ٹہلنے گئے، تو دیکھا، وہ طوطا جھاڑی کے کنارے مرا پڑا تھا۔

बच्चों की दुनिया



بچوں کی دنیا

एडीटर—प्रेम भाई

اڈیٹر— پریم بھائی

सुन्दर गीत

(भाई जावेद लतीफ़ी, लाहौर)

आओ गीत निराले गाए
ऐसे जो हम सब को भाएँ

आजादी की चाह हो जिसमें   मेल जोल की राह हो जिसमें
दुखे हुए हर मन के लिये एक   सुख सेवा की चाह हो जिसमें

आओ गीत कुछ ऐसे गाएँ
ऐसे जो हम सब को भाएँ

जिन को सुन कर सब के मन में   सुख और प्रेम की शक्ती भड़के
अपने देश की ख़ातिर अपनी   जान भी देने को मन तड़पे

आओ ऐसे गाने गाएँ
ऐसे जो हम सब को भाएँ

سندر گیت

(بھائی جاوید لطیفی، لاہور)

آؤ گیت نرالے گائیں
ایسے جو ہم سب کو بھائیں

آزادی کی چاہ ہو جس میں   میل جول کی راہ ہو جس میں
دکھے ہوئے ہر من کیلئے اک   سکھ سیوا کی چاہ ہو جس میں

آؤ گیت کچھ ایسے گائیں
ایسے جو ہم سب کو بھائیں

جن کو سن کر سب کے من میں   سکھ اور پریم کی شکتی بھڑکے
اپنے دیش کی خاطر اپنی   جان بھی دینے کو من تڑپے

آؤ ایسے گانے گائیں
ایسے جو ہم سب کو بھائیں

रेल कैसे रोकी

(भाई अब्दुल हमीद, बलिया)

एक बार गोपाल अपने गाँव से शहर को जारहा था. गाँव से उसे लारी पर स्टेशन पहुँचना था और वहाँ से रेल पर जाना था. लारी ठीक वक़्त पर स्टेशन पहुँच गई. गाड़ी बिलकुल तैयार थी. टिकट मिलने में देर होगई. गोपाल जब प्लेट फ़ार्म पर पहुँचा तो गाड़ी छूट गई थी. गाड़ी बहुत धीमी चाल से चल रही थी. गोपाल ने चाहा कि चलती गाड़ी में बैठ जाय. पर वहाँ खड़े हुए एक पुलिस के सिपाही ने उसे रोक लिया. गोपाल ने बहुत कहा कि मुझे बड़ी जल्दी है पर सिपाही ने कहा—"नहीं, चलती गाड़ी में बैठना जुर्म है."

गोपाल बेचारा निराश हो कर खड़ा हो गया. पर इतने ही में क्या देखता है कि एक आदमी सफ़ेद कोट और सफ़ेद पतलून पहने, सर पर काली टोपी लगाए, हाथ में हरी झंडी और मुँह में सीटी दबाए गाड़ी के साथ दौड़ रहा है. जैसे ही वह आदमी गोपाल के पास आया और लपक कर एक डिब्बे में चढ़ना चाहा कि गोपाल ने उसका हाथ पकड़ लिया और अपनी तरफ़ खींचा. वह आदमी उस गाड़ी का गार्ड था. उस ने गोपाल को घूर कर देखा. गोपाल ने कहा—'आप मुझे घूरते क्यों हैं साहब. चलती गाड़ी में बैठना जुर्म है."

इतने में गाड़ी और आगे बढ़ गई. गार्ड ने सीटी मुँह में दबाए-

ریل کیسے روکی

(بھائی عبدالحمید' بلیا)

ایک بار گوپال اپنے گاؤں سے شہر کو جارھا تھا ۔ گاؤں سے اُسے لاری پر اسٹیشن پہونچنا تھا اور وھاں سے ریل پر جانا تھا ۔ لاری ٹھیک وقت پر اسٹیشن پہنچ گئی ۔ گاڑی بالکل تیار تھی ۔ ٹکٹ ملنے میں دیر ھوگئی ۔ گوپال جب پلیٹ فارم پر پہونچا تو گاڑی چھوٹ گئی تھی ۔ گاڑی بہت دھیمی چال سے چل رھی تھی ۔ گوپال نے چاھا کہ چلتی گاڑی میں بیٹھ جائے ۔ پر وھاں کھڑے ھوئے ایک پولیس کے سپاھی نے اُسے روک لیا ۔ گوپال نے بہت کہا کہ مجھے بڑی جلدی ھے پر سپاھی نے کہا—"نہیں' چلتی گاڑی میں بیٹھنا جرم ھے ."

گوپال بیچارہ نراش ھوکر کھڑا ھوگیا ۔ پر اتنے ھی میں کیا دیکھتا ھے کہ ایک آدمی سفید کوٹ اور سفید پتلون پہنے' سر پر کالی ٹوپی لگائے' ھاتھ میں ھری جھنڈی اور منھ میں سیٹی دبائے گاڑی کے ساتھ دوڑ رھا ھے ۔ جیسے ھی وہ آدمی گوپال کے پاس آیا اور لپک کر ایک ڈبے میں چڑھنا چاھا کہ گوپال نے اُسکا ھاتھ پکڑ لیا اور اپنی طرف کھینچا ۔ وہ آدمی اُس گاڑی کا گارڈ تھا ۔ اُسنے گوپال کو گھور کر دیکھا ۔ گوپال نے کہا—"آپ مجھے گھورتے کیوں ھیں صاحب ۔ چلتی گاڑی میں بیٹھنا جرم ھے "

اتنے میں گاڑی اور آگے بڑھ گئی ۔ گارڈ نے سیٹی منھ میں دبائے

गोपाल जरा भी डरा नहीं. बोला—"साहब मैं स्कूल का विद्यार्थी हूँ. मुझे भी इसी गाड़ी में जाना है. पर चलती गाड़ी में बैठना जुर्म है."

इतने में वह सिपाही भी आगया. गोपाल उसे देख कर बोला—"देखिये हवालदार साहब, यह भी चलती गाड़ी में बैठने का जुर्म कर रहे थे."

गार्ड ने एक बार उसका हाथ झटका पर गोपाल ने बहुत कस कर उसका हाथ पकड़ रक्खा था. उसने हाथ न छोड़ा.

सिपाही ने गोपाल को डाँट कर कहा—"यह क्या नालायकी है. छोड़ो गार्ड साहब को."

गोपाल ने कहा—"नहीं साहब, यह फिर चलती गाड़ी में बैठ जायेंगे."

अब गाड़ी पलेट फ़ार्म को छोड़ने ही वाली थी. गार्ड साहब ने जब देखा कि अब गाड़ी की चाल तेज़ हुई जारही है तो उन्हों ने झट सीटी बजा कर लाल झंडी हिला दी. गाड़ी एक दम धीमी होगई और फिर रुक गई. गार्ड साहब ने फिर अपने हाथ को झटका दिया और हाथ छुड़ा कर गाड़ी की तरफ़ दौड़े. गोपाल भी उनके पीछे दौड़ा. गोपाल को भागते देख सिपाही भी उसे पकड़ने को लपका. पर गोपाल देखते ही देखते गार्ड साहब से भी आगे होगया और लपक कर एक डिब्बे में घुस गया.

गार्ड साहब ने अपने डिब्बे में पहुँच कर फिर हरी झंडी दिखालई. गाड़ी फिर चल पड़ी. पर इतने ही में वह सिपाही भी हाँपता-काँपता गोपाल के डिब्बे के पास आया और गोपाल से कहा—"ए लड़के,

گوپال ذرا بھی ڈرا نہیں . بولا —" صاحب' میں اسکول کا ودیارتھی ھوں . مجھے بھی اِسی گاڑی سے جانا تھا . پر چلتی گاڑی میں بیٹھنا جرم ھے ."

اتنے میں وہ سپاھی بھی آگیا . گوپال اسے دیکھکر بولا—"دیکھئے حوالدار صاحب ' یہ بھی چلتی گاڑی میں بیٹھنے کا جرم کر رھے تھے ."

گارڈ نے ایک بار اُسکا ھاتھ جھٹکا . پر گوپال نے بہت کس کر اس کا ھاتھ پکڑ رکھا تھا . اس نے ھاتھ نہ چھوڑا .

سپاھی نے گوپال کو ڈانٹ کر کہا—"یہ کیا نالائقی ھے . چھوڑو گارڈ صاحب کو ."

گوپال نے کہا—" نہیں صاحب ' یہ پھر چلتیگاڑی میں بیٹھ جائیں گے ."

اب گاڑی پلیٹ فارم کو چھوڑنے ھی والی تھی . گارڈ صاحب نے جب دیکھا کہ اب گاڑي کي چال تیز ھوتی جارھی ھے تو اُنھوں نے جھٹ سیٹي بجاکر لال جھنڈی ھلا دی . گاڑی ایک دم دھیمي ھوگئي اور پھر رک گئی . گارڈ صاحب نے پھر اپنے ھاتھ کو جھٹکا دیا اور ھاتھ چھڑا کر گاڑي کی طرف دوڑے . گوپال بھی اُنکے پیچھے دوڑا گوپال کو بھاگتے دیکھ سپاھی بھی اُسے پکڑنے کو لپکا . پر گوپال دیکھتے ھی دیکھتے گارڈ صاحب سے بھی آگے ھو گیا اور لپک کر ایک ڈبے میں گھس گیا .

گارڈ صاحب نے اپنے ڈبے میں پہنچکر پھر ھری جھنڈي دکھلائی. گاڑی پھر چل پڑي . پر اتنے ھی میں وہ سپاھی بھی ھانپتا کانپتا گوپال کے ڈبے کے پاس آیا اور گوپال سے کہا — "اے لڑکے'

तुम उतरो, तुम्हारा चालान होगा. तुम ने चलती गाड़ी को रुकवाया है."

गोपाल अपनी सीट पर बैठा-बैठा मुसकराया. फिर अपनी जेब से टिकट निकाल कर सिपाही को दिखला कर बोला—"हवालदार साहब. मैं बे टिकट नहीं चल रहा हूँ. यह देखिये टिकट. मुझे आज स्कूल में पहुँचना बहुत ज़रूरी है इसी लिये मैं ने गाड़ी रुकवाई है. अब आप चलती गाड़ी के साथ न चलिये. यह भी जुर्म होगा."

गोपाल की बात पूरी होते-होते गाड़ी की चाल तेज़ होगई और सिपाही पलेट फ़ार्म पर ही खड़ा रह गया.

डिब्बे में बैठे दूसरे मुसाफ़िरों को जब गोपाल ने गाड़ी रोकने का क़िस्सा सुनाया तब सब लोग ख़ूब हंसे और गोपाल की सूझ की तारीफ़ करने लगे.

पढ़ो और हँसो

(भाई राजेश सरन)

मां—बेटा, तुम रो क्यों रहे हो ?

लड़का—मास्ट साहब दो हफ़्ते से बीमर थे...

मां—तो क्या वह मर गये ?

लड़का—नहीं, सुना है कि वह अब अच्छे हो गये हैं.

मजिस्ट्रेट—(चोर अपराधी से) तुमसे किसी को कुछ फ़ायदा भी पहुँचा है ?

[illegible] मैं तो समझता हूँ कि आप जैसे हाकिम हमारे ही जैसे

تم اُترو . تمہارا چالان ہوگا . تم نے چلتی گاڑی کو رکوایا ہے ."

گوپال اپنی سیٹ پر بیٹھا بیٹھا مسکرایا . پھر اپنی جیب سے ٹکٹ نکالکر سپاہی کو دکھلا کر بولا—"حوالدار صاحب . میں بےٹکٹ نہیں چل رہا ہوں . یہ دیکھئے ٹکٹ . مجھے آج اسکول میں پہنچنا بہت ضروری ہے اسی لئے میں نے گاڑی رکوائی ہے اب آپ چلتی گاڑی کے ساتھ نہ چلئے . یہ بھی جرم ہوگا ."

گوپال کی بات پوری ہوتے ہوتے گاڑی کی چال تیز ہوگئی اور سپاہی پلیٹ فارم پر ہی کھڑا رہ گیا .

ڈبے میں بیٹھے دوسرے مسافروں کو جب گوپال نے گاڑی روکنے کا قصہ سنایا تب سب لوگ خوب ہنسے اور گوپال کی سوجھ کی تعریف کرنے لگے .

(۱۷۲)

پڑھو اور ہنسو

(بھائی راجیش سرن)

ماں—بیٹا' تم رو کیوں رہے ہو ؟

لڑکا—ماسٹر صاحب دو ہفتے سے بیمار تھے.......

ماں—تو کیا وہ مر گئے ؟

لڑکا—نہیں' سنا ہے کہ وہ اب اچھے ہو گئے ہیں .

مجسٹریٹ—(چور اپرادھی سے) تم سے کسی کو کچھ فائدہ بھی پہنچا ہے ؟

چور—میں تو سمجھتا ہوں کہ آپ جیسے حاکم ہمارے ہی جیسے لوگوں کے کارن نوکری پاتے ہیں .

हमारी राय

ہماری رائے

अयोध्या के मुसलमान

('हरिजन सेवक' १९ अगस्त' १९५०.)

श्री अक्षय ब्रह्मचारी अयोध्या के एक वैशनव साधु हैं. वे फ़ैज़ाबाद जिला कांगरेस कमेटी के मंत्री और उत्तर प्रदेश सूबा कांगरेस कमेटी के मेम्बर हैं. उत्तर प्रदेश के सभी नेता अच्छी तरह जानते हैं. कि वह एक सच्चे कार्य कर्ता हैं. फ़ैज़ाबाद और अयोध्या एक दूसरे से मिले हुए हैं. सच यह है कि वह एक ही शहर हैं. दोनों एक ही म्युनिसिपेलिटी के अन्दर हैं. सन १९४९ या उससे कुछ पहले से वहाँ हिन्दू मुस्लिम सवाल खेदजनक रूप में खड़ा हो गया है. उसमें हिन्दुओं की तरफ़ से मुसलमानों पर बहुत ज़ुल्म हुआ है. इस बात से श्री अक्षय ब्रह्मचारी और फ़ैज़ाबाद नगर कांगरेस कमेटी के सदर सिद्धेश्वरी प्रसाद और कुछ कार्यकर्ता बहुत दुखी हुए. बहुत कुछ कोशिश करने पर भी जब मामला सुधरने नहीं पाया, तो आखिर में ता० ३०-१-५० को श्री अक्षय ब्रह्मचारी ने लाचार

ایودھیا کے مسلمان

('ہریجن سیوک' ۱۹ اگست ۱۹۵۰)

شری اکشے برہمچاری ایودھیا کے ایک ویشنو سادھو ہیں . وہ فیض آباد ضلع کانگریس کمیٹی کے منتری اور اتر پردیش صوبہ کانگریس کمیٹی کے ممبر ہیں . اتر پردیش کے سبھی نیتا اچھی طرح جانتے ہیں کہ وہ ایک سچے کاریہ کرتا ہیں . فیض آباد اور ایودھیا ایک دوسرے سے ملے ہوئے ہیں . سچ یہ ہے کہ وہ ایک ہی شہر ہیں . دونوں ایک ہی میونسپلٹی کے اندر ہیں . سن ۱۹۴۹ یا اس سے کچھ پہلے سے وہاں ہندو مسلم سوال کھید جنک روپ میں کھڑا ہو گیا ہے اس میں ہندؤں کیطرف سے مسلمانوں پر بہت ظلم ہوا ہے . اس بات سے شری اکشے برہمچاری اور فیض آباد نگر کانگریس کمیٹی کے صدر سدھیشوری پرساد اور کچھ کاریہ کرتا دکھی ہوئے. بہت کچھ کوشش کرنے پر بھی جب معاملہ سدھر نے نہیں پایا، تو آخر میں تاریخ ۳۰-۱-۵۰ کو شری اکشے برہمچاری نے لاچار

होकर अनशन (खाना बन्द) कर दिया. यू. पी. के होम मिनिस्टर के यह यक़ीन दिलाने पर कि वह सब ठीक कर देंगे उन्होंने ता० ४-२-५०. को अनशन छोड़ दिया.

श्री अक्षय ब्रह्मचारी की शिकायत है कि बाद में जो जांच वग़ैरा और अन्याय की दुरुस्ती होनी चाहिये थी वह नहीं की गई, और मामला अबतक जैसा का तैसा उलझा हुआ है; इतना ही नहीं, बल्कि मुसलमानों के लिये आइन्दा के वास्ते ज़्यादा मुशकिल भी कर दी गई है. इसलिये श्री अक्षय ब्रह्मचारी फिर बेचैन हो गए हैं और उन्होंने एलान किया है कि वह तारीख़ बाइस अगस्त से फिर से अनशन शुरू करने वाले हैं.

श्री अक्षय ब्रह्मचारी के कहने के अनुसार झगड़े की ख़ास बातें यह हैं :

[यहाँ पर भाई किशोर लाल मशरूवाला ने फ़ैज़ाबाद की मशहूर बाबरी मसजिद की बाबत वहाँ के मुसलमानों की और श्री अक्षय ब्रह्मचारी की शिकायतों को बयान किया है. हम उस सब को इसलिये छोड़ रहे हैं क्यों कि बाबरी मसजिद का मामला इस समय दीवानी अदालत के सामने पेश है और उस पर किसी तरह की भी टीका अदालत के काम में कठिनाई पैदा कर सकती है. —एडिटर]

वहीं की एक दूसरी घटना यह है :

किसी मुसलमान की 'स्टार होटल' नाम की एक दुकान थी. एक दिन एक शख़्स ने ज़िला मजिस्ट्रेट को ख़बर दी कि उस होटल में हथियार छिपे हुए हैं. तलाशी ली गई, पर ऐसी कोई चीज़ नहीं मिली. वहाँ चार आदमी थे. उनमें

ہوکر ان شن (کھانا بند) کر دیا. یو . پی . کے ہوم منسٹر کے یہ یقین دلانے پر کہ وہ سب ٹھیک کر دینگے اُنہوں نے تاریخ ۴-۲-۵۰ کو ان شن چھوڑ دیا .

شری اکشے برہمچاری کی شکایت ہے کہ بعد میں جو جانچ وغیرہ اور انیائے کی درستی ہونی چاہئے تھی وہ نہیں کی گئی' اور معاملہ ابتک جیسا کا تیسا الجھا ہوا ہے؛ اتنا ہی نہیں' بلکہ مسلمانوں کے لئے آئندہ کے واسطے زیادہ مشکل بھی کر دی گئی ہے . اسلئے شری اکشے برہمچاری پھر بے چین ہوگئے ہیں اور انہوں نے اعلان کیا ہے کہ وہ تاریخ بائیس اگست سے پھر سے ان شن شروع کرنیوالے ہیں .

شری اکشے برہمچاری کے کہنے کے انوسار جھگڑے کی خاص باتیں یہ ہیں :

[یہاں پر بھائی کشور لال مشرو والا نے فیض آباد کی مشہور بابری مسجد کی بابت وہاں کے مسلمانوں کی اور شری اکشے برہمچاری کی شکایتوں کو بیان کیا ہے . ہم اُس سبکو اِسلئے چھوڑ رہے ہیں کیونکہ بابری مسجد کا معاملہ اس سمے دیوانی عدالت کے سامنے پیش ہے اور اس پر کسی طرح کی بھی ٹیکا عدالت کے کام میں کٹھنائی پیدا کر سکتی ہے . —ایڈیٹر]

وہیں کی ایک دوسری گھٹنا یہ ہے :

کسی مسلمان کی 'اسٹار ہوٹل' نام کی ایک دکان تھی . ایک دن ایک شخص نے ضلع مجسٹریٹ کو خبر دی کہ اس ہوٹل میں ہتھیار چھپے ہوئے ہیں . تلاشی لی گئی' پر ایسی کوئی چیز نہیں ملی . وہاں چار آدمی تھے . ان میں

से एक सुल्तानपुर का था. वह बिस्कुट खरीदने आया था. उसे दफ़ा १०९ में गिरफ्तार किया गया. बाद में वह छूट गया और जिला मजिस्ट्रेट ने होटल के मालिक को दुकान खाली करने का हुक्म दे दिया और उसी समय दुकान अपने सामने खाली करवा ली. बाद में वह दुकान दूसरे को दे दी गई, जिसने वहाँ 'गोमती होटल' के नाम से अपनी दुकान खोली. उसे खोलने की रसम जिला जज के हाथों हुई. दूसरे सरकारी अफ़सर भी मौजूद थे. कहा जाता है कि 'स्टार होटल' का मालिक एक पुराना नैशनलिस्ट मुसलमान है, और पिछले दिनों लीगियों ने उसका बाइकाट भी किया था. यानी, यह बात भी नहीं है कि इस शख्स ने हिन्दुओं के खिलाफ़ पिछले दिनों किसी आन्दोलन में हिस्सा लिया हो, जिसका गुस्सा अब तक रहा हो. उसने कोर्ट में दावा किया और उसमें जीत भी गया. लेकिन अब तक दुकान का क़बज़ा लेने में वह सफल नहीं हुआ.

तीसरी घटना और भी कठोरता की है.

एक मुसलमान औरत मरी. अयोध्या में कई क़ब्रस्तान हैं. उसके रिश्तेदार नज़दीक के क़ब्रस्तान में उसका जनाज़ा दफ़नाने का इन्तज़ाम करने लगे. कुछ हिन्दुओं ने आकर उन्हें रोका और खड्डा खोदने से मना किया. रिश्तेदार सिटी मजिस्ट्रेट के पास गये. उन्हें मदद देना मजिस्ट्रेट का फ़र्ज़ था. उसने मदद करने के बजाय उनसे कहा कि उस क़ब्रस्तान के बारे में हिन्दुओं का विरोध है, तो बेहतर है कि तुम दूसरे क़ब्रस्तान में जाओ. तब रिश्तेदार वहाँ गये. वहाँ दूसरे हिन्दू दल ने आकर झगड़ा उठाया. तब सिटी मजिस्ट्रेट ने तीसरे में जाने के लिये

سے ایک سلطان پور کا تھا ۔ وہ بسکٹ خریدنے آیا تھا ۔ اُسے دفعہ ١٠٩ میں گرفتار کیا گیا ۔ بعدمیں وہ چھوٹ گیا اور ضلع مجسٹریٹ نے ہوٹل کے مالک کو دوکان خالی کرنے کا حکم دیدیا اور اسی سمے دوکان اپنے سامنے خالی کر والی ۔ بعد میں وہ دوکان دوسرے کو دیدی گئی' جس نے وہاں 'گومتی ہوٹل' کے نام سے اپنی دوکان کھولی ۔ اُسے کھولنے کی رسم ضلع جج کے ہاتھوں ہوئی ۔ دوسرے سرکاری افسر بھی موجود تھے ۔ کہا جاتا ہے کہ ' اسٹار ہوٹل' کا مالک ایک پرانا نیشنلسٹ مسلمان ہے' اور پچھلے دنوں لیگیوں نے اُسکا بائیکاٹ بھی کیا تھا ۔ یعنی' یہ بات بھی نہیں ہے کہ اِس شخص نے ہندؤوں کے خلاف پچھلے دنوں کسی آندولن میں حصہ لیا ہو' جس کا غصہ ابتک رہا ہو ۔ اُس نے کورٹ میں دعوی کیا اور اُسمیں جیت بھی گیا ۔ لیکن ابتک دوکان کا قبضہ لینے میں وہ سپھل نہیں ہوا ۔

تیسری گھٹنا اور بھی کٹھورتا کی ہے ۔

ایک مسلمان عورت مری ۔ ایودھیا میں کئی قبرستان ہیں ۔ اُسکے رشتےدار نزدیک کے قبرستان میں اس کا جنازہ دفنانے کا انتظام کرنے لگے ۔ کچھ ہندؤوں نے آکر اُنہیں روکا اور کھڈا کھودنے سے منع کیا ۔ رشتہ‌دار سٹی مجسٹریٹ کے پاس گئے ۔ اُنہیں مدد دینا مجسٹریٹ کا فرض تھا ۔ اُس نے مدد کرنے کے بجائے اُن سے کہا کہ اُس قبرستان کے بارے میں ہندؤوں کا ورودھ ہے' تو بہتر ہے کہ تم دوسرے قبرستان میں جاؤ ۔ تب رشتہ‌دار وہاں گئے ۔ وہاں دوسرے ہندو دل نے آکر جھگڑا اُٹھایا ۔ تب سٹی مجسٹریٹ نے تیسرے میں جانے کے لئے

से मेल खाती है ? क्या मुल्क और क़ौम ने इसी घड़ी और इसी दिन के लिये इतनी क़ुर्बानियां की थीं ? आज हमारे नेता और अधिकारी चाहे हमारी इस आलोचना को कड़वा और विरोधी समझें, मगर उनकी हैसियत उस इतिहासकार की नज़रों में क्या होगी जो गांधी जी की हत्या के बाद के हिन्दुस्तान के हाल को अपनी किताब में लिखेगा ? जब हिन्दुस्तान की बेज़बान जनता की तबाही और बर्बादी की चर्चा वह अपनी किताब में करेगा तो एक बार उसका क़लम कांप उठेगा, एक बार शायद उसे यक़ीन भी न होगा कि जिस हिन्दुस्तान की समाजी, सियासी और माली हालत का वह तज़किरा कर रहा है वह गांधी का देश है और उसकी रह-नुमाई गांधी के नाम की सौगन्ध खाने वाले लोग ही कर रहे हैं.

किसी भी देश की हालत और अच्छे शासन की तारीफ़ सिर्फ़ इस बात में नहीं है कि देश में अमन चैन है. अमन-चैन का यह नारा तो हमारे अँग्रेज़ हुक्मरां भी उठाया करते थे. मगर गांधी जी ने उस शान्ति को 'मरघट की शान्ति' कहा था. इस मरघटी शान्ति से हमारे आज के शासक चाहें तो अपने को धोका दे सकते हैं. मगर उसके पीछे छिपी चिन्गारी को, जो कि किसी भी समय शोला बन कर भड़क सकती है, नज़रदाज़ करना ख़तरे से ख़ाली नहीं है.

गांधी जी ने अपनी ज़िन्दगी के आख़िरी दिनों में सर्वोदय समाज का सपना देखा था. सर्व का अर्थ है सब, पूरा या मुकम्मल. उदय का मतलब है विकास, जन्म या बढ़ती. यानी, सर्वोदय का सीधा और समझ में आने वाला अर्थ है इन्सान की हर तरह की तरक्क़ी और विकास. गांधी जी अपने कार्यकर्ताओं और कांग्रेसी

سے میل کھاتی ہے؟ کیا ملک اور قوم نے اِسی گھڑی اور اسی دن کے لئے اتنی قربانیاں کی تھیں؟ آج ہمارے نیتا اور ادھیکاری چاہے ہماری اِس آلوچنا کو کڑوا اور ورودھی سمجھیں مگر اُن کی حیثیت اُس اتہاس کار کی نظروں میں کیا ہوگی۔ جو گاندھی جی کی ہتیا کے بعد کے ہندستان کے حال کو اپنی کتاب میں لکھے گا؟ جب ہندستان کی بے زبان جنتا کی تباہی اور بربادی کی چرچا وہ اپنی کتاب میں کرے گا تو ایک بار اس کا قلم کانپ اٹھے گا، ایک بار شاید اُسے یقین بھی نہ ہوگا کہ جس ہندستان کی سماجی، سیاسی اور مالی حالت کا وہ تذکرہ کر رہا ہے وہ گاندھی کا دیش ہے اور اس کی رہنمائی گاندھی کے نام کی سوگندھ کھانے والے لوگ ہی کر رہے ہیں۔

کسی بھی دیش کی حالت اور اچھے شاسن کی تعریف صرف اس بات میں نہیں ہے کہ دیش میں امن و چین ہے، امن چین کا یہ نعرہ تو ہمارے انگریز حکمراں بھی اٹھایا کرتے تھے، مگر گاندھی جی نے اُس شانتی کو 'مرگھٹ کی شانتی' کہا تھا۔ اس مرگھٹی شانتی سے ہمارے آج کے شاسک (حکمراں) چاہیں تو اپنے کو دھوکہ دے سکتے ہیں۔ مگر اُس کے پیچھے چھپی چنگاری کو جو کہ کسی بھی سمے شعلہ بن کر بھڑک سکتی ہے، نظر انداز کرنا خطرے سے خالی نہیں ہے۔

گاندھی جی نے اپنی زندگی کے آخری دنوں میں سروودے سماج کا سپنا دیکھا تھا۔ سرو کا ارتھ ہے سب، پورا یا مکمل اُدے کا مطلب ہے وکاس جنم یا بڑھتی یعنی سروودے کا سیدھا اور سمجھ میں آنے والا ارتھ ہے انسان کی ہر طرح کی ترقی اور وکاس گاندھی جی اپنے کاریہ کرتاؤں اور کانگرسی

फ़रमान दिया. तब वह तीसरे में गये. इस तरह एक के बाद एक क़ब्रस्तान में उन्हें जाना पड़ा. तीसरे क़ब्रस्तान में भी विरोध तो रहा. इस दरम्यान २२ घन्टे तक लाश पड़ी रही. आख़िर में उसे अयोध्या के बाहर कहीं मिट्टी दी गई. इस तरह की घटनायें चार और लाशों के बारे में भी हो चुकी हैं और वहाँ एक डरावना ज़ोरदार आन्दोलन चल रहा है कि अयोध्या के भीतर मुसलमानों को लाशें दफ़नाने न दी जायँ.

इन घटनाओं के अलावा पिछले एक बरस में मुसलमानों के साथ और भी छोटे मोटे बुरे बर्ताव हुए हैं. कई अकेले दुकेले राह चलते मुसलमानों को मारा पीटा और क़तल भी किया गया है. बक़र-ईद के वक़्त सताया गया है. अभी पिछली ईद को भी एक मुसलमान की हत्या की गई और डर के मारे अयोध्या के मुसलमानों ने ईद नहीं मनाई. उन पर हमला किया गया है. स्त्रियों और बच्चों तक को सताया गया और बड़ी गिनती में उनके घर भी जलाये गये हैं. घबराये हुए मुसलमानों को मार डालने की धमकियाँ दी गई हैं. कई मुसलमानों ने अपने बाल बच्चों को फ़ैज़ाबाद से बाहर रिश्तेदारों के यहाँ भेज दिया है. श्री अक्षय ब्रह्मचारी जैसे शान्ति क़ायम करने वाले कार्यकर्ताओं पर भी कई बार हमले किये गये हैं और उनके मकान लूटे गये हैं.

हिन्दुओं का कहना है कि अयोध्या में मुसलमानों का कोई क़ब्रस्तान रह नहीं सकता. यहाँ "हिन्दुओं का कहना है" का मतलब यह न समझा जाये कि आम हिन्दू जनता को इस तरह की कारवाइयाँ

فرمان دیا. تب وہ تیسرے میں گئے . اس طرح ایک کے بعد ایک قبرستان میں انھیں جانا پڑا . تیسرے قبرستان میں بھی ورودھ تو رہا . اس درمیان ۲۲ گھنٹے تک لاش پڑی رہی. آخر میں اسے ایودھیا کے باہر کہیں مٹی دی گئی . اس طرح کی گھٹنائیں چار اور لاشوں کے بارے میں بھی ہو چکی ہیں اور وہاں ایک ڈراونا زور دار آندولن چل رہا ہے کہ ایودھیا کے بھیتر مسلمانوں کو لاشیں دفنانے نہ دی جائیں .

ان گھٹناؤں کے علاوہ پچھلے ایک برس میں مسلمانوں کے ساتھ اور بھی چھوٹے موٹے برے برتاؤ ہوئے ہیں . کئی اکیلے دکیلے راہ چلتے مسلمانوں کو مارا پیٹا اور قتل بھی کیا گیا ہے . بقرعید کے وقت ستایا گیا ہے . ابھی پچھلی عید کو بھی ایک مسلمان کی ہتیا کی گئی اور ڈر کے مارے ایودھیا کے مسلمانوں نے عید نہیں منائی . اُن پر حملہ کیا گیا ہے . استریوں اور بچوں تک کو ستایا گیا اور بڑی گنتی میں اُن کے گھر بھی جلائے گئے ہیں . گھبرائے ہوئے مسلمانوں کو مار ڈالنے کی دھمکیاں دی گئی ہیں . کئی مسلمانوں نے اپنے بال بچوں کو فیض آباد سے باہر رشتہ داروں کے یہاں بھیج دیا ہے . شری اکشے برہمچاری جیسے شانتی قائم کرنے والے کاریہ کرتاؤں پر بھی کئی بار حملے کئے گئے ہیں اور اُن کے مکان لوٹے گئے ہیں .

ہندوؤں کا کہنا ہے کہ ایودھیا میں مسلمانوں کا کوئی قبرستان رہ نہیں سکتا . یہاں ''ہندوؤں کا کہنا ہے'' کا مطلب یہ نہ سمجھا جائے کہ عام ہندو جنتا کو اسطرح کی کارروائیاں اور جھگڑے پسند ہیں . عام جنتا اتنی

आज मुसलमानों की हत्या करने के लिये बहकाया जा सकता है और कल उन्हें गले लगाने के लिये उतना ही पिघलाया जा सकता है. यह जो कुछ किया जाता है, वह हिन्दुओं के नाम पर एकता की जगह नफ़रतें फैलाने की कोशिश में लगे हुए थोड़े से अगुवाओं का काम होता है.

मुझे यह भी बताया गया है कि फ़ैज़ाबाद अयोध्या के हिन्दू मुसलमानों में यह बेदिली इस एकाध बरस में ही फैली है. १९४७-४८ में भी जब सब जगह फ़िरक़ेवारी दंगा फ़साद चल रहे थे, तब भी फ़ैज़ाबाद में किसी तरह का तूफ़ान नहीं हुआ. पर अभी हाल में फ़ैज़ाबाद आपसी नफ़रत का केन्द्र सा बन गया है और वहाँ पर इन झगड़ों को जो सफलता मिली है, उसके कारन आगरा, मथुरा, बरेली वग़ैरा ज़िलों तक यही मुसलिम विरोधी हवा बढ़ चली है. कुछ महीने पहले उत्तर प्रदेश के मुसलमान जो बड़ी तादाद में पाकिस्तान आने लगे थे उसकी जड़ में यही कारन था.

मालूम होता है कि इस अन्याय में उत्तर प्रदेश के कुछ बड़े सरकारी अफ़सरों और कांगरेसी नेताओं का भी हाथ रहा है. सरकार अपने नौकरों को रोकने में और तुरन्त इन अन्यायों को ख़तम करने का फ़रमान निकालने में नाकामयाब रही.

इस हालत में श्री अक्षय ब्रह्मचारी का और अधिक धीरज न रख सकना मैं एक क़ुदरती बात मानता हूं. अगर ऊपर लिखी बातों में कोई ऐसी गहरी बातें सचाई से हटी हुई हों, जिसके कारन सारा चित्र ही बदल जाता हो, या उन्होंने कुछ जल्दबाजी की हो और

آج مسلمانوں کی ھتیا کرنے کے لئے بہکایا جاسکتا ھے اور کل اُنھیں گلے لگانے کے لئے اُتنا ھی پگھلایا جاسکتا ھے . یہ جو کچھ کیا جاتا ھے' وہ ھندوؤں کے نام پر ایکتا کی جگہ نفرتیں پھیلانے کی کوشش میں لگے ھوئے تھوڑے سے اگواؤں کا کام ھوتا ھے .

مجھے یہ بھی بتایا گیا ھے کہ فیض آباد ایودھیا کے ھندو مسلمانوں میں یہ بے دلی اس ایک آدھ برس میں ھی پھیلي ھے. ۱۹۴۷-۴۸ میں بھی جب سب جگہ فرقہ وارانہ دنگا فساد چل رھے تھے' تب بھي ... میں کسی طرح کا طوفان نہیں ھوا . پر ابھی حال میں ... کا کیندر سا بن گیا ھے اور وھاں پر ان جھگڑوں کو ... کے کارن آگرہ' متھرا' بریلی وغیرہ ضلعوں ... . کچھ مہینے پہلے اُتر پردیش ... جانے لگے تھے اُسکی

... کچھ بڑے ... ھے . سرکار ... کرنے کا فرمان

... اور ادھک دھیرج ... . اگر اوپر لکھی باتوں ... ھٹي ھوئی ھوں' جسکے ... نے کچھ جلدبازی کی ھو اور

... بھار ... مل کو ... کوئی فائدہ ... ''میں ... تھي . ایک ... طرف بھارت کي ... پر سن ۱۹۴۸ کے ... طے ھو چکا تھا کہ کشمیر ... کہ وھاں کے لوگ بھارت ... اور اسکا انتظام کردیا جائے ... پر وہ انتظام کیا اور کیسے ھو ... ایک ... نہ پائی تھي اور نہ کہ

मुसलमानों को न्याय दिलवाने का कोई दूसरा उपाय निकलता हो, तो वह उन्हें समझा देना चा'हये. नहीं तो, यू. पी. में मुसलमानों को पूरा न्याय और बराबरी मिल सकती है. यह विश्वास सरकार को अपने अमल के ज़रिये लोगों के दिलों में पैदा कर देना चाहिये.

मैं जानता हूं कि यू. पी. एक बहुत बड़ा सूबा है और उसका शासन बहुत मुश्किल है. यू. पी. के बहुत से नेताओं और पढ़े लिखे लोगों के ख़यालात भी इस बारे में साफ़ नहीं हैं कि न्याय में और ख़ुशामद (Appeasement) में और बहुगिनत लोगों के जो अधिकार समझे जाते हैं उनमें। कैसे फ़रक़ किया जाये. दूसरे सूबों की निस्बत हिन्दू मुसलमानों की मिली हुई आबादी वहां ज़्यादा है और हिन्दू मुसलिम दोनों संस्कृतियों के मशहूर मरकज़ उस प्रदेश में आ गये हैं. अगर आपस में मेल मोहब्बत हो, तो एक सुन्दर मिली जुली कलचर की रचना के लिये वहां सारा सामान मौजूद है पर दिलों में नफ़रत रही तो वह सारे भारत के लिये एक डरावनी यादवी (महा भारत) भी खड़ी कर सकता है. श्री अक्षय ब्रह्मचारी चन्द मित्रों के साथ लगभग अकेले इस अन्याय के सामने जो डट गये हैं, यह उनके लिये सचमुच तारीफ़ की बात है. मैं उम्मीद करता हूँ कि अयोध्या के मुसलमानों को इन्साफ़ दिलाने में वह कामयाबी हासिल करेंगे और सरकार इसमें अपनी पूरी शक्ति लगाना अपना फ़र्ज़ समझेगी.

आख़िर में मैं भारत और पाकिस्तान के मुसलमानों से एक शब्द कहना चाहता हूँ.

مسلمانوں کو نیائے دلوانے کا کوئی دوسرا اُپائے نکلتا ہو' تو وہ اُنہیں سمجھا دینا چاہئے . نہیں تو' یو . پی . میں مسلمانوں کو پورا نیائے اور برابری مل سکتی ہے' یہ وشواس سرکار کو اپنے عمل کے ذریعے لوگوں کے دلوں میں پیدا کر دینا چاہئے .

میں جانتا ہوں کہ یو . پی . ایک بہت بڑا صوبہ ہے اور اُسکا شاسن بہت مشکل ہے . یو . پی . کے بہت سے نیتاؤں اور پڑھے لکھے لوگوں کے خیالات بھی اس بارے میں صاف نہیں ہیں کہ نیائے میں اور خوشامد (Appeasen ent) میں اور بہوگنت لوگوں کے جو ادھیکار سمجھے جاتے ہیں اُن میں کیسے فرق کیا جائے . دوسرے صوبوں کی نسبت ہندو مسلمانوں کی ملی ہوئی آبادی وہاں زیادہ ہے اور ہندو مسلم دونوں سنسکرتیوں کے مشہور مرکز اُس پردیش میں آگئے ہیں . اگر آپس میں میل محبت ہو' تو ایک سندر ملی جلی کلچر کی رچنا کیلئے وہاں سارا سامان موجود ہے . پر دلوں میں نفرت رہی تو وہ سارے بھارت کے لئے ایک ڈراونی یادوی (مہابھارت) بھی کھڑی کر سکتا ہے . شری اکشے برہمچاری چند متروں کے ساتھ لگ بھگ اکیلے اس انیائے کے سامنے جو ڈٹ گئے ہیں' یہ اُن کے لئے سچ مچ تعریف کی بات ہے . میں اُمید کرتا ہوں کہ ایودھیا کے مسلمانوں کو انصاف دلانے میں وہ کامیابی حاصل کرینگے اور سرکار اسمیں اپنی پوری شکتی لگانا اپنا فرض سمجھے گی .

آخر میں میں بھارت اور پاکستان کے مسلمانوں سے ایک شبد کہنا چاہتا ہوں .

ऊपर का बयान पढ़ कर उनका घबरा जाना या गुस्सा करना वाजिब न होगा. इस लेख का गलत इस्तेमाल करने वाला कोई भी मुसलमान अपनी जमाअत का नुकसान ही करेगा. याद रहे कि ऊपर लिखी घटनाओं में कोई भी बिलकुल ताज़ा नहीं है, और नेहरू लियाक़त समझौते से पहले जो बुरी हालत भारत और पाकिस्तान दोनों के बहुत से हिस्सों में थी उसी का यह एक हिस्सा है. जो घटनायें हुई हैं, उनमें ताज्जुब की कोई बात नहीं. यह बयान इतना ही दिखाता है कि हिन्दू और मुसलमान दोनों ने बुरे काम किये हैं, और किसी को यह हक़ नहीं कि दूसरे को ज़्यादा गुनाहगार बताये. वह हालत अभी पूरी तरह सुधरी नहीं है लेकिन इस बात का ख़याल रखा जाय कि उसे सुधारने के लिये एक हिन्दू साधू और उसके साथी कोशिश कर रहे हैं और इन्साफ़ और प्रेम के हित में मुसलमानों की तरफ़ से डट रहे हैं. जो मुसलमान इसे पढ़ कर बहकेगा या दूसरों को बहकायेगा वह श्री अक्षय ब्रह्मचारी के काम को ज़्यादा मुश्किल कर देगा.

वर्धा, ३१. ७. ५०.   कि० घ० मशरूवाला

ऊपर का लेख हमने 'हरिजन सेवक' से नक़ल किया है. पढ़ने वालों की आसानी के लिये कुछ शब्द बदल दिये गये हैं. इसके लिये हमने अंगरेज़ी 'हरिजन' से भी मिलान कर लिया है और अपनी सकत भर यह ख़याल रखा है कि भाई किशोर लाल मशरूवाला के विचार और भाव ज्यूँ के त्यूँ बने रहें.

हम श्री अक्षय ब्रह्मचारी को अच्छी तरह जानते हैं. उनकी सचाई, इन्साफ़ पसन्दी, उदारता, लगन और त्याग का हमारे दिल

اوپر کا بیان پڑھ کر انکا گھبرا جانا یا غصہ کرنا واجب نہ ہوگا . اس لیکھ کا غلط استعمال کرنیوالا کوئی بھی مسلمان اپنی جماعت کا نقصان ہی کریگا . یاد رہے کہ اوپر لکھی گھٹناؤں میں کوئی بھی بالکل تازہ نہیں ہے' اور نہرو لیاقت سمجھوتے سے پہلے جو بری حالت بھارت اور پاکستان دونوں کے بہت سے حصوں میں تھی' اسی کا یہ ایک حصہ ہے . جو گھٹنائیں ہوئی ہیں' ان میں تعجب کی کوئی بات نہیں . یہ بیان اتنا ہی دکھاتا ہے کہ ہندو اور مسلمان دونوں نے برے کام کئے ہیں' اور ... یہ حق نہیں کہ دوسرے کو زیادہ گنہگار بتائے . ... طرح سدھری نہیں ہے لیکن اس بات کا خیال ... کے لئے ایک ہندو سادھو اور اسکے ساتھی ... پریم کے ہت میں مسلمانوں ... اسے پڑھ کر بہکیگا یا ... کام کو زیادہ مشکل

... والا .

... پڑھنے ... اسکے لئے ... اپنی سکت ... لا کے وچار اور بھاؤ .

... جانتے ہیں . انکی ... ن اور تیاگ کا ہمارے دل

بھار
مل کو
کوئی فائدہ
میں''
تھی . ایک
طرف بھارت کی
پھر سن ۱۹۴۸ کے
طے ہو چکا تھا کہ کشمیر
کہ وہاں کے لوگ بھارت
اور اسکا انتظام کردیا جائے
پھر وہ انتظام کہاں اور کیسے ہو

। बहुत बड़ा आदर है. जो घटनाएँ इस लेख में बयान की गई हैं वह हम पहले भी कई जानकार लोगों से सुन चुके हैं. आम हिन्दू जनता का हमें इसमें कोइ दोश दिखाई नहीं देता. दोश है उन कांगरेसी और ग़ैर कांगरेसी पढ़े लिखे लोगों और सरकारी अफ़सरों का जो अभी तक यह नहीं समझ पाए कि धर्म और कलचर के नाम पर इस तरह की तंग नज़री और इस तरह के पाप किसी देश का भला नहीं कर सकते और अगर हमने समय रहते अपने दिलों और दिमाग़ों को इनसे पाक न किया तो यह हमारे नाश का सब से बड़ा कारन होगा.

हम अधिक कहना नहीं चाहते. हमारा दिल पूरी तरह श्री अक्षय ब्रह्मचारी और उनके साथियों के साथ है. हमारी भगवान से प्रार्थना है कि वह हमारी सरकार और जनता दोनों को नेक समझ और हिम्मत दें, प्रान्त की सरकार जल्दी से जल्दी फ़ैज़ाबाद की हालत को सुधार कर देश के मुसलमानों के साथ इन्साफ़ करने और आइन्दा के लिये इन्साफ़ का भरोसा दिलाने में कामयाब हों, श्री अक्षय ब्रह्मचारी की जान बच सके और इस प्रान्त का जीवन एक बहुत बड़े कलंक से बच जावे. अगर भगवान को यह मन्ज़ूर नहीं है तब भी हमें विश्वास है कि श्री गनेश शंकर विद्यार्थी, महात्मा गांधी और श्री अक्षय ब्रह्मचारी जैसों के बलिदान व्यर्थ नहीं जा सकते. देश की हिन्दू और मुसलमान जनता एक न एक दिन अपने सच्चे हित को समझेगी और आपसी नफ़रत और ग़लतफ़हमियों के इस भयंकर जाल से निकल कर एकता और प्रेम के साथ देश को सच्ची उन्नति के पथ पर आगे ले जा सकेगी.

میں بہت بڑا آدر ہے . جو گھٹنائیں اس لیکھ میں بیان کی گئی ہیں وہ ہم پہلے بھی کئی جان‌کار لوگوں سے سن چکے‌ہیں . عام ہندو جنتا کا ہمیں اسمیں کوئی دوش دکھائی نہیں دیتا . دوش ہے اُن کانگریسی اور غیر کانگریسی پڑھے لکھے لوگوں اور سرکاری افسروں کا جو ابھی تک یہ نہیں سمجھ پائے کہ دھرم اور کلچر کے نام پر اسطرح کی تنگ نظری اور اس طرح کے پاپ کسی دیش کا بھلا نہیں کرسکتے اور اگر ہم نے سمے رہتے اپنے دلوں اور دماغوں کو ان سے پاک نہ کیا تو یہ ہمارے ناش کا سب سے بڑا کارن ہوگا .

ہم ادھک کہنا نہیں چاہتے . ہمارا دل پوری طرح شری اکشے برہمچاری اور اُن کے ساتھیوں کیساتھ ہے . ہماری بھگوان سے پرارتھنا ہے کہ وہ ہماری سرکار اور جنتا دونوں کو نیک سمجھ اور ہمت دیں' پرانت کی سرکار جلدی سے جلدی فیض‌آباد کی حالت کو سدھار کر دیش کے مسلمانوں کے ساتھ انصاف کرنے اور آئندہ کے لئے انصاف کا بھروسہ دلانے میں کامیاب ہو' شری‌اکشے برہمچاری کی جان بچ سکے اور اس پرانت کا جیون ایک بہت بڑے کلنک سے بچ جاوے . اگر بھگوان کو یہ منظور نہیں ہے تب بھی ہمیں وشواس ہے کہ شری گنیش شنکر ودیارتھی' مہاتما گاندھی اور شری اکشے برہمچاری جیسوں کے بلیدان ویرتھ نہیں جا سکتے . دیش کی ہندو اور مسلمان جنتا ایک نہ ایک دن اپنے سچے ہت کو سمجھیگی اور آپسی نفرت اور غلط فہمیوں کے اس بھینکر جال سے نکل کر ایکتا اور پریم کے ساتھ دیش کو سچی اُنتی کے پتھ پر آگے لیجا سکیگی .

(۱۸۵)

सर डिकसन और कशमीर

कशमीर के झगड़े को निबटाने के लिये यू० एन० ओ० की तरफ से सर ओवन डिकसन २८ मई सन् ५० को हिन्दुस्तान आए थे. ढाई महीने उन्होंने कभी दिल्ली, कभी कशमीर, कभी कराची जाकर भारत और पाकिस्तान में सुलह कराने की कोशिश की. पर उनके कराए सुलह न हो सकी. बाईस अगस्त को कराची से सर ओवन डिकसन का जो बयान इस बारे में निकला है उसका निचोड़ थोड़े से में और जहां तक हो सका उन्हीं के शब्दों में हम नीचे दे रहे हैं. वह कहते हैं :—

"हाल में इस बात की कोई उम्मीद नहीं की जा सकती कि भारत और पाकिस्तान कशमीर के बारे में अपने किसी भी झगड़े को मिल कर तय कर सकें. मेरे और अधिक इस देश में रहने से कोई फ़ायदा नहीं हो सकता.

"मैं जब आया तब कशमीर रियासत दो हिस्सों में बँटी हुई थी. एक तरफ़ पाकिस्तान की फ़ौजें पड़ी हुई थीं दूसरी तरफ़ भारत की. इन दोनों फ़ौजों का अपने अपने हिस्से पर क़बज़ा था. पर सन् १९४८ के अन्त से लड़ाई बन्द थी. दोनों सरकारों के बीच यह तय हो चुका था कि कशमीर के लोगों की खुली राय लेकर यह देख लिया जाय कि वहां के लोग भारत के साथ रहना चाहते हैं या पाकिस्तान के और इसका इन्तज़ाम कर दिया जाय कि सब लोग आज़ादी से राय दे सकें. पर वह इन्तज़ाम क्या और कैसे हो इस पर न उस समय दोनों सरकारों की एक राय बन पाई थी और न कभी बनी.

سر ڈکسن اور کشمیر

کشمیر کے جھگڑے کو نپٹانے کے لئے یو . این . او . کی طرف سے سر اوون ڈکسن ۲۸ مئی سن ۵۰ کو هندستان آئے تھے . ڈھائی مہینے اُنہوں نے کبھی دلی، کبھی کشمیر، کبھی کراچی جاکر بھارت اور پاکستان میں صلح کرانے کی کوشش کی . پر اُنکے کرائے صلح نہ هو سکی . بائیس اگست کو کراچی سے سر اوون ڈکسن کا جو بیان اِس بارے میں نکلا ہے اُسکا نچوڑ تھوڑے سے میں اور جہاں تک ہوسکا اُنہیں کے شبدوں میں ہم نیچے دے رہے ہیں . وہ کہتے ہیں :—

"حال میں اس بات کی کوئی اُمید نہیں کی جاسکتی کہ بھارت اور پاکستان کشمیر کے بارے میں اپنے کسی بھی جھگڑے کو مل کر طے کرسکیں . میرے اور ادھک اِس دیش میں رہنے سے کوئی فائدہ نہیں ہو سکتا .

"میں جب آیا تب کشمیر ریاست دو حصوں میں بٹی ہوئی تھی . ایک طرف پاکستان کی فوجیں پڑی ہوئی تھیں دوسری طرف بھارت کی . اِن دونوں فوجوں کا اپنے اپنے حصے پر قبضہ تھا . پر سن ۱۹۴۸ کے انت سے لڑائی بند تھی . دونوں سرکاروں کے بیچ یہ طے ہو چکا تھا کہ کشمیر کے لوگوں کی کھلی رائے لیکر یہ دیکھ لیا جائے کہ وہاں کے لوگ بھارت کے ساتھ رہنا چاہتے ہیں یا پاکستان کے اور اسکا انتظام کردیا جائے کہ سب لوگ آزادی سے رائے دے سکیں . پر وہ انتظام کیا اور کیسے ہو اِس پر نہ اُس سمے دونوں سرکاروں کی ایک رائے بن پائی تھی اور نہ کبھی بنی .

"मैंने सबसे पहले इसी बात पर दोनों में कोई समझौता करा देने की कोशिश की. दोनों ने बहुत सी ऐसी मुशकिलें मेरे सामने खड़ी कर दीं जो किसी तरह के भी समझौते के रास्ते में पहाड़ मालूम होती थीं. मालूम होता था अभी और भी मुशकिलें खड़ी की जायंगी.

"मैं दोनों सरकारों के प्रधान वज़ीरों से मिला. उन दोनों में से किसी के पास समझौते के लिये कोई तजवीज़ थी ही नहीं. तब मैंने अपनी कई तजवीज़ें इन्हें सुझाईं. चार पांच दिन तक खूब बहसें होती रहीं. मैंने कितनी ही नई नई चीज़ें इस बात के लिये सुझाईं कि लोगों की ठीक राय कैसे ली जा सके. पर भारत या पाकिस्तान न अपनी कोई तजवीज़ें रख सके और न किसी तीसरे की कोई तजवीज़ मानने को तयार हुए. भारत के प्रधान वज़ीर ने मेरी कोई बात नहीं मानी.

"मैं सिक्योरिटी कौंसिल की तरफ़ से काम कर रहा था. मैंने सोचा कि अब सारी रियासत में लोगों की राय लेने के बजाय कोई और ऐसा ढंग निकालना चाहिये जिससे यह झगड़ा जल्दी से और हमेशा के लिये तय हो जाय.

"मैंने कई तजवीज़ें कीं जिनमें से एक यह है—रियासत के वह हिस्से जहां यह साफ़ पता है कि लोग पाकिस्तान से मिलना चाहते हैं या भारत से, अलग अलग दोनों में बांट दिये जायं. रियासत का अधिकतर हिस्सा ऐसा ही है. जो थोड़ा सा हिस्सा बच जाय उसमें लोगों की राय ले ली जाय. इससे एक फ़ायदा यह भी होता कि कई जगह दोनों को अपनी अपनी फ़ौजें हटाने की ज़रूरत न पड़ती.

'' میں نے سب سے پہلے اِسي بات پر دونوں میں کوئی سمجھوتہ کرادینے کي کوشش کی . دونوں نے بہت سي ایسی مشکلیں میرے سامنے کھڑی کردیں جو کسی طرح کے بھي سمجھوتے کے راستے میں پہاڑ معلوم ہوتی تھیں . معلوم ہوتا تھا ابھی اور بھی مشکلیں کھڑي کی جائیں گی .

''میں دونوں سرکاروں کے پردھان وزیروں سے ملا . اُن دونوں میں سے کسی کے پاس سمجھوتے کے لئے کوئی تجویز تھی ہی نہیں . تب میں نے اپنی کئی تجویزیں اُنھیں سجھائیں . چار پانچ دن تک خوب بحثیں ہوتي رہیں . میں نے کتنی ہی نئی نئی چیزیں اِس بات کے لئے سجھائیں کہ لوگوں کی ٹھیک رائے کیسے لی جا سکے . پر بھارت یا پاکستان نہ اپنی کوئی تجویزیں رکھ سکے اور نہ کسي تیسرے کی کوئي تجویز ماننے کو تیار ہوئے . بھارت کے پردھان وزیر نے میری کوئي بات نہیں مانی .

''میں سکیورٹی کونسل کی طرف سے کام کر رہا تھا . میں نے سوچا کہ اب ساری ریاست میں لوگوں کی رائے لینے کے بجائے کوئی اور ایسا ڈھنگ نکالنا چاہئے جس سے یہ جھگڑا جلدی سے اور ہمیشہ کے لئے طے ہو جائے .

''میں نے کئی تجویزیں کیں جن میں سے ایک یہ ہے— ریاست کے وہ حصے جہاں یہ صاف پتہ ہے کہ لوگ پاکستان سے ملنا چاہتے ہیں یا بھارت سے' الگ الگ دونوں میں بانٹ دئے جائیں . ریاست کا ادھک تر حصہ ایسا ہی ہے . جو تھوڑا سا حصہ بچ جائے اُسمیں لوگوں کی رائے لے لي جائے . اس سے ایک فائدہ یہ بھي ہوتا کہ کئی جگہ دونوں کو اپني اپنی فوجیں ہٹانے کي ضرورت نہ پڑتی'

और आबादी का बहुत अधिक तबादला भी इधर से उधर या उधर से इधर न करना पड़ता.

"इस तजवीज़ पर मैंने भारत के कुछ अधिकारियों से बातें कीं. पता लगा कि भारत मेरे इस सुझाव पर विचार करने को तैयार है. यह भी पता चला कि भारत रियासत के उन हिस्सों को जिनमें लोगों की राय ली जाय और जिनमें न ली जाय किन असूलों पर तय करना चाहता है. इतना पता लगा कर मैं कराची गया और चाहा कि इस बात पर दोनों प्रधान वज़ीरों में बातचीत हो जाय.

"पाकिस्तान सरकार राज़ी न हुई. वह इसी बात पर डटी रही कि कुल रियासत भर में सब लोगों की राय ली जाय और उसी पर एक साथ पूरी रियासत का फ़ैसला किया जाय. यही यू० एन० ओ० के कमीशन का सुझाव था जिस पर पहले सब राज़ी हो चुके थे.

"एक रास्ता यह भी हो सकता था कि किसी हिस्से में भी लोगों की राय न ली जाय और सारी रियासत यूंही दोनों में बांट दी जाय. पर इसमें मुशकिल यह आगई कि दोनों में से कोई भी कशमीर की घाटी छोड़ने को तैयार नहीं है.

"मैं साफ़ समझ गया कि अब बात चीत से इन दोनों में कोई समझौता नहीं हो सकता. कम से कम अभी तो यही सूरत है.

"आख़ीर में इस झगड़े को तय करने के लिये मैंने एक और तजवीज़ रखी. उस पर जो बहस हुई तो मुझे कुछ ऐसी बातें भी खोलनी पड़ीं जिनका खोलना अब ज़रूरी था. पाकिस्तान को मैंने यक़ीन दिला दिया कि मेरी नई तजवीज़ पर भारत के साथ बातचीत करने से पाकिस्तान की बुनियादी बात को कोई नुक़सान नहीं

اور آبادی کا بہت ادھک تبادلہ بھی اِدھر سے اُدھر یا اُدھر سے اِدھر نہ کرنا پڑتا ۔

"اس تجویز پر میں نے بھارت کے کچھ ادھیکاریوں سے باتیں کیں ۔ پتہ لگا کہ بھارت میرے اِس سجھاؤ پر وچار کرنے کو تیار ھَے ۔ یہ بھی پتہ چلا کہ بھارت ریاست کے اُن حصوں کو جن میں لوگوں کی رائے لی جائے اور جن میں نہ لی جائے کن اُصولوں پر طے کرنا چاھتا ھے ۔ اتنا پتہ لگا کر میں کراچی گیا اور چاھا کہ اِس بات پر دونوں پردھان وزیروں میں بات چیت ھوجائے ۔

"پاکستان سرکار راضی نہ ھوئی ۔ وہ اسی بات پر ڈٹی رھی کہ کل ریاست بھر میں سب لوگوں کی رائے لی جائے اور اُسی پر ایک ساتھ پوری ریاست کا فیصلہ کیا جائے ۔ یہی یو ۔ ایس ۔ او ۔ کے کمیشن کا سجھاؤ تھا جس پر پہلے سب راضی ھوچکے تھے ۔

"ایک راستہ یہ بھی ھو سکتا تھا کہ کسی حصے میں بھی لوگوں کی رائے نہ لیجائے اور ساری ریاست یونہی دونوں میں بانٹ دی جائے ۔ پر اسمیں مشکل یہ آگئی کہ دونوں میں سے کوئی بھی کشمیر کی گھاٹی چھوڑنے کو تیار نہیں ھے ۔

"میں صاف سمجھ گیا کہ اب بات چیت سے ان دونوں میں کوئی سمجھوتہ نہیں ھو سکتا ۔ کم سے کم ابھی تو یہی صورت ھے ۔

"آخر میں اس جھگڑے کو طے کرنے کے لئے میں نے ایک اور تجویز رکھی ۔ اس پر جو بحث ھوئی تو مجھے کچھ ایسی باتیں بھی کھولنی پڑیں جنکا کھولنا اب ضروری تھا ۔ پاکستان کو میں نے یقین دلا دیا کہ میری نئی تجویز پر بھارت کے ساتھ بات چیت کرنے سے پاکستان کی بنیادی بات کو کوئی نقصان نہیں

पहुँचेगा. पर इस बारे में मेरी और भारत की राय में इतना ज्यादा फरक़ था कि मुझे इस कोशिश को भी छोड़ देना पड़ा.

"अब मेरे लिये कुछ काम नहीं रह गया. दोनों प्रधान वज़ीर भी मुझे यह नहीं बता सके कि अब मैं क्या करूँ. अब मैं जाकर सिक्योरिटी कौंसिल को अपनी रिपोर्ट दे दूंगा.

"अगर यह दोनों सरकारें इस झगड़े को तय करने के लिये खुद अपनी अपनी कुछ भी तजवीज़ें रख सकतीं तो बहुत काम बनता पर वह अपनी कोई तजवीज़ भी पेश नहीं कर सकीं समझौते की तजवीज़ें रखने का काम शुरू से आख़िर तक मुझे ही करना पड़ा. फिर भी मैं यह नहीं मानता कि आपसी बातचीत से यह दोनों सरकारें इस मामले का फ़ैसला कर ही नहीं सकेंगी."

मिस्टर डिकसन के इस बयान के बाद यू० एन० ओ० के सदर दफ़तर से ख़बर आई कि अपनी कोशिशों के दौरान में डिकसन साहब ने एक बात यह भी सुझाई थी कि अगर कशमीर में लोगों की राय ली जावे तो यह ज़रूरी होगा कि राय लिये जाने के छै महीने पहले से कशमीर के अन्दर से शेख़ अब्दुल्ला की गवरमेंट को बिलकुल अलग कर दिया जावे और रियासत की पूरी हकूमत यू० एन० ओ० के फ़ौजी अफ़सर एडमिरल निमिट्ज़ के हाथों में दे दी जावे, और एडमिरल निमिट्ज़ ही लोगों की राय लेने वाले अफ़सर भी हों

कहा जाता है कि भारत ने इस तरह की कोई बात मानने से बिलकुल इनकार कर दिया.

मिस्टर लियाक़त अली ख़ां ने इसके बाद अपने एक बयान में

پہنچیگا . پر اِس بارے میں میری اور بھارت کی رائے میں اِتنا زیادہ فرق تھا کہ مجھے اس کوشش کو بھی چھوڑ دینا پڑا .

"اب میرے لئے کچھ کام نہیں رہ گیا . دونوں پردھان وزیر بھی مجھے یہ نہیں بتا سکے کہ اب میں کیا کروں . اب میں جاکر سکیورٹی کونسل کو اپنی رپورٹ دے دونگا .

"اگر یہ دونوں سرکاریں اس جھگڑے کو طے کرنے کے لئے خود اپنی اپنی کچھ بھی تجویزیں رکھ سکتیں تو بہت کام بنتا پر وہ اپنی کوئی تجویز بھی پیش نہیں کر سکیں . سمجھوتے کی تجویزیں رکھنے کا کام شروع سے آخر تک مجھے ہی کرنا پڑا . پھر بھی میں یہ نہیں مانتا کہ آپسی بات چیت سے یہ دونوں سرکاریں اِس معاملے کا فیصلہ کر ہی نہیں سکینگی ."

مسٹر ڈکسن کے اس بیان کے بعد یو . این . او . کے صدر دفتر سے خبر آئی کہ اپنی کوششوں کے دوران میں ڈکسن صاحب نے ایک بات یہ بھی سجھائی تھی کہ اگر کشمیر میں لوگوں کی رائے لی جاوے تو یہ ضروری ہوگا کہ رائے لئے جانے کے چھہ مہینے پہلے سے کشمیر کے اندر سے شیخ عبداللہ کی گورمنٹ کو بالکل الگ کردیا جاوے اور ریاست کی پوری حکومت یو . این . او . کے فوجی افسر ایڈمرل نمٹز کے ہاتھوں میں دے دی جاوے' اور ایڈمرل نمٹز ہی لوگوں کی رائے لینے والے افسر بھی ہوں .

کہا جاتا ہے کہ بھارت نے اِسطرح کی کوئی بات ماننے سے بالکل انکار کردیا .

... خاں نے اسکے بعد اپنے ایک بیان میں

[illegible] सिक्योरिटी कौंसिल के ऊपर भारी ज़िम्मेवारी आ पड़ी है. सिक्योरिटी कौंसिल को वाक़यात का सामना करना पड़ेगा, और इस बात का ज़िम्मा लेना होगा कि अन्तर क़ौमी समझौतों का मान रखा जायगा और उन पर अमल किया जायगा.''

उन्होंने यह भी कहा है कि—'उस हकूमत के रहते हुए जिसकी पीठ पर भारत है जो भी राय लेने का काम होगा वह पूरा खिलवाड़ होगा.''

मिस्टर लियाक़त अली ख़ां से पूछा गया—"क्या आप चाहते हैं सिक्योरिटी कौंसिल कशमीर में उसी ढंग से काम करे जिस ढंग से उसने कोरिया में काम किया है. ?"

मिस्टर लियाक़त अली ख़ां ने जवाब दिया—"मैं चाहता हूँ सिक्योरिटी कौंसिल ऐसे ढंगे से काम करे जिसका असर हो."

सर ओवन डिकसन और मिस्टर लियाक़त अली ख़ां के बयानों के बाद पंडित जवाहर लाल नेहरू का भी एक बयान अख़बारों में निकल चुका है जिसकी कुछ ख़ास बातें यह हैं :—

"सर ओवन डिकसन ने जो तजवीज़ हमारे सामने रखी कि कशमीर के लोगों की राय लेने से छै महीने पहले शेख़ अब्दुल्ला की सरकार को वहां से हटा दिया जाय और वहां की हकूमत यू० एन० ओ० के हाथ में दे दी जाय यह एक बिलकुल नई तजवीज़ थी. पिछले ढाई बरस में कभी किसी ने भी इस तरह की तजवीज़ पेश नहीं की थी. शुरू से ही यह तय हो चुका था कि कशमीर की सरकार यानी शेख़ अबदुल्ला की सरकार को रियासत को बाक़ायदा

کہا ہے کہ—'' اب یو . این . او . کی سکیورٹی کونسل کے اوپر بھاری ذمہ واری آپڑی ہے . سکیورٹی کونسل کو واقعات کا سامنا کرنا پڑیگا' اور اِس بات کا ذمہ لینا ہوگا کہ انتر قومی سمجھوتوں کا مان رکھا جائیگا اور اُن پر عمل کیا جائیگا .''

اُنھوں نے یہ بھی کہا ہے کہ—''اُس حکومت کے رہتےہوئے جس کی پیٹھ پر بھارت ہے جو بھی رائے لینے کا کام ہوگا وہ پورا کھلواڑ ہوگا . ''

مسٹر لیاقت علی خاں سے پوچھا گیا—''کیا آپ چاہتے ہیں سکیورٹی کونسل کشمیر میں اُسی ڈھنگ سے کام کرے جس ڈھنگ سے اُس نے کوریا میں کام کیا ہے ؟ ''

مسٹر لیاقت علی خان نے جواب دیا—''میں چاہتا ہوں سکیورٹی کونسل ایسے ڈھنگ سے کام کرے جسکا اثر ہو .''

سر اوون ڈکسن اور مسٹر لیاقت علی خاں کے بیانوں کے بعد پنڈت جواہر لال نہرو کا بھی ایک بیان اخباروں میں نکل چکا ہے جس کی کچھ خاص باتیں یہ ہیں :—

''سر اوون ڈکسن نے جو تجویز ہمارے سامنے رکھی کہ کشمیر کے لوگوں کی رائے لینے سے چھ مہینے پہلے شیخ عبداللہ کی سرکار کو وہاں سے ہٹا دیا جائے اور وہاں کی حکومت یو . این . او . کے ہاتھ میں دیدی جائے یہ ایک بالکل نئی تجویز تھی . پچھلے ڈھائی برس میں کبھی کسی نے بھی اس طرح کی تجویز پیش نہیں کی تھی . شروع سے ہی یہ طے ہو چکا تھا کہ کشمیر کی سرکار یعنی شیخ عبداللہ کی سرکار کو ریاست کی باقاعدہ

सरकारों से सिर्फ यही चाहते थे कि वह हिन्दुस्तान की हालत ऐसी बनादें जिससे हर इन्सान के लिये यह मुमकिन होसके कि वह अपनी हर तरह की रूहानी और जिस्मानी, समाजी और माली तरक़्क़ी कर सके और इस तरह हमारा देश सचमुच सत्य और अहिंसा के पाक उसूलों पर चलने वाला शानदार और मज़बूत देश बन सके.

मगर १९४९ का पूरा साल अपनी नजरों के समाने रखिये और हुकूमतों और कांग्रेसी कार्य-कर्ताओं के कारनामों को अच्छी तरह देख जाइये, जहां तक उनका सम्बन्ध है, आपको शायद उम्मीद की एक किरन भी नजर न आयेगी. अगर आज देश में झगड़े नहीं हैं तो उसका कारण यह है कि जनता आपसी झगड़ों से ऊब चुकी है और उसे गांधीजी की कुर्बानी से अच्छा और गहरा सबक़ मिल चुका है. अगर आज देश में सियासी उथल पुथल की कमी है तो उसका कारण यह है कि सरकार ने आर्डिनेन्सों और क़ानूनी शिकंजों में जनता की शहरी आज़ादी और विरोधियों के जिस्मों और ज़बानों को कस लिया है. साथ ही साथ चारों ओर फैली गहरी नाउम्मीदी और उदासी ने जैसे जनता की कमर ही तोड़ दी है—

'जिनपे तकिया था वही पत्ते हवा देने लगे.'

जो लोग जनता के सेवक, साथी और रहबर थे वही अब हुक्मरां बन गये हैं. हुक्मरां बनते ही उन्होंने अपने सारे पुराने इतिहास के पन्नों को भी बन्द कर दिया है और आज वह राजकाज को अपनी मर्ज़ी और स्वार्थों के मुताबिक़ चलाना ही अपना फ़र्ज़ समझने लगे हैं. गांधी के देश की ग़रीब और बेबस जनता जैसे सपनों की दुनिया में रह रही है. गांधी जी के देहान्त के दो साल भी पूरे न

سرکاروں سے صرف یہی چاہتے تھے کہ وہ ہندستان کی حالت ایسی بنا دیں جس سے ہر انسان کے لئے یہ ممکن ہو سکے کہ وہ اپنی ہرطرح کی روحانی اور جسمانی سماجی اور مالی ترقی کر سکے اور اس طرح ہمارا دیش سچ مچ ستیہ اور اہنسا کے پاک اصولوں پر چلنے والا شاندار اور مضبوط دیش بن سکے۔

مگر ۱۹۴۹ء کا پورا سال اپنی نظروں کے سامنے رکھئے اور حکومتوں اور کانگریسی کاریہ کرتاؤں کے کارناموں کو اچھی طرح دیکھ جائیے جہاں تک اُن کا سمبندھ ہے آپ کو شاید امید کی ایک کرن بھی نظر نہ آئے گی۔ اگر آج دیش میں جھگڑے نہیں ہیں تو اس کا کارن یہ ہے کہ جنتا آپسی جھگڑوں سے اوب چکی ہے اور اُسے گاندھی جی کی قربانی سے اچھا اور گہرا سبق مل چکا ہے۔ اگر آج دیش میں سیاسی اتھل پتھل کی کمی ہے تو اس کا کارن یہ ہے کہ سرکار نے آرڈیننسوں اور قانونی شکنجوں میں جنتا کی شہری آزادی اور وردھیوں کے جسموں اور زبانوں کو کس لیا ہے۔ ساتھ ہی ساتھ چاروں اور پھیلی گہری ناامیدی اور اُداسی نے جیسے جنتا کی کمر ہی توڑ دی ہے۔

"جن پہ تکیہ تھا وہی پتے ہوا دینے لگے"

جو لوگ جنتا کے سیوک ساتھی اور رہبر تھے وہی اب حکمراں بن گئے ہیں۔ حکمراں بنتے ہی انھوں نے اپنے سارے پرانے اتہاس کے پنوں کو بھی بند کر دیا ہے اور آج وہ راج کاج کو اپنی مرضی اور سوارتھوں کے مطابق چلانا ہی اپنا فرض سمجھنے لگے ہیں۔ گاندھی کے دیس کی غریب اور بے بس جنتا جیسے سپنوں کی دنیا میں رہ رہی ہے۔ گاندھی کے دیہانت کے دو سال بھی پورے نہ

सरकार माना जायगा. इसमें वह हिस्सा भी शामिल था जो अब पाकिस्तान की फ़ौजों के कृब्ज़े में है. मई सन् १९४८ में यू० एन० ओ० का जो कमीशन आया था उसने इन सब बातों को मान लिया था. और यह भी तय था कि कशमीर के लोगों की राय लेने के लिये यू० एन० ओ० जिस अफ़सर को भेजे उसे शेख़ अब्दुल्ला की सरकार राय लेने वाला अफ़सर मुक़र्रर करेगी और उसी सरकार को वह अपनी रिपोर्ट देगा और वही रिपोर्ट वह यू० एन० ओ० को भी देगा. अब कहा जाता है कि जो सरकार उस अफ़सर को मुक़र्रर करने वाली थी और जिसे वह अफ़सर रिपोर्ट देने वाला था उस सरकार को ही हटा कर वह अफ़सर उसकी जगह बैठ जायगा. यह एक उलटी बात है. यू० एन० ओ० कमीशन जिन जिन बातों पर राज़ी होगया था वह सब अब उलट दी गईं. कमीशन ने यह फ़ैसला किया था कि पाकिस्तान की फ़ौजें, पाकिस्तान के आदमी और क़बाइली फ़ौजें सब कशमीरसे हटा ली जायंगी. यहां तक कि कमीशन को उस समय यह सूचना दी गई कि पाकिस्तान की फ़ौजें जा रही हैं. इसके बाद कमीशन ने कहा कि भारत अब कशमीर में केवल उतनी ही फ़ौजें रखे जितनी कशमीर की हिफ़ाज़त के लिये ज़रूरी हों. यानी यह बात मान ली गई थी कि कशमीर की हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी हम पर है. कशमीर की मौजूदा सरकार को वहां से निकालने की तजवीज़ अब सिर्फ़ पाकिस्तान को ख़ुश करने के लिये की जा रही है. किसी भी चुनाव को ठीक ठीक कराने के लिये सरकारें नहीं बदली जातीं.

... है कि कशमीर के लोगों

سرکار مانا جائیگا . اسمیں وہ حصہ بھی شامل تھا جو اب پاکستان کی فوجوں کے قبضے میں ہے . مئی سن ۱۹۴۸ میں یو . این . او . کا جو کمیشن آیا تھا اُس نے ان سب باتوں کو مان لیا تھا . اور یہ بھی طے تھا کہ کشمیر کے لوگوں کی رائے لینے کے لئے یو . این . او . جس افسر کو بھیجے اُسے شیخ عبداللہ کی سرکار رائے لینے والا افسر مقرر کریگی اور اُسی سرکار کو وہ اپنی رپورٹ دیگا اور وہی رپورٹ وہ یو . این . او . کو بھی دیگا . اب کہا جانا ہے کہ جو سرکار اُس افسر کو مقرر کرنے والی تھی اور جسے وہ افسر رپورٹ دینے والا تھا اُس سرکار کو ہی ہٹاکر وہ افسر اُسکی جگہ بیٹھ جائیگا . یہ ایک اُلٹی بات ہے. یو . این . او . کمیشن جن جن باتوں پر راضی ہو گیا تھا وہ سب اب اُلٹ دی گئیں . کمیشن نے یہ فیصلہ کیا تھا کہ پاکستان کی فوجیں' پاکستان کے آدمی اور قبائلی فوجیں سب کشمیر سے ہٹا لی جائینگی. یہانتک کہ کمیشن کو اُس سمے یہ سوچنا دی گئی کہ پاکستان کی فوجیں جا رہی ہیں . اسکے بعد کمیشن نے کہا کہ بھارت اب کشمیر میں کیول اُتنی ہی فوجیں رکھے جتنی کشمیر کی حفاظت کے لئے ضروری ہوں . یعنی یہ بات مان لی گئی تھی کہ کشمیر کی حفاظت کی ذمہداری ہم پر ہے. کشمیر کی موجودہ سرکار کو وہاں سے نکالنے کی تجویز اب صرف پاکستان کو خوش کرنے کے لئے کی جا رہی ہے . کسی بھی چناؤ کو ٹھیک ٹھیک کرانے کے لئے سرکاریں نہیں بدلی جاتیں .

''بات چیت میں، ہم نے بار بار یہ کہا ہے کہ کشمیر ...

सौ आदमी या हज़ार आदमी लाकर हर कोने में, हर चौरस्ते पर और जहां जहां राय ली जा रही हो वहां हर जगह बैठा दे. पर कशमीर की सरकार को हटाने की यह नई बात भारत किसी भी तरह मंज़ूर नहीं कर सकता.

"हम यू० एन० ओ० के पास केवल इसलिये गए थे कि यू० एन० ओ० पाकिस्तान से कहे कि पाकिस्तान कशमीर पर धावा करने वाले क़बाइली लोगों की मदद न करे. इसी बात पर यू० एन० ओ० का कमीशन आया था.

"हम इसके लिये भी बिलकुल तैयार हैं कि राय लिये जाने से पहले भारत और पाकिस्तान दोनों कशमीर से बिलकुल निकल आवें. ताकि इस बहाने फ़िरक़ेवाराना झगड़े खड़े न किये जा सकें. बाहर का एक भी मर्द या औरत उस समय वहां न रहे.

'ऐसी कोई एक बात भी नहीं है जिसपर पिछले तीन बरस के अन्दर कभी भी भारत राज़ी हो गया हो और जिस पर इस समय तक हम पूरी तरह क़ायम न हों."

पंडित जवाहर लाल ने यह भी कहा है कि कशमीर के केवल कुछ हिस्से में लोगों की राय लेने की तजवीज़ पर बात चीत करने के लिये भारत केवल इसलिये तैयार हो गया था कि वह चाहता था कि किसी तरह भी किसी तरफ़ से सुलह का कोई रास्ता निकले. लेकिन इस तरह की कोई तजवीज भारत ने नहीं मानी थी.

मिस्टर लियाक़त अली ख़ाँ और पंडित जवाहर लाल नेहरू दोनों ने समझौता न हो सकने की सौ फ़ीसदी ज़िम्मेदारी एक दूसरे के कंधों पर डाली है.

سو آدمی یا ہزار آدمی لاکر ہر کونے میں، ہر چورستہ پر اور جہاں جہاں راے لی جارہی ہو وہاں ہر جگہ بیٹھا دے۔ پر کشمیر کی سرکار کو ہٹانے کی یہ نئی بات بھارت کسی بھی طرح منظور نہیں کر سکتا۔

"ہم یو۔ این۔ او۔ کے پاس کیول اسلئے گئے تھے کہ یو۔ این۔ او۔ پاکستان سے کہے کہ پاکستان کشمیر پر دھاوا کرنے والے قبائلی لوگوں کی مدد نہ کرے۔ اسی بات پر یو۔ این۔ او۔ کا کمیشن آیا تھا۔

"ہم اسکے لئے بھی بالکل تیار ہیں کہ رائے لئے جانے سے پہلے بھارت اور پاکستان دونوں کشمیر سے بالکل نکل آویں تاکہ اس بہانے فرقہ وارانہ جھگڑے کھڑے نہ کئے جاسکیں۔ باہر کا ایک بھی مرد یا عورت اُس سمے وہاں نہ رہے۔

"ایسی کوئی ایک بات بھی نہیں ہے جس پر پچھلے تین برس کے اندر کبھی بھی بھارت راضی ہو گیا ہو اور جس پر اس سمے تک ہم پوری طرح قائم نہ ہوں۔"

پنڈت جواہر لال نے یہ بھی کہا ہے کہ کشمیر کے کیول کچھ حصے میں لوگوں کی رائے لینے کی تجویز پر بات چیت کرنے کے لئے بھارت کیول اسلئے تیار ہوگیا تھا کہ وہ چاہتا تھا کہ کسی طرح بھی کسی طرف سے صلح کا کوئی راستہ نکلے۔ لیکن اسطرح کی کوئی تجویز بھارت نے نہیں مانی تھی۔

مسٹر لیاقت علی خاں اور پنڈت جواہر لال نہرو دونوں نے سمجھوتہ نہ ہو سکنے کی سو فیصدی ذمہ داری ایک دوسرے کے کندھوں پر ڈالی ہے۔

एक बात दोनों ने कुछ तसल्ली देने वाली कही है. दोनों ने कहा है कि कशमीर के मामले में समझौता न हो सकने की वजह से वह और सब मामलों में दोनों सरकारों के बीच के सब समझौतों पर पूरी तरह क़ायम रहेंगे और उनमें फ़रक़ न आने देंगे. दोनों ने यह भी कहा है कि वह कशमीर के मामले का फ़ैसला लड़कर नहीं करना चाहते, जिस तरह भी हो सुलह से ही करना चाहेंगे.

हमें कहते हुए दुख होता है पर हम कहने पर मजबूर हैं कि सर ओवन डिकसन के बयान और उनकी कोशिशों में हमें पग पग पर ठीक वही गंध* आती है जिसके हम डेढ़ सौ बरस तक अंगरेज़ राज काजियों के बयानों और उनको करतूतों में आदि रहे हैं. आजकल के यू० एन० ओ० और इसके पहले की लीग आफ़ नेशन्स दोनों के बनने को हम इस लिये शुभ समझते हैं क्यों कि यह दोनों इस बात की सूचना दे रही हैं कि दुनिया की क़ौमें धीरे धीरे अपने सब आपसी झगड़ों को जंग से नहीं, शान्ति और समझौते से तय करने की तरफ़ क़दम बढ़ा रही हैं. पर पिछली लीग आफ़ नेशन्स की ही तरह आज का यू० एन० ओ० भी अभी उस ऊँचे आदर्श से कोसों दूर है. जो यू० एन० ओ० अभी तक चालीस करोड़ चीनी जनता की राय और उनके हितों को ठुकराते हुए देशद्रोही च्यांग काई शेक की पीठ ठोक रहा है, इस बहाने फ़ारमूसा पर क़बज़ा किये बैठा है और चीनी जनराज के सच्चे नुमाइन्दे का अपने साथ बैठना भी गवारा नहीं कर सकता, वह यू० एन० ओ० ज़ाहिर है, अभी तक केवल पच्छिमी साम्राजवादियो के हाथ की कठपुतली

ایک بات دونوں نے کچھ تسلی دینے والی کہی ھے . دونوں نے کہا ھے کہ کشمیر کے معاملے میں سمجھوتہ نہ ھو سکنے کی وجہ سے وہ اور سب معاملوں میں دونوں سرکاروں کے بیچ کے سب سمجھوتوں پر پوری طرح قائم رھینگے اور اُن میں فرق نہ آنے دینگے . دونوں نے یہ بھی کہا ھے کہ وہ کشمیر کے معاملے کا فیصلہ لڑکر نہیں کرنا چاھتے' جس طرح بھی ھو صلح سے ھی کرنا چاھینگے .

ھمیں کہتے ھوئے دکھ ھوتا ھے پر ھم کہنے پر مجبور ھیں کہ سر اوون ڈکسن کے بیان اور اُن کی کوششوں میں ھمیں پگ پگ پر ٹھیک وھی گندھ آتی ھے جس کے ھم ڈیڑھ سو برس تک انگریز راج کا جیوں کے بیانوں اور اُن کی کرتوتوں میں عادی رھے ھیں . آجکل کے یو . این . او . اور اس کے پہلے کی لیگ آف نیشنس دونوں کے بننے کو ھم اسلئے شبھ سمجھتے ھیں کیونکہ یہ دونوں اِس بات کی سوچنا دے رھی ھیں کہ دنیا کی قومیں دھیرے دھیرے اپنے سب آپسی جھگڑوں کو جنگ سے نہیں' شانتی اور سمجھوتے سے طے کرنے کی طرف قدم بڑھا رھی ھیں . پر پچھلی لیگ آف نیشنس کی ھی طرح آج کا یو . این . او . بھی ابھی اُس اونچے آدرش سے کوسوں دور ھے . جو یو . این . او . ابھی تک چالیس کروڑ چینی جنتا کی رائے اور اُنکے ھتوں کو ٹھکراتے ھوئے دیش دروھی چیانگ کائی شیک کی پیٹھ ٹھونک رھا ھے' اِس بہانے فارموسا پر قبضہ کئے بیٹھا ھے اور چینی جن راج کے سچے نمائندے کا اپنے ساتھ بیٹھنا بھی گوارا نہیں کرسکتا' وہ یو . این . او . ظاھر ھے' ابھی تک کیول پچھمی سامراجوادیوں کے ھاتھ کی کٹھ

नहीं हो सकता. हमें दुख और लज्जा है कि हमारा देश उसी यू० एन० ओ० के सामने आपस के झगड़े में सलाह और मदद के लिये गया.

फ़ौजी निगाह से कशमीर एक मारके की जगह है. चीन, रूस, अफ़ग़ानिस्तान, पाकिस्तान और भारत पांच पांच हकूमतों की सरहदें वहाँ मिलती हैं. इसीलिये गिलगिट की घाटी पर कई कई हकूमतों की निगाहें हैं. यही सीधा और साफ़ कारन है कि यू० एन० ओ० और वह ताक़तें जिन के हाथों की यू० एन० ओ० कठपुतली है कशमीर पर जिस तरह हो अपना फ़ौजी क़बज़ा रखना चाहती हैं. डिकसन साहब के बयान और उनकी कोशिशों में यही चीज़ साफ़ झलक रही है. कशमीर और कोरिया की तुलना करते हुए जो सवाल मिस्टर लियाक़त अली ख़ाँ से किया गया और उसका जो कुछ उन्होंने जवाब दिया वह भारत और पाकिस्तान दोनों को चौकन्ना कर देने के लिये काफ़ी है. नहीं मालूम आने वाले बरसों में इस देश को और दुनिया को अभी क्या क्या देखना है.

इस सबका इलाज एक और केवल एक ही हो सकता है. वह यह है कि भारत और पाकिस्तान जिस तरह भी हो कशमीर के अपने झगड़े को बिना लड़े आपस में तय कर लें और दुनिया की किसी तीसरी हकूमत को बीच में पड़ने का मौक़ा न दें. इसी में इन दोनों की और कशमीर की सलामती है.

१. ९. ५०. —सुन्दरलाल

نہیں ہوسکتا . ہمیں دکھ اور لجا ہے کہ ہمارا دیش اُسی یو . این . او . کے سامنے آپس کے جھگڑے میں صلاح اور مدد کے لئے گیا .

فوجی نگاہ سے کشمیر ایک معرکے کی جگہ ہے . چین، روس، افغانستان، پاکستان اور بھارت پانچ پانچ حکومتوں کی سرحدیں وہاں ملتی ہیں . اسی لئے گلگت کی گھاٹی پر کئی کئی حکومتوں کی نگاہیں ہیں . یہی سیدھا اور صاف کارن ہے کہ یو . این . او . اور وہ طاقتیں جنکے ہاتھوں کی یو . این . او . کٹھ پتلی ہے کشمیر پر جسطرح ہو اپنا فوجی قبضہ رکھنا چاہتی ہیں . ڈکسن صاحب کے بیان اور اُن کی کوششوں میں یہی چیز صاف جھلک رہی ہے. کشمیر اور کوریا کی تلنا کرتے ہوئے جو سوال مسٹر لیاقت علی خاں سے کیا گیا اور اُسکا جو کچھ اُنہوں نے جواب دیا وہ بھارت اور پاکستان دونوں کو چوکنا کر دینے کے لئے کافی ہے . نہیں معلوم آنے والے برسوں میں اِس دیش کو اور دنیا کو ابھی کیا کیا دیکھنا ہے .

اِس سب کا علاج ایک اور کیول ایک ہی ہو سکتا ہے . وہ یہ ہے کہ بھارت اور پاکستان جسطرح بھی ہو کشمیر کے اپنے جھگڑے کو بنا لڑے آپس میں طے کرلیں اور دنیا کی کسی تیسری حکومت کو بیچ میں پڑنے کا موقع نہ دیں . اسی میں ان دونوں کی اور کشمیر کی سلامتی ہے .

— سندر لال ۱-۹-۵۰

हिरोशिमा में ऐटम बम के नतीजे

६ अगस्त सन् ४५ को सुबह सवा आठ बजे ऐटम बम के धमाके से शहर हिरोशिमा हिल गया. उस समय वहाँ तीन लाख बारह हज़ार आदमी रह रहे थे. एक सिकन्ड के अन्दर उन में से १ लाख ७६ हज़ार मर गये. एक लाख छत्तीस हज़ार बचे. ९० फ़ीसदी इमारतें ख़तम हो गईं, ७६ हज़ार मकानों में से सिर्फ़ आठ हज़ार चार सौ खड़े दिखाई दिये. ओटाडा और उसकी सहायक नदियों के बयालीस पुलों में से आधे से ज़्यादा नष्ट हो गये.

ऐटम बम के भयानक नतीजों को जानने के लिये अब किसी के साइन्सदाँ होने की ज़रूरत नहीं है. उस बमबारी की मुसीबतों को वह लोग अच्छी तरह बयान कर सकते हैं जो उस से दो चार हुए हैं.

हम यहाँ मिसेज़ योको ओटा के शब्द नीचे देते हैं. आप बमबारी के समय हिरोशिमा में मौजूद थीं:—

"............मैं ने हज़ारों मर्द, औरत और बच्चों को हिरोशिमा की दोज़ख़ से निकल कर सड़क पर भागते देखा. सबके सब भयानक ज़ख़्मों से छलनी छलनी थे. आंखों की बरौनियां जल गई थीं. मुंह और हाथ की खाल भुन गई थी और लोथड़े नीचे लटक रहे थे. बहुत से आसमान की तरफ़ हाथ ऊँचा किये थे—दर्द को कम करने के लिये. बहुत से चलते चलते क़ै करते जा रहे थे. ज़्यादा तर मादरज़ाद नंगे थे और बाक़ी चीथड़े लटकाए. मर्दों के कपड़े गोश्त से चिपक गये थे. औरतों की खालों पर कपड़ों के डिज़ाइन का ठप्पा लग गया था.

............उस डूबे आदमी के समान जो बहुत देर तक

هیروشیما میں ایٹم بم کے نتیجے

۶ اگست سن ۴۵ کو صبح سوا آٹھ بجے ایٹم بم کے دھماکے سے شہر هیروشیما هل گیا . اُس سمے وهاں تین لاکھ بارہ هزار آدمی رہ رهے تھے . ایک سکنڈ کے اندر اُن میں سے ۱ لاکھ ۷۶ هزار مرگئے . ایک لاکھ چھتیس هزار بچے . ۹۰ فیصدی عمارتیں ختم هو گئیں' ۷۶ هزار مکانوں میں سے صرف آٹھ هزار چار سو کھڑے دکھائی دئے . اوٹانڈی اور اُسکی سہایک ندیوں کے بیالیس پلوں میں سے آدھے سے زیادہ نشٹ هو گئے .

ایٹم بم کے بھیانک نتیجوں کو جاننے کے لئے اب کسی کے سائنسداں هونے کی ضرورت نہیں هے . اُس بمباری کی مصیبتوں کو وہ لوگ اچھی طرح بیان کرسکتے هیں جو اُس سے دو چار هوئے هیں .

هم یہاں مسز یوکا اوٹا کے شبد نیچے دیتے هیں . آپ بمباری کے سمے هیروشیما میں موجود تھیں :—

"..................میں نے هزاروں مرد' عورت اور بچوں کو هیروشیما کی دوزخ سے نکل کر سڑک پر بھاگتے دیکھا . سب کے سب بھیانک زخموں سے چھلنی چھلنی تھے . آنکھوں کی برونیاں جل گئی تھیں . منہ اور هاتھ کی کھال بھن گئی تھی اور لوتھڑے نیچے لٹک رهے تھے . بہت سے آسمان کی طرف هاتھ اُونچا کئے تھے—درد کو کم کرنے کے لئے . بہت سے چلتے چلتے قے کرتے جارهے تھے . زیادہ تر مادرزاد ننگے تھے اور باقی چیتھڑے لٹکائے . مردوں کے کپڑے گوشت سے چپک گئے تھے . عورتوں کی کھالوں پر کپڑوں کے ڈزائن کا ٹھپہ لگ گیا تھا .

....اُس ڈوبے آدمی کے سمان جو بہت دیر تک

पानी में पड़ा रहा हो इन बदकि़स्मतों का सारा बदन सूज गया था. पलकें इतनी फूल गई थीं कि आंखें दिखाई न देती थीं. चारों तरफ़ की खाल लाल ट्रन हो गई थी. हाथों से गोश्त इस तरह लटक रहा था जैसे भूरे रंग के चीथड़ों की धज्जियाँ. सर पर बीचो बीच बालों का एक छोटा सा पूँजा प्याले के कुन्डे के घेरे के बराबर रह गया था. बाक़ी सर ऐसा था मानो मूँड दिया गया हो. इन इन्सानों को देख कर रोंगन्टे खड़े होते थे. भयानक ज़ख्मों से छलनी यह दुखी मनुष समुन्दर के किनारे गर्म रेत पर ठन्डे होने आए थे. वह सब के सब अन्धे थे.......

एक औरत ज़मीन पर पड़ी थी. उसका कपार फटा हुआ था. उसके सर का सारा भेजा तरबूज़ की तरह ला:ल था. इस भयानक ज़ख्म के बावजूद यह औरत ज़िन्दा थी और पीछे एक लम्बी ख़ूनी लकीर छोड़ती और घसिटती जाती थी.

............रास्ता साफ़ करने की ग़रज़ से सड़क पर पड़ी एक लाश को पटरी पर सरकाने के लिये मैंने उसका घुटना पकड़ा तो खाल मेरे हाथ से चिपक गई. लाल गोश्त को उघारते हुए खाल घुटने के नीचे लटक पड़ी.

.... बिलकुल नंगी लड़कियां और औरतें जिनके सर पर एक भी बाल न था सड़क पर बेजान पुतलों की तरह चल रही थीं. उनके साथ एक बूढ़ी औरत जिसके दोनों हाथ उतर गये थे घिसट रही थी. मास सीख़ कबाब की तरह भुन कर हड्डियों से अलग हो गया था. ख़ून ख़ूब बह रहा था और उसी के साथ चरबी की तरह [illegible]

پانی میں پڑا رہا ہو اِن بدقسمتوں کا سارا بدن سوج گیا تھا . پلکیں اِتنی پھول گئی تھیں کہ آنکھیں دکھائی نہ دیتی تھیں . چاروں طرف کی کھال لال ترن ہو گئی تھی . ہاتھوں سے گوشت اِس طرح لٹک رہا تھا جیسے بھورے رنگ کے چیتھڑوں کی دھجیاں . سر پر بیچوں بیچ بالوں کا ایک چھوٹا سا پونجا پیالے کے کنڈے کے گھیرے کے برابر رہ گیا تھا . باقی سر ایسا تھا مانو مونڈ دیا گیا ہو . اِن انسانوں کو دیکھکر رونگٹے کھڑے ہوتے تھے . بھیانک زخموں سے چھلنی یہ دکھی منش سمندر کے کنارے گرم ریت پر ٹھنڈے ہونے آئے تھے . وہ سب کے سب اندھے تھے ......

ایک عورت زمین پر پڑی تھی . اُسکا کپار پھٹا ہوا تھا . اُس کے سر کا سارا بھیجا تربوز کی طرح لال تھا . اِس بھیانک زخم کے باوجود یہ عورت زندہ تھی اور پیچھے ایک لمبی خونی لکیر چھوڑتی اور گھسٹتی جاتی تھی .

............راستہ صاف کرنے کی غرض سے سڑک پر پڑی ایک لاش کو پٹری پر سرکانے کے لئے میں نے اُسکا گھٹنہ پکڑا تو کھال میرے ہاتھ سے چپک گئی . لال گوشت کو اُگھارتے ہوئے کھال گھٹنے کے نیچے لٹک پڑی .

....بالکل ننگی لڑکیاں اور عورتیں جنکے سر پر ایک بھی بال نہ تھا سڑک پر بیجان پتلوں کی طرح چل رہی تھیں . اُنکے ساتھ ایک بوڑھی عورت جسکے دونوں ہاتھ اُتر گئے تھے گھسٹ رہی تھی . ماس سیخ کباب کی طرح بھن کر ہڈیوں سے الگ ہو گیا تھا . خون خوب بہہ رہا تھا اور اُسی کے ساتھ چربی کی [illegible]

..........इस ऐटमी मुसीबत के दो हफ़्ते बाद एक लड़की के जो बच गई थी बाँह पर सफ़ेद दाग़ दिखाई पड़े. एक हफ़्ते बाद वह भी मर गई."

('क्रास रोड्स')

यही वह ऐटम बम है जिसे कोरिया पर गिराने की चर्चिल ने अमरीका को सलाह दी है.

ऐटम बम के ख़िलाफ़ अपील

विश्व शान्ति कांगरेस की स्थाई कमेटी ने नीचे लिखी अपील जारी की है.

आल इंडिया पीस कमेटी ने भारत की तमाम जनता से अपील की है कि लोग लाखों की तादाद में इस पर अपने अपने दस्तख़त करके और पते लिख के नीचे लिखे पते पर भेज दें.

पता:—सैक्रेटरी आल इंडिया पीस कमेटी,
48, Benham Hall Lane.
४८, बैनहम हाल लेन,
गिरगाम, बम्बई.

"हमारी माँग है कि ऐटम हथियार पर जो जनता को डराने और मिटाने का हथियार है बिना शर्त रोक लगाई जाये

"हमारी माँग है कि इस फ़ैसले को लागू करने के लिये एक अन्तर क़ौमी कड़ा कन्ट्रोल क़ायम किया जाये

"हम मानते हैं कि जो सरकार किसी भी दूसरे देश के ख़िलाफ़ ऐटम हथियार का पहले इस्तेमाल करेगी वह मानव जाति के ख़िलाफ़ जुर्म करेगी और उसे युद्ध अपराधी माना जायगा."

—एडीटर

..........اس ایٹمی مصیبت کے دو ھفتے بعد ایک لڑکی کے جو بچ گئی تھی بانہہ پر سفید داغ دکھائی پڑے. ایک ھفتے بعد وہ بھی مرگئی."

(کراس روڈس)

یہی وہ ایٹم بم ہے جسے کوریا پر گرانے کی چرچل نے امریکہ کو صلاح دی ہے .

ایٹم بم کے خلاف اپیل

وشو شانتی کانگریس کی ستھائی کمیٹی نے نیچے لکھی اپیل جاری کی ہے .

آل انڈیا پیس کمیٹی نے بھارت کی تمام جنتا سے اپیل کی ہے کہ لوگ لاکھوں کی تعداد میں اس پر اپنے اپنے دستخط کرکے اور پتے لکھ کے نیچے لکھے پتے پر بھیج دیں .

پتہ :—سکریٹری آل انڈیا پیس کمیٹی،
48, Benham Hall Lane,
۴۸، بینہم ہال لین،
گرگام، بمبئی .

"ہماری مانگ ہے کہ ایٹم ھتھیار پر جو جنتا کو ڈرانے اور مٹانے کا ھتھیار ہے بنا شرط روک لگائی جائے

"ہماری مانگ ہے کہ اس فیصلے کو لاگو کرنے کے لئے ایک انتر قومی کڑا کنٹرول قائم کیا جائے

"ہم مانتے ھیں کہ جو سرکار کسی بھی دوسرے دیش کے خلاف ایٹم ھتھیار کا پہلے استعمال کریگی وہ مانو جاتی کے خلاف جرم کریگی اور اُسے یدھ اپرادھی مانا جائیگا ."

—ایڈیٹر

(१) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमे सब हिन्दुस्तानी शामिल हों .

(२) एकता फैलाने के लिये किताबों, अखबारों, रिसालों वग़ैरा का छपाना .

(३) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफरेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस में मेल बढ़ाना .

—o—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख्वाजा; वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक; गवर्निंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास ; सेक्रेटरी पं० सुन्दरलाल.

गवर्निंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख्ता, श्री वी० जी० खेर, मि० एस० के० रुद्रा, पं० विश्वम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम चन्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम प्रकाश पालीवाल .

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये .

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

१४५, मुट्ठी गंज, इलाहाबाद

नोट—सोसाइटी के नये क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" के जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायगा. अलग से मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ज़्यादा दाम की किताबें लेने पर एक रुपया कम करा सकेंगे .

مقصد

(۱) ایک ایسی ہندستانی کلچر کا بڑھانا، پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ہندستانی شامل ہوں .

(۲) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا .

(۳) پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں، لکچروں سے سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا .

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ—مسٹر عبدالمجید خواجہ؛ وائس پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق، گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس؛ سکریٹری پنڈت سندرلال.

گورننگ باڈی کے اور ممبر—

ڈاکٹر سید محمود، ڈاکٹر تارا چند، مولوی سید سلیمان ندوی، مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی جی کھیر، مسٹر ایس. کے. رودرا، پنڈت بشمبھر ناتھ، مہاتما بھگوان دین، سیٹھ پونم چند رانکا، قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال .

ممبری کے قاعدے کے لئے لکھئے —

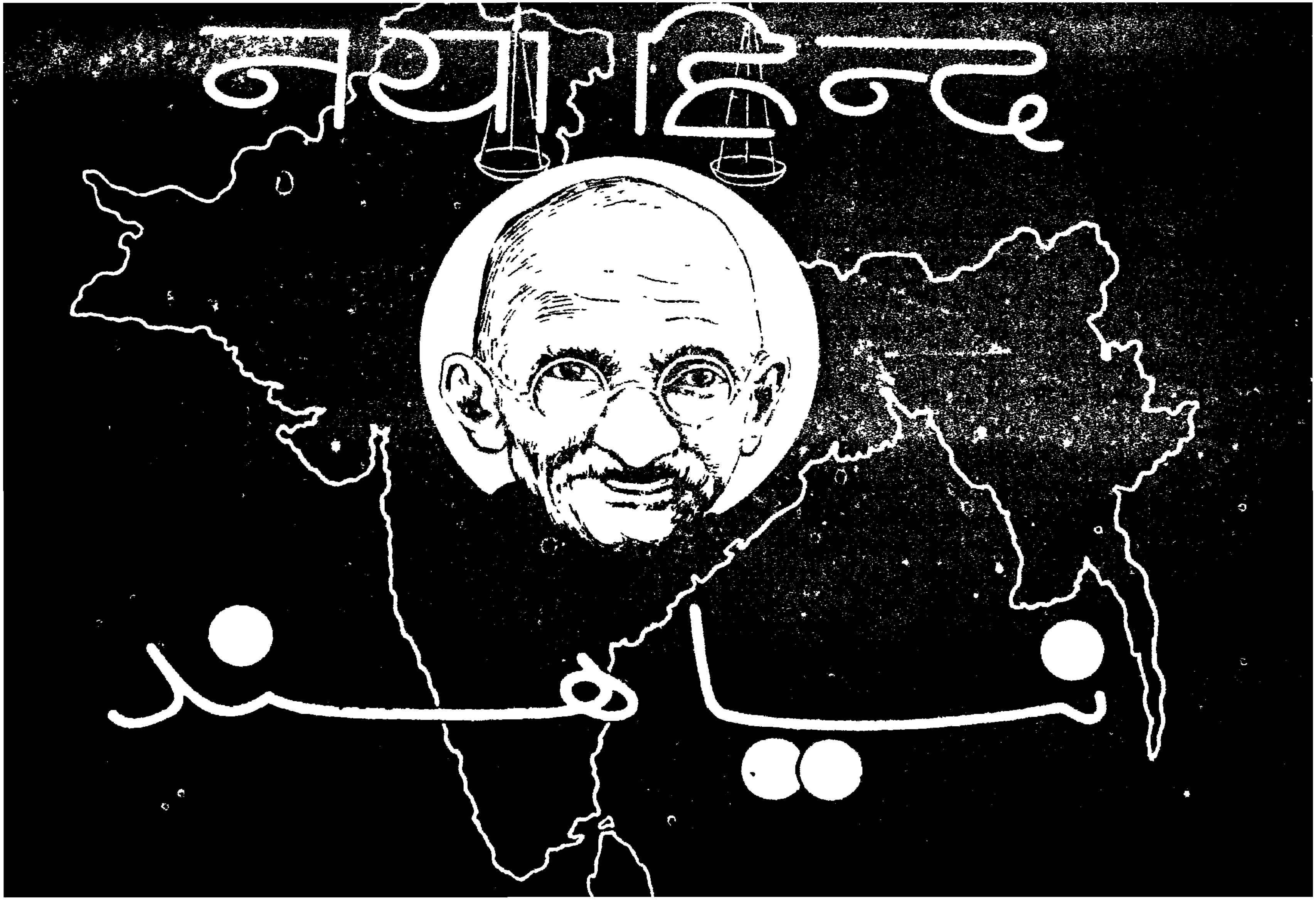
سندر لال

سکریٹری، ہندستانی کلچر سوسائٹی،

۱۴۵، مٹھی گنج، الہ آباد .

نوٹ—سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کردی گئی ہے . "نیا ہند" کے جو گاہک ممبر بننا چاہیں اُن کو صرف چھ روپیہ چندہ دینے پر ہی ممبر بنا لیا جائیگا . الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی ہوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ہوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ کم کراسکینگے .

Registered No. A—210.


नया हिन्द
نیا ہند

हुये और हमारे हुक्मरां गांधी जी के उसूलों से इतने दूर और इतने अलग जापड़े ! हैरत होती है, अफसोस होता है, गुस्सा आता है इस हालत को देखकर !

गांधी जी के देश वासियों को अब सोचना है कि उनका अगला क़दम क्या हो. फ़िरक़ावाराना भावनायें कैसे खत्म हों, जनता की माली हालत कैसे सुधरे, जनता को उम्मीद और भरोसा कैसे हो, लोग सचमुच 'सर्वोदय' और 'रामराज' की ओर कैसे बढ़ें ? समाज की तरक़्क़ी और सच्ची शान्ति के रास्ते पर चलने के लिये हमें आज जिस हिम्मत और आत्मविश्वास की जरूरत है, उसकी मांग हम अपने राष्ट्रपिता बापू की अमर आत्मा से करते हैं.

बापू का आशीर्वाद हमें सच्चाई, भाई चारे, प्रेम, शान्ति और बारबरी के रास्ते पर ले चले जिससे हम अपने को सचमुच बापू की गर्वीली औलाद होने का दावा कर सकें और खुल कर कह सकें— राष्ट्रपिता बापू ! तुम्हारी जय हो.

ہوے اور ہمارے حکمراں گاندھی جی کے اصولوں سے اتنے دور اور اتنے الگ جاپڑے۔ حیرت ہوتی ہے۔ افسوس ہوتا ہے۔ غصہ آتا ہے اِس حالت کو دیکھ کر۔

گاندھی جی کے دیش باسیوں کو اب سوچنا ہے کہ اُن کا اگلا قدم کیا ہو۔ فرقہ وارانہ بھاؤنائیں کیسے ختم ہوں۔ جنتا کی مالی حالت کیسے سدھرے جنتا کو امید اور بھروسہ کیسے ہو۔ لوگ سچ مچ سرودے اور رام راج کی اور کیسے بڑھیں؟ سماج کی ترقی اور سچی شانتی کے راستے پر چلنے کے لئے ہمیں آج جس ہمت اور آتم وشواس کی ضرورت ہے اُس کی مانگ ہم اپنے راشٹر پتا باپو کی امر آتما سے کرتے ہیں۔

باپو کا آشیرواد ہمیں سچائی، بھائی چارے، پریم، شانتی اور برابری کے راستے پر لے چلے جس سے ہم اپنے کو سچ مچ باپو کی گروِلی اولاد ہونے کا دعویٰ کر سکیں اور کھل کر کہہ سکیں — راشٹر پتا باپو! تمہاری جے ہو۔

"नया हिन्द"

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का परचा

एडीटर—

ताराचन्द, भगवानदीन, मुज़फ़्फ़र हसन, विश्वम्भरनाथ, सुन्दरलाल

नवम्बर १९५०

क्या किस से — सफ़ा

...हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल

मैनेजर

هندستانی کلچر سوسائٹی کا پرچا

ایڈیٹر —

تارا چند، بھگوان دین، مظفر حسن، بشمبھر ناتھ، سندر لال

نومبر ۱۹۵۰

کیا کس سے — صفحہ

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال، باہر دس روپیہ سال

ایک پرچہ دس آنے۔

مینیجر

नया हिन्द — نیا ہند

जिल्द ९ नवम्बर सन् '५० नम्बर ५

جلد ۹ نومبر سن ۵۰ نمبر ۵

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुंचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمي' پریم دھرم ھے' هندستانی بولی'
' نیا هند ' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کي جھولی .

बोल अरी, मानवता बोल !

(भाई 'सागर' बालू पुरी)

बोल अरी, मानवता बोल !
जीवन का अब कितना मोल ?

बोल अरी तू, कौन जगत में
बाँट रहा विष का प्याला ?

जगती के कोने कोने में
जलती है कैसी ज्वाला ?

بول اری' مانوتا بول !

(بھائي 'ساگر' بالو پوری)

بول اری ' مانوتا بول !
جیون کا اب کتنا مول !

بول اري تو' کون جگت میں
بانت رھا وش کا پیالہ ؟

جگتی کے کونے کونے میں
جلتي ھے کیسی جوالا ؟

दलकर क्यों दानव मानव को
हँसता पीट विजय का ढोल ?

बोल अरी, मानवता बोल !
जीवन का अब कितना मोल ?

परहित की साकार मूर्ति तुम
दया प्रेम सत की ललना

मधुर चेतना मन की हर कर
हँसती बनकर क्यों छलना

जाग जाग अब री मानवता
मानव मन का मन्दिर खोल

बोल अरी, मानवता बोल !
जीवन का अब कितना मोल ?

دل کر کیوں دانو مانو کو
ھنستا پیٹ وجے کا ڈھول !

بول اری ، مانوتا بول !
جیون کا 'ب کتنا مول ؟

پرہت کی ساکار مورتی تم
دیا پریم ست کی للنا

مدھر چیتنا من کی ھرکر
ھنستی بنکر کیوں چھلنا

جاگ جاگ اب ری مانوتا
مانو من کا مندر کھول

بول اري ، مانوتا بول !
جیون کا اب کتنا مول ؟

नासिक कांगरेस

(भाई सुरेश राम भाई)

[भाई सुरेश राम भाई 'नया हिन्द' के प्रतिनिधि की हैसियत से नासिक गये थे. जो उन्होंने वहां देखा सुना और जाना वह इस लेख में दर्ज है.—एडीटर]

तीन बरस से ऊपर हो चुके जब हम खुद अपने देश के मालिक बने. सब को उम्मीद थी कि अंगरेज़ के जाने के बाद हम चैन से रहेंगे—चीज़ें सस्ती होंगी, खाने को अनाज और पहनने को कपड़ा मिलेगा, हिन्दू मुसलिम झगड़े बन्द हो जायंगे और सब शान्ति से जीवन बिताते हुए तरक़्क़ी की तरफ़ क़दम बढ़ायेंगे. हकूमत की बाग कांगरेस ने अपने हाथ में ली. उसने हमेशा से हिन्दुस्तान की ख़िदमत की थी और वही एक ऐसी संस्था थी जो अपने देश व्यापी संगठन की मदद से इतनी बड़ी ज़िम्मेदारी निभा सकती थी.

पर इन तीन बरसों में "मेरे मन कुछ और है विधना के कुछ और" वाली बात हुई. आज़ादी का सूरज निकला ही था—धूप भी अभी नहीं आई थी—कि पंजाब मे खून ख़राबी हो गई. इधर के मुसलमानों ने पाकिस्तान की राह पकड़ी और वहाँ के हिन्दुओं ने यहाँ की शरन ली. लाखों मर्द, औरत और बच्चे इधर से उधर आना जाना शुरू हो गये जिनकी संभाल करना कोई हँसी खेल नहीं था. इससे एक तरफ़ जहाँ हकूमतों पर बार बढ़ गया वहाँ दूसरी तरफ़ दोनों

ناسک کانگریس

(بھائی سریش رام بھائی)

[بھائی سریش رام بھائی 'نیا ھند' کے پرتی ندھی کی حیثیت سے ناسک گئے تھے. جو اُنھوں نے وھاں دیکھا سنا اور جانا وہ اس لیکھ میں درج ھے. —ایڈیٹر]

تین برس سے اوپر ھو چکے جب ھم خود اپنے دیش کے مالک بنے. سبکو اُمید تھی کہ انگریز کے جانے کے بعد ھم چین سے رھینگے—چیزیں سستی ھونگی' کھانے کو اناج اور پہننے کو کپڑا ملیگا' ھندو مسلم جھگڑے بند ھو جائینگے اور سب شانتی سے جیون بتاتے ھوئے ترقی کی طرف قدم بڑھائینگے. حکومت کی باگ کانگریس نے اپنے ھاتھ میں لی. اُس نے ھمیشہ سے ھندستان کی خدمت کی تھی اور وھی ایک ایسی سنستھا تھی جو اپنے دیش ویاپی سنگٹھن کی مدد سے اتنی بڑی ذمےداری نبھا سکتی تھی.

پر اِن تین برسوں میں ''میرے من کچھ اور ھے' ودھنا کے کچھ اور'' والی بات ھوئی. آزادی کا سورج نکلا ھی تھا—دھوپ بھی ابھی نہیں آئی تھی—کہ پنجاب میں خون خرابی ھو گئی. اِدھر کے مسلمانوں نے پاکستان کی راہ پکڑی اور وھاں کے ھندوؤں نے یہاں کی شرن لی. لاکھوں مرد' عورت اور بچے اِدھر سے اُدھرآنا جانا شروع ھوگئے جنکی سنبھال کرنا کوئی ھنسی کھیل نہیں تھا. اس سے ایک طرف جہاں حکومتوں پر بار بڑھ گیا وھاں دوسری طرف دونوں

मुल्कों के आपसी सम्बन्ध बिगड़ गये. ऊपर से कशमीर की सुन्दर भूमि पर क़बायली लोगों और पाकिस्तान की फ़ौजों ने चढ़ाई बोल दी, इधर की फ़ौजें भी वहाँ गईं और सन् १९४८ में पूरे साल घमासान लड़ाई चलती रही जिससे दोनों हकूमतों पर और भी ज़्यादा बोझ पड़ गया.

• इस तरह भारत के पाकिस्तान से सम्बन्ध ख़राब हुए. शरनार्थियों का पेचीदा सवाल था ही, कशमीर एक नया सिर दर्द बन गया— नतीजा यह हुआ कि हमारी हकूमत ज़रूरी बातों से हट कर इन अचानक और असाधारन बातों में फँस गई. मुल्क की आर्थिक हालत सरकार के क़ाबू से बाहर हो गई, मंहगाई बढ़ती चली गई.

अभी तक पूरबी पाकिस्तान (यानी पूरबी बंगाल) की तरफ़ कुछ शान्ति थी. सन् १९५० के शुरू होते ही वहाँ की हालत भी ख़राब हो गई. हज़ारों लाखों आदमी उधर से इधर आने लगे. इसका असर इधर के लोगों के दिल पर भी हुआ. उन्होंने बदला लेने की सोची. यह ऐसी दवा थी जिससे मरज़ बढ़ता ही जाने वाला था. हालत संगीन हो रही थी. ऐसी स्थिति में प्रधान मंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने पाकिस्तान के प्रधान मन्त्री मिस्टर लियाक़त अली ख़ाँ को दिल्ली आने की दावत दी. आठ रोज़ की बातचीत के बाद दोनों सरकारों में एक समझौता हुआ जिसमें यह विश्वास दिलाया गया कि दोनों जगह के कमगिनत लोग पूरी सलामती से रह सकेंगे.

इसी बीच कोरिया मे लड़ाई छिड़ गई. इससे चीज़ों के दाम ... के मिलने में दुश्वारी हो गई और

ملکوں کے آپسی سمبندھ بگڑ گئے . اوپر سے کشمیر کی سندر بھومی پر قبائلی لوگوں اور پاکستان کی فوجوں نے چڑھائی بول دی' اِدھر کی فوجیں بھی وہاں گئیں اور سن ۱۹۴۸ میں پورے سال گھماسان لڑائی چلتی رہی جس سے دونوں حکومتوں پر اور بھی زیادہ بوجھ پڑگیا .

اِسطرح بھارت کے پاکستان سے سمبندھ خراب ہوے . شرنارتھیوں کا پیچیدہ سوال تھا ہی' کشمیر ایک نیا سر درد بن گیا—نتیجہ یہ ہوا کہ ہماري حکومت ضروری باتوں سے ہٹ کر اِن اچانک اور اسادھارن باتوں میں پھنس گئی . ملک کی آرتھک حالت سرکار کے قابو سے باہر ہوگئی' مہنگائی بڑھتی چلی گئی .

ابھي تک پوربي پاکستان (یعنی پوربی بنگال) کی طرف کچھ شانتی تھي . سن ۱۹۵۰ کے شروع ہوتے ہی وہاں کی حالت بھی خراب ہو گئی . ہزاروں لاکھوں آدمی اُدھر سے اِدھر آنے لگے . اسکا اثر اِدھر کے لوگوں کے دل پر بھی ہوا . اُنھوں نے بدلہ لینے کی سوچی . یہ ایسی دوا تھي جس سے مرض بڑھتا ہی جانے والا تھا . حالت سنگین ہو رہی تھي ایسي استھتی میں پردھان منتری پنڈت جواهر لال نہرو نے پاکستان کے پردھان منتری مسٹر لیاقت علی خاں کو دلی آنے کي دعوت دي . آٹھ روز کي بات چیت کے بعد دونوں سرکاروں میں ایک سمجھوتہ ہوا جس میں یہ وشواس دلایا گیا کہ دونوں جگہ کے کم گنت لوگ پوري سلامتی سے رہ سکیں گے .

اسی بیچ کوریا میں لڑائی چھڑ گئي . اس سے چیزوں کے دام اور بھی چڑھ گئے . اناج تک کے ملنے میں دشواری ہو گئی اور

दरजे तक पहुँच गई—कहीं कहीं चावल के दानों का दिखना भी दूभर हो गया.

इन सब मुसीबतों को बरदाश्त किया जा सकता था और संभाला जा सकता था. पर ग़ज़ब यह हुआ कि जो इसे संभाल सकते थे ख़ुद उन्हीं के संभालने की नौबत आ गई—कांगरेस के सारे संगठन में मानो ऐसा पानी लगा कि उसकी शकल ही बदल गई. उसका हर हिस्सा सड़ने लगा और पुरानी नैतिक ऊँचाई केवल एक कहानी रह गई. तीन साल पहले जिसे लोग पूजते थे उसे देखकर उन्हें घिन आने लगी. पुराने ख़ादिम नये हाकिम बने. उनमें न ख़िदमत की शान रही न हकूमत की आनबान. नतीजा यह हुआ कि भारत सरकार की कुल मशीनरी ढीली पड़ गई जिससे जनता का दुख और भी बढ़ गया. वह अकसर मन मसोस कर रह जाती और हसरत के साथ पुरानी विदेशी हकूमत की याद करती. इस बीच जनता की फ़रियाद का सुनने वाला गांधी—बस एक गांधी—भी इस दुनिया से जा चुका था.

× × ×

इस दर्द भरी हालत में कांगरेस की वर्किंग कमेटी ने यह तय किया कि कांगरेस का छप्पनवां सालाना इजलास नासिक में किया जाय. वैसे तो कांगरेस को जन्म लिये पैंसठ साल हो चुके लेकिन इधर सन् १९३० के बाद से कई साल बीच बीच में सालाना इजलास न हो पाया था. हर इजलास के मौक़े पर वर्किंग कमेटी की तरफ़ से एक आदमी का नाम आ जाता था और वह कांगरेस का प्रधान बन जाता. दो तीन बार चुनाव भी हुए. लेकिन नासिक के लिये सात उम्मीदवार

درجے تک پہنچ گئی—کہیں کہیں چاول کے دانوں کا دیکھنا بھی دوبھر ہوگیا .

اِن سب مصیبتوں کو برداشت کیا جا سکتا تھا اور سنبھالا جا سکتا تھا . پر غضب یہ ہوا کہ جو اِسے سنبھال سکتے تھے خود اُنہیں کے سنبھالنے کی نوبت آگئی—کانگریس کے سارے سنگٹھن میں مانو ایسا پانی لگا کہ اُسکی شکل ہی بدل گئی' اُسکا ہر حصہ سڑنے لگا اور پرانی نیتک اُونچائی کیول ایک کہانی رہ گئی. تین سال پہلے جسے لوگ پوجتے تھے اُسے دیکھکر اُنہیں گھن آنے لگی . پرانے خادم نئے حاکم بنے . اُن میں نہ خدمت کی شان رہی نہ حکومت کی آن بان . نتیجہ یہ ہوا کہ بھارت سرکار کی کل مشینری ڈھیلی پڑ گئی جس سے جنتا کا دکھ اور بھی بڑھ گیا . وہ اکثر من مسوس کر رہ جاتی اور حسرت کے ساتھ پرانی ودیشی حکومت کی یاد کرتی . اس بیچ جنتا کی فریاد کا سننے والا گاندھی—بس ایک گاندھی—بھی اس دنیا سے جا چکا تھا .

× × ×

اس درد بھری حالت میں کانگریس کی ورکنگ کمیٹی نے یہ طے کیا کہ کانگریس کا چھپنواں سالانہ اجلاس ناسک میں کیا جائے . ویسے تو کانگریس کو جنم لئے پینسٹھ سال ہوچکے لیکن اِدھر سن ۱۹۳۰ کے بعد سے کئی سال بیچ بیچ میں سالانہ اجلاس نہ ہو پایا تھا . ہر اجلاس کے موقع پر ورکنگ کمیٹی کی طرف سے ایک آدمی کا نام آجاتا تھا اور وہ کانگریس کا پردھان بن جاتا . دو تین بار چناؤ بھی ہوئے . لیکن ناسک کے لئے سات اُمیدوار

थे जिनमें चार बैठ गये और तीन खड़े रहे. इसलिये चुनाव हुआ जिसमें आचार्य जीवत राम भगवान दास कृपालानी और श्री शंकर राव जी देव को हरा कर बाबू पुरुषोत्तम दास टंडन के नासिक कांगरेस के प्रधान चुने जाने का एलान किया गया.

चुनाव के पहले से ही अख़बारों में और जगह जगह चर्चा थी कि इस चुनाव में जो जीतेगा उसकी जीत के क्या माने होंगे. एक आम ख़याल यह था कि टंडन जी के प्रधान हो जाने से फ़िरक़ा परस्ती की वह सब ताक़तें ज़ोर पकड़ जायंगी जिन्हें जवाहर लाल जी दबाना चाहते हैं और इसलिये सरकार और कांगरेस के बीच तनातनी होने का अन्देशा है.

देश की नाड़ी को जवाहर लाल जी अच्छी तरह पहचानते हैं. उन्होंने एक लम्बा बयान निकाला जिसमें यह बताया कि उनकी हुकूमत की पालिसी—पाकिस्तान के साथ और दूसरे मुल्कों के साथ—क्या है, और यहाँ की राजकाजी और आर्थिक हालत संभालने का उनके पास क्या इलाज है. उन्होंने नासिक जाने वाले डेलीगेटों के सामने यह विचार रखा कि वह अच्छी तरह और ठंडे दिल से सब मामलों पर ग़ौर करें, अपनी राय क़ायम करें और फिर उसके अनुसार नासिक में फ़ैसला करें, ताकि दुनिया के आगे यह साफ़ हो जाय कि कांगरेस का क्या मक़सद है, वह क्या चाहती है और किस तरफ़ चलना चाहती है.

इस वातावरन में नासिक में कांगरेस का इजलास हुआ. इसमें हमेशा छै दिन लगा करते हैं. पहले दो दिन पुरानी वर्किंग कमेटी की बैठक, बीच के दो दिन नये कांगरेस प्रधान की सदारत में नई

تھے جن میں چار بیٹھ گئے اور تین کھڑے رہے ۔ اس لئے چناؤ ھوا جس میں آچاریہ جیوت رام بھگوان داس کرپالانی اور شری شنکر راؤ جی دیو کو ھرا کر بابو پرشوتم داس ٹنڈن کے ناسک کانگریس کے پردھان چنے جانے کا اعلان کیا گیا ۔

چناؤ کے پہلے سے ھی اخباروں میں اور جگہ جگہ چرچا تھی کہ اس چناؤ میں جو جیتیگا اسکی جیت کے کیا معنے ھونگے ۔ ایک عام خیال یہ تھا کہ ٹنڈن جی کے پردھان ھوجانے سے فرقہ پرستی کی وہ سب طاقتیں زور پکڑ جائینگی جنھیں جواھر لال جی دبانا چاھتے ھیں اور اس لئے سرکار اور کانگریس کے بیچ تناتنی ھونیکا اندیشہ ھے ۔

دیش کی ناڑی کو جواھر لال جی اچھی طرح پہچانتے ھیں ۔ انھوں نے ایک لمبا بیان نکالا جس میں یہ بتایا کہ اُن کی حکومت کی پالیسی—پاکستان کے ساتھ اور دوسرے ملکوں کے ساتھ—کیا ھے ' اور یہاں کی راج کا جی اور آرتھک حالت سنبھالنے کا اُن کے پاس کیا علاج ھے ۔ اُنھوں نے ناسک جانے والے ڈیلی گیٹوں کے سامنے یہ وچار رکھا کہ وہ اچھی طرح اور ٹھنڈے دل سے سب معاملوں پر غور کریں ' اپنی رائے قائم کریں اور پھر اُس کے اُنوسار ناسک میں فیصلہ کریں ' تاکہ دنیا کے آگے یہ صاف ھوجائے کہ کانگریس کا کیا مقصد ھے ' وہ کیا چاھتی ھے اور کس طرف چلنا چاھتی ھے ۔

اِس واتاورن میں ناسک میں کانگریس کا اجلاس ھوا ۔ اس میں ھمیشہ چھ دن لگا کرتے ھیں ۔ پہلے دو دن پرانی ورکنگ کمیٹی کی بیٹھک ۔ بیچ کے دو دن نئے کانگریس پردھان کی صدارت میں نئی

कुल हिन्द कांगरेस कमेटी या विषय नियामक समिति (सबजैक्ट कमेटी) की बैठक और आख़िरी दो दिन कांगरेस का खुला इजलास. नासिक की तारीखें थीं १६ सितम्बर १९५० से २१ सितम्बर तक.

वर्किंग कमेटी की बैठक

तारीख़ १६, १७ और १८ की सुबह को वर्किंग कमेटी की बैठकें हुईं. ऐसे मौक़े पर वर्किंग कमेटी मुल्क की हालत और अपने कांगरेस संगठन को देख कर कुछ ठहराव पास करती है जिन्हें वह विषय नियामक समिति के सामने रखती है. वहाँ पर बहस, तरमीम वग़ैरा के बाद वह कांगरेस के खुले इजलास में पेश किये जाते हैं और वहाँ पर पास होने के बाद उन पर कांगरेस की छाप लग जाती है.

इस मरतबा बड़ी गरम ख़बर थी कि नये कांगरेस प्रधान और सरकारी प्रधान मंत्री में काफ़ी मतभेद है जो नासिक कांगरेस में ज़रूर रंग लायगा. लेकिन गोदावरी के पानी का असर कहिये सब चीज़ें बहुत ही शान्ति, बल्कि ठंडे पन से हुईं. वर्किंग कमेटी ने सात ठहराव तैयार किये—(१) गये हुओं के लिये शोक, (२) आसाम की विपदा, (३) खादी, (४) आर्थिक प्रोग्राम, (५)शरनार्थी, (६) परदेशी नीति और (७) साम्प्रदायिकता.

इस तरह १८ तारीख़ की दोपहर को विषय नियामक समिति की बैठक के वक़्त तक लोगों का डर बहुत काफ़ी निकल चुका था. गरमी या तनातनी का डर बे सिर पैर का साबित हुआ. वर्किंग कमेटी के सभी फ़ैसले आपस की सलाह और एक राय से हुए थे.

کل هند کانگریس کمیٹی یا وشے نیامک سمیتي (سبجیکٹ کمیٹی) کی بیٹھک اور آخری دو دن کانگریس کا کھلا اجلاس . ناسک کي تاریخیں تھیں ١٦ ستمبر ١٩٥٠ سے ٢١ ستمبر تک .

ورکنگ کمیٹی کی بیٹھک

تاریخ ١٦ ' ١٧ اور ١٨ کي صبح کو ورکنگ کمیٹی کی بیٹھکیں هوئیں . ایسے موقع پر ورکنگ کمیٹی ملک کی حالت اور اپنے کانگریس سنگٹھن کو دیکھ کر کچھ تھہراؤ پاس کرتی هے جنهیں وہ وشے نیامک سمیتي کے سامنے رکھتی هے . وهاں پر بحث ' ترمیم وغیرہ کے بعد وہ کانگریس کے کھلے اجلاس میں پیش کئے جاتے هیں اور وهاں پر پاس هونے کے بعد اُن پر کانگریس کي چھاپ لگ جاتی هے .

اِس مرتبه بڑي گرم خبر تھی کہ نئے کانگریس پردھان اور سرکاري پردھان منتري میں کافی مت بھید هے جو ناسک کانگریس میں ضرور رنگ لائیگا . لیکن گوداوری کے پانی کا اثر کهئے سب چیزیں بہت هی شانتی' بلکہ ٹھنڈے پن سے هوئیں. ورکنگ کمیٹی نے سات تھہراؤ تیار کئے—(١) گئے هوؤں کے لئے شوک' (٢) آسام کي بپدا' (٣) کھادی' (٤) آرتھک پروگرام' (٥) شرنارتھی' (٦) پردیشي نیتی اور (٧) سامپردایکتا .

اِس طرح ١٨ تاریخ کی دوپہر کو وشے نیامک سمیتی کی بیٹھک کے وقت تک لوگوں کا ڈر بہت کافی نکل چکا تھا . گرمی یا تنا تنی کا ڈر بے سر پیر کا ثابت هوا . ورکنگ کمیٹی کے سبھی فیصلے آپس کی صلاح اور ایک رائے سے هوئے تھے .

स्वागत का इन्तज़ाम

आगे की कारवाई पर रोशनी डालने से पहले नासिक कांगरेस के नगर, वहाँ की रौनक़ और इन्तज़ाम वग़ैरा को देख लेना ज़रूरी है.

नासिक हिन्दुस्तान के उन चार तीर्थों में से है जहाँ हर बारहवें साल कुम्भ लगा करता है. बम्बई से वरधा नागपुर होते हुए कलकत्ते जाने वाली रेल पर बम्बई से ११२ मील की दूरी पर नासिक रोड नाम का स्टेशन है. स्टेशन से तीन मील पर नासिक की पुरानी बस्ती है. बम्बई से एक पक्की सड़क भी नासिक होती हुई आगरे जाती है.

दक्खिन की गंगा गोदावरी के दाएं किनारे पर नासिक बसा हुआ है और बाएं किनारे पर पंचवटी नाम की मशहूर जगह है जहाँ राजा रामचन्द्र ने अपने बनवास के कई बरस बिताए थे. पंचवटी में ही लछमन जी ने सरूपनखा की नाक काटी थी. इसी जगह से रावन सीताजी को उड़ा ले गया था. नासिक शहर से तेरह चौदह मील पर त्रयम्बकेश्वर का नामी मंदिर है जहाँ कुम्भ लगा करता है. त्रयम्बकेश्वर से क़रीब पाँच सौ फ़ुट की ऊँचाई पर गंगाद्वार है जहाँ से कहा जाता है गोदावरी निकली है.

वैसे नासिक एक मामूली सी और पच्छिमी घाट के पहाड़ों में लुकी छिपी जगह है जहाँ हमारे ब्रिटिश हाकिमों ने सन् १९२२ में रुपया ढालने और नोट छापने का कारख़ाना खोला था. वहां यह

سواگت کا انتظام

آگے کی کارروائی پر روشنی ڈالنے سے پہلے ناسک کانگریس کے نگر، وہاں کی رونق اور انتظام وغیرہ کو دیکھ لینا ضروری ہے ۔

ناسک ہندستان کے اُن چار تیرتھوں میں سے ہے جہاں ہر بارھویں سال کمبھ لگا کرتا ہے ۔ بمبئی سے وردھا ناگپور ہوتے ہوئے کلکتے جانے والی ریل پر بمبئی سے ۱۱۲ میل کی دوری پر ناسک روڈ نام کا اسٹیشن ہے ۔ اسٹیشن سے تین میل پر ناسک کی پرانی بستی ہے۔ بمبئی سے ایک پکی سڑک بھی ناسک ہوتی ہوئی آگرے جاتی ہے ۔

دکھن کی گنگا گوداوری کے دائیں کنارے پر ناسک بسا ہوا ہے اور بائیں کنارے پر پنچ وٹی نام کی مشہور جگہ ہے جہاں راجہ رام چندر نے اپنے بن باس کے کئی برس بتائے تھے ۔ پنچ وٹی میں ہی لکشمن جی نے سروپ نکھا کی ناک کاٹی تھی ۔ اِسی جگہ سے راون سیتا جی کو اُڑا لے گیا تھا ۔ ناسک شہر سے تیرہ چودہ میل پر تریمبکیشور کا نامی مندر ہے جہاں کمبھ لگا کرتا ہے۔ تریمبکیشور سے قریبؔ پانچ سو فٹ کی اونچائی پر گنگا دوار ہے جہاں سے کہا جاتا ہے گوداوری نکلی ہے ۔

ویسے ناسک ایک معمولی سی اور پچھمی گھاٹ کے پہاڑوں میں لکی چھپی جگہ ہے جہاں ہمارے برٹش حاکموں نے سن ۱۹۲۲ میں روپیہ ڈھالنے اور نوٹ چھاپنے کا کارخانہ کھولا تھا ۔ وہاں یہ کام اب بھی جاری ہے ۔

हाँ तो नासिक रोड स्टेशन से क़रीब सवा मील की दूरी पर, शहर को जाने वाली सड़क के बाईं तरफ़ गांधीनगर बनाया गया था जहाँ यह ५६वीं कांगरेस हुई. गांधीनगर के अन्दर की ख़ास चीज़ें यह थीं—स्वागत समिति के दफ़्तर, डाक, तार, फ़ोन और रेल के दफ़्तर, नुमायश, विषय नियामक समिति का पंडाल और नुमायश के ठीक सामने कांगरेस के खुले इजलास का बन्द पंडाल. गांधीनगर से क़रीब पौन मील पर 'उपनगर' था जहाँ कांगरेस के डेलीगेट ठहराए गये थे. वर्किंग कमेटी के मेम्बरों या बड़े नेताओं के ठहरने के लिये अलग बंगलों का इन्तज़ाम था.

उपनगर के चारों तरफ़ हाता घिरा हुआ था जिस पर पहरा था. (५६) घुसने के लिये एक सजा हुआ फाटक था जिसके पास एक दफ़्तर था जहाँ अन्दर जाने के लिये टिकट मिलते थे. फाटक पर और उप-नगर के अन्दर स्वयं सेवकों की ड्यूटी था. अलग अलग सूबों के लिये अलग अलग बैरकें थीं. कुछ बैरकें तो मिलिटरी की थीं पहले की बनी. मगर ज़्यादातर ताज़ी टीन की बनाई गई थीं. पेशाब घरों, पाख़ानों और नहान घरों का माक़ूल इन्तज़ाम था, लेकिन बन्द नलदार नहान घर नहीं थे. भोजन करने के लिये एक बड़ा कमरा था जिसमें कोई बीस पचीस लैनें लगी होंगी और हर लैन में चालीस कुरसियाँ. खाना दोपहर व शाम, दो वक़्त मिलता था. एक वक़्त का एक रुपया लगता था. खाना सादा था मगर अच्छी तरह पका हुआ. परोसने का ढंग और सफ़ाई भी सन्तोष जनक थी.

उपनगर से गांधीनगर आने जाने के लिये बस चलती थी. गांधीनगर का दरवाज़ा सिंहगढ़ के नामी क़िले का हूबहू नमूना

ہاں تو ناسک روڈ اسٹیشن سے قریب سوا میل کی دوری پر' شہر کو جانے والی سڑک کے بائیں طرف گاندھی نگر بنایا گیا تھا جہاں یہ ۵۶ویں کانگریس ہوئی . گاندھی نگر کے اندر کی خاص چیزیں یہ تھیں—سواگت سمیتی کے دفتر' ڈاک' تار' فون اور ریل کے دفتر' نمائش' وشے نیامک سمیتی کا پنڈال اور نمائش کے ٹھیک سامنے کانگریس کے کھلے اجلاس کا بند پنڈال. گاندھی نگر سے قریب پون میل پر 'اُپ نگر' تھا جہاں کانگریس کے ڈیلی گیٹ ٹھہرائے گئے تھے . ورکنگ کمیٹی کے ممبروں یا بڑے نیتاؤں کے ٹھہرنے کے لئے الگ بنگلوں کا انتظام تھا .

اُپ نگر کے چاروںطرف حاطہ گھرا ہوا تھا جسپر پہرا تھا . (۵۶) گھسنے کے لئے ایک سجا ہوا پھاٹک تھا جس کے پاس ایک دفتر تھا جہاں اندر جانے کے لئے ٹکٹ ملتے تھے . پھاٹک پر اور اُپ نگر کے اندر سویم سیوکوں کی ڈیوٹی تھی . الگ الگ صوبوں کے لئے الگ الگ بیرکیں تھیں . کچھ بیرکیں تو ملٹری کی تھیں پہلے کی بنی' مگر زیادہ تر تازی ٹین کی بنائی گئی تھیں . پیشاب گھروں' پاخانوں اور نہان گھروں کا معقول انتظام تھا' لیکن بند نل‌دار نہان گھر نہیں تھے . بھوجن کرنے کے لئے ایک بڑا کمرہ تھا جس میں کوئی بیس پچیس لینیں لگی ہونگی اور ہر لین میں چالیس کرسیاں . کھانا دوپہر و شام' دو وقت ملتا تھا' ایک وقت کا ایک روپیہ لگتا تھا . کھانا سادہ تھا مگر اچھی طرح پکا ہوا . پروسنے کا ڈھنگ اور صفائی بھی سنتوش جنک تھی .

اُپ نگر سے گاندھی‌نگر آنے جانے کے لئے بس چلتی تھی . گاندھی نگر کا دروازہ سنگھ گڑھ کے نامی قلعہ کا ہو بہو نمونہ

कांग्रेस और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ

(श्री ओंकारनाथ शास्त्री)

कांग्रेस सरकार ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर से बैन हटाकर और उसके मेम्बरों को रिहा करके मुल्क के बहुत से सच्चे देशभक्तों के दिलों को काफ़ी चोट पहुँचाई थी. अब कांग्रेस वर्किंग कमेटी ने यह फ़ैसला कर दिया है कि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के मेम्बर कांग्रेस में शामिल हो सकते हैं. अपने इस काम से कांग्रेस ने यह सबूत दिया है कि उसमें 'जम्हूरियत पसन्द' लोग या तो हैं ही बहुत कम या उनकी आवाज़ नक्कारख़ाने मे तूती की आवाज़ है, ऐसा लगता है कि कांग्रेस में अब फ़िरक़ापरस्तों का बोलबाला है. इस तरह फ़ासिस्टवाद की तरफ़ बढ़ते हुए उसके क़दम आज़ादी पसन्द ताक़तों के लिये भारी ख़तरे का घन्टा है और इनक़लाबी ताक़तों के लिये इससे बढ़कर चिंता की बात नहीं हो सकती. यों भी देश एक क़हत की हालत से गुज़र रहा है. कपड़ा, ग़ल्ला, तेल, चीनी, भाजी, दूध, घी, नमक कभी इतना पैसा देने पर मिलते हैं जितना देने को नहीं है, तो कभी पैसा देने पर भी नहीं मिलते. विदेशी व्योपार में पौण्ड और रुपये की दर गिरने के पहिले ९५ करोड़ रुपये का घाटा था. अब प्रोफ़ेसर के० टी० शाह का ख़याल है कि यह घाटा २०० करोड़ रुपये तक जायगा. सरकार के बजट में ...

کانگریس اور راشٹریہ سویم سیوک سنگھ

(شری اونکار ناتھ شاستری)

کانگریس سرکار نے راشٹریہ سویم سیوک سنگھ پر سے [illegible] اس کے ممبروں کو رہا کر کے ملک کے بہت سے سچے دیش [illegible] دلوں کو کافی چوٹ پہنچائی تھی [illegible] کانگریس ورکنگ کمیٹی نے [illegible] کر دیا ہے کہ راشٹریہ سویم سیوک سنگھ کے ممبر کانگریس [illegible] ہو سکتے ہیں۔ اپنے اس کام سے کانگریس نے یہ ثبوت دیا ہے کہ اس میں جمہوریت پسند لوگ یا تو ہیں ہی بہت کم یا ان کی آواز نقارخانے میں طوطی کی آواز ہے۔ ایسا لگتا ہے کہ کانگریس میں اب فرقہ پرستی کا بول بالا ہے۔ اس طرح فاشسٹ واد کی طرف بڑھتے ہوئے اس کے قدم آزادی پسند طاقتوں کے لئے بھاری خطرے کا گھنٹہ ہے اور انقلابی طاقتوں کے لئے اس سے بڑھ کر چنتا کی بات نہیں ہو سکتی۔ یوں بھی دیش ایک قحط کی حالت سے گزر رہا ہے۔ کپڑا، غلہ، تیل، چینی، سبزی، دودھ، گھی، نمک کبھی اتنا پیسہ دینے پر ملتے ہیں جتنا دینے کو نہیں ہے، تو کبھی پیسہ دینے پر بھی نہیں [illegible] روپے کی در گرنے کے [illegible]

बनाया गया था. उस में नौबत का भी इन्तज़ाम था. गांधीनगर भी चारों तरफ़ से घिरा हुआ था. मिलिटरी का पहरा था. गेट और सड़क पर स्वयंसेवक और पुलिस थी. गांधीनगर में घुसने के लिये आपके पास या तो प्रतिनिधि, प्रेस या विशेष दर्शक वग़ैरा का कोई न कोई पास होना चाहिये या बाहर से दो आने का टिकट ख़रीदिये.

नासिक का इजलास काम चलाऊ अधिवेशन था इसलिये बिना पैसा ख़र्च किये गांधीनगर में घुसना नामुमकिन था, और खुले अधिवेशन का पंडाल भी अच्छी तरह से बंद था. वहाँ पर लगभग पद्रह हज़ार आदमियों।के लिये इन्तज़ाम था और उतनी ही कुरसियां. (६५८)
नेताओं के लिये पीछे की तरफ़ "डैस" थी. बोलने के लियेएक ऊँचा मचान. मचान से ज़रा हट कर, छत से सटा हुआ, सिनेमा फ़िल्म लेने का इन्तज़ाम था विषय नियामक समिति का पंडाल भी बंद था. दोनों जगह सजावट रंगीन खादी और तसवीरों से की गई थी. बड़े पंडाल को देख कर ऐसा लगता था कि अगर स्वागत समिति को और वक़्त मिलता तो वह सजावट पूरी कर लेती.

बड़े पंडाल के सामने ही चंदे के लिये नुमायश थी. नुमायश के फाटक के अंदर महात्मा गांधी की मूर्ति थी. नुमायश खोलने का काम श्री आना साहब सहस्त्रबुद्धे ने किया था जो महाराष्ट्र के नामी ग्रामोद्योगी कार कर्ता हैं. नुमायश मामूली थी जैसी कि इलाहाबाद लखनऊ में हर साल हुआ करती है एक अजीब बात थी—नुमायश ... में केवल एक शब्द लिखा हुआ

بنایا گیا تھا . اُسمیں نوبت کا بھی انتظام تھا . گاندھی نگر بھی چارونطرف سے گھرا ہوا تھا . ملٹری کا پہرا تھا . گیٹ اور سڑک پر سویم سیوک اور پولیس تھی . گاندھی نگر میں گھسنے کے لئے آپ کے پاس یا تو پرتینیدھی' پریس یا وشیش درشک وغیرہ کا کوئی نہ کوئی پاس ہونا چاھئے یا باھر سے دو آنے کا ٹکٹ خریدئے .

ناسک کا اجلاس کام چلاؤ ادھیویشن تھا . اسلئے بنا پیسہ خرچ کئے گاندھی نگر میں گھسنا ناممکن تھا . اور کھلے ادھیویشن کا پنڈال بھی اچھی طرح سے بند تھا . وھاں پر لگ بھگ پندرہ ھزار آدمیوں کے لئے انتظام تھا اور اُتنی ھی کرسیاں . نیتاؤں کے لئے پیچھے کی طرف " ڈیس " تھی . (۶۵۸)
بولنے کے لئے ایک اُونچا مچان . مچان سے ذرا ھٹ کر ' چھت سے سٹا ھوا' سنیما فلم لینے کا انتظام تھا . وشے نیامک سمیتی کا پنڈال بھی بند تھا . دونوں جگہ سجاوٹ رنگین کھادی اور تصویروں سے کی گئی تھی . بڑے پنڈال کو دیکھکر ایسا لگتا تھا کہ اگر سواگت سمیتی کو اور وقت ملتا تو وہ سجاوٹ پوری کر لیتی .

بڑے پنڈال کے سامنے ھی چندے کے لئے نمائش تھی . نمائش کے پھاٹک کے اندر مہاتما گاندھی کی مورتی تھی . نمائش کھولنے کا کام شری آنا صاحب سہستربدھے نے کیا تھا جو مہاراشٹر کے نامی گرام اُدیوگی کار کرتا ھیں . نمائش معمولی تھی جیسی کہ الہ آباد لکھنؤ میں ھر سال ھوا کرتی ھے. ایک عجیب بات تھی—نمائش کے پھاٹک پر بجلی کی بتیوں سے کیول ایک شبد لکھا ھوا تھا – وہ تھا نمائش کے ...

पाठ के लिये हमसे बापू ने सन १९१६ में कहा था कि एक साल के अंदर याद कर लेना उसमें हम अभी तक कोरे के कोरे !

नासिक में तारीफ़ के लायक़ दो चीज़ें थीं—पहली सफाई. पाख़ाने संडास और पेशाब घर की सफाई भंगी नहीं करते थे बल्कि ऊँची जातों के स्वयं सेवक करते थे. पेशाब घर की व्यवस्था बहुत ही लाजवाब थी. पाख़ाने उतने कामयाब इस वजह से नहीं हुए क्यों कि बरसात की वजह से मिट्टी चिपकती थी और उसे मैले पर ढका नहीं जा सकता था. दूसरी चीज़ थी स्वयंसेवकों की सख़्ती. उन्हें अच्छी तरह सिखाया गया था जिसकी वजह से वह बिना पास किसी को अंदर घुसने नहीं देते थे दस रुपये ख़र्च किये बग़ैर गांधी नगर के अन्दर जाना नामुमकिन था. शायद इसी वजह से 'रचनात्मक कार कर्ता' नाम का जीव इस कांगरेस में मुशकिल से ही दीख पड़ता था क्योंकि वह पैसा कहाँ से लाकर ख़र्च करते. यह एक सोचने की बात है.

विषय समिति की बैठकें

हर कांगरेस में सब से ज़ोरदार चीज़ होती है विषय नियामक समिति की बैठकें. इस में वर्किंग कमेटी की तरफ़ से आने वाले हर सुझाव पर सुधार पेश किये जाते हैं, बहसें होती हैं, वोट लिये जाते हैं और तब कहीं सुझाव ठहराव बनकर पास होते हैं.

नासिक में विषय समिति में भी, खुले इजलास में भी, हमारे तीन महारथी—सरदार पटेल, मौलाना आज़ाद और राजा जी तो मानो होंठ सीकर आए थे. डाक्टर पट्टाभि सीता रामय्या और डाक्टर प्रफुल्लचन्द्र घोष बहुत थोड़ा थोड़ा बोले और वह भी "मासूम"

پاتھ کیلئے ہم سے باپو نے سن ۱۹۱۶ میں کہا تھا کہ ایک سال کے اندر یاد کر لینا اُس میں ہم ابھی تک کورے کے کورے !

ناسک میں تعریف کے لائق دو چیزیں تھیں—پہلی صفائی. پاخانے سنڈاس اور پیشاب گھر کی صفائی بھنگی نہیں کرتے تھے بلکہ اونچی جاتوں کے سویم سیوک کرتے تھے. پیشاب گھر کی ویوستھا بہت ہی لاجواب تھی. پاخانے اتنے کامیاب اِس وجہ سے نہیں ہوئے کیونکہ برسات کی وجہ سے مٹی چپکتی تھی اور اُسے میلے پر ڈھکا نہیں جاسکتا تھا. دوسری چیز تھی سویم سیوکوں کی سختی. اُنہیں اچھی طرح سکھایا گیا تھا جس کی وجہ سے وہ بنا پاس کسی کو اندر گھسنے نہیں دیتے تھے. دس روپیہ خرچ کئے بغیر گاندھی نگر کے اندر جانا ناممکن تھا. شاید اسی وجہ سے "رچناتمک کار کرتا" نام کا جیو اس کانگریس میں مشکل سے ہی دیکھ پڑتا تھا کیونکہ وہ پیسہ کہاں سے لاکر خرچ کرتے یہ ایک سوچنے کی بات ہے.

وشے سمیتی کی بیٹھکیں

ہر کانگریس میں سب سے زور دار چیز ہوتی ہے وشے نیامک سمیتی کی بیٹھکیں. اس میں ورکنگ کمیٹی کی طرف سے آنے والے ہر سجھاؤ پر سدھار پیش کئے جاتے ہیں، بحثیں ہوتی ہیں، ووٹ لیئے جاتے ہیں اور تب کہیں سجھاؤ ٹھہراؤ بن کر پاس ہوتے ہیں.

ناسک میں وشے سمیتی میں بھی، کھلے اجلاس میں بھی، ہمارے تین مہارتھی—سردار پٹیل، مولانا آزاد اور راجہ جی تو مانو ہونٹ سی کر آئے تھے. ڈاکٹر پٹابھی سیتارامیا اور ڈاکٹر پربھل چاندر گھوش بہت تھوڑا تھوڑا بولے اور وہ بھی "معصوم"

ठहरावों पर. सारे इजलास में मंच के ऊपर बार बार बस एक ही हस्ती आती दिखलाई देती—पंडित जवाहर लाल. इसी वजह से अकसर लोगों ने नासिक कांगरेस को जवाहर लाल की कांगरेस कहा है.

विषय समिति की बैठक के शुरू में प्रधान की जगह कांगरेस के पिछले जयपुर वाले इजलास के सदर डाक्टर पट्टाभि सीता रामय्या ने ली. उन्होंने पिछले पौने दो बरस की हालत पर रोशनी डाली और बताया कि किस तरह अचानक २६ जनवरी १९५० को उनका "राष्ट्रपति" का खिताब उनसे छीनकर भारत के जनराज के प्रधान को दे दिया गया. इसके बाद बाबू पुरुषोत्तम दास टंडन ने जगह ली और कारवाई शुरू हुई. यह बैठकें १८, १९ को हुई लेकिन काम ज़्यादा था इसलिये २० की सुबह और रात को भी चलीं.

वर्किंग कमेटी के दो प्रस्तावों (शोक वाला और आसाम वाला) को छोड़कर बाक़ी सब पर ख़ूब बहसें हुईं, सुधार आये, चर्चे हुए, वोट लिये गये; लेकिन कोई भी सुधार पास नहीं हुआ और न वर्किंग कमेटी को यह मंजूर ही था. यहाँ तक हालत हुई कि एक ठहराव में "Democracy" शब्द के पहले "Secular" शब्द बढ़ाने के लिये तजवीज की गई वह भी नामंजूर. हांलाकि यह बात क़बूल की गई कि यह शब्द असली ठहराव में था मगर छपाई की जल्दी मे प्रेस ने किसी तरह ग़ायब कर दिया। ऐसा महसूस हो रहा था कि विषय नियामक समिति का होना न होना बराबर है. ... "हाई कमांड" को मंजूर नहीं थी।

تھہراؤں پر . سارے اجلاس میں منچ کے اوپر بار بار بس ایک ھی ھستی آتی دکھلائی دیتی—پنڈت جواھر لال . اسی وجہ سے اکثر لوگوں نے ناسک کانگریس کو جواھر لال کی کانگریس کہا ھے .

وشے سمیتی کی بیتھک کے شروع میں پردھان کی جگہ کانگریس کے پچھلے جے پور والے اجلاس کے صدر ڈاکٹر پٹابھی سیتارامیا نے لی . اُنھوں نے پچھلے پونے دو برس کی حالت پر روشنی ڈالی اور بتایا کہ کسطرح اچانک ۲۶ جنوری ۱۹۵۰ کو اُنکا "راشٹرپتی" کا خطاب اُن سے چھین کر بھارت کے جن راج کے پردھان کو دے دیا گیا . اس کے بعد بابو پرشوتم داس ٹنڈن نے جگہ لی اور کاروائی شروع ھوئی . یہ بیتھکیں ۱۸ ' ۱۹ کو ھوئیں لیکن کام زیادہ تھا اس لئے ۲۰ کی صبح اور رات کو بھی چلیں .

ورکنگ کمیتی کے دو پرستاؤں (شوک والا اور آسام والا) کو چھوڑ کر باقی سب پر خوب بحثیں ھوئیں ' سدھار آئے ' چرچے ھوئے ' ووٹ لئے گئے ؛ لیکن کوئی بھی سدھار پاس نہیں ھوا اور نہ ورکنگ کمیتی کو یہ منظور ھی تھا . یہاں تک حالت ھوئی کہ ایک تھہراؤ میں "Democracy" شبد کے پہلے "Secular" شبد بڑھانے کے لئے تجویز کی گئی وہ بھی نامنظور . حالانکہ یہ بات قبول کی گئی کہ یہ شبد اصلی تھہراؤ میں تھا مگر چھپائی کی جلدی میں پریس نے کسی طرح غائب کر دیا ! ایسا محسوس ھورھا تھا کہ کہ وشے نیامک سمیتی کا ھونا نہ ھونا برابر ھے . کسی طرح کی بھی رد و بدل " ھائی کمانڈ " کو منظور نہیں تھی .

इन बैठकों में पंडित जवाहर लाल के दो जबरदस्त भाषण परदेशी नीति और हिन्दू मुसलिम सवाल पर हुए. उन्होंने बताया—"कहा जाता है कि हमारी परदेशी नीति से हमें कोई फ़ायदा नहीं पहुंच रहा है. अगर हम फ़ायदे के पीछे पड़ जायें तो हमें जरूर बेइन्तहा फ़ायदा पहुँच सकता है. लेकिन कुछ ऐसी चीजों को फिर छोड़ देना पड़ेगा जिन्हें हम क़ीमती समझते हैं. पैसे और दूसरे तरीक़े की काफ़ी इमदाद हमें मिल सकती है बशर्ते कि हम अपने काम करने की आज़ादी को कम कर दें या ख़तम कर दें........."

आगे चलकर आपने कहा—"मैं यह भी कहूंगा कि कुछ हद तक, इसमें मैं कोई बढ़ाकर बात नहीं कहना चाहता, पिछले दो तीन महीनों में भारत ने दूसरे मुल्कों की पालिसी पर असर डाला है और इसी का यह एक नतीजा है कि लड़ाई कोरिया तक ही महदूद रह गई है."

साम्प्रदायिकता वाले ठहराव के सिलसिले में पंडित जी ने कांग-रेस के अंदर फैली बीमारी पर रोशनी डालते हुए कहा—

"यह वाक़िआ है कि कांगरेस वाले आज कोई भी अपनी बुराई या आलोचना सुनना नहीं चाहते. इसके साफ़ मानी हैं कि हमारे संगठन के अंदर कीड़ा लग गया है जो दिन पर दिन बढ़ता ही जा रहा है. आप अपने को भले ही मुबारक बाद देते रहें लेकिन असल चीज़ यह है कि पंडाल के बाहर हज़ारों लाखों आदमी क्या कहते हैं."

"महात्मा गांधी ने एक बुनियादी चीज़ जो हमें बताई है वह है

اِن بیٹھکوں میں پنڈت جواہرلال کے دو زبردست بھاشن پردیشي نیتی اور ھندو مسلم سوال پر ھوئے . اُنھوں نے بتایا— " کہا جاتا ھے کہ ھماري پر دیشي نیتي سے ھمیں کوئی فائدہ نہیں پہونچ رھا ھے . اگر ھم فائدے کے پیچھے پڑجائیں تو ھمیں ضرور بےانتہا فائدہ پہونچ سکتا ھے . لیکن کچھ ایسي چیزوں کو پھر چھوڑ دینا پڑیگا جنھیں ھم قیمتي سمجھتے ھیں . پیسے اور دوسرے طریقے کي کافی امداد ھمیں مل سکتي ھے بشرطیکہ ھم اپنے کام کرنے کي آزادي کو کم کردیں یا ختم کردیں.......... "

آگے چل کہ آپنے کہا— " میں یہ بھی کہونگا کہ کچھ حد تک' اس میں میں کوئی بڑھا کر باتنہیں کہنا چاھتا' پچھلے دو تین مہینوں میں بھارت نے دوسرے ملکوں کي پالیسی پر اثر ڈالا ھے اور اِسي کا یہ ایک نتیجہ ھے کہ لڑائي کوریا تک ھی محدود رہ گئی ھے . "

سامپردایکتا والے ٹھہراؤ کے سلسلے میں پنڈت جي نے کانگریس کے اندر پھیلی بیماری پر روشنی ڈالتے ھوئے کہا—

" یہ واقعہ ھے کہ کانگریس والے آج کوئی بھی اپنی برائی یا آلوچناسننا نہیں چاھتے . اس کے صاف معنی ھیں کہ ھمارے سنگٹھن کے اندر کیڑا لگ گیا ھےجو دن پر دن بڑھتا ھی جا رھا ھے. آپ اپنے کو بھلے ھي مبارکباد دیتے رھیں لیکن اصل چیز یہ ھے کہ پنڈال کے باھر ھزاروں لاکھوں آدمی کیا کہتے ھیں . "

" مہاتما گاندھي نے ایک بنیادي چیز جو ھمیں بتائي ھے وہ ھے

अपनी ग़लतियों को क़बूल करना. सन् १९१९ की अमृतसर कांगरेस में उन्होंने ज़ोर दिया था कि रौलेट क़ानून वाले ठहराव से ज़्यादा अहमियत उस ठहराव को दी जाये जिसमें कांगरेसमैनों की अपनी ग़लती मानने की और उसे सुधारने की बात कही गई है. आज कांगरेस वालों के सामने अपनी ग़लतियाँ मानने का वैसा ही सवाल है."

इसके बाद पंडित जी ने नासिक में वह शब्द कहे जो आज सब जगह गूंज रहे हैं—

इस हिन्दू मुसलिम सवाल पर आप इधर उधर नहीं कर सकते. अगर आप चाहते है कि मैं कांगरेस को रास्ता दिखलाऊँ तो यह प्रस्ताव आपको बिला किसी शक या शुबहे के पास करना है; शर्त यह है कि आपके दिल और दिमाग़ भी इस मामले मे बिलकुल साफ़ हो."

खुला इजलास

२० सितम्बर दोपहर के ढाई बजे कांगरेस का खुला इजलास होने वाला था. कांगरेस की ६५ साल की ज़िन्दगी मे शायद ही किसी प्रधान की तरफ़ से इतनी ग़लतफ़हमी जनता मे रही हो (या पैदा की गई हो) जितनी नासिक के प्रधान बाबू पुरुषोत्तम दास टंडन की तरफ़ से. टंडन जी इलाहाबाद के हैं और पिछले ४०, ४२ साल मे देश सेवा के काम में लगे है. उनकी उमर इस वक़्त ६८ साल के क़रीब है—चमकते हुए चेहरे पर सुनहरी दाढ़ी. शायद ही कोई ऐसा इन्सान हो जो उनकी नेकनियती और नेक चलनी का क़ायल

اپنی غلطیوں کو قبول کرنا . سن 1919 کی امرتسر کانگریس میں اُنہوں نے زور دیا تھا کہ رولٹ قانون والے ٹھہراؤ سے زیادہ اہمیت اُس ٹھہراؤ کو دی جائے جسمیں کانگریس مینوں کی اپنی غلطی ماننے کی اور اُسے سدھارنے کی بات کہی گئی ہے . آج کانگریس والوں کے سامنے اپنی غلطیاں ماننے کا ویسا ہی سوال ہے ."

اسکے بعد پنڈت جی نے ناسک میں وہ شبد کہے جو آج سب جگہ گونج رہے ہیں—

"اس ہندو مسلم سوال پر آپ اِدھر اُدھر نہیں کر سکتے . اگر آپ چاہتے ہیں کہ میں کانگریس کو راستہ دکھلاؤں تو یہ پرستاؤ آپکو بلا کسی شک یا شبہہ کے پاس کرنا ہے؛ شرط یہ ہے کہ آپکے دل اور دماغ بھی اس معاملے میں بالکل صاف ہوں ."

کھلا اجلاس

۲۰ ستمبر دوپہر کے ڈھائی بجے کانگریس کا کھلا اجلاس ہونے والا تھا . کانگریس کی ۶۵ سال کی زندگی میں شاید ہی کسی پردھان کی طرف سے اتنی غلط فہمی جنتا میں رہی ہو (یا پیدا کی گئی ہو)جتنی ناسک کے پردھان بابو پرشوتم داس ٹنڈن کی طرف سے . ٹنڈن جی الہ آباد کے ہیں اور پچھلے ۴۰، ۴۲ سال سے دیش سیوا میں لگے ہیں . اُنکی عمر اسوقت ۶۸ سال کے قریب ہے—چمکتے ہوئے چہرے پر سنہری داڑھی شاید ہی کوئی ایسا انسان ہو جو انکی نیک نیتی اور نیک چلنی کا قائل

खुले इजलास मे सबसे पहले स्वागत कमेटी के प्रधान श्री भाऊ साहब हीरे की तक़रीर हुई जिसमे आपने सब आने वालो का शानदार स्वागत किया और इन्तज़ाम की भूल चूक के लिये माफी चाही. आपने आखिर में देश के नेताओं से अपील की कि हमें रास्ता दिखाइये ताकि हम एक दिल होकर उस पर चलें और अपने मुल्क को चंगा बनायें.

टन्डन जी का ऐड्रेस

टंडन जी का भाषन हिन्दी में हुआ. टंडन जी ने हकूमत की क़रीब क़रीब तमाम पालिसियों का समर्थन किया. आपने कहा कि "अब तो हमारा विधान बन गया है और मैं विधानों को आदर ही नहीं बल्कि पूजा की भावना से देखता हूं. लेकिन हिन्दुस्तान के अंदर कभी किसी किताब को अन्तिम शब्द नहीं माना गया. हमेशा ही बुद्धि को सबसे ऊपर ठहराया गया. तर्क को ऋषि कहा गया है. इसलिये हमारे देश की बुनियादी चट्टान कोई किताब न होकर सचेत बुद्धि ही होगी"

परदेशी नीति के बारे में टंडन जी ने कहा कि आज जो दुनिया में दो दल हैं हम उनसे अलग रहना चाहते हैं. लेकिन—

"मेरी तामीर में मुज़मिर है एक सूरत खराबी की."

आपने बताया कि "इस मामले मे हमारी सरकार ने जो नीति बरती है उसे आजकल की परिस्थिति मे मैं ठीक समझता हूं और उसकी ताईद करता हूँ.''

हिन्दू मुसलिम मामले में टंडन जी ने कुछ खरी खरी बातें

کھلے اجلاس میں سب سے پہلے سواگت کمیٹی کے پردھان شری بھاؤ صاحب ہیرے کی تقریر ہوئی جس میں آپ نے سب آنے والوں کا شاندار سواگت کیا اور انتظام کی بھول چوک کے لئے معافی چاہی . آپ نے آخر میں دیش کے نیتاؤں سے اپیل کی کہ ہمیں راستہ دکھائیے تاکہ ہم ایک دل ہو کر اس پر چلیں اور ملک کو چنگا بنائیں .

ٹنڈن جی کا ایڈریس

ٹنڈن جی کا بھاشن ہندی میں ہوا . ٹنڈن جی نے حکومت کی قریب قریب تمام پالیسیوں کا سمرتھن کیا . آپ نے کہا کہ "اب تو ہمارا ودھان بن گیا ہے اور میں ودھانوں کو آدر ہی نہیں بلکہ پوجا کی بھاؤنا سے دیکھتا ہوں . لیکن ہندوستان کے اندر کبھی کسی کتاب کو انتم شبد نہیں مانا گیا. ہمیشہ ہی بدھی کو سب سے اوپر ٹھہرایا گیا . ترک کو رشی کہا گیا ہے . اسلئے ہمارے دیش کی بنیادی چٹان کوئی کتاب نہ ہو کر سچیت بدھی ہی ہوگی."

پردیشی نیتی کے بارے میں ٹنڈن جی نے کہا کہ آج جو دنیا میں دو دل ہیں ہم اُن سے الگ رہنا چاہتے ہیں . لیکن—

"میری تعمیر میں مضمر ہے ایک صورت خرابی کی"

آپ نے بتایا کہ "اس معاملے میں ہماری سرکار نے جو نیتی برتی ہے اُسے آجکل کی پرستھتی میں میں ٹھیک سمجھتا ہوں اور اُسکی تائید کرتا ہوں ."

ہندو مسلم معاملے میں ٹنڈن جی نے کچھ کھری کھری باتیں

कही हैं जिन्हें हर एकता प्रेमी पसंद करेगा—

"हमारी यह तय शुदा पालिसी है कि अपने राजकाज में हम साम्प्रदायिकता को दखल नहीं देंगे देगें. सब धर्म वालो के एक से अधिकार रहेंगे और इस देश को मजबूत बनाने में सब मिलकर काम करेगें...बहुत तादाद वालों के ऊपर यह खास जिम्मेवारी है कि कम तादाद वालों की हिफ़ाजत करें और कोई बदअमनी न होने दें."

पाकिस्तान और भारत के सम्बन्धों पर रोशनी डालते हुए आपने कहा कि हमने बहुत से राज़ीनामे उससे किये लेकिन इससे हमारी मुसीबतें दूर नहीं हुई हैं. "मुझे ऐसा लगता है कि पाकिस्तान के साथ हमारा रुख कुछ ज्यादा मज़बूती का होना चाहिये."

शरनार्थियों के सिलसिले में आपने कहा कि "सरकार ने बहुत कुछ किया है लेकिन अभी बहुत ज्यादा करना बाक़ी है और मेरी सलाह है कि एक तरह का नया टैक्स लगा दिया जाय और उससे इस गम्भीर सवाल को हल किया जाय."

कलचर और धर्म पर रोशनी डालते हुए आपने बताया कि यह दो अलग चीजें हैं. "मेरी अर्ज है कि आइन्दा अब हमारा मुल्क यह ग़लती न करे कि कलचर और धर्म को एक समझ ले. कई धर्म के मानने वालों की कलचर एक हो सकती है जैसे चीन में." टंडन जी ने अपील की :

"आज हम कांगरेसजनों के ऊपर एक भारी जिम्मेदारी है कि वह अपने अंदर यह जज्बा पैदा करें कि इस वक़्त मुल्क को जरूरत

کہی ھیں جنھیں ھر ایکتا پریمی پسند کریگا—

"ھماري یہ طے شدہ پالیسی ھے کہ اپنے راج کاج میں ھم سامپردایکتا کو دخل نہیں دینے دینگے. سب دھرم والوں کے ایک سے ادھیکار رھینگے اور اس دیش کو مضبوط بنانے میں سب مل کر کام کرینگے.........بہت تعداد والوں کے اوپر یہ خاص ذمہداری ھے کہ کم تعداد والوں کی حفاظت کریں اور کوئی بدامني نہ ھونے دیں."

پاکستان اور بھارت کے سمبندھوں پر روشنی ڈالتے ھوئے آپنے کہا کہ ھم نے بہت سے راضی نامے اُس سے کئے. لیکن اِس سے ھماری مصیبتیں دور نہیں ھوئی ھیں. "مجھے ایسا لگتا ھے کہ پاکستان کے ساتھ ھمارا رخ کچھ زیادہ مضبوطی کا ھونا چاھئے."

شرنارتھیوں کے سلسلے میں آپنے کہا کہ "سرکار نے بہت کچھ کیا ھے لیکن ابھي بہت زیادہ کرنا باقی ھے اور میري صلاح ھے کہ ایک طرح کا نیا ٹیکس لگا دیا جائے اور اُس سے اِس گمبھیر سوال کو حل کیا جائے."

کلچر اور دھرم پر روشنی ڈالتے ھوئے آپنے بتایا کہ یہ دو الگ چیزیں ھیں. "میري عرض ھے کہ اب آئندہ ھمارا ملک یہ غلطی نہ کرے کہ کلچر اور دھرم کو ایک سمجھ لے. کئی دھرم کے ماننے والوں کي کلچر ایک ھو سکتی ھے جیسے چین میں." ٹنڈن جي نے اپیل کی :

"آج ھم کانگریس جنوں کے اُوپر ایک بھاري ذمہداری ھے کہ وہ اپنے اندر یہ جذبہ پیدا کریں کہ اس وقت ملک کو ضرورت ھے

साथ अपने से दूसरे धर्म के लोगों के साथ हमें प्रेम और सहन शीलता का व्यवहार करना चाहिये.''

इसके बाद देश के आर्थिक सवालों पर आपने अपने विचार जाहिर किये—किसान, मजदूर, कन्ट्रोल, योजनायें और देहाती उद्योग-धंधे. आपने कहा कि सरकार-कन्ट्रोल तभी लगाये जब कि बहुत जरूरी हो जाय. योजनाओं के बारे में आपने सिफ़ारिश की कि २५,२६ अप्रैल को देहली में जो तजवीजें सारे सूबों के बड़े वजीरों और कांगरेस सभापतियों ने पेश की हैं उनपर अमल किया जाय.

टंडनजी ने गाँव के धंधों और खादी के लिये जोरदार अपील की. आपने सूबों की सरकारों से अपील की कि मंहगी कह कर खादी को छोड़ देना उन्हें शोभा नहीं देता. कांगरेस सरकारों का फ़र्ज़ है कि खादी और गाँव के धंधों के माल का प्रचार करें और इसकी ज्यादा से ज्यादा तरक़्क़ी में मदद दें. गाँव के धन्धों में आपने बिजली के इस्तेमाल की सिफ़ारिश की.

हमारी मौजूदा शिक्षा पद्धति पर आपने कहा कि विद्या या ज्ञान के साथ साथ इस चालचलन की तरक़्क़ी पर जोर देना चाहिये. साथ ही साथ चीजें तैयार करके इसमें तालीम का खर्च भी निकलना चाहिये. "हमारे आदर्श ऊंचे हों, हममें डिसिप्लिन होना चाहिये, हमारे समाज का नैतिक स्तर ऊंचा उठना चाहिये तभी हम गांधी जी का रामराज क़ायम कर सकेंगे.''

आख़ीर में टंडन जी ने कांगरेस के अन्दर की गंदगी पर दुख जाहिर किया. आपने कहा कि हमारे विधान में कांगरेस के मेम्बर बनने की जो शर्तें हैं उन्हें पूरा करने वाले एक ज़िले में हज़ार आदमी

ساتھ اپنے سے دوسرے دھرم کے لوگوں کے ساتھ ھمیں پریم اور سہن شیلتا کا ویوھار کرنا چاھئیے ."

اسکے بعد دیش کے آرتھک سوالوں پر آپنے اپنے وچار ظاھر کئے— کسان، مزدور، کنٹرول، یوجناؤں اور دیہاتی اُدیوگ دھندے . آپنے کہاکہ سرکار کنٹرول، تبھی لگائے جبکہ بہت ضروری ھوجائے. یوجناؤں کے بارے میں آپنے سفارش کی کہ ۲۵، ۲۶ اپریل کو دھلی میں جو تجویزیں سارے صوبوں کے بڑے وزیروں اور کانگریس سبھا پتیوں نے پیش کی ھیں اُن پر عمل کیا جائے .

ٹنڈن جی نے گاؤں کے دھندوں اور کھادی کے لئے زوردار اپیل کی. آپ نے صوبوں کی سرکاروں سے اپیل کی کہ مہنگی کہ کر کھادی کو چھوڑ دینا اُنہیں شوبھا نہیں دیتا . کانگریس سرکاروں کا فرض ھے کہ کھادی اور گاؤں کے دھندوں کے مال کا پرچار کریں اور اسکی زیادہ سے زیادہ ترقی میں مدد دیں گاؤں کے دھندوں میں آپنے بجلی کے استعمال کی سفارش کی .

ھماری موجودہ شکشا پدھتی پر آپنے کہا کہ ودیا یا گیان کے ساتھ ساتھ اسے چال چلن کی ترقی پر زور دینا چاھئیے. ساتھ ھی ساتھ چیزیں تیار کر کے اسمیں تعلیم کا خرچ بھی نکلنا چاھئے . "ھمارے آدرش اُونچے ھوں، ھم میں ڈسپلن ھونا چاھئیے ' ھمارے سماج کا نیتک استر اُونچا اُٹھنا چاھئیے تبھی ھم گاندھی جی کا رام راج قائم کر سکیں گے ."

آخر میں ٹنڈن جی نے کانگریس کے اندر کی گندگی پر دکھ ظاھر کیا . آپنے کہا کہ ھمارے ودھان میں کانگریس کے ممبر بننے کی جو شرطیں ھیں اُنھیں پورا کرنیوالے ایک ضلع میں ھزار آدمی

भी नहीं मिलेंगे. लेकिन रजिस्टर पर लाखों की तादाद है। कांगरेस में सिर्फ उन्हें ही आने दिया जाय जो ईमानदारी से आयें और ईमानदारी से काम करें.

इसके बाद विषय समिति में पास हुए प्रस्ताव एक के बाद एक लाये गये. हिन्दू मुसलिम सवाल पर पंडित जवाहर लाल नेहरू ने इस खुले इजलास में भी एक भाषन दिया. आपने कहा—

"यह तय होना चाहिये कि हमारे दिल मे क्या है, दिमाग में क्या है...मै चाहता हूँ कि जिस प्रस्ताव पर मै बोल रहा हूँ उसे आप समझें, उस पर अमल करें...

"मै बहुत नम्रता और अदब से लेकिन बहुत जोर से आप से कहना चाहता हूँ कि अगर शक हो तो आप इसे कबूल न करें...जो दो रास्तों पर चलता है वह कहीं का नहीं रहता ..

"हमें अपने गुस्से को रोकना है और सही क़दम उठाना है... अगर मैं किसी बात को सही समझता हूँ तो सारी दुनिया का मुकाबला करूँगा. सारे हिन्दुस्तान का मुकाबला करूँगा ..हाँ, डेमोक्रेसी में आप यह कर सकते हैं कि मुझे निकाल दें. लेकिन जब आप प्राइम मिनिस्ट्री से मुझे हटा देंगे तो फिर यह डेमोक्रेसी भी मुझे नहीं रोक सकती. इसलिये इस बारे मे डेमोक्रेसी का नाम न लाया जाय...कांगरेस मे अगर दम है तो डेमोक्रेसी का मुकाबला करे. बाहर आकर मुकाबला करे

"मै आशा करता हूँ कि आप लोगों से इसे स्वीकार करेंगे और

بھی نہیں [redacted] لیکن رجسٹر پر لاکھوں کی تعداد ھے ! کانگریس میں صرف اُنھیں ھي آنے دیا جائے جو ایمانداری سے آئیں اور ایمان‌داری سے کام کریں ۔

اِسکے بعد وشے سمیتی میں پاس ھوئے پرستاؤ ایک کے بعد ایک لائے گئے ۔ ھندو مسلم سوال پر پنڈت جواھر لال نہرو نے اس کھلے اجلاس میں بھی ایک بھاشن دیا ۔ آپنے کہا—

"یہ طے ھونا چاھئے کہ ھمارے دل میں کیا ھے، دماغ میں کیا ھے...... .. میں چاھتا ھوں کہ جس پرستاؤ پر میں بول رہا ھوں اُسے آپ سمجھیں، اُس پر عمل کریں .. .. ۔

"میں بہت نمرتا اور ادب سے لیکن بہت زور سے آپ سے کہنا چاھتا ھوں کہ اگر شک ھو تو آپ اِسے قبول نہ کریں ....جو دو راستوں پر چلتا ھے وہ کہیں کا نہیں رھتا.........

"ھمیں اپنے غصے کو روکنا ھے اور صحیح قدم اُٹھانا ھے... اگر میں کسی بات کو صحیح سمجھتا ھو تو ساری دنیا کا مقابلہ کرونگا سارے ھندستان کا مقابلہ کرونگا........ ھاں، یہ ڈیموکریسی میں آپ یہ کر سکتے ھیں کہ مجھے نکال دیں. لیکن جب آپ پرائم منسٹری سے مجھے ہٹا دینگے تو پھر یہ ڈیموکریسی بھي مجھے نہیں روک سکتی ۔ اسلئے اِس بارے میں ڈیموکریسی کا نام نہ لایا جائے.........کانگریس میں اگر دم ھے تو ڈیموکریسی کا مقابلہ کرے، باھر آکر مقابلہ کرے.........

میں آشا کرتا ھوں کہ آپ لوگوں سے اِسے سویکار کرینگے اور اس

कन्ट्रोल पर वोट

दूसरे दिन खुले इजलास की सुबह साढ़े आठ से साढ़े ग्यारह तक बैठक रही, फिर ढाई बजे से रात के ग्यारह बजे तक विषय समिति के सभी प्रस्ताव पास होते चले गए. केवल आर्थिक प्रोग्राम पर एक ठहराव था जिसमें कुछ गरमी आगई. इस ठहराव पर एक तरमीम थी कि कन्ट्रोल वाला पैरा एक दम निकाल दिया जाय. यूँ भी कन्ट्रोल के खिलाफ कई लोगों ने बड़े दर्द भरे लफ्ज़ों में अपील की थी.

रात के पौने दस हो रहे थे रुपये में चौदह आने प्रतिनिधि पंडाल से चले गए थे जब इस तरमीम पर वोट लिये गये तो १२८ हाथ इस तरमीम के मुआफिक उठे और १७२ खिलाफ. डिवीजन की माँग की गई. टंडन जी ने फौरन ही यह माँग मंजूर करली. यहाँ हम यह कहे बिना नहीं रह सकते कि टंडन जी जिस सभा में सभापति होंगे वहाँ किसी को यह शिकायत नहीं हो सकती कि मेरी बात न सुनी गई.

डिवीज़न के नाम से सारे पंडाल में गरमी आगई. ऊपर डेस पर से लोग नीचे उतरने लगे ताकि वोट दे सकें. उसी वक्त पंडित जवाहर लाल नेहरू भी कहीं बाहर से आ पहुंचे—जिनके आने से कन्ट्रोल वालों की जान में जान आ गई. बाक़ायदा टिकट देख कर गिनती हुई—तरमीम की तरफ ११७, खिलाफ १९०. तरमीम गिर गई और फिर दूसरी तरमीमें भी गिर गईं और असली ठहराव भारी बहुमत से पास हो गया.

کنٹرول پر ووٹ

دوسرے دن کھلے اجلاس کی صبح ساڑھے آٹھ سے ساڑھے گیارہ تک بیٹھک رہی ' پھر ڈھائی بجے سے رات کے گیارہ بجے تک وشے سمیتی کے سبھی پرستاؤ پاس ہوتے چلے گئے ۔ کیول آرتھک پروگرام پر ایک ٹھہراو تھا جس میں کچھ گرمی آگئی ۔ اس ٹھہراو پر ایک ترمیم تھی کہ کنٹرول والا پیرا ایک دم نکال دیا جائے ۔ یوں بھی کنٹرول کے خلاف کئی لوگوں نے بڑے درد بھرے لفظوں میں اپیل کی تھی ۔

رات کے پونے دس ہو رہے تھے ۔ روپے میں چودہ آنے پرتی ندھی پنڈال سے چلے گئے تھے جب اس ترمیم پر ووٹ لئے گئے تو ۱۲۸ ہاتھ اس ترمیم کے موافق اٹھے اور ۱۷۲ خلاف ۔ ڈویزن کی مانگ کی گئی ۔ ٹنڈن جی نے فوراً ہی یہ مانگ منظور کرلی ۔ یہاں ہم یہ کہے بنا نہیں رہ سکتے کہ ٹنڈن جی جس سبھا میں سبھاپتی ہونگے وہاں کسی کو یہ شکایت نہیں ہوسکتی کہ میری بات نہ سنی گئی ۔

ڈویزن کے نام سے سارے پنڈال میں گرمی آگئی ۔ اوپر ڈیس پر سے لوگ نیچے اترنے لگے تاکہ ووٹ دے سکیں ۔ اسی وقت پنڈت جواہر لال نہرو بھی کہیں باہر سے آپہونچے—جن کے آنے سے کنٹرول والوں کی جان میں جان آگئی ۔ باقاعدہ ٹکٹ دیکھکر گنتی ہوئی—ترمیم کی طرف ۱۱۷ ' خلاف ۱۹۰ ۔ ترمیم گر گئی اور پھر دوسری ترمیمیں بھی گر گئیں اور اصلی ٹھہراو بھاری بہومت سے پاس ہوگیا ۔

करोड़ का घाटा है—अगर सरकार के दिये हुए आंकड़ों का यक़ीन किया जाये तो, नहीं तो लोगों का ख़याल है कि इस घाटे की रक़म कहीं ज़्यादा है. कल कारख़ाने बन्द हो रहे हैं और बेकारों की तादाद पिछले दो बरस के मुक़ाबले में तीन लाख बढ़ गई है. पौंड पावने की रक़म घटकर आधे से कम रह गई है. रिज़र्व बैंक का बजट ४५० करोड़ रुपये से १३५ करोड़ रुपया रह गया. रुपये की क़ीमत का गिरना मुल्क के माली संकट को और भी बढ़ा देता है. चोर बाज़ार का क़िस्सा अलग है. हमारे वज़ीर कभी कन्ट्रोल तोड़ते हैं, तो कभी लगाते हैं, पर देश की हालत पर क़ाबू नहीं पा सकते. जो सरकार इस बहुमुंह अर्थ संकट के ज्वालामुखी पहाड़ पर बैठी हो और जिसे हर समय उस ज्वालामुखी के फट पड़ने का डर हो उसके लिये फ़ासिस्ट बनने से बच सकना आसान काम नहीं है. राजनीति राजनीति है, यहाँ हक़ीक़त की बात होनी चाहिये, भावुकता या जज़्बात की नहीं. और हक़ीक़त यह है कि अगर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ जैसी संस्था की तरफ़ कांग्रेस का यही रुख़ रहा तो कांग्रेस सरकार फ़ासिस्ट सरकार बने बिना नहीं रह सकता और फिर भारत की सरकार और पाकिस्तान की सरकारों में कोई बुनियादी फ़रक़ भी न रह जायेगा.

(५)

कई कांग्रेसी अख़बारों ने जैसे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के क़ानूनी क़रार दिये जाने का स्वागत किया था, वैसे ही वह कांग्रेस वर्किंग कमेटी के इस फ़ैसले का भी स्वागत कर रहे हैं. दलील यह है कि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ अब राजनीतिक संस्था नहीं रही, वह शुद्ध सांस्कृतिक संस्था है, इसलिये उसके मेम्बरों के कांग्रेस में शामिल

... کی رقم کہیں زیادہ ہے۔ کل کارخانے بند ہو رہے ہیں اور بیکاروں کی تعداد پچھلے دو برس کے مقابلے میں تین لاکھ بڑھ گئی ہے۔ پونڈ پاونے کی رقم گھٹ کر آدھے سے کم رہ گئی۔ ریزرو بینک کا بجٹ ۴۵۰ کروڑ روپئے سے ۱۳۵ کروڑ روپیہ رہ گیا۔ روپئے کی قیمت کا گرنا ملک کے مالی سنکٹ کو اور بھی بڑھا دیتا ہے۔ چور بازار کا قصہ الگ ہے۔ ہمارے وزیر کبھی کنٹرول توڑتے ہیں تو کبھی لگاتے ہیں، پر دیش کی حالت پر قابو نہیں پا سکتے۔ جو سرکار اس بہومنہے ارتھ سنکٹ کے جوالا مکھی پہاڑ پر بیٹھی ہو اور جسے ہر سمے اس جوالا مکھی کے پھٹ پڑنے کا ڈر ہو، اس کے لئے فاسسٹ بننے سے بچ سکنا آسان کام نہیں ہے۔ راج نیتی راج نیتی ہے، یہاں حقیقت کی بات ہونی چاہئے، بھاوکتا یا جذبات کی نہیں! اور حقیقت یہ ہے کہ اگر راشٹریہ سویم سیوک سنگھ جیسی سنستھا کی طرف کانگریس کا یہی رخ رہا تو کانگریس سرکار فاسسٹ بنے بنا نہیں رہ سکتی اور پھر بھارت کی سرکار اور پاکستان کی سرکاروں میں کوئی بنیادی فرق بھی نہ رہ جائے گا۔

کئی کانگریسی اخباروں نے جیسے راشٹریہ سویم سیوک سنگھ کے قانونی قرار دیئے جانے کا سواگت کیا تھا ویسے ہی وہ کانگریس ورکنگ کمیٹی کے اس فیصلے کا بھی سواگت کر رہے ہیں۔ دلیل یہ ہے کہ راشٹریہ سویم سیوک سنگھ اب راج نیتک سنستھا نہیں رہی، وہ شدھ سانسکرتک سنستھا ہے، اس لئے اس کے ممبروں کے کانگریس میں شامل

इससे पता चलता है कि कन्ट्रोल के मसले पर कांगरेस के प्रतिनिधियों के कितने जबरदस्त ख़याल हैं. डर है कि अगर पूरी तादाद में प्रतिनिधि मौजूद होते तो शायद यह ठहराव यूं ही पास न हो जाता. लेकिन अगर हो भी जाता तब भी हम यह अंदाज लगा सकते हैं कि देश का एक बड़ा भारी हिस्सा कन्ट्रोल के मामले में सरकारी नीति के खिलाफ़ है.

नासिक कांगरेस का आख़िरी प्रस्ताव—खादी का प्रचार—सभापति की तरफ से आया क्यों कि उसमें किसी को विरोध नहीं था.

टंडन जी की अपील

आख़िर में टंडन जी ने कहा—'हम यहाँ से स्फूर्ति ले कर जाते हैं, हमें यह निश्चय करना है कि कांगरेस को किस ओर चलना है, कांगरेस को रहना भी है या नहीं...जनता के और प्रतिनिधियों के उत्साह ने यह बतलाया है कि कांगरेस में अभी बहुत शक्ति है.

'देश ऊँचा चुनाव से नहीं होता; चरित्र से, काम से होता है.... हम कांगरेस संगठन को मजबूत करें...पैर जमादें तो कांगरेस कहीं अधिक शक्ति शालिनी हो सकती है...

"अगर मुझ से पूछा जाय कि दोनों में क्या पसन्द है—संसार का ऊँचे से ऊँचा पद और आपके हृदय में स्थान—तो मुझे चुनने में देर नहीं लगेगी—पद तो निष्प्रान है...."

इस सम्बन्ध में टंडन जी ने एक कहानी सुनाई—एक राजा एक [illegible] तो कहीं से बंसी की

اس سے پتہ چلتا ھے کہ کنٹرول کے مسئلے پر کانگریس کے پرتیندھیوں کے کتنے زبردست خیال ھیں. ڈر ھے کہ اگر پوری تعداد میں پرتی ندھی موجود ھوتے تو شاید یہ ٹھہراؤ یوں ھی پاس نہ ھو جاتا . لیکن اگر ھو بھی جاتا تب بھی ھم یہ انداز لگا سکتے ھیں کہ دیش کا ایک بڑا بھاری حصہ کنٹرول کے معاملے میں سرکاری نیتی کے خلاف ھے .

ناسک کانگریس کا آخری پرستاو—کھادی کا پرچار—سبھاپتی کی طرف سے آیا کیونکہ اُس میں کسی کو ورودھ نہیں تھا .

ٹنڈن جی کی اپیل

آخر میں ٹنڈن جی نے کہا—'' ھم یہاں سے اسپھورتی لے کر جاتے ھیں ' ھمیں یہ نشچے کرنا ھے کہ کانگریس کو کس اور چلنا ھے ' کانگریس کو رھنا بھی ھے یا نہیں . ...جنتا کے اور پرتی ندھیوں کے اُتساہ نے یہ بتلایا ھے کہ کانگریس میں ابھی بہت شکتی ھے .

''دیش اُونچا چناؤ سے نہیں ھوتا؛ چرتر سے' کام سے ھوتا ھے ... . ھم کانگریس سنگٹھن کو مضبوط کریں....... .پھر جمادیں تو کانگریس کہیں ادھک شکتی شالنی ھو سکتی ھے . ...

''اگر مجھ سے پوچھا جائے کہ دونوں میں کیا پسند ھے—سنسار کا اونچے سے اُونچا پد اور آپکے ھردیہ میں استھان—تو مجھے چننے میں دیر نہیں لگیگی—پد تو نشپران ھے........''

اس سمبندھ میں ٹنڈن جی نے ایک کہانی سنائی—ایک راجہ ایک بار جب جنگل میں شکار کر رھا تھا تو کہیں سے بنسی کی آواز آئی . [illegible]

हो कर गा रहा था. राजा उस पर खुश हो गये और उससे अपने साथ चलने को कहा. राजा के यहां पहुँच कर, धीरे धीरे तरक़्क़ी करके, वह आदमी प्रधान वज़ीर बन गया. कुछ लोगों को ईर्षा हुई. राजा से शिकायत की गई कि एक कोठरी है जंगल में जहाँ इसने अपने राज काज की कमाई रख छोड़ी है जिससे सब को असंतोष है. राजा ने बहुत संकोच के साथ यह बात उससे कही. वह फ़ौरन ही राजा के साथ जंगल को गया और वह कोठरी खोल दिखाई. राजा ने देखा कि उसके अंदर सिर्फ़ गड़रिये की बंसी है और उसके फटे कपड़े—जिन्हें पहने राजा ने उसे पहली बार देखा था. राजा को बहुत ही शर्म आई और माफ़ी मांगी, लेकिन गड़रिये ने राजा की न सुनी, अपने फटे कपड़े पहने और बंसी लेकर मस्ती से गाता हुआ वह जंगल में निकल गया!

टंडन जी ने कहा कि हम सब भी फटे कपड़ों के आदी हों और स्वराज की बंसी वाले बन जायं. चुनाव में पड़ कर तेजस्विता को मंद न होने दें. कांग्रेस संगठन को ऊँचा करें और अपने चरित्र में मज़बूती लायं.

स्वागत समिति को, स्वयंसेवकों और नासिक की जनता को धन्यवाद देकर टंडन जी ने नासिक का इजलास ख़तम किया.

× × ×

आगे क्या होगा – कांग्रेस कहाँ तक अपनी पुरानी ऊँचाई को पा सकेगी—यह तो अभी नहीं कहा जा सकता. लेकिन नासिक कांग्रेस से एक चीज़ साफ़ हो गई कि पंडित जवाहर लाल नेहरू और बाबू पुरुषोत्तम दास टंडन दोनों उतारू हैं देश की भलाई पर और

هو کر گا رہا تھا. راجہ اُس پر خوش ہوگئے اور اُس سے اپنے ساتھ چلنے کو کہا. راجہ کے یہاں پہونچ کر، دھیرے دھیرے ترقی کرکے وہ آدمی پردھان وزیر بن گیا. کچھ لوگوں کو ایرشا ہوئی. راجہ سے شکایت کی گئی کہ ایک کوٹھری ہے جنگل میں جہاں اس نے اپنے راج کاج کی کمائی رکھ چھوڑی ہے جس سے سب کو اسنتوش ہے. راجہ نے بہت ہی سنکوچ کے ساتھ یہ بات اُس سے کہی. وہ فوراً ہی راجہ کے ساتھ جنگل کو گیا اور وہ کوٹھری کھول دکھائی. راجہ نے دیکھا کہ اُس کے اندر صرف گڈریئے کی بنسی ہے اور اُسکے پھٹے کپڑے—جنھیں پہنے راجہ نے اُسے پہلی بار دیکھا تھا. راجہ کو بہت ہی شرم آئی اور معافی مانگی لیکن گڈریئے نے راجہ کی نہ سنی، اپنے پھٹے کپڑے پہنے اور بنسی لیکر مستی سے گاتا ہوا وہ جنگل میں نکل گیا!

ٹنڈن جی نے کہا کہ ہم سب بھی پھٹے کپڑوں کے عادی ہوں اور سوراج کی بنسی والے بن جائیں. چناؤ میں پڑ کر تیجسوتا کو مند نہ ہونے دیں، کانگریس سنگٹھن کو اونچا کریں اور اپنے چرتر میں مضبوطی لائیں.

سواگت سمیتی کو، سویم سیوکوں اور ناسک کی جنتا کو دھنیہ واد دے کر ٹنڈن جی نے ناسک کا اجلاس ختم کیا.

× × × × ×

آگے کیا ہوگا—کانگریس کہانتک اپنی پرانی اونچائی کو پاسکے گی—یہ تو ابھی نہیں کہا جا سکتا. لیکن ناسک کانگریس سے ایک چیز صاف ہو گئی کہ پنڈت جواہر لال نہرو اور بابو پرشوتم داس ٹنڈن دونوں اُتارو ہیں دیش کی بھلائی پر اور

कांगरेस को पाक साफ बनाने पर. टंडन जी की सादगी, उनका खादी व ग्रामोद्योग प्रेम सोने पर सुहागा है.

हमें यक़ीन है कि टंडन जी कांगरेस संगठन को काफी शुद्ध और मजबूत कर सकते हैं. लेकिन किस तरह. यह एक बड़ा सवाल है, जिस पर कांगरेस और हिन्दुस्तान दोनों का भविष्य निरभर है.

गांधीजी का बस्ट यानी शिरो मोर्ति

ऊटी से कोन्नूर जाने वाली सड़क के किनारे अरवनकाडू में सरकार की कारडाइट (बिना धुएं की बारूद) बनाने की फैक्टरी है. उसके मुख्य फाटक पर गांधी जी का एक बड़ा बस्ट यानी शिरो मूर्ति बिठाई गई है. सड़क से आने जाने वाले राहगीरों का ध्यान उसकी ओर जाये बिना नहीं रहता. उस शान्ति के प्रेमी महात्मा से भक्ति प्रकट करने का यह ढंग कैसा अजीब है. इसकी कल्पना ही की जा सकती है, बयान नहीं हो सकता. यह सच है कि हम में से बहुतों ने गांधी जी का शान्ति प्रेम अपनाया नहीं है. कई ने तो उनके राजकाजी, आर्थिक और समाजी सिद्धान्तों को भी नहीं माना है. लेकिन एक कारडाइट फैक्टरी के फाटक पर – जहाँ फ़ौजी इसतेमाल के लिये बड़े पैमाने पर हथियार बनाये जा रहे हों— उनकी मूर्ति क़ायम करना और इस तरह उस महान शान्ति प्रेमी आत्मा को पवित्र याद की बेइज्ज़ती करना बहुत ही नामुनासिब मालूम होता है. क्या हमें ऐसा करना चाहिये ?

ल. न. राव.

उटकामंड ३-६-५०.   मेम्बर, भारत सेवक समाज,

کانگریس کو پاک صاف بنانے پر. ٹنڈن جی کی سادگی' اُنکا کھادی و گرام ادیوگ پریم سونے پر سہاگا ہے .

ہمیں یقین ہے کہ ٹنڈن جی کانگریس سنگٹھن کو کافی شدھ اور مضبوط کر سکتے ہیں . لیکن کس طرح' یہ ایک بڑا سوال ہے' جس پر کانگریس اور ہندستان دونوں کا بھوشیہ نربھر ہے .

گاندھی جی کا بسٹ یعنی شِرومورتی

اوٹی سے کونئور جانے والی سڑک کے کنارے اروں کاڈو میں سرکار کی کارڈائٹ (بنا دھوئیں کی بارود) بنانے کی فیکٹری ہے. اُس کے مکھیہ پھاٹک پر گاندھی جی کا ایک بڑا بسٹ یعنی شِرو مورتی بٹھائی گئی ہے . سڑک سے آنے جانے والے راہگیروں کا دھیان اُسکی اور جائے بنا نہیں رہتا . اُس شانتی کے پریمی مہاتما سے بھکتی پرکٹ کرنے کا یہ ڈھنگ کیسا عجیب ہے' اِسکی کلپنا ہی کی جا سکتی ہے' بیان نہیں ہو سکتا . یہ سچ ہے کہ ہم میں سے بہتوں نے گاندھی جی کا شانتی پریم اپنایا نہیں ہے' کئی نے تو اُن کے راج کاجی' آرتھک اور سماجی سدھانتوں کو بھی نہیں مانا ہے . لیکن ایک کارڈائٹ فیکٹری کے پھاٹک پر—جہاں فوجی استعمال کے لئے بڑے پیمانے پر ہتھیار بنائے جا رہے ہوں - اُن کی مورتی قائم کرنا اور اسطرح اُس مہان شانتی پریمی آتما کی پوتر یاد کی بے عزتی کرنا بہت ہی نامناسب معلوم ہوتا ہے . کیا ہمیں ایسا کرنا چاہئے ؟

ل . ن . راؤ

ممبر بھارت سیوک سماج   اُوٹاکمنڈ ۳-۶-۵۰
(ہریجن سے)

करोरपति राजपति

(भाई अब्दुल हलीम अंसारी)

राजपति, राज यानी राष्ट्र का सेवक और सरदार होता है.

राजपति, बिला ताज का नरेश होता है लेकिन फिर भी शाही उसका उद्देश होता है.

राजपति, राज का नाज़िम और कौम का ख़ादिम होता है यानी राज का नियम चलाने वाला और राष्ट्र की सेवा करने वाला !

राजपति जनता का रक्षक भी होता है और शुभ चिन्तक भी.

राजपति, ओहदे दार भी होता है और ख़िदमतगार भी.

ख़िदमत से वह पद पाता है और पद से इज़्ज़त

लेकिन वह इज़्ज़त कब तक ?

जब तक वह सेवा की ज़िम्मेदारियां पूरी करे और जब तक ज़िम्मेदारियों का बोझ अपने कन्धों पर उठाये रखे, जब तक वह जनता की चिन्ता छीन ले और जब तक अपना सुख खोकर उसका दुख दूर करे.

जब तक वह परजा को आराम पहुंचाये. आराम उसको पहुंचा कर अपनी आत्मा को शान्ति दे और सेवा में आनन्द पाये.

बेशक जनराज सरमायादारी के ख़िलाफ़ होता है. यही कारन है कि उसकी हद में सरमायादार को घबराहट मालूम पड़ती है और

کرور پتی راج پتی

(بھائي عبدالحلیم انصاري)

راج پتی، راج یعنی راشٹر کا سیوک اور سردار ھوتا ھے .

راج پتی، بلا تاج کا نریس ھوتا ھے لیکن پھر بھی شاھی اُس کا اُدیش ھوتا ھے .

راج پتی، راج کا ناظم اور قوم کا خادم ھوتا ھے یعني راج کا نیم چلانے والا اور راشٹر کی سیوا کرنے والا !

راج پتی، جنتا کا رکشک بھی ھوتا ھے اور شبھ چنتک بھي

راج پتی، عہدےدار بھی ھوتا ھے اور خدمت گار بھی .

خدمت سے وہ پد پاتا ھے اور پد سے عزت

لیکن وہ عزت کب تک ؟

جب تک وہ سیوا کي ذمے داریاں پوری کرے اور جب تک ذمے داریوں کا بوجھ اپنے کندھوں پر اُٹھائے رکھے جب تک وہ جنتا کی چنتا چھین لے اور جب تک اپنا سکھ کھوکر اُس کا دکھ دور کرے .

جب تک وہ پرجا کو آرام پہونچائے . آرام اُسکو پہونچا کر اپنی آتما کو شانتي دے اور سیوا میں آنند پائے .

بے شک جن راج سرمایہ داری کے خلاف ھوتا ھے . یہي کارن ھے کہ اُس کي حد میں سرمایہ دار کو گھبراھٹ معلوم پڑتی ھے اور

जीवाद को ख़ौफ़ और हिरास ! लेकिन यह अजीब बात कि म्हूरियत का सदर सरमायादार के ख़िलाफ़ होते हुए ख़ुद अपनी जगह पर पक्का सरमायादार होता है.

बेशक, राजपति बाज़ जगह लखपति होता है और बाज़ जगह करोरपति !

जहाँ जनता करोरों की गिनती और शुमार में है. वहाँ राजपति करोरपति है. जब वह करोरपति है तो उसकी ज़िम्मेदारियाँ भी करोरों गुना हैं और बोझ भी करोरों का, इसलिये उसको होशियार रहना चाहिये कि उसे हिसाब भी करोरों के चुकाना होंगे और जवाब भी करोरों देना होंगे.

हिसाब के दिन

ख़ुदा के हुज़ूर में

भगवान के न्याय मन्दिर में.

देश की मरदुम शुमारी यानी देश की मिली जुली आबादी उसकी ताक़त, शक्ति और दौलत है—वह सारा जन ही उसका धन और सरमाया है. वह सरमाया ही उसका ज़िन्दा भंडार है. उसी ज़िन्दा भंडार का वह सरमायादार है और उसी शक्ति का वह रक्षक, इस लिये यह कहना ठीक कि "हमारा राजपति करोरपति है."

پونجی واد کو خوف اور هراس ! لیکن یہ عجیب بات کہ جمہوریت کا صدر سرمایہ‌دار کے خلاف هوتے هوئے خود اپنی جگہ پر پکا سرمایہ‌دار هوتا ھے .

بےشک' راج پتی بعض جگہ لکھ پتی هوتا ھے اور بعض جگہ کرور پتی !

جہاں جنتا کروروں کی گنتی اور شمار میں ھے' وھاں راج پتی کرور پتی ھے . جب وہ کرور پتی ھے تو اُس کی ذمے داریاں بھی کروروں گنا ھیں اور بوجھ بھی کروروں کا اِس لئے اُس کو هوشیار رھنا چاھئے کہ اُسے حساب بھی کروروں کے چکانا هوں گے اور جواب بھی کروروں دینا هوں گے .

حساب کے دن

خدا کے حضور میں

بھگوان کے نیائے مندر میں .

دیش کی مردم شماری یعنی دیش کی ملی جلی آبادی اُس کی طاقت' شکتی اور دولت ھے—وہ سارا جن ھی اُس کا دھن اور سرمایہ ھے . وہ سرمایہ ھی اُس کا زندہ بھنڈار ھے . اُسی زندہ بھنڈار کا وہ سرمایہ‌دار ھے اور اُسی شکتی کا وہ رکشک' اِس لئے یہ کہنا ٹھیک کہ "ھمارا راج پتی کرور پتی ھے ."

ऐटम मन्थन (मथना)

(भाई जगदीश एम. एस-सी.)

[ऐटम बम के सिलसिले का यह तीसरा लेख 'नयाहिन्द' में छापा जा रहा है. इस लेख में बताया गया है कि ऐटम बम इंसानों की जान लेने का कितना भयानक हथियार है और उससे कैसे कैसे नुक़सान होते हैं. इस लेख में हाइड्रोजन बम बनाने की क्रिया भी समझाई गई है.—एडीटर]

यूरेनियम (Uranium) और प्लूटोनियम (Plutonium) के ऐटम बम बन गये फिर भी बड़ी बड़ी क़ौमों को चैन न आया. एक दूसरे के डर से इनमें यही कोशिश जारी रही कि सब से ताक़तवर ऐटम बम का मालिक वही हो. इसकी किसी को परवा नहीं कि दुनिया की आम जनता का ही, जो किसी लड़ाई झगड़े में नहीं पड़ती, नाश होगा. बड़ी बड़ी क़ौमों के सरदार आपस के खिचाव और लालच में इस बात को भूल गए. सब को यक़ीन हो गया कि जो मुल्क सबसे ताक़तवर ऐटम बम का मालिक होगा वही दुनिया फ़तह करेगा.

ऐटम बम की ताक़त को बढ़ाने के लिये नए नए तरीक़े सोचे जाने लगे. दस सेर से ज्यादा यूरेनियम और प्लूटोनियम एक जगह जमा नहीं किया जा सकता था. इसलिये ज्यादा बड़ा यूरेनियम का ऐटम बम नहीं बन सकता था. इस के लिये दूसरी ही तरकीब सोची

ایٹم منتھن (متھنا)

(بھائی جگدیش ایم . ایس سی .)

[ایٹم بم کے سلسلے کا یہ تیسرا لیکھ 'نیا ھند' میں چھاپا جا رھا ھے . اس لیکھ میں بتایا گیا ھے کہ ایٹم بم انسانوں کی جان لینے کا کتنا بھیانک ھتھیار ھے اور اُس سے کیسے کیسے نقصان ھوتے ھیں . اس لیکھ میں ھائیڈروجن بم بنانے کی کریا بھی سمجھائی گئی ھے .—ایڈیٹر]

یوریئم (Uranium) اور پلوٹونیم (Plutonium) کے ایٹم بم بن گئے پھر بھی بڑی بڑی قوموں کو چین نہ آیا . ایک دوسرے کے ڈر سے ان میں یہی کوشش جاری رھی کہ سب سے طاقتور ایٹم بم کا مالک وھی ھو . اسکی کسی کو پرواہ نہیں کہ دنیا کی عام جنتا کا ھی' جو کسی لڑائی جھگڑے میں نہیں پڑتی' ناش ھوگا . بڑی بڑی قوموں کے سردار آپس کے کھنچاؤ اور لالچ میں اس بات کو بھول گئے . سب کو یقین ھو گیا کہ جو ملک سب سے طاقتور ایٹم بم کا مالک ھو گا وھی دنیا فتح کرے گا .

ایٹم بم کی طاقت کو بڑھانے کے لئے نئے نئے طریقے سوچے جانے لگے . دس سیر سے زیادہ یوریئیم اور پلوٹونیم ایک جگہ جمع نہیں کیا جاسکتا تھا . اس لئے زیادہ بڑا یوریئیم کا ایٹم بم نہیں بن سکتا تھا . اسکے لئے دوسری ھی ترکیب سوچی

गई. भारी भारी ऐटम बीज के फटने से जो ताक़त निकलती है उस का बम बन ही गया. दूसरी तरफ़ हलके हलके ऐटम बीज में न्यूट्रोन (Neutron) प्रोटोन (Proton) की ईंटें जोड़ कर ज़रा भारी तत्व के बनाने से भी ताक़त बाहर निकलती है.

सब से मज़बूत ऐटम बीज हीलियम (Helium) नाम के तत्व का होता है. इस के ऐटम बीज का नाम ऐलफ़ा पारटिकिल (Alpha particle) है जो पहले ही बताया जा चुका है. यह ऐलफ़ा पारटिकिल रेडियम (Radium) के ऐटम बम के टूटने से बाहर निकलता है और इस की चोट से दूसरे तत्व के ऐटम बीज तो टूट गये पर इस पर कभी कोई असर न हुआ. पहले यह लिखा जा चुका है कि ऐलफ़ा पारटिकिल चार प्रोटोन और दो इलेक्ट्रोन (Electron) का जुड़वाँ बना है. यह चार ईंट का जोड़ इतना मज़बूत साबित हुआ कि साइन्स वालों ने सोचा कि इसके बनने से शायद ताक़त मिले. भारी हाइड्रोजन (Hydrogen) H_2 के बारे में बताया जा चुका है कि इसके ऐटम बीज में एक प्रोटोन और एक न्यूट्रोन होता है और यह न्यूट्रोन की टक्कर से आसानी से टूट जाता है. भारी हाइड्रोजन का ऐटम बीज ऐलफ़ा पारटिकिल का ठीक आधा होता है. अगर किसी तरह भारी हाइड्रोजन के दो ऐटम बीजों को आपस में मिला दिया जाय तो ऐलफ़ा पारटिकिल बन जायेगा और इस तरह भारी हाइड्रोजन से हीलियम बन सकेगा.

गनित (Mathematics) से मालूम हुआ कि इस क्रिया से बहुत बड़ी ताक़त निकलेगी. पर कड़ी के चालू करने के लिये शुरू में इतनी गरमी

گئی . بھاري بھاري ایٹم بیج کے پھٹنے سے جو طاقت نکلتی هے اسکا بم بن هی گیا . دوسری طرف هلکے هلکے ایٹم بیج میں نیوٹرون (Neutron) پروٹون (Proton) کی اینٹیں جوڑ کر ذرا بھاری تتو کے بنانے سے بھی طاقت باهر نکلتی هے .

سب سے مضبوط ایٹم بیج هیلیم (Helium) نام کے تتو کا هوتا هے . اس کے ایٹم بیج کا نام ایلفا پارٹیکل (Alpha particle) هے جو پہلے هی بتایا جاچکا هے . یه ایلفا پارٹیکل ریڈیم (Radium) کے ایٹم کے ٹوٹنے سے باهر نکلتا هے اور اسکی چوٹ سے دوسرے تتو کے ایٹم بیج تو ٹوٹ گئے پر اس پر کبھی کوئی اثر نه هوا . پہلے یه لکھا جا چکا هے که ایلفا پارٹیکل چار پروٹون اور دو الیکٹرون (Electron) کا جڑواں بنا هے . یه چار اینٹ کا جوڑ اتنا مضبوط ثابت هوا که سائنس والوں نے سوچا که اسکے بننے سے شاید طاقت ملے . بھاری هائیڈروجن (Hydrogen) H_2 کے بارے میں بتایا جا چکا هے که اس کے ایٹم بیج میں ایک پروٹون اور ایک نیوٹرون هوتا هے اور یه نیوٹرون کی ٹکر سے آسانی سے ٹوٹ جاتا هے . بھاري هائیڈروجن کا ایٹم بیج ایلفا پارٹیکل کا ٹھیک آدھا هوتا هے . اگر کسي طرح بھاري هائیڈروجن کے دو ایٹم بیجوں کو آپس میں ملا دیا جائے تو ایلفا پارٹیکل بن جائیگا اور اسطرح بھاری هائیڈروجن سے هیلیم بن سکیگا .

گنت (Mathematics) سے معلوم هوا که اس کریا سے بہت بڑی طاقت نکلیگی . پر کڑی کے چالوکرنے کے لئے شروع میں اتنی گرمی اور دباو کی ضرورت هے جو یا تو سورج کے اندرونی حصے میں موجود

है या ऐटम बम के फटने पर जाहिर होती है गरमी दस लाख डिगरी की और दबाव भी कई लाख मन का चाहिये यह तभी हो सकता है जब भारी हाइड्रोजन के बीचो बीच में यूरेनियम या प्लूटोनियम का ऐटम बम फटे. इस तरह का बम बनाने की क्रिया शुरू हो गई. इस बम का नाम हाइड्रोजन बम (Hydrogen Bomb) रखा गया है. यह बम जितना चाहें उतना बड़ा बना सकते हैं क्योंकि हाइड्रोजन की मात्रा पर कोई क़ैद नहीं. इसके जो ख़तरनाक असर हो सकते हैं उन पर भी सोच विचार किया जा रहा है.

एन्सटाइन (Einstein) ने दुनिया को आगाह किया है कि हाइड्रोजन बम बनाने की क्रिया रोक दो वरना दुनिया का अंत दूर नहीं. कम से कम इन्सानी सभ्यता कई हज़ार बरस पीछे चली जायगी और अगर आने वाली इन्सानी नसल पर बुरा असर न पड़े तो समझिये कि जान बची और लाखों पाए. ग़ौर करने की बात है कि ऐसा कौन सा बड़ा उसूल दुनिया के सामने है जिस की वेदी पर यह नरमेध यज्ञ किया जाए जिसमें दुनिया और मानव जाति का नाश ही नाश है और उसके ख़तम हो जाने की पूरी संभावना है. अफ़सोस की बात तो यह है कि दुनिया की क़िस्मत का फ़ैसला अब रूस और अमरीका के हाथ में चला गया है जो साम्राजशाही के सुनहरे ख़्वाब देखते हुए मानव जाति को एक ऐसे गढ़े की तरफ़ लिये जा रहे हैं जिसमें से फिर निकलने का कोई रास्ता शायद न मिले. अब जनता अपना उद्धार अपने हाथों ही कर सकती है दूसरा कोई चारा नहीं.

ھے یا ایٹم بم کے پھٹنے پر ظاھر ھوتی ھے . گرمی دس لاکھ ڈگری کی اور دباؤ بھی کئی لاکھ من کا چاھئے . یہ تبھی ھوسکتا ھے جب بھاری ھائیڈروجن کے بیچوں بیچ میں یورینیم یا پلوٹونیم کا ایٹم بم پھٹے . اس طرح کا بم بنانے کی کریا شروع ھوگئی . اس بم کا نام ھائیڈروجن بم (Hydrogen Bomb) رکھا گیا ھے . یہ بم جتنا چاھیں اتنا بڑا بنا سکتے ھیں کیونکہ ھائیڈروجن کی ماترا پر کوئی قید نہیں . اسکے جو خطرناک اثر ھوسکتے ھیں ان پر بھی سوچ وچار کیا جا رھا ھے .

ایلسٹائن (Einstein) نے دنیا کو آگاہ کیا ھے کہ ھائیڈروجن بم بنانے کی کریا روک دو ورنہ دنیا کا انت دور نہیں . کم سے کم انسانی سبھیتا کئی ھزار برس پیچھے چلی جائیگی اور اگر آنے والی انسانی نسل پر برا اثر نہ پڑے تو سمجھئے کہ جان بچی اور لاکھوں پائے . غور کرنے کی بات ھے کہ ایسا کون سا بڑا اصول دنیا کے سامنے ھے جس کی ویدی پر یہ نر میدھ یگیہ کیا جائے جس میں دنیا اور مانو جاتی کا ناش ھی ناش ھے اور اس کے ختم ھوجانے کی پوری سمبھاونا ھے . افسوس کی بات تو یہ ھے کہ دنیا کی قسمت کا فیصلہ اب روس اور امریکہ کے ھاتھ میں چلا گیا ھے جو سامراج شاھی کے سنہرے خواب دیکھتے ھوئے مانو جاتی کو ایک ایسے گڑھے کی طرف لئے جارھے ھیں جس میں سے پھر نکلنے کا کوئی راستہ شاید نہ ملے . اب جنتا اپنا ادھار اپنے ھاتھوں ھی کر سکتی ھے دوسرا کوئی چارہ نہیں .

ऐटम बम के फटने का जो नतीजा होता है वह हम नीचे लिख रहे हैं :—

(१) ऐटम बम फटने से सूरज से भी तेज रोशनी निकलती है जिस से लोग अंधे हो जाते हैं या उनकी आखें खराब जाती हैं.

(२) दस लाख डिगरी सेंटीग्रेड (Centigrade) की तेज लपट से सभी चीजें या तो जल जाती हैं या पिघल जाती हैं.

(३) बम फटने से जो ऐटमी किरनें निकलती हैं वह शरीर में घाव कर देता हैं. बाल झड़ जाते हैं. खून बनना बंद हो जाता है. कैन्सर (Cancer) होने की ज्यादा संभावना रहती है. यहाँ तक कि इन्सानी नसल के बीज में गड़बड़ी हो जाती है और अजीब अजीब तरह की सन्तानें पैदा होने लगती हैं.

(४) जिस जगह ऐटमी किरनें पड़ती हैं वहाँ की मिट्टी से भी यह किरनें निकलने लगती हैं. यह असर महीनों तक रहता है.

(५) हवा में ऐटम बम फटने से जो धूल उड़ती है उसमें से भी ऐटमी किरनें निकलती हैं. यह धूल जहाँ गिरती है वहाँ सभी चीजों का नाश कर देती है.

(६) समुन्द्र में ऐटम बम फटने से जो पानी भाप बन कर उड़ जाता है उसमें भी ऐटमी किरनें होती हैं और यह भी जीवधारियों के लिये खतरनाक हैं. जो जहाज इस पानी में चलेगा उसमें से भी यह किरनें निकलने लगेंगी. ऐसे जहाज में कोई आदमी काम नहीं कर सकता. यह भाप समुन्द्र के किनारे के शहरों को भी बरबाद कर देगी.

(७) एक खोज से पता लगा है कि ऐटमी धूल तो ऐटम बम से भी ज्यादा खतरनाक है क्योंकि वह चुपचाप शहर पर छा सकती है और सब का नाश कर सकता है.

ایٹم بم کے پھٹنے کا جو نتیجہ ہوتا ہے وہ ہم نیچے لکھ رہے ہیں :—

(1) ایٹم بم پھٹنے سے سورج سے بھی تیز روشنی نکلتی ہے جس سے لوگ اندھے ہوجاتے ہیں یا اُنکی آنکھیں خراب جاتی ہیں .

(2) دس لاکھ ڈگری سینٹی گریڈ (Centigrade) کی تیز لپٹ سے سبھی چیزیں یا تو جل جاتی ہیں یا پگھل جاتی ہیں .

(3) بم پھٹنے سے جو ایٹمی کرنیں نکلتی ہیں وہ شریر میں گھاؤ کر دیتی ہیں . بال جھڑ جاتے ہیں . خون بننا بند ہوجاتا ہے . کینسر (Cancer) ہونے کی زیادہ سمبھاونا رہتی ہے . یہاں تک کہ اِنسانی نسل کے بیج میں گڑبڑی ہوجاتی ہے اور عجیب عجیب طرح کی سنتانیں پیدا ہونے لگتی ہیں .

(4) جس جگہ ایٹمی کرنیں پڑتی ہیں وہاں کی مٹی سے بھی یہ کرنیں نکلنے لگتی ہیں . یہ اثر مہینوں تک رہتا ہے .

(5) ہوا میں ایٹم بم پھٹنے سے جو دھول اُڑتی ہے اُس میں سے بھی ایٹمی کرنیں نکلتی ہیں . یہ دھول جہاں گرتی ہے وہاں سبھی چیزوں کا ناش کر دیتی ہے .

(6) سمندر میں ایٹم پھٹنے سے جو پانی بھاپ بن کر اڑ جاتا ہے اُس میں بھی ایٹمی کرنیں ہوتی ہیں اور یہ بھی جیو دھاریوں کے لئے خطرناک ہیں . جو جہاز اس پانی میں چلیگا اُس میں سے بھی یہ کرنیں نکلنے لگینگی . ایسے جہاز میں کوئی آدمی کام نہیں کرسکتا . یہ بھاپ سمندر کے کنارے کے شہروں کو بھی برباد کر دیگی .

(7) ایک کھوج سے پتہ لگا ہے کہ ایٹمی دھول تو ایٹم بم سے بھی زیادہ خطرناک ہے کیونکہ وہ چپ چاپ شہر پر چھا سکتی ہے اور سب کا ناش کر سکتی ہے .

महात्मा गांधी के नाम

(भाई ख़्वाजा अहमद अब्बास)

मुक़ाम जन्नत या स्वर्ग,
अल्लामियाँ या भगवान की मार्फ़त,
जनाब महात्मा गांधी जी साहेब को मिले

प्यारे बापू, हमारे बापू,

तीन बरस के बाद हम दोनों अनवर और गोपाल मिलकर आपको यह दूसरी चिट्ठी लिख रहे हैं. एक ख़ास वजह से.

आपके स्वर्गवासी हो जाने के थोड़े दिन बाद ही हमने आपको चिट्ठी लिखी थी. उम्मीद है, आपको ज़रूर मिली होगी. वह चिट्ठी अनवर ने हम सब, यानी अनवर के छोटे भाई बुन्दू और छोटी बहिन ज़ैनब और गोपाल और गोपाल की बहिन मीता और मोहन की तरफ़ से लिखी थी. (मोहन तो आपको याद होगा ही. वही शरनार्थी लड़का जो कई महीने तक मुंह से कुछ नहीं बोलता था और जिसकी आंखें कहती थीं, बापू को ख़त लिखो बापू, अब वह बोलने लगा है और आपको बहुत याद करता है. अगर आप हमारे पास होते तो उस जैसे लाखों शरनार्थियों को इतने दुख न सहने पड़ते. और हाँ, बापू, हम एक रिफ़्यूजी केम्प देखने गए थे. वहाँ लोग बड़ी तकलीफ़ में थे. मगर उसका हाल हम आगे चलकर लिखेंगे.)

مہاتما گاندھی کے نام

(بھائی خواجہ احمد عباس)

مقام جنت یا سورگ،
اللہ میاں یا بھگوان کی معرفت،
جناب مہاتما گاندھی جی صاحب کو ملے

پیارے باپو، ہمارے باپو،

تین برس کے بعد ہم دونوں انور اور گوپال مل کر آپکو یہ دوسری چٹھی لکھ رہے ہیں . ایک خاص وجہ سے.

آپکے سورگ واسی ہو جانے کے تھوڑے دن بعد ہی ہم نے آپکو چٹھی لکھی تھی . امید ہے، آپکو ضرور ملی ہوگی . وہ چٹھی انور نے ہم سب، یعنی انور کے چھوٹے بھائی بندو اور چھوٹی بہن زینب اور گوپال اور گوپال کی بہن میتا اور موہن کی طرف سے لکھی تھی . (موہن تو آپکو یاد ہوگا ہی . وہی شرنارتھی لڑکا جو کئی مہینے تک منہ سے کچھ نہیں بولتا تھا اور جسکی آنکھیں کہتی تھیں، باپو کو خط لکھو . باپو، اب وہ بولنے لگا ہے اور آپکو بہت یاد کرتا ہے . اگر آپ ہمارے پاس ہوتے تو اس جیسے لاکھوں شرنارتھیوں کو اتنے دکھ نہ سہنے پڑتے . اور ہاں، باپو، ہم ایک رفیوجی کیمپ دیکھنے گئے تھے . وہاں لوگ بڑی تکلیف میں تھے . مگر اسکا حال ہم آگے چل کر لکھینگے .)

होने पर कोई ऐतराज़ नहीं होना चाहिये. राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ज़रूर सांस्कृतिक संस्था है. पर वह कौन सी संस्कृति है जिसका वह हामी है. भारती संस्कृति का नहीं. राष्ट्रीय या क़ौमी संस्कृति की नहीं. वह हामी है हिन्दू संस्कृति का और हिन्दू संस्कृति भी उसके सबसे गये गुज़रे (तंग फ़िरक़ा परस्त) मानी में. अगर वह किसी मानी में भारती संस्कृति (तमद्दुन) का समर्थक है, तो इस मानी में कि भारती के मानी हो हिन्दू है और जो हिन्दू है वही भारती है. ऐसी हालत में फ़र्ज़ कीजिये कि कभी कांग्रेस में इस तरह के फ़िरक़ा परस्तों का बहुमत हो जाय और फिर कभी कांग्रेस सरकार बने, तो क्या वह अपने को नेशनलिस्ट मानते हुए भी यह ऐलान नहीं कर सकती कि भारती सरकार हिन्दू सरकार है.

किसी संस्था के इतिहास को भुला कर उससे समझौता करना समझदारी नहीं है. हिटलर और फ़ासिस्टों के इतिहास को भूल कर उनसे समझौता कर के एक तरफ़ स्टालिन ने तो दूसरी तरफ़ ब्रिटेन ने देख लिया कि इस तरह की दोस्ती का क्या नतीजा होता है. गुरुडम या फ़ासिज़्म हर तरह की जम्हूरियत का दुश्मन है—उसका मिलिटरी संगठन अन्धा होता है, जिसे रास्ता बतलाने वाला एक गुरू संस्था की नकेल पकड़ कर जिस रास्ते चाहे ले जाता है और मिटा देता है. काग़ज़ पर विधान लिख देना ही काफ़ी नहीं होता. अगर यही काफ़ी होता तो हिटलर ने भी अपने को राष्ट्रीय (क़ौमी) समाजवादी कहा था और फ़ासिस्ट पार्टी के बुनियादी ऐलान में जहाँ तहाँ समाजवाद का पुट दिया था. संघ के कामों और ऐलानों

جنوری سنہ ۵۰ء

کانگریس اور راشٹریہ سویم سیوک سنگھ

نیا ہند

ہونے پر کوئی اعتراض نہیں ہونا چاہئے۔ راشٹریہ سویم سیوک سنگھ ضرور سانسکرتک سنستھا ہے۔ پر وہ کون سی سنسکرتی ہے جس کا وہ حامی ہے۔ بھارتی سنسکرتی کا نہیں۔ راشٹریہ یا قومی سنسکرتی کا؟ ...

अब आपको हमारी पहली चिट्ठी जरूर याद आ गई होगी. जब वह चिट्ठी हमने भेजी थी, हम दोनों आठ आठ बरस के थे. और उस चिट्ठी में अनवर ने लिखाई की बहुत सी ग़लतियाँ भी की होंगी. मगर अब तो हम ग्यारह बरस के हो गए हैं और चौथी किलास में पढ़ते हैं. अनवर ने हिन्दी भी सीख ली है और गोपाल ने उर्दू. अब हम दोनों उर्दू हिन्दी दोनों लिपिओं में लिख पढ़ सकते हैं, जैसा आप कहते थे सब हिन्दुस्तानियों को करना चाहिए. इसलिए आपको यह चिट्ठी दोनों लिपिओं में लिखकर भेज रहे हैं. अनवर हिन्दी में लिख रहा है, गोपाल उर्दू में. क्यों कि हम दोनों ने दूसरी लिपि नई नई सीखी है, इसलिए ग़लती हो तो माफ़ करें.

हां, तो अपनी पहली चिट्ठी में हमने आपको लिखा था कि जब आपका इंतिक़ाल (देहान्त) हुआ, तो हिन्दुस्तान पाकिस्तान में सब हिन्दू मुसलमान बहुत रोये और सबने तोबा की और सबने कान पकड़े कि अब मार धाड़ नहीं करेंगे. और हमने (यानी अनवर और गोपाल और बुंदू और ज़ैनब और सकीना और सीता ने) अपने तीर कमान और हवाई बंदूक़ और लकड़ी का पिस्तौल— जिनको लेकर हम हिन्दू सेना और इसलामी फ़ौज का खेल खेला करते थे—सब तोड़ कर पानी में फेंक दिये थे और कान पकड़कर तोबा की थी कि अब कभी आपस में न लड़ेंगे और आपको लिखा था कि अब हमें 'शमा" कर दीजिए और लौट आइए.

मगर आप लौटकर नहीं आए. आप बहुत दिनों तक हम इंतजार [illegible] कि आप लौटकर जरूर

اب آپکو همارے پهلی چٹھی ضرور یاد آگئی هو گی . جب وہ چٹھی هم نے بھیجی تھی' هم دونوں آٹھ آٹھ برس کے تھے . اور اُس چٹھی میں انور نے لکھائی کی بہت سی غلطیاں بھی کی هونگی . مگر اب تو هم گیارہ برس کے هو گئے هیں اور چوتھی کلاس میں پڑھتے هیں . انور نے هندی بھی سیکھ لی هے اور گوپال نے اُردو . اب هم دونوں اُردو هندی دونوں لپیوں میں لکھ پڑھ سکتے هیں' جیسا آپ کہتے تھے سب هندستانیوں کو کرنا چاهئے . اِسلئے آپکو یہ چٹھی دونوں لپیوں میں لکھ کر بھیج رهے هیں . انور هندی میں لکھ رها هے' گوپال اُردو میں . کیونکہ هم دونوں نے دوسری لپی نئی نئی سیکھی هے' اس لئے غلطی هو تو معاف کریں .

هاں' تو اپنی پہلی چٹھی میں هم نے آپ کو لکھا تھا کہ جب آپ کا انتقال (دیہانت) هوا' تو هندستان پاکستان میں سب هندو مسلمان بہت روئے اور سب نے توبہ کی اور سب نے کان پکڑے کہ اب مار دھاڑ نہیں کرینگے . اور هم نے (یعنی انور اور گوپال اور بندو اور زینب اور سکینہ اور سیتا نے) اپنے تیر کمان اور هوائی بندوق اور لکڑی کا پستول—جن کو لے کر هم هندو سینا اور اسلامی فوج کا کھیل کھیلا کرتے تھے—سب توڑ کر پانی میں پھینک دیئے تھے اور کان پکڑ کر توبہ کی تھی کہ اب کبھی آپس میں نہ لڑینگے اور آپ کو لکھا تھا کہ اب همیں "شما" کر دیجئے اور لوٹ آئیے .

مگر آپ لوٹ کر نہیں آئے ۔ باپو ۔ بہت دنوں تک هم انتظار کرتے رهے اور روز ایک دوسرے سے کہتے کہ باپو لوٹ کر ضرور آئینگے ۔ [illegible]

कभी नहीं टाली. पर जब आप नहीं आए, तो हमने सोचा, शायद हमने ही कोई ऐसी बात की होगी जिससे हमारे बापू अब तक हम से रूठे हुए हैं. फिर सुना, पाकिस्तान हिन्दुस्तान दोनों मुल्कों में अब भी ऐसे बुरे लोग हैं जिन्होंने आपके देहान्त पर झूट मूठ कान तो पकड़े थे, मगर जिनके दिलों में अब भी बुरे विचार भरे हुए हैं. और कितने ही हिन्दू मुसलमान अब भी एक दूसरे को मारना चाहते हैं.

और फिर हमारे पड़ोस में एक बंगाली बाबू शरनार्थी आकर ठहरे, जो बेचारे पूर्बी पाकिस्तान से आए हैं, अपनी जमीन, घर सब छोड़कर. क्योंकि वहाँ के बुरे मुसलमान हिन्दुओं को मार रहे थे. बापू. यह बंगाली बाबू एक अलग ही भाषा बोलते हैं, जो समझ में तो नहीं आती, मगर बड़ी मीठी लगती है. और जब वह हिन्दुस्तानी भी बोलते हैं तो अजीब ढंग से, जैसे मुंह में रसगुल्ला लेकर बोल रहे हों. इस बंगाली खानदान के सब से बड़े बूढ़े जो हैं उन्हें सब शम्भूदादा शम्भूदादा कहते हैं. यह बड़ी लम्बी सफेद दाढ़ी है, जैसी अनवर के दादा अब्बा की थी. कहते हैं, उनकी उमर सौ बरस की है, मगर अस्सी बरस की तो जरूर होगी. बड़े अच्छे आदमी हैं, और इतने बुड्ढे होने पर भी बच्चों को बहुत प्यार करते हैं. वह बताते हैं कि आपके जन्नत (स्वर्ग) सिधारने के एक डेढ़ बरस बाद तक तो पूर्बी पाकिस्तान में भी अमन अमान रहा, पर फिर धीरे धीरे बुरे बुरे आदमियों ने हिन्दुओं को कम गिनती में समझकर उनको तंग करना शुरू कर दिया. बहुत सों को मारा भी. लाखों हिन्दु, रेलों और जहाजों में और पैदल हिन्दुस्तान की तरफ चल

کبھی نہیں ٹالی ۔ پر جب آپ نہیں آئے ، تو ہم نے سوچا ، شاید ہم نے ہی کوئی ایسی بات کی ہوگی جس سے ہمارے باپو اب تک ہم سے روٹھے ہوئے ہیں ۔ پھر سنا ، پاکستان ہندستان دونوں ملکوں میں اب بھی ایسے برے لوگ ہیں جنہوں نے آپ کے دیہانت پر جھوٹ موٹھ کان تو پکڑے تھے ، مگر جن کے دلوں میں اب بھی برے وچار بھرے ہوئے ہیں ۔ اور کتنے ہی ہندو مسلمان اب بھی ایک دوسرے کو مارنا چاہتے ہیں ۔

اور پھر ہمارے پڑوس میں ایک بنگالی بابو شرنارتھی آکر ٹھہرے ، جو بیچارے پوربی پاکستان سے آئے ہیں ، اپنی زمین ، گھر سب چھوڑ کر ۔ کیونکہ وہاں کے برے مسلمان ہندوؤں کو مار رہے تھے ۔ باپو ، یہ بنگالی بابو ایک الگ ہی بھاشا بولتے ہیں ، جو سمجھ میں تو نہیں آتی ، مگر بڑی میٹھی لگتی ہے ۔ اور جب وہ ہندستانی بھی بولتے ہیں تو عجیب ڈھنگ سے ، جیسے منہ میں رس گلا لیکر بول رہے ہوں ۔ اس بنگالی خاندان کے سب سے بڑے بوڑھے جو ہیں انہیں سب شمبھو دادا شمبھو دادا کہتے ہیں ۔ یہ بڑی لمبی سفید داڑھی ہے ، جیسے انور کے دادا ابا کی تھی ۔ کہتے ہیں ، اُن کی عمر سو برس کی ہے ، مگر اسی برس کی تو ضرور ہوگی ۔ بڑے اچھے آدمی ہیں ، اور اتنے بڈھے ہونے پر بھی بچوں کو بہت پیار کرتے ہیں ۔ وہ بتاتے ہیں کہ آپ کے جنت (سورگ) سدھارنے کے ایک ڈیڑھ برس بعد تک تو پوربی پاکستان میں بھی امن امان رہا ، پر پھر دھیرے دھیرے برے برے آدمیوں نے ہندوؤں کو کم گنتی میں سمجھ کر اُن کو تنگ کرنا شروع کر دیا ۔ بہت سوں کو مارا بھی ۔ لاکھوں ہندو ، ریلوں اور جہازوں میں اور پیدل ہندستان کی طرف چل

दुश्मन आपके और आपके साथियों के ख़िलाफ़ कैसी कैसी चालें चल रहे हैं. यह शेरअली पीरअली बड़ा ख़तरनाक आदमी है. इसका लड़का महमूद हमारी ही क्लास में पढ़ता था. जब उसने नाम कटाया तो अनवर ने पूछा, क्यों महमूद स्कूल क्यों छोड़ दिया. तो उसने चुपके से अनवर को बताया कि उसका बाप और सब घरवाले पाकिस्तान जा रहे हैं. अनवर ने कहा— 'और तुम्हारी जायदाद का क्या होगा ?' तो महमूद बोला—'मेरे अब्बा ने सब इन्तज़ाम कर लिया है, आधे से ज़ादा रुपिया तो पाकिस्तान पहुँच भी गया., फिर अनवर से कहने लगा, 'तुम्हारे अब्बा भी पाकिस्तान क्यों नहीं जाते ? इन काफ़िरों के मुल्क में क्यों रहते हो ?' अनवर ने कहा— 'ख़बरदार, जो ऐसी बात कही.' महमूद ने कहा—'जाओ जाओ. हम किसीसे नहीं डरते. जानते हो, एक मुसलमान दस काफ़िरों पर भारी होता है. जब हमारी पाकिस्तानी फ़ौजें हिन्दुस्तान को फ़तह करेंगी तब पता चलेगा !' इस पर अनवर उसे मारने लगा था कि गोपाल वहाँ आ गया और उसने कहा—'नहीं अनवर, बापू ने मार धाड़ से मना किया है.' मगर उस दिन से महमूद जब भी अनवर को देखता है, उसको काफ़िर कहकर चिढ़ाता है. हमारा इरादा है कि उसे ठीक बना दें, मगर आपसे डरते हैं.

असली बात अनवर को चिढ़ाने की नहीं है मगर इस शेरअली पीरअली और उसके बेटे जैसों ने यहाँ के सारे मुसलमानों को बदनाम कर दिया है. बहुत से हिन्दू कहने लगे हैं कि मुसलमानों का क्या ऐतबार ? शेरअली पीरअली की तरह यह सब छिपे हुए

دشمن آپکے اور آپکے ساتھیوں کے خلاف کیسی کیسی چالیں چل رہے ہیں. یہ شیرعلی پیرعلی بڑا خطرناک آدمی ہے ۔ اس کا لڑکا محمود ہماری ہی کلاس میں پڑھتا تھا ۔ جب اُس نے نام کٹایا تو انور نے پوچھا ' کیوں محمود اسکول کیوں چھوڑ دیا ' تو اُس نے چپکے سے انور کو بتایا کہ اُس کا باپ اور سب گھر والے پاکستان جا رہے ہیں ۔ انور نے کہا—' اور تمہاری جائداد کا کیا ہوگا ؟ ' تو محمود بولا—'میرے ابا نے سب انتظام کر لیا ہے ' آدھے سے زیادہ روپیہ تو پاکستان پہونچ بھی گیا ۔ پھر انور سے کہنے لگا ' 'تمہارے ابا بھی پاکستان کیوں نہیں جاتے ؟ ان کافروں کے ملک میں کیوں رہتے ہو ؟ ' انور نے کہا — ' خبردار ' جو ایسی بات کہی .' محمود نے کہا—' جاؤ جاؤ ' ہم کسی سے نہیں ڈرتے ۔ جانتے ہو' ایک مسلمان دس کافروں پر بھاری ہوتا ہے. جب ہماری پاکستانی فوجیں ہندستان کو فتح کرینگی تب پتہ چلے گا '' اس پر انور اُسے مارنے لگا تھا کہ گوپال وہاں آگیا اور اُسنے کہا—' نہیں انور ' باپو نے مار دھاڑ سے منع کیا ہے ۔ ' مگر اُس دن سے محمود جب بھی انور کو دیکھتا ہے ' اُس کو کافر کہہ کر چڑھاتا ہے ۔ ہمارا ارادہ ہے کہ اُسے ٹھیک بنا دیں مگر آپ سے ڈرتے ہیں ۔

اصل بات انور کو چڑھانے کی نہیں ہے مگر اس شیر علی پیر علی اور اُسکے بیٹے جیسوں نے یہاں کے سارے مسلمانوں کو بدنام کر دیا ہے ۔ بہت سے ہندو کہنے لگے ہیں کہ مسلمانوں کا کیا اعتبار ؟ شیر علی پیر علی کی طرح یہ سب چھپے ہوئے

पाकिस्तानी हैं. और इस तरह दिलों में खोट पड़ता जा रहा है और न जाने फिर कब खून खराबा शुरू हो जाए.

एक दिन की बात है कि हमारी क्लास का एक लड़का भीषम राव गोपाल को अलग ले जाकर कहने लगा, कल इतवार की छुट्टी है. सवेरे हमारे हाँ लड़कों का जलसा है, उसमें ज़रूर आना. गोपाल ने कहा, अच्छा मैं अनवर से कहूंगा कि सवेरे क्रिकेट खेलने के बजाए भीषम के वहाँ जलसे में चलेंगे. इस पर भीषम बोला. नहीं अनवर को मत लाना. गोपाल ने कहा, मैं और अनवर तो सब जगह साथ ही जाते हैं. भीषम बोला, तुम हिन्दू होकर इस मुसलमान लड़के अनवर से क्यों मिलते जुलते हो. गोपाल ने कहा, अनवर तो मेरा दोस्त है. भीषम ने कहा, भला कोई मुसलमान किसी हिन्दू का दोस्त हो सकता है कभी ? यह तो हमारे दुश्मन हैं दुश्मन. गोपाल ने कहा, देखो मेरे दोस्त को कुछ कहोगे तो मुझसे बुरा कोई न होगा. भीषम ने कहा, ख़ैर तुम कल जलसे में तो आना, फिर देखा जाएगा. मगर अनवर को साथ मत लाना, वहाँ पूजा भी होगी इसलिये मुसलमानों का आना ठीक नहीं.

गोपाल ने अनवर को यह बात बताई और कहा, मैं तो नहीं जाऊँगा ऐसे जलसे में. अनवर ने कहा, जाकर तो देखो क्या होता है. जिन लोगों ने बापू को क़त्ल किया था, वह भी तो ऐसे ही जलसे किया करते थे कौन जानता है, बापू के खिलाफ़ कोई नई साज़िश कर रहे हों.

सो अगले दिन सुबह को गोपाल भीषम राव के यहाँ पहुंच गया. वहाँ देखा तो बहुत से लड़के जमा थे और आँगन में कसरत कर रहे

پاکستانی ہیں. اور اس طرح دلوں میں کھوٹ پڑتا جا رہا ہے اور نہ جانے پھر کب خون خرابا شروع ہو جائے ۔

ایک دن کی بات ہے کہ ہماری کلاس کا ایک لڑکا بھیشم راو گوپال کو الگ لیجا کر کہنے لگا، کل اتوار کی چھٹی ہے ۔ سویرے ہمارے ہاں لڑکوں کا جلسہ ہے، اس میں ضرور آنا ۔ گوپال نے کہا، اچھا میں انور سے کہونگا کہ سویرے کریکٹ کھیلنے کے بجائے بھیشم کے وہاں جلسے میں چلیں گے ۔ اس پر بھیشم بولا، نہیں انور کو مت لانا ۔ گوپال نے کہا، میں اور انور تو سب جگہ ساتھ ہی جاتے ہیں ۔ بھیشم بولا، تم ہندو ہوکر اس مسلمان لڑکے انور سے کیوں ملتے جلتے ہو ۔ گوپال نے کہا، انور تو میرا دوست ہے ۔ بھیشم نے کہا، بھلا کوئی مسلمان کسی ہندو کا دوست ہو سکتا ہے کبھی؟ یہ تو ہمارے دشمن ہیں دشمن ۔ گوپال نے کہا، دیکھو میرے دوست کو کچھ کہو گے تو مجھ سے برا کوئی نہ ہوگا ۔ بھیشم نے کہا، خیر تم کل جلسے میں تو آنا پھر دیکھا جائیگا ۔ مگر انور کو ساتھ مت لانا، وہاں پوجا بھی ہوگی اس لئے مسلمانوں کا آنا ٹھیک نہیں ۔

گوپال نے انور کو یہ بات بتائی اور کہا، میں تو نہیں جاؤں گا ایسے جلسے میں ۔ انور نے کہا، جاکر تو دیکھو کیا ہوتا ہے ۔ جن لوگوں نے باپو کو قتل کیا تھا، وہ بھی تو ایسے ہی جلسے کیا کرتے تھے ۔ کون جانتا ہے، باپو کے خلاف کوئی نئی سازش کر رہے ہوں ۔

سو اگلے دن صبح کو گوپال بھیشم راو کے ہاں پہنچ گیا ۔ وہاں دیکھا تو بہت سے لڑکے جمع تھے اور آنگن میں کسرت کر رہے

थे. कसरत के बाद लाठी चलाना और तीर चलाना सिखाया गया. गोपाल ने भीषम से कहा, तीर कमान और पिस्तौल तो हमारे पास भी थे, मगर जिस दिन बापू का देहांत हुआ, हमने वह सब समन्दर में फेंक दिए. इसपर भीषम बोला, यह क्या ग़ज़ब किया, मिल जाएं तो निकाल लाओ, तीरों को तेज़ कर लो और पिस्तौल में गोलियाँ भर लो. बड़े घमसान की लड़ाई आनेवाली है. गोपाल ने कहा, क्यों किससे लड़ाई की तैयारी है ? उसने जवाब दिया, दुश्मन तो सबको ही मालूम है. पहले तो जो मुसलमान यहाँ हैं उनको सबक़ सिखाना है, और फिर पाकिस्तान पर फ़तह पानी है. गोपाल कुछ कहना ही चाहता था कि इतने में पूजा शुरू हो गई. मगर बजाय देवी लक्ष्मी या देवी सरस्वती या कृष्न महाराज के काली माता की पूजा की गई. फिर भीषम के पिताजी ने एक तक़रीर की, जिसमें कहा कि हिन्दू बच्चों को अभी से अपने धर्म और देश के लिए लड़ने मरने को तैयार हो जाना चाहिए. भारत माता के दो टुकड़े किए गए हैं. हमें पाकिस्तान को मलियामेट करके इस इलाक़े को एक बार फिर भारत भूमि में मिलाना है. और जो मुसलमान हिन्दुस्तान में हैं उनको भी उनकी ग़द्दारी की सज़ा देनी है. इसपर गोपाल से न रहा गया. उसने कहा—'बापू ने तो हमें लड़ने मरने को मना किया था. हमें उनके बताए हुए रास्ते पर चलना चाहिए. आपका नाम सुनकर भीषम के पिता ही नहीं, जितने लड़के भी मौजूद थे, सब हँस पड़े और भीषम के पिता बोले, बेटा, तुम भी किसका नाम लेते हो. यह गांधी का ही तो किया धरा है कि आज

تھے . کسرت کے بعد لاٹھی چلانا اور تیر چلانا سکھایا گیا. گوپال نے بھیشم سےکہا' تیر کمان اور پستول تو ہمارے پاس بھی تھے' مگر جس دن باپو کا دیہانت ہوا' ہم نے وہ سب سمندر میں پھینک دیئے اس پر بھیشم بولا' یہ کیا غضب کیا' مل جائیں تو نکال لاؤ ' تیروں کو تیز کر لو اور پستول میں گولیاں بھر لو . بڑے گھمسان کی لڑائی آنے والی ہے . گوپال نے کہا' کیوں کس سے لڑائی کی تیاری ہے ؟ اُسنے جواب دیا' دشمن تو سب کو ہی معلوم ہے . پہلے تو جو مسلمان یہاں ہیں اُن کو سبق سکھانا ہے' اور پھر پاکستان پر فتح پانی ہے . گوپال کچھ کہنا ہی چاہتا تھا کہ اتنے میں پوجا شروع ہوگئی. مگر بجائے دیوی لکشمی یا دیوی سرسوتی یا کرشن مہاراج کے کالی ماتا کی پوجا کی گئی . پھر بھیشم کے پتا جی نے ایک تقریر کی' جس میں کہا کہ ہندو بچوں کو ابھی سے اپنے دھرم اور دیش کے لئے لڑنے مرنے کو تیار ہو جانا چاہئے . بھارت ماتا کے دو ٹکڑے کئے گئے ہیں . ہمیں پاکستان کو ملیا میٹ کرکے اس علاقے کو ایک بار پھر بھارت بھومی میں ملانا ہے. اور جو مسلمان ہندستان میں ہیں اُن کو بھی اُنکی غداری کی سزا دینی ہے . اس پر گوپال سے نہ رہا گیا. اُسنے کہا—'باپو نے تو ہمیں لڑنے مرنے کو منع کیا تھا . ہمیں اُن کے بتائے ہوئے راستے پر چلنا چاہئے . آپ کا نام سنکر بھیشم کے پتا ہی نہیں ' جتنے لڑکے بھی موجود تھے' سب ہنس پڑے اور بھیشم کے پتا بولے ' بیٹا ' تم بھی کس کا نام لیتے ہو . یہ گاندھی کا ہی تو کیا دھرا ہے کہ آج مسلمانوں

बुरा भला कहा जो गोपाल से न सुना गया और वह रो पड़ा. और इसपर जब सब हँस पड़े और उसका मज़ाक़ उड़ाने लगे तो वह वहाँ से उठकर चला आया.

एक बुरा आदमी और हमारे मोहल्ले में रहता है. उसका नाम है सेठ करोड़ीमल. उसका बेटा सोनामल भी हमारे स्कूल में पढ़ता है—बड़ा कूढ़मग़ज़ और बदतमीज़. है हमसे बड़ा, मगर अभी तीसरी क्लास ही में पढ़ता है. तीन बरस से इसी क्लास में है. कभी फ़ेल हो जाता है, कभी इम्तहान ही नहीं देता हर रोज़ वह एक लम्बी चौड़ी काली मोटर में बैठकर स्कूल आता है. रेशमी क़मीज़ें और नेकर पहनता है और उसके हाथ पर एक बड़ी ख़ूबसूरत सोने की घड़ी लगी रहती है. उसका बाप उसे पांच रुपया रोज़ जेबख़र्च के देता है. इसलिए बड़ी क्लासों के लड़के भी उसकी ख़ुशामद में लगे रहते हैं. सिर्फ़ हम दोनों ही हैं, जो उसे मुँह नहीं लगाते. सोनामल को अपनी अमीरी की शान जताने का बड़ा शौक़ है, इसलिए उसने अपने जनम दिन पर सारे स्कूल के लड़कों की दावत कर डाली. हमारा इरादा तो उसके हाँ जाने का नहीं था, मगर अनवर के अब्बा ने उससे कहा तुम ज़रूर जाना, नहीं तो लोग शायद यह समझें कि तुम मुसलमान होने की वजह से वहाँ नहीं गए. फिर हमने भी सोचा, चलकर देखें तो सही वहाँ क्या होता है. कोई हौवा थोड़े ही है कि खा जाएगा. सो हम दोनों भी दावत में पहुँच गए.

बापू, आप तो जानते ही हैं कि आजकल राशन कार्ड बिना चमकी भर आटा भी नहीं मिलता. मसलन अनवर के घर में सब

برا بھلا کہا جو گوپال سے نہ سنا گیا اور وہ رو پڑا . اور اسپر جب سب ھنس پڑے اور اُسکا مذاق اُڑانے لگے تو وہ وھاں سے اُٹھکر چلا آیا .

ایک برا آدمی اور ھمارے محلے میں رھتا ھے . اُسکا نام ھے سیٹھ کروڑی مل . اُس کا بیٹا سونا مل بھی ھمارے اسکول میں پڑھتا ھے—بڑا کوڑھ مغز اور بدتمیز . ھے ھم سے بڑا' مگر ابھی تیسری کلاس ھی میں پڑھتا ھے . تین برس سے اسی کلاس میں ھے . کبھی فیل ھو جاتا ھے' کبھی امتحان ھی نہیں دیتا . ھر روز وہ ایک لمبی چوڑی کالی موٹر میں بیٹھ کراسکول آتا ھے . ریشمی قمیضیں اور نیکر پہنتا ھے اور اُس کے ھاتھ پر ایک بڑی خوبصورت سونے کی گھڑی لگی رھتی ھے . اُسکا باپ اُسے پانچ روپیہ روز جیب خرچ کے دیتا ھے . اس لئے بڑی کلاسوں کے لڑکے بھی اُس کی خوشامد میں لگے رھتے ھیں . صرف ھم دونوں ھی ھیں جو اُسے منہ نہیں لگاتے . سونا مل کو اپنی امیری کی شان جتانے کا بڑا شوق ھے' اسلئے اُس نے اپنے جنم دن پر سارے اسکول کے لڑکوں کی دعوت کر ڈالی . ھمارا ارادہ تو اُس کے ھاں جانے کا نہیں تھا' مگر انور کے ابا نے اُس سے کہا تم ضرور جانا' نہیں تو لوگ شاید یہ سمجھیں کہ تم مسلمان ھونے کی وجہ سے وھاں نہیں گئے . پھر ھم نے بھی سوچا' چل کر دیکھیں تو سہی وھاں کیا ھوتا ھے . کوئی ھووا تھوڑے ھی ھے کہ کھا جائیگا . سو ھم دونوں بھی دعوت میں پہونچ گئے .

باپو' آپ تو جانتے ھی ھیں کہ آجکل راشن کارڈ بنا چٹکی بھر آٹا بھی نہیں ملتا . مثلاً انور کے گھر میں سب

मिलाकर पूरे नौ राशन कार्ड हैं. तब भी बस हफ्ते भर के लिए ४ सेर चावल आते हैं और १३ सेर आटा, और बस. दो मेहमान भी आ जाएं तो अब्बा खाने की मेज़ पर कह देते हैं–"घरवाले सब होशियार—होशियार—" जिससे अनवर और उसके भाई बहन सब समझ जाते हैं कि कम खाना चाहिए ताकि मेहमान भूके न रह जाएँ. और गोपाल के पिताजी तो रोज़ ही सब बच्चों को कहते रहते हैं कि कच्ची तरकारियाँ ज्यादा खाओ,चावल पूरी कम खाओ. राशन का ज़माना है. मगर उस दिन सोनामल के हाँ जो पहुँचे तो ऐसा लगा कि जैसे राशन वाशन सब ख़तम हो गया हो. बापू, सुना है आप तो बहुत कम खाते थे. दो चार खजूरें और बकरी का आध सेर दूध. इतना दूध तो अनवर की नई छोटी बहन मीना ही पी जाती है. (हाँ, मीना का परिचय तो आपसे कराया ही नहीं. आपको जब हमने पहला खत लिखा था, वह तो उसके बहुत दिनों बाद आई थी. वह अभी डेढ़ बरस की है और आपकी तरह मुंह में दांत भी नहीं हैं. वह अभी बोलती भी नहीं, मा मा बा बा ही बस करती है. अगर वह बोलती, तो ज़रूर आपको सलाम लिखवाती क्योंकि वह आपसे बहुत मुहब्बत करती है और आपकी तसवीर के सामने खड़ी बापू बापू करती रहती है. और कभी कहती है बापू बापू आजा आजा) हम बात तो कर रहे थे सोनामल की दावत की, और पहुँच गए कहाँ से कहाँ. हाँ, तो वहाँ खाना जो देखा तो हमारी आँखें फटी की फटी रह गईं. बड़े बड़े कढ़ाओं में सैकड़ों हज़ारों पूरियाँ तली जा रही थीं. दस क़िसम की तरकारियाँ, मटर पुलाओ मीठे चावल फिरनी दही बड़े पकौड़े पकौड़ियाँ रसगुल्ले

ملاکر پورے نو راشن کارڈ ہیں' تب بھی بس ہفتہ بھر کے لئے ۴ سیر چاول آتے ہیں اور ۱۳ سیر آٹا' اور بس . دو مہمان بھی آجائیں تو ابا کھانے کی میز پر کہہ دیتے ہیں—"گھر والے سب ہوشیار— ہوشیار—" جس سے انور اور اُسکے بھائی بہن سب سمجھ جاتے ہیں کہ کم کھانا چاہئیے تاکہ مہمان بھوکے نہ رہ جائیں . اور گوپال کے پتاجی تو روز ہی سب بچوں کو کہتے رہتے ہیں کہ کچی ترکاریاں زیادہ کھاؤ چاول پوری کم کھاؤ . راشن کا زمانہ ہے . مگر اُسدن سونا مل کے ہاں جو پہونچے تو ایسا لگا کہ جیسے راشن واشن سب ختم ہو گیا ہو . باپو' سنا ہے آپ تو بہت کم کھاتے تھے . دو چار کھجوریں اور بکری کا آدھ سیر دودھ . اتنا دودھ تو انور کی نئی چھوٹی بہن مینا ہی پی جاتی ہے . (ہاں' مینا کا پریچے تو آپ سے کرایا ہی نہیں . آپکو جب ہم نے پہلا خط لکھا تھا' وہ تو اُسکے بہت دنوں بعد آئی تھی . وہ ابھی ڈیڑھ برس کی ہے اور آپکی طرح منہ میں دانت بھی نہیں ہیں . وہ ابھی بولتی بھی نہیں' ماں ماں با با ہی بس کرتی ہے . اگر وہ بولتی' تو ضرور آپکو سلام لکھواتی کیونکہ وہ آپ سے بہت محبت کرتی ہے . اور آپکی تصویر کے سامنے کھڑی باپو باپو کرتی رہتی ہے اور کبھی کہتی ہے باپو باپو آجا آجا) ہم بات تو کر رہے تھے سونا مل کی دعوت کی اور پہونچ گئے کہاں سے کہاں . ہاں' تو وہاں کھانا جو دیکھا تو ہماری آنکھیں پھٹی کی پھٹی رہ گئیں . بڑے بڑے کڑھاؤں میں سیکڑوں ہزاروں پوریاں تلی جارہی تھیں . دس قسم کی ترکاریاں' مٹر پلاؤ' میٹھے چاول فرنی دہی بڑے پکوڑے پکوڑیاں رسگلے

गुलाब जामन, जलेबियाँ और न जाने क्या अलाबला. आप देखते तो आपको भी बहुत बुरा लगता और गुस्सा भी आता. क्योंकि उसी दिन सुबह के अखबार में छपा था कि बिहार के अकाल में कितने ही ग़रीब आदमी भूक से मर गए हैं.

गोपाल ने सोनामल से पूछा, क्यों भई राशन के ज़माने में तुम्हारे हां इतने चावल और इतना आटा कहाँ से आ गया, तो वह हंसकर बोला, अरे यह क्या है ? हम चाहें तो हज़ारों आदमियों को भोजन खिला सकते हैं एकदम. गोपाल ने पूछा, भला इतना बहुत राशन कहाँ से आएगा. इस पर सोनामल ने चुपके से गोपाल के कान में कहा. किसी से कहना नहीं मगर मेरे पिताजी के गोदामों मे हज़ारों मन अनाज पड़ा है उड़ती उड़ती खबर हमने पहले भी सुनी थी कि करोड़ीमल बलैक मारकेट करता है, मगर उस दिन तो उसके बेटे ने ही भांडा फोड़ दिया. यह सुनकर हम दोनों का तो खाने को जी न चाहा, मगर औरों का साथ देने को बैठे रहे. इतने में सेठ करोड़ीमल खुद भी आ गया. बापू, वह इतना मोटा है, इतना मोटा है कि (आप बुरा न मानें तो कह दें) आप जैसे तो उसमें से दस बारह आदमी बन सकते हैं. इतनी बड़ी तोंद जैसे मटका ऐसा लगता है जैसे बलैक मारकेट का सारा अनाज उसके पेट में भरा हुआ है. हंसता है तो ऐसा लगता है जैसे भूचाल आ गया हो. वह जब आया तो हमने देखा कि खद्दर के कपड़े और गांधी टोपी पहने है. हमने सोचा, इन काले बाज़ारवालों की हिम्मत तो देखो, बापू के खद्दर और टोपी को भी बदनाम करते हैं. कमरे में तिजोरी के ऊपर ही उसने आपकी बड़ी सारी रंगीन तसवीर भी लगा रखी है. कमरे में

گلاب جامن، جلیبیاں اور نہ جانے کیا الا بلا . آپ دیکھتے تو آپکو بھی بہت برا لگتا اور غصہ بھی آتا کیونکہ اُسیدن صبح کے اخبار میں چھپا تھا کہ بہار کے اکال میں کتنے ہی غریب آدمی بھوکھ سے مر گئے ہیں .

گوپال نے سونا مل سے پوچھا ' کیوں بھئی راشن کے زمانے میں تمہارے ہاں اتنے چاول اور اتنا آٹا کہاں سے آگیا ' تو وہ ہنس کر بولا ' ارے یہ کیا ہے ؟ ہم چاہیں تو ہزاروں آدمیوں کو بھوجن کھلا سکتے ہیں ایک دم . گوپال نے پوچھا ' بھلا اتنا بہت راشن کہاں سے آئیگا . اس پر سونا مل نے چپکے سے گوپال کے کان میں کہا ' کسی سے کہنا نہیں مگر میرے پتا جی کے گوداموں میں ہزاروں من اناج پڑا ہے . اُڑتی اُڑتی خبر ہم نے پہلے بھی سنی تھی کہ کروڑی مل بلیک مارکیٹ کرتا ہے ' مگر اُسدن تو اُس کے بیٹے نے ہی بھانڈا پھوڑ دیا یہ سن کر ہم دونوں کا تو کھانے کو جی نہ چاہا ' مگر اوروں کا ساتھ دینے کو بیٹھے رہے . اتنے میں سیٹھ کروڑی مل خود بھی آگیا . باپو ' وہ اتنا موٹا ہے ' اتنا موٹا ہے کہ (آپ برا نہ مانیں تو کہہ دیں) آپ جیسے تو اُس میں سے دس بارہ آدمی بن سکتے ہیں . اتنی بڑی توند جیسے مٹکا . ایسا لگتا ہے جیسے بلیک مارکیٹ کا سارا اناج اُس کے پیٹ میں بھرا ہوا ہے . ہنستا ہے تو ایسا لگتا ہے جیسے بھوچال آگیا ہو . وہ جب آیا تو ہم نے دیکھا کہ کھدر کے کپڑے اور گاندھی ٹوپی پہنے ہے . ہم نے سوچا ' ان کالے بازار والوں کی ہمت تو دیکھو ' باپو کے کھدر اور ٹوپی کو بھی بدنام کرتے ہیں . کمرے میں تجوری کے اوپر ہی اُس نے آپ کی بڑی ساری رنگین تصویر بھی لگا رکھی ہے . کمرے میں

आते ही उसकी तरफ़ प्रनाम करके बैठ गया और लगा पूरियों और रसगुल्लों और जलेबियों का सफ़ाया करने. वह दिन और आज का दिन. हमने तो सोनामल से बात करना ही छोड़ दिया है.

मगर वह रिफ़्जो कैम्प को बात लिखना तो भूल ही गए. हुआ यह कि मोहन के एक रिश्ते के मामा वहाँ रहते हैं. सो पिछले इतवार को उसने हम दोनों से कहा कि मैं अपने मामा से मिलने जा रहा हूं. तुम दोनों रिफ़्जो कैम्प देखने चलते हो ? हमने कभी रिफ़्जी कैम्प नहीं देखा था. हमने कहा चलो. शहर से तीन चार मील होगी वह जगह. पहले तो हम बस में गए. फिर पैदल. पक्की सड़क से कच्ची सड़क. बारिश की वजह से ख़ूब कीचड़ और दलदल हो रही थी. घुटनों घुटनों तक हमारी टांगें कीचड़ में भर गईं. उधर से एक ट्रक आ रही थी. उसके पहियों ने जो गंदे पानी के छींटे उड़ाए तो हमारी तो बेवक़्त की होली हो गई. कैम्प जाकर देखा तो आठ दस तो टूटी फूटी पुरानी मिलिटरी की बारकें हैं. उनमें तख़्ते लगा लगाकर कोठरिया बनाई हुई हैं और एक एक छोटी सी कोठरी में सारे घरवाले हम तो देखकर हैरान रह गए कि एक कोठरी में इतने आदमी कैसे रह सकते हैं. बापू, यह कोठरियों वाले तो फिर भी औरों से अच्छी हालत में हैं. कितने ही शरनार्थी तो बाल बच्चों समेत तम्बुओं और झोंपड़ियों में रह रहे हैं. लकड़ी और टीन के टुकड़ों को जोड़ जोड़कर झोंपड़ियाँ सी बना ली हैं. अन्दर ज़मीन बारिश से गीली, और वहीं बिचारे शरनार्थी पड़े हुए थे. यह सब देखकर हमें बड़ा दुख हुआ. पर मोहन के मामा ने जो बताया वह सुन कर तो हमें बड़ा ही ग़ुस्सा

(५६४)

آتے ھی اُس کی طرف پر نام کر کے بیٹھ گیا اور لگا پوریوں اور رس گلوں اور جلیبیوں کا صفایا کرنے ۔ وہ دن اور آج کا دن ۔ ھم نے تو سونا مل سے بات کرنا ھی چھوڑ دیا ھے ۔

مگر وہ رفوجی کیمپ کی بات لکھنا تو بھول ھی گئے ۔ ھوا یہ کہ موھن کے ایک رشتے کے ماما وھاں رھتے ھیں ۔ سو پچھلے اتوار کو اُس نے ھم دونوں سے کہا کہ میں اپنے ماما سے ملنے جارھا ھوں ۔ تم دونوں رفوجی کیمپ دیکھنے چلتے ھو ؟ ھم نے کبھی رفوجی کیمپ نہیں دیکھا تھا ۔ ھم نے کہا چلو ۔ شہر سے تین چار میل ھوگی وہ جگہ ۔ پہلے تو ھم بس میں گئے ۔ پھر پیدل پکی سڑک سے کچی سڑک ۔ بارش کی وجہ سے خوب کیچڑ اور دلدل ھو رھی تھی ۔ گھٹنوں گھٹنوں تک ھماری ٹانگیں کیچڑ میں بھر گئیں ۔ اُدھر سے ایک ٹرک آرھی تھی اُس کے پہیوں نے جو گندے پانی کے چھینٹے اُڑائے تو ھماری تو بے وقت کی ھولی ھوگئی کیمپ جا کر دیکھا تو آٹھ دس تو ٹوٹی پھوٹی پرانی ملٹری کی بارکیں ھیں ۔ ان میں تختے لگا لگا کر کوٹھریاں بنائی ھوئی ھیں اور ایک ایک چھوٹی سی کوٹھری میں سارے گھر والے ۔ ھم تو دیکھ کر حیران رہ گئے کہ ایک کوٹھری میں اتنے آدمی کیسے رہ سکتے ھیں ۔ باپو، یہ کوٹھریوں والے تو پھر بھی اوروں سے اچھی حالت میں ھیں کتنے ھی شرنارتھی تو بال بچوں سمیت تمبوؤں اور جھونپڑیوں میں رہ رھے ھیں ۔ لکڑی اور ٹین کے ٹکڑوں کو جوڑ جوڑ کر جھونپڑیاں سی بنا لی ھیں ۔ اندر زمین بارش سے گیلی، اور وھیں بچارے شرنارتھی پڑے ھوئے تھے ۔ یہ سب دیکھ کر ھمیں بڑا دکھ ھوا ۔ پر موھن کے ماما نے جو بتایا وہ سن کر تو ھمیں بڑا ھی غصہ آیا ۔ بارکوں سمیت یہ ساری زمین ایک ٹھیکیدار نے لے رکھی ھ

और नाम के वास्ते एक झूटमूठ की कमेटी भी बना ली है और इस कमेटी के नाम से वह हर शरनार्थी से किराया लेता है. कोठरी का किराया आठ रुपए महीना और झोंपड़ी या तम्बू का सिर्फ़ ज़मीन का किराया चार रुपए ! और अगर कोई बेचारा किराया न दे सके, तो उसे पुलिस बुलवाकर निकाल देते हैं.

इस कैम्प में बहुत से ग़रीब सिक्ख सरदार जी रहते हैं जो पंजाब और फ़्रंटियर के इलाक़े से आये थे (मोहन के मामा भी सिक्ख सरदारजी हैं और पहले फ़ौज में हवलदार थे. अब बिचारे बेकार हैं मोहन के पिताजी ने उन्हें कुछ रुपए भेजे थे.) और वह ठेकेदार जो इन सबसे किराया लेता है और इन पर जबरदस्ती करता है, वह भी सिक्ख सरदार ही है—सरदार सेवक सिंह यह जानकर हमें बड़ी हैरानी हुई. और हाँ, मोहन के मामा अपने तम्बू की फटी हुई छत, जिसमें से बरसात का पानी अंदर आता है, दिखाकर कहने लगे, हाय, इससे तो हम पाकिस्तान ही में मर गये होते ! और यह सुनकर हमें भी रोना आ गया और वहाँ से आए तो रस्ते भर हम तीनों में से कोई नहीं बोला. पर दिल ही दिल में सोचते रहे कि यह बुरे लोग क्यों औरों को दुख देते हैं. यह शेरअली पीरअली, यह भीमराव के पिताजी, यह सेठ करोड़ीमल और यह ठेकेदार. और इन सबको ठीक बनाए तो कैसे ?

(२२६)

फिर मोहन बोला, आओ एक फ़ौज बनाएं शरनार्थियो की...

और गोपाल बोला, और मजदूरों की...

और अनवर बोला, और किसानों की...

اور نام کے واسطے ایک جھوٹ موٹھ کی کمیٹی بھی بنا لی ھے اور اس کمیٹی کے نام سے وہ ھر شرنارتھی سے کرایہ لیتا ھے ۔ کوٹھری کا کرایہ اٹھ روپیہ مہینہ اور جھونپڑی یا تمبو کا صرف زمین کا کرایہ چار روپیے ! اور اگر کوئی بچارا کرایہ نہ دے سکے، تو اُسے پولیس بلوا کر نکال دیتے ھیں ۔

اس کیمپ میں بہت سے غریب سکھ سردار جی رھتے ھیں جو پنجاب اور فرنٹیر کے علاقے سے آئے تھے ۔ (موھن کے ماما بھی سکھ سردار جی ھیں اور پہلے فوج میں حولدار تھے ۔ اب بچارے بیکار ھیں ۔ موھن کے پتاجی نے اُنھیں کچھ روپے بھیجے تھے) اور وہ تھیکہ‌دار جو ان سب سے کرایہ لیتا ھے اور ان پ زبردستی کرتا ھے، وہ بھی سکھ سردار ھی ھے—سردار سیوک سنگھ ۔ یہ جان کر ھمیں بڑی حیرانی ھوئی ۔ اور ھاں، موھن کے ماما اپنے تمبو کی پھٹی ھوئی چھت، جس میں سے برسات کا پانی اندر آتا ھے، دکھا کر کہنے لگے، ھائے، اس سے تو ھم پاکستان ھی میں مر گئے ھوتے ! اور یہ سنکر ھمیں بھی رونا آگیا اور وھاں سے آئے تو رستے بھر ھم تینوں میں سے کوئی نہیں بولا ۔ پر دل ھی دل میں سوچتے رھے کہ یہ برے لوگ کیوں اوروں کو دکھ دیتے ھیں ۔ یہ شیر علی پیر علی، یہ بھیشم راؤ کے پتا جی، یہ سیٹھ کروڑی مل اور یہ تھیکہ‌دار ۔ اور ان سب کو تھیک بنائیں تو کیسے ؟

(۲۲۶)

پھر موھن بولا، آؤ ایک فوج بنائیں شرنارتھیوں کی ۔ ۔ ۔ ۔

اور گوپال بولا، اور مزدوروں کی ۔ ۔ ۔ ۔ ۔ ۔

اور انور بولا، اور کسانوں کی ۔ ۔ ۔ ۔ ۔ ۔

का ...लियाह! भा न सूचना पाइ था, कि विद्यार्थियों के एक जलसे में श्री गोविन्द सहाय की बुरी तरह खबर ली गई—कहा जाता है कि जान बच गई. महात्मा जी की हत्या पर इन लोगों की तरफ से जगह जगह खुशियाँ मनाई जाना और मिठाइयाँ बाँटना किसे भूला है.

•

एक तरफ पंडित जवाहर ला नेहरू अमरीका में कांग्रेस की जम्हूरियत पसन्दी का एलान .. रहे हैं और दूसरा तरफ ठीक उसी वक्त यहाँ फासिज्म की तै..रियाँ हो रही हैं. कांग्रेस के सदर डाक्टर पट्टाभी ने कहा है कि कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटी पर यह इलजाम लगाना गलत होगा कि उस .. पंडित नेहरू की गैर मौजूदगी का फायदा उठाने के लिये संघ को ..ग्रेस में शामिल होने देने वाली तजवीज बाद में रक्खी. पर इस .. अहम ममले पर आखिरी फैसला करने से पहिले पंडित जी की ... इन्तजार न करना किस बात का सबूत है? और वह भी ... के दो चार हफ्ते ठहर जाने से इस मामले में कोई नुक्सान न .. सकता था. कौन उम्मीद कर सकता है कि पंडित जी अमरी.. से लौट कर अपनी सारी ताकत इस तजवीज को बदलवाने में .. येंगे या कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटी से इसतीफा दे देंगे? मसला मा..ली नहीं है.

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का ... कभी-कभी जमीयतुल उलमा से किया जाता है. कहा जाता है कि जब जमीयतुल उलमा को कल्चरी संस्था होते हुए भी कांग्रेस में ... होने का हक़ है तब संघ को क्यों

ملے پائی تھی کہ ودیارتھیوں کے ایک جلسے میں
شری گوبند سہائے کی بری طرح خبر لی گئی۔ کہا جاتا ہے کہ جان بچ گئی۔
مہاتما جی کی ہتیا پر ان لوگوں کی طرف سے جگہ جگہ خوشیاں منائی جانا
مٹھائیاں بانٹنا کسے بھولا ہے۔

ایک طرف پنڈت جواہر لال نہرو امریکہ میں کانگریس کی جمہوریت
پسندی کا اعلان کر رہے ہیں اور دوسری طرف ٹھیک اسی وقت یہاں
فاسزم کی تیاریاں ہو رہی ہیں۔ کانگریس کے صدر ڈاکٹر پٹابھی نے
کہا ہے کہ کانگریس ورکنگ کمیٹی پر یہ الزام لگانا غلط ہوگا کہ اس
نے پنڈت نہرو کی غیر موجودگی کا فائدہ اٹھانے کے لئے سنگھ کو کانگریس
میں شامل ہونے دینے والی تجویز بعد میں رکھی۔ پر اس اہم مسئلے پر آخری
فیصلہ کرنے سے پہلے پنڈت جی کی رائے کا انتظار نہ کرنا کس
بات کا ثبوت ہے؟ اور وہ بھی جبکہ دو چار ہفتے ٹھہر جانے
سے اس معاملے میں کوئی نقصان نہ ہو سکتا تھا۔

کون امید کر سکتا ہے کہ پنڈت جی امریکہ سے لوٹ کر اپنی
ساری طاقت اس تجویز کو بدلوانے میں لگائیں گے یا کانگریس
ورکنگ کمیٹی سے استعفیٰ دیدیں گے؟ مسئلہ معمولی نہیں ہے

راشٹریہ سویم سیوک سنگھ کا مقابلہ کبھی کبھی
جمعیتہ العلما سے کیا جاتا ہے۔ کہا جاتا ہے کہ
جب جمعیتہ العلما کو کلچری سنستھا ہوتے ہوئے بھی
کانگریس میں شریک ہونے کا حق ہے تب سنگھ کو کیوں روکا جائے

और फिर हम तीनों बोल पड़े, बच्चों की फ़ौज जो इन सब बेईमानों को ठीक बना दे.

मगर फ़ौज के पास हथियार भी तो होना चाहिए शेरअली पीरअली के पास तो लाखों रुपया है. और भीषमराव के साथी तीर कमान और लाठियों से डरिल करते हैं. और करोड़ीमल के पास बलैक मारकेट का अनाज है. और वह रिफ़्ज़ी कैम्प का ठेकेदार, उसके पास भी न जाने कितना रुपया होगा और फिर मौक़ा पड़ने पर पुलिस भी तो उसकी मद्द करती है! करोड़ीमल की मिल में हड़ताल हुई तो मजदूरों पर गोली चलाने को पुलिस झट से आ गई.

हमारी फ़ौज के पास हथियार आएं तो कहाँ से आएं? हमारे पास तो बस तीर कमान थे और एक हवाई बंदूक़ और एक लकड़ी का पिस्तौल. वह भी हमने समंदर में फेंक दिए थे, और कान पकड़ लिए थे कि अब कभी उनको लेकर आपस में न लड़ेंगे.

यही सोचते हुए उस शाम को जब हम समंदर के किनारे टहलने गए तो समंदर उतर रहा था. बहुत दूर तक हम रेत पर चलते चले गए. आगे जाकर क्या देखते हैं कि रेत के एक टीले में से एक नोकीली चीज़ बाहर निकली हुई है.

रेत हटाकर देखा तो वह अनवर की हवाई बंदूक थी और गोपाल की पिस्तौल और टूटे हुए तीर कमान. पहले हमने सोचा, इनको निकालकर घर ले आएं, ठीक ठाक कर लें. तीरों को नोकीला कर लें. हवाई बंदूक में तेल डालकर उसकी कमानी पर से जंग उतार लें और पिस्तौल को साफ़ करके उसमें पालिश कर लें हमें बापू के

اور پھر ہم تینوں بول پڑے' بچوں کی فوج جو اِن سب بے ایمانوں کو ٹھیک بنا دے۔

مگر فوج کے پاس ہتھیار بھی تو ہونے چاھئے. شیرعلی پیرعلی کے پاس تو لاکھوں روپیہ ھے۔ اور بھیشم راؤ کے ساتھی تیر کمان اور لاٹھیوں سے ڈرل کرتے ھیں۔ اور کروڑی مل کے پاس بلیک مارکیٹ کا اناج ھے۔ اور وہ رفوجی کیمپ کا ٹھیکیدار' اُس کے پاس نہ جانے کتنا روپیہ ھوگا اور پھر موقع پڑنے پر پولیس بھی تو اُس کی مدد کرتی ھے! کروڑی مل کی مل میں ھڑتال ھوئی تو مزدوروں پر گولی چلانے کو پولیس جھٹ سے آگئی۔

ھماری فوج کے پاس ھتھیار آئیں تو کہاں سے آئیں؟ ھمارے پاس تو بس تیر کمان تھے اور ایک ھوائی بندوق اور ایک لکڑی کا پستول۔ وہ بھی ھم نے سمندر میں پھینک دیئے تھے' اور کان پکڑ لئے تھے کہ اب کبھی اُنکو لیکر آپس میں نہ لڑینگے۔

یہی سوچتے ھوئے اُس شام کو جب ھم سمندر کے کنارے ٹہلنے گئے تو سمندر اُتر رھا تھا۔ بہت دور تک ھم ریت پر چلتے چلے گئے۔ آگے جاکر کیا دیکھتے ھیں کہ ریت کے ایک ٹیلے میں سے ایک نوکیلی چیز باھر نکلی ھوئی ھے۔

ریت ھٹا کر دیکھا تو وہ انور کی ھوائی بندوق تھی اور گوپال کی پستول اور ٹوٹے ھوئے تیر کمان۔ پہلے ھم نے سوچا' انکو نکال کر گھر لے آئیں' ٹھیک ٹھاک کر لیں۔ تیروں کو نوکیلا کر لیں۔ ھوائی بندوق میں تیل ڈال کر اُسکی کمانی پر سے زنگ اُتار لیں۔ اور پستول کو صاف کرکے اُسمیں پتاخے بھر لیں۔ ھمیں باپو کے

(४३४)

दुश्मनों से लड़ना है, और यह लोग बातों से मानने वाले नहीं. मगर फिर हमने सोचा कि हमने बापू को वचन दिया है कि इन हथियारों को हाथ न लगाएँ. इसलिए हम उन्हें वहीं रेत में दबा आए हैं.

मगर वह जगह हमें याद है और अब भी जब समंदर का पानी उतरेगा हम उन्हें निकालकर ला सकते हैं इसलिए यह चिट्ठी आपको लिख रहे हैं कि आप की इजाज़त हो तो अपने तीर कमान और हवाई बंदूक़ और लकड़ी का पिस्तौल लाकर आपके इन सब दुश्मनों को सीधा कर दें.

तो है आपकी इजाज़त बापू ?

जवाब ज़रूर दें और जल्द—क्योंकि दुश्मन ज़ोर पकड़ रहे हैं और हमें भी जल्द से जल्द जवाबी हमला करना ही चाहिए.

आपके बेटे—
गोपाल
अनवर

बापू , एक और बात है. अनवर की नानी अम्मा भी जन्नत (स्वर्ग) को सिधार गई हैं. अल्ला मियां के हाँ तो वह परदा नहीं करती होंगी. वह आपको मिलें तो उनसे कहिएगा, उनका अनवर उन्हें बहुत याद करता है.

अनवर

('सरगम' बमबई से)

---

(٣١)

دشمنوں سے لڑنا ہے اور یہ لوگ باتوں سے ماننے والے نہیں . مگر پھر ہم نے سوچا کہ ہم نے باپو کو وچن دیا ہے کہ ان ہتھیاروں کو ہاتھ نہ لگائینگے . اسلئے ہم اُنہیں وہیں ریت میں دبا آئے ہیں .

مگر وہ جگہ ہمیں یاد ہے اور اب بھی جب سمندر کا پانی اُتریگا ہم اُنہیں نکالکر لاسکتے ہیں . اسلئے یہ چٹھی آپکو لکھ رہے ہیں کہ آپ کی اجازت ہو تو اپنے تیر کمان اور ہوائی بندوق اور لکڑی کا پستول لاکر آپکے ان سب دشمنوں کو سیدھا کردیں .

تو ہے آپکی اجازت باپو ؟

جواب ضرور دیں اورجلد—کیونکہ دشمن زور پکڑ رہے ہیں اور ہمیں بھی جلد سے جلد جوابی حملہ کرنا ہی چاہئے .

آپ کے بیٹے—
گوپال
انور

باپو' ایک اور بات ہے انور کی نانی اماں بھی جنت (سورگ) کو سدھار گئی ہیں . اللہ میاں کے ہاں تو وہ پردا نہیں کرتی ہونگی . وہ آپکو ملیں تو اُن سے کہئیگا' ان کا انور اُنہیں بہت یاد کرتا ہے .

انور

('سرگم' بمبئی سے)

कोरिया और हमारा फ़र्ज़

कोरिया का इतिहास बताता है कि वह हमेशा से एक रहा है और सन १९४५ तक एक था. जापान की हार के बाद ३८ पड़ी रेखा से उसके उत्तरी और दक्खिनी दो टुकड़े कर दिये गये. यह भी सिर्फ़ नाम के लिये थे सन् १९५० में उत्तरी हिस्से के हमले का शोर मचा कर अमरीका ने, शरारत से, उन दोनों टुकड़ों पर अलग अलग मुल्कों की मुहर ,लगाकर, एशिया पर छा जाने का एक बहाना ढूंढ लिया.

सन १९०५ से १९४५ तक कोरिया जापान का ग़ुलाम था, पर उस ग़ुलामी में भी कोरिया एक था, दो टुकड़ों मे बँटा हुआ नहीं था. जापान की हार के बाद उसको आज़ाद करने वाले रूस और अमरीका ने, उसके दो टुकड़े करके, आपस में बाँट लिया. उत्तरी कोरिया रूस के हाथ में रहा और दक्खिनी कोरिया अमरीका के हाथ में. यह दोनों ही देश उसे आज़ाद करना नहीं चाहते थे. अगर चाहते होते तो इस तरह के बटवारे की ज़रूरत न होती.

कभी सन १९४९ में, क्यों और किस नियत से, रूस ने उत्तरी कोरिया को उत्तरी कोरिया वालों के सपुर्द कर दिया और अपनी फ़ौजें वहाँ से हटा लीं अमरीका से भी उसने ऐसा करने की माँग की पर अमरीका ने वैसा करना मुनासिब न समझा. अमरीका का ऐसा न करना एशिया के सब मुल्कों को और यूरोप के कुछ मुल्कों

کوریا اور ھمارا فرض

کوریا کا اتہاس بتاتا ھے کہ وہ ھمیشہ سے ایک رھا ھے اور سن ۱۹۴۵ تک ایک تھا . جاپان کی ھار کے بعد ۳۸ پڑی ریکھا سے اُس کے اُتری اور دکھنی دو ٹکڑے کردئیے گئے . یہ بھی صرف نام کے لئے تھے . سن ۱۹۵۰ میں اُتری حصے کے حملے کا شور مچا کر امریکہ نے ' شرارت سے ' اُن دونوں ٹکڑوں پر الگ الگ ملکوں کی مہر لگا کر ' ایشیا پر چھاجانے کا ایک بہانہ ڈھونڈھ لیا .

سن ۱۹۰۵ سے ۱۹۴۵ تک کوریا جاپان کا غلام تھا ' پر اُس غلامی میں بھی کوریا ایک تھا' دو ٹکڑوں میں بٹا ہوا نہیں تھا . جاپان کی ھار کے بعد اُس کو آزاد کرنے والے روس اور امریکہ نے' اُس کے دو ٹکڑے کر کے' آپس میں بانٹ لیا . اُتری کوریا روس کے ھاتھ میں رھا اور دکھنی کوریا امریکہ کے ھاتھ میں . یہ دونوں ھی دیش اُسے آزاد کرنا نہیں چاھتے تھے . اگر چاھتے ھوتے تو اِس طرح کے بٹوارے کی ضرورت نہ ھوتی .

کبھی سن ۱۹۴۹ میں ' کیوں اور کس نیت سے ' روس نے اُتری کوریا کو اُتری کوریا والوں کے سپرد کر دیا اور اپنی فوجیں وھاں سے ھٹا لیں . امریکہ سے بھی اُس نے ایسا کرنے کی مانگ کی پر امریکہ نے ویسا کرنا مناسب نہ سمجھا . امریکہ کا ایسا نہ کرنا ایشیا کے سب ملکوں کو اور یورپ کے کچھ ملکوں

को यह सोचने के लिये मजबूर करता है कि अमरीका की नियत न साफ़ थी, न साफ़ है.

कुछ लोगों का यह कहना है कि अमरीका दक्खिनी कोरिया के लोगों को भड़का कर उत्तरी कोरिया पर छुटपुट हमले कराता रहा और अगर यू. एन. ओ. की सुरक्षा कौंसिल ने उत्तरी और दक्खिनी कोरिया वालों को अपने दरबार में बुलाया होता तो हो सकता है यह बात साबित भी हो जाती कि दक्खिनी कोरिया बेशक उत्तरी कोरिया को आये दिन छेड़ता रहता था पर अमरीका ने अपनी चालाकी से उत्तरी कोरिया और दक्खिनी कोरिया को सुरक्षा कौंसिल में सामने नहीं आने दिया. सुरक्षा कौंसिल ने दुनिया भर की पंचायत होने के नाते ऐसा क्यों किया इस बारे में कोई बयान भी नहीं निकाला.

उत्तरी कोरिया के हमले के बाद यह शोर मचा था कि न तो वह हमला है और न 'एग्रेशन'. वह तो घरेलू लड़ाई है और दोनों कोरिया को एक कर देने की कोशिश है. पर उस वक़्त भी अमरीका ने शोर मचाकर इस तरह के शोर मचाने वालों का मुँह, यह कह कर, बन्द कर दिया कि नहीं यह हमला है और एग्रेशन है और इसके लिये पहले से भी तैयारियाँ थीं. अगर ऐसी तैयारी न होती तो उत्तरी कोरिया इतनी जल्दी इतनी फ़ौजें मैदान में नहीं उतार सकता था.

शुरू शुरू में अमरीका की तरफ़ से यह भी कोशिशें हुईं कि वह यह भी साबित करदे कि उत्तरी कोरिया यह सब कुछ रूस के इशारे पर, उसकी मदद से, उसके जनरैलों के मातहत कर रहा है

کو یه سوچنے کے لئے مجبور کرتا هے که امریکه کی نیت نه صاف تهی ' نه صاف هے .

کچھ لوگوں کا یه کہنا هے که امریکه دکھنی کوریا کے لوگوں کو بھڑکا کر اُتری کوریا پر چھٹ پٹ حملے کراتا رها اور اگر یو. این . او . کی سرکشا کونسل نے اُتری اور دکھنی کوریا والوں کو اپنے دربار میں بلایا هوتا تو هوسکتا هے یه بات ثابت بھی هوجاتی که دکھنی کوریا بیشک اُتری کوریا کو آئے دن چھیڑتا رهتا تها . پر امریکه نے اپنی چالاکی سے اُتری کوریا اور دکھنی کوریا کو سرکشا کونسل کے سامنے نهیں آنے دیا . سرکشا کونسل نے دنیا بھر کی پنچایت هونے کے ناتے ایسا کیوں کیا اس بارے میں کوئی بیان بھی نهیں نکالا .

اُتری کوریا کے حملے کے بعد یه شور مچا تها که نه تو وه حمله هے اور نه 'اگریشن'. وه تو گهریلو لڑائی هے اور دونوں کوریا کو ایک کردینے کی کوشش هے . پر اُس وقت بھی امریکه نے شور مچا کر اسطرح کے شور مچانے والوں کا منه ' یه کهکر ' بند کردیا که نهیں یه حمله هے اور اگریشن هے اور اسکے لئے پہلے سے بھی تیاریاں تهیں . اگر ایسی تیاری نه هوتی تو اُتری کوریا اتنی جلدی اتنی فوجیں میدان میں نهیں اُتار سکتا تها .

شروع شروع میں امریکه کی طرف سے یه بھی کوششیں هوئیں که وه یه بھی ثابت کر دے که اُتری کوریا یه سب کچھ روس کے اشارے پر' روس کی مدد سے' اُس کے جنریلوں کے ماتحت کر رها هے

पर वह छोटे मोटे झूट बोल कर भी दुनिया की आंखों में इतनी धूल न झोंक पाया कि दुनिया के मुल्क यह मानने के लिये तैयार हो जाते कि उत्तरी कोरिया जो कुछ कर रहा था वह रूस के इशारे या उसकी मदद से कर रहा था. आज २४ अक्तूबर सन १९५० तक जनरल मैकआर्थर ने, जो नाम के लिये यूनाइटेड नेशन्स की फौजों के सेनापति बने हुए हैं, कभी यह नहीं कहा कि रूस का उत्तरी कोरिया के हमले के काम में कोई हाथ है या था.

रूस को लपेटने की कोशिश करने का इसके सिवाय क्या मतलब हो सकता है कि अमरीका अपने ऐटम बम के बल पर रूस को मैदान में लाकर तीसरी बड़ी लड़ाई शुरू कर देना चाहता था और यह यों भी कि अमरीका के ज़िम्मेदार पत्रकार कुछ दिनों से बराबर अमरीका को इस बिना पर तीसरी लड़ाई के लिये उकसाते रहे हैं कि इस वक़्त रूस के पास न ऐटम बम तैयार हैं और न उससे बचने के साधन, इसलिये अमरीका के लिये तीसरी लड़ाई छेड़ने के लिये इससे अच्छा वक़्त और कोई नहीं हो सकता. इन बातों के आधार पर यह मान लेने में कोई अचरज नहीं होना चाहिये कि अमरीका दक्खिनी कोरिया को उत्तरी कोरिया के साथ छेड़ छाड़ करने के लिये उकसाता रहा है.

(४९४)

अगर उत्तरी कोरिया की तैयारी एग्रेशन की दलील हो सकती है तो दक्खिनी कोरिया की फ़ौजों का, यूनाइटेड नेशन्स की आज्ञा के बिना और यूनाइटेड नेशन्स के सेनापति जनरल मैकआर्थर के हुकुम के बिना, ३८ पड़ी रेखा को पार कर जाना भी इस बात की दलील होनी चाहिये कि दक्खिनी कोरिया उत्तरी कोरिया को उत्तरी कोरिया

پر وہ چھوٹے موٹے جھوٹ بول کر بھی دنیا کی آنکھوں میں اِتنی دھول نہ جھونک پایا کہ دنیا کے ملک یہ ماننے کے لئے تیار ہوجاتے کہ اُتری کوریا جو کچھ کر رہا تھا وہ روس کے اشارے یا اُس کی مدد سے کر رہا تھا . آج ۲۴ اکتوبر سن ۱۹۵۰ تک جنرل میک آرتھر نے ' جو نام کے لئے یونائٹڈ نیشنس کی فوجوں کے سینا پتی بنے ہوئے ہیں ' کبھی یہ نہیں کہا کہ روس کا اُتری کوریا کے حملے کے کام میں کوئی ہاتھ ہے یا تھا .

روس کو لپیٹنے کی کوشش کرنے کا اس کے سوائے کیا مطلب ہوسکتا ہے کہ امریکہ اپنے ایٹم بم کے بل پر روس کو میدان میں لاکر تیسری بڑی لڑائی شروع کر دینا چاہتا تھا . اور یہ یوں بھی کہ امریکہ کے ذمے دار پترکار کچھ دنوں سے برابر امریکہ کو اِس بنا پر تیسری لڑائی کے لئے اُکساتے رہے ہیں کہ اِس وقت روس کے پاس نہ ایٹم بم تیار ہیں اور نہ اُس سے بچنے کے سادھن ' اس لئے امریکہ کے لئے تیسری لڑائی چھیڑنے کے لئے اِس سے اچھا وقت اور کوئی نہیں ہوسکتا . اِن باتوں کے آدھار پر یہ مان لینے میں کوئی اچرج نہیں ہونا چاہئے کہ امریکہ دکھنی کوریا کو اُتری کوریا کے ساتھ چھیڑ چھاڑ کرنے کے لئے اُکساتا رہا ہے .

(۴۹۴)

اگر اُتری کوریا کی تیاری اگریشن کی دلیل ہوسکتی ہے تو دکھنی کوریا کی فوجوں کا' یونائٹڈ نیشنس کی آگیا کے بنا اور یونائٹڈ نیشنس کے سینا پتی جنرل میک آرتھر کے حکم کے بنا ' ۳۸ پڑی ریکھا کو پار کر جانا بھی اس بات کی دلیل ہونی چاہئے کہ دکھنی کوریا اُتری کوریا کو اُتری کوریا

के हमले से पहले छेड़ता रहा था और उत्तरी कोरिया का हमला न हमला था, न एग्रेशन था बल्कि अपनी बचत के लिये जवाबी हमला था. अब रही यह बात कि उत्तरी कोरिया दूर तक आगे क्यों बढ़ता गया. इसका जवाब देने से पहले हम यह कह देना मुनासिब समझते हैं कि यूनाइटेड नेशन्स के हुकुम का बहाना लेकर जनरल मैकआर्थर का ३८ पड़ी रेखा पार करना और उत्तरी कोरिया वालों को आगे मंचूरिया तक खदेड़ने की आवाज़ उठाना क्या इस बात की दलील नहीं है कि अमरीका दक्खिनी कोरिया को उत्तरी कोरिया से छेड़ छाड़ करने के लिये उत्तरी कोरिया के दक्खिनी कोरिया पर हमला करने से पहले उकसाता रहा था. अगर हमारी यह दलील ठीक मान ली जाती है तब हम यह कहेंगे कि उत्तरी कोरिया सिर्फ़ इसलिये आगे बढ़ता रहा कि वह दक्खिनी कोरिया से सारे बिदेसियों यानी अमरीकनों को निकाल बाहर करे और फिर सारे कोरिया को एक करके हमेशा के लिये आज़ाद कर दे. और अपने दो पड़ोसी और ज़बरदस्त मुल्क चीन और रूस के साथ मिल कर आराम से रहने लगे. अब अगर और मुल्कों की नज़रों में दक्खिनी कोरिया पर उत्तरी कोरिया का हमला एग्रेशन था तो रहा करे. कम से कम हिन्दुस्तान की नज़र में अगर वह एग्रेशन था तो बिदेसी अमरीकनों के ख़िलाफ़ होना चाहिये था. बिदेसियों के ख़िलाफ़ भी अगर एग्रेशन की इजाज़त नहीं दी जायगी तो दुनिया के मुल्क कभी ग़ुलामी से आज़ाद न हो सकेंगे. आज भी जापान और जरमनी दो मुल्क ग़ुलामी के फन्दे में फँसे हुए हैं. अगर यह दोनों मुल्क अमरीकियों और रूसियों पर अपने मुल्कों को आज़ाद करने के लिये चढ़ बैठें और उन्हें

کے حملے سے پہلے چھیڑتا رہا تھا اور اُتری کوریا کا حملہ نہ حملہ تھا، نہ اگریشن تھا بلکہ اپنی بچت کےلئے جوابی حملہ تھا. اب رہی یہ بات کہ اُتری کوریا دور تک آگے کیوں بڑھتا گیا . اس کا جواب دینے سے پہلے ہم یہ کہہ دینا مناسب سمجھتے ہیں کہ یونائٹڈ نیشنس کے حکم کا بہانہ لیکر جنرل میک آرتھر کا ۳۸ پڑی ریکھا پار کرنا اور اُتری کوریا والوں کو آگے مانچوریا تک کھدیڑنے کی آواز اٹھانا کیا اِس بات کی دلیل نہیں ہے کہ امریکہ دکھنی کوریا کو اُتری کوریا سے چھیڑ چھاڑ کرنے کے لئے اُتری کوریا کے دکھنی کوریا پر حملہ کرنے سے پہلے اُکساتا رہا تھا. اگر ہماری یہ دلیل ٹھیک مان لی جاتی ہے تب ہم یہ کہینگے کہ اُتری کوریا صرف اِس لئے آگے بڑھتا رہا کہ وہ دکھنی کوریا سے سارے بدیسیوں یعنی امریکنوں کو نکال باہر کرے اور پھر سارے کوریا کو ایک کرکے ہمیشہ کے لئے آزاد کر دے . اور اپنے دو پڑوسی اور زبردست ملک چین اور روس کے ساتھ مل کر آرام سے رہنے لگے . اب اگر اور ملکوں کی نظروں میں دکھنی کوریا پر اُتری کوریا کا حملہ اگریشن تھا تو رہا کرے . کم سے کم ہندستان کی نظر میں اگر وہ اگریشن تھا تو بدیسی امریکنوں کے خلاف ہونا چاہئے تھا . بدیسیوں کے خلاف بھی اگر اگریشن کی اجازت نہیں دی جائیگی تو دنیا کے ملک کبھی غلامی سے آزاد نہ ہوسکینگے . آج بھی جاپان اور جرمنی دو ملک غلامی کے پھندے میں پھنسے ہوئے ہیں . اگر یہ دونوں ملک امریکیوں اور روسیوں پر اپنے ملکوں کو آزاد کرنے کے لئے چڑھ بیٹھیں اور اُنہیں

अपने देश से निकाल बाहर करने की कोशिश करें तो क्या यह एग्रेशन समझा जायगा और अगर यू. यन. ओ. की नज़र में एग्रेशन ही है तो उसे चाहिये कि वह जल्दी से जल्दी अमरीकियों और रूसियों को जापान और जरमनी ख़ाली करने का हुकुम दे. पर इन दोनों को ऐसा हुकुम देने की यू. एन. ओ. मे ताक़त ही कहाँ है. उनसठ मुल्कों की यू. एन ओ. में से सत्तावन एक ओर और अमरीका और रूस एक ओर रह कर भी ताक़त के लिहाज़ से अमरीका और रूस ही बड़े हो जाते हैं आबादी के लिहाज़ से भले ही सत्तावन मुल्कों की आबादी की चौथाई के बराबर भी न हों. ऐसी यू. एन. ओ. से इन्साफ़ की उम्मीद नहीं की जा सकती किसी अदालत में अगर जजों की गुटबंदी बन जाय तो उस अदालत से किसी को इन्साफ़ नहीं मिल सकता. आज सुरक्षा कौन्सिल का यही हाल हो रहा है. इसको ज्यादा साफ़ करने के लिय हम एक उदाहरन दिये बिना रुक नहीं सकते.

(६८०)

"सर सैयद के लड़के बैरिस्टर सैयद महमूद इलाहाबाद हाई कोर्ट के जज रह चुके थे. जजी छोड़ कर फिर बैरिस्टरी करने लगे. एक मुवक्किल की तरफ़ से जब वह ज़ोर की बहस कर चुके और हर तरह की दलालों से यह साबित कर चुके कि उनका मुवक्किल ही सचाई पर है तब हाईकोर्ट के जज ने उनके सामने एक सवाल रक्खा और वह यह था कि मैं बैरिस्टर महमूद को ठीक समझूँ या जज महमूद को ठीक समझूं सैयद महमूद सच्चे आदमी थे. इसलिये जवाब में बोल बैठे— ठीक तो आप जज महमूद को ही समझिये, बैरिस्टर महमूद तो पैसो का महमूद है. बात असल यह

اپنے دیش سے نکال باهر کرنے کی کوشش کریں تو کیا یہ اگریشن سمجھا جائیگا اور اگر یو. این. او. کي نظر میں اگریشن هی ھے تو اُسے چاهئے که وہ جلدی سے جلدی امریکیوں اور روسیوں کو جاپان اور جرمنی خالي کرنے کا حکم دے. پر اِن دونوں کو ایسا حکم دینے کی یو این. او. میں طاقت هي کهاں ھے. اُنسٹھ ملکوں کی یو. این او. میں سے ستاون ایک اور اور امریکہ اور روس ایک اور رہ کر بھی طاقت کے لحاظ سے امریکہ اور روس هی بڑے هوجاتے هیں. آبادي کے لحاظ سے بھلے هی ستاون ملکوں کي آبادی کی چوتھائی کے برابر بھی نه هوں. ایسی یو. این. او. سے انصاف کی اُمید نهیں کی جاسکتي. کسی عدالت میں اگر ججوں کی گٹ بندي بن جائے تو اُس عدالت سے کسي کو انصاف نهیں مل سکتا. آج سرکشا کونسل کا یهی حال هورها ھے. اس کو زیادہ صاف کرنے کے لئے هم ایک اُداهرن دیئے بنا رک نهیں سکتے.

(٦٨٠)

"سر سید کے لڑکے بیرسٹر سید محمود الهآباد هائیکورٹ کے جج رہ چکے تھے. ججی چھوڑ کر پھر بیرسٹری کرنے لگے. ایک مؤکل کی طرف سے جب وہ زور کی بحث کر چکے اور هر طرح کی دلیلوں سے یہ ثابت کر چکے که انکا مؤکل هی سچائي پر ھے تب هائی کورٹ کے جج نے اُن کے سامنے ایک سوال رکھا اور وہ یہ تھا که میں بیرسٹر محمود کو ٹھیک سمجھوں یا جج محمود کو ٹھیک سمجھوں. سید محمود سچے آدمی تھے. اسلئے جواب میں بول بیٹھے—ٹھیک تو آپ جج محمود کو هی سمجھئے، بیرسٹر محمود تو پیسوں کا محمود ھے. بات اصل یہ

थी कि सैयद महमूद जज की हैसियत से उसी तरह के मुक़दमे में ऐसा फ़ैसला दे चुके थे जो उनके मुवक्किल के बिलकुल ख़िलाफ़ पड़ता था. तभी तो जज को इस तरह का सवाल उठा कर सैयद महमूद की दलीलों से छुटकारा मिला."

आज यू. एन. ओ. की सुरक्षा कौंसिल में इसी तरह की दलीलें चल रही हैं. अमरीका का पैसा जो कुछ चाहे बुलवा सकता है. अमरीका को छोड़िये, रूस को ही लीजिये. उसने वीटो के अधिकार वाले मुल्क बरतानिया की ग़ैर हाज़िरी में इसराईल को यू. एन. ओ. का मेम्बर बना ही दिया. फिर उसे यह कहने का क्या हक़ रह गया कि वह सब कारवाई ग़ैरक़ानूनी थी जो रूस की ग़ैर हाज़िरी में हुई क्योंकि रूस को वीटो का अख़्तियार मिला हुआ है. यह ठीक है कि उसने बेक़ायदगी का बीज बोया और वह उसका फल भोगे. पर और दूसरे मुल्क एक बेक़ायदगी के बाद दूसरी बेक़ायदगी क्यों होने दें, और अगर होने देंगे तो तीसरी लड़ाई के लिये तैयार रहें. तीसरी लड़ाई यानी दुनिया की आधी या इससे ज़्यादा आबादी का मिट्टी में मिल जाना. दूसरे मुल्क अगर आज़ादी से राय देने की ताक़त नहीं रखते तो वह यू. एन. ओ. से अलग होकर दुनिया का ज़्यादा भला कर सकते हैं. कुछ मुल्क हम पर बिगड़ सकते हैं और कह सकते हैं कि वह आज़ादी से राय देते हैं, अमरीका के दबे हुए नहीं हैं. तब हम यह कहेंगे कि अगर वह इन्साफ़ से भरी राय नहीं दे सकते तब भी उन्हें यू. एन. ओ. छोड़ देना चाहिये. अगर वह यह कहेंगे कि वह इन्साफ़ से ही राय देते हैं, तब हम यही कहेंगे कि अगर इन्साफ़ से राय दी होती तो आज जो ज़ुल्म दक्खनी कोरिया

(६९५)

تھی کہ سید محمود جج کی حیثیت سے اُسیطرح کے مقدمے میں ایسا فیصلہ دے چکے تھے جو اُن کے مؤکل کے بالکل خلاف پڑتا تھا۔ تبھی تو جج کو اِس طرح کا سوال اُٹھا کر سید محمود کی دلیلوں سے چھٹکارا ملا۔"

آج یو۔ این۔ او۔ کی سورکشا کونسل میں اِسی طرح کی دلیلیں چل رہی ہیں۔ امریکہ کا پیسہ جو کچھ چاہے بلوا سکتا ہے۔ امریکہ کو چھوڑئیے، روس کو ہی لیجئے۔ اُس نے ویٹو کے ادھیکار والے ملک برطانیہ کی غیر حاضری میں اسرائیل کو یو۔ این۔ او۔ کا ممبر بنا ہی دیا۔ پھر اُسے یہ کہنے کا کیا حق رہ گیا کہ وہ سب کاروائی غیر قانونی تھی جو روس کی غیرحاضری میں ہوئی کیونکہ روس کو ویٹو کا اختیار ملا ہوا ہے۔ یہ ٹھیک ہے کہ اُس نے بے قاعدگی کا بیج بویا اور وہ اُسکا پھل بھوگے۔ پر اور دوسرے ملک ایک بےقاعدگی کے بعد دوسری بے قاعدگی کیوں ہونے دیں اور اگر ہونے دینگے تو تیسری لڑائی کے لئے تیار رہیں۔ تیسری لڑائی یعنی دنیا کی آدھی یا اِس سے زیادہ آبادی کا مٹی میں مل جانا۔ دوسرے ملک اگر آزادی سے رائے دینے کی طاقت نہیں رکھتے تو وہ یو۔ این۔ او۔ سے الگ ہوکر دنیا کا زیادہ بھلا کر سکتے ہیں۔ کچھ ملک ہم پر بگڑ سکتے ہیں اور کہہ سکتے ہیں کہ وہ آزادی سے رائے دیتے ہیں، امریکہ کے دبے ہوئے نہیں ہیں۔ تب ہم یہ کہینگے کہ اگر وہ انصاف سے بھری رائے نہیں دے سکتے تب بھی اُنہیں یو۔ این۔ او۔ چھوڑ دینا چاہئے۔ اگر وہ یہ کہینگے کہ وہ انصاف سے ہی رائے دیتے ہیں تب ہم یہی کہینگے کہ اگر انصاف سے رائے دی ہوتی تو آج جو ظلم دکھنی کوریا

(٦٩٥)

पर हो चुका और उत्तरी कोरिया पर हो रहा है वह न हुआ होता. क्या उनका इन्साफ़ इतना भी नहीं चाहता कि दक्खिनी उत्तरी कोरिया कहलाने वाले दोनों मुल्कों के प्रतिनिधियों को बुलाकर मामले की असलियत तो जानते. यू. एन. ओ. जिस दिन सच्चे मानों में बेलाग संस्था बन जायगी उस दिन दुनिया में न कोई मुल्क ग़ुलाम रह सकेगा और न किसी मुल्क पर दूसरे मुल्क का फ़ौजी घेरा रह सकेगा. यू. एन. ओ. को सच्ची यू. एन. ओ. बनने से पहले सब मुल्कों को हर तरह और हर मानों में आज़ाद करने का काम उठाना होगा, और जिसे वह उठाना नहीं चाहती. और ऐसा हुए बिना उससे इन्साफ़ की उम्मीद नहीं की जा सकती. अगर आज रूस की गुट्ट ज़ोरदार होती तो अमरीका वही कर रहा होता जो आज रूस कर रहा है. इस खींचातानी का जो नतीजा हुआ करता है वह हो रहा है.

यू. एन. ओ. और सुरक्षा कौन्सिल के रहते सूडान, सिंगापुर और हाँगकाँग में अंगरेज़ क्यों और किस लिये ? हिन्दचीन में फ़रांसीसियों की मार धाड़ क्यों ? पाँडेचरी, कारीकाल और माही में फ़रान्सीसी क्यों पड़े हुए हैं ? गोआ, दामन, देओ में पुर्तगाली किस लिये ? आस्ट्रेलिया जितने बड़े मुल्क में, नहीं नहीं, महाद्वीप में अस्सी लाख आदमी क्यों. इस तरह की नाबराबरी रहते हुए यू. एन. ओ. दुनिया की पंचायत होने का दावा नहीं कर सकती. हम यू. एन. ओ. पर यह इलज़ाम न लगाते अगर वह निरी पंचायत बनी रहती. पर अब तो उसने अपनी फ़ौज बना ली है. इसलिये अब हम उससे इस तरह की माँग कर सकते हैं.

پر ھو چکا اور اُتری کوریا پر ھو رھا ھے وہ نہ ھوا ھوتا . کیا اُنکا انصاف اِتنا بھی نہیں چاھتا کہ دکھنی اُتری کوریا کھلانے والے دونوں ملکوں کے پرتی‌ندھیوں کو بلا کر معاملے کی اصلیت تو جانتے . یو . این . او . جس دن سچے معنوں میں بے لاگ سنستھا بن جائیگی اُس دن دنیا میں نہ کوئی ملک غلام رہ سکیگا اور نہ کسی ملک پر دوسرے ملک کا فوجی گھیرا رہ سکیگا . یو . این . او . کو سچی یو . این . او . بننے سے پہلے سب ملکوں کو ھر طرح اور ھر معنوں میں آزاد کرنے کا کام اُٹھانا ھوگا' اور جسے وہ اُٹھانا نہیں چاھتی . اور ایسا ھوے بنا اُس سے انصاف کی اُمید نہیں کی جا سکتی اگر آج روس کی گٹ زوردار ھوتی تو امریکہ وھی کر رھا ھوتا جو آج روس کر رھا ھے . اس کھینچا تانی کا جو نتیجہ ھوا کرتا ھے وہ ھو رھا ھے .

یو . این . او . اور سورکشا کونسل کے رھتے سوڈان ' سنگا پور اور ھانگ کانگ میں انگریز کیوں اور کس لئے ؟ ھند چین میں فرانسیسیوں کی مار دھاڑ کیوں ؟ پانڈیچری ' کاری کال اور ماھی میں فرانسیسی کیوں پڑے ھوئے ھیں ؟ گوآ ' دامن ' دیو میں پرتگالی کس لئے ؟ آسٹریلیا جتنے بڑے ملک میں ' نہیں نہیں ' مہا دیپ میں اسسی لاکھ آدمی کیوں ؟ اس طرح کی نابرابری رھتے ھوئے یو . این . او . دنیا کی پنچائت ھونے کا دعوی نہیں کرسکتی . ھم یو . این . او . پر یہ الزام نہ لگاتے اگر وہ نری پنچائت بنی رھتی . پر اب تو اُس نے اپنی فوج بنالی ھے . اس لئے اب ھم اُس سے اس طرح کی مانگ کرسکتے ھیں .

के पुलिस ऐक्शन के नाम से पुकारा जाता है. पुलिस ऐक्शन कितनी भयानक चीज़ है इसको हमसे ज्यादा पंडित जवाहरलाल और सरदार पटेल जानते हैं क्योंकि वह हाल ही में हैदराबाद के ख़िलाफ़ पुलिस कारवाई कर चुके हैं, और दूसरे मुल्कों के वज़ीर भी पुलिस कारवाई की भयानकता से अजानकार नहीं हैं. तब फिर क्यों नहीं इस एगरेशन से भी ख़राब चीज़ को रोका नहीं जा रहा है. पुलिस को लूटमार की बहुत कम आदत होती है और फ़ौजों को तो लूटमार की तालीम दी जाती है. पर जब फ़ौज पुलिस का काम ले बैठे तब जो नतीजे होंगे उसका अन्दाज़ा हमारा क़लम नहीं कर सकता. उत्तर कोरिया के लोग भागे जा रहे हैं. यह हम नहीं कहते, जनरल मेकआर्थर का कहना है. उत्तर कोरिया की राजधानी में यूनाइटेड नेशन्स की छतरी फ़ौज आसानी से उतर गई. किसी ने मुक़ाबला नहीं किया. उत्तर कोरिया वाले राजधानी छोड़ कर भाग गए. फिर यह उनको क्यों खदेड़ा जा रहा है. सब मुल्क चुप हैं और यह जुल्म देख रहे हैं. और अब यह कनाडा से कोरिया किस लिये फ़ौजें जा रही हैं और दूसरे मुल्क क्यों उन भागते हुओं को पीछा करने के लिये बहादुरी दिखाने जा रहे हैं कोरिया में अब सारे मुल्कों की फ़ौज इकठ्ठा करने का क्या मतलब है ? क्या रूस को नीचा दिखाना और उसे ज़बरदस्ती लड़ाई के मैदान में लाना ? अमरीका ने नीचा देखा—अपनी ग़लती से. रूस ने नीचा दिखाने की कोशिश कभी नहीं की. हाँ, रूस ने कुछ दिनों में ही कोरिया में रह कर कोरिया वालों को कोरिया का सचा मालिक बना दिया. और तभी तो वह जान पर खेलकर अपने मुल्क को आज़ाद करने

کے پولیس ایکشن کے نام سے پکارا جاتا ہے ۔ پولیس ایکشن کتنی بھیانک چیز ہے اس کو ہم سے زیادہ پنڈت جواہر لال اور سردار پٹیل جانتے ہیں کیونکہ وہ حال ہی میں حیدرآباد کے خلاف پولیس کاروائی کر چکے ہیں ' اور دوسرے ملکوں کے وزیر بھی پولیس کاروائی کی بھیانکتا سے اجانکار نہیں ہیں ۔ تب پھر کیوں نہیں اس اگریشن سے بھی خراب چیز کو روکا نہیں جارہا ہے ۔ پولیس کو لوٹ مار کی بہت کم عادت ہوتی ہے اور فوجوں کو تو لوٹ مار کی تعلیم دی جاتی ہے ۔ پر جب فوج پولیس کا کام لے بیٹھے تب جو نتیجے ہونگے اُس کا اندازہ ہمارا قلم نہیں کرسکتا ۔ اُتر کوریا کے لوگ بھاگے جا رہے ہیں ۔ یہ ہم نہیں کہتے ' جنرل میک آرتھر کا کہنا ہے ۔ اُتر کوریا کی راجدھانی میں یونائٹڈ نیشنس کی چھتری فوج آسانی سے اُتر گئی ۔ کسی نے مقابلہ نہیں کیا ۔ اُتر کوریا والے راجدھانی چھوڑ کر بھاگ گئے ۔ پھر یہ اُن کو کیوں کھدیڑا جا رہا ہے ۔ سب ملک چپ ہیں اور یہ ظلم دیکھ رہے ہیں ۔ اور اب یہ کناڈا سے کوریا کس لئے فوجیں جا رہی ہیں اور دوسرے ملک کیوں اُن بھاگتے ہوؤں کو پیچھا کرنے کے لئے بہادری دکھانے جا رہے ہیں ۔ کوریا میں اب سارے ملکوں کی فوج اکٹھا کرنے کا کیا مطلب ہے ؟ کیا روس کو نیچا دکھانا اور اُسے زبردستی لڑائی کے میدان میں لانا ؟ امریکہ نے نیچا دیکھا—اپنی غلطی سے ۔ روس نے نیچا دکھانے کی کوشش کبھی نہیں کی ۔ ہاں ' روس نے کچھ دنوں میں ہی کوریا میں رہ کر کوریا والوں کو کوریا کا سچا مالک بنا دیا ۔ اور تبھی تو وہ جان پر کھیل کر اپنے ملک کو آزاد کرنے

रोका जाय. जवाब सीधा है. चूँकि सोना चमकता है, इसलिए जो भी चमकता हो वह सब सोना नहीं हो जाता. जमीयतुल उलमा शुरू से ही एक ऐसी संस्था रही है, जिसकी कलचर में क़ौमियत यानी हिन्दुस्तानियत का उससे कम स्थान नहीं रहा है जितना कांग्रेस के अन्दर. जमीयतुल उलमा के एक रहनुमा मौलाना मुहम्मद क़ासिम जो दारुल उलूम देव बन्द के बानी थे १८५७ के ग़दर में हिस्सा ले चुके हैं.

जमीयत के एक दूसरे रहनुमा शेख़ुल हिन्द मौलाना हुसैन अहमद मदनी जंग आज़ादी के सिलसिले में चार साल तक माल्टा टापू में क़ैद रहे थे. सब जानते हैं कि मौलाना मदनी कांग्रेस की कितनी ख़िदमत कर चुके हैं और आज भी उसके कितने वफ़ादार हैं.

इसी तरह जमीयतुल उलमा के दूसरे नेताओं का इतिहास है, जो कांग्रेसी नेताओं से किसी हालत में कम शानदार नहीं कहा जा सकता. क्या यही इतिहास राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का भी है ?

•

कांग्रेस अपनी कमज़ोरी को क्यों छिपाती है ? क्यों नहीं वह साफ़-साफ़ कहती कि उसे अगले चुनाव में ख़तरा है, जिसकी वह पेशबन्दी कर रही है. पर जिस रास्ते पर वह जा रही है, वह रास्ता भी तो अज़माया जा चुका है. न सही हिन्दुस्तान में, चीन में. क्या जनता को मुसीबत में रखने वाली कोमिन्टांग जैसी बड़ी संस्था और चांगकाई शेक जैसे

جواب سیدھا ہے۔ چونکہ سونا چمکتا ہے، اس لئے جو بھی چمکتا ہے وہ سب سونا نہیں ہو جاتا۔ جمعیۃ العلما شروع سے ہی ایک ایسی سنستھا رہی ہے جس کی کلچر میں قومیت یعنی ہندستانیت کا اُس سے کم استھان نہیں رہا ہے۔ جتنا کانگریس کے اندر جمعیۃ العلما کے ایک رہنما مولانا محمد قاسم جو دارالعلوم دیوبند کے بانی تھے۔ ۱۸۵۷ کے غدر میں حصہ لے چکے ہیں۔

جمعیۃ کے ایک دوسرے رہنما شیخ الہند مولانا حسین احمد مدنی جنگ آزادی کے سلسلے میں چار سال تک مالٹا ٹاپو میں قید رہے تھے۔ سب جانتے ہیں کہ مولانا مدنی کانگریس کی کتنی خدمت کر چکے ہیں اور آج بھی اُس کے کتنے وفادار ہیں۔

اسی طرح جمعیۃ العلما کے دوسرے نیتاؤں کا اتہاس ہے۔ جو کانگریسی نیتاؤں سے کسی حالت میں کم شاندار نہیں کہا جا سکتا۔ کیا یہی اتہاس راشٹریہ سویم سیوک سنگھ کا بھی ہے۔

کانگریس اپنی کمزوری کو کیوں چھپاتی ہے؟ کیوں نہیں وہ صاف صاف کہتی کہ اُسے اگلے چناؤ میں خطرہ ہے، جس کی وہ پیش بندی کر رہی ہے۔

پر جس راستے پر وہ جا رہی ہے وہ راستہ بھی تو آزمایا جا چکا ہے۔ نہ سہی ہندستان میں، چین میں، کیا جنتا کو مصیبت میں رکھنے والی کومن ٹانگ جیسی بڑی سنستھا اور چیانگ کائی شیک جیسے راشٹری نیتا کی شان کرکری نہیں ہو گئی۔ کانگریس کیوں ایک ایسے

के लिये अमरीकी फ़ौजों से भिड़ पड़े और उन्हें ख़ूब छकाया. क्या अमरीका अपनी खीज मिटाने के लिये दुनिया भर की फ़ौजों के बल पर बेतहाशा आगे बढ़ता चला जा रहा है. यह समझना उसकी भूल है कि दुनिया में अब अमरीका से बड़ा कोई नहीं है. ऐसा समझना न दिखाई देने वाली और ग़ैबी ताक़त से इनकार करना है.

उत्तरी कोरिया वाले हार जाने पर भी हमारी नज़रों में ऊँचे रहेंगे क्योंकि उन्होंने किसी मुल्क पर चढ़ाई नहीं की थी. अमरीका वाले और वह मुल्क जो आज कोरिया पर अपनी फ़ौजें भेज रहे हैं वह हमारी नज़रों में वही जगह पा सकते हैं जो उस आदमी को मिलती जो ककड़ी के चोर को कटार से मारने की सज़ा देता है, या उन कौरवों की तरफ़ से लड़ने वाले महारथियों को मिली हुई है जिन्होंने सुभद्रा के पुत्र अभिमन्यू को मारा. कोरिया वाले आज़ादी के लिये लड़ रहे थे. अमरीका और अमरीका के साथी कोरिया की बरबादी के लिये बढ़ रहे हैं. कोरिया का एक भी आदमी मरता है या एक भी मकान टूटता है, फिर चाहे वह दक्खिनी कोरिया का हो या उत्तरी कोरिया का, कोरिया का ही नुक़सान होता है. अब कोरिया आज़ाद किया जा रहा है या बरबाद किया जा रहा है.

३८ पड़ी रेखा पर पहुँचते ही यूनाइटेड नेशन्स को लड़ाई बन्द कर देना चाहिये थी और फिर यह देखना चाहिये था कि उत्तरी कोरिया वाले क्या करते हैं. जनरल मेकआर्थर की यह धमकी हमें न्याय से भरी हुई नहीं मालूम होती कि उत्तरी कोरिया वाले अपने

(६९९)

کے لئے امریکي فوجوں سے بھڑ پڑے اور اُنهیں خوب چھکایا ۔ کیا امریکہ اپنی کھیج مٹانے کے لئے دنیا بھر کی فوجوں کے بل پر بے تحاشا آگے بڑھتا چلا جا رہا ہے ۔ یہ سمجھنا اُسکی بھول ہے کہ دنیا میں اب امریکہ سے بڑا کوئی نہیں ہے ۔ ایسا سمجھنا نہ دکھائی دینے والی اور غیبی طاقت سے انکار کرنا ہے ۔

اُتری کوریا والے ہار جانے پر بھي هماري نظروں میں اونچے رهینگے کیونکہ اُنهوں نے کسی ملک پر چڑهائی نہیں کي تھي ۔ امریکہ والے اور وہ ملک جو آج کوریا پر اپني فوجیں بھیج رہے ہیں وہ هماری نظروں میں وهی جگہ پاسکتے ہیں جو اُس آدمی کو ملتی جو ککڑي کے چور کو کٹار سے مارنے کی سزا دیتا ہے' یا اُن کورووں کی طرف سےلڑنے والے مہارتھیوں کو ملی ہوئي ہے جنهوں نے سبھدرا کے پتر ابھمنیو کو مارا ۔ کوریا والے آزادي کے لئے لڑ رہے تھے ۔ امریکہ اور امریکہ کے ساتھي کوریا کی بربادي کے لئے بڑھ رہے ہیں ۔ کوریا کا ایک بھی آدمی مرتا ہے یا ایک بھی مکان ٹوٹتا ہے' پھر چاہے وہ دکھنی کوریا کا ہو یا اُتری کوریا کا' کوریا کا هی نقصان ہوتا ہے ۔ اب کوریا آزاد کیا جا رہا ہے یا برباد کیا جا رہا ہے ۔

۳۸ پڑی ریکھا پر پہونچتے هي یونائٹڈ نیشنس کو لڑائي بند کر دینا چاهئے تھی اور پھر یہ دیکھنا چاهئے تھا کہ اُتري کوریا والے کیا کرتے ہیں ۔ جنرل میک آرتھر کی یہ دھمکي همیں نیائے سے بھری ہوئی نہیں معلوم ہوتی کہ اُتری کوریا والے اپنے گھر

जनरल मैकआर्थर 'की शरन में आ जायं यह काम हमला करने वाले मुल्कों को तो शोभा देता है पर सारी दुनिया की कहलाने वाली पंचायत को शोभा नहीं देता

अमरीका की जो किरकिरी होनी थी वह हो चुकी और सब मुल्कों ने अमरीका को ख़ूब अच्छी तरह पहचान लिया. अब अमरीका रूस को नीचा दिखाकर अपनी किरकिरी को मिटाना चाहता है. इसमें कोई शक नहीं कि रूस का इस वक़्त चुप बैठना भले ही बुद्धिमानी और दूरंदेशी हो पर लोग इस बुद्धिमानी और दूरंदेशी को यही समझेंगे यह ज़रा मुश्किल है. एक हिस्सा है जो रूस की इस ख़ामोशी की वजह से अपनी नज़रों में उसे वह जगह नहीं देता जो अब तक देता रहा है. उनका यह जगह देना ग़लत हो या सही इससे हमें कोई सरोकार नहीं अगर आज रूस की थोड़ी सी भी किरकिरी हुई है तो वह उसका हक़दार था. यह सज़ा उसे उस विश्वासघात की मिल रही है जो उसने पिछली लड़ाई में जापान के साथ की थी. रूस तो जापान का दोस्त था पर अमरीका के ऐटम बम के डर से उसे ज़बरदस्ती जापान के ख़िलाफ़ तलवार उठानी पड़ी. और इस विश्वासघात की सज़ा तो उसको मिलना ही चाहिये थी.

अमरीका और दूसरे मुल्क कम्यूनिज़्म से ऐसे ही बिदकते हैं जैसे सांड लाल कम्बल से. कम्यूनिज़्म एक तरह की हकूमत है. यह ठीक है कि वह तलवार के ज़ोर से क़ायम की जाती है पर तलवार के ज़ोर से तो सभी तरह की हकूमत क़ायम होती हैं. अमरीकी सरकार बरतानिया से लोहा लेकर ही रिपब्लिक बनी थी. यही हाल

جنرل میک آرتھر کي شرن میں آجائیں یہ کام حملہ کرنے والے ملکوں کو تو شوبھا دیتا ھے پر ساری دنیا کی کہلانے والی پنچائت کو شوبھا نہیں دیتا .

امریکہ کی جو کرکری ھونی تھی وہ ھو چکي اور سب ملکوں نے امریکہ کو خوب اچھی طرح پہچان لیا . اب امریکہ روس کو نیچا دکھا کر اپنی کرکري کو مٹانا چاھتا ھے. اِسمیں کوئی شک نہیں کہ روس کا اسوقت چپ بیٹھنا بھلے ھی بدھیماني اور دور اندیشی ھو پر لوگ اس بدھیمانی اور دوراندیشی کو صحیح سمجھینگے یہ ذرا مشکل ھے. ایک حصہ ھے جو روس کي اِس خاموشی کی وجہ سے اپني نظروں میں اُسے وہ جگہ نہیں دیتاجو ابتک دیتا رھاھے . اُنکا یہ جگہ دینا غلط ھو یا صحیح اِس سے ھمیں کوئی سروکار نہیں. اگرآج روس کی تھوڑي سي بھي کرکری ھوئی ھے تو وہ اُسکا حق‌دار تھا . یہ سزا اُسے اُس وشواس گھات کی مل رھی ھے جو اُس نے پچھلي لڑائي میں جاپان کے ساتھ کی تھي . روس تو جاپان کا دوست تھا پر امریکہ کے ایٹم بم کے ڈر سے اُسے زبردستی جاپان کے خلاف تلوار اُٹھانی پڑي . اور اس وشواس گھات کي سزا تو اُس کو ملنا ھی چاھئے تھی .

امریکہ اور دوسرے ملک کمیونزم سے ایسے ھی بدکتے ھیں جیسے سانڈ لال کمبل سے . کمیونزم ایک طرح کی حکومت ھے . یہ ٹھیک ھے کہ وہ تلوار کے زور سے قائم کی جاتی ھے . پر تلوار کے زور سے تو سبھی طرح کی حکومت قایم ھوتی ھے . امریکی سرکار برطانیہ سے لوھا لیکر ھی ریپبلک بنی تھی . یہی حال

फ़रांसीसी और और सरकारों का है. न जाने क्यों अमरीका घबरा उठता है जब किसी मुल्क में रूसी क़िस्म की सरकार क़ायम होती है. हमें मालूम होता है अमरीका को कोई बीमारी हो गई है. रूस को यह बीमारी नहीं है. रूस के पड़ोसी हिन्दुस्तान ने जब रिपब्लिक बनाई और एक तरह से अमरीकी ढंग अख़तियार किया तो रूस को कोई भड़क नहीं हुई. उसने तो ख़ुशी से आगे बढ़ कर हिन्दुस्तानी रिपब्लिक को अपनाया और उसके साथ हर तरह का रिश्ता जोड़ा. उधर अमरीका को लीजिये. अमरीका से सात समन्दर पार चीन में रूसी ढंग की सरकार क़ायम होती है और अमरीका के कान खड़े हो जाते हैं, रोंगटे खड़े हो जाते हैं—मानो डर ने आ घेरा हो. और वह डर आज तक अमरीका पर छाया हुआ है. उस चीन को यूनाइटेड नेशन्स का मेम्बर नहीं होने देता. अपने हाथ के चीनी खिलौने को वह चीन का सब कुछ माने हुए है. हिन्द चीन आज़ाद होना चाहता है और अपने यहाँ रूसी ढंग की सरकार बनाना चाहता है तो अमरीका को ऐसा मालूम होता है मानो किसी ने अमरीका पर हमला बोल दिया हो. यह सब क्यों और किस लिये. भारत ने बड़ी कोशिश की कि अमरीका यह समझ ले कि कम्यूनिज़्म ऐसे ही एक तरह की हकूमत है जैसे रिपब्लिक या और दूसरी तरह की हकूमतें.

भारत ने यह भी समझाने की कशिश की कि कम्यूनिस्ट सरकारों का यह मतलब नहीं होता कि वह रूस के मातहत हैं या रूस के असर में हैं. पर अमरीकी न समझे, न समझे. वह उलटे भारत और भारत वासियों और हिन्दुस्तानियों

فرانسیسی اور اور سرکاروں کا ہے. نہ جانے کیوں امریکہ گھبرا اُٹھتا ہے جب کسی ملک میں روسی قسم کی سرکار قایم ہوتی ہے . ہمیں معلوم ہوتا ہے امریکہ کو کوئی بیماری ہو گئی ہے . روس کو یہ بیماری نہیں ہے . روس کے پڑوسی ہندستان نے جب ری پبلک بنائی اور ایک طرح سے امریکی ڈھنگ اختیار کیا تو روس کو کوئی بھڑک نہیں ہوئی اُس نے تو خوشی سے آگے بڑھ کر ہندستانی ری پبلک کو اپنایا اور اُسکے ساتھ ہر طرح کا رشتہ جوڑا . اُدھر امریکہ کو لیجئے . امریکہ سے سات سمندر پار چین میں روسی ڈھنگ کی سرکار قائم ہوتی ہے اور امریکہ کے کان کھڑے ہو جاتے ہیں' رونگٹے کھڑے ہو جاتے ہیں—مانو ڈر نے آ گھیرا ہو . اور وہ ڈر آجتک امریکہ پر چھایا ہوا ہے . اُس چین کو یونائٹڈ نیشنس کا ممبر نہیں ہونے دیتا اپنے ہاتھ کے چینی کھلونےکو وہ چین کا سب کچھ مانے ہوئے ہے . ہند چین آزاد ہونا چاہتا ہے اور اپنے یہاں روسی ڈھنگ کی سرکار بنانا چاہتا ہے تو امریکہ کو ایسا معلوم ہوتا ہے مانو کسی نے امریکہ پر حملہ بول دیا ہو . یہ سب کیوں اور کس لئے . بھارت نے بڑی کوشش کی کہ امریکہ یہ سمجھلے کہ کمیونزم ایسے ہی ایک طرح کی حکومت ہے جیسے ری پبلک یا اور دوسری طرح کی حکومتیں .

بھارت نے یہ بھی سمجھانے کی کوشش کی کہ کمیونسٹ سرکاروں کا یہ مطلب نہیں ہوتا کہ وہ روس کے ماتحت ہیں یا روس کے اثر میں ہیں . پر امریکی نہ سمجھے' نہ سمجھے . وہ اُلٹے بھارت اور بھارت واسیوں پر ھـی

हैं कि रूस चीन के रास्ते हिन्दुस्तान पर चढ़ा चला आता है और यह बेफ़िक्र बैठे हैं. अमरीकियों की यह समझ में ही नहीं आता कि चीन की हकूमत एक आज़ाद हकूमत है. यह ठीक है कि रूस से उसकी दोस्ती है पर उसकी दोस्ती तो भारत से भी है, बर्मा और बरतानिया से भी है. रूस के दोस्त होने से वह रूस के इशारे पर चलने वाला नहीं हो सकता. अमरीका करे तो क्या करे. वह दूसरों को वही तो समझेगा जो वह ख़ुद है. वह दक्खिनी कोरिया में था तो नाम के लिये दक्खिनी कोरिया की सरकार थी. असली मालिक अमरीका था. आज भी वह बात बात पर किसी भी मुल्क को मार्शल मदद बन्द करने की धमकी दे बैठता है. जिस तरह वह ख़ुद दूसरे मुल्कों को अपनी गुट्ट में दबा कर रखना चाहता है, वह रूस को भी अगर इस तरह समझने लगे तो इसमें उसकी समझ का ही दोश समझना चाहिये.

कम्यूनिज़्म ने जन्म लेकर दुनिया भर की हकूमतों को दो हिस्सों में बांट दिया है. एक मज़दूर सरकार और दूसरी सेठिया सरकार. बस अब दुनिया में मज़दूरी और पूँजी दो ही देवियाँ रह गई हैं. सरकारें आम तौर से पूँजी देवी की पूजा करती हैं. पर हर देश की जनता मज़दूरी देवी पर लट्टू है. यू. एन. ओ. में सरकारों के नुमाइन्दे हैं जनता के नुमाइन्दे नहीं. तभी तो अमरीका की गुट्ट में बहुत से लोग आ मिले. पूँजीवादी सरकारें दूसरे मुल्को पर हमला करती हैं और एक दूसरे की दोस्त बनी रहती हैं.

यह सिर्फ़ इसलिये कि हमले के बाद की लूट में उन्हें भी कुछ हिस्सा मिल ही आता है. मज़दूरी वादी सरकारें किसी मुल्क पर

ھیں کہ روس چین کے راستے ھندستان پر چڑھا چلا آتا ھے اور یہ بے فکر بیٹھے ھیں ۔ امریکیوں کي یہ سمجھ میں ھی نہیں آتا کہ چین کي حکومت ایک آزاد حکومت ھے ۔ یہ ٹھیک ھے کہ روس سے اُسکي دوستي ھے پر اُسکی دوستی تو بھارت سے بھی ھے' برما اور برطانیہ سے بھی ھے ۔ روس کے دوست ھونے سے وہ روس کے اشارے پر چلنے والا نہیں ھو سکتا ۔ امریکہ کرے تو کیا کرے ۔ وہ دوسروں کو وھی تو سمجھیگا جو وہ خود ھے ۔ وہ دکھنی کوریا میں تھا تو نام کے لئے دکھنی کوریا کی سرکار تھی ۔ اصلي مالک امریکہ تھا ۔ آج بھی وہ بات بات پر کسی بھی ملک کو مارشل مدد بند کرنے کی دھمکي دے بیٹھتا ھے ۔ جسطرح وہ خود دوسرے ملکوں کو اپنی گٹ میں دباکر رکھنا چاھتا ھے' وہ روس کو بھي اگر اسطرح کا سمجھنے لگے تو اسمیں اُسکي سمجھ کا ھی دوش سمجھنا چاھئے ۔

کمیونزم نے جنم لے کر دنیا بھر کی حکومتوں کو دو حصوں میں بانٹ دیا ھے ۔ ایک مزدور سرکار اور دوسري سیٹھیا سرکار ۔ بس اب دنیا میں مزدوری اور پونجي دو ھي دیویاں رہ گئی ھیں ۔ سرکاریں عام طور سے پونجی دیوي کي پوجا کرتي ھیں. پر ھر دیش کی جنتا مزدوری دیوي پر لٹو ھے ۔ یو ۔ این ۔ او ۔ میں سرکاروں کے نمائندے ھیں جنتا کے نمائندے نہیں ۔ تبھي تو امریکہ کی گٹ میں بہت سے لوگ آ ملے ۔ پونجی وادی سرکاریں دوسرے ملکوں پر حملہ کرتی ھیں اور ایک دوسرے کي دوست بنی رھتی ھیں ۔

یہ صرف اس لئے کہ حملے کے بعد کی لوٹ میں اُنھیں بھی کچھ حصہ مل ھی جاتا ھے ۔ مزدور وادی سرکاریں کسي ملک پر

हमला नहीं करतीं. वह तो अपने मुल्क में ही पूँजीवादी सरकार को गद्दी से हटा कर सरकार की जगह लेती हैं. वह अपने मुल्क को लूटें तो कैसे लूटें और उस लूट का मतलब भी क्या होगा. उस लूट से मुल्क तो मालदार होने से रहा. यही वजह है कि वह अकेली पड़ जाती हैं.

उदाहरन के लिये चीन में मज़दूरीवादी हकूमत बनी. इससे रूस के हाथ क्या आया—न चप्पा भर ज़मीन, न रत्ती भर सोना. बस रूस चीन का दोस्त है. उससे उसकी ऐसी दाँत काटी नहीं हो सकती जैसी अमरीका और बरतानिया की. पिछली बड़ी लड़ाई में अमरीका बहुत पीछे मैदान में आया. और उसने साथ दिया बरतानिया का. तब कितनी मौज में रहा. आज जापान में मैकआर्थर साहब की वह मौज है जो कभी लार्ड कर्ज़न को भी हिन्दुस्तान में नसीब न थी. आज अमरीका पहली बड़ी लड़ाई में शामिल होकर टोटे में नहीं है. फ़ारमूसा उसके हाथ में खेल रहा है. बरतानिया में वह हवाई जहाज़ के अड्डे बना सकता है. यू. एन. ओ. को धता बताकर अटलाँटिक पैक्ट वह क़ायम कर सकता है. यू. एन. ओ. को हाथ में लेकर कोरिया पर वह छा सकता है और वह दिन दूर नहीं है कि जब वह चीन के फ़ारमूसा पर किन्हीं चार गोलियों को एग्रेशन बताकर चांग काई शेक को बग़ल में लेकर फ़ारमूसा से चीन पर ऐसे ही चढ़ाई कर सकता है जैसे आज दक्खिन कोरिया के नाम पर उत्तर कोरिया में खुल खेल रहा है. पूँजीवादी सरकार होने का यही तो बड़ा भारी नफ़ा है. जभी तो वह मज़दूरीवादी सरकार को पसन्द नहीं करती और आए दिन उनके ख़िलाफ़ प्रचार करता रहता है.

حملہ نہیں کرتیں ۔ وہ تو اپنے ملک میں ہی پونجی وادی سرکار کو گدی سے ہٹا کر سرکار کی جگہ لیتی ہیں ۔ وہ اپنے ملک کو لوٹیں تو کیسے لوٹیں اور اُس لوٹ کا مطلب بھی کیا ہوگا ۔ اُس لوٹ سے ملک تو مالدار ہونے سے رہا ۔ یہی وجہ ہے کہ وہ اکیلی پڑ جاتی ہیں ۔

اُداہرن کے لئے چین میں مزدوری وادی حکومت بنی ۔ اس سے روس کے ہاتھ کیا آیا ـــ نہ چپہ بھر زمین ' نہ رتی بھر سونا ۔ بس روس چین کا دوست ہے ۔ اُس سے اُسکی ایسی دانت کاٹی نہیں ہوسکتی جیسی امریکہ اور برطانیہ کی ۔ پچھلی بڑی لڑائی میں امریکہ بہت پیچھے میدان میں آیا ۔ اور اس نے ساتھ دیا برطانیہ کا ۔ تب کتنی موج میں رہا ۔ آج جاپان میں میک آرتھر صاحب کی وہ موج ہے جو کبھی لارڈ کرزن کو بھی ہندستان میں نصیب نہ تھی ۔ آج امریکہ پہلی بڑی لڑائی میں شامل ہوکر ٹوٹے میں نہیں ہے ۔ فارموسا اُس کے ہاتھ میں کھیل رہا ہے ۔ برطانیہ میں وہ ہوائی جہاز کے اڈے بنا سکتا ہے ۔ یو ۔ این ۔ او ۔ کو دھتا بتا کر اٹلانٹک پیکٹ وہ قائم کرسکتا ہے ۔ یو ۔ این ۔ او کو ہاتھ میں لے کر کوریا پر وہ چھا سکتا ہے اور وہ دن دور نہیں ہے کہ جب وہ چین کے فارموسا پر کنہیں چار گولیوں کو اگریشن بتا کر چانگ کائی شیک کو بغل میں لے کر فارموسا سے چین پر ایسے ہی چڑھائی کر سکتا ہے جیسے آج دکھن کوریا کے نام پر اُتر کوریا میں کھل کھیل رہا ہے ۔ پونجی وادی سرکار ہونے کا یہی تو بڑا بھاری نفع ہے ۔ جبھی تو وہ مزدوری وادی سرکار کو پسند نہیں کرتی اور آئے دن اُن کے خلاف پرچار کرتی رہتی ہے ۔

उत्तरी कोरिया मज़दूरीवादी सरकार को अपनाए हुए था. इस लिये उत्तरी कोरिया का बच्चा बच्चा उसका साथी था. तभी तो वह इतनी जल्दी तैयारी कर सका और इतने जोश से लड़ सका. दक्खिनी कोरिया को उसने दो महीने में ही मज़दूरीवादी सरकार की चाट लगा दी और हमें यह विश्वास है कि दक्खिनी कोरिया में पूँजीवादी सरकार कभी अपनी जगह न बना सकेगी. जनरल मैकआर्थर और यूनाइटेड नेशन्स की फ़ौजें कोरिया को जीत सकती हैं, कोरिया की फ़ौजों को हरा सकती हैं पर कोरिया वालों के दिलों को न जीत सकती हैं, न हरा सकती हैं. हम तो सत्याग्रह के भक्त उसी पर विश्वास करते हैं. अगर हमें उत्तर कोरिया वालों को सलाह देने का अधिकार है और उनको हमारी सलाह की जरूरत है तो हम यही सलाह देंगे कि अगर आज भी वह अपने हथियारों को तोड़ डालें और निहत्थे होकर कोरिया की राजधानी में घुस पड़ें और अपनी जानें दे दें तो अव्वल तो अमरीका या यूनाइटेड नेशन्स की फ़ौजें उनकी जान ले ही नहीं सकेंगी और अगर वह इतने पत्थर दिल हुए कि वह उनकी जानें ले ही लें तो कोरिया वाले सारी दुनिया की सहानुभूति पालेंगे और फिर यह हरगिज़ न हो सकेगा कि कोई बिदेसी वहाँ अपने पाँव जमा सके. सत्याग्रही की हार कभी नहीं होती. न उसे खीजना पड़ता है और न शरमिन्दा होना पड़ता है. हाँ, बड़ी बड़ी मुसीबतों का सामना जरूर करना पड़ता है पर सच्चा होने के नाते लोगों की नज़रों में ऊँचा बना रहता है और उनसे सहानुभूति पाता रहता है. सत्याग्रह को अपनाकर हथियार तोड़ना हथियार डालना नहीं है. हथियार डालना दुश्मन से दब जाना है या अन्यायी

أتری کوریا مزدوری‌وادی سرکار کو اپنائے ہوئے تھا . اس لئے أتری کوریا کا بچہ بچہ أس کا ساتھی تھا . تبھی تو وہ اتنی جلدی تیاری کر سکا اور اتنے جوش سے لڑسکا . دکھنی کوریا کو أس نے دو مہینے میں ہی مزدوری وادی سرکار کی چاٹ لگا دی اور ہمیں یہ وشواس ہے کہ دکھنی کوریا میں پونجی وادی سرکار کبھی اپنی جگہ نہ بنا سکیگی . جنرل میک‌آرتھر اور یونائٹڈنیشنس کی فوجیں کوریا کو جیت سکتی ہیں' کوریا کی فوجوں کو ہرا سکتی ہیں پر کوریا والوں کے دلوں کو نہ جیت سکتی ہیں نہ ہرا سکتی ہیں . ہم تو ستیاگرہ کے بھکت أسی پر وشواس کرتے ہیں . اگر ہمیں أتر کوریا والوں کو صلاح دینے کا ادھیکار ہے اور انکو ہماری صلاح کی ضرورت ہے تو ہم یہی صلاح دینگے کہ اگر آج بھی وہ اپنے ہتھیاروں کو توڑ ڈالیں اور نہتھے ہو کر کوریا کی راجدھانی میں گھس پڑیں اور اپنی جانیں دے دیں تو اول تو امریکہ یا یونائٹڈنیشنس کی فوجیں أنکی جان لے ہی نہیں سکینگی اور اگر وہ اتنے پتھر دل ہوئے کہ وہ أنکی جانیں لے ہی لیں تو کوریا والے ساری دنیا کی سہانوبھوتی پالینگے اور پھر یہ ہرگز نہ ہوسکیگا کہ کوئی بدیسی وہاں اپنے پاؤں جما سکے . ستیاگرہی کی ہار کبھی نہیں ہوتی . نہ أسے کھیجنا پڑتا ہے اور نہ شرمندہ ہونا پڑتا ہے' ہاں بڑی بڑی مصیبتوں کا سامنا ضرور کرنا پڑتا ہے پر سچا ہونے کے ناتے لوگوں کی نظروں میں اونچا بنا رہتا ہے اور أن سے سہانوبھوتی پاتا رہتا ہے . ستیاگرہ کو اپنا کر ہتھیار توڑنا ہتھیار ڈالنا نہیں ہے . ہتھیار ڈالنا دشمن سے دب جانا ہے یا انیائی

े दब जाना है और हथियार तोड़ना यानी दुश्मन की बुराइयों के खिलाफ़ लड़ाई छेड़ना और उसके आगे ज़ोरों से डट जाना. शेर को पिंजड़े में फँसा देख कर बहुत कम लोगों को दया आती है पर गाय को पिंजड़े में देख कर हर आदमी को दौड़कर बचाने की सूझती है. गाय अपने बच्चे या ग्वाले को बचाने की ख़ातिर जब पूँछ उठाकर और बदन फुलाकर शेर के पेट में अपने सींग भोंकती है तब भी लोगों को शेर पर दया नहीं आती. उनकी सहानुभूति गाय के साथ ही होती है क्यों कि शेर न सचाई पर होता है और न इन्साफ़ पर. उत्तरी कोरिया के रहने वालो, तुम अपनी जान और अपने मुल्क की शान बचाने के लिये लड़े. तुम्हें कोई इतिहास लिखने वाला बुरे लफ़्ज़ों में याद नहीं करेगा. अमरीका और दूसरे मुल्क अपनी शान बढ़ाने के लिये तुम भागते हुओं के पीछे दौड़े जा रहे हैं. उन्हें कोई इतिहास लिखने वाला कभी अच्छे शब्दों से याद न करेगा.

आज जो कोरिया वालों पर बीत रही है उस सब का दोशी रूस. क्योंकि यह आफ़त जो आज कोरिया पर आई हुई है रूस की उस ग़लती का नतीजा है जो उसने उत्तरी कोरिया पर पिछली बड़ी लड़ाई के बाद फ़ौजी घेरा डालने में की. यह काम उसे अपने हाथों में नहीं लेना चाहिये था. यह काम बरतानिया या चीन को देना था यह फ़ौजी घेरे की चाल जहाँगीरी चाल है, मज़दूरी वादी सरकार को शोभा नहीं देती. ठीक ऐसी ही दूसरी ग़लती उसने जरमनी के बारे में कर रक्खी है. पूरबी जरमनी को जल्दी से जल्दी आज़ाद करने की जोखम अगर रूस उठाने को तैयार नहीं है तो इस तरह की

سے دب جانا ہے اور ہتھیار توڑنا یعنی دشمن کی برائیوں کے خلاف لڑائی چھیڑنا اور اُس کے آگے زوروں سے ڈٹ جانا ۔ شیر کو پنجرے میں پھنسا دیکھکر بہت کم لوگوں کو دیا آتی ہے پر گائے کو پنجرے میں دیکھکر ہر آدمی کو دوڑ کر بچانے کی سوجھتی ہے ۔ گائے اپنے بچے یا گوالے کو بچانے کی خاطر جب پونچھ اُٹھا کر اور بدن پھلا کر شیر کے پیٹ میں اپنے سینگ بھونکتی ہے تب بھی لوگوں کو شیر پر دیا نہیں آتی ۔ اُنکی سہانبھوتی گائے کے ساتھ ہی ہوتی ہے کیونکہ شیر نہ سچائی پر ہوتا ہے اور نہ انصاف پر ۔ اُتری کوریا کے رہنے والو ' تم اپنی جان اور اپنے ملک کی شان بچانے کے لئے لڑے ۔ تمھیں کوئی اتہاس لکھنے والا برے لفظوں میں یاد نہیں کریگا ۔ امریکہ اور دوسرے ملک اپنے شان بڑھانے کے لئے تم بھاگتے ہوؤں کے پیچھے دوڑے جا رہے ہیں اُنھیں کوئی اتہاس لکھنے والا کبھی اچھے شبدوں سے یاد نہ کریگا ۔

آج جو کوریا والوں پر بیت رہی ہے اس سب کا دوشی روس ۔ کیونکہ یہ آفت جو آج کوریا پر آئی ہوئی ہے روس کی اُس غلطی کا نتیجہ ہے جو اُس نے اُتری کوریا پر پچھلی بڑی لڑائی کے بعد فوجی گھیرا ڈالنے میں کی ۔ یہ کام اُسے اپنے ہاتھوں میں نہیں لینا چاہئے تھا ۔ یہ کام برطانیہ یا چین کو دینا تھا ۔ یہ فوجی گھیرے کی چال جہانگیری چال ہے' مزدوری وادی سرکار کو شوبھا نہیں دیتی ۔ ٹھیک ایسی ہی دوسری غلطی اُس نے جرمنی کے بارے میں کر رکھی ہے ۔ پوربی جرمنی کو جلدی سے جلدی آزاد کرنے کی جوکھم اگر روس اُٹھانے کو تیار نہیں ہے تو اسطرح کی آفتوں کا

फ़ौजी घेरों की चाल रहते हुए दुनिया में लोकशाही जीवित नहीं रह सकती. रूस ने जैसे ही उत्तर कोरिया से अपना घेरा उठाया था वैसे ही पूरबी जरमनी से उठा लेता तो आज नक़्शा दूसरा ही होता.

बहुत से मुल्कों की फ़ौजें कोरिया जा रही हैं. इसमें बुराई तो यह है कि कोरिया बरबाद हो जायगा और बहुत दिनों तक कोरिया पर बिदेसी छाए रहेंगे और अच्छाई यह है कि बहुत से मुल्कों की फ़ौजें कोरिया में चैन से न बैठ सकेंगी. किसी न किसी बात पर झगड़ा उठे बिना न रहेगा और इस झगड़े की वजह से हो सकता है कोरिया का जल्दी छुटकारा हो जाय.

इस बीसवीं सदी में किसी भी सरकार को कठपुतली सरकार कह बैठने का बहुत रिवाज पड़ गया है. दक्खिनी कोरिया के सिंघमन री साहब जो सचमुच जरनल मैकआर्थर और यूनाइटेड नेशन्स की फ़ौजों के उठाए उठते और बिठाए बैठते हैं, उत्तरी कोरिया की सरकार को कठपुतली सरकार कह कर पुकारते हैं. इस ढीठता का कोई ठिकाना है! अमरीका और सबक़ दे ही क्या सकता है. वह भी तो आज सारे चीन की मालिक सरकार को कठपुतली सरकार और फ़ारमूसा में भाग कर जान बचाने वाली चाँग काईशेक की सरकार को असली सरकार मानता है. उसको यूनाइटेड नेशन्स में भी जगह है और सुरक्षा कौंसिल में भी. पंच कुत्ते को बिल्ली कह दें तो कुत्ता बिल्ली ही है. यू. एन. ओ. की सरकारें जिस को कठपुतली कह दें वही कठपुतली है. पंडित जवाहर लाल जी बस इतना भर कह सकते हैं कि अगर अमरीका और यू. एन. ओ. में शामिल दूसरे मुल्क

فوجي گھیروں کي چال رہتے ہوئے دنیا میں لوک شاہي جیوت نہیں رہ سکتی . روس نے جیسےھی اُتر کوریا سے اپنا گھیرا اُٹھایا تھا ویسے ھي پوربي جرمنی سے اُٹھا لیتا تو آج نقشا دوسرا ھي ھوتا .

بہت سے ملکوں کی فوجیں کوریا جا رھي ھیں . اسمیں برائی تو یہ ہے کہ کوریا برباد ھو جائیگا اور بہت دنوں تک کوریا پر بدیسي چھائے رھینگے اور اچھائي یہ ہے کہ بہت سے ملکوں کي فوجیں کوریا میں چین سے نہ بیٹھ سکینگی . کسی نہ کسي بات پر جھگڑا اُٹھے بنا نہ رھیگا اور اس جھگڑے کی وجہ سے ھو سکتا ہے کوریا کا جلدي چھٹکارا ھو جائے .

اِس بیسویں صدی میں کسی بھی سرکار کو کٹھ پتلی سرکار کہ بیٹھنے کا بہت رواج پڑ گیا ہے . دکھني کوریا کے سنگھمن ری صاحب جو سچ مچ جنرل میک آرتھر اور یونائٹڈ نیشنس کي فوجوں کے اُٹھائے اُٹھتے اور بٹھائے بیٹھتے ھیں' اُتري کوریا کی سرکار کو کٹھ پتلی سرکار کہ کر پکارتے ھیں. اس ڈھیٹھتا کا کوئي ٹھکانہ ہے! امریکہ اور سبق دے ھی کیا سکتا ہے . وہ بھي تو آج سارے چین کی مالک سرکار کو کٹھ پتلی سرکار اور فارموسا میں بھاگ کر جان بچانے والی چانگ کائی شیک کی سرکار کو اصلی سرکار مانتا ہے. اُسکو یونائٹڈ نیشنس میں بھی جگہ ہے اور سرکشا کونسل میں بھی . پنچ کتے کو بلی کہ دیں تو کتا بلی ھی ہے . یو . این . او. کی سرکاریں جسکو کٹھ پتلی کہ دیں وھی کٹھ پتلي ہے . پنڈت جواھر لال جی بس اتنا بھر کہ سکتے ھیں کہ اگر امریکہ اور یو . این . او . میں شامل دوسرے ملک

सारे चीन की मालिक सरकार को सरकार नहीं मानते तो इससे सचाई में कोई फ़रक़ नहीं आ सकता. पर पंडित जी यह क्यों नहीं सोचते कि जिस संस्था की बक़ीयत यानी मेजारिटी इस तरह की बेतुकी बात कह डालती है और बेतुके काम कर डालती है उस संस्था की कमीयत यानी माइनारिटी में भी पड़े रहने से कौन सी शान है.

हमें तो अब इसके सिवा कुछ नहीं सूझता कि अब वह वक़्त आ गया है कि कोरिया के मामले को लेकर उन मुल्कों को यू. एन. ओ. से अलग हो जाना चाहिये, जो इस तरह के बेतुकेपन से ऊब गए हैं.

—भगवानदीन

लोग स्वभाव से उस आदमी के ग़ुलाम हैं, जो आप किसी के सामने न झुके.

× × ×

उस नसीहत करने वाले का दिल कितना कठोर है जो भूके को भूक का दुख सहने की नसीहत करे.

× × ×

अगर तुझे मेरे पागल पन के कारन मालूम होते तो तू समझदार बन जाता.

× × ×

हम चमकती ऊँचाइयों तक अंधेरी गहराइयों के रास्ते से ही पहुँच सकते हैं.

سارے چین کی مالک سرکار کو سرکار نہیں مانتے تو اُس سے سچائی میں کوئی فرق نہیں آسکتا ۔ پر پنڈت جی یہ کیوں نہیں سوچتے کہ جس سنستھا کی بقیت یعنی میجارٹی اس طرح کی بے تکی بات کہہ ڈالتی ہے اور بے تکے کام کر ڈالتی ہے اُس سنستھا کی کمیت یعنی مائنارٹی میں بھی پڑے رہنے سے کون سی شان ہے ۔

ہمیں تو اب اسکے سوا کچھ نہیں سوجھتا کہ اب وہ وقت آگیا ہے کہ کوریا کے معاملے کو لیکر اُن ملکوں کو یو ۔ این ۔ او ۔ سے الگ ہو جانا چاہئے' جو اس طرح کے بے تکے پن سے اُوب گئے ہیں ۔

بھگوان دین

لوگ سوبھاؤ سے اُس آدمی کے غلام ہوتے ہیں' جو آپ کسی کے سامنے نہ جھکے ۔

× × ×

اُس نصیحت کرنے والے کا دل کتنا کٹھور ہے جو بھوکے کو بھوک کا دکھ سہنے کی نصیحت کرے ۔

× × ×

اگر تجھے میرے پاگل پن کے کارن معلوم ہوتے تو تو سمجھدار بن جاتا ۔

× × ×

ہم چمکتی اونچائیوں تک اندھیری گہرائیوں کے راستے سے ہی پہنچ سکتے ہیں ۔

हज़रत ईसा की पहाड़ पर की तक़रीर

(Sermon On The Mount)

(अनुवादक—भाई हसन असीम)

[दुनिया के बड़े बड़े रिशियों, मुनियों. ज्ञानियों और महापुरुषों ने जो अमर भाषन दिये हैं उनमें हज़रत ईसा की पहाडी वाली तक़रीर की गिनती लाज़िमी है. इन्जील में, जो कि ईसाई भाइयों की धर्मी किताब है, सारी तक़रीर लिखी हुई है इसके कई तरजुमे मौजूद हैं, जिन में थोडा बहुत फ़रक़ भी पाया जाता है.

जरमन भाषा में ऐसे एडीशन निकले हैं जिसमें इस तक़रीर का तरजुमा साइन्सी असूलों के अनुसार किया गया है. बहर हाल मुख़तलिफ़ एडीशनों, ख़ास कर जरमन एडीशन को सामने रखते हुए मैंने इस अमर तक़रीर का हिन्दुस्तानी अनुवाद किया है.

—अनुवादक]

मुबारक हैं वह जो दिल के ग़रीब हैं क्योंकि सच्ची जीत उन्हीं की है.

मुबारक हैं वह जो ग़मगीन हैं क्योंकि वह तसल्ली पायेंगे.

मुबारक हैं वह जो दयालु और सच्चे हैं क्योंकि वह सुखी होंगे.

मुबारक हैं वह जो रहम दिल हैं, पाक दिल हैं, सुलह पसन्द हैं.

حضرت عیسیٰ کی پہاڑ پر کی تقریر

(Sermon On The Mount)

(انووادک—بھائی حسن اسیم)

[دنیا کے بڑے بڑے رشیوں' منیوں' گیانیوں اور مہاپرشوں نے جو امر بھاشن دئے ھیں ان میں حضرت عیسیٰ کی پہاڑی والی تقریر کی گنتی لازمی ھے . انجیل میں' جو کہ عیسائی بھائیوں کی دھرمی کتاب ھے' ساری تقریر لکھی ھوئی ھے . اس کے کئی ترجمے موجود ھیں' جن میں تھوڑا بہت فرق بھی پایا جاتا ھے.

جرمن بھاشا میں ایسے ایڈیشن نکلے ھیں جس میں اس تقریر کا ترجمہ سائنسی اصولوں کے انوسار کیا گیا ھے . بہر حال مختلف ایڈیشنوں' خاص کر جرمن ایڈیشن کو سامنے رکھتے ھوئے میں نے اس امر تقریر کا ھندستانی انواد کیا ھے .

—انوادک]

مبارک ھیں وہ جو دل کے غریب ھیں کیونکہ سچی جیت انھیں کی ھے .

مبارک ھیں وہ جو غمگین ھیں کیوں کہ وہ تسلی پائینگے .

مبارک ھیں وہ جو دیالو اور سچے ھیں کیوں کہ وہ سکھی ھونگے .

مبارک ھیں وہ جو رحم دل ھیں' پاک دل ھیں' صلح پسند ھیں .

रास्ते को आजमाने जा रही है, जो दूसरों की जिन्दगी को खतरे में डालने के साथ खुद उसकी जिन्दगी को भी खतरे में डालने वाला है.

नोट—जाहिर है यह लेख इस बारे में कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटी के आखिरी 'खुलासे' के पहिले का लिखा हुआ है. हमें आशा है कि विद्वान लेखक की उस 'खुलासे' से तसल्ली हो गई होगी और उस दर्जे तक उन्हें अपना डर ग़लत दिखाई दे गया होगा—ऐडीटर

راستے کو آزمانے جا رہی ہے، جو دوسروں کی زندگی کو خطرے میں ڈالنے کے ساتھ خود اُس کی زندگی کو بھی خطرے میں ڈالنے والا ہے۔

نوٹ۔ ظاہر ہے یہ لیکھ اس بارے میں کانگریس ورکنگ کمیٹی کے آخری 'خلاصے' کے پہلے کا لکھا ہوا ہے۔ ہمیں آشا ہے کہ وِدوان لیکھک کی اِس 'خلاصے' سے تسلی ہو گئی ہوگی اور اُس درجے تک انھیں اپنا ڈر غلط دکھائی دے گیا ہوگا!

— اڈیٹر

मुबारक हैं वह जो सच्चाई की वजह से सताये गये हैं.

तुम दुनिया के नूर हो, तुम ही से संसार में जोत है, तुम ही से आशायें बंधी हैं और तुम ही से उम्मीदें.

तुम सुन चुके हो कि अगलों से कहा गया था कि—

"ख़ून न क़रो और जो कोई ख़ून करेगा वह अदालत की सज़ा के लायक़ होगा और जो कोई अपने भाई को पागल कहेगा वह महा अदालत के लायक़ होगा और जो उसको अहमक़ कहेगा वह नरक में जलेगा और जहन्नुम का सज़ावार होगा."

मगर मैं तुम से कहता हूँ कि तुम अगर क़ुरबानगाह (बलिवेदी) पर अपनी भेंट गुज़रानते हो और वहाँ तुम्हें याद आए कि मेरे भाई को मुझ से कुछ शिकायत है तो वहीं क़ुरबानगाह के आगे अपना बलिदान छोड़ दो और जाकर पहले अपने भाई से मिलाप करो, तब आकर अपनी भेंट चढ़ाओ.

तुम सुन चुके हो कि कहा गया था कि—

"औरत की इज़्ज़त न लो"

"लेकिन मैं तुम से कहता हूँ कि जिस किसी ने बुरी नियत से किसी औरत पर निगाह डाली वह अपने दिल में उसकी इज़्ज़त ले चुका. यह भी कहा गया था कि—

" जो कोई अपनी बीवी को छोड़ दे उसे तलाक़नामा लिख दे.''

लेकिन मैं तुम से यह कहता हूँ कि जो कोई अपनी बीवी को हरा-मकारी के सिवा किसी और वजह से छोड़ दे वह उसकी इज़्ज़त

مبارک ہیں وہ جو سچائی کی وجہ سے ستائے گئے ہیں ۔

تم دنیا کے نور ہو' تم ہی سے سنسار میں جوت ہے' تم ہی سے آشائیں بندھی ہیں اور تم ہی سے اُمیدیں ۔

تم سن چکے ہو کہ اگلوں سے کہا گیا تھا کہ—

''خون نہ کرو اور جو کوئی خون کریگا وہ عدالت کی سزا کے لایق ہوگا اور جو کوئی اپنے بھائی کو پاگل کہیگا وہ مہا عدالت کے لایق ہوگا اور جو اس کو احمق کہیگا وہ نرک میں جلیگا اور جہنم کا سزاوار ہوگا ."

مگر میں تم سے کہتا ہوں کہ تم اگر قربان گاہ (بلی ویدی) پر اپنی بھینٹ گذرانتے ہو اور وہاں تمہیں یاد آئے کہ میرے بھائی کو مجھ سے کچھ شکایت ہے تو وہیں قربان گاہ کے آگے اپنا بلیدان چھوڑ دو اور جاکر پہلے اپنے بھائی سے ملاپ کرو' تب آکر اپنی بھینٹ چڑھاؤ ۔

تم سن چکے ہو کہ کہا گیا تھا کہ—

''عورت کی عزت نہ لو."

لیکن میں تم سے کہتا ہوں کہ جس کسی نے بری نیت سے کسی عورت پر نگاہ ڈالی وہ اپنے دل میں اس کی عزت لے چکا . یہ بھی کہا گیا تھا کہ—

''جو کوئی اپنی بیوی کو چھوڑ دے اُسے طلاق نامہ لکھ دے ."

لیکن میں تم سے یہ کہتا ہوں کہ جو کوئی اپنی بیوی کو حرام کاری کے سوا کسی اور وجہ سے چھوڑ دے وہ اُسکی عزت مٹی میں

तुम सुन चुके हो कि कहा गया था कि—

"आँख के बदले आँख और दाँत के बदले दाँत."

लेकिन मैं तुम से यह कहता हूं कि शरारती का मुक़ाबला न करना बल्कि जो कोई तुम्हारे दायें गाल पर थप्पड़ मारे, दूसरा गाल भी उस की तरफ़ फेर दो और अगर कोई तुम पर नालिश करके तुम्हारी क़मीज़ लेना चाहे उसे अपना कोट भी ले लेने दो और जो कोई तुम्हें एक कोस बेगार ले जाये उसके साथ दो कोस चले जाओ. जो कोई तुम से माँगे उसे दो और जो कोई तुम से क़र्ज़ चाहे उससे मुँह न मोड़ो.

तुम सुन चुके हो कि कहा गया था कि—

"अपने पड़ोसी से प्रेम करो और अपने दुश्मन से बैर"

लेकिन मैं तुम से यह कहता हूँ कि अपने दुश्मन से प्रेम करो और अपने सताने वालों के लिये दुआ माँगो. ख़ुदा पापियों और नेकों दोनों पर सूरज चमकाता और सच्चे लोगों और दुराचारियों दोनों पर मेंह बरसाता है. अगर तुम अपने मुहब्बत करने वालों ही से मुहब्बत करो तो तुम्हारे लिये क्या पुन्य है ? क्या टैक्स लेने वाले भी ऐसा नहीं करते ? और अगर तुम फ़क़त अपने भाई को सलाम करो तो क्या ज़्यादा करते हो ? क्या ग़ैर क़ौमों के लोग भी ऐसा नहीं करते ? ख़बरदार ! अपने नेक काम लोगों के दिखाने के लिये न करो. जब तुम दान करो तो अपने आगे नरसिंगा न बजाओ, जैसा कि धोकेबाज़ और दिखावेबाज़ प्रार्थना घरों और कूचों में करते हैं ताकि लोग उनकी बड़ाई करें. वह अपना पुन्य पा चुके ! जब तुम दान करो तो जो तुम्हारा दाहिना हाथ करता है, उसकी ख़बर अपने बायें हाथ को न होने दो ताकि तुम्हारी ख़ैरात छिपी रहे.

تم سن چکے ہو کہ کہا گیا تھا کہ—

''آنکھ کے بدلے آنکھ اور دانت کے بدلے دانت''

لیکن میں تم سے یہ کہتا ہوں کہ شرارتی کا مقابلہ نہ کرنا بلکہ جو کوئی تمہارے دائیں گال پر تھپڑ مارے' دوسرا گال بھی اس کی طرف پھیر دو اور اگر کوئی تم پر نالش کر کے تمہاری قمیض لینا چاہے اُسے اپنا کوٹ بھی لے لینے دو اور جو کوئی تمہیں ایک کوس بیگار لے جائے اس کے ساتھ دو کوس چلے جاؤ. جو کوئی تم سے مانگے اسے دو اور جو کوئی تم سے قرض چاہے اُس سے منہ نہ موڑو .

تم سن چکے ہو کہ کہا گیا تھا کہ—

''اپنے پڑوسی سے پریم کرو اور اپنے دشمن سے بیر ''

لیکن میں تم سے یہ کہتا ہوں کہ اپنے دشمن سے پریم کرو اور اپنے ستانے والوں کے لئے دعا مانگو . خدا پاپیوں اور نیکوں دونوں پر سورج چمکاتا ہے اور سچے لوگوں اور دراچاریوں دونوں پر مینہ برساتا ہے . اگر تم اپنے محبت کرنے والوں ہی سے محبت کرو تو تمہارے لئے کیا پنیہ ہے؟ کیا ٹیکس لینے والے بھی ایسا نہیں کرتے؟ اور اگر تم فقط اپنے بھائی کو سلام کرو تو کیا زیادہ کرتے ہو ؟ کیا غیر قوموں کے لوگ بھی ایسا نہیں کرتے ؟ خبردار ! اپنے نیک کام لوگوں کے دکھانے کے لئے نہ کرو . جب تم دان کرو تو اپنے آگے نرسنگانہ بجاؤ' جیسا کہ دھوکے باز اور دکھاوے باز پرارتھنا گھروں اور کوچوں میں کرتے ہیں تاکہ لوگ ان کی بڑائی کریں . وہ اپنا پنیہ پا چکے ! جب تم دان کرو تو جو تمہارا داہنا ہاتھ کرتا ہے' اسکی خبر اپنے بائیں ہاتھ کو نہ ہونے دو تاکہ تمہاری خیرات چھپی رہے .

जब दुआ माँगो तो धोके बाज़ों और दिखावे बाज़ों की तरह न हो क्योंकि वह प्रार्थना घरों में और बाज़ारों के मोड़ों पर खड़े हुए दुआएँ माँगते हैं ताकि लोग उन्हें देखें. मैं तुमसे सच कहता हूं कि वह अपना पुन्य पा चुके ! इसलिये जब तुम दुआ माँगना चाहो तो अपनी कोठरी में जाओ, दरवाज़ा बन्द करो और अकेले में दुआ माँगो. प्रार्थना के वक़्त ग़ैरों की तरह ज्यादा न बोलो. वह समझते हैं कि उनके ज़्यादा बोलने की वजह से उनकी दुआएँ सुनी जायँगी.

अब तुम ब्रत रखो तो धोके बाज़ों और दिखावे बाज़ों की तरह अपनी सूरत उदास न बनाओ. वह अपना मुँह बिगाड़ते हैं ताकि लोग उन्हें रोज़ादार जानें. मैं तुमसे सच कहता हूँ कि वह अपना पुन्य पा चुके ! इसलिये जब तुम ब्रत रखो तो अपने सर में तेल डालो और मुँह धोओ ताकि आदमी नहीं बल्कि तुम्हारी अन्तर-आत्मा तुमको रोज़ादार जाने.

अपने वास्ते ज़मीन पर माल जमा न करो, जहाँ माल को कीड़ा और ज़ंग ख़राब करता है और चोर नक़ब लगाते और चुराते हैं. बल्कि अपने लिये आसमान पर माल जमा करो, जिसे न कीड़ा ख़राब करता है न ज़ंग और न वहाँ चोर नक़ब लगाते और चुराते हैं. जहाँ तुम्हारा माल है वहीं तुम्हारा दिल भी लगा रहेगा.

बदन का चिराग़ आँख है. अगर तुम्हारी आँख दुरुस्त हो तो तुम्हारा सारा बदन रौशन होगा; अगर तुम्हारी आँख ख़राब हो तो तुम्हारा सारा बदन अंधेरे में होगा.

कोई आदमी दो मालिकों की सेवा नहीं कर सकता, तुम ईश्वर

جب دعا مانگو تو دھوکے بازوں اور دکھاوے بازوں کی طرح نہ ہو کیونکہ وہ پرارتھنا گھروں میں اور بازاروں کے موڑوں پر کھڑے ہوئے دعائیں مانگتے ہیں تاکہ لوگ انہیں دیکھیں . میں تم سے سچ کہتا ہوں کہ وہ اپنا پنیہ پاچکے ! اسلئے جب تم دعا مانگنا چاہو تو اپنی کوٹھری میں جاو ' دروازہ بند کرو اور اکیلے میں دعا مانگو . پرارتھنا کے وقت غیروں کی طرح زیادہ نہ بولو . وہ سمجھتے ہیں کہ ان کے زیادہ بولنے کی وجہ سے اُن کی دعائیں سنی جائینگی .

جب تم برت رکھو تو دھوکے بازوں اور دکھاوے بازوں کی طرح اپنی صورت اُداس نہ بناؤ . وہ اپنا منہ بگاڑتے ہیں تاکہ لوگ اُنہیں روزہدار جانیں . میں تم سے سچ کہتا ہوں کہ وہ اپنا پنیہ پاچکے ! اسلئے جب تم برت رکھو تو اپنے سر میں تیل ڈالو اور منہ دھوؤ تاکہ آدمی نہیں بلکہ تمہاری انتر آتما تم کو روزہدار جانے .

اپنے واسطے زمین پر مال جمع نہ کرو ' جہاں مال کو کیڑا اور زنگ خراب کرتا ہے اور چور نقب لگاتے اور چراتے ہیں . بلکہ اپنے لئے آسمان پر مال جمع کرو ' جسے نہ کیڑا خراب کرتا ہے نہ زنگ اور نہ وہاں چور نقب لگاتے اور چراتے ہیں . جہاں تمہارا مال ہے وہیں تمہارا دل بھی لگا رہیگا .

بدن کا چراغ آنکھ ہے ' اگر تمہاری آنکھ درست ہو تو تمہارا سارا بدن روشن ہوگا ؛ اگر تمہاری آنکھ خراب ہو تو تمہارا سارا بدن اندھیرے میں ہوگا .

کوئی آدمی دو مالکوں کی سیوا نہیں کر سکتا ' تم ایشور اور

हूं अपनी जान और तन की फ़िकर न करो, कि तुम क्या खाओगे या क्या पियोगे ? और क्या पहनोगे ? क्या जान ग़िज़ा से और बदन पहनावे से बढ़ कर नहीं है ? हवा के परिन्दों को देखो कि न बोते हैं, न काटते हैं, न कोठियों में जमा करते हैं ! फिर भी परमात्मा इनको पालता और खिलाता है ! क्या तुम्हारी क़द्र उनसे ज़्यादा नहीं ? तुममें ऐसा कौन है जो फ़िकर करके अपनी उमर में एक घड़ी बढ़ा सके ? फिर तुम खाने पीने और कपड़े के लिये क्यों फ़िकर करते हो ? जंगली सौसन के दरख़्तों को ग़ौर से देखो कि वह किस तरह बढ़ते हैं ? वह न मेहनत करते, न काटते हैं. फिर भी सुलेमान तक अपना सारा शान शौकत रखने के बावजूद उनमें से किसी की तरह पोशाक पहने हुए न था. पस जब ख़ुदा मैदान की घास को, जो आज है और कल तनूर में झोंका जायगा, ऐसा पहनावा देता है तो ऐ कम विश्वासो ! तुमको ओढ़ने पहननेके लिये क्या न देगा ? इस लिये परेशान न हो कि तुम क्या खाओगे ? कहाँ रहोगे ? क्या पियोगे ? क्या पहनोगे ? क्या ओढ़ोगे ? कल के लिये परेशान न हो, कल का दिन अपने लिये आप फ़िकर कर लेगा. आज के लिये आज ही का दुख काफ़ी है.

(ॐ)

ढूँढ ढूँढ कर ऐब न निकालो ताकि दूसरे तुम्हारे ऐब न ढूँढें. जिस तरह तुम ऐब ढूंढते हो, इसी तरह तुम में भी ऐब ढूँढे जावेंगे. जिस गज से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे वास्ते नापा जावेगा, जिस तराज़ू में तुम तौलते हो, उसी में तुम्हारे वास्ते तोला जावेगा ! जिन खोटे सिक्कों से तुम चुकता करते हो, वही तुम्हारे देनदार तुम्हें देकर अपना क़र्ज़ चुकाएँगे !

ھوں اپنی جان اور تن کی فکر نہ کرو ' کہ تم کیا کھاؤگے یا کیا پیو گے ؟ اور کیا پہنوگے ؟ کیا جان غذا سے اور بدن پہناوے سے بڑھکر نہیں ھے ؟ ھوا کے پرندوں کو دیکھو کہ نہ بوتے ھیں ' نہ کاٹتے ھیں ' نہ کوٹھیوں میں جمع کرتے ھیں ! پھر بھی پرماتما ان کو پالتا اور کھلاتا ھے ! کیا تمہاری قدر ان سے زیادہ نہیں ؟ تم میں ایسا کون ھے جو فکر کر کے اپنی عمر میں ایک گھڑی بڑھا سکے ؟ پھر تم کھانے پینے اور کپڑے کے لئے کیوں فکر کرتے ھو ؟ جنگلی سوسن کے درختوں کو غور سے دیکھو کہ وہ کس طرح بڑھتے ھیں ؟ وہ نہ محنت کرتے ' نہ کاٹتے ھیں . پھر بھی سلیمان تک اپنی ساری شان شوکت رکھنے کے باوجود اُن میں سے کسی کی طرح پوشاک پہنے ہوئے نہ تھا . پس جب خدا میدان کی گھاس کو ' جو آج ھے اور کل تنور میں جھونکی جائیگی ' ایسا پہناوا دیتا ھے تو اے کم وشواسو ! تم کو اوڑھنے پہننے کے لئے کیوں نہ دیگا ؟ اس لئے پریشان نہ ھو کہ تم کیا کھاؤ گے ؟ کہاں رھو گے ؟ کیا پیو گے ؟ کیا پہنو گے ؟ کیا اوڑھو گے ؟ کل کے لئے پریشان نہ ھو ' کل کا دن اپنے لئے آپ فکر کرلیگا . آج کے لئے آج ھی کا دکھ کافی ھے .

(ॐ)

ڈھونڈھ ڈھونڈھ کر عیب نہ نکالو تاکہ دوسرے تمہارے عیب نہ ڈھونڈھیں . جس طرح تم عیب ڈھونڈھتے ھو ' اسی طرح تم میں بھی عیب ڈھونڈھے جائینگے . جس گز سے تم ناپتے ھو ' اسی سے تمہارے واسطے ناپا جائیگا ' جس ترازو میں تم تولتے ھو ' اسی میں تمہارے واسطے تولا جائیگا ! جن کھوٹے سکوں سے تم چکتا کرتے ھو ' وھی تمہارے دین دار تمھیں دے کر اپنا قرض چکائینگے !

तुम क्यों दूसरों की आँख के तिनके को देखते हो और अपनी आँख के शहतीर पर ग़ौर नहीं करते ? जब तुम्हारी ही आँख में शहतीर हो तो तुम दूसरों की क्यों फ़िकर करते हो ? पहले अपनी आँख के शहतीर को निकाल लो ताकि अच्छी तरह देखकर दूसरों की आँख से तिनके निकाल सको.

माँगो तो तुम्हें दिया जायगा; ढूँढो तो पाओगे; दरवाजा खटखटाओ तो तुम्हारे वास्ते दरवाजा खोला जायगा; खोज करोगे तो मिलेगा. जो कोई माँगता है, उसे मिलता है; जो ढूँढता है, वह पाता है; जो खटखटाता है, उसके वास्ते दरवाजा खोला जाता है; जो खोजता है, उसे मिलता है.

तुम में ऐसा कौन है कि अगर उसका बेटा उससे रोटी माँगे तो वह उसे पत्थर देगा ? मछली माँगे तो साँप देगा ? तुम बुरे होकर अपने बच्चों को अच्छी अच्छी चीज़ें देनी जानते हो, तो भगवान उससे माँगने वालों को अच्छी चीज़ें क्यों न देगा ? इसलिये जो तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारे साथ करें वही तुम भी उनके साथ करो.

झूटों से ख़बरदार रहो जो तुम्हारे पास भेड़ों के भेस में आते हैं मगर बातिन में फाड़ने वाले भेड़िये हैं. उनकी चालों से तुम उन्हें पहचान लोगे, हर अच्छा दरख़्त अच्छे फल लाता है और बुरा दरख़्त बुरे फल लाता है. जो दरख़्त अच्छा फल लाता है, उसे सींचते हैं और जो दरख़्त अच्छा फल नहीं लाता वह काटा जाता और आग में

تم کیوں دوسروں کی آنکھ کے تنکے کو دیکھتے هو اور اپنی آنکھ کے شہتیر پر غور نہیں کرتے ؟ جب تمہاری هی آنکھ میں شہتیر هو تو تم دوسروں کی کیوں فکر کرتے هو ؟ پہلے اپنی آنکھ کے شہتیر کو نکال لو تاکہ اچھی طرح دیکھکر دوسروں کی آنکھ سے تنکے نکال سکو .

مانگو تو تمہیں دیا جائیگا ؛ ڈھونڈھو تو پاؤگے؛ دروازہ کھٹکھٹاؤ تو تمہارے واسطے دروازہ کھولا جائیگا ؛ کھوج کرو گے تو ملیگا . جو کوئی مانگتا هے ' اسے ملتا هے ؛ جو ڈھونڈھتا هے ' وہ پاتا هے ؛ جو کھٹکھٹاتا هے ' اس کے واسطے دروازہ کھولا جاتا هے ؛ جو کھوجتا هے ' اسے ملتا هے .

تم میں ایسا کون هے کہ اگر اس کا بیٹا اس سے روٹی مانگے تو وہ اسے پتھر دیگا ؟ مچھلی مانگے تو سانپ دیگا ؟ تم برے هو کر اپنے بچوں کو اچھی اچھی چیزیں دینی جانتے هو ' تو بھگوان اس سے مانگنے والوں کو اچھی چیزیں کیوں نہ دیگا ؟ اس لئے جو تم چاهتے هو کہ لوگ تمہارے ساتھ کریں وهی تم بھی ان کے ساتھ کرو .

جھوٹوں سے خبردار رهو جو تمہارے پاس بھیڑوں کے بھیس میں آتے هیں مگر باطن میں پھاڑنے والے بھیڑئے هیں . ان کی چالوں سے تم انہیں پہچان لوگے . هر اچھا درخت اچھے پھل لاتا هے اور برا درخت برے پھل لاتا هے . جو درخت اچھا پھل لاتا هے ' اسے سینچتے هیں اور جو درخت اچھا پھل نہیں لاتا وہ کاٹا جاتا اور آگ میں جھونکا جاتا هے . ان کے پھلوں هی سے تم درختوں

जो मेरी बातें सुनता और उन पर अमल करता है, वह उस समझदार आदमी की तरह है जिसने चट्टान पर अपना घर बनाया. मेंह बरसा और पानी चढ़ा और आँधियाँ आईं, उसके घर पर टक्करें लगीं लेकिन वह न गिरा, क्योंकि उसकी नीव चट्टान पर डाली गई थी; जो मेरी बातें सुनता मगर उन पर अमल नहीं करता, उस आदमी की तरह है जिसने अपना घर रेत पर बनाया. मेंह बरसा और पानी चढ़ा और आँधियाँ आईं और उसके घर को सदमा पहुंचा. वह गिर गया और बिलकुल बरबाद हो गया!

मुबारक हैं वह जो दिल के दुखी हैं, क्योंकि वह दयालु होते हैं, दूसरों के दुख दर्द को कम करते और सब ही पर कृपा करते हैं. मुबारक हैं वह जो ग़मों में डूबे हुए हैं, विपताओं और आफ़तों में फँसे हैं, फिर भी सच्चे हैं; क्योंकि उनकी भलमनसाहत से इंसानियत का बोल बाला होगा. मुबारक हैं वह जो सच्चाई और भलमनसाहत की वजह से सताये गये हैं और अपनी सच्चाई की वजह से दुनिया के दुख सहते, ताने सुनते और हिक़ारतें झेलते हैं, क्योंकि उन्हीं की ओट में शराफ़त और सच्चाई का दिया टिमटिमाता है और बुझने नहीं पाता! मुबारक हैं वह जो दूसरों की ख़ातिर भुगत रहे हैं और जो ज़माने के हाथों परेशान हैं, फिर भी वह अपने सताने वालों के लिये नेकी और भलाई चाहते हैं. मुबारक हैं वह जो बदन की तकलीफ़ों के साथ ज़ेहनी (मानसिक) और रूहानी (आध्यात्मिक) तकलीफ़ें सह रहे हैं और अपने सताने वालों के लिये भी दुआ कर रहे हैं; यही दुनिया का नूर हैं. इन ही से संसार में सत्य धर्म की जोत है. ऐसी ही पाक हस्तियाँ इंसानियत का सच्चा नमूना हैं और सिर्फ़ यही लोग ऊँचे ख़ानदान वाले हैं.

جو میری باتیں سنتا اور اُن پر عمل کرتا ہے ' وہ اس سمجھ دار آدمی کی طرح ہے جس نے چٹان پر اپنا گھر بنایا . مینہ برسا اور پانی چڑھا اور آندھیاں آئیں ' اُس کے گھر پر ٹکریں لگیں لیکن وہ نہ گرا ' کیونکہ اس کی نیو چٹان پر ڈالی گئی تھی ؛ جو میری باتیں سنتا مگر ان پر عمل نہیں کرتا ' اس آدمی کی طرح ہے جس نے اپنا گھر ریت پر بنایا . مینہ برسا اور پانی چڑھا اور آندھیاں آئیں اور اس کے گھر کو صدمہ پہنچا . وہ گر گیا اور بالکل برباد ہوگیا !

مبارک ہیں وہ جو دل کے دکھی ہیں ' کیونکہ وہ دیالو ہوتے ہیں ' دوسروں کے دکھ درد کو کم کرتے اور سب ہی پر کرپا کرتے ہیں . مبارک ہیں وہ جو غموں میں ڈوبے ہوئے ہیں ' بپتاؤں اور آفتوں میں پھنسے ہیں ' پھر بھی سچے ہیں ؛ کیوں کہ ان کی بھلمنساہت سے انسانیت کا بول بالا ہوگا . مبارک ہیں وہ جو سچائی اور بھلمنساہت کی وجہ سے ستائے گئے ہیں اور اپنی سچائی کی وجہ سے دنیا کے دکھ سہتے ' طعنے سنتے اور حقارتیں جھیلتے ہیں ' کیوں کہ اُنہیں کی اُوٹ میں شرافت اور سچائی کا دیا ٹمٹماتا ہے اور بجھنے نہیں پاتا ! مبارک ہیں وہ جو دوسروں کی خاطر بھگت رہے ہیں اور جو زمانے کے ہاتھوں پریشان ہیں ' پھر بھی وہ اپنے ستانے والوں کے لئے نیکی اور بھلائی چاہتے ہیں . مبارک ہیں وہ جو بدن کی تکلیفوں کے ساتھ ذہنی (مان سک) اور روحانی (آدھیاتمک) تکلیفیں سہہ رہے ہیں اور اپنے ستانے والوں کے لئے بھی دعا کر رہے ہیں ؛ یہی دنیا کا نور ہیں ' ان ہی سے ہی سنسار میں ستیہ دھرم کی جوت ہے . ایسی ہی پاک ہستیاں انسانیت کا سچا نمونہ ہیں اور صرف یہی لوگ اونچے خاندان والے ہیں .

कौटिल्य का अर्थ शास्त्र

(भाई ओंकार नाथ शास्त्री)

अगस्त के 'नया हिन्द' के अपने मज़मून में मैंने यह साफ़ कर दिया था कि कौटिल्य अर्थ शास्त्र के नाम से उसमें दी हुई बातों के बारे में किसी को धोका नहीं खाना चाहिये. अर्थ शास्त्र सुर्ख़ी के नीचे उसमें विष रक्षा के उपाय, शृंगार के नियम, मनोरंजन के नियम भी आसानी से बतला दिये गये हैं. तब हमें इस किताब में किसी एक विषय की तलाश में न पड़कर जो कुछ भी लिखा गया है उसी की अहमियत, फ़ायदे, साइन्सियत वग़ैरा पर विचार करना चाहिये. सबसे पहले मैं स्त्रियों को लूँगा.

अर्थ शास्त्र और औरतें

मर्दों औरतों के आपसी झगड़े का प्रसंग ग़ौर तलब है. लिखा है—"जो औरत पति से द्वेष रखती हुई सात मासिक धर्म तक दूसरे पुरुष की कामना करती रही हो, वह अपने गहने पति को लौटा दे और उसको दूसरी स्त्री के साथ सोने की आज्ञा दे दे. इसी तरह जो पुरुष अपनी स्त्री को न चाहता हो वह उसको वैरागिन के, सम्बन्धी के, रिश्तेदार के या परिवार के लोगों के पास रहने से न रोके. ... अगर पति न चाहे तो स्त्री नाराज़ होते हुए भी उसको छोड़ नहीं सकती. इसी तरह पति स्त्री को नहीं छोड़ सकता यह छोड़ना भी मुमकिन है जब कि दोनों ही एक दूसरे के साथ द्वेष रखते हों और जुदा

کوتلیہ کا ارتھ شاستر

(بھائی اونکار ناتھ شاستری)

اگست کے 'نیا ہند' کے اپنے مضمون میں میں نے یہ صاف کر دیا تھا کہ کوتلیہ ارتھ شاستر کے نام سے اُس میں دی ہوئی باتوں کے بارے میں کسی کو دھوکا نہیں کھانا چاہئیے . ارتھ شاستر سرخی کے نیچے اُس میں وش رکشا کے اُپائے' شرنگار کے نیم' منورنجن کے نیم بھی آسانی سے بتلا دئیے گئے ہیں تب ہمیں اس کتاب میں کسی ایک وشے کی تلاش میں نہ پڑ کر جو کچھ بھی لکھا گیا ہے اُسی کی اہمیت' فائدے' سائنسیت وغیرہ پر وچار کرنا چاہئیے . سب سے پہلے میں استریوں کو لونگا .

ارتھ شاستر اور عورتیں

مردوں عورتوں کے آپسی جھگڑے کا پرسنگ غور طلب ہے . لکھا ہے—"جو عورت پتی سے دویش رکھتی ہوئی سات ماسک دھرم تک دوسرے پرش کی کامنا کرتی رہی ہو' وہ اپنے گہنے پتی کو لوٹا دے اور اُسکو دوسری استری کے ساتھ سونے کی آگیا دے دے . اسی طرح جو پرش اپنی استری کو نہ چاہتا ہو وہ اُسکو ویراگن کے' سمبندھی کے' رشتہ دار کے یا پریوار کے لوگوں کے پاس رہنے سے نہ روکے .. اگر پتی نہ چاہے تو استری ناراض ہوتے ہوئے بھی اُسکو چھوڑ نہیں سکتی . اسی طرح پتی استری کو نہیں چھوڑ سکتا . یہ چھوڑنا بھی ممکن ہے جب کہ دونوں ہی ایک دوسرے کے ساتھ دویش رکھتے ہوں اور جدا

होना चाहते हों. स्त्री से तंग आकर अगर पुरुष उससे छुटकारा पाना चाहे तो जो धन स्त्री की तरफ से उसको मिला है वह उसको लौटा देना चाहिये. लेकिन अगर स्त्री पति से तंग आकर छुटकारा पाना चाहे तो उसको उसका धन न लौटाया जाय.''

इन बातों से तलाक़ की प्रथा का साफ समर्थन होता है. मगर यह भी कह दिया गया है कि यह ऊँचे दरजे के विवाहों का, जिन्हें धर्म विवाह माना जाता था, नियम नहीं है ऊँचे दरजे के विवाह वेदों के अनुकूल माने गये हैं और उन पर ब्रह्मनी सभ्यता का पूरा रंग है. जिसके अन्तर्गत औरतें अपना हक़ और आजादी खो चुकी हैं. महज़ दूसरे दरजे के विवाह से बंधे हुए स्त्री पुरुष के जोड़े किसी क़दर बराबर हक़ के साथ एक दूसरे से मन मिलने पर साथ और न मिलने पर अलग हो सकते हैं फिर भी पुरुष से तंग आकर अलग होने वाली स्त्री को धन पाने का कोई हक़ नहीं माना गया है. यह बातें दो असलियतों को आइने की तरह साफ कर देती हैं. एक तो यह कि दुनिया के दूसरे मुल्कों की तरह ही हिन्द में भी जबसे पुराने साम्यवाद का, जिसे सत्युग' कहा जा सकता है, खात्मा होता है, यानी जब से निजी सम्पत्ति का जन्म होता है, तब से औरतों का मर्दों की बराबरी का दरजा नामंज़ूर होने लगता है. दूसरी बात यह कि एक जमाने तक हिन्द में भी औरतों को बराबरी का हक़ हासिल था. और इस मानी में कौटिल्य अर्थ शास्त्र जो रोशनी डालता है, मौजूदा लेखक को कहीं दूसरी जगह देखने को नहीं मिली मैंने अपने एक लेख—'हिन्द में एक कल्चर की आवाज़' – में महाभारत, मनु स्मृति और रामायन का उदाहरन देते हुए यह दिखलाया था कि

ہونا چاہتے ہوں. استری سے تنگ آکر اگر پرش اُس سے چھٹکارا پانا چاہے تو جو دھن استری کی طرف سے اس کو ملا ہے وہ اُسکو لوٹا دینا چاہئے. لیکن اگر استری پتی سے تنگ آکر چھٹکارا پانا چاہے تو اُسکو اُسکا دھن نہ لوٹایا جائے.''

ان باتوں سے طلاق کی پرتھا کا صاف سمرتھن ہوتا ہے. مگر یہ بھی کہہ دیا گیا ہے کہ یہ اُونچے درجے کے وواہوں کا' جنھیں دھرم وواہ مانا جاتا تھا' نیم نہیں ہے. اُونچے درجے کے وواہ ویدوں کے انوکول مانے گئے ہیں اور اُن پر براہمنی سبھیتا کا پورا رنگ ہے' جسکے انترگت عورتیں اپنا حق اور آزادی کھو چکی ہیں. محض دوسرے درجے کے وواہ سے بندھے ہوئے استری پرش کے جوڑے کسی قدر برابر حق کے ساتھ ایک دوسرے سے من ملنے پر ساتھ اور نہ ملنے پر الگ ہو سکتے ہیں. پھر بھی پرش سے تنگ آکر الگ ہونے والی استری کو دھن پانے کا کوئی حق نہیں مانا گیا ہے. یہ باتیں دو اصلیتوں کو آئنے کی طرح صاف کر دیتی ہیں. ایک تو یہ کہ دنیا کے دوسرے ملکوں کی طرح ہی ہند میں بھی جب سے پرانے سامیہواد کا' جسے 'ست یگ' کہا جا سکتا ہے' خاتمہ ہوتا ہے' یعنی جب سے نجی سمپتی کا جنم ہوتا ہے تب سے عورتیں مردوں کی برابری کا درجہ نامنظور ہونے لگتا ہے. دوسری بات یہ ہے کہ ایک زمانے تک ہند میں بھی عورتوں کو برابری کا حق حاصل تھا. اور اس معنی میں کوٹلیہ ارتھ شاستر جو روشنی ڈالتا ہے' موجودہ لیکھک کو کہیں دوسری جگہ دیکھنے کو نہیں ملی. میں نے اپنے ایک لیکھ—'ہند میں ایک کلچر کی آواز'—میں مہابھارت' منو سمرتی اور رامائن کا اداہرن دیتے ہوئے یہ دکھلایا تھا کہ

किस तरह इन में स्त्रियों की पूरी ग़ुलामी स्थापित हो चुकी है. कौटिल्य इस से अलग सूचना देता है.

जनपद

अब जनपदों को लीजिये. जैसे महाभारत में जनपदों का स्थान एक राजा लेता हुआ भी उनके साथ मेल जोल पैदा करने के लिये मजबूर होता दिखाई देता है, वैसे ही कौटिल्य अर्थ शास्त्र में भी टूटते हुए जनपदों को क़ायम रखने और उनको एक राजा के मातहत करने का इशारा मिलता है. इतना ही नहीं, अर्थ शास्त्र महाभारत से पुरानी किताब होने के कारन जनपदों की बुनियादी शक्ल पर ज्यादा सही रोशनी डालता है. ऐसा कहा जा सकता है. डर महज़ इस बात का है कि कौटिल्य स्कीमें बनाने में इतना माहिर था कि उसके बयान में अतिशयोक्ति (मुबालग़ा) की संभावना कम नहीं है.

जो हो, आइये अर्थशास्त्र के जनपदों पर एक निगाह डालें. लिखा है — "परदेस या देस के निवासियों के ख़ाली किए हुए स्थानों में नये जनपद बसाये जायँ. हर एक गाँव सौ परिवार से पांच सौ परिवार तक का हो. उसमें शूद्र खेतिहरों की गिनती अधिक हो और उनकी सीमा एक कोस से दो कोस तक फैली हो..........अध्यक्ष, मर्दुमशुमारी करने वालों, ग्वालों, इलाज करने वालों वग़ैरा राज-सेवकों को जमीन दी जाय, पर उन्हें बेचने का हक़ न हो.......जो खेती न करें उन से खेत छीन कर दूसरों के सुपुर्द किये जायें."

इससे पहली बात जो जाहिर होती है वह यह कि कौटिल्य मुल्क की आबादी बढ़ाने और उनको जहाँ तक मुमकिन हो, जनपदों

کس طرح ان میں استریوں کی پوری غلامی استھاپت ہو چکی ہے . کوتلیہ اس سے الگ سوچنا دیتا ہے .

جن پد

اب جن پدوں کو لیجئے . جیسے مہا بھارت میں جن پدوں کا استھان ایک راجہ لیتا ہوا بھی اُن کے ساتھ میل جول پیدا کرنے کے لئے مجبور ہوتا دکھائی دیتا ہے' ویسے ہی کوتلیہ ارتھ شاستر میں بھی ٹوٹتے ہوئے جن پدوں کو قائم رکھنے اور اُنکو ایک راجہ کے ماتحت کرنے کا اشارا ملتا ہے . اتنا ہی نہیں' ارتھ شاستر مہا بھارت سے پرانی کتاب ہونے کے کارن جن پدوں کی بنیادی شکل پر زیادہ صحیح روشنی ڈالتا ہے' ایسا کہا جا سکتا ہے . ڈر محض اس بات کا ہے کہ کوتلیہ اسکیمیں بنانے میں اتنا ماہر تھا کہ اُس کے بیان میں اتی شیوکتی (مبالغہ) کی سمبھاونا کم نہیں ہے .

جو ہو' آئیے ارتھ شاستر کے جن پدوں پر ایک نگاہ ڈالیں . لکھا ہے—'' پردیس یا دیس کے نواسیوں کے خالی کئے ہوئے استھانوں میں نئے جن پد بسائے جائیں . ہر ایک گاؤں سو پریوار سے پانچ سو پریوار تک کا ہو . اُس میں شودر کھیتیہروں کی گنتی ادھک ہو اور اُن کی سیما ایک کوس سے دو کوس تک پھیلی ہو..........ادھیکش' مردم شماری کرنے والوں' گوالوں' علاج کرنے والوں وغیرہ راج سیوکوں کو زمین دی جائے' پر اُنہیں بیچنے کا حق نہ ہو..........جو کھیتی نہ کریں اُن سے کھیت چھین کر دوسروں کے سپرد کئے جائیں . ''

اس سے پہلی بات جو ظاہر ہوتی ہے وہ یہ کہ کوتلیہ ملک کی آبادی بڑھانے اور ان کو جہاں تک ممکن ہو' جن پدوں کی شکل

लिये फ़ौजी सिपाहियों की कमी न पड़े—यह तभी हो सकता था जब खाली जमीनों पर नये जनपद बसें. पर इससे भी ज्यादा कौटिल्य उत्पादन या पैदावार की अहमियत को समझता था. इसलिये खेती करने वाले और उनमें भी शूद्र (ग़ुलाम) अधिक होने चाहिये थे. सामन्त युग की गुप्त कालीन शानशौकत अभी सदियों पीछे थी —अभी खेती के बढ़ाव के लिये सारा देश पड़ा था. वर्नाश्रम धर्म में अगर किसी सुधार की जरूरत थी, तो इसलिये नहीं कि शूद्र अपनी गुलामी की जंजीर से मुक्त हो जायँ. इसके खिलाफ़ ऐसे तरीक़े बराबर बरते जा रहे थे जिनसे ग़ुलामों के दिमाग़ में ग़ुलामी हमेशा के लिये जगह कर ले. इसलिये पुराना वर्नाश्रम धर्म. 'डिवीज़न आफ लेबर' मज़हब के रंग मे रंग कर ज्यादा से ज्यादा जहरीला हो रहा था. थोड़े ही दिनों बाद जब मनुस्मृति लिखी गई, तो उसमें चाणक्य से कहीं ज्यादा जहरीली भाषा में शूद्रों की पुरानी ग़ुलामी को सामन्तवादी मज़हबी ग़ुलामी का रूप दे दिया गया—जो कुछ बाक़ी था वह गीता में पूरा कर दिया गया.

पैदावार के बढ़ाने के लिये कौटिल्य हर मानी में होशियार था. इस से भी ज्यादा वह इस बात को मानने के लिये मजबूर था कि खेतों पर असली हक़ खेतिहरों का है. इस ख़याल से नहीं कि खेती की उपज के वह मालिक थे बल्कि इस ख़याल से कि दूसरों से काम लेने वालों के हाथ में जमीन बनी रहने से पैदावार की बढ़ती नहीं हो सकती थी. 'सतयुग' का वह जमाना, जिसमें पैदावार के पूरे पूरे मालक काम करने वाले ही हों, हजारों बरस पहिले बीत चुका था और फिर हजारों बरस तक आने वाला नहीं था.

لئے فوجی سپاہیوں کی کمی نہ پڑے—یہ تبھی ہوسکتا تھا جب خالی زمینوں پر نئے جن پد بسیں. پر اس سے بھی زیادہ کوتلیہ اُتپادن یا پیداوار کی اہمیت کو سمجھتا تھا. اسلئے کھیتی کرنے والے اور اُن میں بھی شودر (غلام) ادھک ہونے چاہئے تھے. سامنت یگ کی گپت کالین شان شوکت ابھی صدیوں پیچھے تھی—ابھی کھیتی کے بڑھاو کے لئے سارا دیش پڑا تھا. ورن آشرم دھرم میں اگر کسی سدھار کی ضرورت تھی، تو اسلئے نہیں کہ شودر اپنی غلامی کی زنجیر سے مکت ہوجائیں. اس کے خلاف ایسے طریقے برابر برتے جا رہے تھے جن سے غلاموں کے دماغ میں غلامی ہمیشہ کے لئے جگہ کرلے. اسلئے پرانا ورن آشرم دھرم 'ڈویژن آف لیبر' مذہب کے رنگ میں رنگ کر زیادہ سے زیادہ زہریلا ہو رہا تھا. تھوڑے ہی دنوں بعد جب منوسمرتی لکھی گئی تو اُس میں چانکیہ سے کہیں زیادہ زہریلی بھاشا میں شودروں کی پرانی غلامی کو سامنت وادی مذہبی غلامی کا روپ دے دیاگیا—جو کچھ باقی تھا وہ گیتا میں پورا کردیا گیا.

پیداوار کے بڑھانے کے لئے کوتلیہ ہر معنی میں ہوشیار تھا. اس سے بھی زیادہ وہ اس بات کو ماننے کے لئے مجبور تھا کہ کھیتوں پر اصلی حق کھیتیہروں کا ہے. اس خیال سے نہیں کہ کھیتی کی اُپج کے وہ مالک تھے بلکہ اس خیال سے کہ دوسروں سے کام لینے والوں کے ہاتھ میں زمین بنی رہنے سے پیداوار کی بڑھتی نہیں ہو سکتی تھی. 'ستیگ' کا وہ زمانہ 'جس میں پیداوار کے پورے پورے مالک کام کرنے والے ہی ہوں' ہزاروں برس پہلے ہی بیت چکا تھا اور پھر ہزاروں برس تک آنے والا نہیں تھا.

शेर शाह

(सेठ गोविन्द दास)

चौथा अंक

छटवाँ दृश्य

स्थान—रोहतासगढ़ के अन्दर का आंगन

समय—रात्रि

[सारा दृश्य पूर्णचन्द्र के प्रकाश से आलोकित है. आंगन के तीन ओर दालानों का बाहरी भाग और उनके ऊपर की इमारतों के बाहरी हिस्से दृष्टि गोचर होते हैं. दालानों के खंभे और मेहराब चमेली की बेलों से ढके हुए हैं. हरी हरी बल्लियों पर सफ़ेद चमेली के फूल खिले हुए हैं, जो नीले आकाश में जगह-जगह दिखाई पड़ते हुए तारों से स्पर्धा सी करतें जान पड़ते हैं. आँगन में कुछ क्यारियों के कारन आंगन नज़र बाग़ सा दिखाई देता है. क्यारियों के पौधे भी फूलों से लदे हुए हैं. नज़र बाग़ के एक ओर से क्यारियों के किनारे-किनारे निज़ाम आता है. दूसरी ओर दालान के एक दरवाज़े से काला बुरक़ा पहने हुए एक मानव आकृति आती हुई दिखाई पड़ती है. यह उस ओर आती है जहाँ से निज़ाम आया था. निज़ाम

प्रकाश=रोशनी. आलोकित=रोशन. दृष्टि गोचर=नज़र आते.
स्पर्धा=मुक़ाबला. मानव आकृति=इन्सानी शबीह.

شیر شاہ

(سیٹھ گووند داس)

چوتھا انک

چھٹواں درشیہ

استھان —— روہتاس گڑھ کے اندر کا آنگن۔

سمے —— راتری۔

سارا درشیہ پورن چندر کے پرکاش سے آلوکت ہے۔ آنگن کے تین اور کے دالانوں کا باہری بھاگ اور اُن کے اوپر کی عمارتوں کے باہری حصّے درشٹی گوچر ہوتے ہیں۔ دالانوں کے کھمبے اور محرابیں چمیلی کی بیلوں سے ڈھکے ہوئے ہیں۔ ہری ہری بلیوں پر سفید چمیلی کے پھول کھلے ہوئے ہیں۔ جو نیلے آکاش میں جگہ جگہ دکھائی پڑتے ہوئے تاروں سے سپردھا سی کرتے جان پڑتے ہیں۔ آنگن میں کچھ کیاریوں کے کارن آنگن نظر باغ سا دکھائی دیتا ہے۔ کیاریوں کے پودے بھی پھولوں سے لدے ہوئے ہیں۔ نظر باغ کے ایک اور سے کیاریوں کے کنارے کنارے نظام آتا ہے۔ دوسری اور دالان کے ایک دروازے سے کالا برقعہ پہنے ہوئے ایک مانو آکرتی آتی ہوئی دکھائی پڑتی ہے۔ یہ اُس اور جاتی ہے جہاں سے نظام آیا تھا۔ نظام

پرکاش = روشنی۔ آلوکت = روشن۔ درشٹی گوچر = نظر آتے۔ سپردھا = مقابلہ۔

अब कौटिल्य का खास विषय कूटनीति (डेप्लोमेसी) लीजिये. वैसे इस लम्बे विषय पर दो चार शब्दों में क्या बताया जा सकता है, फिर भी कुछ बातों का जिक्र करके हम अपने पाठकों को इस नताजे पर आसानी से पहुंचा सकते हैं कि चाणक्य की कूट नीति इतनी पुरानी हो चुकने पर भी कुछ मजेदार बातों से भरी है.

दुश्मन देश के क्रोधी, डरपोक, लोभी और मानी वर्गों को मिलाने का तरीक़ा सुनिय :—

"क्रुद्ध, लोभी, डरपोक वग़ैरा दुश्मन के हिमातियों को मिलाने के लिये यह देखना चाहिये कि यह किस जटाधारी या मुंड़िया भेस बनाने वाले खुफ़िया का आदमी है. जो जिसका भक्त हो उसे उसी मुंड़िया या जट धारी को पहिले मिलना चाहिये. और फिर वह खुफ़िया ग़ुस्से में भर लोगों से यह कह कर उन्हें फोड़ ले कि देखो जैसे उन्मत्त पीलवान से चलाया गया मतवाला हाथी अपने सामने जो कुछ पाता है उसे चूर कर देता है, उसी तरह यह राजा जिसके शास्त्र रूपी आँखें नहीं हैं, राष्ट्र और प्रजा को नष्ट करने पर तुला है. ऐसी अवस्था में इसको खतम करने के लिये इसके दुश्मनों को उभारना ज़रूरी है. इसलिये इसकी तरफ़ से तुम्हारा नाराज़ और ग़ुस्सा होना ज़रूरी है."

दुश्मन के खिलाफ़ उसके मुल्क की प्रजा को भड़काना आज खास अहमियत रखता है और किसी दुश्मन देश पर सीधा हमला करके उस पर फ़ौजी फ़तह हासिल करना भी आज खास अहमियत रखता है. इस तरक़्क़ी के जमाने में यह काम महज जासूसों के

اب کوتلیہ کا خاص وشے کوت نیتی (ڈپلومیسی) لیجئے . ویسے اس لمبے وشے پر دو چار شبدوں میں کیا بتایا جا سکتا ہے ' پھر بھی کچھ باتوں کا ذکر کرکے ہم اپنے پاٹھکوں کو اِس نتیجے پر آسانی سے پہنچا سکتے ہیں کہ چانکیہ کی کوت نیتی اتنی پرانی ہو چکنے پر بھی کچھ مزیدار باتوں سے بھری ہے .

دشمن دیش کے کرودھی ' ڈرپوک ' لوبھی اور مانی ورگوں کو ملانے کا طریقہ سنئے :—

'' کرودھ ' لوبھی ' ڈرپوک وغیرہ دشمن کے حمایتیوں کو ملانے کے لئے یہ دیکھنا چاہئے کہ یہ کس جٹا دھاری یا مڑ یا بھیس بنانے والے خفیہ کا آدمی ہے جو جس کا بھکت ہو اُسے اُسی مڑیا یا جٹا دھاری کو پہلے ملنا چاہئے . اور پھر وہ خفیہ غصہ میں بھرے لوگوں سے یہ کہکر اُنہیں پھوڑے کہ دیکھو جیسے اُنمت پیلوان سے چلایا گیا متوالا ہاتھی اپنے سامنے جو کچھ پاتا ہے اُسے چور کر دیتا ہے' اُسی طرح یہ راجہ ' جِس کے شاستر روپی آنکھیں نہیں ہیں ' راشٹر اور پرجا کو نشٹ کرنے پر تلا ہے . ایسی اوستھا میں اس کو ختم کرنے کے لئے اس کے دشمنوں کو اُبھارنا ضروری ہے اس لئے اس کی طرف سے تمہارا ناراض اور غصہ ہونا ضروری ہے . ''

دشمن کے خلاف اُس کے ملک کی پرجا کو بھڑکانا آج خاص اہمیت رکھتا ہے اور کسی دشمن دیش پر سیدھا حملہ کر کے اُس پر فوجی فتح حاصل کرنا بھی آج خاص اہمیت رکھتا ہے . اس ترقی کے زمانے میں یہ کام محض جاسوسوں کے

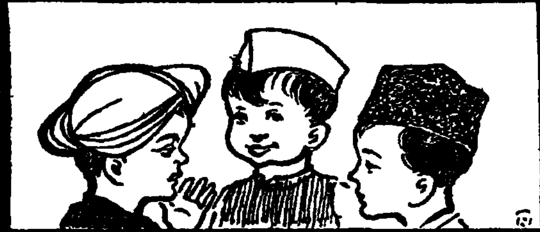
किताबें, रेडियो वग़ैरा ज़रिये ईजाद हो चुके हैं जिनसे प्रचार और प्रचार के खिलाफ़ प्रचार करके एक दुश्मन देश की जनता को भड़-काया जाता है. लेकिन उस समय केवल गुपचुप तरीक़ों से यह सब हो सकता था. इसी लिये इस नीति से कुछ प्रभावशाली लोग ज़रूर तोड़ लिये जा सकते होंगे, लेकिन आम जनता को तोड़ना मुश्किल था.

दूसरी मार्क करने की बात यह है कि चाणक्य ने नाराज़ लोगों को तोड़ने की बात करके बग़ावत की ख़ास नस पकड़ी है. राजा से असन्तुष्ट हुए बिना प्रजा दूसरे राजा से नहीं मिलती. तबक़ेवार समाज में, जिसमें एक तबक़ा दूसरे तबक़े को चूसता रहता है, चूसने वालों के ख़िलाफ़ चूसे जाने वालों का नाराज़ रहना क़ुदरती है. चाणक्य की कूटनाति जहाँ इस बग़ावत की भावना के इस्तेमाल करने की बात करती है, वह ऊँची बात कर जाती है. मगर कोई भी कूट नेता (डेप्लोमेट) इस हथियार को इस्तेमाल करके अपनी आख़िरी जीत न समझे, क्योंकि लूटी खसोटी जाने वाली जनता को भड़काना आसान है, लेकिन उसके तरक़्क़ी पाये हुए राज काजी ज्ञान का सामना करना, उसको भड़काने वालों के लिये भी मुश्किल है. इसीलिये चाणक्य या किसी भी कूट नेता ने आम जनता के असन्तोष की बात दर असल नहीं कही है. उसके हामी चन्द असर वाले लोग रहे हैं. इसीलिये यह कूट नीति लड़ाइयों के बीज के अलावा और कुछ नहीं हो सकती है और इस लिहाज़ से चाणक्य का अर्थ शास्त्र जनता के लिये ज़हर है.

کتابیں، ریڈیو وغیرہ ذریعے ایجاد ہو چکے ہیں جن سے پرچار اور پرچار کے خلاف پرچار کر کے ایک دشمن دیش کي جنتا کو بھڑکا یا جاتا ہے . لیکن اُس سمے کیول گپ چپ طریقوں سے یہ سب ہو سکتا تھا . اسی لئے اس نیتی سے کچھ پربھاوشالی لوگ ضرور توڑ لئے جا سکتے ہونگے، لیکن عام جنتا کو توڑنا مشکل تھا .

دوسري مارک کرنے کی بات یہ ہے کہ چانکیہ نے ناراض لوگوں کو توڑنے کی بات کرکے بغاوت کی خاص نس پکڑی ہے . راجہ سے اسنتشٹ ہوئے بنا پرجا دوسرے راجہ سے نہیں ملتي . طبقہ‌وار سماج میں، جس میں ایک طبقہ دوسرے طبقے کو چوستا رہتا ہے، چوسنے والوں کے خلاف چوسے جانے والوں کا ناراض رہنا قدرتی ہے . چانکیہ کي کوٹ نیتی جہاں اس بغاوت کی بھاونا کے استعمال کرنے کی بات کرتي ہے، وہ اونچي بات کر جاتی ہے . مگر کوئی بھی کوٹ نیتا ڈپلو میٹ) اس ہتھیار کو استعمال کر کے اپنی آخري جیت نہ سمجھے، کیونکہ لوٹی کھسوٹی جانے والي جنتا کو بھڑکانا آسان ہے، لیکن اُس کے ترقي پائے ہوئے راج کاجی گیان کا سامنا کرنا، اُسکو بھڑکانے والوں کے لئے بھی مشکل ہے اسی لئے چانکیہ یا کسی بھی کوٹ نیتا نے عام جنتا کے اسنتوش کي بات دراصل نہیں کہی ہے . اُسکے حامی چند اثر والے لوگ رہے ہیں . اسي لئے یہ کوٹ نیتی لڑائیوں کے بیج کے علاوہ اور کچھ نہیں ہو سکتي ہے اور اِس لحاظ سے چانکیہ کا ارتھ شاستر جنتا کے لئے زہر ہے .

बच्चों की दुनिया



بچوں کی دنیا

एडीटर, प्रेम भाई

ایڈیٹر' پریم بھائی

दीप माला

प्रेम के दीप जलाती आई, जगमग करती हँसती आई.
भारत वालो आई दिवाली, छन छन करती वह मतवाली.
कपड़े अच्छे अच्छे पहने, पहने अच्छे अच्छे गहने.
पूजा को थे बैठे बालक, राम नाम थे जपते बालक.
एक ने बढ़ कर दीप जलाया, दीप जलाया घर को सजाया.
सबने बढ़ कर तिलक लगाया, 'राम भजन' फिर मिल कर गाया.

वीन बजे शहनाई बाजे
तख़त पे आज थे राम विराजे.

—बालक शायर

دیپ مالا

پریم کے دیپ جلاتی آئی ' جگمگ کرتی ھنستی آئی ۔
بھارت والو آئی دیوالی ' چھن چھن کرتی وہ متوالی ۔
کپڑے اچھے اچھے پہنے ' پہنے اچھے اچھے گہنے ۔
پوجا کو تھے بیٹھے بالک ' رام نام تھے جپتے بالک ۔
ایک نے بڑھ کر دیپ جلایا ' دیپ جلایا گھر کو سجایا ۔
سب نے بڑھ کر تلک لگایا ' رام بھجن ' پھر مل کر گایا ۔

بین بجے شہنائی باجے
تخت پہ آج تھے رام براجے

—بالک شاعر

'बच्चों की दुनिया' के लिये अपने लेख, कहानियां, कवितायें इस पते पर भेजना चाहिये— प्रेम भाई, एडीटर 'बच्चों की दुनिया' (नया किला) नम्बर १२५६ (सीना) मुगल पुरा, हैदराबाद दक्खिन.

' بچوں کی دنیا ' کے لئے اپنے لیکھ ' کہانیاں ' کویتائیں اس پتے پر بھیجنا چاھئے— پریم بھائی ۔ اڈیٹر 'بچوں کی دنیا' (نیا قلعہ) نمبر ۱۲۵۶ (سینا) مغل پورہ' حیدرآباد دکن ۔

नेक लड़का

(भाई प्रेम भाई)

अज़ीज़ का पल्ला शरारत में भारी था और लिखने पढ़ने के मामले में वह कोरा निखट्टू था. जब देखो मदरसे से ग़ायब और इधर उधर घूमता नज़र आता. कभी पार्क में तो कभी बाग़ों में, कभी खेतों में तो कभी गली कूचों में, कभी खंडहरों में तो कभी तालाबों की तरफ़, बस इधर उधर आवारा फिरता.

माता पिता चाहते थे कि किसी न किसी तरह उसका सुधार हो सके और अज़ीज़ जी लगा कर लिखना पढ़ना सीखे. उसे हर तरह का सुख था, केवल वह अपनी आदतों से मजबूर था. एक दिन उसके पिता ने देखा कि वह मोहल्ले की बावली में गंदे लड़कों के साथ तैर रहा है. वह लड़के किसी और को खराब खराब गालियाँ दे रहे हैं. अज़ीज़ भी दो एक गालियाँ उन्हें दे रहा है. यह हालत अज़ीज़ के पिता से देखी न गई. उन्होंने ठीक नहीं जाना कि इस समय इन गंदे बच्चों में अज़ीज़ को डराया या धमकाया जाये. वह ग़ुस्से से भरे घर पहुंचे और अज़ीज़ का इन्तज़ार करने लगे—कि वह अब आता ही होगा. पर अज़ीज़ का पता ही नहीं. दो से चार बज गये और फिर छाँव ढलने लगी. देखते देखते छै भी बज गये. फिर उसके पिता किसी काम से बाहर चल पड़े और कोई नौ बजे वह घर आए. पूछा तो मालूम हुआ कि अज़ीज़ सुबह नौ बजे का खाना खाकर जो गया है तो अभी तक उसके आने का पता नहीं. वह अपने कमरे में बैठे किताबें पढ़ने लगे.

نیک لڑکا

(بھائی پریم بھائی)

عزیز کا پلہ شرارت میں بھاری تھا اور لکھنے پڑھنے کے معاملے میں وہ کورا نکھٹو تھا ۔ جب دیکھو مدرسے سے غائب اور اِدھر اُدھر گھومتا نظر آتا ۔ کبھی پارک میں تو کبھی باغوں میں، کبھی کھیتوں میں تو کبھی گلی کوچوں میں، کبھی کھنڈھروں میں تو کبھی تالابوں کی طرف، بس اِدھر اُدھر آوارہ پھرتا ۔

ماتا پتا چاہتے تھے کہ کسی نہ کسی طرح اُس کا سدھار ہوسکے اور عزیز جی لگا کر لکھنا پڑھنا سیکھے ۔ اُسے ہر طرح کا سکھ تھا ' کیول وہ اپنی عادتوں سے مجبور تھا ۔ ایکدن اُس کے پتا نے دیکھا کہ وہ محلے کی باولی میں گندے لڑکوں کے ساتھ تیر رہا ہے ۔ وہ لڑکے کسی اور کو خراب خراب گالیاں دے رہے ہیں ۔ عزیز بھی دو، ایک گالیاں اُنھیں دے رہا ہے ۔ یہ حالت عزیز کے پتا سے دیکھی نہ گئی ۔ اُنھوں نے ٹھیک نہیں جانا کہ اِس سمے اِن گندے بچوں میں عزیز کو ڈرایا یا دھمکایا جائے ۔ وہ غصہ سے بھرے گھر پہنچے اور عزیز کا انتظار کرنے لگے—کہ وہ اب آتا ہی ہوگا. پر عزیز کا پتہ ہی نہیں، دو سے چار بج گئے اور پھر چھاؤں ڈھلنے لگی ۔ دیکھتے دیکھتے چھ بھی بج گئے ۔ پھر اُس کے پتا کسی کام سے باہر چل پڑے اور کوئی نو بجے وہ گھر آئے ۔ پوچھا تو معلوم ہوا کہ عزیز صبح نو بجے کا کھانا کھا کر جو گیا ہے تو ابھی تک اُس کے آنے کا پتہ نہیں ۔ وہ اپنے کمرے میں بیٹھے کتابیں پڑھنے لگے ۔

इतने में दरवाज़े पर आहट हुई और अज़ीज़ भीगी बिल्ली बना, धीरे धीरे क़दम रखता घर में पहुंचा और बग़ैर कुछ कहे सुने अपने कमरे की ओर चल पड़ा. पिता ने आवाज़ दी और अज़ीज़ परेशान परेशान उनके कमरे में आया. फिर पिताजी ने गरज कर मेज़ पर हाथ मारते हुए कहा—"अज़ीज़! सच सच कहो तुम सुबह से अब तक कहाँ थे?" अज़ीज़ सफ़ाई पेश करते हुए कहने लगा—"सुबह स्कूल गया था और पाँच बजे एक मित्र के पास हिन्दुस्तानी का होमवर्क लिखने गया था सो इतनी देर हो गई पिताजी..." और वह नीची नज़र किये खड़ा रहा. यह सुनते ही उनके पिता को ग़ुस्सा आया और वह कुरसी पर से उठ बैठे. अज़ीज़ की तरफ़ बढ़ आये और कहा—"झूट कहते शर्म नहीं आती तुझे, बारह बजे के क़रीब वह कौन था जो कुएँ के पास गाली गलौज कर रहा था." यह सुनना था कि अज़ीज़ का दिल धक धक करने लगा और उसकी आँखों से आँसू जारी हो गये.

"एक बात सुनो, अगर फिर कभी आवारा लड़कों में रहोगे तो इतना पीटूँगा कि सूरत पहचानी न जायगी." यह कह कर अज़ीज़ के पिता ने उनके दो तमाचे रसीद किये. अज़ीज़ ख़ामोश खड़ा रहा. उसकी आँखों से आँसू जारी थे. बदन थर थर कांप रहा था. उसके पिताजी बिजली की तरह गरज रहे थे. फिर अज़ीज़ आगे बढ़ा और पिताजी के चरनों में गिर गया. गिड़गिड़ा कर आइन्दा से ऐसा न करने का वादा किया और कहा—"पिताजी, मैं आज से आपको इस बात का विश्वास दिलाता हूं कि कभी आवारा लडकों से दोस्ती न करूँगा. और अपना काम वक़्त पर किया करूँगा, लिखूँगा, पढ़ूँगा और बड़ों की सेवा करूँगा."

اتنے میں دروازے پر آہٹ ہوئی اور عزیز بھیگی بلی بنا' دھیرے دھیرے قدم رکھتا گھر میں پہنچا اور بغیر کچھ کہے سنے اپنے کمرے کی اور چل پڑا . پتا نے آواز دی اور عزیز پریشان پریشان اُن کے کمرے میں آیا . پھر پتا جی نے گرج کر میز پر ہاتھ مارتے ہوئے کہا—"عزیز ! سچ سچ کہو تم صبح سے اب تک کہاں تھے ؟" عزیز صفائی پیش کرتے ہوئے کہنے لگا—"صبح اسکول گیا تھا اور پانچ بجے ایک متر کے پاس ہندستانی کا ہوم ورک لکھنے گیا تھا سو اتنی دیر ہوگئی پتاجی........" اور وہ نیچی نظر کئے کھڑا رہا . یہ سنتے ہی اُس کے پتا کو غصہ آیا اور وہ کرسی پر سے اُٹھ بیٹھے . عزیز کی طرف بڑھ آئے اور کہا—"جھوٹ کہتے شرم نہیں آتی تجھے' بارہ بجے کے قریب وہ کون تھا جو کنوئیں کے پاس گالی گلوچ کر رہا تھا." یہ سننا تھا کہ عزیز کا دل دھک دھک کرنے لگا اور اُس کی آنکھوں سے آنسو جاری ہو گئے .

"ایک بات سنو' اگر پھر کبھی آوارہ لڑکوں میں رہو گے تو اتنا پیٹونگا کہ صورت پہچانی نہ جائیگی ." یہ کہکر عزیز کے پتا نے اُس کے دو طماچے رسید کئے . عزیز خاموش کھڑا رہا . اُس کی آنکھوں سے آنسو جاری تھے . بدن تھر تھر کانپ رہا تھا . اُس کے پتاجی بجلی کی طرح گرج رہے تھے. پھر عزیز آگے بڑھا اور پتاجی کے چرنوں میں گر گیا . گڑگڑا کر آئندہ سے ایسا نہ کرنے کا وعدہ کیا اور کہا—"پتاجی' میں آج سے آپ کو اِس بات کا وشواس دلاتا ہوں کہ کبھی آوارہ لڑکوں سے دوستی نہ کرونگا اور اپنا کام وقت پر کیا کروں گا . لکھوں گا' پڑھوں گا اور بڑوں کی سیوا کرونگا ."

पिताजी ने माफ़ कर दिया और अज़ीज़ अपने कमरे में चला आया. वह पलंग पर लेटा सोचने लगा, अपनी ग़लतियों पर ग़ौर करने लगा पिता की बातें उसे बार बार याद आ रही थीं. उसके मन ने कहा—"अज़ीज़ अपने वायदे पर डटा रह, और सच बोल, झूट न बोल, बुरों की सोहबत में न रह, फिर तू सच्चा और देश का अच्छा बालक होगा. तेरी सब इज़्ज़त करेंगे और तेरा मान बढ़ायेंगे.... .." और अज़ीज़ अपने ख़यालों में खो गया. वह सपनों की सुन्दर दुनिया में जा चुका था. उसने देखा कि उसके मित्र खड़े बन में शिकार खेलने आने को कह रहे हैं. अज़ीज़ रुक गया और सोचने लगा—क्या मैं इन मैले कुचैले लड़कों के साथ शिकार को जाऊँ, जो बात बात पर कुत्तों की तरह झगड़ पड़ते हैं. उसने उनकी तरफ़ देखते हुए कहा—"नहीं, नहीं. मैं आज से कभी तुम्हारे साथ न रहूँगा और न तुम लोगों के साथ शिकार और दूसरी जगह जाऊँगा. मैंने तुम लोगों के साथ न रहने का वचन दिया है, क़सम खाई है, अपने पिताजी से, जाओ जाओ... दूर रहो और... चले जाओ, अपने अपने कामों को, क्यों खड़े मुझे बुला रहे हो, मुझे सोने भी दोगे या यूँ ही परेशान करोगे देखो .. मैं अपने पिताजी को आवाज़ दूंगा, वह आएंगे तो तुम सबको दो दो तमाचे मारेंगे. ज़ोर ज़ोर से, ऐसे जैसे कि कल उन्होंने मुझे मारे थे." अज़ीज़ कहता गया और उनमें का एक लड़का आगे बढ़ आया और अज़ीज़ का गला पकड़ कर कहने लगा—"चलो चलो, हम शिकार खेलेंगे, मछलियाँ लायेंगे, और हाँ पहाड़ पर हमें सीता फल भी तो ख़ूब मिलेंगे, चुरा कर लायेंगे, अगर कोई पूछे या रोके तो उसे ख़ूब

پتاجی نے معاف کر دیا اور عزیز اپنے کمرے میں چلا آیا . وہ پلنگ پر لیٹا سوچنے لگا ' اپنی غلطیوں پر غور کرنے لگا . پتا کی باتیں اُسے بار بار یاد آ رہی تھیں اُس کے من نے کہا— " عزیز اپنے وعدے پر ڈٹا رہ ' اور سچ بول ' جھوٹ نہ بول ' بروں کی صحبت میں نہ رہ ' پھر تو سچا اور دیش کا اچھا بالک ہوگا . تیری سب عزت کرینگے اور تیرا مان بڑھائیں گے........اور عزیز اپنے خیالوں میں کھو گیا . وہ سپنوں کی سندر دنیا میں جا چکا تھا . اُس نے دیکھا کہ اُس کے متر کھڑے بن میں شکار کھیلنے آنے کو کہہ رہے ہیں . عزیز رک گیا اور سوچنے لگا—کیا میں اِن میلے کچیلے لڑکوں کے ساتھ شکار کو جاؤں ' جو بات بات پر کتوں کی طرح جھگڑ پڑتے ہیں . اُس نے اُن کی طرف دیکھتے ہوئے کہا—" نہیں نہیں ' میں آج سے کبھی تمہارے ساتھ نہ رہونگا اور نہ تم لوگوں کے ساتھ شکار اور دوسری جگہ جاؤنگا . میں نے تم لوگوں کے ساتھ نہ رہنے کا وچن دیا ہے ' قسم کھائی ہے ' اپنے پتاجی سے ' جاؤ جاؤ......دور رہو اور........ چلے جاؤ ' اپنے اپنے کاموں کو ' کیوں کھڑے مجھے بلا رہے ہو ' مجھے سونے بھی دو گے یا یونہی پریشان کروگے . دیکھو.........میں اپنے پتاجی کو آواز دونگا ' وہ آئینگے تو سب کو تم دو دو طماچے مارینگے . زور زور سے ' ایسے جیسے کہ کل اُنہوں نے مجھے مارے تھے . " عزیز کہتا گیا اور اُن میں کا ایک لڑکا آگے بڑھ آیا اور عزیز کا گلا پکڑ کر کہنے لگا—" چلو چلو ہم شکار کھیلیں گے ' مچھلیاں لائینگے اور ہاں پہاڑ پر ہمیں سیتا پھل بھی تو خوب ملیں گے ' چرا کر لائینگے ' اگر کوئی پوچھے یا روکے تو اُسے خوب

मारेंगे." यह कह कर उसने अजीज को जबरदस्ती खींचना शुरू किया. अजीज कहने लगा—" नहीं नहीं..........मैं अब कभी न आऊँगा, तुम लोग चले जाओ, पिताजी, पिताजी......... आओ, जल्दी आओ........ यह लोग ...... ' अजीज चीखने लगा और उसकी आँख खुल गई. आवाज सुनकर उसके पिताजी कमरे में आए और कहने लगे– "कहो बेटा, तुमने इतनी रात को क्यों आवाज दी थी मुझे." अजीज ने कहा—"नहीं तो, मैंने नहीं पुकारा आपको." फिर उसके पिता यह कहते अपने कमरे को चले गये कि शायद सोते में ख्वाब देखा हो. फिर अजीज सो गया. सुबह सवेरे वह जाग पड़ा. मुँह हाथ धो नमाज पढ़ने के लिये मस्जिद की ओर चल पड़ा. मोहल्ल क अच्छे बच्चों ने जब उसे बहुत दिनों बाद आज मस्जिद में देखा तो बहुत खुश हुए और सभों ने अजीज को अपना मित्र बना लिया.

अब अजीज रोज सवेरे उठता, नमाज पढ़ता, मदरसे जाता और लिखता पढ़ता, घर के कामकाज़ करता और माता पिता की सेवा भी करता है. वह अच्छे मित्रों में रहता है और उसने एक सभा बनाई है जिसके मेम्बर सब अच्छे बच्चे हैं हर इतवार को पाँच बजे उसका एक जलसा होता है, उसका एक प्रधान बनता है, और सब लड़के अच्छी अच्छी कहानियां और सुन्दर सुन्दर लेख पढ़ते हैं, कोई तो भाषन भी देता है.

इस तरह अजीज जो कल तक शरारती और खराब बच्चा था आज एक नेक लड़के के नाम से मोहल्ले भर में मशहूर है.

ماریںگے." یہ کہکر اُس نے عزیز کو زبردستی کھینچنا شروع کیا. عزیز کہنے لگا—"نہیں نہیں......میں اب کبھی نہ جاونگا' تم لوگ چلے جاؤ پتاجی' پتاجی...آؤ جلدی آؤ...یہ لوگ..." عزیز چیخنے لگا اور اُس کی آنکھ کھل گئی. آواز سن کر اس کے پتاجی کمرے میں ائے اور کہنے لگے—" کہو بیٹا ' تم نے اتنی رات کو کیوں آواز دی تھی مجھے. " عزیز نے کہا—" نہیں تو ' میں نے نہیں پکارا آپ کو. " پھر اس کے پتا یہ کہتے اپنے کمرے کو چلے گئے کہ شاید سوتے میں خواب دیکھا ہو. پھر عزیز سوگیا. صبح سویرے وہ جاگ پڑا. منہ ہاتھ دھو نماز پڑھنے کے لئے مسجد کی اور چل پڑا. محلے کے اچھے بچوں نے جب اسے بہت دنوں بعد اج مسجد میں دیکھا تو بہت خوش ہوئے اور سبھوں نے عزیز کو اپنا متر بنا لیا.

اب عزیز روز سویرے اُٹھتا ' نماز پڑھتا ' مدرسے جاتا اور لکھتا پڑھتا' گھر کے کام کاج کرتا ماتا اور پتا کی سیوا بھی کرتا ہے. وہ اچھے متروں میں رہتا ہے اور اُس نے ایک سبھا بنائی ہے جس کے ممبر سب اچھے بچے ہیں. ہر اتوار کو پانچ بجے اُس کا ایک جلسہ ہوتا ہے ' اُس کا ایک پردھان بنتا ہے ' اور سب لڑکے اچھی اچھی کہانیاں اور سندر سندر لیکھ پڑھتے ہیں ' کوئی تو بھاشن بھی دیتا ہے.

اس طرح عزیز جو کل تک شرارتی اور خراب بچہ تھا آج ایک نیک لڑکے کے نام سے محلے بھر میں مشہور ہے.

आज़ादी का गीत

(भाई सुरेशचन्द्र अरोड़ा)

आज़ादी के गीत सुनाओ,
सोते दिलों को फिर से जगाओ.

सब को तुम यह सीख सुनाओ,
अहिंसा का व्रत अपनाओ.

हिन्दू मुस्लिम एक बनाओ,
बापू को इस तरह रिझाओ.

वीर जवाहर को तुम मानो,
उसकी शिक्षा को पहचानो.

देश भक्ति इसी में जानो,
भारत को न भुलाओ.

यह है प्यारा देश हमारा,
दुनिया में है सबसे न्यारा.

बापू ने भी तन मन वारा,
इस में ज्योति जलाओ.

آزادی کا گیت

(بھائی سریش چندر اروڑا)

آزادی کے گیت سناؤ'
سوتے دلوں کو پھر سے جگاؤ .

سب کو تم یہ سیکھ سناؤ'
اہنسا کا برت اپناؤ.

ہندو مسلم ایک بناؤ'
باپو کو اس طرح رجھاؤ.

ویر جواہر کو تم مانو'
اُسکی شکشا کو پہچانو .

دیش بھکتی اِسی میں جانو'
بھارت کو نہ بھلاؤ.

یہ ہے پیارا دیش ہمارا'
دنیا میں ہے سب سے نیارا.

باپو نے بھی تن من وارا'
اس میں جیوتی جلاؤ.

हमारी राय

ہماری رائے

श्रीयुत मंडल साँहब का त्यागपत्र

हम 'नया हिन्द' में कई बार लिख चुके हैं कि हम आजाद हुए नहीं हैं, अंगरेज हमें आजाद कर गए. यह सुन कर आजादी की कोशिश में तकलीफ़ उठाने वाले बुरा न मानें हम खुद भी उन्हीं में से एक हैं. आजादी हमने नहीं कमाई यह हम इसलिये कह रहे हैं कि हममें आजादी कमाने वालों जैसा दिल नहीं है. अगर हमने आजादी कमाई होती तो हमारे दिल इतने छोटे न होते. और बड़े दिल के लोगों के मुल्क में अछूत कैसे पाये जा सकते हैं, परदा कैसे रह सकता है, औरतें गुलामों से भी ज्यादा दबी हुई कैसे रह सकती हैं, सौ पीछे पंचानवे आदमी बे पढ़े लिखे कैसे रह सकते हैं, गुलामी की हालत में सिर पर लदी बिदेसी भाषा से इतना प्यार कैसे हो सकता है कि दावतों के बुलावे; शादी ब्याह के बुलावे यहाँ तक कि भगवान कीर्तन के बुलावे भी उसी बिदेसी भाषा में छापे और हाथ से लिखे जायं, दोस्तों की आपसी चिट्ठी पत्री ही नहीं माँ बेटी और

شری یت منڈل صاحب کا تیاگ پتر

ہم 'نیا ہند' میں کئی بار لکھ چکے ہیں کہ ہم آزاد ہوئے نہیں ہیں' انگریز ہمیں آزاد کر گئے. یہ سن کر آزادی کی کوشش میں تکلیف اُٹھانے والے برا نہ مانیں. ہم خود بھی اُنہیں میں سے ایک ہیں. آزادی ہم نے نہیں کمائی یہ ہم اس لئے کہہ رہے ہیں کہ ہم میں آزادی کمانے والوں جیسا دل نہیں ہے. اگر ہم نے آزادی کمائی ہوتی تو ہمارے دل اتنے چھوٹے نہ ہوتے. اور بڑے دل کے لوگوں کے ملک میں اچھوت کیسے پائے جا سکتے ہیں' پردہ کیسے رہ سکتا ہے' عورتیں غلاموں سے بھی زیادہ دبی ہوئی کیسے رہ سکتی ہیں' سو پیچھے پنچانوے آدمی بے پڑھے لکھے کیسے رہ سکتے ہیں' غلامی کی حالت میں سر پر لدی بدیسی بھاشا سے اتنا پیار کیسے ہو سکتا ہے کہ دعوتوں کے بلاوے' شادی بیاہ کے بلاوے یہاں تک کہ بھگوان کیرتن کے بلاوے بھی اُسی بدیسی بھاشا میں چھاپے اور ہاتھ سے لکھے جائیں' دوستوں کی آپسی چٹھی پتری ہی نہیں ماں بیٹی اور

बाप बेटे की चिट्ठी पत्रियाँ भी उसी बिदेसी भाषा में चलें. अगर हम सचमुच अपनी मेहनत से आजाद हुए होते तो यह सब चीजें महीनों क्या हफ्तों तक भी नहीं टिक सकतीं थीं. और आज आजाद हुए तीन बरस से ज्यादा हो गए हम जहाँ के तहाँ.

हमारा बिदेसी मालिक अंगरेज लगभग सौ बरस हम पर सवार रहा और इस सौ बरस के अरसे में हमारी रग रग पहचान गया. वह हम में से बहुतों से कहीं ज्यादा हमारे धर्म को सीख गया, हमारे रस्म रिवाजों से जानकारी हासिल कर ली और हमारी कमजोरियों की तो तह तक पहुंच गया था. इसलिये उसने हिन्दुस्तान छोड़ते वक़्त या आजाद करते वक़्त वह चाल चली कि हम उसके जाने के बाद चैन से न बैठ सकें. उसने हिन्दुस्तान के दो टुकड़े ही नहीं किये पर हम सबको बहुत हद तक अपने अपने धर्म के कट्टर बना गया. अगर आज भारत में निरे हिन्दू हों और पाकिस्तान में निरे मुसलमान हों तो क्या वह चैन से रह सकते हैं ? हरगिज़ नहीं. मुसलमानों के गिरोह में शिया सुन्नी जितने दूर पड़ जाते हैं उतने हिन्दू और मुसलमान दूर नहीं होते. हिन्दू गिरोह में सनातनी और आर्या समाजी, या सनातनी और जैनी, या ब्राह्मन और अब्राह्मन, या शैव और वैश्नव जितने दूर होते हैं उतने हिन्दू और मुसलमान नहीं. यह सब कट्टरता उसी अंगरेज की पाली पोसी है. उसने अपने रहते कभी हमें हिन्दुस्तान के हिन्दुस्तानी नहीं बनने दिया. और आज भी जब यह हिन्दुस्तान भारत और पाकिस्तान में बट गया है तब भी उसी मालिक के असर के सर पर सवार होने से हम न भारत के भारती बन पाते हैं, न पाकिस्तान के पाकिस्तानी. हिन्दुओं

باپ بیٹے کی چٹھی پتریاں بھی اسی بدیسی بھاشا میں چلیں ۔ اگر ہم سچ مچ اپنی محنت سے آزاد ہوئے ہوتے تو یہ سب چیزیں مہینوں کیا ہفتوں تک بھی نہیں ٹک سکتی تھیں ۔ اور آج آزاد ہوئے تین برس سے زیادہ ہو گئے ہم جہاں کے تہاں ۔

ہمارا بدیسی مالک انگریز لگ بھگ سو برس ہم پر سوار رہا اور اس سو برس کے عرصے میں ہماری رگ رگ پہچان گیا ۔ وہ ہم میں سے بہتوں سے کہیں زیادہ ہمارے دھرم کو سیکھ گیا ہمارے رسم رواجوں سے جانکاری حاصل کرلی اور ہماری کمزوریوں کی تو تہہ تک پہونچ گیا تھا ۔ اسلئے اُس نے ہندستان چھوڑتے وقت یا آزاد کرتے وقت وہ چال چلی کہ ہم اُسکے جانے کے بعد چین سے نہ بیٹھ سکیں ۔ اُس نے ہندستان کے دو ٹکڑے ہی نہیں کئے پر ہم سب کو بہت حد تک اپنے اپنے دھرم کے کٹر بنا گیا ۔ اگر آج بھارت میں نرے ہندو ہوں اور پاکستان میں نرے مسلمان ہوں تو کیا وہ چین سے رہ سکتے ہیں ؟ ہرگز نہیں ۔ مسلمانوں کے گروہ میں شیعہ سنی جتنے دور پڑجاتے ہیں اُتنے ہندو اور مسلمان دور نہیں ہوتے ۔ ہندو گروہ میں سناتنی اور آریہ سماجی، یا سناتنی اور جینی، یا براہمن اور ابراہمن، یا شیو اور ویشنو جتنے دور ہوتے ہیں اُتنے ہندو اور مسلمان نہیں ۔ یہ سب کٹرتا اُسی انگریز کی پالی پوسی ہے ۔ اُس نے اپنے رہتے کبھی ہمیں ہندستان کے ہندستانی نہیں بننے دیا ۔ اور آج بھی جب یہ ہندستان بھارت اور پاکستان میں بٹ گیا ہے تب بھی اُسی مالک کے اثر کے سر پر سوار ہونے سے ہم نہ بھارت کے بھارتی بن پاتے ہیں، نہ پاکستان کے پاکستانی۔ ہندؤں

उसे देखता है परन्तु बुरक़े के कारन पहचान नहीं पाता. निज़ाम मानव आकृति का पीछा करने के लिये उसी ओर घूमता है]

निज़ाम—(निकट पहुंच कर ज़ोर से) कौन ?

[वह आकृति ठिठक कर रुकती है. फिर भागने का सा उपक्रम करती है. निज़ाम दौड़ कर उसे पकड़ लेता है.]

निज़ाम—(डाँट कर) कौन हो तुम ?

[आकृति अपने को छुड़ाने का उपक्रम करते हुए कन्धे हिलाती है. निज़ाम ज़बरदस्ती उसका मुख अपनी ओर कर बुरक़ा हटा देता है. लाड को देखकर निज़ाम स्तम्भित सा रह जाता है.]

निज़ाम—(कुछ देर पश्चात्. विस्मय भरे स्वर में) आप !... आप इतनी रात गये कहाँ जा रही थीं. ?

लाड—और तुम ?

[दोनों एक दूसरे को एक टक देखने के पश्चात् खिल-खिला कर हँस पड़ते हैं. निज़ाम लाड का हाथ पकड़ कर चबूतरे की ओर ले आता है. दोनों चबूतरे पर बैठ जाते हैं.]

निज़ाम—(प्रेम भरे स्वर में) बानू !

लाड—(मुस्कराते हुए) निज़ाम, तुम तो एक के बाद एक अपने सारे अहद तोड़ रहे हो. न मिलन का अहद न जाने कब का तोड़ डाला आज पहले न छूने का अहद छूकर तोड़ दिया और अब बानू कह रहे हो, क्या ख़ूब !

निज़ाम—मेरा हर अहद टूट जाता है भाभी. लेकिन इसमें मेरी ख़ता नहीं.

उपक्रम = इक़दाम.

اُسے دیکھتا ہے' پرنتو برقعے کے کارن پہچان نہیں پاتا۔ نظام مانو آکرتی کا پیچھا کرنے کے لئے اُسی اور گھومتا ہے)

نظام۔ (نکٹ پہنچ کر زور سے) کون ؟

[وہ آکرتی ٹھٹھک کر رکتی ہے ! پھر بھاگنے کا سا اُپکرم کرتی ہے۔ نظام دوڑ کر اُسے پکڑ لیتا ہے]

نظام۔ (ڈانٹ کر) کون ہو تم ؟

[آکرتی اپنے کو چھڑانے کا اُپکرم کرتے ہوئے کندھے ہلاتی ہے۔ نظام زبردستی اُس کا مکھ اپنی اور کر برقع ہٹا دیتا ہے۔ لاڈ کو دیکھ کر نظام ستمبھت سا رہ جاتا ہے]

نظام — (کچھ دیر پشچات وسمے بھرے سوَر میں) آپ'....... آپ اتنی رات گئے کہاں جا رہی تھیں۔؟

لاڈ۔ اور تم ؟

(دونوں ایک دوسرے کو ایک ٹک دیکھنے کے پشچات کھکھلا کر ہنس پڑتے ہیں۔ نظام لاڈ کا ہاتھ پکڑ کر چبوترے کی اور لے جاتا ہے۔ دونوں چبوترے پر بیٹھ جاتے ہیں)

نظام (پریم بھرے سوَر میں) بانو!

لاڈ —— (مسکراتے ہوئے) تم تو ایک کے بعد ایک اپنے سارے عہد توڑ رہے ہو۔ نہ ملنے کا عہد نہ جانے کب کا توڑ ڈالا۔ آج پہلے نہ چھونے کا عہد چھو کر توڑ دیا۔ اور اب بانو کہہ رہے ہو کیا خوب !

نظام ۔ میرا ہر عہد ٹوٹ جاتا ہے ۔ بھابھی لیکن اس میں میری خطا نہیں۔

اُپکرم = تمہید

ने महाभारत को पढ़ा है. जो कौरवों की तरफ़ थे वह फिर चाहे पांडवों के गुरू हों, मामा चाचा ताऊ कुछ भी हों दुश्मनों में शुमार थे और इसी तरह जो पांडवों की ओर थे वह कौरवों के कितने ही प्यारे क्यों न हों कौरवों के दुश्मन थे. फिर हमारी समझ में नहीं आता कि जब देश का बटवारा हो गया और एक देश के दो देश बन गए तब फिर हर पाकिस्तानी, फिर चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान, हमारी जात बिरादरी का हो या रिश्तेदार, बिदेसी क्यों नहीं हो जायगा. ठीक इसी तरह से पाकिस्तानी के लिये हर भारती बिदेसी हो गया. इस तरह के दो अलग अलग देशों की भावना हम में जगह ही नहीं पाती और इसकी वजह यह है कि हम बरसों से हिन्दुस्तान के हिन्दुस्तानी नहीं बने. फिर अब भारत के भारती और पाकिस्तान के पाकिस्तानी कैसे बनें. हिन्दुस्तान के हिन्दुस्तानी बनने की क़ाबलियत हममें सन् १८५७ तक थी. बहादुर शाह हम सब का था. सारे हिन्दुस्तान का बादशाह था. उसके झंडे के नीचे हम हिन्दुस्तान के हिन्दुस्तानी की हैसियत से लड़े थे. यह ठीक है कि उन दिनों भी हम अपने को हिन्दुस्तानी न भी कहते रहे हों पर एक बादशाह की रय्यत तो अपने को समझते ही थे. नहीं तो इतनी बड़ी आज़ादी की लड़ाई सन ५७ में हम कैसे लड़ सकते थे. अंगरेज़ों ने सिक्ख फ़ौजों को अपनी तरफ़ मिलाने के लिये यह कह कर नहीं तोड़ा था कि उनको मुसलमानों से लड़ना होगा. क्योंकि बहादुर शाह की फ़ौज में तो हिन्दू मुसलमान सब शामिल थे और वह सब हिन्दुस्तानी थे. बल्कि यह कह कर तोड़ा था कि हिन्दुस्तानी

نے مہا بھارت کو پڑھا ہے ۔ جو کوروؤں کی طرف تھے وہ پھر چاہے پانڈوؤں کے گرو ہوں' ماما چاچا تاؤ کچھ بھی ہوں دشمنوں میں شمار تھے اور اسی طرح جو پانڈوؤں کی اور تھے وہ کوروؤں کے کتنے ہی پیارے کیوں نہ ہوں کوروؤں کے دشمن تھے ۔ پھر ہماری سمجھ میں نہیں آتا کہ جب دیش کا بٹوارا ہو گیا اور ایک دیش کے دو دیش بن گئے تب پھر ہر پاکستانی' پھر چاہے وہ ہندو ہو یا مسلمان' ہماری جات برادری کا ہو یا رشتہ‌دار' بدیسی کیوں نہیں ہو جائیگا. ٹھیک اُسی طرح سے پاکستانی کے لئے ہر بھارتی بدیسی ہو گیا ۔ اس طرح کے دو الگ الگ دیشوں کی بھاونا ہم میں جگہ ہی نہیں پاتی اور اسکی وجہ یہ ہے کہ ہم برسوں سے ہندستان کے ہندستانی نہیں بنے ۔ پھر اب بھارت کے بھارتی اور پاکستان کے پاکستانی کیسے بنیں ۔ ہندستان کے ہندستانی بننے کی قابلیت ہم میں سن ۱۸۵۷ تک تھی ۔ بہادر شاہ ہم سب کا تھا ۔ سارے ہندستان کا بادشاہ تھا ۔ اُس کے جھنڈے کے نیچے ہم ہندستان کے ہندستانی کی حیثیت سے لڑے تھے ۔ یہ ٹھیک ہے کہ اُن دنوں بھی ہم اپنے کو ہندستانی نہ بھی کہتے رہے ہوں پر ایک بادشاہ کی رعیت تو اپنے کو سمجھتے ہی تھے ۔ نہیں تو اتنی بڑی آزادی کی لڑائی سن ۵۷ میں ہم کیسے لڑسکتے تھے ۔ انگریزوں نے سکھ فوجوں کو اپنی طرف ملانے کے لئے یہ کہہ کر نہیں توڑا تھا کہ اُن کو مسلمانوں سے لڑنا ہوگا ۔ کیونکہ بہادر شاہ کی فوج میں تو ہندو مسلمان سب شامل تھے اور وہ سب ہندستانی تھے ۔ بلکہ یہ کہکر توڑا تھا کہ ہندستانی فوجیں انگریزی عورتوں اور بچوں پر ظلم کر رہی ہیں

थी तो झूटी, पर बहादुर सिक्खों पर असर कर गई और वह इस तरह का जुल्म बरदाश्त न कर सके, और बिना पूरी जानकारी हासिल किये अंगरेजों के साथ मिल गये. सिक्ख अपनी समझ में जालिमों के खिलाफ़ लड़े न कि मुसलमानों या हिन्दुस्तानियों के. सारे हिन्दुस्तान से हिन्दुस्तानी बादशाह के नाते हमारी मोहब्बत थी और उस मोहब्बत को नव्वे बरस का अंगरेजी राज खा गया, और उस मोहब्बत की जगह हमारे दिल में एक दूसरे के खिलाफ नफ़रत छोड़ गया. यही वह ज्वालामुखी है जो कभी कभी भड़कता रहता है. ज्वालामुखी भड़के तो भड़के पर जब हमारे देश के पढ़े लिखे उस भड़क के कारन बन जाते हैं तो हमारा दिल बड़ा दुख मानता है. इस वक़्त कुछ दिनों तक बहुत जी मार कर हमें छोटी मोटी वारदातों के तिल को पहाड़ बनाने से ही नहीं रुकना चाहिये बल्कि पहाड़ जैसी बुराइयों को भी जमीन में दफ़न करके भुलाने का अभ्यास करना चाहिये और सच्चे जी से हर भारती को भारत का वफ़ादार होना चाहिये और हर पाकिस्तानी को पाकिस्तान का वफ़ादार होना चाहिये. भारत का कोई हिन्दू या मुसलमान किसी हिन्दू और मुसलमान पर आई मुसीबत के लिये सत्याग्रह करने का हक़दार है, अपनी जान जोखम में डालने का अधिकारी है पर यह समझ कर कि वह एक भारती की मुसीबत दूर करने जा रहा है न कि यह समझ कर कि वह किसी हिन्दू या मुसलमान की मुसीबत दूर करने जा रहा है. ठीक इसी तरह से हर पाकिस्तानी को चाहिये फिर चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान कि वह अपने किसी भाई की मुसीबत को दूर करने के लिये पाकिस्तानी सरकार से टक्कर ले फिर

تھی۔ تو جھوٹی' پر بہادر سکھوں پر اثر کر گئی اور وہ اس طرح کا ظلم برداشت نہ کر سکے' اور بنا پوری جانکاری حاصل کئے انگریزوں کے ساتھ مل گئے. سکھ اپنی سمجھ میں ظالموں کے خلاف لڑے نہ کہ مسلمانوں یا ہندستانیوں کے. سارے ہندستان سے ہندستانی بادشاہ کے ناتے ہماری محبت تھی اور اُس محبت کو نوے برس کا انگریزی راج کھا گیا' اور اس محبت کی جگہ ہمارے دل میں ایک دوسرے کے خلاف نفرت چھوڑ گیا. یہی وہ جوالا مکھی ہے جو کبھی کبھی بھڑکتا رہتا ہے. جوالا مکھی بھڑکے تو بھڑکے پر جب ہمارے دیش کے پڑھے لکھے اُس بھڑک کے کارن بن جاتے ہیں تو ہمارا دل بڑا دکھ مانتا ہے. اسوقت کچھ دنوں تک بہت جی مار کر ہمیں چھوٹی موٹی وارداتوں کے تل کو پہاڑ بنانے سے ہی نہیں رکنا چاہئے بلکہ پہاڑ جیسی برائیوں کو بھی زمین میں دفن کر کے بھلانے کا ابھیاس کرنا چاہئے اور سچے جی سے ہر بھارتی کو بھارت کا وفادار ہونا چاہئے اور ہر پاکستانی کو پاکستان کا وفادار ہونا چاہئے. بھارت کا کوئی ہندو یا مسلمان کسی ہندو اور مسلمان پر آئی مصیبت کے لئے ستیاگرہ کرنے کا حق دار ہے' اپنی جان جوکھم میں ڈالنے کا ادھکاری ہے پر یہ سمجھکر کہ وہ ایک بھارتی کی مصیبت دور کرنے جا رہا ہے نہ کہ یہ سمجھکر کہ وہ کسی ہندو یا مسلمان کی مصیبت دور کرنے جا رہا ہے. ٹھیک اسی طرح سے ہر پاکستانی کو چاہئے پھر چاہے وہ ہندو ہو یا مسلمان کہ وہ اپنے کسی بھائی کی مصیبت کو دور کرنے کے لئے پاکستان سرکار سے ٹکر لے پھر

चाहे मुसीबत में पड़ा आदमी हिन्दू हो या मुसलमान.

मंडल साहब बहुत समझदार आदमी हैं और एक सरकार की कैबिनेट में रहने के नाते तो वह ऊँचे दरजे के राजनेता भी होने चाहियें, उनको हम जैसे आदमी सलाह देने के हक़दार तो नहीं हैं भले ही हमने सारे हिन्दुस्तान की आज़ादी के लिये उनसे ज्यादा तकलीफें सही हों, आज तो आराम के साथ एक पत्र की एडीटरी में लगे हैं, पर चूँकि इस समय मंडल साहब पाकिस्तान की किसी मुसीबत को देख कर या किसी अन्याय को देख कर भड़क उठे हैं इसलिये उनको सलाह देने के हम अपने आपको हक़दार समझते हैं क्योंकि भड़क में दूरन्देशी की ऐनक धुँधली हो जाती है. अब हम उन से कहेंगे कि उनको भारत न आकर पाकिस्तान में ही अपना पूरा ज़ोर लगाना चाहिये था और अगर ज़रूरत पड़ती तो जान को भी जोखम में डाल देना चाहिये था, तो वह सचमुच पाकिस्तानी सरकार को अच्छा सबक़ दे सकते थे और बिदेसियों के पैदा किये हुए ज्वालामुखी को भड़क उठने से रोक सकते थे क्या उनको यह नहीं मालूम कि भारत का बच्चा बच्चा पाकिस्तान में हुए सच्चे, झूटे या बढ़ाकर बताए हुए ज़ुल्मों की शिकायत तो करता है पर कहता यही है कि भारत को पाकिस्तान से इन ज़ुल्मों के आधार पर लड़ाई नहीं छेड़नी चाहिये. अब जब लड़ाई नहीं छेड़नी चाहिये तब दोस्ती क़ायम करनी ही चाहिये और दोस्ती क़ायम करने की ख़ातिर भारत और पाकिस्तान दोनों को दूसरे देस के मामलों से नज़र अलग करना ही पड़ेगी और हर तरह से ज्वालामुखी को भड़कने से रोकना ही पड़ेगा. अन्त में हम तो मंडल साहब को यही सलाह देंगे कि वह

چاہے مصیبت میں پڑا آدمي ہندو ہو یا مسلمان .

منڈل صاحب بہت سمجھ دار آدمی ہیں اور ایک سرکار کی کیبنٹ میں رہنے کے ناتے تو وہ اُونچے درجے کے راج نیتا بھی ہونے چاہئیں ' اُنکو ہم جیسے آدمی صلاح دینے کے حقدار تو نہیں ہیں بھلے ہی ہم نے سارے ہندستان کی آزادي کے لئے اُن سے زیادہ تکلیفیں سہی ہیں ' آج تو آرام کے ساتھ ایک پتر کی ایڈیٹری میں لگے ہیں ' پر چونکہ اس سمے منڈل صاحب پاکستان کی کسی مصیبت کو دیکھکر یا کسی انیائے کو دیکھکر بھڑک اُٹھے ہیں اس لئے ان کو صلاح دینے کے ہم اپنے آپ کو حقدار سمجھتے ہیں کیونکہ بھڑک میں دور اندیشی کی عینک دھندلي ہوجاتی ہے . اب ہم اُن سے کہینگے کہ اُن کو بھارت نہ آکر پاکستان میں ہی اپنا پورا زور لگانا چاہئے تھا اور اگر ضرورت پڑتی تو جان کو بھي جوکھم میں ڈال دینا چاہئے تھا ' تو وہ سچ مچ پاکستانی سرکار کو اچھا سبق دے سکتے تھے اور بدیسیوں کے پیدا ہوئے کئے جوالامکھی کو بھڑک اُٹھنے سے روک سکتے تھے . کیا اُن کو یہ نہیں معلوم کہ بھارت کا بچہ بچہ پاکستان میں ہوئے سچے ' جھوٹے یا بڑھا کر بتائے ہوئے ظلموں کی شکایت تو کرتا ہے پر کہتا یہی ہے کہ بھارت کو پاکستان سے ان ظلموں کے آدھار پر لڑائی نہیں چھیڑنی چاہئے. اب جب لڑائي نہیں چھیڑنی چاہئے تب دوستی قائم کرنی ہی چاہئے اور دوستي قائم کرنے کی خاطر بھارت اور پاکستان دونوں کو دوسرے دیس کے معاملوں سے نظر الگ کرنا ہی پڑیگي اور ہر طرح کے جوالا مکھی کو بھڑکنے سے روکنا ہی پڑیگا . انت میں ہم تو منڈل صاحب کو یہی صلاح دینگے کہ وہ

फिर पाकिस्तान वापस चले जायं और वहाँ जाकर पाकिस्तानियों पर आए दिन आई मुसीबतों के ख़िलाफ़ जो कुछ कर सकें करना शुरू कर दें. बस पाकिस्तानियों को ध्यान में रखें. हिन्दू, मुसलमानों या अछूतों को नहीं. पाकिस्तान के हिन्दू, अछूत और मुसलमान सभी पर मुसीबतें आ रही हैं. मुसीबतों के लिहाज़ से भारत पाकिस्तान से कम नहीं है. बस भारत वालों को भारत की सोचने दें और मंडल साहब, आप पाकिस्तानी हैं, पाकिस्तान की सोचें, पाकिस्तानियों से ही हर तरह की मदद हासिल करें और पाकिस्तानी सरकार से ही भिड़ें. भारतियों और भारत सरकार से मदद लेकर दो दोस्त मुल्कों में खिंचाव न पैदा करें. यह हमारी मांग नहीं समय की मांग है.

२५-१०-'५० —भगवानदीन

कांगरेस में लोकशाही फ्रन्ट—

आचार्य कृपलानी कांगरेस के प्रेसीडेन्ट रह चुके हैं. कांगरेस के प्रेसीडेन्ट की क्या ज़िम्मेदारियां हैं और उसका आज़ाद भारत में क्या और कितना मान होना चाहिये इसको सबसे ज़्यादा उन्होंने ही समझा है. भारत के आज़ाद होने के बाद वही पहले ऐसे प्रेसीडेन्ट थे जिन्हें इस बात के समझने की ज़रूरत थी. अगर वह इतना न समझते होते तो कांगरेस की उस प्रेसीडेन्टी से वक़्त से पहले कभी अलग होना पसन्द न करते जिसके लिये बड़े बड़े लोग मुंह

پھر پاکستان چلے جائیں اور وہاں جاکر پاکستانیوں پر آئے دن آئی مصیبتوں کے خلاف جو کچھ کر سکیں کرنا شروع کردیں بس پاکستانیوں کو دھیان میں رکھیں ۔ ہندو ، مسلمانوں یا اچھوتوں کو نہیں ۔ پاکستان کے ہندو ، اچھوت اور مسلمان سبھی پر مصیبتیں آرہی ہیں ۔ مصیبتوں کے لحاظ سے بھارت پاکستان سے کم نہیں ہے ۔ بس بھارت والوں کو بھارت کی سوچنے دیں اور منڈل صاحب ، آپ پاکستانی ہیں ، پاکستان کی سوچیں ، پاکستانیوں سے ہی ہر طرح کی مدد حاصل کریں اور پاکستانی سرکار سے ہی بھڑیں ۔ بھارتیوں اور بھارت سرکار سے مدد لے کر دو دوست ملکوں میں کھنچاؤ نہ پیدا کریں ۔ یہ ہماری مانگ نہیں سمے کی مانگ ہے ۔

۲۵-۱۰-۵۰ —بھگوان دین

کانگریس میں لوک شاہی فرنٹ—

آچاریہ کرپلانی کانگریس کے پریسیڈنٹ رہ چکے ہیں ۔ کانگریس کے پریسیڈنٹ کی کیا ذمہ داریاں ہیں اور اسکا آزاد بھارت میں کیا اور کتنا مان ہونا چاہئے اس کو سب سے زیادہ انہوں نے ہی سمجھا ہے ۔ بھارت کے آزاد ہونے کے بعد وہی پہلے ایسے پریسیڈنٹ تھے جنہیں اس بات کے سمجھنے کی ضرورت تھی ۔ اگر وہ اتنا نہ سمجھتے ہوتے تو کانگریس کی اس پریسیڈنٹی سے وقت سے پہلے کبھی الگ ہونا پسند نہ کرتے جس کے لئے بڑے بڑے لوگ منہ

साथ रहते हैं. अपनी प्रेसीडेन्टी में उन्होंने देख लिया कि कांगरेस में किसी वजह् से वह ताक़त नहीं रह गई कि जनता में से छांटे हुए प्रेसीडेन्ट को वही मान और वही जगह् दे सके जो वह उसको दे सकती है जो सरकारी बड़े ओहदे से छुट कर आता है, यानी कांगरेस और सरकार बिलकुल नहीं तो बहुत कुछ एक ही चीज़ हो गई है. इस बार भी जब वह प्रेसीडेन्टी के लिये खड़े हुए तो उन्होंने अपने ज़ाहिर पत्र में अपने खड़े होने की वजह् बताते हुए यह साफ़ कह दिया था कि इस बार मुझे यह विश्वास दिलाया गया है कि सरकार मेरे साथ सहयोग करेगी, इसलिये मैं खड़ा हो रहा हूँ. और हमें उनका जितना परिचय है उस बूते पर हम यह कह सकते हैं कि अगर वह इस बार प्रेसीडेन्ट चुन लिये गए होते और अगर किसी वजह् से उनको फिर भी सरकार से सहयोग न मिला होता तो वह फिर प्रेसीडेन्टी से त्यागपत्र दे देते. वह प्रेसीडेन्टी के भूके नहीं. वह हिन्दुस्तानी सरकार और हिन्दुस्तानियों के सुधार के लिये तड़प रहे हैं और वह ग़लत या सही यह भी समझते हैं कि कांगरेस के प्रेसीडेन्ट होकर सरकार के सहयोग से वह बहुत कुछ सुधार कर सकते हैं और सारे देश में वही फ़िज़ा पैदा कर सकते हैं जो कभी सन् १९२१ में थी और थोड़ी बहुत सन् १९४७ तक भी रही.

पर आज जो वह कांगरेस के अंदर एक नया लोकशाही मोरचा खोलने जा रहे हैं, उससे हम बिलकुल सहमत नहीं. एक तो न जाने क्यों हमारे दिल में यह बैठ गया है कि जो भी कोई राष्ट्रपिता गांधी को दुहाई देकर या उसके नाम से कुछ भी करना चाहता है वह कोई

باتے رہتے ہیں . اپنی پریسیڈنسی میں انہوں نے دیکھ لیا کہ کانگریس میں کسی وجہ سے وہ طاقت نہیں رہ گئی کہ جنتا میں سے چھانٹے ہوئے پریسیڈنٹ کو وہی مان اور وہی جگہ دے سکے جو وہ اسکو دے سکتی ہے جو سرکاری بڑے عہدے سے چھٹ کر آتا ہے، یعنی کانگریس اور سرکار بالکل نہیں تو بہت کچھ ایک ہی چیز ہو گئی ہیں . اس بار بھی جب وہ پریسیڈنسی کے لئے کھڑے ہوئے تو انہوں نے اپنے ظاہر پتر میں اپنے کھڑے ہونے کی وجہ بتاتے ہوئے یہ صاف کہ دیا تھا کہ اس بار مجھے یہ وشواس دلایا گیا ہے کہ سرکار میرے ساتھ سہیوگ کریگی، اسی لئے میں کھڑا ہو رہا ہوں . اور ہمیں انکا جتنا پریچے ہے اس بوتے پر ہم یہ کہہ سکتے ہیں کہ اگر وہ اس بار پریسیڈنٹ چن لئے گئے ہوتے اور اگر کسی وجہ سے انکو پھر بھی سرکار سے سہیوگ نہ ملا ہوتا تو وہ پھر پریسیڈنسی سے تیاگ پتر دے دیتے . وہ پریسیڈنسی کے بھوکے نہیں . وہ ہندستانی سرکار اور ہندستانیوں کے سدھار کے لئے تڑپ رہے ہیں اور وہ غلط یا صحیح یہ بھی سمجھتے ہیں کہ کانگریس کے پریسیڈنٹ ہو کر سرکار کے سہیوگ سے وہ بہت کچھ سدھار کر سکتے ہیں اور سارے دیش میں وہی فضا پیدا کر سکتے ہیں جو کبھی سن ۱۹۲۱ میں تھی اور تھوڑی بہت سن ۱۹۴۷ تک بھی رہی .

پر آج جو وہ کانگریس کے اندر ایک نیا لوک شاہی مورچہ کھولنے جا رہے ہیں، اس سے ہم بالکل سہمت نہیں . ایک تو نہ جانے کیوں ہمارے دل میں یہ بیٹھ گیا ہے کہ جو بھی کوئی راشٹر پتا گاندھی کی دہائی دے کر یا اس کے نام سے کچھ بھی کرنا چاہتا ہے

और सुघराई अपने आप मे इतनी जोरदार और चमकदार चीजें हैं कि जनता अपने आप उनकी ओर खिंचती है. राष्ट्रपिता ने खुद भी तो उन्हीं चीजों को सामने रखकर दुनिया का दिल अपनी तरफ फेरा था. उन्होंने बात बात पर अपने से पहले देश के नामी नेताओं दादा भाई नौरोजी, गोखले और तिलक की दुहाई नहीं पीटी थी. आचार्य कृपलानी कांगरेस के प्रेसीडेन्ट रह चुके हैं और उसे त्याग कर त्याग के मैदान में भी काफ़ी ऊँचे उठ चुके हैं फिर वह कांगरेस में लोकशाही मोरचा न खोल कर कांगरेस के बाहर लोक सेवा का जाल फैला दें तो वह आप ही अपनी सचाई के बल पर बड़ा जबरदस्त लोकशाही मोरचा बन जायगा. मिसेज बेसेन्ट अकसर बुद्ध बचन अपने मुँह से कहा करती थीं पर यह बहुत ही कम कहती थीं कि यह बुद्ध के बचन हैं. एक बार किसी ने सभा में उन्हें टोका भी था कि वह क्यों नहीं यह कहतीं कि यह बुद्ध के बचन हैं तब उन्होंने यह कहा था कि यह बुद्ध के बचन होंगे. बुद्ध के बचन हैं यह भी सही. पर अब तो मैंने इन्हें अपना लिया है. मैं इन पर अमल करती हूं और अब यह मेरे हैं हम इसी बात की आशा आचार्य कृपलानी जी से करते हैं. वह जो मोरचा खोलें बाहर खोलें और अपने नाम से खोलें. कोई सचाई और अच्छाई गांधी जी की होने से हमारे किसी काम की नहीं है, हमारी होने से ही हमारे काम आयगी और उसी के मुंह से उपदेश सुन कर हम उस भलाई और अच्छाई को हमारी बना सकते हैं जो उसे अपनाए हुए है और अपनी कह कर ही हमारे सामने रखता है. हमारा तो यह भी बिश्वास है कि जनता भी ऐसा ही करती है.

اور سدھرائي اپنے آپ میں اتنی زوردار اور چمکدار چیزیں ہیں کہ جنتا اپنے آپ اُن کی اور کھنچتی ہے . راشٹر پتا نے خود بھی تو اُنھیں چیزوں کو سامنے رکھ کر دنیا کا دل اپنی طرف پھیرا تھا . اُنھوں نے بات بات پر اپنے سے پہلے دیش کے نامی نیتاؤں دادا بھائي نورو جی، گوکھلے اور تلک کی دھائی نہیں پیٹی تھی. آچاریہ کرپلانی کانگریس کے پریسیڈنٹ رہ چکے ہیں اور اُسے تیاگ کر تیاگ کے میدان میں بھی کافی اونچے اُٹھ چکے ہیں . پھر وہ کانگریس میں لوک شاہی مورچہ نہ کھول کر کانگریس کے باہر لوک سیوا کا جال پھیلا دیں تو وہ آپ ہی اپنی سچائی کے بل پر بڑا زبردست لوک شاہي مورچہ بن جائیگا . مسز بیسنٹ اکثر بدھ بچن اپنے منہ سے کہا کرتی تھیں پر یہ بہت ہی کم کہتی تھیں کہ یہ بدھ کے بچن ہیں. ایک بار کسی نے سبھا میں اُنھیں ٹوکا بھی تھا کہ وہ کیوں نہیں یہ کہتیں کہ یہ بدھ کے بچن ہیں . تب اُنھوں نے یہ کہا تھا کہ یہ بدھ کے بچن ہونگے . بدھ کے بچن ہیں یہ بھی سہی. پر اب تو میں نے انھیں اپنا لیا ہے . میں اِن پر عمل کرتی ہوں اور اب یہ میرے ہیں . ہم اسي بات کی آشا آچاریہ کرپلانی جی سے کرتے ہیں . وہ جو مورچہ کھولیں باہر کھولیں اور اپنے نام سے کھولیں. کوئي سچائی اور اچھائي گاندھی جی کی ہونے سے ہمارے کسی کام کی نہیں ہے، ہماری ہونے سے ہي ہمارے کام آئیگی اور اُسي کے منہ سے اُپدیش سن کر ہم اس بھلائي اور اچھائی کو ہماري بنا سکتے ہیں جو اُسے اپنائے ہوئے ہے اور اپنی کہ کر ہی ہمارے سامنے رکھتا ہے . ہمارا تو یہ بھي وشواس ہے کہ جنتا بھی ایسا ہی کرتی ہے .

हमारा यह भी विश्वास है कि सचाई राजनीति से न बचने की कोशिश करती है, न उसको अपनाने के चक्कर में पड़ती है और न उससे टक्कर लेने के लिये दौड़ती है. फिर भी राजनीति पर वह असर डाले बिना नहीं रहती. धीरे धीरे राजनीति अपने आप उस सचाई के पास आती है और अपने सर पर चढ़ाती है.

लोकशाही मोरचा खुले. पर वह लोगों में खुले. सरकार के क़िले कांगरेस में खोलने से उस मोरचे के लिये इने गिने सिपाही ही तो मिल सकेंगे. लोगों में खुलने से सिपाहियों की भरती इतनी होगी कि उसकी गिनती रखना मुशकिल हो जायगा.

२६–१०–५० — भगवानदीन

इन्सानियत ?

लाहौर (पाकिस्तान) का अंगरेज़ी अख़बार 'दी लाइट' ऊपर के शीर्षक से लिखता है कि—

"जनरल मैक आर्थर ने कोरिया की सरकार को हथियार रख देने के लिए कहते हुए कोरिया वालों को विश्वास दिलाया है कि उनके साथ और उनके जंग के क़ैदियों के साथ सभ्य लोगों के विचारों और अमल के अनुसार इन्सानियत का बरताव किया जायगा. इसी जंग में अमरीकी फ़ौजों ने लड़ाई के क़ैदियों को नंगा करके उनसे खुले आम परेड कराई. इस गंदी हरकत के फ़ोटो अख़बारों में आ चुके हैं. इस तरह के कामों से वह 'इन्सानियत' या वह 'सभ्यता'

همارا یه بهي وشواس هے که سچائی راج نیتی سے نه بچنے کی کوشش کرتی هے' نه اُس کو اپنانے کے چکر میں پڑتی هے اور نه اُس سے ٹکر لینے کے لئے دوڑتی هے . پھر بهي راج نیتي پر وہ اثر ڈالے بنا نهیں رهتی . دهیرے دهیرے راج نیتی اپنے آپ اُس سچائی کے پاس آتي هے اور اپنے سر پر چڑهاتی هے .

لوک شاهی مورچه کهلے . پر وہ لوگوں میں کهلے . سرکار کے قلعه کانگریس میں کهولنے سے اُس مورچے کے لئے اِنے گنے سپاهی هی تو مل سکینگے . لوگوں میں کهلنے سے سپاهیوں کی بهرتی اتنی هوگی که اُس کي گنتي رکهنا مشکل هوجائیگا .

۲٦-١٠-٥٠ —بهگوان‌دین

انسانیت ?

لاهور (پاکستان)کا انگریزي اخبار 'دي لائٹ' اوپر کے شیرشک سے لکهتا هے که—

''جنرل میک‌آرتهر نے کوریا کي سرکار کو هتهیار رکھ دینے کے لئے کهتے هوئے کوریا والوں کو وشواس دلایا هے که اُن کے ساتھ اور اُن کے جنگ کے قیدیوں کے ساتھ سبهیه لوگوں کے وچاروں اور عمل کے انوسار انسانیت کا برتاؤ کیا جائیگا . اسی جنگ میں امریکی فوجوں نے لڑائي کے قیدیوں کو ننگا کرکے اُن سے کهلے عام پریڈ کرائی. اِس گندی حرکت کے فوٹو اخباروں میں آچکے هیں . اِس طرح کے کاموں سے وہ ' انسانیت ' یا وہ ' سبهیتا '

बहुत अधिक नहीं झलकती जिसका बहादुर सेनापति ने अपनी क़ौम के लिये दावा किया है. लेकिन इन गुनों के बारे में अमरीका वालों के अपने अलग विचार हैं. वह ढंढोरा तो यह पीटते हैं कि क़ानून की निगाह में अमरीका के सब रहने वाले बराबर हैं, लेकिन वहाँ ही का अगर कोई नीगरो गोरों की रेलगाड़ी में या उनके किसी चाय घर में घुसने का भी साहस करता है तो उसे आम सड़क के ऊपर फाँसी देकर मार डालते हैं, जंग के क़ैदियों को नंगा करना इंसानियत पर कलंक लगाना है. अमरीका को अपने लोक राज की बहुत डींग मारने की आदत है. पर सच्ची इंसानियत का सबक़ सीखने के लिये उसे अभी इस्लाम के पैग़म्बर के चरनों में बैठने की जरूरत है. मोहम्मद साहब ने जग के क़ैदियों के साथ अपने कुटुम्ब वालों का सा सलूक किया था और वैसा ही उनका मान रखा था. मक्के की फ़तह के वक़्त अगर इस्लाम के पैग़म्बर की जगह जनरल मैकआर्थर विजयी सेनापति होते तो वह मक्की दुश्मनों के नेताओं को नंगा करके उन्हें गलियों में फिराते. इसके ख़िलाफ़ पैग़म्बर ने यह ऐलान कर दिया था कि—'आज के दिन आप लोगों के ख़िलाफ़ कोई ज़रा सी बुरी बात भी नहीं कह सकेगा.' इस्लाम में 'इंसानियत' के यही मानी हैं. उस अमरीकी क़िस्म की इन्सानियत से, जिसे अपने इंसान भाइयों को नंगा करने में भी बुराई दिखाई नहीं देती, यह बिलकुल एक दूसरी तरह की चीज़ है—एम. वाई. के.''

लेखक ने जो जो बातें ऊपर लिखी हैं सच्ची हैं और जो राय ज़ाहिर की है उस से हम पूरी तरह सहमत हैं.

दूसरी तरफ़ अभी अक्तूबर के शुरू में चार अमरीकी फ़ौजी

بہت ادھک نہیں جھلکتی جس کا بہادر سینا پتی نے اپنی قوم کے لئے دعویٰ کیا ہے . لیکن اِن گنوں کے بارے میں امریکہ والوں کے اپنے الگ وچار ہیں . وہ ڈھنڈورا تو یہ پیٹتے ہیں کہ قانون کی نگاہ میں امریکہ کے سب رہنے والے برابر ہیں، لیکن وہاں ہی کا اگر کوئی نیگرو گوروں کی ریل گاڑی میں یا اُن کے کسی چائے گھر میں گھسنے کا بھی ساہس کرتا ہے تو اُسے عام سڑک کے اوپر پھانسی دے کر مار ڈالتے ہیں . جنگ کے قیدیوں کو ننگا کرنا انسانیت پر کلنک لگانا ہے . امریکہ کو اپنے لوک راج کی بہت ڈینگ مارنے کی عادت ہے . پر سچی انسانیت کا سبق سیکھنے کے لئے اُسے ابھی اسلام کے پیغمبر کے چرنوں میں بیٹھنے کی ضرورت ہے . محمد صاحب نے جنگ کے قیدیوں کے ساتھ اپنے کٹمب والوں کا سا سلوک کیا تھا اور ویسا ہی اُن کا مان رکھا تھا . مکے کی فتح کے وقت اگر اسلام کے پیغمبر کی جگہ جنرل میک آرتھر وجئی سینا پتی ہوتے تو وہ مکی دشمنوں کے نیتاؤں کو ننگا کرکے اُنھیں گلیوں میں پھراتے . اِس کے خلاف پیغمبر نے یہ اعلان کر دیا تھا کہ—'آج کے دن آپ لوگوں کے خلاف کوئی ذرا سی بری بات بھی نہیں کہہ سکے گا .' اسلام میں 'انسانیت' کے یہی معنی ہیں . اُس امریکی قسم کی انسانیت سے' جسے اپنے انسان بھائیوں کو ننگا کرنے میں بھی برائی دکھائی نہیں دیتی' یہ بالکل ایک دوسری طرح کی چیز ہے—ایم . وائی . کے ."

لیکھک نے جو جو باتیں اوپر لکھی ہیں سچی ہیں اور جو رائے ظاہر کی ہے اُس سے ہم پوری طرح سہمت ہیں .

دوسری طرف ابھی اکتوبر کے شروع میں چار امریکی فوجی

जिनमें से दो लफ़टिनेन्ट थे और दो मामूली सिपाही जिन्हें कोरिया वालों ने क़ैद कर लिया था, उत्तर कोरिया से किसी तरह भाग कर अमरीकी फ़ौज में आ मिले. यहां आकर उन्होंने अपने साथ उत्तर कोरिया वालों के बरताव का जो हाल सुनाया वह बिलकुल दूसरी तरह का है. इन में से एक लफ़टिनेन्ट जोन्स ने कहा कि—"हम यह देख कर कि हमारे साथ कितना अच्छा बरताव किया गया हैरान रह गये. हमें ठीक वक़्त पर खाना और सिगरेट दिये जाते थे. हमारे ऊपर जो दो पहरेदार थे वह रास्ते में अपनी जेब से पैसे खरच करके हमें सेब खरीद कर लाकर देते थे. हमें केवल यह शिकायत थी कि कोरिया के कुछ सिपाहियों ने हम से हमारे बूट ले लिये और उनकी जगह अपने रबड़ के जूते हमें दे दिये. एक सिपाही ने मेरे साथ अपनी वरदी भी बदल ली. मेरी ख़ुद पहन ली और अपनी मुझे दे दी. लेकिन उनका आम सलूक हमारे साथ इतना दोस्ताना था कि देखकर अचरज होता था."

दूसरे अमरीकी लफ़टिनेन्ट स्मिथ नामी ने कहा कि—"जो दो गार्ड हमें लेजा रहे थे वह अव्वल दरजे के आदमी थे. उन्होंने यहाँ तक किया कि जो सिपाही हमारे बूट ले गये थे और अपने जूते हमें दे गये थे उन्हें ढूँढ कर उन से एक जोड़ा बूट उतरवा कर हमें लाकर वापस दिया. कई बार उन्होंने अपने पैसों से हमें सेब खरीद कर दिये. बदक़िस्मती से मेरा ख़याल है कि एक अमरीकी हवाई हमले में तीन क़ैदी अमरीकी सिपाहियों के साथ हमारे वह दोनों गार्ड भी मारे गये."

جن میں سے دو لفٹیننٹ تھے اور دو معمولی سپاہی جنھیں کوریا والوں نے قید کرلیا تھا، اُتر کوریا سے کسی طرح بھاگ کر امریکی فوج میں آ ملے ۔ یہاں آکر اُنھوں نے اپنے ساتھ اُتر کوریا والوں کے برتاؤ کا جو حال سنایا وہ بالکل دوسری طرح کا ہے ۔ اِن میں سے ایک لفٹیننٹ جونس نے کہا کہ—''ہم یہ دیکھ کر کہ ہمارے ساتھ کتنا اچھا برتاؤ کیا گیا حیران رہ گئے ۔ ہمیں ٹھیک وقت پر کھانا اور سگریٹ دیئے جاتے تھے ۔ ہمارے اوپر جو دو پہرےدار تھے وہ راستے میں اپنی جیب سے پیسے خرچ کرکے ہمیں سیب خرید کر لاکر دیتے تھے۔ ہمیں کیول یہ شکایت تھی کہ کوریا کے کچھ سپاہیوں نے ہم سے ہمارے بوٹ لے لئے اور اُن کی جگہ اپنے ربڑ کے جوتے ہمیں دے دیئے ۔ ایک سپاہی نے میرے ساتھ اپنی وردی بھی بدل لی ۔ میری خود پہن لی اور اپنی مجھے دے دی ۔ لیکن اُنکا عام سلوک ہمارے ساتھ اتنا دوستانہ تھا کہ دیکھکر اچرج ہوتا تھا ۔''

دوسرے امریکی لفٹیننٹ اسمتھ نامی نے کہا کہ—''جو دو گارڈ ہمیں لے جا رہے تھے وہ اول درجے کے آدمی تھے ۔ اُنھوں نے یہاں تک کیا کہ جو سپاہی ہمارے بوٹ لے گئے تھے اور اپنے جوتے ہمیں دے گئے تھے اُنھیں ڈھونڈھ کر اُن سے ایک جوڑا بوٹ اتروا کر ہمیں لاکر واپس دیا۔ کئی بار اُنھوں نے اپنے پیسوں سے ہمیں سیب خرید کر دیئے ۔ بدقسمتی سے میرا خیال ہے کہ ایک امریکی ہوائی حملے میں تین قیدی امریکی سپاہیوں کے ساتھ ہمارے وہ دونوں گارڈ بھی مارے گئے ۔''

पूरब की क़ौमों ने अभी तक अपनी पूरी आदमियत हाथ से नहीं खोई. हमारी नज़रों में हमारी यह इंसानियत बड़ी सी बड़ी शहनशाहत से ज़्यादा क़ीमती है.

१२-१०-५०, —सुन्दरलाल

बड़ीयत, अमरीका और जनरल मैकआर्थर—

बड़ीयत यानी मेजारिटी सौ फ़ी सैकड़ा इन्साफ से दूर होती है, जब वह दूसरों को सताने का फ़ैसला करती है या लूट मार की इजाज़त देती है या और कोई हिंसा का काम उठाती है. और उससे दुनिया की शान्ति तो खतरे में पड़ती ही है. इसलिये जो लोग दुनिया में शान्ति बनाए रखने के हामी थे और जो यह चाहते थे कि दुनिया पर फिर बड़ी लड़ाई के बादल न छाने पाएं उन्होंने जो यू. एन ओ. नाम की संस्था बनाई और उसमें से जो सुरक्षा कौंसिल छाँटी उसमें एक क़ायदा वीटो का भी रक्खा. वीटो का क़ायदा रखने वाले यह ख़ूब अच्छी तरह से समझते थे कि जिस वक़्त बड़ीयत भड़क उठती है उस वक़्त बहुत कम लोगों का दिमाग़ ठिकाने पर रह जाता है. इक्का दुक्का ही कोई ऐसा निकलता है जिसका सिर उस वक़्त फिरने से बच रहे. असल में वही इक्का दुक्का उस वक़्त इन्साफ़ की बात सोच सकता है इसलिये सुरक्षा कौंसिल के विधानकारों ने उस इक्के दुक्के समझदार की राय को महत्व देने के लिये वीटो की शर्त को ज़रूरी समझा.

پورب کی قوموں نے ابھی تک اپنی پوری آدمیت ہاتھ سے نہیں کھوئی . ہماری نظروں میں ہماری یہ انسانیت بڑی سی بڑی شہنشاہت سے زیادہ قیمتی ہے .

۱۲-۱۰-۵۰ — سندر لال

بڑییت' امریکہ اور جنرل میک آرتھر—

بڑییت یعنی میجارٹی سوفی سیکڑا انصاف سے دور ہوتی ہے ' جب وہ دوسروں کو ستانے کا فیصلہ کرتی ہے یا لوٹ مار کی اجازت دیتی ہے یا اور کوئی ہنسا کا کام اُٹھاتی ہے . اور اُس سے دنیا کی شانتی تو خطرے میں پڑتی ہی ہے . اس لئے جو لوگ دنیا میں شانتی بنائے رکھنے کے حامی تھے اور جو یہ چاہتے تھے کہ دنیا پر پھر بڑی لڑائی کے بادل نہ چھانے پائیں اُنہوں نے جو یو . این . او . نام کی سنستھا بنائی اور اُس میں سے جو سرکشا کونسل چھانٹی اُس میں ایک قاعدہ ویٹو کا بھی رکھا . ویٹو کا قاعدہ رکھنے والے یہ خوب اچھی طرح سے سمجھتے تھے کہ جس وقت بڑییت بھڑک اُٹھتی ہے اُس وقت بہت کم لوگوں کا دماغ ٹھکانے پر رہ جاتا ہے . اکا دکا ہی کوئی ایسا نکلتا ہے جس کا سر اُس وقت پھرنے سے بچ رہے . اصل میں وہی اکا دکا اُس وقت انصاف کی بات سوچ سکتا ہے اس لئے سرکشا کونسل کے ودھان کاروں نے اُس اکے دکے سمجھدار کی رائے کو مہتو دینے کے لئے ویٹو کی شرط کو ضروری سمجھا .

लाड—तो किसकी ख़ता है ?

निज़ाम—तुम्हारी, भाभी की नक़ाब में छुपी हुई बानू, तुम्हारी.

लाड—हूँ ! तो क़सूर भाभी की नक़ाब में छुपी हुई बानू का है, तुम्हारा नहीं ?

निज़ाम—बानू मैंने तो ज़िन्दगी में क़सूर एक ही मर्तबा किया था और उसकी सज़ा भी मुझे मिल चुकी है. याद है आगरे का वह दिन, जिस दिन मेरी रंग भरी प्याली ने आपके रंगीन दामन को छुआ था और......और आपकी सहेली ने अहलकार बनकर मुझे सज़ा दी थी.......

लाड—(बीच ही में) तो मैं आज क़सूर वार हूँ दीजिये सज़ा अहलकार साहब.

निज़ाम—ख़ता बड़ी है. लिहाज़ा सज़ा भी बड़ी होनी ही चाहिये. (बनावटी गम्भीर मुद्रा और कुछ ऊँचे स्वर में) लाड बानू ! तुमने दूसरे का अहद तोड़ कर उसका दिल तोड़ा है. उसका दिल तड़प रहा है, तुम्हें एक गाना गाने की सज़ा दी जाती है.

लाड—(उठकर, बड़े अदब से तसलीम करते हुए) जो हुक्म.

[एक फूल के पौधे की ओर चलते हुए लाड गाती है. उसके पीछे-पीछे जाकर निज़ाम अपने दोनों हाथ प्रेम से उसकी बाहुओं पर रखता है. गाना बढ़ता है. अब गाने का एक चरण लाड और दूसरा निज़ाम गाते हैं.]

स्तंभित = मबहूत. विस्मय = ताज्जुब. अहद = प्रतिज्ञा.

बनावटी मुद्रा = संजीदा सूरत.

لاڈ— تو کس کی خطا ہے ؟

نظام— تمہاری، بھابی کے نقاب میں چھپی ہوئی بانو تمہاری ۔

لاڈ— ہوں تو قصور بھابی کی نقاب میں چھپی ہوئی بانو کا ہے ۔ تمہارا نہیں ؟

نظام— بانو، میں نے زندگی میں قصور ایک ہی مرتبہ کیا تھا اور اس کی سزا بھی مجھے مل چکی ہے ۔ یاد ہے آگرے کا وہ دن، جس دن میری رنگ بھری پیالی نے آپ کے رنگین دامن کو چھوا تھا اور...... اور آپ کی سہیلی نے اہل کار بن کر مجھے سزا دی تھی ......

لاڈ— (بیچ ہی میں) تو میں آج قصوروار ہوں دیجئے سزا اہلکار صاحب

نظام— خطا بڑی ہے لہذا سزا بھی بڑی ہونی چاہئے ۔ (بناوٹی گمبھیر مُدرا اور کچھ اونچے سور میں)

لاڈ بانو، تم نے دوسرے کا عہد توڑ کر اس کا دل توڑا ہے ۔ اس کا دل تڑپ رہا ہے ۔ تمہیں ایک گانا گانے کی سزا دی جاتی ہے ۔

لاڈ— (اُٹھ کر، بڑے ادب سے تسلیم کرتے ہوئے) جو حکم ۔

(ایک پھول کے پودے کی اور چلتے ہوئے لاڈ گاتی ہے اس کے پیچھے پیچھے جا کر نظام اپنے دونوں ہاتھ پریم سے اس کی باہوؤں پر رکھتا ہے ۔ گانا بڑھتا ہے ۔ اب گانا کا ایک چرن لاڈ اور دوسرا نظام گاتے ہیں)

ستمبھت = مبہوت ۔ وسمے = تعجب ۔ عہد = پرتگیا ۔ گمبھیر مُدرا =

वीटो शक्ति सुरक्षा कौंसिल की जान है क्योंकि सुरक्षा कौंसिल ने नाम से ही रक्षा का काम हाथ में लिया.और रक्षा और शान्ति क़रीब क़रीब एक माने रखते हैं. शान्ति इसके सिवाय क्या हो सकती है कि दुनिया के लोगों को डर से आज़ादी मिल जाय. उन्हें कोई न डरा पाएगा इसकी उन्हें कोई तसल्ली करदे. वह ख़ुद भी किसी को न डराएंगे ऐसी उनसे कोई क़सम ले ले. और दूसरा मतलब शान्ति का यह हो सकता है कि उन्हें खाने पीने पहनने के लिये और रहने के लिये हर तरह का नहीं तो मामूली सुभीता तो हो. अब सुरक्षा कौंसिल का काम ज़रा टेढ़ा हो जाता है पर दुनिया भर में शान्ति बनाए रखने की ज़िम्मेदारी लेने वाली संस्था टेढ़े काम से क्यों कन्ने काटे. जो दुनिया भर की संस्था है उसमें दुनिया भर के आदमी भी हैं. उनकी मदद से वह दुनिया की तकलीफ़ें आसानी से दूर कर सकती है पर दूर जभी कर सकती है जब वह अपने अन्दर जान बनाए रक्खे और जान है उसकी वीटो का स्वागत करना. वीटो को लतिया कर सुरक्षा कौंसिल एक बे जान चीज़ रह जाती है. और जिस तरह लाठी, पत्थर का टुकड़ा, तलवार, बन्दूक़, ऐटम बम रक्षा के औज़ार होते हुए भी भड़के हुए समाज के हाथ में हिंसा के औज़ार बन जाते हैं वैसे ही सुरक्षा समिति बेजान होकर रक्षा का औज़ार होते हुए भी भड़के हुए समाज के हाथ में हिंसा का औज़ार बन सकती है और आज सचमुच बन गई. वीटो को बेपरवाही से दुरदुरा कर सुरक्षा कौंसिल ने सिर्फ़ क़ानून को दुरदुराया हो इतना ही नहीं उसने अपनी जान, इज्जत और आबरू को भी दुरदुराया

(५७०)

ویٹو شکتی سر کشا کونسل کی جان ہے کیونکہ سر کشا کونسل نے نام سے ہی رکشا کا کام ہاتھ میں لیا. اور رکشا اور شانتی قریب قریب ایک معنے رکھتے ہیں. شانتی اس کے سوائے کیا ہوسکتی ہے کہ دنیا کے لوگوں کو ڈر سے آزادی مل جائے. اُنہیں کوئی نہ ڈرا پائیگا اسکی اُنہیں کوئی تسلی کر دے. وہ خود بھی کسی کو نہ ڈرائینگے ایسی اُن سے کوئی قسم لے لے. اور دوسرا مطلب شانتی کا یہ ہوسکتا ہے کہ اُنہیں کھانے پینے پہننے کے لئے اور رہنے کے لئے ہر طرح کا نہیں تو معمولی سبھیتا تو ہو. اب سر کشا کونسل کا کام ذرا ٹیڑھا ہو جاتا ہے پر دنیا بھر میں شانتی بنائے رکھنے کی ذمہداری لینے والی سنستھا ٹیڑھے کام سے کیوں کنے کاٹے. جو دنیا بھر کی سنستھا ہے اُس میں دنیا بھر کے آدمی بھی ہیں. اُن کی مدد سے وہ دنیا کی تکلیفیں آسانی سے دور کر سکتی ہے پر دور جبھی کر سکتی ہے جب وہ اپنے اندر جان بنائے رکھے اور جان ہے اُس کی ویٹو کا سواگت کرنا. ویٹو کو لتیا کر سر کشا کونسل ایک بے جان چیز رہ جاتی ہے. اور جس طرح لاٹھی، پتھر کا ٹکڑا، تلوار، بندوق، ایٹم بم رکشا کے اوزار ہوتے ہوئے بھی بھڑکے ہوئے سماج کے ہاتھ میں ہنسا کے اوزار بن جاتے ہیں ویسے ہی سر کشا سمیتی بے جان ہوکر رکشا کا اوزار ہوتے ہوئے بھی بھڑکے ہوئے سماج کے ہاتھ میں ہنسا کا اوزار بن سکتی ہے اور آج سچ مچ بن گئی. ویٹو کو بےپرواہی سے دھتکار کر سرکشا کونسل نے صرف قانون کو دھتکارا ہو اتنا ہی نہیں اُس نے اپنی جان، عزت اور آبرو کو بھی دھتکارا ہے. ویٹو کی بےپرواہی کےبعد سرکشا سمیتی بھڑکے ہوئے

(۵۷۰)

हाथ को मशीन बन गई. और मशीन से सिवाय संहार के और क्या हो सकता है. खेत की बाढ़ जो खेत की रक्षा के लिये लगाई जाती है जब स्वार्थी और भड़के हुओं के हाथों में पड़ कर खेत के ऊपर गिराई जाती है तो खेत का मामूली नुक़सान ही नहीं करती वह तो जंगली जानवरों के लिये रास्ता खोल कर सारे खेत की बरबादी का कारन हो जाती है.

आज सुरक्षा कौंसिल जो रक्षा के लिये सब मुल्कों की बाढ़ बनी हुई है जरा सी वीटो की बेइज़्ज़ती से भड़के हुए अमरीका के हाथ में पड़ कर सिर्फ़ कोरिया को ही नहीं खा रही दुनिया की बरबादी के लिये रास्ता खोल रही है. जिस तरह हिंदुस्तान का नमक खाने वाला जनरल डायर जलियान वाला बाग़ में दो हज़ार बूढ़ों, बच्चों और जवानों को गोली के घाट उतार कर आँखें सेंकता हुआ और बग़लें बजाता हुआ जलियान वाला बाग़ से लौटते वक़्त भड़के हुए बर्तानिया का वफ़ादार भले ही रहा हो हिन्दुस्तान का वफ़ादार नहीं था. जलियान वाला बाग़ का नाटक रच कर उसने हिन्दुस्तान के नमक को हलाल नहीं किया ठीक इसी तरह से आज जेनरल मैक-आर्थर उत्तरी कोरिया यानी कोरिया की लाशों को देख कर जब अपनी बूढ़ी आंखें सेंकता है और उससे वह तरावट पाता है तब वह भड़के हुए अमरीका का भले ही वफ़ादार हो यूनाइटेड नेशन्स और सुरक्षा समिति का वह हरगिज़ वफ़ादार नहीं. और अभी तो वह लाशों को देख कर आंखें सेंक रहा है. अजब नहीं किसी दिन डाक्टर सेन को पाकर सन सत्तावन के मशहूर जनरल हडसन का नाटक खेले, और उसका ख़ून पीकर अपनी खीज की प्यास को तर

ھاتھ کي مشین بن گئی ۔ اور مشین سے سوائے سنھار کے اور کیا ھوسکتا ھے کھیت کی باڑھ جو کھیت کی رکشا کے لئے لگائی جاتی ھے جب سوارتھی اور بھڑکے ھؤوں کے ھاتھوں میں پڑ کر کھیت کے اوپر گرائي جاتي ھے تو کھیت کا معمولي نقصان ھي نھیں کرتی وہ تو جنگلی جانوروں کے لئے راستہ کھول کر سارے کھیت کی بربادی کا کارن ھوجاتی ھے ۔

آج سرکشا کونسل جو رکشا کے لئے سب ملکوں کی باڑھ بنی ھوئی ھے ذرا سی ویٹو کی بے عزتی سے بھڑکے ھوئے امریکہ کے ھاتھ میں پڑکر صرف کوریا کو ھی نھیں کھا رھی دنیا کی بربادی کے لئے راستہ کھول رھي ھے ۔ جس طرح ھندستان کا نمک کھانے والا جنرل ڈائر جلیان والا باغ میں دو ھزار بوڑھوں ، بچوں اور جوانوں کو گولي کے گھاٹ اُتار کر آنکھیں سینکتا ھوا اور بغلیں بجاتا ھوا جلیان والا باغ سے لوٹتے وقت بھڑکے ھوئے برطانیہ کا وفادار بھلے ھي رھا ھو ھندستان کا وفادار نھیں تھا ۔ جلیان والا باغ کا ناٹک رچ کر اُس نے ھندستان کے نمک کو حلال نھیں کیا ۔ ٹھیک اسی طرح سے آج جنرل میک آرتھر اُتری کوریا یعنی کوریا کی لاشوں کو دیکھکر جب اپنی بوڑھی آنکھیں سینکتا ھے اور اُس سے وہ تراوٹ پاتا ھے تب وہ بھڑکے ھوئے امریکہ کا بھلے ھی وفادار ھو یونائٹڈ نیشنس اور سرکشا سمیتی کا وہ ھرگز وفادار نھیں ۔ اور ابھی تو وہ لاشوں کو دیکھکر آنکھیں سینک رھا ھے ۔ عجب نھیں کسی دن ڈاکٹر سین کو پاکر سن ستاون کے مشھور جنرل ھڈسن کا ناٹک کھیلے ' اور اُس کا خون پی کر اپنی کھیج کی پیاس کو تر

करे. यूनाइटेड नेशन्स सारी दुनिया की पंचायत होने के नाते सारे मुल्कों की मां है. अगर वह सब मुल्कों को एक नज़र से नहीं देखती तो उसे यूनाइटेड नेशन्स होने का कोई हक़ नहीं. सच्चे मानों में यूनाइटेड नेशन्स का सेनापति इस तरह के शब्द मुँह से नहीं निकाल सकता जिस तरह के शब्द जनरल मैकआर्थर के मुँह से निकले. असल में जनरल मैकआर्थर में ठीक या नाठीक यह क़ाबलियत ही नहीं है कि वह अपने आप को अमरीका से अलग समझ सके. पर जो ऐसा नहीं कर सकता वह यूनाइटेड नेशन्स का सेनापति हो कर अधर्म युद्ध ही लड़ सकता है धर्म युद्ध नहीं लड़ सकता. यूनाइटेड नेशन्स के सेनापति होने के लिये बहुत बड़ा दिल होना चाहिये और वह अमरीका के स्वार्थ में डूबे जनरल मैकआर्थर को नसीब नहीं हो सकता. काश ! वही लफ़्ज़ जो जनरल मैकआर्थर ने उत्तरी कोरिया वालों की लाशों को देख कर कहे—"उत्तर कोरिया के जवानों की लाशें देख कर मेरी बूढ़ी आँखों को भला मालूम होता है." किसी हिन्दुस्तानी जनरल ने भूल से भी कह दिये होते तो हिन्दुस्तान की सरकार उसे फ़ौरन वापस बुला लेती और हिन्दुस्तानी जनता तो हाथ धोकर उसके पीछे पड़ जाती. उधर अमरीका को देखिये. वहाँ की सरकार और वहाँ के पत्रकार यानी वहाँ की जनता उन्हीं लफ़्ज़ों का शान के साथ और हमारे लफ़्ज़ों में बेहयाई के साथ प्रचार कर रही है. अमरीका वाले यह समझ ही नहीं पाते और न समझ सकते हैं कि जनरल मैकआर्थर अब उनका सेनापति नहीं यूनाइटेड नेशन्स का सेनापति है. और अमरीका वाले भी क्या करें. जनरल मैकआर्थर

کرے ۔ یونائٹڈ نیشنس ساری دنیا کی پنچایت ہونے کے ناتے سارے ملکوں کی ماں ہے ۔ اگر وہ سب ملکوں کو ایک نظر سے نہیں دیکھتی تو اُسے یونائٹڈ نیشنس ہونے کا کوئی حق نہیں ۔ سچے معنوں میں یونائٹڈ نیشنس کا سینا پتی اس طرح کے شبد منہ سے نہیں نکال سکتا جس طرح کے شبد جنرل میک آرتھر کے منہ سے نکلے ۔ اصل میں جنرل میک آرتھر میں ٹھیک یا نا ٹھیک یہ قابلیت ہی نہیں ہے کہ وہ اپنے آپ کو امریکہ سے الگ سمجھ سکے ۔ پر جو ایسا نہیں کرسکتا وہ یونائٹڈ نیشنس کا سینا پتی ہو کر ادھرم یدھ ہی لڑ سکتا ہے دھرم یدھ نہیں لڑ سکتا ۔ یونائٹڈ نیشنس کے سینا پتی ہونے کے لئے بہت بڑا دل ہونا چاہئے اور وہ امریکہ کے سوارتھ میں ڈوبے جنرل میک آرتھر کو نصیب نہیں ہو سکتا ۔ کاش ! وہی لفظ جو جنرل میک آرتھر نے اُتری کوریا والوں کی لاشوں کو دیکھکر کہے—" اُتر کوریا کے جوانوں کی لاشیں دیکھکر میری بوڑھی آنکھوں کو بھلا معلوم ہوتا ہے ۔ " کسی ہندستانی جنرل نے بھول سے بھی کہ دیئے ہوتے تو ہندستان کی سرکار اُسے فوراً واپس بلا لیتی اور ہندستانی جنتا تو ہاتھ دھو کر اُس کے پیچھے پڑ جاتی ۔ اُدھر امریکہ کو دیکھئے ۔ وہاں کی سرکار اور وہاں کے پترکار یعنی وہاں کی جنتا اُنہیں لفظوں کا شان کے ساتھ اور ہمارے لفظوں میں بے حیائی کے ساتھ پرچار کر رہی ہے امریکہ والے یہ سمجھ ہی نہیں پاتے اور نہ سمجھ سکتے ہیں کہ جنرل میک آرتھر اب اُن کا سینا پتی نہیں یونائٹڈ نیشنس کا سینا پتی ہے ۔ اور امریکہ والے بھی کیا کریں ۔ جنرل

ही बने रहेंगे. उनमें सारी दुनिया के होकर रहने की क़ाबलियत ही नहीं.

हमें जनरल मैकआर्थर पर तरस आता है और तरस आता है ऐसे यूनाइटेड नेशन्स पर जिसे जनरल मैकआर्थर जैसे सेनापति मिले.

असल बात यह है कि इस वक़्त यूनाइटेड नेशन्स के हाथ में अमरीका नहीं है अमरीका के हाथ में यूनाइटेड नेशन्स है.

२६-१०-५० —भगवानदीन

तिब्बत पर चीन का हमला

तिब्बत के बारे में हम 'नया हिन्द' में पहले ही लिख चुके हैं और हमने उस वक़्त यही लिखा था कि चीन के लिये यही ज्यादा ठीक है कि वह तिब्बत को तिब्बत ही के ऊपर छोड़ दे क्योंकि तिब्बत न इतना बड़ा मुल्क है और न इतने उसके पास साधन ही हैं कि कभी वह चीन के खिलाफ़ जाने की बात सोचे और साथ ही साथ उसका पड़ोसी मुल्क भारत भी यह नहीं चाहता कि तिब्बत को अपना हिस्सा बनाए या और किसी तरह उसमें इस तरह के काम करे कि चीन या चीन की सरकार के लिये नुक़सान के साबित हों. भारत जिस दिन से आज़ाद हुआ है उसी दिन से चीन से दोस्ती करने का ख़्वाहिशमन्द रहा है. भारत ने चीन को समझने में कभी भूल नहीं की और मौका पाकर दोस्ती के लिये हाथ बढ़ाने में कभी मामूल से ज्यादा देर नहीं की. इतना ही नहीं वह चीन की आज की सरकार को ठीक सरकार समझता है और इस कोशिश में है कि जल्दी से जल्दी चीन की वही सरकार यू. एन. ओ. में शामिल कर ली जाय.

هی بنے رهینگے . اُن میں ساری دنیا کے هوکر رهنے کی قابلیت هی نہیں .

همیں جنرل میک آرتهر پر ترس آتا هے اور ترس آتا هے ایسے یونائٹڈنیشنس پر جسے جنرل میک آرتهر جیسے سپهسالار ملے .

اصل بات یہ هے کہ اس وقت یونائٹڈنیشنس کے هاتھ میں امریکہ نہیں هے امریکہ کے هاتھ میں یونائٹڈنیشنس هے .

—بهگوان دین ۲۶-۱۰-۵۰

تبت پر چین کا حملہ

تبت کے بارے میں هم ' نیا هند ' میں پہلے هی لکھ چکے هیں اور هم نے اُس وقت یہی لکھا تھا کہ چین کے لئے یہی زیادہ ٹھیک هے کہ وہ تبت کو تبت هی کے اوپر چھوڑ دے کیونکہ تبت نہ اتنا بڑا ملک هے اور نہ اتنے اُس کے پاس سادهن هی هیں کہ کبھی وہ چین کے خلاف جانے کی بات سوچے اور ساتھ هی ساتھ اُس کا پڑوسی ملک بھارت بھی یہ نہیں چاهتا کہ تبت کو اپنا حصہ بنائے . یا اور کسی طرح اُس میں اس طرح کے کام کرے کہ چین یا چین کی سرکار کے لئے نقصان کے ثابت هوں . بھارت جس دن سے آزاد هوا هے اُسی دن سے چین سے دوستی کرنے کا خواهشمند رها هے . بھارت نے چین کو سمجھنے میں کبھی بھول نہیں کی اور موقع پاکر دوستی کے لئے هاتھ بڑھانے میں کبھی معمول سے زیادہ دیر نہیں کی . اتنا هی نہیں وہ چین کی آجکی سرکار کو ٹھیک سرکار سمجھتا هے اور اس کوشش میں هے کہ جلدی سے جلدی چین کی وهی سرکار یو . این . او . میں شامل کرلی جائے .

भारत जब कि तिब्बत को किसी तरह अपना नहीं समझता बल्कि एक तरह से तिब्बत को चीन का ही हिस्सा समझता है तब भारत से यह आशा तो की ही जा सकती है कि तिब्बत पर चीन के इस हमले की वजहसे भारत और चीन में कोई ऐसा खिचाव पैदा नहीं होगा जो बुराई का बीज बो सके पर इसमें शक नहीं कि अगर यह हमले का काम रोक ही रक्खा जाता और कम से कम इस समय ही रोक रक्खा जाता तो भारत के हाथ कुछ ज्यादा मजबूत ही रहते और भारत के मजबूत हाथ चीन के लिये कुछ भले ही साबित होते.

चीन की इस जल्दबाजी में हो सकता है. अमरीका की बदनीयती का हाथ हो. यह भी हो सकता है कि इस बदनीयता को उभारने में औरों का भी हाथ हो पर यह सब इस वक्त इतने मजबूत कारन कैसे बन गए कि चीन का सरकार का इस बे समय हमले की बात सूझी. जहरीले पेड़ में कली आते ही कली को तोड़ डालने की नीति है तो ठीक पर क्या सचमुच इस जहरीले पेड़ में कली लग आई थी ?

भारत और चीन के बीच का पत्र व्योहार हमने पढ़ा. उससे न तो हम इसी नतीजे पर पहुंच पाते है कि जहरीले पेड़ मे कली नहीं लगी थी और न तो इसी नतीजे पर पहुँच पाते हैं कि कली लग चुकी थी.

जब तक हम यह न तय कर पाएं तब तक के लिये हम यही कहते हैं कि यह हमला बेवक़्त हुआ है.

३-११-५०. —भगवानदीन

بھارت جب کہ تبت کو کسی طرح اپنا نہیں سمجھتا بلکہ ایک طرح سے تبت کو چین کا ھي حصہ سمجھتا ھے تب بھارت سے یہ آشا تو کی ھی جاسکتي ھے کہ تبت پر چین کے اس حملے کي وجہ سے بھارت اور چین میں کوئی ایسا کھنچاؤ پیدا نہیں ھوگا جو برائی کا بیج بو سکے . پر اِس میں شک نہیں کہ اگر یہ حملے کا کام روک ھی رکھا جاتا اور کم سے کم اس سمے ھی روک رکھا جاتا تو بھارت کے ھاتھ کچھ زیادہ مضبوط ھی رھتے اور بھارت کے مضبوط ھاتھ چین کے لئے کچھ بھلے ھی ثابت ھوتے .

چین کي اس جلد باري میں ' ھوسکتا ھے امریکہ کی بدنیتي کا ھاتھ ھو . یہ بھي ھوسکتا ھے کہ اُس بدنیتي کو اُبھارنے میں اوروں کا بھي ھاتھ ھو پر یہ سب اس وقت اتنے مضبوط کارن کیسے بن گئے کہ چین کی سرکار کو اس بے سمے حملے کی بات سوجھی . زھریلے پیڑ میں کلی آتے ھی کلی کو توڑ ڈالنے کی نیتی ھے تو ٹھیک پر کیا سچ مچ اس زھریلے پیڑ میں کلی لگ آئی تھی ؟

بھارت اور چین کے بیچ کا پتر بیوھار ھم نے پڑھا . اُس سے نہ تو ھم اسی نتیجے پر پہونچ پاتے ھیں کہ زھریلے پیڑ میں کلی نہیں لگی تھی اور نہ تو اسی نتیجے پر پہونچ پاتے ھیں کہ کلی لگ چکی تھی .

جب تک ھم یہ نہ طے کر پائیں تب تک کے لئے ھم یہی کہتے ھیں کہ یہ حملہ بے وقت ھوا ھے .

۳-۱۱-۵۰ —بھگوان دین

(१) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कल्चर को बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमे सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(२) एकता फैलाने के लिये किताबों, अख़बारों, रिसालों वग़ैरा का छापना.

(३) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस में मेल बढ़ाना.

—o—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा; वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़; गवर्निंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; सेक्रेटरी—पं० सुन्दरलाल.

गवर्निंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० खेर, मि० एस० के० रुद्रा, पं० बिशम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम चन्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम प्रकाश पालीवाल.

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये.

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी
१४५, मुट्ठी गंज, इलाहाबाद.

नोट—सोसाइटी के नये क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है "नया हिन्द" के जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायगा. अलग से मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ज़्यादा दाम की किताबें लेने पर एक रुपया कम करा सकेंगे.

[illegible] کرنا جس میں سب هندستانی شامل هوں.

(۲) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا.

(۳) پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں، لکچروں سے سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا.

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ—مسٹر عبدالمجید خواجہ؛ وائس پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق؛ گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس؛ سکریٹری—پنڈت سندرلال.

گورننگ باڈی کے اور ممبر—

ڈاکٹر سید محمود، ڈاکٹر تارا چند، مولوی سید سلیمان ندوی، مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی. جی. کھیر، مسٹر ایس. کے. رودرا، پنڈت بشمبھر ناتھ، مہاتما بھگوان دین، سیٹھ پونم چند رانکا، قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال.

ممبری کے قاعدے کے لئے لکھئے.

سندر لال

سکریٹری، هندستانی کلچر سوسائٹی،
۱۴۵ مٹھی گنج، الہ آباد.

نوٹ—سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کردی گئی ہے. "نیا هند" کے جو گاہک ممبر بننا چاہیں اُن کو صرف چھہ روپیہ چندہ دینے پر ہی ممبر بنا لیا جائیگا. الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی ہوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ہوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ کم کراسکینگے.

Registered No. A—210.

भारत का विधान

पूरा हिन्दी अनुवाद

जो २६ जनवरी सन् १९५० से सारे भारत में लागू हुआ

'भारत में अंगरेजी राज' के लेखक पं० सुन्दरलाल द्वारा मूल अंगरेजी से अनुवादित.

हर भारतवासी का फर्ज है कि जिस विधान के अधीन स्वाधीन भारत का शासन इस समय चल रहा है उसे अच्छी तरह समझ ले.

यदि आप आने वाले आम चुनाव में, जिस पर भारत का सारा भविष्य निर्भर है, समझ कर हिस्सा लेना चाहते हैं और आजाद भारत में अपने अधिकार समझना चाहते हैं तो जरूरी है कि आप इस पुस्तक को ध्यान से पढ़ लें.

आसानी के लिये किताब के आख़ीर में हिन्दी से अंगरेजी और अंगरेजी से हिन्दी साठ पन्ने की शब्दमाला दे दी गई है.

भारत के हर घर में इस पुस्तक का रहना जरूरी है.

आसान बामुहावरा भाषा. रायल अठपेजी बड़ा साइज. लगभग चार सौ पन्ने. कपड़े की सुन्दर जिल्द. क़ीमत केवल साढ़े सात रुपए.

नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में अलग अलग मिल सकता है.

मिलने का पता :— मैनेजर 'नया हिन्द'
१४५, मुट्ठी गंज,
इलाहाबाद

بھارت کا ودھان

پورا ھندی انوواد

جو ۲۶ جنوری سن ۱۹۵۰ سے سارے بھارت میں لاگو ھوا۔

'بھارت میں انگریزی راج' کے لیکھک پنڈت سندر لال دوارا مول انگریزی سے انوادت۔

ھر بھارت واسی کا فرض ھے کہ جس ودھان کے ادھین سوادھین بھارت کا شاسن اس سمے چل رھا ھے اسے اچھی طرح سمجھ لے۔

یدی آپ آنے والے عام چناؤ میں، جس پر بھارت کا سارا بھوشیہ نربھر ھے، سمجھ کر حصہ لینا چاھتے ھیں اور آزاد بھارت میں اپنے ادھیکار سمجھنا چاھتے ھیں تو ضروری ھے کہ آپ اس پستک کو دھیان سے پڑھ لیں۔

آسانی کے لئے کتاب کے آخر میں ھندی سے انگریزی اور انگریزی سے ھندی ساٹھ پنّے کی شبد مالا دے دی گئی ھے۔

بھارت کے ھر گھر میں اس پستک کا رھنا ضروری ھے۔

آسان بامحاورہ بھاشا۔ رایل اٹھ پیجی بڑا سائز۔ لگ بھگ چار سو پنّے۔ کپڑے کی سندر جلد۔ قیمت کیول ساڑھے سات روپئے

ناگری اور اردو دونوں لکھاوٹوں میں الگ الگ مل سکتا ھے۔

ملنے کا پتہ :— منیجر 'نیا ھند'
۱۴۵ مٹھی گنج

नया हिन्द



نیا ہند

दिसम्बर सन् '५०

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का परचा

एडीटर—

ताराचन्द, भगवानदीन, मुज़फ़्फ़र हसन, विश्वम्भरनाथ, सुन्दरलाल

दिसम्बर १९५०

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल
एक परचा दस आने .
मैनेजर

هندستانی کلچر سوسایٹی کا پرچا

ایڈیٹر—

تارا چند، بھگوان دین، مظفر حسن، بشمبھر ناتھ، سندر لال

دسمبر ۱۹۵۰

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال، باہر دس روپیہ سال
ایک پرچہ دس آنے .
مینیجر

नया हिन्द — نیا ھند

जिल्द ९ | दिसम्बर सन् '५० | नम्बर ६

نمبر ٦ | دسمبر سن ٥٠ | جلد ٩

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुंचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمي، پریم دھرم ھے، ھلدستانی بولی،
' نیا ھلد ' پہلچے گا گھر گھر لئے پریم کي جھولی ۔

भला है रीत यह कैसी?

(भाई मुजीब रिज़वी)

कहीं पर भूक की तड़पन
कहीं पर भोज उड़ते हैं.
कहीं कुत्तों को हैं बिसकुट
कहीं बालक बिलकते हैं.
भला है रीत यह कैसी?
किसी का देह है नंगा
कहीं परदे लटकते हैं.
कहीं गाढ़ा नहीं मिलता
कहीं रेशम पहनते हैं.
भला है रीत यह कैसी?

بھلا ھے ریت یہ کیسی ؟

(بھائي مجیب رضوي)

کہیں پر بھوک کی تڑپن
کہیں پر بھوج اُڑتے ھیں ۔
کہیں کتوں کو ھیں بسکٹ
کہیں بالک بلکتے ھیں ۔
بھلا ھے ریت یہ کیسي ؟
کسی کا دیہ ھے ننگا
کہیں پردے لٹکتے ھیں ۔
کہیں گاڑھا نہیں ملتا
کہیں ریشم پہنتے ھیں ۔
بھلا ھے ریت یہ کیسی ؟

लाड—लाख हों बहते बीच में धारे.
दोनों एक दरिया के किनारे.
तुम हो हमारे हम हैं तुम्हारे !
दुख अपना दिल ही से कहेंगे,
जो भी पड़े हँस-हँस के सहेंगे,
जी लेंगे यादों के सहारे !
तुम हो हमारे हम हैं तुम्हारे !!
निज़ाम—हाथ न आया फूल तो क्या ग़म ?
लाड—गुल की ख़ुशबू गुल से नहीं कम.
निज़ाम—पाक मुहब्बत पाक नज़ारे.
दोनों—तुम हो हमारे हम हैं तुम्हारे !
दिल की मुहब्बत लब पे न आये.
देखो कोई उंगली न उठाये.
दिल ही दिल में दिल यह पुकारे,
तुम हो हमारे हम हैं तुम्हारे !

[इनके गाते हुए एक ओर कुछ खटका सा होता है. निज़ाम चौंककर सहम सा जाता है. उसके हाथ लाड की बाहुओं को छोड़ कर अलग हो जाते हैं. सामने से बिल्ली निकलती है. लाड गाना बंद कर हँस पड़ती है.]

लाड—कितना बचपन है तुममें, निज़ाम ? नज़र बाग़ में बिल्ली वग़ैरा के सिवा और कौन आ सकता है ?

گیت

لاڈ۔ لاکھ ہوں بہتے بیچ میں دھارے
دونوں اک دریا کے کنارے
تم ہو ہمارے ہم ہیں تمھارے
دکھ اپنا دل ہی سے کہیں گے
جو بھی پڑے ہنس ہنس کے سہیں گے
جی لیں گے یادوں کے سہارے
تم ہو ہمارے ہم ہیں تمھارے
لاڈ۔ ہاتھ نہ آیا پھول تو کیا غم
نظام۔ گل کی خوشبو گل سے نہیں کم
لاڈ۔ پاک محبت پاک نظارے
دونوں۔ تم ہو ہمارے ہم ہیں تمھارے
دل کی محبت لب پہ نہ آئے
دیکھو کوئی انگلی نہ اٹھائے
دل ہی دل میں دل یہ پکارے
تم ہو ہمارے ہم ہیں تمھارے

(ان کے گاتے ہوئے ایک اور کچھ کھٹکا سا ہوتا ہے نظام چونک کر کچھ سہم سا جاتا ہے اس کے ہاتھ لاڈ کی باہوں کو چھوڑ کر الگ ہو جاتے ہیں۔ سامنے سے بلی نکلتی ہے۔ لاڈ گانا بند کر ہنس پڑتی ہے۔)

لاڈ۔ کتنا بچپن ہے تم میں نظام؟ نظر باغ میں بلی وغیرہ کے سوا اور کون آ سکتا ہے؟

कहीं हैं गुदगुदे गद्दे
कहीं पत्थर की है गिट्टी.
कहीं पर बन्द हैं कमरे
कहीं सड़कों की है मिट्टी.
भला है रीत यह कैसी ?

किसी का चैन से सोना
किसी का रात भर रोना.
किसी को सुध न उठने की
किसी का काम बस जगना.
भला है रीत यह कैसी ?

कहीं हैं गात पर भूशन
कहीं हैं बाल भी बिखरे.
कहीं है चैन की बंसी
कहीं अरमान के टुकड़े.
भला है रीत यह कैसी ?

कहीं है धूल की कालिक
कहीं पौडर महकता है
कहीं है रोज की सुर्खी
कहीं पर दिल धधकता है.
भला है रीत यह कैसी ?

कहीं अरथी निकलती है
कहीं तबला ठनकता है.
कोई घुट घुट के रोता है
कोई अट्टाम करता है.
भला है रीत यह कैसी ?

کہیں ھیں گد گدے گدے
کہیں پتھر کی ھے گٹی .
کہیں پر بند ھیں کمرے
کہیں سڑکوں کی ھے مٹی .
بھلا ھے ریت یہ کیسی ؟

کسی کا چین سے سونا
کسی کا رات بھر رونا .
کسی کو سدھ نہ اُٹھنے کی
کسی کا کام بس جگنا .
بھلا ھے ریت یہ کیسی ؟

کہیں ھیں گات پر بھوشن
کہیں ھیں بال بھی بکھرے .
کہیں ھے چین کی بنسی
کہیں ارمان کے ٹکڑے .
بھلا ھے ریت یہ کیسی ؟

کہیں ھے دھول کی کالک
کہیں پوڈر مہکتا ھے .
کہیں ھے روز کی سرخی
کہیں پر دل دھدھکتا ھے .
بھلا ھے ریت یہ کیسی ؟

کہیں ارتھی نکلتی ھے
کہیں طبلہ ٹھنکتا ھے .
کوئی گھٹ گھٹ کے روتا ھے
کوئی اتھاس کرتا ھے .
بھلا ھے ریت یہ کیسی ؟

आज कांगरेस किधर

(भाई सुरेश राम भाई)

आज से ६५ साल पहले जिन लोगों ने कांगरेस का पहला इजलास किया होगा उन्हों ने यही सोचा होगा कि अगर उनकी क़ायम की हुई जमात हिन्दुस्तान को एक दिन आज़ादी दिला सके तो उन का मक़सद पूरा हो गया, उन की मेहनत कारगर होगई.

यह आज़ादी हासिल कैसे होगी, कब होगी इसका कोई अन्दाज़ उन के सामने उस वक़्त नहीं था. लेकिन जब दादा भाई नौरोजी ने 'स्वराज' का शब्द अपने मुँह से निकाला और लोकमान्य तिलक ने गरज कर इसे जन्म का अधिकार बताया तो यह चीज़ साफ़ होगई कि हो न हो कांगरेस आज़ादी ले लेगी. और जब गांधी जी मैदान में उतरे तब तो लोगों को शक ही नहीं रह गया. पंडित मोती लाल नेहरू ने चलने वक़्त उन से यही कहा था "स्वराज तो आप ने ले लिया, उसे देखने को मैं न रहूंगा." मगर यह कम ख़ुशनसीबी की बात नहीं कि उन्हीं की आँखों का तारा आज़ाद स्वराजी सरकार का पहला प्रधान मंत्री है.

किसी भी देस में जनता की किसी प्रतिनिधि संस्था ने इतनी शान, शांति, त्याग और ईमान के साथ अपना फ़र्ज़ अदा नहीं किया होगा जैसे कि हिन्दुस्तान में कांगरेस ने किया. कांगरेस एक राजकाजी संस्था थी, एक राजकाजी मंज़िल पर पहुंच जाना उस का मक़सद था. वह चीज़ वह पा गई. एशिया के चालीस

آج کانگریس کدھر

(بھائی سریش رام بھائی)

آج سے ٦٥ سال پہلے جن لوگوں نے کانگریس کا پہلا اجلاس کیا ہوگا اُنہوں نے یہی سوچا ہوگا کہ اگر اُنکی قایم کی ہوئی جماعت ہندستان کو ایک دن آزادی دلا سکے تو اُنکا مقصد پورا ہوگیا' اُن کی محنت کارگر ہو گئی .

یہ آزادی حاصل کیسے ہوگی' کب ہوگی اِسکا کوئی انداز اُن کے سامنے اُسوقت نہیں تھا . لیکن جب دادا بھائی نوروجی نے 'سوراج' کا شبد اپنے منہ سے نکالا اور لوکمانیہ تلک نے گرج کر اِسے جنم کا ادھیکار بتایا تو یہ چیز صاف ہو گئی کہ ہو نہ ہو کانگریس آزادی لے لے گی . اور جب گاندھی جی میدان میں اُترے تب تو لوگوں کو شک ھی نہیں رہ گیا . پنڈت موتی لال نہرو نے چلتے وقت اُن سے یہی کہا تھا "سوراج تو آپنے لےلیا' اُسے دیکھنے کو میں نہ رہونگا ." مگر یہ کم خوش نصیبی کی بات نہیں کہ اُنہیں کی آنکھوں کا تارا آزاد سوراجی سرکار کا پہلا پردھان منتری ھے .

کسی بھی دیس میں جنتا کی کسی پرتی ندھی سنستھا نے اتنی شان' شانتی' تیاگ اور ایمان کے ساتھ اپنا فرض ادا نہیں کیا ہوگا جیسے کہ ہندستان میں کانگریس نے کیا . کانگریس ایک راجکاجی سنستھا تھی' ایک راجکاجی منزل پر پہونچ جانا اُسکا مقصد تھا . وہ چیز وہ پا گئی . ایشیا کے چالیس

करोड़ रहने वाले अंगरेजी हकूमत के शिकंजे से निकल कर खुद मुख़्तार हो आजादी की सांस ले रहे हैं. दुनिया की ग़ुलामी बनाम आज़ादी वाली तराजू में ग़ुलामी का पल्ला जो एक मुद्दत से भारी था अब हलका होकर ऊपर चढ़ गया. कुछ ही अरसा जाता है जब बाक़ी बचे मुल्क भी आजाद हो जायेंगे और तराजू की डांडी टूट जायेगी.

लेकिन ग़ुलाम जनता के लिये आज़ादी जहाँ एक मक़सद है, वहाँ आजाद जनता के लिये आजादी एक साधन भर है. दूसरों की बंदिश में जकड़े रहने के कारन हम अपना काम ठीक से नहीं कर सकते, अपने धर्म पर नहीं चल सकते. आज़ाद होने के माने हैं धर्म पर चलने की आज़ादी और आसानी. अब वक़्त आया है कि हिन्दुस्तान दम में दम ले कर अपना सीधा पुराना रास्ता पकड़े और सब में " तू ही तू. तू ही तू " देखने दिखाने की तैयारी करे.

साथ ही साथ इस दुनिया में मालिक की एक अनोखी रीत दीख्वती है. बल्कि यह एक रोग सा है जो मुक्ति या निजात की तमन्ना करने वाले साधुओं और फ़क़ीरों को भी आ घेरता है. उनको मुक्ति का इतना मोह होता है कि मुक्ति पाकर सब कुछ भूल जाते हैं, उन्हें फिर यह ध्यान ही नहीं रहता कि हम ने क्यों मुक्ति चाही थी और हमारा अब धर्म क्या है तब अगर कांगरेस नाम की संस्था को केवल एक राजकार्जी संस्था बने रहने का चसका लग जाये तो अचरज क्या ?

कोई माने या न माने कांगरेस अपना काम कर चुकी है. और इतना बड़ा काम उसने किया है जो दुनिया के इतिहास में सोने के

کروڑ رہنے والے انگریزی حکومت کے شکنجے سے نکل کر خود مختار ہو آزادی کی سانس لے رہے ہیں دنیا کی غلامی بنام آزادی والی ترازو میں غلامی کا پلہ جو ایک مدت سے بھاری تھا اب ہلکا ہوکر اوپر چڑھ گیا . کچھ ہی عرصہ جاتا ہے جب باقی بچے ملک بھی آزاد ہو جائینگے اور ترازو کی ڈانڈی ٹوٹ جائیگی .

لیکن غلام جنتا کے لئے آزادی جہاں ایک مقصد ہے' وہاں آزاد جنتا کے لئے آزادی ایک سادھن بھر ہے . دوسروں کی بندش میں جکڑے رہنے کے کارن ہم اپنا کام ٹھیک سے نہیں کر سکتے' اپنے دھرم پر نہیں چل سکتے آزاد ہونے کے معنے ہیں دھرم پر چلنے کی آزادی اور آسانی . اب وقت آیا ہے کہ ہندستان دم میں دم لے کر اپنا سیدھا پرانا راستہ پکڑے اور سب میں ''تو ہی تو' تو ہی تو'' دیکھنے دکھانے کی تیاری کرے .

ساتھ ہی ساتھ اِس دنیا میں مالک کی ایک انوکھی ریت دیکھتی ہے بلکہ یہ ایک روگ سا ہے جو مکتی یا نجات کی تمنا کرنے والے سادھوؤں اور فقیروں کو بھی آگھیرتا ہے . انکو مکتی کا اتنا موہ ہوتا ہے کہ مکتی پاکر سب کچھ بھول جاتے ہیں' انہیں پھر یہ دھیان ہی نہیں رہتا کہ ہم نے کیوں مکتی چاہی تھی اور ہمارا اب دھرم کیا ہے . تب اگر کانگریس نام کی سنستھا کو کیول ایک راجکاجی سنستھا بنے رہنے کا چسکا لگ جائے تو اچرج کیا ؟

کوئی مانے یا نہ مانے کانگریس اپنا کام کر چکی ہے' اور اتنا بڑا کام اُس نے کیا ہے جو دنیا کے اِتہاس میں سونے کے

हुरुफ़ों में लिखा जायगा. अपनी मन चाही हो जाने के बाद अगर वह अपने को पीकर ग़ायब हो जाती तो सोने में सोहागे का काम करती. इसमें संकोच नहीं करना चाहिये था क्योंकि जानदार चीज़ हो या बेजान, जो एक दिन शुरू हुई है वह ख़तम भी होगी. ख़तम सभी होते हैं. कोई उस ख़ातमे में ख़तम ही हो जाते हैं, कोई हमेशा के लिये जी जाते हैं. इसी वजह से हमारे यहां कहा जाता है कि जीना हो तो मरना सीखो.

पर दुःख की बात है कि कांग्रेस ने यह मरना सीखने से इनकार कर दिया मरेगी वह ज़रूर एक दिन लेकिन ६२-६५ बरस की उमर में काम करते हुए मरना उसे क़बूल नहीं, बल्कि अस्सी बरस की बुढ़िया बन कर कहर कहर कर सिसकती हुई दम छोड़ेगी जब उसका क्रिया करम करने की भी किसी को परवाह नहीं होगी. मरने के नाम से हमें डरना नहीं चाहिये, न यह कोई गाली ही है. कौन ऐसा आया है जो गया नहीं कि कांग्रेस ही रह जायगी ?

वैसे आज कांग्रेस की वर्किंग कमेटी बन चुकी है जिसका काफ़ी इंतज़ार था. कांग्रेस के दोनों पुराने जांबाज़ और दिलेर सिपाही—पंडित जवाहरलाल नेहरू और सरदार वल्लभ भाई पटेल—उसमें शामिल हो गये हैं. एक ख़ासी मज़बूत कमेटी बन गई है जिसमें केन्द्री सरकार के पांच मिनिस्टर हैं एक सूबे के चीफ़ मिनिस्टर हैं, आठ सूबा कांग्रेस कमेटियों के सभापति हैं, बाक़ी और हैं. डेढ़ दो महीने पहले ही सारी कांग्रेस कमेटियां ताज़ा बनी हैं और नीचे से लेकर ऊपर तक नया ही नया नज़ारा है. लेकिन इस लम्बी चौड़ी कांग्रेसी कायनात का काम क्या है या

حرفوں میں لکھا جائیگا ۔ اپنی من چاہی ہوجانے کے بعد اگر وہ اپنے کو پی کر غائب ہو جاتی تو سونے میں سہاگے کا کام کرتی ۔ اِسمیں سنکوچ نہیں کرنا چاہئے تھا کیونکہ جاندار چیز ہو یا بے جان' جو ایک دن شروع ہوئی ہے وہ ختم بھی ہوگی ختم سبھی ہوتے ہیں ۔ کوئی اس خاتمے میں ختم ہی ہو جاتے ہیں' کوئی ہمیشہ کے لئے جی جاتے ہیں اسیوجہ سے ہمارے یہاں کہا جاتا ہے کہ جینا ہو تو مرنا سیکھو ۔

پر دکھ کی بات ہے کہ کانگریس نے یہ مرنا سیکھنے سے انکار کر دیا مریگی وہ ضرور ایکدن لیکن ۶۲–۶۵ برس کی عمر میں کام کرتے ہوئے مرنا اُسے قبول نہیں بلکہ اسی برس کی بڑھیا بنکر کھر کھر کر سسکتی ہوئی دم چھوڑیگی جب اُسکا کریا کرم کرنے کی بھی کسی کو پرواہ نہیں ہوگی مرنے کے نام سے ہمیں ڈرنا نہیں چاہئے' نہ یہ کوئی گالی ہی ہے کون ایسا آیا ہے جو گیا نہیں کہ کانگریس ہی رہ جائیگی ؟

ویسے آج کانگریس کی ورکنگ کمیٹی بن چکی ہے جسکا کافی انتظار تھا کانگریس کے دونوں پرانے جانباز اور دلیر سپاہی—پنڈت جواہر لال نہرو اور سردار بلبھ بھائی پٹیل—اُسمیں شامل ہو گئے ہیں ۔ ایک خاصی مضبوط کمیٹی بن گئی ہے جس میں کیندری سرکار کے پانچ منسٹر ہیں' ایک صوبے کے چیف منسٹر ہیں' آٹھ صوبہ کانگریس کمیٹیوں کے سبھا پتی ہیں' باقی اور ہیں ۔ ڈیڑھ دو مہینے پہلے ہی ساری کانگریس کمیٹیاں تازہ بنی ہیں اور نیچے سے لے کر اُوپر تک نیا ہی نیا نظارہ ہے ۔ لیکن اِس لمبی چوڑی کانگریسی کائنات کا کام کیا ہے یا

क्या होगा ? आगे बढ़ने के पहले हम यह कहना चाहते हैं कि कांगरेस के आज के सभापति बाबू पुरुषोत्तम दास टंडन के लिये हम जितनी इज़्ज़त व श्रद्धा रखते हैं—उनकी फ़क़ीराना ज़िन्दगी, उनकी क़ुरबानियां, उजलेपन और चमक वाला चाल चलन—वह बयान के बाहर है. लेकिन यह विचार उनको ध्यान में रख कर नहीं बल्कि उस कांगरेस को ध्यान में रख कर ज़ाहिर किये जा रहे हैं जिसकी ज़ात से वह भी कम परेशान नहीं हैं.

हाँ, तो राजकाजी आज़ादी पाने के बाद कांगरेस को अब क्या करना है ? किस चीज़ को अपनाना है या किस दुश्मन को पछाड़ना है ? जवाब होगा—ग़रीबी, जाहिली, बीमारी. यह सब भयानक दुश्मन हैं जिन्हें गिराना है. लेकिन यह तीनों दुश्मन किसी के भी दोस्त थोड़े ही हैं—इन्हें तो हर कोई अलग कर देना ही चाहता है दुनिया के कोने कोने से लोग इन्हें निकाल बाहर कर देना चाहते हैं. फ़र्क़ है सिर्फ़ इस बात का कि किस तरह हटायें. ख़ुशक़िस्मती से (या बदक़िस्मती कहना चाहिये) यह तीनों रोग ऐसे हैं जिनकी दवा करने की महारत का दावा बहुतों को है और उन में से हर एक का यह कहना है कि उन्हें नहीं मुझे है. इन माहिरों के अलग अलग रास्ते हैं—कम्यूनिज़्म, सोशलिज़्म, फ़ासिज़्म कैपिटलिज़्म, डेमोक्रेसी या—एक और सही—गांधी वाद. कांगरेस इनमें से किसी ख़ास एक की पाबन्द नहीं रही है क्योंकि पहला काम तो जंजीरें तोड़ डालना था. कुछ गर्मी से. कुछ नर्मी से—ज़्यादातर नर्मी से—यह काम किया. अब तक का काम तो चल गया और कांगरेस ने हर

کیا ہوگا ؟ آگے بڑھنے کے پہلے ہم یہ کہنا چاہتے ہیں کہ کانگریس کے آج کے سبھاپتی بابو پرشوتم‌داس ٹنڈن کے لئے ہم جتنی عزت و شردھا رکھتے ہیں—اُنکی فقیرانہ زندگی' اُنکی قربانیاں' اُجلے پن اور چمک والا چال چلن—وہ بیان کے باہر ہے . لیکن یہ وچار اُنکو دھیان میں رکھ کر نہیں بلکہ اُس کانگریس کو دھیان میں رکھ کر ظاہر کئے جا رہے ہیں جسکی ذات سے وہ بھی کم پریشان نہیں ہیں .

ہاں' تو راج‌کاجی آزادی پانے کے بعد کانگریس کو اب کیا کرنا ہے ؟ کس چیز کو اپنانا ہے یا کس دشمن کو پچھاڑنا ہے ؟ جواب ہوگا—غریبی' جاہلی' بیماری یہ سب بھیانک دشمن ہیں جنہیں گرانا ہے. لیکن یہ تینوں دشمن کسی کے بھی دوست تھوڑے ہی ہیں—اِنہیں تو ہر کوئی الگ کر دینا ہی چاہتا ہے. دنیا کے کونے کونے سے لوگ اِنہیں نکال باہر کر دینا چاہتے ہیں . فرق ہے صرف اس بات کا کہ کس طرح ہٹائیں خوش قسمتی سے (یا بدقسمتی کہنا چاہئے) یہ تینوں روگ ایسے ہیں جنکی دوا کرنے کی مہارت کا دعوی بہتوں کو ہے اور اُن میں سے ہر ایک کا یہ کہنا ہے کہ اُنہیں نہیں مجھے ہے ان ماہروں کے الگ الگ راستے ہیں—کمیونزم' سوشلزم' فاسزم' کیپیٹلزم' ڈیموکریسی یا—ایک اور سہی—گاندھی واد . کانگریس ان میں سے کسی خاص ایک کی پابند نہیں رہی ہے کیونکہ پہلا کام تو زنجیریں توڑ ڈالنا تھا . کچھ گرمی سے' کچھ نرمی سے—زیادہ‌تر نرمی سے—یہ کام [illegible]

ले लिया. मगर अब तो बीमार को कभी यह दवा, कभी वह दवा या खिचड़ी दवा देकर काम नहीं निकलेगा, उलटे रोगी कल का मरता आज मर जायेगा. एक खास रास्ता पकड़ना होगा, मगर अब तक तो ऐसा किया नहीं तो आगे कैसे चले ?

मुसीबत कुछ और भी है. वह यह कि देस के हाथ में जहाँ इसने आजादी दिलाई वहाँ कांग्रेस ने अपने हाथ मे ताकत रख ली. हाथ की ताक़त फेंक कर खुद आजाद होने से कांगरेस ने इनकार कर दिया. ताक़त वाली बन कर वह भारी पड़ी, बैठ गई. यानी आजादी के लिये मिटने वाली कांगरेस सेवक से बदल कर ताकत रखने वाली शासक या राजा बन गई ' यह कौन नहीं जानता कि आज कांगरेस राजा है. राजा के पास दरबारी, जो हुजूर जुआ ही करते हैं. तब ऐसी हालत में कोई लाख कोशिश करे कांगरेस किस तरह संभल कर अच्छी तरह रह सकती है. कांगरेस का एक ही काम—राजा बन कर शासन करना. इसी वजह से हम देखते हैं कि कांगरेस वालों के पास पालियामेन्ट्री के अलावा कोई दूसरा काय क्रम नहीं है. हर दम चिन्ता है असेम्बली, कौंसिल या पालियामेन्ट की मेम्बरी की या कांगरेस की इस उस कमेटी मे हो जाने की ताकि वह मेम्बरी पर या मेम्बरी वालों पर अपना क़ाबू जमाये रहें.

नासिक कांगरेस की ही मिसाल लें. इस में कई प्रस्ताव ऐसे पास हुए जिन से मिलते जुलते प्रस्ताव पिछली जयपुर कांगरेस में पास हुए थे. इन पौने दो बरस में उन प्रस्तावों पर अमल कांगरेस की किसी कमेटी ने तो शायद ही कुछ किया हो (जैसे देस की आर्थिक उन्नती करना या देस में से पुर्तगीज, फ़रान्सीसी लोगों का राज

لے لیا . مگر اب تو بیمار کو کبھی یہ دوا ' کبھی وہ دوا یا کھچڑی دوا دے کر کام نہیں نکلیگا ' الٹے روگی کل کا مرتا آج مر جائیگا . ایک خاص راستہ پکڑنا ہوگا ' مگر اب تک تو ایسا کیا نہیں تو آگے کیسے چلے ؟

مصیبت کچھ اور بھی ہے . وہ یہ کہ دیس کے ہاتھ میں جہاں اِس نے آزادی دلائی وہاں کانگریس نے اپنے ہاتھ میں طاقت رکھ لی . ہاتھ کی طاقت پھینک کر خود آزاد ہونے سے کانگریس نے انکار کر دیا . طاقت والی بن کر وہ بھاری پڑی ' بیٹھ گئی . یعنی آزادی کے لئے مٹنے والی کانگریس سیوک سے بدل کر طاقت رکھنے والی شاسک یا راجہ بن گئی ! یہ کون نہیں جانتا کہ آج کانگریس راجہ ہے . راجہ کے پاس درباری جی حضوری جتا ہی کرتے ہیں . تب ایسی حالت میں کوئی لاکھ کوشش کرے کانگریس کس طرح سنبھل کر اچھی طرح رہ سکتی ہے . کانگریس کا ایک ہی کام—راجہ بن کر شاسن کرنا . اِسی وجہ سے ہم دیکھتے ہیں کہ کانگریس والوں کے پاس پارلیامینٹری کے علاوہ کوئی دوسرا کاریہ کرم نہیں ہے . ہر دم چنتا ہے اسمبلی ' کونسل یا پارلیامینٹ کی ممبری کی یا کانگریس کی اِس اُس کمیٹی میں ہوجانے کی تاکہ وہ ممبری پر یا ممبری والوں پر اپنا قابو جمائے رہیں .

ناسک کانگریس کی ہی مثال لیں . اُس میں کئی پرستاؤ ایسے پاس ہوئے جن سے ملتے جلتے پرستاو پچھلی جے پور کانگریس میں پاس ہوئے تھے . اِن پونے دو برس میں اُن پرستاؤں پر عمل کانگریس کی کسی کمیٹی نے تو شاید ہی کچھ کیا ہو (جیسے دیس کی آرتھک اُنتی کرنا یا دیس میں سے پرتگیز ' فرانسیسی لوگوں کا راج

हटाना), जो कुछ किया था कांगरेस सरकार रूपी कांगरेस ने. इतनी तबदीली नासिक के प्रस्तावों में आगई जैसे प्लानिंग कमीशन बन जाने की बात या दिल्ली समझौते की बात. इस के अलावा कोई नई बात नहीं थी. अलबत्ता बैठने के लिये कुर्सियां ज़रूर मिलीं १९२२ की अहमदाबाद कांगरेस से ज़मीन पर बैठते बैठते जिन का पीछा छिल सा गया था उन्हें कुछ आराम महसूस हुआ होगा. ठीक भी है, क्योंकि १८८५ से १९२१ तक कुर्सी बेन्च पर ही बैठा करते थे ! अगर कांगरेस सेवक होती तो नामुमकिन था कि जयपुर के प्रस्तावों पर अमल न किया जाता. शासक था इस लिये सरकारी तौर पर जो किया सो किया, कांगरेस पहले की तरह ख़ुद क्या करती. इस लिये यह भी मानना पड़ेगा—यू तो यह एक बहुत पुरानी बात है—कि जो शासक वह सेवक नहीं. शासक और सेवक का साथ नहीं है. शासक अपने को सेवक नहीं बना सकता, न सेवक अपने को शासक. भगवान शासक और भक्त सेवक की बात ही न्यारी है.

ऊपर कहा गया है कि कांगरेस को चाहिये था अपने को पी कर ग़ायब होजाती इस का मतलब यही कि शासक पन या हकूमती ताक़त को पी कर सेवक बन नए रूप में ज़ाहिर होजाता. यह वही चीज़ है जो गांधी जी ने ३० जनवरी १९४८ को एक नोट में लिख कर सुझाई थी. राजेन्द्र बाबू के शब्दों में :—

" उन का (बापू का) ख़याल था कि कांगरेस अब राजनीति के काम से, जिस में वह खुले भाग लेती रही थी और अपने मंत्रि मंडल द्वारा काम करा रही थी, अलग हो कर लोक सेवा का काम

ھٹانا)' جو کچھ کیا کانگریس سرکار روپی کانگریس نے . اُتنی تبدیلی ناسک کے پرستاؤوں میں آگئی جیسے پلاننگ کمیشن بن جانے کی بات یا دلی سمجھوتے کی بات . اس کے علاوہ کوئی نئی بات نہیں تھی البتہ بیٹھنے کے لئے کرسیاں ضرور ملیں . ۱۹۲۲ کی احمدآباد کانگریس سے زمین پر بیٹھتے بیٹھتے جن کا پیچھا چھل سا گیا تھا اُنہیں کچھ آرام محسوس ہوا ہوگا . ٹھیک بھی ہے کیونکہ ۱۸۸۵ سے ۱۹۲۱ تک کرسی بنچ پر ہی بیٹھا کرتے تھے ! اگر کانگریس سیوک ہوتی تو ناممکن تھا کہ جےپور کے پرستاؤوں پر عمل نہ کیا جاتا . شاسک تھی اس لئے سرکاری طور پر جو کیا سو کیا ' کانگریس پہلے کی طرح خود کیا کرتی اس لئے یہ بھی ماننا پڑیگا—یوں تو یہ ایک بہت پرانی بات ہے—کہ جو شاسک وہ سیوک نہیں . شاسک اور سیوک کا ساتھ نہیں ہے . شاسک اپنے کو سیوک نہیں بنا سکتا نہ سیوک اپنے کو شاسک . بھگوان شاسک اور بھکت سیوک کی بات ہی نیاری ہے '

اوپر کہا گیا ہے کہ کانگریس کو چاھئے تھا اپنے کو پی کر غائب ہوجاتی . اس کا مطلب یہی کہ شاسک پن یا حکومتی طاقت کو پی کر سیوک بن نئے روپ میں ظاہر ہوجاتی یہ وہی چیز ہے جو گاندھی جی نے ۳۰ جنوری ۱۹۴۸ کو ایک نوٹ میں لکھکر سجھائی تھی . راجندر بابو کے شبدوں میں :

''اُنکا (باپو کا) خیال تھا کہ کانگریس اب راج نیتی کے کام سے' جس میں وہ کھلے بھاگ لیتی رہی تھی اور اپنے منتری منڈل دوارا کام کرا رہی تھی ' الگ ہو کر لوک سیوا کا کام

करे. लोक सेवा के ज़रिये ही वह गवर्नमेंट पर जो कुछ असर डाल सकती है, डाले."

(" बापू के क़दमों में " पन्ना—२६२-२६३)

कांगरेस ने यह नहीं माना, लोक सेवा करना उसे क़बूल नहीं हुआ. कांगरेस ने अपना विधान तो बदला लेकिन नाक सामने से न पकड़ कर पीछे से पकड़ लेने वाला बात की. राजेन्द्र बाबू इसी सिलसिले में कहते हैं :—

" पर यह कांगरेस के प्रमुख लोगों को पसंद नहीं था ! इस लिये नियमावली मे जो संशोधन हुआ उसका रूप वैसा नहीं हुआ कि कांगरेस एक लोक सेवक संघ बन जाये." (पन्ना २६३)

कैसी सच्ची बात राजेन्द्र बाबू ने कह डाली है. कोई दूसरा नेता तो यह मानने से भी कतरा ही जाता.

जब बापू की बात भी कांगरेस ने नहीं मानी तो उसकी क्या गति होगी भगवान ही जाने. और जब बापू की भी बात कांगरेस ने नहीं मानी तो किसी और की हस्ती ही क्या है. जो होना है सो हो कर ही रहेगा. बस, यही बिनती है—

" सब को सन्मति दे भगवान ! "

کرے . لوک سیوا کے ذریعے هی وہ گورنمنٹ پر جو کچھ اثر ڈال سکتي ہے' ڈالے ."

("باپو کے قدموں میں" پنا—۲۶۲-۲۶۳)

کانگریس نے یہ نہیں مانا· لوک سیوا کرنا اُسےقبول نہیں هوا . کانگریس نے اپنا ودهان تو بدلا لیکن ناک سامنے سے نہ پکڑ کر پیچھے سے پکڑ لینے والی بات کي . راجیندر بابو اِسی سلسلے میں کہتے هیں :—

" پر یہ کانگریس کے پرمکھ لوگوں کو پسند نہیں تھا ! اسلئے نیماولي میں جو سنشودھن هوا اُسکا روپ ویسا نہیں هوا کہ کانگریس ایک لوک سیوک سنگھ بن جائے ." (پنا ۲۶۳)

کیسی سچی بات راجیندر بابو نے کہ ڈالی ہے . کوئی دوسرا نیتا تو یہ ماننے سے بھی کترا هي جاتا .

جب باپو کی بات بھی کانگریس نے نہیں مانی تو اُسکی کیا گتي هوگی بھگوان هی جانے . اور جب باپو کي بھي بات کانگریس نے نہیں مانی تو کسی اور کی هستي هی کیا ہے . جو هونا ہے سو هو کر هي رهیگا . بس' یہی ونتی ہے—

"سب کو سنمتي دے بھگوان !"

दुनिया की तीसरी लड़ाई के बाद

ऐटम मंथन (मथना) के सिलसिले की एक ख़याली कहानी

(भाई जगदीश एम . एस सी.)

दुनिया की तीसरी बड़ी लड़ाई शुरू हुई और देखते ही देखते ख़तम भी हो गई. पर यह लड़ाई क्यों और कैसे शुरू हुई यह तो अमरीका के हवाबाज़ कुरनल पीटर विलसन को मालूम नहीं. हाँ, उसका ख़ौफ़नाक नतीजा उसकी आँखों के सामने था. यों तो यू. एन. ओ. (U.N.O.) में रूस और अमरीका के बीच आपस में रोज़ ही झड़प हो जाया करती थी पर पीटर को क्या, आम जनता को भी यह पता न चला कि आख़िर यह लड़ाई क्यों कर शुरू हुई, और पहला ऐटम बम किसने गिराया. ऐटम बम का यह खेल दो ही महीने में ख़तम हो गया. खेलने वाले और देखने वाले, दोनों ही ऐटम बम के शिकार हो गए और एक ऐसी नींद में सो गए जो शायद अब कभी ख़तम न होगी. सभी बड़े बड़े शहर आग और भाप का दहकता हुआ गोला बन कर उड़ गए और अपने साथ अपने उन शहरियों को भी उड़ा ले गए जिनकी बनाई हुई सरकारों की आपस की खेंच-तान और लालच ने यह दिन दिखाया था.

लड़ाई को ख़तम हुए क़रीब दो बरस हो चुके हैं. ख़तम तो क्या, बस यों समझिये कि जैसे चूल्हे में लकड़ी ख़तम हो जाने पर आग बुझ जाती है वैसे ही संसार व्यापी यह ऐटमी आग भी ख़तम हो गई.

دنیا کی تیسری لڑائی کے بعد

ایٹم منتھن (متھنا) کے سلسلے کی ایک خیالی کہانی

(بھائی جگدیش ایم. ایس سی.)

دنیا کی تیسری بڑی لڑائی شروع ہوئی اور دیکھتے ہی دیکھتے ختم بھی ہوگئی . پر یہ لڑائی کیوں اور کیسے شروع ہوئی یہ تو امریکہ کے ہوا باز کرنل پیٹر ولسن کو معلوم نہیں . ہاں ' اس کا خوف ناک نتیجہ اُس کی آنکھوں کے سامنے تھا . یوں تو یو . این . او . (U. N. O.) میں روس اور امریکہ کے بیچ آپس میں روز ہی جھڑپ ہوجایا کرتی تھی پر پیٹر کو کیا ' عام جنتا کو بھی یہ پتہ نہ چلا کہ آخر یہ لڑائی کیوں کر شروع ہوئی' اور پہلا ایٹم بم کس نے گرایا . ایٹم بم کا یہ کھیل دو ہی مہینے میں ختم ہوگیا . کھیلنے والے اور دیکھنے والے ' دونوں ہی ایٹم بم کے شکار ہوگئے اور ایک ایسی نیند میں سو گئے جو شاید اب کبھی ختم نہ ہوگی . سبھی بڑے بڑے شہر آگ اور بھاپ کا دھکتا ہوا گولا بن کر اُڑ گئے اور اپنے ساتھ اپنے اُن شہریوں کو بھی اُڑا لے گئے جن کی بنائی ہوئی سرکاروں کی آپس کی کھینچ تان اور لالچ نے یہ دن دکھایا تھا .

لڑائی کو ختم ہوئے قریب دو برس ہوچکے ہیں . ختم تو کیا ' بس یوں سمجھئے کہ جیسے چولھے میں لکڑی ختم ہوجانے پر آگ بجھ جاتی ہے ویسے ہی سنسار ویاپی یہ ایٹمی آگ بھی ختم ہوگئی .

जब दुनिया के सब शहर स्वाहा हो चुके और फ़ौज जंगलों और तहख़ानों में रहने लगी तो फ़ौजी संगठन कैसे क़ायम रहता ! जब सामग्री ही ख़तम हो गई तो यद्ध कैसे जारी रहता. हाँ, इस लड़ाई का दुनिया की अनेक क़ौमों पर क्या असर पड़ा, इसका पता लगाने के लिये अमरीका के प्रेसिडेंट ने करनल पीटर विलसन को मुक़र्रर किया और उन्हें इस बारे में दुनिया का दौरा करने का हुक्म दिया. पीटर ने एक जेट (Jet) हवाई जहाज़ पर सवार होकर, जिसमें ऐटम इंजन की कभी न ख़तम होने वाली ताक़त थी, सारी दुनिया का दौरा शुरू किया और क़रीब दो महीने के अन्दर अन्दर अपना दौरा ख़तम भी कर दिया.

पीटर अपने जेट हवाई जहाज़ से दुनिया का दौरा ख़तम कर के अमरीका वापस लौट रहा था. वह बहुत थका हुआ था. जिस जंगल में उतर कर उसे अमरीका के प्रेसिडेंट को दुनिया की हालत के बारे में अपनी रिपोर्ट देनी थी, वहाँ पहुँचने में घंटे भर की देर थी. हवाई जहाज़ का संचालन ऐटमी पायलट की मशीन के सुपुर्द करके वह ऊंघने लगा. उसकी आँखों के सामने पिछले दो बरस की भयानक घटनाएं एक एक कर के आने लगीं. वह दिन भी क्या वह कभी भूल सकता था जब न्यूयार्क के क़रीब एक करोड़ निवासी घंटे भर के ऐटम बम की बारिश में एक आग का गोला बन कर उड़ गए जिन में उस की बीबी मारगरेट और छोटा बच्चा भी था. पर उस समय सोचने समझने की फ़ुरसत किसे थी. उस समय तो पीटर भी दुश्मन के शहरों की यही हालत करने में लगा हुआ था.

جب دنیا کے سب شہر سواہا ہوچکے اور فوج جنگلوں اور تہ خانوں میں رہنے لگی تو فوجی سنگھٹن کیسے قائم رہتا ! جب سامگری ہی ختم ہوگئی تو یدھ کیسے جاری رہتا. ہاں، اس لڑائی کا دنیا کی انیک قوموں پر کیا اثر پڑا، اس کا پتہ لگانے کے لئے امریکہ کے پریسیڈنٹ نے کرنل پیٹر ولسن کو مقرر کیا اور انہیں اس بارے میں دنیا کا دورہ کرنے کا حکم دیا. پیٹر نے ایک جیٹ (Jet) ہوائی جہاز پر سوار ہوکر، جس میں ایٹم انجن کی کبھی نہ ختم ہونے والی طاقت تھی، ساری دنیا کا دورہ شروع کیا اور قریب دو مہینے کے اندر اندر اپنا دورہ ختم بھی کر دیا.

پیٹر اپنے جیٹ ہوائی جہاز سے دنیا کا دورہ ختم کر کے امریکہ واپس لوٹ رہا تھا. وہ بہت تھکا ہوا تھا. جس جنگل میں اتر کر اسے امریکہ کے پریسیڈنٹ کو دنیا کی حالت کے بارے میں اپنی رپورٹ دینی تھی، وہاں پہنچنے میں گھنٹے بھر کی دیر تھی. ہوائی جہاز کا سنچالن ایٹمی پائلٹ کی مشین کے سپرد کر کے وہ اونگھنے لگا. اس کی آنکھوں کے سامنے پچھلے دو برس کی بھیانک گھٹنائیں ایک ایک کر کے آنے لگیں. وہ دن بھی کیا وہ کبھی بھول سکتا تھا جب نیویارک کے قریب ایک کروڑ نواسی گھنٹے بھر کے ایٹم بم کی بارش میں ایک آگ کا گولہ بنکر اڑ گئے جن میں اس کی بیوی مارگریٹ اور چھوٹا بچہ بھی تھا. پر اس سمے سوچنے سمجھنے کی فرصت کسے تھی. اس سمے تو پیٹر بھی دشمن کے شہروں کی یہی حالت کرنے میں لگا ہوا تھا.

हिन्दुओं के निराकार की मुहब्बत है और उसमें मिलकर जिसे वह मुक्त होना कहते हैं, वह हो सकती है. लेकिन शक्ल वालों की मुहब्बत में दिलों का मिलना तो तब तक अधूरा ही रहता है, जब तक जिस्म भी न मिल जायँ. बग़ैर मुहब्बत के भी अगर शौहर और बीवी के जिस्मों का मिलना नापाक नहीं, वह गिराने वाली चीज़ नहीं, तो जिनमें सच्ची मुहब्बत है, और उस मुहब्बत की वजह से, जो एक दूसरे के नज़दीक आने के लिये एक दूसरे से मिलना चाहते हैं, उनकी यह बातें नापाक और गिराने वाली कैसे कही जा सकती हैं ?

[अब निज़ाम लाड को गले लगाने के लिये हाथ बढ़ाता है.]

नेपथ्य से रहमान का स्वर—(ज़ोर से) छोटे मियाँ ! छोटे मियाँ...कहाँ हो ?...क्या कर रहे हो ?

निज़ाम—(चौंककर, हाथ सिकोड़ते हुए, ज़ोर से) कौन ?

नेपथ्य से रहमान का स्वर—(ज़ोर से) हज़रते आला का शाटया गाँव से एक सवार आया है.

[क्रोध से तमतमाती लाड दालान में जाती है. दालान के दूसरी ओर निज़ाम जाकर दरवाज़ा खोलता है.]

[निज़ाम लम्बी साँस लेकर दुखित मुद्रा से नज़र बाग़ में लौट कर फूलों के पौधों को देखते हुए इधर उधर घूमता है, कुछ ही देर में जो दरवाज़ा निज़ाम ने खोला था, उससे रहमान के साथ वर्दी पहिने हुए एक सिपाही का आना. सिपाही निज़ाम के पास आ, सलाम कर उसे एक चिट्ठी देता है.]

हندؤں کے نراکار کی محبت ہے اور اس میں مل کر جسے وہ مُکت ہونا کہتے ہیں، وہ ہو سکتی ہے. لیکن شکل والوں کی محبت میں دلوں کا ملنا تو تب تک ادھورا ہی رہتا ہے، جب تک جسم بھی نہ مل جائیں. بغیر محبت کے بھی اگر شوہر اور بیوی کے جسموں کا ملنا ناپاک نہیں، وہ گرانے والی چیز نہیں تو جن میں سچی محبت ہے اور اُس محبت کی وجہ سے جو ایک دوسرے کے نزدیک آنے کے لئے ایک دوسرے سے ملنا چاہتے ہیں اُن کی یہ باتیں ناپاک اور گرانے والی کیسے کہی جا سکتی ہیں؟

(اب نظام لاڈ کو گلے لگانے کے لئے ہاتھ بڑھاتا ہے)

نے پتھ سے رحمان کا سور (زور سے) چھوٹے میاں! چھوٹے میاں ...... کہاں ہو؟ ...... کیا کر رہے ہو؟

نظام — (چونک کر ہاتھ سکوڑتے ہوئے زور سے) کون؟

نے پتھ سے رحمان کا سور — حضرت اعلیٰ کا شاٹیا گاؤں سے ایک سوار آیا ہے۔

(غصہ سے تمتماتی لاڈ دالان میں جاتی ہے۔ دالان کے دوسری اور نظام جاکر دروازہ کھولتا ہے)

(نظام لمبی سانس لے کر دُکھت مُدرا سے نظر باغ میں لوٹ کر پھولوں کے پودوں کو دیکھتے ہوئے اِدھر اُدھر گھومتا ہے۔ کچھ ہی دیر میں جو دروازہ نظام نے کھولا تھا۔ اس سے رحمان کے ساتھ وردی پہنے ہوئے ایک سپاہی کا آنا۔ سپاہی نظام کے پاس آ سلام کر اُسے ایک چٹھی دیتا ہے)

نے پتھ — سائڈ

इन दो बरस में पीटर ने क्या कुछ न देखा था. अफ़सोस ! आज वह दुनिया न रही जो दो बरस पहले की हँसती बोलती दुनिया थी. वही जंगल हैं वही हरे हरे घास के मैदान. पर आज जगह जगह बड़े बड़े गड्ढे दिखाई देते हैं. यह धूप में हरे रंग की चमकदार रोशनी से दमक रहे हैं. यहीं पर तो ऐटम बम गिरे थे जिनकी गरमी से वहाँ का रेता और वहाँ की मिट्टी पिघल कर एक चिकने हरे शीशे का प्याला बन कर रह गई है. वहाँ के रहने वालों का तो पूछना ही क्या. उन बेचारों को तो यह मालूम होने का समय तक न मिला कि हो क्या रहा है. एक आकाशभेदी धमाका और चमक जिसमें हज़ारों सूरज और गरमी की रोशनी थी और बस, नारंगी रंग का एक धूल और गैस का गोला अपने साथ शहर के तमाम रहने वालों को लेकर आसमान में उठा और देखते ही देखते ग़ायब हो गया

पीटर ने ऐसे गड्ढे इन दो बरस में बहुत देखे थे. हंसता हुआ पेरिस और शानदार लंदन अब नहीं रहा. उनकी जगह पानी से भरे गड्ढे ही दिखाई दे रहे हैं. इन गड्ढों में काई भी जमी हुई है योरप में तो सभी छोटे बड़े शहरों का यही हाल हो चुका है. इन पर लड़ाई के दौरान में ऐटम बमों की भयानक बारिश हुई थी.

पीटर ने एक ठंडी सास ली अच्छा ही हुआ मारगरेट और उसका छोटा सा प्यारा बच्चा पहले ही बमों में न्यूयार्क के साथ साथ इस दुनिया से चल बसे. कम से कम उनको कोई तकलीफ़ तो नहीं हुई. बाद की ऐटम किरन धूल (Radio active dust)

ان دو برس میں پیٹر نے کیا کچھ نہ دیکھا تھا . افسوس ! آج وہ دنیا نہ رہی جو دو برس پہلے کی ہنستی بولتی دنیا تھی، وہی جنگل ہیں وہی ہرے ہرے گھاس کے میدان . پر آج جگہ جگہ بڑے بڑے گڈھے دکھائی دیتے ہیں . یہ دھوپ میں ہرے رنگ کی چمک دار روشنی سے دمک رہے ہیں . یہیں پر تو ایٹم بم گرے تھے جن کی گرمی سے وہاں کا ریتا اور وہاں کی مٹی پگھل کر ایک چکنے ہرے شیشے کا پیالہ بن کر رہ گئی ہے . وہاں کے رہنے والوں کا تو پوچھنا ہی کیا اُن بیچاروں کو تو یہ معلوم ہونے کا سمے تک نہ ملا کہ ہوکیا رہا ہے . ایک آکاش بھیدی دھماکا اور چمک جسمیں ہزاروں سورج اور گرمی کی روشنی تھی اور بس ' نارنگی رنگ کا ایک دھول اور گیس کا گولہ اپنے ساتھ شہر کے تمام رہنے والوں کو لیکر آسمان میں اُٹھا اور دیکھتے ہی دیکھتے غائب ہوگیا .

پیٹر نے ایسے گڈھے اِن دو برس میں بہت دیکھے تھے . ہنستا ہوا پیرس اور شاندار لندن اب نہیں رہا . اُن کی جگہ پانی سے بھرے گڈھے ہی دکھائی دے رہے ہیں . اِن گڈھوں میں کائی بھی جمی ہوئی ہے . یورپ میں تو سبھی چھوٹے بڑے شہروں کا یہی حال ہوچکا ہے . ان پر لڑائی کے دوران میں ایٹم بموں کی بھیانک بارش ہوئی تھی .

پیٹر نے ایک ٹھنڈی سانس لی . اچھا ہی ہوا مارگریٹ اور اُسکا چھوٹا سا پیارا بچہ پہلے ہی بموں میں نیویارک کے ساتھ ساتھ اس دنیا سے چل بسے . کم سے کم اُن کو کوئی تکلیف تو نہیں ہوئی . بعد کی ایٹم کرن دھول (Radio active dust) کے

आज दो बरस बाद एक बार फिर पीटर के कानों में ऐटम बमों की आकाश भेदी सीटी और धमाके की आवाज आई और फिर उसने देखा ऐटमी धूल से जल कर लाखों आदमी चारों तरफ भागने की कोशिश कर रहे हैं. उनमें बहुत से अन्धे हो गए, बहुत से अपाहिज और कितनों ने तो इस भगदड़ में दम ही तोड़ दिया. इन्सानी ज़िन्दगी और इन्सानी नसल की यह ज़बरदस्त खूँरेज़ी होते देख पीटर की आँखों से दो बूँद आँसू टपक पड़े.

और फिर उसकी आँखों के सामने भूके और नंगे नरकंकालों की एक तस्वीर खिंच गई यह सब के सब पेड़ के पत्ते और डंठल नोच नोच खा रहे थे एक दर्द भरी मुस्कराहट उस के होंटों पर आ गई. अमरीका में भूके और नंगे! कैसी अजीब बात! उस अमरीका में जो सारी दुनिया का अनाज भंडार था, जहाँ आलू और गेहूं को रखने तक की जगह न थी, जहाँ गेहूं रेल के इंजन में कोयले की जगह जलाया जाता था. हाँ, उसी अमरीका में आज लोग पत्ते और डंठल खाकर गुज़र कर रहे हैं

अमरीका ही क्या, दुनिया के कम से कम आधे इंसान और जानवर भूक से तड़प तड़प कर मर चुके हैं. फ़सल बोने के लिए बीज तक न रहा. जो लोग अभी ज़िन्दा हैं वह अब गिरोह बना बना कर जंगलों में रहते हैं. और लूट मार कर के गुज़र बसर कर रहे हैं. सारी दुनिया की समाजी व्यवस्था टूट चुकी है. लोगों की हिफ़ाज़त करने के लिए न पुलिस है न फ़ौज. हुक्म देने वाले और हुक्म मानने वाले दोनों ही जंगलों में साग पात खा कर गुज़ारा कर रहे हैं.

آج دو برس بعد ایک بار پھر پیٹر کے کانوں میں ایٹم بموں کي آکاش بھیدی سیٹی اور دھماکے کی آواز آئي اور پھر اُس نے دیکھا ایٹمی دھول سے جل کر لاکھوں آدمی چاروں طرف بھاگنے کی کوشش کر رہے ھیں. اُن میں بہت سے اندھے ہوگئے' بہت سے اپاھج اور کتنوں نے تو اِس بھگدڑ میں دم ھي توڑ دیا. انسانی زندگی اور انسانی نسل کی یہ زبردست خونریزی ھوتے دیکھ پیٹر کي آنکھوں سے دو بوند آنسو ٹپک پڑے.

اور پھر اُس کي آنکھوں کے سامنے بھوکے اور ننگے نرکنکالوں کی ایک تصویر کھنچ گئی. یہ سب کے سب پیڑ کے پتے اور ڈنٹھل نوچ نوچ کھا رہے تھے ایک درد بھری مسکراھٹ اُس کے ھونٹھوں پر آگئی امریکہ میں بھوکے اور ننگے! کیسي عجیب بات! اُس امریکہ میں جو ساری دنیا کا اناج بھنڈار تھا' جہاں آلو اور گیہوں کو رکھنے تک کی جگہ نہ تھی' جہاں گیہوں ریل کے انجن میں کوئلے کي جگہ جلایا جاتا تھا. ھاں' اُسی امریکہ میں آج لوگ پتّے اور ڈنٹھل کھاکر گزر کر رہے ھیں.

امریکہ ھي کیا' دنیا کے کم سے کم آدھے انسان اور جانور بھوک سے تڑپ تڑپ کر مرچکے ھیں. فصل بونے کے لئے بیج تک نہ رہا. جو لوگ ابھی زندہ ھیں وہ اب گروہ بنا بنا کر جنگلوں میں رھتے ھیں. اور لوٹ مار کرکے گزر بسر کر رہے ھیں. ساري دنیا کی سماجي ویوستھا ٹوٹ چکی ھے. لوگوں کی حفاظت کرنے کے لئے نہ پولیس ھے نہ فوج. حکم دینے والے اور حکم ماننے والے دونوں ھي جنگلوں میں ساگ پات کھا کر گزارہ کر رہے ھیں.

पीटर को वह दिन याद आया जब पहला ऐटम बम अमरीका के खेतों पर गिरा था. गेहूं की फ़सल खाने वाले कीड़े सारे खेत में फैल गए. यह कीड़े भी अजीब थे इन पर पहले की आज़माई हुई कोई दवा काम नहीं करती थी. इन कीड़ों ने दो तिहाई से ज्यादा फ़सल को बरबाद कर दिया

भूका जनता का वह समूह पीटर की आंखों के आगे नाच गया जो सरकार से खाना मांगने आया था लेकिन सरकार का कहीं पता न था. पीटर सिहर उठा. उसको याद आया, किस तरह दुश्मन का पहला जहरीला कीड़ा बम (Germ Bomb) इस भूकी भीड़ पर गिरा था और सारे देश में एक भयंकर बीमारी फैल गई जिसका कोई इलाज न था. इसी बीमारी ने अमरीका की उस छतरी फ़ौज को बरबाद कर दिया जो उत्तर ध्रुव (North Pole) के पार लड़ने गए थे और फिर इस डर से कि यह बीमारी कहीं फैल न जाय, इन फ़ौजियों की लाशों को ऐटम बम से जलाना पड़ा था.

पीटर की समाधि टूटी. हवाई जहाज़ अब भी अपनी तेज़ चाल से उड़ा जा रहा था. उस ने अपने आने की सूचना फ़ौजी गुप्त सिगनल से अपने अफ़सरों को दी. यह अफ़सर जंगल में छिपे हुए थे. वह जानता था कि बिला इजाज़त उतरने से ऐटमी तोपें उस के जहाज़ को अपना निशाना बना देंगी और वह अपने जहाज़ समेत जल कर ख़ाक हो जायगा. इस लिए वह आसमान में ही चक्कर काटता रहा. इजाज़त मिलने पर वह एक छोटी सी सड़क पर उतरा और अपने फ़ौजी अफ़सरों के साथ एक तहख़ाने

پیٹر کو وہ دن یاد آیا جب پہلا ایٹم بم امریکہ کے کھیتوں پر گرا تھا ۔ گیہوں کی فصل کھانے والے کیڑے سارے کھیت میں پھیل گئے ۔ یہ کیڑے بھی عجیب تھے ۔ اِن پر پہلے کی آزمائی ہوئی کوئی دوا کام نہیں کرتی تھی ۔ اِن کیڑوں نے دو تہائی سے زیادہ فصل کو برباد کر دیا ۔

بھوکی جنتا کا وہ سموہ پیٹر کی آنکھوں کے آگے ناچ گیا جو سرکار سے کھانا مانگنے آیا تھا لیکن سرکار کا کہیں پتہ نہ تھا ۔ پیٹر سہر اُٹھا ۔ اُسکو یاد آیا، کس طرح دشمن کا پہلا زہریلا کیڑا بم (Germ Bomb) اس بھوکی بھیڑ پر گرا تھا اور سارے دیش میں ایک بھینکر بیماری پھیل گئی جسکا کوئی علاج نہ تھا ۔ اسی بیماری نے امریکہ کی اس چھتری فوج کو برباد کر دیا جو اُتر دھرو (North Pole) کے پار لڑنے گئے تھے ۔ اور پھر اِس ڈر سے کہ یہ بیماری کہیں پھیل نہ جائے، ان فوجیوں کی لاشوں کو ایٹم بم سے جلانا پڑا تھا ۔

پیٹر کی سمادھی ٹوٹی ۔ ہوائی جہاز اب بھی اپنی تیز چال سے اُڑا جا رہا تھا ۔ اُسنے اپنے آنے کی سوچنا فوجی گپت سگنل سے اپنے افسروں کو دی ۔ یہ افسر جنگل میں چھپے ہوئے تھے ۔ وہ جانتا تھا کہ بلا اجازت اُترنے سے ایٹمی توپیں اُسکے جہاز کو اپنا نشانہ بنا دینگی اور وہ اپنے جہاز سمیت جلکر خاک ہو جائیگا ۔ اِسلئے وہ آسمان میں ہی چکر کاٹتا رہا ۔ اجازت ملنے پر وہ ایک چھوٹی سی سڑک پر اُترا اور اپنے فوجی افسروں کے ساتھ ایک تہہ خانے

का प्रेसीडेंट अपने बचे खुचे मातहत अफसरों के साथ रहता था. पीटर ने अपने इस आखिरी प्रेसिडेंट के सामने जाकर एक फ़ौजी सलामी दी.

" मेरे दोस्त, मालूम होता है तुम बहुत थक गए हो. लो यह दो बरस पहले वाली शराब. " प्रेसिडेंट ने कहा.

पीटर ने शराब का प्याला एक ही घूंट में साफ़ कर दिया और प्रेसिडेंट पर सवाल भरी एक नज़र डाली. प्रेसिडेंट ने कहा— " पता नहीं आज कल अनाज को क्या होगया है. देखने में तो वैसा ही है पर मज़ा बदल गया है. गेहूं भी हर जगह एक सा नहीं है. किसी किसी जगह तो गेहूं ज़हरीला भी होता है. शायद ऐटम की किरनों का असर उन पर पड़ गया है. गाय और भैंस भी इन किरनों के असर से नहीं बचे. "

यह कह कर प्रेसिडेंट ने एक बछड़े की तरफ़ इशारा किया जिस के दो सिर थे और तीन टांग और फिर बड़बड़ाने लगा— " दो बरस पहले के अनाज को हम बहुत संभाल कर रखते हैं. पता नहीं फिर कब फ़सल हो. साइंस वाले कहते हैं कम से कम बीस बरस तक ऐटमी किरनों का असर रहेगा. तब तक इन्सानी समाज क़ायम भी रहेगा या नहीं किसे मालुम. "

पीटर बड़े ग़ौर से प्रेसिडेंट की बात चुप चाप सुन रहा था. उस ने एक सिगरेट जलाया और आंखें बन्द करलीं ख़यालों का चक्र फिर चलने लगा. वह कांप उठा. " बीस बरस तक इस का असर रहेगा ." उस ने धीरे से कहा. ठीक ही है. दुनिया की आब हवा बदल गई है. पेड़ और पौदे सभी अजीब शकल के हो गए हैं.

کا پریسیڈنٹ اپنے بچے کھچے ماتحت افسروں کے ساتھ رہتا تھا. پیٹر نے اپنے اس آخری پریسیڈنٹ کے سامنے جاکر ایک فوجی سلامی دی .

"میرے دوست' معلوم ہوتا ہے تم بہت تھک گئے ہو. لو یہ دو برس پہلے والی شراب ." پریسیڈنٹ نے کہا .

پیٹر نے شراب کا پیالہ ایک ہی گھونٹ میں صاف کر دیا اور پریسیڈنٹ پر سوال بھری ایک نظر ڈالی . پریسیڈنٹ نے کہا— "پتہ نہیں آج کل اناج کو کیا ہو گیا ہے . دیکھنے میں تو ویسا ہی ہے پر مزہ بدل گیا ہے . گیہوں بھی ہر جگہ ایک سا نہیں ہے. کسی کسی جگہ تو گیہوں زہریلا بھی ہوتا ہے . شاید ایٹم کی کرنوں کا اثر اُن پر پڑ گیا ہے . گائے اور بھینس بھی ان کرنوں کے اثر سے نہیں بچے ."

یہ کہکر پریسیڈنٹ نے ایک بچھڑے کی طرف اشارہ کیا جسکے دو سر تھے اور تین ٹانگ اور پھر بڑبڑانے لگا— "دو برس پہلے کے اناج کو ہم بہت سنبھال کر رکھتے ہیں . پتہ نہیں پھر کب فصل ہو . سائنس والے کہتے ہیں کم سے کم بیس برس تک ایٹمی کرنوں کا اثر رہے گا . تب تک انسانی سماج قائم بھی رہے گا یا نہیں' کسے معلوم "

پیٹر بڑے غور سے پریسیڈنٹ کی بات چپ چاپ سن رہا تھا . اُس نے ایک سگریٹ جلایا اور آنکھیں بند کر لیں . خیالوں کا چکر پھر چلنے لگا . وہ کانپ اُٹھا . " بیس برس تک اِس کا اثر رہے گا . " اُس نے دھیرے سے کہا . ٹھیک ہی ہے . دنیا کی آب ہوا بدل گئی ہے . پیڑ اور پودے سبھی عجیب شکل کے ہوگئے ہیں.

डेढ़ बरस के एक बच्चे पर उसकी नजर पड़ी. उस बच्चे के माथे के बीचो बीच एक आंख थी. उस ने ऐसे हज़ारों बच्चे एशिया और योरप के दौरे में देखे थे. इन सभी बच्चों में कोई न कोई अजीब … जरूर थी. किसी के दो सिर तो किसी के तीन टांग. किसी के …जीब बा… पैर की उंगलियां जुड़ी हुई थीं, जैसे बत्तखों के पैर. कैसी …बरें होती थीं. … यही किसी जमाने में अखबारों की सनसनीदार … भीड़ लग जाती थी. ऐसे लोगों को देखने के लिए तमाशबीनों …ती हैं. पर आज यह सब क़ुदरती चीज़ें समझी

पीटर का सिर चक्कर खान…

…ह तहखाने के एक दूसरे हिस्से …गा. प्रेसिडेंट से इजाजत लेकर …रकारी अफ़सर रहते थे. दौरे की थकावट … चला गया जहाँ और भी कई …खा, सुना या जाना था उसका खयाल … से और जो कुछ उसने …होश में न रहा. जब उसकी दिमाग़ी परेशानी … आने से कई दिन तक वह अपने दौरे की रिपोर्ट तैयार कर के प्रेसिडेंट को …नी दूर हुई तो उसने

प्रेसिडेंट ने रिपोर्ट लेते हुए कहा—"सुना है … पेश की.

…हाल है वहाँ भी लोग जंगलों में रहते हैं और … रूस में भी यही …कहीं पता नहीं. समाजी व्यवस्था भी बिलकुल … वहाँ भी हकूमत का … टूट चुकी है. लोग [illegible] गिरोह बना बना कर जंगलों में पेड़ पत्ते खा कर गुज़ारा कर रहे हैं. किसी की जिन्दगी का कोई ठिकाना नहीं. जहाँ पेड़ पत्ते नहीं मिलते वहाँ आदमी आदमी को खा रहे हैं. खैर, चलो अच्छा ही

ڈیڑھ برس کے ایک بچے پر اُسکی نظر پڑی۔ اُس بچے کے ماتھے کے بیچو بیچ ایک آنکھ تھی۔ اُس نے ایسے ہزاروں بچے ایشیا اور یورپ کے دورے میں دیکھے تھے۔ ان سبھی بچوں میں کوئی نہ کوئی عجیب بات ضرور تھی۔ کسی کے دو سر تو کسی کے تین ٹانگ۔ کسی کے ہاتھ اور پیر کی انگلیاں جڑی ہوئی تھیں جیسے بطخوں کے پیر۔ کوئی عجیب بات تھی۔ یہی کسی زمانے میں اخباروں کی سنسنی دار خبریں ہوتی تھیں اور ایسے لوگوں کو دیکھنے کے لئے تماش بینوں کی بھیڑ لگ جاتی تھی پر آج یہ سب قدرتی چیزیں سمجھی جاتی ہیں۔

پیٹر کا سر چکر کھانے لگا۔ پریسیڈنٹ سے اجازت لے کر وہ تہ خانے کے ایک دوسرے حصے میں چلا گیا جہاں اور بھی کئی سرکاری افسر رہتے تھے۔ دورے کی تھکاوٹ سے اور جو کچھ اُس نے دیکھا سنا یا جانا تھا، اُس کا خیال آنے سے کئی دن تک وہ ہوش میں نہ رہا۔ جب اُس کی دماغی پریشانی دور ہوئی تو اُس نے اپنے دورے کی رپورٹ تیار کر کے پریسیڈنٹ کو پیش کی۔

پریسیڈنٹ نے رپورٹ لیتے ہوئے کہا—"سنا ہے روس میں بھی یہی حال ہے۔ وہاں بھی لوگ جنگلوں میں رہتے ہیں اور وہاں بھی حکومت کا کہیں پتہ نہیں۔ سماجی ویوستھا بھی بالکل ٹوٹ چکی ہے۔ لوگ گروہ بنا بنا کر جنگلوں میں پیڑ پتے کھا کر گزارہ کر رہے ہیں۔ کسی کی زندگی کا کوئی ٹھکانہ نہیں۔ جہاں پیڑ پتے نہیں ملتے وہاں آدمی آدمی کو کھا رہے ہیں۔ خیر،

“और दुश्मन के सिपाही जो लड़ाई के बाद जंगलों में घूम रहे हैं ?” पीटर ने पूछा.

प्रेसिडेंट हंस पड़ा, बोला—“वह बेचारे अब सिपाही कहाँ रहे ? वह तो अब अपनी जान बचाते फिर रहे हैं. अब रूस और अमरीका का सवाल कहाँ रहा ! अब तो सारी मानव जाति का सवाल है.” यह कह कर प्रेसिडेंट ने तीन आंख वाले एक बच्चे की ओर इशारा किया. “क्या तुम समझते हो यह सिलसिला आगे नहीं चलेगा ? मेरे भाई, तुम धोके में हो. आने वाली मानव जाति इन्हीं बच्चों की औलाद होगा. यह बच्चे अपने ही जैसे बच्चे पैदा करेंगे.” प्रेसिडेंट ने लम्बी सांस खींच कर कहा.

“यह क्यों ?” पीटर ने घबरा कर पूछा.

प्रेसिडेंट एक सूखी हंसी हंस कर बोला—“यह हमारी ही ग़लती है. इन विनाशकारी ऐटमी किरनों ने तो हमारी नसल के बीज को ही बदल दिया है. आने वाली दुनिया में यही नसल राज करेगी, जो मानव होते हुए भी हमारे जैसा नहीं है.”

प्रेसिडेंट थोड़ी देर तक सिर पर हाथ धरे बिलकुल चुपचाप बैठा रहा. फिर बोला—“अभी हमें एक बहुत बड़ा काम करना है. अमरीका में हमें फिर से हकूमत क़ायम करनी है. शहर तो तबाह हो चुके और यह भी पता नहीं कि कितने लोग बचे हैं. जो बचे हैं उनका संगठन करना ही हमारा पहला काम है. और हाँ, यह नई शक्ल वाले आदमी, इनकी भी तो गिनती करनी है.” यह कह कर प्रेसिडेंट हंस पड़ा और फिर बोला—“जो मशीन और मशीन के

” اور دشمن کے سپاہی جو لڑائی کے بعد جنگلوں میں گھوم رہے ہیں ؟“ پیٹر نے پوچھا .

پریسیڈنٹ ہنس پڑا' بولا—”وہ بیچارے اب سپاہی کہاں رہے ؟ وہ تو اب اپنی جان بچاتے پھر رہے ہیں . ب روس اور امریکہ کا سوال کہاں رہا ! اب تو ساری مانو جاتی کا سوال ہے . “ یہ کہکر پریسیڈنٹ نے تین آنکھ والے ایک بچے کی اور اشارہ کیا . ” کیا تم سمجھتے ہو یہ سلسلہ آگے نہیں چلے گا ؟ میرے بھائی ' تم دھوکے میں ہو آنے والی مانو جاتی انہیں بچوں کی اولاد ہوگی . یہ بچے اپنے ہی جیسے بچے پیدا کرینگے . “ پریسیڈنٹ نے لمبی سانس کھینچ کر کہا

” یہ کیوں ؟ “ پیٹر نے گھبرا کر پوچھا .

پریسیڈنٹ ایک سوکھی ہنسی ہنسکر بولا—” یہ ہماری ہی غلطی ہے ان وناش کاری ایٹمی کرنوں نے تو ہماری نسل کے بیج کو ہی بدل دیا ہے . آنے والی دنیا میں یہی نسل راج کریگی ' جو مانو ہوتے ہوئے بھی ہمارے جیسی نہیں ہے . “

پریسیڈنٹ تھوڑی دیر تک سر پر ہاتھ دھرے بالکل چپ چاپ بیٹھا رہا . پھر بولا—” ابھی ہمیں ایک بہت بڑا کام کرنا ہے . امریکہ میں ہمیں پھر سے حکومت قائم کرنی ہے . شہر تو تباہ ہوچکے اور یہ بھی پتہ نہیں کہ کتنے لوگ بچے ہیں . جو بچے ہیں اُن کا سنگٹھن کرنا ہی ہمارا پہلا کام ہے . اور ہاں ' یہ نئی شکل والے آدمی ' ان کی بھی تو گنتی کرنی ہے . “ یہ کہکر پریسیڈنٹ ہنس پڑا اور پھر بولا—”جو مشین اور مشین کے

कारखाने बाक़ी बच गए हैं उन्हें फिर से ठीक करना है और साइंस वालों की प्रयोग शालाओं को भी हमें फिर से दुरुस्त करना पड़ेगा''.

"यह सब किस लिये ?" पीटर ने पूछा.

"इन्सान को बरबादी से बचाने के लिये; पिछले दो साल में मानव जाति को जो नुक़सान पहुंचा है उसकी भरपाई करने के लिये!" प्रेसिडेन्ट ने बड़ी गम्भीरता से कहा और उठ खड़ा हुआ.

पीटर फिर हवाई जहाज़ पर बैठा. इंजन की एक गरज के साथ वह ऊपर उठा और हवा में उड़ने लगा. जानी पहचानी जगहों पर उसकी नज़र पड़ने लगी. उसका जहाज़ पुराने न्यूयार्क के ऊपर पहुँचा. "यही न्यूयार्क है. पर यहां तो बड़े बड़े गड्ढे और जंगल के सिवा और कुछ दिखाई नहीं देता. अरे! वह क्या चीज़ पड़ी हुई है? शायद कोई यंत्र है.'' इतना कह कर उसने जहाज़ नीचे उतारा और यंत्र को देखा. "अरे! यहां तो अभी तक ऐटमी किरनें मौजूद हैं. यहां ठहरना ठीक न होगा." और पीटर फिर ऊपर उठा और हवा में उड़ गया.

पीटर ने देखा, एक जगह बहुत से मकान दिखाई देते हैं. वह अपना हथियार संभाले बड़ी होशियारी से उतरा. कितनी ही बार पहले उस पर लुटेरों ने हमला किया था पर उसने इसी हथियार से अपनी जान बचाई थी. उसके नीचे आते ही, बहुत से अंधों, लंगड़ों, अपाहिजों और तीन हाथ, तीन आंख वाले बच्चों की एक भीड़ लग गई.

"मैं आपका दोस्त हूं. मैं सरकार की तरफ़ से आप लोगों की

کارخانے باقی بچ گئے ھیں' اُنھیں پھر سے ٹھیک کرنا ھے اور سائنس والوں کی پریوگ شالاؤں کو بھی ھمیں پھر سے درست کرنا پڑے گا."

''یہ سب کس لئے ؟'' پیٹر نے پوچھا.

''اِنسان کو بربادی سے بچانے کے لئے؛ پچھلے دو سال میں مانو جاتی کو جو نقصان پہنچا ھے اُسکی بھرپائی کرنے کے لئے!" پریسیڈنٹ نے بڑی گمبھیرتا سے کہا اور اُٹھ کھڑا ھوا.

پیٹر پھر ھوائی جہاز پر بیٹھا. انجن کی ایک گرج کے ساتھ وہ اوپر اُٹھا اور ھوا میں اُڑنے لگا. جانی پہچانی جگہوں پر اُس کی نظر پڑنے لگی. اُسکا جہاز پرانے نیویارک کے اوپر پہونچا. ''یہی نیویارک ھے. پر یہاں تو بڑے بڑے گڈھے اور جنگل کے سوا اور کچھ دکھائی نہیں دیتا ارے! وہ کیا چیز پڑی ھوئی ھے؟ شاید کوئی یندتر ھے.'' اتنا کہکر اُسنے جہاز نیچے اُتارا اور یندتر کو دیکھا. ''ارے! یہاں تو ابھی تک ایٹمی کرنیں موجود ھیں. یہاں ٹھہرنا ٹھیک نہ ھوگا.'' اور پیٹر پھر اوپر اُٹھا اور ھوا میں اُڑ گیا.

پیٹر نے دیکھا ایک جگہ بہت سے مکان دکھائی دیتے ھیں. وہ اپنا ھتھیار سنبھالے بڑی ھوشیاری سے اُترا. کتنی ھی بار پہلے اُس پر لٹیروں نے حملہ کیا تھا پر اُس نے اسی ھتھیار سے اپنی جان بچائی تھی. اُسکے نیچے آتے ھی بہت سے اندھوں' لنگڑوں' اپاھجوں اور تین ھاتھ' تین آنکھ والے بچوں کی ایک بھیڑ لگ گئی.

''میں آپ کا دوست ھوں. میں سرکار کی طرف سے آپ لوگوں

के सरदार से कहा, और फिर उन लोगों को शराब और तम्बाकू बांटते हुए बोला—"यह लो शराब ! यह लो तम्बाकू ! यह लड़ाई से पहले की है."

"पुरानी शराब ! पुरानी तम्बाकू ! लाओ ! लाओ !" और लोग आपस में छीना झपटी करने लगे. बहुत देर तक शोर ग़ुल मचता रहा.

इतने में पीटर ने देखा, एक औरत और उसकी गोद में एक बच्चा—वैसा ही अजीब बच्चा, दो मुँह और तीन टांग वाला

"क्या यहां भी कोई ऐटम बम गिरा था ?" पीटर ने सरदार से पूछा.

"नहीं, यहां तो कोई ऐटम बम नहीं गिरा था. पर न जाने क्यों यहां ऐसे अजीब शकल के बच्चे पैदा हो रहे हैं. क्या हम इन्हें मार डालें ?" सरदार ने पूछा.

"नहीं ! ऐसा कभी मत करना. यह असर तो सारी दुनिया में है. अब तो इसी तरह के बच्चे दुनिया के हर मुल्क में पैदा हो रहे हैं. इन्हीं के साथ हमें मिल जुल कर रहना है. आने वाली मानव जाति इन्हीं की औलाद होगी." इतना कहते कहते पीटर की आंखें भर आईं और वह हवाई जहाज़ पर बैठ कर फिर उड़ गया.

उसे अपनी प्यारी बीबी मारगरेट और छोटे बच्चे की याद सताने लगी. "पर अब क्या हो सकता है ? वह तो चले गए. अब क्या फिर वह कभी लौट सकते हैं ? नहीं, कभी नहीं. अब वह नहीं मिल सकते, नहीं मिल सकते. और यह नई शकल वाले बच्चे ! बीस बरस में तो इनका ही राज होगा. इनके साथ मैं कैसे

کے سردار سے کہا اور پھر اُن لوگوں کو شراب اور تمباکو بانٹتے ہوئے بولا - "یہ لو شراب ! یہ لو تمباکو ! یہ لڑائی سے پہلے کی ہے ."

"پرانی شراب ! پرانی تمباکو ! لاؤ ! لاؤ !" اور لوگ آپس میں چھینا جھپٹی کرنے لگے . بہت دیر تک شور غل مچتا رہا .

اتنے میں پیٹر نے دیکھا' ایک عورت اور اُسکی گود میں ایک بچہ—ویسا ہی عجیب بچہ' دو منہ اور تین ٹانگ والا .

"کیا یہاں بھی کوئی ایٹم بم گرا تھا ؟" پیٹر نے سردار سے پوچھا .

"نہیں' یہاں تو کوئی ایٹم بم نہیں گرا تھا . پر نہ جانے کیوں یہاں ایسی عجیب شکل کے بچے پیدا ہو رہے ہیں. کیا ہم اِنہیں مار ڈالیں ؟" سردار نے پوچھا .

"نہیں' نہیں ! ایسا کبھی مت کرنا . یہ اثر تو ساری دنیا میں ہے . اب تو اسی طرح کے بچے دنیا کے ہر ملک میں پیدا ہو رہے ہیں . انہیں کے ساتھ ہمیں مل جل کر رہنا ہے . آنے والی مانو جاتی اِنہیں کی اولاد ہوگی.' اِتنا کہتے کہتے پیٹر کی آنکھیں بھر آئیں اور وہ ہوائی جہاز پر بیٹھ کر پھر اُڑ گیا .

اُسے اپنی پیاری بیوی مارگریٹ اور چھوٹے بچے کی یاد ستانے لگی . "پر اب کیا ہو سکتا ہے ؟ وہ تو چلے گئے . اب کیا پھر وہ کبھی لوٹ سکتے ہیں ؟ نہیں' کبھی نہیں . اب وہ نہیں مل سکتے' نہیں مل سکتے . اور یہ نئی شکل والے بچے ! بیس برس میں تو اِن کا ہی راج ہوگا . اِن کے ساتھ میں کیسے

रहूँगा. यह अजीब जानवर. दो सिर, तीन पैर, तीन आंखें ! इनके साथ मैं कैसे रहूंगा ? यह सब ऐटमी किरनों का ही तो असर है. इनका असर बीस बरस तक रहेगा ?" वह बड़बड़ा रहा था.

हवाई जहाज अब समन्दर पर उड़ रहा था. चारों तरफ़ पानी ही पानी था. नीचे पानी, ऊपर आसमान और कुछ नहीं.

"मेरी प्यारी बीवी.........मारगरेट ....मेरा प्यारा बच्चा.......यह जानवर की शकल के बच्चे.....ऐटमी किरनें... बीस बरस........हा ! हाँ ! हा !" पीटर ठट्ठा मारकर हँस पड़ा और उसने जहाज़ को समन्दर की तरफ़ झुका दिया.

एक अच्छी ख़बर

फ़ैज़ाबाद. ७ नवम्बर. शेख़पुर जाफ़र गाँव, स्टेशन सहावल, ज़िला फ़ैज़ाबाद में परसों एक मसजिद की नींव का पत्थर रखा गया जिसमें गाँव के हिन्दू मुसलमान बड़ी गिनती में शरीक हुए. एक चादर में कुछ ईंटें रखकर ख़लील अहमद साहब, हामिद हुसैन साहब. ज़ुबैर साहब और लाला राम फेर पांडे ने क़ाज़ी रहमत अली साहब को दीं कि वह मसजिद की बुनियाद रख दें. बाद में लोगों को मिठाई बाँटी गई और अल्लाहो अकबर के नारे लगाये गये.

رھونگا . یہ عجیب جانور . دو سر' تین پیر' تین آنکھیں ! ان کے ساتھ میں کیسے رھونگا؟ یہ سب ایٹمی کرنوں کا ھی تو اثر ھے . ان کا اثر بیس برس تک رھے گا ؟" وہ بڑ بڑا رھا تھا .

ھوائی جہاز اب سمندر پر اُڑ رھا تھا . چاروںطرف پانی ھی پانی تھا . نیچے پانی' اوپر آسمان اور کچھ نہیں .

"میری پیاری بیوی......مارگریت.........میرا پیارا بچہ ......یہ جانور کی شکل کے بچے...... ایٹمی کرنیں.. ...بیس برس......ھا ! ھا ! ھا !" پیٹر ٹھٹھا مار کر ھنس پڑا اور اُسنے جہاز کو سمندر کی طرف جھکا دیا .

ایک اچھی خبر

فیض‌آباد. ۷ نومبر. شیخ‌پور جعفر گاؤں' اسٹیشن سہاول' ضلع فیض‌آباد میں پرسوں ایک مسجد کی نیو کا پتھر رکھا گیا جس میں گاؤں کے ھندو مسلمان بڑی گنتی میں شریک ھوئے ایک چادر میں کچھ اینٹیں رکھ کر خلیل احمد صاحب' حامد حسین صاحب' زبیر صاحب اور لالہ رام پھیر پانڈے نے قاضی رحمت علی صاحب کو دیں کہ وہ مسجدکی بنیاد رکھدیں. بعدمیں لوگوں کو مٹھائی بانٹی گئی اور اللہ اکبر کے نعرے لگائے گئے.

दुनिया के मुसलमानों की हालत और उनका फ़र्ज़

(भाई अकबर अली ख़ाँ)

[मीर अकबर अली ख़ाँ साहब बैरिस्टर हैदराबाद ने सिकन्दराबाद की जामा मसजिद के अन्दर २९ सितम्बर को मीलाद के जलसे में हज़रत मुहम्मद की जीवनी पर एक बहुत विचार भरी तक़रीर की जिसके कुछ टुकडे आसान शब्दों में हम नीचे देते हैं. —एडीटर]

ऐसे मौक़ों पर अगर हम सचाई के साथ अपनी हालत को ठीक ठीक समझने और उसे सुधारने की कोशिश न करें तो फिर ऐसे पाक जलसों का करना ही एक रस्मी और रिवाजी चीज़ रह जाता है. और यह बात हज़रत मुहम्मद की ज़िन्दगी के मक़सद के बिलकुल ख़िलाफ़ है. उनकी ज़िन्दगी का मिशन ही यह था कि रवायतों और रसम रिवाजों को तोड़ा जाये. पिछली घटनाओं की क़ीमत केवल यह है कि उनसे आगे की ज़िन्दगी के लिये सबक़ हासिल किया जाये. अकेले एक अल्लाह की पूजा और उसके सब बन्दों की बराबरी और उनमें एकता क़ायम की जाय और दुनिया में जहाँ कहीं भी ज़ुल्म और सितम हो उसके मिटाने के लिये मुसलमान अपनी ज़िन्दगी ख़र्च कर दें.

.. ..

मैं चाहता हूँ कि आप एक निगाह दुनिया के तमाम मुसलमानों

دنیا کے مسلمانوں کی حالت اور اُنکا فرض

(بھائی اکبر علی خاں)

[میر اکبر علی خاں صاحب بیرسٹر حیدرآباد نے سکندرآباد کی جامع مسجد کے اندر ۲۹ ستمبر کو میلاد کے جلسے میں حضرت محمد کی جیونی پر ایک بہت وچار بھری تقریر کی جس کے کچھ ٹکڑے آسان شبدوں میں ہم نیچے دیتے ہیں ۔ --ایڈیٹر]

ایسے موقعوں پر اگر ہم سچائی کے ساتھ اپنی حالت کو ٹھیک ٹھیک سمجھنے اور اُسے سدھارنے کی کوشش نہ کریں تو پھر ایسے پاک جلسوں کا کرنا ہی ایک رسمی اور رواجی چیز رہ جاتا ہے ۔ اور یہ بات حضرت محمد کی زندگی کے مقصد کے بالکل خلاف ہے ۔ اُن کی زندگی کا مشن ہی یہ تھا کہ روایتوں اور رسم رواجوں کو توڑا جائے ۔ پچھلی گھٹناؤں کی قیمت کیول یہ ہے کہ اُن سے آگے کی زندگی کے لئے سبق حاصل کیا جائے ۔ اکیلے ایک اللہ کی پوجا اور اُس کے سب بندوں کی برابری اور اُن میں ایکتا قائم کی جائے اور دنیا میں جہاں کہیں بھی ظلم اور ستم ہو اُس کے مٹانے کے لئے مسلمان اپنی زندگی خرچ کر دیں ۔

....

میں چاہتا ہوں کہ آپ ایک نگاہ دنیا کے تمام مسلمانوں

निज़ाम—(चिट्ठी लेते हुए) भाई साहब गंगा किनारे शाट्या गाँव में हैं ?

सैनिक—जी हाँ ! और गंगा के किनारे ही चौसा उर्फ़ भूसा गाँव में बादशाह हुमायूँ मय अपने लश्कर के है. हमारे और मुग़ल लश्कर के बीच में सिर्फ़ थोरा नद्दी नाम का नाला है.

निज़ाम—तो किसी दिन भी जंग हो सकती है ?

सैनिक—किसी भी दिन हुज़ूर, हज़रते आला ने सब बातें सिलसिले वार सरकार के ख़त में लिखी हैं.

निज़ाम—तुम अच्छी तरह ठहरो, मैं ख़त अभी देखता हूँ.

[सैनिक का जिस दरवाज़े से वह आया था उसी ओर जाना, निज़ाम जिस ओर लाड गई है उस ओर जाता है.]

(६)

लघु-यवनिका

सातवाँ-दृश्य

स्थान—चौसा गाँव में हुमायूँ के शिविर में हुमायूँ का डेरा.

समय—उषाकाल

[तीन तरफ़ डेरे के भीतर कपड़े की क़नातें दिखाई पड़ती हैं, जो बहुमूल्य रेशमी छपे हुए वस्त्र की हैं. दरवाज़ों पर भी रेशमी पर्दे पड़े हैं. ज़मीन पर रंग बिरंगे क़ालीन हैं. सोने के पाये की एक पलंग पर हुमायूँ शयन में मग्न है. पलंग के निकट ही सोने के पायों की चौकियों पर पानदान आदि कुछ वस्तुएँ रखी हैं. डेरे में और भी

उषा काल = रात का पिछला पहर. शिविर = खेमा. वस्त्र = कपड़ा. [illegible] — चीज़ें.

نظام — (چٹھی لیتے ہوئے) بھائی صاحب گنگا کنارے شاٹیہ گاؤں میں ہیں ؟

سینک — جی ہاں اور گنگا کے کنارے ہی چوسا عرف جھوسا گاؤں میں بادشاہ ہمایوں مع اپنے لشکر کے ہیں۔ ہمارے اور مغل لشکر کے بیچ میں صرف تھورا ندی نام کا نالا ہے۔

نظام — تو کسی دن بھی جنگ ہو سکتی ہے ؟

سینک — کسی بھی دن حضور، حضرت اعلیٰ نے سب باتیں سلسلہ وار خط میں لکھی ہیں۔

نظام — تم اچھی طرح ٹھہرو میں خط ابھی دیکھتا ہوں۔

(سینک کا جس دروازے سے وہ آیا تھا اسی اور جانا نظام جس اور لاڈ گئی ہے اس اور جاتا ہے)

(۶)

لگھو یونیکا

ساتواں درشیہ

استھان — چوسا گاؤں میں ہمایوں کے شِوِر میں ہمایوں کا ڈیرا۔

سمے — اوشا کال

(تین طرف ڈیرے کے بھیتر کپڑے کی قناتیں دکھائی پڑتی ہیں جو بہو مولیہ ریشمی چھپے ہوئے بستر کی ہیں۔ دروازوں پر بھی ریشمی پردے پڑے ہیں۔ زمین پر رنگ برنگے قالین ہیں۔ سونے کے پائے کی ایک پلنگ پر ہمایوں شین میں مگن ہے۔ پلنگ کے نکٹ ہی سونے کے پایوں کی چوکیوں پر پاندان آدی کچھ وستوئیں رکھی ہیں ڈیرے میں اور بھی

اوشا کال = رات کا پچھلا پہر۔ شِوِر = خیمہ۔ بستر = کپڑا۔ شین = سونا
وستوئیں = چیزیں۔

(४०५)

की इस समय की हालत पर डालें. खुद हिजाज़ (अरब का वह टुकड़ा जिस में मक्का और मदीना के शहर हैं) में आज मुसलमानों की क्या हालत है ? उनकी रूहानी दुर्दशा क्या है ? उनके सदाचार कितने गिरे हुए हैं ? उनकी तालीमी अवस्था कैसी है ? उनकी रोज़गारी माली हालत क्या है ? उस जम्हूरियत (लोकराज) की जिसके सब से अच्छे नमूने इसलाम ही ने क़ायम किये थे आज मुसलिम सुलतानों और हाकिमों के हाथों किस तरह दुर्गत हो रही है. और क्या जिन मक़सदों को पूरा करने के लिये इसलाम आया था वह आज उन मुल्कों में जहाँ इसलाम ने जन्म लिया और जहाँ वह परवान चढ़ा पूरे हो रहे हैं. क्या आज इसलाम की सच्ची तालीम उन मुल्कों में दी जा रही है जहाँ मुसलमानों की आबादी नब्बे फ़ी-सदी से ज्यादा है और जहाँ हकूमत जाहिरा देखने में मुसलमानों की है ? क्या वह मुल्क जो इसलामी मुल्क कहलाते हैं सच्चे मानी में आज़ाद हैं ? या अमरीकी और बरतानवी साम्राजशाही के हाथ के खिलौने बने हुए हैं ? क्या वहाँ आज लाखों इंसान काफ़ी खाना, कपड़ा, रहने की जगह और मुनासिब तालीम पा रहे हैं ? क्या यह सही नहीं है कि योरप के छोटे छोटे से मुल्क इन इसलामी मुल्कों से कई दरजे बेहतर अपने मुल्क वालों और आम इंसानी क़ौम की सेवा कर रहे हैं ? क्या उन तहरीकों में जो दुनिया में अमन क़ायम करने के लिये और राजकाजी और रोज़गारी बराबरी के लिये चलाई जा रही हैं इन इसलामी मुल्कों का कोई ख़ास हिस्सा है ?

(۴۰۵)

کی اِس سمے کی حالت پر ڈالیں . خود حجاز (عرب کا وہ ٹکڑا جس میں مکہ اور مدینہ کے شہر ہیں) میں آج مسلمانوں کی کیا حالت ہے ؟ اُن کی روحانی درُدشا کیا ہے ؟ اُن کے سدا چار کتنے گرے ہوئے ہیں ؟ اُن کی تعلیمی اوستھا کیسی ہے ؟ اُن کی روزگاری مالی حالت کیا ہے ؟ اُس جمہوریت (لوک راج) کی جس کے سب سے اچھے نمونے اسلام ہی نے قائم کئے تھے آج مسلم سلطانوں اور حاکموں کے ہاتھوں کس طرح درگت ہو رہی ہے . اور کیا جن مقصدوں کو پورا کرنے کے لئے اسلام آیا تھا وہ آج اُن ملکوں میں جہاں اسلام نے جنم لیا اور جہاں وہ پروان چڑھا پورے ہو رہے ہیں . کیا آج اسلام کی سچی تعلیم اُن ملکوں میں دی جا رہی ہے جہاں مسلمانوں کی آبادی نوے فیصدی سے زیادہ ہے اور جہاں حکومت ظاہرا دیکھنے میں مسلمانوں کی ہے ؟ کیا وہ ملک جو اسلامی ملک کہلاتے ہیں سچے معنی میں آزاد ہیں ؟ یا امریکی اور برطانوی سامراج شاہی کے ہاتھ کے کھلونے بنے ہوئے ہیں ؟ کیا وہاں آج لاکھوں انسان کافی کھانا ' کپڑا ' رہنے کی جگہ اور مناسب تعلیم پا رہے ہیں ؟ کیا یہ صحیح نہیں ہے کہ یورپ کے چھوٹے سے چھوٹے ملک اِن اسلامی ملکوں سے کئی درجے بہتر اپنے ملک والوں اور عام انسانی قوم کی سیوا کر رہے ہیں ؟ کیا اُن تحریکوں میں جو دنیا میں امن قائم کرنے کے لئے اور راج کاجی اور روزگاری برابری کے لئے چلائی جا رہی ہیں اِن اسلامی ملکوں کا کوئی خاص حصہ ہے ؟

इंसानी समाज को उसका इंसानी हक़ दिलाने के लिये दुनिया भर में जो राजकाजी और रोज़गारी तहरीकें चल रही हैं उनमें मुसलमानों का या इसलामी मुल्कों का क्या कोई ख़ास हिस्सा है ? क्या दुनिया में कोई एक इसलामी हकूमत भी ऐसी है जिसका मान ऐसा हो कि दूसरे मुल्क उसकी तरफ़ देखने पर मजबूर हों ? इन सब सवालों का सिर्फ़ एक ही जवाब हो सकता है. जहाँ सौ फ़ीसदी मुसलमान आबादी है वहाँ भी आम तौर पर लोगों की हालत इतनी गिरी हुई है और जहालत इतनी बढ़ी हुई है कि हर मुसलमान की गरदन शरम से झुक जाती है.

. . . .

इसकी बुनियादी वजह यह है कि मुसलमान हक़ यानी सचाई को समझने और उस पर अमल करने की जगह ऊपरी चीज़ों रीत और रिवाज की जकड़बन्दियों को ही इसलामी ज़िन्दगी का मक़सद समझ बैठे हैं. और अपना सब से ज़यादा ध्यान इंसानियत की तरफ़ देने के बजाय जात पात, ख़ानदान, जमात और फ़िरक़ाबन्दी को अपनी ज़िन्दगी का असली मक़सद समझ बैठे हैं. इसलिये जब तक हम सचाई पर न आएंगे और ज़ाहिरा सूरतों से ऊपर न उठेंगे और जब तक हम मज़हब और मिल्लत के फ़रक़ों से ऊपर उठ कर इंसानियत की सेवा को अपनी निजात का ज़रिया न बनाएंगे तब तक मेरे ख़याल में मुसलमानों का भविष्य कभी रौशन और कामयाब नहीं हो सकता.

. . . .

انسانی سماج کو اُس کا انسانی حق دلانے کے لئے دنیا بھر میں جو راج کاجی اور روزگاری تحریکیں چل رہی ہیں اُن میں مسلمانوں کا یا اسلامی ملکوں کا کیا کوئی خاص حصہ ہے ؟ کیا دنیا میں کوئی ایک اسلامی حکومت بھی ایسی ہے جس کا مان ایسا ہو کہ دوسرے ملک اُس کی طرف دیکھنے پر مجبور ہوں ؟ اِن سب سوالوں کا صرف ایک ہی جواب ہو سکتا ہے . جہاں سو فیصدی مسلمان آبادی ہے وہاں بھی عام طور پر لوگوں کی حالت اتنی گری ہوئی ہے اور جہالت اتنی بڑھی ہوئی ہے کہ ہر مسلمان کی گردن شرم سے جھک جاتی ہے .

. . . .

اِس کی بنیادی وجہ یہ ہے کہ مسلمان حق یعنی سچائی کو سمجھنے اور اُس پر عمل کرنے کی جگہ اوپری چیزوں ریت اور رواج کی جکڑ بندیوں کو ہی اسلامی زندگی کا مقصد سمجھ بیٹھے ہیں . اور اپنا سب سے زیادہ دھیان اِنسانیت کی طرف دینے کے بجائے جات پات' خاندان' جماعت اور فرقہ بندی کو اپنی زندگی کا اصلی مقصد سمجھ بیٹھے ہیں . اس لئے جب تک ہم سچائی پر نہ آئیں گے اور ظاہرا صورتوں سے اوپر نہ اُٹھیں گے اور جب تک ہم مذہب اور ملت کے فرقوں سے اوپر اُٹھ کر انسانیت کی سیوا کو اپنی نجات کا ذریعہ نہ بنائینگے تب تک میرے خیال میں مسلمانوں کا بھوشیہ کبھی روشن اور کامیاب نہیں ہو سکتا .

. . . .

अगर इसलाम और ईमान के कोई मानी हैं तो वह सिर्फ़ यह हैं कि हर वक़्त हक़ यानी सचाई की तलाश हो. और हक़ की तलाश में हर तरह के फ़ायदे को दिली इतमिनान के साथ क़ुरबान किया जाये. इस तरह जो कोई आलिम या विद्वान, चाहे वह किसी भी मज़हब या मिल्लत का हो, किसी भी इल्म या साइन्स के मैदान में जुटा हुआ है और उसकी कोशिश केवल यह है कि सचाई को मालूम करे और दुनिया के ज्ञान के भंडार को बढ़ावे तो वह ठीक इसलाम के मक़सद को पूरा कर रहा है. इसी तरह वह आदमी या वह जमात या वह देश जो सचाई के साथ दुनिया में बराबरी बिरादरी और मोहब्बत क़ायम करने के लिये कोशिश करता है और लगा रहता है वह ठीक इसलामी तालीम के मुताबिक़ अपने फ़र्ज़ पूरे कर रहा है. इसी तरह वह आदमी या जमात या देश जो इंसाफ़ को क़ायम करने और ज़ुल्म को मिटाने, सामराजी ढाँचों को मिटाकर सच्ची जम्हूरियत यानी सच्चा लोक राज क़ायम करने की कोशिश कर रहा है, वह उस मिशन और उस पयाम (सन्देसे) को ठीक ठीक पूरा कर रहा है जिसे लेकर रसूल करीम हज़रत मुहम्मद इस दुनिया में आए थे, चाहे वह देखने में किसी भी क़ौम या मज़हब से संबन्ध रखता हो, वह इसलाम के सच्चे मक़सद को आगे बढ़ाने में लगा हुआ है.

. . . .

दुनिया के सब मज़हबों की निगाह आदमी पर रही है. आदमी के दिल और दिमाग़ की गहराइयों में शुरू से नेकी और बदी, भलाई और बुराई, ज़ुल्म और इंसाफ़ के बीच खींचा तानी होती रहती है. दुनिया भर के नबियों और पैग़म्बरों ने आदमी को ऊँचा उठाने

اگر اسلام اور ایمان کے کوئی معنی ہیں تو وہ صرف یہ ہیں کہ ہر وقت حق یعنی سچائی کی تلاش ہو . اور حق کی تلاش میں ہر طرح کے فائدے کو دلی اطمینان کے ساتھ قربان کیا جائے . اِس طرح جو کوئی عالم یا ودوان' چاہے وہ کسی بھی مذہب یا ملت کا ہو ' کسی بھی علم یا سائنس کے میدان میں جٹا ہوا ہے اور اُس کی کوشش کیول یہ ہے کہ سچائی کو معلوم کرے اور دنیا کے گیان کے بھنڈار کو بڑھاوے تو وہ ٹھیک اسلام کے مقصد کو پورا کر رہا ہے . اِسی طرح وہ آدمی یا وہ جماعت یا وہ دیش جو سچائی کے ساتھ دنیا میں برابری ' برادری اور محبت قائم کرنے کے لئے کوشش کرتا ہے اور لگا رہتا ہے وہ ٹھیک اسلامی تعلیم کے مطابق اپنے فرض پورے کر رہا ہے . اسی طرح وہ آدمی یا جماعت یا دیش جو انصاف کو قائم کرنے اور ظلم کو مٹانے ' سامراجی ڈھانچوں کو مٹاکر سچی جمہوریت یعنی سچا لوک راج قائم کرنے کی کوشش کر رہا ہے' وہ اس مشن اور اُس پیام (سندیسے) کو ٹھیک ٹھیک پورا کر رہا ہے جسے لے کر رسول کریم حضرت محمد اِس دنیا میں آئے تھے ' چاہے وہ دیکھنے میں کسی بھی قوم یا مذہب سے سمبندھ رکھتا ہو ' وہ اسلام کے سچے مقصد کو آگے بڑھانے میں لگا ہوا ہے .

. . . .

دنیا کے سب مذہبوں کی نگاہ آدمی پر رہی ہے . آدمی کے دل اور دماغ کی گہرائیوں میں شروع سے نیکی اور بدی ' بھلائی اور برائی ' ظلم اور انصاف کے بیچ کھینچا تانی ہوتی رہتی ہے . دنیا بھر کے نبیوں اور پیغمبروں نے آدمی کو اونچا اٹھانے

के लिये जो रास्ता बतलाया है वह यह ही है कि इस खेंचातानी में भलाई को बुराई पर, नेकी को बदी पर और इन्साफ़ को ज़ुल्म पर फ़तह दिलाई जावे.

. . . .

दुनिया के तमाम नबियों ने इस बात की तालीम दी है कि किसी दूसरे इंसान, या जमात या मुल्क की ख़राबी अपनी ख़राबी है और उनकी भलाई और बेहतरी अपनी बेहतरी है. यानी जब कोई आदमी कोई ऐस काम करता है जिस से किसी दूसरे को नुक़सान पहुँचता है तो वह अपना आप नुक़सान करता है. और अगर वह किसी दूसरे की सेवा करता है तो अपनी सेवा करता है. इस तालीम ने यह असर पैदा किया कि अल्लाह के बन्दे चाहे वह किसी क़ौम या मिल्लत के हों ,चाहे किसी मुल्क या मज़हब के हों, सब भाई भाई हैं. नसल का फ़रक़, जमात का फ़रक़, मुल्क, रंग और फ़िरक़े का फ़रक़ जितने भी हैं सब तबाह और बरबाद करने वाली चीज़ें हैं.

. . . .

क़ुरान की सूरए अंबिया में लिखा है:—

"सचमुच तुम सब इंसानों की एक ही क़ौम है और एक ही अल्लाह तुम सब का रब (पालने वाला) है. इसलिये उसी एक की पूजा करो. लोगों ने काट काट कर अपने टुकड़े (अलग अलग गिरोह) कर रखें हैं. पर सब को एक ही अल्लाह के पास जाना है"

हज़रत मुहम्मद ने बार बार यह फ़रमाया है:—

"सब मख़लूक़ (सृष्टि) अल्लाह का कुन्बा है और उन सब में

کے لئے جو راستہ بتلایا ہے وہ یہ ھی ہے کہ اِس کھینچا تانی میں بھلائی کو برائی پر ' نیکی کو بدي پر اور انصاف کو ظلم پر فتح دلائی جاوے .

. . . .

دنیا کے تمام نبیوں نے اِس بات کي تعلیم دی ہے کہ کسی دوسرے انسان ' یا جماعت یا ملک کی خرابی اپني خرابي ہے اور اُن کی بھلائي اور بہتری اپنی بہتری ہے. یعني جب کوئي آدمي کوئي ایسا کام کرتا ہے جس سے کسی دوسرے کو نقصان پہونچتا ہے تو وہ اپنا آپ نقصان کرتا ہے . اور اگر وہ کسی دوسرے کی سیوا کرتا ہے تو اپني سیوا کرتا ہے . اِس تعلیم نے یہ اثر پیدا کیا کہ اللہ کے بندے چاہے وہ کسی قوم یا ملت کے ہوں ' چاہے کسی ملک یا مذہب کے ہوں ' سب بھائی بھائی ھیں . نسل کا فرق ' جماعت کا فرق ' ملک ' رنگ اور فرقہ کا فرق جتنے بھي ھیں سب تباہ اور برباد کرنے والی چیزیں ھیں .

. . . .

قران کی سورہ انبیا میں لکھا ہے :—

" سچ مچ تم سب انسانوں کي ایک ھي قوم ہے اور ایک ھی اللہ تم سب کا رب (پالنے والا) ہے. اس لئے اُسي ایک کی پوجا کرو. لوگوں نے کاٹ کاٹ کر اپنے ٹکڑے (الگ الگ گروہ) کر رکھے ھیں . پر سب کو ایک ھی اللہ کے پاس جانا ہے "

حضرت محمد نے بار بار یہ فرمایا ہے :—

" سب مخلوق (سرشٹی) اللہ کا کنبہ ہے اور اُن سب میں

अल्लाह को सब से प्यारा वह है जो अल्लाह के इस कुन्बे का भला करता है."

इसी तरह जब यहूदियों और ईसाइयों ने यह दावा किया कि जन्नत का ठेका सिर्फ़ उन्हीं को मिला हुआ है तो उसके जवाब में क़ुरान में साफ़ कहा गया कि:—

"यह किसी का ठेका नहीं है. जो आदमी भी अल्लाह पर ईमान रखेगा और नेक काम करेगा अल्लाह उसका भला करेगा."

सूरए आले इमरान में लिखा है :—

"ऐ नबी जिन लोगों के पास दूसरी मज़हबी किताबें हैं उन से कहो कि आओ हम तुम एक ऐसी बात पर मिल जाएं जो हमारे और तुम्हारे बीच एक सी है. वह यह है कि एक तो हम अल्लाह के सिवा किसी के बन्दे बन कर न रहें, दूसरे यह की ख़ुदा की ख़ुदाई में किसी को शरीक न करें, तीसरे यह कि हम में से कोई आदमी किसी आदमी को अल्लाह की जगह अपना मालिक न बनाए. यह तीन बातें अगर वह नहीं मानते तो उन से कह दो कि गवाह रहो कि हम मुसलमान हैं."

यानी मुसलमान की पहचान यही है कि वह इन तीनों चीज़ों पर पूरी तरह क़ायम रहे.

इसके अलावा कोई मुसलमान उस वक़्त तक मुसलमान नहीं कहला सकता जब तक वह दुनिया भर के सब पैग़म्बरों पर और उनकी सब किताबों पर ईमान न लाए और उन्हें ठीक न माने. क़ुरान में यह भी बार बार कहा गया है कि कोई क़ौम, कोई मुल्क और कोई

الله کو سب سے پیارا وہ هے جو الله کے اِس کنبے کا بھلا کرتا هے . "

اِسی طرح جب یہودیوں اور عیسائیوں نے یہ دعوی کیا کہ جنت کا ٹھیکہ صرف اُنھیں کو ملا ھوا ھے تو اِس کے جواب میں قران میں صاف کہا گیا کہ :—

" یہ کسی کا ٹھیکہ نہیں ھے . جو آدمی بھی الله پر ایمان رکھے گا اور نیک کام کرے گا الله اُس کا بھلا کرے گا . "

سورہ آل عمران میں لکھا ھے :—

" اے نبی جن لوگوں کے پاس دوسری مذهبی کتابیں هیں اُن سے کہو کہ آؤ هم تم ایک ایسی بات پر مل جائیں جو همارے اور تمہارے بیچ ایک سی ھے . وہ یہ ھے کہ ایک تو ھم الله کے سوا کسی کے بندے بن کر نہ رهیں ؛ دوسرے یہ کہ خدا کی خدائی میں کسی کو شریک نہ کریں ؛ تیسرے یہ کہ ھم میں سے کوئی آدمی کسی آدمی کو الله کی جگہ اپنا مالک نہ بنائے . یہ تین باتیں اگر وہ نہیں مانتے تو اُن سے کہ دو کہ گواہ رھو کہ ھم مسلمان ھیں ."

یعنی مسلمان کی پہچان یہی ھے کہ وہ اِن تینوں چیزوں پر پوری طرح قائم رھے .

اِس کے علاوہ کوئی مسلمان اُس وقت تک مسلمان نہیں کہلا سکتا جب تک وہ دنیا بھر کے سب پیغمبروں پر اور اُن کی سب کتابوں پر ایمان نہ لائے اور اُنھیں ٹھیک نہ مانے . قران میں یہ بھی بار بار کہا گیا ھے کہ کوئی قوم ' کوئی ملک اور کوئی

ज़ाहिर है कि कुल दुनिया के इंसान भाई भाई हैं और इस इंसानी बिरादरी में से जो आदमी भी सचाई और इंसाफ़ के लिये खड़ा होता है वह उस मिशन को पूरा करता है जो इसलाम के पैग़म्बर का मिशन था.

....

मौलाना रूम ने अपनी मसनवी में उस चरवाहे का ज़िकर किया है जो अल्लाह की तारीफ़ में ऐसी बातें कह रहा था जिन से मालूम होता था कि अल्लाह का कोई जिस्म है. उसकी भी कोई शकल सूरत है हज़रत मूसा को यह सुनकर बुरा लगा. उन्होंने उस चरवाहे को डाँटा. इस पर अल्लाह ने हज़रत मूसा को यह कह कर तंबीह (चेतावनी) की कि तूने हमारे बन्दे को हम से अलग क्यों कर दिया. तुझे मिलाने के लिये भेजा था, फाड़ने के लिये नहीं. प्रेम का धर्म सब दीनों से अलग है वग़ैरा." इस से ज़ाहिर है कि अल्लाह का संबन्ध दिल की गहराइयों से है ऊपरी शकलों या रिवाजों से नहीं. और अगर कोई ईश्वर का बन्दा अपने ढंग पर चाहे वह देखने में कैसा ही भोंडा और बदनुमा ढग क्यों न हो अल्लाह को याद करता है तो किसी दूसरे को यह हक़ नहीं है कि उस पर एतराज़ करे या उसका दिल दुखाये. इसलाम के और बुज़ुर्गों ने भी हमें यह बताया है कि किसी एक आदमी को किसी दुख से छुटकारा दिला देना ज्यादा बड़ी चीज़ है बजाये इसके कि हम हज को जाएँ और हर मंज़िल के ऊपर एक एक हज़ार रकात नमाज़ पढ़ते जाएं. किसी इंसान का दिल हाथ में लेने को सब से बड़ा हज बताया गया है

ظاہر ہے کہ کل دنیا کے انسان بھائي بھائی ھیں اور اِس انساني برادری میں سے جو آدمی بھي سچائی اور انصاف کے لئے کھڑا ھوتا ہے وہ اُس مشن کو پورا کرتا ہے جو اسلام کے پیغمبر کا مشن تھا .

....

مولانا روم نے اپني مثنوی میں اُس چرواہے کا ذکر کیا ہے جو اللہ کی تعریف میں ایسی باتیں کہہ رہا تھا جن سے معلوم ھوتا تھا کہ اللہ کا کوئی جسم ہے . اُس کي بھی کوئی شکل صورت ہے . حضرت موسیٰ کو یہ سن کر برا لگا . اُنھوں نے اُس چرواہے کو ڈانٹا . اِس پر اللہ نے حضرت موسیٰ کو یہ کہکر تنبیہ (چیتاونی) کی کہ "تونے ھمارے بندے کو ھم سے الگ کیوں کردیا . تجھے ملانے کے لئے بھیجا گیا تھا ' پھاڑنے کے لئے نہیں . پریم کا دھرم سب دینوں سے الگ ہے وغیرہ . " اِس سے ظاھر ہے کہ اللہ کا سمبندھ دل کی گہرائیوں سے ہے اوپري شکلوں یا رواجوں سے نہیں . اور اگر کوئی ایشور کا بندہ اپنے ڈھنگ پر چاہے وہ دیکھنے میں کیسا بھی بھونڈا اور بدنما ڈھنگ کیوں نہ ھو اللہ کو یاد کرتا ہے تو کسی دوسرے کو یہ حق نہیں ہے کہ اُس پر اعتراض کرے یا اُس کا دل دکھائے . اسلام کے اور بزرگوں نے بھی ھمیں یہ بتایا ہے کہ کسي ایک آدمی کو کسی دکھ سے چھٹکارا دلا دینا زیادہ بڑي چیز ہے بجائے اِس کے کہ ھم حج کو جائیں اور ھر منزل کے اوپر ایک ایک ھزار رکعت نماز پڑھتے جائیں . کسي انسان کا دل ھاتھ میں لینے کو سب سے بڑا حج بتایا گیا ہے

और हज़ारों कामों से एक दिल की क़ीमत ज़्यादा बताई गई है.

....

अगर हमें इसलाम की इज़्ज़त को बढ़ाना है तो हमें यह तय करना चाहिये कि हम इंसानी मामलों को इंसान की हैसियत से सोचेंगे और हर आदमी को उसके लफ़्ज़ों और उसके कामों से जाँचेंगे और हमारी दोस्ती सचाई, मुहब्बत और इंसाफ़ के लिये होगी, चाहे दूसरा इंसान देखने में किसी भी क़ौम या मज़हब का क्यों न हो और हमारी दुश्मनी हर उस आदमी से होगी जो ग़रीबों को उभारने और सचा लोकराज (जम्हूरियत) क़ायम करने के ख़िलाफ़ ज़ुल्म की ताईद करता हो. इसी तरह हम अपने ईमान को उजागर कर सकेंगे और जिस तंगख़याली और फ़िरक़ा परस्ती की ज़िल्लत में हम फँसे हुए हैं उस से ऊपर उठ सकेंगे. मेरी दरख़्वास्त है कि इस मुबारक जलसे में आप अपने दिल में इस बात का फ़ैसला करें कि हम सियासी, मुल्की और रोज़गारी मसलों में शिया, सुन्नी, मेहदवी, ग़ैर मेहदवी, हिन्दू, ईसाई, पारसी की निगाह से सोचना बन्द कर देंगे. और जो भी सोचेंगे, समझेंगे और अमल करेंगे वह सिर्फ़ इंसाफ़, सचाई और इंसानियत को सामने रख कर करेंगे.

....

मेरा यह दावा है कि अगर फ़ैज़ाबाद के श्री अक्षय ब्रह्मचारी की तरह एक दरजन मुसलमान भाई अपने हिन्दू भाइयों के दुख दर्द पर अपने को क़ुरबान करने के लिये तैयार हो जाएँ और एक

اور ہزاروں کموں سے ایک دل کی قیمت زیادہ بتائی گئی ہے ۔

....

اگر ہمیں اسلام کی عزت کو بڑھانا ہے تو ہمیں یہ طےکرنا چاہئے کہ ہم انسانی معاملوں کو انسان کی حیثیت سے سوچیںگے اور ہر آدمی کو اُس کے لفظوں اور اس کے کاموں سے جانچیں گے اور ہماری دوستی سچائی، محبت اور انصاف کے لئے ہوگی، چاہے دوسرا انسان دیکھنے میں کسی بھی قوم یا مذہب کا کیوں نہ ہو اور ہماری دشمنی ہر اُس آدمی سے ہوگی جو غریبوں کو اُبھارنے اور سچا لوک راج (جمہوریت) قائم کرنے کے خلاف ظلم کی تائید کرتا ہو ۔ اسی طرح ہم اپنے ایمان کو اُجاگر کر سکیںگے اور جس تنگ خیالی اور فرقہ پرستی کی ذلت میں ہم پھنسے ہوئے ہیں اُس سے اوپر اُٹھ سکیں گے ۔ میری درخواست ہے کہ اِس مبارک جلسےمیں آپ اپنےدل میں اِس بات کا فیصلہ کریں کہ ہم سیاسی، ملکی اور روزگاری مسئلوں میں شیعہ، سنی، مہدوی، غیر مہدوی، ہندو، عیسائی، پارسی کی نگاہ سے سوچنا بند کردیں گے ۔ اور جو بھی سوچیں گے، سمجھیں گے اور عمل کریںگے وہ صرف انصاف، سچائی اور انسانیت کو سامنے رکھ کر کریںگے ۔

....

میرا یہ دعویٰ ہے کہ اگر فیض‌آباد کے شری اکشے برہمچاری کی طرح ایک درجن مسلمان بھائی اپنے ہندو بھائیوں کے دکھ درد پر اپنے کو قربان کرنے کےلئے تیار ہو جائیں اور ایک درجن

लिये इस ऊँचे एख़लाक़ का सबूत दें तो बहुत जल्दी हमारे मुल्क की हवा बदल जाए और फ़िरक़ा परस्ती का पागलपन जो, अब भी हमारे मुल्क में फैला हुआ है, हमेशा के लिये दूर हो जाए और हम सब सच्चे और बेहतर इंसान बन सकें.

. . . .

ख़ुदा करे कि हम होश में आएँ, सही रास्ते पर चलें और मुल्क की इन मुसीबतों को मिल कर ईमानदारी के साथ और हर तरह की क़ुरबानी कर के दूर कर सकें.

———

जब कोई आदमी तेरे ऐसे गुनाह को माफ़ करदे जो तूने नहीं किया तो उसका अपना एक ऐसा गुनाह माफ़ हो जाता है जो उस ने किया है.

× × × × ×

जो आदमी अपने पड़ोसी की मिट्टी में सब से अच्छा लिबास पहनता है, वह बहुत जल्द अपने बेटे की बरस गाँठ पर पुराने ख़राब कपड़े पहनेगा.

—ख़लील जिब्रान

———

لئے اِس اونچے اخلاق کا ثبوت دیں تو بہت جلدی ہمارے ملک کی ہوا بدل جائے اور فرقہ پرستی کا پاگل پن' جو اب بھی ہمارے ملک میں پھیلا ہوا ہے' ہمیشہ کے لئے دور ہو جائے اور ہم سب سچے اور بہتر انسان بن سکیں ۔

. . . .

خدا کرے کہ ہم ہوش میں آئیں' صحیح راستے پر چلیں اور ملک کی اِن مصیبتوں کو مل کر ایمانداری کے ساتھ اور ہر طرح کی قربانی کر کے دور کر سکیں ۔

———

جب کوئی آدمی تیرے ایسے گناہ کو معاف کردے جو تونے نہیں کیا تو اُسکا اپنا ایک ایسا گناہ معاف ہو جاتا ہے جو اُس نے کیا ہے ۔

× × × × ×

جو آدمی اپنے پڑوسی کی مٹی میں سب سے اچھا لباس پہنتا ہے' وہ بہت جلد اپنے بیٹے کی برس گانٹھ پر پرانے خراب کپڑے پہنے گا ۔

—خلیل جبران

———

जन्नत का बँटवारा

(भाई अब्दुल हलीम अन्सारी)

अन्तरक़ौमी सभा ने सर ओवन डिकसन को कश्मीर का झगड़ा चुकाने और अमन की फ़िज़ा क़ायम करने की ग़रज़ से कश्मीर भेजा था.

उनकी आखिरी तजवीज़ है कश्मीर की तक़सीम यानी बँटवारा !

कश्मीर जन्नत है इसलिये कश्मीर की तक़सीम के मानी हुए जन्नत की तक़सीम यानी स्वर्ग का बँटवारा !

स्वर्ग का बँटवारा मानी स्वर्ग के हिस्से बखरे यानी स्वर्ग के टुकड़े टुकड़े.

और कश्मीर के बँटवारे का कारन आखिर ?

फ़क़त एक ख़ूनी तजवीज़

केवल एक भयानक सुझाव

जिस में दो हकूमतों का भयानक टकराव

जिसकी कल्पना से थर्रा जाय भूत काल !

तक़सीम के सवाल पर हर पारटी ने कश्मीर की घाटी को अपनी तरफ़ लेना चाहा और हर एक ने अपने नज़दीक यह समझा कि जिसके हाथ से घाटी गई वह घाटे में रहा. इसलिये दो हकूमतों के दरम्यान यह मामला गोल मोल हो कर रह गया—मगर किसी

جنت کا بٹوارہ

(بھائی عبدالحلیم انصاری)

انتر قومی سبھا نے سر اوون ڈکسن کو کشمیر کا جھگڑا چکانے اور امن کی فضا قائم کرنے کی غرض سے کشمیر بھیجا تھا .

اُن کی آخری تجویز ہے کشمیر کی تقسیم یعنی بٹوارہ !

کشمیر جنت ہے اِس لئے کشمیر کی تقسیم کے معنی ہوئے جنت کی تقسیم یعنی سورگ کا بٹوارہ !

سورگ کا بٹوارہ معنی سورگ کے حصے بخرے یعنی سورگ کے ٹکڑے ٹکڑے .

اور کشمیر کے بٹوارے کا کارن آخر ؟

فقط ایک خونی تجویز

کیول ایک بھیانک سجھاو

جس میں دو حکومتوں کا بھیانک ٹکراو

جس کی کلپنا سے تھرا جائے بھوت کال !

تقسیم کے سوال پر ہر پارٹی نے کشمیر کی گھاٹی کو اپنی طرف لینا چاہا اور ہر ایک نے اپنے نزدیک یہ سمجھا کہ جس کے ہاتھ سے گھاٹی گئی وہ گھاٹے میں رہا اس لئے دو حکومتوں

काम के न करने के लिये थोड़ा सा हीला बहाना भी बाज़ वक़्त बड़ा काम दे जाता है और बाज़ समय किसी काम में थोड़ी सी देरी भी बड़े काम के लिये अच्छाई और बेहतरी का सबब बन जाती है. इसीलिये किसी जल्दी वाले काम में अड़चन डाल दी जाती है और जान बूझ कर सुलझावे की जगह उलझावा—कश्मीर का मामला भी कुछ इसी तरह का है.

कश्मीर मारके की जगह है और जंगी निगाह से भी बहुत अहम मुक़ाम, और जुग़राफ़ियाई विचार से भी बहुत अहम और ऊँचा !

यों देखने में तो वह है सब से अलग थलग और एक तरफ़, मगर दुनिया की राजनीति में प्राकृतिक स्थिति के लिहाज़ से उसको ख़ास दरजा और महत्व हासिल है. इसलिये आज की दुनिया के "रुस्तम और क़ारून (कुबेर)" उसे ललचाई हुई नज़रों से देखते हैं. और जब उसके जन्नती बाग़ों और क़ुदरती ख़ज़ानों पर ध्यान दौड़ाते हैं तो मुँह में पानी भर भर लाते हैं.

हिन्दुस्तान की तक़सीम—पंजाब और बंगाल की तक़सीम और उनके ख़ूनी नतीजे कुछ दिन की बात है देखे जाते हैं. जब भी उनकी कल्पना करो—रूह काँप उठती है. शरीर का बाल बाल थर्रा जाता है—शरीफ़ से शरीफ़ ख़ानदानों की तबाही, बरबादी और ख़ाना बदोशी व फ़ाक़ाकशी ख़ून के आँसू रुलाती है. उजड़े उजड़े घरों के बिगड़े बिगड़ाए नक़्शे और इबरतनाक तसवीरें दिल हिला देने वाली चीज़ें हैं.

कहने को तो यह कह देना आसान है कि बँटवारा हो. और बोलने में भी यह शब्द है छोटा, मगर जब बँटवारे का धारा बहता

کام کے نہ کرنے کے لئے تھوڑا سا حیلہ بہانہ بھی بعض وقت بڑا کام دے جاتا ھے اور بعض سمے کسي کام میں تھوڑی سی دیری بھي بڑے کام کے لئے اچھائی اور بہتری کا سبب بن جاتی ھے . اِسی لئے کسي جلدي والے کام میں اڑچن ڈال دی جاتی ھے اور جان بوجھ کر سلجھاوے کی جگہ اُلجھاوا—کشمیر کا معاملہ بھی کچھ اسی طرح کا ھے .

کشمیر معرکے کي جگہ ھے اور جنگي نگاہ سے بھی بہت اہم مقام ٠ اور جغرافیائی وچار سے بھي بہت اہم اور اونچا !

یوں دیکھنے میں تو وہ ھے سب سے الگ تھلگ اور ایک طرف' مگر دنیا کی راجنیتي میں پراکرتک اِستتھي کے لحاظ سے اُس کو خاص درجہ اور مہتو حاصل ھے . اس لئے آج کی دنیا کے "رستم اور قارون (کبیر)" اُسے للچائی ہوئی نظروں سے دیکھتے ھیں . اور جب اُس کے جنتی باغوں اور قدرتی خزانوں پر دھیان دوڑاتے ھیں تو منہ میں پانی بھر بھر لاتے ھیں .

ہندستان کی تقسیم—پنجاب اور بنگال کی تقسیم اور اُن کے خونی نتیجے کچھ دن کی بات ھے دیکھے جاتے ھیں . جب بھی اُن کی کلپنا کرو—روح کانپ اُٹھتی ھے . شریر کا بال بال تھرا جاتا ھے—شریف سے شریف خاندانوں کی تباھی' بربادی اور خانہ بدوشي و فاقہ کشی خون کے آنسو رلاتی ھے . اُجڑے اُجڑے گھروں کے بگڑے بگڑائے نقشے اور عبرت ناک تصویریں دل ھلادینے والی چیزیں ھیں .

کہنے کو تو یہ کہ دینا آسان ھے کہ بٹوارہ ھو . اور بولنے میں بھی یہ شبد ھے چھوٹا ' مگر جب بٹوارے کا دھارا بہتا

अनेक प्रकार की बेश क़ीमती सजावट है. शमादान जल रहा है. जिसका प्रकाश हुमायूँ के मुख पर पड़ रहा है. हुमायूँ का वर्णन निरर्थक है. क्योंकि सभी उसके चित्रों को देख चुके हैं. नेपथ्य से गान की ध्वनि आ रही है.

गाना

पाँव पसारे सोने वाले दुश्मन है बेदार !
दुश्मन है बेदार ग़ाफ़िल, दुश्मन है बेदार !
जीवन दीप की जोत हवा है
नींद और मौत के बीच में क्या है ?
साँसों की दीवार है ग़ाफ़िल, साँसों की दीवार !
दुश्मन है बेदार ग़ाफ़िल दुश्मन है बेदार !
सोने वाले बेख़बरों पर, जागते रहने वाले अकसर
कर जाते हैं वार रे ग़ाफ़िल, कर जाते हैं वार
दुश्मन है बेदार, ग़ाफ़िल दुश्मन है बेदार
उठ अपनी शक्ती को जगाले, कोई तुझ पर हाथ न डाले
टोली के सरदार रे ग़ाफ़िल, टोली के सरदार
दुश्मन है बेदार, ग़ाफ़िल दुश्मन है बेदार

[नेपथ्य में एकाएक कोलाहल होता है. धीरे-धीरे कोलाहल बढ़ता है. लड़ाई के ढोल बजने लगते हैं. गान की ध्वनि इस कोलाहल में डूब जाती है. कुछ ही देर में डेरे के परदे को उठा कर हुमायूँ का सिपह सालार सैनिक वेष में आता है.]

सिपहसालार—(हुमायूँ के पलंग के निकट आकर जोर से)

ایک پرکار کی بیش قیمتی سجاوٹ ہے شمع دان جل رہا ہے جس کا پرکاش ہمایوں کے مکھ پر پڑ رہا ہے۔ ہمایوں کا ورنن نرارتھک ہے کیونکہ سبھی اس کے چتروں کو دیکھ چکے ہیں۔ نے پتھ سے گان کی دھون آ رہی ہے۔

گیت

پاؤں پسارے سونے والے دشمن ہے بیدار
دشمن ہے بیدار غافل دشمن ہے بیدار
جیون دیپ کی جیوت ہوا ہے نیند اور موت کے بیچ میں کیا ہے
سانسوں کی دیوار ہے غافل سانسوں کی دیوار
دشمن ہے بیدار غافل دشمن ہے بیدار
سونے والے بے خبروں پر جاگتے رہنے والے اکثر
کر جاتے ہیں وار رے غافل کر جاتے ہیں وار
دشمن ہے بیدار غافل دشمن ہے بیدار
اٹھ اپنی شکتی کو جگا لے کوئی تجھ پر ہاتھ نہ ڈالے
ٹولی کے سردار رے غافل ٹولی کے سردار
دشمن ہے بیدار غافل دشمن ہے بیدار

(نے پتھ میں یکایک کولاہل ہوتا ہے۔ دھیرے دھیرے کولاہل بڑھتا ہے۔ لڑائی کے ڈھول بجنے لگتے ہیں۔ گان کی دھونی اس کولاہل میں ڈوب جاتی ہے۔ کچھ ہی دیر میں ڈیرے کے پردے کو اٹھا ہمایوں کا سپہ سالار سینک ویش میں آتا ہے)

سپہ سالار۔ (ہمایوں کے پلنگ کے نکٹ آکر زور سے)

है तो काट ही काट करता चला जाता है. फिर वह किसी की परवा नहीं करता. किसी की रिआयत नहीं रखता. जो भी उसकी धार पर चढ़ जाये उसको काट कर रख देता है और मार कर फेंक देता है.

बँटवारा पच्छिमी तहज़ीब की राजनीत में "इंसाफ़" का नाम है.

या इंसाफ़ नाम है बँटवारे का,

और अंतरक़ौमी बँटवारा सियासी तरकीब का ख़ूबसूरत जाल है. बिदेसी हाथों से बटा और बुना हुआ

जहाँ मौक़ा देखा जाता है वहाँ वह फेंका जाता है—यह जाल राजनीतिक भी है, साइंटिफ़िक भी और स्वार्थिक भी !

आज इस जाल के लिये जो शिकार तैयार हैं वह कश्मीर और कोरिया हैं.

कश्मीर के बँटवारे का मतलब:

कश्मीर के टुकड़े टुकड़े

कश्मीर के टुकड़ों का मतलब :

कश्मीर की वादी वादी के टुकड़े

जन्नत के वासी वासी के टुकड़े

ज़मीन के टुकड़े, शरीर के टुकड़े

घाटी घाटी के टुकड़े.

कश्मीर की तक़सीम के मानी:

झीलों की तक़सीम, मेलों की तक़सीम

आकाश और पानी की तक़सीम और उस हुस्न की रानी की तक़सीम

هے تو کات هی کات کرتا چلا جاتا هے . پهر وہ کسی کی پرواہ نهیں کرتا کسی کی رعایت نهیں رکهتا . جو بهی اُس کی دهار پر چڑه جائے اُس کو کات کر رکهدیتا هے اور مار کر پهینک دیتا هے .

بتوارہ پچهمی تہذیب کی راجنیت میں " انصاف " کا نام هے .

یا انصاف نام هے بتوارے کا ‘

اور انتر قومی بتوارہ سیاسی ترکیب کا خوبصورت جال هے . بدیسی هاتهوں سے بتا اور بنا هوا

جهاں موقع دیکها جاتا هے وهاں وہ پهینکا جاتا هے—یہ جال راجنیتک بهی هے ‘ سائنتفک بهی اور سوارتهک بهی !

آج اِس جال کے لئے جو شکار تیار هیں وہ کشمیر اور کوریا هیں .

کشمیر کے بتوارے کا مطلب :

کشمیر کے تکڑے تکڑے .

کشمیر کے تکڑوں کا مطلب :

کشمیر کی وادی وادی کے تکڑے

جنت کے واسی واسی کے تکڑے

زمین کے تکڑے ‘ شریر کے تکڑے

گهاتی گهاتی کے تکڑے

کشمیر کی تقسیم کے معنی :

جهیلوں کی تقسیم ‘ میلوں کی تقسیم

آکاش اور پانی کی تقسیم اور اُس حسن کی رانی کی تقسیم

आखिर हिन्दू की तक़सीम, मुसलमान की तक़सीम

यही सब से नाज़ुक चीज़ है और यही बड़ी टेढ़ी खीर है.

बँटवारे का एक ख़ौफ़नाक नतीजा यह भी हो सकता है कि इस घाट भी और उस पाट भी—दोनों ओर,

तलवारें खिंची हों. फ़ौजें खड़ी हों—लेकिन वह तलवारें किसके लिये ?

अपने ही भाइयों का खून पीने के लिये

अपने ही बच्चों का गला काटने के लिये—और......

गुन्डे और लफ़ंगे इधर उधर से टूट पड़ेंगे शैतान तूफ़ान पहाड़ों से कूद पड़ेंगे.

लाग डाट होगी, मार काट होगी. छेड़ा छाड़ी होगी, लूटा मारी होगी.

आबरू रेज़ी होगी. तूफ़ाने बे तमीज़ी होगा—ज़ुल्म और अत्याचार की बहुतायत होगी,

गोया वक़्त से पहले "जन्नत में क़यामत" होगी यानी स्वर्ग में प्रलय.

सूरज और चाँद आसमान की आँखें बन जाएंगे जो इंसानी वहशत और बरबरता का तमाशा देखा करेंगे—आखिर उन खूनी नज़ारों के देखने की ताब न लाकर घाटियों के पीछे छिप जाया करेंगे या बादलों के अन्दर मुंह डाल दिया करेंगे.

सर डिकसन की एक तजवीज़ यह भी है कि चुनाव के समय यानी राय शुमारी के दिनों में यू. एन. ओ. वहाँ की सरकार हो.

آخر ہندو کی تقسیم ، مسلمان کی تقسیم

یہی سب سے نازک چیز ہے اور یہی بڑی ٹیڑھی کھیر ہے ۔

بٹوارے کا ایک خوفناک نتیجہ یہ بھی ہوسکتا ہے کہ اِس گھاٹ بھی اور اُس پاٹ بھی—دونوں اور ،

تلواریں کھنچی ہوں ۔ فوجیں کھڑی ہوں—لیکن وہ تلواریں کس کے لئے ؟

اپنے ہی بھائیوں کا خون پینے کے لئے

اپنے ہی بچوں کا گلا کاٹنے کے لئے—اور.........

غنڈے اور لفنگے اِدھر اُدھر سے ٹوٹ پڑیں گے ۔ شیطان طوفان پہاڑوں سے کود پڑیں گے ۔

لاگ ڈاٹ ہوگی ، مار کاٹ ہوگی ۔ چھیڑا چھاڑی ہوگی ، لوٹا ماری ہوگی

آبروریزی ہوگی ۔ طوفان بے تمیزی ہوگا—ظلم اور اتیاچار کی بہتایت ہوگی ،

گویا وقت سے پہلے '' جنت میں قیامت '' ہوگی یعنی سورگ میں پرلے

سورج اور چاند آسمان کی آنکھیں بن جائیں گے ، جو انسانی وحشت اور بربرتا کا تماشا دیکھا کریں گے—آخر اُن خونی نظاروں کے دیکھنے کی تاب نہ لاکر گھاٹیوں کے پیچھے چھپ جایا کریں گے یا بادلوں کے اندر منہ ڈال دیا کریں گے ۔

سر ڈکسن کی ایک تجویز یہ بھی ہے کہ چناؤ کے سمے یعنی رائے شماری کے دنوں میں یو ۔ این ۔ او ۔ وہاں کی سرکار ہو ۔

कश्मीर का सारा निज़ाम और पूरा प्रबन्ध सोलह आने उसके हाथ में हो—इस तरकीब से यू. एन. ओ. का असर और अधिकार कश्मीर पर जमाने का अच्छा मौक़ा मिला—मतलब उनका यह कि यू. एन. ओ. को उस ख़ास समय तक के लिये कश्मीर की सरकार और उस जन्नत का "दारोग़ा" या सरदार माना जाए.

यू. एन. ओ. कश्मीर में अमन और शान्ति क़ायम करने में भाग ले रही है—इस भाग में बेशक नाम है अमन शान्ति का—मगर काम है अशान्ति का,

अमन के नाम से अगर तक़सीम हो गई, सुलह के नाम से अगर बँटवारा हो गया—तो,

ऐसी सुलह बदनाम होगी और ऐसा अमन अपने मन में पशेमान होगा.

ज़रा ध्यान दो तो कितना अचरज होता है यह देख कर कि बँटवारे की लानत कहाँ तक पहुँची—जन्नत पर भी बँटवारे का जाल बट बट कर डाला जा रहा है और मिल मिल कर फेंका जा रहा है—हिन्दुस्तान में फ़साद की आग लगा कर अब जन्नत में फ़साद उगाने और आग लगाने की कोशिश है.

"आदम" से जन्नत में पाप किसने कराया और "हव्वा" को पाप में शरीक किसने बनाया. दोनों धोका खाकर शैतान के फ़रेब के जाल में आ गये और जन्नत से निकाले गये. अब भी हर उसके वासी को फ़रेब के जाल से बचना चाहिये वरना जन्नत से निकाला जायेगा—इसलिये कि उसने अपनी दोज़ख़ आप बनाई है और

کشمیر کا سارا نظام اور پورا پربندھ سولہ آنے اُس کے هاتھ میں هو— اِس ترکیب سے یو . این . او . کا اثر اور ادھیکار کشمیر پر جمانے کا اچھا موقع ملا—مطلب اُن کا یہ کہ یو . این . او . کو اُس خاص سمے تک کے لئے کشمیر کی سرکار اور اُس جنت کا '' داروغہ '' یا سردار مانا جائے .

یو . این . او . کشمیر میں امن اور شانتی قائم کرنے میں بھاگ لے رهی هے—اِس بھاگ میں بے شک نام هے امن شانتی کا—مگر کام هے اشانتی کا '

امن کے نام سے اگر تقسیم هوگئی ' صلح کے نام سے اگر بٹوارہ هوگیا—تو '

ایسی صلح بدنام هوگی اور ایسا امن اپنے من میں پشیمان هوگا .

ذرا دھیان دو تو کتنا اچرج هوتا هے یہ دیکھکر کہ بٹوارے کی لعنت کہاں تک پہونچی—جنت پر بھی بٹوارے کا جال بٹ بٹ کر ڈالا جا رها هے اور مل مل کر پھینکا جا رها هے—هندستان میں فساد کی آگ لگا کر اب جنت میں فساد اُگانے اور آگ لگانے کی کوشش هے .

''آدم'' سے جنت میں پاپ کس نے کرایا اور ''حوا'' کو پاپ میں شریک کس نے بنایا ؟ دونوں دھوکا کھا کر شیطان کے فریب کے جال میں آگئے اور جنت سے نکالے گئے. اب بھی هر اُس کے واسی کو فریب کے جال سے بچنا چاهئے ورنہ جنت سے نکالا جائے گا—اس لئے کہ اُس نے اپنی دوزخ آپ بنائی هے اور آپ هی اپنے

अगर जन्नत तक़सीम हो गई, अगर स्वर्ग का बँटवारा हो गया
ो दोज़खों में बहुत इज़ाफ़ा हो जायगा. यानी नरकों की कसरत
। जायगी.

जन्नत असल में वह जगह है—जहाँ शान्ति रहती बसती है.
जहाँ राहत फूलती फलती है.
जहाँ अमन आफ़ियत की हवायें चलती हैं और जहाँ रूहानियत
लहरें उठती हैं.
जहाँ के आकाश से रहमत के बादल उमंडते हैं और जहाँ की
ज़ा से मुहब्बत के राग बरसते हैं.
जहाँ ज़िन्दगियाँ अमर रहती हैं
जहाँ आत्माएं मगन रहती हैं.

शान्ति का जहाँ मकान है
अशान्ति का जहाँ इमकान नहीं.
अमन की जो जगह है
बदअमनी का जहाँ गुमान नहीं.
ऐसी जगह वह अशान्ति लाना चाहते हैं जहाँ शान्ति ही
ान्ति है ऐसे मुक़ाम पर वह असन्तोश फैलाना चाहते हैं जहाँ
न्तोश ही सन्तोश है.

اگر جنت تقسیم ہو گئی، اگر سورگ کا بٹوارہ ہو گیا تودوزخوں
میں بہت اضافہ ہو جائیگا. یعنی نرکوں کی کثرت ہو جائیگی.

جنت اصل میں وہ جگہ ہے جہاں شانتی رہتی بستی ہے.
جہاں راحت پھولتی پھلتی ہے .
جہاں امن عافیت کی ہوائیں چلتی ہیں اور جہاں روحانیت
کی لہریں اُٹھتی ہیں.
جہاں کے آکاش سے رحمت کے بادل اُمنڈتے ہیں اور جہاں کی
فضا سے محبت کے راگ برستے ہیں .
جہاں زندگیاں امر رہتی ہیں .
جہاں آتمائیں مگن رہتی ہیں .

شانتی کا جہاں مکان ہے
اشانتی کا جہاں اِمکان نہیں.
امن کی جو جگہ ہے
بد امنی کا جہاں گمان نہیں
ایسی جگہ وہ اشانتی لانا چاہتے ہیں جہاں شانتی ہی
شانتی ہے. ایسے مقام پر وہ اسنتوش پھیلانا چاہتے ہیں جہاں
سنتوش ہی سنتوش ہے .

इंडियन नेशन

अंगरेज़ी शब्द 'नेशन' के जोड़ का कोई शब्द हिन्दी में नहीं है. जो दो शब्द क़ौम और राष्ट्र रिवाज में हैं वह न तो देस में सब जगह पहुंच पाए हैं और न उन शब्दों में अंगरेज़ी शब्द नेशन के भाव का बोझा उठाने की सामर्थ है. राष्ट्र तो अभी शहरों में ही चक्कर काटता फिरता है. हाँ, क़ौम शब्द घर घर में पहुँच चुका है. पर वह नेशन के रूप में नहीं पहुँचा. वह पहुंचा है उस 'जात' का भाव लेकर जो 'जात' नेशन को खाए जा रही है. इसलिये क़ौम शब्द अगर नेशन की जगह ले बैठे तो बिलकुल ठीक नहीं रहेगा. भले ही वह हर तमस्सुक में मौजूद हो और हर ऐरे ग़ैरे की ज़बान पर चढ़ा हो. हो सकता है कि नेशन के लिये हिन्दुस्तान में किसी शब्द के न होने से नेशन न बन पा रहा हो और यह भी हो सकता है कि नेशन बनने पर अपने आप कोई शब्द किसी अपढ़ के मुंह से निकल पड़े. अपढ़ हम इसलिये लिख रहे हैं कि साफ़ सुथरा और सच्चा भाव लिये हुए शब्द सदा अपढ़ ही गढ़ते हैं. पढ़े लिखे तो खींच तान कर शब्द की रचना करते हैं. कभी कभी पढ़े लिखे भी बड़ा अच्छा शब्द बना देते हैं. पर वह उसी वक़्त जब वह अपने को अपढ़ भाव में ले जाते हैं. जैसे 'कलर ब्लाइन्ड' के लिये 'रंगौंधा' शब्द गढ़ा साहित्य के डाक्टर अब्दुल हक़ ने और यह गढ़ा 'रतौंधा' को तराज़ू में रख कर.

انڈین نیشن

انگریزي لفظ 'نیشن' کے جوڑ کا کوئی شبد هندي میں نہیں هے . جو دو شبد قوم اور راشٹر رواج میں هیں وہ نہ تو دیس میں سب جگہ پہنچ پائےهیں اور نہ اُن شبدوں میں انگریزي شبد نیشن کے بھاو کا بوجھا اُٹھانے کی سامرتھ هے. راشٹر تو ابھی شہروں میں هی چکر کاٹتا پھرتا هے . هاں' قوم شبد گھر گھر میں پہونچ چکا هے. پر وہ نیشن کے روپ میں نہیں پہونچا . وہ پہونچا هے اُس 'جات' کا بھاؤ لیکر جو 'جات' نیشن کو کھائے جا رهی هے . اسلئے قوم شبد اگر نیشن کي جگہ لے بیٹھے تو بالکل ٹھیک نہیں رهیگا . بھلے هی وہ هر تمسک میں موجود هو اور هر ایرے غیرے کی زبان پر چڑھا هو . هو سکتا هے کہ نیشن کے لئے هندستان میں کسی شبد کے نہ هونے سے نیشن نہ بن پا رهی هو اور یہ بھی هو سکتا هے کہ نیشن بننے پر اپنے آپ کوئي شبد کسی اپڑھ کے منہ سے نکل پڑے . اپڑھ هم اسلئے لکھ رهے هیں کہ صاف ستھرا اور سچا بھاو لئے هوئے شبد سدا اپڑھ هی گڑھتے هیں. پڑھے لکھے تو کھینچ تان کر شبد کی رچنا کرتے هیں . کبھی کبھی پڑھے لکھے بھی بڑا اچھا شبد بنا دیتےهیں . پر وہ اُسي وقت جب وہ اپنے کو اپڑھ بھاو میں لے جاتے هیں . جیسے "کلر بلائنڈ' کے لئے 'رنگوندھا' شبد گڑھا ساهتیہ کے ڈاکٹر عبدالحق نے اور یہ گڑھا 'رتوندھا' کو ترازو میں رکھکر . رتوندھا معنی رات

शक नहीं कि रतौंधा शब्द किसी अपढ़ ने ही गढा होगा और डाक्टर अब्दुल हक्क साहब रतौंधा के नाते उस अपढ़ को ही अपना उस्ताद मान कर ऐसा शब्द हमको दे सके. देखें नेशन शब्द के लिये कब किसका शब्द लोगों के मन चढ़ता है हम यह तो नहीं करेंगे कि हाथ पर हाथ धरे उस दिन की बाट टोहते रहें.

हम अंगरेजी के शब्द अपनाने में न झिझकते हैं न आगा पीछा देखते हैं. पर हर अंगरेजी के शब्द को हम अपना बैठें ऐसा नहीं करते. कभी किसी मजबूरी से अगर हम कोई ऐसा शब्द अपना बैठें जो हमारी कसौटी पर पूरा न उतरता हो तो हम इसी ताक में लगे रहते हैं कि कब कोई और शब्द मिले और कब हम उस अंगरेजी शब्द से अपना पीछा छुड़ाएं. और वह कसौटी हमारी इतनी ही है कि अगर वह अंगरेजी शब्द गाँव गाँव तक पहुँच गया है तो उसे अपनाने में हमें कुछ भी नहीं सोचना पड़ता. और इसकी वजह यह है कि हम उन सब शब्दों को हिन्दी ही मानते हैं जो शब्द हमारे गाँव गाँव में पहुंच गए और जिन्होंने हमारे गांव के गीतों में जगह पा ली. यानी जिनको हमारी माएं बोलने लगीं. माँ की बोली का यानी माँ बोली का नाम ही तो मातृभाषा या मादरी जबान है. नेशन शब्द हमारी माँ बोली का हिस्सा नहीं बन पाया इस लिये इसे हम जब भी अपनाते हैं तब हमें हमारा मन मसोसता रहता है और कहता रहता है कि हम बेमतलब ही विदेसी शब्द अपना रहे हैं. हम नेशन से नेशनियत या नेशनिया शब्द बनाकर खुश नहीं हो पाते और खुश सिर्फ इसलिये नहीं हो पाते कि अभी नेशन शब्द माँ बोली बन कर [illegible] नहीं हो पाया. नेशन शब्द की खटक हमसे सही नहीं [illegible]

شک نہیں کہ رتوندھا شبد کسی اپڑھ نے ہی گڑھا ہوگا اور ڈاکٹر عبدالحق صاحب رتوندھا کے ناتے اُس اپڑھ کو ہی اپنا اُستاد مان کر ایسا شبد ہمکو دے سکے . دیکھیں نیشن شبد کے لئے کب کسکا شبد لوگوں کے من چڑھتا ہے ہم یہ تو نہیں کرینگے کہ ہاتھ پر ہاتھ دھرے اُس دن کی بات ٹوہتے رہیں .

ہم انگریزی کے شبد اپنانے میں نہ جھجھکتے ہیں نہ آگا پیچھا دیکھتے ہیں . پر ہر انگریزی کے شبد کو ہم اپنا بیٹھیں ، ایسا نہیں کرتے کبھی کسی مجبوری سے اگر ہم کوئی ایسا شبد اپنا بیٹھیں جو ہماری کسوٹی پر پورا نہ اُترتا ہو تو ہم اِسی تاک میں لگے رہتے ہیں کہ کب کوئی اور شبد ملے اور کب ہم اُس انگریزی شبد سے اپنا پیچھا چھڑائیں . اور وہ کسوٹی ہماری اِتنی ہی ہے کہ اگر وہ انگریزی شبد گاؤں گاؤں تک پہنچ گیا ہے تو اُسے اپنانے میں ہمیں کچھ بھی نہیں سوچنا پڑتا . اور اسکی وجہ یہ ہے کہ ہم اُن سب شبدوں کو ہندی ہی مانتے ہیں جو شبد ہمارے گاؤں گاؤں میں پہنچ گئے اور جنھوں نے ہمارے گاؤں کے گیتوں میں جگہ پالی . یعنی جنکو ہماری مائیں بولنے لگیں . ماں کی بولی کا یعنی ماں بولی کا نام ہی تو ماتر بھاشا یا مادری زبان ہے . نیشن شبد ہماری ماں بولی کا حصہ نہیں بن پایا اسلئے اسے ہم جب بھی اپناتے ہیں تب ہمیں ہمارا من مسوستا رہتا ہے اور کہتا رہتا ہے کہ ہم بے مطلب ہی بدیسی شبد اپنا رہے ہیں . ہم نیشن سے نیشنیت یا نیشنیا شبد بناکر خوش نہیں ہو پاتے اور خوش صرف اس لئے نہیں ہو پاتے کہ ابھی نیشن شبد ماں بولی [illegible] ہو پایا . نیشن شبد کی کھٹک ہم سے [illegible]

फिर एक दिन हमारा मन अचानक हमें नेशन के लिये एक शब्द दे बैठा.

और वह है 'जनमनी'. जनमनी शब्द दो तरह से बोला और लिखा जा सकता है. दोनों ही तरह बोलने में हमें कोई इनकार नहीं. क्यों कि दोनों ही तरह बोलने में आसानी भी रहती है और कुछ माने भी निकलते हैं. और वह दो तरह यह हैं—एक जनम-नी, दूसरा जन-मनी. जनम-नी के माने होते हैं हमको जनमने वाली या जनम देने वाली. जन-मनी के माने होते हैं जन जन के मन की या जन जन के मन को मिलाए रखने वाली. जनम-नी और जन-मनी दोनों ही शब्द आसानी से बोले जा सकते हैं. इनको बोलने की खातिर किसी को इन शब्दों को बिगाड़ने की जरूरत नहीं पड़ेगी और फिर यह खूबी तो इसमें है ही कि इस शब्द से नेशनल के लिये जनमना या जनम-निया और नेशनल्स के लिये जनमने या जनमनिये आसानी से बन सकते हैं. इनके बोलने में भी कठिनाई नहीं होगी. शब्दजोड़ 'इज्म' दो मानों में काम में आता है—एक धर्म और दूसरा वाद. जैसे बुधिज्म यानी बुद्ध धर्म और सोशलिज्म यानी समाजवाद. इस तरह से हम नेशनलिज्म की जगह हिन्दी शब्द जनमन धर्म या जनमनवाद दे सकते हैं या फिर नेशनलिज्म का अनुवाद जनमनाधर्म या जनमनावाद भी हो सकता है. इसी तरह नेशनैलिटी के लिये जन-मनियत या जनमनीयत हो सकता है. थोड़े से में जनमनी शब्द हमारी सब जरूरतों को पूरा कर सकता है. और सीधा और मीठा होने से आसानी से देस भर में फैलाया जा सकता है और फैल सकता है.

किसी के जी मे यह सवाल उठ सकता है कि आसान शब्द

پھر ایک دن ھمارا من اچانک ھمیں نیشن کے لئے ایک شبد دے بیٹھا .

اور وہ ھے 'جن منی'. جن منی شبد دو طرح سے بولا اور لکھا جاسکتا ھے. دونوں ھی طرح بولنے میں ھمیں کوئی انکار نہیں . کیونکہ دونوں ھی طرح بولنے میں آسانی بھی رھتی ھے اور کچھ معنے بھی نکلتے ھیں . اور وہ دو طرح یہ ھیں—ایک جنم نی' دوسرا جن منی . جنم نی کے معنے ھوتے ھیں ھم کو جنم نے والی یا جنم دینے والی . جن منی کے معنے ھوتے ھیں جن جن کے من کی یا جن جن کے من کو ملائے رکھنے والی . جنم نی اور جن منی دونوں ھی شبد آسانی سے بولے جا سکتے ھیں. اِن کو بولنے کی خاطر کسی کو اِن شبدوں کو بگاڑ نے کی ضرورت نہیں پڑے گی اور پھر یہ خوبی تو اِس میں ھے ھی کہ اس شبد سے نیشنل کے لئے جن منا یا جن منیا اور نیشنلس کے لئے جنمنے یا جن منئے آسانی سے بن سکتے ھیں . اِن کے بولنے میں بھی کٹھنائی نہیں ھوگی . شبد جوڑ ' اِزم ' دو معنوں میں کام میں آتا ھے—ایک دھرم اور دوسرا واد. جیسے بدھ اِزم یعنی بدھ دھرم اور سوشلزم یعنی سماج واد . اس طرح سے ھم نیشنلزم کی جگہ ھندی شبد جن من دھرم یا جن من واد دے سکتے ھیں یا پھر نیشنلزم کا انوواد جن منا دھرم یا جن منا واد بھی ھوسکتا ھے . اِسی طرح نیشنیلٹی کے لئے جنم نیت یا جنمنی یت ھوسکتا ھے . تھوڑے سے میں جن منی شبد ھماری سب ضرورتوں کو پورا کر سکتا ھے . اور سیدھا اور میٹھا ھونے سے آسانی سے دیس بھر میں پھیلایا جا سکتا ھے اور پھیل سکتا ھے .

کسی کے جی میں یہ سوال اُٹھ سکتا ھے کہ آسان شبد

नेशन को ही क्यों न फैलाया जाए. अगर किसी सभा की बड़ीयत यानी मैजारिटी नेशन शब्द पर राजी हो जाय तो हमें कोई इनकार न होगा. हम तो उसको सिर्फ़ पूरा बिदेसी होने के नाते अपने इस पवित्र काम से दूर रखना चाहते हैं. कोई यह न समझे कि हम पवित्र कामों में बिदेसी शब्द लेना बुरा समझते हैं. हम तो हर भाषा को हर तरह पवित्र मानते हैं. मिसाल के लिये कांगरेस शब्द को ही ले लीजिये. इसने बड़ी पवित्र जगह पा रक्खी है. हम हरगिज़ नहीं चाहते कि इस शब्द का बाइकाट किया जाय. यह शब्द अब बिदेसी रह ही नहीं गया. गांव गांव में और घर घर के कोने में पहुंच कर माँ-बोली की शब्दमाला का मोती बन गया है और इसने पवित्रता भी हासिल करली है. अंगरेजी का 'फ़्रन्ट' शब्द भी गांव गांव में पहुंच गया है पर उसके माने असली मानों से कुछ अलग होते हुए भी हमारे मतलब के लिये बिलकुल ठीक ही बने रहते हैं. जब कोई गांव वाला यह कहता है कि वह मुझ से फ़िरन्ट हो गया है तो इसके माने यह होते हैं कि वह उससे रूठ बैठा है. और इस तरह 'फ़्रन्ट' शब्द अपने माने लिये हुए हिन्दी की शब्दमाला में मौजूद है. अगर नेशन शब्द ने भी हम से ऐसी ही जान पहचान करली होती और पवित्रता पाली होती तो हमें उसे अपनाने में कोई इनकार न होता और हम उसकी जगह नया शब्द खोजने, गढ़ने या मन में अपने आप उठने की दिक़्क़त में न पड़ते. पढ़ने वालों ने हमारी कठिनाई को समझ लिया होगा.

हाँ, तो अब इंडियन नेशन की जगह हम हिन्दी जनमनी शब्द

نیشن کو هی کیوں نه پهیلایا جائے . اگر کسی سبها کی بڑی‌یت یعنی میجارٹی نیشن شبد پر راضی هوجائے تو همیں کوئی انکار نه هوگا . هم تو اُس کو صرف پورا بدیسی هونے کے ناتے اپنے اس پوتر کام سے دور رکھنا چاهتے هیں . کوئی یه نه سمجھے که هم پوتر کاموں میں بدیسی شبد لینا برا سمجھتے هیں . هم تو هر بهاشا کو هر طرح پوتر مانتے هیں . مثال کے لئے کانگریس شبد کو هی لے لیجئے . اِس نے بڑی پوتر جگه پارکهی هے هم هرگز نهیں چاهتے که اس شبد کا بائیکاٹ کیا جائے یه شبد اب بدیسی ره هی نهیں گیا . گاؤں گاؤں میں اور گهر گهر کے کونے میں پهنچ کر ماں بولی کی شبد مالا کا موتی بن گیا هے اور اس نے پوترتا بهی حاصل کر لی هے . انگریزی کا ' فرنٹ شبد بهی گاؤں گاؤں میں پهنچ گیا هے پر اسکے معنے اصلی معنوں سے کچھ الگ هوتےهوئے بهی همارے مطلب کےلئے بالکل ٹھیک هی بنے رهتے هیں جب کوئی گاؤں والا یه کهتا هے که وه مجھسے فرنٹ هوگیا هے تو اس کے معنے یه هوتے هیں که وه اس سے روٹھ بیٹھا هے . اور اس طرح ' فرنٹ ' شبد اپنے معنے لئے هوئے هندی کی شبد مالا میں موجود هے . اگر نیشن شبد نے بهی هم سے ایسی هی جان پهچان کرلی هوتی اور پوترتا پالی هوتی تو همیں اُسے اپنانے میں کوئی انکار نه هوتا اور هم اُس کی جگه نیا شبد کهوجنے گڑهنے یا من میں اپنے آپ اُٹهنے کی دقت میں نه پڑتے . پڑهنے والوں نے هماری کٹهنائی کو سمجھ لیا هوگا .

هاں' تو اب انڈین نیشن کی جگه هم هندی جن منی شبد

ठीक मालूम होता है यह भारत से छोटा शब्द है और छोटा होने के नाते प्यारा तो है ही. इसलिये इंडियन की जगह हमने 'हिन्दी शब्द अपनाया है.

हिन्दी जनमनी यानी इंडियन नेशन के नाम से भारत की जान पहचान थी तो बहुत दिन से पर भारत ने उसका पूरी तरह से रस लिया सिर्फ सन १९२१ में. सन १९२२-२३ में उसके रस की याद भर रह गई. और उसके बाद तो फिर याद भी भूल गई. आज भारत हिन्दी जनमनी नाम की रट तो लगाता है, उसके नाम की सुमरनी भी फेरता है पर वैसे ही जैसे तोता रामनाम लेता है तोता राम का नाम तो लेता है पर उससे कुछ बल नहीं पाता आदमी राम का नाम लेकर डूबते डूबते बच जाता है. ठीक इसी तरह से आज भारत के रहने वाले हिन्दी जनमनी का दावा तो करते हैं पर तोते के राम नाम की तरह रस बिलकुल नहीं ले पाते. ऐसा क्यों होता है इसके जानने की इच्छा होनी हर एक में क़ुदरती है.

महात्मा गांधी जैसे जैसे हमसे दूर होते जाते हैं वैसे वैसे हमसे दुगनी चौगुनी अठगुनी इज़्ज़त के अधिकारी होते जाते हैं और उसी नाते महात्मा गांधी की जगह गांधी जी, गांधी और बापू बनते चले जाते हैं. दूर पहुंचने पर चीजें वैसे भी छोटी हो जाती हैं. इन गांधी जी ने ही सन '२१ में हिन्दी जनमनी या इंडियन नेशन को जन्म दिया और पहली जनवरी सन '२१ से ३१ दिसम्बर सन '२१ तक हिन्दी जनमनी अपनी पूरी तन्दुरुस्ती लिये हँस मुख चेहरे के साथ चपलता से भरी हुई खेलती कूदती और जीती जागती रही. सन

ٹھیک معلوم ھوتا ھے یہ بھارت سے چھوٹا شبد ھے اور چھوٹا ھونے کے ناتے پیارا تو ھے ھی . اس لئے اِنڈین کی جگہ ھم نے ھندی شبد اپنایا ھے .

ھندی جن منی یعنی اِنڈین نیشن کے نام سے بھارت کی جان پہچان تھی تو بہت دن سے پر بھارت نے اُس کا پوری طرح سے رس لیا صرف سن ۱۹۲۱ میں . سن ۱۹۲۲-۲۳ میں اُس کے رس کی یاد بھر رہ گئی اور اُس کے بعد تو پھر یاد بھی بھول گئی . آج بھارت ھندی جن منی نام کی رٹ تو لگاتا ھے ' اُس کے نام کی سمرنی بھی پھیرتا ھے پر ویسے ھی جیسے طوطا رام نام لیتا ھے . طوطا رام کا نام تو لیتا ھے پر اُس سے کچھ بل نہیں پاتا . آدمی رام کا نام لیکر ڈوبتے ڈوبتے بچ جاتا ھے . ٹھیک اِسی طرح سے آج بھارت کے رھنے والے ھندی جن منی کا دعوا تو کرتے ھیں پر طوطے کے رام نام کی طرح رس بالکل نہیں لے پاتے . ایسا کیوں ھوتا ھے اس کے جاننے کی اِچھا ھونی ھر ایک میں قدرتی ھے .

مہاتما گاندھی جیسے جیسے ھم سے دور ھوتے جاتے ھیں ویسے ویسے ھم سے دوگنی چوگنی اٹھ گنی عزت کے ادھیکاری ھوتے جاتے ھیں اور اُسی ناتے مہاتما گاندھی کی جگہ گاندھی جی ' گاندھی اور باپو بنتے چلے جاتے ھیں . دور پہنچنے پر چیزیں ویسے بھی چھوٹی ھوجاتی ھیں . اِن گاندھی جی نے ھی سن ۲۱ میں ھندی جن منی یا انڈین نیشن کو جنم دیا اور پہلی جنوری سن ۲۱ سے ۳۱ دسمبر سن ۲۱ تک ھندی جن منی اپنی پوری تندرستی لئے ھنس مکھ چہرے کے ساتھ چپلتا سے بھری ھوئی کھیلتی کودتی اور جیتی جاگتی رھی . سن ۲۲ کے انت

के आसार तक भी उसमें जान थी. पर अब वह अब वह की
हालत में थी. सन '२४ में अहमदाबाद की आल इंडिया की बैठक में बापू ने बाक़ायदा आँसू बहाकर उसकी मौत का एक तरह से एलान कर दिया.

सन '२१ में हम क़ानूनी मानों में न आज़ाद थे और न अपने मुल्क के मालिक थे. इसलिये हम जनमनी यानी नेशन नहीं कहला सकते थे. राजनीत विद्या की परिभाषा के अनुसार हम जनमनियत यानी नेशनैलिटी ही थे. पर सच्चे मानों में हम उन दिनों जनमनी यानी नेशन ही थे. अगर सोशलिज्म के माने समता धर्म हैं और कम्यूनिज्म के माने कामगार धर्म हैं तो हम सन '२१ में सच्चे समाज धर्मी थे और सच्चे कम्यूनिस्ट यानी कामगार धर्मी थे. जहाँ तक हम समझते हैं कम्यूनिज्म यानी कामगार धर्म का आदर्श है 'किसी सरकार का न होना' तो सन '२१ में कुछ थोड़े से सरकारी नौकरों को छोड़ कर हम हिन्द बासियों के लिये सरकार नाम की कोई चीज़ नहीं रह गई थी. यह अफ़सोस की बात है कि सन १९२१ का पूरा इतिहास अभी किसी ने नहीं लिखा और न लिखने की कोई बात ही किसी के दिमाग़ में अब तक आई. सन '२१ का इतिहास एक अच्छी मोटी किताब में भी पूरा पूरा नहीं लिखा जा सकता. उन दिनों हिन्दुस्तान में हिन्दू मुसलमान जैसी कोई चीज़ न रह गई थी. मसजिद और मंदिर समान रूप से ईश्वर के घर थे. दोनों में ही राम रहीम का भेद नहीं रह गया था. मसजिद में संख बज सकता था और मंदिर में अज़ाँ गूंज सकती थी. वह दिन थे जब ऐसा मालूम होता था कि मां यशोदा मोहम्मद को गोद में लिये पुचकार

کے آخر تک بھی اس میں جان تھی پر اب چنی سی
حالت میں تھی. سن ۲۴ میں احمدآباد کی آل انڈیا کی بیٹھک میں باپو نے باقاعدہ آنسو بہا کر اُس کی موت کا ایک طرح سے اعلان کر دیا .

سن ۲۱ میں ہم قانونی معنوں میں نہ آزاد تھے اور نہ اپنے ملک کے مالک تھے . اس لئے ہم جن‌منی یعنی نیشن نہیں کہلا سکتے تھے . راج نیت ودیا کی پریبھاشا کے انوسار ہم جنمنیت یعنی نیشنلٹی ہی تھے . پر سچے معنوں میں ہم اُن دنوں جن منی یعنی نیشن ہی تھے . اگر سوشلزم کے معنے سمتا دھرم ہیں اور کمیونزم کے معنے کامگار دھرم ہیں تو ہم سن ۲۱ میں سچے سماج دھرمی تھے اور سچے کمیونسٹ یعنی کامگار دھرمی تھے. جہاں تک (٢٥)
ہم سمجھتے ہیں کمیونزم یعنی کامگار دھرم کا آدرش ہے 'کسی سرکار کا نہ ہونا' تو سن ۲۱ میں کچھ تھوڑے سے سرکاری نوکروں کو چھوڑ کر ہم ہند باسیوں کے لئے سرکار نام کی کوئی چیز نہیں رہ گئی تھی . یہ افسوس کی بات ہے کہ سن ۱۹۲۱ کا پورا اتہاس ابھی کسی نے نہیں لکھا اور نہ لکھنے کی کوئی بات ہی کسی کے دماغ میں اب تک آئی. سن ۲۱ کا اتہاس ایک اچھی موٹی کتاب میں بھی پورا پورا نہیں لکھا جا سکتا . اُن دنوں ہندستان میں ہندو مسلمان جیسی کوئی چیز نہ رہ گئی تھی . مسجد اور مندر سمان روپ سے ایشور کے گھر تھے . دونوں میں ہی رام رحیم کا بھید نہیں رہ گیا تھا . مسجد میں سنکھ بج سکتا تھا اور مندر میں اذاں گونج سکتی تھی . وہ دن تھے جب ایسا معلوم ہوتا تھا کہ ماں یشودا محمد کو گود میں لئے پچکار

जहाँपनाह !···जहाँपनाह ! (और ज़ोर से) जहाँपनाह ! जहाँपनाह !

[हुमायूँ हड़बड़ा कर उठता है. नेपथ्य का कोलाहल अब जल्दी जल्दी बढ़ता है.]

हुमायूँ—(घबरा कर) क्या, क्या हुआ, सिपहसालार ?

सिपहसालार—हुज़ूर, शेरख़ाँ ने एकाएक हम पर हमला किया है

हुमायूँ—(और घबरा कर, खड़े होते हुए) हमला ?...धोखा... दग़ा ......फ़रेब ! (कुछ सम्भलकर) उसकी फ़ौज तो महाबा चीरो के बलवाइयों को दबाने के लिये जा रही थी न ? हर रोज़ जा रही थी ?

सिपहसालार—वह सब फ़रेब था, जहाँपनाह, बड़े से बड़ा फ़रेब. थोड़ी थोड़ी फ़ौज को कई दिनों से उस तरफ़ भेज और इस तरह की ख़बरें उड़वाकर, हमें धोखे में रख रहा था.

हुमायूँ—(और अधिक घबरा कर) तो...तो हमारी फ़ौज की तैयारी.........

सिपहसालार—मैं हुक्म तो दे आया हूँ, तैयारी के ढोल भी पिट रहे हैं. मगर.........मगर.........

हुमायूँ—(अत्यन्त क्रोध से) अगर···मगर, क्या, हमें लड़ना है···बहादुरी...ज़्यादा से ज़्यादा दिलेरी के साथ लड़ना.........

[हुमायूँ शीघ्रता से डेरे के बाहर निकलता है. सिपहसालार भी पीछे पीछे जाता है. अब बाहर का कोलाहल बहुत बढ़ गया है]

यवनिका

جہاں پناہ ..... جہاں پناہ (اور زور سے) جہاں پناہ ! جہاں پناہ !

(ہمایوں ہڑبڑا کر اٹھتا ہے۔ اب نے پتھ کا کولاہل بڑھتا ہے)

ہمایوں — (گھبرا کر) کیا، کیا ہوا سپہ سالار ؟

سپہ سالار — حضور شیر خاں نے یکا یک ہم پر حملہ کیا ہے۔

ہمایوں — (اور گھبرا کر کھڑے ہوتے ہوئے) حملہ ؟ ..... دھوکہ ..... دغا ..... فریب ! (کچھ سنبھل کر) اس کی فوج تو مہابا چیروں کے بلوائیوں کو دبانے کے لئے جا رہی تھی نہ ؟ ہر روز جا رہی تھی ؟

سپہ سالار — وہ سب فریب تھا جہاں پناہ ! بڑے سے بڑا فریب۔ تھوڑی تھوڑی فوجوں کو کئی دنوں میں اس طرف بھیج اور اس طرح کی خبریں اڑا کر ہمیں دھوکے میں رکھ رہا تھا۔

ہمایوں — (اور ادھک گھبرا کر) تو ..... تو ہماری فوج کی تیاری .... ؟

سپہ سالار — میں حکم تو دے آیا ہوں۔ تیاری کے ڈھول بھی پٹ رہے ہیں .... مگر .... مگر

ہمایوں — (اتینت کرودھ سے) اگر ..... مگر کیا ہمیں لڑنا ہے بہادری .... زیادہ سے زیادہ دلیری کے ساتھ لڑنا .....

(ہمایوں شیگھرتا سے ڈیرے کے باہر نکلتا ہے۔ سپہ سالار بھی پیچھے پیچھے جاتا ہے اب باہر کا کولاہل بہت بڑھ گیا ہے)

یونیکا

रही हैं और मां आमना कृश्न को गले लगाकर उसकी बलाएं ले रही हैं. उन दिनों जनता के मुँह से जो बानी खिरी थी, जो बाचा फूट कर निकली थी वह सचमुच इलहामी और अपौरुषेय थी. यानी उन दिनों हम सब के अन्दर से ईश्वर बोल रहा था, हम नहीं बोल रहे थे. ऐसा यों हुआ कि उन दिनों हम सब न आदमी रहे थे, न देवता. साधू और रिशी बन गये थे. हममें किसी तरह की समाजी बुराई रह ही नहीं गई थी. मरदों और औरतों के बीच में मां बेटे, भाई बहिन, बाप बेटी का रिश्ता क़ायम हो गया था. यह कहना कुछ बढ़कर कहना नहीं होगा कि उन दिनों लाखों नहीं तो सैकड़ों हजारों पति पत्नी के जोड़े भाई बहिन के रूप में रहने लगे थे. बुराइयों की तरफ से हमारे ध्यान हट चुके थे. हमारे सामने सिर्फ़ एक ही आदर्श था और वह यह कि '३६५ दिन में अपने देस को आजाद करना.' और सचमुच किस के ३६५ दिन हम नव्वे दिन में ही यानी सन '२१ के शुरू के तीन महीनों में ही आजाद हो चुके थे और अंगरेजी सरकार एक दम काँप गई थी. और फिर क्या हमने किसी एक अंगरेज को भी मारा था ? धमकाया था ? डराया था ? या गाली दी थी ? हाँ, हिन्दी जनमनी के पिता महात्मा गांधी ने यह शब्द जरूर कहे थे कि यह राज यानी यह हकूमत शैतानी हकूमत है और इस तरह अगर यह शैतानी लफ़्ज गाली है तो वह हकूमत के ढंग के लिये काम में लाया गया था न कि हकूमत करने वालों के लिये. उन दिनों हमें किसी को सताने की जरूरत ही कहाँ थी. हमारा काम बिना सताए अपने आप हो रहा था. सचमुच दुशमन को जहर की जगह

(۷۹۵)

رهی هیں اور ماں آمنه کرشن کو گلے لگاکر اُسکی بلائیں لے رهي هیں . اُن دنوں جنتا کے منه سے جو بانی کهری تهی' جو باچا پهوٹ کر نکلی تهی وه سچ مچ الهامی اور اپوروشیه تهي. یعنی اُن دنوں هم سب کے اندر سے ایشور بول رها تها' هم نهیں بول رهے تهے . ایسا یوں هوا که اُن دنوں هم سب نه آدمی رهے تهے' نه دیوتا . سادهو اور رشی بن گئے تهے . هم میں کسی طرح کی سماجی برائی ره هی نهیں گئي تهی. مردوں اور عورتوں کے بیچ میں ماں بیٹے' بهائی بهن' باپ بیٹی کا رشته قائم هو گیا تها . یه کهنا کچهه بڑهکر کهنا نهیں هوگا که اُن دنوں لاکهوں نهیں تو سیکڑوں هزاروں پتی پتنی کے جوڑے بهائی بهن کے روپ میں رهنے لگے تهے. برائیوں کي طرف سے همارے دهیان هٹ چکے تهے . همارے سامنے صرف ایک هی آدرش تها اور وه یه که '۳۶۵ دن میں اپنے دیس کو آزاد کرنا'. اور سچ مچ کس کے ۳۶۵ دن هم نوے دن میں هی یعنی سن ۲۱ کے شروع کے تین مهینوں میں هی آزاد هو چکے تهے اور انگریزي سرکار ایک دم کانپ گئی تهی. اور پهر کیا هم نے کسي ایک انگریز کو بهي مارا تها ؟ دهمکایا تها ؟ ڈرایا تها ؟ یا گالي دي تهی ؟ هاں' هندی جن منی کے پتا مهاتما گاندهی نے یه شبد ضرور کهے تهے که یه راج یعنی یه حکومت شیطانی حکومت هے اور اس طرح اگر یه شیطانی لفظ گالی هے تو وه حکومت کے ڈهنگ کے لئے کام میں لایا گیا تها نه که حکومت کرنے والوں کے لئے . اُن دنوں همیں کسي کو ستانے کی ضرورت هی کهاں تهي . همارا کام بنا ستائے اپنے آپ هو رها تها سچ مچ دشمن کو زهر

जब कभी आ जाती है तो दिल पर ऐसी कैफ़ियत छा जाती है मानो हम परमात्मा की गोद में ही बैठे हुए हों. उन दिनों के गीत अगर हमें याद होते तो हम जरूर यहाँ देते. पर उन दिनों की बातें तो हमें याद हैं उनको हम दिये बग़ैर नहीं रह सकते. क्योंकि उन्हीं के रास्ते तो हम यह बता सकेंगे कि सन १९२१ में हिन्दुस्तान सच्चे मानों में हिन्दी जनमनी यानी इंडियन नेशन का रूप ले चुका था.

अगर जनमनी यानी नेशन के यह माने हैं कि वह नेशन अपने सिवाय किसी बिदेसी या किसी बिदेसी हकूमत से इनसाफ़ न मांगे न चाहे तो हम जरूर उन दिनों जनमनी यानी नेशन थे. क्योंकि अदालतों का हम बाइकाट कर चुके थे और उन दिनों सचमुच बिदेसी हकूमत की कचहरियों में मक्खियाँ भिनकती थीं. जज और

(७५८) मुंसिफ़, कमिश्नर और मैजिस्ट्रेट हाथ पर हाथ धरे बैठे रहते थे.

अगर जनमनी यानी नेशन के यह माने हैं कि हमें बिदेसी फ़ौज और पुलिस से काम नहीं लेना चाहिये तो हम उन दिनों जरूर नेशन थे क्योंकि सन '२१ में न तो किसी ने हमारे मुल्क पर चढ़ाई की थी जिसके लिये हमें फ़ौज की जरूरत होती और न हम कोई ऐसा काम ही करते थे जिसके लिये पुलिस के पास मदद की भीक माँगने जाते. एकाध मरतबा कोई भूला भटका पुलिस की मदद के लिये जिला मैजिस्ट्रेट के पास पहुँचा था तो मैजिस्ट्रेट ने बिगड़ कर और तिनक कर यह जवाब दिया था कि अब मैं कहाँ मैजिस्ट्रेट रह भी गया हूं. अब तो यहाँ का मैजिस्ट्रेट जिला कांगरेस कमेटी का प्रेसीडेन्ट है. और फिर अपने ओहदे की जरूरत दिखलाते हुए शान के साथ यह लफ़्ज़ भी कह डाले थे कि अब मेरे पास क्यों आ मरते

جب کبھی آجاتي ہے تو دل پر ایسی کیفیت چھا جاتی ہے مانو ہم پرماتما کی گود میں ہی بیٹھے ہوئے ہوں . اُن دنوں کے گیت اگر ہمیں یاد ہوتے تو ہم ضرور یہاں دیتے . پر اُن دنوں کی باتیں تو ہمیں یاد ہیں اُنکو ہم دئے بغیر نہیں رہ سکتے . کیونکہ اُنہیں کے راستے تو ہم یہ بتاسکینگے کہ سن ۱۹۲۱ میں هندستان سچے معنوں میں هندي جن منی یعنی انڈین نیشن کا روپ لے چکا تھا .

اگر جن منی یعنی نیشن کے یہ معنے ہیں کہ وہ نیشن اپنے سوائے کسی بدیسي یا کسی بدیسی حکومت سے انصاف نہ مانگے نہ چاہے تو ہم ضرور اُن دنوں جن منی یعنی نیشن تھے . کیونکہ عدالتوں کا ہم بائیکاٹ کر چکے تھے اور اُن دنوں سچ مچ بدیسی حکومت کی کچہریوں میں مکھیاں بھنکتی تھیں. جج اور منصف کمشنر اور مجسٹریٹ هاتھ پر هاتھ دھرے بیٹھے رہتے تھے . (٧٥٨)

اگر جن منی یعنی نیشن کے یہ معنے ہیں کہ ہمیں بدیسی فوج اور پولیس سے کام نہیں لینا چاهئے تو ہم اُن دنوں ضرور نیشن تھے کیونکہ سن ۲۱ میں نہ تو کسي نے ہمارے ملک پر چڑھائی کی تھی جسکے لئے ہمیں فوج کی ضرورت ہوتی اور نہ ہم کوئی ایسا کام هي کرتے تھے جس کے لئے پولیس کے پاس مدد کي بھیک مانگنے جاتے . ایکادھ مرتبہ کوئی بھولا بھٹکا پولیس کی مدد کے لئے ضلع مجسٹریٹ کے پاس پہونچا تھا تو مجسٹریٹ نے بگڑ کر اور تنک کر یہ جواب دیا تھا کہ اب میں کہیں مجسٹریٹ رہ بھي گیا ہوں . اب تو یہاں کا مجسٹریٹ ضلع کانگریس کمیٹی کا پریسیڈنت ہے . اور پھر اپنے عہدے کی ضرورت دکھلاتے ہوئے شان کے ساتھ یہ لفظ بھی کہہ ڈالے تھے کہ اب میرے پاس کیوں آمرتے

हो. जाओ न उस कांगरेस कमेटी के प्रेसीडेन्ट के पास जिसने तुम्हें सूँग पर चढ़ा रक्खा है, उससे मदद माँगो. और फिर वह आदमी सचमुच छाती कड़ी करके और मैजिस्ट्रेट को यह धमकी देकर कि अच्छा ! तो अब हम तुम्हारी कचहरी में कभी नहीं झांकेंगे, सीधा जिला प्रेसीडेन्ट के पास पहुँचा था और उसे काफ़ी से ज्यादा मदद मिल गई थी.

आगरे के अंगरेज़ कलक्टर ने तो नाराज़ होकर चम्बल नदी के किनारे पर की हथियार बन्द पुलिस हटा ली थी जो ग्वालियर रियासत से आने वाले डाकुओं की रोक थाम के लिये रक्खी गई थी. और उस कलक्टर ने तो अपनी समझ में चम्बल के आस पास की बस्तियों को लुटने के लिये खुला छोड़ दिया था पर क्या कभी वह बस्तियाँ लुटीं और क्या कभी उन बस्तियों को हथियार बन्द पुलिस की ज़रूरत पड़ी. उन बस्तियों ने जैसे ही अपनी लाठी काठियों से बचने की बात सोची वैसे ही डाकुओं की पंचायत का यह हुकुम बस्तियों में फैल गया कि अब से आगे उन्होंने डाका डालना बन्द कर दिया. इतना ही नहीं, उस दिन के बाद से वह डाकू अपने हाथ ही जनमनी यानी नेशन के बे पैसे के सिपाही बन गए.

अगर जनमनी यानी नेशन के यह माने हैं कि नेशन में यानी नेशन के सब मेम्बरों में रोटी बेटी ब्योहार होना चाहिये तब हम यह कहेंगे कि हिन्दी जनमनी के पिता गांधी ने अगर इस बात का झूट मूट भी इशारा किया होता तो सन '२१ में यह बात भी मुशकिल नहीं थी. पर यह तो जवाब न देकर टालना हुआ. हम टालेंगे नहीं.

هو. جاؤ نه اُس کانگریس کمیٹی کے پریسیڈنٹ کے پاس جسنے تمهیں پلنگ پر چڑها رکها هے' اُس سے مدد مانگو . اور پهر وه آدمی سچ مچ چهاتی کڑی کرکے اور مجسٹریٹ کو یه دهمکی دے کر که اچها! تو اب هم تمهاری کچهری میں کبهی نهیں جهانکینگے' سیدها ضلع پریسیڈنٹ کے پاس پهونچا تها اور اُسے کافی سے زیاده مدد مل گئی تهی .

آگرے کے انگریز کلکٹر نے تو ناراض هو کر چمبل ندی کے کنارے پر کی هتهیار بند پولیس هٹا لی تهی جو گوالیار ریاست سے آنے والے ڈاکوؤں کی روک تهام کے لئے رکهی گئی تهی . اور اُس کلکٹر نے تو اپنی سمجه میں چمبل کے آس پاس کی بستیوں کو لٹنے کے لئے کهلا چهوڑ دیا تها پر کیا کبهی وه بستیاں لٹیں اور کیا کبهی اُن بستیوں کو هتهیار بند پولیس کی ضرورت پڑی . اُن بستیوں نے جیسے هی اپنی لاٹهی کاٹهیوں سے بچنے کی بات سوچی ویسے هی ڈاکوؤں کی پنچایت کا یه حکم بستیوں میں پهیل گیا که اب سے آگے اُنهوں نے ڈاکه ڈالنا بند کر دیا . اتنا هی نهیں اُس دن کے بعد سے وه ڈاکو اپنے هاته هی جن منی یعنی نیشن کے بے پیسے کے سپاهی بن گئے .

اگر جن منی یعنی نیشن کے یه معنے هیں که نیشن میں یعنی نیشن کے سب ممبروں میں روٹی بیٹی بیوهار هونا چاهئے تب هم یه کهینگے که هندی جن منی کے پتا گاندهی نے اگر اِس بات کا جهوٹ موٹ بهی اشاره کیا هوتا تو سن ۲۱ میں یه بات بهی مشکل نهیں تهی . پر یه تو جواب نه دے کر ٹالنا هوا . هم ٹالیں گے نهیں .

ज़्यादा मुशकिल है. बेटी व्योहार को इसी वास्ते दूसरे नम्बर पर रक्खा गया. और फिर बेटी व्योहार सीधे ना सीधे और लुके छिपे हमेशा से चला आया है, आज भी है और हमेशा तक रहेगा. रोटी व्योहार खुल जाने पर बेटी व्योहार आप चल पड़ेगा. अब सन '२१ में हिन्दी जनमनी के पिता गांधीजी ने रोटी व्योहार की लोगों से बात न भी कही हो तो भी रोटी व्योहार चल पड़ा था क्योंकि जनमनी के पिता गांधी जी में खुद भी रोटी का कोई विचार था ही नहीं. वह हर आदमी के हाथ की रोटी खा लेते थे और उनकी देखा देखी उन दिनों के जवानों में यह बात लुके छिपे नहीं खुल्लम खुल्ला चल पड़ी थी. नौजवान महाराष्ट्र ब्राह्मन दांडेकर ने नागपुर के इतवारी स्टेशन पर सैकड़ों की भीड़ के सामने समीउल्ला ख़ाँ के गिलास के आधे बचे हुए पानी को ऐसे ही पिया था मानो समीउल्ला ख़ाँ उसके माँ जाए भाई हों. पर ऐसा करने में उसने कोई यह भाव भी नहीं दिखाया था जिससे यह मालूम हो कि वह कोई बढ़ कर काम कर रहा है. और न भीड़ में से ही किसी ने इस पर ज़्यादा ध्यान दिया. यह काम करने वाले और देखने वाले दोनों के लिये ही मामूली बात थी. कोई यह न समझे कि इक्के दुक्के ने ही ऐसे क़दम उठाये थे. उन दिनों तो हिन्दी जनमनी बन जाने से यह बात आम हो गई थी. जगह जगह आश्रम क़ायम हो गये थे और उनमें सब जात और सब धर्म के आदमी ऐसे ही रहते और खाते पीते थे जैसे एक कुटुम्ब के लोग रहते सहते हैं.

अगर जनमनी यानी नेशन से यह मतलब है कि उसके अपने अलग त्योहार होने चाहियें तो हम यह कहेंगे कि सन '२१ में

زیادہ مشکل هے . بیٹی بیوهار کو اِسی واسطے دوسرے نمبر پر رکھا گیا . اور پھر بیٹی بیوهار سیدھے نا سیدھے اور لکے چھپے همیشه سے چلا آیا هے' آج بھی هے اور همیشه تک رهے گا . روٹی بیوهار کھل جانے پر بیٹی بیوهار آپ چل پڑیگا . اب سن ۲۱ میں هندي جن ملی کے پتا گاندهی جی نے روٹی بیوهار کی لوگوں سے بات نه بھی کهي هو تو بھی روٹی بیوهار چل پڑا تھا کیونکه جن ملی کے پتا گاندهی جی میں خود بھی روٹی کا کوئي وچار تھا هی نهیں . وہ هر آدمی کے هاتھ کي روٹی کھا لیتے تھے اور اُنکی دیکھا دیکھی اُن دنوں کے جوانوں میں یه بات لکے چھپے نهیں کھلم کھلا چل پڑی تھی . نوجوان مہا راشٹر براهمن دانڈیکر نے ناگپور کے اتواري استیشن پر سیکڑوں کی بھیڑ کے سامنے سمیع الله خاں کے گلاس کے آدھے بچے هوئے پانی کو ایسے هی پیا تھا مانو سمیع الله خاں اُس کے ماں جائے بھائي هوں . پر ایسا کرنے میں اُس نے کوئي یه بھاؤ بھی نهیں دکھایا تھا جس سے یه معلوم هو که وہ کوئی بڑھکر کام کر رها هے . اور نه بھیڑ میں سے هی کسي نے اس پر زیادہ دھیان دیا . یه کام کرنے والے اور دیکھنے والے دونوں کے لئے هی معمولي بات تھی . کوئی یه نه سمجھے که اِکے دکے نے هی ایسے قدم اُٹھائے تھے . ان دنوں تو هندی جن ملی بن جانے سے یه بات عام هو گئی تھی . جگه جگه آشرم قائم هو گئے تھے اور اُن میں سب جات اور سب دھرم کے آدمی ایسے هی رهتے اور کھاتے پیتے تھے جیسے ایک کٹمب کے لوگ رهتے سهتے هیں .

اگر جن ملی یعنی نیشن سے یه مطلب هے که اُس کے اپنے الگ تیوهار هونے چاهئیں تو هم یه کهیں گے که سن ۲۱ میں

हिन्दी जनमनी ने अलग अपना कोई त्योहार तो नहीं बनाया था पर सब धर्मों के त्योहार सब के हो गये थे और उन्होंने ही जनमनी त्योहारों का ही रूप ले लिया था. होली को हिन्दू मुसलमान सब मनाते थे. यही हाल दिवाली का था. ईद, बक़रईद और शबबरात देश भर के हिन्दू मुसलमानों के त्योहार थे. यह दूसरी बात है कि उन दिनों हिन्दी जनमनी के पिता गांधी जी ने ख़ुशियों के त्योहारों पर रोक लगा दी थी और वह यह कह कर कि जब हमारी भारत माता ग़ुलामी की जंजीरों में जकड़ी पड़ी है और हमारे देस के सैकड़ों जवान जेल खाने में तकलीफ़ें भुगत रहे हैं तब हम इन ख़ुशी के त्योहारों को जी खोल कर कैसे मना सकते हैं. और इसलिये कई त्योहार बरसों बन्द रहे. सब त्योहार जनमनी त्योहार मन जाने से अलग त्योहार की कोई जरूरत न थी, फिर भी जलियान वाला बाग़ का हफ़्ता और लोकमान्य तिलक की पुन्य तिथि जनमनी के त्योहारों का रूप ले चुकी थी. पहला त्योहार तो ख़ुशी का था ही नहीं. दूसरा त्योहार तिलक स्वराज फ़न्ड जमा करने में काम आता था क्योंकि ऐसा एक फ़न्ड जनमनी के जनम होते ही क़ायम कर दिया गया था. ख़ुलासा यह कि त्योहार की रू से भी सन '२१ में हम जनमनी का रूप ले चुके थे.

अगर जनमनी के यह माने हैं कि उसका अपना अलग ऐसा कोई धर्म स्थान होना चाहिये जहाँ जनमनी के सब लोग इकट्ठे होकर अपने धर्म की पूजा बन्दगी कर सकें इसके जवाब में हम यह कहेंगे कि उन दिनों सब मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे सारे हिन्दी जनमनी के बन गये थे. दिल्ली की मशहूर जामा मस्जिद में स्वामी

ہندی جن‌منی نے الگ اپنا کوئی تیوہار تو نہیں بنایا تھا پر سب دھرموں کے تیوہار سب کے ہوگئے تھے اور اُنھوں نے ہی جن‌منی تیوہاروں کا ہی روپ لے لیا تھا۔ ہولی کو ہندو مسلمان سب مناتے تھے۔ یہی حال دیوالی کا تھا۔ عید، بقر عید اور شب برات دیس بھر کے ہندو مسلمانوں کے تیوہار تھے۔ یہ دوسری بات ہے کہ اُن دنوں ہندی جن منی کے پتا گاندھی جی نے خوشیوں کے تیوہاروں پر روک لگا دی تھی اور وہ یہ کہہ کر کہ جب ہماری بھارت ماتا غلامی کی زنجیروں میں جکڑی پڑی ہے اور ہمارے دیس کے سیکڑوں جوان جیل خانے میں تکلیفیں بھگت رہے ہیں تب ہم اِن خوشی کے تیوہاروں کو جی کھول کر کیسے منا سکتے ہیں۔ اور اس لئے کئی تیوہار برسوں بند رہے۔ سب تیوہار جن منی تیوہار من جانے سے الگ تیوہار کی کوئی ضرورت نہ تھی، پھر بھی جلیان والا باغ کا ہفتہ اور لوکمانیہ تلک کی پنیہ تتھی جن منی کے تیوہاروں کا روپ لے چکی تھی۔ پہلا تیوہار تو خوشی کا تھا ہی نہیں۔ دوسرا تیوہار تلک سوراج فنڈ جمع کرنے میں کام آتا تھا۔ کیونکہ ایسا ایک فنڈ جن منی کے جنم ہوتے ہی قائم کر دیا گیا تھا۔ خلاصہ یہ کہ تیوہار کی رو سے بھی سن ۲۱ میں ہم جن منی کا روپ لے چکے تھے۔

اگر جن منی کے یہ معنے ہیں کہ اُس کا اپنا الگ ایسا کوئی دھرم استھان ہونا چاہئے جہاں جن منی کے سب لوگ اکٹھے ہو کر اپنے دھرم کی پوجا بندگی کر سکیں۔ اس کے جواب میں ہم یہ کہیں گے کہ اُن دنوں سب مندر، مسجد، گردوارے سارے ہندی

श्रद्धानन्द जी इतनी ही आजादी से बोल सकते थे जितनी आजादी से मुसलमानों का कोई इमाम. ठीक इसी तरह से मंदिरों में मुसलमानों के लिये कोई रोक टोक न रह गई थी. मुसलमानों के लिये सब से ज्यादा गुनाह से भरा जैन मंदिरों में जाना हो सकता था क्योंकि इसमें न सिर्फ मूरतें होती हैं बल्कि वह मादर जाद नंगी भी होती हैं. पर सन '२१ में मुसलमानों के लिये जैन मंदिरों में जाना आम हो गया था और उन्हें कोई झिझक न रह गई थी पानीपत में हमने यह आँख से देखा था कि वहाँ के मशहूर मौलवी लक़ा उल्ला साहब जैन मंदिर में न सिर्फ गये थे बल्कि उन्होंने उस नालकी या पालकी को कन्धा भी लगाना चाहा था जिसमें बिठाल कर जैनों ने अपनी मूरत को बाहर खड़े हुए रथ में बिठाने के लिये मंदिर से बाहर निकाला था. इतना ही नहीं वह जुलूस के वापस आने तक जुलूस के साथ रहे और जगह जगह उन्होंने तक़रीर भी की. यह ही नहीं उस दिन एक और भी ऐसा काम हुआ था जो मुग़ल बाद-शाह अकबर के बाद शायद ही किसी को सूझा हो. और वह यह था कि जिस दिन यह जैन त्योहार मनाया जा रहा था, हाँ अब यह जैन त्योहार क्यों हिन्दी जनमनी का त्योहार मनाया जा रहा था उस दिन क़साइयों ने अपने ज़िबह करने के मकान ही बन्द न रक्खे थे, मॉस बेंचने की दूकानें भी बन्द कर दी थीं. और यह किसी के डराने धमकाने से नहीं, उस मोहब्बत की उमंग से जो उन्हें हिन्द में हिन्दी जनमनी के पैदा होने के खयाल से हो रही थी. क़साइयों के जी की इतने से भी तसल्ली नहीं हुई थी. उन्होंने जगह जगह अपने भाई जैन धर्मियों के लिये शरबत का

هردها نند جی أتنی هي آزادی سے بول سکتے تھے جتنی آزادی سے مسلمانوں کا کوئی امام . ٹھیک اسي طرح سے مندروں میں مسلمانوں کے لئے کوئی روک ٹوک نہ رہ گئی تھی . مسلمانوں کے لئے سب سے زیادہ گناہ سے بھرا جین مندروں میں جانا ہوسکتا تھا کیونکہ أس میں نہ صرف مورتیں ہوتي ہیں بلکہ وہ مادر زاد ننگی بھی ہوتی ہیں . پر سن ۲۱ میں مسلمانوں کے لئے جین مندروں میں جانا عام ہوگیا تھا اور أنہیں کوئی جھجھک نہ رہ گئی تھی . پانی پت میں ہم نے یہ آنکھ سے دیکھا تھا کہ وہاں کے مشہور مولوي لقاء ألله صاحب جین مندر میں نہ صرف گئے تھے بلکہ أنہوں نے أس نالکی یا پالکی کو کندھا بھی لگانا چاہا تھا جس میں بٹھال کر جینوں نے اپنی مورت کو باہر کھڑے ہوئے رتھ میں بٹھانے کے لئے مندر سے باہرنکالا تھا . اتنا ہی نہیں وہ جلوس کے واپس آنے تک جلوس کے ساتھ رہے اور جگہ جگہ أنہوں نے تقریر بھی کی . یہ ہی نہیں أس دن ایک اور بھي ایسا کام ہوا تھا جو مغل بادشاہ اکبر کے بعد شاید ہی کسی کو سوجھا ہو . اور وہ یہ تھا کہ جس دن یہ جین تیوہار منایا جا رہا تھا، ہاں اب یہ جین تیوہار کیوں ہندی جن منی K تیوہار منایا جارہا تھا أس دن قصائیوں نے اپنے ذبح کرنے کے مکان ہي بند نہ رکھے تھے ' مانس بیچنے کی دوکانیں بھی بند کر دي تھیں . اور یہ کسی کے ڈرانے دھمکانے سے نہیں ' أس محبت کي أمنگ سے جو أنہیں ہند میں ہندي جن منی کے پیدا ہونے کے خیال سے ہورہی تھی . قصائیوں کے جی کی اتنے سے بھی تسلی نہیں ہوئی تھی أنہوں نے جگہ جگہ اپنے بھائي جین دھرمیوں کے لئے شربت کا

(५६)

इंतज़ाम भी किया था. इस सब से भी उनके जी की उमग पूरी न हो पाई थी. उनके बच्चों और उनकी माओं बहनों ने जैनों की रथ में बैठी दिगम्बर मूरत पर फूल भी बरसाये थे. क्या यह सब बातें इस बात का सबूत नहीं हैं कि सन '२१ में हिन्दुस्तान एक जनमनी यानी एक नेशन बन गया था? यहाँ यह याद रहे कि सन '२१ में एक नेशन बन जाने पर भी न हिन्दुओं को हिन्दू धर्म छोड़ने की ज़रूरत पड़ी थी और न मुसलमानों को इस्लाम धर्म छोड़ने की और न सिक्खों को सिक्ख धर्म छोड़ने की किसी के धर्म छोड़ने की बात तो एक ओर, उलटे धर्म सच्चे और सही मानों में खिल उठे थे. सब धर्म वालों के इतने एक मेक हो जाने पर भी सन '२१ में कोई एक भी मामला ऐसा न हुआ था जिसमें यह बात हुई हो कि किसी मुसलमान ने किसी हिन्दू को ऐसा माँस खिलाने की बात कभी ख्वाब में भी सोची हो, जो हिन्दू के लिये मना था. या किसी हिन्दू ने किसी मुसलमान के लिये ऐसा माँस खिलाने की सोची हो जो मुसलमान के लिये मना था. गो वध के लिहाज से अंगरेजी फ़ौजों को छोड़कर मुसलमानों में जितना गो वध सन '२१ में कम हुआ है मुग़ल राज को छोड़ कर शायद ही कभी कम हुआ हो. और सब से बढ़ कर बात यह कि गो वध बन्द करने की बात न कोई हिन्दू ऊपर लाया और न कोई और. हिन्दी जनमनी के पिता गांधी जी तो यह कहते ही क्यों कि यह जो कुछ हुआ अपने आप हुआ और हिन्दी जनमनी बन जाने से हुआ. और अब फिर कभी हिन्दी जनमनी यानी इंडियन नेशन इस हमारे देस में जनम ले लेगी तब फिर

انتظام بھی کیا تھا. اس سب سے بھی اُن کے جي کي اُمنگ پوري نہ ہو پائی تھی. اُن کے بچوں اور اُن کی ماؤں بہنوں نے جینوں کي رتھ میں بیٹھی دگمبر مورت پر پھول بھي برسائے تھے. کیا یہ سب باتیں اس بات کا ثبوت نہیں ہیں کہ سن ۲۱' میں ہندستان ایک جن منی یعنی ایک نیشن بن گیا تھا؟ یہاں یہ یاد رہے کہ سن ۲۱' میں ایک نیشن بن جانے پر بھي نہ ہندؤوں کو ہندو دھرم چھوڑنے کي ضرورت پڑی تھی اور نہ مسلمانوں کو اسلام دھرم چھوڑ نے کی' اور نہ سکھوں کو سکھ دھرم چھوڑنے کی. کسی کے دھرم چھوڑنے کي بات تو ایک اور' اُلٹے دھرم سچے اور صحیح معنوں میں کھل اُٹھے تھے. سب دھرم والوں کے اِتنے ایک میک ہوجانے پر بھی سن ۲۱' میں کوئي ایک بھی معاملہ ایسا نہ ہوا تھا جس میں یہ بات ہوئی ہو کہ کسي مسلمان نے کسي ہندو کو ایسا مانس کھلانے کی بات کبھي خواب میں بھی سوچی ہو' جو ہندو کے لئے منع تھا. یا کسي ہندو نے کسی مسلمان کے لئے ایسا مانس کھلانے کي سوچی ہو جو مسلمان کے لئے منع تھا. گو بدھ کے لحاظ سے انگریزي فوجوں کو چھوڑ کر مسلمانوں میں جتنا گو بدھ سن ۲۱' میں کم ہوا ہے مغل راج کو چھوڑ کر شاید ہي کبھی کم ہوا ہو. اور سب سے بڑھکر بات یہ کہ گو بدھ بند کرنے کی بات نہ کوئی ہندو اوپر لایا اور نہ کوئي اور. ہندی جن منی کے پتا گاندھی جی تو یہ کہتے ہی کیوں کہ یہ جو کچھ ہوا اپنے آپ ہوا اور ہندي جن منی بن جانے سے ہوا. اور اب پھر کبھي ہندي جن مني یعنی انڈین نیشن

हर मस्जद, मन्दिर, गुरुद्वारा हिन्दी जनमनी का धर्म स्थान बन गया था. हिन्दी जनमनी के सब जनमनों को सब जगह जाने की आज़ादी थी और वह जाते भी थे. और जाते थे भक्ति के साथ.

अगर जनमनी यानी नेशन की यह पहचान है कि वह अपने देस पर क़बज़ा जमाने वाली नेशन के स्कूल और कालिजों से तालीम हासिल न करें तो उन दिनों लाखों करोड़ों विद्यार्थी कालिज छोड़ कर चले आये थे और उनके साथ फिर प्रोफ़ेसरों को तो आना ही था. उनके इस तरह चले आने से सैकड़ों हज़ारों नैशनल स्कूल और कालिज खुल गये थे और वह बहुत कम खर्च पर चलते थे. यह ही नहीं उन्होंने टोप, कोट और पतलून भी पहनना छोड़ दिया था क्यों कि वह बिदेसी पहनावा था. इटली की फ़ैल्ट कैप उतार कर जला डाली थी. यही हाल टोपों का हुआ था. यही हाल बिदेसी कपड़ों के साफ़े और पगड़ियों का हुआ था और उनकी जगह आ गई थी किश्तीनुमा या नैया जैसी टोपी और उसको नाम दिया गया था गांधी टोपी. जब हिन्दी जनमनी बनी थी तो उसका कोई एक बाना होना ही चाहिये था और वह था यह गांधी टोपी.

सन '२१ में हिन्दी जनमनी बनी. इसके पिता महात्मा गांधी सही, मां कौन थी ? मां थी, 'आज़ादी की ज़रूरत' ज़रूरत ईजाद की मां मानी गई है. पर बाप माना गया है प्यार. वह कहां था ? वह 'सारे देस से प्यार' के रूप में गांधी जी के हृदय में मौजूद था, तभी तो गांधी जी नेशन के पिता कहलाये.

गांधी जी हिन्दी नेशन के पिता यों ही नहीं कहलाते. नेशन के पिता को जितने त्याग और लगातार मेहनत की आदत की ज़रूरत

ہر مسجد مندر، گرودوارہ ہندی جن منی کا دھرم استھان بن گیا . ہندی جن منی کے سب جن منوں کو سب جگہ جانے کی آزادی تھی اور وہ جاتے بھی تھے اور جاتے تھے بھکتی کے ساتھ .

اگر جن منی یعنی نیشن کی یہ پہچان ہے کہ وہ اپنے دیس پر قبضہ جمانے والی نیشن کے اسکول اور کالجوں سے تعلیم حاصل نہ کریں تو اُن دنوں لاکھوں کروڑوں ودیارتھی کالج چھوڑ کر چلے آئے تھے اور اُن کے ساتھ پھر پروفیسروں کو تو آنا ھی تھا . اُن کے اس طرح چلے آنے سے سیکڑوں ھزاروں نیشنل اسکول اور کالج کھل گئے تھے اور وہ بہت کم خرچ پر چلتے تھے . یہ ھی نہیں اُنہوں نے ٹوپ، کوٹ اور پتلون بھی پہننا چھوڑ دیا تھا کیونکہ وہ بدیسی پہناوا تھا . اٹلی کی فیلٹ کیپ اُتار کر جلا ڈالی تھی یہی حال ٹوپوں کا ھوا تھا . یہی حال بدیسی کپڑوں کے صافے اور پگڑیوں کا ھوا تھا اور اُنکی جگہ آگئی تھی کشتی نما یا نیا جیسی ٹوپی اور اُسکو نام دیا گیا تھا گاندھی ٹوپی . جب ہندی جن منی بنی تھی تو اُسکا کوئی ایک بانا ھونا ھی چاھئے تھا اور وہ تھی یہ گاندھی ٹوپی .

سن ۲۱ میں ھندی جن منی بنی . اس کے پتا مہاتما گاندھی سہی، ماں کون تھی ؟ ماں تھی' 'آزادی کی ضرورت' ضرورت ایجاد کی ماں مانی گئی ھے . پر باپ مانا گیا ھے پیار . وہ کہاں تھا ؟ وہ 'سارے دیس سے پیار' کے روپ میں گاندھی جی کے ھردے میں موجود تھا' تبھی تو گاندھی جی نیشن کے پتا کہلائے .

گاندھی جی ھندی نیشن کے پتا یوں ھی نہیں کہلاتے . نیشن کے پتا کو جتنے تیاگ اور لگاتار محنت کی عادت کی ضرورت

होती है वह उनमें काफ़ी से ज्यादा थी. उनमें देस की आज़ादी के सिवा किसी से मोह नहीं रह गया था. देस की आज़ादी को वह एक सचाई मानते थे और सच को ही वह ईश्वर समझते थे इसलिये देस की आज़ादी उनको ईश्वर जैसी प्यारी थी. इसीलिये उस पर वह सब कुछ न्योछावर करने के लिये तैयार थे. अगर कोई मनचला यह सवाल कर बैठे कि क्या वह देस की आज़ादी के लिये धर्म को भी न्योछावर कर सकते थे ? इस सवाल का जवाब गांधी जी खुद क्या देते हमें पता नहीं है पर हम यह जवाब देते हैं कि हाँ, वह धर्म को भी न्योछावर कर देते. हमारे इस जवाब से किसी को भड़क नहीं होनी चाहिये. हम यह पहले ही बता चुके हैं कि देस की आज़ादी एक सचाई है और सचाई खुद धर्म कहलाती है तब धर्म पर धर्म न्योछावर करने में किसी का बिगड़ेगा ही क्या. धर्म पर धर्म न्योछावर करने से तो धर्म की बढ़वारी ही होगी. लोकमान्य तिलक यह कहा करते थे कि स्वराज मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है. पर गांधी जी कहते थे कि स्वराज मेरा धर्म है. और जैसे आग का धर्म गर्मी आग से कभी जुदा नहीं हो सकता उसी तरह से गांधी जी का धर्म स्वराज उन से न कभी अलग था और न कभी अलग हो पाया. अब हम समझते हैं कि आज़ादी पर धर्म न्योछावर करने की बात से किसी को ग़लत समझी नहीं होनी चाहिये. हाँ तो अब लीजिये गांधी जी के त्याग की बात. उन्हें दो भाषाओं पर अधिकार था. एक अंगरेज़ी और दूसरी गुजराती. उन्होंने अंगरेज़ी से मोह छोड़ा और गुजराती के बहुत से प्रेम को नैशनल लैंगवेज हिन्दुस्तानी पर

هوتیھے وہ اُن میں کافی سے زیادہ تھی ۔ اُن میں دیس کی آزادی کے سوا کسی سے موہ نہیں رہ گیا تھا ۔ دیس کی آزادی کو وہ ایک سچائی مانتے تھے اور سچ کو ھی وہ ایشور سمجھتے تھے اسلئے دیس کی آزادی اُنکو ایشور جیسی پیاری تھی ۔ اسی لئے اُس پر وہ سب کچھ نیوچھاور کرنے کے لئے تیار تھے ۔ اگر کوئی منچلا یہ سوال کر بیٹھے کہ کیا وہ دیس کی آزادی کے لئے دھرم کو بھی نیوچھاور کر سکتے تھے ؟ اس سوال کا جواب گاندھی جی خود کیا دیتے ھمیں ۔ پتہ نہیں ھے پر ھم یہ جواب دیتے ھیں کہ ھاں' وہ دھرم کو بھی نیوچھاور کر دیتے ھمارے اس جواب سے کسی کو بھڑک نہیں ھونی چاھئے. ھم یہ پہلےھی بتا چکے ھیںکہ دیس کی آزادی ایک سچائی ھے اور سچائی خود دھرم کہلاتی ھے تب دھرم پر دھرم نیوچھاور کرنے میں کسی کا بگڑیگا ھی کیا. دھرم پر دھرم نیوچھاور کرنے سے تو دھرم کی بڑھواری ھی ھوگی ۔ لوک مانیہ تلک یہ کہا کرتے تھے کہ سوراج میرا جنم سدھ ادھیکار ھے ۔ پر گاندھی جی کہتے تھے کہ سوراج میرا دھرم ھے ۔ اور جیسے آگ کا دھرم گرمی آگ سے کبھی جدا نہیں ھو سکتا اُسی طرح سے گاندھی جی کا دھرم سوراج اُن سے نہ کبھی الگ تھا اور نہ کبھی الگ ھو پایا ۔ اب ھم سمجھتےھیں کہ آزادی پر دھرم نیوچھاور کرنے کی بات سے کسی کو غلط سمجھی نہیں ھونی چاھئے ۔ ھاں تو اب لیجئے گاندھی جی کے تیاگ کی بات ۔ اُنھیں دو بھاشاؤں پر ادھیکار تھا ۔ ایک انگریزی اور دوسری گجراتی ۔ اُنھوں نے انگریزی سے موہ چھوڑا اور گجراتی کے بہت سے پریم کو نیشنل لینگویج ھندستانی

कर देने का काम हर कोई नहीं कर सकता. पर नेशन का बाप बनने वाले में इतनी क़ाबलियत न होती तो वह इंडियन नेशन जैसी चीज़ को जनम कैसे दे पाते.

अब अगर जनमनी यानी नेशन के लिये एक भाषा होनी ज़रूरी है तो यह गांधी जी के त्याग का चमत्कार ही था कि सारा हिन्दुस्तान सन् '२१ में एक हिन्दुस्तानी बोली में गुथ गया था. हिमालय से कन्या कुमारी तक और अटक से कटक तक हिन्दुस्तानी से सब को इतना प्रेम हो गया था जितना न कभी हुआ था और न शायद कभी होगा. सन '२१ में गांधी जी को बहुत कम हिन्दुस्तानी आती थी पर उसी टूटी फूटी हिन्दुस्तानी से उन्होंने सारे हिन्दुस्तान को जगा दिया और हिन्दी जनमनी यानी इंडियन नेशन को जनम दे दिया. उत्तर भारत में तो हिन्दुस्तानी ख़ूब समझी जाती है. पंजाबी, सिन्धी, गुजराती, मराठी, मारवाड़ी, बिहारी, बंगाली, उड़िया यह सब बोलियां तो हिन्दी से मिलती जुलती हैं. मुशकिल थी कन्नड़, तेलगू, तामिल और मलयालम बोलने वालों की. पर गांधी जी का जादू वह रंग लाया कि मदरास ने ही सबसे पहले हिन्दुस्तानी का प्रचार अपने यहाँ करना शुरू किया. और एक मरतबा जब हम कोकनाडा पहुँचे तो हमें यह देखकर कि वहाँ के 'नूरजहाँ' के ड्रामा में जो लड़की नूरजहाँ बनी थी वह उर्दू के मुशकिल लफ़्ज़ों तक को ठीक ठीक अदा कर सकती थी, एतबार ही न हुआ कि वह कोई ऐसी लड़की हो सकती है जिस की मां बोली उर्दू न रही हो. इसलिये हमें बी. साम्भमूर्ति (जो कभी मदरास ऐसेम्बलीके स्पीकर रह चुके हैं) से पूछना पड़ा कि वह लड़की कहां की है और उन्होंने हँस कर कहा कि

کر دینے کا کام ھر کوئی نہیں کر سکتا . پر نیشن کا باپ بننے والے میں اتنی قابلیت نہ ھوتی تو وہ انڈین نیشن جیسی چیز کو جنم کیسے دے پاتے .

اب اگر جن منی یعنی نیشن کے لئے ایک بھاشا ھونا ضروری ھے تو یہ گاندھی جی کے تیاگ کا چمتکار ھی تھا کہ سارا ھندستان سن ۲۱ میں ایک ھندستانی بولی میں گتھ گیا تھا . ھمالیہ سے کنیا کماری تک اور اٹک سے کٹک تک ھندستانی سے سب کو اتنا پریم ھوگیا تھا جتنا نہ کبھی ھوا تھا اور نہ شاید کبھی ھوگا . سن ۲۱' میں گاندھی جی کو بہت کم ھندستانی آتی تھی پر اُسی ٹوٹی پھوٹی ھندستانی سے اُنھوں نے سارے ھندستان کو جگا دیا اور ھندی جن منی یعنی انڈین نیشن کو جنم دے دیا . اُتر بھارت میں تو ھندستانی خوب سمجھی جاتی ھے . پنجابی ' سندھی ' گجراتی ' مرہٹی ' مارواڑی ' بہاری ' بنگالی ' اُڑیا یہ سب بولیاں تو ھندی سے ملتی جلتی ھیں . مشکل تھی کنڑ ' تیلگو ' تامل اور ملیالم بولنے والوں کی . پر گاندھی جی کا جادو وہ رنگ لایا کہ مدراس نے ھی سب سے پہلے ھندستانی کا پرچار اپنے یہاں کرنا شروع کیا اور ایک مرتبہ جب ھم کوک ناڈا پہونچے تو ھمیں یہ دیکھکر کہ وھاں کے ' نور جہاں ' کے ڈرامہ میں جو لڑکی نور جہاں بنی تھی وہ اُردو کے مشکل لفظوں تک کو ٹھیک ٹھیک ادا کر سکتی تھی ' اعتبار ھی نہ ھوا کہ وہ کوئی ایسی لڑکی ھوسکتی ھے جس کی ماں بولی اُردو نہ رھی ھو . اس لئے ھمیں بی . سامبھمورتی (جو کبھی مدراس اسمبلی کے اسپیکر رہ چکے ھیں) سے پوچھنا پڑا کہ یہ لڑکی کہاں کی ھے اور اُنھوں نے ھنس کر کہا کہ

हमारी राय

कुछ तो ख़याल रखना चाहिये

रेडियो से जिस तरह दूसरे मुल्कों के लिए पश्तो, रूसी, जर्मन, चीनी, अंगरेजी में प्रोग्राम चलते हैं वैसे ही पाकिस्तान की ख़ातिर उर्दू में भी प्रोग्राम चलता है. हम से कोई पूछे तो हम इस उर्दू प्रोग्राम के बिलकुल ख़िलाफ़ हैं. पूर्वी और पच्छिमी दोनों पाकिस्तानों की आबादी का वह हिस्सा जो पाकिस्तानी उर्दू समझ लेता है वह दिल्ली से चले हुए सब हिन्दुस्तानी प्रोग्रामों को बहुत आसानी से समझ सकता है. हमने महीनों लाहौर को सुना है, उसके आसान और मुश्किल उर्दू के प्रोग्राम भी सुने हैं. उसके बल पर हम यह कह सकते हैं कि लाहौर की आसान से आसान उर्दू से भी दिल्ली के प्रोग्रामों की हिन्दुस्तानी ज्यादा आसान होती है और पूर्वी पच्छिमी पाकिस्तान में बड़ी अच्छी तरह समझी जा सकती है. फिर अलग उर्दू के प्रोग्राम की क्या ज़रूरत थी. यह कह कर हम सरकार को यह सलाह नहीं दे रहे हैं कि वह उर्दू का प्रोग्राम बन्द करदे या उसको आसान हिन्दुस्तानी में बदल दे. हम तो यह दलील किसी और ही नियत से दे रहे हैं.

बी० बी० सी० की लन्दन से मुद्दतों से हिन्दुस्तानी में एक प्रोग्राम

ہماری رائے

کچھ تو خیال رکھنا چاہیے

ریڈیو سے جس طرح دوسرے ملکوں کے لیے پشتو، روسی، جرمن، چینی، انگریزی میں پروگرام چلتا ہے۔ ویسے ہی پاکستان کی خاطر اردو میں بھی پروگرام چلتا ہے۔ ہم سے کوئی پوچھے تو ہم اس اردو پروگرام کے بالکل خلاف ہیں۔ پوربی اور پچھمی دونوں پاکستانوں کی آبادی کا وہ حصہ جو پاکستانی اردو سمجھ لیتا ہے وہ دلی سے چلے ہوئے سب ہندستانی پروگراموں کو بہت آسانی سے سمجھ سکتا ہے۔ ہم نے مہینوں لاہور کو سنا ہے، اس کے آسان اور مشکل اردو کے پروگرام بھی سنے ہیں۔ اس کے بل پر ہم یہ کہہ سکتے ہیں کہ لاہور کی آسان سے آسان اردو سے بھی دلی کے پروگراموں کی ہندستانی زیادہ آسان ہوتی ہے اور پوربی پچھمی پاکستان میں بڑی اچھی طرح سمجھی جا سکتی ہے۔ پھر الگ اردو کے پروگرام کی کیا ضرورت تھی۔ یہ کہہ کر ہم سرکار کو یہ صلاح نہیں دے رہے ہیں کہ وہ اردو کا پروگرام بند کر دے یا اس کو آسان ہندستانی میں بدل دے۔ ہم تو یہ دلیل کسی اور ہی نیت سے دے رہے ہیں۔

بی بی سی لندن سے مدتوں سے ہندستانی میں ایک پروگرام

यहीं, कोकनाडा की. थोड़े से लफ़्ज़ों में बोली के ख़याल से भी सन '२१ में हिन्दुस्तान हिन्दी जनमनी का रूप ले चला था. गांधी जी ने तो बुढ़ापे में भी यरवदा जेल में उर्दू के अच्छर सीखे थे और थोड़ा बहुत लिखना भी सीख गए. जेल से निकल कर उन्होंने उर्दू अच्छरों में किसी उर्दू अख़बार को संदेशा भी भेजा था और जिसको उस अख़बार ने ब्लाक बनवाकर छापा था. यहाँ कोई यह न समझ बैठे कि हम इस तरह से उर्दू लिपि या हिन्दुस्तानी का प्रचार कर रहे हैं. हम तो किसी महापुरुष के कामों की नक़ल करने को ठीक नहीं समझते. हम तो सिर्फ़ यही मानते हैं कि महापुरुष की स्पिरिट या उत्साह की ही नक़ल की जानी चाहिये. काम तो समय के अनुसार बदलते बदलते रहते हैं. हाँ, तो सन '२१ में सभी ने जी जान से कोशिश की कि वह हिन्दुस्तानी सीख लें और काम चलाऊ थोड़ी बहुत सभी सीख भी गए थे राजनीत पंडितों का यह धोका भरा सवाल कि जिस देस में बहुत सी बोलियाँ हों वह देस नेशन को जनम नहीं दे सकता, उस वक़्त तो ऐसे ही दफ़न हो गया था मानो अब वह कभी क़ब्र से न उठेगा और गांधी जी के जादू का चमत्कार देख कर राजनीत के पंडित दांतों तले उंगली दबा कर रह गए थे

यह थी सन '२१ की हिन्दी जनमनी यानी इंडियन नेशन.

१८-११-५० —भगवान दीन

یہیں' کوکناڈا کی. تھوڑے سے لفظوں میں بولی کے خیال سے بھی سن ۲۱ میں ہندستان ہندی جن منی کا روپ لے چلا تھا. گاندھی جی نے تو بڑھاپے میں بھی یروڈا جیل میں اُردو کے اکشر سیکھے تھے اور تھوڑا بہت لکھنا بھی سیکھ گئے. جیل سے نکل کر اُنھوں نے اُردو اکشروں میں کسی اُردو اخبار کو سندیش بھی بھیجا تھا اور جس کو اُس اخبار نے بلاک بنوا کر چھاپا تھا. یہاں کوئی یہ نہ سمجھ بیٹھے کہ ہم اس طرح سے اُردو لپی یا ہندستانی کا پرچار کر رہے ہیں. ہم تو کسی مہا پرش کے کاموں کی نقل کرنے کو ٹھیک نہیں سمجھتے. ہم تو صرف یہی مانتے ہیں کہ مہا پرش کی اسپرٹ یا اُتساہ کی ہی نقل کی جانی چاہئے. کام تو سمے کے انوسار بدلتے بدلتے رہتے ہیں. ہاں تو سن ۲۱ میں سبھی نے جی جان سے کوشش کی کہ وہ ہندستانی سیکھ لیں اور کام چلاؤ تھوڑی بہت سبھی سیکھ بھی گئے تھے. راج نیت پنڈتوں کا یہ دھوکہ بھرا سوال کہ جس دیس میں بہت سی بولیاں ہوں وہ دیس نیشن کو جنم نہیں دے سکتا اُس وقت تو ایسے ہی دفن ہوگیا تھا مانو اب یہ کبھی قبر سے نہ اُٹھیگا اور گاندھی جی کے جادو کا چمتکار دیکھکر راجنیت کے پنڈت دانتوں تلے اُنگلی دبا کر رہ گئے تھے.

یہ تھی سن ۲۱ کی ہندی جن منی یعنی انڈین نیشن

—بھگوان دین ۱۸-۱۱-۵۰

बे ज़बान जानवर

(अनुवादक मुजीब रिज़वी)

एक हिन्दी कवि ने कहा है—बे ज़बान जानवर की निगाहों में एक सन्देश है, जिसे बुद्धिमान समझता है.

एक दिन शाम को जब मेरी बुद्धि कल्पनाओं पर विजय हासिल कर चुकी थी मैं घर से निकला. नगर महल्लों से गुज़रता हुआ एक ख़ाली मकान के सामने पहुँचकर रुक गया. उस मकान की दीवारें ढ़ै गईं थीं और खम्बे ज़मीन पर गिरे पड़े थे मकान की हालत साफ़ कह रही थी कि युगों से ग़ैरआबाद है. उसकी कहानी ज़रूर दुख से भरी है. मैंने देखा कि वहाँ एक कुत्ता राख पर पड़ा है. उसका बदन घावों से चूर चूर है. बीमारियों ने उसे हड्डी का ढाँचा बना दिया है. उसकी आँखें पच्छिम में डूबते सूरज पर जमी हैं. उनमें दूसरों की तरफ़ से निरादर का अन्धेरा छाया है निराशा और आस उन आँखों से टपकी पड़ती हैं. कमज़ोर जानवरों को सताने वाले लड़कों की पहुँच से दूर उस निर्जन स्थान से सूरज ने अपनी सांस की गरमी वापस लेना शुरू कर दिया है. कुत्ता उसे बिदाई के दुख से भरी निगाहों से तक रहा है. मैं धीरे धीरे कुत्ते की तरफ़ चला. दिल में एक चाह लिये हुए : अगर उसकी बोली मैं बोल सकता तो उसके दुखों पर उसे तसल्ली देता, उसकी मुसीबतों पर उससे हमदर्दी दिखाता. जैसे ही मैं पास पहुँचा डर कर उसने

بےزبان جانور

(انوادک مجیب رضوی)

ایک ہندی کوی نے کہا ہے— بےزبان جانور کی نگاہوں میں ایک سندیش ہے، جسے بدھیمان سمجھتا ہے ۔

ایک دن شام کو جب میری بدھی کلپناؤں پر وجے حاصل کر چکی تھی میں گھر سے نکلا ۔ نگر محلوں سے گزرتا ہوا ایک خالی مکان کے سامنے پہونچ کر رک گیا ۔ اُس مکان کی دیواریں ڈھے گئی تھیں اور کھمبے زمین پر گرے پڑے تھے مکان کی حالت صاف کہہ رہی تھی کہ یگوں سے غیر آباد ہے، اُسکی کہانی ضرور دکھ سے بھری ہے ۔ میں نے دیکھا کہ وہاں ایک کتا راکھ پر پڑا ہے اُس کا بدن گھاؤں سے چور چور ہے ۔ بیماریوں نے اُسے ہڈی کا ڈھانچہ بنا دیا ہے اُس کی آنکھیں پچھم میں ڈوبتے سورج پر جمی ہیں ۔ اُن میں دوسروں کی طرف سے نرادر کا اندھیرا چھایا ہے ۔ نراشا اور آس ان آنکھوں سے ٹپکی پڑتی ہیں ۔ کمزور جانوروں کو ستانے والے لڑکوں کی پہونچ سے دور اُس نرجن استھان سے سورج نے اپنی سانس کی گرمی واپس لینا شروع کر دیا ہے کتا اُسے بدائی کے دکھ سے بھری نگاہوں سے تک رہا ہے ۔ میں دھیرے دھیرے کتے کی طرف چلا دل میں ایک چاہ لئے ہوئے: اگر اُس کی بولی میں بول سکتا تو اُس کے دکھوں پر اُسے تسلی دیتا، اُس کی مصیبتوں پر اُس سے ہمدردی دکھاتا ۔ جیسے ہی میں پاس پہونچا ڈر کر اُس نے

अपने ख़तम होते हुए जीवन की बची बचाई शक्ति को इकट्ठा किया और कोशिश की कि अपनी उन टांगों के सहारे वहाँ से चला जाये जिन्हें बीमारी ने लुन्ज कर दिया है और मौत जिनको रखा कर रही है. पर वह अपनी जगह से उठ भी न सका और मुझे तकने लगा. एक ऐसी नज़र से—जिसमें नफ़रत की कड़वाहट और दया की भिक्षा की मिठास थी,एक ऐसी दृष्टि से—जिसमें झुकने के साथ मलामत भी थी,एक ऐसी निगाह से—जो ख़ुद एक भाषा थी–आदमी की भाषा से अधिक असरदार और औरत के आंसुओं से ज़्यादा सुन्दर.

मेरी निगाहें उसकी दुख भरी निगाहों से मिलीं मेरी भावनाओं में हलचल पैदा हो गई. विचार जाग उठे. मैंने उसकी निगाहों को साकार किया और इंसानी भाषा में ढाल दिया. वह निगाहें कह रहीं थीं.

"मुझ पर जो कुछ बीत रही है, वही मेरे लिये काफ़ी है ! मैंने आदमी के जितने अत्याचार सहे हैं और रोगों का जितना कष्ट झेला है, वही मेरे लिये बहुत है !! जाओ, मुझ पर दया करो ! मुझे शान्त रहने दो, मुझे सूरज की गरमी से कुछ ज़िन्दगी प्राप्त करने दो !! मैं आदमी के अत्याचार और संगदिली से भागकर इस राख के ढेर पर आ पड़ा हूं. यह आदमी के दिल से ज़्यादा कोमल है. मैं इस वीराने में आ छिपा हूँ, यह डरावने पन में आदमी से कहीं कम है......मेरे पास से चले जाओ ! तुम भी ज़मीन के उन्हीं रहने बसने वालों में से हो, जिनके फ़ैसले अधूरे और न्याय से

اپنے ختم ہوتے ہوئے جیون کی بچی بچائی شکتی کو اکٹھا کیا اور کوشش کی کہ اپنی ان ٹانگوں کے سہارے وہاں سے چلا جائے جنہیں بیماری نے لنج کر دیا ہے اور موت جن کی رکشا کر رہی ہے . پر وہ اپنی جگہ سے اٹھ بھی نہ سکا اور مجھے تکنے لگا . ایک ایسی نظر سے—جس میں نفرت کی کڑواہٹ اور دیا کی بھکشا کی مٹھاس تھی' ایک ایسی درشٹی سے—جس میں جھکنے کے ساتھ ملامت بھی تھی' ایک ایسی نگاہ سے—جو خود ایک بھاشا تھی—آدمی کی بھاشا سے ادھک اثردار اور عورت کے آنسوؤں سے زیادہ سندر .

میری نگاہیں اس کی دکھ بھری نگاہوں سے ملیں . میری بھاوناؤں میں ہلچل پیدا ہو گئی. وچار جاگ اٹھے. میں نے اس کی نگاہوں کو ساکار کیا اور انسانی بھاشا میں ڈھال دیا. وہ نگاہیں کہہ رہی تھیں :

''مجھ پر جو کچھ بیت رہی ہے وہی میرے لئے کافی ہے ! میں نے آدمی کے جتنے اتیاچار سہے ہیں' اور روگوں کا جتنا کشٹ جھیلا ہے وہی میرے لئے بہت ہے !! جاؤ' مجھ پر دیا کرو ! مجھے شانت رہنے دو' مجھے سورج کی گرمی سے کچھ زندگی پراپت کرنے دو !! میں آدمی کے اتیاچار اور سنگدلی سے بھاگ کر اس راکھ کے ڈھیر پر آپڑا ہوں. یہ آدمی کے دل سے زیادہ کومل ہے. میں اس ویرانے میں آچھپا ہوں' یہ ڈراونے پن میں آدمی سے کہیں کم ہے......میرے پاس سے چلے جاؤ ! تم بھی زمین کے انہیں رہنے

"मैं एक तुच्छ जानवर हूँ. पर मैंने आदमी की सेवा की है. उसके घर में सच्चे वफ़ादार की तरह रहा हूँ. उसकी दोस्ती का मैंने दम भरा. उसकी रक्षा की. उसके लिये जासूसी करता रहा. उसके दुख सुख में बराबर का साझी दार रहा. ग़ैरहाज़िरी में मैंने उसकी याद की और आने पर फूला न समाया. मैं उसके चौके के भौरों पर सन्तुष्ट रहा. उसकी चिचोड़ी हड्डियों को अपने लिये नेमत समझा ......लेकिन जब मैं बूढ़ा हो गया, बीमारी ने मेरे बदन में पंजे गड़ो दिये, उसने मुझे निकाल बाहर किया. मुझे गली कूचों के निर्दयी लड़कों का खिलौना, रोगों के तीरों का निशाना और हर तरह की गन्दगी का केन्द्र बना दिया.

"ऐ इंसान ! मैं एक दुर्बल जानवर हूँ. लेकिन मुझ में और तुम्हारे उन बहुत से कमज़ोर भाइयों में एक समानता है जिनकी शक्ति जवाब दे जाती है. वह भी रोटी के एक एक टुकड़े को मोहताज होते हैं और विनाश के गढ़े में गिर पड़ते हैं.

"मैं उन सिपाहियों का जैसा हूं जो अपनी जवानी मे अपने वतन की तरफ से लड़ते हैं और अधेड़ उमर में खेती बाड़ी करते हैं. लेकिन जब उनके जीवन में पतझड़ शुरू होता है, उनके हाथ पाँव बेकार हो जाते हैं, तो उन्हें धक्के दिये जाते हैं, उन्हें भुला दिया जाता है !

"मैं उस औरत की तरह हूं जिसकी जवानी बनाई सँवारी जाती है नौजवान दिलों के सुख के लिये. बीबी बन कर बच्चों को पालने के लिये रात रात भर जागती है. अधेड़ हो कर भविष्य के वीर और पंडित तैयार करने के लिये मुसीबतें उठाती है. लेकिन जब

''میں ایک تچھ جانور ہوں . پر میں نے آدمی کی سیوا کی ہے . اُس کے گھر میں سچے وفادار کی طرح رہا ہوں . اُس کی دوستی کا میں نے دم بھرا. اُس کی رکشا کی. اُس کے لئے جاسوسی کرتا رہا . اُس کے دکھ سکھ میں برابر کا ساجھیدار رہا. غیر حاضری میں میں نے اُس کی یاد کی اور آنے پر پھولا نہ سمایا . میں اُس کے چوکے کے بھوروں پر سنتشٹ رہا . اُس کی چچوڑی ہڈیوں کو اپنے لئے نعمت سمجھا......لیکن جب میں بوڑھا ہو گیا' بیماری نے میرے بدن میں پنجے گڑو دئے' اُس نے مجھے نکال باہر کیا . مجھے گلی کوچوں کے نردئی لڑکوں کا کھلونا' روگوں کے تیروں کا نشانہ اور ہر طرح کی گندگی کا کیندر بنا دیا

''اے انسان ! میں ایک دربل جانور ہوں . لیکن مجھ میں اور تمہارے اُن بہت سے کمزور بھائیوں میں ایک سمانتا ہے جن کی شکتی جواب دے جاتی ہے . وہ بھی روٹی کے ایک ایک ٹکڑے کو محتاج ہوتے ہیں اور وناش کے گڑھے میں گر پڑتے ہیں .

'' میں اُن سپاہیوں کا جیسا ہوں جو اپنی جوانی میں اپنے وطن کی طرف سے لڑتے ہیں اور ادھیڑ عمر میں کھیتی باڑی کرتے ہیں . لیکن جب اُن کے جیون میں پتجھڑ شروع ہوتا ہے ' اُن کے ہاتھ پاؤں بیکار ہوجاتے ہیں ' تو اِنہیں دھکے دیئے جاتے ہیں' اُنہیں بھلا دیا جاتا ہے !

'' میں اُس عورت کی طرح ہوں جس کی جوانی بنائی سنواری جاتی ہے نوجوان دلوں کے سکھ کے لئے . بیوی بن کر بچوں کو پالنے کے لئے رات رات بھر جاگتی ہے . ادھیڑ ہوکر بھوشیہ کے ویر اور پنڈت تیار کرنے کے لئے مصیبتیں اُٹھاتی ہے . لیکن

बूढ़ी हो जाती है तब तिरस्कार की चीज़ समझ कर भुला दी जाती है— आह! ऐ मनुष्य! तू कितना निदयी है, किस क़दर संगदिल है!!"

उस जानवर—कुत्ते—की निगाहें एक करुना भरी कहानी कह रही थीं और मेरी आत्मा समझ रही थी. मेरे दिमाग़ की यह हालत थी कि कभी उस बेज़बान जानवर पर तरस खाता था और कभी अपनी इंसानी बिरादरी की भयानक कल्पना करके कांप उठता था!

जब उस कुत्ते ने आँखें बन्द करलीं तब मैंने उसे तंग करना ठीक न समझा और वहाँ से चला आया.

अगर सिर्फ़ तजरबों से कोई बुद्धिमान हो जाता तो लन्दन अजायब घर के पत्थर दुनिया के बड़े से बड़े बुद्धिमानों से भी ज़्यादा बुद्धिमान होते.

—बर्नार्ड शा

मनुष्य जाति में मेरी बहुत भारी श्रद्धा है. सूरज की तरह वह भी बादलों से ढँक सकती है, लेकिन बुझ कभी नहीं सकती.

—रवीन्द्र नाथ टैगोर

جب بوڑھی هوجاتي هے تب ترسکار کي چیز سمجھ کر بھلا دی جاتی هے—آہ اے منش! تو کتنا نردئی هے' کس قدر سنگدل هے!''

اُس جانور—کتے—کی نگاهیں ایک کرونا بھری کہانی کہہ رهی تھیں اور میری آتما سمجھ رهی تھي. میرے دماغ کی یہ حالت تھی کہ کبھی اُس بے زبان جانور پر ترس کھاتا تھا اور کبھی اپنی انساني برادری کی بھیانک کلپنا کر کے کانپ اُٹھتا تھا!

جب اس کتے نے آنکھیں بند کر لیں میں نے اُسے تنگ کرنا ٹھیک نہ سمجھا اور وهاں سے چلا آیا.

اگر صرف تجربوں سے کوئی بدھی مان هو جاتا تو لندن عجائب گھر کے پتھر دنیا کے بڑے سے بڑے بدھی مانوں سے بھی زیادہ بدھی مان هوتے

—برنارڈ شا

منش جاتی میں میری بہت بھاری شردھا هے. سورج کی طرح وہ بھی بادلوں سے ڈھک سکتی هے' لیکن بجھ کبھی نهیں سکتی.

—رویندر ناتھ ٹیگور

सत्य के साथियों का समाज

(भाई गु. म.)

योरप और अमरीका और कई पच्छिमी मुल्कों में एक धार्मिक समाज है जिसका नाम कुएकर्स (Quakers) है. उसको Society of Friends भी कहते हैं. अगरचे उसके मेम्बर धर्म के खयाल से ईसाई होते हैं क्योंकि वह क्राइस्ट (यसू मसीह) को मानते हैं तो भी वह किसी चर्च या ईसाई धार्मिक संस्था से संबंध नहीं रखते. वह प्रभु की और यसू मसीह की आराधना खामोशी में करते हैं. उनका न कोई गिरजा है न कोई मूर्त्ती पूजन, न पुरोहित और न घंट बजाने का आडम्बर. और जब वह खामोशी में बैठकर आराधना कर रहे होते हैं तो कोई भी उनमें से कुछ भी नहीं बोलता जब तक उसकी अंतर आत्मा उसे कुछ कहने को मजबूर नहीं करती। वह किसी और को कभी भी ईसाई बनाने की कोशिश नहीं करते.

कई बरसों से हिन्दुस्तान में भी कुएकर्स के एक दो गिरोह चुप चाप समाज की सेवा कर रहे हैं. किसानों की सेवा, शरनार्थियों की सेवा, हस्पताल और गाँव सुधार और गाँव के लोगों को पढ़ाना लिखाना, यह उनका खास काम है. जैसा कि उनके और साथी भी दूसरे मुल्कों में करते हैं.

ستیہ کے ساتھیوں کا سماج

(بھائی گ . م)

یورپ اور امریکہ اور کئی پچھمی ملکوں میں ایک دھارمک سماج ھےجسکا نام کوئکرس(Quakers) ھے.اُسکو Society of Friends بھی کہتے ھیں . اگرچہ اُس کے ممبر دھرم کے خیال سے عیسائی ھوتے ھیں کیونکہ وہ کرائیسٹ (یسوع مسیح) کو مانتے ھیں تو بھی وہ کسی چرچ یا عیسائی دھارمک سنستھا سے سمبندھ نہیں رکھتے . وہ پربھو کی اور یسوع مسیح کی آرادھنا خاموشی میں کرتے ھیں . اُنکا نہ کوئی گرجا ھے نہ کوئی مورتی پوجن' نہ پروھت اور نہ گھنٹ بجانے کا آڈمبر . اور جب وہ خاموشی میں بیٹھ کر آرادھنا کر رھے ھوتے ھیں تو کوئی بھی اُن میں سے کچھ بھی نہیں بولتا جب تک اُسکی انتر آتما اُسے کچھ کہنے کو مجبور نہیں کرتی . وہ کسی اور کو کبھی بھی عیسائی بنانے کی کوشش نہیں کرتے .

کئی برسوں سے ھندستان میں بھی کوئکرس کے ایک دو گروہ چپ چاپ سماج کی سیوا کر رھے رھیں. کسانوں کی سیوا' شرناتھیوں کی سیوا' ھسپتال اور گاؤں سدھار اور گاؤں کے لوگوں کو پڑھانا لکھانا' یہ اُن کا خاص کام ھے . جیسا کہ اُن کے اور ساتھی بھی دوسرے ملکوں میں کرتے ھیں .

कुछ अरसा हुआ गांधी जी की प्रेरना से हिन्दुस्तान में जो क्वेकर्स का गिरोह है उन्होंने एक समाज क़ायम किया है जिसका नाम है Fellowship of the friends of Truth (सत्य के साथियों का समाज) इसका मक़सद यह है कि जुदा जुदा धर्मों के लोग ख़ामोशी में बैठ कर एक साथ प्रभु की आराधना करें. वह अपने धर्म पर बेशक चलें मगर उनकी प्रभु के लिये लगन ऐसी होनी चाहिये कि वह दिल से और धर्मों के लोगों के साथ प्रभु की आराधना में शामिल हो सकें. उनका सच्चा विश्वास है कि जो कोई अपने धर्म को ठीक समझता है उसके दिल में प्रभु के लिये प्रेम पैदा हुए बिना रह ही नहीं सकता. और क्योंकि प्रभु तो सब का है इसलिये वह सब एक दूसरे के साथ प्रेम का संबंध रख सकते हैं.

मगर जैसा गांधी जी कहा करते थे "सत्य प्रभु है." इसलिये इस नये समाज का नाम सत्य के साथियों का समाज रखा गया है. क्योंकि जो प्रभु को प्रेम करता है वह सत्य को प्रेम करता है और जो सत्य को प्रेम करता है वह प्रभु को प्रेम करता है. और क्योंकि सच्ची आराधना तो दिल के मंदिर में बैठ कर ही हो सकती है इसलिये वह सब ख़ामोशी के कोने में प्रभु या सत्य को पहचानने की कोशिश करते हैं जैसा कि आराधना का सच्चा मतलब है. अगर एक महा पुरुष के शब्दों में कहा जाये: "Be quiet and know that I am God" (ख़ामोश हो और मैं प्रभु हूँ ऐसा ग्यान हासिल करो)

सत्य के साथियों के समाज का मतलब हरगिज़ यह नहीं है कि

کچھ عرصہ ہوا گاندھی جی کی پریرنا سے ہندستان میں جو کوئکرس کا گروہ ہے اُنہوں نے ایک سماج قائم کیا ہے جسکا نام ہے Fellow-ship of the Friends of Truth (ستیہ کے ساتھیوں کا سماج) . اسکا مقصد یہ ہے کہ جدا جدا دھرموں کے لوگ خاموشی میں بیٹھکر ایک ساتھ پربھو کی آرادھنا کریں . وہ اپنے دھرم پر بیشک چلیں مگر اُنکی پربھو کے لئے لگن ایسی ہونی چاہئے کہ وہ دل سے اور دھرموں کے لوگوں کے ساتھ پربھو کی آرادھنا میں شامل ہو سکیں. اُنکا سچا وشواس ہے کہ جو کوئی اپنے دھرم کو ٹھیک سمجھتا ہے اُسکے دل میں پربھو کے لئے پریم پیدا ہوئے بنا رہ ہی نہیں سکتا. اور کیونکہ پربھو تو سب کا ہے اسلئے وہ سب ایک دوسرے کے ساتھ پریم کا سمبندھ رکھ سکتے ہیں .

مگر جیسا گاندھی جی کہا کرتے تھے "ستیہ پربھو ہے ." اسلئے اِس نئے سماج کا نام ستیہ کے ساتھیوں کا سماج رکھا گیا ہے . کیونکہ جو پربھو کو پریم کرتا ہے وہ ستیہ کو پریم کرتا ہے اور جو ستیہ کو پریم کرتا ہے وہ پربھو کو پریم کرتا ہے . اور کیونکہ سچی آرادھنا تو دل کے مندر میں بیٹھ کر ہی ہو سکتی ہے اسلئے وہ سب خاموشی کے کونے میں پربھو یا ستیہ کو پہچاننے کی کوشش کرتے ہیں جیسا کہ آرادھنا کا سچا مطلب ہے . اگر ایک مہاپرش کے شبدوں میں کہا جائے "Be quiet and know that I am God" (خاموش ہو اور 'میں پربھو ہوں' ایسا گیان حاصل کرو .)

ستیہ کے ساتھیوں کے سماج کا مطلب ہرگز یہ نہیں ہے کہ وہ سب

एक इशारा ही कर सकता है. और जैसे किसी मंजिल तक पहुँचने के लिये जुदा जुदा रास्ते होते हैं वैसे धर्म भी जुदा जुदा हैं."और सब रास्ते मेरे हैं" जैसा कि श्री कृष्न ने गीता में कहा है.

जब तक ईश्वर इस दुनिया का सिरजनहार है और जब तक उसकी सृष्टि अनेक रंगों और रूपों की है तब तक मनुश्य जाति सिर्फ़ एक ही धर्म को नहीं मानेगी. बल्कि वह जुदा जुदा रास्तों पर चलकर प्रभु के अनंत प्रेम, ज्ञान और सत्य की तलाश करेगी और उनका हर एक जीव अपने जीवन में रस लूटेगा और उनका अनुभव करेगा. सच कहा है गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर ने :

"When God dies then religions will be one"

"जब प्रभु मर जायगा तब ही सब धर्म एक हो सकेंगे."

तारों ने चाँद पर जोत चुराने का इलज़ाम लगाया और उन्हों ने चकोर को यह सन्देसा भेजा कि वह चाँद की तारीफ़ न करे क्योंकि वह तुम्हे धोका देता है और उसकी यह सुन्दरता चोरी की चीज़ है.

चकोर ने जवाब दिया—"योंही सही. लेकिन मुझे यह बताओ कि क्या वह जोत चुरा कर अच्छे रूप में पेश नहीं करता ?"

—बशीर 'हिन्दी'

ایک اشارہ ھی کر سکتا ھے . اور جیسے کسی منزل تک پہونچنے کے لئے جدا جدا راستے ھوتے ھیں ویسے دھرم بھی جدا جدا ھیں . "اور سب راستے میرے ھیں" جیسا کہ شری کرشن نے گیتا میں کہا ھے .

جب تک ایشور اِس دنیا کا سرجن ھار ھے اور جب تک اُس کی سرشٹی انیک رنگوں اور روپوں کی ھے تب تک منشیہ جاتی صرف ایک ھی دھرم کو نہیں مانیگی . بلکہ وہ جدا جدا راستوں پر چل کر پربھو کے اننت پریم' گیان اور ستیہ کی تلاش کریگی اور اُن کا ھر ایک جیو اپنے جیون میں رس لوٹیگا اور اُن کا انوبھو کریگا . سچ کہا ھے گرو دیو رویندرناتھ ٹیگور نے :

"When God dies then religious will be one"

"جب پربھو مر جائیگا تب ھی سب دھرم ایک ھو سکینگے"

تاروں نے چاند پر جوت چرانے کا الزام لگایا اور اُنھوں نے چکور کو یہ سندیسہ بھیجا کہ وہ چاند کی تعریف نہ کرے کیونکہ وہ تجھے دھوکہ دیتا ھے اور اُسکی یہ سندرتا چوری کی چیز ھے.

چکور نے جواب دیا—" یوں ھی سہی . لیکن مجھے یہ بتاؤ کہ کیا وہ جوت چراکر اچھے روپ میں پیش نہیں کرتا ؟"

—بشیر 'ھندی'

दुनिया का हाल



دنیا کا حال

(भाई इशरत अली सिद्दीक़ी)

कोरिया की लड़ाई

कोरिया की लड़ाई में चीन के आ जाने के बाद इस लड़ाई के दुनिया की लड़ाई बन जाने की सम्भावना बहुत बढ़ गई है. लड़ाई के शुरू में यू. एन. ओ. की फ़ौजें दक्खिनी कोरिया में इतनी तेज़ी से हट रही थीं कि मालूम होता था उत्तरी कोरिया की कम्युनिस्ट फ़ौज उनको समुन्दर में ढकेल देगी. और इसका कारन यह था कि यू. एन. ओ. की फ़ौजों की गिनती बहुत कम और उनके पास सामान बहुत थोड़ा था, जिसकी वजह से उत्तरी सेना उनको जगह जगह घेर लेती थी और चारों तरफ़ से घिर जाने से बचने के लिये वह बराबर पीछे हटती जा रही थीं यहाँ तक कि १३ सितम्बर को उत्तरी कोरिया के प्रधान मंत्री ने यह दावा किया कि दक्खिन की ९५ फ़ीसदी ज़मीन, जिसमें ९७ फ़ीसदी आबादी बसी है, उनके क़बज़े में आ गई है. मगर दो ही दिन बाद यू. एन. ओ. के कमांडर जनरल मैकआर्थर ने अपने हवाई और समुन्दरी जहाजों की मदद से उत्तरी सेना के

(بھائی عشرت علی صدیقی)

کوریا کی لڑائی

کوریا کی لڑائی میں چین کے آجانے کے بعد اس لڑائی کے دنیا کی لڑائی بن جانے کی سمبھاونا بہت بڑھ گئی ہے . لڑائی کے شروع میں یو . این . او کی فوجیں دکھنی کوریا میں اتنی تیزی سے ہٹ رہی تھیں کہ معلوم ہوتا تھا اُتری کوریا کی کمیونسٹ فوج اُن کو سمندر میں ڈھکیل دے گی . اور اس کا کارن یہ تھا کہ یو . این . او . کی فوجوں کی گنتی بہت کم اور اُن کے پاس سامان بہت تھوڑا تھا ' جس کی وجہ سے اُتری سینا اُن کو جگہ جگہ گھیر لیتی تھی اور چاروں طرف سے گھر جانے سے بچنے کے لئے وہ برابر پیچھے ہٹتی جارہی تھیں یہاں تک کہ ۱۳ ستمبر کو اُتری کوریا کے پردھان منتری نے یہ دعویٰ کیا کہ دکھن کی ۹۵ فیصدی زمین' جس میں ۹۷ فیصدی آبادی بسی ہے' اُن کے قبضہ میں آگئی ہے . مگر دو ہی دن بعد یو . این . او . کے کمانڈر جنرل میک آرتھر

पीछे अपने सैनिक उतार दिये और लड़ाई का पाँसा एक दम से पलट गया.

सरहद के पार

थोड़े ही दिनों में जनरल मैकआर्थर की सेना दक्खिनी कोरिया की उत्तरी सरहद पर पहुँच गई. और दुनिया में यह बहस छिड़ गई कि उसको सरहद पार जाना चाहिये या नहीं हिन्दुस्तान ने फिर एक बार लड़ाई रोकने और शान्ति की खोज करने की कोशिश की. उसके प्रतिनिधि ने कहा कि सरहद पार करने से पहले यू. एन. ओ. अपना मक़सद बतावे और उत्तरी कोरिया को समझौते का एक मौक़ा दे. मगर जनरल मैकआर्थर ने उत्तरी कोरिया की सेना के सामने यह मांग रखी कि वह पूरे कोरिया में हथियार डाल दे और हार मान ले. यानी उत्तरी कोरिया पर उनकी निगरानी मान ले. उत्तरी सरकार इसके लिये तैयार नहीं हुई और यू. एन. ओ. की जनरल असेम्बली ने ७ अक्तूबर को कोरिया के बारे में एक ऐसा प्रस्ताव मंजूर कर लिया जिससे जनरल मैकआर्थर को उत्तरी कोरिया में अपनी फ़ौजें भेजने की इजाज़त मिल गई.

अमरीका और कम्युनिज़्म

हिन्दुस्तान ने अगरचे दक्खिनी कोरिया पर उत्तर के हमले का मुक़ाबला करने के प्रस्ताव का समर्थन किया था मगर उसने इस दूसरे प्रस्ताव का समर्थन नहीं किया. उसे चीन की राजधानी पेकिंग में अपने राजदूत द्वारा यह ख़बर मिली थी कि अगर यू. एन. ओ. की फ़ौजें उत्तरी कोरिया में गईं तो चीन वहाँ की कम्युनिस्ट सरकार को सहायता

پیچھے اپنے سینک اُتار دیئے اور لڑائی کا پانسہ ایک دم سے پلٹ گیا .

سرحد کے پار

تھوڑے ھی دنوں میں جنرل میک آرتھر کی سینا دکھنی کوریا کی اُتری سرحد پر پہنچ گئی . اور دنیا میں یہ بحث چھڑ گئی کہ اس کو سرحد پار جانا چاھئے یا نہیں . ھندستان نے پھر ایک بار لڑائی روکنے اور شانتی کی کھوج کرنے کی کوشش کی . اس کے پرتی ندھی نے کہا کہ سرحد پار کرنے سے پہلے یو . این . او . اپنا مقصد بتاوے اور اُتری کوریا کو سمجھوتے کا ایک موقع دے مگر جنرل میک آرتھر نے اُتری کوریا کی سینا کے سامنے یہ مانگ رکھی کہ وہ پورے کوریا میں ھتھیار ڈال دے اور ھار مان لے . یعنی اُتری کوریا پر ان کی نگرانی مان لے . اُتری سرکار اس کے لئے تیار نہیں ھوئی اور یو . این . او . کی جنرل اسمبلی نے ۷ اکتوبر کو کوریا کے بارے میں ایک ایسا پرستاؤ منظور کر لیا جس سے جنرل میک آرتھر کو اُتری کوریا میں اپنی فوجیں بھیجنے کی اجازت مل گئی .

امریکہ اور کمیونزم

ھندستان نے اگرچہ دکھنی کوریا پر اُتر کے حملے کا مقابلہ کرنے کے پرستاؤ کا سمرتھن کیا تھا مگر اس نے اس دوسرے پرستاؤ کا سمرتھن نہیں کیا . اُسے چین کی راجدھانی پیکنگ میں اپنے راجدوت دوارا یہ خبر ملی تھی کہ اگر یو . این . او . کی فوجیں اُتری کوریا میں گئیں تو چین وھاں کی کمیونسٹ سرکار کو سہایتا

चलता है और जब तक हिन्दुस्तान के टुकड़े नहीं हुए थे तब तक सारे हिन्दुस्तान के लिए एक ही प्रोग्राम रहा करता था. पर हिन्दुस्तान के दो टुकड़े हो जाने पर न जाने किस दिन से बी० बी० सी० लन्दन ने अपने हिन्दुस्तानी प्रोग्राम को दो हिस्सों में बांट दिया है. एक पाकिस्तान के लिए और दूसरा हिन्द के लिए. पाकिस्तान के लिए वह उर्दू में बोलता है और हिन्द के लिए हिन्दुस्तानी में. आज १६ दिसम्बर सन् १९४९ तक बी० बी० सी० लन्दन हिन्द के लिए जो प्रोग्राम ब्राडकास्ट करता है उसको हिन्दुस्तानी कहकर बताता है. उसे वह कब हिन्दी कहना शुरू कर देगा इसका पता नहीं. हमको यहाँ सिर्फ यह कहना है कि जो उर्दू का प्रोग्राम बी० बी० सी० लन्दन पाकिस्तान के लिए ब्राडकास्ट करता है वह दस फ़ीसदी हिन्दुस्तानी होता है और तीन से पांच फ़ीसदी तक ठेठ हिन्दी होता है. उस को पाकिस्तानी और हिन्दी दोनों समझते हैं. यह हम इस आधार पर कह रहे हैं कि पाकिस्तान और हिन्द दोनों मुल्कों के शहरों से बी० बी० सी० लन्दन के पास सवाल पहुँचते हैं और वह उनके जवाब ब्राडकास्ट करता है.

हिन्द के लिए हिन्दुस्तानी में बी० बी० सी० लन्दन से जो प्रोग्राम ब्राडकास्ट किया जाता है उसको हमें सौ फ़ीसदी हिन्दुस्तानी ही कहना पड़ेगा. यह दूसरी बात है कि जबसे हिन्दुस्तान ने हिन्दी को दफ़्तरी बोली मान लिया है तब से बी० बी० सी० लन्दन के प्रोग्राम में ठेठ, चालू और रचे-पचे हिन्दी शब्दों की जगह कुछ कुछ संस्कृत के तत्सम शब्द जगह लेने लगे हैं और यह दिल्ली रेडियो की नक़ल है. और दिल्ली की नक़ल करने के लिए लन्दन मजबूर है.

چلتا ہے اور جب تک ہندستان کے ٹکڑے نہیں ہوئے تھے تب تک سارے ہندستان کے لئے ایک ہی پروگرام رہا کرتا تھا۔ پر ہندستان کے دو ٹکڑے ہو جانے پر نہ جانے کس دن سے بی۔ بی۔ سی لندن نے اپنے ہندستانی پروگرام کو دو حصوں میں بانٹ دیا ہے۔ ایک پاکستان کے لئے اور دوسرا ہند کے لئے۔ پاکستان کے لئے وہ اردو میں بولتا ہے اور ہند کے لئے ہندستانی میں۔ آج ۱۶ دسمبر سنہ ۱۹۴۹ تک بی۔ بی۔ سی لندن ہند کے لئے جو پروگرام براڈکاسٹ کرتا ہے اس کو ہندستانی کہہ کر بتاتا ہے۔ اسے وہ کب ہندی کہنا شروع کر دے گا اس کا پتہ نہیں۔ ہم کو یہاں صرف یہ کہنا ہے کہ جو اردو کا پروگرام بی۔ بی۔ سی لندن پاکستان کے لئے براڈکاسٹ کرتا ہے وہ دس فیصدی ہندستانی ہوتا ہے اور تین سے پانچ فیصدی تک ٹھیٹھ ہندی ہوتا ہے۔ اس کو پاکستانی اور ہندی دونوں سمجھتے ہیں۔ یہ ہم اس آدھار پر کہہ رہے ہیں کہ پاکستان اور ہند دونوں ملکوں کے شہروں سے بی۔ بی۔ سی لندن کے پاس سوال پہنچتے ہیں اور وہ ان کے جواب براڈکاسٹ کرتا ہے۔

ہند کے لئے ہندستانی میں بی بی سی لندن سے جو پروگرام براڈکاسٹ کیا جاتا ہے اس کو ہمیں سو فیصدی ہندستانی ہی کہنا پڑے گا۔ یہ دوسری بات ہے کہ جب سے ہندستان نے ہندی کو دفتری بولی مان لیا ہے تب سے بی بی سی لندن کے پروگرام میں ٹھیٹھ، چالو اور رچے پچے ہندی شبدوں کی جگہ کچھ کچھ سنسکرت کے تتسم شبد جگہ لینے لگے ہیں اور یہ دلی ریڈیو کی نقل ہے۔ اور دلی کی نقل کرنے کے لئے لندن مجبور ہے۔

ढूंगा. बाद में चीन के प्रधान मंत्री ने भी साफ़ शब्दों में कह दिया कि हम अपनी सरहद से मिले हुए इलाक़े पर अमरीका का क़बज़ा बरदाश्त नहीं करेंगे. और चीन में यह चर्चा होने लगा कि अमरीका, जो यू. एन ओ. का करता धरता है, कोरिया पर क़बज़ा करने के बाद चीन पर हमला करेगा. इसके पहले जापान भी इसी रास्ते से आया था और इसलिये यह बात चीनी जनता के दिल में उतर गई. वहाँ की जनता और सरकार और दूसरे देशों के लोग भी खुद प्रधान ट्रूमैन के मुंह से यह बात सुन चुके थे कि कोरिया के कम्युनिस्टों की कारवाई एक अन्तरराष्ट्री रूप रखती है. और इस बात से क़ुदरती तौर पर यह ख़याल पैदा होता था कि अमरीका दक्खिनी कोरिया को उत्तर के हमले से बचाना नहीं बल्कि कम्युनिज़्म को नीचा दिखाना चाहता है. यह शक और सन्देह उस वक़्त और पक्के हो गये जब ट्रूमैन साहब जनरल मैकआर्थर से मिलने के लिये शान्त सागर के एक टापू में गये, वहाँ से वापस आकर उन्होंने कम्युनिज़्म को बुरा भला कहा, जनरल मैकआर्थर की तारीफ़ की और कहा कि मैं उनकी राय से पूरी तरह सहमत हूं. इससे पहले उन्होंने जनरल मैकआर्थर से उनका एक बयान वापस करा दिया था जिसमें जनरल मैकआर्थर ने चीन को दुशमन समझने और उसके टापू फ़ारमूसा में अमरीका के अड्डे बनाये रखने पर ज़ोर दिया था. मैकआर्थर को बयान तो वापस लेना पड़ा लेकिन उन्हों ने अपनी राय नहीं बदली और ट्रूमैन ने उनसे सहमत होने की बात कह कर एक तरह से अपनी पालिसी और राय बदल जाने का

دے گا. بعد میں چین کے پردھان منتری نے بھی صاف شبدوں میں کہدیا کہ ہم اپنی سرحد سے ملے ہوئے علاقے پر امریکہ کا قبضہ برداشت نہیں کریں گے . اور چین میں یہ چرچا ہونے لگا کہ امریکہ' جو یو . این . او . کا کرتا دھرتا ہے' کوریا پر قبضہ کرنے کے بعد چین پر حملہ کرے گا . اس کے پہلے جاپان بھی اسی راستے سے آیا تھا اور اس لئے یہ بات چینی جنتا کے دل میں اُتر گئی . وہاں کی جنتا اور سرکار اور دوسرے دیشوں کے لوگ بھی خود پردھان ترومین کے منہ سے یہ بات سن چکے تھے کہ کوریا کے کمیونسٹوں کی کاروائی ایک انتر راشٹری روپ رکھتی ہے . اور اس بات سے قدرتی طور پر یہ خیال پیدا ہوتا تھا کہ امریکہ دکھنی کوریا کو اُتر کے حملے سے بچانا نہیں بلکہ کمیونزم کو نیچا دکھانا چاہتا ہے . یہ شک اور سندیہ اس وقت اور پکے ہوگئے جب ترومین صاحب جنرل میک آرتھر سے ملنے کیلئے شانت ساگر کے ایک ٹاپو میں گئے' وہاں سے واپس آکر اُنھوں نے کمیونزم کو برا بھلا کہا' جنرل میک آرتھر کی تعریف کی اور کہا کہ میں اُن کی رائے سے پوری طرح سہمت ہوں . اس سے پہلے اُنھوں نے جنرل میک آرتھر سے ان کا ایک بیان واپس کرادیا تھا جس میں جنرل میک آرتھر نے چین کو دشمن سمجھنے اور اسکے ٹاپو فارموسا میں امریکہ کے اڈے بنائے رکھنے پر زور دیا تھا . میک آرتھر کو بیان تو واپس لینا پڑا لیکن اُنھوں نے اپنی رائے نہیں بدلی اور ترومین نے ان سے سہمت ہونے کی بات کہکر ایک طرح سے اپنی

चीन मैदान में

चीन पर इन बातों का असर पड़ा और उसने यह भी सोचा कि उत्तरी कोरिया पर यू. एन. ओ. का क़बज़ा हो जाने से उसके सरहदी दरिया यालू से बनने वाली बिजली चीन के सूबे मंचूरिया को नहीं मिल सकेगी, इसलिये उसने इस क़बज़े को रोकने के लिये उत्तरी कोरिया को मदद देना शुरू कर दिया. हिन्द सरकार की पेशीन-गोई सच्ची निकली. मगर जनरल मैकआर्थर और अमरीकी सरकार इस बात को टालते रहे और दुनिया को बहुत दिनों तक यही बताते रहे कि चीनी सरकार ने कोरिया के मामले में गीदड़ भपकी दी थी. आखिर ६ अक्तूबर को यू. एन. ओ. के कमांडर ने सुरक्षा समिति के नाम एक खास रिपोर्ट में चीन पर कोरिया की लड़ाई में दखल देने का इलज़ाम लगाया. चीनी सरकार ने भी यह बात मान ली है. पर उसका कहना है कि चीन के मज़दूर और किसान कोरिया में अपने पड़ोसियों और साथियों की मदद करने और अपने देश की सरहद को अमरीका के हमले से बचाने के लिये अपनी मरज़ी से जा रहे हैं. मतलब यह है कि कोरिया में लड़ने वाले चीनी चीन की सेना से नहीं भेजे गये हैं बल्कि वालेन्टियर बन कर गये हैं. चीनी सरकार ने यह बता दिया है कि वह उन लोगों के जाने को ठीक समझती है और उनको वापस बुलाने के लिये नहीं तैयार है. उसने यह भी कह दिया है कि वह सुरक्षा समिति में जनरल मैकआर्थर की रिपोर्ट पर कोई बयान देने नहीं जायगी, जब तक उसे उस रिपोर्ट के साथ] साथ कोरिया के पूरे सवाल और फ़ारमूसा पर अमरीका के हमले

چین میدان میں

چین پر ان باتوں کا اثر پڑا اور اِس نے یہ بھی سوچا کہ اُتری کوریا پر یو . این . او . کا قبضہ ہوجانے سے اس کے سرحدی دریا یالو سے بننے والی بجلی چین کے صوبے منچوریا کو نہیں مل سکے گی ' اُس لئے اُس نے اس قبضے کو روکنے کے لئے اتری کوریا کو مدد دینا شروع کر دیا . هند سرکار کی پیشین گوئی سچی نکلی . مگر جنرل میک آرتھر اور امریکی سرکار اسبات کو ٹالتے رہے اور دنیا کو بہت دنوں تک یہی بتاتے رہے کہ چینی سرکار نے کوریا کے معاملے میں گیدڑ بھبکی دی تھی . آخر ۶ اکتوبر کو یو . این . او . کے کمانڈر نے سورکشا سمیتی کے نام ایک خاص رپورٹ میں چین پر کوریا کی لڑائی میں دخل دینے کا الزام لگایا . چینی سرکار نے بھی یہ بات مان لی ہے . پر اس کا کہنا ہے کہ چین کے مزدور اور کسان کوریا میں اپنے پڑوسیوں اور ساتھیوں کی مدد کرنے اور اپنے دیش کی سرحد کو امریکہ کے حملے سے بچانے کے لئے اپنی مرضی سے جا رہے ہیں. مطلب یہ ہے کہ کوریا میں لڑنے والے چینی چین کی سینا سے نہیں بھیجے گئے ہیں بلکہ والنٹیر بن کر گئے ہیں . چینی سرکار نے یہ بتا دیا ہے کہ وہ اُن لوگوں کے جانے کو ٹھیک سمجھتی ہے اور ان کو واپس بلانے کے لئے نہیں تیار ہے . اس نے یہ بھی کہہ دیا ہے کہ وہ سورکشا سمیتی میں جنرل میک آرتھر کی رپورٹ پر کوئی بیان دینے نہیں جائے گی ' جب تک اُسے اس رپورٹ کے ساتھ ساتھ کوریا کے پورے سوال اور فارموسا پر امریکہ کے حملے

यानी वहाँ अमरीकी अड्डों के क़ायम होने पर बहस करने का मौक़ा न दिया जाय.

सुरक्षा समिति की मांग

दूसरी तरफ़ सुरक्षा समिति में अमरीका, बरतानिया, फ़रान्स और तीन दूसरे राष्ट्रों ने यह प्रस्ताव रखा है कि चीन कोरिया से अपने आदमियों को वापस बुला ले. ख़याल है कि अगर समिति में इस प्रस्ताव को अधिक मत मिल गये तब भी रूस अपने ख़ास वोट (वीटो) के ज़रिये उसे नामंज़ूर कर देगा. ऐसी सूरत में शायद अमरीका या उसका कोई और साथी इस मामले को जनरल असेम्बली में पेश कर देगा. इसलिये कि अमरीका की कोशिश से यह बात तय हो गई है कि अगर कोई मामला वीटो के कारन सुरक्षा समिति में तय नहो सके तो उस पर सोच विचार करने के लिये २४ घन्टे का नोटिस देकर जनरल असेम्बली की बैठक बुलाई जा सकती है. और अगर यह मामला शान्ति के भंग होने का है तो असेम्बली उसके ख़िलाफ़ कारवाई कर सकती है. इस कारवाई के लिये हर देश अपनी सेना का एक हिस्सा पहले से अलग कर देगा.

यू. एन. ओ. किधर ?

यू. एन. ओ. के चार्टर में ऐसी कारवाई का अधिकार सिर्फ़ सुरक्षा समिति को दिया गया था. और चार्टर की इस तबदीली का अकेले रूस ही ने नहीं बल्कि हिन्दुस्तान ने भी विरोध किया है. पंडित नेहरू ने कहा कि चार्टर में ऐसी तबदीली, जिससे यू. एन. ओ. में सिर्फ़ एक ख़याल के देश रह जायें, इस संस्था की जड़ काट देगी

یعنی وھاں امریکی اڈوں کے قایم ھونے پر بحث کرنے کا موقع نہ دیا جائے .

سورکشا سمیتی کی مانگ

دوسری طرف سورکشا سمیتی میں امریکہ' برطانیہ' فرانس اور تین دوسرے راشٹروں نے یہ پرستاؤ رکھا ھے کہ چین کوریا سے اپنے آدمیوں کو واپس بلالے . خیال ھے کہ اگر سمیتی میں اس پرستاؤ کو ادھک مت مل گئے تب بھی روس اپنے خاص ووٹ (ویٹو) کے ذریعے اُسے نامنظور کر دیگا. ایسی صورت میں شاید امریکہ یا اس کا کوئی اور ساتھی اس معاملے کو جنرل اسمبلی میں پیش کر دے گا . اس لئے کہ امریکہ کی کوشش سے یہ بات طے ھو گئی ھے کہ اگر کوئی معاملہ ویٹو کے کارن سورکشا سمیتی میں طے نہ ھو سکے تو اسپر سوچ وچار کرنے کے لئے ۲۴ گھنٹے کا نوٹس دے کر جنرل اسمبلی کی بیٹھک بلائی جا سکتی ھے . اور اگر یہ معاملہ شانتی کے بھنگ ھونے کا ھے تو اسمبلی اس کے خلاف کاروائی کر سکتی ھے. اس کاروائی کے لئے ھر دیش اپنی سینا کا ایک حصہ پہلے سے الگ کر دے گا .

یو. این. او. کدھر؟

یو. این او. کے چارٹر میں ایسی کاروائی کا ادھکار صرف سورکشا سمیتی کو دیا گیا تھا . اور چارٹر کی اس تبدیلی کا اکیلے روس ھی نے نہیں بلکہ ھندستان نے بھی ورودھ کیا ھے . پنڈت نہرو نے کہا کہ چارٹر میں ایسی تبدیلی' جس سے یو . این . او . میں صرف ایک خیال کے دیش رہ جائیں' اس سنستھا کی جڑ کاٹ دے گی

और यू. एन. ओ. में हिन्दुस्तान के प्रतिनिधि ने कहा कि जबरदस्ती और शान्ति को भंग करने वाली कारवाई का मुक़ाबला करना जरूरी है मगर इस ज़माने में लड़ाई की बातें और तैयारियाँ नामुनासिब हैं. यह बात अमरीका और बरतानिया की समझ में नहीं आई. दोनों ने फ़ौज और लड़ाई के सामान की तैयारी पर अपना ख़र्चा बढ़ा दिया है और ऐटम बम की मनाही और फ़ौजों में एक तिहाई की कमी के बारे में रूस के एक सुझाव का जवाब यह दिया है कि पहले वह ख़ुद अपनी फ़ौज को कम करके पच्छिमी राष्ट्रों की फ़ौज के बराबर ले आए. इस सवाल और जवाब दोनों की बुनियाद डर पर है और यह डर अगर दूर न हुआ तो दुनिया को ले डूबेगा.

इसकी छाप सुरक्षा समिति के अधिकार कम करके जनरल असेम्बली के अधिकार बढ़ाने की कोशिश के अलावा कोरिया की लड़ाई में चीन के रुख़ पर भी दिखाई देती है. अमरीका के प्रधान और विदेस मन्त्री ने जब चीन को यह यक़ीन दिलाया कि उसे यालू नदी से बनने वाली बिजली मिलती रहेगी और यू. एन. ओ की फ़ौजें उसकी सरहद में नहीं घुसेंगी तो उन्होंने इस डर को दूर करने की एक कोशिश की है. पर उनकी पहले वाली बातों के कारन इस कोशिश का असर बहुत हलका रहेगा. इस असर का अभी तक कोई पता नहीं चला है.

वापसी की शर्तें

अमरीका के शहर और सुरक्षा समिति के घर लेकसेक्सेस की एक

اور یو . این . او . میں ھندستان کے پرتی ندھی نے کہا کہ زبردستی اور شانتی کو بھنگ کرنے والی کاروائی کا مقابلہ کرنا ضروری ھے مگر اس زمانے میں لڑائی کی باتیں اور تیاریاں نامناسب ھیں . یہ بات امریکہ اور برطانیہ کی سمجھ میں نہیں آئی . دونوں نے فوج اور لڑائی کے سامان کی تیاری پر اپنا خرچہ بڑھا دیا ھے اور ایٹم بم کی منا ھی اور فوجوں میں ایک تہائی کی کمی کے بارے میں روس کے ایک سجھاؤ کا جواب یہ دیا ھے کہ پہلے وہ خود اپنی فوج کو کم کر کے پچھمی راشٹروں کی فوج کے برابر لے آئے . اس سوال اور جواب دونوں کی بنیاد ڈر پر ھے اور یہ ڈر اگر دور نہ ھوا تو دنیا کو لے ڈوبے گا

اس کی چھاپ سورکشا سمیتی کے ادھیکار کم کر کے جنرل اسمبلی کے ادھیکار بڑھانے کی کوشش کے علاوہ کوریا کی لڑائی میں چین کے رخ پر بھی دکھائی دیتی ھے . امریکہ کے پردھان اور بدیس منتری نے جب چین کو یہ یقین دلایا کہ اُسے یالوندی سے بننے والی بجلی ملتی رھے گی اور یو این . او . کی فوجیں اس کی سرحد میں نہیں گھسیں گی تو اُنھوں نے اس ڈر کو دور کرنے کی ایک کوشش کی ھے . پر ان کی پہلے والی باتوں کے کارن اس کوشش کا اثر بہت ھلکا رھے گا . اس اثر کا ابھی تک کوئی پتہ نہیں چلا ھے .

واپسی کی شرطیں

اِمریکہ کے شہر اور سورکشا سمیتی کے گھر لیک سکسس کی ایک

ताज़ा ख़बर से ख़याल होता है कि चीन कोरिया से अपनी फ़ौज हटाने को तैयार है अगर उसकी चार मांगें पूरी करदी जाएँ. (१) मंचूरिया की सरहद से मिले हुए कोरियाई इलाक़े पर उत्तरी कोरिया की मौजूदा हकूमत का क़ब्ज़ा बना रहे, (२) फ़ारमूसा से अमरीका अपना समुन्दरी बेड़ा हटा ले, (३) अमरीका चांग काई शेक की सरकार को (जो चीन के कम्युनिस्ट इन्क़लाब के बाद वहाँ से भाग गई है) चीन का अधिकारी न माने और (४) इस बात का एलान करदे कि वह चांग सरकार को कोई सहायता नहीं देगी. आख़िर की तीन मांगें पूरी करने में अमरीका को कोई हिच-किचाहट नहीं होनी चाहिये इसलिये कि पंडित नेहरू के शब्दों में चांग सरकार के पास चीन में पांव निकालने भर की जगह भी नहीं है. और फ़ारमूसा में अमरीका के बेड़े को भेजते वक़्त प्रधान ट्रूमैन ने कहा था कि वह कोरिया की लड़ाई के फैलाव को रोकने के लिये ऐसा कर रहे हैं.

पहली मांग ज़रा टेढ़ी है. चीन ने उसे इस वजह से रक्खा है ताकि उसके मुल्क और यू. एन. ओ. या अमरीका के क़ब्ज़े वाले कोरिया के बीच में एक अरदबी (Buffer) इलाक़ा बन जाय और इन दोनों में टक्कर की सम्भावना कम हो जाय. दुनिया की शान्ति के ख़याल से और अमरीका की तरफ़ से चीन के डर को, जिसकी बुनियाद बहुत ही ठोस है, दूर करने के लिये इस मांग को पूरा कर देने में कोई हरज नहीं है. अगरचे इस मामले में नियम और न्याय अमरीका की तरफ़ है और ख़ुद चीन तिब्बत के मामले में हिन्दुस्तान की तरफ़ से पेश की ऐसी मांग को मन्जूर नहीं करेगा.

تازہ خبر سے خیال ہوتا ہے کہ چین کوریا سے اپنی فوج ہٹانے کو تیار ہے اگر اس کی چار مانگیں پوری کر دی جائیں ۔ (۱) منچوریا کی سرحد سے ملے ہوئے کوریائی علاقے پر اُتری کوریا کی موجودہ حکومت کا قبضہ بنا رہے' (۲) فارموسا سے امریکہ اپنا سمندری بیڑا ہٹا لے' (۳) امریکہ چانگ کائی شیک کی سرکار کو (جو چین کے کمیونسٹ انقلاب کے بعد وہاں سے بھاگ گئی ہے) چین کا ادھیکاری نہ مانے اور (۴) اسبات کا اعلان کر دے کہ وہ چانگ سرکار کو کوئی سہایتا نہیں دے گی. آخر کی تین مانگیں پوری کرنے میں امریکہ کو کوئی ہچکچاہٹ نہیں ہونی چاہئے اس لئے کہ پنڈت نہرو کے شبدوں میں چانگ سرکار کے پاس چین میں پاؤں نکالنے بھر کی جگہ بھی نہیں ہے ۔ اور فارموسا میں امریکہ کے بیڑے کو بھیجتے وقت پردھان ترومین نے کہا تھا کہ وہ کوریا کی لڑائی کے پھیلاؤ کو روکنے کے لئے ایسا کر رہے ہیں ۔

پہلی مانگ ذرا ٹیڑھی ہے ۔ چین نے اُسے اس وجہ سے رکھا ہے تاکہ اسکے ملک اور یو ۔ این ۔ او ۔ یا امریکہ کے قبضے والے کوریا کے بیچ میں ایک اردبی (Buffer) علاقہ بن جائے اور ان دونوں میں ٹکر کی سمبھاونا کم ہوجائے ۔ دنیا کی شانتی کے خیال سے اور امریکہ کی طرف سے چین کے ڈر کو' جس کی بنیاد بہت ہی ٹھوس ہے' دور کرنے کے لئے اس مانگ کو پورا کر دینے میں کوئی ہرج نہیں ہے اگرچہ اس معاملے میں نیم اور نیائے امریکہ کی طرف ہے ۔ اور خود چین تبت کے معاملے میں ہندستان کی طرف سے

तिब्बत पर चढ़ाई

मगर हिन्दुस्तान ने ऐसी कोई मांग रक्खी नहीं है. उसने तिब्बत पर चीनी फ़ौजों की चढ़ाई को, जो ७ अक्तूबर को शुरू हुई थी, नापसन्द ज़रूर किया है, और इस नापसन्दी की वजह यह है कि चीन एक तरफ़ उसे यह बताता रहा है कि वह तिब्बत का मामला बातचीत के जरिये और शान्ति के साथ तय करना चाहता है और दूसरी तरफ़ उसने तिब्बत पर चढ़ाई कर दी. इस मामले में हिन्द का रुख यह है कि चीन को तिब्बत पर नाम की ऊँची-सत्ता हासिल है जो हुकुम चलाने के अधिकार से कम है और तिब्बत को पूरी पूरी आज़ादी हासिल है जिसमें विदेसी मामले भी शामिल हैं. यह दोनों बातें सन १९२३ ई० में हिन्द, तिब्बत और चीन के शिमला वाले समझौते में तय हो गई थीं लेकिन चीनी सरकार ने सरहद के बारे में कुछ झगड़ों की वजह से इस समझौते को मंजूर नहीं किया. फिर भी अपने प्रतिनिधि को शिमला भेज कर उसने यह तो मान ही लिया था कि हिन्द को इस मामले में बोलने का अधिकार है. उस वक़्त उसने तिब्बत की आज़ादी पर भी कोई एतराज़ नहीं किया था.

हिन्द का एतराज़

अब चीन की नई सरकार इस बात से मुकर रही है. उसने तिब्बत पर चढ़ाई के तीन ख़ास कारन बताए हैं. एक यह कि उसे इस इलाक़े पर पूरा अधिकार है. दूसरे यह कि वह तिब्बत को वहाँ के जागीरदारों और बौद्ध पुरोहितों (लामाओं) से आज़ाद कराना

تبت پر چڑھائی

مگر ھندستان نے ایسی کوئی مانگ رکھی نہیں ھے . اس نے تبت پر چینی فوجوں کی چڑھائی کو' جو ۷ اکتوبر کو شروع ھوئی تھی' ناپسند ضرور کیا ھے' اور اس ناپسندی کی وجہ یہ ھے کہ چین ایک طرف اسے یہ بتاتا رھا ھے کہ وہ تبت کا معاملہ بات چیت کے ذریعے اور شانتی کے ساتھ طے کرنا چاھتا ھے اور دوسری طرف اس نے تبت پر چڑھائی کردی . اس معاملے میں ھند کا رخ یہ ھے کہ چین کو تبت پر نام کی اونچی ستا حاصل ھے جو حکم چلانے کے ادھیکار سے کم ھے اور تبت کو پوری پوری آزادی حاصل ھے جس میں بدیسی معاملے بھی شامل ھیں . یہ دونوں باتیں سن ۱۹۲۳ع میں ھند' تبت اور چین کے شملہ والے سمجھوتے میں طے ھوگئی تھیں لیکن چینی سرکار نے سرحد کے بارے میں کچھ جھگڑوں کی وجہ سے اِس سمجھوتے کو منظور نہیں کیا . پھر بھی اپنے پرتی ندھی کو شملہ بھیج کر اُس نے یہ تو مان ھی لیا تھا کہ ھند کو اس معاملے میں بولنے کا ادھیکار ھے . اُس وقت اس نے تبت کی آزادی پر بھی کوئی اعتراض نہیں کیا تھا .

ھند کا اعتراض

اب چین کی نئی سرکار اسبات سے مکر رھی ھے . اس نے تبت پر چڑھائی کے تین خاص کارن بتائے ھیں . ایک یہ کہ اسے اس علاقے پر پورا ادھیکار ھے . دوسرے یہ کہ وہ تبت کو وھاں کے جاگیرداروں اور بودھ پروھتوں (لاماؤں) سے آزاد کرانا

चाहती है और तीसरे यह कि तिब्बत में अमरीका और बरतानिया के एजन्ट ऐसे काम और साजिशें कर रहे थे जिन से चीन को खतरा था. हिन्द सरकार ने चीनी सरकार के नाम अपने दो लेखों में पहली बात पर इतिहास की बुनियाद पर एतराज किया है और तीसरी बात को बेबुनियाद बताया है. फिर भी पंडित नेहरू ने अपने एक भाशन में कहा है कि अमरीका चांग काई शेक को जो मदद दे रहा है, जनरल मैकआर्थर ने फ़ारमूसा के बारे में जो कुछ कहा है और उनकी कमान में यू. एन. ओ. की फ़ौजों ने जिस तरह उत्तरी कोरिया की सरहद पार कर के उत्तरी कोरिया पर धावा किया है इससे सही या ग़लत तौर पर नये चीन के दिल में यह डर बैठ गया है कि अमरीका उसे खतम करना चाहता है. इस बात को अगर ध्यान में रखा जाये तो तिब्बत से मिले हुए कश्मीर और नैपाल के इलाक़ों में बरतानिया और अमरीका अपना असर जमाने की जो कोशिशें कर रहे हैं उन से चीन का भड़कना एक क़ुदरती चीज है. इसके अलावा चीन की यह बात हिन्दुस्तान भी मानता है कि बरतानिया ने तिब्बत के प्रतिनिधियों को, जो चीनी सरकार से बात चीत के लिये पेकिंग जाना चाहते थे, हाँग काँग से गुजरने की इजाजत नहीं दी. और इस बात से चीन की जगह चाहे जो देस होता वह यही नतीजा निकालता कि तिब्बत के मामले को टालने और उसे चीन के साथ समझौता करने से रोकने की कोशिश की जा रही है.

(४५५)

जल्दबाजी और नासमझी

फिर भी हिन्दुस्तान ने जिन आदर्शों और सिद्धान्तों की बुनियाद

چاہتی ہے اور تیسرے یہ کہ تبت میں امریکہ اور برطانیہ کے ایجنٹ ایسے کام اور سازشیں کر رہے تھے جن سے چین کو خطرہ تھا. ہند سرکار نے چینی سرکار کے نام اپنے دو لیکھوں میں پہلی بات پر اتہاس کی بنیاد پر اعتراض کیا ہے اور تیسری بات کو بے بنیاد بتایا ہے. پھر بھی پنڈت نہرو نے اپنے ایک بھاشن میں کہا ہے کہ امریکہ چانگ کائی شیک کو جو مدد دے رہا ہے، جنرل میک آرتھر نے فارموسا کے بارے میں جو کچھ کہا ہے اور ان کی کمان میں یو. این. او. کی فوجوں نے جسطرح اتری کوریا کی سرحد پار کر کے اتری کوریا پر دھاوا کیا ہے اس سے صحیح یا غلط طور پر نئے چین کے دل میں یہ ڈر بیٹھ گیا ہے کہ امریکہ اسے ختم کرنا چاہتا ہے. اس بات کو اگر دھیان میں رکھا جائے تو تبت سے ملے ہوئے کشمیر اور نیپال کے علاقوں میں برطانیہ اور امریکہ اپنا اثر جمانے کی جو کوششیں کر رہے ہیں ان سے چین کا بھڑکنا ایک قدرتی چیز ہے. اس کے علاوہ چین کی یہ بات ہندستان بھی مانتا ہے کہ برطانیہ نے تبت کے پرتی ندھیوں کو، جو چینی سرکار سے بات چیت کے لئے پیکنگ جانا چاہتے تھے، ہانگ کانگ سے گذرنے کی اجازت نہیں دی. اور اس بات سے چین کی جگہ چاہے جو دیس ہوتا وہ یہی نتیجہ نکالتا کہ تبت کے معاملے کو ٹالنے اور اسے چین کے ساتھ سمجھوتہ کرنے سے روکنے کی کوشش کی جا رہی ہے.

(۴۵۵)

جلد بازی اور ناسمجھی

... سدھانتوں کی بنیاد

पर अपनी बिदेसी पालिसी बनाई है उनकी कसौटी पर कसने से चीन की फ़ौजी कारवाई खरी नहीं मालूम होती और उसकी यह बात बड़ी खलने वाली है कि हिन्दुस्तान ने दूसरों के असर में आकर इस कारवाई पर एतराज़ किया है. अगर हिन्दुस्तान दूसरों के असर में होता तो वह चीन की नई सरकार को यू. एन. ओ. का मेम्बर मान लेने पर ज़ोर देकर बरतानिया और अमरीका को अपने ख़िलाफ़ न कर लेता. और अगर वह तिब्बत के रास्ते से चीन के ख़िलाफ़ की जाने वाली किसी साज़िश में शरीक होता तो चीनी सेना तिब्बत में इतनी आसानी से आगे न बढ़ सकती. चीनी सरकार ने हिन्द सरकार को जो दूसरा लेख भेजा है और तब से अब तक चीनी रेडियो ने जो कुछ कहा है उसका रुख़ नरम और संभला हुआ है. और इससे ख़याल होता है कि चीन ने अपने पहले लेख में हिन्दुस्तान की नियत पर हमला शायद बिला सोचे समझे और किसी बात से चिढ़ कर या घमंड में आ कर किया था.

तिब्बत पर इस चढ़ाई के बारे में भी बड़ी हद तक यही बात कही जा सकती है. इसलिये कि जब यह चढ़ाई हुई है उस वक़्त बरतानिया कई महीने की टाल मटोल के बाद तिब्बत के प्रतिनिधियों को हाँग काँग के रास्ते से पेकिंग जाने की इजाज़त दे चुका था और हिन्द ने तिब्बत को यह जता दिया था कि उसकी आज़ादी के लिये यह ज़रूरी है कि वह अन्तर्राष्ट्री गरोहबन्दी से अलग रहे और ठंडी या गरम लड़ाई में किसी तरफ़ से भाग न ले. हिन्द के इस रुख़ को देखते हुए तिब्बत चीन को कोई नुक़सान नहीं पहुँचा सकता था और उससे मिले हुए चीनी प्रान्तों में जागीरदारी को ख़तम करने और

پر اپنی بدیسی پالیسی بنائی ہے ان کی کسوٹی پر کسنے سے چین کی فوجی کاروائی کھری نہیں معلوم ہوتی اور اس کی یہ بات بڑی کھلنے والی ہے کہ ہندستان نے دوسروں کے اثر میں آکر اس کاروائی پر اعتراض کیا ہے. اگر ہندستان دوسروں کے اثر میں ہوتا تو وہ چین کی نئی سرکار کو یو. این. او. کا ممبر مان لینے پر زور دے کر برطانیہ اور امریکہ کو اپنے خلاف نہ کر لیتا اور اگر وہ تبت کے راستے سے چین کے خلاف کی جانے والی کسی سازش میں شریک ہوتا تو چینی سینا تبت میں اتنی آسانی سے آگے نہ بڑھ سکتی. چینی سرکار نے ہند سرکار کو جو دوسرا لیکھ بھیجا ہے اور تب سے اب تک چینی ریڈیو نے جو کچھ کہا ہے اس کا رخ نرم اور سنبھلا ہوا ہے. اور اس سے خیال ہوتا ہے کہ چین نے اپنے پہلے لیکھ میں ہندستان کی نیت پر حملہ شاید بلا سوچے سمجھے اور کسی بات سے چڑھ کر یا گھمنڈ میں آکر کیا تھا.

تبت پر اس چڑھائی کے بارے میں بھی بڑی حد تک یہی بات کہی جا سکتی ہے. اسلئے کہ جب یہ چڑھائی ہوئی ہے اس وقت برطانیہ کئی مہینے کی ٹال مٹول کے بعد تبت کے پرتی ندھیوں کو ہانگ کانگ کے راستے سے پیکنگ جانے کی اجازت دے چکا تھا اور ہند نے تبت کو یہ جتا دیا تھا کہ اس کی آزادی کے لئے یہ ضروری ہے کہ وہ انتر راشٹری گروہ بندی سے الگ رہے اور ٹھنڈی یا گرم لڑائی میں کسی طرف سے بھاگ نہ لے. ہند کے اس رخ کو دیکھتے ہوئے تبت چین کو کوئی نقصان نہیں پہنچا سکتا تھا اور اس سے ملے ہوئے چینی پرانتوں میں جاگیرداری کو ختم کرنے اور

जनता को तरक़्क़ी का मौक़ा देने की जो कारवाइयाँ हो रही हैं उनके कारन तिब्बती जनता खुद ही जागृत होकर जागीरदारी ख़तम कर देती. उसको पूरी तरह से और फ़ौरन ख़तम करने का इरादा तो चीन का भी नहीं है, जैसा कि तिब्बत के लिये उसकी समझौते की शर्तों से मालूम होता है. उसने लामाओं के जान माल और तिब्बत के रस्म रिवाज को बाक़ी रखने और सब लोगों के पिछले 'क़सूर' माफ़ कर देने का भी एलान किया है. वह सिर्फ़ बचाव, विदेसी मामलों और रास्तों की देखभाल पर अपना अधिकार चाहता है. यह अधिकार उसे चढ़ाई के बग़ैर भी देर या सवेर मिल जाता. और अगर न मिलता तब भी तिब्बत उसका कुछ बिगाड़ नहीं सकता था.

पेकिंग रेडियो ने एक एलान में कहा है कि फ़ौजी चढ़ाई के बावजूद तिब्बत का मामला शान्ति के साथ तय हो सकता है और हिन्द ने चढ़ाई के बाद अपने लेख में चीनी सरकार से यही कहा था. और अब अगरचे तिब्बत ने अपना मामला यू. एन. ओ. में भेज दिया है मगर हिन्द को अभी वहाँ की सही हालत मालूम करना और यह देखना चाहिये कि चीन तिब्बत के साथ क्या पालिसी बरतता है. यू. एन. ओ. इस मामले में बिलकुल बेबस है. वह इसकेसिवा कुछ नहीं कर सकती कि अमरीका के असर से चीन को बुरा भला कह दे और इस तरह असल मामले को उलझा दे.

हिन्द चीन में ज़ोर आज़माई

جنتا کو ترقی کا موقع دینے کی جو کاروائیاں ہو رہی ہیں ان کے کارن تبتی جنتا خود ہی جاگرت ہو کر جاگیرداری ختم کر دیتی . اس کو پوری طرح سے اور فوراً ختم کرنے کا ارادہ تو چین کا بھی نہیں ہے' جیسا کہ تبت کے لئے اس کی سمجھوتے کی شرطوں سے معلوم ہوتا ہے. اس نے لاماؤں کے جان مال اور تبت کے رسم رواج کو باقی رکھنے اور سب لوگوں کے پچھلے 'قصور' معاف کر دینے کا بھی اعلان کیا ہے . وہ صرف بچاؤ' بدیسی معاملوں اور راستوں کی دیکھ بھال پر اپنا ادھیکار چاہتا ہے . یہ ادھیکار اسے چڑھائی کے بغیر بھی دیر یا سویر مل جاتا . اور اگر نہ ملتا تب بھی تبت اسکا کچھ بگاڑ نہیں سکتا تھا .

پیکنگ ریڈیو نے ایک اعلان میں کہا ہے کہ فوجی چڑھائی کے باوجود تبت کا معاملہ شانتی کے ساتھ طے ہو سکتا ہے اور ہند نے چڑھائی کے بعد اپنے لیکھ میں چینی سرکار سے یہی کہا تھا . اور اب اگرچہ تبت نے اپنا معاملہ یو . این . او . میں بھیج دیا ہے مگر ہند کو ابھی وہاں کی صحیح حالت معلوم کرنا اور یہ دیکھنا چاہئے کہ چین تبت کے ساتھ کیا پالیسی برتتا ہے . یو . این . او . اس معاملے میں بالکل بے بس ہے . وہ اس کے سوا کچھ نہیں کر سکتی کہ امریکہ کے اثر سے چین کو برا بھلا کہ دے اور اس طرح اصل معاملے کو الجھادے .

ہند چین میں زور آزمائی .

तिब्बत में नहीं बल्कि कोरिया में लेगा. और अगर कोरिया अभी दुनिया की लड़ाई का मैदान न बना तो होसकता है कि यह दोनों हिन्द चीन में ज़ोर आज़माई करें जहाँ एक तरफ़ फ़रान्स बावदाई की कठपुतली हकूमत को सामने रख कर अपना सामराजी क़ब्ज़ा बनाये रखना चाहता है और दूसरी तरफ़ चीन कम्युनिस्ट ख़याल रखने वाले क़ौमी लीडर हो ची मँह की जीत चाहता है. फ़रान्स का कहना है कि हो को चीन से सहायता भी मिल रही है उसका तोड़ करने और हिन्द चीन से कम्युनिज़्म के पौदे को उखाड़ फेंकने के लिये अमरीका ने फ़रान्स को सहायता देने का वायदा किया है. जब कोरिया में यू. एन. ओ. की जीत हो रही थी तो एक ख़बर यह आई थी कि अमरीका वहाँ से अपने हवाई जहाज़ हिन्द चीन भेज देगा. और हो सकता है कि कोरिया के मैदान में चीन के उतर आने का एक कारन यह हो कि अमरीका हिन्द चीन में फ़रान्सीसी सामराज के गिरते हुए गढ़ को सहारा न दे सके. हो ची मंह की फ़ौजें इस गढ़ की कई दीवारों पर क़ब्ज़ा कर चुकी हैं. उन्होंने चीन की सरहद से मिले हुए इलाक़े की तमाम चौकियाँ फ़रान्सीसियों से छीन ली हैं. उनको चीन से सहायता मिलने का अभी तक कोई सबूत सामने नहीं आया है लेकिन फ़रान्स को अगर अमरीका से सहायता न मिली तो जैसा कि उसके एक जनरल और एक वज़ीर का ख़याल है वह हिन्द चीन को कम्युनिस्टों से बचा नहीं सकेगा.

अब देखना यह है कि इस आगाही का अमरीका पर क्या असर होता है और अमरीका जो कुछ करेगा उसका जवाब चीन और रूस की तरफ़ से क्या दिया जाता है. इन दोनों बातों का असर

تبت میں نہیں بلکہ کوریا میں لےگا. اور اگر کوریا ابھی دنیا کی لڑائی کا میدان نہ بنا تو ہو سکتا ہے کہ یہ دونوں ہند چین میں زور آزمائی کریں جہاں ایک طرف فرانس باؤڈائی کی کٹھ پتلی حکومت کو سامنے رکھکر اپنا سامراجی قبضہ بنائے رکھنا چاہتا ہے اور دوسری طرف چین کمیونسٹ خیال رکھنے والے قومی لیڈر ہوچی منہ کی جیت چاہتا ہے. فرانس کا کہنا ہے کہ ہو کو چین سے سہایتا بھی مل رہی ہے. اُس کا توڑ کرنے اور ہند چین سے کمیونزم کے پودے کو اکھاڑ پھینکنے کے لئے امریکہ نے فرانس کو سہایتا دینے کا وعدہ کیا ہے. جب کوریا میں یو. این. او. کی جیت ہو رہی تھی تو ایک خبر یہ آئی تھی کہ امریکہ وہاں سے اپنے ہوائی جہاز ہند چین بھیج دیگا. اور ہو سکتا ہے کہ کوریا کے میدان میں چین کے اتر آنے کا ایک کارن یہ ہو کہ امریکہ ہند چین میں فرانسیسی سامراج کے گرتے ہوئے گڑھ کو سہارا نہ دے سکے. ہوچی منہ کی فوجیں اس گڑھ کی کئی دیواروں پر قبضہ کر چکی ہیں. انہوں نے چین کی سرحد سے ملے ہوئے علاقے کی تمام چوکیاں فرانسیسیوں سے چھین لی ہیں. ان کو چین سے سہایتا ملنے کا ابھی تک کوئی ثبوت سامنے نہیں آیا ہے لیکن فرانس کو اگر امریکہ سے سہایتا نہ ملی تو جیساکہ اس کے ایک جنرل اور ایک وزیر کا خیال ہے وہ ہند چین کو کمیونسٹوں سے بچا نہیں سکے گا.

اب دیکھنا یہ ہے کہ اس آگاہی کا امریکہ پر کیا اثر ہوتا ہے اور امریکہ جو کچھ کرے گا اُسکا جواب چین اور روس کی طرف سے کیا دیا جاتا ہے. ان دونوں باتوں کا اثر

इसलिए हम लन्दन की हिन्दुस्तानी को सौ फ़ीसदी हिन्दुस्तानी मानी कर भी तीन से पांच फ़ीसदी तक संस्कृत कह सकते हैं.

अब लीजिये कराची, लाहौर और ढाका की उर्दू को. इन स्टेशनों की उर्दू भी सौ फ़ीसदी उर्दू नहीं होती. उसमें दस फ़ीसदी ठेठ हिन्दी के शब्द रहते ही हैं. और एक दो फ़ीसदी कभी कभी किसी प्रोग्राम में तत्सम संस्कृत के शब्द भी आ जाते हैं. ढाका के बंगाली प्रोग्राम को तो हम छोड़े ही देते हैं. कराची, लाहौर, ढाका तीनों स्टेशनों का उर्दू प्रोग्राम भी हिन्द के बहुत लोग समझ लेते हैं और नागपुर शहर के (क्योंकि आजकल हम नागपुर में हैं और वहीं से यह नोट लिख रहे हैं) अनपढ़ शहरी भी इन तीनों स्टेशनों के रूपकों को सुनकर ख़ासा रस ले लेते हैं और रूपक को पूरी तरह समझने में बहुत कम टोटे मे रहते हैं.

पर १५ दिसम्बर को रात के साढ़े आठ बजे बी० बी० सी० लन्दन ने जो प्रोग्राम ब्राडकास्ट किया और जिसको उसने उन ख़्वाजा ग़ुलामुस्सैयदैन से बोला हुआ बताया जो युनेस्को में हिन्द की तरफ़ से प्रतिनिधि होकर गये हुए हैं और जो हिन्द से अमरीका जाते वक़्त पंडित जवाहर लाल जी के साथ थे और उन्हीं के साथ मिस्र की राजधानी क़ाहिरा में उतरे थे क्योंकि उन्होंने रेडियो पर बातचीत के वक़्त पन्द्रह दिसम्बर को इस बात की भी चर्चा की थी. इनकी बातचीत सौ फ़ीसदी उर्दू में थी जो न पाकिस्तान में बोली जाती है और न हिन्द में. और जिसके बारे में हम हिम्मत के साथ कह सकने हैं कि वह ख़्वाजा साहब की मादरी ज़बान भी [illegible] थे उसे हम मजलिसी या बनावटी ज़बान ही कह

اس لئے ہم لندن کی ہندستانی کو سو فیصدی ہندستانی مان کر بھی تین سے پانچ فیصدی تک سنسکرت کہہ سکتے ہیں۔

اب لیجئے کراچی، لاہور اور ڈھاکہ کی اُردو کو۔ ان اسٹیشنوں کی اُردو بھی سو فیصدی اُردو نہیں ہوتی۔ اُس میں دس فیصدی ٹھیٹھ ہندی کے شبد رہتے ہی ہیں۔ اور ایک دو فیصدی کبھی کبھی کسی پروگرام میں تتسم سنسکرت کے شبد بھی آجاتے ہیں۔ ڈھاکہ کے بنگالی پروگرام کو تو ہم چھوڑے ہی دیتے ہیں۔ کراچی، لاہور، ڈھاکہ تینوں اسٹیشنوں کا اُردو پروگرام بھی ہند کے بہت لوگ سمجھ لیتے ہیں اور ناگپور شہر کے (کیونکہ آج کل ہم ناگپور میں ہیں اور وہاں سے یہ نوٹ لکھ رہے ہیں) ان پڑھ شہری بھی ان تینوں اسٹیشنوں کے روپکوں کو سُن کر خاص رس لے لیتے ہیں اور روپک کو پوری طرح سمجھنے میں بہت کم ٹوٹے میں رہتے ہیں۔

پر ۱۵ دسمبر کو رات کے ساڑھے آٹھ بجے بی بی سی لندن نے جو پروگرام براڈکاسٹ کیا اور جس کا اُس نے اُن خواجہ غلام السیدین سے بولا ہوا بتایا جو یونیسکو میں ہند کی طرف سے پرتی ندھی ہوکر گئے ہوئے ہیں اور جو ہند سے امریکہ جاتے وقت پنڈت جواہرلال جی کے ساتھ تھے اور انھیں کے ساتھ مصر کی راج دھانی قاہرہ میں اترے تھے کیونکہ اُنھوں نے ریڈیو پر بات چیت کے وقت پندرہ دسمبر کو اس بات کی بھی چرچا کی تھی۔ اُن کی بات چیت سو فیصدی اُردو میں تھی جو نہ پاکستان میں بولی جاتی ہے اور نہ ہند میں۔ اور جس کے بارے میں ہم ہمت کے ساتھ کہہ سکتے ہیں کہ وہ خواجہ صاحب کی مادری زبان بھی نہیں۔ جو وہ بولتے تھے اُسے ہم مجلسی یا بناوٹی زبان ہی کہہ

अकेले हिन्द चीन ही के मसले पर नहीं बल्कि पूरी दुनिया और उसकी शान्ति पर पड़ेगा.

<u>चर्चिल की आगाही</u>

लेकिन दुनिया में कुछ और सवाल भी हैं जो उसकी शान्ति को भंग कर सकते हैं और बरतानिया के पिछले प्रधान मन्त्री चर्चिल ने पार्लियामेन्ट में कहा है कि हमें अपना सारा ध्यान चीन पर देकर योरप की तरफ़ से ग़ाफ़िल नहीं होना चाहिये जहाँ का ख़तरा ऐसा है कि हमको उस पर पूरा पूरा ध्यान देना चाहिये. हो सकता है कि यह बात उन्होंने कुछ बढ़ा कर कही हो इसलिये कि वह बहुत दिनों से योरप की एकता का बन्दोबस्त करने और योरपी सेना को मज़बूत बनाने पर ज़ोर दे रहे हैं. इस ज़ोर की बुनियाद वह रूस और कम्युनिज़्म के डर पर रखते हैं और इस मामले को वह बरतानिया के अगले चुनाव में उछाल सकते हैं इसलिये कि लेबर सरकार योरपी देसों से संबंध रखने वाले मसलों में योरपी सरकारों के सलाह मशविरे की बात तो मानती है मगर यह नहीं मानती कि इन देसों की संस्थाओं के प्रतिनिधियों की एक पार्लियामेन्ट बन जाय जिसका हुकुम मानना हर सरकार के लिये ज़रूरी हो. इसलिये कि हर देस की सरकार अपने देस की जनता के सामने जवाबदेह होती है. इसी तरह लेबर सरकार यह भी नहीं मानती कि योरपी देसों की एक मिली जुली फ़ौज बनाई जाय. इसलिये कि वह एटलान्टिक सागर वाले देसों के बचाव समझौते में पहले ही से शरीक हो चुकी है.

اکیلے ہند چین ہی کے مسئلے پر نہیں بلکہ پوری دنیا اور اس کی شانتی پر پڑے گا.

<u>چرچل کی آگاہی</u>

لیکن دنیا میں کچھ اور سوال بھی ہیں جو اسکی شانتی کو بھنگ کرسکتے ہیں اور برطانیہ کے پچھلے پردھان منتری چرچل نے پارلیامنٹ میں کہا ہے کہ ہمیں اپنا سارا دھیان چین پر دے کر یورپ کی طرف سے غافل نہیں ہونا چاہئے جہاں کا خطرہ ایسا ہے کہ ہم کو اس پر پورا پورا دھیان دینا چاہئے. ہوسکتا ہے کہ یہ بات انہوں نے کچھ بڑھا کر کہی ہو اس لئے کہ وہ بہت دنوں سے یورپ کی ایکتا کا بندوبست کرنے اور یورپی سینا کو مضبوط بنانے پر زور دے رہے ہیں. اس زور کی بنیاد وہ روس اور کمیونزم کے ڈر پر رکھتے ہیں اور اس معاملے کو وہ برطانیہ کے اگلے چناؤ میں اچھال سکتے ہیں. اس لئے کہ لیبر سرکار یورپی دیشوں سے سمبندھ رکھنے والے مسئلوں میں یورپی سرکاروں کے صلاح مشورے کی بات تو مانتی ہے مگر یہ نہیں مانتی کہ ان دیسوں کی سنستھاؤں کے پرتی ندھیوں کی ایک پارلیامنٹ بن جائے جس کا حکم ماننا ہر سرکار کے لئے ضروری ہو. اسلئے کہ ہر دیس کی سرکار اپنے دیس کی جنتا کے سامنے جوابدہ ہوتی ہے. اسی طرح لیبر سرکار یہ بھی نہیں مانتی کہ یورپی دیسوں کی ایک ملی جلی فوج بنائی جائے. اسلئے کہ وہ اٹلانٹک ساگر والے دیسوں کے بچاؤ سمجھوتے میں پہلے ہی سے شریک ہوچکی ہے

बुनियाद यानी पच्छिमी योरप के लिये रूस के ख़तरे को मान लिया है. और इस ख़तरे का जो इलाज चर्चिल ने तजवीज़ किया था वह भी मान लिया है. इसलिये कि एटलान्टिक वाले देसों की एक सेना भी बनाई जायगी. इसकी राह में अब सब से बड़ी रुकावट यह है कि इस सेना में जरमनी का हिस्सा और हैसियत क्या हो. फ़रान्स को इस बात की ख़ास तौर से फ़िकर है इसलिये कि पिछली दो बड़ी लड़ाइयों में वह जरमनी के हाथों तबाह हो चुका है. मगर दूसरी तरफ़ रूस और उसके साथियों की शक्ति इतनी अधिक है, अमरीका योरप से इतना दूर है और योरप के देस इतने छोटे और ग़रीब हैं कि पल्ला बराबर करने के लिये जरमनी के आदमियों और कारख़ानों से काम लेना ज़रूरी है और जरमनों को ख़ुश रखना भी ज़रूरी है. इसलिये कि पूरबी जरमनी पर रूस का क़बज़ा है और वह पच्छिमी जरमनी से अमरीका, बरतानिया और फ़रान्स को निकालने के लिये कोई जतन उठा नहीं रखेगा.

रूस की तजवीज़ें

ऐसा एक जतन वह तजवीज़ें हैं जो अक्तूबर में रूस और पूरबी योरप के बिदेस मन्त्रियों की एक कानफ़रेन्स में तय हुई हैं और जिनमें कहा गया है कि (१) अमरीका, बरतानिया, फ़रान्स और रूस इस बात का एलान करदें कि जरमनी को फ़ौज रखने और लड़ाई का सामान बनाने का मौक़ा नहीं दिया जायगा. हाँ, दूसरे उद्योगों को वह तरक़्क़ी दे सकेगा, (२) जरमनी के साथ समझौता कर लिया जाय और इसके एक साल बाद सब बिदेसी फ़ौजें वहाँ

بنیاد یعنی پچھمی یورپ کے لئے روس کے خطرے کو مان لیا ہے ۔ اور اس خطرے کا جو علاج چرچل نے تجویز کیا تھا وہ بھی مان لیا ہے ۔ اس لئے کہ اٹلانٹک والے دیسوں کی ایک سینا بھی بنائی جائیگی ۔ اس کی راہ میں اب سب سے بڑی رکاوٹ یہ ہے کہ اس سینا میں جرمنی کا حصہ اور حیثیت کیا ہو ۔ فرانس کو اس بات کی خاص طور سے فکر ہے اس لئے کہ پچھلی دو بڑی لڑائیوں میں وہ جرمنی کے ہاتھوں تباہ ہو چکا ہے ۔ مگر دوسری طرف روس اور اس کے ساتھیوں کی شکتی اتنی ادھک ہے' امریکہ یورپ سے اتنا دور ہے اور یورپ کے دیس اتنے چھوٹے اور غریب ہیں کہ پلہ برابر کرنے کے لئے جرمنی کے آدمیوں اور کارخانوں سے کام لینا ضروری ہے اور جرمنوں کو خوش رکھنا بھی ضروری ہے ۔ اس لئے کہ پوربی جرمنی پر روس کا قبضہ ہے اور وہ پچھمی جرمنی سے امریکہ' برطانیہ اور فرانس کو نکالنے کے لئے کوئی جتن اٹھا نہیں رکھے گا ۔

روس کی تجویزیں

ایسا ایک جتن وہ تجویزیں ہیں جو اکتوبر میں روس اور پوربی یورپ کے بدیس منتریوں کی ایک کانفرنس میں طے ہوئی ہیں اور جنمیں کہا گیا ہے کہ(۱) امریکہ' برطانیہ' فرانس اور روس اس بات کا اعلان کردیں کہ جرمنی کو فوج رکھنے اور لڑائی کا سامان بنانے کا موقع نہیں دیا جائیگا ۔ ہاں' دوسرے ادیوگوں کو وہ ترقی دے سکے گا' (۲) جرمنی کے ساتھ سمجھوتہ کر لیا جائے اور اس کے ایک سال بعد سب بدیسی فوجیں وہاں

से हटा ली जायें और (३) पूरे जरमनी के लिये एक विधान सभा बनाई जाय जिसमें आधे मेम्बर पूरबी जरमनी के हों और आधे पच्छिमी जरमनी के. यह सभा जरमनी का विधान बनाये (जिसके लिये सब बड़े राश्ट्रों की मंजूरी जरूरी होगी) और इसी से समझौते के बारे में बात चीत की जायं.

पच्छिमी राश्ट्रों का जवाब

इन्हीं तजवीजों की बुनियाद पर रूस ने पच्छिमी राश्ट्रों को लिखा है कि जरमनी के बारे में बात चीत हो जाय. मगर पच्छिमी राश्ट्र इस दावत को अपने उस फैसले का तोड़ समझते हैं जिसमें उन्होंने पच्छिमी जरमनी को पहले से ज्यादा पुलिस रखने और वहाँ अपनी सेनाओं की गिनती बढ़ाने, उसके बचाव की जमानत करने और उसके साथ रूस से अलग समझौता कर लेने का एलान किया था. रूस की तजवीजों पर इन राश्ट्रों के कुछ और एतराज यह हैं कि उसने पूरबी जरमनी में पुलिस के नाम से एक बड़ी और हथियार बन्द सेना तैयार कर दी है जो रूसी फौज के हट जाने के बाद भी उसका काम करती रहेगी. इसके अलावा विधान सभा में पूरबी जरमनी को पच्छिमी जरमनी के बराबर जगहें नहीं दी जा सकतीं इसलिये कि पच्छिम की आबादी बहुत ज्यादा है.

ऐसी ही तजवीजें पार साल रूस ने कोरिया के बारे में पेश की थीं जिसके उत्तरी हिस्से पर उसका और दक्खिनी हिस्से पर अमरीका का

سے ہٹالی جائیں اور (۳) پورے جرمنی کے لئے ایک ودھان سبھا بنائی جائے جس میں آدھے ممبر پوربی جرمنی کے ہوں اور آدھے پچھمی جرمنی کے . یہ سبھا جرمنی کا ودھان بنائے (جسکے لئے سب بڑے راشٹروں کی منظوری ضروری ہوگی) اور اسی سے سمجھوتے کے بارے میں بات چیت کی جائے .

پچھمی راشٹروں کا جواب

اِنہیں تجویزوں کی بنیاد پر روس نے پچھمی راشٹروں کو لکھا ہے کہ جرمنی کے بارے میں بات چیت ہوجائے . مگر پچھمی راشٹر اس دعوت کو اپنے اس فیصلے کا توڑ سمجھتے ہیں جس میں اُنہوں نے پچھمی جرمنی کو پہلے سے زیادہ پولیس رکھنے اور وہاں اپنی سیناؤں کی گنتی بڑھانے' اس کے بچاؤ کی ضمانت کرنے اور اس کے ساتھ روس سے الگ سمجھوتہ کرلینے کا اعلان کیا تھا . روس کی تجویزوں پر ان راشٹروں کے کچھ اور اعتراض یہ ہیں کہ اس نے پوربی جرمنی میں پولیس کے نام سے ایک بڑی اور ہتھیار بند سینا تیار کر دی ہے جو روسی فوج کے ہٹ جانے کے بعد بھی اُس کا کام کرتی رہے گی . اس کے علاوہ ودھان سبھا میں پوربی جرمنی کو پچھمی جرمنی کے برابر جگہیں نہیں دی جاسکتیں اس لئے کہ پچھم کی آبادی بہت زیادہ ہے .

ایسی ہی تجویزیں پارسال روس نے کوریا کے بارے میں پیش کی تھیں جس کے اُتری حصہ پر اس کا اور دکھنی حصہ پر امریکہ

ने हुकूमत पर क़ब्ज़ा और जनता पर असर जमा लिया था और इतनी शक्ति पैदा कर ली थी कि उन्होने दक्खिनी कोरिया पर केवल धावा ही नहीं किया बल्कि वहाँ अमरीका जैसे देव के दाँत खट्टे कर दिये. क्या यही खेल जरमनी में तो नहीं दोहराया जायगा ?

फ़रान्को से नातेदारी

कोरिया में रूस को पच्छिमी राश्ट्रों की तरफ़ से इतना ख़तरा नहीं था जितना कि जरमनी में है. इस ख़तरे का अंदाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि पच्छिमी राश्ट्रों ने यू. एन. ओ. से स्पेन में अपने राजदूत रखने की इजाज़त ले ली है. हालांकि वहाँ फ़रान्को की फ़ासिस्ट सरकार, जो हिटलर और मुसोलिनी के बल और ढंग पर बनी थी, अभी तक क़ायम है और की इसी उस रंगत की वजह से उसे यू. एन. ओ. का मेम्बर बनने और दूसरे मेम्बरों को उसके साथ नाता क़ायम करने की मनाही कर दी गई थी. इस फ़ैसले को उलटने का कारन सिवाय इसके कुछ नहीं है कि पच्छिमी राश्ट्रों को रूस के ख़िलाफ़ मोरचा बन्दी में स्पेन की ज़रूरत है और इस ज़रूरत ने उनको हर दूसरी बात की तरफ़ से अंधा कर दिया है.

नैपाल की नाव

इन राश्ट्रों को ऐसी ही ज़रूरत नैपाल से भी है इसलिये कि उसकी सरहद तिब्बत से मिली हुई है. संजोग से नैपाल का रंग रूप भी स्पेन से बहुत कुछ मिलता जुलता है मगर एक फ़रक़ भी है. स्पेनी जनता जुए के तले दबी ख़ामोशी के साथ पड़ी है जब कि नैपाली जनता तंग आकर जंग पर उतर आई है. उसके और

نے حکومت پر قبضہ اور جنتا پر اثر جمالیا تھا اور اتنی شکتی پیدا کرلی تھی کہ اُنھوں نے دکھنی کوریا پر کیول دھاوا ھی نہیں کیا بلکہ وھاں امریکہ جیسے دیو کے دانت کھٹے کر دئے . کیا یہی کھیل جرمنی میں تو نہیں دوھرایا جائے گا ؟

فرانکو سے ناتے داری

کوریا میں روس کو پچھمی راشٹروں کی طرف سے اتنا خطرہ نہیں تھا جتنا کہ جرمنی میں ھے . اس خطرے کا اندازہ اس بات سے لگایا جا سکتا ھے کہ پچھمی راشٹروں نے یو . این . او . سے اسپین میں اپنے راج دوت رکھنے کی اجازت لے لی ھے . حالانکہ وھاں فرانکو کی فاسسٹ سرکار' جو ھٹلر اور مسولینی کے بل اور ڈھنگ پر بنی تھی' ابھی تک قائم ھے اور اُس کی اسی رنگت کی وجہ سے اُسے یو این او . کا ممبر بننے اور دوسرے ممبروں کو اُس کے ساتھ ناتا قایم کرنے کی مناھی کردی گئی تھی . اس فیصلے کو الٹنے کا کارن سوائے اس کے کچھ نہیں ھے کہ پچھمی راشٹروں کو روس کے خلاف مورچہ بندی میں اسپین کی ضرورت ھے اور اس ضرورت نے ان کو ھر دوسری بات کی طرف سے اندھا کر دیا ھے .

نیپال کی ناؤ

ان راشٹروں کو ایسی ھی ضرورت نیپال سے بھی ھے اس لئے کہ اسکی سرحد تبت سے ملی ھوئی ھے . سنجوگ سے نیپال کا رنگ روپ بھی اسپین سے بہت کچھ ملتا جلتا ھے . مگر ایک فرق بھی ھے . اسپینی جنتا جوئے کے تلے دبی خاموشی کے ساتھ پڑی ھے جبکہ نیپالی جنتا تنگ آکر جنگ پر اُتر آئی ھے . اُس کے اور

सरकारी फौजों के बीच बाक़ायदा लड़ाई शुरू हो गई है. और उसे महाराजा नैपाल का भी आशीर्वाद हासिल है. उन बेचारे के पास इससे ज्यादा कुछ है ही नहीं. इसलिये कि प्रधान मंत्री ने उनके सारे अधिकार और राज की आधे से ज्यादा आमदनी पर अपना क़बज़ा जमा रक्खा है. महाराजा नैपाल अपने महल में एक तरह से क़ैद रहते थे. उस क़ैद से भाग कर वह पहले तो अपनी राजधानी कठमन्डू में हिन्द के राजदूत के घर चले गये और अब नई देहली आ गये हैं. उनके बड़े बेटे और बड़ा पोता भी उनके साथ हैं. और प्रधान मंत्री ने उनके तीन साल के पोते को राज गद्दी पर बिठा दिया है. हिन्द सरकार ने उसे राजा नहीं माना है मगर उसने नैपाली कांगरेस को हिन्द से मदद लेने की मनाही कर दी है और इसलिये अभी यह नहीं कहा जा सकता कि नैपाल की नाव आज़ादी और इतमीनान के किनारे पर जा लगेगी या समझौते के सहारे डूबने से बच कर बेचैनी की मौजों में हिचकोले खाती रहेगी.

एक नौजवान तूती ने कहा—"मेरी आवाज़ बहुत ही सुरीली है, इतनी सुरीली कि मैं नहीं समझ सकती कि मैं क्यों कौवों की तरह गिरी पड़ी चीज़ों के लिये मारी मारी फिरूं."

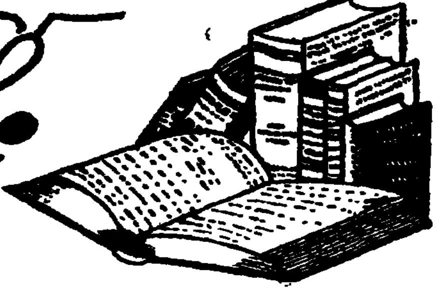
उसकी मां ने कहा—"अगर तुम्हारा यही विचार है तो जाओ और किसी शिकारी के जाल में फंस जाओ क्योंकि सिर्फ़ क़ैदी पंछी ही रोज़ी के लिये गीत गाते हैं."

سرکاری فوجوں کے بیچ باقاعدہ لڑائی شروع ہوگئی ہے ۔ اور اُسے مہاراجہ نیپال کا بھی آشیرواد حاصل ہے ۔ اُن بیچارے کے پاس اس سے زیادہ کچھ ہے ہی نہیں ۔ اس لئے کہ پردھان منتری نے اُن کے سارے ادھیکار اور راج کی آدھے سے زیادہ آمدنی پر اپنا قبضہ جما رکھا ہے ۔ مہاراجہ نیپال اپنے محل میں ایک طرح سے قید رہتے تھے ۔ اس قید سے بھاگ کر وہ پہلے تو اپنی راجدھانی کٹھمنڈو میں ہند کے راج دوت کے گھر چلے گئے اور اب نئی دہلی آگئے ہیں ۔ اُن کے بڑے بیٹے اور بڑا پوتا بھی ان کے ساتھ ہیں ۔ اور پردھان منتری نے اُن کے تین سال کے پوتے کو راج گدی پر بٹھا دیا ہے ۔ ہند سرکار نے اسے راجہ نہیں مانا ہے مگر اس نے نیپالی کانگریس کو ہند سے مدد لینے کی منا ہی کر دی ہے اور اس لئے ابھی یہ نہیں کہا جاسکتا کہ نیپال کی ناؤ آزادی اور اطمینان کے کنارے پر جا لگے گی یا سمجھوتے کے سہارے ڈوبنے سے بچ کر بے چینی کی موجوں میں ہچکولے کھاتی رہے گی ۔

ایک نوجوان طوطی نے کہا—''میری آواز بہت ہی سریلی ہے، اتنی سریلی کہ نہیں سمجھ سکتی کہ میں کیوں کوؤں کی طرح گری پڑی چیزوں کے لئے ماری ماری پھروں ۔''

اُس کی ماں نے کہا—''اگر تمہارا یہی وچار ہے تو جاؤ اور کسی شکاری کے جال میں پھنس جاؤ کیونکہ صرف قیدی پنچھی ہی روزی کے لئے گیت گاتے ہیں ۔''

कुछ किताबें



کچھ کتابیں

स्वतंत्र चिंतन

हेमचंद्र मोदी पुस्तकमाला, हीराबाग़, बम्बई ने इस किताब को निकाला है. २२० सफ़े की किताब का दाम है डेढ़ रुपया.

करनल इंगरसोल की अंगरेज़ी किताब का यह हिंदी रूप है. करनल इंगरसोल उन्नीसवीं सदी में अमरीका में पैदा हुए, वह पूरे आज़ाद विचार थे. उनके विचारों को भारतियों तक पहुँचाने का काम ठीक समय हुआ है.

हिंदी का जामा पहनाने का काम किया है भदन्त आनन्द कौसल्यायन जी ने, इसलिये किताब ऐसी मालूम होने लगी है मानो हिंदी में ही लिखी गई हो; थोड़ी और आसान होती तो इसको कम पढ़े लिखे भी पढ़ लेते, और उन्हें इस की ज़रूरत भी थी; और वह भी पढ़ लेते जो हैं तो पढ़े लिखे पर नई नई हिंदी सीखने में लगे हैं.

किताब पढ़ने से पहिले 'पुस्तक के विशय में' ज़रूर पढ़ लेना चाहिये. इसको हिन्दी का जामा पहनाने वाले ने लिखा है, उसका

سوتنتر چنتن

هیم چندر مودی پستک مالا' هیرا باغ' بمبئی نے اِس کتاب کو نکالا هے . ۲۲۰ صفحے کی کتاب کا دام هے ڈیڑھ روپیه .

کرنل اِنگرسول کی انگریزی کتاب کا یه هندی روپ هے . کرنل اِنگرسول اُنیسویں صدی میں امریکه میں پیدا هوئے' وه پورے آزاد وچار تھے . اُن کے وچاروں کو بھارتیوں تک پہنچانے کا کام ٹھیک سمے هوا هے .

هندی کا جامه پہنانے کا کام کیا هے' بھدنت آنند کوسلیاین جی نے' اِس لئے کتاب ایسی معلوم هونے لگی هے مانو هندی میں هی لکھی گئی هو؛ تھوڑی اور آسان هوتی تو اس کو کم پڑھے لکھے بھی پڑھ لیتے' اور اُنھیں اس کی ضرورت بھی تھی؛ اور وه بھی پڑھ لیتے جو هیں تو پڑھے لکھے پر نئی نئی هندی سیکھنے میں لگے هیں .

کتاب پڑھنے سے پہلے ' پستک کے وشے میں ' ضرور پڑھ لینا چاهئے . اسکو هندی کا جامه پہنانے والے نے لکھا هے ' اُسکا

अपना अनुभव है कि इस किताब को अंगरेजी में पढ़ते पढ़ते उसके 'ईश्वर' की हत्या हो गई. अगर आप ईश्वरवादी हैं तो घबराइये नहीं, आगे चलिये, इस किताब का पहला सफ़ा ही 'सत्य' से शुरू होता है. दूसरे सफ़े पर मिलेगा, 'सत्य संसार का मानसिक धन है' और 'सत्य की खोज से श्रेष्ठतर कोई धंधा नहीं' और रिशियों ने 'सत्य' को ईश्वर माना है इसी किताब के१९ वें सफ़े का अन्त होता है यों—'हम आशा करें कि भविश्य में सारी मानव सन्तान सुखी हो सकेगी और सब से ऊपर हम करें अपने भीतर के सत्य की रक्षा., सफ़ा ५१ पर देवताओं का देवता भी मिलेगा. हाँ, उसका नाम है 'तर्क' इस किताब में अविद्या को अंधकार कहा है. शिक्षा को प्रकाश माना है, सत्य की खोज में लगने को उद्देश कहा है, जुर्मों को काम करने की सलाह है, हानि लाभ में साथ देने की सीख है फिर और क्या चाहिये ?

इस किताब का अंत यों होता है:—

"× × × ज्ञान में वृद्धि करना, निर्बल के कंधों से उनका भार ले लेना, दिमाग़ को विकसित करना, सचों का पक्ष ग्रहन करना और अपने अंतर आत्म के लिये एक महल रचना."

"यही सचा मजहब है, यही सची पूजा"

पुस्तक अच्छी है, सब के काम की है, हमेशा काम आने वाली है और फिर सस्ती है.

—भ.

जड़वाद और अनीश्वरवाद

लिखी श्री लक्ष्मन शास्त्री जोशी ने,

हिन्दी रूप दिया श्री सत्यदेव विद्यालंकार ने,

मिलने का पता, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, हीराबाग़.

اپنا انوبھو ہے کہ اس کتاب کو انگریزی میں پڑھتے پڑھتے اسکے 'ایشور' کی ہتیا ہوگئی. اگر آپ ایشور وادی ہیں تو گھبرائیے نہیں' آگے چلئے' اس کتاب کا پہلا صفحہ ہی 'ستیہ' سے شروع ہوتا ہے. دوسرے صفحے پر ملے گا ' ستیہ سنسار کا مانسک دھن ہے' اور ' ستیہ کی کھوج سے شریشٹھ تر کوئی دھندا نہیں ' اور رشیوں نے ' ستیہ ' کو ایشور مانا ہے. اسی کتاب کے ۱۹ ویں صفحے کا انت ہوتا ہے یوں—' ہم آشا کریں کہ بھوشیہ میں ساری مانو سنتان سکھی ہوسکیگی اور سب سے اوپر ہم کریں اپنے بھیتر کے ستیہ کی رکشا ' صفحہ اکیاون پر دیوتاؤں کا دیوتا بھی ملیگا . ہاں اس کا نام ہے 'ترک' اس کتاب میں اودیا کو اندھکار کہا ہے . شکشا کو پرکاش مانا ہے ' ستیہ کی کھوج میں لگنے کو اُدیش کہا ہے' جرموں کو کم کرنے کی صلاح ہے ہانی لابھ میں ساتھ دینے کی سیکھ ہے پھر اور کیا چاہئے ؟

اس کتاب کا انت یوں ہوتا ہے :—

' × × × گیان میں وردھی کرنا' نربل کے کندھوں سے اُن کا بھار لے لینا' دماغ کو وکست کرنا' سچوں کا پکش گرہن کرنا اور اپنے انتر آتم کے لئے ایک محل رچنا . ''

'' یہی سچا مذہب ہے' یہی سچی پوجا ''

پستک اچھی ہے' سب کے کام کی ہے' ہمیشہ کام آنے والی ہے اور پھر سستی ہے .

—ب.

جڑواد اور انیشور واد

لکھی شری لکشمن شاستری جوشی نے'

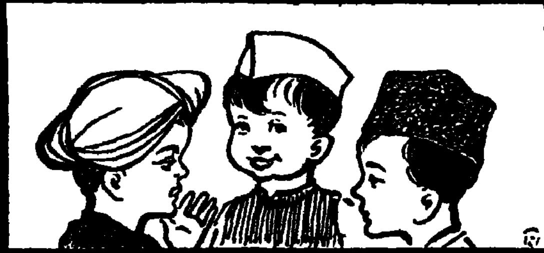
ہندی روپ دیا شری ستیہ دیو ودیا لنکار نے'

ملنے کا پتہ ہندی گرنتھ رتناکر کاریالے' ہیرا باغ ' گرگاؤں '

हेमचन्द्र मोदी पुस्तक माला की यह तीसरी किताब है. किताब बड़ी अच्छी है और बहुत अच्छे ढंग से लिखी गई है. लिखने वाले इस तरह की पुस्तक के लिखने के हर तरह अधिकारी हैं. इससे पहले उन ही की एक पुस्तक 'हिन्दू धर्म की समीक्षा' इसी पुस्तकमाला में निकल चुकी है. यह उसी का दूसरा पहलू है. दोनों किताबें मिलकर एक पूरी किताब बन जाती है. यह सब तो है पर इसकी भाषा को जो प्रकाशक ने 'सरल सुबोध' कहा है वह न जाने किसके लिये कहा है. 'सरल सुबोध' खुद भी तो आसानी से समझ में नहीं आता. अनुवादक ने अगर यह किताब खुद लिखी होती तो शायद सरल होती पर यह तो मराठी से हिंदी रूप दिया गया है और लेखक की मराठी इतनी मुशकिल होती है कि उसको हिंदी का बाना पहनाने वाले मेहनत नहीं करना चाहते. अपने सुभीते के लिये क्रियाओं का हिंदी अनुवाद कर देते हैं. बंगला और मराठी में से किताबों के अनुवाद ने हिंदी को ऐसा बना दिया है कि वह आम आदमियों से कोसों दूर पड़ गई है. यह सब हम यों लिख रहे हैं कि किताब जिनके लिये लिखी गई है वह इसको बिलकुल नहीं समझ सकते और जो इसे ध्यान से पढ़ कर समझ सकते हैं उनके लिये यह बेकार है. वह इस तरह की किताबें अंगरेजी में आसानी से पढ़ सकते हैं और समझ सकते है लेखक का एक लेख 'नया हिन्द' में छप चुका है. वह हमको ऐसी ही हिंदी में मिला था पर हमने उसको ज्यों का त्यों नहीं छापा. उसको सीधी सादी हिन्दी का रूप दिया और तब वह सबके काम का बन सका. इस तरह के अनुवाद से प्रकाशक <u>एक</u> टोटे में रहेगा, लेखक <u>डेढ़</u> टोटे में रहेगा और आम जनता <u>दो</u> टोटे में रहेगी. जनता जड़वाद और अनीश्वरवाद के मानने की इतनी भूकी नहीं है कि वह पैसा भी खर्च करे और मग़ज़ भी खपावे. ११२ सफ़े की पुस्तक का एक रुपया दाम ललचाने वाले दाम हैं. और इतनी अच्छी पुस्तक इतने कम दाम में गाहक जरूर ख़रीद लेंगे. —भ.

ھیم چندر مودی پستک مالا کی یہ تیسری کتاب ھے . کتاب بڑی اچھی ھے اور بہت اچھے ڈھنگ سے لکھی گئی ھے . لکھنے والے اس طرح کی پستک کے لکھنے کے ھر طرح ادھیکاری ھیں . اس سے پہلے اُن ھی کی ایک پستک 'ھندو دھرم کی سمیکشا' اِسی پستک مالا میں نکل چکی ھے . یہ اُسی کا دوسرا پہلو ھے . دونوں کتابیں مل کر ایک پوری کتاب بن جاتی ھے. یہ سب تو ھے پر اِسکی بھاشا کو جو پرکاشک نے 'سرل سبودھ' کہا ھے وہ نہ جانے کس کے لئے کہا ھے . 'سرل سبودھ' خود بھی تو آسانی سے سمجھ میں نہیں آتا . انوادک نے اگر یہ کتاب خود لکھی ھوتی تو شاید سرل ھوتی پر یہ تو مراٹھی سے ھندی روپ دیا گیا ھے اور لیکھک کی مراٹھی اتنی مشکل ھوتی ھے کہ اُسکو ھندی کا بانا پہنانے والے محنت نہیں کرنا چاھتے. اپنے سبھیتے کے لئے کریاؤں کا ھندی انوواد کر دیتے ھیں. بنگلہ اور مراٹھی میں سے کتابوں کے انوواد نے ھندی کو ایسا بنا دیا ھے کہ وہ عام آدمیوں سے کوسوں دور پڑ گئی ھے . یہ سب ھم یوں لکھ رھے ھیں کہ کتاب جن کے لئے لکھی گئی ھے وہ اُسکو بالکل نہیں سمجھ سکتے اور جو اسے دھیان سے پڑھکر سمجھ سکتے ھیں اُنکے لئے یہ بیکار ھے . وہ اس طرح کی کتابیں انگریزی میں آسانی سے پڑھ سکتے ھیں اور سمجھ سکتے ھیں . لیکھک کا ایک لیکھ 'نیا ھند' میں چھپ چکا ھے . وہ ھمکو ایسی ھی ھندی میں ملا تھا پر ھم نے اُسکو جیوں کا تیوں نہیں چھاپا . اُسکو سیدھی سادی ھندی کا روپ دیا اور تب وہ سب کے کام کا بن سکا . اسطرح کے انوواد سے پرکاشک <u>ایک</u> توٹے میں رھے گا' لیکھک <u>ڈیڑھ</u> توٹے میں رھے گا اور عام جنتا <u>دو</u> توٹے میں رھیگی . جنتا جڑواد اور انیشور واد کے ماننے کی اِتنی بھوکی نہیں ھے کہ وہ پیسہ بھی خرچ کرے اور مغز بھی کھپاوے. ۱۱۲ صفحہ کی پستک کا ایک روپیہ دام للچانے والے دام ھیں . اور اتنی اچھی پستک اتنے کم دام میں گاھک ضرور خرید لینگے .
—ب .

बच्चों की दुनिया



بچوں کی دنیا

एडीटर—प्रेम भाई

ایڈیٹر—پریم بھائي

इतवार के मज़े

(भाई मुहम्मद उसमान ग़ना, लाहौर)

हफ़्ता गुज़रा छुट्टी आई, आया है इतवार !
आहा ! आया है इतवार !

सारा हफ़्ता पढ़ते पढ़ते, उस्तादों से डरते डरते.
हमने कोई खेल न खेला, खेलते भी तो डंडे पड़ते.

सच्ची बात है मेरे भाई, आया है इतवार !
आहा ! आया है इतवार !

आज के दिन हम ख़ूब फिरेंगे, फिर फिर कर जी अपना भरेंगे.
जाएंगे हम नहर पे मिल के, दिल का ख़्वाहिश पूरी करेंगे.

अंग अंग में ख़ुशी समाई, आया है इतवार !

اتوار کے مزے

(بھائي محمد عثمان غنی' لاهور)

هفته گزرا چھٹی آئی' آیا هے اتوار !
آها ! آیا هے اتوار !

سارا هفته پڑھتے پڑھتے' استادوں سے ڈرتے ڈرتے ۔
هم نے کوئی نه کھیل کھیلا' کھیلتے بھی تو ڈنڈے پڑتے

سچی بات هے میرے بھائي' آیا هے اتوار!
آها ! آیا هے اتوار!

آج کے دن هم خوب پھرینگے' پھر پھرکر جی اپنا بھرینگے.
جائینگے هم نهر په مل کے' دل کی خواهش پوری کرینگے.

انگ انگ میں خوشی سمائی' آیا هے اتوار!

देंगी अम्मी जान दुअन्नी, लायेगा उस्मान चवन्नी.
कम से कम शंकर को भी तो, घर से मिल जायेगी अठन्नी.
खायेंगे हम खूब मिठाई, आया है इतवार !
आहा ! आया है इतवार !

ढोल का पोल

(भाई शफ़ीउद्दीन 'नैयर' देहलवी)

बकरी का एक बच्चा था. एक दिन उसने अपने दिल में कहा—'मैं बहुत दुबला हो गया हूँ, मुझ में बस खाल है और हड्डियाँ, और कुछ भी नहीं, बहुत दिन से मुझे खाने पीने को भी कुछ नहीं मिला मैं उछलता कूदता, दौड़ता भागता अपनी दादी के घर जाऊँगा. दादी मुझे अच्छी अच्छी चीज़ें खिलायेगी. मैं खूब मोटा हो जाऊँगा.' यह सोच कर बकरी का बच्चा उछलता कूदता, दौड़ता भागता दादी के घर चला. चलते चलते उसे एक लोमड़ी मिली.

लोमड़ी ने कहा—"बकरी के बच्चे ठहर, मैं तुझे खाऊँगी."

बकरी के बच्चे ने लोमड़ी से कहा—

"मैं इस वक़्त मन अपना बहला रहा हूँ,
मैं इस वक़्त दादी के घर जा रहा हूँ.
वहाँ रह के हो जाऊँगा खूब मोटा,
तुम उस वक़्त अच्छी तरह मुझको खाना."

लोमड़ी बोली—"अच्छा जा, अभी तू बहुत छोटा और दुबला पत ा है. तुझ में बस खाल और हड्डियाँ हैं और कुछ भी नहीं."

دیں گی امی جان دونی' لائے گا عثمان چونی .
کم سے کم شنکر کو بھی تو' گھر سے مل جائیگی اٹھنی .
کھائینگے ھم خوب مٹھائی' آیا ھے اتوار !
آھا ! آیا ھے اتوار !

ڈھول کا پول

(بھائی شفیع الدین ' نیر ' دھلوی)

بکری کا ایک بچہ تھا . ایک دن اُس نے اپنے دل میں کہا— ' میں بہت دبلا ھوگیا ھوں' مجھ میں بس کھال ھے اور ھڈیاں' اور کچھ بھی نہیں' بہت دن سے مجھے کھانے پینے کو بھی کچھ نہیں ملا . میں اُچھلتا کودتا' دوڑتا بھاگتا اپنی دادی کے گھر جاؤں گا . دادی مجھے اچھی اچھی چیزیں کھلائے گی . میں خوب موٹا ھوجاؤں گا .' یہ سوچ کر بکری کا بچہ اُچھلتا کودتا دوڑتا بھاگتا دادی کے گھر چلا' چلتے چلتے اُسے ایک لومڑی ملی .

لومڑی نے کہا—"بکری کے بچے ٹھہر' میں تجھے کھاؤں گی ."

بکری کے بچے نے لومڑی سے کہا—

"میں اس وقت من اپنا بہلا رھا ھوں'
میں اس وقت دادی کے گھر جا رھا ھوں.
وھاں رہ کے ھوجاؤں گا خوب موٹا'
تم اُس وقت اچھی طرح مجھکو کھانا."

لومڑی بولی—" اچھا جا' ابھی تو بہت چھوٹا اور دبلا پتلا ھے . تجھ میں بس کھال اور ھڈیاں ھیں اور کچھ بھی نہیں."

सकते हैं. हमने सब से पहला सबक़ मकतब में मौलवी साहब से पढ़ा है और सब से पहली किताबें जो हमें पढ़ने को मिली थीं वह थीं ‘हिकायते-लतीफ़’, ‘करीमा’ और ‘ख़ालिक़-बारी’, यानी हमने बचपन से उर्दू ही नहीं फ़ारसी पढ़ी है. बाद में गुलिस्तां. बोस्तां और अनवार सहेली पढ़नी पड़ी थीं और उसी छोटे-मोटे ज्ञान के आधार पर हम यह कहते हैं कि यूनेस्को में हिन्द के नुमाइन्दे ख़्वाजा ग़ुलामुस्सैयदैन की १५ दिसम्बर सन १९४९ को रात के साढ़े आठ बजे बी० बी० सी० लन्दन से दी हुई बातचीत सोलहों आना उर्दू नहीं उर्दू-ए मुअल्ला थी. यह क्या ? इसकी ज़िम्मेदारी किसके सर ? ऐसी उर्दू तो पाकिस्तान के किसी स्टेशन से भी मामूली कामों के लिए नहीं बोली जाती. साहित्य की चर्चा में बेशक ऐसी उर्दू काम में आती है पर वह भी किसी तरह सौ फ़ीसदी उर्दू नहीं होती. असल में सौ फ़ीसदी उर्दू से कोई काम चल ही नहीं सकता. यहाँ तक कि अच्छी शायरी भी नहीं हो सकती. अच्छी शायरी के लिये उर्दू जानने वाले या तो ख़ालिस फ़ारसी से काम लेते हैं या चलती बहती हिन्दुस्तानी का सहारा लेते हैं. तभी उसमें रवानी आती है. क्या अब हम ख़्वाजा साहब की बातचीत के लिये बी० बी० सी०, लन्दन को ज़िम्मेवार ठहरायें ? उससे हमम क्या सरोकार ? हम यह मानते हैं कि बी० बी० सी०, लन्दन ने बेशक यह भूल की और इससे ज़्यादा हम उससे कह ही क्या सकते हैं ? पर सवाल तो यह है कि ख़्वाजा साहब ने ऐसी भूल क्यों की ? अगर वह वहाँ निजी हैसियत से भी बोले होते तब भी हम तसलीम नहीं मान सकते थे, क्योंकि उर्दू हिन्द की बोली नहीं है. हिन्द की भाषा तो हिन्दुस्तानी

سکتے ہیں۔ ہم نے سب سے پہلا سبق مکتب میں مولوی صاحب سے پڑھا ہے اور سب سے پہلی کتابیں جو ہمیں پڑھنے کو ملی تھیں وہ تھیں 'حکایت لطیف'، 'کریما' اور 'خالق باری' یعنی ہم نے بچپن سے اُردو ہی نہیں فارسی پڑھی ہے۔ بعد میں گلستاں بوستاں اور انوار سہیلی پڑھنی پڑی تھیں اور اُسی چھوٹے موٹے گیان کے آدھار پر ہم یہ کہتے ہیں کہ یونیسکو میں ہند کے نمائندے خواجہ غلام السیدین کی ۱۵ دسمبر ۱۹۴۹ کو رات کے ساڑھے آٹھ بجے بی بی سی لندن سے دی ہوئی بات چیت سولہوں آنہ اُردو نہیں اُردوئے معلیٰ تھی۔ یہ کیا؟ اس کی ذمہ داری کس کے سر؟ ایسی اُردو تو پاکستان کے کسی اسٹیشن سے بھی معمولی کاموں کے لئے نہیں بولی جاتی۔ ساہتیہ کی چرچا میں بیشک ایسی اُردو کام میں آتی ہے پر وہ بھی کسی طرح سو فیصدی اُردو نہیں ہوتی۔ اصل میں سو فیصدی اُردو سے کوئی کام چل ہی نہیں سکتا۔ یہاں تک کہ اچھی شاعری بھی نہیں ہو سکتی۔ اچھی شاعری کے لئے اُردو جاننے والے یا تو خالص فارسی سے کام لیتے ہیں یا چلتی بہتی ہندستانی کا سہارا لیتے ہیں۔ تبھی اُس میں روانی آتی ہے۔ کیا اب ہم خواجہ صاحب کی بات چیت کے لئے بی بی سی لندن کو ذمہ دار ٹھہرائیں؟ اُس سے ہمیں کیا سروکار؟ ہم یہ مانتے ہیں کہ بی بی سی، لندن نے بیشک یہ بھول کی اور اس سے زیادہ ہم اُس سے کہہ ہی کیا سکتے ہیں؟ پر سوال تو یہ ہے کہ خواجہ صاحب نے ایسی بھول کیوں کی؟ اگر وہ وہاں نجی حیثیت سے بھی بولے ہوتے تب بھی ہم تسلیم نہیں مان سکتے تھے۔ کیونکہ اُردو ہند کی بولی نہیں ہے۔ ہند کی بولی تو ہندستانی

बकरी का बच्चा उछलता कूदता दौड़ता भागता, आगे बढ़ा. चलते चलते उसे एक भेड़िया मिला.

भेड़िया बोला—"बकरी के बच्चे ठहर, मैं तुझे खाऊँगा."

बकरी का बच्चा बोला—

"मैं इस वक़्त मन अपना बहला रहा हूं,
मैं इस वक़्त दादी के घर जा रहा हूं.
वहाँ रह के हो जाऊँगा खूब मोटा,
तुम उस वक़्त अच्छी तरह मुझको खाना."

भेड़िये ने कहा—"अच्छा जा, तू अभी बहुत छोटा और दुबला पतला है, बस खाल और हड्डियाँ हैं और कुछ भी नहीं."

बकरी का बच्चा उछलता कूदता, दौड़ता भागता आगे बढ़ा चलते चलते उसे एक शेर मिला.

शेर ने गरज कर कहा—"बकरी के बच्चे ठहर, मैं तुझे खाऊँगा."

बकरी का बच्चा बोला—

"मैं इस वक़्त मन अपना बहला रहा हूं,
मैं इस वक़्त दादी के घर जा रहा हूं.
वहाँ रह के हो जाऊँगा खूब मोटा,
तुम उस वक़्त अच्छी तरह मुझको खाना."

शेर ने कहा—"अच्छा जा, तू अभी बहुत छोटा और दुबला —— है

بکری کا بچہ اُچھلتا کودتا دوڑتا بھاگتا آگے بڑھا . چلتے چلتے اُسے ایک بھیڑیا ملا .

بھیڑیا بولا—''بکری کے بچے ٹھہر' میں تجھے کھاؤں گا.''

بکری کا بچہ بولا—

''میں اس وقت من اپنا بہلا رہا ہوں'
میں اس وقت دادی کے گھر جا رہا ہوں .
وہاں رہ کے ہوجاؤں گا خوب موٹا'
تم اُس وقت اچھی طرح مجھکو کھانا .''

بھیڑئے نے کہا—''اچھا جا' تو ابھی بہت چھوٹا اور دبلا پتلا ہے' بس کھال اور ہڈیاں ہیں اور کچھ بھی نہیں .''

بکری کا بچہ اُچھلتا کودتا' دوڑتا بھاگتا آگے بڑھا . چلتے چلتے اُسے ایک شیر ملا .

شیر نے گرج کر کہا—''بکری کے بچے ٹھہر میں تجھے کھاؤں گا .''

بکری کا بچہ بولا—

''میں اس وقت من اپنا بہلا رہا ہوں'
میں اس وقت دادی کے گھر جا رہا ہوں .
وہاں رہ کے ہوجاؤں گا خوب موٹا'
تم اُس وقت اچھی طرح مجھکو کھانا ''

شیر نے کہا—''اچھا جا' تو ابھی بہت چھوٹا اور دبلا پتلا ہے'

बकरी का बच्चा उछलता कूदता, दौड़ता भागता दादी के घर गया. देखा दादी बैठी चरखा कात रही है.

बोला—"दादी अम्माँ, सलाम !"

दादी अम्माँ बोलीं—"बेटे जीते रहो, तुम तो बहुत दुबले पतले हो गये हो."

बकरी का बच्चा बोला—"दादी अम्मां तुम मुझे अच्छी अच्छी चीज़ें खिलाओ, मैं मोटा होना चाहता हूं, बहुत मोटा"

दादी ने उस बच्चे को अच्छी अच्छी चीज़ें खिलाईं, फल, मिठाई, पूरी, कचौरी .

(८६५) बकरी का बच्चा बहुत मोटा हो गया. एक दिन उसने दादी से कहा—"दादी ! अब मैं घर जाना चाहता हूं, मेरे लिये एक ढोल बना दो. मैं उसमें बैठकर अपने घर जाऊँगा."

दादी ने एक ढोल बना दिया. बकरी का बच्चा उसमें बैठ गया और ढोल लुढ़कता लुढ़कता चला.

बकरी के बच्चे ने दिल में कहा—'अब मैं जल्द अपने घर पहुँच जाऊँगा.'

रास्ते में शेर मिला. उसने पूछा—'ढोल ढोल, क्या तूने बकरी के बच्चे को देखा है ?"

ढोल में बैठे बैठे बकरी का बच्चा बोला—

"ठुम्मक ठुम्मक ठुम्मक बोल,
चल मेरी ढोलक चल मेरे ढोल.
कैसा बच्चा कैसा तू,
वह भी खोया खोजा तू."

ढोल लुढ़कता लुढ़कता चलता रहा.

بکری کا بچہ اُچھلتا کودتا' دوڑتا بھاگتا دادی کے گھر گیا . دیکھا دادی بیٹھی چرخہ کات رہی ہے .

بولا—"دادی اماں' سلام ! "

دادی اماں بولیں—"جیتے جاگتے رہو' تم تو بہت دبلے پتلے ہوگئے ہو ."

بکری کا بچہ بولا—" دادی اماں تم مجھے اچھی اچھی چیزیں کھلاؤ ' میں موٹا ہونا چاہتا ہوں' بہت موٹا ."

دادی نے اُس بچے کو اچھی اچھی چیزیں کھلائیں' پھل' مٹھائی' پوری' کچوری

(٨٦٥) بکری کا بچہ بہت موٹا ہوگیا . ایک دن اُس نے دادی سے کہا—" دادی ! اب میں گھر جانا چاہتا ہوں' میرے لئے ایک ڈھول بنا دو' میں اُس میں بیٹھکر اپنے گھر جاؤں گا ."

دادی نے ایک ڈھول بنا دیا . بکری کا بچہ اُس میں بیٹھ گیا اور ڈھول لڑھکتا لڑھکتا چلا .

بکری کے بچے نے دل میں کہا 'اب میں جلد اپنے گھر پہنچ جاؤں گا '

راستے میں شیر ملا . اُس نے پوچھا—"ڈھول ڈھول' کیا تونے بکری کے بچے کو دیکھا ہے ؟"

ڈھول میں بیٹھے بیٹھے بکری کا بچہ بولا—

"ٹھمک ٹھمک ٹھمک بول'
چل موری ڈھولک چل مورے ڈھول .
کیسا بچہ کیسا تو'
وہ بھی کھویا کھوجا تو ."

ڈھول لڑھکتا لڑھکتا چلتا رہا .

रास्ते में मियाँ भेड़िये मिले. पूछा—"ढोल ढोल, क्या तू ने बकरी के बच्चे को देखा है ?"

ढोल में बैठे बैठे बकरी का बच्चा बोला—

"ढुम्मक ढुम्मक ढुम्मक बोल,
चल मेरी ढोलक चल मेरे ढोल.
कैसा बच्चा कैसा तू,
वह भी खोया खोजा तू."

ढोल लुढ़कता लुढ़कता चलता रहा.

रास्ते में बी लोमड़ी मिली, उसने भी पूछा—"ढोल ढोल, क्या तू ने बकरी के बच्चे को देखा है ?"

ढोल में बैठे बैठे बकरी का बच्चा बोला—

"ढुम्मक ढुम्मक ढुम्मक बोल,
चल मेरी ढोलक चल मेरे ढोल.
कैसा बच्चा कैसा तू,
वह भी खोया खोजा तू."

लोमड़ी थी बड़ी होशियार, उसने मन ही मन में कहा—'हो न हो, कुछ बात ज़रूर है, कहीं ढोल भी बोलता है. शायद बकरी का बच्चा हो, जो अंदर बैठा बोल रहा है, और ढोल को लुढ़का रहा है.'

लोमड़ी पीछे पीछे चलने लगी. ढोल तेज़ी से लुढ़कने लगा, यह भी दौड़ने लगी, वह भी तेज़ तेज़ चला.

दौड़ते दौड़ते बकरी का बच्चा अपने घर के दरवाज़े पर पहुँच गया. वह धम से बाहर कूद घर में घुस गया और झट घर का पट बन्द कर लिया. फिर उसने अंदर से आवाज़ दी—"कहो बी लोमड़ी, कैसे आना हुआ, अच्छी तो हो न,.........अच्छा अब मैं समझा ....मुझे खाने आई हो,.........रास्ता नापो, अच्छा तो सलाम......."

راستے میں میاں بھیڑئے ملے. پوچھا—"ڈھول ڈھول' کیا تو نے بکری کے بچے کو دیکھا ہے ؟"

ڈھول میں بیٹھے بیٹھے بکری کا بچہ بولا—

"ڈھمک ڈھمک ڈھمک بول'
چل میری ڈھولک چل میرے ڈھول.
کیسا بچہ کیسا تو'
وہ بھی کھویا کھوجا تو."

ڈھول لڑھکتا لڑھکتا چلتا رہا.

راستے میں بی لومڑی ملی' اُسنے بھی پوچھا—"ڈھول ڈھول' کیا تونے بکری کے بچے کو دیکھا ہے."

ڈھول میں بیٹھے بیٹھے بکری کا بچہ بولا—

"ڈھمک ڈھمک ڈھمک بول'
چل میری ڈھولک چل میرے ڈھول.
کیسا بچہ کیسا تو'
وہ بھی کھویا کھوجا تو."

لومڑی تھی بڑی ہوشیار' اُس نے من ہی من میں کہا—'ہو نہ ہو' کچھ بات ضرور ہے' کہیں ڈھول بھی بولتا ہے. شاید بکری کا بچہ ہو' جو اندر بیٹھا بول رہا ہے' اور ڈھول کو لڑھکا رہا ہے.'

لومڑی پیچھے پیچھے چلنے لگی. ڈھول تیزی سے لڑھکنے لگا' یہ بھی دوڑنے لگی' وہ بھی تیز تیز چلا.

دوڑتے دوڑتے بکری کا بچہ اپنے گھر کے دروازے پر پہنچ گیا. وہ دھم سے باہر کود گھر میں گھس گیا اور جھٹ گھر کا پٹ بند کرلیا. پھر اُس نے اندر سے آواز دی—"کہو بی لومڑی' کیسے آنا ہوا' اچھی تو ہو نا'.........اچھا اب میں سمجھا.........مجھے کھانے آئی ہو'.........راستہ ناپو' اچھا تو سلام........."

हमारी राय — ہماری رائے

जार्ज बरनार्ड शा—

हमने जार्ज बनार्ड शा के सब नहीं तो आधे से ज्यादा ड्रामे पढ़े हैं. पर उनको एक अंगरेज भले ही नाटककार की हैसियत से याद रक्खे, क्योंकि वह शेक्सपियर को भी एक नाटककार की हैसियत से याद रखने में बहुत सुख मानता है. हम शा को नाटककार की हैसियत से याद रखने मे उतना ही दुख मानते हैं जितना कबीर को कपड़ा बुनने वाले की हैसियत से याद रखना. नाटक लिखना कबीर के कपड़ा बुनने की तरह से शा की रोज़ी थी. शा के इस दुनिया से उठ जाने से हमारे जी को जो धक्का पहुँचा है और हमें जो दुनिया में एक कमी सी महसूस होने लगी है उसकी वजह यह है कि शा हर मामले में बड़ी सुलझी हुई और बेलाग सलाह देते थे. और फिर वह सलाह किसी के लिये कितनी ही कड़वी क्यों न हो उसे मुँह बनाने की जरूरत नहीं पड़ती थी. वह अपने ढंग से उस सलाह को देकर उसमें हँसी की इतनी पुट दे देते थे कि किसी को

جارج برنارڈ شا —

ہم نے جارج برنارڈ شا کے سب نہیں تو آدھے سے زیادہ ڈرامے پڑھے ہیں. پر اُنکو ایک انگریز بھلے ہی ناٹک کار کی حیثیت سے یاد رکھے، کیونکہ وہ شیکسپیر کو بھی ایک ناٹک کار کی حیثیت سے یاد رکھنے میں بہت سکھ مانتا ہے. ہم شا کو ناٹک کار کی حیثیت سے یاد رکھنے میں اُتنا ہی دکھ مانتے ہیں جتنا کبیر کو کپڑا بننے والے کی حیثیت سے یاد رکھنا. ناٹک لکھنا کبیر کے کپڑا بننے کی طرح سے شا کی روزی تھی. شا کے اس دنیا سے اُٹھ جانے سے ہمارے جی کو جو دھکا پہونچا ہے اور ہمیں جو دنیا میں ایک کمی سی محسوس ہونے لگی ہے اُسکی وجہ یہ ہے کہ شا ہر معاملے میں بڑی سلجھی ہوئی اور بے لاگ صلاح دیتے تھے. اور پھر وہ صلاح کسی کے لئے کتنی ہی کڑوی کیوں نہ ہو اُسے منہ بنانے کی ضرورت نہیں پڑتی تھی. وہ اپنے ڈھنگ سے اُس صلاح کو دے کر اُس میں ہنسی کی اِتنی پٹ دے دیتے تھے کہ کسی کو

शिकायत की जगह ही नहीं रह जाती थी. कोई कलाकार अगर ऐसा करना चाहे तो वह नहीं कर सकता. बात को इस तरह कहना कला की कारीगरी का हिस्सा ही नहीं, यह हिस्सा है उसका जिसने अपनी खुदी पर बहुत कुछ क़ाबू पा लिया हो. और जो खुदी पर क़ाबू पा लेता है वह लगाव और अलगाव (राग द्वेश)से बहुत कुछ परे हो जाता है. यह तो हम नहीं कहेंगे कि शा लगाव और अलगाव से बिलकुल परे थे पर यह ज़रूर कहेंगे कि दुनिया भर की सरकारों में से किसी भी सरकार से न उनका लगाव था और न अलगाव. वह सच्चे मानों में लोकशाह (डेमोक्रेट) थे. और एक सच्चे लोकशाह के उठ जाने से किसका मन न दुख मानेगा. और क्या दुनिया की यह कमी किसी तरह पूरी हो सकती है ?

दुनिया से शा के उठ जाने से दसियों, शायद सैकड़ों, शायद हज़ारों आदमियों की उमरें दो चार बरस नहीं दस बीस बरस कम हो जायँगी. यह क्यों ? यह यों कि उन दसियों, सैकड़ों, हज़ारों ने लम्बी उमर तक जीने के मामले में शा को आदर्श मान रक्खा था. गांधी जी तो सवा सौ बरस जीते रहने की सोचा करते थे. पर शा तो आदमी की उमर तीन सौ बरस बताते थे और ७०–८० बरस की उमर में तो, उनका कहना था, आदमी की अक़ल पक कर इस काम की होती है कि वह कुछ काम की बात अपने पीछे छोड़ जा सके. इसलिये अगर कोई ईश्वर है तो वह ऐसा अन्यायी नहीं हो सकता जो उस उमर में आदमी को ख़तम कर दे जब वह किसी

شکایت کی جگہ هی نہیں رہ جاتی تهی. کوئی کلا کار اگر ایسا کرنا چاهے تو وہ نہیں کر سکتا . بات کو اس طرح کہنا کلا کی کاریگری کا حصہ هی نہیں' یہ حصہ هے اُسکا جس نے اپنی خودی پر بہت کچھ قابو پا لیا هو. اور جو خودی پر قابو پا لیتا هے وہ لگاؤ اور الگاؤ (راگ دویش) سے بہت کچھ پرے هو جاتا هے . یہ تو هم نہیں کہینگے کہ شا لگاؤ اور الگاؤ سے بالکل پرے تھے پر یہ ضرور کہینگے کہ دنیا بھر کی سرکاروں میں سے کسی بھی سرکار سے نہ اُنکا لگاؤ تھا اور نہ الگاؤ . وہ سچے معنوں میں لوک شاہ (ڈیمو کریٹ) تھے . اور ایک سچے لوک شاہ کے اُٹھ جانے سے کس کا من نہ دکھ مانیگا . اور کیا دنیا کی یہ کمی کسی طرح پوری هو سکتی هے ؟

دنیا سے شا کے اٹھ جانے سے دسیوں' شاید سیکڑوں' شاید هزاروں آدمیوں کی عمریں دو چار برس نہیں دس بیس برس کم هوجائینگی . یہ کیوں ؟ یہ یوں کہ اُن دسیوں' سیکڑوں' هزاروں نے لمبی عمر تک جینے کے معاملے میں شا کو آدرش مان رکھا تھا . گاندھی جی تو سوا سو برس جیتے رهنے کی سوچا کرتے تھے . پر شا تو آدمی کی عمر تین سو برس بتاتے تھے اور ٧٠–٨٠ برس کی عمر میں تو' اُنکا کہنا تھا' آدمی کی عقل پک کر اس کام کی هوتی هے کہ وہ کچھ کام کی بات اپنے پیچھے چھوڑ جاسکے . اسلئے اگر کوئی ایشور هے تو وہ ایسا انیائی نہیں هو سکتا جو اُس عمر میں آدمی کو ختم کردے جب

मर जाने की वजह उसका यह विश्वास ही है कि आदमी की उमर सौ बरस की हुआ करती है.

हम इसे निरा बहाना ही मानते हैं कि शा के गिर जाने से उनकी हड्डी टूट गई और इसलिये वह जल्दी चल बसे. हम तो उनके जल्दी चल बसने की वजह यही समझते हैं कि हड्डी टूट जाने से उनके विश्वास का धक्का लगा और यह विश्वास का धक्का ही उन्हें यहाँ से उठा कर ले गया.

हम तो शा को बीसवीं सदी के रिशी के नाम से ही याद रक्खेंगे और रिशी के उठ जाने पर ज्यादा शोक करना रिशी की आत्मा को सुख पहुंचाना नहीं हो सकता.

(१९७) हमारी तो यही इच्छा है कि शा को दुनिया 'दुनिया भर के रिशी' के नाम से याद रक्खे.

२१. ११. ५०. —भगवानदीन.

مر جانے کی وجہ اُسکا یہ وشواس ھی ھے کہ آدمی کی عمر سو برس کی ھوا کرتی ھے ۔

ھم اِسے نرا بہانہ ھی مانتے ھیں کہ شا کے گر جانے سے اُن کی ھڈی ٹوٹ گئی اور اس لئے وہ جلدی چل بسے ۔ ھم تو اُن کے جلدی چل بسنے کی وجہ یہی سمجھتے ھیں کہ ھڈی ٹوٹ جانے سے اُنکے وشواس کو دھکا لگا اور یہ وشواس کا دھکا ھی اُنھیں یہاں سے اُٹھا کر لے گیا ۔

ھم تو شا کو بیسویں صدی کے رشی کے نام سے ھی یاد رکھینگے اور رشی کے اُٹھ جانے پر زیادہ شوک کرنا رشی کی آتما کو سکھ پھونچانا نہیں ھو سکتا

ھماری تو یہی اِچھا ھے کہ شا کو دنیا 'دنیا بھر کے رشی' کے نام سے یاد رکھے ۔ (۱۹۷)

—بھگوان دین ۲۱-۱۱-۵۰

उस्ताद फ़ैयाज़ ख़ाँ—

पक्का गाना हमें कभी पसन्द नहीं आता. हमने उस्ताद फ़ैयाज़ ख़ाँ को एक बार ही गाते हुए सुना और तभी हम यह जान पाए कि पक्के गाने से बढ़ कर कोई गाना ही नहीं. उस्ताद का गाना सुनकर हम यह समझ पाए कि पक्का गाना उस तरीक़े की नक़ल है जिस तरीक़े से एक भगत अपने भगवान के आगे अपनी प्रार्थना को रखता है. जैसे बच्चा एक ही बात को सैकड़ों तरीक़े से रख कर मां से चीज़ पा ही लेता है वैसे ही भगत अपनी माँग को सैकड़ों तरीक़े

اُستاد فیاض خاں—

پکا گانا ھمیں کبھی پسند نہیں آتا ۔ ھم نے اُستاد فیاض خاں کو ایک بار ھی گاتے ھوئے سنا اور تبھی ھم یہ جان پائے کہ پکے گانے سے بڑھکر کوئی گانا ھی نہیں ۔ اُستاد کا گانا سن کر ھم یہ سمجھ پائے کہ پکا گانا اُس طریقے کی نقل ھے جس طریقے سے ایک بھگت اپنے بھگوان کے آگے اپنی پرارتھنا کو رکھتا ھے ۔ جیسے بچہ ایک ھی بات کو سیکڑوں طریقے سے رکھ کر ماں سے چیز پا ھی لیتا ھے ویسے ھی بھگت اپنی مانگ کو سیکڑوں طریقے

से ईश्वर के सामने रखकर ईश्वर को रिझा ही लेता है. हम तो यही कहेंगे कि उस्ताद फ़ैयाज़ ख़ाँ यह बात ख़ूब समझते थे और अगर हम ग़लत हैं तो इसकी तह में कोई और बात रही होगी. हम तो यह इसलिये कह रहे हैं कि जब वह ठुमरी गाते थे, और आम तौर से ठुमरी में राधे-श्याम की आपसी चर्चा रहती है, तो ऐसे तल्लीन हो जाते थे मानो सचमुच वह राधा हैं और अपने श्याम से बातें कर रहे हैं. असल में उनके लिये राम और रहीम, कृश्न और करीम दो थे ही नहीं. हम उसी को सच्चा मुसलमान समझते हैं जो 'रघुपति राघव राजा राम' गाकर इतना ही आनन्द ले ले जितना वह 'अल्लाहू' 'अल्लाहू' की रट लगा कर ले लेता है और यही कसौटी हमने सच्चे हिन्दू की मान रक्खी है. यानी सच्चा हिन्दू वह जो 'अल्लाहू' 'अल्लाहू' की रट में वही रस ले सके जो 'राम' 'राम' की रटन में लेता है.

उस्ताद फ़ैयाज़ ख़ाँ, हिन्दुस्तान टाइम्स ने ठीक लिखा है, 'रघुपति राघव राजा राम' गाकर अपने में इतने भीग जाते थे मानो वह अपने अल्लाह से बातें कर रहे हों. यह कहना कि वह समाँ बाँध देते थे उनकी शान के ख़िलाफ़ होगा, समाँ तो अपने आप बँध जाता था और सचाई और दिल की सफ़ाई में यह क़ाबलियत मौजूद रहती है. गांधी जी कौन सी बोलने की कला जानते थे. टूटी फूटी हिन्दी में सीधे सच्चे शब्द बोल कर समाँ को मजबूर कर देते थे कि वह हाथ बाँधे खड़ा हो जाय.

उस्ताद फ़ैयाज़ ख़ाँ सच्चे मुसलमान थे या यों कहिये कि वह हिन्दू भी थे और मुसलमान भी थे या यों कहिये कि वह न हिन्दू थे और न मुसलमान थे पर वह हिन्दुस्तानी थे और हिन्दुस्तानी

سے ایشور کے سامنے رکھکر ایشور کو رجھا ہی لیتا ہے . ہم تو یہی کہینگے کہ اُستاد فیاض خاں یہ بات خوب سمجھتے تھےاور اگر ہم غلط ہیں تو اسکی تہہ میں اور کوئی بات رہی ہو گی. ہم تو یہ اسلئےکہ رہے ہیں کہ جب وہ ٹھمری گاتے تھے' اور عام طور سے ٹھمری میں رادھے شیام کی آپسی چرچا رہتی ہے' تو ایسے تلین ہو جاتے تھے مانو سچ مچ وہ رادھا ہیں اور اپنے شیام سے باتیں کر رہے ہیں . اصل میں اُنکے لئے رام اور رحیم' کرشن اور کریم دو تھے ہی نہیں . ہم اُسی کو سچا مسلمان سمجھتے ہیں جو 'رگھوپتی راگھو راجہ رام' گاکر اتنا ہی آنند لےلے جتنا وہ 'اللہ ہو' 'اللہ ہو' کی رٹ لگا کر لے لیتا ہے اور یہی کسوٹی ہم نے سچے ہندو کی مان رکھی ہے . یعنی سچا ہندو وہ جو 'اللہ ہو' 'اللہ ہو' کی رٹ میں وہی رس لے سکے جو 'رام' 'رام' کی رٹن میں لیتا ہے .

اُستاد فیاض خاں' ہندستان ٹائمز نے ٹھیک لکھا ہے' 'رگھوپتی راگھو راجہ رام' گاکر اپنے میں اتنے بھیگ جاتے تھے مانو وہ اپنے اللہ سے باتیں کر رہے ہوں . یہ کہنا کہ وہ سماں باندھ دیتے تھے اُن کی شان کے خلاف ہوگا' سماں تو اپنے آپ بندھ جاتا تھا اور سچائی اور دل کی صفائی میں یہ قابلیت موجود رہتی ہے . گاندھی جی کون سی بولنے کی کلا جانتے تھے . ٹوٹی پھوٹی ہندی میں سیدھے سچے شبد بول کر سماں کو مجبور کر دیتے تھے کہ وہ ہاتھ باندھے کھڑا ہوجائے .

اُستاد فیاض خاں سچے مسلمان تھے یا یوں کہئے کہ وہ ہندو بھی تھے اور مسلمان بھی تھے یا یوں کہئے کہ وہ نہ ہندو تھے [illegible]

गायन कला की जान, जो अपने को पहचानना या ईश्वर में मिल जाने का कोशिश करना है, के जानकार थे और इसी नाते उनकी गिनती हम बड़े गायकों में करते हैं. और फिर ऐसे गवैये को हम भेंट चढ़ाए बग़ैर कैसे रह सकते हैं.

हमें उम्मीद है कि हमारी यह शब्दों की भेंट शायद गगन के सूरज उस्ताद फ़ैयाज़ ख़ाँ क़बूल करेंगे.

२१. ११. ५०   —भगवानदीन

नैपाल और बरतानिया—

बरतानिया से यह आवाज़ क्यो उठी कि वह नैपाल में राना के राजगद्दी पर बिठाए तीन बरस के बालक को राजा मान लेगी (३१५)
और फिर क्यों बरतानिया अब इस बारे में चुप सी मालूम होती है.

बरतानिया को हम से ज्यादा अच्छी तरह मालूम है कि नैपाल की हकूमत बरतानिया की हकूमत जैसी नहीं है. वहाँ के महाराजा वीर विक्रम सिंह का नैपाल मे वह हैसियत नहीं है जो आठवें राजा एडवर्ड की बरतानिया में थी और न राना जंग बहादुर की वह हैसियत है जो बाल्डविन साहब की थी. नैपाल में न कोई ढंग के चुनाव होते हैं, न कोई ढंग की पार्लियामेन्ट है, न पार्लियामेन्ट में कोई दलबन्दियाँ हैं और न बड़ीयत पारटी अपने प्रधान मन्त्री को चुनती है. राना जंग बहादुर की, जो आज अपने आप को नैपाल का प्रधान मंत्री कहते हैं, हालत नैपाल में क्या है और नैपाल की हकूमत के साथ उनका क्या रिश्ता है इसको बरतानिया हम से भी ज्यादा अच्छी तरह समझती है.

گائن کلا کی جان' جو اپنے کو پہچاننا یا ایشور میں مل جانے کی کوشش کرنا ھے کے جانکار تھے اور اِسی ناتے اُن کی گنتی ھم بڑے گائکوں میں کرتے ھیں . اور پھر ایسے گویئے کو ھم بھینٹ چڑھائے بغیر کیسے رہ سکتے ھیں

ھمیں اُمید ھے کہ ھماری یہ شبدوں کی بھینٹ شاید گگن کے سورج اُستاد فیاض خاں قبول کرینگے .

٥٠-١١-٢١   —بھگوان دین

نیپال اور برطانیہ—

برطانیہ سے یہ آواز کیوں اُٹھی کہ وہ نیپال میں رانا کے راج گدی پر بٹھائے تین برس کے بالک کو راجہ مان لیگی اور پھر (٣١٥)
کیوں برطانیہ اب اِس بارے میں چپ سی معلوم ھوتی ھے .

برطانیہ کو ھم سے زیادہ اچھی طرح معلوم ھے کہ نیپال کی حکومت برطانیہ کی حکومت جیسی نہیں ھے . وھاں کے مہاراجہ ویروکرم سنگھ کی نیپال میں وہ حیثیت نہیں ھے جو آٹھویں راجہ ایڈورڈ کی برطانیہ میں تھی . اور نہ رانا جنگ بہادر کی وہ حیثیت ھے جو بالڈون صاحب کی تھی . نیپال میں نہ کوئی ڈھنگ کے چناو ھوتے ھیں' نہ کوئی ڈھنگ کی پارلیامنٹ ھے' نہ پارلیامنٹ میں کوئی دل بندیاں ھیں اور نہ بڑی بت پارٹی اپنے پردھان منتری کو چنتی ھے . رانا جنگ بہادر کی' جو آج اپنے آپ کو نیپال کا پردھان منتری کہتے ھیں' حالت نیپال میں کیا ھے اور نیپال کی حکومت کے ساتھ اُن کا کیا رشتہ ھے اس کو برطانیہ ھم سے بھی زیادہ اچھی طرح سمجھتی ھے .

बरतानिया को यह मालूम है कि सौ बरस से ज़्यादा हुए यानी सन १८४५ ईसवी में राना के ख़ानदान के बाबा दादा ने किसी तरह राज में ऐसी जगह बना ली थी जिसकी वजह से वह सब कुछ बन बैठे थे और नैपाल का सच्चा राजा नाम का राजा रह गया था. बरतानिया को यह भी मालूम है कि उनका यह काम नावाजिब, ग़ैर-क़ानूनी और हर तरह नाजायज़ था. पर जिस तरह लड़ाई और प्यार के कोई क़ायदे क़ानून नहीं होते उसी तरह राज हड़प करने के कोई क़ायदे क़ानून नहीं होते. बरतानिया के घर में ही क्रामवेल ने राज हड़प करके दिखला दिया. यह दूसरी बात है कि फिर बरतानिया के लोग उसी क्रामवेल से इतने बिगड़े कि उसकी क़बर खोद डाली और उसकी हड्डियाँ तक इधर उधर छितरा दीं. और बरतानिया वालों ने यह तो कमाल ही कर दिया कि क्रामवेल की हकूमत के काल का इतिहास में कोई राजा या मालिक ही नहीं रक्खा. पर इससे क्या. वह अगर नैपाल के राना की तरह कोई बच्चा बच्ची गद्दी पर बिठा कर राजगद्दी का मालिक बना रहता तो शायद नफ़े में रहता. बस तो नैपाल के वह सौ बरस पुराने राना ने जो एक दफ़े प्रधान वज़ीर का जामा पहिन कर राजगद्दी अपनाई तो अब तक उनके ख़ानदान से वह निकल न पाई. अब वह गद्दी ऐसी ही मौरूसी हो गई जैसे बारह बरस में किसान या आज के हिन्दुस्तान में बारह घंटे में कोई किरायेदार मालिक मकान बन सकता है. पर किसान और किरायेदार मालिक को टका कौड़ी कुछ देते तो हैं. यह राना की गद्दी बड़ी मज़ेदार है. यह उलटे राजा से वसूल करते हैं और असली मालिक राजा से दसख़त कराने का काम लेते हैं और

برطانیہ کو یہ معلوم ھے کہ سو برس سے زیادہ ھوئے یعنی سن ۱۸۴۵ عیسوی میں رانا کے خاندان کے بابا دادا نے کسی طرح راج میں ایسی جگہ بنا لی تھی جس کی وجہ سے وہ سب کچھ بن بیٹھے تھے اور نیپال کا سچا راجہ نام کا راجہ رہ گیا تھا. برطانیہ کو یہ بھی معلوم ھے کہ اُن کا یہ کام ناواجب' غیر قانونی اور ھر طرح ناجائز تھا. پر جس طرح لڑائی اور پیار کے کوئی قاعدے قانون نہیں ھوتے اُسی طرح راج ھڑپ کرنے کے کوئی قاعدے قانون نہیں ھوتے. برطانیہ کے گھر میں ھی کرامویل نے راج ھڑپ کرکے دکھلا دیا. یہ دوسری بات ھے کہ پھر برطانیہ کے لوگ اُسی کرامویل سے اتنے بگڑے کہ اُس کی قبر کھود ڈالی اور اُس کی ھڈیاں تک اِدھر اُدھر چھترا دیں. اور برطانیہ والوں نے یہ تو کمال ھی کر دیا کہ کرامویل کی حکومت کے کال کا اتہاس میں کوئی راجہ یا مالک ھی نہیں رکھا. پر اس سے کیا. وہ اگر نیپال کے رانا کی طرح کوئی بچہ بچی گدی پر بٹھا کر راج گدی کا مالک بنا رھتا تو شاید نفع میں رھتا. بس تو نیپال کے وہ سو برس پرانے رانا نے جو ایک دفعہ پردھان وزیر کا جامہ پہن کر راج گدی اپنائی تو اب تک اُن کے خاندان سے وہ نکل نہ پائی. اب وہ گدی ایسی ھی موروثی ھوگئی جیسے بارہ برس میں کسان یا آج کے ھندستان میں بارہ گھنٹے میں کوئی کرایہ دار مالک مکان بن سکتا ھے. پر کسان اور کرایہ دار مالک کو ٹکا کوڑی کچھ دیتے تو ھیں یہ رانا کی گدی بڑی مزے دار ھے. یہ اُلٹے راجہ سے وصول کرتے ھیں اور اصلی مالک راجہ سے دستخط کرانے کا کام لیتے ھیں اور

जनता पर रोब गाँठने के लिये उन दसख़तों का नाम रख छोड़ा है <u>लाल मोहर</u> यानी रेड सील.

बरतानिया जब हिन्दुस्तान पर राज करती थी तो वह ख़ुद ही इस तरह के काम रियासतों में कराया करती थी फिर उसे नेपाल के इस नाटक की ओर ध्यान देने की क्या ज़रूरत थी. सन १८४५ ई० में बरतानिया की ईस्ट इंडिया कम्पनी समूचे भारत पर छा चुकी थी. इसलिये सचाई की खोज किये बिना अगर हम यह कह डालें कि अजब नहीं इस राना के गद्दी हथियाने के काम में उस समय के कम्पनी के गवरनर जनरल का इशारा या हाथ रहा हो तो इतिहास की कोई भारी भूल नहीं होगी और इतिहास के कीड़े ही कौन दूर की कौड़ी लाते हैं. बस इस तरह गद्दी राना के ख़ानदान में चली आती है, आज आधी बीसवीं सदी बीत जाने पर नैपाल के समझदार कांगरेसी जब किसी वजह से राजा के इतने भक्त हैं तब १०५ बरस पहिले उन्नीसवीं सदी के बीच में कितने भक्त रहे होंगे, उसके अन्दाज़े से यह समझ लेना तो आसान ही है कि राजा को मिटाकर गद्दी अपनाना तो एक ओर, अपने धड़ पर सर रखना भी राना के लिये मुशकिल हो जाता और क्रामवेल से भी ज़्यादा बुरा हाल हुआ होता.

बरतानिया में चाहे सच्चे मानों में आज लोकशाही न भी हो तब भी बरतानिया यह बहुत अच्छी तरह जानती है कि लोकशाही किसे कहते हैं. बरतानिया का समझदार तो एक ओर, मामूली आदमी भी यह कह सकता है क नैपाल में राना जंगबहादुर का बैठाया बाल राजा लोकशाही के तमाम नियमों पर पानी फेर देने वाला है. फिर

جنتا پر رعب گانٹھنے کے لئے اُن دستخطوں کا نام رکھ چھوڑا ہے <u>لال مہر</u> یعنی ریڈ سیل ۔

برطانیہ جب ہندستان پر راج کرتی تھی تو وہ خود ہی اس طرح کے کام ریاستوں میں کرایا کرتی تھی پھر اُسے نیپال کے اس ناٹک کی اور دھیان دینے کیا ضرورت تھی ۔ سن ۱۸۴۵ع میں برطانیہ کی ایسٹ انڈیا کمپنی سموچے بھارت پر چھا چکی تھی ۔ اِس لئے سچائی کی کھوج کئے بنا اگر ہم یہ کہہ ڈالیں کہ عجب نہیں اس رانا کے گدی ہتھیانے کے کام میں اُس سمے کے کمپنی کے گورنر جنرل کا اشارہ یا ہاتھ رہا ہو تو اتہاس کی کوئی بھاری بھول نہیں ہوگی اور اتہاس کے کیڑے ہی کون دور کی کوڑی لاتے ہیں ۔ بس اس طرح گدی رانا کے خاندان میں چلی آتی ہے ۔ آج آدھی بیسویں صدی بیت جانے پر نیپال کے سمجھدار کانگریسی جب کسی وجہ سے راجہ کے اتنے بھگت ہیں تب ۱۰۵ برس پہلے اُنیسویں صدی کے بیچ میں کتنے بھگت رہے ہونگے' اُس کے اندازے سے یہ سمجھ لینا تو آسان ہی ہے کہ راجہ کو مٹا کر گدی اپنانا تو ایک اور' اپنے دھڑ پر سر رکھنا بھی رانا کے لئے مشکل ہوجاتا اور کرامویل سے بھی زیادہ برا حال ہوا ہوتا ۔

برطانیہ میں چاہے سچے معنوں میں آج لوک شاہی نہ بھی ہو تب بھی برطانیہ یہ بہت اچھی طرح جانتی ہے کہ لوک شاہی کسے کہتے ہیں ۔ برطانیہ کا سمجھدار تو ایک اور' معمولی آدمی بھی یہ کہہ سکتا ہے کہ نیپال میں رانا جنگ بہادر کا بیٹھایا راجہ بال لوک شاہی کے تمام نیموں پر پانی پھیر دینے والا ہے ۔ پھر

यह ठीक है कि कुछ लोग इस हिन्दुस्तानी को उर्दू भी हते हैं. पर ख्वाजा साहब तो उर्दू नाम वाली हिन्दुस्तानी भी नहीं ले. वह जो बोले वह कहीं नहीं बोली जाती. और फिर वह निजी सियत से बोले कहाँ? उन्होंने कई बार यह जताने की कोशिश ी कि वह हिन्द के प्रतिनिधि हैं, हिन्दी हैं और उसी हैसियत से ोल रहे हैं.

रेडियो पर और वह भी विदेश के रेडियो से इस तरह की ातचीत ब्राडकास्ट हो तब हिन्दी वाले न भड़कें तो क्या करें? और वह गुस्से में आकर ग़लत या सही संस्कृत की तरफ़ दौड़ने लगें तो दोष किसका?

हमें उम्मीद है कि जिम्मेदार सरकारी वज़ीर इस ओर ध्यान देंगे और ऐसा कोई इन्तज़ाम कर देंगे कि आइन्दा किसी को ऐसी शिकायत न हो पाये.

नागपुर

भगवान दीन

एक और नया तमाशा

सन् १८५७ में दिल्ली में हिन्दुस्तान के शाही तख़्त पर हिन्दु-स्तानी बादशाह बहादुर शाह था. मामूली जनता से लेकर हिन्दु-स्तान के राजे महराजे और बर्तानिया से आई ईस्ट इन्डिया के अफ़सर सभी को राजा मानते थे. हां, ईस्ट इन्डिया कम्पनी के अफ़सर बहादुर शाह को नाम का राजा मानते थे और उन बाहर ... को वैसा मानने का हक़

ہے۔ یہ ٹھیک ہے کہ کچھ لوگ اس ہندستانی کو اردو بھی کہتے ہیں۔ پر خواجہ صاحب تو اردو نام والی ہندستانی بھی نہیں بولے۔ وہ جو بولے وہ کہیں نہیں بولی جاتی۔ اور پھر وہ نجی حیثیت سے بولے کہاں؟ انھوں نے کئی بار یہ جتانے کی کوشش کی کہ وہ ہند کے پرتی ندھی ہیں، ہندی ہیں اور اسی حیثیت سے بول رہے ہیں۔

ریڈیو پر اور وہ بھی ودیش کے ریڈیو سے اس طرح کی بات چیت براڈکاسٹ ہو تب ہندی والے نہ بھڑکیں تو کیا کریں؟ اور وہ غصے میں آکر غلط یا صحیح سنسکرت کی طرف دوڑنے لگیں تو دوش کس کا؟

ہمیں امید ہے کہ ذمے دار سرکاری وزیر اس اور دھیان دینگے اور ایسا کوئی انتظام کر دیں گے کہ آئندہ کسی کو ایسی شکایت نہ ہو پائے۔

ناگپور

بھگوان دین

ایک اور نیا تماشہ

سنہ ۱۸۵۷ میں دلی میں ہندستان کے شاہی تخت پر ہندستانی بادشاہ بہادر شاہ تھا۔ معمولی جنتا سے لے کر ہندستان کے راجے مہاراجے اور برطانیہ سے آئی ایسٹ انڈیا کے افسر سبھی کو راجہ مانتے تھے۔ ہاں، ایسٹ انڈیا کمپنی کے افسر بہادر شاہ کو نام کا راجا مانتے تھے اور ان باہر سے گورے اور اندر سے کالے دل والوں کو ویسا ماننے کا حق تھا۔

हम नहीं समझते बरतानिया के उस बाल राजा के समर्थन की बात करने में कौन सी राजनेता गीरी है.

हमारी राय में बरतानिया इस तरह की बात कह कर हमारे प्रधान मंत्री की उस बात को कि भारत की सरकार राना के नैपाल की गद्दी पर बिठाए बालक राजा को न राजा मानेगी, न उसकी हकूमत को हकूमत समझेगी, न कुछ कम कर सकी है, न धक्का पहुँचा सकी है. हाँ, उतावलेपन में अपनी नासमझी का नाटक जरूर दिखा सकी है.

२१. ११. ५०. —भगवान दीन

(२४)

नैपाल और बरतानी हिन्दी सरकार (ब्रिटिश इन्डियन गवरमेन्ट)

जब हम छोटे से थे और स्कूल में पढ़ते थे तो हिन्दुस्तान के नक़्शे पर तरह तरह के रंग मिलते थे. एक तो मिलता था लाल जिसके माने होते थे बरतानी हिन्द यानी ब्रिटिश इंडिया. देसी रियासतों का रंग, जिनके राजाओं का हाल अंगरेजी राज के जिले के कलक्टरों से भी बुरा था नक़्शे में पीला रहता था. दुनिया के नक़्शे पर पीला रंग उन मुल्कों का था जहाँ जम्हूरियत थी यानी जहाँ राजा न रह कर देस का राज देस के किसी एक आदमी के हाथ में सभापति की हैसियत से रहता था. हिन्दुस्तान के नक़्शे के उत्तर में दो मुल्क और थे जो इसी पीले रंग में रँगे रहते थे. पर न उनकी देसी रियासतों में गिनती थी और न दुनिया के और आजाद मुल्कों की तरह से जम्हूरियत गुट में गिने जा सकते थे और उन दो

ہم نہیں سمجھتے برطانیہ کے اُس بال راجہ کے سمرتھن کی بات کرنے میں کون سی راج نیتا گیری ہے ۔

ہماری رائے میں برطانیہ اِس طرح کی بات کہہ کر ہمارے پردھان منتری کی اُس بات کو کہ بھارت کی سرکار رانا کے نیپال کی گدی پر بٹھائے بالک راجہ کو نہ راجہ مانے گی، نہ اُس کی حکومت کو حکومت سمجھے گی، نہ کچھ کم کر سکی ہے نہ دھکا پہنچا سکی ہے ۔ ہاں، اُتاولے پن میں اپنی ناسمجھی کا ناٹک ضرور دکھا سکی ہے ۔

۲۱-۱۱-۵۰ —بھگوان دین

(۲۴)

نیپال اور برطانی ہندی سرکار (برٹش انڈین گورمنٹ)—

جب ہم چھوٹے سے تھے اور اسکول میں پڑھتے تھے تو ہندستان کے نقشے پر طرح طرح کے رنگ ملتے تھے ۔ ایک تو ملتا تھا لال جسکے معنی ہوتے تھے برطانی ہند یعنی برٹش انڈیا ۔ دیسی ریاستوں کا رنگ، جن کے راجاؤں کا حال انگریزی راج کے ضلع کے کلکٹروں سے بھی برا تھا، نقشے میں پیلا رہتا تھا ۔ دنیا کے نقشے پر پیلا رنگ اُن ملکوں کا تھا جہاں جمہوریت تھی یعنی جہاں راجہ نہ رہکر دیس کا راج دیس کے کسی ایک آدمی کے ہاتھ میں سبھا پتی کی حیثیت سے رہتا تھا ۔ ہندستان کے نقشے کے اُتر میں دو ملک اور تھے جو اسی پیلے رنگ میں رنگے رہتے تھے ۔ پر نہ اُن کی دیسی ریاستوں میں گنتی تھی اور نہ دنیا کے اور آزاد ملکوں کی طرح جمہوریت گٹ میں گنے جا سکتے تھے اور اُن دو

में से एक यही आज का नैपाल भी था. स्कूलों में हमें तो यही पढ़ाया गया था कि नैपाल एक आज़ाद मुल्क है पर जब ज़रा कुछ समझ आई तब यह पता लगा कि नैपाल का राजा (असल में यही राना खानदानी प्रधान वज़ीर) आए साल हिन्दुस्तान के वायसराय के पास आता है और कुछ रक़म ले जाता है जो पंद्रह बीस लाख के क़रीब होती है. हमारी नानी दादी तो हमें यह बताया करती थीं कि यह हिन्दू राजा है और इन अंगरेज़ मलेच्छों से कर यानी महसूल वसूल करता है. और हम यह सुन कर इतने फूल जाते थे कि मानो हम ही वायसराय से कर वसूल कर रहे हों. फिर ज़रा और बड़े हुए और जब हमने यह बात अपने पिताजी को बताई तो वह हमारी इस बुद्धि भरी जानकारी पर इस तरह हँसे कि हमें झेंपना पड़ा. उनकी हँसी साफ़ कह रही थी कि हम कितनी बेवक़ूफ़ी की बात कह रहे हैं. उन्होंने फिर हमें समझाया कि यह राजा आजा नहीं है. यह राना है और नैपाल का वज़ीर है. इसने नैपाल के राजा को कठपुतली बना रक्खा है और फिर यह भी तो नहीं कि यह ख़ुद भी राजा बन बैठा होता. यह तो इन अंगरेज़ों की चौकीदारी करता है. हम हिन्दुस्तानियों ने ग़ुलाम होकर धर्म डुबोया तो डुबोया, यह राजा बना हुआ हिन्दू धर्म को डुबो रहा है और चौकीदारी का काम करता है. हमने अपने पिताजी की बात को ठीक मान लिया. थोड़े और बड़े हुए तो उस बात की सचाई जब समझ में आई जब अमीर काबुल ने अंगरेज़ी सरकार से चौबीस लाख साल की रक़म लेना बन्द कर दिया. अमीर काबुल साहब भी नैपाल के राजा की तरह चौकीदार बने हुए थे. एक बार अमीर काबुल भारत के दरशनों

میں سے ایک یہی آج کا نیپال بھی تھا ۔ اسکولوں میں ہمیں تو یہی پڑھایا گیا تھا کہ نیپال ایک آزاد ملک ہے پر جب ذرا کچھ سمجھ آئی تب یہ پتہ لگا کہ نیپال کا راجہ (اصل میں یہی رانا خاندانی پردھان (وزیر) آئے سال ہندوستان کے وائسرائے کے پاس آتا ہے اور کچھ رقم لے جاتا ہے جو پندرہ بیس لاکھ کے قریب ہوتی ہے ہماری نانی دادی تو ہمیں یہ بتایا کرتی تھیں کہ یہ ہندو راجہ ہے اور ان انگریز ملیچھوں سے کر یعنی محصول وصول کرتا ہے ۔ اور ہم یہ سن کر اتنے پھول جاتے تھے کہ مانو ہم ہی وائسرائے سے کر وصول کر رہے ہوں ۔ پھر ذرا اور بڑے ہوئے اور جب ہم نے یہ بات اپنے پتا جی کو بتائی تو وہ ہماری اِس بدھی بھری جانکاری پر اس طرح ہنسے کہ ہمیں جھینپنا پڑا ۔ اُنکی ہنسی صاف کہہ رہی تھی کہ ہم کتنی بیوقوفی کی بات کہہ رہے ہیں انہوں نے پھر ہمیں سمجھایا کہ یہ راجہ آجا نہیں ہے ۔ یہ رانا ہے اور نیپال کا وزیر ہے اس نے نیپال کے راجہ کو کٹھ پتلی بنا رکھا ہے اور پھر یہ بھی تو نہیں کہ یہ خود بھی راجہ بن بیٹھا ہوتا ۔ یہ تو اِن انگریزوں کی چوکیداری کرتا ہے ۔ ہم ہندوستانیوں نے غلام ہو کر دھرم ڈبویا تو ڈبویا یہ راجہ بنا ہوا ہندو دھرم کو ڈبو رہا ہے اور چوکیداری کا کام کرتا ہے ۔ ہمنے اپنے پتاجی کی بات کو ٹھیک مان لیا ۔ تھوڑے اور بڑے ہوئے تو اُس بات کی سچائی جب سمجھ میں آئی جب امیر کابل نے انگریزی سرکار سے چوبیس لاکھ سال کی رقم لینا بند کر دیا ۔ امیر کابل صاحب بھی نیپال کے راجہ کی طرح چوکیدار بنے ہوئے تھے ۔ ایک بار امیر کابل بھارت کے درشنوں

के लिये आए तो उनकी स्पेशल ट्रेन का टाइम टेबुल तमाम स्टेशनों पर पहुँचा था और दूसरे ही दिन तमाम स्टेशनों को तार से ख़बर दी गई थी कि वह टाइम टेबुल रद्द किया जाता है और दूसरा टाइम टेबुल भेजा जाता है. दूसरा टाइम टेबुल आया. उसमें टाइम की टेबुल में तो कहीं कोई फ़रक़ नहीं था. सभी हैरान थे. बहुत ग़ौर करने पर पता चला कि पहले टाइम टेबुल में अमीर काबुल छपा था और दूसरे टाइम टेबुल में हिज़ हाइनेस दि किंग आफ़ अफ़ग़ानिस्तान छपा था. अब हमारे पढ़ने वाले समझ लें कि यह बरतानी हिन्दी सरकार क्या क्या शरारतें करती रही है. नैपाल के साथ भी यह इसी तरह की साँठ गाँठ रखती थी और इस सारी शरारत की तह में थी यह बात कि उन्हें बराबर नैपाल से जुझारू गोरखे मिलते थे. गोरखे उस दिन से कल तक ऐसे जुझारू वफ़ादार थे कि जिसका नमक खाएँ उसकी ख़ातिर ज़रूरत पड़ने पर अपने बाप का सर भी काट लाएँ. और कोई करे क्या. हिन्दू रूढ़ि (रिवाज) धर्म की तालीम यही सिखाती है कि राजा की ख़ातिर अपनी जान भी दे दो. फिर बाप का सर तो चीज़ ही क्या. और फिर यह भी सिखाती है कि राजा के न्याय अन्याय पर विचार न करो. अंगरेज़ों ने इस जानकारी का फ़ायदा उठा कर गोरखा फ़ौजों से ख़ूब काम लिया और फ़ौजों को तालीम से और जनता से दूर रख कर गोरखा फ़ौजों को कभी धर्म के असली तत्व को न जानने दिया. नागपुर झंडा सत्याग्रह कमेटी के प्रेसीडेन्ट की हैसियत से हमें गोरखों के धर्म की जाँच का मौक़ा मिला. झंडा सत्याग्रह में हिन्दुस्तान भर से सत्या-

کے لئے آئے تو اُنکی اسپشل ٹرین کا ٹائم ٹیبل تمام اسٹیشنوں پر پہنچا تھا اور دوسرے ہی دن تمام اسٹیشنوں کو تار سے خبر دی گئی تھی کہ وہ ٹائم ٹیبل رد کیا جاتا ہے اور دوسرا ٹائم ٹیبل بھیجا جاتا ہے . دوسرا ٹائم ٹیبل آیا . اُس میں ٹائم کی ٹیبل میں تو کہیں کوئی فرق نہیں تھا. سبھی حیران تھے. بہت غور کرنے پر پتہ چلا کہ پہلے ٹائم ٹیبل میں امیرِ کابل چھپا تھا اور دوسرے ٹائم ٹیبل میں ہز ہائنس دی کنگ آف افغانستان چھپا تھا . اب ہمارے پڑھنے والے سمجھ لیں کہ یہ برطانی ہندی سرکار کیا کیا شرارتیں کرتی رہی ہے . نیپال کے ساتھ بھی یہ اسی طرح کی سانٹھ گانٹھ رکھتی تھی اور اس ساری شرارت کی تہہ میں تھی یہ بات کہ اُنھیں برابر نیپال سے جوجھارو گورکھے ملتے تھے . گورکھے اُس دن سے کل تک ایسے جوجھارو وفادار تھےکہ جسکا نمک کھائیں اُس کی خاطر ضرورت پڑنے پر اپنے باپ کا سر بھی کاٹ لائیں . اور کوئی کرے کیا . ہندو روڑھی (رواج) دھرم کی تعلیم یہی سکھاتی ہے کہ راجہ کی خاطر اپنی جان بھی دے دو . پھر باپ کا سر تو چیز ہی کیا . اور پھر یہ بھی سکھاتی ہے کہ راجہ کے نیائے انیائے پر وچار نہ کرو . انگریزوں نے اس جانکاری کا فائدہ اُٹھا کر گورکھا فوجوں سے خوب کام لیا اور فوجوں کو تعلیم سے اور جنتا سے دور رکھ کر گورکھا فوجوں کو کبھی دھرم کے اصلی تتو کو نہ جاننے دیا . ناگپور جھنڈا ستیا گرہ کمیٹی کے پریسیڈنٹ کی حیثیت سے ہمیں گورکھوں کے دھرم کی جانچ کا موقع ملا . جھنڈا ستیا گرہ میں ہندستان بھر سے ستیا گرہی

के बाद जैसे तैसे दो गोरखे और छै अकाली मिल पाए. उसके बाद हमें जेल में जाना पड़ा और हमारे साथ ही यह दोनों गोरखे जेल चले गए. दो चार दिन के बाद सज़ा का हुक्म हो जाने पर दोनों गोरखों को चक्की मिली और उनको काफ़ी तकलीफ़ भी दी जाने लगी. साथ ही साथ उन गोरखों को तरह तरह के उपदेश दिये जाते थे, तरह तरह के लालच दिये जाते थे और माफ़ी मांग कर चले जाने के लिये उन्हें उकसाया जाता था. पर वह तो दो दिन कांगरेस का नमक खा चुके थे. सब तकलीफ़ें सहते थे पर टस से मस नहीं होते थे. इन गोरखे अकालियों के आने का सरकार पर काफ़ी असर पड़ा था और इससे झंडा सत्याग्रह के बारे में जल्दी ही सरकार ने कुछ अपनी हेटी बरदाश्त कर के भी कांगरेस के साथ सुलह कर ली थी. यह थे गोरखे सिपाही जिन की दुनिया की मालिक बन जाने की इच्छा रखने वाली अंगरेज़ क़ौम को बेहद ज़रूरत थी. और इनकी ख़ातिर उसे जिसके साथ भी दोस्ती करने का मौक़ा आ पड़े, दोस्ती करने को तैयार थी. बस इस वजह से नैपाल के राना ख़ानदान को नैपाल का असली राजा बना रहने में अंगरेज़ों से काफ़ी मदद मिलती रही और भोला भाला हिन्दुस्तान या पत्थर तले दबा हिन्दुस्तान यही समझता रहा कि नैपाल आज़ाद है. और हिन्दुस्तान के हिन्दू तो न जाने नैपाल की इस आज़ादी पर कितना बड़ा अभिमान मानते थे. अंगरेज़ हिन्दुस्तान के जब मालिक थे तब नैपाल के साथ जो रिश्ता था सो था पर हिन्दुस्तान के आज़ाद हो जाने के बाद भी आज तक नैपाल का वही नक़्शा बना हुआ है यह अचरज की बात तो है ही पर भेद भरी बात भी है.

کےبعد جیسے تیسے دو گورکھے اور چھ اکالی مل پائے . اس کےبعد ہمیں جیل میں جانا پڑا اور ہمارے ساتھ ہی یہ دونوں گورکھے جیل چلے گئے . دو چار دن کے بعد سزا کا حکم ہو جانے پر دونوں گورکھوں کو چکی ملی اور اُن کو کافی تکلیف بھی دی جانے لگی . ساتھ ہی ساتھ اُن گورکھوں کو طرح طرح کے اُپدیش دیئے جاتے تھے' طرح طرح کے لالچ دیئے جاتے تھے اور معافی مانگ کر چلے جانے کے لئے اُنھیں اکسایا جاتا تھا. پر وہ تو دو دن کانگریس کا نمک کھا چکے تھے. سب تکلیفیں سہتے تھے پر ٹس سے مس نہیں ہوتے تھے. اِن گورکھے اکالیوں کے آنے کا سرکار پر کافی اثر ہوا تھا اور اس سے جھنڈا ستیا گرہ کے بارے میں جلدی ہی سرکار نے کچھ اپنی ہیٹی برداشت کر کے بھی کانگریس کے ساتھ صلح کرلی تھی . یہ تھے گورکھے سپاہی جن کی دنیا کی مالک بن جانے کی اچھا رکھنے والی انگریز قوم کو بیحد ضرورت تھی . اور اُن کی خاطر اُسے جسکے ساتھ بھی دوستی کرنے کا موقع آ پڑے' دوستی کرنے کو تیار تھی . بس اس وجہ سے نیپال کے رانا خاندان کو نیپال کا اصلی راجہ بنا رہنے میں انگریزوں سے کافی مدد ملتی رہی اور بھولا بھالا ہندستان یا پتھر تلے دبا ہندستان یہی سمجھتا رہا کہ نیپال آزاد ہے اور ہندستان کے ہندو تو نہ جانے نیپال کی اس آزادی پر کتنا بڑا ابھیمان مانتے تھے انگریز ہندستان کے جب مالک تھے تب نیپال کے ساتھ جو رشتہ تھا سو تھا پر ہندستان کے آزاد ہو جانے کے بعد بھی آج تک نیپال کا وہی نقشہ بنا ہوا ہے یہ اچرج کی بات تو ہے ہی پر بھید بھری بات بھی ہے .

हिन्दुस्तान के बँटवारे के वक़्त हिन्दू और मुसलमानों दो में बँटवारा हुआ तो हुआ पर फ़ौज के तीन बँटवारे हुए. मुसलमानी फ़ौज और ख़ास तौर से बिलोची फ़ौज जो हर तरह से गोरखों के जोड़ की थी वह पाकिस्तान को दी गई और हिन्दू फ़ौज हिन्द को दी गई और हिन्दू फ़ौजों में से चोटी की वफ़ादार फ़ौज गोरखा फ़ौज के दो टुकड़े किये गए. दो तिहाई भारत सरकार को मिला और एक तिहाई अंगरेज़ों को. इतना ही नहीं अंगरेज़ों को यह हक़ भी रहा कि अगर कभी भारत कामनवेल्थ से अलग हो जाय तब भी वह हिन्दुस्तान के रास्ते नैपाल जाकर गोरखा रंगरूट भरती कर सकता है. इन सब कारवाइयों की ख़ातिर नैपाल के चौकीदार को आज़ाद बादशाह की पदवी देनी पड़ी और नैपाल के लिये इतना ही काफ़ी था. यह ठीक है कि बँटवारे के वक़्त नैपाल की जनता के कुछ समझदार लोग जाग चुके थे और असली हालत को जान चुके थे पर वह इस हालत में न थे कि उस वक़्त कुछ कर धर सकते. इसलिये उन्होंने चुप रहने में ही अपना भला समझा. लेकिन वह चुप थे ऊपर से. अन्दर से ज्वाला मुखी की तरह धधक रहे थे और वह धधक जब से ही बड़ी तेज़ी से फैलती जा रही थी कोई भी आज़ाद मुल्क यह कैसे बरदाश्त कर सकता है कि सात समन्दर पार से बिदेसी आएं और उसके यहाँ से रंगरूट लें और उनको किसी भी देस में जाकर या तो तोप का चारा बनवा दें या उनके हाथों में तोप देकर दूसरे देस वालों को चारा बना कर दूसरे देसों पर हकूमत कर बैठें और उस देस के लिये सिपाहियों से निरी चौकदारी कराते रहे

هندستان کے بٹوارے کے وقت هندو اور مسلمانوں دو میں بٹوارہ هوا تو هوا پر فوج کے تین بٹوارے هوئے . مسلمانی فوج اور خاص طور سے بلوچی فوج جو هر طرح سے گورکھوں کے جوڑ کی تھی وہ پاکستان کو دی گئی اور هندو فوج هند کو دی گئی اور هندو فوجوں میں سے چوٹی کی وفادار فوج گورکھا فوج کے دو ٹکڑے کئے گئے. دو تہائی بھارت سرکار کو ملی اور ایک تہائی انگریزوں کو . اتنا هی نہیں' انگریزوں کو یہ حق بھي رہا کہ اگر کبھی بھارت کامن ویلتھ سے الگ هو جائے تب بھي وہ هندستان کے راستے نیپال جاکر گورکھا رنگروٹ بھرتی کر سکتا هے. ان سب کاروائیوں کی خاطر نیپال کے چوکیدار کو آزاد بادشاہ کی پدوی دینی پڑي اور نیپال کے لئے اتنا هی کافی تھا یہ ٹھیک هے کہ بٹوارے کے وقت نیپال کی جنتا کے کچھ سمجھدار لوگ جاگ چکے تھے اور اصلی حالت کو جان چکے تھے پر وہ اس حالت میں نہ تھے کہ اُس وقت کچھ کر دھر سکتے . اسلئے اُنھوں نے چپ رہنے میں هی اپنا بھلا سمجھا . لیکن وہ چپ تھے اوپر سے اندر سے جوالا مکھی کی طرح دھدھک رهے تھے اور وہ دھدھک جب سے هي بڑي تیزي سے پھیلتی جا رهی تھی . کوئی بھی آزاد ملک یہ کیسے برداشت کر سکتا هے کہ سات سمندر پار سے بدیسی آئیں اور اُس کے یہاں سے رنگروٹ لیں اور اُنکو کسی بھی دیس میں جاکر یا تو توپ کا چارہ بنوا دیں یا اُنکے هاتھوں میں توپ دیکر دوسرے دیس والوں کو چارہ بنا کر دوسرے دیسوں پر حکومت کر بیٹھیں اور اُس دیس سے لئے سپاهیوں سے نری چوکیداری کراتے رهیں .

इंडियन नेशन के पिता गांधी जी पर क्या बीती होगी. उस वक्त अगर गांधी जी ने सचमुच तानाशाह का काम किया होता तो आज हम सैकड़ों बलाओं से दूर होते. पर गांधी जी तो तानाशाह नाम तो लेकर हासिल कर लेते थे, पर तानाशाही से उन्होंने कभी काम नहीं लिया. वह तो मरते दम तक बड़ीयत यानी मेजारिटी के ही भक्त रहे. इस तरह गांधी जी की डबडबाई आँखों के सामने गोरखा पलटनें, जो पहले दिन भारत के ऊपर जान न्योछावर करने के लिये तैयार थीं, दूसरे दिन बरतानिया की इज्ज़त बचाने और बरतानिया का राज बढ़ाने के लिये जान देने के लिये तैयार हो गईं. भारत का सारा नमक उन्होंने एक दिन में उगल दिया और दूसरे दिन उनकी रग रग में बरतानिया का नमक पैवस्त कर गया. यह है हिन्दू रूढ़ि (रिवाजी) धर्म का तमाशा. और उसी हिन्दू रूढ़ि धर्म पर जान न्योछावर करने

(५८१)

के लिये आज कितनी ही पढ़ी लिखी बहनें हिन्दू कोड बिल के खिलाफ़ लाठी लेकर खड़ी हो गई हैं. गांधी जी रूढ़ि धर्म की गंदगी को भी समझते थे और असली धर्म की खूबी से भी वाक़िफ़ थे. वह अपनी ज़िन्दगी में रूढ़ि गंदगी को निकाल जाना चाहते थे पर वैसा न कर सके. और आज तक कोई महापुरुष और कोई सुधारक कभी पूरा पूरा सफल नहीं हुआ. इस फ़ौजी बँटवारे के नतीजे जो हो रहे हैं वह सामने हैं. कुछ दिन पहले प्रशान्त सागर में गोरखों के लड़ने पर यह खबर आई थी कि हिन्दुस्तानी फ़ौजें लड़ रही हैं और फिर इसका सही सही मतलब बताने के लिये हिन्दुस्तान को जरूरत पड़ गई थी कि वह यह कह दे कि वह हिन्दुस्तानी फ़ौजें नहीं हैं, बरतानी फ़ौजें हैं और ऐसा किया भी गया था. बस असली सबब यही है जिसकी वजह से नैपाल के मामले में बरतानिया बहुत होशियार रहती है और वह यह कभी नहीं चाहती कि नैपाल हर बात के लिये अपने पड़ोसी हिन्दुस्तान से सलाह ले.

यह था रिश्ता नैपाली सरकार और बरतानी हिन्दी सरकार में

انڈین نیشن کے پتا گاندھی جی پر کیا بیتی ہوگی . اس وقت اگر گاندھی جی نے سچ مچ تانا شاہ کا کام کیا ہوتا تو آج ہم سیکڑوں بلاؤں سے دور ہوتے . پر گاندھی جی تو تانا شاہ نام تو لیکر حاصل کر لیتے تھے، پر تانا شاہی سے اُنھوں نے کبھی کام نہیں لیا . وہ تو مرتے دم تک بڑییت یعنی میجارٹی کے ہی بھکت رہے . اس طرح گاندھی جی کی ڈبڈبائی آنکھوں کے سامنے گورکھا پلٹنیں، جو پہلے دن بھارت کے اوپر جان نیوچھاور کرنے کے لئے تیار تھیں، دوسرے دن برطانیہ کی عزت بچانے اور برطانیہ کا راج بڑھانے کے لئے جان دینے کے لئے تیار ہو گئیں . بھارت کا سارا نمک انھوں نے ایک دن میں اُگل دیا اور دوسرے دن اُن کی رگ رگ میں برطانیہ کا نمک پیوست کر گیا . یہ ہے ہندو روڑھی (رواجی) دھرم کا تماشا اور اسی ہندو روڑھی دھرم پر جان نیوچھاور کرنے کے لئے

(٥٨١)

آج کتنی ہی پڑھی لکھی بہنیں ہندو کوڈ بل کے خلاف لاٹھی لے کر کھڑی ہو گئی ہیں . گاندھی جی روڑھی دھرم کی گندگی کو بھی سمجھتے تھے اور اصلی دھرم کی خوبی سے بھی واقف تھے . وہ اپنی زندگی میں روڑھی گندگی کو نکال جانا چاہتے تھے پر ویسا نہ کر سکے . اور آج تک کوئی مہا پرش اور کوئی سدھارک کبھی پورا پورا سپھل نہیں ہوا . اس فوجی بٹوارے کے نتیجے جو ہو رہے ہیں وہ سامنے ہیں . کچھ دن پہلے پرشانت ساگر میں گورکھوں کے لڑنے پر یہ خبر آئی تھی کہ ہندستانی فوجیں لڑ رہی ہیں اور پھر اسکا صحیح صحیح مطلب بتانے کے لئے ہندستان کو ضرورت پڑ گئی تھی کہ وہ یہ کہہ دے کہ وہ ہندستانی فوجیں نہیں ہیں، برطانی فوجیں ہیں اور ایسا کیا بھی گیا تھا . بس اصلی سبب یہی ہے جس کی وجہ سے نیپال کے معاملے میں برطانیہ بہت ہوشیار رہتی ہے اور وہ یہ کبھی نہیں چاہتی کہ نیپال ہر بات کے لئے اپنے پڑوسی ہندستان سے صلاح لے .

یہ تھا رشتہ نیپالی سرکار اور برطانی ہندی سرکار میں

और उससे यह ऊपर वाला रिशता पैदा हुआ और आज तक क़ायम है.

२२. ११. ५०. —भगवानदीन

नैपाल और भारत सरकार—

भारत सरकार की यह बात तो हमें बिलकुल पसन्द आई कि उसने नैपाल के राना जंग बहादुर के गद्दी पर बिठाए वाल राजा को राजा मानने से इनकार कर दिया पर इनकार करने के बाद अपनी हैसियत एक तमाशागीर जैसी बना ली यह बात न हमारी समझ में आई, न पसंद आई. इस मामले में हमारी दलीलों ने हमारा एक क़दम भी साथ नहीं दिया. अगर भारत सरकार तमाशागीर बनी थी तो पूरी तमाशागीर बनती फिर चाहे वह किसी ख़याल से भूल से रक्खा हुआ ही क़दम होता. पर उस ढंग की बात के पीछे हमारी दलीलें कुछ दूर तो चलतीं. एक तरफ़ भारत सरकार अपने आप को तमाशागीर कहती है दूसरी ओर नैपाल के क़ानूनी राजा को अपने दूत घर में शरन देती है, दिल्ली बुलाती है और अपना मेहमान बनाती है. क़ानूनी राजा का स्वागत भी अपने ही ढंग का होता है. एक तरफ़ गोरखा पलटनें आकर सलामी देती हैं दूसरी तरफ़ सलामी की तोपें ग़ायब. और सलामी की तोपें न दाग़ने की वजह बताई जाती है कि मेहमानदारी निजू या ख़ासगी थी. हमारी दलीलें इन दो चीज़ों का मेल नहीं बिठा सकतीं. यह ठीक है कि राजनीत के कोई क़ायदे नहीं होते. राजनेता या जिन के हाथ में राज की बागडोर हो वह वक़्त पर जो करदें सो ठीक. ख़ैर, इसे छोड़िये. जब भारत सरकार महाराजा त्रिभुवन वीर विक्रमसिंह को नैपाल का क़ानूनी राजा मानती है और नैपाल की गद्दी पर बैठे वाल राजा को राजा नहीं मानती तब वह कांग्रेस जो नैपाल की राजधानी लेने के लिये दौड़ती है और जो

اور اُس سے یہ اوپر والا رشتہ پیدا ہوا اور آج تک قائم ہے .

۲۲ . ۱۱ . ۵۰ —بھگوان دین

نیپال اور بھارت سرکار—

بھارت سرکار کی یہ بات تو ہمیں بالکل پسند آئی کہ اُس نے نیپال کے رانا جنگ بہادر کے گدی پر بٹھائے بال راجہ کو راجہ ماننے سے انکار کر دیا پر انکار کرنے کے بعد اپنی حیثیت ایک تماشا گیر جیسی بنا لی یہ بات نہ ہماری سمجھ میں آئی' نہ پسند آئی . اس معاملے میں ہماری دلیلوں نے ہمارا ایک قدم بھی ساتھ نہیں دیا . اگر بھارت سرکار تماشا گیر بنی تھی تو پوری تماشا گیر بنتی پھر چاہے وہ کسی خیال سے بھول سے رکھا ہوا ہی قدم ہوتا . پر اُس ڈھنگ کی بات کے پیچھے ہماری دلیلیں کچھ دور تو چلتیں . ایک طرف بھارت سرکار اپنے آپ کو تماشا گیر کہتی ہے دوسری اور نیپال کے قانونی راجہ کو اپنے دوت گھر میں شرن دیتی ہے' دلی بلاتی ہے اور اپنا مہمان بناتی ہے . قانونی راجا کا سواگت بھی اپنے ہی ڈھنگ کا ہوتا ہے . ایک طرف گورکھا پلٹنیں آکر سلامی دیتی ہیں دوسری طرف سلامی کی توپیں غائب . اور سلامی کی توپیں نہ داغنے کی وجہ بتائی جاتی ہے کہ مہمانداری نجو یا خاصگی تھی . ہماری دلیلیں اِن دو چیزوں کا میل نہیں بٹھا سکتیں . یہ ٹھیک ہے کہ راج نیت کے کوئی قاعدے نہیں ہوتے . راج نیتا یا جن کے ہاتھ میں راج کی باگ ڈور ہو وہ وقت پر جو کر دیں سو ٹھیک . خیر' اِسے چھوڑئے . جب بھارت سرکار مہاراجہ تربھون ویر وکرم سنگھ کو نیپال کا قانونی راجہ مانتی ہے اور نیپال کی گدی پر بیٹھے بال راجہ کو نہیں مانتی تب وہ کانگریس جو نیپال کی راج دھانی لینے کے لئے دوڑتی ہے اور جو پوری نہیں

बाग़ी क्यों समझा जाता है. वह तो क़ानूनी राजा का पक्ष लेकर ज़बरदस्ती के बने राजा के ख़िलाफ़ चढ़ाई कर रही थी. वह तो हर तरह की मदद की हक़दार थी . कम से कम नैतिक मदद तो उसे मिलनी ही चाहिये थी.

तीन बरस के बालक को गद्दी पर बिठा कर राज करना इस बात का सबूत है कि राना ख़ानदान अब तक नैपाल में राजा से ज़बरदस्ती लाल मोहर लगवा कर राज करता रहा है और इस नाते अब तक की सब फाँसी की सज़ाएं ठीक सज़ाएं नहीं मानी जा सकतीं. बालक को गद्दी पर बिठा कर राज उसी हालत में हो सकता है जब जनता ने उस बालक को गद्दी पर बिठाया हो. ऐसी हालत में वज़ीर वज़ीर भी होता है और रिजेन्ट भी. राजा समझदार न होने से वज़ीरी बेकार पड़ी रहती है, रिजेन्टी यानी रिजेन्सी काम करती रहती है. आज की हालत में न राना वज़ीर है, न रिजेन्ट. यह भी एक निरा इत्तफ़ाक़ ही है कि क़ानूनी राजा के ख़ानदान का तीन बरस का बच्चा उनके हाथ लग गया नहीं तो वह क़ानूनी राजा की टूटी फूटी खड़ाऊँ को गद्दी पर बिठा कर राजा का काम ले सकते थे और वैसी व्यवस्था रामायन में मौजूद भी है. राना को यह सोचने की कहाँ ज़रूरत थी कि भरत को बाक़ायदा राज मिला था और उसने खड़ाऊँ को नहीं अपनी भाई भक्ति को गद्दी पर बिठाया था. यह बाल राजा अगर राज ख़ानदान की भक्ति के बल पर बिठाया गया होता तो कोई झगड़ा ही खड़ा न होता. यह तो बिठाया गया है पैसे के लालच के निशान की शक्ल में. भारत सरकार को यह समझ लेना चाहिये कि नैपाल की जनता अब जाग गई है. अपने आप तो वह सोयगी ही नहीं, किसी तरह का नशा देकर भी उसे सुलाया नहीं जा सकता. और उसके जागने का असर दुनिया के सारे हिस्से पर पड़ेगा. गोरखा फ़ौजों में खलबली मचे बग़ैर नहीं रहेगी. एक बार गोरखों में अपने देस का ख़याल आया नहीं कि सारी वफ़ादारी

باغی کیوں سمجھا جاتا ہے . وہ تو قانونی راجہ کا پکش لے کر زبردستی کے بنے راجہ کے خلاف چڑھائی کر رہی تھی . وہ تو ہر طرح کی مدد کی حقدار تھی. کم سے کم نیتک مدد تو اُسے ملنی ہی چاہئے تھی .

تین برس کے بالک کو گدی پر بٹھا کر راج کرنا اس بات کا ثبوت ہے کہ رانا خاندان اب تک نیپال میں راجہ سے زبردستی لال مہر لگوا کر راج کرتا رہا ہے اور اس ناتے اب تک کی سب پھانسی کی سزائیں ٹھیک سزائیں نہیں مانی جا سکتیں . بالک کو گدی پر بٹھا کر راج اُسی حالت میں ہوسکتا ہے جب جنتا نے اُس بالک کو گدی پر بٹھایا ہو . ایسی حالت میں وزیر وزیر بھی ہوتا اور ریجنٹ بھی راجہ سمجھدار نہ ہونے سے وزیری بیکار پڑی رہتی ہے' ریجنٹی یعنی ریجنسی کام کرتی رہتی ہے . آج کی حالت میں نہ رانا وزیر ہے' نہ ریجنٹ . یہ بھی ایک نرا اتفاق ہی ہے کہ قانونی راجہ کے خاندان کا تین برس کا بچہ اُن کے ہاتھ لگ گیا نہیں تو وہ قانونی راجہ کی ٹوٹی پھوٹی کھڑاوں کو گدی پر بٹھا کر راجہ کا کام لے سکتے تھے اور ویسی ویوستھا رامائن میں موجود بھی ہے . رانا کو یہ سوچنے کی کہاں ضرورت تھی کہ بھرت کو باقاعدہ راج ملا تھا اور اُس نے کھڑاوں کو نہیں اپنی بھائی بھکتی کو گدی پر بٹھایا تھا . یہ بال راجہ اگر راج خاندان کی بھکتی کے بل پر بٹھایا گیا ہوتا تو کوئی جھگڑا ہی کھڑا نہ ہوتا . یہ تو بٹھایا گیا ہے پیسے کے لالچ کے نشان کی شکل میں . بھارت سرکار کو یہ سمجھ لینا چاہئے کہ نیپال کی جنتا اب جاگ گئی ہے . اپنے آپ تو وہ سوئیگی ہی نہیں ' کسی طرح کا نشہ دے کر بھی اُسے سلایا نہیں جا سکتا . اور اُس کے جاگنے کا اثر دنیا کے سارے حصے پر پڑیگا . گورکھا فوجوں میں کھلبلی مچے بغیر نہیں رہیگی . ایکبار گورکھوں میں اپنے دیس کا خیال آیا نہیں کہ ساری وفاداری

काफ़ूर हो जायगी. और गोरखों के असर से बिलोची पलटनें अछूती रह जायं यह ज़रा मुशकिल है. भारत सरकार के लिये अब यह मामला तमाशागीर बन कर देखने का नहीं रह गया. इसमें पूरी तरह राजनेतागिरी और नीति को निभाते हुए हाथ डालना ही पड़ेगा. हमें यहाँ इतना ही कहना है कि भारत को अंगरेज़ों के हाथ में रह कर चाहे अनचाहे हर लड़ाई में शामिल होना पड़ता था. खून बहाना पड़ता था, पैसा लुटाना पड़ता था, अनाज बाहर भेज कर अपना पेट काटना पड़ता था. कामनवेल्थ का अंग बने रह कर भी उसको यह सब चाहे अनचाहे, सीधे ना सीधे, भूले भटके करना ही पड़ेगा. अंगरेज़ से मिल कर नैपाल के बारे में कोई फ़ैसला करना बड़े खतरे की चीज़ होगी. बरतानिया ने लड़ाई का ज़रा रुख फिरते समझ कर सूडान से हटने से ऐसे इनकार कर दिया मानो सूडान मिस्र का कुछ भी न हो. और सात समन्दर पार की बरतानिया सूडान की सब कुछ हो और ईश्वर से ही सूडान का पट्टा लिखाकर लाई हो और जो कहीं अंगरेज़ों के साथ नैपाल के मामले में अमरीका को भी शामिल कर लिया गया तब तो फिर भारत यह समझ ले कि उसे आए दिन खून बहाने के लिये तैयार रहना पड़ेगा, पेट काटना पड़ेगा और मुट्ठी बाँधकर जाड़ा बिताना पड़ेगा. क्या भारत ने हाल ही में नहीं देख लिया कि कोरिया की घरेलू लड़ाई को 'अग्रेशन' कहने के बाद ही उससे यू.एन.ओ. यानी अमरीका ने चाहा कि आप फ़ौज दीजिये ? यह दूसरी बात है कि अपनी दलीलों और अपने तरीक़ों से भारत के प्रधान वज़ीर ने हिन्दुस्तान को बहुत सी झंझटों से बचा लिया. पर भारत के प्रधान वज़ीर यह याद रक्खें कि यह उनकी निरी दलीलों और बुद्धिमानी का नतीजा नहीं था. अगर मैकआर्थर को सचमुच अमरीका या और कहीं से मदद न मिलती तो यू. एन. ओ. भारत को मजबूर करती और भारत से फ़ौजें लेकर

کافور ہو جائیگی. اور گورکھوں کے اثر سے بلوچی پلٹنیں اچھوتی رہ جائیں یہ ذرا مشکل ہے. بھارت سرکار کے لئے اب یہ معاملہ تماشا گیر بن کر دیکھنے کا نہیں رہ گیا. اس میں پوری طرح راج نیتا گیری اور نیتی کو نبھاتے ہوئے ہاتھ ڈالنا ہی پڑیگا. ہمیں یہاں اتنا ہی کہنا ہے کہ بھارت کو انگریزوں کے ہاتھ میں رہ کر چاہے انچاہے ہر لڑائی میں شامل ہونا پڑتا تھا. خون بہانا پڑتا تھا' پیسہ لٹانا پڑتا تھا' اناج باہر بھیج کر اپنا پیٹ کاٹنا پڑتا تھا. کامن ویلتھ کا انگ بنے رہ کر بھی اس کو یہ سب چاہے انچاہے' سیدھے نا سیدھے' بھولے بھٹکے کرنا ہی پڑیگا. انگریز سے مل کر نیپال کے بارے میں کوئی فیصلہ کرنا بڑے خطرے کی چیز ہوگی. برطانیہ نے لڑائی کا ذرا رخ پھرتے سمجھکر سوڈان سے ہٹنے سے ایسے انکار کر دیا مانو سوڈان مصر کا کچھ بھی نہ ہو اور سات سمندر پار کی برطانیہ سوڈان کی سب کچھ ہو اور ایشور سے ہی سوڈان کا پٹا لکھا کر لائی ہو. اور جو کہیں انگریزوں کے ساتھ نیپال کے معاملے میں امریکہ کو بھی شامل کر لیا گیا تب تو بھارت پھر یہ سمجھ لے کہ اسے آئے دن خون بہانے کے لئے تیار رہنا پڑیگا' پیٹ کاٹنا پڑیگا اور مٹھی باندھکر جاڑا بتانا پڑیگا. کیا بھارت نے حال ہی میں نہیں دیکھ لیا کہ کوریا کی گھریلو لڑائی کو 'ایگریشن' کہنے کے بعد ہی اس سے یو. این. او. یعنی امریکہ نے چاہا کہ آپ فوج دیجئے. یہ دوسری بات ہے کہ اپنی دلیلوں اور اپنے طریقوں سے بھارت کے پردھان وزیر نے ہندستان کو بہت سی جھنجھٹوں سے بچا لیا. پر بھارت کے پردھان وزیر یہ یاد رکھیں کہ یہ اُن کی نری دلیلوں اور بدھی مانی کا نتیجہ نہیں تھا. اگر میک آرتھر کو سچ مچ امریکہ یا اور کہیں سے مدد نہ ملتی تو یو. این. او. بھارت کو مجبور کرتی اور بھارت سے فوجیں

का रूप न लिया और कोरिया तक रह कर ही खतम हो गई तो ठंडे पड़ते ही उस पर आए खर्च का झगड़ा खड़ा होगा और फिर देखें एग्रेशन बताने वाले मुल्क में से कौन कौन चन्दे से बच पाता है. ऐंग्लो अमरीकन गुट्ट बन गया है. बरतानिया के कमज़ोर होने के नाते इस गुट्ट को अमरीको ऐंगलीकन गुट्ट भी कहा जा सकता है. गुट्ट बुरे नहीं होते अगर अच्छी नियत से अच्छे काम के लिये बनें. यह गुट्ट न अच्छी नियत से बना है और न अच्छे काम के लिये. यह हम किस बूते पर कह रहे हैं. यह इस बूते पर कि यह कम्यूनिज़्म के बे बात के डर पर बना है और डरसे बने गुट्ट में अच्छी नियत नहीं रह सकती. अच्छी नियत न होने से अच्छा उद्देश नहीं रह सकता. इस गुट्ट से मिल कर नेपाल के मामले को तय करना और बुराइयों से चाहे खाली न भी हो पर गुटबन्दी की बदनामी की बुराई से तो हरगिज़ खाली नहीं रह सकता और इस तरह की बदनामी आसानी से बरदाश्त कर ले जाने की काबलियत अभी तीन बरस के भारत में नहीं हो पाई. नेपाल के सीधे सादे मामले को कोरिया की तरह क्यों पेचीदा किया जा रहा है. पेचीदा बनाने से तो नेपाल को नेपालियों की क़िस्मत पर छोड़ना ही भारत सरकार के लिये ज़्यादा ठीक होगा.

नेपाली अभी राजभक्त हैं. उन्हें ऐसा मालूम हो रहा है और उन्हें विश्वास भी है कि नेपाल का क़ानूनी राजा यानी त्रिभुवन वीर विक्रम सिंह उनके दुखों को दूर कर सकेंगे और जो नेपाल की हेटी हो रही है, उसको मिटाकर नेपाल और नेपालियों को ऊँचा उठा सकेंगे. जहाँ नेपाल का मामला पेचीदा हुआ और जहाँ उनके इस आधार को धक्का लगा वहाँ फौरन रंग बदल जायगा और फिर नेपाल की जनता कुछ का कुछ रूप ले लेगी.

२३. ११. ५०. —भगवानदीन

کا روپ نہ لیا اور کوریا تک رہ کر ہی ختم ہوگئی تو ٹھنڈے پڑتے ہی اُس پر آئے خرچ کا جھگڑا کھڑا ہوگا اور پھر دیکھیں اگریشن بتانے والے ملکوں میں سے کون کون چندے سے بچ پاتا ہے. اینگلو امریکن گٹ بن گیا ہے. برطانیہ کے کمزور ہونے کے ناتے اس گٹ کو امریکو اینگلیکن گٹ بھی کہا جا سکتا ہے. گٹ برے نہیں ہوتے اگر اچھی نیت سے اچھے کام کے لئے بنیں. یہ گٹ نہ اچھی نیت سے بنا ہے اور نہ اچھے کام کے لئے. یہ ہم کس بوتے پر کہہ رہے ہیں. یہ اس بوتے پر کہ یہ کمیونزم کے بے بات کے ڈر پر بنا ہے اور ڈر سے بنے گٹ میں اچھی نیت نہیں رہ سکتی. اچھی نیت نہ ہونے سے اچھا اُدّیش نہیں رہ سکتا. اس گٹ سے مل کر نیپال کے معاملے کو طے کرنا اور برائیوں سے چاہے خالی نہ بھی ہو پر گٹ بندی کی بدنامی کی برائی سے تو ہرگز خالی نہیں رہ سکتا اور اس طرح کی بدنامی آسانی سے برداشت کر لے جانے کی قابلیت ابھی تین برس کے بھارت میں نہیں ہو پائی. نیپال کے سیدھے سادے معاملے کو کوریا کی طرح کیوں پیچیدہ کیا جا رہا ہے, پیچیدہ بنانے سے تو نیپال کو نیپالیوں کی قسمت پر چھوڑنا ہی بھارت سرکار کے لئے زیادہ ٹھیک ہوگا.

نیپالی ابھی راج بھگت ہیں. اُنہیں ایسا معلوم ہو رہا ہے اور اُنہیں وشواس بھی ہے کہ نیپال کا قانونی راجہ یعنی تربھون ویر وکرم سنگھ اُن کے دکھوں کو دور کر سکینگے اور جو نیپال کی ہیٹی ہو رہی ہے اُس کو مٹا کر نیپال اور نیپالیوں کو اونچا اُٹھا سکینگے جہاں نیپال کا معاملہ پیچیدہ ہوا اور جہاں اُن کے اس آدھار کو دھکا لگا وہاں فوراً رنگ بدل جائیگا اور پھر نیپال کی جنتا کچھ کا کچھ روپ لے لیگی.

۲۳-۱۱-۵۰ -- بھگوان دین

था. वह उन्हीं के हाथों होता था. हिन्दुस्तान पर सीधी हुकूमत ईस्ट इन्डिया कम्पनी की थी और नाम की बादशाहत बहादुर शाह के हाथ में थी. ईस्ट इन्डिया कम्पनी इतना राज नहीं करती थी जितनी वह यहाँ की तिजारत को मटिया मेट करने में जुटी रहती थी और यह बात न यहाँ के बादशाह से छिपी हुई थी, न और छोटे राजाओं से और न ब्योपार में लगी प्रजा से. पर ईस्टइन्डिया कम्पनी हुकूमत के दफ़्तरों पर कुछ इस तरह छा गई थी कि बादशाह हिन्दुस्तान को ईस्ट इन्डिया कम्पनी के चंगुल से निकालना चाहने पर भी न निकाल पा सकता था और बादशाह होते हुए भी क़िले के जेलख़ाने में बन्द था और पिंजड़े के शेर की तरह ईस्ट इन्डिया कम्पनी पर फुन फुनाकर और तड़प कर चुप बैठ जाता था.

बादशाह की तड़प हिन्दुस्तानी सिपाहियों से छिपी न रह सकी. और बहुत जल्दी ही सारे सिपाहियों में एक रोटी घूम गई और कुछ ही दिनों में हिन्दू मुसलमान का भेद ही नहीं मिट गया बल्कि उनमें एक दांतकाटी क़ायम हो गई और जल्दी ही सब बादशाह के हरे झण्डे के नीचे जमा हो गये और ईस्ट इण्डिया कम्पनी को जिसके वह नौकर थे देश से निकाल बाहर करने पर तुल खड़े हुए. किसी वजह से उनकी मनचाही तो न हो सकी पर सारे देश में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के ख़िलाफ़ बड़ी गहरी नफ़रत फैल गई. जिसको किसी तरह मिटती न देखकर लन्दन के राजनीति के पंडितों ने यही ठीक समझा कि ईस्ट-इण्डिया कम्पनी का राज ख़तम किया जाय और उसी के झोंके में बादशाही राज को भी उड़ाकर रानी विक्टोरिया के राज की स्थापना हिन्दुस्तान में की जाय और उनकी यह

تھا. وہ انھیں کے ہاتھوں ہوتا تھا. ہندستان پر سیدھی حکومت ایسٹ انڈیا کمپنی کی تھی اور نام کی بادشاہت بہادر شاہ کے ہاتھ میں تھی. ایسٹ انڈیا کمپنی اتنا راج نہیں کرتی تھی جتنی وہ یہاں کی تجارت کو مٹیا میٹ کرنے میں جُٹی رہتی تھی اور یہ بات نہ یہاں کے بادشاہ سے چھپی ہوئی تھی، نہ اور چھوٹے راجاؤں سے اور نہ بیوپار میں لگی پرجا سے. پر ایسٹ انڈیا کمپنی حکومت کے دفتروں پر کچھ اس طرح چھا گئی تھی کہ بادشاہ ہندستان کو ایسٹ انڈیا کمپنی کے چنگل سے نکالنا چاہنے پر بھی نہ نکال پا سکتا تھا اور بادشاہ ہوتے ہوئے بھی قلعے کے جیل خانے میں بند تھا اور پنجرے کے شیر کی طرح ایسٹ انڈیا کمپنی پر پھُن پھُناکر اور تڑپ کر چُپ بیٹھ جاتا تھا.

بادشاہ کی تڑپ ہندستانی سپاہیوں سے چھپی نہ رہ سکی. اور بہت جلد ہی سارے سپاہیوں میں ایک روٹی گھوم گئی اور کچھ ہی دنوں میں ہندو مسلمان کا بھید ہی نہیں مٹ گیا بلکہ اُن میں ایک دانتا کاٹی قائم ہو گئی اور جلد ہی سب بادشاہ کے ہرے جھنڈے کے نیچے جمع ہو گئے اور ایسٹ انڈیا کمپنی کو جسکے وہ نوکر تھے دیش سے نکال باہر کرنے پر تُل کھڑے ہوئے. کسی وجہ سے اُنکی من چاہی تو نہ ہو سکی پر سارے دیش میں ایسٹ انڈیا کمپنی کے خلاف بڑی گہری نفرت پھیل گئی. جس کو کسی طرح مٹتی نہ دیکھ کر لندن کے راج نیتی کے پنڈتوں نے یہی ٹھیک سمجھا کہ ایسٹ انڈیا کمپنی کا راج ختم کیا جائے اور اسی کے جھونکے میں بادشاہی راج کو بھی اڑا کر رانی وکٹوریہ کے راج کی استھاپنا ہندستان میں کی جائے اور اُن کی یہ

कोरिया की लड़ाई—

जनरल मैकआर्थर ने कोरिया की लड़ाई जब शुरू की थी तो उनका अन्दाज़ा था कि उत्तरी कोरिया के आदमी रसगुल्ले हैं, फिर पता चला कि वह खिले चने हैं, कुछ दिनों बाद पता चला कि वह बहुत कड़ी ठुड्डी हैं और अब तो वह लोहे के चने मालूम होते हैं.

जनरल मैकआर्थर के यह अन्दाज़े समय समय पर हुए. इस वजह से अपने देस के प्रेसीडेन्ट ट्रोमैन को समय समय पर नए नए तख़मीने देने पड़े. इसका असर ट्रोमैन पर क्या पड़ा होगा कौन जाने? अगर हमारे साथ यह मामला हुआ होता तो हमारा विश्वास तो जनरल मैकआर्थर के तख़मीनों पर से उठ गया होता.

यह ठीक है कि आज जनरल मैकआर्थर ने उत्तरी कोरिया के साढ़े तीन लाख या पौने चार लाख आदमियों को घेर रक्खा है और बेकार बना रक्खा है, पर इससे क्या? वह यों ही तो बेकार नहीं बने हुए. उनको बेकार बनाने में ढाई लाख अमरीकन, एक लाख दक्खिनी कोरिया वाले, पचीस हज़ार अंगरेज़ी फ़ौजें और छोटी मोटी तादाद में और और मुल्क के आदमी भी लगे हुए हैं. इसके अलावा पानी के जहाज़, हवाई जहाज़, तरह तरह की मशीनरी और और तरह का सामान यह सब अलग. करोड़ों डालर का खर्च तो साथ लगा ही है और सबसे बुरी बात यह कि ३८ पड़ी रेखा पार करने के बाद मंचूरिया की हद तक पहुँचने पर भी न दुशमन ने हथियार डाले, न उसके लड़ने की हिम्मत में कोई कमी आई. यह हुआ तो हुआ. उधर चीन से कुछ फ़ौजें कोरिया की तरफ़ चल दीं. वह किसने भेजीं, क्यों भेजीं, कैसे भेजीं यह सब अभी ऐसी बातें हैं कि इन पर एक से ज़्यादा राय हैं. पर इतनी बात पक्की है कि चीनी फ़ौजें कोरिया की हद पर पहुँच गई हैं और और कुछ नहीं तो उन्होंने कोरिया

کوریا کی لڑائی —

جنرل میک آرتھر نے کوریا کی لڑائی جب شروع کی تھی تو اُن اندازہ تھا کہ اُتری کوریا کے آدمی رس گلے ہیں' پھر پتہ چلا کہ وہ کھلے چنے ہیں' کچھ دنوں کے بعد پتہ چلا کہ وہ بہت کڑی ٹھڈی ہیں اور اب تو وہ لوہے کے چنے معلوم ہوتے ہیں .

جنرل میک آرتھر کے یہ اندازے سمے سمے پر ہوئے . اس وجہ سے اپنے دیس کے پریسیڈنٹ ٹرومین کو سمے سمے پر نئے نئے تخمینے دینے پڑے . اُسکا اثر ٹرومین پر کیا پڑا ہوگا کون جانے ؟ اگر ہمارے ساتھ یہ معاملہ ہوا ہوتا تو ہمارا وشواس تو جنرل میک آرتھر کے تخمینوں پر سے اُٹھ گیا ہوتا .

یہ ٹھیک ہے کہ آج جنرل میک آرتھر نے اُتری کوریا کے ساڑھے تین لاکھ یا پونے چار لاکھ آدمیوں کو گھیر رکھا ہے اور بیکار بنا رکھا ہے' پر اس سے کیا ؟ وہ یوں ہی تو بیکار نہیں بنے ہوئے . ان کو بیکار بنانے میں ڈھائی لاکھ امریکن' ایک لاکھ دکھنی کوریا والے' پچیس ہزار انگریزی فوجیں اور چھوٹی موٹی تعداد میں اور اور ملک کے آدمی بھی لگے ہوئے ہیں . اس کے علاوہ پانی کے جہاز' ہوائی جہاز' طرح طرح کی مشینری اور اور طرح کا سامان یہ سب الگ . کروڑوں ڈالر کا خرچ تو ساتھ لگا ہی ہے اور سب سے بری بات یہ کہ ۳۸ پڑی ریکھا پار کرنے کے بعد منچوریا کی حد تک پہونچنے پر بھی نہ دشمن نے ہتھیار ڈالے' نہ اُس کے لڑنے کی ہمت میں کوئی کمی آئی . یہ ہوا تو ہوا . اُدھر چین سے کچھ فوجیں کوریا کی طرف چل دیں . وہ کس نے بھیجیں' کیوں بھیجیں' کیسے بھیجیں یہ سب ابھی ایسی باتیں ہیں کہ ان پر ایک سے زیادہ رائے ہیں . پر اتنی بات پکی ہے کہ چینی فوجیں کوریا کی حد پر پہونچ گئی ہیں اور اور کچھ نہیں تو اُنہوں نے کوریا والوں

ढंग का हो गया है कि न तीसरी लड़ाई खड़ी होती है, न यह लड़ाई खत्म होती है.

यू. एन. ओ. में चीन की तरफ से चांग काई शेक की सरकार के आदमी को बिठाए रख कर और माओ की सरकार के आदमी को जगह न देकर अमरीका ने जो धींगा धींगी की और चालबाज़ी से भरी चाल चली थी वह अब उलटी उसी के सिर पर पड़ रही है. माओ की सरकार यू. एन. ओ. में शामिल नहीं. इसलिये यू. एन. ओ. के हुकुम माओ की सरकार पर लागू नहीं हो सकते. अब क्या किया जाय. और अगर माओ की सरकार को यू. एन. ओ में शामिल किया गया तो चांग काई शेक की सरकार के आदमी को बाहर करना होगा. और ऐसा करने से छोटी मोटी कम्यूनिज़्म की जीत हो जायगी और यह अमरीका के लिये कड़वा घूंट होगा.

उधर लड़ाई के मैदान का यह हाल है कि जैसे जैसे सरदी बढ़ती जाती है वैसे वैसे अमरीकी फ़ौजों को और अंगरेज़ी फ़ौजों को नैपोलियन और हिटलर याद आने लगते हैं, जिनको मास्को की दीवार से सर टकराकर लौटना पड़ा. दिसम्बर के बाद देखें कितने अमरीकन और अंगरेज़ कोरिया में टिक पाते हैं. कोरिया के सीधे सादे सवाल को इतना पेचीदा और खर्चीला बना कर यू एन. ओ. ने क्या काम किया है उसे यू. एन. ओ. ही समझ सकती है.

सुनते हैं सुरक्षा कौंसिल के सामने एक तजवीज़ है और वह यह कि मचूरिया और दक्खिनी कोरिया के बीच में एक टक्कर राज क़ायम कर दिया जाय जो उत्तरी कोरिया वालों के हाथ में रहे. पर इस बात से अमरीका पूरी तरह सहमत नहीं है इस तरह के टक्कर राज से तो उसे भी इनकार नहीं है. पर वह चाहता है कि उस टक्कर राज में यू एन. ओ. की देख भाल रहे. आगे कुछ तजवीज़ें और भी हैं पर उन तजवीज़ों को जानने से पहले यह समझ लेना चाहिये कि यह टक्कर राज की बात क्यों आई और चीन के दिल में क्या

ڈھنگ کا ہو گیا ہے کہ نہ تیسری لڑائی کھڑی ہوتی ہے' نہ یہ لڑائی ختم ہوتی ہے ۔

یو ۔ این ۔ او ۔ میں چین کی طرف سے چانگ کائی شیک کی سرکار کے آدمی کو بٹھائے رکھ کر اور ماؤ کی سرکار کے آدمی کو جگہ نہ دے کر امریکہ نے جو دھینگا دھینگی کی اور چال بازی سے بھری چال چلی تھی وہ اب اُلٹی اُسی کے سر پر پڑ رہی ہے ۔ ماؤ کی سرکار یو ۔ این ۔ او ۔ میں شامل نہیں ۔ اس لئے یو ۔ این ۔ او ۔ کے حکم ماؤ کی سرکار پر لاگو نہیں ہو سکتے ۔ اب کیا کیا جائے ۔ اور اگر ماؤ کی سرکار کو یو ۔ این ۔ او ۔ میں شامل کیا گیا تو چانگ کائی شیک کی سرکار کے آدمی کو باہر کرنا ہوگا اور ایسا کرنے سے چھوٹی موٹی کمیونزم کی جیت ہو جائیگی اور یہ امریکہ کے لئے کڑوا گھونٹ ہوگا ۔

اُدھر لڑائی کے میدان کا یہ حال ہے کہ جیسے جیسے سردی بڑھتی جاتی ہے ویسے ویسے امریکی فوجوں کو اور انگریزی فوجوں کو نپولین اور ہٹلر یاد آنے لگتے ہیں' جنکو ماسکو کی دیوار سے سر ٹکرا کر لوٹنا پڑا ۔ دسمبر کے بعد دیکھیں کتنے امریکن اور انگریز کوریا میں ٹک پاتے ہیں ۔ کوریا کے سیدھے سادے سوال کو اتنا پیچیدہ اور خرچیلا بنا کر یو ۔ این ۔ او ۔ نے کیا کام کیا ہے اُسے یو ۔ این ۔ او ۔ ہی سمجھ سکتی ہے ۔

سنتے ہیں سرکشا کونسل کے سامنے ایک تجویز ہے اور وہ یہ کہ منچوریا اور دکھنی کوریا کے بیچ میں ایک ٹکر راج قائم کر دیا جائے جو اُتری کوریا والوں کے ہاتھ میں رہے ۔ پر اِس بات سے امریکہ پوری طرح سہمت نہیں ہے ۔ اس طرح کے ٹکر راج سے تو اُسے بھی انکار نہیں ہے ۔ پر وہ چاہتا ہے کہ اُس ٹکر راج میں یو ۔ این ۔ او ۔ کی دیکھ بھال رہے ۔ آگے کچھ تجویزیں اور بھی ہیں پر اُن تجویزوں کو جاننے سے پہلے یہ سمجھ لینا چاہئے کہ یہ ٹکر راج کی بات کیوں آئی اور چین کے دل میں کیا

क्या अंदेशा है. चीन का यह कहना है कि उसका तजरबा यह कहने के लिए मजबूर करता है कि अमरीका चीन पर ही नहीं सारे एशिया पर छा जाना चाहता है. और अब अमरीका वही कर रहा है जो कभी जापान ने किया था. यानी जापान ने पहले फ़ारमूसा लिया, फिर कोरिया को हड़प किया, फिर मंचूरिया और चीन को हड़प करने को ही था कि ख़तम हो गया. यही तो आज अमरीका कर रहा है. इधर फ़ारमूसा पर दाँत है, उधर कोरिया पर, मंचूरिया तक पहुँचने की बात कही ही जा चुकी है. किसी दिन भी फ़ारमूसा के रास्ते चीन में फिर लड़ाई छिड़ सकती है. और चीन की कमज़ोरी के बाद एशिया के और हिस्सों पर भी आसानी से छाया जा सकता है. चीन के इन अंदेशों को दूर करने के लिए और किसी ने नहीं ट्रूमैन साहब ने ख़ुद यह विश्वास दिलाया है कि अमरीका ऐसा नहीं करना चाहता. इसके जवाब में चीन यह चाहता है कि अगर यह बात है तो चीन की यह तजवीज़ें मान ली जायँ—

(१) फ़ारमूसा से अमरीका अपना जहाज़ी अड्डा हटा ले.

(२) चांग काई शेक की सरकार यानी कोमिंगटांग का मानना छोड़ दे.

(३) अमरीका चांग काई शेक की किसी तरह की मदद न करे.

यहाँ जानने की बात यह है कि कोरिया की लड़ाई में यह चीन कहाँ से आ गया और यह फ़ारमूसा कैसा?

इस चीन और फ़ारमूसा के सवाल से यू. एन. ओ. में काम करने वाले राजनेताओं को यह सबक़ लेना चाहिए कि कभी भी कोई विदेसी हमला, फिर चाहे वह एक मुल्क का हो, एक से ज़्यादा मुल्कों का हो, या यू. एन. ओ. का हो, एक मुल्क तक नहीं रह सकता. हमला लड़ाई की शकल लेते ही आग का गुन अपना लेता है. वह कोई हद बाँध ही नहीं सकता और इसलिए हर मुल्क, फिर

کیا اندیشہ ہے. چین کا یہ کہنا ہے کہ اُس کا تجربہ یہ کہنے کے لئے مجبور کرتا ہے کہ امریکہ چین پر ہی نہیں سارے ایشیا پر چھا جانا چاہتا ہے اور اب امریکہ وہی کر رہا ہے جو کبھی جاپان نے کیا تھا یعنی جاپان نے پہلے فارموسا لیا، پھر کوریا کو ہڑپ کیا، پھر منچوریا اور چین کو ہڑپ کرنے کو ہی تھا کہ ختم ہو گیا۔ یہی تو آج امریکہ کر رہا ہے۔ ادھر فارموسا پر دانت ہے اُدھر کوریا پر، منچوریا تک پہنچنے کی بات کہی ہی جا چکی ہے۔ کسی دن بھی فارموسا کے راستے چین میں پھر لڑائی چھڑ سکتی ہے اور چین کی کمزوری کے بعد ایشیا کے اور حصوں پر بھی آسانی سے چھایا جا سکتا ہے۔ چین کے ان اندیشوں کو دور کرنے کے لئے اور کسی نے نہیں ٹرومین صاحب نے خود یہ وشواس دلایا ہے کہ امریکہ ایسا نہیں کرنا چاہتا۔ اس کے جواب میں چین یہ چاہتا ہے کہ اگر یہ بات ہے تو چین کی یہ تجویزیں مان لی جائیں —

(۱) فارموسا سے امریکہ اپنا جہازی اڈا ہٹا لے۔

(۲) چانگ کائی شیک کی سرکار یعنی کومنٹانگ کو ماننا چھوڑ دے۔

(۳) امریکہ چانگ کائی شیک کی کسی طرح کی مدد نہ کرے۔

یہاں جاننے کی بات یہ ہے کہ کوریا کی لڑائی میں یہ چین کہاں سے آ گیا اور یہ فارموسا کیسا؟

اس چین اور فارموسا کے سوال سے یو. این. او. میں کام کرنے والے راج نیتاؤں کو یہ سبق لینا چاہئے کہ کبھی بھی کوئی بدیسی حملہ پھر چاہے وہ ایک ملک کا ہو، ایک سے زیادہ ملکوں کا ہو، یا یو. این. او. کا ہو ایک ملک تک نہیں رہ سکتا۔ حملہ لڑائی کی شکل لیتے ہی آگ کا گن اپنا لیتا ہے وہ کوئی حد باندھ ہی نہیں سکتا اور اس لئے ہر ملک پھر وہ کتنا

पर अपनी फौजें पड़ोसी मुल्क की हद पर मौक़े के लिये तैयार रखता ही है. पड़ोस में आग लगने पर कौन नहीं अपने घर की छत पर पानी का घड़ा लेकर तैयार रहता. इसलिये जिन मुल्कों ने यू. एन. ओ. को दक्खिनी कोरिया में फौजें भेजने की सलाह दी थी उन्होंने अगर यह सोच रक्खा था कि फौजें ३८ पड़ी रेखा के पार नहीं जायेंगी तो बड़ी भारी भूल की थी. लड़ाई आग की तरह हद को नहीं मानती. और फिर जिन मुल्कों ने ३८ पार करने के बाद यह सलाह दे रक्खी है कि उत्तरी कोरिया की हद से लड़ाई बाहर न जाने पाए उन्होंने यह दूसरी भूल की है लड़ाई अपने आप मंचूरिया में जा दाख़िल होगी और फिर न मालूम किधर को चल दे. क्या यू. एन. ओ. में शामिल मुल्क अपनी आंखों से नहीं देख रहे कि ३८ पड़ी रेखा पार करने से पहले चीन और रूस की हद पर

(५८६)

जाने अनजाने एक से ज़्यादा बार बम गिर चुके हैं और लड़ाई छेड़ देने के लिये यह बहुत काफ़ी था. अगर लड़ाई नहीं छिड़ी तो इसमें यू. एन. ओ. की बुद्धिमानी नहीं है, चीन और रूस की दूरंदेशी है.

यू. एन. ओ. कोरिया की लड़ाई के जाल से निकल कर अगर बस्तियों और आबादियों के जाल को ख़तम करने में लग जाय तभी वह दुनिया में अमन रख सकती है नहीं तो वह निरी लड़ाई की चीज़ बनी रहेगी.

कोरिया की लड़ाई से अगर यू. एन. ओ. ने यह सबक़ लिया तो कोरिया की लड़ाई दुनिया के लिये टोटे की चीज़ नहीं रहेगी. और फिर दुनिया इतनी पत्थर दिल साबित नहीं होगी की कोरिया का जो नुक़सान हुआ है उसे किसी न किसी शकल में पूरा न कर दे, फिर उसमें दोश चाहे किसी का भी क्यों न हो.

پر اپنی فوجیں پڑوسی ملک کی حد پر موقع کیلئے تیار رکھتا ہی ہے. پڑوس میں آگ لگنے پر کون نہیں اپنے گھر کی چھت پر پانی کا گھڑا لے کر تیار رہتا . اس لئے جن ملکوں نے یو . این او . کو دکھنی کوریا میں فوجیں بھیجنے کی صلاح دی تھی اُنھوں نے اگر یہ سوچ رکھا تھا کہ فوجیں ۳۸ پڑی ریکھا کے پار نہیں جائینگی تو بڑی بھاری بھول کی تھی . لڑائی آگ کی طرح حد کو نہیں مانتی . اور پھر جن ملکوں نے ۳۸ پار کرنے کے بعد یہ صلاح دے رکھی ہے کہ اُتری کوریا کی حد سے لڑائی باہر نہ جانے پائے اُنھوں نے یہ دوسری بھول کی ہے . لڑائی اپنے آپ منچوریا میں جا داخل ہوگی اور پھر نہ معلوم کدھر کو چل دے . کیا یو . این . او . میں شامل ملک اپنی آنکھوں سے نہیں دیکھ رہے کہ ۳۸ پڑی ریکھا پار کرنے سے پہلے چین اور روس

(۵۸۶)

کی حد پر جانے انجانے ایک سے زیادہ بار بم گر چکے ہیں اور لڑائی چھیڑ دینے کے لئے یہ بہت کافی تھا . اگر لڑائی نہیں چھڑی تو اس میں یو . این . او . کی بدھی مانی نہیں ہے' چین اور روس کی دوراندیشی ہے .

یو . این . او . کوریا کی لڑائی کے جال سے نکل کر اگر بستیوں اور آبادیوں کے جال کو ختم کرنے میں لگ جائے تبھی وہ دنیا میں امن رکھ سکتی ہے نہیں تو وہ نری لڑائی کی چیز بنی رہے گی .

کوریا کی لڑائی سے اگر یو . این او . نے یہ سبق لیا تو کوریا کی لڑائی دنیا کے لئے ٹوٹے کی چیز نہیں رہیگی . اور پھر دنیا اتنی پتھر دل ثابت نہیں ہوگی کہ کوریا کا جو نقصان ہوا ہے اُسے کسی نہ کسی شکل میں پورا نہ کر دے' پھر اُس میں دوش چاہے کسی کا بھی کیوں نہ ہو .

सत्याग्रह की गूंज—

बाबा राघवदास तीन दिसम्बर से शाहजहाँपुर जिले में सत्याग्रह करने वाले हैं. बाबा जी ने अपनी समझ में इस तरह की सब तैयारियाँ कर ली हैं जो एक सत्याग्रही के लिये जरूरी हैं. इतना ही नहीं है, यह भी सुनने में आया है कि वह नाम के लिये तो अकेला उनका ही सत्याग्रह है पर असल में उनकी पीठ के पीछे एक समाज है जिसके मुखिया की हैसियत से वह सत्याग्रह शुरू कर रहे हैं.

यह बात किसी हद तक ठीक है कि अन्याय कितना ही छोटा क्यों न हो उसका तुरत ही मुक़ाबला करना चाहिये और यह काम गरम खून वाले जवान जल्दी कर बैठते हैं. उन्हें सोचने समझने की जरूरत नहीं होती. ऐसे जवानों के बिना भी दुनिया का काम नहीं चल सकता. लेकिन अगर कहीं ठंडा खून जोश में आ जाय तब तो यही समझना चाहिये कि अन्याय अपनी उस सीमा से बढ़ गया है जहाँ समझदारी उसे सहन नहीं कर सकती. बाबा राघवदास परखे हुए आदमी हैं, समझदार हैं और काफ़ी बूढ़े हैं. जब उनके सत्याग्रह करने की बात कान में पड़ी तब यही कहना पड़ता है कि कोई बात उस हद को पहुँच गई है जहाँ पहुँच कर उसने अनगिनत आदमियों को दुख देना शुरू कर दिया है और सचमुच बाबा राघवदास का सत्याग्रह गुड़ और खाँची की शक्कर के लिये इतना नहीं है जितना ग्रामोद्योग के लिये. गाँव के सारे उद्योग धीरे धीरे खतम होते जा रहे हैं और अगर उन्हें मुनासिब वक़्त में खतम होने से न रोका गया तो हिन्दुस्तान की हालत इतनी बुरी हो जायगी जिसका अन्दाजा नहीं किया जा सकता.

आशा है बाबा को अपने काम में जल्दी ही सफलता मिलेगी.

२८-११-५० —भगवानदास

ستیاگرہ کی گونج —

بابا راگھو داس تین دسمبر سے شاہجہانپور ضلع میں ستیاگرہ کرنے والے هیں. باباجی نے اپنی سمجھ میں اس طرح کی سب تیاریاں کر لی هیں جو ایک ستیاگرهی کے لئے ضروری هیں. اتنا هی نہیں هے' یہ بھی سننے میں آیا هے کہ وہ نام کے لئے تو اکیلا انکا هی ستیاگرہ هے پر اصل میں انکی پیٹھ کے پیچھے ایک سماج هے جس کے مکھیا کی حیثیت سے وہ ستیاگرہ شروع کر رهے هیں.

یہ بات کسی حد تک ٹھیک هے کہ انیائے کتنا هی چھوٹا کیوں نہ هو اس کا ترت هی مقابلہ کرنا چاهئے اور یہ کام گرم خون والے جوان جلدی کر بیٹھتے هیں. انہیں سوچنے سمجھنے کی ضرورت نہیں هوتی. ایسے جوانوں کے بنا بھی دنیا کا کام نہیں چل سکتا. لیکن اگر کہیں ٹھنڈا خون جوش میں آجائے تب تو یہی سمجھنا چاهئے کہ انیائے اپنی اس سیما سے بڑھ گیا هے جہاں سمجھداری اسے سہن نہیں کر سکتی. بابا راگھو داس پرکھے هوئے آدمی هیں' سمجھدار هیں اور کافی بوڑھے هیں. جب انکے ستیاگرہ کرنے کی بات کان میں پڑی تب یہی کہنا پڑتا هے کہ کوئی بات اس حد کو پہنچ گئی هے جہاں پہنچ کر اس نے انگنت آدمیوں کو دکھ دینا شروع کر دیا هے اور سچ مچ بابا راگھو داس کا ستیاگرہ گڑ اور کھانچی کی شکر کے لئے اتنا نہیں هے جتنا گرامودیوگ کے لئے. گاؤں کے سارے ادیوگ دھیرے دھیرے ختم هوتے جا رهے هیں اور اگر انہیں مناسب وقت میں ختم هونے سے نہ روکا گیا تو هندستان کی حالت اتنی بری هو جائیگی جسکا اندازہ نہیں کیا جا سکتا.

آشا هے بابا کو اپنے کام میں جلدی هی سپھلتا ملے گی.

۲۹-۱۱-۵۰ — بھگوان دین

नीचे लिखी सब किताबें नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में अलग अलग मिल सकती हैं .

पाँच से ज्यादह किताबें खरीदने वाले और बुकसेलरों को ३३ फीसदी कमीशन दिया जायगा.

डाक या रेल खर्च हर हालत में गाहक के जिम्मे होगा .

महात्मा गांधी की वसीयत

लेखक--श्री मंज़र अली सोख्ता

२९ जनवरी सन् १९४८ को महात्मा गांधी ने आल इंडिया कांगरेस कमेटी के सामने एक सुझाव के रूप में 'लोक सेवक संघ' का एक नया विधान तैयार किया था. इस विधान में उन्होंने सलाह दी थी कि कांगरेस का सारा संगठन तोड़ दिया जावे और कांगरेस वाले हकूमत से बाहर निकल कर एक 'लोक सेवक संघ' बनाकर काम करें.

३० जनवरी को अपने देहान्त से कुछ घन्टे पहले महात्मा जी ने कांगरेस के जनरल सेक्रेटरी को बुला कर वह विधान दिया कि वह गांधी जी की तरफ से उसे आल इंडिया कांगरेस कमेटी में पेश कर दें. यह छोटा सा विधान देश के नाम गांधी जी की आखिरी वसीयत है और इसकी व्याख्या गांधी जी के परम भक्त श्री मंज़र अली सोख्ता ने की है जो गांधी वाद को समझने और अपनाने वाले देश के इने गिने लोगों में से एक हैं.

गांधी वाद को समझने के लिये इनका पढ़ना बहुत जरूरी है. २२५ सफ़े की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ दो रुपये.

मिलने का पता--मैनेजर, 'नया हिन्द' १४५,मुट्ठी गंज, इलाहाबाद

نیچے لکھی سب کتابیں ناگری اور اردو دونوں لکھاوٹوں میں الگ الگ مل سکتی ہیں .

پانچ سے زیادہ کتابیں خریدنے والوں اور بکسیلروں کو ۳۳ فیصدی کمیشن دیا جائے گا .

ڈاک یا ریل خرچ ہر حالت میں گاہک کے ذمے ہوگا .

مہاتما گاندھی کی وصیت

لیکھک—شری منظر علی سوختہ

۲۹ جنوری سن ۱۹۴۸ کو مہاتما گاندھی نے آل انڈیا کانگریس کمیٹی کے سامنے ایک سجھاؤ کے روپ میں 'لوک سیوک سنگھ' کا ایک نیا ودھان تیار کیا تھا اس ودھان میں انہوں نے صلاح دی تھی کہ کانگریس کا سارا سنگٹھن توڑ دیا جاوے اور کانگریس والے حکومت سے باہر نکل کر ایک 'لوک سیوک سنگھ' بنا کر کام کریں .

۳۰ جنوری کو اپنے دیہانت سے کچھ گھنٹے پہلے مہاتما جی نے کانگریس کے جنرل سکریٹری کو بلا کر وہ ودھان دیا کہ وہ گاندھی جی کی طرف سے اسے آل انڈیا کانگریس کمیٹی میں پیش کردیں. یہ چھوٹا سا ودھان دیش کے نام گاندھی جی کی آخری وصیت ہے اور اسکی ویاکھیا گاندھی جی کے پرم بھکت شری منظر علی سوختہ نے کی ہے جو گاندھی واد کو سمجھنے اور اپنانے والے دیش کے اِنے گِنے لوگوں میں سے ایک ہیں

گاندھی واد کو سمجھنے کے لئے اِسکا پڑھنا بہت ضروری ہے . ۲۲۵ صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف دو روپئے.

ملنے کا پتہ—

गाता आर क़ुरान

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

इस किताब के शुरू में दुनिया के सब बड़े बड़े धर्मों की एकता को दिखाया गया है और सब धर्मों की किताबों से हवाले दे दे कर मिलती जुलती बुनियादी सचाइयों को बयान किया गया है.

उसके बाद गीता के लिखे जाने के वक़्त की इस देश की हालत, गीता के बड़प्पन और एक एक अध्याय को लेकर गीता की तालीम को बतलाया गया है.

आख़िर में क़ुरान से पहले की अरब की हालत, क़ुरान के बड़प्पन और एक एक बात पर क़ुरान की तालीम को बयान किया गया है. इस में क़ुरान की पांच सौ से ऊपर आयतों का लफ़्ज़ी तरजुमा दिया गया है. यह भी बताया गया है कि क़ुरान में जेहाद, आक़बत, आख़रत, जन्नत, जहन्नम, काफ़िर वग़ैरा किसे कहा गया है.

जो लोग सब धर्मों की एकता को समझना चाहें या हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों की इन दो अमर पुस्तकों की सच्ची जानकारी हासिल करना चाहें उन्हें इस किताब को ज़रूर पढ़ना चाहिये.

पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपये.

मिलने का पता—मैनेजर "नया हिन्द" १४५, मुट्ठी गंज, इलाहाबाद.

گیتا اور قرآن

لیکھک—پنڈت سندر لال

اس کتاب کے شروع میں دنیا کے سب بڑے بڑے دھرموں کی ایکتا کو دکھایا گیا ہے اور سب دھرموں کی کتابوں سے حوالے دے دے کر ملتی جلتی بنیادی سچائیوں کو بیان کیا گیا ہے .

اسکے بعد گیتا کے لکھے جانے کے وقت کی اِس دیش کی حالت' گیتا کے بڑپن اور ایک ایک ادھیائے کو لیکر گیتا کی تعلیم کو بتلایا گیا ہے .

آخر میں قرآن سے پہلے کی عرب کی حالت' قرآن کے بڑپن اور ایک ایک بات پہ قرآن کی تعلیم کو بیان کیا گیا ہے . اسمیں قرآن کی پانچ سو سے اوپر آیتوں کا لفظی ترجمہ دیا-گیا ہے. یہ بھی بتلایا گیا ہے کہ قرآن میں جہاد' عاقبت' آخرت' جنت' جہنم' کافر وغیرہ کسے کہا گیا ہے .

جو لوگ سب دھرموں کی ایکتا کو سمجھنا چاہیں یا ہندو دھرم اور اسلام دونوں کی ان دو امر پستکوں کی سچی جانکاری حاصل کرنا چاہیں اُنھیں اس کتاب کو ضرور پڑھنا چاہئے .

پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ .

ملنے کا پتہ—منیجر 'نیا ہند' ۱۴۵' مٹھی گنج' الہ آباد .

हिन्दू मुस्लिम एकता — इस में वह चार लेक्चर जमा कर दिये गये हैं जो पंडित जी ने कन्सीलियेटरी बोर्ड ग्वालियर की दावत पर ग्वालियर में दिये थे.

सौ सफ़े की किताब. क़ीमत सिर्फ़ बारह आने.

महात्मा गांधी के बलिदान से सबक़ — साम्प्रदायिकता यानी फ़िरक़ापरस्ती की बीमारी पर राजकाजी, मज़हबी और इतिहासी पहलू से विचार और उसका इलाज, जिसने आख़िर में देश पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच में न रहने दिया.

क़ीमत बारह आने.

पंजाब हमें क्या सिखाता है — महात्मा गांधी की सलाह से अक्तूबर सन् १९४७ में पच्छिमी और पूरबी पंजाब के दौरे के बाद वहाँ की भयंकर बरबादी और आपसी मार काट के कारन लोगों पर जो जो मुसीबतें आईं उन का दर्दनाक वर्नन. इस छोटी सी किताब में आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिये कुछ सुझाव भी पेश किये गये हैं. क़ीमत चार आने.

बंगाल और उससे सबक़ — इस छोटी सी किताब में सन १९४९-५० में पूरबी और पच्छिमी बंगाल के फ़िरक़ेवाराना झगड़ों पर रोशनी डाली गई है और ऐसे झगड़ों को हमेशा के लिये ख़त्म करने की तरकीब भी सुझाई गई है. क़ीमत सिर्फ़ दो आने.

मिलने का पता — मैनेजर 'नया हिन्द' १४५, मुट्ठी गंज, इलाहाबाद.

هندو مسلم ایکتا — اس میں وہ چار لکچر جمع کر دیئے گئے ہیں جو پنڈت جی نے کنسیلیٹری بورڈ گوالیار کی دعوت پر گوالیار میں دئے تھے۔

سو صفحے کی کتاب۔ قیمت صرف بارہ آنے۔

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق — سامپردایکتا یعنی فرقہ پرستی کی بیماری پر راج کاجی، مذہبی اور اتہاسی پہلو سے وچار اور اسکا علاج، جس نے آخر میں دیش پتا مہاتما گاندھی تک کو ہمارے بیچ میں نہ رہنے دیا۔

قیمت بارہ آنے۔

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے — مہاتما گاندھی کی صلاح سے اکتوبر ۱۹۴۷ میں پچھمی اور پوربی پنجاب کے دورے کے بعد وہاں کی بھینکر بربادی اور آپسی مار کاٹ کے کارن لوگوں پر جو جو مصیبتیں آئیں اُن کا دردناک ورنن۔ اس چھوٹی سی کتاب میں آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کے لئے کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے گئے ہیں۔ قیمت چار آنے۔

بنگال اور اُس سے سبق — اس چھوٹی سی کتاب میں ۵۰-۱۹۴۹ میں پوربی اور پچھمی بنگال کے فرقہ وارانہ جھگڑوں پر روشنی ڈالی گئی ہے اور ایسے جھگڑوں کو ہمیشہ کے لئے ختم کرنے کی ترکیب بھی سجھائی گئی ہے۔ قیمت صرف دو آنے۔

ملنے کا پتہ — مینیجر 'نیا ہند' ۱۴۵، مٹھی گنج، الہ آباد۔

[illegible] के विधान की अंगरेज़ी हिन्दी शब्दावली

(अंगरेज़ी नागरी लिखावट में)

हिन्द का जो नया विधान पास हुआ है उसके लगभग चौदह सौ ख़ास ख़ास अंगरेज़ी शब्दों के लिये आसान हिन्दुस्तानी शब्द महात्मा भगवानदीन और दूसरे विद्वानों ने सुझाये हैं. भारत के विधान को समझने के लिये इस शब्दावली को अपने पास ज़रूर रखिये. क़ीमत दो रुपये.

मुस्लिम देश भक्त—लेखक—श्री रतन लाल बंसल

उन मुसलमान देश भक्तों के जीवन का हाल जिन्हों ने अपनी जान हथेली पर रखकर हिन्दुस्तान और विदेशों में रहते हुए भारत माता को ग़ुलामी की ज़ंजीरों से आज़ाद करने की कोशिश की. किताब बड़े दिलचस्प ढंग से लिखी गई है. क़ीमत सिर्फ़ एक रुपया बारह आने.

आज के शहीद—सम्पादक—श्री रतन लाल बंसल.

इस किताब में उन वीरों की कहानियाँ हैं जिन्होंने विदेशी हाकिमों की फैलाई फूट की आग में इन्सानियत को भस्म होते देख एक छन की भी देर न की और उसे बुझाने के लिये अपनी जान क़ुरबान कर दी.

उन वीरों की कहानियाँ जो फ़िरक़ावाराना दंगों में लोगों को हैवानियत से रोकते हुए शहीद हो गये.

हर एकता प्रेमी के पढ़ने की किताब.

सुन्दर जिल्द और चिकने काग़ज़ पर छपी आठ तस्वीरों के साथ इस किताब का दाम सिर्फ़ ढाई रुपया.

किसान की पुकार—लेखक—श्री आर. वेन्कट राव.

यह किताब किसानों के लिये ही नहीं, उन लोगों [illegible] बहुत [illegible] ... [illegible] और भारत [illegible] जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

[illegible] रिसालों वग़ैरा [illegible]

(२) एकता फैलाने के लिये किताबों, अख़बारों,

هند کے ودھان کی انگریزی هندی شبداولی

(انگریزی ناگري لکھاوٹ میں)

هند کا جونیا ودھان پاس هوا هے اُسکےلگ بھگ چودہ سوخاص خاص انگریزي شبدوں کے لئے آسان هندستانی شبد مہاتما بھگوان دین اور دوسرے ودوانوں نےسجھائےهیں. بھارت کےودھان کو سمجھنے کے لئے اِس شبداولي کو اپنے پاس ضرور رکھئے . قیمت دو روپئے .

مسلم دیش بھکت—لیکھک—شري رتن لال بنسل

اُن مسلمان دیش بھکتوں کے جیون کا حال جنھوں نے اپنی جان هتھیلي پر رکھکر هندستان اور ودیشوں میں رهتے هوئے بھارت ماتا کو غلامي کی زنجیروں سے آزاد کرنے کي کوشش کی . کتاب بڑے دلچسپ ڈھنگ سے لکھی گئی هے .

قیمت صرف ایک روپیه بارہ آنے .

آج کے شہید—سمپادک - شري رتن لال بنسل

اِس کتاب میں ان ویروں کی کہانیاں هیں جنھوں نے ودیشی حاکموں کي پھیلائی پھوٹ کی آگ میں اِنسانیت کو بھسم هوتے دیکھ ایک چھن کی بھی دیر نہیں کي اور اُسے بجھانے کے لئے اپنی جان قربان کر دي .

ان بہادروں کی کہانیاں جو فرقہوارانہ دنگوں میں لوگوں کو حیوانیت سے روکتے هوئے شہید هو گئے .

هر ایکتا پریمی کے پڑھنے کی کتاب .

سندر جلد اور چکنے کاغذ پر چھپي آٹھ تصویروں کے ساتھ اس کتاب کا دام صرف ڈھائي روپیه .

کسان کی پکار—لیکھک—شری آر . وینکٹ راو .

[illegible]

(۲) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا [illegible]

(۳) پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، [illegible]

...पना।

(३) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफरेन्सों, लेक्चरों ... धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस में मेल ...ना।

—o—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख्वाजा; वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़; गवर्निंग बाडी प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; सेक्रेटरी—पं० सुन्दरलाल.

गवर्निंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद सुलेमान नदवी, मि० मज़हर अली सोख़्ता, श्री बी० जी० खेर, मि० एस० के० रुद्रा, पं० विशम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम चन्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम प्रकाश पालीवाल.

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये.

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी
१४५, मुट्ठी गंज, इलाहाबाद.

नोट—सोसाइटी के नये क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" के जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायगा. अलग से मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या [illegible]

[illegible]

...مذہبوں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل ...

—————

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ—مسٹر عبدالمجید خواجہ؛ وائس پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق؛ گورننگ باڈی پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس؛ سکریٹری—پنڈت سندر لال۔

گورننگ باڈی کے اور ممبر—

ڈاکٹر سید محمود، ڈاکٹر تارا چند، مولوی سید سلیمان ندوی، مسٹر مظہر علی سوختہ، شری بی۔ جی۔ کھیر، مسٹر ایس۔ کے۔ رودرا، پنڈت بشمبھر ناتھ، مہاتما بھگوان دین، سیٹھ پونم چند رانکا، قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال۔

ممبری کے قاعدے کے لئے لکھئے۔

سندر لال

سکریٹری، ہندستانی کلچر سوسائٹی،
۱۴۵، مٹھی گنج، الہ آباد۔

نوٹ—سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کردی گئی ہے۔ "نیا ہند" کے جو گاہک ممبر بننا چاہیں اُن کو صرف چھ روپیہ چندہ دینے پر ہی ممبر بنا لیا جائیگا۔ الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی ہوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ہوگی مفت لے سکیں گے یا ... کتابیں لینے پر ایک بار ایک ... [illegible]

चाल पूरी चल गई और जादू का काम कर गई. हिन्दुस्तानियों ने इसमें अपनी जीत समझी और लन्दन के पंडितों ने अपनी. जीत हुई लन्दन की. हिन्दुस्तानियों का तो मन बहलावा हुआ. राज बदला पर बाज़ीगरी के ढंग से. हिन्दुस्तानियों को राज बदला हुआ दिखाई दिया पर वह निरी नज़रबन्दी थी. वही अफ़सर थे, वही राज का तरीक़ा था. वही व्योपारी हथकंडे थे, वही सब कुछ था, सिर्फ़ नाम बदल गया था. कम्पनी का राज ही रानी का राज कहलाने लगा था. यह तो था पहला तमाशा जिसको देखकर हिन्दुस्तानी ख़ुश हो गये पर अपना कोई दुख दूर न कर पाये. हो सकता है कुछ दुख बढ़ा ही हो क्योंकि कम्पनी राज की सारी बुराइयाँ रानी राज में ज्यों की त्यों बनी रहीं और रानी के नाम पर पहले के ज़ुल्म और भी ज़ोर के साथ और निडर होकर किये जाने लगे.

राज के सुधार के तमाशे हर बीसवें तीसवें वर्ष होते रहे. आख़िर बड़ी मेहनतों के बाद और बहुत से बलिदानों के बदलेमें सन् १९४७ की आज़ादी मिली. इस आज़ादी में अंगरेज़ तो हाथ धो कर अलग आ खड़ा हुआ पर अंगरेज़ी राज के ऐब सब ज्यों के त्यों जहाँ के तहाँ उसी तरह जड़ पकड़े रहे जैसे ईस्ट इन्डिया कंपनी के ज़माने में पकड़े हुए थे. जिस तरह खोट भरी सोने की अंगूठी लटकन का रूप लेकर लोगों की नज़र में पहले से नई तो हो जाती है, चमकने भी लगती है, शकल भी मनमोहक ले लेती है पर सोने के लिहाज़ से तो वह खोटे सोने की ही बनी रहती है और नाम लटकन रख लेती है. जब तक अंगूठी का सोना सुनार की घरिया में

چال پوری چل گئی اور جادو کا کام کر گئی۔ ہندستانیوں نے اس میں اپنی جیت سمجھی اور لندن کے پنڈتوں نے اپنی۔ جیت ہوئی لندن کی۔ ہندستانیوں کا تو من بہلاوا ہوا۔ راج بدلا پر بازی گری کے ڈھنگ سے۔ ہندستانیوں کو راج بدلا ہوا دکھائی دیا پر وہ نری نظر بندی تھی۔ وہی افسر تھے، وہی راج کا طریقہ تھا۔ وہی بیوپاری ہتھکنڈے تھے، وہی سب کچھ تھا، صرف نام بدل گیا تھا۔ کمپنی کا راج ہی رانی کا راج کہلانے لگا تھا۔ یہ تو تھا پہلا تماشہ جسے دیکھ کر ہندستانی خوش ہوگئے پر اپنا کوئی دکھ دور نہ کر پائے۔ ہو سکتا ہے کچھ دکھ بڑھا ہی ہو کیونکہ کمپنی راج کی ساری برائیاں رانی راج میں جیوں کی تیوں بنی رہیں اور رانی کے نام پر پہلے کے ظلم اور بھی زور کے ساتھ اور نڈر ہو کر کئے جانے لگے۔

راج کے سدھار کے تماشے ہر بیسویں تیسویں ورش ہوتے رہے۔ آخر بڑی محنتوں کے بعد اور بہت سے بلیدانوں کے بدلے میں سنہ ۱۹۴۷ کی آزادی ملی۔ اس آزادی میں انگریز تو ہاتھ دھو کر الگ جا کھڑا ہوا پر انگریزی راج کے عیب سب جیوں کے تیوں جہاں کے تہاں اسی طرح جڑ پکڑے رہے جیسے ایسٹ انڈیا کمپنی کے زمانے میں پکڑے ہوئے تھے۔ جس طرح کھوٹ بھری سونے کی انگوٹھی ٹنکن کا روپ لیکر لوگوں کی نظروں میں پہلے سے نئی تو ہو جاتی ہے، چمکنے بھی لگتی ہے، شکل بھی منموہک لے لیتی ہے پر سونے کے لحاظ سے تو وہ کھوٹے سونے کی ہی بنی رہتی ہے اور نام ٹنکن رکھ لیتی ہے۔ جب تک انگوٹھی کا سونا سنار کی گھریا میں، پڑ کر آگ کو، تپن کے سارے اتھل پتھل کا تماشہ نہ دیکھ لے

Registered No. A—210.

तब तक चाहे वह लटकन बने या सास फूल खोटा सोना ही रहेगा. ठीक इसी तरह से कोई राजसत्ता उथल पुथल में निकले बिना यानी इन्क़लाब की तपन पाये बिना भले ही डिपेन्डेन्सी (पराधीन रियासत) से डोमिनियन बन जाय या रिपब्लिक नाम धर ले, अपनी खोट से बरी नहीं हो सकती. इसलिये हिन्दुस्तान को डोमिनियन में आज ६ दिसम्बर सन् ४९ तक वह सारी बुराइयां ज्यों की त्यों बनी हुई हैं जो अंगरेज़ी राज में मौजूद थीं. उनमें बढ़वारी हुई है घटती नहीं हुई. तसल्ली इतनी ही है कि हमारे सर पर हमारा ही थप्पड़ पड़ रहा है. पर अफ़सोस इतना ही है कि जिस तरह एक आदमी सपने में जब थप्पड़ उठा कर अपने दुश्मन के मारता है तो उसे एक छण के लिये तो तसल्ली होती है. यह ठीक है कि जागने पर उसे यह पता लगता है कि उसने जो थप्पड़ दुश्मन के गाल पर मारा था वह पड़ा था उसीके गाल पर. पर वैसी तसल्ली भी आज के राज के दुखों के बारे में नहीं हो पाती. यहाँ तो सोते जागते सीधा थप्पड़ अपने ही गाल पर पड़ता है. इसे भले ही कुछ बेबसी कहें या ला इलाज समझें पर वैसी बात है नहीं.

(९६)

सन पचास की जनवरी की किसी तारीख़ को हिन्दुस्तानी डोमिनियन रिपब्लिक बन जायगी. और यह भी एक तमाशा ही होगा क्यों कि यह रिपब्लिक भी उस विधान के पूरे अमल में आये बिना बनेगा जिस विधान ने उस रिपब्लिक की बुनियाद डाली है. हमारी समझ में नहीं आता कि नाम बदलने की इतनी जल्दी भी क्या थी ? जहाँ कई बरस डोमिनियन रहकर निकल गये थे वहाँ एक डेढ़ बरस और भी क्या बिगड़ता ? विधान के अनुसार नीचे

تب تک چاہے وہ لٹکن بنے یا سیس پھول کھوٹا سونا ہی رہے گا. ٹھیک اسی طرح سے کوئی راج ستا اُتھل پتھل میں نکلے بنا یعنی انقلاب کی تپن پائے بنا بھلے ہی ڈپنڈنسی (پرادھین ریاست) سے ڈومینین بن جائے یا ریپبلک نام دھرلے، اپنی کھوٹ سے بری نہیں ہو سکتی. اس لئے ہندوستان کی ڈومینین میں آج ۶ دسمبر سنہ ۴۹ تک وہ ساری بُرائیاں جیوں کی تیوں بنی ہوئی ہیں جو انگریزی راج میں موجود تھیں. اُن میں بڑھواری ہوئی ہے گھٹتی نہیں ہوئی. تسلّی اتنی ہی ہے کہ ہمارے سر پہ ہمارا ہی تھپڑ پڑ رہا ہے. پر افسوس اتنا ہی ہے کہ جس طرح ایک آدمی سپنے میں جب تھپڑ اٹھا کر اپنے دشمن کے مارتا ہے تو اُسے ایک چھن کے لئے تو تسلی ہوتی ہے. یہ ٹھیک ہے کہ جاگنے پر اُسے یہ پتا لگتا ہے کہ اُس نے جو تھپڑ دشمن کے گال پہ مارا تھا وہ پڑا تھا اُسی کے گال پہ. پر ویسی تسلی بھی آج کے راج کے دُکھوں کے بارے میں نہیں ہو پاتی. یہاں تو سوتے جاگتے سیدھا تھپڑ اپنے ہی گال پہ پڑتا ہے. اسے بھلے ہی کچھ بے بسی کہیں یا لا علاج سمجھیں پر ویسی بات ہے نہیں.

(۹۶)

سنہ پچاس کی جنوری کی کسی تاریخ میں ہندوستانی ڈومینین ریپبلک بن جائے گی. اور یہ بھی ایک تماشہ ہی ہوگا کیونکہ یہ ری پبلک بھی اُس ودھان کے پورے عمل میں آئے بنا بنے گی جس ودھان نے اُس ری پبلک کی بنیاد ڈالی ہے. ہماری سمجھ میں نہیں آتا کہ نام بدلنے کی اتنی جلدی بھی کیا تھی ؟ جہاں کئی برس ڈومینین رہ کر نکل گئے تھے وہاں ایک ڈیڑھ برس اور بھی کیا بگڑتا ؟ ودھان کے انوسار نیچے

... किताबों, अख़बारों, रिसालों वग़ैरह का छापना

(३) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़्रेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस में मेल बढ़ाना.

—o—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा, वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़ ; गवर्निंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; सेक्रेटरी पं० सुन्दरलाल; —

गवर्निंग बाडी के और मेम्बर

डा० सय्यद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सय्यद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० खेर, मि० एस० के० रुद्रा, पं० विशम्भर नाथ, महात्मा भगवान दीन, सेठ पूनम चन्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम प्रकाश पालीवाल.

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिए.

सुन्दर लाल

सेक्रेटरी हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी
४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद

नोट—सोसाइटी के नये क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" के जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायगा अलग से मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ज़्यादा दाम की किताबें लेने पर एक रुपया कम करा सकेंगे.

... جس میں سب ہندستانی ساجھی ہوں
پرچار کرنا
(۲) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا۔

(۳) پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں، لکچروں سے سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا۔

———

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ — مسٹر عبد المجید خواجہ، وائس پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق، گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس، سکریٹری پنڈت سندر لال،

گورننگ باڈی کے اور ممبر —
ڈاکٹر سید محمود، ڈاکٹر تارا چند، مولوی سید سلیمان ندوی، مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی۔ جی۔ کھیر، مسٹر ایس۔ کے۔ رودرا، پنڈت بشمبھر ناتھ، مہاتما بھگوان دین، سیٹھ پونم چند رانکا، قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال،

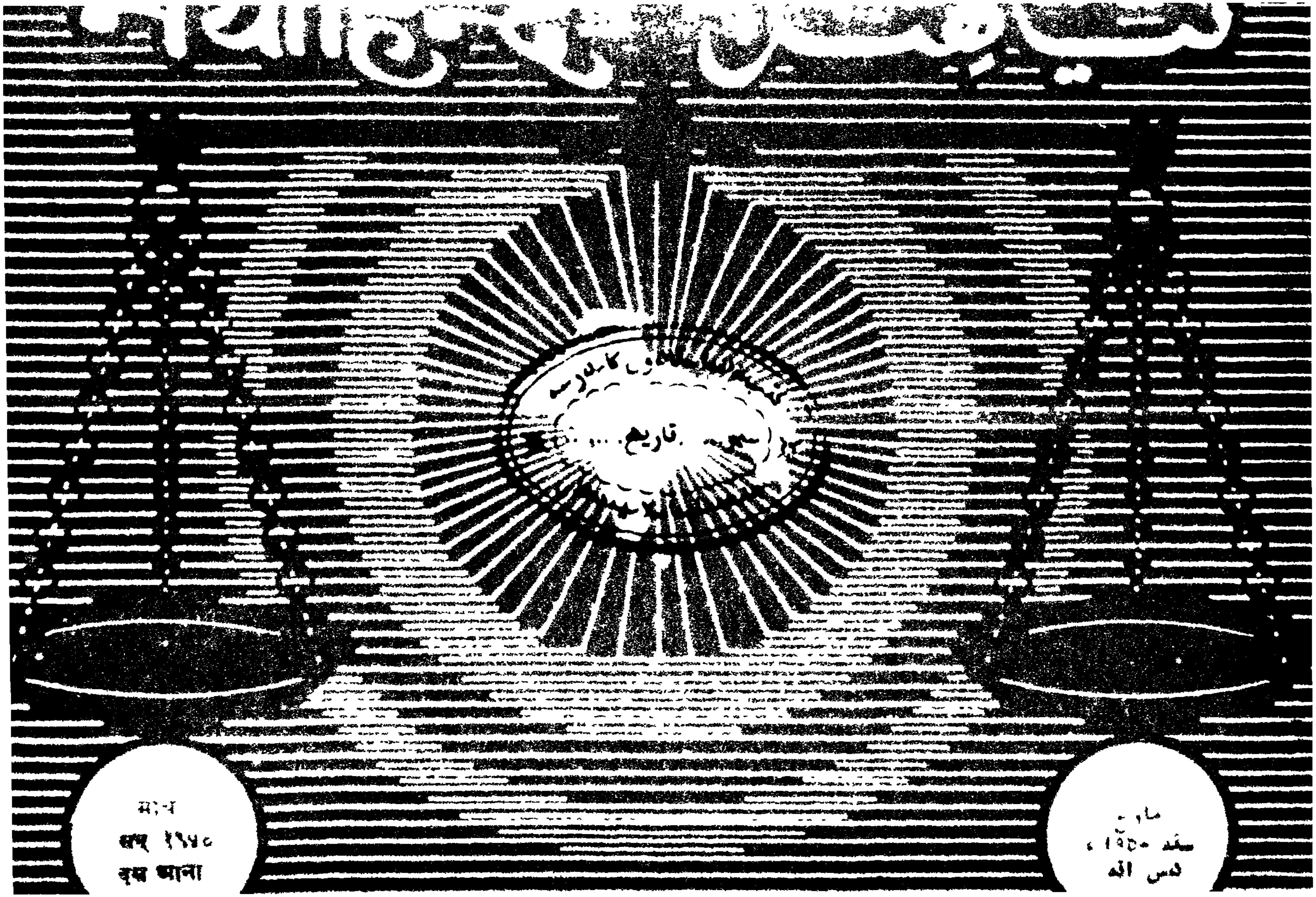
ممبری کے قاعدے کے لئے لکھئے۔

سندر لال
سکریٹری ہندستانی کلچر سوسائٹی،
۴۸ بائی کا باغ، الہ آباد

نوٹ — سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کر دی گئی ہے۔ "نیا ہند" کے جو گاہک ممبر بننا چاہیں اُن کو صرف چھ روپیہ چندہ دینے پر ہی ممبر بنا لیا جائیگا۔ الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکالی ہوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ہوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ

... के लिये किताबों, अख़बारों, रिसालों वग़ैरह

... میں سب ہندستانی شامل ہوں
... پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں


تاریخ
सन् १९५०
दस आना
مارچ
سنہ ۱۹۵۰ء
دس آنہ

"नया हिन्द"

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का परचा

एडीटर—

तारा चन्द, भगवानदीन, मुज़फ़्फ़र हसन, विश्वम्भरनाथ, सुन्दरलाल

मार्च १९५०

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छे रुपया साल, बाहर दस रुपया साल
एक परचा दस आने .

मनेजर
'नया हिन्द'
४८, बाई का बाग़, इलाहाबाद .

"نیا ہند"

ہندستانی کلچر سوسائٹی کا پرچا

ایڈیٹر—

تارا چند' بھگوان دین' مظفر حسن' بشمبھر ناتھ' سندر لال'

مارچ ۱۹۵۰

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال- باہر دس روپیہ سال
ایک پرچہ دس آنے

منیجر
'نیا ہند'
۴۸' بائی کا باغ' الہ آباد -

नया हिन्द — نیا ہند

जिल्द ८ | मार्च '५० | नम्बर ३ — نمبر ۳ | مارچ ۵۰ | جلد ۸

जाति आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली.
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی

भोर का गीत

(भाई चरन सरन नाज़)

भोर का पंछी बोल रहा है!

अँधियारे में लूटा जिसने,
उसका हृदय डोल रहा है.
भोर का पंछी बोल रहा है!

بھور کا گیت

(بھائی چرن سرن ناز)

بھور کا پنچھی بول رہا ہے

اندھیارے میں لوٹا جس نے
اُس کا ہردے ڈول رہا ہے
بھور کا پنچھی بول رہا ہے

भोर का गीत

पूरब का आकाश लाल है,
धन वालों का नाश काल है,
सूरज किरनों के हाथों से

सुबह का परचम खोल रहा है
भोर का पंछी बोल रहा है।

विश्व-शान्ति सम्मेलन इस में,
जग का शान्ति-निकेतन इस मे,
भारत मां को देख देख कर

ऐटम का दिल डोल रहा है
भोर का पंछी बोल रहा है!

بھور کا گیت

پورب کا آکاش لال ھے
دھن والوں کا ناش کال ھے
سورج کرنوں کے ھاتھوں سے

بھور کا پرچم کھول رھا ھے
صبح کا پنچھی بول رھا ھے!

وشو شانتی سمیلن اِس میں
جگ کا شانتی-نکیتن اِس میں
بھارت ماں کو دیکھ دیکھ کر

ایٹم کا دل ڈول رھا ھے
بھور کا پنچھی بول رھا ھے

... हिन्दू मुस्लिम

एकता पर बहस

[भाई रतन लाल बंसल]

पिछले दिसम्बर महीने के पहले और आख़िरी हफ़्ते में शान्ति निकेतन और सेवा ग्राम में दुनिया भर के शान्ति वादियों की जो कानफ्रेन्स हुई थी, उस में हिन्दुस्तान और पाकिस्तान और इन दोनों देशों में रहने वाली कम व ज़्यादा तादाद वाली जातियों के बीच फैले हुए मन मुटाव को दूर करने के सवाल पर भी ग़ौर किया गया था. इस सिलसिले में वहाँ जो बहस हुई, उसमें कई ऐसी बातें रोशनी में आईं. जिनको अगर इन दोनों देशों की आम जनता तक पहुंचाया जा सके तो इस सवाल को हल करने में बड़ी मदद मिल सकती है.

बहस को अमरीका के हबशी नुमाइन्दे डाक्टर मोर्डेकाई जानसन ने अपने भाषण से शुरू किया. डाक्टर मोर्डेकाई हावर्ड यूनिवर्सिटी वाशिंगटन में प्रोफ़ेसर हैं और उनके देश में भी गोरी व हबशी जातियों में बिलकुल इसी तरह का तनाव रहता है. जिस तरह हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में हिन्दू, मुसलमानों के बीच रहता है. डाक्टर मोर्डेकाई का मिशन इस तनाव को प्रेम और मुहब्बत में बदलने का है, इसी लिए हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की इस कठिन समस्या पर भी उनकी नज़र पड़ना स्वाभाविक ही था. अपने भाषण में उन्होंने बार बार दूसरे नुमाइन्दों से यह प्रार्थना की कि इस नाज़ुक

وشو شانتی سمیلن میں ہندو مسلم ایکتا پر بحث

(بھائی رتن لال بنسل)

پچھلے دسمبر مہینے کے پہلے اور آخری ہفتے میں شانتی نکیتن اور سیوا گرام میں دنیا بھر کے شانتی وادیوں کی جو کانفرنس ہوئی تھی' اسمیں ہندستان اور پاکستان اور اِن دونوں دیشوں میں رہنے والی کم و زیادہ تعداد والی جاتیوں کے بیچ پھیلے ہوئے من مٹاؤ کو دور کرنے کے سوال پر بھی غور کیا گیا تھا. اِس سلسلے میں وہاں جو بحث ہوئی اسمیں کئی ایسی باتیں روشنی میں آئیں' جنکو اگر اِن دونوں دیشوں کی عام جنتا تک پہونچایا جا سکے تو اِس سوال کو حل کرنے میں بڑی مدد مل سکتی ھے.

بحث کو امریکہ کے حبشی نمائندے ڈاکٹر مورڈے کائی جانسن نے اپنے بھاشن سے شروع کیا. ڈاکٹر مورڈے کائی ھاورڈ یونیورسٹی واشنگٹن میں پروفیسر ھیں اور اُن کے دیش میں بھی گوری و حبشی جاتیوں میں بالکل اِسی طرح کا تناؤ رہتا ھے' جس طرح ھندستان اور پاکستان میں ھندو' مسلمانوں کے بیچ رہتا ھے. ڈاکٹر مورڈے کائی کا مشن اِس تناؤ کو پریم اور محبت میں بدلنے کا ھے' اِسی لئے ھندستان اور پاکستان کی اِس کٹھن سمسیا پر بھی اُن کی نظر پڑنا سوابھاوک ھی تھا. اپنے بھاشن میں اُنھوں نے بار بار دوسرے نمائندوں سے یہ پرارتھنا کی کہ اِس نازک

मसले पर उनको बहुत संभल कर बोलना चाहिये और उसी भावना से इस समस्या को सुलझाने की कोशिश करनी चाहिये, जो भावना गान्धी जी की थी. डाक्टर जानसन गान्धी जी से बहुत प्रभावित दिखाई देते थे.

डाक्टर जानसन के बाद ढाका यूनिवर्सिटी के प्रोफ़ेसर के. एम. हुसैन का भाषण हुआ. उन्होंने सब से पहिले यह बात साफ़ की कि वह बिलकुल ज़ाती तौर पर इस सम्मेलन में शरीक हुए हैं और न तो पूरबी पाकिस्तान की सरकार और न वहाँ की जनता के किसी सङ्गठन के वह नुमाइन्दे हैं. इसके बाद उन्होंने बताया कि इस सवाल की तह में ख़ास बात यह नहीं है कि हिन्दू, मुसलमानों के बीच कुछ मज़हबी मत भेद हैं, बल्कि असल बात यह है कि इस सवाल को उकसा कर कुछ ताक़तें राजकाजी अधिकारों और गद्दियों पर अपना क़ब्ज़ा जमाये रखना चाहती हैं.

आज जो लोग हिन्दू मुसलिम एकता के मुश्किल काम में लगे हुए हैं, उनके लिए प्रोफ़ेसर हुसैन की इस सच्ची और खरी बात की बहुत बड़ी क़ीमत है. सच मुच आज सब से बड़ी ज़रूरत इस बात की है कि हम हिन्दू मुसलमानों के उन नेताओं और उन सङ्गठनों की पिछली ज़िन्दगी की सही तस्वीर आम जनता के सामने पेश करें, जो यह फ़ितने उठाया करते हैं. मिसाल के लिए हमारे देश में आज कल हिन्दू महा सभा और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की ओर से ख़ास तौर पर हिन्दू फ़िरक़ावारियत को उभारा जा रहा

مسلے پر اُنکو بہت سنبھل کر بولنا چاہئے اور اُسی بھاؤنا سے اِس سمسیا کو سلجھانے کی کوشش کرنی چاہئے' جو بھاؤنا گاندھی جی کی تھی۔ ڈاکٹر جانسن گاندھی جی سے بہت پربھاوت دکھائی دیتے تھے۔

ڈاکٹر جانسن کے بعد ڈھاکہ یونیورسٹی کے پروفیسر کے. ایم. حسین کا بھاشن ہوا. اُنھوں نے سب سے پہلے یہ بات صاف کی کہ وہ بالکل ذاتی طور پر اِس سمیلن میں شریک ہوئے ہیں اور نہ تو پوربی پاکستان کی سرکار اور نہ وہاں کی جنتا کے کسی سنگٹھن کے وہ نمائندے ہیں. اِس کے بعد اُنھوں نے بتایا کہ اِس سوال کی تہہ میں خاص بات یہ نہیں ہے کہ ہندو مسلمانوں کے بیچ کچھ مذہبی مت بھید ہیں' بلکہ اصل بات یہ ہے کہ اِس سوال کو اُکساکر کچھ طاقتیں راج کاجی ادھیکاروں اور گدیوں پر اپنا قبضہ جمائے رکھنا چاہتی ہیں۔

آج جو لوگ ہندو مسلم ایکتا کے مشکل کام میں لگے ہوئے ہیں' اُن کے لئے پروفیسر حسین کی اِس سچی اور کھری بات کی بہت بڑی قیمت ہے. سچ مچ آج سب سے بڑی ضرورت اِس بات کی ہے کہ ہم ہندو مسلمانوں میں اُن نیتاؤں اور اُن سنگٹھنوں کی پچھلی زندگی کی سہی تصویر عام جنتا کے سامنے پیش کریں' جو یہ فتنے اُٹھایا کرتے ہیں. مثال کے لئے ہمارے دیش میں آج کل ہندو مہا سبھا اور راشٹریہ سویم سیوک سنگھ کی اور سے خاص طور پر ہندو فرقہ واریت کو اُبھارا جا رہا ہے اور

साम्प्रदायिकता की आग सुलगा रहे हैं. आम तौर पर एकता के प्रचारकों की ताकत जनता को यह समझाने में खर्च होती है कि हिन्दू मुसलमानों में या सिक्खों के बीच कोई खास मजहबी फ़र्क नहीं है और जो फ़र्क है उससे बहुत ज़्यादा ऐसी बातें हैं जो दोनों मजहबों में एकसी मिलती हैं.

लेकिन जब फूट डालने वाले प्रचारक इन दोनों मजहबों के बीच जो फ़र्क पाये जाते हैं, उन पर जोर देते हैं तो लोग एकता के प्रचारकों की बात भूल जाते हैं. आम तौर पर यह इन्सानी फ़ितरत है कि नफ़रत फैलाने वाली बात आदमी के मन पर ज़्यादा असर करती है और यही कारन है कि जनता अक्सर उनके पीछे चलती है जो नफ़रत का प्रचार करते हैं, यह दूसरी बात है कि कुछ लोग पापों के खिलाफ़ नफ़रत का प्रचार करते हैं, जैसा कि बुद्ध, महावीर, हज़रत मुहम्मद, हज़रत ईसा और महात्मा गान्धी ने किया. यानी इन लोगों ने समाज में फैली हुई बुराइयों को उधेड़ कर रख दिया और उसके खिलाफ़ इस क़दर नफ़रत पैदा कर दी. जिसकी वजह से उन बुराइयों का बिलकुल ही या किसी हद तक खात्मा हो गया. इसके खिलाफ़ कुछ लोगों ने एक खास फिरका या जाति के खिलाफ़ नफ़रत पैदा कराई, जिसकी वजह से बड़े बड़े धर्म युद्ध यानी जिहाद हुये या एक देश और दूसरे देश के बीच लड़ाइयाँ हुईं और इन्सानियत को खून से नहला दिया गया.

आज एकता के प्रचारकों को फूट परस्तों की हरकतों के खिलाफ़ भी नफ़रत फैलानी होगी, तभी वह अपने मिशन में कामयाब हो

سامپردائکتا کی آگ سلگا رہے ہیں . عام طور پر ایکتا کے پرچارکوں کی طاقت جنتا کو یہ سمجھانے میں خرچ ہوتی ہے کہ ہندو مسلمانوں یا سکھوں کے بیچ کوئی خاص مذہبی فرق نہیں ہے اور جو فرق ہے اُس سے بہت زیادہ ایسی باتیں ہیں جو دونوں ں میں ایک سی ملتی ہیں .

لیکن جب پھوٹ ڈالنے والے پرچارک اِن دونوں مذہبوں کے بیچ جو فرق پائے جاتے ہیں اُن پر زور دیتے ہیں تو لوگ ایکتا کے پرچارکوں کی بات بھول جاتے ہیں . عام طور پر یہ انسانی فطرت ہے کہ نفرت پھیلانے والی بات آدمی کے من پر زیادہ اثر کرتی ہے اور یہی کارن ہے کہ جنتا اکثر اُن کے پیچھے چلتی ہے جو نفرت کا پرچار کرتے ہیں . یہ دوسری بات ہے کہ کچھ لوگ پاپوں کے خلاف نفرت کا پرچار کرتے ہیں، جیسا کہ بدھ، مہابیر، حضرت محمد، حضرت عیسیٰ اور مہاتما گاندھی نے کیا . یعنی اِن لوگوں نے سماج میں پھیلی ہوئی برائیوں کو اُدھیڑ کر رکھ دیا اور اُس کے خلاف اِس قدر نفرت پیدا کردی، جس کی وجہ سے اُن برائیوں کا بالکل ہی یا کسی حد تک خاتمہ ہو گیا . اِس کے خلاف کچھ لوگوں نے ایک خاص فرقہ یا جاتی کے خلاف نفرت پیدا کرائی، جس کی وجہ سے بڑے بڑے دھرم یدھ یعنی جہاد ہوئے یا ایک دیش اور دوسرے دیش کے بیچ لڑائیاں ہوئیں اور انسانیت کو خون سے نہلا دیا گیا .

آج ایکتا کے پرچارکوں کو پھوٹ پرستوں کی حرکتوں کے خلاف بھی نفرت پھیلانی ہوگی، تبھی وہ اپنے مشن میں کامیاب ہو

सकेंगे. आज हिन्दू मुसलमानों की मज़हबी एकता के प्रचार से ज़्यादा ज़रूरत इस प्रचार की है कि हिन्दू महासभा ने किस किस मौक़े पर देश के साथ ग़द्दारी की. पिछले ज़माने में किस तरह वह हमेशा उन मुसलमानों के साथ साँठ गाँठ करती रही. जो कट्टर फ़िरक़ा परस्त थे. १९४२–४३ में किस तरह 'हिन्दू राष्ट्र' का नारा लगाने वाले सावरकर साहब ने उत्तरी पच्छिमी सरहदी सूबे में डाक्टर ख़ान साहब की कांग्रेसी मिनिस्ट्री को गिराने मे मदद की थी और लीगी मिनिस्ट्री क़ायम कराई थी मास्टर तारा सिंह साहब भी उस मौक़े पर किस तरह से मुस्लिम लीग के साथ मिल गये थे और अकाली दल के नुमाइन्दे सरदार अजीत सिंह ने किस तरह लीगी मिनिस्ट्री मे एक ओहदा संभाल लिया था.

आज हिन्दुस्तान पाकिस्तान को फिर से एक करने का नारा भी हिन्दू महासभा और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की तरफ से लगाया जा रहा है. एकता के प्रचारकों को आज यह बात घर घर पहुँचानी है कि आज जो लोग फिर से 'अखण्ड हिन्दुस्तान' बनाने की क़समें खा रहे हैं, उन्होंने सन १९४७ के नाज़ुक वक़्त में हर एक रियासती राजा को हिन्दुस्तान से अलग रहने के लिए किस तरह उकसाया था. ट्रावनकोर के दीवान सर पी. सी. रामास्वामी अय्यर ने जब एक मुसलमान को पाकिस्तान में राजदूत मुकर्रर करके अपनी रियासत को बिलकुल आज़ाद रखने का फ़ैसला किया था तो सावरकर साहब ने तार से उनको आशीर्वाद भेज कर किस तरह

سکیں گے . آج هندو مسلمانوں کي مذهبی ایکتا کے پرچار سے زیادہ ضرورت اِس پرچار کی هے که هندو مهاسبها نے کس کس موقع پر دیش کے ساتھ غداري کی هے پچھلے زمانے میں کس طرح وہ همیشه اُن مسلمانوں کے ساتھ سانٹھ گانٹھ کرتی رهی جو کٹر فرقه پرست تھے ۱۹۴۲-۴۳ میں کس طرح 'هندو راشٹر' کا نعرہ لگانے والے ساورکر صاحب نے اُتری پچھمی سرحدی صوبه میں ڈاکٹر خان صاحب کی کانگریسی منسٹری کو گرانے میں مدد کی تھی اور لیگی منسٹری قائم کرائي تھی . ماسٹر تارا سنگھ صاحب بھی اس موقع پر کس طرح سے مسلم لیگ کے ساتھ مل گئے تھے اور اکالی دل کے نمائندے سردار اجیت سنگھ نے کس طرح لیگی منسٹری میں ایک عهدہ سنبھال لیا تھا .

آج هندستان پاکستان کو پھر سے ایک کرنے کا نعرہ بھی هندو مهاسبھا اور راشٹریه سویم سیوک سنگھ کي طرف سے لگایا جا رها هے . ایکتا کے پرچارکوں کو آج یه بات گھرگھر پهونچانی هے که آج جو لوگ پھر سے اکھنڈ هندستان بنانے کی قسمیں کھا رهے هیں، اُنهوں نے سن ۱۹۴۷ کے نازک وقت میں هر ایک ریاستي راجا کو هندستان سے الگ رهنے کیلئے کس طرح اُکسایا تھا . ٹراونکور کے دیوان سر پی . سی . راما سوامی آییر نے جب ایک مسلمان کو پاکستان میں راج دوت مقرر کرکے اپنی ریاست کو بالکل آزاد رکھنے کا فیصله کیا تھا تو ساورکر صاحب نے تار سے اُن کو آشیرواد

राजाओं को हिन्दुस्तान की सरकार की मातहती कबूल करने के लिए मजबूर करना चाहा, तो राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के स्वयं सेवक किस तरह उन सत्याग्रहियों पर लाठियाँ बरसाते थे.

यह तमाम असलियत हम जनता के सामने रख कर आसानी से उसे यह बात समझा सकेंगे कि 'अखंड हिन्दुस्तान' और 'हिन्दू राष्ट्र' के नारे सिर्फ़ अपने हाथों में ताक़त लेने की चालें हैं और यह नारे लगाने वाले ख़ुद अपने पिछले जमाने में इन उसूलों के खिलाफ़ काम करते रहे हैं.

प्रोफ़ेसर हुसैन ने अपने भाषन में कांग्रेस को इसके लिए सराहा कि उसने अपना ग़ैर फ़िरक़ेवाराना रूप क़ायम रक्खा है. इससे यह साबित हो गया कि हमारे देश में हर एक ऐसी तहरीक या हलचल से, जो फ़िरक़ेवारियत के खिलाफ़ होती है, पाकिस्तान के उन लोगों को मदद पहुँचती है, जो फ़िरक़ेवारियत के खिलाफ़ लड़ रहे हैं और कम तादाद वाली हिन्दू जातियों में भरोसा पैदा करने की कोशिश कर रहे हैं. काश ! हिन्दुस्तान के हिन्दू इससे कुछ सीख सकें.

प्रोफ़ेसर हुसैन के बाद गांधी जी के प्राइवेट सैक्रेट्री श्री प्यारे लाल ने इस सवाल पर रोशनी डाली. श्री प्यारे लाल ख़ुद बहुत दिनों तक नोआखाली के इलाक़ों में रह कर हिन्दू मुसलिम एकता का काम कर चुके हैं और वहाँ का ज़ाती तजरबा रखते हैं.

श्री प्यारे लाल ने प्रोफ़ेसर हुसैन की इस बात की ताईद की कि पूरबी बंगाल में जो फ़िरक़ेवाराना बलवे हुए, उनके मज़हबी

ایک ریاست میں جب وہاں کی پرجا نے
اپنے اپنے راجاؤں کو ھندستان کی سرکار کی ماتحتی قبول کرنے کیلئے مجبور کرنا چاھا' تو راشٹریہ سویم سیوک سنگھ کے سویم سیوک کس طرح اُن ستیا گرھیوں پر لاٹھیاں برساتے تھے۔

یہ تمام اصلیت ہم جنتا کے سامنے رکھ کر آسانی سے اُسے یہ بات سمجھا سکیں گے کہ 'اکھنڈ ھندستان' اور 'ھندو راشٹر' کے نعرے لگانے والے خود اپنے پچھلے زمانے میں اِن اصولوں کے خلاف کام کرتے رہے ہیں۔

پروفیسر حسین نے اپنے بھاشن میں کانگریس کو اِس کے لئے سراھا کہ اُس نے اپنا غیر فرقہ‌وارانہ روپ قائم رکھا ھے۔ اِس سے یہ ثابت ھوگیا کہ ھمارے دیش میں ھر ایک ایسی تحریک یا ھلچل سے' جو فرقہ واریت کے خلاف ھوتی ھے' پاکستان کے اُن لوگوں کو مدد پہونچتی ھے' جو فرقہ واریت کے خلاف لڑ رھے ھیں اور کم تعداد والی ھندو جاتیوں میں بھروسہ پیدا کرنے کی کوشش کر رھے ھیں۔ کاش! ھندستان کے ھندو اِس سے کچھ سیکھ سکیں۔

پروفیسر حسین کے بعد گاندھی جی کے پرائیویٹ سکریٹری شری پیارے لال نے اِس سوال پر روشنی ڈالی۔ شری پیارے لال خود بہت دنوں تک نو آکھالی کے علاقوں میں رہ کر ھندو مسلم ایکتا کا کام کر چکے ھیں اور وھاں کا ذاتی تجربہ رکھتے ھیں۔

شری پیارے لال نے پروفیسر حسین کی اس بات کی تائید کی کہ پوربی بنگال میں جو فرقہ‌وارانہ بلوے ھوئے اُن کے مذھبی

फ़िरक़ावारियत के अलावा कुछ दूसरे कारन भी थे. श्री प्यारे लाल ने यह भी बताया कि देहाती किसानों के बीच इस तरह का कोई झगड़ा नहीं था.

इसके बाद प्यारे लाल जी ने बताया कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में एकता का काम दूसरे देशों के लोग ज़्यादा आसानी से कर सकते हैं. इससे शायद उनका मतलब यह था कि दोनों देशों के लोग एक दूसरे पर यकीन नहीं रखते और उनकी नीयत पर शक करने लगते है.

बात किसी हद तक ठीक है. लेकिन इसका एक पहलू यह भी है कि हम अपने अपने देशों मे ही क्यो न इस काम को करें. यहाँ तो यह सवाल पैदा नहीं होता शान्ति सम्मेलन के शान्ति निकेतन में होने वाले अधिवेशन में तो राजकुमारी अमृत कोर ने यह कहा भी था कि अगर हिन्दुस्तान में हम अपने मुसलमान भाइयों को प्रेम से गले लगालें और उनको किसी शिकायत का मौक़ा न दें तो पाकिस्तान में रहने वाले हिन्दुओ का मसला किसी हद तक हल हो ही जावेगा.

श्री प्यारे लाल के बाद इस सवाल पर सबसे अहम भाषण पूरबी बंगाल के हिन्दू नुमाइन्दे श्री जितेन्द्रनाथ ने दिया. उन्होंने यह साफ़ साफ़ कहा कि पूरबी बंगाल में जो फ़िरक़ेवाराना बलवे हुए, उनका मूल कारन आर्थिक यानी इक़्तसादी था. मिसाल के लिये उन्होंने बताया कि नोआखाली जिले की अस्सी फ़ीसदी ज़मीन वहाँ के बीस फ़ीसदी हिन्दुओ के कब्ज़े में थी. इसी तरह ढाका मे

فرقہ واریت کے علاوہ کچھ دوسرے کارن بھی تھے۔ شری پیارے لال نے یہ بھی بتایا کہ دیہاتی کسانوں کے بیچ اس طرح کا کوئی جھگڑا نہیں تھا۔

اس کے بعد پیارے لال جی نے بتایا کہ ہندستان اور پاکستان میں ایکتا کا کام دوسرے دیشوں کے لوگ زیادہ آسانی سے کر سکتے ہیں اس سے شاید اُن کا مطلب یہ تھا کہ دونوں دیشوں کے لوگ ایک دوسرے پر یقین نہیں رکھتے اور اُن کی نیت پر شک کرنے لگتے ہیں۔

بات کسی حد تک ٹھیک ہے، لیکن اِس کا ایک پہلو یہ بھی ہے کہ ہم اپنے اپنے دیشوں میں ہی کیوں نہ اِس کام کو کریں۔ یہاں تو یہ سوال پیدا نہیں ہوتا۔ شانتی سمیلن کے شانتی نکیتن میں ہونے والے ادھیویشن میں تو راج کماری امرت کور نے یہ کہا بھی تھا کہ اگر ہندستان میں ہم اپنے مسلمان بھائیوں کو پریم سے گلے لگالیں اور اُن کو کسی شکایت کا موقع نہ دیں تو پاکستان میں رہنے والے ہندوؤں کا مسئلہ کسی حد تک حل ہو ہی جاوے گا۔

شری پیارے لال کے بعد اس سوال پر سب سے اہم بھاشن پوربی بنگال کے ہندو نمائندے شری جتیندر ناتھ نے دیا۔ انہوں نے یہ صاف صاف کہا کہ پوربی بنگال میں جو فرقہ وارانہ بلوے ہوئے، اُن کا مول کارن آرتھک یعنی اقتصادی تھا۔ مثال کے لئے انہوں نے بتایا کہ نوآکھالی ضلع کی اسی فیصدی زمین ... فیصدی ہندوؤں کے قبضے میں تھی۔ اِسی طرح ڈھاکہ میں

बलवे शुरू होने से पहिले वहां के हिन्दू अछूत, मुसलमानों के साथ मिल गये थे. क्यों कि वह भी ऊंची जाति के धनी हिन्दुओं से माली हालत में उसी तरह पिछड़े हुए थे, जिस तरह वहाँ के मुसलमान पिछड़े हुए थे.

वह हक़ीक़त, जो श्री जितेन्द्रनाथ ने बताई, एक बहुत बड़ी सचाई को रोशनी में लाती है. आज हमारे समाज का इक़्तसादी तवाज़ुन यानी आर्थिक सन्तुलन इतना बिगड़ गया है और एक तबक़े के लोग दूसरे तबक़े से इतने चूसे जा रहे हैं कि उनके दिलों में हमेशा बदले की आग भड़कती रहती है. यही कारन है कि पिछले ज़माने में हिन्दुस्तान भर के अछूतों की एक बहुत बड़ी तादाद मुस्लिम लीग के साथ थी और आज भी उनके दिलों मे ऊँची जाति के हिन्दुओं के ख़िलाफ़ कम नफ़रत और गुस्सा नहीं पाया जाता. सन् १९४८ में जब गान्धी जी की हत्या हुई, तो इस बहाने को लेकर महाराष्ट्र और बम्बई सूबे में वहाँ के ग़ैर ब्राह्मण लोगों ने सैकड़ों ब्राह्मणों के घर फूंक दिये थे और पचासों ब्राह्मणों को मौत के घाट उतार दिया था. आज भी वहाँ ब्राह्मणों और ग़ैर ब्राह्मणों के बीच कम तनाव नहीं है. इसी तरह बंगाल में आज हर एक बंगाली के मन में मारवाड़ियों के ख़िलाफ़ नफ़रत पाई जाती है और वह इसी लिए कांग्रेस का भी विरोध करते हैं क्यों कि उनका ख़याल है कि पच्छिमी बंगाल की कांग्रेसी सरकार अपने सूबे के मारवाड़ी पूंजीपतियों से मिली हुई है.

بلوے شروع ہونے سے پہلے وہاں کے ہندو اچھوت، مسلمانوں کے ساتھ مل گئے تھے، کیونکہ وہ بھی اونچی جاتی کے دھنی ہندوؤں سے مالی حالت میں اسی طرح پچھڑے ہوئے تھے، جس طرح وہاں کے مسلمان پچھڑے ہوئے تھے۔

وہ حقیقت، جو شری جتیندر ناتھ نے بتائی، ایک بہت بڑی سچائی کو روشنی میں لاتی ہے۔ آج ہمارے سماج کا اقتصادی توازن یعنی آرتھک سنتلن اتنا بگڑ گیا ہے اور ایک طبقے کے لوگ دوسرے طبقے سے اتنے چوسے جا رہے ہیں کہ اُنکے دلوں میں ہمیشہ بدلے کی آگ بھڑکتی رہتی ہے۔ یہی کارن ہے کہ پچھلے زمانے میں ہندستان بھر کے اچھوتوں کی ایک بہت بڑی تعداد مسلم لیگ کے ساتھ تھی اور آج بھی اُن کے دلوں میں اونچی جاتی کے ہندوؤں کے خلاف کم نفرت اور غصہ نہیں پایا جاتا۔ سن ۱۹۴۸ میں جب گاندھی جی کی ہتیا ہوئی تو اس بہانے کو لیکر مہاراشٹر اور بمبئی صوبے میں وہاں کے غیر برہمن لوگوں نے سیکڑوں برہمنوں کے گھر پھونک دیئے تھے اور پچاسوں برہمنوں کو موت کے گھاٹ اُتار دیا تھا۔ آج بھی وہاں برہمنوں اور غیر برہمنوں کے بیچ کم تناؤ نہیں ہے۔ اسی طرح بنگال میں آج ہر ایک بنگالی کے من میں مارواڑیوں کے خلاف نفرت پائی جاتی ہے اور وہ اسی لئے کانگریس کا بھی وِرودھ کرتے ہیں کیونکہ اُن کا خیال ہے کہ پچھمی بنگال کی کانگریسی سرکار اپنے صوبے کے مارواڑی پونجی پتیوں سے ملی ہوئی ہے۔

तो इन सब घटनाओं और हक़ीक़तों से यही नतीजा निकलता है कि फ़िरकावारियत का एक बड़ा कारन हमारे समाज में फैली हुई अमीरी ग़रीबी का भयंकर भेद है. अकसर ऐसा भी हुआ है और हो रहा है कि समाज में जो आन्दोलन आर्थिक समानता क़ायम करने के लिए चलते हैं, उनको दबाने के लिए समाज के पूंजीपति फ़िरक़ेवारियत को उभारते हैं और जो गुस्सा उनके ख़िलाफ़ पैदा होता है उसे एक दूसरी तरफ़ मोड़ देते हैं. आज अगर इस बात की जाँच की जाय कि हिन्दू महासभा, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अकाली दल, मुस्लिम लीग और इसी तरह की दूसरी साम्प्रदायिक संस्थाओं को सबसे ज्यादा माली मदद कौन लोग देते हैं, तो हमें पता चलेगा कि इस सूची में सबसे ज्यादा नाम उन बड़े बड़े सरमायेदारों के हैं, जो एक तरफ़ चोरबाज़ारी करके समाज को चूस रहे हैं और दूसरी तरफ़ हमेशा अपनी जाति या फ़िरके की फ़िक्र में दुबले होने का स्वाँग रचाये रहते हैं. इसका साफ़ मतलब यह है कि हमारे देश में जब तक अमीरी ग़रीबी का भेद भाव क़ायम है तब तक फ़िरक़ावारियत को हवा भी मिलती ही रहेगी. इस लिए फ़िरक़ावारियत को मिटाने के लिये इस बात की भी ज़रूरत है कि हम उन आन्दोलनों की मदद करें, जो सरमायेदारी के ख़िलाफ़ चल रहे हैं.

श्री जितेन्द्रनाथ ने दूसरी बात यह कही कि पूरबी बंगाल में हिन्दुओं की हालत को बिगाड़ने और उनको ख़तरे में डालने के लिए वह लोग भी ज़िम्मेदार हैं, जो अक्सर हिन्दुस्तान में यह कहा करते

تو اِن سب گھٹناؤں آور حقیقتوں سے یہی نتیجہ نکلتا ھے که فرقه واریت کا ایک بڑا کارن ھمارے سماج میں پھیلی ھوئی امیری غریبی کا بھینکر بھید ھے. اکثر ایسا بھی ھوا ھے اور ھو رھا ھے که سماج میں جو آندولن آرتھک سمانتا قائم کرنے کے لئے چلتے ھیں، اُن کو دبانے کے لئے سماج کے پونجی پتی فرقه واریت کو اُبھارتے ھیں اور جو غصه اُن کے خلاف پیدا ھوتا ھے، اُسے ایک دوسری طرف موڑ دیتے ھیں. آج اگر اِس بات کی جانچ کی جائے که هندو مہاسبھا، راشٹریه سویم سیوک سنگھ اکالی دل، مسلم لیگ آور اِسی طرح کی دوسری سامپردائک سنستھاؤں کو سب سے زیادہ مالی مدد کون لوگ دیتے ھیں، تو ھمیں پته چلے گا که اِس سوچی میں سب سے زیادہ نام اُن بڑے بڑے سرمایه داروں کے ھیں، جو ایک طرف چور بازاری کرکے سماج کو چوس رھے ھیں آور دوسری طرف ھمیشه اپنی جاتی یا فرقے کی فکر میں دبلے ھونے کا سوانگ رچائے رھتے ھیں. اِس کا صاف مطلب یه ھے که ھمارے دیش میں جب تک امیری غریبی کا بھید بھاو قائم ھے، تب تک فرقه واریت کو ھوا بھی ملتی ھی رھے گی. اِس لئے فرقه واریت کو مٹانے کے لئے اِس بات کی بھی ضرورت ھے که ھم اُن آندولنوں کی مدد کریں جو سرمایه داری کے خلاف چل رھے ھیں.

شری جتیندر ناتھ نے دوسری بات یه کہی که پوربی بنگال میں ھندوؤں کی حالت کو بگاڑنے آور اُن کو خطرے میں ڈالنے کے لئے وہ لوگ بھی ذمه دار ھیں، جو اکثر ھندستان میں یه کہا

सावरकर के कलकत्ते पहुँचने पर वहाँ के हिन्दू भाइयों ने जो भद्दे पोस्टर निकाले थे उनमें पूरबी पाकिस्तान को फिर से जीतने की बातें लिखी गई थीं. श्री जितेन्द्रनाथ ने उन पोस्टरों की खास तौर पर आलोचना की.

श्री जितेन्द्रनाथ के भाषन के बाद श्री किशोरलाल मशरूवाला, क़ाहिरा यूनिवर्सिटी के प्रोफ़ेसर श्री एच. आई. हसन, फ़्रान्स की मागदा ट्राकम और डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद के भाषन हुए. उन सभी के भाषनों से यह आशा ज़ाहिर होती थी कि अगर कुछ कार्य कर्ता अपने जीवन को खतरे में डालकर दोनों देशों में एकता और प्रेम का प्रचार करें तो हालत काफ़ी सुधर सकती है, दरअसल यह एक बहुत बड़ी सचाई है, लेकिन आज इस सचाई पर अमल करने वाले हैं कितने? असल सवाल तो यह है.

हिन्दू, मुस्लिम एकता

पंडित सुन्दर लाल

चार लैक्चर जो उन्होंने सेन्ट्रल कन्सीलियेटरी बोर्ड ग्वालियर की दावत पर ग्वालियर में दिये.

सौ सफ़े की किताब की क़ीमत सिर्फ़ बारह आने.

किताब नागरी उर्दू दोनों लिखावटों में मिल सकती है.

मैनेजर "नया हिन्द", ४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद

ساورکر کے کلکتے پہونچنے پر وہاں کے ھندو بھائیوں نے جو بھدے پوسٹر نکالے تھے اُن میں پوربی پاکستان کو پھر سے جیتنے کي باتیں لکھی گئي تھیں. شری جتیندر ناتھ نے اُن پوسٹروں کي خاص طور پر آلوچنا کی.

شری جتیندر ناتھ کے بھاشن کے بعد شری کشور لال مشرو والا٬ قاھرہ یونیورسٹی کے پروفیسر شري ایچ - آئی - حسن٬ فرانس کي ماگدا ٹروکم اور ڈاکٹر راجیندر پرساد کے بھاشن ھوئے. اُن سبھی کے بھاشنوں سے یہ آشا ظاھر ھوتی تھي کہ اگر کچھ کاریہ کرتا اپنے جیون کو خطرے میں ڈالکر دونوں دیشوں میں ایکتا اور پریم کا پرچار کریں٬ تو حالت کافي سدھر سکتی ھے. دراصل یہ ایک بہت بڑي سچائی ھے لیکن آج اِس سچائی پر عمل کرنے والے ھیں کتنے؟ اصل سوال تو یہ ھے.

ھندو٬ مسلم ایکتا

پنڈت سندر لال کے

چار لیکچر جو اُنھوں نے کنسیلیئٹری بورڈ گوالیار کی دعوت پر گوالیار میں دئے. سو صفحے کی قیمت صرف بارہ آنے. کتاب ناگري اور اردو دونوں لکھاوٹوں میں مل سکتی ھے.

مینیجر٬ نیا ھند٬ - ۴۸ بائی کا باغ٬ الہ آباد

धरती की करवट

(भाई रघुपति सहाय "फ़िराक़")

सूरज चाँद अँगड़ाई लेंगे
तारे अपनी गति बदलेंगे
परबत, सागर लहरायेंगे
जब यह धरती करवट लेगी

हल, कुदाल फावड़े, बसूले
उठे हथौड़े बोल उठेंगे
नया जनम है आज़ादी का
देश के राजा, देश निवासी

परजा ही है देश का राजा
घर की चटाई राज सिंघासन
सब की टोपी राज मुकुट है
फूस का घर भी राज महल है

जनम जनम का पाप कटेगा
अब तक किस का राज रहा है ?
राजे, बाबू, सेठ, महाजन,
जमींदार दीवान, दरोगा,

دھرتی کی کروت

(بھائی رگھوپتی سہائے 'فراق')

سورج چاند انگڑائی لیں گے
تارے اپنی گتی بدلیں گے
پربت، ساگر لہرائیں گے
جب یہ دھرتی کروٹ لیگی

ہل، کدال، پھاوڑے، بسولے
اٹھے ہتھوڑے بول اٹھیں گے
نیا جنم ہے آزادی کا
دیش کے راجہ، دیش نواسی

پرجا ہی ہے دیش کا راجہ
گھر کی چٹائی راج سنگھاسن
سب کی ٹوپی راج مکٹ ہے
پھوس کا گھر بھی راج محل ہے

جنم جنم کا پاپ کٹے گا
اب تک کس کا راج رہا ہے ؟
راجے، بابو، سیٹھ، مہاجن
زمیندار، دیوان، داروغہ،

पंडित ठाकुर शेख और सैयद
साहब, मिस्टर, हाकिम, अफ़सर
सोना वाले चाँदी वाले
आढ़त वाले मंडी वाले
कोट, महल और कोठी वाले
गद्दी वाले, कुर्सी वाले
मसनद वाले, फ़र्शी वाले
परमिट वाले, लाइसेंस वाले
घिस्से वाले, ठस्से वाले
पट्टे वाले, सट्टे वाले
इनके चट्टे बट्टे वाले
अब तक इनका राज रहा है
देश पर अत्याचार रहा है
अब यह धरती करवट लेगी
अब यह दुनिया पलटा लेगी
भारत की काया पलटेगी
सब की क़िस्मत चमक जायेगी
कारीगर, मज़दूर, किसान
भारत के बेचैन जवान
दबे दबे बेनामो निशान
उभरेंगे बेशानो गुमान
मान न मान तेरा मेहमान

پنڈت · ٹھاکر · شیخ اور سید
صاحب · مسٹر · حاکم · افسر
سونا والے · چاندی والے
آڑھت والے · منڈی والے
کوٹ محل اور کوٹھی والے
گدی والے · کرسی والے
مسند والے · فرشی والے
پرمٹ والے · لیسنس والے
گھسے والے · ٹھسے والے
پٹے والے · سٹے والے
اُن کے چٹے بٹے والے
اب تک ان کا راج رہا ہے
دیش پر اتیا چار رہا ہے
اب یہ دھرتی کروٹ لے گی
اب یہ دنیا پلٹا لے گی
بھارت کی کایا پلٹے گی
سب کی قسمت چمک جائے گی
کاریگر · مزدور · کسان
بھارت کے بیچین جوان
دبے دبے بے نام و نشان
اُبھریں گے بے شان و گمان
مان نہ مان ترا مہمان

हमको जान हमें पहिचान
यही सँभालेंगे सब काम
राज पाट के मालिक होंगे
राज के करता धरता होंगे
सतजुग से भी बढ़कर होगा
राम राज से बढ़कर होगा

हर एक जुग से बढ़कर होगा
ब्राह्मण राज से बढ़कर होगा
क्षत्री राज में बढ़कर होगा
वैश्य राज में बढ़कर होगा
हिन्दू राज से बढ़कर होगा
बौद्ध राज से बढ़कर होगा
मुसलिम राज से बढ़कर होगा
मेहनत करने वालों का राज

खेती करने वालों का राज
माल बनाने वालों का राज
धन उपजाने वालों का राज
हुन बरसाने वालों का राज
इस ऊसर बंजर धरती को
इस जलती तपती परती को
स्वर्ग बनाने वालों का राज

ہم کو جان ہمیں پہچان
یہی سنبھالیں گے سب کام
راج پاٹ کے مالک ہونگے
راج کے کرتا دھرتا ہوں گے
ست جگ سے بھی بڑھ کر ہوگا
رام راج سے بڑھ کر ہوگا

ہر اک جگ سے بڑھ کر ہوگا
براہمن راج سے بڑھ کر ہوگا
چھتری راج سے بڑھ کر ہوگا
ویشیہ راج سے بڑھ کر ہوگا
ہندو راج سے بڑھ کر ہوگا
بودھ راج سے بڑھ کر ہوگا
مسلم راج سے بڑھ کر ہوگا
محنت کرنے والوں کا راج

کھیتی کرنے والوں کا راج
مال بنانے والوں کا راج
دھن اپجانے والوں کا راج
ہن برسانے والوں کا راج
اس اوسر بنجر دھرتی کو
اس جلتی تپتی پرتی کو
سورگ بنانے والوں کا راج

नये नियम से नये रूप में
नये रंग से नये ढंग में
खेती होगी
खेत और खलिहान का रोना

बीज, खाद, पानी का रोना
गाय की हाय, बैल का रोना
घास, खली, भूसे का रोना
ज़मींदार की मार का रोना

गाली और फटकार का रोना
धर पकड़ और बेगार का रोना
क़र्ज़े और ब्याज का रोना
बनिये और बज़्ज़ाज़ का रोना

इज़्ज़त और लाज का रोना
पटवारी की चाल का रोना
दंड, राजपड़ताल का रोना
साथी, लाल, बाल, का रोना

आये दिन के काल का रोना
हर चीज़ और हर बात का रोना
जुग जुग से दिन रात का रोना
नहीं रहेगा नहीं रहेगा

نئے نیم سے نئے روپ سے
نئے رنگ سے نئے ڈھنگ سے
کھیتی ہوگی
کھیت اور کھلیان کا رونا

بیج، کھاد، پانی کا رونا
گئے کی ھائے، بیل کا رونا
گھاس، کھلی، بھوسے کا رونا
زمیندار کی مار کا رونا

گالی اور پھٹکار کا رونا
دھر، پکڑ اور بیگار کا رونا
قرضے اور بیاج کا رونا
بنیئے اور بزاز کا رونا

عزت اور لاج کا رونا
پٹواری کی چال کا رونا
دنڈ، راج پڑتال کا رونا
ساتھی، لال، بال کا رونا

آئے دن کے کال کا رونا
ہر چیز اور ہر بات کا رونا
جگ جگ سے، دن رات کا رونا
نہیں رہیگا، نہیں رہیگا

दिन बदलेगा पाप कटेगा
साथी सब सन्ताप कटेगा
अन खलिहान से घर में आये
इसकी नौबत कब आती थी

अब तक छाती फाड़ परिश्रम
करके जो कुछ फ़सल उगाई
वह गाढ़ी भरपूर कमाई
दो दिन अपने काम न आई

ऊपर ऊपर उड़ जाती थी
रह जाते भूके के भूके
रह जाते नंगे के नंगे
रह जाते क़र्ज़े में डूबे

जीवन कटता ब्याज चुकाते
लेकिन अब कुछ होने को है
खेती, बाड़ी, बाग़ और जंगल
दूध, दही, घी, नाज और फल

गाँव में जो दौलत उपजेगी
वह सब की सब अपनी होगी
अब यह दुर्व्यवहार मिटेगा
अब यह अत्याचार मिटेगा

चालाकी में धौंस धाँस में
दल्लालों की फोड़ फाँस में

دن بدلے گا، پاپ کٹے گا
ساتھی سب سنتاپ کٹے گا
آن کھلیان سے گھر میں آئے
اس کی نوبت کب آتی تھی

اب تک چھاتی پھاڑ پرشرم
کرکے جو کچھ فصل اُگائی
وہ گاڑھی بھرپور کمائی
دو دن اپنے کام نہ آئی

اوپر اوپر اُڑ جاتی تھی
رہ جاتے بھوکے کے بھوکے
رہ جاتے ننگے کے ننگے
رہ جاتے قرضے میں ڈوبے

جیون کٹتا بیاج چکاتے
لیکن اب کچھ ہونے کو ہے
کھیتی، باڑی، باغ اور جنگل
دودھ، دہی، گھی، ناج اور پھل

گاؤں میں جو دولت اُپجے گی
وہ سب کی سب اپنی ہوگی
اب یہ دربیوہار مٹے گا
اب یہ اتیاچار مٹے گا

چالاکی میں دھونس دھانس میں
دلالوں کی پھوڑ پھانس میں

फुसलाने में बहकाने में
डरवाने में धमकाने में

लुट्टस पिट्टस की हलचल में
धन्ना सेठ के छल, बल, कल में
चतुर किसान नहीं आयेगा
वह अपना हिस्सा, अपना हक़
लेके रहेगा लेके रहेगा
जी के रहेगा मर के रहेगा
लेकिन अब कुछ करके रहेगा

हर बीघा में, हर एकड़ में
पैदावार अठगुनी होगी
भूख मिटेगी और घर घर में
अन्नपूरना वास करेगी

[शिक्षा में गोलमाल]

जात पात का भेद मिटेगा
ऊंच नीच का भेद मिटेगा
हिन्दू मुसलिम भेद मिटेगा
ब्राह्मन शुद्र बराबर होंगे
औरत मर्द बराबर होंगे
छोटे बड़े बराबर होंगे
बल, विद्या, धन, मान और पद
ओहदा, कुर्सी, इज्जत, शोहरत

پھسلانے میں بہکانے میں
ڈروانے میں دھمکانے میں

لٹس، پٹس کی ہلچل میں
دھنا سیٹھ کے چھل، بل، کل میں
چتر کسان نہیں آئے گا
وہ اپنا حصہ، اپنا حق
لیکے رہیگا، لیکے رہیگا۔
جی کے رہیگا، مر کے رہیگا
لیکن اب کچھ کرکے رہیگا

ہر بیگھہ میں، ہر ایکڑ میں
پیداوار آٹھ گنی ہوگی
بھوک مٹے گی اور گھر گھر میں
ان پورنا باس کرے گی

[شکشا میں گول مال]

ذات پات کا بھید مٹے گا
اونچ نیچ کا بھید مٹے گا
ہندو مسلم بھید مٹے گا
براہمن شودر برابر ہونگے
عورت مرد برابر ہونگے
چھوٹے بڑے برابر ہونگے
بل، ودیا، دھن مان اور پد
عہدہ، کرسی، عزت، شہرت

जान, माल, धन और हकूमत
बड़ी बड़ी जागीर, रियासत
पढ़ना, लिखना, सनद, लियाकत
बैठक बाज़ों की था दौलत

पा कर क़िस्मत के पत्तों के
चौवे, पंजे, सत्ते, अट्ठे
क्या ख़ुश थे उल्लू के पट्ठे

लगे हैं जब धक्के पर धक्के
छूटे तिड़ी बाज़ों के छक्के
सब जगह ये ले बैठे थे
सब कुछ यों हथिया बैठे थे
यों दुनिया पर छाये हुए थे

जैसे उनकी हो यह बपौती
अब देता है समय चुनौती
करीगर, मजदूर, किसान
इनकी बदनसीब सन्तान

पढ़ने लिखने का हक़ इनसे
छल बल कल से छीन लिया था
एक धोका फैला रक्खा था
"नीची" जात पाँत वालों के
बच्चों को मनुष्य कब जाना

دھرتی کی کروٹ

جان، مال، دھن اور حکومت
بڑی بڑی جاگیر ریاست
پڑھنا، لکھنا، سند، لیاقت
بیٹھک بازوں کی دھن دولت

سب کچھ یوں ہتھیا بیٹھے تھے
یوں دنیا پر چھائے ہوئے تھے

جیسے ان کی ہو یہ بپوتی
اب دیتا ہے سمے چنوتی
کاریگر، مزدور، کسان
ان کی بدنصیب سنتان

پڑھنے لکھنے کا حق ان سے
چھل بل کل سے چھین لیا تھا
اک دھوکا پھیلا رکھا تھا

पढ़ने लिखने की उमंग को
निर अधिकार चेष्टा माना
इनके इतनी अक़्ल नहीं है
इनके पास दिमाग़ नहीं

सूझ नहीं है बूझ नहीं है
माँ की कोख से यह जनमे
जनम लँडूरे जनम गँवार

इन्हें अँधेरे ही में रक्खो
रैन बसेरे ही में रक्खो
कभी न उभरे इनकी जात
कभी न चमके इनकी बात
कभी न दिन हो इनकी रात

चगड़ चतुर दुनिया में इनको
अंधा बहरा गूँगा रक्खो
घामड़ अनपढ़ डग्गा रक्खो
मैला और कुचैला रक्खो

हेटा रक्खो नीचा रक्खो
इनको चोंगा पोंगा रक्खो
क़लम न इनके हाथ में आये
फिर तलवार भी छिन जायेगी

राज की लंगरदार नाव की
फिर पतवार भी छिन जायेगी
अपना भरम बनाये रक्खो
जनता को भरमाये रक्खो

پڑھنے لکھنے کی امنگ کو
نر ادھیکار چیشٹا مانا
اِن کے اتنی عقل نہیں ہے
اِن کے پاس دماغ نہیں ہے

سوجھ نہیں ہے بوجھ نہیں ہے
ماں کی کوکھ سے یہ جنمے ہیں
جنم لنڈورے جنم گنوار

انہیں اندھیرے ہی میں رکھو
رین بسیرے ہی میں رکھو
کبھی نہ اُبھرے اِن کی ذات
کبھی نہ چمکے ان کی بات
کبھی نہ دن ہو اِن کی رات

چگڑ چتر دنیا میں اِن کو
اندھا بہرا گونگا رکھو.
گھامڑ ان‌پڑھ ڈگا رکھو
میلا اور کچیلا رکھو

ہیٹا رکھو نیچا رکھو
اِن کو چونگا پونگا رکھو
قلم نہ اِن کے ہاتھ میں آئے
پھر تلوار بھی چھن جائیگی

راج کی لنگردار ناؤ کی
پھر پتوار بھی چھن جائےگی
اپنا بھرم بنائے رکھو
جنتا کو بھرمائے رکھو

अब तक यह साज़िश थी लेकिन
अब यह जादू टूट चुका है
अब यह भाँडा फूट चुका है

पूरा ढोंग रचा रक्खा था
क्या अंधेर मचा रक्खा था
विद्या को दफ़ना रक्खा था
उस का रूप छिपा रक्खा था
दिन को रात बना रक्खा था

शब्दों का आडम्बर रच कर
मन गढ़न्त से एक बात का
सौ बिस्तार बना रक्खा था
एक ब्योपार जमा रक्खा था
कारोबार चला रक्खा था

ब्रह्मानंद सहोदर कविता
को बेकार बना रक्खा था
सीधी सादी बातों में भी
झूठी ऐंठन दे रक्खी थी

सहज को कठिन बना रक्खा था
सीध में टेढ़ लगा रक्खी थी
अड़बड़ शब्द गढ़े कुछ ऐसे
जिनको जनता सीख न पाये
जिनको जनता बोल न पाये

اب تک یہ سازش تھی لیکن
اب یہ جادو ٹوٹ چکا ہے
اب یہ بھانڈا پھوٹ چکا ہے

پورا ڈھونگ رچا رکھا تھا
کیا اندھیر مچا رکھا تھا
ودیا کو دفنا رکھا تھا
اُس کا روپ چھپا رکھا تھا
دن کو رات بنا رکھا تھا

شبدوں کا آڈمبر رچ کر
من گڑھنت سے ایک بات کا
سو بستار بنا رکھا تھا
اِک بیوپار جما رکھا تھا
کاروبار چلا رکھا تھا

برہما نند سہودر کویتا
کو بیکار بنا رکھا تھا
سیدھی سادی باتوں میں بھی
جھوٹی اینٹھن دے رکھی تھی

سہج کو کٹھن بنا رکھا تھا
سیدھ میں ٹیڑھ لگا رکھی تھی
اڑ بڑ شبد گڑھے کچھ ایسے
جن کو جنتا سیکھ نہ پائے
جن کو جنتا بول نہ پائے

जिनको जनता समझ न पाये
जिनको जनता सुन डर जायं

कोप घोंट लेने वालों का
सतरें पढ़ लेने वालो का
क़लम पकड़ लेने वालों का
काग़ज़ रँग देने वालों का

गिटपिट कर लेने वालों का
एक दरबार सजा रक्खा था
ज्ञान सभ्यता का अपने को
ठेकेदार बना रक्खा था

यारों ने हड़बोंग मचा कर
ढोंग रचा कर, स्वाँग रचा कर
तंतर, अंतर, छू मन्तर से
हौआ बना दिया विद्या को

सरस्वती के मंदिर को भी
बना दिया मछली बाज़ार
विद्या के पवित्र मंडप में
जब हम हाथ जोड़ कर जाते

पंडित हमको धता बताते
हम मुंह देखते रह जाते थे
यही सोचते रह जाते थे
हम निर्धन कंगालों से

جن کو جلتا سمجھ نہ پائے
جن کو جلتا سن ڈر جائے

کوش گھونٹ لینے والوںکا
سطریں پڑھ لینے والوں کا
قلم پکڑ لینے والوں کا
کاغذ رنگ دینے والوں کا

گٹ پٹ کر لینے والوں کا
اک دربار سجا رکھا تھا
گیان سبھیتا کا اپنے کو
ٹھیکے دار بنا رکھا تھا

یاروں نے ہڑ بونگ مچا کر
ڈھونگ رچاکر، سوانگ رچا کر
تنتر، جنتر، چھو منتر سے
ہوا بنا دیا: ودیا کو

سرسوتی کے مندر کو بھی
بنا دیا مچھلی بازار
ودیا کے پوتر منڈپ میں
جب ہم ہاتھ جوڑ کر جاتے

پنڈت ہم کو دھتا بتاتے
ہم منہ دیکھتے رہ جاتے تھے
یہی سوچتے رہ جاتے تھے
ہم نردھن کنگالوں سے

" नहा ख़फ़ा है
सरस्वती भी रूठ गई है
हम से सब करते है छूत
अब तक यही रवाज रहा है

"ऊँची ज़ात" ऊँचे घर वाले
पैसे वाले. ऊपर वाले
विद्या हासिल कर सकते थे
लिख सकते थे पढ़ सकते थे
र

उनके बच्चे हो सक ते थे
चचा भतीजे हो सक ते थे
भाई भांजे हो सक ते थे
जज्ज. कलक्टर और क मशनर

राज सभा के चौकस मेम्बर
डाक्टर और वकील, बैरिस्टर
इंजीनियर, टीचर. प्रोफेसर
वाइस चांसलर और चांसलर
सहोद
बन
तादी

फ़ौज के नायक फ़ौ ठन
फ़ौज के अफ़सर
बैंक डिरेक्टर,
बैंक मनेजर
कम्पनियों के
शेयर होल्डर
एम.ए., बी.ए.,
बी. टी. सी. टी.
गी, रागी. रतन पारखी
जिनको जन

कलाकार. ज्ञानी. विज्ञानी

صرف لکشمی نہیں خفا ہے
سرسوتي بھی روٹھ گئی ہے
ہم سے سب کرتے ہیں چھوت
اب تک یہي رواج روا ہے

"اونچي ذات" اونچے گھر والے
پیسے والے' اوپر والے
ودیا حاصل کر سکتے تھے
لکھ سکتے تھے پڑھ سکتے تھے

اُن کے بچے ہو سکتے تھے
چچا بھتیجے ہو سکتے تھے
بھائي بھانجے ہو سکتے تھے
جج' کلکٹر اور کمشنر

راج سبھا کے چوکس ممبر
ڈاکٹر اور وکیل بیرسٹر
انجینیر' ٹیچر' پروفیسر
وائس چانسلر اور چانسلر

فوج کے نائک' فوج کے افسر
بینک ڈایرکٹر' بینک منیجر
کمپنیوں کے شیر ہولڈر
ایم.اے.' بي اے.' بی.ٹی.سی.ٹی.

باگی' راگی' رتن پارکھي
کلاکار' گیانی' وگیانی

चित्रकार. शायर. मैलानी

वीर, सूरमा. धर्मी, दानी
आठों गाँठ कुमैत जवानी
जिसकी छवि नहिं जाय बखानी
"गिरा अनैन नैन बिन बानी"

लेकिन कब तक यह मनमानी ?
यारो दुनिया फ़ानी जानी
किस बिरते पर तत्ता पानी
अब न चलेगी आना कानी

" का बरखा जब कृषी सुखानी
समय चूकि पुनि का पछतानी"
अब यह सब दुनिया बदलेगी
अब यह सब काया पलटेगी

अब यह धरती करवट लेगी
अब किसान मजदूर के बच्चे
जिनको तुमने सड़ा रक्खा था
जिनको गधा बना रक्खा था

सब कुछ पढ़ लिख कर निकलेंगे
यही सजायेंगे हर कुरसी
यही सँभालेंगे सब ओहदे
तलवार और क़लम दोनों को

چتر کار، شاعر، سیلانی

ویر، سورما دھرمی، دانی
آٹھوں گانٹھ، کمیت جوانی
جسکی چھبی نہیں جائے بکھانی
" گرا انین نین بن بانی "

لیکن کب تک یہ من مانی
یارو دنیا آنی جانی
کس برتے پر تتا پانی
اب نہ چلے گی آنا کانی

" کا برکھا جب کرشی سکھانی
سمے چوکی پنی کا پچھتانی "
اب یہ سب دنیا بدلے گی
اب یہ سب کایا پلٹے گی

اب یہ دھرتی کروٹ لیگی
اب کسان مزدور کے بچے
جنکو تم نے سڑا رکھا تھا
جنکو گدھا بنا رکھا تھا

سب کچھ پڑھ لکھ کر نکلیں گے
یہی سجائیں گے ہر کرسی
یہی سنبھالیں گے سب عہدے
تلوار اور قلم دونوں کو

अपने हाथों में लेलेंगे
कलावन्त भी कलाकार भी
अब होंगी इनकी सन्तान
अब किसान मज़दूर और अफ़सर
सेना पति, जर्नैल, मिनिस्टर
बड़े वज़ीर गवर्नर जनरल
यह सब एक वर्ग के होंगे
भेद भाव सब मिट जायेंगे
एक अछेद, अभेद, अखंड
एक सजीव सुयोग समाज
भारत में आँखें खोलेगा
नई सभ्यता क़ायम होगी

[मज़दूरों, कारीगरों शिल्पकारों की ललकार]

तोड़ा धरती का सन्नाटा
किसने ? हम मज़दूरों ने
डंका बजा दिया आदम का
किसने ? हम मज़दूरों ने
दुनिया की अंधी नगरी में
जगमग दीप जलाया किसने
जग में रंगा रंग चमाचम
यह बाज़ार सजाया किसने

اپنے ہاتھوں میں لے لیںگے
کلاونت بھی کلاکار بھی
اب ہونگی اِن کی سنتان
اب کسان، مزدور اور افسر
سینا پتی، جرنیل، منسٹر
بڑے وزیر گورنر جنرل
یہ سب ایک ورگ کے ہوں گے
بھید بھاؤ سب مٹ جائیں گے
ایک اچھید، ابھید، اکھنڈ
ایک سجیو، سیوگ سماج
بھارت میں آنکھیں کھولے گا
نئی سبھیتا قائم ہوگی

[مزدور، کاریگروں شلپی کاروں کی للکار]

توڑا دھرتی کا سناٹا
کس نے؟ ہم مزدوروں نے
ڈنکا بجا دیا آدم کا
کس نے؟ ہم مزدوروں نے
دنیا کی اندھی نگری میں
جگ مگ دیپ جلایا کس نے؟
جگ میں رنگا رنگ چما چم
یہ بازار سجایا کس نے؟

कड़ी चटानों के, तेशे से
हमने सीने फाड़ दिये हैं
चार खूँट रहती दुनिया में
हमने झंडे गाड़ दिये हैं

इस धरती को छूकर हमने
चाँद सितारों को छेड़ा है
करके बसर काँटों पर साथी
हमने बहारों को छेड़ा है

अकसर इस धरती की छूटें
देव लोक पर पड़ जाती हैं
आज इसी दुनिया की आँखें
इन्द्रपुरी से लड़ जाती हैं

अपने इरादों की उठान में
रूहे तमद्दुन की बरनाई*
इन्हीं हथौड़ों के सरगम में
**तारीखों ने ली अँगड़ाई

मुहिन जदाड़ो और हड़प्पा
लाल क़िला और ताज महल
देख यलोरा और अजन्ता
कपिलवस्तु का राज महल

*सभ्यता की आत्मा का जवान होना

کڑی چٹانوں کے، تیشے سے
ہم نے سینے پھاڑ دئے ہیں
چار کھونٹ رہتی دنیا میں
ہم نے جھنڈے گاڑ دئے ہیں

اِس دھرتی کو چھوکر ہم نے
چاند ستاروں کو چھیڑا ہے
کرکے بسر کانٹوں پر ساتھی
ہم نے بہاروں کو چھیڑا ہے

اکثر اِس دھرتی کی چھوٹیں
دیو لوک پر پڑ جاتی ہیں
آج اِسی دنیا کی آنکھیں
اندر پوری سے لڑ جاتی ہیں

اپنے اِرادوں کی اُٹھان میں
روحِ تمدن کی برنائی*
انہیں ہتھوڑوں کے سرگم میں
**تاریخوں نے لی انگڑائی

موہن جداڑوں اور ہڑپا
لال قلعہ اور تاج محل
دیکھ ایلورا اور اجنتا
کپل وستو کا راج محل

बेल और बूटों के पर्दे में
हमने क्या क्या काम किये हैं
मुंह बन्धी कलियों की गिरहों में
हमने शोले बांध दिये हैं

महरमे आबेरवां—छनती है*
सात तहों से बदन की ज्योत
पर्दे पर्दे में रह रह कर
जैसे जागे मन की ज्योत

बारह अब रङ्ग सोलह सिंगार
गोकुल की राधा सजती है
इस दुनिया के बृन्दावन में
किसकी बंसी बजती है

कोख उजड़ जाये धरती की
फूट जाय मानव का भाग
याद रहे हम उठ जायें तो
लुट जाये दुनिया का सुहाग

हाथ हमारा ही घर घर में
लेके चराग़े शाम आया है
बुनियादों से रहा रहा
ख़ून हमारा काम आया है

* शहज़ादी जैबुन्निसा औरंगज़ेब के दरबार में ढाका का आबे रवाँ सात तह करके पहन कर आई थी तब भी औरंग ज़ेब ने कहा

بیل اور بوٹوں کے پردے میں
ہم نے کیا کیا کام کئے ھیں
منہ بندھی کلیوں کی گرھوں میں
ہم نے شعلے باندھ دئے ھیں

محرم آب رواں—چھنتی ھے *
سات تہوں سے بدن کی جیوت
پردے پردے میں رہ رہ کر
جیسے جاگے من کی جیوت

بارہ ابرنگ سولہ سنگار
گوکل کی رادھا سجتی ھے
اس دنیا کے برندا بن میں
کس کی بنسی بجتی ھے

کوکھ اُجڑ جائے دھرتی کی
پھوٹ جائے مانو کا بھاگ
یاد رہے ہم اُٹھ جائیں تو
لٹ جائے دنیا کا سہاگ

ھاتھ ھمارا ھی گھر گھر میں
لے کے چراغ شام آیا ھے
بنیادوں سے ردا ردا
خون ھمارا کام آیا ھے

* شہزادی زیب النسا اورنگ زیب کے دربار میں ڈھاکہ کا آب

नाम उभरने का न कभी ले
पेचो ख़म में निगाह जो डूबे
नक़्क़ाशी के अमर मोजज़े
मीनाकारी के वह अजूबे

इन हाथों की गुलकारी में
सुबहे बहार सांस लेती है
हमने दबा दी हैं वह आंचें
मिट्टी लौ पर लौ देती है

चौड़ी बुर्जों को जो देखे
शक़्क़ुल क़मर याद आ जाये
बुतख़ानों के रूप नगर में
सेहरे सामरी ग़श खा जाये

यूं जगमगा दिया धातों को
हो ठहराव पे चाल का धोका
साफ़ आंखों को हो जाता है
जामिद पर सय्याल का धोका

इन्हीं खुरदरे हाथों का जस है
या सनाई बोल उठी है
देख ज़रा बच्चों के खिलौने
साथी, मिट्टी बोल उठी है

मोजज़े = चमत्कार. शक़्क़ुलक़मर = मुहम्मद साहब ने एक बार इशारे से चाँद के दो टुकड़े [illegible]

نام اُبھرنے کا نہ کبھی لے
پیچ و خم میں نگاہ جو ڈوبے
نقاشی کے امر معجزے
میناکاری کے وہ عجوبے

اِن ہاتھوں کی گلکاری میں
صبح بہار سانس لیتی ہے
ہم نے دبا دی ہیں وہ آنچیں
مٹی لو پر لو دیتی ہے

چوڑی برجوں کو جو دیکھے
شق القمر یاد آ جائے
بتخانوں کے روپ نگر میں
سحر سامری غش کھا جائے

یوں جگمگا دیا دھاتوں کو
ہو ٹھہراؤ پہ چال کا دھوکا
صاف آنکھوں کو ہوجاتا ہے
جامد پر سیال کا دھوکا

اِنہیں کھردرے ہاتھوں کا جس ہے
یا صناعی بول اُٹھی ہے
دیکھ ذرا بچوں کے کھلونے
ساتھی، مٹی بول اُٹھی ہے

معجزہ = چمتکار. شق القمر = محمد صاحب نے ایک بار

चाँद और सूरज की किरनों से
चादर बुन कर रख देते हैं
इन्हीं हथौड़े की ज़रबों से
लोहा धुन कर रख देते हैं

करके बराबर रख देते हैं
ऊबड़ खाबड़ पेचो ख़म
कड़े कोस नरमा देते हैं
अपने धरती-तोड़ क़दम

ज़रा ठेस लगते ही साथी
नींद की दुनिया जाग उठती है
ठुकरा दें जिस पड़ी शिला को
बन के अहिल्या जाग उठती है

यूं गुदगुदा दिया हमने
संग का पहलू फड़क रहा
यूं उकसाया है जड़ता को
पत्थर का दिल धड़क रहा है

जान डाल दी तस्वीरों में
यूं हर ख़त चमकाया हमने
लौ दे उठते हैं वह नुक़ते
चूम लिया है जिनको क़लम ने

ज़रबों = चोटों. संग = पत्थर. ख़त ...

چاند اور سورج کی کرنوں سے
چادر بن کر رکھ دیتے ہیں
اِسی ہتھوڑے کی ضربوں سے
لوہا دھن کر رکھ دیتے ہیں

کرکے برابر رکھ دیتے ہیں
اُوبڑ کھابڑ پیچ و خم
کڑے کوس نرمادیتے ہیں
اپنے دھرتی توڑ قدم

ذرا ٹھیس لگتے ہی ساتھی
نیند کی دنیا جاگ اُٹھتی ہے
ٹھکرادیں جس پڑی شلا کو
بن کے اہلیا جاگ اُٹھتی ہے

یوں گد گدا دیا ہے ہم نے
سنگ کا پہلو پھڑک رہا ہے
یوں اُکسایا ہے جڑتا کو
پتھر کا دل دھڑک رہا ہے

جان ڈالدی تصویروں میں
یوں ہر خط چمکایا ہم نے
لودے اُٹھتے ہیں وہ نقطے
چوم لیا ہے جنکو قلم نے

लाख जतन से जीवन खेती
मुरझाने से रोका किसने ?
सूरज की इस अगिन गेंद को
किसने उछाला ?—लोका किसने ?

कई बार रहती दुनिया की
आई को हम टाल चुके हैं
कई बार तक़दीरे जहाँ की
आँखों में आँखें डाल चुके हैं

जब फ़ाक़ों पर फ़ाक़े थे
जब कोई उम्मीद नहीं थी
हमने जहां उंगलियां रख दीं
नब्ज़ें चलने लगीं दुनिया की

इस अधमरी दलित दुनिया को
अपने लहू से अमर किया
सुन लेना रन बोल उठेगा
मौत को हमने जीत लिया

जिस दम हल्ला बोल दिया है
दरिया, सहरा, काँप उठे हैं
हम से टक्कर लेकर साथी
परबत, सागर, हाँप उठे हैं

لاکھ جتن سے جیون کھیتی
مرجھانے سے روکا کس نے؟
سورج کی اِس اگنی گیند کو
کس نے اُچھالا؟ لوکا کس نے؟

کئی بار رہتی دنیا کی
آئی کو ہم ٹال چکے ہیں
کئی بار تقدیر جہاں کی
آنکھوں میں آنکھیں ڈال چکے ہیں

جب فاقوں پر فاقے تھے
جب کوئی اُمید نہیں تھی
ہم نے جہاں اُنگلیاں رکھ دیں
نبضیں چلنے لگیں دنیا کی

اِس ادھ مری دلت دنیا کو
اپنے لہو سے امر کیا
سن لینا، رن بول اُٹھے گا
موت کو اپنے جیت لیا

جس دم ہلہ بول دیا ہے
دریا، صحرا، کانپ اُٹھے ہیں

अपनी कमर के बूते से हम
पेंग चढ़ाते हैं जीवन की
दो झटकों में हिला कर रख दें
साथी चूलें इन्द्रासन की

सरकश पंच भूत का गट्ठा
हमने झटक के तोड़ दिया है
जिस क़िस्मत की मार ग़ज़ब थी
उसका पंजा मोड़ दिया है

दह्र की हर तख़रीबी क़ुव्वत※
को साँचे में ढाल लिया है
क़ुदरत के चैलेंज का हमने
कल्ला तोड़ जवाब दिया है

ख़ून पसीने के हिलोर में
तदबीरें मुंह देख रही हैं
इस लहराते आईने में
तक़दीरें मुंह देख रही हैं

अपने कस बल से सीनों में
तूफ़ानों को बन्द किया है
सधे हुए सौ सौ हाथों से
भूचालों को थाम लिया है

اپنی کمر کے بوتے سے ہم
پینگ چڑھاتے ہیں جیون کی
دو جھٹکوں میں ہلاکر رکھدیں
ساتھی چولیں اندراسن کی

سرکش پنچ بھوت کا گٹھا
نے جھٹک کے توڑ دیا ہے
قسمت کی مار غضب تھی
پنجہ موڑ دیا ہے

دھر کی ہر تخریبی قوت*
کو سانچے میں ڈھال لیا ہے
قدرت کے چیلنج کا ہم نے
کلا توڑ جواب دیا ہے

ذرا تھیس

خون پسینے کے ہلور میں
تدبیریں منھ دیکھ رہی ہیں
اس لہراتے آئینے میں
تقدیریں منھ دیکھ رہی ہیں

اپنے کس بل سے سینوں میں
طوفانوں کو بند کیا ہے
سدھے ہوئے سو سو ہاتھوں سے
بھو چالوں کو تھام لیا ہے

इस भूकी प्यासी दुनिया में
हुन पर हुन बरसाया किसने?

हर आफ़त से हर मुशकिल से
मज़दूरों की जोड़ रही है
उलटी पलटी आड़ी टेढ़ी
तक़दीरों से होड़ रही है

क्या यह वही दुनिया है साथी
कल जो फटे हाल में फिरती थी?
क्या यह वही बेचारी है जो
बार बार उठ कर गिरती थी?

साथी बोल लहू खौला कर
जीवन रूप रचाया किसने?
इस नंगी उजड़ी दुनिया को
सज कर दुल्हन बनाया किसने?

नभचुम्बी शिखरों पर साथी
हम बेखटके चढ़ जाते थे
जहाँ मौत जाते हुए झिझके
ताल ठोंक कर बढ़ आते थे

आकाशों के पातालों के
दिल का चोर निकाला किसने?
खाली था, भर कर छलकाया

اِس بھوکی پیاسی دنیا میں
ھن پر ھن برسایا کس نے ؟

ھر آفت سے ھر مشکل سے
مزدوروں کی جوڑ رھی ھے
اُلٹی پلٹی آڑی ٹیڑھی
تقدیروں سے ھوڑ رھی ھے

کیا یہ وھی دنیا ھے ساتھی
کل جو پھٹے حالوں پھرتی تھی؟
کیا یہ وھی بیچاری ھے جو
بار بار اٹھ کر گرتی تھی ؟

ساتھی بول لہو کھولا کر
جیون روپ رچایا کس نے
اس ننگی اُجڑی دنیا کو
سج کر دولھن بنایا کس نے

نبھ چمبی شکھروں پر ساتھی
ھم بے کھٹکے چڑھ جاتے تھے
جہاں موت جاتے ھوئے جھجھکے
تال ٹھونک کر بڑھ آتے تھے

آکاشوں کے پاتالوں کے
دل کا چور نکالا کس نے

ओट में छिपी हुई तहज़ीबों
का घूँघट सरकाया किसने?
शरमीली तक़दीर की देवी
का आँचल ढलकाया किसने?

काम चोर सपनों की काया
में शोला भड़काया किसने?
बदन चोर इस प्रकृति कामिनी
का सीना धड़काया किसने?

परत परत को इस धरती के
साथी, खोल दिया है किसने?
छिपे दफ़ीनों पर क़ुदरत के
धावा बोल दिया है किसने?

जीवन के समुद्र मंथन में
हमने भंवर क्या डाले हैं
भव सागर से इन हाथों ने
क्या क्या रतन निकाले हैं

वन उपवन थे, हर काँटे से
हंसता फूल खिलाया किसने?
पत्थर के पथरीले दिल को
तप तप कर पिघलाया किसने?

इस ऊसर बंजर धरती पर
[illegible]

اوٹ میں چھپی ہوئی تہذیبوں
کا گھونگھٹ سرکایا کس نے؟
شرمیلی تقدیر کی دیوی
کا آنچل ڈھلکایا کس نے؟

کام چور سپنوں کی کایا
میں شعلہ بھڑکایا کس نے؟
بدن چور اس پرکرتی کامنی
کا سینہ دھڑکایا کس نے؟

پرت پرت کو اس دھرتی کے
ساتھی، کھول دیا ہے کس نے؟
چھپے دفینوں پر قدرت کے
دھاوا بول دیا ہے کس نے؟

جیون کے سمدر منتھن میں
ہم نے بھنور کیا ڈالے ہیں
بھوساگر سے ان ہاتھوں نے
کیا کیا رتن نکالے ہیں

بن اُپون تھے، ہر کانٹے سے
ہنستا پھول کھلایا کس نے؟
پتھر کے پتھریلے دل کو
تپ تپ کر پگھلایا کس نے؟

اس اوسر بنجر دھرتی پر
[illegible]

कुस्तुनतुनिया के कंगूरे
क़स्रे कै, क़स्रे बहराम**

काशी, दिल्ली, इलियम, पीसा‡
के वह धौरहरे मीनार
उज्जैन और शीराज़ और ग़ज़नी
अल हमरा के दरो दीवार

नीले सपनों की झिलमिल में§
एटलांटिस का वह जल-सेज
जुग जुगान्तर के विर्से को
पीढ़ी पीढ़ी दिया सहेज

---

* कलाकारी.

**चक्रवर्ती राजा केकाउस और शाह बहराम के राज महल.

‡ इलियम—ट्राय नगर का एक नाम इलियम भी है. पीसा—नगर इटली में है जहाँ का तिरछा मीनार मशहूर है.

§ कहा जाता है कि अब से कई हज़ार बरस पहले इटली में रूम सागर से के तट पर एटलांटिस नामी एक बहुत बड़ा नगर बसा हुआ था, जो अचानक रूम सागर में डूब गया.

مصر دیش کے وہ اہرام*
قسطنطنیہ کے کنگورے
قصر کے ، قصر بہرام**

کاشی ، دلی ، ایلیم ، پیسا ‡
کے وہ دھور ہرے ، مینار
اُجین اور شیراز اور غزنی
الحمرا کے درو دیوار

نیلے سپنوں کی جھلمل میں §
اٹلانٹس کا وہ جل سیج
جگ جگانتر کے ورثے کو
پیڑھی پیڑھی دیا سہیج

---

* کلا کاری ۔

** چکرورتی راجہ کیکاؤس اور شاہ بہرام کے راج محل ۔

‡ اِلیم—ترائے نگر کا ایک نام اِلیم بھی ہے ۔ پیسا—نگر اِٹلی میں ہے جہاں کا ترچھا مینار مشہور ہے ۔

§ کہا جاتا ہے کہ اب سے کئی ہزار برس پہلے اِٹلی میں روم ساگر کے تٹ پر اٹلانٹس نامی ایک بہت بڑا نگر بسا ہوا تھا ، جو اچانک روم ساگر میں ڈوب گیا ۔

मारीशस, कीनिया, टंगानिका
लङ्का, बन्का, सिंगापूर
यह किसने लहलहा दिया है
जल थल को नजदीक और दूर

झलक रहा है नगर मास्को
नव युग का वह जरोसलीम
वह जादू निर्मान कला के
लेनिनग्राड और नीपरडेन*

भूमंडल पर जुग का जुग से
रिश्ता नाता जोड़ आये हैं
क़दम क़दम पर इस दुनिया में
अपनी निशानी छोड़ आये हैं

सहरा को जो चमन बना दें
ऐसे दीवाने कम होंगे
आँख उठा कर हद्दे नजर तक
देखोगे तो हमीं हम होंगे

"पत्ता पत्ता, बूटा बूटा
हाल हमारा जाने है
जाने न जाने गुल ही न जाने
बाग़ तो सारा जाने है"

(महा कवि 'मीर')

ماریشس ، کینیا ، ٹنگانیکا
لنکا ، بنکا ، سنگا پور
یہ کس نے لہلہا دیا ھے
جل تھل کو نزدیک اور دور

جھلک رھا ھے نگر ماسکو
نو یگ کا وہ جر و سلیم
وہ جادو نرمان کلا کے
لینن گراڈ اور نیپر ڈین*

بھومنڈل پر جگ کا جگ سے
رشتہ ناتا جوڑ آئے ھیں
قدم قدم پر اِس دنیا میں
اپنی نشانی چھوڑ آئے ھیں

صحرا کو جو چمن بنادیں
ایسے دیوانے کم ھوں گے
آنکھ اُٹھاکر حد نظر تک
دیکھوگے تو ھمیں ھم ھونگے

"پتہ پتہ ، بوٹا بوٹا
حال ھمارا جانے ھے
جانے نہ جانے گل ھی نہ جانے
باغ تو سارا جانے ھے"

(مہا کوی 'میر')

* रूस में नेपर नदी के बांध पर पानी का सब से बड़ा खजाना.

* روس میں نیپرندی کے باندھ پر پانی کا سب سے بڑا خزانہ .

ये पहियों का चक्कर खाना
यह घड़ घड़ घड़, यह ज़ीरो बम*
सय्यारों** का मिल कर गाना

दहड़ दहड़ जलते फ़रनेस से
सूरज-मंडल झपक गया है
अन्धकार के सीने में भी
अकसर कोंदा लपक गया है

लाख करवटें लेता शोला
बज्र को भी पिघला देता
ब्वायलर होंक रहा है गोया
ज्वालामुखी सांसें लेता है

बरसाती हैं फूल अंजन के
लाल अंगारों की बौछारें
सुनों खनकते कल पुर्ज़ों में
सौते सरमदी की झनकारें‡

यह मशीन की गड़गड़ाहटें
धरती की छाती हिल जाय
धुंआँ चिमनियों से उठता है
गत पर जैसे नाग लहराय

---

* ज़ीरो बम = ताल सम. ** सय्यारों—नक्षत्रों.
‡ सौते सरमदी = स्वर्गीय संगीत.

یہ پہیوں کا چکر کھانا
یہ گھڑ گھڑ گھڑ ' یہ زیر و بم*
سیاروں** کا مل کر گانا

پھر دھڑ جلتے فرنس سے
سورج منڈل جھپک گیا ہے
اندھکار کے سینے میں بھی
اکثر کوندا لپک گیا ہے .

لاکھ کروٹیں لیتا شعلہ
بجر کو بھی پگھلا دیتا ہے
بوائلر ہونک رہا ہے گویا
جوالا مکھی سانسیں لیتا ہے

برساتی ہیں پھول انجن کے
لال انگاروں کی بوچھاریں
سنو کھنکتے کل پرزوں میں
صوت سرمدی کی جھنکاریں‡

یہ مشین کی گڑ گڑاہٹیں
دھرتی کی چھاتی ہل جائے
دھواں چمنیوں سے اُٹھتا ہے
گت پر جیسے ناگ لہرائے

---

* زیرو بم = تال سم . **سیاروں —نچھتروں .
‡ صوت سرمدی = سورگی سنگیت .

जीवन की काली रातों का
धरती जहाँ पता देती है
गाती हुई मशीनों की लय
वहाँ चराग़ जला देती है

रेलों की घन गरज, जहाज़ों
का वह सागर फाड़ बढ़ाव
साफ़ मण्डलाकार फ़ज़ा में
तैय्यारों का निडर चढ़ाव*

नदियों का मुंह मोड़ दिया है
वीराना लहराता है
रेगिस्तानों में अब पानी
गगन खेलता जाता है

मज़दूरों के करामात हैं
मज़दूरों के पस्तो बलन्द
किस करवट से चन्द्रलोक पर
फेंकी है बेलाग कमन्द

कर्मयोग की महा शक्ति को
हमने अपने साथ लिया है
इस जीवन के शेष नाग को
इन हाथों ने नाथ लिया है

* फ़ज़ा—वायुमण्डल. तैयारों—जहाज़ों.

جیون کی کالی راتوں کا
دھرتی جہاں پتہ دیتی ہے
گاتی ہوئی مشینوں کی لے
وہاں چراغ جلا دیتی ہے

ریلوں کی گھن گرج ' جہازوں
کا وہ ساگر پھاڑ بڑھاؤ
صاف منڈلاکار فضا میں
طیاروں کا نڈر چڑھاؤ*

ندیوں کا منھ موڑ دیا ہے
ویرانہ لہراتا ہے
ریگستانوں میں اب پانی
گگن کھیلتا جاتا ہے

مزدوروں کے کرامات ہیں
مزدوروں کے پست و بلند
کس کروٹ سے چندر لوک پر
پھینکی ہے بے لاگ کمند

کرم یوگ کی مہا شکتی کو
ہم نے اپنے ساتھہ لیا ہے
اِس جیون کے شیش ناگ کو
اِن ہاتھوں نے ناتھ لیا ہے

* فزا—وایو منڈل طیاروں—جہازوں .

और हमीं पामाल. यह क्या है ?
हम दुनिया को बचाने वाले
और इतने बदहाल. यह क्या है ?

हमको भूका रख कर हमसे
धन कुबेर का काम लिया है
अपनी दशा सोच कर अकसर
हमने कलेजा थाम लिया है

साथी मरता क्या नहीं करता
किस किस पर इल्जाम धरे
जम जम जियें यह प्यारी दुनिया
लेकिन हम बे मौत मरे

अपने पसीने का जम जाना*
धन, पूँजी. सरमायादरी
सब अपने ही लहू से पले हैं
सेठ. महाजन. राज अधिकारी

सब अपनी ही धमा धर्मी है
आये दिन जो माल उड़ते हैं
सब अपनी ही लहर बहर है
अपने लहू से गुलाल उड़ते हैं

*"Capital is congealed labour"—Marx.

اور ہمیں پامال· یہ کیا ہے ؟
ہم دنیا کے بچانے والے
اور اتلے بدحال · یہ کیا ہے ؟

ہمکو بھوکا رکھ کر ہم سے
دھن کبیر کا کام لیا ہے
اپنی دشا سوچ کر اکثر
ہم نے کلیجہ تھام لیا ہے

ساتھی مرتا کیا نہیں کرتا
کس کس پر الزام دھرے
جم جم جئے یہ پیاری دنیا
لیکن ہم بے موت مرے

اپنے پسینے کا جم جانا*
دھن · پونجی · سرمایہ داری
سب اپنے ہی لہو سے پلے ہیں
سیٹھ، مہاجن، راج ادھیکاری

سب اپنی ہی گھما گھمی ہے
آئے دن جو مال اُڑتے ہیں
سب اپنی ہی لہر بحر ہے
اپنے لہو سے گلال اُڑتے ہیں

* "Capital is congealed labour"—Marx.

हमको निर्धन रख के इन्हों ने
पाट लिये हैं अपने खज़ाने
हमें उजाड़ के इन सेठों ने
सजा लिये अपने काशाने*

बाग़ में बस इनको ज़हरीले
काँटे बोना आता है
इनके अनर्थ को देख देख कर
साथी रोना आता है.

कैसा अपना देस अपना घर
साथी अपना बस है उतना
फटे नाखुनों में जितना है
टुकड़ा भारत की मिट्टी का

पानी में यह आग लगा दें
सेठ, महाजन, एक काइयाँ
जंग की घातें सुलह की बातें
धमा चौकड़ी उड़न घाइयाँ

जब जब जंग छिड़ी देशों में
जो भी पड़ी हम पर ही पड़ी
भुस में चिङ्गी देकर साथी
देख जमालो दूर खड़ी.

* काशाने = बड़े बड़े घर या महल.

ہمکو نردھن رکھ کے اِنہوں نے
پاٹ لئے ہیں اپنے خزانے
ہمیں اُجاڑ کے اِن سیٹھوں نے
سجا لئے اپنے کاشانے*

باغ میں بس اِن کو زہریلے
کانٹے بونا آتا ہے
اِن کے اَنرتھ کو دیکھ دیکھ کر
ساتھی رونا آتا ہے

کیسا اپنا دیس اپنا گھر
ساتھی اپنا بس ہے اتنا
پھٹے ناخنوں میں جتنا ہے
ٹکڑا بھارت کی مٹی کا

پانی میں یہ آگ لگا دیں
سیٹھ، مہاجن، ایک کائیاں
جنگ کی گھاتیں صلح کی باتیں
دھما چوکڑی، اُڑن گھائیاں

جب جب جنگ چھڑی دیشوں میں
جو بھی پڑی ہم پر ہی پڑی
بھس میں چنگی دیکر ساتھی
دیکھ جمالو دور کھڑی

*کاشانے = بڑے بڑے گھر یا محل

अबों के हैं वारे न्यारे
दांव भी हैं दोहरे दोहरे
चालें इनकी बाज़ी इनकी
हम हैं बस शतरंज के मोहरे

यह हमसे इनसाफ़ करेंगे ?
क्या बकते हो ?—राम कहो
इनके बही खाते से हमें क्या
लेना एक न देना दो

यह और उगलें अपना मुनाफ़ा ?
कह सुन कर सब हार गये
नोटों के, सोने चाँदी के
यह तो पहाड़ डकार गये

नर्म भी पड़ के, गर्म भी पड़ के
दुनिया को देते हैं भरें
यह जीवन का रथ खींचेंगे ?
राह के अड़ियल, थान के टर्रे

काले रुपयों* से बेखटके
भरते गये यह अपनी तिजोरी
सब भौचक्के रह जाते थे
करता कौन इनसे बरजोरी

* Black money.

اربوں کے ہیں وارے نیارے
دانوں بھی ہیں دوھرے دوھرے
چالیں اِن کی بازی اِن کی
ہم ہیں بس شطرنج کے مہرے

یہ ہم سے اِنصاف کریں گے ؟
کیا بکتے ہو ؟ — رام کہو
اِن کے بہی کھاتے سے ہمیں کیا
لینا ایک نہ دینا دو

یہ اور اُگلیں اپنا منافع ؟
کہہ سنکر سب ہار گئے
نوٹوں کے، سونے چاندی کے
یہ تو پہاڑ ڈکار گئے

نرم بھی پڑکے، گرم بھی پڑکے
دنیا کو دیتے ہیں بھرے
یہ جیون کا رتھ کھینچیں گے ؟
راہ کے آڑیل، تھان کے ٹرے

کالے روپیوں* سے بے کھٹکے
بھرتے گئے یہ اپنی تجوری
سب بھوچکے رہ جاتے تھے
کرتا کون اِن سے بر جوری

Black money. *

यह सब मुफ़्तखोर हैं साथी
इनके साथ मुरौवत कैसी
यह दुनिया है इनकी मिलकियत
इस दुनिया की ऐसी तैसी

निपटो अब बिफरी जनता से
करनी धरनी ले कर चाटो
मुट्ठी भर भर के दुनिया में
बोई हवा बवंडर काटो

सङ्गीनों से बन्दूकों से
तुमने किये हज़ारों वार
बारी है अब मज़दूरों की
"इक कचलोहिया आड़ो हमार" (आल्हा)

दबसठ से कब काम चला है
लोहा ही लोहे को काटे
साथी सुना नहीं क्या तूने
सीधे का मुंह कुत्ता चाटे

खेत्यौनी में खड़ग-खम्भ में
सब में व्यापे हम हुशियार
इन्हीं ड्योढ़ियों के खम्बों से
लेंगे हम नरसिंह औतार

बेकारी, भुकमरी, लड़ाई
रिशवत और चोर बाज़ारी

یہ سب مفت خور ہیں ساتھی
ان کے ساتھ مروت کیسی
یہ دنیا ہے اِن کی ملکیت
اِس دنیا کی ایسی تیسی

نپٹو اب بپھری جنتا سے
کرنی دھرنی لیکر چاٹو
مٹھی بھر بھر کے دنیا میں
بوئی ہوا بونڈر کاٹو

سنگینوں سے بندوقوں سے
تم نے کئے ہزاروں وار
باری ہے اب مزدوروں کی
"اک کچلوھیا آڑو ھمار" (آلھا)

دب سٹھ سے کب کام چلا ہے
لوھا ھی لوھا کو کاٹے
ساتھی سنا نہیں کیا تونے
سیدھے کا منھ کتا چاٹے

کھیتونی میں کھڑگ کھمب میں
سب میں بیاپے ہم ھشیار
انھیں دیوڑھیوں کے کھمبوں سے
لیں گے ہم نر سنگھ اوتار

بیکاری ، بھوک مری ، لڑائی
رشوت اور چور بازاری

सबकी जड़ सरमायादारी

ठोकर पर ठोकर खाकर भी
अपनी मंज़िल से बेगाने
आँख के अंधे नाम नयनसुख
हमको चले हैं राह बताने

आज वही खाते वालों से
सदियों का लेखा हम लेंगे
आटे दाल का भाव खुलेगा
जिस दम जमा खर्च समझेंगे

लाल, जवाहर, सोना, चाँदी
कोमिंटाँग पर किया निछावर
क्यों न हो ? डालर-साम्राज का
नाच रहा था भूत जो सर पर

उस दौलत से अमरीका का
जोबन और सँवारा होता
आज अमरीका एक ज़माने की
आँखों का तारा होता

बैंकों, मिलों, कारखानों को
हम जो हाथों में ले लेते
हुन बरसा देते साथी हम
देश को सोने से मढ़ देते

६

سب کی جڑ سرمایہ داری

ٹھوکر پر ٹھوکر کھا کر بھی
اپنی منزل سے بیگانے
آنکھ کے اندھے نام نین سکھ
ہم کو چلے ہیں راہ بتانے

آج وہی کھاتے والوں سے
صدیوں کا لیکھا ہم لیں گے
آٹے دال کا بھاؤ کھلیگا
جس دم جمع خرچ سمجھینگے

لال ، جواہر ، سونا ، چاندی
کومنتانگ پر کیا نچھاور
کیوں نہو ؟ ڈالر سامراج کا
ناچ رہا تھا بھوت جو سر پر

اس دولت سے امریکہ کا
جوبن اور سنوارا ہوتا
آج امریکہ ایک زمانے کی
آنکھوں کا تارا ہوتا

بینکوں ، ملوں ، کارخانوں کو
ہم جو ہاتھوں میں لے لیتے
ہن برسا دیتے ساتھی ہم
دیش کو سونے میں مڑھ دیتے

यू. एन. ओ. में यूनेस्को में*
रूस पे दोष लगाते जाओ
करके बेहया तक़रीरें तुम
अपनी झेंप मिटाते जाओ

जापान और पच्छिमी जर्मनी
यूनान. इटली, यूगोसलाविया.
कश्मीर और नैपाल और तिब्बत
साउथ 'कोरिया और मलाया

तोड़ फोड़ में हर्ज नहीं है
कुछ तो करें जब जी ललचाये
चोर अगर चोरी न करे तो
हेराफेरी से भी जाये

चीन को मत तसलीम करो
यारों ने ढब क्या क्या सोचे
ठीक तो है, खिसियानी बिल्ली
कुछ न बने तो खम्बा नोचे

अब फ़ारमूसा पर नज़रें हैं
गो यह जगह है निहायत छोटी
लेकिन अब इसको क्या कीजे
भागे भूत की बहुत लंगोटी

* UNESCO.

یو. این. او. میں یونیسکو میں*
روس نه دوش لگاتے جاؤ
کرکے بے حیا تقریریں تم
اپنی جھینپ مٹانے جاؤ

جاپان اور پچھمی جرمنی
یونان، اٹلی، یوگو سلاویا
کشمیر اور نیپال اور تبت
ساؤتھ کوریا اور ملایا

توڑ پھوڑ میں ھرج نہیں ھے
کچھ تو کریں جب جی للچائے
چور اگر چوری نه کرے تو
ھیرا پھیری سے بھی جائے

چین کو مت تسلیم کرو
یاروں نے ڈھب کیا کیا سوچے
ٹھیک تو ھے، کھسیانی بلی
کچھ نه بنے تو کھمبا نوچے

اب فارموسا پر نظریں ھیں
گو یه جگه ھے نہائت چھوٹی
لیکن اب اِسکو کیا کیجے
بھاگے بھوت کو بہت لنگوٹی

* UNESCO.

हिन्दी चीन में टाँग अड़ाई*
डट गये नये अखाड़े में तुम
और जो यहाँ भी मुंह की खाई

मार्शल एड, एटलांटिक-पेक्ट
खाने तड़ पड़ भरते जाओ
इसी तरह दुनिया भर में तुम
गड़बड़, सड़बड़ करते जाओ

वाल स्ट्रीट के सट्टे बाजो
कांप जाओ इस लशकर से
हिटलर, च्यांग के उड़ा दिये सर
जिसने अपनी ठोकर से

जङ्ग से तुमको लाभ हुआ जो
उसको जोड़ो और शरमाओ
कण्ठ में अटके जीत के दावे
गिनो अगर तुम रूस के घाव

तुमने हिटलर को शिकस्त दी
कहते शर्म नहीं आती ?
इतने दांत तुम्हारे मुंह में
झूट की आंखें हैं झुक जाती

* Indo-China.

ھند چین میں ٹانگ آڑائی*
ڈٹ گئے نئے اکھاڑے میں تم
اور جو یہاں بھی منہ کی کھائی

مارشل ایڈ' ایٹلانٹک پیکٹ
خانے تڑ پڑ بھرتے جاؤ
اِسی طرح دنیا بھر میں تم
گڑ بڑ' سڑ بڑ کرتے جاؤ

وال اِسٹریٹ کے سٹے بازو
کانپ جاؤ اُس لشکر سے
ھٹلر' چیانگ کے اُڑا دئے سر
جس نے اپنی ٹھوکر سے

جنگ سے تمکو لابھ ھوا جو
اُسکو جوڑو اور شرماؤ
کنٹھ میں اٹکیں جیت کے دعوے
گنو اگر تم روس کے گھاؤ

تم نے ھٹلر کو شکست دی
کہتے شرم نہیں آتی؟
اِتنے دانت تمہارے منھ میں
جھوٹ کی آنکھیں ھیں جھک جاتی

* Indo-China.

जबरदस्त जर्मन फ़ौजों से
लड़े अकेले तुम या रूस ?
जीते हुए दुशमन को भगाते
बर्लिन पहुंचे तुम या रूस ?

निगल लिये जाने पर किसने
पेट अजगर का फाड़ दिया है ?
सब से पहिले राइचस टाग पर
किसने झंडा गाड़ दिया है ?

आज रूस फुंक जाने पर भी
पनप उठा है चमक उठा है
तुम पर आंच न आई लेकिन,
बाग़ तुम्हारा सूख चला है

दुनिया भर बाजार है जिसका
एक मंडी हेरा फेरी की
उस अमरीका को यह हालत ?
यह बेकारी. धत तेरी की *

ठंडी लड़ाई आखिर कब तक
एक दुनिया से रहेगी जारी
अम्न के सच्चे दिलदारों से
बात न की. तुमने झक मारी

* इस समय अमरीका में एक करोड़ मजदूर बेकार हैं.

زبردست جرمن فوجوں سے
لڑے اکیلے تم یا روس ؟
جیتے ہوئے دشمن کو بھگاتے
برلن پہونچے تم یا روس ؟

نگل لئے جانے پر کس نے
پیٹ اجگر کا پھاڑ دیا ھے ؟
سب سے پہلے رائچس تاگ پر
کس نے جھنڈا گاڑ دیا ھے ؟

آج روس پھنک جانے پر بھی
پنپ اُٹھا ھے چمک اُٹھا ھے
تم پر آنچ نہ آئی لیکن ،
باغ تمھارا سوکھ چلا ھے

دنیا بھر بازار ھے جسکا
ایک منڈی ھیرا پھیری کی
اُس امریکہ کی یہ حالت؟
یہ بیکاری دھت تیری کی*

ٹھنڈی لڑائی آخر کب تک
اِک دنیا سے رھیگی جاری
امن کے سچے دلداروں سے
بات نہ کی ، تم نے جھک ماری

* اِس سمے امریکہ میں ایک کروڑ مزدور بیکار ھیں .

दुश्मन ने रस्सा बांध चुके है
ठोकर देंगे, धक्का देंगे
उसी घड़ी हम दम लेंगे जब
चोर को घर तक पहुंचा देंगे

अब क्यों देर लगायें साथी
अब तो कमर दुश्मन की खम है
आधी दुनिया जीत चुके हैं
अब तो मंजिल चार क़दम है

दुनिया नई बसायेंगे हम
सुन्दर साज सजा देंगे
धन्ना सेठों के महलों की
ईंट से ईंट बजा देंगे

दुनिया हाथ नहीं आती है
दुनिया ले ली जाती है
क़िस्मत नहीं बदलती साथी
क़िस्मत बदली जाती है

मज़दूरों की दुनिया जागी
कटते कटते रात कटी
वह आकाश कलस हिलते हैं
धरती ने करवट बदली

दुनिया जिसे "आज" कहती है
संगम कई जुगों का है

دشمن نے رسا باندھ چکے ہیں
ٹھوکر دیں گے، دھکا دیں گے
اُسی گھڑی ہم دم لیں گے جب
چور کو گھر تک پہونچا دیں گے

اب کیوں دیر لگائیں ساتھی
اب تو کمر دشمن کی خم ہے
آدھی دنیا جیت چکے ہیں
اب تو منزل چار قدم ہے

دنیا نئی بسائیں گے ہم
سندر ساج سجا دیں گے
دھنا سیٹھوں کے محلوں کی
اینٹ سے اینٹ بجا دیں گے

دنیا ہاتھ نہیں آتی ہے
دنیا لے لی جاتی ہے
قسمت نہیں بدلتی ساتھی
قسمت بدلی جاتی ہے

مزدوروں کی دنیا جاگی
کٹتے کٹتے رات کٹی
وہ آکاش کلس ہلتے ہیں
دھرتی نے کروٹ بدلی

دنیا جسے "آج" کہتی ہے
سنگم کئی جگوں کا ہے

* जबरदस्त जर्मन फ़ौजों से
लड़े अकेले तुम या रूस ?
जीते हुए दुशमन को भगाते
बर्लिन पहुंचे तुम या रूस ?

नगल लिये जाने पर किसने
पेट अजगर का फाड़ दिया है ?
सब से पहिले राइचस टाग पर
किसने झंडा गाड़ दिया है ?

आज रूस फुंक जाने पर भी
पनप उठा है चमक उठा है
तुम पर आंच न आई लेकिन,
बाग़ तुम्हरा सूख चला है

दुनिया भर बाजार है जिसका
एक मंडी हेरा फेरी की
उस अमरीका की यह हालत ?
यह बेकारी, धत तेरी की *

ठंडी लड़ाई आखिर कब तक
एक दुनिया से रहेगी जारी
अम्न के सच्चे दिलदारों से
[illegible]

زبردست جرمن فوجوں سے
لڑے اکیلے تم یا روس ؟
جیتے ہوئے دشمن کو بھگاتے
برلن پہونچے تم یا روس ؟

نگل لئے جانے پر کس نے
پیٹ اجگر کا پھاڑ دیا ھے ؟
سب سے پہلے رائچس ٹاگ پر
کس نے جھنڈا گاڑ دیا ھے ؟

آج روس پھنک جانے پر بھی
پنپ اُٹھا ھے چمک اُٹھا ھے
تم پر آنچ نہ آئي لیکن '
باغ تمهارا سوکھ چلا ھے

دنیا بھر بازار ھے جسکا
ایک منڈی هیرا پھیری کی
اُس امریکہ کی یہ حالت ؟
یہ بیکاری دھت تیري کي*

ٹھنڈي لڑائی آخر کب تک
اِک دنیا سے رهیگي جاری
امن کے سچے دلداروں سے
بات نہ کی ' تو لو جھک مار

दुम में रस्सा बांध चुके हैं
ठोकर देंगे, धक्का देंगे
उसी घड़ी हम दम लेंगे जब
चोर को घर तक पहुंचा देंगे

अब क्यों देर लगायें साथी
अब तो कमर दुश्मन की खम है
आधी दुनिया जीत चुके हैं
अब तो मंज़िल चार क़दम है

दुनिया नई बसायेंगे हम
सुन्दर साज सजा देंगे
धन्ना सेठों के महलों की
ईंट से ईंट बजा देंगे

दुनिया हाथ नहीं आती है
दुनिया ले ली जाती है
क़िस्मत नहीं बदलती साथी
क़िस्मत बदली जाती है

मज़दूरों की दुनिया जागी
कटते कटते रात कटी
वह आकाश कलस हिलते हैं
धरती ने करवट बदली

دم میں رسا باندھ چکے ہیں
ٹھوکر دیں گے، دھکا دیں گے
اُسی گھڑی ہم دم لیں گے جب
چور کو گھر تک پہونچا دیں گے

آب کیوں دیر لگائیں ساتھی
آب تو کمر دشمن کی خم ہے
آدھی دنیا جیت چکے ہیں
آب تو منزل چار قدم ہے

دنیا نئی بسائیں گے ہم
سندر ساج سجا دیں گے
دھنا سیٹھوں کے محلوں کی
اینٹ سے اینٹ بجا دیں گے

دنیا ہاتھ نہیں آتی ہے
دنیا لے لی جاتی ہے
قسمت نہیں بدلتی ساتھی
قسمت بدلی جاتی ہے

مزدوروں کی دنیا جاگی
کٹتے کٹتے رات کٹی
وہ آکاش کلس ہلتے ہیں
دھرتی نے کروٹ بدلی

बीता हुआ "कल" औरों का था
आने वाला "कल" अपना है

सर्वोदय के सुख सपने में
कौन पुकार रहा है साथी?
जीवन सागर नई दिशा में
ठाठें मार रहा है साथी

कोई दिन की बात है साथी
मजदूर अब मजबूर नहीं है
जब हो जमीं पर अपनी खुदाई
साथी वह दिन दूर नहीं है

[नई दुनिया]

रूस, चीन की कम्पित किरणें
नव प्रभात की आभा लाई
नव जुग का संदेशा लाई

उत्तर. दक्खिन. पूरब. पच्छिम
आगे. पीछे. ऊपर. नीचे
देश देश में दुनिया भर में
तोड़ रही है दम तारीकी*
सुर्ख सवेरा होने को है

* तारीकी—अन्धकार.

بیتا ہوا '' کل '' اوروں کا تھا
آنے والا '' کل '' اپنا ہے

سرودے کے سکھ سپنے میں
کون پکار رہا ہے ساتھی؟
جیون ساگر نئی دشا میں
ٹھاٹھیں مار رہا ہے ساتھی

کوئی دن کی بات ہے ساتھی
مزدور اب مجبور نہیں ہے
جب ہو زمیں پر اپنی خدائی
ساتھی وہ دن دور نہیں ہے

[نئی دنیا]

روس، چین کی کمپت کرنیں
نو پربھات کی آبھا لائیں
نو جگ کا سندیشہ لائیں

اتر، دکھن، پورب، پچھم
آگے، پیچھے، اوپر، نیچے
دیش دیش میں دنیا بھر میں
توڑ رہی ہے دم تاریکی*
سرخ سویرا ہونے کو ہے

* تاریکی = اندھکار.

भारत के आकाश पे साथी
उदयाचल की ओट से साथी
वह रक्तिम पो फूट रही है
अंगड़ाई तोड़ता एशिया
बंद आंखें मलता अफरीका
दमन दलित हबशी अमरीका
गहरी नींद से चौंक उठे हैं
देश देश में महा क्रान्ति की
रनचंडी हुंकार रही है
सौ बल खाती हुई कुचल कर
या नागिन फुफकार रही है
कारीगर, मजदूर, किसान
कड़ीयल और बिगड़ैल जवान
काँधे से काँधा जोड़ेंगे
दुनिया पर धावा बोलेंगे
धरती का तख्ता उलटेंगे
दुनिया में सर्वोदय होगा
नया समाज आंखें खोलेगा
नई सभ्यता क़ायम होगी
ज़र्रा ज़र्रा जाग उठेगा
क़तरा क़तरा जाग उठेगा
पत्ता पत्ता जाग उठेगा
बूटा बूटा जाग उठेगा

بھارت کے آکاش میں ساتھی
اُدیا چل کی اوٹ سے ساتھی
وہ رکتم پو پھوٹ رہی ہے
انگڑائی توڑتا ایشیا
بند آنکھیں ملتا افریقہ
دمن، دلت حبشی امریکہ
گہری نیند سے چونک اُٹھے ہیں
دیش دیش میں مہا کرانتی کی
رن چنڈی، ہنکار رہی ہے
سو بل کھاتی ہوئی کچل کر
یا ناگن پھنکار رہی ہے
کاریگر، مزدور، کسان
کڑیل اور بگڑیل جوان
کاندھے سے کاندھا جوڑیں گے
دنیا پر دھاوا بولیں گے
دھرتی تختہ کا اُلٹیں گے
دنیا میں سروودے ہوگا
نیا سماج آنکھیں کھولے گا
نئی سبھیتا قائم ہوگی
ذرہ ذرہ جاگ اُٹھے گا
قطرہ قطرہ جاگ اُٹھے گا
پتہ پتہ جاگ اُٹھے گا
بوٹا بوٹا جاگ اُٹھے گا

सरमायादारी का वह इन्क़लाबी दौर, जिसमें उसने सामंतवाद के ख़िलाफ़ जेहाद बोलकर, नये ज़माने की बड़े पैमाने पर होने वाली सनअत व हरफ़त को तरक़्क़ी दी थी, ख़त्म हो चुका था. अब सरमायादारी अपनी आख़िरी मंज़िल पर पहुंच कर सड़ने लगी थी. सरमायादारी अपनी इस मंज़िल पर, जिसे हम साम्राजवाद कहते हैं, पहुंच कर उन सब ताक़तों को खो देती है. जो उसे अपने शुरू के ज़माने में हासिल थीं. इसका लाज़िमी नतीजा यह था कि दूसरी जातियों की तरह यहूदी जाति के भी मुख़्तलिफ तबक़े पूंजीवाद की सड़न की बदबू महसूस करते. होशियार यहूदी सरमायादार अपने मसलों को दुनिया के दूसरे सरमायादारों की तरह सोच रहे थे. इधर निचले दरमियानी तबक़े के यहूदी किसान वग़ैरा, जो सरमायादारी की इस आख़िरी मंज़िल पर दूसरी क़ौमों के निचले दरमियानी तबक़े के लोगों की तरह ही बढ़ती हुई ग़रीबी, बेरोज़गारी और लूट के शिकार हो रहे थे, के सामने एक जाति विरोधी तहरीक खड़ी हो गई. रूसी, पोलिश किसान अपनी तबाही की वजह यहूदियों को समझ कर, उनके ख़िलाफ़ भड़क उठे. इधर पच्छिमी मुल्कों के सरमायादारों ने भी यहूदी सरमायादारों के मुक़ाबले को अपनी तबाही का कारन समझा. यहूदी नस्ल के ख़िलाफ़ एक तहरीक उठ गई, जिसका जवाब यहूदी निचले दरमियानी तबक़े के लोगों ने अपनी 'फ़िलिस्तीन वापस चलो' की तहरीक की शकल में दिया. बड़े बड़े यहूदी सरमायादार इस तहरीक से दिली हमदर्दी नहीं रखते थे. वह जानते थे कि

سرمایہ داری کا وہ انقلابی دور، جسمیں اُس نے سامنت واد کے خلاف جہاد بول کر، نئے زمانے کی بڑے پیمانے پر ہونے والی صنعت و حرفت کو ترقی دی تھی، ختم ہو چکا تھا. اب سرمایہ‌داری اپنی آخری منزل پر پہونچ کر سڑنے لگی تھی. سرمایہ‌داری اپنی اِس منزل پر، جسے ہم سامراج واد کہتے ہیں، پہونچ کر اُن سب طاقتوں کو کھو دیتی ہے، جو اُسے اپنے شروع کے زمانے میں حاصل تھی. اِس کا لازمی نتیجہ یہ تھا کہ دوسری جاتیوں کی طرح یہودی جاتی کے بھی مختلف طبقے پونجی واد کی سڑن کی بدبو محسوس کرتے. ہوشیار یہودی سرمایہ‌دار اپنے مسئلوں کو دنیا کے دوسرے سرمایہ داروں کی طرح سوچ رہے تھے. اِدھر نچلے درمیانی طبقے کے یہودی کسان وغیرہ، جو سرمایہ داری کی اس آخری منزل پر دوسری قوموں کے نچلے درمیانی طبقے کے لوگوں کی طرح ہی بڑھتی ہوئی غریبی، بے روزگاری اور لوٹ کے شکار ہو رہے تھے، کے سامنے ایک جاتی وِرودھی تحریک کھڑی ہوگئی. روسی، پولش کسان، اپنی تباہی کی وجہ یہودیوں کو سمجھکر اُن کے خلاف بھڑک اُٹھے. اِدھر پچھمی ملکوں کے سرمایہ‌داروں نے بھی یہودی سرمایہ‌داروں کے مقابلے کو اپنی تباہی کا کارن سمجھا. یہودی نسل کے خلاف ایک تحریک اُٹھ گئی، جس کا جواب یہودی نچلے درمیانی طبقے کے لوگوں نے اپنی 'فلسطین واپس چلو' کی تحریک کی شکل میں دیا. بڑے بڑے یہودی سرمایہ‌دار اِس تحریک سے دلی ہمدردی نہیں رکھتے تھے. وہ جانتے تھے کہ

फ़िलिस्तीन मे वापस जा कर नये सिरे मे उद्योग धन्धे क़ायम करना और फिर उसके लिये दुनिया में बाज़ार खोजना और इसके लिये दूसरी साम्राजशाही ताक़तों के मुक़ाबले में फ़ौजें खड़ी करना उनकी पतन की हालत में ग़ैर मुमकिन था. अपनी बचत का उन्हें भी एक ही रास्ता सूझा—फ़िलिस्तीन वापस जाने की तहरीक का हामी होना. उन्होंने सोचा कि यूरोप के यहूदी जितनी तादाद में फ़िलिस्तीन वापस जायंगे, उतना ही वहाँ की यहूदी-विरोधी तहरीक कमज़ोर पड़ेगी और उनको वहाँ रहने दिया जायगा. यह बात और है कि वह अच्छी तरह जानते थे कि अगर उन्हें फ़िलिस्तीन पूरा का पूरा मिल भी जाय तो उसके रक़बे में इतनी ताक़त नहीं है कि दुनिया के यहूदियों के एक हिस्से को भी बसा सके. इसी तरह यह बात भी और है कि जहाँ कहीं यहूदी सरमायादार मुल्क छोड़ने के लिये मजबूर होते रहे है, वहाँ वह यहूदी क़ौमी तहरीक के भी हामी हो जाते रहे हैं—सब कुछ हाथ से जाता हो, तो जो मिले उसी पर सन्तोष होना चाहिए! इन सारी बातों का नतीजा यह निकलता है कि यहूदी क़ौमी तहरीक का रहनुमा दुनिया में बिखरा हुआ और फ़िलिस्तीन का निचला दरमियानी तबक़ा और फ़िलिस्तीन का देसी सरमायादार है, जिसमें साम्राजशाही ज़माने में इस तहरीक को मुकम्मल बनाने की ख़ुद कोई ताक़त नहीं है—उसी तरह जैसे हिंदुस्तान, लंका, बर्मा, मलाया, स्याम, इंडोनेशिया चीन वग़ैरह के सरमायादारों और निचले दरमियानी तबक़े के लोगों में इन मुल्कों की क़ौमी तहरीक को कामयाब बनाने, यानी सरमायादारी को पूर

فلسطین میں واپس جاکر نئے سرے سے اُدیوگ دھندے قائم کرنا اور پھر اس کے لئے دنیا میں بازار کھوجنا اور اس کے لئے دوسری سامراجی شاہی طاقتوں کے مقابلے میں فوجیں کھڑی کرنا اُن کی پتن کی حالت میں غیر ممکن تھا. اپنی بچت کا اُنہیں بھی ایک ہی راستہ سوجھا. فلسطین واپس جانے کی تحریک کا حامی ہونا. اُنہوں نے سوچا کہ یورپ کے یہودی جتنی تعداد میں فلسطین واپس جائیں گے، اُتنا ہی وہاں کی یہودی وِرودھی تحریک کمزور پڑے گی اور اُن کو وہاں رہنے دیا جائیگا. یہ بات اور ہے کہ وہ اچھی طرح جانتے تھے کہ اگر اُنہیں فلسطین پورا کا پورا مل بھی جائے تو اس کے رقبے میں اتنی طاقت نہیں ہے کہ دنیا کے یہودیوں کے ایک حصے کو بھی بسا سکے. اسی طرح یہ بات بھی اور ہے کہ جہاں کہیں یہودی سرمایہ‌دار ملک چھوڑنے کے لئے مجبور ہوتے رہے ہیں، وہاں وہ یہودی قومی تحریک کے بھی حامی ہوجاتے رہے ہیں— سب کچھ ہاتھ سے جاتا ہو، تو جو ملے اُسی پر سنتوش ہونا چاہئے! اِن ساری باتوں کا نتیجہ یہ نکلتا ہے کہ یہودی قومی تحریک کا رہنما دنیا میں بکھرا ہوا اور فلسطین کا نچلا درمیانی طبقہ اور فلسطین کا دیسی سرمایہ‌دار ہے، جس میں سامراج شاہی زمانے میں اس تحریک کو مکمل بنانے کی خود کوئی طاقت نہیں ہے—اُسی طرح جیسے ہندستان، لنکا، برما، ملایا، سیام، انڈونیشیا، چین وغیرہ کے سرمایہ‌داروں اور نچلے درمیانی طبقے کے لوگوں میں اِن ملکوں کی قومی تحریک کو کامیاب بنانے یعنی سرمایہ داری کو پوری

हद तक तरक़्क़ी देने की ताक़त नहीं है. इन सभी मुल्कों की क़ौमी तहरीक की कामयाबी के लिये मज़दूरों की रहनुमाई शर्त है. जहाँ तक यहूदी जाति को वतन यानी रहने की जगह देने का ताल्लुक़ है, यह उस समूची दुनिया के इन्क़लाब पर मुनहसर है, जिसका मक़सद उस सरमायादारी को मिटाना है. जिसकी वजह से दुनिया के हर मुल्क के मज़दूर और दूसरे ग़रीब हर तरह की परेशानी बरदाश्त कर रहे हैं और कहने की ज़रूरत नहीं कि दर बदर मारे मारे फिरने वाले यहूदियों को भी इसी तरह की एक और परेशानी का शिकार होना पड़ रहा है.

फ़िलिस्तीन का बँटवारा

कुछ लोगों का ख़याल है कि फ़िलिस्तीन के बँटवारे से यहूदी क़ौमी तहरीक कामयाब हो गई और इसराईल का नया यहूदी राज क़ायम करके अंग्रेज़ी अमरीकी साम्राजशाही को नीचा देखना पड़ा. जो लोग नाम को यहूदी क़ौमी तहरीक में साम्राज-विरोधी जंग की कामयाबी देखते हैं, उन्हें तह तक जाने पर मालूम होगा कि दर असल इस सिलसिले में साम्राजशाही की ही हर मानी में कामयाबी हुई है और जो कुछ हुआ है अंग्रेज़ी अमरीकी साम्राजशाही की ही रज़ामंदी और कोशिशों का नतीजा है, जो इसकी सारी दुनिया में बरती जाने वाली नई नीति के बिलकुल मुआफ़िक़ है. यू० एन० ओ० में अमरीकी नुमाइन्दों ने अपने असर वाले, फ़िलिपाइन्स वग़ैरा मुल्कों के नुमाइन्दों से फ़िलिस्तीन के बँटवारे का समर्थन कराया. अमरीका ने इसराईल को रुपये

حد تک ترقی دینے کی طاقت نہیں ہے ۔ ان سبھی ملکوں کی قومی تحریک کی کامیابی کے لئے مزدوروں کی رہنمائی شرط ہے ۔ جہاں تک یہودی جاتی کو وطن یعنی رہنے کی جگہ دینے کا تعلق ہے ' یہ اس سموچی دنیا کے انقلاب پر منحصر ہے جسکا مقصد اُس سرمایہ‌داری کو مٹانا ہے ' جس کی وجہ سے دنیا کے ہر ملک کے مزدور اور دوسرے غریب ہر طرح کی پریشانی برداشت کر رہے ہیں اور کہنے کی ضرورت نہیں کہ در بدر مارے مارے پھرنے والے یہودیوں کو بھی اسی طرح کی ایک اور پریشانی کا شکار ہونا پڑ رہا ہے ۔

فلسطین کا بٹوارہ

کچھ لوگوں کا خیال ہے کہ فلسطین کے بٹوارے سے یہودی قومی تحریک کامیاب ہوگئی اور اسرائیل کا نیا یہودی راج قائم کرکے انگریزی امریکی سامراج شاہی کو نیچا دیکھنا پڑا ۔ جو لوگ نام کی یہودی قومی تحریک میں سامراج وردھی جنگ کی کامیابی دیکھتے ہیں ' اُنھیں تہ تک جانے پر معلوم ہوگا کہ دراصل اِس سلسلے میں سامراج شاہی کو ہی ہر معنی میں کامیابی ہوئی ہے اور جو کچھ ہوا ہے انگریزی امریکی سامراج شاہی کی ہی رضامندی اور کوششوں کا نتیجہ ہے ' جو اسکی ساری دنیا میں برتی جانے والی نئی نیتی کے بالکل موافق ہے ۔ یو ۔ این ۔ او ۔ میں امریکی نمائندوں نے اپنے اثر والے فلپائنس وغیرہ ملکوں کے نمائندوں سے فلسطین کے بٹوارے کا سمرتھن کرایا ۔ امریکہ نے اسرائیل کو روپئے

और सामान दिये. जिनसे वह चेकोस्लोवाकिया से लड़ाई के हथियार खरीद सका. १९४८ में अरबों के गाँवों पर क़ब्ज़ा करके और खाली कराके जेरूसलम के लिए सड़क खोलने के लिए ब्रिटिश फ़ौज ने यहूदियों को मौक़ा दिया. डान और ग़ार ज़ोल्ड की यहूदी-बस्तियों में उनकी मदद की और जून १९४८ में यू० एन० ओ० ने जेरूसलम के यहूदियों को भूको मरते देख और उनकी पूरी फ़ौजी हार को यक़ीनी देखकर पहला 'लड़ाई रोको' समझौता कराया और इस तरह उन्हें बचा लिया.

सन १९४८ के शुरू में फ़ौजी ख़याल से यहूदी अच्छी हालत में थे. इसलिए नहीं कि अरब कमज़ोर थे. बल्कि इसलिए कि अरब नेता प्रतिगामी तरक्क़ी के खिलाफ थे और उनको डर था कि ज़ोरदार क़ौमी तहरीक उनका भी खात्मा कर देगी. अब ब्रिटिश सरकार ने मिस्र. इराक़. ट्रान्सजार्डन को हथियार दिये कि वह अरबों की मदद करें. अमरीका ने मार्च सन ४८ में बँटवारा करने से इनकार कर दिया. अरबों को हमला करने को उकसाया, यहूदियों को हारते देखकर समझौता कराया और मिस्रियों को हारते देख फिर सुलह कराई. यह सब क्यों ? इसलिए कि यहूदी और अरब आपस में लड़ते रहें. अरब सरमायादारों का पिछली लड़ाई में कमाया हुआ बड़ा सरमाया और मुनाफ़ा यहूदियों से लड़ने में बरबाद हो और बीच पूरब की अरब जनता (साम्राज विरोधी तहरीक से अलग होकर फ़िरक़ावाराना मज़हबी लड़ाई में

آور سامان دئے ' جن سے وہ چیکو سلوواکیا سے لڑائی کے هتھیار خرید سکا. ١٩٤٨ میں عربوں کے گاؤں پر قبضه کرکے آور خالی کراکے زیروسلم کے لئے سڑک کھولنے کے لئے برٹش فوج نے یہودیوں کو موقع دیا ' ڈان آور غارزولڈ کی یہودي بستیوں میں اُن کي مدد کی آور جون ١٩٤٨ میں یو این . او . نے زیروسلم کے یہودیوں کو بھوکوں مرتے دیکھ آور اُن کی پوری فوجی هار کو یقینی دیکھکر پہلا ' لڑائی روکو' سمجھوته کرایا اور اس طرح اُنھیں بچا لیا .

سن ٤٨ کے شروع میں فوجی خیال سے یہودی اچھي حالت میں تھے اس لئے نہیں که عرب کمزور تھے بلکه اس لئے که عرب نیتا پرتی گامی ترقي کے مخالف تھے اور اُن کو ڈر تھا که زوردار قومی تحریک اُن کا خاتمه کردیگی . اب برٹش سرکار نے مصر' عراق اور ٹرانس جارڈن کو هتھیار دیئے که وہ عربوں کی مدد کریں . امریکه نے مارچ سن ٤٨ میں بٹوارہ کرانے سے انکار کردیا . عربوں کو حمله کرنے کو اُکسایا ' یہودیوں کو هارتے دیکھ سمجھوته کرایا ' مصریوں کو هارتے دیکھ پھر صلح کرائی ' یه سب کیوں ؟ اس لئے که یہودی آور عرب آپس میں لڑتے رهیں ' عرب سرمایهداروں کا پچھلي لڑائی میں کمایا هوا بڑا سرمایه آور منافع یہودیوں سے لڑنے میں برباد هو آور بیچ پورب کي عرب جنتا سامراج وروده‌ی تحریک سے الگ هوکر فرقهوارانه مذهبي لڑائی میں

फंस जाय, और म[illegible] फ़िलिस्तीन में पि[illegible] मज़दूरों व दूसरे शोषितों की तहरीक दब जाय. अरब बिल्लियों के [illegible]ले तीस साल से साम्राजशाही बंदर यहूदी [illegible] झगड़े में कभी इसका तो कभी उसका साथ देते रहे. यह कहने की ज[illegible] [illegible]रत नहीं कि साम्राजशाही अपने सभी मनसूबों में पूरी तरह का[illegible]याब हुई है.

अरबी यहू[illegible] जंग में लगकर बीच पूरब के सभी देशों को अपने देश का बहुत सा [illegible] धन बरबाद करने के लिए मजबूर होना पड़ा। १९४६-४७ के [illegible] आखिर में मिस्री सरकार की रिज़र्व खाते की रक़म ७ करोड़ मिस्री [illegible] पौण्ड थी. फ़िलिस्तीन की लड़ाई में मिस्र का खर्चा लगभग ३ करोड़ पौण्ड हुआ. इसके अलावा अप्रैल १९४९ में ८० लाख पौण्ड ग़ैर मामूली फ़ौजी खर्चा पास करने के लिए मिस्री सरकार मजबूर हुई. और खर्चों को निगाह में रखने पर मुश्किल से अब मिस्री रिज़र्व फ़ण्ड एक करोड़ पौण्ड रह गया होगा. इराक़ की सरकार के १९४८-४९ के बजट में ७ करोड़ ५० लाख इराक़ी दीनार का घाटा हुआ. इराक़ में एक खौफ़नाक माली संकट है. सीरिया का रिज़र्व फ़ण्ड १९४९ तक सब खत्म हो गया. १९४९-५० के बजट में सीरिया का कुल खर्च १२ करोड़ ९० लाख सीरिया का पौण्ड है, जिस में लड़ाई की मद में अब तक ७ करोड़ सीरिया का पौण्ड पास हो चुका है. यही हाल सभी अरब देशों का है. सरमायादारों ने पूरी कोशिश की कि लड़ाई का बोझ मज़दूरों और बाक़ी ग़रीब जनता पर पड़े. लेकिन इस सब के बाद भी उनका भारी मुनाफ़ा बरबाद हो गया.

پھنس جائے ' اور مزدوروں و دوسرے شوشتوں کی تحریک دب جائے. فلسطین میں پچھلے ۳۰ سال سے سامراج شاہی بندر یہودی عرب بلیوں کے جھگڑے میں کبھی اس کا تو کبھی اُس کا ساتھ دیتے رہے. یہ کہنے کی ضرورت نہیں کہ سامراج شاہی اپنے سبھی منصوبوں میں پوری طرح کامیاب ہوئی ہے.

عربی یہودی جنگ میں لگ کر بیچ پورب کے سبھی دیشوں کو اپنے دیش کا بہت سا دھن برباد کرنے کے لئے مجبور ہونا پڑا. ۱۹۴۶-۴۷ کے آخر میں مصری سرکار کی ریزرو کھاتے کی رقم سات کروڑ مصری پونڈ تھی. فلسطین کی لڑائی میں مصر کا خرچہ لگ بھگ ۳ کروڑ پونڈ ہوا. اس کے علاوہ اپریل ۱۹۴۹ میں ۸۰ لاکھ پونڈ غیر معمولی فوجی خرچہ پاس کرنے کے لئے مصری سرکار مجبور ہوئی. اور خرچوں کو نگاہ میں رکھنے پر مشکل سے اب مصری ریزرو فنڈ ایک کروڑ پونڈ رہ گیا ہوگا. عراق کی سرکار کے ۱۹۴۸-۴۹ کے بجٹ میں ۷ کروڑ ۵۰ لاکھ عراقی دینار کا گھاٹا ہوا. عراق میں ایک خوفناک مالی سنکٹ ہے. سیریا کا ریزرو فنڈ ۱۹۴۹ تک سب ختم ہو گیا. ۱۹۴۹-۵۰ کے بجٹ میں سیریا کا کل خرچ ۱۲ کروڑ ۹۰ لاکھ سیریا کا پونڈ ہے' جس میں لڑائی کی مد میں اب تک ۷ کروڑ سیریا کا پونڈ پاس ہوچکا ہے یہی حال سبھی عرب دیشوں کا ہے. سرمایہ داروں نے پوری کوشش کی کہ لڑائی کا بوجھ مزدوروں اور باقی غریب جنتا پر پڑے. لیکن اس سب کے بعد بھی اُن کا بھاری منافع برباد ہو گیا.

साम्राजशाही फिर घुसी

साम्राजशाही ने, ख़ास कर अमरीकी साम्राजशाही ने इस हालत का फ़ायदा उठा कर फिर घुसना शुरू किया. देशी सरमायादारों को क़र्ज़ देना और देशी रोज़गार में अपना रुपया लगाना साम्राजशाही का ख़ास प्रोग्राम हो गया. सब से पहले तेल पर निगाह थी. सीरिया के देशी सरमायादारों को अमरीकी कम्पनियों को ज़्यादा से ज़्यादा रिआयत देनी पड़ी. ब्रिटिश कम्पनियाँ लताकिया बन्दरगाह और फ़रात जल योजना में रुपया लगाने का मौक़ा ढूंढ रही हैं. अमरीकी कम्पनियाँ स्वेज़ नहर के दोनों ओर मिस्र में तेल के सोतों का पता लगा रही हैं इराक़ ने अमरीका से ४ करोड़ ८० लाख डालर और १० करोड़ डालर का क़र्ज़ा मांगा है. साथ ही डेढ़ दो करोड़ का क़र्ज़ उसने ब्रिटिश साम्राजशाही से मांगा है. इसी तरह मिस्र ने इन्टर नैशनल बंक से क़र्ज़ मांगा है. इसराईल को अमरीका ने १० करोड़ डालर का क़र्ज़ दिया है. ४. नवम्बर १९४७. में जब मिस्री सरमायादार आज की निस्बत अच्छी हालत में था, 'मिस्री कम्पनी ला' का एलान हुआ, जिसके मुताबिक़ किसी भी मिस्री ज्वाइन्ट स्टाक कम्पनी में ४० फ़ी सदी डाइरेक्टर मिस्री होने लाज़िमी थे. साम्राजशाही ने थोड़े ही अरसे में इस क़ानून को तोड़ना शुरू किया, और ७ मार्च १९४९ को मिस्री सरकार एक नये इक़रार नामे के लिए मजबूर हुई, जिसके मुताबिक़ अब मिस्रीयों को स्वेज़ कनाल कम्पनी में ११ सीटों की जगह ५ सीटों पर ही सब्र करना पड़ा. आज इस कम्पनी

سامراج شاہی پھر گھسی

سامراج شاہی نے، خاص کر امریکی سامراج شاہی نے اس حالت کا فائدہ اُٹھاکر پھر گھسنا شروع کیا. دیشی سرمایہ داروں کو قرض دینا اور دیشی روزگار میں اپنا روپیہ لگانا سامراج شاہی کا خاص پروگرام ہوگیا. سب سے پہلے تیل پر نگاہ تھی. سیریا کے دیشی سرمایہ داروں کو امریکی کمپنیوں کو زیادہ سے زیادہ رعایت دینی پڑی. برٹش کمپنیاں لتاکیا بندرگاہ اور فرات جل یوجنا میں روپیہ لگانے کا موقع ڈھونڈ رہی ہیں. امریکی کمپنیاں سوئز نہر کے دونوں اور مصر میں تیل کے سوتوں کا پتہ لگا رہی ہیں. عراق نے امریکہ سے ۴ کروڑ ۸۰ لاکھ ڈالر اور ۱۰ کروڑ ڈالر کا قرضہ مانگا ہے. ساتھ ہی ڈیڑھ دو کروڑ کا قرض اُسنے برٹش سامراج شاہی سے مانگا ہے. اسی طرح مصر نے انٹر نیشنل بینک سے قرض مانگا ہے. اسرائیل کو امریکہ نے ۱۰ کروڑ ڈالر کا قرض دیا ہے. ۴ نومبر ۱۹۴۷ میں جب مصری سرمایہ دار آج کی نسبت اچھی حالت میں تھا، 'مصری کمپنی لا' کا اعلان ہوا جس کے مطابق کسی بھی مصری جوائنٹ اسٹاک کمپنی میں ۴۰ فیصدی ڈائرکٹر مصری ہونے لازمی تھے. سامراج شاہی نے تھوڑے ہی عرصے میں اس قانون کو توڑنا شروع کیا، اور ۷ مارچ ۱۹۴۹ کو مصری سرکار ایک نئے اقرارنامے کے لئے مجبور ہوئی جس کے مطابق اب مصریوں کو سوئز کنال کمپنی میں ۱۱ سیٹوں کی جگہ ۵ سیٹوں پر ہی صبر کرنا پڑا. آج اس کمپنی

में ३२ में से सिर्फ़ २ मिस्री डायरेक्टर हैं. इस तरह हम देखते हैं कि अरब देशों की नीति में साम्राजशाही दिन बदिन अपना असर बढ़ाती ही जा रही है.

साम्राजशाही की सियासी जीत

इन तमाम बातों में साम्राजशाही की सियासी जीत भी साफ़ ज़ाहिर है. पहले ही कहा जा चुका है कि अरबी और यहूदी जनता को लड़ा कर साम्राजवादियों ने दोनों का ध्यान अपनी ओर से हटा दिया और वह फ़िलहाल यह भूल गये कि दोनों की तबाही की असल वजह साम्राजशाही लूट है. इराक़ में यहूदियों की फांसी और देश छोड़ने वाले यहूदियों को सजाय मौत, सीरिया, दमिश्क़ और अलप्पो में, यहूदियों पर ज़ुल्म, मिस्र में बहुत से यहूदियों को नज़रबंद करना वग़ैरह काम फ़िरक़ावाराना जज़्बे को भड़काते गये. सितम्बर १९४७ में जब यू० एन० ओ० ने मिस्रियों की मांग को नहीं माना था. तब मिस्र में साम्राजशाही के विरोध की आग भड़क उठी थी. मगर एक साल के बाद जब ब्रिटिश सरकार ने यह एलान किया कि अन्तराष्ट्रीय हालत को निगाह में रखकर ब्रिटिश सरकार इस बात के लिये तैयार नहीं है कि वह मिस्र से अपनी फ़ौज हटाय, तब मिस्र में इसके ख़िलाफ़ कोई आन्दोलन नहीं हुआ. ब्रिटिश साम्राज शाही के ख़िलाफ़ कुछ करने के बजाय मिस्र की फ़ौजी तानाशाही, सामन्त शाही गुट ने मिस्र की जनता को वहाँ की कम गिनत जातियों के ख़िलाफ़ आतंकवाद की ओर भड़काया. ब्रिटिश सरकार ने इससे भी ज़्यादा पक्का काम दक्खिन

میں ۳۲ میں سے صرف ۲ مصری ڈائرکٹر ہیں. اس طرح ہم دیکھتے ہیں کہ عرب دیشوں کی نیتی میں سامراج شاہی دن دن اپنا اثر بڑھاتی ہی جا رہی ہے۔

سامراج شاہی کی سیاسی جیت

ان تمام باتوں میں سامراج شاہی کی سیاسی جیت بھی صاف ظاہر ہے۔ پہلے ہی کہا جا چکا ہے کہ عربی اور یہودی جنتا کو لڑا کر سامراج وادیوں نے دونوں کا دھیان اپنی اور سے ہٹا دیا اور وہ فی الحال یہ بھول گئے کہ دونوں کی تباہی کی اصل وجہ سامراج شاہی لوٹ ہے۔ عراق میں یہودیوں کی پھانسی اور دیش چھوڑنے والے یہودیوں کو سزائے موت، سیریا، دمشق اور الیپو میں یہودیوں پر ظلم، مصر میں بہت سے یہودیوں کو نظر بند کرنا وغیرہ کام فرقہ وارانہ جذبے کو بھڑکاتے گئے۔ ستمبر ۱۹۴۷ میں جب یو. این. او. نے مصریوں کی مانگ کو نہیں مانا تھا تب مصر میں سامراج شاہی کے وروده کی آگ بھڑک اٹھی تھی. مگر ایک سال کے بعد جب برٹش سرکار نے یہ اعلان کیا کہ انتر راشٹری حالت کو نگاہ میں رکھکر برٹش سرکار اس بات کے لئے تیار نہیں ہے کہ وہ مصر سے اپنی فوج ہٹائے، تب مصر میں اسکے خلاف کوئی آندولن نہیں ہوا۔ برٹش سامراج شاہی کے خلاف کچھ کرنے کے بجائے مصر کی فوجی تانا شاہی، سامنت شاہی گٹ نے مصر کی جنتا کو وہاں کی کم گنت جاتیوں کے خلاف آتنک واد کی اور بھڑکایا۔ برٹش سرکار نے اس سے بھی زیادہ پکا کام دکھن

का आर किया. फिलस्तीन की जंग के बहाने ब्रिटिश सरकार ने सूडान को मिस्र से पूरी तरह से अलग कर दिया और वहाँ एक झूटी लेजिस्लेटिव असेम्बली बनाई, जिस मे ब्रिटिश सरकार के हामी सरमायादार भर दिये गये. जिनको ब्रिटिश गवर्नर मुक़र्रर करता है. अब मिस्र का सरमायादर ब्रिटिश साम्राजशाही से सूडान की जनता को लूटने के लिए सौदा करने में मसरूफ़ है. यही हालत इराक़ में हुई. वहां जब जनवरी १९४८ में बेविन और बरतानिया की हामी इराक़ी सरकार के बीच में पोर्ट समाउथ का समझौता हुआ, जिसमें ब्रिटिश सरकार को यह हक़ दिया गया कि वह अपने बीच-पूरब के फायदों की रक्षा के लिए इराक़ को अपने फौजी अड्डे की तरह इस्तेमाल करे. तब इराक़ के मज़दूरों और विद्यार्थियों ने डटकर इसका विरोध किया और एक हफ़्ते तक विरोध ज़ाहिर करने का नतीजा यह हुआ कि इराक़ी रीजेन्ट को इस समझौते को रद्द करने का एलान करना पड़ा. मगर फिलिस्तीन की लड़ाई के नतीजे में एक साल बाद अक्तूबर १९४८ में बरतानिया के हामी इराक़ी नेता फिर इराक़ के मंत्रि मण्डल में घुसने लगे. और ६ जनवरी १९४९ को बीच पूरब में ब्रिटिश सरकार का सबसे बड़ा हामी नूरी पाशा सईद इराक़ का वज़ीर आज़म चुना गया. उधर सीरिया और लेबनान को अलग अलग करने में भी साम्राजशाही कामयाब रही और आख़िर में फिलिस्तीन का बटवारा करने के बाद साम्राजशाही इस बात में पूरी तरह कामयाब हुई कि बालकन की तरह बीच पूरब के भी टुकड़े टुकड़े होंगे.

کی اور کیا ۔ فلسطین کي جنگ کے بہانے برٹش سرکار نے سوڈان کو مصر سے پوري طرح سے الگ کردیا آور وھاں ایک جھوٹی لیجسلیٹو اسمبلی بنائي' جس میں برٹش سرکار کے حامی سرمایہ دار بھر دئے گئے' جن کو برٹش گورنر مقرر کرتا ھے ۔ اب مصر کا سرمایہ دار برٹش سامراج شاھی سے سوڈان کی جنتا کو لوٹنے کے لئے سودا کرنے میں مصروف ھے ۔ یہی حالت عراق میں ھوئي ۔ وھاں جب جنوري ۱۹۴۸ میں بیون آور برطانیہ کي حامی عراقی سرکار کے بیچ میں پورٹس ماؤتھ کا سمجھوتہ ھوا ' جس میں برٹش سرکار کو یہ حق دیا گیا کہ وہ اپنے بیچ پورب کے فائدوں کي رکشا کے لئے عراق کو اپنے فوجي اڈے کي طرح استعمال کرے ' تب عراق کے مزدوروں آور ودیارتھیوں نے ڈٹ کر اسکا وررودھ کیا آور ایک ھفتےتک وررودہ ظاھر کرنے کا نتیجہ یہ ھوا کہ عراقی ریجنٹ کو اس سمجھوتے کو رد کرنے کا اعلان کرنا پڑا ۔ مگر فلسطین کی لڑائی کے نتیجے میں ایک سال بعد اکتوبر ۱۹۴۸ سے برطانیہ کے حامی عراقی نیتا پھر عراق کے منتری منڈل میں گھسنے لگے ۔ آور ۶ جنوری ۱۹۴۹ کو بیچ پورب میں برٹش سرکار کا سب سے بڑا حامی نوری پاشا سعید عراق کا وزیر اعظم چنا گیا ۔ اُدھر سیریا اور لبنان کو الگ الگ کرنے میں بھی سامراج شاھي کامیاب رھی ۔ اور آخر میں فلسطین کا بٹوارہ کرنے کے بعد سامراج شاھی اس بات میں پوری طرح کامیاب ھوئي کہ بالکن کی طرح بیچ پورب کے بھي ٹکڑے ٹکڑے ھوگئے ۔

मजदूर आन्दोलन को धक्का

साम्राजशाही जमाने में पिछड़े हुए मुल्कों की क़ौमी तहरीक का अगुआ वहाँ का सरमायादार नहीं हो सकता. यह बात दुनिया के दूसरे पिछड़े हुए मुल्कों की तरह बीच पूरब के अरब मुल्कों में भी साफ़ है. मजदूर तहरीक ही इन क़ौमी तहरीकों की रहनुमा है. पिछली लड़ाई के बाद सारी दुनिया में मजदूर आन्दोलन की लहर उभरी या उभरने का रुख़ रखती थी. मगर इस तहरीक से पिछड़े हुए देश का सरमायादार ख़ास तौर से बहुत डरता था और उसने इस तहरीक को दबाने में मुल्क के साथ कोई भी ग़द्दारी का काम उठा नहीं रक्खा. जब कभी यह तहरीक जोर पकड़ती दिखाई देती थी, देसी सरमायादार साम्राजशाही ख़ेमे में जाकर इसे दबाने पर तुल जाते थे. जहाँ देशी सरमायादार कमजोर नजर आते थे. वहाँ साम्राजशाही अपनी तरफ़ से ऐसे जाल बिछा देती थी कि किसी को पता भी न चले और तहरीक ख़त्म हो जाये. यही बीच पूरब के देशों में हुआ.

अगरचे यह नहीं कहा जा सकता कि अरब का मजदूर आन्दोलन कुचलने में साम्राजशाही या देसी सरमायादारों की चालें पूरी तरह कामयाब हुई हैं, फिर भी सन् १९४८-४९ में यह तहरीक बहुत दब गई. हाँ फ़िलिस्तीन में जरूर अरब मजदूर जमाअत को भारी धक्का लगा. अरबों का फ़िलिस्तीन के मजदूरों के केन्द्र यानी मरकज़ हैफ़ा से बड़ी तादाद में भागना और इसी तरह जाफ़ा और दूसरे किनारे के

مزدور آندولن کو دهکا

سامراج شاهی زمانے میں پچهڑے هوئے ملکوں کي قومی تحریک کا اگوا وهاں کا سومایه دار نهیں هو سکتا . یه بات دنیا کے دوسرے پچهڑے هوئے ملکوں کی طرح بیچ پورب کے عرب ملکوں میں بهی صاف هے مزدور تحریک هی ان قومی تحریکوں کی رهنما هے . پچهلی لڑائی کے بعد ساري دنیا میں مزدور آندولن کی لهر اُبهري یا ابهرنے کا رخ رکهتي تهی . مگر اس تحریک سے پچهڑے هوئے دیش کا سرمایه‌دار خاص طور سے بهت ڈرتا تها اور اُس نے اس تحریک کو دبانے میں ملک کے ساتھ کوئی بهي غداري کا کام اُتها نهیں رکها . جب کبهی یه تحریک زور پکڑتی دکهائي دیتی تهی ' دیسي سرمایه دار سامراج شاهی خیمے میں جاکر اِسے دبانے پر تل جاتے تهے . جهاں دیسی سرمایه دار کمزور نظر آتے تهے وهاں سامراج شاهی اپنی طرف سے ایسے جال بچها دیتی تهی که کسي کو پته بهی نه چلے اور تحریک ختم هو جائے' یهی بیچ پورب کے دیشوں میں هوا .

اگرچه یه نهیں کها جا سکتا که عرب کا مزدور آندولن کچلنے میں سامراج شاهی یا دیسی سرمایه داروں کي چالیں پوری طرح کامیاب هوئي هیں پهر بهی ۱۹۴۸-۴۹ میں یه تحریک بهت دب گئی . هاں فلسطین میں ضرور عرب مزدور جماعت کو بهاری دهکا لگا . عربوں کا فلسطین کے مزدوروں کے کیندر یعني مرکز حیفه سے بڑي تعداد میں بهاگنا اور اسي طرح جافه اور دوسرے کنارے کے

मैदान से उनका भागना, अरब की मजदूर जमाअत की भारी बरबादी थी. हैफा की सन् १९४६ का सरकारी कर्मचारियों की बड़ी हड़तालें और १९४७ की तेल की सफाई वाले कारख़ानों के मजदूरों की हड़तालें सारे अरब की सियासत में बड़ी अहमियत रखती थीं. इनमें अरब और यहूदी मजदूरों का पूरा सहयोग था और इनसे साम्राजशाही की जातीयता को उकसाने वाली नीति को भारी धक्का लगता था. मिस्र में भी. जहाँ फरवरी सन् १९४६ में मजदूर आन्दोलन अपनी आख़िरी हद तक पहुंच चुका था और कई दिनों तक मजदूर और विद्यार्थियों की कमेटियाँ कैरो और इस्कन्दरिया की गलियों पर क़ाबिज़ थीं, मजदूर आन्दोलन फिर उस ऊँचाई तक नहीं पहुंचा. फिर भी सन् १९४७ में मेहालुलकुबरा के बड़े सूती कारख़ाने में जिस में, ३०,००० मजदूर काम करते थे, हड़ताल का एलान हुआ, जिस में हथियार बन्द पुलिस से मुठ-भेड़ हुई. ५ अप्रैल सन् ४८ में पुलिस ने खुद हड़ताल की. इस्कन्द्रिया में भी हजारों मजदूरों ने हड़ताल की, जिन के जुलूस में हड़ताली पुलिस भी शामिल हुई. इस में मिस्री फौज को अमन क़ायम करने में दो दिन लग गये. इन हड़तालों में तेल की कम्पनि-यों, सूती मिलों, चीनी की मिलों में काम करने वाले मजदूरों ने हिस्सा लिया. इन आख़िरी हड़तालों के एक माह बाद ही, जब फिलिस्तीन पर हमला हुआ, तब मिस्री सरकार ने फ़ौजी क़ानून 'मारशल ला' के जरिये मजदूर तहरीक को दबा दिया. ट्रेड यूनियनों को दबाया गया और बायें बाजू के नेताओं को गिरफ़तार कर लिया गया. इसी तरह

میدان سے اُن کا بھاگنا ' عرب کی مزدور جماعت کی بھاری بربادی تھی . حیفہ کی ۱۹۴۶ کی سرکاری کرمچاریوں کی بڑی ہڑتالیں اور ۱۹۴۷ کی تیل کی صفائی والے کارخانوں کے مزدوروں کی ہڑتالیں سارے عرب کی سیاست میں بڑی اہمیت رکھتی تھیں . ان میں عرب اور یہودی مزدوروں کا پورا سہیوگ تھا اور ان سے سامراج شاہی کی جاتیتا کو اکسانے والی نیتی کو بھاری دھکا لگتا تھا . مصر میں بھی ' جہاں فروری سنہ ۱۹۴۶ میں مزدور آندولن اپنی آخری حد تک پہونچ چکا تھا اور کئی دنوں تک مزدور اور ودیا رتھیوں کی کمیٹیاں کیرو اور اسکندریہ کی گلیوں پر قابض تھیں ' مزدور آندولن پھر اُس اونچائی تک نہیں پہونچا . پھر بھی سن ۱۹۴۷ میں محلۃالکبریٰ کے بڑے سوتی کارخانے میں جس میں ۳۰۰۰۰ مزدور کام کرتے تھے ' ہڑتال کا اعلان ہوا ' جس میں ہتھیار بند پولیس سے مٹھ بھیڑ ہوئی . ۵ اپریل سن ۴۸ میں پولس نے خود ہڑتال کی . اسکندریہ میں بھی ہزاروں مزدوروں نے ہڑتال کی ' جن کے جلوس میں ہڑتالی پولیس بھی شامل ہوئی . اس میں مصری فوج کو امن قائم کرنے میں دو دن لگ گئے . ان ہڑتالوں میں تیل کی کمپنیوں ' سوتی ملوں ' چینی کی ملوں میں کام کرنے والے مزدوروں نے حصہ لیا . اِن آخری ہڑتالوں کے ایک ماہ بعد ہی ' جب فلسطین پر حملہ ہوا ' تب مصری سرکار نے فوجی قانون مارشل لا ' کے ذریعے مزدور تحریک کو دبا دیا . ٹریڈ یونینوں کو دبایا گیا اور بائیں بازو کے نیتاؤں کو گرفتار کر لیا گیا . اِسی طرح